

प्रकाशक

चौपासनी-शिक्षासमिति द्वारा गठित  
उपसमिति, राजस्थानी सबद कोस  
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय  
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के  
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

---

प्रथम संस्करण

---

मूल्य ७५ रु०

मुद्रक :

हरिदत्त थानवी  
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,  
जोधपुर

भलो भलाइ हि लहइ, लहइ निचाइहि नीचु ।  
सुधा सरा हिअ अमरता, गरल सराहिअ मीचु ॥  
तुलसी जसि भवतवयता, तैसी मिलइ सहाइ ।  
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहां ले जाइ ॥

—तुलसीदास





## अपनी बात

प्रस्तुत शब्द कोश के तृतीय खंड की यह तीसरी जिल्द हमारे सामने है। मैं पूर्ण आश्वस्त हूँ कि कोश का कार्य पूर्ण सन्तोष-प्रद ढंग से चल रहा है। कार्य - प्रगति को देखते हुए मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यदि कोई विशेष रुकावट सन्मुख न आई तो आगामी चतुर्थ खंड की जिल्दों के प्रकाशन में भी अनावश्यक समय नहीं लगेगा।

प्रताप जयन्ती  
ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी  
सम्बत् २०२९ वि  
विजय विहार  
जोधपुर

रणधीरसिंह  
अध्यक्ष - उपसमिति  
राजस्थानी सचद कोस  
जोधपुर



## प्रकाशकीय

पाठको के सन्मुख यह निवेदन करते हुए हमे प्रसन्नता होती है कि हमने 'राजस्थानी सवद कोस' की प्रगति के अनुक्रम मे एक मजिल और तय करली है। इस जिल्द के साथ 'म' अक्षर के समस्त उपलब्ध शब्दो को लेकर तृतीय खड को पूर्ण कर दिया है।

इससे पूर्व की इस खड की द्वितीय जिल्द जनवरी सन् १९७१ में प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत जिल्द जून सन् १९७१ से प्रारम्भ होकर १ वर्ष व ५ मास मे पूर्ण हुई है। इस जिल्द मे शब्द सख्या १५३३५ है जो द्वितीय जिल्द से बहुत अधिक नहीं है परन्तु शब्दो का अर्थ विस्तार इतना हो गया कि पृष्ठ सख्या उस से काफी अधिक अर्थात् करीब ७०० हो गई है। यही कारण है कि पूर्व जिल्द के मुकाविले मे समय अधिक लगा है। वैसे कार्य की प्रगति मे कोई रुकावट नहीं आई और न किसी प्रकार का विलम्ब हुआ।

अनुस्वार तथा 'क' से लेकर 'म' तक पाचो व्यंजन वर्गों की समाप्ति तक कोश की पूर्ण पृष्ठ सख्या ३६५० तक और कुल शब्द सख्या १०२४२८ तक पहुच चुकी है। अब अन्तस्थ व उष्म वर्गों की चौथे खड की चार जिल्दें और शेष रही हैं जो, यदि परिस्थिति हमारे अनुकूल रही और कोई विशेष रुकावट सन्मुख न आई तो, भविष्य के अल्प काल मे ही प्रकाशित कर देंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

कागज की महार्घता और पृष्ठ सख्या की अधिकता के कारण इस जिल्द का मूल्य हमे द्वितीय व तृतीय खड की पूर्व जिल्दो की अपेक्षा विवश हो कर अधिक अर्थात् ७५) ६० रखना पड रहा है।

हम केन्द्रीय सरकार व राजस्थान राज्य की कृतज्ञता प्रकट करते हुए, कि जिनकी नियमित आर्थिक सहायता ने हमारे कार्य को गतिमान रखा, राजस्थान राज्य के शिक्षा राज्य - मंत्री श्री भुम्भारसिंहजी, भूतपूर्व शिक्षा - सचिव श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता व श्री रामसिंहजी चौहान को हम हार्दिक धन्यवाद देना नहीं भूलेगे कि जिन्होंने कोश को आर्थिक सहायता प्रदान कराने तथा प्रकाशन की दिशा मे सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

श्री सुमेर प्रिटिंग प्रेस के सचालक व व्यवस्थापक महानुभावो को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने कोश की छपाई की दिशा मे हमारी सहृदयता - पूर्वक सहायता की है।

अन्त मे सरकार, पाठक, सहृदय विद्वज्जन एव साहित्य - सेवियों के अभिन्न सहयोग एव सहानुभूति से हम पूर्ण आश्वस्त हैं कि जिसके बल पर हम शीघ्र ही इस पुनीत कार्य को पूर्ण करने मे सफल होंगे।

रोडला भवन  
रिसाला रोड, जोधपुर

२५ जून, १९७२

चंदनसिंह राठौड़  
सचिव

उप-समिति राजस्थानी सवद कोश  
जोधपुर



॥ श्री ॥  
\* निवेदन \*

— दूहा सोरठा —

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ॥१॥  
साच न वूढो होय, साच अमर ससार मे । कैतो घोवो वीय, ओ सेवट प्रकट 'उदय' ॥२॥  
सेवा देश समाज, धरती मे साचो घरम । इण सूनू पूरै आत सकल मनोरथ सांघरो ॥३॥  
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । भावे इण एवाह ईशर कीरपा सूनू उदय ॥४॥  
सत ऊजळा सदेश, उदयरज ऊजल अखै । दीप वारा देश, ज्वारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत ससद मे सन् १९५० रे करीव देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भामावा मानी गई उणा रे सामल राजस्थानी भाषा ने नही मानी तो कुदरती तौर सूनू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सार आन्दोलन पत्रो मे शुरू हुवो

राजस्थानी रे विरोध मे अकसर आ बात कही जाती के इण री कोई आधुनिक कोश नही हो । ओ घाटो मिटावण सार म्हें श्री सीतारामजी लालस ने कयो क्योकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सार तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूनू मैनत सूनू कोश रो काम शुरू कियो ने इण मे खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा बावत म्हें स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहव वार एटला पौकरण ने अरज करी । इणा कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूनू रुपिया री मदद देणी चालू कर दीवी । सीतारामजी मथारिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दीवी और म्हे दोनु तारीख १-५-५१ सूनू सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूनू कुन शब्द ११३००० स्लिप कोपिया मे लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूनू श्री पौकरण ठाकुर साहव री सहायता वंद हो गई । इण सूनू सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हा दोनू री लगन ही । म्हें करनल श्री स्यामसिंहजी रोडलाने जून सन् १९५६ में कोश मे सहायता देण सार कागद लिखियो उण रो जवाब उणा तारीख २६-६-५६ रा कागद मे म्हेने लिखियो के कोश सार मावार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे मे देरी हुई । उणा रे स्वर्गवास होणे रे बाद मे मास नवम्बर रा अन्त मे ने दिसम्बर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बावत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणा री सहायता सूनू सन् १९५७ री जनवरी रूनू सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दियो क्योकि जद उणा री तवादलो जोधपुर मे हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दो री स्लिप कोपिया पेची वणी हुई ही । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय न उणा अक्षरवार रजिस्टर मे लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हे पैनी री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपिया री सहायता सूनू पूरो हुवो ।

इणरे बाद प्रेम कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणारे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री भालावाड दरवार सूनू श्री नीवाँज ठाकुर साहव सूनू रुपिया री सहायता लेने करायो ने करे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासणी जोधपुर सूनू हुवो ने तारीख ११-३-१९५६ ने सीतारामजी ने इण सोध सस्थान शिक्षा विभाग सूनू लोन पर ले लिया जद सूनू वे इण सस्थान मे काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण मे व्युत्पत्ति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदत ही इण वास्ते बैकूठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवा हा । तारीख २२-५-५७ ने लिख दया नीचे मुजब हो —

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यत्र श्री उदयरामजी उज्जवल यंत्री (मेकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ति से पूर्ण सन्तुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इस तरे ननरा विश्वविद्यालय सू डा० डब्लू० एस० एलन जो ससार री करीब चालिस भाषाओं री जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनी विज्ञान सबधो जाच वो शोध री काम सारु सन् १९५२ मे राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले मे म्हारे कने घणा आता उराने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उरणा म्हारो उत्साह बघायो उरणा री सम्मति नीचे मुजब है —

Thinity College Cambridge

26 Feb., 1960

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is now to be published. Rajasthan has long presented a serious gap in the comparative Study of the vocabulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the devoted work of two Rajasthan Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a monument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammar by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthan language can no longer be denied.

Sd W S Allen M A P H D

Professor of Comparative Philology  
in the University of Cambridge

कोश दोय दातार राजपूत सरदारो री रूपया री मदत सू शुरू होय ने पूरो वरिणयो इण वास्ते पुरानो प्रथा रे माफक महे ता० २६-६-५७ ने इण वावत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण मे दोनू सरदारा री धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो मे तारीफ की है।

### “गीत” राजस्थानी मे

कोम मरु वाणरो सुरो वण्यो नह किए सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपत कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥  
छूटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न कणी सू, लागता पथ घन छोड लाढा ॥२॥  
सेव साहित्य ही रहे ससार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे। मिले सुखलाघ हितकर चित समाजां, दिनो दिन कितां सनमान दरसे ॥३॥  
पांण मरु वान है प्रांत री परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो। रखी नह पढण मे भावखा प्रात री, निरखता जाय है प्रांत नीचो ॥४॥  
घणई चारणी व्याकरण विधोविध, वणेगी कोश ही लाख सबधो। सीत री परिश्रम अथग फलियो सिरे, रेटियो ‘उदय’ मिल सकल सबधो ॥५॥  
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत घन खर्च कीयो। पढता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥  
रोडले स्यामसो सपूतो सिरोमण, कमघज आज अखियाज कीधी। वार विपरीति मे हजारो खरचवे, दाद उजल ‘उदे’ देस बीधी ॥७॥  
चारणा दोय मिल व्याकरणकोश रचि, वण्यो नह बडो कवराज मिलियो। कमघा दोय मिल कियो सुम काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

### कवित

सूर्यमल मिशण से बनाया वस भास्कर, वूदी नूपराम ने खजाना खोल करके।  
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदियापुर रान के कोष बल घरके।  
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराम उज्जवल के योग शक्ति भरके।  
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी घन घर के।  
प्रांत की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परपरा विबुधन दीनमाल बीरपद धाला है।  
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त है मे रखी नही होय कोटि जनता को दास गति डाला है।  
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दक्षित विदाजा है।  
जीवित उद्वेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है।

Compared by

Sd Bhawar Singh

Sd लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd ह० उदयराम उज्जवल

Sd. Nani Chand Jain

Civil Judge Jodhpur

# संकेत और चिन्ह

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अ०	अंग्रेजी भाषा	भू०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मारठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व	महत्त्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इअ०	इब्रानी भाषा	यो०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभय लिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमान काल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्वादि
गु०	गुजराती भाषा	स०	संस्कृत
गो० र०	गोरादि	स० उ०	सज्ञा उभय लिंग
ची०	चीनी भाषा	स० पु०	सज्ञा पुल्लिङ्ग
जा०	जापानी भाषा	स० स्त्री०	सज्ञा स्त्रीलिंग
डि०	डिगल	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
प०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्री लिंग
पु०	पुलिङ्ग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित् प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गी खिडियो
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बन्धी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फां०	फासीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाश्री
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण



## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सक्षित नाम  
अनेक० अनेका०

अमरत

अ० मा०

अ० वचनिका

ऊ० का०

उ० र०

एका०

ऐ० जै० का० स०

क० कु० वो०

का० दे० प्र०

गी० रा०

गु० रु० व०

गो० रु०

डि० को०

डि० ना० मा०

ढो० मा०

द० दा०

द० वि०

देवि०

घ० व० प्र०

ना० मा०

ना० डि० को०

ना० द०

नी० प्र०

नैणसी

प० प० च०

प० च० चौ०

पा० प्र०

पि० प्र०

पी० प्र०

पे० रु०

बां० दा०

बां० दा० ख्या०

वी० दे०

भ० मा०

भिवखु०

भि० द्र०

मा० कां० प्र०

पूर्ण नाम

अनेकार्थी कोश

अमरत सागर

अवधान माळा

अचलदास खीची री वचनिका

ऊमर काव्य

उक्ति रत्नाकर

एकाक्षरी नाम माळा

ऐतिहासिक जैन/काव्य संग्रह

कविकुल बोध

कान्हडदे प्रवच

गीत रामायण

गुण रूपक वध

गोगादे रूपक

डिंगळ कोश

डिंगळ नाम माळा

ढोला माह

दयाळदास री ख्यात

दळपत विलास

देवियारण

धर्म वद्धन ग्रन्थावलि

नाम माळा

नागराज डिंगळ कोश

नागदमण

नीती प्रकाश

नैणसी री ख्यात

पच पडव चरित्र

पद्मिनी चरित्र चौपाई

पावू प्रकाश

पिंगळ प्रकाश

पीरदान ग्रन्थावलि

पेमसिंह रूपक

वाकीदास ग्रन्थावली

वांकीदास री ख्यात

वीसलदे रासो

भक्तमाळ

भिवखु दृष्टान्त

"

माधवानल काम कदला प्रवच

रचयिता का नाम

उदयराम बारहठ

महा० प्रतापसिंह जयपुर

उदयराम बारहठ

शिवदास गाडण

ऊमरदान लाळस

साधु सुन्दरगणि

वीरभाण रतनू, उदयराम बारहठ

सपा० अग्रचन्द नाहटा

उदयराम बारहठ

पद्मनाभ

अमृतलाल माथुर

केसोदास गाडण

पहाडखा आढी

कविराजा मुरारीदान, वू दी

हरराज कवि

सम्पादकत्रय रामसिंह तेंवर, सूर्यकरणा पारीक व

नरोत्तमदास स्वामी

दयाळदास सिढायच

सम्पादक रावत सारस्वत

ईसरदास बारहठ

सपा० अग्रचन्द नाहटा

अज्ञात

नागराज पिंगळ

साइया भूला

सगरामसिंह मुहणोत

मुहता नैणसी

सालिभद्र सूरि

कवि लब्धोदय

मोडजी आसियो

हमीरदान रतनू

पीरदान लाळस

प्रतापदान गाडण

वाकीदास

वाकीदास

कवि नाल्ह

अहदास

भीखणजी

"

कवि गणपति

मा० म०-

मा० वचनिका-

भीरा

मेघ०

मे० म०

र० ज० प्र०

र० रू०

र० वचनिका

र० हमीर

रा० जै० रासो

रा० जै छद

रां० रा०

रा० रु०

रा० व० वि०

रा० सा० सं०

ल० पि०

ला० रा०

लो० गो०

व० भा०

व० स०

वि० कु०

वि० सि०

वी० मा०

वी० स०

वी० स० टी

वेलि०

वेलि टी०

शा० हो०

शि० वं०

शि० सु० रू०

स० कु०

सू० प्र०

ह० ना० मा०

ह० पु० वां०

ह० र०

हा० भा०

मारवाड महुं मशुमागी रिपोर्ट

माताजी की वचनिका

भीरा वाई

मेघदूत

मेहाईमहिमा

रघुवरजस प्रकाश

रघुनाथ रूपक

रतनसिंह महेशदासोत की वचनिका

रतना हमीर की वारता

राउ जैतसी की रासो

राउ जैतसी की छद

शमरासो

राज रूपक

राठौड वस की विगत

राजस्थानी साहित्य सग्रह

लखपत विगळ

लावा रासो

राजस्थानी लोकगीत

वश भास्कर

वर्णक समुच्चय

विनयकुमार कृति कुसुमाजलि

विहदसिंहगार

वीरमायण

वीर सतसई

वीर सतसई की टीका

वेलि क्रिसन रुकमणीरी

वेलिक्रिसन रुकमणी की टीका

शालि होत्र

शिखर वशोत्पत्ति

शिवदान मुजस रूपक

समय सुन्दर कृति कुसुमाजलि

सूरज प्रकाश

हमीर नाम माळा

श्रीहरीपुरुषजी की वाणी

हरिरस

हालां भाला रा कु डळिया

मुन्शी देवीप्रसाद

जती जयचन्द

नारायणसिंह भाटी

हिंगलाजदान कवियो

क्रिसनी आढी

मछाराम

जगो खिडियो

महा० मानसिंह जोधपुर

अज्ञात

वीरू सूजी नगराजोत

माधीदास दधवाडियो

वीरभाण रतनू

अज्ञात

सग्रह, सम्पादन स्वामि नरोत्तमदास

हमीरदान रतनू

गोपाळदान कवियो

सग्रह सम्पादन

सूर्यमल भीसण

सम्पादक भोगीलाल साडेसरा

कविवर विनयचद्र

कविगज करणीदान कवियो

वहादुर ढाढी

सूर्यमल भीसण

किसारदान वारहूठ

अज्ञात

अज्ञ त

अज्ञात

गोपाळदान कवियो

लालदान वारहूठ

महाकवि समयसुन्दर

कविराजा करणीदान

हमीरदान रतनू

श्री हरीपुरुषजी

ईसरदास वागहूठ

” ”

## चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप

\*

,

—

, ,

स्थान

शब्द के आगे

बीच के अक्षरों के

बीच सिर पर

शब्द के नीचे

शब्द के दोनों ओर

सिरों पर

प्रयोजन

यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।

यह ध्वनी-लौकिक चिन्ह है, जहाँ 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहाँ आता है।

उच्चारण की ध्वनी भिन्नता चतलाता है।

व्यक्ति याचक मञ्जा का सूचक



# राजस्थानी सबद कोस

[ राजस्थानी हिन्दी बृहत् कोश ]

[ तृतीय खण्ड ]

(तृतीय जिल्द)



म—देवनागरी लिपि का चौबीसवा व प वर्ग का चौथा वर्ण जो भाषा-विज्ञान व व्याकरण की दृष्टि से द्योण्ठ्य अघोष, महाप्राण तथा स्पर्श व्यजन है। पर अत्य म अशत अघोष रहता है। इसका अल्प प्राण व है।

भइस—देखो 'भैस' (रू भे)

भइसी—देखो 'भैसी' (रू भे)

(स्त्री० भइस)

भकारी—स० स्त्री० [स० भकार+डीप्] १ भुनगा।

२ एक प्रकार का छोटा मच्छर जो चौपायों को काटता है।

भख-वि०—१ निर्धन, कगाल, भूखा।

उ०—मन धक पक कुमारग माथै, एवढ खक पवित्र इसी। दिल-वड भख 'गभीर' न दूजो, जाता सख 'गभीर' जिसी।

—ठाकर गभीरसिंघ री गीत

भग-स० पु० [स० भङ्ग] १ टूटने की क्रिया या भाव, टूट।

२ दरार।

३ धाव, क्षत।

उ०—गुण बाण सीधणि गाढ, बाहति ताणक वाढ। वदूक बाण मार, भालोड भग सभार।—गु रू व

४ पृथक्ता, अलहदगी।

५ अश, हिस्सा, टुकड़ा, टुक।

६ निश्चय प्रतीति, नियम आदि में पढ़ने वाला अन्तर।

७ किसी कार्य को स्थगित करने की क्रिया।

८ बाधा, विघ्न, रुकावट, गड़बड़ी।

उ०—ताहरा राजा लीलानु बोलाई। बोलाई नै वात पूछी। थारी तपस्या में भग क्यु हुवो। मोनु साच कहि।

—देवजी वगडावता री वात

९ प्रतिवध, मुश्किली।

१० भाग जाने की क्रिया।

११ पराजय।

१२ असफलता।

१३ नाश, वरवादी।

उ०—समळ हुवा कपडा सकळ, भमळ हुवो घट भग। कमळ वदन कुम्हलायगो, अमल खायगो अग।—ऊ का।

१४ कर्तव्य व्यवस्था आदि का बीच में कुछ समय के लिए रुकना और ठीक तरह से न चल सकना।

१५ घबराहट, भय आदि के कारण जन-समूह में होने वाली हल-चल, खलवली, भगदड़।

उ०—१ जडामूल उघाडि, भाजि खिडकीगड दक्खण। हवसी-दळ हेडवँ मारि लग अग्गी पट्टण। खान देम मरहट्ट वराड मुलक वम कीघा वका, सेतवध रामेस भग पडियो गड लका।

—गु रू व

उ०—२ नमै जैसाण', 'खूमाण' धीरै नही, भग उतराघ, गुज-रात भीता। हठि चढे पूठि अमि पूठि 'जोवाहरै, जुते गढ सनढ अणुजीत जीता।—महाराजा रायसिंघ री गीत

१६ ध्वस।

उ०—लाखूटानी पोळ घोडा १५०,००० अनै हाथी १४,००० एतलो दळ लाखोटानी पोळी थो। चीत्रोड भग हुवो। तठै राणै राणी करमेती नू जुहर कियो।—नैणमी

१७ फेर, मोड़।

१८ तह, लहरिया।

१९ सिकुहन।

२० जल-मार्ग, नहर।

२१ मार्ग, रास्ता।

उ०—चौसरै थरा नर कागुरै चाढिया, ऊमरा भुजा-डडा-अडीया, प्रथी रा नाथ बाकौ दुरग पलटता, प्रथी रा गिरवरा भग पढीया।

—गु रू व

२२ छल, धोखा।

२३ अद्विवात रोग।

२४ एक देश का नाम।

उ०—मगधमडल अग वग कलिंग कासी [कोसल-कुरु] कुसट्ट पचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारणु चेदी सिंधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट केकय-मडलारद्ध इत्यरद्धपचविसति जनपदा आरया।—व स  
२५ हानि, क्षति।

उ०—पछै पोहकर री पूजा करण लागा तरै ओ रीसाई नीसरियो। कह्यो माहरी मान भग कीयो।—नैणसी

२६ देखो 'वग' (रू भे)

उ०—चडस माय बँठयो मिनख ऊचो मूढो करनै कह्यो—म्हँ नी भूत हू अर नी कोई पलीत। थारै सरीसो ई मिनख हू। रात रा पाज माथा सू सूतो सूतो नीद रे माय थरकीजगो। इण चडस री भग देखनै माय बँठयो।—फुलवाडी

२७ देखो 'भाग' (रू भे)

उ०—चालाक तो चहू पिए, भोळा पीए भग। अलीण मू आगा रहै, रजपूता नै रग।—ऊ का

भगअहारी-वि० यो० [म० भग्ना+आहार+रा० प्र० ई] भग पीने वाला।

स० पु०—१ शिव, महादेव। (डि को)

२ भाग पीने वाला व्यक्ति।

भगड—देखो 'भगेडी' (मह, रू भे)

भगण-वि०—१ तोड़ने फोड़ने वाला।

२ देखो 'भगी' (स्त्री०)

भगणो, भगवो—क्रि० अ०/स० [स० भञ्ज् + घञ्] १ हटना, भग्न होना, खण्डित होना ।

२ किमी से हार जाना, दबना ।

३ मिटना, नष्ट होना ।

उ०—पकवाने पाने फलें सुपुहर्ष, सुरग वसत्रै दरव स्रव । पूजिये कमटि भगि वनसपति, प्रसूतिका होळिका प्रव—वेलि

४ भग्न करना, तोड़ना ।

५ किसी को हराना, दवाना ।

६ मिटाना, नष्ट करना ।

भगणहार, हारो (हारो), भगणियो—वि० ।

भगाडणो, भगाडवो, भगाणो, भगावो, भगावणो, भगाववो

प्रे० रू० ।

भगिओडो, भगियोडो, भग्योडो—भू० का० कृ० ।

भगोजणो, भगोजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

भगविहारो—स० पु० यो० [स० भगा + विहारिन्] शिव, महादेव ।

भगराज—स० पु० [स० भृगराज] १ कोयल के आकार की काले रंग की एक चिड़िया ।

२ देखो 'भागरो' (रू भे)

भगरो—देखो 'भागरो' (रू भे)

भगवट, भगवट्ट, भगवाट—१ देखो 'भगवट' (रू भे)

उ०—१ पडियो नेजाळ विडे पाटरिये, भगवट वाट न क्रम भरिया । 'अजमल' तणे खडग रे ओळी, अविपति मोटा ऊवरिया ।

—अजा राजधरोत री गीत

उ०—२ मिटिये निज दळे मिटत जो 'मधकर', सूर खत्री भगवाट सहि । मेर ढिगत सायर क्रम लोपत, अरक मिटत इळ तजत अहि ।—महेसदास कल्याणमलोत सावला री गीत

उ०—३ घण अस्सि दुरिज्जण घडिय घाइ, रइणाइर वाघउ जोधि राइ । जोधि मेवाड काडिय जडाह, भगवट्ट दीव मोटा भडाह ।—रा ज सी

भगाण—स० स्त्री०—१ भागने की क्रिया या भाव, भगदड ।

उ०—देवरावर अत घड दीठी, भाटिये भगाण । उळट ढाहण वडा अनडां, मिळी छडे माण ।—हरखी वारठ

उ०—२ पलाण्यउ अलावदीन, जळ थळ अकुळांगा । राय रांगा खलभळ्या, पड्या दह दिसि भगाणा ।—प च चो

२ घाक, भय, रोव ।

उ०—१ माल त्यावे खावे अर वामे आवे तैनु मा'र नाखे । तै मु इये री वढी नांम अर देपाळ रा वडा भगाणा पडे ।

—देपाल घघ री वात

रू० भे०—भगाणा ।

भगार—देखो 'वधार' (रू भे)

भगारणो, भगारवो—देखो 'वधारणो, वधारवो' (रू भे)

भगारियोडो—देखो 'वधारियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भगारियोडो)

भगि—स० स्त्री० [स०] १ तरीका, ढग ।

उ०—१ आकुली कुनवट लोपिय गोपिय रमइ रगि, कास केमि चागूर ए चूरए जे बहु भगि ।—जयशेखर सूरि

उ०—२ गुरि वीनविउ अरसरि राठ 'मविहु वेठा करठ पसाउ । तुम्हि मढावउ नवउ अखाडउ नव नव भगि पूत रमाडउ' ।

—प प च

२ शरीर के अंगों की ऐंगी विशिष्ट मुद्रा या संचालन जो किसी प्रकार के मनोभाव का सूचक होती है ।

३ हटन, फूटन ।

४ टेढा, सकुडन, घुमाव ।

५ फरेव, जाल ।

६ विन्यास, विच्छेद ।

७ व्यग्याक्ति ।

८ रमिकतापूर्ण उत्तर ।

भगी—स० पु० [स्त्री० भगण] १ एक अस्पृश्य जाति या इस जाति का व्यक्ति, हरिजन ।

उ०—जापा मे खावण वाली, मै'ला मे पोदण वाली । भगण कोनी जकी थारी फूस बुवार दू ।—फुलवाडी

अल्पा०—भगीडो ।

स० पु० [स० भग + डीप] १ रेखाओं के झुकाव में खींचा गया कोई चित्र या वेल-वूट ।

[स० भगिन्] २ शिव, महादेव ।

३ देखो 'भगि' (रू भे)

भगीडो—देखो 'भगी' (अल्पा, रू भे)

भगीवाडो—स० पु० यो० [राज० भगी + स० पाटक + रा० प्र० डो] १ भगियों का मोहल्ला ।

२ गदा स्थान ।

३ गदगी ।

भगुर—वि० [स० भज् + घुरच्] १ हट-फूट कर विघटित होने वाला । २ नदी का मोड़ ।

३ नाश होने वाला ।

यो०—क्षण-भगुर ।

भगेडो—वि० [स० भगा] बहुत अधिक भांग पीने वाला ।

रू० भे०—'भागेडो' ।

अल्पा०—भगेडो, भगेरी ।

भगेडो, भगेरी—देखो 'भगेडो' (अल्पा, रू भे)

भगेळ, भगेळियो—वि० [स० भग + रा० प्र० एल, एलियो] भागने वाला ।

उ०—१ लूटवा वधै फौजा लगम, धमस तुरा भाजै धरा । मिळ  
चली प्रजा भगेळ मग, लग दिल्ली लग आगरा ।—रा रू

उ०—२ जोडै दुद अनेक या, दोडै तहवरखान । मुरधर प्रजा  
भगेळिया, किया गिरदे थान ।—रा रू

भज-स० स्त्री०—१ लव, दूरी ।

उ०—आई घटा उतराद री, भज सौ कोसा बीच । मेहा माडिया  
माचणा, किल भरमाया कीच ।—अज्ञात

२ तोडने या भजन करने की क्रिया या भाव ।

३ वह फमल जो किसी कारणवश खराब हो गई हो एव उस पर  
दुवारा फसल बोई जाय ।

४ विघ्न, बाधा, अडचन, रुकावट ।

उ०—अई अकला ई ईण घर रा ठेकेदार कीकर वणै । म्हारै  
मरिया तो ईण गवाही री सुख-सायत मे किणी बात री भज  
नी पडैला ।—फुलवाडी

भजक-वि० [स० भज्+ण्वल्—अक] १ तोडने-फोडने वाला, भजन  
करने वाला ।

२ विघ्न या बाधा डालने वाला ।

भजगी-स० स्त्री० [स० भज्ज्] विघ्न, बाधा ।

भजण-स० पु० [स० भज+ण्वल्—अण्व] १ तोडने या भग करने  
की क्रिया ।

२ ध्वस, नाश ।

३ खडन, भग ।

४ सहार ।

५ पराजय, हार ।

क्रि० प्र०—करणी, होणी ।

वि० (ममस्त पदो के अन्त मे) १ मिटाने वाला, नाश करने वाला,  
ध्वस करने वाला ।

उ०—१ आखी मुख राजा 'अजन', साखी तिण ससार । अवत-  
रियो म्हारै 'अभौ', भौ भजण अवतार ।—रा रू

उ०—२ दीनदयाळ पाळ कर गो दुज, निज प्रिया सिया मनर-  
जण । जाप 'किसन' मां वाप राम जस, भव त्रय ताप पाप दळ  
भजण ।—र ज प्र

२ मारने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—१ कीया कटकां 'केहरी', आगळ आपाणा । दो मळ 'रासा'  
दूसरा, भजण सुरताणा ।—द दा

उ०—२ उठियो तिणवार वडी उतळीवळ, सूरजमिघ सह (स)  
वळ । कोपनळ काळ भुजाळ कमधज दोमजि भजण सगु दळ ।

—गु रू व

३ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

उ०—पाट पवै उडरण दुजड, भजण दळ लाखा । जुरासिघ

सारखा, दळण दाणवा असखा ।—गु रू व  
भजणो-वि० [स० भज] १ मिटाने वाला, नाश करने वाला ।

उ०—'भाराणी' दुख भजणो, गुण रजणी गहीर । जाम खजाने  
जात री, साहिव कीधी सीर ।—वा दा

२ पराजित करने वाला ।

उ०—१ वार निरवार आधार, आधार आलम वणै, सरण  
साधार जिण विरद सोहै, भिडै दळ भजणा ।—र ज प्र

उ०—२ गढा अगजा गजणा, भिड भजणा अभग । हैमर उरि  
घर हक्किया, वेऊ घाट वरग ।—महाराजा करणसिंह री गीत

३ सहार करने वाला ।

उ०—१ सिर-जोर खग दत सजणा, पह रोर आमय पजणा ।

भड जुव असता भजणा, रघुराज सता रजणा ।—र ज प्र

४ तोडने वाला, टुकडे करने वाला ।

५ भागने वाला, डरपोक ।

उ०—१ राठोडा री कुळत्रिया, सीळा अभ न धरत । ज्या भर-  
तार न भजणा, से भजणा न जणत ।

—कहवाट सरवहिया री बात

उ०—२ जे जाया रण भजणा इण सू भली अहूत । जिणज्यो  
रजपूताणियां, 'पातल' जिंसा सपूत ।—जैतदान वारहठ

भजणो, भजवो-क्रि० अ० [स० भज्] १ मिटना, नाश होना ।

२ पराजित होना ।

३ सहार होना ।

४ टूटना ।

उ०—अवज्झड द्विज्झड भडु असव, कटै कर कोपर काळिज कव ।  
भडा घड भजि हुअै वि वि भग, खडक्खड ढल्ल भडज्झड खग ।

—र वचनिका

५ डरकर भागना ।

६ रुपये का छोटे सिक्को मे परिवर्तन होना ।

७ देखो 'भाजणो, भाजवो' (रू भे )

उ०—१ देवो रूप अघेर रै सूर गजै, देवी सूरज रूप अघेर भजै ।  
—देवि

उ०—२ सेन अकव्वर तापडे, आप गयो खहमग । ज्यो क्रस  
भजै तन गळै, घण गोळक तन लग ।—रा रू

उ०—३ गहीय पभावइ रिउ हणित भजित मारग कूडु । धरि  
पहुतउ वेउ मित लेउ हेमगडु मणिवूडु ।—प प च

उ०—४ भिडतै दोइ पतिसाह तणा दळ भजिया । तै छळि साह-  
जहान अगजी गजिया ।—महाराजा करणसिंह वीकानर री गीत

उ०—महाराजा वीर विक्रमादित्य, पर-दुख भजणहार उज्जेण  
माही राज करै ।—सिधामण वत्तीसी

भजणहार, हारो (हारी), भजणियो—वि० ।



भजिओडो, भजियोडो, भज्योडो—भू० का० कु० ।

भजीजणो, भंजीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

भजणो, भजवो—रू० भे० ।

भजाडणो, भजाडवो—देखो 'भजाणो, भजावो' (रू० भे०)

उ०—१ जननी धिन जे जन्मिया, 'भीमाजण' कुल भाए । 'माल' भजाड मेडतै, अणभग फेरी आण ।—द दा

उ०—२ तूरअली जसमी ह्य नाठो, दूजा तणा किया सिर दूर । देह भजाड विरोल दिली दळ, हू आयो रावळी हजूर ।

—सवलसिंह भाटी री गीत

भजाडणहार, हारो (हारी), भजाडणियो—वि० ।

भजाडिओडो, भजाडियोडो, भजाडयोडो—भू० का० कु० ।

भजाडीजणो, भजाडीजवो—कर्म वा० ।

भजाडियोडो—१ देखो 'भजायोडो' (रू० भे०)

(स्थी० भजाडियोडो)

भजाणी, भजावो—क्रि० स० [राज० भजणी क्रि० का प्रे०रू०] १ मिटवाना, नाश करवाना ।

२ पराजित करवाना ।

३ सहार करवाना ।

४ तुडवाना, टुकड़े करवाना ।

उ०—तरै कान्ह माहावत नू कह्यो—'हू वीच आऊ छू मांनू वीच देनै हाथी कना किवाड भजाय नाख ।—नैणसी

५ भगवाना ।

६ रुपयो को छोटे सिक्को मे परिवर्तन करवाना ।

७ मुडवाना ।

८ तह करवाना ।

९ खर्च करवाना ।

१० नियम से विचलित करवाना, प्रण तुडवाना ।

उ०—सूयावडि दूखण घणा, वलि गरभगलाया । जीवाणी दोल्या घडा, मील वरत भजाया ।—स कु

भजायोडो—भू० का० कु०—१ मिटवाया हुआ, नाश कराया हुआ

२ पराजित कराया हुआ ३ सहार कराया हुआ ४ तुडवाया हुआ

५ डरवाकर भगवाया हुआ ६ रुपये का छोटे सिक्को मे परिवर्तन करवाया हुआ ७ मुडवाया हुआ ८ तह करवाया हुआ

९ खर्च करवाया हुआ १० नियम से विचलित करवाया हुआ, प्रण तुडवाया हुआ

भजाणहार, हारो (हारी), भजाणियो—वि० ।

भजायोडो—भू० का० कु० ।

भजाईजणो, भजाईजवो—कर्म वा० ।

भजाडणो, भजाडवो, भजावणो, भजाववो, भजाडणो, भजाडवो,

भजाणो, भजावो—रू० भे० ।

भजावणो, भजाववो—देखो 'भजाणो, भजावो' (रू० भे०)

भजावणहार, हारो (हारी), भजावणियो—वि० ।

भजाविओडो, भजावियोडो, भजाव्योडो—भू० का० कु० ।

भजावोजणो, भजावोजवो—कर्म वा० ।

भजावियोडो—देखो 'भजायोडो' (रू० भे०)

(स्थी० भजावियोडो)

भड—स० पु० [स० भण्ड] १ एक देश का नाम ।

२ देखो 'भाडी' (मह, रू० भे०)

उ०—१ सप्त घात री रोगोकुलोजी, काचो माही तणो भड ।

एहकी देह मानव तणी जी, ते पिए जावणी घड ।—जयवाणी

३ देखो 'भाड' (रू० भे०)

उ०—२ वेस्यानइ वाली कहिठ, राजि न आविमि रड । विरति परिही विहिची दीउ, भला भवाईया भड ।—मा कां प्र

भडग—स० पु० [स० भाण्डक] १ मिट्टी का वर्तन ।

२ सन्यासियो का एक उपकरण ।

भडण—म० पु० [स० भड] १ क्षति, हानि ।

२ कवच ।

३ निन्दा ।

भडणी, भडवो—देखो 'भाडणो, भाडवो' (रू० भे०)

भडणहार, हारो (हारी), भडणियो—वि० ।

भडिओडो, भडियोडो, भडयोडो—भू० का० कु० ।

भडीजणो, भडीजवो—कर्म वा० ।

भडफोड—देखो 'भडाफोड' (रू० भे०)

भडवाडो—स० पु०—भाडने की क्रिया, निन्दा, अपकीर्ति ।

भडाइ, भडाई—देखो 'भाडाई' (रू० भे०)

उ०—साजन को यो गुडालाल, अडियो भटपट नेग चुकाय । भाड

भडाई माग रह्या, इन भाडा को नेग चुकाय ।—लो गी

भडाणो, भडावो [भाडणी क्रि० का० प्रे०रू०] १ निन्दा कराना, अपकीर्ति कराना ।

२ विगाडना, दूषित करना ।

उ०—मावव साधन अरठ मडायो, सारो मुख ले घणी बिडायो ।

छाक पियो गिए पेट छुडायो, भारी पांणी जन्म भडायो ।

—ऊ का

भडाणहार, हारो (हारी), भडाणियो—वि० ।

भडायोडो—भू० का० कु० ।

भडाईजणो, भडाईजवो—कर्म वा० ।

भडावणो, भडाववो—रू० भे० ।

भडाफोड—स० पु० [स० भाण्ड+स्फोट] किसी गुप्त बात का रहस्योद्घाटन ।

क्रि० प्र०—कराणो, कराणो, होणो ।

रू० भे०—भडफोड ।

भडार, भडारज, भडारउ—स० पु० [स० भाण्डागारम्] १ खजाना, घनागार, कोप ।

उ०—१ परिवार पूत पोत्रे पडपोत्रे, अरु साहण भडार इम । जण रुखमिणि हरि वेलि जपतां, जग पुडि वावै वेलि जिम ।—वेलि

उ०—२ दाढू करता करै निमख मे, ठाली भरै भडार । भरिया गह ठाली करै, ऐसा सिरजनहार ।—दाढूवाणी

२ भोजन, रसोई ।

उ०—१ नारद हेरउ करइ, नवखडि फिरइ, घनद यज्ञ भडारउ करइ इसिउ रावण नरेस्वर ।—व स

उ०—२ हा ! सुन्दर सुख सागरु, हा ! मोटिम भडारउ रे हा ! रीहड कुल सेहरउ, हा ! गिरुवा गणघारउ रे ।

—कवि समय प्रभोद

३ किसी वस्तु या बात का बहुत बड़ा आधान या आश्रय स्थान ।

उ०—जडाव मासी गीत, ओखाणा अर वाता रो अखूट भडार ।

—फुलवाडी

३ वह कमरा या कोठरी जिसमे भोजन सामग्री, वर्तन आदि रखे जाते हैं ।

४ मालगोदाम ।

५ देखो 'भडारी' (मह, रू भे)

रू० भे०—भडाहर, भोडार ।

अल्पा०—भडारियो ।

भडारणो, भडारवो—क्रि० स० [स० भाण्डारणम्] गर्भ की जरा को भूमि मे गाढना ।

भडारियोडी—भू० का० कृ०—भूमि मे गाढी हुई गर्भ की जरा ।

भडारियो—स० पु० [स० भाण्डागार] १ दीवार मे बना हुआ खानेदार छोटा ताखा या अल्मारी ।

२ बेलगाडी या तागे आदि वाहनो मे श्रीजार आदि रखने का छोटा सट्टकनुमा स्थान ।

३ एक प्रकार का सर्प विशेष ।

उ०—काम कटारउ वाघइ, धनुसि वांण माघइ, अनत वासिगु अन्नत भरइ, तक्षक करकोट भडारिया, कुलिक उपकुलिक पाय चापइ ।—व स

४ देखो 'भडार' (अल्पा, रू भे)

५ देखो 'भडारी' (अल्पा, रू भे)

भडारी—स० पु० [स० भाण्डागारिक] १ भडार का अध्यक्ष ।

२ रसोईया ।

३ चीहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

स० स्त्री०—४ पृथ्वी, धरती । (हिं को)

५ छोटी कोठरी, खजाना ।

अल्पा०—भडारियो ।

भडारी—स० पु० [स० भाण्डाहार] १ सन्यासियो या साधुओ को

खिलाया जाने वाला भोज ।

२ दशनामी एव राधास्वामी साधुओ मे मृत्यु के पश्चान् किया जाने वाला बडा भोज ।

उ०—कोटै उत्तमगिरजी रा विसणूगिरजी, बखतगिर, दोया चेला भडारी आछौ कियो आ लारै ।—वां दा ह्यात

३ देखो 'भडार' (मह, रू भे)

उ०—मरण तणो डर कोई नहि, मरणा है इक वारा रे । बहुत निवाज बडा करु, छु बहु देस भडारी रे ।—प. च चौ

भडावणो, भडाववो—देखो 'भडाणो, भडावो' (रू भे)

भडाहर—देखो 'भडार' (रू भे)

भडियोडी—देखो 'भाडियोडी' (रू भे)

(स्त्री० भडियोडी)

भडीस—वि०—विध्वंस करने वाला ।

स० पु०—दक्ष प्रजापति ।

उ०—जोमगी भडीस ज्याग आयो ज्यु चडीम जायो, राजपुत्री आयो ज्यु थडीस वाळै रेम । ओ डडीस कसीसतो लागडो कपीस आयो, कोडडीस कसीसतो आयो गुडाकेस ।—हुकमीचद खिडियो

भडेळ—स० पु० [स० भाण्ड + रा० प्र० एल] वर्तनो की ऊपर नीचे के क्रम से जमी हुई कतार ।

भडेलो—स० पु०—मुसलमान जाति का भांड । (मा म)

भडोपकरण—स० पु० [स० भण्डा + उपकरण] गृहस्थ सवधी सामान ।

उ०—अतेउर परिवार ले, भडोपकरण सभाय । 'वीतमय' सेती निकली, 'चपा' नगरी जाय ।—जयवाणी

भडो—देखो 'भाडो' (रू भे)

भणकणो, भणकवो—देखो 'भणकणो भणकवो' (रू भे)

उ०—१ रत्ता पी गणक्के, कै भणक्के ये बीमाण रभा, लोयणा भणक्क डड मणक्का लेवाण । हुवै पखा भडक्का श्रीघाण बीर है हणक्के, कैमरा सणक्के वाजै खडक्का केवाण ।

—बहादुरसिंह मेडसिया री गीत

भणकणहार, हारो (हारी), भणकणियो—वि० ।

भणकियोडो, भणकियोडो, भणकयोडो—भू० का० कृ० ।

भणकीजणो, भणकीजवो—कर्म वा० ।

भणकियोडो—देखो 'भणकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भणकियोडी)

भणक्कणो, भणक्कवो—देखो 'भणकणो, भणकवो' (रू भे)

भणक्कणहार, हारो (हारी), भणक्कणियो—वि० ।

भणक्कियोडो, भणक्कियोडो, भणक्कयोडो—भू० का० कृ० ।

भणक्कीजणो, भणक्कीजवो—भाव वा० ।

भणक्कियोडो—देखो 'भणकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भणक्कियोडी)

भणणी, भणवी—देखो 'भणणी, भणवी' (रु भे)

भणणहार, हारी (हारी), भणणियो—वि० ।

भणणोडो, भणणियोडो, भणणोडो—भू० का० कृ० ।

भणोजणी, भणोजवी—कर्म वा० ।

भणियोडो—देखो 'भणियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भणियोडो)

भत, भति, भती—१ देखो 'गात' (रु भे)

२ देखो 'भाति' (रु भे)

उ०—१ ज्यू कामण पोसाग कर, पाछा न् पेखत । भागळ पाछे  
माळ ही, भाजती इण भत ।—वा दा

उ०—२ सउदागर राजा कन्है, अरज करइ एकति । साल्हकुवर  
सू चीनती, कहि कुण दाखू भति ।—ढो मा

उ०—३ राजा भूलरि राणिया, सोहे ईही भति । किरि वेघाणै  
किरितियां, चदो पूतम रति ।—गु रु व

उ०—४ दास पच अग्र रहै दुरती, भारत पाच पांढवा भती ।  
भटकं फोघ भाळ घुवि भूमी (भौ), अरक उठै थामै रथ ऊभो ।

—सू प्र

भदोळी—देखो 'वदोळी' (रु भे)

भदोळी—देखो 'वदोळी' (रु भे)

भदो—देखो 'बाध' (रु भे)

उ०—जद चवळ का भदा पर ही पोळी माटी पोती जावै, कोई  
पूछै 'या काई छै ?' तो वेलदार तक झुलावै । 'नेरु', 'नदा',  
'देसाई' नै ही जद ई की चिता कोनै, चावै जद ही भदो टूट'र  
भारत की जनता वै जावै ।—तिरमा

भफोड—देखो 'भूफोड' (रु भे)

उ०—भफोड-स गो तूवा तुवी, ऊची केल तिसूळ है । सैल-घोरिया,  
वैल-मुरडा, मुरघर सकर भूळ है ।—दसदेव

भम-स० पु०—१ धूआ ।

२ अधिक वालो का समूह ।

भमर-वि० [स० विह्वल] १ धवराया हुआ, व्याकुल ।

उ०—भड खडिया भमर, वेहक वज्जर, वडिया पकवर, विहड  
वपै । पळ खडिया पजर पडै पचाहर, जे जै सकर सकति जपै ।

—गु रु व

२ भयभीत, भयातुर ।

भमरभोळी, भमरभोली-वि० [स० विह्वल + भ्रमुल्लक प्रा० भिम्बल-  
भिम्बल + भोल्लभ्र—भोल्लभ्र] (स्त्री० भमरभोळी) १ भोला, सरल,  
सीधा ।

उ०—१ भमरभोळी पहिर चोळी, अवर दक्षण चीर । चालता  
गजहस गयणी, चोलतीय गभीर ।—रुमणि मगळ

उ०—२ भमरभोली नेमि जिण वीवाह सुणेई, नेह गहिखी गोरडी

हियडइ विहसेई ।—नेमिनाथ फागु

उ०—३ भमरभोलिय वाल रगि नव फागु रमते, दुक्किय विर-  
हिणी नयण नीरु नीभरण भरते ।—नेमिनाथ फागु

रु० भे०—भमरभोळिउ, भमरभोलिय, भामरभोळव, भामरभो-  
ळवी, भामरभोळी, भामरभोळी ।

भमा-स० पु०—एक प्रकार का वाद्य ।

उ०—भमा मडग मडल कटव भरलरि हुदुक्क कमाला । काहुल  
तिलिमा वमो सखो पणवो ग वाग्ममी ।—व. स.

भभार-वि०—१ बहुत बडा ।

उ० छुरु खजरु के विहार सूर सवरु अमे दरसाए सुपेत ताल  
भभार घाट मानू नारनीळ की लूट खूटै ।—सू प्र

२ देखो 'ववार' (रु भे)

उ०—१ घरण घाई मुगुल्लां घडिय घट्ट, रहचिवा थट्ट हुई आहरट्ट ।

सेलार महइ सारीर सार, भाले भभार पट्टे पहार ।—रा ज. सी

उ०—२ वार विकरार सिरदार विघ वाहिणो, समर भर भार  
घर भार सूतै । सार सेलार ऊआर भंभार सर, पार चौघार कर  
पार पूरै ।—महाराजा जमवतसिंह रो गीत

उ०—३ कोमड गरज हुए हलकार, भडा भालोड करत भभार ।

—गु रु व.

भभारी-स० पु०—१ जैसलमेर का एक प्रदेश जहा पहले अटकमल  
भाटियों का राज्य था ।

उ०—माड मे वारह गाव जडा भाटिया रा जडे कहावे । माड मे  
अटकमला भाटिया रा गांव वारह भभारी कहावै ।

—वा दा स्यात

२ देखो 'ववार' (अल्पा, रु भे)

उ०—भभारा भभकै, चोरगा उचकै, करै वीर हक, छके  
जाणि छक ।—सू प्र

३ देखो 'ववारी' (रु भे)

भभीर-वि०—भयानक, भयजनक ।

उ०—खोटवै सांकाळा सिघ वाज रै किलफफा खुलै, भीम तैण गजा  
भूलै गाज रै भभीर ।—गभीरसिघ सोलकी रो गीत

भभूळीयो—देखो 'वभूळी' (अल्पा, रु. भे) (शेखावाटी)

भभूळी—देखो 'वभूळी' (रु भे)

भभेडी-स० पु०—एक वृक्ष विशेष ।

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरदु बरिणि भागि भभेडी व्रह्मांड  
घण, भोजपत्रा भड चणि ।—मा. का प्र

भभेरणी, भभेरवी—क्रि० स०—कुपित करना, क्रोधित करना ।

उ०—नान्हा ते मत जणि नान्हा, छिद्र पराया राखे छाना । अवि-  
कारी म करे अदिखाइ, भभेरे मत भूप भखाइ ।—घ व अ  
भभेरणहार, हारी (हारी), भभेरणियो—वि० ।

भमेरियोडो, भमेरियोडो, भमेरयोडो—भू० का० कृ० ।

भमेरीजणो, भमेरीजवो—कर्म वा० ।

भमेरियोडो—भू० का० कृ०—कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ।  
(स्त्री० भमेरियोडो)

भमेरी—स० स्त्री०—एक देश का नाम ।

उ०—उडीसा री नइ नाहुलो, चीण भोट चदेरी । गवड देस वइ-  
रागर सागर, जाळघर भमेरी ।—रुक्मणि मगळ

भमो—स० पु०—१ एक वाद्य विशेष ।

उ०—रास मधु माधवइ देति रभा, सुगुरु गायति वायति भमा ।  
तेजपुज जिमसे भेइरवी, जुग प्रधान गुरु पेखउ भवि ।

—ऐ जै का स

भमो—स० पु० [स० वैभव] १ घन्वा, कार्य ।

उ०—करमाणद' आणद कहै, भमो करत म लज्ज । ईधण माधै  
आणियै चूल्हे बाळण कज्ज ।—करमाणद

२ देखो 'वैभव' (रू भे)

भमर—१ देखो भवर' (रू भे)

उ०—१ जिण बहु वार मुगळ दळ जीता, प्रजळे तेणि दिलेस्वर  
पजर । असपति सोच पडे पीळा अगि, मिळ बहु सोच पडे मुख  
भमर ।—सू प्र

उ०—२ को लाहै लोभिया, मोत चाहै अणखूटी । कमण पांण  
पाकडै, वीज असमाण विझूटी । मग सागर तजि सुद्ध, भमर कुण  
वेढो घल्लै । अहि कमण श्रोतवै, कमण रसणा कर मल्लै ।

—रा रु

२ देखो 'भ्रमर' (रू भे)

उ०—सार री भमर 'रतनेस' 'भाना' सुतन, भूपति 'मान' रै मनै  
भायो । घवस डडाड जळ चाढ़ मारुधरा, इसै छक आपरै दुरग  
आयो ।—ठाकर रतनसिध चापावत री गीत

भमरकडी—देखो 'भवरकडी' (रू भे)

उ०—उदावत केहरसिध जी रै गळा मे भमरकडी रहती, नित्य  
सेर पक्की खीचडी खाती ।—वां बा. ह्यात

भमरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भमरगुफा—देखो 'भवरगुफा' (रू भे)

भमरछेल—देखो 'छेलभवर' (रू भे)

भमरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

भमरभीख—देखो 'भवरभीख' (रू भे)

भमराई—देखो 'भवराई' (रू भे)

भमरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू भे)

भमराळ—१ देखो 'भवराळी' (मह, रू भे)

२ देखो 'भ्रमर' (मह, रू भे)

भमराळो—देखो 'भवराळी' (रू भे)

(स्त्री० भमराळी)

भमरौ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भवर' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० भमरी)

भमळ—देखो 'भवळ' (रू भे)

भयाण—देखो 'भयानक' (रू भे)

भवण—१ देखो 'भवळ' (रू भे)

२ देखो 'भूण' (रू भे)

भघणौ, भववौ—कि० अ० [स० भ्रमणम्] १ घूमना, फिरना ।

उ०—बोदा रै आढा बहै, सोदा मिलनै सेंग । भूकोडा भवता फिरै,  
लाहु खावै लेंग ।—ऊ का

२ चक्कर खाना, भटकना ।

उ०—परदार प्यार हुयगौ प्रमत, विन सीगा री वेलिया । भोग  
रे माय भवतौ भवर, गयो जनम सब गेलिया ।—ऊ का

मुहा०—अकल भवणी—बुद्धि अष्ट होना ।

३ उठना ।

उ०—तितरै एक सावळी भवती भवती पातसाह वंठो थो तठै  
ऊपर आई ।—नैणसी

४ मुठना, बक्राकार हो जाना ।

५ भ्रम मे पडना, भ्रमित होना ।

भवणहार, हारी (हारी), भवणियों—वि० ।

भवाडणो, भवाडवो, भवाणो, भवावो, भवावणो, भवाववो

—प्रे० रू० ।

भविओडो, भवियोडो, भव्योडो—भू० का० कृ० ।

भवीजणो, भवीजवो—भाव वा० ।

भमणो, भमवो, भम्मणो, भम्मवो, भवणो, भववो—रू० भे० ।

भवर—स० पु० [स० भ्रमर=चक्कर, गोल] १ नाक का आभूषण  
विशेष ।

उ०—१ वना रे, सीनी लका देम री स रे घर आणा, थारी रै  
वनही रे भवर घडाय, वनी तो लागै प्यारी रे, पुसवन की सुगव  
सवाश्री रे ।—लो गी

उ०—२ सोनो थे भल ल्यावो, जी वना म्हारा, रूपो थे भल  
ल्याय । मोती समदा पार का, जी वना म्हारा, धून्या भवर जडाय ।

—लो गी

२ पानी के वहाव मे रुकावट आने अथवा अन्य किसी कारण-वश  
लहरो द्वारा बना हुआ आवर्त या चक्कर ।

उ०—१ चित विपदा वारिधि पार करन के चाही । अद विच मे  
आती नाव भवर मे आई ।—ऊ का

उ०—२ इउ वहत भंवर मज पडीयै आय । ताहा नाव थरर  
डिगमिगत ताय ।—रामदान लाळस

[स० भ्रमर=भोरा=श्याम] ३ श्याम रंग ।

उ०—भेटिया केइक पीळा पमग, सोनरे कइक घुसर सुरग । अण  
थाग वेग केई भवर अग, रेसमी पोत किरमची रग ।—पे रु

४ मकान का गदा पानी जाने के लिए जमीन में बना हुआ गड्ढा ।

५ गेहूँ की फसल का एक रोग ।

६ एक केन्द्र पर घूमे हुए वालों या रोशनों का स्थान, जो स्थान-विशेष पर होने के कारण शुभ या अशुभ माना जाता है ।

अल्पा०—भवरी ।

७ घाम का गोलाकार ढेर ।

[स० भ्रमर = मस्त] (स्त्री० भवरी) ८ वह लडका जिम्मा पित्तमह जीवित हो । (पीता)

[स० भ्रमर = रसिक] ९ पति, पतिव्रत ।

उ०—किम कटै पाप दुख सुख किया, साधे ज्यु हिन मघाय लू ।

इण भवर हूत श्रव दे अलख, विधवा-पगलू वधाय लू ।—ऊ का १० श्याम रंग का घोड़ा ।

उ०—नेहू निज रीझरी वात चित ना घरी, प्रेम गवरी तणी नाहि पायो । राजकवरी जिका चढी चवरी रही, आप भवरी तणी पीठ आयो ।—गिरवरदान सादू

वि०—१ श्याम रंग का, काले रंग का ।

२ रसिक शौकीन, छेल-छवीला ।

उ०—दाह मांस दपट्ट अमल अणमाप अरोगे । चमडपोत रं चोट भवर मादक सुख भोगे ।—ऊ का

३ मस्त उन्मत्त ।

उ०—१ सो कूबरसी वडो दातार जुझार भवर छै ।

—कु सायला री दारता

उ०—२ चवरी ऊपर वीद जाय जिण भात विहमती विळकुळतो अलवलयी भवर हुवो थको ताखडी कवरा रा माय नू लेन तुरी तोरिया ।—प्रतापसिध म्होकमसिध री वात

४ देखो 'भ्रमर' (रू भे)

उ०—१ जलज प्रभूपद जाण, दे सुगध निरवाण पद । मो मन भवर प्रमाण, रात दिवस विलम्बो रहै ।—र ८

उ०—२ सखी भरोमी नाहू री, सूनी सदन म जाण । फून सुगधी फौज मे, आसी भवर उडाण ।—वी म

(स्त्री० भवरी)

रू० भे०—भमर, भउर, भमर, भवर, भवर ।

अल्पा०—भमरी, भवरियो, भवरी, भवरयो, भउरी, भमरडो, भमरडो, भमरलउ, भमरलु भमरलो, भमरियो, भमरी, भमरयो, भवरियो ।

मह०—भमराण ।

भवरकडी—स० स्त्री० यो० [स० भ्रमर + कटक] १ पशुओं के गले की सिकड़ी या पट्टे में लगी हुई लोहे या पीतल की कडी, जो कील में इस प्रकार से जड़ी रहती है कि पशु चाहे जितने चक्कर लगाए उसकी सिकड़ी में बल नहीं पड़ता । घूमने वाली कुण्डी या कडी । उ०—१ जिका री मूडहथ मोहनाळ, हाथ भर नस, वडरै पान

जिमा कान, ताजगातेद पूछ, गाहर मा पजा, घाघरी घास, पातळी लीकजाट घाटू । इण भातरा कुत्ता । वनातो पटा, रूपैरी भवरकडी, रेसमी डोर, काना मे रूपै सोनरा वेढळा, गळें मे निजर रा तादत । इण भात नू घाणु हाजर हुवा छै ।—रा मा न

उ०—२ उदावत केमरीगिधजी रा गळा मे भमरकटी रहती । पालगीनाना मे कैद रहता । मेर पत्ता री नित खीचटी माता ।

सचत् १८१८ रं रामगरण हुवा ।—वा दा म्यात

रू० भे०—भमरकडी, भमरकटी, भम्मरकटी ।

भवरगुजार—ग० पु० यो० [ग०] १ राजम्यानी (डिगल) का एक अष्ट-पदी छंद विशेष ।

वि० वि०—प्रथम प्रकार के भवर गुजार में पूर्वार्द्ध के प्रथम पद में १६ मात्राएँ, द्वितीय व तृतीय पद में दो लघु महित १४-१४ मात्राएँ, चौथे पद के अंत में दो गुरु महित ६ मात्राएँ रहती हैं ।

उ० प्रकाश उत्तरार्द्ध की रचना भी की जाती है । द्वितीय प्रकार के भवरगुजार के पूर्वार्द्ध में प्रथम व द्वितीय पद में प्रथम १८-१४ मात्राएँ, तृतीय पद में १६ और चतुर्थ पद में अंत गुरु वर्ण महित ६ मात्राएँ होती हैं । इसी प्रकार में उत्तरार्द्ध भी बनाया जाता है ।

२ भौरे का गुजन या आवाज ।

रू० भे०—भमरगुजार भमरगुजार, भम्मरगुजार, भवरगुजार ।

भवरगुफा—ग० स्त्री० यो० [ग० भ्रमर + गुहा] १ योग के अनुसार ग्रह रश्मि के नीचे स्थित ६ चक्रों में से एक चक्र, जिसका स्थान भोही के बीच माना जाता है ।

२ अघेरी कोठरी ।

उ०—रमणी वरहीनां निरग नवीनां, गग रांम रणुकन्दा है । कन्दर्प रा कीटा फवतन फीटा, भवरगुफा नणुकन्दा है ।—ऊ का रू० भे०—भमरगुफा, भमरगुफा, भम्मरगुफा ।

भवरछेल—देखो 'छेलभवर' (रू भे)

उ०—चाह करीर कली अप चटके, भवरछेल बेस्या घर भटके । पत मट्टा सम दानी पटके, क्षत्रिय वन वास मिल सटके ।

--ऊ का.

भवरजाळ—स० पु० यो० [ग० भ्रम + जाल] १ सामारिक भगडा, वखेडा या सामाजिक बंधन ।

२ उलझन ।

उ०—तपसी ती भूडा भवरजाळ मे फसियो । आपरा मन री वात वो खुद हाल तक सावळ नी समझियो ती आने कीकर सुभट सम-भावे । वो ती फगत आ वात जाण के आज उणरा मन री गत भूडी वदली ।—फुलवाडी

३ छल, कपट ।

उ०—मिनवां रं भवरजाळ मे लुगाया इण भात अळ्ळुझियोडी रं वै के वै हजार वरस सायै रं वै तो ई आपरा घणी न सावळ पिछाण नीं सकै । घणी रा साचला रूप री ठोड लुगाई सगळी ऊमर

घणी रा भरम नै पूजै ।—फुलवाडी

४ अशुभ रग का घोडा ।

रु० भे०—भमरजाळ, भमरजाळ, भम्मरजाळ, भवरजाळ ।

भवरतिलक—स० पु० सीस पर वाघने का एक आभूषण ।

रु० भे०—भवरतिलक ।

भवरभीख—स० स्त्री० [स० भ्रमर+भिक्षा] भौरे के समान घूम-घूम कर मांगी जाने वाली भिक्षा ।

रु० भे०—भमरभीख, भमरभीख, भम्मरभीख, भवरभीख ।

भवराई—स० स्त्री० [राज० भवर+आई] शीकीनपन, छैलछवीलापन ।

रु० भे०—भमराई, भवराई, भमराई, भवराई ।

भवरामाटी—स० स्त्री० यो० [स० भ्रमर+मृत्तिका] १ भौरी द्वारा अपने प्रसवकाल में अण्डों की सुरक्षा हेतु दीवारों व अथेरी जगहों पर बनाया जाने वाला मिट्टी का घर ।

२ उक्त घर की मिट्टी, जो औषधियों के काम भी आती है ।

वि० वि०—प्राचीन धारणा के अनुसार भौरी द्वारा इस मिट्टी के घर में रखे गये कीट को अपना अडा मानकर प्रेम से सेने के कारण वह कीट भौरे में परिवर्तित हो जाता है । किन्तु नवीन खोज से यह स्पष्ट हो गया है कि यह कीट भौरी अण्डों के साथ अपने बच्चों के भोजन निमित्त रखती है । जिससे खुराक पाकर बड़े होने पर बच्चे उस मिट्टी के घर को फोड़कर बाहर निकल जाते हैं ।

रु० भे०—भमरामाटी, भौरामाटी, भमरामाटी, भम्मरामाटी, भवरामाटी ।

भवराळ—देखो 'भवराळी' (मह, रु भे)

उ०—तू गहलो तू सानियो, तू भोळो भवराळ । मूळ मघा में तू हुश्रो, तातै सरस लवाळ ।—गजउद्धार

भवराळी—वि० [स० भ्रम +आलुच] (स्त्री० भवराळी) १ गोलाकार, या चक्करदार ।

उ०—चूडो चमकीलो कचवीडी चमकै, दामण दमकीलो दामणी सी दमकै । भवरघो फुरणी में भवराळी भळकै, पाघर वहती रा पसवाडा पळकै ।—ऊ का

[स० भ्रमर+आलुच] २ इयाम वर्ण वाला, काला ।

रु० भे०—भमराळी, भमराळी, भवराळी ।

मह०—भमराळ, भवराळ, भमराळ ।

भवरियो, भवरघो—१ ढूढाढ प्रान्त में लडकी को विदा करते समय गाया जाने वाला लोक गीत ।

२ देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ चूडो चमकीलो कच वीडी चमकै, दामण दमकीलो दामणी सी दमकै । भवरघो फुरणी में भवराळी भळकै, पाघर वहती रा पसवाडा पळकै ।—ऊ का

उ०—२ हू थाने पूछा वात, हस हस पूछां वात हगामी डोला रे ।

भवरियो छेलो मारे झमीखेह घणी हो राज ।—लो. गी

उ०—३ भवरिया रै जलमियां अर्व गाव में ई कमाई करणा सू पूग नी आर्व । दिसावर जाणो पडैला ।—फुलवाडी

३ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रु भे)

भवरी—स० स्त्री०—१ टिटहरी पक्षी, टीटोडी ।

उ०—भारत में भवरी का डडा ता पर गज का घट धरै रे ।

—अज्ञात

२ देखो 'भवर' (स्त्री०) (रु भे)

३ देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

४ देखो 'भ्रमर' (स्त्री०)

रु० भे०—भमरी ।

भवरी—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ फूलें ब्रछ हमेस भणकता भवरा छाजै । पोयण वारी मास सारसा पगत राजै । नम नाखै असमान मोरिया इमरत घोळै । मन री मूगी रैण चानणी घोळ उमोळै ।—मेघ

उ०—२ मछली रस जिह्वा के लालच, कटक पास मरीजिये ।

भवरा घ्राणवसी दुख पावै, फूला माये कमलीजिये ।

—श्री सुखरामजी महाराज

भवळ—स० स्त्री० [स० भ्रम] १ चक्कर लगाने की क्रिया या ढग ।

२ चक्कर ।

उ०—लिलाड सू घग-घग लोई री राती धार छूटी । भवळ खाय नै उण री घणी तडाच देती री जमी आय पड्यो ।—फुलवाडी

रु० भे०—भंमळ, भवण, भमळ, भवण ।

भवहारो—१ देखो 'भ्रू' (रु भे)

उ०—उपर जिया घनूख उणिहारै, भमर वाक पकति भवहारै । मौसर भमर अहर पर वाळक, बिहुवै जुलफ जाण अहि वाळक ।

—सू प्र

२ देखो 'भवारी' (रु भे)

भवाडणो, भवाडवो—देखो 'भवाणी, भवावो' (रु भे)

भवाडणहार, हारो (हारी), भवाडणियो—वि० ।

भवाडिओडो, भवाडियोडो, भवाडघोडो—भू० का० कृ० ।

भवाडीजणो, भवाडीजवो—कर्म वा० ।

भवाडियोडो—देखो 'भवायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भवाडियोडी)

भवाणो, भवावो—क्रि० स० [भवणो क्रि० का प्रे० रु०] १ घुमाना, फिराना ।

उ०—कागला रै भवाय नै कांमडी री मैली जको कागली ती उठै ई ठाय रैगो ।—फुलवाडी

२ चक्कर खिलाना ।

भवाणहार, हारो (हारी), भवाणियो—वि० ।

भवायोडो—भू० का० कृ० ।

भवाईजणो, भवाईजवो—कर्म वा० ।



—र ञ सी

भउरी—१ देखो 'भवर' (रु भे)

२ देखो 'भ्रमर' (रु भे)

३ देखो 'भ्रू' (रु भे)

भउ—१ देखो 'भय' (रु भे)

उ०—जिहा गरुया तिहा गाजरण, कुलीन तिहा लांछण, भाण्ड

भउ, भूमि क्षय, चोरी तु दोरी, चढण तु पडण ।—व स

२ देखो 'बहू' (रु भे)

भउजाई—देखो 'भोजाई' (रु भे)

उ०—एक दिवस सुन्दर रूप देखी, राजा चित्त विचारयउ ।

भोगवु जिम तिम करी भउजाई, राज करई तिहा राजियउ ।

—स. कु

भऊ—देखी 'बहू' (रु भे)

उ०—मत बोलो ए भऊ बडा सा बोल म्हारै जायोडो थानै ल्याया छै, मोल म्हारा नवल बना सरदार बना मुखडा रो माडण नथ ल्याज्यो ।—लो गी

भक—स० स्त्री० [अनु०] १ सहसा या रह-रह कर तग मुह के वरतन से द्रव पदार्थ निकलने या भरा जाने पर अथवा जलने या वेग से धुआ निकलने से उत्पन्न ध्वनि ।

२ वकवाद ।

क्रि० वि०—३ शीघ्र, तत्काल ।

रु० भे०—भक्ख, भख ।

४ देखो 'भक्ष' (रु भे)

भकक्षा—स० स्त्री०—नक्षत्र कक्षा ।

मि० भग (१)

भकज—वि० [स० भक्षक] भक्षण करने वाला ।

भकणी, भकवी—१ देखो 'भक्षणी, भक्षवी' (रु भे)

२ देखो 'भाखणी, भाखवी' (रु भे)

भकणहार, हारो (हारी), भकणियो—वि० ।

भकियोडो, भकियोडो, भकियोडो—भू० का० कृ० ।

भकीजणी, भकीजवी—कर्म वा० ।

भकियोडो—भू० का० कृ०—१ देखो 'भक्षियोडो' (रु भे) २ देखो 'भाखियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भकियोडो)

भकत—देखो 'भक्त' (रु भे)

भकतदास—देखो 'भक्तदास' (रु भे)

भकतवधूळ—देखो 'भक्तवत्सल' (रु भे)

भकती—देखो 'भक्ति' (रु भे)

उ०—तिका यण बार अवतार सकती तणा, भाव भकती तणा घणा-भूका । फजर ग्रहराण तप तेज मुख फाविया, डाविया सूळ 'वीकाण' ठूका ।—मे म

भकतीकर—देखो 'भक्तिकर' (रु भे)

भकतीसूतर—देखो 'भक्तिसूत्र' (रु भे)

भकभकणी, भकभकवी—क्रि० अ० [अनु०] किसी तग मुह के वरतन से पानी निकालते या डालते समय अथवा अग्नि वेग से जलते अथवा बुझते समय धूप से भक-भक की ध्वनि होना ।

उ०—धूपिया धकै चिटका धिरत धकवकै, वादणी डकडकै तरफ वामी । वकवकै वीर जोगण छकै दो वखत, भकभकै हुतामण हेत भाभी ।—मे म

भकभकणहार, हारो (हारी), भकभकणियो—वि० ।

भकभकियोडो, भकभकियोडो, भकभकियोडो—भू० का० कृ० ।

भकभकीजणी, भकभकीजवी—भाव वा० ।

भकभकणी, भकभकवी—रु० भे० ।

भकभक्क—देखो 'भक (१)' (रु भे.)

उ०—हव पड लडक्क थडक्क हलै, गग भल्ल कडक तडक्क खुलै ।

भकभक्क रुधक्क खलक्क भल, दक दक्क वकै जव थक्क दल ।—पा प्र

भकभक्कणी, भकभक्कवी—देखो 'भकभक्कणी, भकभक्कवी' (रु भे)

भकभक्कण हार हारो (हारी), भकभक्कणियो—वि० ।

भकभक्कियोडो, भकभक्कियोडो, भकभक्कियोडो—भू० का० कृ० ।

भकभक्कीजणी, भकभक्कीजवी—भाव वा० ।

भकभूक—स० पु० [अनु०] महीन चूर्ण, चूरा ।

भकभूर—स० पु०—१ नाश ।

उ०—१ धव के धवि वे घन घूर घरे, कव के भव के भ्रम दूर करे ।

भव-वधन का भकभूर करै, चय ससय का चकचूर करै ।—ऊ का

उ०—२ हु गजु हय गय सुमट, भाजि करु भकभूर । सतावीस

लख दल सहित, साहि करु चकचूर ।—प च चौ.

२ ऐसा चूर्ण जिसमे कोई-कोई मोटे कण भी हो ।

वि०—१ कायर, डरपोक ।

उ०—भयचक हुआ अनेक महाभड, दिख री भाज गई भकभूर ।

अयो (आयो) दिख रइ घट ऊपर, केवा मागण वडउ करूर ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ धूल पडने के कारण जिसका रंग घूसरित या मटमैला हो गया

हो, घूसरित ।

रु० भे०—भखभूर ।

अल्पा०—भकभूरी भखभूरी ।

भकभूरी—देखो 'भखभूरी' (रु भे)

भकभूरी—स० पु०—१ धूल से मिलता-जुलता रंग ।

२ देखो 'भकभूर' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ ऊचा नीचा मे आगळ नह ईलै, भागळ भकभूरा भेळा मड

भीलै । मगण मगण तू पद पद रद पीसै, डूमा दैसोता दळ ओसळ

दीसै ।—ऊ का



(स्त्री० भकभूरी)

उ०—२ टोळे से मिर पर पगडी का वध, लकडी की खूटी पर मकडी का फद। भकभूरा भूरा सा जूडा सा केम, न कीका मुछा कै भादु का भेस।—दुग्गादत्त वारहठ

र० भे०—भकभूरी।

भकल, भकळ—क्रि० वि० [अनु०] १ अपशब्द।

क्रि० प्र०—कहणी, बोलणी।

२ देखो 'भक'।

भकाऊ—स० पु०—एक प्रकार का कल्पित और भीषण या विकराल जन्तु या प्राणी, जिसके नाम का उपयोग किसी को बहुत अधिक भयभीत करने के लिये किया जाता है। होवा।

भकाणी, भकावी—१ देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

२ देखो 'वहकाणी, वहकावी' (रु. भे)

भकाणहार, हारी (हारी), भकाणियो—वि०।

भकायोडी—भू० का० कृ०।

भकाईजणी, भकाईजवी—कर्म वा०।

भकायोडी—१ देखो 'भवायोडी' (रु भे)

२ देखो 'वहकायोडी' (रु. भे)

(स्त्री० भकायोडी)

भकार—स० पु०—१ 'भ' नागक अक्षर।

२ छन्द साम्प्र मे 'भगण' के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द।

भकारणी, भकारघी—देखो 'वाकारणी, वाकारवी' (रु भे)

भकारणहार, हारी (हारी), भकारणियो—वि०।

भकारिओडी, भकारियोडी, भकारघोडी—भू० का० कृ०।

भकारीजणी, भकारीजवी—कर्म वा०।

भकारियोडी—देखो 'वाकारियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भकारियोडी)

भकारी—देखो 'भवावी' (रु भे)

भकाघटी—देखो 'भवाघटी' (रु भे)

भकुड—देखो 'भगूट' (रु भे)

उ०—कोई ऐसा कूजरा, अति प्रचंड अद्भूत। रहै भकुडे पैहनै, जाण वणै अद्भूत।—गज उद्धार

भकूट—स० पु० [स०] विवाह की गणना मे शुभ माने जाने वाली राशियों का समूह।

(फनित ज्योतिष)

भकूटी—स० पु०—तोष आदि मे वस्ती ठूसने का एक मोटा गज।

भकूणी, भकूघी—देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

२ देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

भकूणहार, हारी (हारी), भकूणियो—वि०।

भकूओडी, भकूघोटी, भकूघोडी—भू० का० कृ०।

भक्कीजणी, भक्कीजवी—कर्म वा०।

भक्कियोडी—१ देखो 'भक्कियोडी' (रु भे)

२ देखो 'भक्कियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भक्कियोडी)

भक्ख—देखो 'भक्ष' (रु भे)

उ०—१ जग जाळ असराळ छळे इन भक्ख सदा भव सिंधु मही।

नभ नाळ तताळ घराळ मिळे, त्रयलोक सुरप्पति विद्धि सही।

—करुणा सागर

उ०—२ मये तै वार किता महाराण, सुरा ले दीध अग्रत सुजाण।

हणे नख वार किता हरणवख, भवानि भैरव दीघा भक्ख।—ह र

उ०—३ बैताळ वीर मिलिया विहद, सीकौतरि साकणि महा सद्।

मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख, जबक्क रीछ वहुाक जक्ख।

—गुरु वं

भक्खणी, भक्खवी—क्रि० स०—१ देखो 'भक्षणी, भक्षवी' (रु भे)

उ०—१ कमध 'राम' केहरी, 'रूप' बोले रज रक्खण। भाव सिंध

'दलमाह', 'अजन' 'सुन्दर' अरि भक्खण।—रा रु

उ०—२ भोळै परत्र जम भूप रै, पिढ जाणै अहि पाखिया। विण

सुरसवध भक्खी विखम, अघ कध उपडाखिया।—सू प्र.

२ देखो 'भाखणी, भाखवी' (रु भे)

उ०—पुणै कमण तर पत्र भ्रम माया कुण भक्खै। मह उत्तर

पथ माप आप लहरा कुण अक्खै।—र ज प्र

भक्खणहार, हारी (हारी), भक्खणियो—वि०।

भक्खिओडी, भक्खियोडी, भक्खघोडी—भू० का० कृ०।

भक्खीजणी, भक्खीजवी—कर्म वा०।

भक्खर, भक्खरघ—१ देखो 'भाखर' (रु भे.)

उ०—१ सपेत दत अग ऐ, घटाक पथ वग ऐ। घजा घैवगरां

सिरै, भमै क पख भक्खरे।—गुरु व

उ०—२ फावत गज, फररत घज। गुडि गैमरय, किरि भक्खरय।

—गुरु व.

२ देखो 'भाखरोत' (रु भे)

उ०—रिणमल इक जोधा अरै अखैरज एक एक लख पखर ए।

चापा चत्रवाह अनड चलता, 'परवत' 'डूगर' 'गर' 'भक्खर ए'

—गुरु व

३ देखो 'भास्कर' (रु. भे)

भक्खरी—स० स्त्री०—१ एक प्रकार की रोटी विशेष।

र० भे०—भक्खरी।

२ देखो 'भाखर' (अल्पा, रु भे)

भक्खियोडी—१ देखो 'भक्कियोडी' (रु भे)

२ देखो 'भक्कियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भक्कियोडी)

भक्ती—देखो 'भक्ती' (रु भे)

भक्त-वि० [स० भक्त] १ किसी पर भक्ति एवं श्रद्धा रखने वाला ।

२ किसी का अनुसरण करने वाला, अनुयायी ।

३ किसी का पक्ष लेने वाला, पक्षपाती ।

स० पु०—१ भोजन ।

२ वह जो श्रद्धा से किसी की उपासना करता हो या पूरी निष्ठा रखता हो ।

उ०—आए आए जी महाराज आए, निज भक्तन के काज बनाए ।

तज वैकूठ तज्यो गरुडासन, पवन वेग उठ घाए ।—मीरा

३ वह जो धार्मिक वृत्ति रखता हो तथा मास-मदिरा का उपयोग हेय समझता हो ।

रु० भे०—भक्त, भगत, भत्त ।

भक्तता-स० स्त्री० [स० भक्ति] भक्ति करने की क्रिया या भाव ।

भक्ततारणतरण-वि० यौ० [स०] भक्तों का उद्धार करने वाला ।

स० पु०—१ ईश्वर ।

२ गरुड । (डि को ३०)

रु० भे०—भक्ततारणतरण ।

भक्तदास-स० पु० [स०] वह भक्त जिसे अपने सेव्य या स्वामी से भोजन-कपड़ा मिलता हो ।

रु० भे०—भक्तदास, भगतदास ।

भक्तपरायण-स० पु०—भक्तों का पालन करने वाला, ईश्वर ।

रु० भे०—भगतपरायण ।

भक्तवच्छल, भक्तवत्सल—देखो 'भक्तवत्सल' (रु भे)

उ०—क्षुद्र घटिका कटि तट सोभित, नूपुर सवद रसाळ । मीरा के प्रभू सतन सुखदाई, भक्तवच्छल गोपाळ ।—मीरा

भक्तराक्षस-स० पु० [स०] रावण का भाई विभीषण जो श्री रामचन्द्रजी का भक्त था ।

रु० भे०—भगतराक्षस ।

भक्तवच्छल, भक्तवत्सल-वि० [स० भक्तवत्सल] भक्तों पर दया करने वाला, भक्तों पर स्नेह रखने वाला ।

रु० भे०—भक्तवच्छल, भक्तवत्सल, भक्तवच्छल, भक्तवच्छल, भगतवच्छल, भगतवच्छल, भगतवच्छल, भगतवच्छल, भगतवच्छल, भगतावच्छल, भगतावच्छल, भगतिवच्छल ।

भक्ततारणतरण—देखो 'भक्ततारणतरण' (रु भे)

भक्ति-स० स्त्री० [स० भक्त] १ वटवारा, वाट । २ भिन्नता, पृथक्ता । ३ हिस्सा, विभाग, अंश । ४ अनुराग, श्रद्धा । ५ सम्मान, सत्कार, सेवा । ६ मान-प्रदर्शन । ७ सजावट । ८ भोजन ।

उ०—१ फूलजी भक्ति जीमिन चढि पधारिया छै ।

—लाखै फ़लाणी री बात ।

उ०—२ साहरा उठा रा चढिया पूरणमल नू लेहीज आया ।

ढूढाड माहै आय नै उठै पूरणमल नू भक्ति कर घोडो दै अर विदा कियो ।—नैरासी

६ भात ।

१० उवाला हुआ कोई भी भोज्य पदार्थ ।

स० स्त्री० [स० भक्ति] ११ किसी के प्रति होने वाली श्रद्धा, विश्वास या निष्ठा ।

१२ उक्त के फल स्वरूप होने वाला स्नेह, अनुराग या की जाने वाली सेवा-सुश्रूषा ।

१३ धार्मिक क्षेत्र में भगवान के गुण महिमा आदि श्रवण करके सत्त्व गुण के उद्रेकवश मन द्रवीभूत होकर भगवान के प्रति श्रद्धा-छिन्न तैलघारा के समान चिन्तन घारा में लीन होने की अवस्था ।

उ०—भक्ति तो प्रह्लाद की सी, साच उर में धरै । भक्ति के वस स्याम सुंदर, सिंह को वपु धरै ।—मीरा

वि० वि०—देवर्षि नारद ने भगवान के प्रति एकनिष्ठ प्रेम को भक्ति की संज्ञा दी है । शाण्डिल्य के अनुसार ईश्वर के प्रति ऐकान्तिक अनुराग ही भक्ति है । उन्होंने अपने भक्ति-सूत्र में तीन प्रकार की भक्ति कही है—सात्विकी, राजसी, एवं तामसी । श्री रूप गोस्वामी ने भक्ति के स्वरूप या लक्षण का निर्णय करते हुए भक्ति को चार भागों में विभक्त किया है—सामान्य-भक्ति, साधन-भक्ति, भाव-भक्ति एवं प्रेम-भक्ति । यह भक्ति का सूक्ष्म विभाग है । स्थूलतः भक्ति दो प्रकार की होती है—साधन या वैधी भक्ति, और परा या प्रेम भक्ति । शास्त्र विधि के अनुसार श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वन्दन, दाम्प्य, सख्य और आत्म निवेदन, ये नौ प्रकार की भक्ति कही गई है जिसे नवधा भक्ति भी कहते हैं ।

१४ साहित्य में ध्वनि, जिसे कुछ लोग गीण और लक्षणा-गम्य मानते हैं ।

१५ छन्द-शास्त्र में एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण और अन्त में गुरु होता है ।

१६ जैन मतानुसार वह वचन जिसमें निरतिराय आनन्द हो और जो सर्वप्रिय, प्रयोजन विशिष्ट तथा वितृष्णा का उदय कारक हो ।

१७ नौ की संख्या । \* (डि को)

रु० भे०—भक्ती, भगत, भगति, भगती, भत्ति ।

भक्तिकर-वि० [स०] भक्ति के योग्य, जिससे भक्ति उत्पन्न हो ।

रु० भे०—भक्तीकर, भगतीकर ।

भक्तिमारग-स० पु० [स० भक्ति + मार्ग] भक्ति का पथ, भक्ति का अनुकरण ।

उ०—सदा साधु सेवा करती हू, सुमरण ध्यान चित करती हू ।

भक्तिमारग दासी को दिखाउ, मीरा को प्रभु साची दासी बनाओ ।

—मीरा

रु० भे०—भगतिमारग ।



३ देखो 'भखणी, भखवी' (रु भे)

उ०—सो चार ही वेद भखे । जद सो मोहरा देन सिवलाल राम-  
वगस न लीधो ।—नैणसी

भखणहार, हारो (हारी), भखणियो—वि० ।

भखिओडो, भखियोडो, भखोडो—भू० का० कृ० ।

भखीजणो, भखीजवो—कर्म वा० ।

भखपनग—स० पु० [स० पन्नग + भक्षक] मयूर, मोर । (अ मा)

भखभूर—देखो 'भकभूर' (रु भे)

उ०—वाप-वेटी दोनू रजो सू भखभूर व्हियोडा हा ।—फुलवाडी

भखभूरी—स० स्त्री० यो० [दे०] भोजन की चिन्ता ।

उ०—भक्ति हेतु कोई भक्त पठाया, आप्र अगाध यहा नहि आया ।  
पहरघा भेख मिटी भखभूरी, नंडा राम वतावै दूरी ।—ह पु वा  
रु० भे०—भकभूरी ।

भखभूरी—१ देखो 'भकभूरी' (रु भे)

२ देखो 'भकभूर' (अल्पा, रु भे)

(स्त्री० भखभूरी)

भखमजार—स० पु० [म० मार्जार + भक्ष्य] चूहा । (अ मा)

भखरी—१ देखो 'भाखर' (अल्पा, रु भे)

उ०—ताहरा सारा चढ तयार हुवा और हालिया । घडी दोय दिन  
थका उण भखरी तळे जा ऊभा रहिया ।

—गोपालदास गौड री वारता

२ देखो 'भखरी' (रु भे)

भखाडणो, भखाडयो—१ देखो 'भक्षाणो, भक्षावो' (रु भे)

२ देखो 'वहकाणी, वहकावो' (रु भे)

भखाडणहार, हारो (हारी), भखाडणियो—वि० ।

भखाडिओडो, भखाडियोडो, भखाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भखाडोजणो, भखाडोजवो—कर्म वा० ।

भखाडियोडो—१ देखो 'भक्षायोडो' (रु भे)

२ देखो 'वहकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भखाडियोडो)

भखाणी, भखावो—१ देखो 'भक्षाणी, भक्षावो' (रु भे)

२ देखो 'वहकाणी, वहकावो' (रु भे)

उ०—१ ताहरा त्रिभुवण सी री भाई पदमसी हुतो, तियै नू  
भखायो—'तू त्रिभुवण सी नू मारै ती तोनू टीकी देवा ।'—नैणसी

उ०—तठा पछे वरस २ नवाव महावतखान दिखण परवेज रै  
मुहडा आगै थो सु पातसाह जाहागीर नु खुरासाणीये भखाई नै  
उठा सु उरो तेडायो ।—नैणसी

भखाणहार, हारो (हारी), भखाणियो—वि० ।

भखायोडो—भू० का० कृ० ।

भखाईजणो, भखाईजवो—कर्म वा० ।

भकाणी, भकावो, भखाडणी, भखाडवो, भखावणी, भखाववो

—रु० भे० ।

भखायोडो—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ, बुलाया हुआ ।

२ देखो 'भक्षायोडो' (रु भे)

३ देखो 'वहकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भखायोडो)

भखार—स० पु०—देखो 'भखारी' (मह, रु भे)

उ०—१ किंदणा री भभक सू उण री माथो फाटण लागग्यो ।

आख्या आडी अवारी आयगी । वो भवळ खाय नै भखार रै माय  
गुडग्यो ।—फुलवाडी

उ०—२ अत-घन भरघा अे भखार सदा अे सुरगो घर वाप री जी  
म्हारा राज ।—लो गी

भखारणो, भखारवो—देखो 'वाकारणी, वाकारवो' (रु भे)

भखारणहार, हारो (हारी), भखारणियो—वि० ।

भखारिओडो, भखारियोडो, भखारयोडो—भू० का० कृ० ।

भखारीजणो, भखारीजवो—कर्म वा० ।

भखारियोडो—देखो 'वाकारियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भखारियोडो)

भखारी—स० स्त्री० [स० भक्षागार] अनाज ईधन आदि रखने का  
अधेरा कोठा या एक प्रकार का छोटा कमरा ।

उ०—१ रोडा पत्थर ईंट, चिपावै माटी गारै, कोकर खोरा खडी,  
वाटडी सचै सारै । मुलक वमावण हार, चिणावै चेजा भारी, दूढ़ा  
पडवा साळ, भखारी भीत तिवारी ।—दमदेव

उ०—२ लागतै चैत भखारिया भरणी सरु वही जकी वैमाख  
उतरता ताई भरीजती गी ।

रु० भे०—वखारी, भकारी, भाखारी ।

मह०—वखर, वखार, वखारो, वाखार, वाखारी, भखार, भखारी,  
वखर ।

भखारी—देखो 'भखारी' (मह, रु भे)

भखावटो—स० पु०—वहामुहूर्त, उपाकाल ।

उ०—हाथ मूडा घोया पछे आज राजी राजी कलेवो करियो । पछ  
हळ जोत नै भखावट-भखावट ई वहीर व्हेगी ।—फुलवाडी

रु० भे०—भकावटो, भगावटो, भखावटो, भाखोटी, भागोटी ।

भखावणो, भखाववो—१ देखो 'भक्षाणी, भक्षावो' (रु भे)

२ देखो 'वहकाणी, वहकावो' (रु भे)

उ०—कोई राज री खबर लयी नही । परधान वीकमसी तिको  
सूक भाडा लै आप री काम करै । उपजै सु सोह खाय जाय, थानू  
वयू दै नही ।' इण भात कवरा नू भखावै छै ।—नैणसी

भखावणहार, हारो (हारी), भखावणियो—वि० ।

भखाविओडो, भखावियोडो, भखावयोडो—भू० का० कृ० ।

उ०—३ ताह्या भगत तयार वुट । ताहारा काही—कूबर जी । ये पधारी, भगत प्यारोणे ।—नेणुची

उ०—४ नैहो आयो थो सू जाणियो-‘लाखे सू भिळता जावा ।  
सू उठै आयो । लाखै घणी आगता सागता कीवी । भगत कीवी ।  
—नैणमी

स०—५ मोटो पह घाराष करे महि, मोटो गढ लीजता मुओ ।  
जोय हरि भगत तुआळी ‘जैमल,’ हरि सारीख प्रताप हुओ ।  
—जयमल मेढतिया री गीत

उ०—६ भगत-बछळ मोदै भगत, भाज परा सह भ्रम्म । मूक  
तणा क्रम भेटवा, कथू तुहाळा क्रम्म ।—ह र

भगतणी, भगतवो—देखो ‘भुगताणी, भुगतवो’ (रू भे )  
भगतणहार, हारो (हारी), भगतणियो—वि० ।  
भगतिओडो, भगतियोडो, भगतयोडो—भू० का० कृ० ।  
भगतीजणी, भगतीजवो—भाव वा० ।

भगतदास—देखो ‘भक्तदाम’ (रू भे )  
भगतपरायण—देखो ‘भक्तपरायण’ (रू भे )  
भगतबछळ, भगतबछळ—देखो ‘भक्तवत्सल’ (रू भे )  
उ०—भगतबछळ मो दै भगत, भाज परा सह भ्रम्म । मूक तणा  
क्रम भेटवा, कथू तुहाळा क्रम्म ।—ह र  
भगतमाळ—स० स्त्री० [स० भक्तमाला] वह पुस्तक जिसमे वैष्णव भक्तों  
का चरित्र वर्णित हो ।

भगतराकस—देखो ‘भक्तराक्षक’ (रू भे )  
उ०—भगतराकस भेद भाले, चक्रवरवा वयण चाले । दनुज सुत  
देवी दवाले, जग समाले जोष ।—र रू  
भगतबछळ, भगतबछळ, भगतबिछळ—देखो ‘भक्तवत्सल’ (रू भे )  
उ०—१ भव पाप भव दुख भरम भजण भगतबछळ भूवर ।  
देवकीनदन मुगतिदायक, देवरूप दमोदर ।—पि प्र  
उ०—२ जगत कहै सहि दसरथ जायो, भविगत घारी नाम  
अजायो । जगपति तू सिगळा री जामी, भगतबछळ सहजा ना  
भामी ।—पी प्र  
उ०—३ भगतबिछळ नयण कमळ, जगत जनक धरण घनक ।  
सिर नमि नमि चरण पदम, ‘किसन’ रसण रघुवर भण ।

—र ज प्र

भगतापत, भगतापति—स० पु० [स० भक्त+पति] १ भक्तों का स्वामी,  
ईश्वर ।

उ०—रामचंद्र करसी रुडा, सगळी विध खीरग । भगतापत भूधर-  
घणी, चाढण रूप सुचग ।—ह र  
२ श्रीराम ।  
३ श्री विष्णु ।  
४ श्री कृष्ण ।

भगताबछन, भगताबछल—देखो ‘भक्तवत्सल’ (रू भे )  
उ०—निस दीह सीम ऊपर रही, महाराजा ‘अजमाल’ रै । भामणै

तूक भगताबछल, कर प्रणाम डडवत करै ।—गजउद्धार

भगताणी, भगतावो—क्रि० स०—१ कहना ।

२ भोजन कराना, खिलाना ।

३ उपभोग कराना ।

४ देखो ‘भुगताणी, भुगतावो’ (रू भे )

भगताणहार, हारो (हारी), भगताणियो—वि० ।

भगतायोडो—भू० का० कृ० ।

भगताईजणी, भगताईजवो—कर्म वा० ।

भगतायोडो—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ २ भोजन कराया हुआ,  
खिलाया हुआ ३ उपभोग कराया हुआ ४ देखो ‘भुगता-  
योडो’ (रू भे )  
(स्त्री० भगतायोडो)

भगतायणी, भगतावो—१ देखो ‘भगताणी, भगतावो’ (रू भे )

उ०—आव्या वीडा पानह तणा, आव्या लूगड थोडा घणा । इण  
परि राजा भगताविउ, हरख धरतु घरिआविउ ।—हीराणद सूरि  
२ देखो ‘भुगताणी, भुगतावो’ (रू भे )

उ०—माखणी भगताविया, मारु राग निपाइ । हूहा सदेसा-तणा,  
दीया तिया सिखाइ ।—ढो मा

भगतावणहार, हारो (हारी), भगतावणियो—वि० ।

भगताविओडो, भगतावियोडो, भगताव्योडो—भू० का० कृ० ।

भगतावीजणी, भगतावीजवो—कर्म वा० ।

भगतावियोडो—देखो ‘भगतायोडो’ (रू भे )

२ देखो ‘भुगतायोडो’ (रू भे )

(स्त्री० भगतावियोडो)

भगति—देखो ‘भक्ति’ (रू भे )

उ०—घरे ले जाइनै वडी भगति कीधी । हाथी तो राणै उदैसिध  
नू मेलिह दिया वारै ही ।—नान्है वाधेलै री वात

उ०—२ ओधि पणि भगति जीमि अर देवराजसर नू खडिया  
कैवासर थी आधा अर देवराजसर विचालै तेथ एक घाराळी मेह  
रौ आयो ।—द वि

उ०—३ स्त्रीपति भगति सकाज, सिध रिध सुवर नमो सकर सुत  
सुर अगिवाण समाज, खेस्त बुधि दीजिये गणैस्वर ।—सू प्र

उ०—४ पत्र अकखर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रम ततु त्रिधि  
अहोनिमि । मधुकर रसिक मु भगति मजरी, मुगति फूल फळ  
भुगति मिसि ।—बेलि

भगतिबछल—देखो ‘भक्तवत्सल’ (रू भे )

भगतिमारग—देखो ‘भक्तिमारग’ (रू भे )

भगतियोडो—देखो ‘भुगतियोडो’ (रू भे )

भगतियो—देखो ‘भगत’ (अल्पा, रू भे )

भगती—देखो ‘भक्ति’ (रू भे )



उ०—१ जितरै भगती जीमण म्हे पण आवा छा । आ वात कहि  
सीख दीवी ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ तपै भूम अम्मर हुय ताता, मुरभाई भगती पितु माता ।  
वागी भाट पिछम दिस वाता, बंक हुवौ सब देस विवाता ।

—ऊ का

उ०—३ कामी अर क्रोधी वेद विरोधी, परगट नरक पडदा है ।  
भगती नहि भोगा जुगत न जोगा, अद विच सत अडदा है ।

—ऊ का

उ०—४ इत्ता दिन श्री कोई खिलकौ व्हियो । घरवाळा री  
सगळी भगती निरफळ गी ।—फुलवाडी

भगतीकर—देखो 'भक्तिकर' (रू भे)

भगतीसूतर—देखो 'भक्तिसूत्र' (रू भे)

भगवड—स० स्त्री०—किसी सभाव्य सकट के कारण अचानक बहुत से  
रोगों के अस्त-व्यस्त होने की क्रिया, खलबली, हलचल ।

उ०—१ ज्यू-ज्यू चानणी नेढी आती गयी, फौज मे भगदड  
मचण लागी ।—वरसगाठ

उ०—२ भूलरा मे भगदड माची पण माची । चार पाचेंक साथ-  
णिया घोडा री फेट मे आयगी ।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—मचणी, माचणी ।

रू० भे०—भगड ।

भगदत्त, भगदत्तु—स० पु० [स० भगदत्त] प्राचीन काल का एक राजा  
जिसका राज्य प्राग्योतिपपुर मे था ।

उ०—कवरव नइ दळि गुरु गगेउ कपु दुरयोघन सल्यु मिलेउ ।  
सकुनि दुसामण जयद्रथु पुशु गरूड भूरिस्त्रवा भगदत्तु ।

—सालिभद्र सूरि

रू० भे०—भगदत्त ।

भगदत्त—स० पु० [स० दिवस + भग] सूर्य । (ना मा)

भगनपाद—देखो 'भगनपाद' (रू भे)

भगनाळ—स० स्त्री० यी० [स० भग + नालिका] चौडी या वडी नाली ।

उ०—हाथ छडी पग दोरडी, वाघइ कोटि विसाल । पयोउर पेह  
जइ अडइ, भग थाइ भगनाळ ।—मा का प्र

भगनी—देखो 'भगिनि' (रू भे)

उ०—भूवा भगनी रा थळवट भिखियारी, घन्यां कन्या रा गळकट  
हठधारी । राफा भरणावै गिरणावै रोता, गता निरणावै करमा  
रा गोता ।—ऊ का

भगनी—देखो 'भगनी' (रू भे)

भगयुग—स० पु० यी०—वृहस्पति के बारह युगो मे से अन्तिम युग ।

भगळ—स० पु० [देशज] १ आडवर, ढोंग ।

उ०—भगळ भागवत पेट भरण री कुटिल कहाणी रे । सत्यारथ  
सुणिया विन साप्रत होसी हाणी रे ।—ऊ का

२ ऐंद्रजालिक खेल ।

उ०—मसतक्क हाथ पग जड मुगळ, तेग अरण भक बोळ तिम ।  
'विलद रा जोध दमगळ विचे, जुडे करु नट भगळ जिम ।

—सू प्र

३ कुप्रवन्ध, अव्यवस्था ।

उ०—रावळै गरक प्रेतण रमै, होळी जिसा हगाम रे । 'मोकमा'  
कमध मोटा मिनख, गरक भगळ मे गाम रे ।—अरजुणजी वारहठ  
४ फूहड ।

५ पानी मे एक दम भपटकर मछली पकडने वाला एक जानवर  
विशेष ।

६ छल, कपट, धोखा ।

भगळखानी—स० पु० यी०—१ अव्यवस्था, कुप्रवन्ध ।

२ ऐंद्रजालिक खेल ।

भगळखेल—स० पु० यी०—ऐंद्रजालिक खेल ।

उ०—कर कर पर-उपकार पुन, तन प्राचत कपणा । संसारी दा  
भगळखेल, जाणै जिम सपणा ।—र ज प्र

रू० भे०—भागळखेल ।

भगळविद्या—स० स्त्री० यी०—इन्द्रजाल, मायाजाल ।

उ०—ससार सकळ भगळविद्या सकळ, खोट साच दीसै खरी ।  
जाए न किणी लखियो 'जगा', ऐसी लेख अलखरी ।—ज खि

भगवत—देखो 'भगवत' (रू भे) (डि को)

उ०—अलख अजोनी आतमा, अचळ अनूप अनत । तू मारै तारै  
तुही, भिले-भिले भगवत ।—ऊ का

भगवती—देखो 'भगवती' (रू भे)

उ०—सुरसती तु ही भगवती सार ।—रामदान लाळस

भगवतीभरता—स० पु० [स० भगवत् + डीप + भर्तृ] शिव, शंकर ।  
(डि को)

भगवई—देखो 'भगवती' (रू भे)

उ०—चारण समण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सस्नेह अग्यानी ।  
ते छइ भगवई अग मा, किम मन आणइ रेह अग्यानी ।—वि. कु

भगवड—देखो 'भगवो' (रू भे)

उ०—मिर डाढी मूडी करी, भगवड लीधउ वेस । पग अणूहाण  
पकज जिसे' पथि पलिउ परदेसि ।—मा. का प्र

भगवट, भगवट्ट—स० स्त्री०—१ भागने की क्रिया या भाव ।

उ०—वहा राव रावळ बाद विवरजत, जोधकळह कृत जिका जुई ।  
वैरायता तुहारा भगवट, हव जाणै कुळवाट हुई ।

—महमदजी वारहठ

२ युद्ध मे पीठ दिखाने का भाव, पराजय, हार ।

३ भागने का रास्ता, या मार्ग ।

रू० भे०—भगवट, भगवट्ट, भगवाट, भगवाट ।

भगवत्-सं० पु० [सं० भगवत्+मतुप्] १ विष्णु ।

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—जोगी जग मे जोवत जती, साध सेवडे सोवत सती । ग्यानी गिरुत ईसी कू गती, भगवत यही यही भगवती ।—ऊ. का

३ शिव, शंकर ।

४ सूर्य ।

५ जैनियो के देवता, जिन देव ।

रू० भे०—भगवत् ।

भगवत्गीता—देखो 'भगवद्गीता' (रू भे )

उ०—स्रोवगवत्गीता हित सधार, स्त्रीकस्त्र 'अजन' हू कहै सार । नह देह तराँ मभ हू नरिंद, श्री 'अमो' जिकी जोघारण इद ।—सू प्र

भगवति, भगवती, भगवत्ती—सं० स्त्री० [सं० भगवत्+टीप्] १ देवी ।

उ०—१ जळ थळ खेचर जीव जगि, सारो मभ सगति । तो विण ध्रम क्रम न कियँ भगवति देह भगति ।—मा वचनिका

उ०—२ जोगी जग मे जोवत जती, साध सेवडे सोवत सती । ग्यानी गिरुत ईसी कू गती, भगवत यही यही भगवती ।—ऊ. का  
२ गौरी, पार्वती ।

३ सरस्वती ।

४ दुर्गा ।

उ०—वळ दँ दँ वाकरा, भणँ जय जय भगवत्ती । धारि रुधिर मद धार, छाक दीधी छत्रपत्ती ।—मे म

५ गंगा ।

रू० भे०—भगवती, भगवई, भगवति, भगवत्ती ।

भगवत्तीसूत्र—एक सूत्र का नाम जिसे विवाह पञ्चत्ती भी कहते हैं । (जैन)

उ०—पचम भगवत्तीसूत्र सुधन्न, पनर सहस सतसँ बावन्न । ग्याता धरम कथा अग छट्ट, हिवणा पच हजारे दिट्ट ।—घ व प्र

भगवत्ति, भगवत्ती—देखो 'भगवती' (रू भे )

उ०—भगवत्ति आबो भाई, मूभ मदत स्त्री महामाई ।

—मा वचनिका

भगवत्पदी—सं० स्त्री० [सं० भगवत्+पदी] गंगा ।

भगवद्गीता—सं० स्त्री० [सं० भगवद्+गीता] महाभारत के भीष्मपर्व के अठारह अध्यायों का एक प्रकरण जिसमें अर्जुन का मोह दूर करने के लिये युद्ध-स्थल में किए गए प्रश्नोत्तरो का वर्णन है ।

रू० भे०—भगवद्गीता, भागवद्गीता ।

भगवन, भगवन्न—सं० पु० [सं० भगवत्] १ लाक्षणिक अर्थ में पूजनीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त आदर सूचक शब्द ।

२ देखो 'भगवान्' (रू भे )

उ०—१ भल भगवन रा भोग, भीलणी रँ घर पाया । सरस सलूणा स्वाद, जका री किसी वढायाँ ।—दमदेव

उ०—२ जेणि मारग वखाणीइ, छहवि गड ते तन्न । तुभ मिलइ मुख जेहवू, ते जाणइ भगवन्न ।—मा का प्र

भगवान्—१ देखो 'भगवान्' (रू भे )

२ देखो 'भगवान्' (रू. भे ) (डि को.)

भगवान्-वि० [सं० भगवान्] (वत्) ऐश्वर्ययुक्त ।

सं० पु०—१ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा.)

उ०—जीहा जप जगदीसवर, घर धीरज भन व्यान । करमबध-निकरम-करण, भव-भजण भगवान् ।—ह र

२ शिव, शंकर ।

३ विष्णु ।

४ जिन ।

५ कार्तिकेय ।

६ सूर्य । (अ मा )

७ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति ।

रू० भे०—भगवान्, भगवान्, भगवान् ।

अल्पा०—भगवान्डी ।

भगवान्डी—देखो 'भगवान्' (अल्पा, रू. भे )

उ०—मोज चैत बैसाख व्यावा, भरग्यो घर भगवान्डी । आठ पो'र चौसट घडी मे, धोरी पूरँ धानडी ।—दसदेव

भगवाट—देखो 'भगवत्' (रू भे )

उ०—१ वाघ सुणावँ वाहरा, घण ज्यू ही घरराट । घावँ भागाँ लार नह, नह जावँ भगवाट ।—वाँ दा

उ०—२ पिंड, छड, घड तूटै पांचावत, थह लूविया विया गज-घाट । चाळि 'कसन' कहै अणिया चड, वेस कहै निकळि भगवाट ।

—करमसेन कल्याणोत कछवाहा री गीत

उ०—३ हैमरा गेमरां हुवँ हीसा-रवण, चासट ऊपरा 'माल'-चडियो । गोड बगाल खुरसाणदळ गजणी, पालटँ कोट भगवाट पडियो ।—राव मालदेव री गीत

उ०—४ एक गया भगवाट, सामि छळ मेल्हे कुळ छळ । हेक मुगति साजोत, गया भेदे रवि मडळ ।—गु रू व

भगवौ-वि०—गेरुए रग का ।

उ०—डुख सुख के कागज लिखू, माहे वोत सनेस । थे तो मन मानी नही, करसू भगवौ भेस ।—श्री हरिरामजी महाराज

सं० पु०—गेरुआ रग ।

मुहा०—भगवौ पै'रणी=सत्यास लेना ।

रू० भे०—भगवौ, भगवउ, भगवौ ।

भगवौ-भेस-सं० पु० यो०—सत्यास का देश ।

उ०—पकी सेर बै गेरु गाळी, करियो भगवौभेस । कर गुजरो वो चलयो आगरै, राम राखमी टेक ।—डूगजी जवारजी री छावली

भगवान्—देखो 'भगवान्' (रू भे )



भगसास्त्र—म० पु० [स० भग + शास्त्र] कामशास्त्र, कोकशास्त्र ।

भगांकुर—स० पु० [स० भग + अकुर] घवासीर नामक रोग ।

भगाण—देखो 'भगाण' (रू भे)

उ०—१ सहर उग्राहे सार वळ, मार सहे असुराण । डरे दिली डर खाग रे, पुर आगरे भगाण ।—रा रू.

उ०—२ जळनिघ सहळ जुआण, सांमा तू वेडा सजै । भैचकि पढै भगाण, मिसर घरव ऐराक मझ ।—बां दा

उ०—३ आया राठोड है खडे, प्रजा चढत अझडे । भगाण भोमिया ठरै, गया अलग ऊतरै ।—गु रू व

भगा—कि० वि०—लिए, वास्ते, निमित्त ।

भगाणो, भगावो—देखो 'भजाणो, भजावो' (रू भे)

उ०—पछै मोकळ रे माथे विस्वासघात, विचारियो जाणि चूडे चीतोड माथे चढि राव रणमाल नू मारि कुमार जोधा नू भगायो ।—व भा

भगाणहार, हारी (हारी), भगाणियो—वि० ।

भगायोडो—भू० का० कृ० ।

भगाईजणो, भगाईजवो—कर्म वा० ।

भगायोडो—देखो 'भजायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० भगायोडो)

भगारणो, भगारवो—देखो 'वधारणो, वधारवो' (रू भे)

भगाळ—म० स्त्री० [स० भगाल] आदमी की खोपडी ।

भगाळो—म० पु० [स० भगालिन्] खोपडी धारण करने वाला, शिव, महादेव ।

भगावटो—देखो 'भखावटो' (रू भे)

भगावणो, भगाववो—देखो 'भजाणो, भजावो' (रू भे)

उ०—१ लुआ रोग भगाविया, मुरवर पिनखां जेह । ऊपर दीसै स्याम रग, भीतर कचन देह ।—लू

उ०—२ अर वूदी रे एवज कुमार भोज बीजी ढाम दिवाइ दो ही भाडया रे वधियो विरोध भगावा ।—व भा

भगावणहार, हारी (हारी), भगावणियो—वि० ।

भगावियोडो, भगावियोडो, भगाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भगावोजणो, भगावोजवो—कर्म वा० ।

भगावियोडो—देखो 'भजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भगावियोडो)

भगिनी—म० स्त्री० [स०] बहन ।

रू० भे०—भगनी, भग्नी ।

भगिर, भगिरथ, भगिरथ्य—देखो 'भगीरथ' (रू भे)

उ०—१ हेरु हिमेर-गिर हुवै, मो भगिर वम भिगाळो । विघ जिण मह रघुवस, एक रघुनाथ उजाळो ।—र ज. प्र

उ०—२ देवी भगळा वोजळा रूप मध्ये, देवी अक्वळा सक्वळा वोम अध्ये । देवी सग्न सू उतरी सिव माथे, देवी सगर सुत हेम भगिरथ्य साथे ।—देवि.

भगी—स० स्त्री०—भागने की क्रिया या भाव, भगदड, खलवली ।

उ०—१ तिण सू उदैकरण रायमल सू जाय मिळियो । अख धरम करम देय कयो—म्हें रावजी री फौज मे सामल छा, पण भगडे री वखत भगी घातसा ।—द दा

उ०—२ चखा भ्रूह लगी जगी है गजा चाचरा चढी, चलै सगी दळा भगी पडता अचूक । वगी घडा सतारा रं जगी हौदां नीच 'चापै,' रगी' सिवै' सुरगी वरगी वार रूक ।—प्रभूदान मोतीसर रू० भे०—भग्नी ।

२ फूट ।

उ०—सु ईया आपस माहै वात कर फौज मे भग्नी घाती ।

—नैणसी

भगीरथ—स० पु० [स०] सूर्यवंशी अयोध्या नरेश दिलीप के पुत्र जिन्होंने घोर तपस्या करके स्वर्ग से गंगा नदी की अवतारना की थी ।

उ०—कहि जिण सुतण वीर वप केहो, जग जस प्रगट भगीरथ जेहो । जे सुत ब्रह्मस्व भूप करण जय, ते सुत भानुमानु तेजो-मय ।

—सू प्र

रू० भे०—भगिर, भगिरथ, भगिरथ्य, भागीरथ ।

भगुवो—देखो 'भगवो' (रू. भे)

उ०—उघडे जिरह कथा सिधा आवधा, भेख भगुवो हुवै रुहिर भाति । जिसी जोधा-हरी सोहियो महाजुघ, जिसा जोधार वणिवा जमाती ।—राव महेसदास राठोड री गीत

भगू—वि०—१ भागने वाला ।

२ भागा हुआ, डरपोक ।

रू० भे०—भगू ।

अल्पा०—भगेडी, भगोडी ।

भगेडी, भगोडो—देखो 'भगू' (अल्पा, रू भे.)

भगोळ—देखो 'भूगोळ' (रू भे)

भगोलो—स० पु०—ऊंची दीवारों का गहरा व गोलाकार किनारदार एक वर्तन विशेष ।

भगणो, भगवो—देखो 'भागणो, भागवो' (रू भे)

उ०—१ एक महरत सार भड, मातो तातो वाण । लगा हत्थो भगणो, या वग्गा आराण ।—रा रू

उ०—२ 'चापै' जेसी चरड, अनड माझी अडसाळी । भगिसर दाणवा, जेण भग्नी मालाळी ।—गु रू व

उ०—३ गज तजता पुळिया गिरो, स्वामी कामिम सग । दळ भग्नी दिलीस रो, जाण परवळ जग ।—व भा

भगणहार, हारी (हारी), भगणियो—वि० ।

भगिओडो, भगियोडो, भग्योडो—भू० का० कृ० ।

भगीजणो, भगीजवो—भाव वा० ।

भगावत—देखो 'भगवत' (रू भे)

उ०—वालहुउ ससोभउ रग वग, पइनउ पवग दइ त्रियो पग ।

काळासि चडिय दूगरउ कुत, भ्रगवा हुअउ किरि भगवत ।

—रा ज सी

भगर-स० पु०—१ कहूर ।

२ मोठ, खार आदि के फूल । (शेखावाटी)

भगवान—देखो 'भगवान' (रू भे)

उ०—भगवान गोविंद गोपाळ भेळा, वडा वित्त फले दुजा तेण वेळा । वागे भालियो ब्रजसेरी विचाळे, वळे फेरिओ आगणे नदवाळे ।—ना द

भग्नी—देखो 'भगी' (रू भे)

भग्नू—देखो 'भग्नू' (रू भे)

भग्न-वि० [स०] १ टूटा हुआ, खडित ।

२ पराजित, हारा हुआ ।

भग्नदूत—प्राचीन काल में हारी हुई सेना की वह टुकड़ी जो राजा का पराजित होने का समाचार देती थी ।

भग्नपाद-स० पु०—निम्नलिखित छ नक्षत्र । १ पुनर्वसु । २ उत्तराषाढ । ३ कृत्तिका । ४ उत्तराफाल्गुनी । ५ पूर्वभाद्रपद, एव ६ विशाखा ।

रू० भे०—भग्नपाद ।

भग्नवेस-स० पु० [स० भग्न + अवशेष] टूटे फूटे मकान का बचा हुआ अंश, खडहर ।

भग्नी—देखो 'भगिनी' (रू भे)

उ०—वाचा साची आपस्यु रै, आयु अति सनेह । अरघ राज भडार नो रै, भग्नी पती हुइ जेह रै ।—प च चौ.

भडगाण-स० पु० [देशज] घोडा ।

रू० भे०—भडगाण ।

भडद—१ देखो 'भडिद' (रू भे.)

२ देखो 'भड' (रू भे)

उ०—रैत थलो री रात दिन, मन वें घडकदे । कोटडियां घमका करै, चौबीस भडदे ।—पा प्र

भड-स० पु०—१ वट वृक्ष की शाखा ।

उ०—भड कटियां सुखत भव, पिए भड कट सग पाय । जिए सू खग भड भपवा, जग उधारा जाय ।—रेवतसिह भाटी

२ देखो 'भट' (रू भे)

उ०—भड भिज्ज गज भार, धार विहरे पाडे घड । ढहियां सिर पीडिपी, बीळ भक बीळ बहादर ।—सू प्र

भडकवाड—देखो 'भडकिवाड' (रू भे)

भडक-स० स्त्री० [अनु०] १ भडकने की अवस्था या भाव ।

२ जाश, उत्तेजना ।

३ चमक-दमक ।

४ आवाज या ध्वनि विशेष ।

क्रि० वि०—एकदम, शीघ्र ।

उ०—कुहक बाण छूटण रै कडकै, अरीयां साम्हा अडकै । भड कायर भाजै तिहा भडकै, ग्रैह प्रसं जिम तडकै हो ।—वि कु

रू० भे०—भडकू, भडिक । अल्पा०—भडकी ।

भडकणी, भडकवो—क्रि० अ० [अनु०] १ किसी विस्फोटक पदार्थ का आग से संयोग होने पर तीव्र आवाज के साथ जल उठना ।

२ किसी प्रकार के मनोवेग का तीव्र या प्रबल हो जाना ।

उ०—'कहियै एम कपूत, भूत जिम बोले भडकी । सखरी देता सीख, तुरत कहै पाछो तडकी ।—घ व ग्र

३ किसी व्यक्ति का दूसरों की बातों में आकर विपरीत कार्य करने लगना ।

४ चमकना ।

उ०—अरड वाज गोळा उरड थळेचा ऊपरा, भडामड वळोवळ खाग भडकी । अरि घड ऊपरां 'दलै' अस ओरियो, कडडियो आम काय बीज कडकी ।—वीरमियो मूळी

५ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हो जाना, बढ़ जाना ।

६ देखो 'भडकणी, भडकवो' (रू भे)

उ०—जोमगी मलार गैल जोडरा प्राजळै जोस । प्रळे जादवेस समुडे मालवेस पाण । गाढ, चकै खीची जोड भडकै भडोड गोड । ओभके ऊजीण सोवा सकै चाहुवाण ।—हुक्मीचद खिडियो

भडकणहार, हारी (हारी), भडकणियो—वि० ।

भडकाडणी, भडकाडवो, भडकाणी, भडकावो, भडकावणी, भडकाववो—प्रे० रू० ।

भडकिओडो, भडकियोडो, भडक्योडो—भू० का० कृ० ।

भडकीजणो, भडकीजवो—भाव वा० ।

भडकणी, भडकवो, भडखणो, भडखवो, भडकणी, भडकवो, भिडकणी, भिडकवो—रू० भे० ।

भडकमाड—देखो 'भडकिवाड' (रू भे)

भडकाडणी, भडकाडवो—१ देखा 'भडकाणी, भडकावो' (रू भे)

२ देखो 'भिडकाणी, भिडकावो' (रू भे)

भडकाडणहार, हारी (हारी), भडकाडणियो—वि० ।

भडकाडियोडो, भडकाडियोडो, भडकाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भडकाडीजणो, भडकाडीजवो—कर्म वा० ।

भडकाडियोडो—१ देवो 'भडकायोडो' (रू भे.)

२ देखो 'भिडकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भडकाडियोडो)

भडकाणी, भडकावो—क्रि० स० [अनु०] १ किसी विस्फोटकीय पदार्थ

महखाडियोड़ी—देखो 'भडकायोड़ी' (रु. मे )

(स्त्री० मडखाडियोडी)

मडखाणी-वि० (स्त्री० मडखाणी) योद्धाओं का भक्षण करने वाला ।

उ०—सत्तसई दोहामयी, मीसण सूरजमाल । जपै मडखाणी जठै, सुराँ कायरा साल ।—वी स

मडखाणी, मडखावो—देखो 'मडकाणी, मडकावी' (रू भे)

मडखाणहार, हारो (हारी), मडखाणियो—वि० ।

मडखायोडो—भू० का० कृ० ।

मडखाईजणी, मडखाईजवो—कर्म वा० ।

मडखायोडो—देखो 'मडकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मडखायोडी)

मडखावणी, मडखाववो—देखो 'मडकाणी' मडकावी' (रू भे)

मडखावणहार, हारो (हारी), मडखावणियो—वि० ।

मडखावियोडो, मडखावियोडो, मडखावियोडो—भू० का० कृ० ।

मडखावोजणी, मडखावोजवो—कर्म वा० ।

मडखावियोडो—देखो 'मडकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मडखावियोडी)

मडडाट-स० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष ।

मडच्छणी, मडच्छवो—क्रि० स०—१ दातो से काटना ।

२ जल्दी-जल्दी खाना ।

मडच्छणहार, हारो (हारी), मडच्छणियो—वि० ।

मडच्छयोडो, मडच्छयोडो, मडच्छयोडो—भू० का० कृ० ।

मडच्छीजणी, मडच्छीजवो—कर्म वा० ।

मडच्छियोडो—भू० का० कृ०—१ दातो से काटा हुआ । २ जल्दी-जल्दी खाया हुआ ।

(स्त्री० मडच्छियोडी)

मडज-स० पु०—१ घोडा, श्व ।

उ०—रहै लोक अणपार, हुवै धूमरा मुहला । आवै रहै अनेक, मडज मड मला मला ।—सू प्र

रू० भे०—मडज, मिडज्ज, मिडग, मिडज, मिडजाळ, मिडज्ज, मिडज, मिडज्ज ।

मडणी, मडवो—देखो 'मिडणी, मिडवो' (रू भे)

उ०—१ विदुवा नह सूवो वाहुवो, भारथ हुवो ग्राह गज मडवो । कर प्रव सहस वरम भारथ को, जोर हट वीछवो जुय को ।

—र ज प्र

मडणहार, हारो (हारी), मडणियो—वि० ।

मडियोडो, मडियोडो, मडियोडो—भू० का० कृ० ।

मडोजणी, मडोजवो—कर्म वा० ।

मडताळ-स० स्त्री० [दे०] १ आग, अग्नि ।

उ०—वेहु कावडा सार तडियाल वाळा वणै, प्रळं जळ पाण मड-ताळ पीवी । जमी रछपाळ भुपाळ वावै जका, काळ ऊसताज कर-माळ कीवी ।—जवानजी आढी

२ अति उष्ण, बहुत गर्म ।

रू० भे०—मडताळ ।

मडतो—देखो 'मडीतो' (रू भे)

मडत्यणी, मडत्यवो—क्रि० स० [स० भृष्ट] भुनना ।

मडत्यणहार, हारो (हारी), मडत्यणियो—वि० ।

मडत्ययोडो, मडत्ययोडो, मडत्ययोडो—भू० का० कृ० ।

मडत्योजणी, मडत्योजवो—कर्म वा० ।

रू० भे०—मडत्यणी, मडत्यवो, मडत्यणी, मडत्यवो, मडत्यणी, मडत्यवो ।

मडत्ययोडो—भू० का० कृ० [स० भृष्ट] भुना हुआ ।

(स्त्री० मडत्ययोडी)

मडथणी, मडथवो—देखो 'मडत्यणी, मडत्यवो' (रू भे)

मडथणहार, हारो (हारी), मडथणियो—वि० ।

मडथियोडो, मडथियोडो, मडथियोडो—भू० का० कृ० ।

मडथोजणी, मडथोजवो—कर्म वा० ।

मडथियोडो—देखो 'मडत्ययोडो' (रू भे)

(स्त्री० मडथियोडी)

मडपाळक-स० पु० [स० भट + पालक] सेनापति ।

रू० भे०—मडपाळक ।

मडवोलियो—देखो 'मडमोलियो' (रू भे)

मडमडणी, मडमडवो—क्रि० अ० [अनु०] मड-मड की ध्वनि होना ।

मडमडणहार, हारो (हारी), मडमडणियो—वि० ।

मडमडियोडो, मडमडियोडो मडमडियोडो—भू० का० कृ० ।

मडमडोजणी, मडमडोजवो—भाव वा० ।

मडमडणी—रू० भे० ।

मडमडाट-स० स्त्री० [अनु०] मड-मड की ध्वनि ।

मडमडाणी, मडमडावो—क्रि० स० १ मड-मड की ध्वनि करना ।

२ देखो 'मडमडणी, मडमडवो' (रू भे)

मडमडाणहार, हारो (हारी), मडमडाणियो—वि० ।

मडमडायोडो—भू० का० कृ० ।

मडमडाईजणी, मडमडाईजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

मडमडायोडो—भू० का० कृ० [अनु०] १ मड-मड की ध्वनि किया हुआ

२ देखो 'मडमडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० मडमडायोडी)

मडमडियोडो—भू० का० कृ०—मड-मड की ध्वनि हुआ हुआ ।

(स्त्री० मडमडियोडी)

मडमडियो—वि० [अनु०] १ व्यर्थ की बातें करने वाला, गप्पी ।

स० पु० [अनु०] मोटर-साइकिल ।

मडमडी-स० स्त्री०—१ ध्वनि विशेष ।

२ महामारी रोग, प्लेग ।

रू० भे०—मडमडी ।

मडभूजी-स० पु० [स० भ्राष्ट+भर्जनम्] भाड भोकने व अन्न भुनने का कार्य करने वाला । (मा म)

मडभोलियो, मडभोली, मडभोल्यो-स० पु० [देशज] होलिकोत्सव पर गोबर की बनाई जाने वाली वह छोटी टिकियाए जिन्हें एक माला के रूप में पिरोकर होलिका-दहन में जला देते हैं ।

वि० वि०—प्रायः छोटे बच्चे होली के चार पांच दिन पहले गोबर की छेददार टिकियाए बना लेते हैं और वैसे ही पान और नारियल भी बनाते हैं । इनके सूखने पर इनकी एक माला बनाकर होलिका-दहन के समय उसमें डाल देते हैं ।

उ०—काना में दोय मडभोल्या घाट्या । गळा में मीगणा री माळा पं'री । जोगी री रूप धारण कर नै वो उण धुमाळा माथें पालथी मार नै वंठायी ।—फुलवाडी

रू० भे०—मडबोलियो, मरभोलियो ।

मडयंत-वि० [स० भट्+रा० प्र० यंत] युद्ध करने वाला, भिड़ने वाला ।  
उ०—एकौ मड जोड फवै मडयंत, जुडै 'महकून' समोभ्रम 'जंत' ।  
वरच्छिद्य वेधत घाट वराळ, मदा छकि जाणि पडै मतवाळ ।

—सू प्र

मडवाई-स० स्त्री० [स० भट्+रा० प्र० वाई] १ मडूआ का कार्य ।  
२ वेश्याओं की दलाली ।

रू० भे०—मडवापण, मडवापणी ।

मडवाणो, मडवावो—क्रि० स०—भगा दिए, पराजित कर दिए ।

उ०—केता रुड मूड काटिया, गिण जग रचाया । उसर गया रिण ओछडै, 'मालै' मडवाया ।—वी मा

मडवाणहार, हारो (हारी), मडवाणियो—वि० ।

मडवायोडो—भू० का० कृ० ।

मडवाईजणो, मडवाईजवो—कर्म वा० ।

मडवापणो—देखो 'मडवाई' ।

उ०—मडवा मडवापणू चुगलिया चुगली चासी । ठग-ठग लेसी ठोठ, कुलतिया करम करासी ।—ऊ का

मडवो-स० पु० [स० भाटिक] (स्त्री० मडवी) १ वेश्याओं की दलाली करने वाला ।

२ वेश्याओं के साथ तबला-सारंगी बजाने वाला ।

मडहक्क-स० पु० [स० भट्+राज० हक्क] योद्धाओं का प्रबल शब्द ।

उ०—झड मातो सर गोळिया, हुय वडवड मडहक्क । रीस जिवारी आसुरा, भडिया तीस तुरक्क ।—रं रु

रू० भे०—मडहक्क ।

मडाकिमाड, मडाकिवाड—देखो 'मडाकिमाड' (रू भे)

उ०—मडाकिमाड ओनाड अमग, अवे अपार दातार विडग । पखा उजाळ भुपाळ प्रवीत, रखै विचा आचार सुरीत ।—ल पि

मडाठेक-वि०—पूर्ण स्वस्थ ।

रू० भे०—मडाठेक ।

मडावली—हिचकिचाहट ।

रू० भे०—मडावली ।

मडामड—महायोद्धा ।

उ०—पचाळी तुभ सरीखो प्राण, आवै रा आंवा पूत अजाण । आवै तू आप लियो अवतार, मडामड भोमि उतारण मार ।

—पी ग्र

मडाफ-क्रि० वि० [अनु०] तुरन्त, शीघ्र ।

उ०—१ मोहूर चडिया मयद रै, भंचक जाय मडाक । गैवर भूले गाळवो, चौसै चढ चित चाक ।—वा दा

उ०—२ इतनी सुण गोपाळदाम मडाफ में ऊठ जमी सू हाथ लगाय जाय सलाम कीवी ।—गोपाळदाम गौड री वारता

२ देखो 'मडाकी' (मह, रू भे)

मडाको-स० पु० [अनु०] बन्दूक या किसी प्रकार के विस्फोट से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

उ०—बडूका रा मडाका अर घाईतिया री खबर सुणनै गाव में खलवळाट माचगी ।—रातवामी

मह०—मडाक ।

मडामड-स० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष ।

उ०—अठै सफीला उपरा निपट अमामी तरवारिया री मडामड वागी ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

मडामड-स० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष ।

उ०—पडे वेध कूरमदे राण छल 'पीवली' । खला सर बीज जिम वहै रवती । जागरण मडामड छूट गोळा जठै । रुक भड डडेहड रमै रवती ।—वसराम रावळ

उ०—२ गडा पड बीगडै नही हरगिज गहू, चढापड न आवै रोग चाळो । न फलै घडाघट लाय महमदनगर, मडामड भवानी बोल भाळो ।—खेतमी वारहठ

क्रि० वि०—शीघ्रता से, तेजी से ।

उ०—अडड वाज गोळा उरड थळेचा ऊपरा, मडामड वळोवळ खाग भडकी । अरि घड ऊपरा 'दलै' अस ओरियो, कडडियो आम काय बीज कडकी ।—वीरमियो मूळो

रू० भे०—मडामड ।

मडामडी-स० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष ।

उ०—मडामडि मडामडि नाळ छूटै मली, कडाकडि कूट वाजै कुठारा । तडातडि तडातडि सवद गड ठावता, वडावडि वांण लागै कठारा ।—प प चौ

२ देखो 'मडमडी' (रू भे)

मडाल—देखो 'भट' (मह, रू भे)

उ०—भडे सनाहा भडाला भाण, उगा ह्वे भडा का भाला, तसा वीजू जळाका साळाका वीज तेम । मूछा दे वळाका मदा आया नाग सोवा माथै, जाया गोकळा का तू खिजाया वाघ जेम ।

—हिम्मतसिंह सवतावत री गीत

भडाली—देखो 'भट' (अल्पा, रु भे)

उ०—थाभिया छडाला खळा खेर रा भडालां थोका घाटियां पैनाळां सीस सेलरा धुजाव । हैजमा त्रमाळा गाज गरोस रा रूप हाती, सुरेस रा ढाळा 'प्रवतेस' रा सुजाव ।—रोडजी भादी

भडाव—१ समूह, भुण्ड ।

उ०—कोलू वाळा कागरा, तिण दिन पडसी ताव । उण दिन आडा आवसी, भीला तणा भडाव ।—पा प्र

रु० भे०—भडाव ।

भडिद—स० पु०—भारी पदार्थ के ऊपर से वेग पूर्वक गिरने से होने वाली ध्वनि ।

उ०—मौत रा आटा मे मिलियोडी सिवाय टसकरणा रै वा समूळी वांगी भूलगी ही । बोलणी पातरगी ही । उण नै लखायो के पेट रै माय भडिद भडिद करता कोई भाखर भिदै ।—फुलवाडी

रु० भे०—भडद, भडीद ।

भडिक—देखो 'भडक' (रु भे)

उ०—सज्जण दुज्जण के कहे, भडिक न दीजइ गाळि । हळिवइ हळिवइ छडियइ, जिम जळ छडइ पाळि ।—ढो मा

भडियाल—वि०—टक्कर लेने वाला ।

उ०—वजर पडियाळ वागां वजर वेढ़ री, भवानी चकर भडियाळ भालो । फोड कडियाळ पैली तरफ फरहरै, असो छडियाळ 'भीमेण' आळो ।—महाराणा भीमसिंह रा भाला री गीत

भडिल—देखो 'भडिल' (रु भे)

भडियोडी—देखो 'भडियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भडियोडी)

भडौद—देखो 'भडिद' (रु भे)

भडीड—स० पु० [अनु०] १ प्रहार, चोट ।

२ प्रहार या चोट से उत्पन्न ध्वनि विशेष ।

भडीती—म० पु० [स० भट्टि] १ सीखचों पर भुना हुआ ।

२ आलू, बैंगन इत्यादि सब्जी को आग में भुनने के बाद छोक कर बनाया जाने वाला एग चटपटा सालन ।

३ वह पदार्थ जो दब जाने अथवा कुचला जाने से विकृत एवं कुरूपतावस्था को प्राप्त हो गया हो ।

मुहा०—भडती करणी, भडीती बणाणी=कुचल कर कुरूप या विकृत कर देना ।

रु० भे०—भडती, भडथ, भडिय, भडीती, भुडती, भुडती ।

भडीहार—स० पु०—भट्टिहारा । (नैणसी)

भडूस—स० पु०—बिना पानी के मफेद बादल ।

रु० भे०—भडूस ।

भडेच—क्रि० वि०—शीघ्र ।

भडोची—वि०—भडौच से सवधित, भडौचका ।

स० पु०—भडोच देश का घोडा ।

भडोलियो—स० पु० [देशज] वट वृक्ष का फल ।

उ०—राई जिसा ईण छोटा सा बीज मे बडला री औ जगी रूप कठै लुक्थोडी ही । औ जडिया, औ गोड, औ डाळा, औ अणगिण भडोलिया अर औ भूलती साखा ।—फुलवाडी

रु० भे०—भरुअच्छ, भरुअछपुर, भरुअच्छि, भरुअच ।

भच—स० पु० [अनु०] १ सिर में होने वाली पीडा विशेष जिमसे स्नायु-जाल में स्फुरण होता है ।

२ किसी कोमल वस्तु या प्राणी के एक झटके से कटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष ।

ज्यू—वकरिया री माथो भच देणी कटगयी । म्है उठै बैठो भच-भच मूळा खावती हो ।

क्रि० वि०—१ एकदम, अचानक ।

उ०—जे औ नीद री मिस करती भच देणी ऊठ नै म्हनै वेरा मे थरकाय देवै तो पछै म्हा मे कंडी भूडी बीतै ।—फुलवाडी

२ शीघ्र, तुरन्त ।

उ०—अर आ वात विचारता ई वो अणजेज कमर सू बघियोडी कटार काडी । भच देणी आपरी पीडी री मास तोड नै काळिदर रै सामी बगाय दियो ।—फुलवाडी

रु० भे०—भच्च, भच्छ ।

भचक—स० स्त्री० [अनु०] १ भय, आतंक ।

उ०—चमै दळ घटा सम बीज सावळ चमक, भचक द्रगपाळ रज अवर ढक भाण नु । जटाधर उमग गण हलै जग जाण नु, इसो कुण अभग लग उदै आथाण नु ।—रामलाल वारहठ

२ प्रहार से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—रीद्राण भचक भाला गरीठ, धारक बहै गजवाज धीठ । घड हडै धोमा-रव चरख धोम, वणि धोम अवारव गोम वोम ।—सू प्र

३ टक्कर, भिडन्त ।

उ०—१ कमरा कस आयो रण काळो, वाघण माथै मोड विलाळो । भुजडड पकड ऊठियो भालो, लेवा भचक रुठियो 'लालो' ।—वरजुवाई

उ०—२ ताकडा 'अजण' 'भीमेण' ताय, खागडा उरम थी भचक लाय । 'अभपती' जती गोरवख एम, तैरे' सख वारह पथ तेम ।

—वि, स

रु० भे०—भचक ।

अल्पा०—भचकी, भचकी ।

भचकणौ, भचकबौ—क्रि० अ०—१ आश्चर्य निमग्न होना, भौचक्का होना ।

क्रि० स०—२ प्रहार करना ।

उ०—भचके 'बखतेस' गुसै भरियो, अजराज उपासक वीकरियो



जुध जाणिक फोव मतै अजरै, करि दामणि धार सग्राम वरै ।

—सू प्र

३ काटना ।

४ देखो 'मिचकणी, मिचकवो' (रू भे)

भचकणहार, हारो (हारी), भचकणियो—वि० ।

भचकियोडो, भचकियोडो, भचकयोडो—भू० का० कृ० ।

भचकीजणी, भचकीजवो—भाव वा० ।

भचकणी, भचकवो—रू० भे० ।

भचकियोडो—भू० का० कृ०—१ आश्चर्य निमग्न हुवा हुआ, भौंचक्का हुवा हुआ २ प्रहार किया हुआ. ३ काटा हुआ ४ चौका हुआ

५ देखो 'मिचकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भचकियोडो)

भचकं—क्रि० वि० [अनु०] १ शीघ्रता से, जल्दी ।

उ०—१ खुद की पचायती नी करै, पण म्हारै हेला रै समचै ई भचकं तूट तूट नै पडै ।—फुलवाडी

उ०—२ नित विगाड सू खेत री घणी काठी कायो ह्वियोडी ही । गधा री हूकणी सुगनै वो भचकं ऊमो ह्वियो ।—फुलवाडी  
२ एक दम, अचानक ।

उ०—महाराणी भचकं मूडो फेर नै बोली—जे आ मिसखरी री वात है तो म्हनै की जवाव नी देवणी ।—फुलवाडी

भचकौ—देखो 'भचक' (अल्पा, रू भे)

भचक—देखो 'भचक' (रू भे)

उ०—खैगक उचक खाटक खगक, काटक भाटक भटक विजक वळक जुरक जरक, सेलक घमक भचक सहक ।—सू प्र

भचकणी, भचकवो—देखो 'भचकणी, भचकवो' (रू भे)

उ०—१ हिंदवाण तुगकाण हिचं, रिण ढाण बीराण नूताण रचं । करडवक हुवै सिलहक फडा, घमचक भचकृत सेल घडा ।

—सू प्र

उ०—२ मेक मास वारुद, हिंदु तुरकान हूचकिय । हल्ली करि फिरि हल्लि, देख भुवलोक भचकिय ।—ला रा

भचकणहार, हारो (हारी), भचकणियो—वि० ।

भचकियोडो, भचकियोडो, भचकयोडो—भू० का० कृ० ।

भचकीजणी, भचकीजवो—भाव वा० ।

भचकियोडो—देखो 'भचकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भचकियोडो)

भचकौ—सं० पु०—देखो 'भचक' (अल्पा, रू भे)

भचक—सं० पु० [सं०] १ नक्षत्रों का समूह ।

२ ग्रहों के चलने का कक्ष या मार्ग ।

भचड—सं० स्त्री० [अनु०] १ घास या अन्य वनस्पति को उखाड़ने या

काटने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—जू जू सिध जावै अरे ! डीरा छूटण नै । कीकर खूटै अरे ! भचड-भचड ।—फुलवाडी

२ किसी वस्तु को चबाकर खाने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—१ माठ माथै वा दीनू कुत्ता ने खारी नीचै जावता सू ढक दिया । अर खुदो-खुद निसक होय नै भचड भचड मोठ चरण लागी ।—फुलवाडी

उ०—२ कुमार रोटी देय नै घणी राजी हुवो । भचड भचड गगळी रोटी खाययो ।—फुलवाडी

३ देखो 'भचीट' (रू भे)

भचडणो, भचडयो—क्रि० अ० [अनु०] १ टक्कर खाना ।

उ०—वड पडू विहर याटा 'विलद', भुजलग भट सेला भचडि । छुग वसू कहै हटमल सुतन, 'अमूनि' जम खाटे अचडि ।

—सू प्र.

२ शीघ्रता से मोटे ग्रास भरते हुए कोई वस्तु खाना ।

ज्यू—रोट्या भचडणी, मूळा भचडणा ।

भचडणहार, हारो (हारी), भचडणियो—वि० ।

भचडियोडो, भचडियोडो, भचडयोडो—भू० का० कृ० ।

भचडीजणी, भचडीजयो—कर्म वा० ।

भचडियोडो—भू० का० कृ०—१ टक्कर खाया हुआ २ शीघ्रता से मोटे ग्रास भरते हुए कोई वस्तु खाया हुआ ।

(स्त्री० भचडियोडी)

भचभचाणी, भचभचावो—क्रि० सं० [अनु०] १ शीघ्रता करना ।

उ०—ताहरा राजा री लोक ऊमो थो तिर्क भच-भचाप अर कुवर नू अर रजपूता नू मार लिया ।—नैणसी  
२ खटवटाना ।

३ देखो 'भचडणी, भचडवो' (रू भे)

ज्यू—गाजरा भचभचाणी, मूळा भचभचाणा ।

भचभचाणहार, हारो (हारी), भचभचाणियो—वि० ।

भचभचायोडो—भू० का० कृ० ।

भचभचाईजणी, भचभचाईजवो—कर्म वा० ।

भचभचायोडो—भू० का० कृ०—१ शीघ्रता किया हुआ २ खटवटाना हुआ ।

(स्त्री० भचभचायोडी)

भचभेडो—देखो 'भचीडो' ।

उ०—लाखा जन डोलै भचभेडा लेता, वारू खोरा री घोरां दव देता । भाजो भाजो कर भोजन कज भीखै, दुख मे दरवाजो दाता री दीखै ।—ऊ का

भचाक—सं० स्त्री० [देशज] १ प्रहार, आघात ।

उ०—भाला री भचाका चखाइ केही पटेतानू पाडि कुमार आपरै देस री दिसा आडै पग आवण नू मरतै मारतै प्रयाण कीवो ।

—व भा

उ०—साली सीमाडा सोयणा आली माण री कणेठी सोहे, दकाली काळ री भैरवाण री डचाक । विलाळा पाण री दूत नाथ री हाक वाळी, भाली स्त्री राण री भूतनाथ री भचाक ।

—कविराजा सूरजमल्ल भीसण

भञ्जनाभञ्ज-स० स्त्री० [अनु०] १ दो वस्तुओं के आपस में टकराने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—साळ रै माय सडिदा वाजता हा अर वारै मासी भञ्जनाभञ्ज आढी भञ्जेडती ही ।—फुलवाडी

२ शीघ्रता, सत्वरता ।

भञ्जोड-स० पु० [अनु०] १ आघात, प्रहार ।

उ०—१ आ कंय वा बीजळी री गळाई सळावा भरती भञ्ज उठा सू ताचकी सी मोगरी हाथ मे आवता ई आवेस पूरा जोर सू आगळ रै दोनू कानी भञ्जोड मेल दिया ।—फुलवाडी

उ०—२ सरमा सरम दुख सांसें, पिंड सुजाग सहावै पीड । खागा जग भञ्जोड न खावै, भोग तरणै वस खाय भञ्जोड ।

—कविराजा बांकीदास

क्रि० प्र०—उडणी, मेलणी ।

२ आघात, प्रहार या टक्कर की ध्वनि ।

३ टक्कर, घक्का ।

४ दुःख, कष्ट ।

उ०—सरमा सरम मरै दुख सांसें, पिंड सुजाग सहावै पीड । खागा जग भञ्जोड न खावै, भोग तरणै वस खाय भञ्जोड ।—बां दा

५ दर्द, चीस, टीस ।

६ भटकने की क्रिया या भाव ।

७ हानि, नुकसान ।

क्रि० प्र०—खाणी ।

अल्पा०—भञ्जोडी ।

रु० भे०—मचड, भञ्जेड, भञ्जेडण ।

भञ्जोडणी, भञ्जोडवी—क्रि० स०—१ खटखटाना ।

उ०—चार दाइयां रा आढा भञ्जोड, वानै जगाई, रोय रोय पग भाल्या, घणा ई नेवरा करघा, पण अक ई हुका री नी भरयो ।

—फुलवाडी

२ किसी एक चीज को किसी दूसरी चीज से जोर से टकराना ।

भञ्जोडणहार, हारो (हारी), भञ्जोडणियो—वि० ।

भञ्जोडिओडो, भञ्जोडियोडो, भञ्जोडयोडो—भू० का० कृ० ।

भञ्जोडोजणी, भञ्जोडोजवी—कर्म वा० ।

भञ्जोडियोडो—१ खटखटाया हुआ ।

२ किसी एक चीज को दूसरी चीज से जोर से टकराया हुआ ।

(स्त्री० भञ्जोडियोडो)

भञ्जोडो—देखो 'भञ्जोड' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ चभीका मेलता माया माय सूं ठणकिया अर आख्यां मे जावता भञ्जोडा ऊठ्या ।—फुलवाडी

उ०—२ लूट, डकैती, खून, चोरियां, लाय लगी तो भाळी भाळ । भूख भञ्जोडा फिर खावती, नाचै भूमै सो-सो ताळ ।—चेतमानखा भञ्जोडणी, भञ्जोडवी—देखो 'भञ्जोडणी, भञ्जोडवी' (रु भे)

उ०—१ कोतवाळ मजा मे कोड सू पगथळी चाटती ही के घाडी भञ्जोड री आवाज सुणीजी ।—फुलवाडी

उ०—२ मासी घणो ई आढी भञ्जेडियो, हाका करघा, पण भटियाणी की गिनत करी नी ।—फुलवाडी

भञ्जोडणहार हारो (हारी), भञ्जोडणियो—वि० ।

भञ्जोडिओडो, भञ्जोडियोडो, भञ्जोडयोडो—भू० का० कृ० ।

भञ्जोडोजणी, भञ्जोडोजवी—कर्म वा० ।

भञ्जोडणी, भञ्जोडवी, भञ्जोडणी, भञ्जोडवी—रु० भे० ।

भञ्ज—देखो 'भञ्ज' (रु भे)

उ०—माथी भञ्ज-भञ्ज करण लागी । आखिया वळण लागी । सरीर भारी हुयग्यो ।—वरसगाठ

भञ्ज—१ देखो 'भञ्ज' (रु भे)

उ०—अकवर मैगळ भञ्ज, माभळ दळ धूमे मसत । पचानन पळ भञ्ज, पटक छडा प्रतापसी ।—दुरसी आढी

२ देखो 'भञ्ज' (रु भे)

भञ्जणी—देखो 'भञ्जणी' (रु भे)

भञ्जणी, भञ्जणी—देखो 'भञ्जणी, भञ्जणी' (रु भे)

भञ्जणहार, हारो (हारी) भञ्जणियो—वि० ।

भञ्जिओडो, भञ्जियोडो, भञ्जयोडो—भू० का० कृ० ।

भञ्जोजणी, भञ्जोजवी—कर्म वा० ।

भञ्जनी—देखो 'भञ्जणी' (रु भे)

उ०—रही प्रतच्छ रच्छमी, दुगच्छ गच्छ दच्छ वनी । लगें विपच्छ लच्छ पें, भुजाग वच्छ भञ्जनी ।—ऊ का

भञ्जियोडो—देखो 'भञ्जियोडो' (रु भे)

भञ्जणी, भञ्जणी—क्रि० अ [स० भञ्ज] १ अनुरक्त होना, लीन होना ।

उ०—तसहु नासुरुहीन तिम, यह दूजो अभिधान । सोहु सम्हारिन घर सक्यो, भञ्ज प्रमाद मितभान ।—व भा

२ आश्रित होना ।

क्रि० स०—३ सहारा पकडना, आश्रय लेना ।

४ ईश्वर देवता आदि का स्मरण करना, भजन करना ।

उ०—नारायण भजियो नही, भजिया अवर भजन् । ज्यां तजियां मानव जनम, सक्रिया तन्न असन्न ।—ह र

५ बार २ किसी का नाम लेते हुए जप करना ।

६ श्रम्यास करना ।

७ अधिकार में करना, कब्जे में करना ।

८ कहलवाना ।

उ०—पावन घांम सिरौही पत्तन, धारै छत्र अजै कीरति धन । तपै कटक अन्न गिरि रै तिम, अन्न पति उपटक भजै हम ।—घ भा.



६ वटवारा करना ।

१० उपभोग करना ।

११ सम्मान करना ।

१२ परिचर्या, सेवा सुश्रुपा करना ।

१३ पसद करना, चाहना ।

उ०—विजयल, तुम्ह दीठ वीसरिया, सयल तणा भूपति सिगळ्ये ।

हुजा तीह भजं किम हूगर, निरख्यो ज्या सुरगिरि नयणेय ।

—वाढेल सिवा री गीत

१४ स्वीकार करना, अंगीकार करना ।

उ०—गणिका घर सौ सठ गयो, कीघो उण सतकार । भजि मोनू

इसडी भणी, तिण सकार तिण वार ।—व भा

१५ सभोग करना, भोग्युत करना, भोगना ।

उ०—नित नेम हियै भूलै नही, चाले सदा सचेत नै । भोगना फूट

परत्रिय भजे, हाय तजे इण हेत नै ।—ऊ का

१६ धारण करना, वहन करना ।

उ०—म करि रे म करि निदा निगुण पार की । नारकी तणी

गति कांइ वधइ । मारकी प्रकृति तजि सहज सतोस भजि । लागी

सुति सामळी घरम घघइ ।—वि कु

१७ देखो 'भजणी, भजवी' (रू भे)

उ०—सुरलोक मे सुरियद के दिये सांसण सुणवे में न आए । इससै

'अभमाल' का प्रताप देखि इद्र का गरव भजै ।—सू प्र

१८ देखो 'भाजणी, भाजवी' (रू भे)

भजणहार, हारी (हारी), भजणियो—वि० ।

भजवाडणी, भजवाडवी, भजवाणी, भजवावी, भजवावणी, भज-

वाववी, भजाडणी, भजाडवी, भजाणी, भजावी, भजावणी,

भजाववी—प्रे० रू० ।

भजिओडो, भजियोडो, भज्योडो—भू० का० कृ० ।

भजीजणी, भजीजवी—भाव वा०/कर्म वा० ।

भजणी, भजवी—रू० भे० ।

भजन—स० पु० [स० भज्] (सेवा करना) १ पूजा, उपासना, सेवा ।

२ ईश्वर व देवता आदि के गुणों का कीर्तन करने का कोई गीत ।

क्रि० प्र०—गाणी ।

३ किसी का नाम बार-बार जपते हुए स्मरण करने की क्रिया ।

उ०—भजन किया सू तेज वधली, जैसे (ऊग्यी) सूरज मांण ।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, अवतू धारी जाण ।—मीरां

क्रि० प्र०—करणी ।

यौ०—मजन-भाव ।

रू० भे०—भजन, भुजन ।

भजनानन्द—स० पु० [भजन+आनन्द] परमेश्वर के नाम स्मरण से प्राप्त

होने वाला आनन्द ।

भजनानवी—वि० [स० भजन+आनन्द+ई] सदैव ईश भजन गान

कर प्रसन्न रहने वाला ।

भजनी, भजनीक—वि० [स० भजन+रा० प्र० ईक] स्वयं एव लोगों के

लिए भजन गाने वाला ।

उ०—प्रम चा भजनीक वहा पह वेवे, सूर धीर खग मत्र सनी ।

समद सिवा तणा दळ सारे, अगसत जिम जीरवै 'अनी' ।

—गोयदास सादू

भजनेर—स० पु०—भटनेर ?

उ०—देवी उत्तरा जोगणी पर उजेणी, देवी भाल भरुअच्च भजनेर

भेणी । देवी देव जालधरी सप्त दीपे, देवी कदरे सरस्वरे वाच वृपे ।

—देवि

भजनोपदेशक—स० पु० [स० भजन-उपदेशक] वह व्यक्ति जो भजन के

माध्यम से उपदेश देता हो ।

भजन—देखो 'भजन' (रू भे)

उ०—नारायण भजियो नहीं, भजिया अवर भजन । ज्या तजिया

मानव जनम, सभिया तन्न असन ।—ह र

भजाडणी, भजाडवी—१ देखो 'भजाणी, भजावी' (रू भे)

उ०—सो हे घण-वेटा री वहु-ईठ देख वो कीकर नहीं भरै । म्हनै

म्हारा दूध री भरोसी है, जहर जहरनै ही भजाडे भगायै ।

—वी स टी.

२ देखो 'भजाणी, भजावी' (रू भे)

उ०—ले मुनसव पहली पडण, आयी सिंह अवीह । भाजि कुठार

भजाडियो, सो 'लक्कड' रणसीह ।—व. भा.

भजाडणहार, हारी (हारी), भजाडणियो—वि० ।

भजाडिओडो, भजाडियोडो, भजाडघोडो—भू० का० कृ० ।

भजाडोजणी, भजाडोजवी—कर्म वा० ।

भजाडियोडो—१ देखो 'भजायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भजायोडो' (रू भे)

(स्थी० भजाडियोडो)

भजाणी, भजावी—क्रि० स०—१ भजन करने में प्रवृत्त करना ।

२ अनुरक्त करना, लीन करना ।

३ आश्रित करना ।

४ ईश्वर देवता आदि का स्मरण कराना, भजन कराना ।

५ बार २ किसी का नाम जप कराना ।

६ अभ्यास कराना ।

७ अधिकार में कराना ।

८ कहलवाना ।

९ उपभोग करवाना ।

१० परिचर्या करवाना, सेवा करवाना ।

११ पसद करवाना ।

१२ स्वीकार करवाना, अंगीकार करवाना ।

१३ धारण करवाना, वहन करवाना ।

१४ भगवा देना, पलायन कराना ।

उ०—१ सूतापर जुद्ध मे म्हारा कत सू दम दस वीसा आदमी आय नै लडण वासतै लूविया तिका नै ऊठ तै ही कत भजाय दीघा ।—वी स टी

उ०—२ इण रीति ग्राम वोरखडी रा घमसाण में दिल्ली रा दळ नू भजाइ दूजं दिन दूदो हाथ वावि जैतगढ रा डेरा जाइ पिता रा पगा गढियो ।—व भा

भजाणहार, हारो (हारी), भजाणियो—वि० ।

भजायोडो—भू० का० कृ० ।

भजाईजणो, भजाईजवो—कर्म वा० ।

भजाडणो, भजाडवो, भजावणो, भजाववो—रू० भे० ।

भजायोडो—१ भजन करने मे प्रवृत्त किया हुआ २ अनुरक्त किया हुआ, लीन किया हुआ ३ आश्रित किया हुआ ४ ईश्वर, देवता आदि का स्मरण कराया हुआ भजन करवाया हुआ ५ वार २ किमी का नाम जप कराया हुआ ६ अभ्यास कराया हुआ ७ अधिकार मे कराया हुआ ८ कहलवाया हुआ ९ उपभोग करवाया हुआ १० परिचर्या करवाया हुआ, सेवा करवाया हुआ ११ पसद करवाया हुआ १२ स्वीकार करवाया हुआ, अंगीकार करवाया हुआ १३ धारण करवाया हुआ, वहन करवाया हुआ १४ भगवाया हुआ, पलायन करवाया हुआ । देखो 'भजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भजायोडो)

भजावणो, भजाववो—१ देखो 'भजाणो, भजावो' (रू भे)

२ देखो 'भजाणो, भजावो' (रू भे)

भजावणहार, हारो (हारी), भजावणियो—वि० ।

भजाविश्रोडो, भजावियोडो, भजाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भजावोजणो, भजावोजवो—कर्म वा० ।

भजावियोडो—१ देखो 'भजायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भजावियोडो)

भजियोडो—भू० का० कृ०—१ भजन करने मे प्रवृत्त हुआ हुआ २ अनुरक्त हुआ हुआ, लीन हुआ हुआ ३ आश्रित हुआ हुआ ४ सहारा पकडा हुआ, आश्रय लिया हुआ ५ ईश्वर, देवता आदि का स्मरण किया हुआ, भजन किया हुआ ६ बार २ किसी का नाम लेते हुए जप किया हुआ ७ अभ्यास किया हुआ ८ अधिकार मे किया हुआ, कब्जे मे किया हुआ ९ कहलवाया हुआ १० वटवारा किया हुआ ११ उपभोग किया हुआ १२ सम्मान किया हुआ १३ परिचर्या, सेवा सुश्रुपा किया हुआ १४ पसद किया हुआ, चाहा हुआ. १५ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ. १६ सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ, भोगा हुआ १७ धारण किया हुआ, वहन किया हुआ

१८ देखो 'भजियोडो' (रू भे)

१९ देखो 'भजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भजियोडो)

भज्जणो—देखो 'भजणो' (रू भे)

उ०—कमव स्याम कामय, जुटे अरद्ध जामय । मुडै घडा मळेछणी विचार धार भज्जणी ।—रा रू

(स्त्री० भज्जणी)

भज्जणो, भज्जवो—देखो 'भजणो, भजवो' (रू भे)

उ०—१ नारद जुघ निरसता, तिको पिए हासो तज्जं । भयण अम भोजन, भूख जीमिया न भज्जं ।—चौथ बीहू

उ०—२ आप तणा खग तेज अप्रवळ, दहळ वगा वाजीद तणा दळ । राव ताव खग देखि घोम रवि, भज्ज गयो इद्रसिघ मनव भवि ।—सू प्र

उ०—३ कमण स हीदू कुण तुरक, कमण कहैवा पीड । तो पावै राउ राठवड, वियै न भज्जं भीड ।—गु रू व  
भज्जणहार, हारो (हारी), भज्जणियो—वि० ।

भज्जिओडो, भज्जियोडो, भज्ज्योडो—भू० का० कृ० ।

भज्जोजणो, भज्जोजवो—कर्म वा० ।

भज्जा—स० स्त्री०—भार्या ।

उ०—भडारिउ तहि वमए 'नेमिचहु' गुण रयण सायर । तम भज्जा 'लखमिणि', पवर सील (वत) लावन मणहर ।

—कवि सोममूर्ति

भज्य—वि० [स० भज्] १ सेवा करने योग्य ।

२ विभाग करने योग्य ।

भट—स० पु० [स० भट] १ योद्धा, वीर ।

उ०—१ निज दल छोड उजीर नीसरघो, कायर पर दल कानी । अरी भट हाथ अपार अचानक, घर की फौज धिरानी ।—ऊ का  
२ सिपाही, सैनिक ।

३ पहलवान, मल्ल ।

४ नौकर । (हा ना मा)

५ देखो 'भाट' (रू भे)

६ देखो 'भट्टो' (मह, रू भे)

७ देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)

उ०—भट नाखू राज भिभो भार, भूडी भण ऊठे अत भार । द्रक पापण तोनै तोनै, पापण पापण तोनै धिक्कार ।—र रू  
मुहा०—भट भोखणो=वेकार फिरना ।

रू० भे०—भड, भडज, भट्ट, भठ, भड, भडि, भडी, भडु, भिड, भिडज ।

अल्पा०—भडालो ।

मह०—भडाल, भडाल, भिडाल, भिडियाल, भिडीयाल, भिडियाल भिडीयाल ।

भटकटैया-स० पु०—भूमि पर छितराने वाला कटिदार एक छोटा क्षुप जो बहुधा शीपव के काम आता है।

भटकणिया-स० पु०—'कुम्भट' के बीज जिनका शाक बनाया जाता है।

भटकणो, भटकवो-क्रि० अ०—१ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमना, आवागमन करना।

उ०—१ थोड़ी ताळ मे एक राईकी सीमी घकियो। वो उण छुट्टा ओठारू नै इण विघ भटकती देख उण रै मोहरी घाल दी।

—फुलवाडी

२ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घूमना।

उ०—१ भाराणी भटकेह, आवै कवि पाळा अठै। ऊतरिया अट-केह, भ्रम पावै अराक रा।—वा दा

उ०—२ अकर अडै जोग वणियो के अक सिकारी रै सगळै दिन भटकती की सिकार हाथ नी आयी तो वो नीवडा साथै बैठो कवूडा मांमी तीर साध्यो।—फुलवाडी

उ०—३ 'वाका' धीरज धरण सू, ह्वे नहि कुजर हाण। की घर घर भटका करै, कूकर अधिक कमाण।—वा दा

उ०—४ घन री खातर तो दिसावरा मे भटकता फिरी अर ओ अमोलक हार यू खीपडा साथै पातरग्या।—फुलवाडी

३ विचरण करना।

उ०—साधा रै सग वन-वन भटकी, लाज गुमाई सारी। वडा घरा यँ जनम लियो छै, नाचो दे दे तारी।—मीरां

४ भ्रम या धोखे में पडने के कारण किसी निर्णय पर न पहुचना।

उ०—पाणी मे मीन प्यासी, मोहे सुण सुण आवै हासी। आतम-ग्यान बिन नर भटकत है, कहा मथुरा कहा कासी।—मीरां

५ चित या मन स्थिर न रहना।

उ०—१ पण म्हारे सिवाय सगळी दुनिया दिन रा अघारा मे सगळा काम करै। अर रात रा चानणा में सगळी दुनिया सोवै। उण वगत म्है अकली जागती भटकू।—फुलवाडी

उ०—२ नव तत्व सुपन मनोरथ भटके, सकल्प करत वेहाल। कवहू राव कवू होय मगता, दुख मुख मान्या साल।

—श्री सुखरामजी महाराज

६ पथ विचलित होना, मर्यादा छोडना।

उ०—रमित भई हौं सावरै के सग, लोग कहै भटकी। छुटी लाज कुलकानि लोग डर, रह्यो न घर हटकी।—मीरा

७ भडकना, प्रज्वलित होना।

उ०—१ दास पच अग्र रहै दुरती, भारथ पाड पांडवा भती। भटके ओघ भाळ धुवि भूमी (भो), अरक उठै थामै रथ ऊभो।

—सू प्र

उ०—२ आह्वि 'मघी' अगाहि, पडिआलग वागै प्रवग। जाणि खटीवन जाळिवा, भटकी कटका भाहि।—वचनिका

८ क्रोधित होना, कुपित होना।

उ०—१ सो भरत डढ अरू करत सेव, भटकियो वबर इम सुरो भेव। मुणियो खिज दै फुरमाण मूभ, तू नोकर न दियू हाथ तूभ।

—सू प्र

उ०—२ आगे बळती आग, भालाळी सुण भटकियो, खीचो उपर खाग, तद तोली 'घाघल' तरै।—पा प्र

९ लालायित होना, इच्छुक होना।

उ०—अँ मोडा तो कपटी कोनी, नाय कपट की घात। आ साधा को जिवडो भटकै, मेळो द्यो करवाय।—डूगजी जवारजी री छावळी १० गमन करना, जाना।

उ०—१ चाह करीर कळी नृप चटकै, भवर छैल वैश्या घर भटकै। पत महुरा सम दानी पटकै, धत्रिय वस वांस मिल खटकै।

—ऊ का

११ वज्रपात होना, विजली गिरना।

उ०—अठठ पड डडाळा चठठिया वाण अत, खाग भट विकट थट खला सिर खीज। 'तेजल' विर्य कर रठठ भेळे तुरी, वोम पुड कठठ, काय भटकती वीज।—भाटी दोलतसिंघ सुरताणीत री गीत भटकणहार, हारी (हारी), भटकणियो—वि०।

भटकवाडणी, भटकवाडवो, भटकवाणी, भटकवाधो, भटकवावणी, भटकावणी, भटकाववो—प्रे० रू०।

भटकश्रोडो, भटकियोडो, भटक्योडो—भू० का० कृ०।

भटकीजणी, भटकीजवो—भाव वा०।

वटकणी, वटकवो, भटक्कणी, भटक्कवो, भुटकणी, भुटकवो, भुटक्कणी, भुटक्कवो—रू० भे०।

भटक-स० पु०—कोप ?

उ०—कोटां कटका भटक करोडा, ओडां आवै नही अति। वियो हमीर ओभकै वर तनि, परति न जकै हमीरपति।

—महाराजा राजसिंघ जगत्सिंघोत री गीत

भटकळ-स० पु० यो [स० भट] १ युद्ध, लडाई।

उ०—करती ऊगै दीह भटकळ, भूचर मोद हुतो मन भामण। धीरज-सींग अगजी घूहड, ऊसर थान हुयो रड राऊण।—सुखजी खडियो २ सहार, ध्वम।

उ०—राठोड जतै कीयो रिणह, गहण भुजाई भटकळह। पळ घाप कियो पळहारिया, कळळ, विद कोळाहळह।—गु रू व ३ भीड।

भटका-स० पु० [देशज] (व व) १ किसी वस्तु के अग्र्यास या व्यसन के बाद उस वस्तु के अभाव मे होने वाली चाहना या इच्छा।

उ०—१ भूरी कीटी रा आसी भव भटका, गुडळी छाछा रा सुपनै मे गटका। प्यारा टोघडिया पाडा कद पेखा, दूधा दहिया रा चाडा कद देखा।—ऊ का

उ०—२ अँक ही मिश्री, वा ऊदरा खावती खावती वूड़ी देण व्हेगी

अब ऊदरा मारण री सरघा नी री । घणा ई भटका आवता, पण जोर काई करै ।—फुलवाडी

[स० भ्रम] (व व) घूमने या भटकने की क्रिया या भाव ।

उ०—दावा-पूली करता तथा कचेडिया मे भटका मारता-मारता सेठा रा बाळ सफेद न्हैया हा, इण वास्ते आस-पास गावा रा महाजन ई काम पढ्या सेठा सू ईज सलाह लेवता ।—रातवासी

उ०—२ भटका तू ठाकुर अबै, वटका भरणा बोल । भला मिनख भटका लिये, गटका खावै गोल ।—ऊ का.

भटकाडणी, भटकाडवी—देखो 'भटकाणी, भटकावी' (रू भे)

भटकाडणहार, हारी (हारी), भटकाडणियो—वि० ।

भटकाडिओडी, भटकाडियोडी, भटकाडयोडी—भू० का० कृ० ।

भटकाडीजणी, भटकाडीजवी—कर्म वा० ।

भटकाडियोडी—देखो 'भटकायोडी' (रू भे)

भटकाणी, भटकावी—१ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमना, आवारा फिराना ।

२ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घुमाना ।

३ विचरण करना ।

४ भ्रम या धोखे मे डालकर किसी निर्णय पर न पहुचाना ।

५ चित्त या मन स्थिर न रहने की अवस्था मे करना ।

६ पथ से विचलित करना, मर्यादा छुडाना ।

७ भटकाना, प्रज्वलित करना ।

८ क्रोधित करना, कुपित करना ।

९ लालायित करना, इच्छुक बनाना ।

भटकाणहार, हारी (हारी), भटकाणियो—वि० ।

भटकायोडी—भू० का० कृ० ।

भटकाईजणी, भटकाईजवी—कर्म वा० ।

भटकाडणी, भटकाडवी, भटकावणी, भटकाववी, भटकावणी, भटकाववी—रू० भे० ।

भटकायोडी—भू० का० कृ० [स० भ्रम] १ निरुद्देश्य इधर उधर फिराया हुआ २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर उधर घुमाया हुआ ३ विचरण कराया हुआ ४ भ्रम या धोखे मे डालकर किसी निर्णय पर न पहुचने दिया हुआ ५ चित्त या मन स्थिर न रहने की अवस्था मे किया हुआ ६ पथ से विचलित किया हुआ, मर्यादा छुडाया हुआ ७ भटकाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ ८ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ ९ लालायित किया हुआ, इच्छुक बनाया हुआ १० गमन करवाया हुआ (स्त्री० भटकायोडी)

भटकावणी, भटकाववी—देखो 'भटकाणी, भटकावी' (रू भे)

उ०—चौर गुरु विच्छू चटकावै, ग्यान राव विरळा गटकावै । भेक छाछ कारण भटकावै, लुच्चा वागळ ज्यू लटकावै ।—ऊ का

भटकावणहार, हारी (हारी), भटकावणियो—वि० ।

भटकावियोडी, भटकावियोडी, भटकावयोडी—भू० का० कृ० ।

भटकावीजणी, भटकावीजवी—कर्म वा० ।

भटकावियोडी—देखो 'भटकायोडी' (रू भे)

(स्त्री० भटकावियोडी)

भटकियोडी—भू० का० कृ० [स० भ्रम] १ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमा हुआ, आवारा फिरा हुआ २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घूमा हुआ ३ विचरण किया हुआ ४ भ्रम या धोखे मे पडकर किसी निर्णय पर पहुचने मे असमर्थ रहा हुआ ५ चित्त या मन अस्थिर हुवा हुआ ६ पथ से विचलित हुवा हुआ, मर्यादा छोडा हुआ ७ भटका हुआ, प्रज्वलित हुवा हुआ ८ क्रोधित या कुपित हुवा हुआ ९ लालायित हुवा हुआ, इच्छुक हुवा हुआ १० गमन किया हुआ, गया हुआ (स्त्री० भटकियोडी)

भटकी—स० स्त्री०—भ्रम, अज्ञान ।

उ०—आछ रामदे पीवण भटकी, भाडू 'नाभे' घाली भटकी ।

मीरा फोड गई जळ भटकी, पापी ग्रेड बोवदे पटकी ।—ऊ का

भटकूडी—वि० (स्त्री० भटकूडी) वच्चो के लिये प्रयोग किया जाने वाला प्यार सूचक शब्द ।

उ०—भूरी भटकूडी उरजणिया भावै, गोरी गटकूडी कुरजणिया गावै । छपनू गावै गळ नैणा जळ छावै, अपणी उणमुखता सन-मुख दरसावै ।—ऊ का

भटक्कणी, भटक्कवी—देखो 'भटकाणी, भटकावी' (रू भे)

उ०—१ ससक्क नगर वध लटक्कै नागरा सीस, आग रा अगार तोपा भटक्कै अवाज । राखियो सगर दूजा खाग रा पाण सू रिधू, राण बाळी वाघरा सगर जेम राज ।—भीमसिध चूडावत री गीत  
उ०—२ नवहृत्यो मत्थो बडो, रोस भटक्कै रार । श्री कूभायळ ऊपरा, हाथळ बाहणहार ।—बा दा

उ०—३ भटक्कै घोम भटक्कै भाळ, छडा विहु घूम मचै घम-चाळ । निदस्सै जोघ जुआण नित्रीठ, रुका महिमात्ती आकारीठ ।

—गु रू व

भटक्कणहार, हारी (हारी), भटक्कणियो—वि० ।

भटक्कियोडी, भटक्कियोडी, भटक्कयोडी—भू० का० कृ० ।

भटक्कीजणी, भटक्कीजवी—भाव वा० ।

भटक्कियोडी—देखो 'भटकियोडी' (रू भे)

(स्त्री० भटक्कियोडी)

भटतीतर—स० पु०—प्राय उत्तर पश्चिमी भारत मे पाया जाने वाला एक फुट लम्बा तीतर की शक्ल का एक प्रकार का पक्षी जिसका मांस के लिए शिकार किया जाता है ।

भटनागर—स० पु०—१ कायस्थों की १२ शाखाओं मे से एक शाखा । (मा मा)

२ इस जाति का व्यक्ति ।

भटनेर—देखो 'भाडनेर' (रू भे)

उ०—इण ही वम मे भटनेरपुर रँ अवीम जसराज सोनगिरँ  
के ही जवना रो जोरदार कटक भाजियो ।—व भा  
वि० वि०—देखो 'भाडगनेर' ।

भटनेरी—स० पु०—भटनेर नगर का निवासी ।

भटयारी—देखो 'भटियारी' (रू भे)

भटाण वि०—पूर्ण परिपक्व । (वर्षा ऋतु के फल)

भटाळि, भटाळी—स० स्त्री० यी० [स० भट+अवलि] १ बीरो की  
पक्ति, सेना ।

उ०—१ नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐंचते ब्रह्म, अरीन मुच्छ  
मुच्छ दे स्वमुच्छ खेंचते अर्भे । चलाक रूठ पूठ के अगूठ चांपते  
चलें, हरामखोर सुडमुड भुड कापते चलें ।—ऊ का ।

उ०—२ चिरे वहित्य हतिय के चिकार चूर चूर ह्वें, भिरे भटाळि  
भाल मे भिखार भूर भूर ह्वें ।—ऊ का

भटियळ—देखो 'भटियाणी' (रू भे)

उ०—भटियळ ऊभी छाजइये री छाह हो जी म्हारा 'रतन' राणा,  
भटियळ ऊभी छाजइये री छाह हो जी हो, आसूडा ढळकावै कायर  
मोर ज्यू रे ।—लो गी

भटियाण—देखो 'भटियाणी' (मह, रू भे)

भटियाणी—स० स्त्री०—भाटी वश की कन्या ।

उ०—१ कूरमि पमारि कमधज्ज सु, भटियाणी कुळ छळ भळें ।

जोनपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारै प्रजळें ।—गु रू व

उ०—२ डसण-बीज-दाडम, वेणि-वासग-भुयगम । भटियाणी वर  
कमध, समद गगा नदि सगम ।—गु रू व

रू० भे०—भटियळ, भाटियाणी ।

मह०—भटियाण ।

भटियारी—स० पु० [स० भ्राष्ट्रमिन्ध] (स्त्री० भटियारण, भटियारणी,  
भटियारण, भटियारी) १ भडभूजा ।

उ०—राघण भटियारा कठियारा रे, भरावा कसारा ठठारा ।

मढिया ने विणगारा रे, वले नायक भार लदारा ।—जयवांणी

२ सराय मे ठहरने एव भोजन की व्यवस्था करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—भटयारी, भठयारी, भठियारी, भठीयारी ।

भटी—१ देखो 'भट्टी' (रू भे)

उ०—एक भटी रँ ऊपरँ, लागै रुपीया लाख । जकण भटी रो  
म्यारजी । छैल दुवारी चाय ।—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'भाटी' (रू भे)

भट्ट-ग० स्त्री०—१ वहिन । (ह ना मा)

२ गवी, महेली ।

रू० भे०—भट्ट ।

भटेयरा—स० स्त्री०—सिमोदिया वश की एक शाखा ।

भटेस—स० पु० [स० भट + ईश] योद्धा, शूरवीर ।

भटी—स० पु०—१ वेंगन ।

२ देखो 'भट्टी' (रू भे)

भट्ट—स० पु० [स० भट्ट] १ प्रभु, स्वामि ।

२ उपाधि विशेष जो ब्राह्मणों के नामों के साथ लगाई जाती है ।

उ०—वियास भट्ट के महत जात की ब्रह्मण । कथा पुराण  
भागवत भारथ रामाङ्ग ।—गु रू व

३ दक्षिण भारत व मालवे के ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

४ एक वर्ण-शकर जाति विशेष ।

उ०—कर्पूर पट्टिक कोष्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार, चतुद्धरिक  
काष्टिक राज द्वारिक सधि विग्रहिक भाडपति श्रेष्ठ महाजनिक दूत  
दालिउद् कटुक भट्टपुत्र नट विट भट्ट ।—व स

५ देखो 'भाट' (रू भे)

उ०—नारद तुवर गीत गावई, विप्र दान अचट्ट । मगळीक अनेक  
वरत्या, विडद वोलई भट्ट ।—रुकमणी मगळ

६ देखो 'भट' (रू भे)

७ देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)

उ०—आज पैली वार सहर नही जाऊ हू । वारै महीना भट्ट  
भोख्योडी है ।—रातवासी

८ 'भट्टी' (मह, रू भे)

रू० भे०—भट्ट, भठ ।

भट्टाउरि—स० पु०—भटनेर (आधुनिक हनुमानगढ) नगर का नाम ।

उ०—फूलभरि अवर शेष, शेष अहिंदर नीसाउरि । पुष्पदीन मूल-  
ताणि, शेष जवखा भट्टाउरि ।—व स

भट्टार, भट्टारक—वि० [स०] (स्त्री० भट्टारिका) मान्य, पूज्य ।

भट्टारिका-भुवन—स० पु०—राजमहिषी भवन ।

उ०—सत्रागार, मार्गजल, भट्टारिका-भुवन गुरुजनोपदेशरसायन  
आदित्यकरनिकर, चद्रचंद्रिका प्रसर मेघजल वनस्पतिफल दीपा-  
लिकाउत्सव सन्पुरुषविभव, सर्वसाधारण ।—व. स

भट्टी—स० स्त्री० [स० भ्राष्ट्र] १ विवाह आदि के बड़े मोज के लिए  
जमीन में खोद कर या जमीन पर ईंट या पत्थर से चुनकर बनाया  
जाने वाला एक प्रकार का चुल्हा ।

क्रि० प्र०—घुकाणी, लगाणी, सुलगाणी ।

२ रसायन, शराव आदि के लिए जमीन पर चुनकर या जमीन में  
खोदकर बनाया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का चुल्हा ।

क्रि० प्र०—काढणी, निकाळणी, बणाणी ।

३ उस स्थान का नाम जहाँ शराव बनाई जाती है ।

४ देखो 'भाटी' (रू भे)

उ०—फेर वसाई भट्टिया अत करे पियारी । मारै ईसर माणजी  
गिरभा गहकारी ।—द दा

रू० भे०—भटी, भठी, भट्टी, भट्टी, भाड, भाटी, भाठी ।

मह०—भट, भट्ट, भट्ट, भठ ।

भट्ट-म० पु०—१ भानजा । (जोधपुर)

२ देखो 'भट्ट' (रु भे)

३ देखो 'भट्ट' (रु भे)

उ०—कक भट्ट वल्लु सूआर, अरजुनु हुउ कीवाचार । चउथउ नकुलु असघउ थाइ, सहदे वारइ नरवइ गाइ ।—सालिभद्र सूरि

भट्टी-स० पु० [स० आष्ट्र] १ चूना पकाने का बृहद् आकार का अग्नि कुण्ड ।

क्रि० प्र०—निकाळणी, पकाणी ।

२ वह स्थान जहा कूडा, कोयला आदि डालकर ईंटे पकाई जाती हैं ।

रु० भे०—भट्टी, भट्टी ।

मह०—भट, भट्ट, भट्ट, भट ।

भट्ट—देखो 'भट्टी' (मह, रु भे)

उ०—वारैं दिन वाद रांमलो स्वय सेवकां सू घिरियोडो घरै आयो । देखैं क्या है, भट्ट खुदिया खुदाया तयार है ।—वरसगाठ

२ देखो 'भट्ट' (रु भे)

३ देखो 'भट्टी' (मह, रु भे)

भट्टी—देखो 'भट्टी' (रु भे)

भट्टी—देखो 'भट्टी' (रु भे)

भठ—१ देखो 'भट' (रु भे)

२ देखो 'भट्ट' (रु भे)

३ देखो 'भट्टी' (मह, रु भे)

४ देखो 'भट्टी' (मह, रु भे)

भठियारो—देखो 'भठियारो' (रु भे)

भठियारपण, भठियारपणी—स० पु० [स० आष्ट्र+त्वं, त्वन] भठियारे का काम ।

रु० भे०—भठियारपण, भठियारपणी ।

भठियारो—देखो 'भठियारो' (रु भे)

(स्त्री० भठियारी)

भठी—देखो 'भट्टी' (रु भे)

उ०—रीभाय हूर सुण राग रग, जम हूत करै खीजाय जंग ।

पीजाय भठी एक सुरापान, भल जाय अरघ भैसा भयान ।—वि स

भठीयारो—देखो 'भठियारो' (रु भे)

उ०—बगनीघडा कावडि चालइ, भाठी बहइ खमार । पांच सहस चालइ भठीयारा, घाटघडा लोहार ।—का दे प्र

(स्त्री० भठीयारण)

भट्टी—देखो 'भट्टी' (रु भे)

भट्ट-स० पु० [अनु०] १ मूल व्यक्ति ।

उ०—थोडु जमइ तो भुडउ ऊणाटउ, भलां वस्थ पहरइ तोई तखारु, सामान्य वस्थ पहरइ तो दरिद्री, गोरो ग्रामवातीउ, कालो

तो कवाडि, का वेचि तो खात्रपाडउ, न वेचइ तो मडग, विसइ तो सदरमवहिस्कत, विसइहीन तो नपुसक ।—व स

भट्टगरी—स० स्त्री० सोलकी वश की एक शाखा ।

भट्टगरी—स० पु०—सोलकी वश की भट्टगरी शाखा का व्यक्ति ।

भट्टगी—वि०—आहवर रचने वाला, दिखावा करने वाला ।

भट्टजर—स० पु० [स० भट्ट+पजर] योद्धा का अस्थि-पजर ।

उ०—आगइ पत्र जोगणिया तणा पूरिया, ग्रीष्मण गूद गिलई अड-गाढ । बीजा गिरवर किया बहादर, चुणिया सुरज भट्टजर चाढ ।

—महादेव पारवती री वेलि

रु० भे०—भट्टजर ।

भट्ट—स० पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—भीलामा नइ मालकी, भरडु भारिणि भागि । भभेडी ग्रहाड घण, भोजपत्र भट्ट चणि ।—मा का प्र

२ देखो 'भट' (रु भे)

उ०—दरि है गै घरि राइवी, भट्ट वका दीवाण । की ईद्रापुर अगळी, घटि की सू जोघाण ।—गु रु व

उ०—२ सन्नाहे भट्ट सुहड, जिके असवार अचगळ । परि भघ्घर पाइयक, सेत वावळ पाए दळ ।—गु रु व

भट्टकवाड—देखो 'भट्टकवाड' (रु भे.)

भट्टकणो, भट्टकवी—१ देखो 'भट्टकणो, भट्टकवी' (रु भे)

उ०—रुख कडकड, बटाऊ भट्टकइ । ताड खडखडई, पंखी भट्ट हडइ ।—सभा

२ देखो 'भट्टकणो, भट्टकवी' (रु भे)

भट्टकणहार, हारो (हारी), भट्टकणियो—वि० ।

भट्टकावणो, भट्टकाडवो, भट्टकाणो, भट्टकावी, भट्टकावणी, भट्टकावदो—प्रे० रु० ।

भट्टकियोडो, भट्टकियोडो, भट्टकियोडो—भू० का० कृ० ।

भट्टकीजणो, भट्टकीजवो—भाय वा० ।

भट्टकाडणो, भट्टकाडवो—१ देखो 'भट्टकाणो, भट्टकावी' (रु भे)

२ देखो 'भट्टकाणो, भट्टकावी' (रु भे)

भट्टकाणहार, हारो (हारी), भट्टकाणियो—वि० ।

भट्टकाडियोडो, भट्टकाडियोडो, भट्टकाडियोडो—भू० का० कृ० ।

भट्टकाडोणो, भट्टकाडोणो—कर्म वा० ।

भट्टकाडियोडो—१ देखो 'भट्टकायोडो' (रु भे)

२ देखो 'भट्टकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भट्टकाडियोडो)

भट्टकाणो, भट्टकावी—१ देखो 'भट्टकाणो, भट्टकावी' (रु भे)

२ देखो 'भट्टकाणो, भट्टकावी' (रु भे)

भट्टकाणहार, हारो (हारी), भट्टकाणियो—वि० ।

भट्टकायोडो—भू० का० कृ० ।



भडकाईजणी, भडकाईजघी—कर्म वा० ।

भडकायोडी—१ देखो 'भडकायोडी' (रु भे)

२ देखो 'भडकायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भडकायोडी)

भडकिमाड, भडकिवाड, भडकिमाड—देखो 'भडकिवाड' (रु भे)

उ०—अचलेमर तउ किसउ ? उत्तर दक्खिन पूरव पच्छिम कउ

भडकिवाड आदत्ता अजइपाळ ।—अचलदास खीची री वात

उ०—२ विज्जयानगर छिडे विहुर दुरति खप्पर दूठ ए । मर-  
हट वराड भडकिमाड गिड पहाड ग्रीठ ए ।—गु रु व

भडकियोडी—१ देखो 'भडकियोडी' (रु भे)

२ देखो 'भडकियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भडकियोडी)

भडग—स० पु० [स० भद्राग] १ शिव, महादेव ।

२ वलराम ।

भडणो, भडघो—देखो 'भडणो, भडघो' (रु भे.)

उ०—चहवाण 'नरो' 'हुल' 'पातल' चौरंगी भूप कलावत रूप भडै ।

वालाउत 'तोगो' 'किसव' वैवै लोह 'गोइद' रांणोत लडै ।

—गु रु व

भडताळ—देखो 'भडताळ' (रु भे)

भडत्य—देखो 'भडीती' (रु भे)

उ०—ऊधमुखि ऊकलवई पाणि करइ भडत्य ते वालइ आगि । कह  
रे परधन खातेउ कीम माउसे औडी पचारइ ईम ।—वस्तिग

भडलीपुराण—देखो 'भडलीपुराण' (रु भे)

भडवाउ, भडवाय—स० पु० [स० भटवाड] १ पराक्रम की कीर्ति ।

उ०—१ अह मामल कीमल केशपाश किरि मोरकलाउ, अद्वचद  
समु भालु मयणु पोसइ भडवाउ ।—राजसेखर सूरि

उ०—२ जीतउ रतिपति राय, भागु तसु भडवाय । पेखी पराम-  
वए, दास ध्यु आ भव ए ।—आगम माणिक्य

२ सामर्थ्य श्रीर वल ।

उ०—मव नगर सश्रीक करी, सरवाग भूसण घरी, हस्ति राजाधि-  
रूढ, प्रतापि पीढ, पालि लाव खाटा तणउ भडवाउ, भडलीक  
तणउ समवाउ ।—व म

३ योद्धत्व, योद्धापन ।

रु० भे०—भडिवाओ ।

भडहक—देखो 'भडहक' (रु भे)

भडकिमाड—देखो 'भडकिवाड' (रु भे)

भडांटेक—देखो 'भडांटेक' (रु भे)

भडांप—स० स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक ।

भडांपली—स० स्त्री०—द्विविधा, मन्देह ।

उ०—आकुली मुरहि नाद मामली, जीह नइ मनि हई भडावली ।

—सालिसूरि

भडाभड—देखो 'भडाभड' (रु भे)

उ०—पढे उर वल्ल गडोयळ पिड । भडाभड खल्ल जुवा भुजदड ।

—गु रु व

भडाळ—देखो 'भट' (मह, रु भे)

उ०—वडाळा भाजता गाजता वमाळा । भडाळा जगत कहियो  
धनी भाग ।—गोरधनसिंह हाडा री गीत

भडि—देखो 'भट' (रु भे)

उ०—थरहरिया भुवण त्रिण्हे वियका भडि, घरजइ अस सोई नहीं  
घर । ईसर तो सरणइ ऊवरिजइ हरिसकर समरीयो हर ।

—मदादेव पारवति री वेलि

भडिय—देखो 'भडीती' (रु भे)

भडियोडी—देखो 'भडियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भडियोडी)

भडिवाओ—देखो 'भडवाउ' (रु भे)

उ०—तिणि कुलि मुणीइ सतणु राओ, भूयवलि भजइ रिउ  
भडिवाओ ।—सालिभद्र सूरि

भडी—देखो 'भट' (रु भे)

भडीती—देखो 'भडीती' (रु भे) (अमरत)

भडीयड—देखो 'भट' (रु भे)

उ०—भडीयड भाजि मरगड मूड । रडवड रंण करडक रुड ।

—गु रु व

भडूस—देखो 'भडूस' (रु भे)

भडौळ—वि०—फूहड ।

भडौळखानो—स० पु० यो०—अव्यवस्था ।

भडु—देखो 'भट' (रु भे)

उ०—झुहिए जूगरा धरै धोह घरा । जाणिए जं जम्मरा भडु रोग  
भरा ।—सू प्र

भडुलीपुराण, भडुलीपुराण—स० पु० यो०—अपनी स्त्री भडुली को  
सम्बोधित करके डक नामक ज्योतिषी के रचे हुए वर्षा विज्ञान  
सम्बन्धी पद्यों का एक संग्रह ।

रु० भे०—भडुलीपुराण ।

भणक—देखो 'भणक' (रु भे)

भणकणौ, भणकवौ—देखो 'भणकणी, भणकवौ' (रु भे)

उ०—१ गाजै ववाळा निहाव घाव पिनाकां भणकं गाण ।  
घारिया उनाग खाग खत्री धम घोड । दूठ 'जसो' हुओ हेंक  
आविया दवसणी दळा । राणा दळां आडो कोट सारसै राठीड ।

—दानोजी वोगसौ

उ०—२ भणकं चली, कोमडा तूर भेरी । फवै सख सहनाय,  
आनेक फेरी । विखम्मी सुरा, सिद्धवां डाक वागी । ब्रह्मड इक्की-  
ममै हाक वागी ।—सू प्र





भणण-भणण घुमावता कह्यो—बोल नाईडा राजा थू है के म्हें ।

—फुलवाडी

उ०—२ भाईडा, इण टाट आगें तो म्है ई काठा काया व्हेगा ।

घणा ई श्रीखद कराया, की कारी नी लागी । अस्टपोंर पोत्या राखा । माथा साव काचा पडग्या, भणण-भणण करै ।—फुलवाडी

रू० भे०—भणणाट, भणणाट, भणणाहट, भणभणाट, भणभणाहट, भणहण, भणभण, भणभणहट, भणभणहट ।

अल्पा०—भणणाटी, भणभणाटी, भणभणहटी ।

भणणणी, भणणवो—देखो 'भणकणी, भणकवो' (रू भे )

उ०—भणण भमर वास रस भूला, सवरत फल दल फूल समाज ।

यलमी रम बस जाय वगीछा, राधा जनक तणा बजराज ।

—वा दा

भणणणहार, हारो (हारी), भणणणियो—वि० ।

भणणणियोडो, भणणणियोडो, भणणणियोडो—भू० का० कृ० ।

भणणणीजणी, भणणणीजवो—भाव वा० ।

भणणणियोडो—देखो 'भणकियोडो' (रू भे )

(स्त्री० भणणणियोडो)

भणणाट, भणणाट—देखो 'भणण' (रू भे )

उ०—१ भमरा रो भणणाट, डीला रो दीली, दीपमाळा रा दीर, भाखर होळी ।—मयाराम दरजी रो वात

उ०—२ ए जु भमर बोलिवा नै भणणाट करै छै । सु मानु गर-भवती व्याकुलता जणावै छै ।—बेलि टी

भणणाटी—देखो भणण' (अल्पा, रू भे )

भणणाणी, भणणावो—क्रि० अ०—चकराना, चकर मे पडना ।

उ०—हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हाणी, जग मे दैविच्छा किरा ही नह जाणी । वादल बीजळिया नभ मे नहि नैडी । भेजी

भणणायो भळसी पुळ भैडी ।—ऊ का

'भणणावणी, भणणाववो' (रू भे )

भणणाणहार, हारो (हारी), भणणाणियो—वि० ।

भणणायोडो—भू० का० कृ० ।

भणणाईजणी, भणणाईजवो—भाव वा० ।

भणणायोडो—भू० का० कृ०—चकराया हुआ, चकर मे पडा हुआ

(स्त्री० भणणायोडो)

भणणावणी, भणणाववो—देखो 'भणणावणी, भणणाववो' (रू भे )

उ०—पडियो मेडी पेखि, भवन भेडी भणणाव । भीताहि सेडै भरी, गरट मांख्यां गणणाव ।—ऊ का

भणणावणहार, हारो (हारी), भणणावणियो—वि० ।

भणणावियोडो, भणणावियोडो, भणणावियोडो—भू० का० कृ० ।

भणणावोजणी, भणणावोजवो—भाव वा० ।

भणणावियोडो—देखा 'भणणावियोडो' (रू भे )

(स्त्री० भणणावियोडो)

भणणाहट—देखो 'भणण' (रू भे )

उ०—केहर तणी कळाइयां, भणणाहट भमराह । भीजी गज सिर भाजता, मद सोरभ डमराह ।—वा दा

भणणी, भणवो—१ पढ़ना, अध्ययन करना ।

उ०—भणत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै । तरक्क नीति सास्त्राणि, एक मुख उच्चरै ।—गु रू. व

२ पाठ करना, मन्त्रोच्चार करना ।

उ०—राजा पूजै सिवसकति, चाडै धूप नैवेद, कुकम-तिलक निलाट दे, विप्र भणवा वेद ।—गु रू. व

३ रटना ।

उ०—रण साले रुक केविया राणा, साभग लडत न सुणिया । जइयो राम रुद्रायण जीहा, भण तण पागल भणिया ।

—स्त्री महाराणा कुभा रो गीत

४ जपना ।

उ०—भगत-विछळ, नयरा कमळ । जगत जनक, धरण-धनक । सिर नमि नमि, चरण पदम । 'किसन' रसण रघुवर भण ।

—र ज प्र

६ कहना, कथना ।

उ०—१ जठै गजारुढ चालुक्य राज सामुहो धकाय, अळाव धकती लोयणा मिळाय आप रा पखरैता नू प्रेरणा रै काज अनैक प्रससा रा प्रपच भणिया ।—व भा

उ०—२ अवती रा अधीस प्रामारराज भरत्रिहरि रै रांणी विगळा जिकण री दूजो नाम अनगसेना कहीजै सो अद्वितीय प्रीति रो आस्पद बणी अर जिए आगें तो बिना प्राण न रहसी असी दुर-लभ वाता अनेक वार माळव रै महीग भणी ।—व भा

उ०—३ सूरत धन जैमिध सारधू, भली भली त्रिहु भुवण भणी । मा कैरवा तणी न कियो अत, तो जेही पाडवां तणी ।

—बोगसो गोरधन कहै

क्रि० अ०—५ होना ।

उ०—रण साले रुक केविया राणा, साभग लडत न सुणिया । जइयो राम रुद्रायण जीहा, भण तण पागल भणिया ।

—स्त्री महाराणा कुभा रो गीत

भणणहार, हारो (हारी), भणणियो—वि० ।

भणाडणी, भणाडवो, भणाणी, भणावो, भणावणी, भणाववो

—प्रे० रू० ।

भणिओडो, भणियोडो, भणयोडो—भू० का० कृ० ।

भणीजणी, भणीजवो—कर्म वा० ।

भणणी, भणवो, भिणणी, भिणवो—रू० भे० ।

भणत—१ कृपि कार्य करते समय सामूहिक रूप से किसानों द्वारा गाया जाने वाला लोक-गीत ।

वि० वि०—यह रामध्वनि या 'राम भणणा' लोक-गीत अचिक्रम के कार्य, जैसे—कहवी काटना, मोठ उखाडना आदि के समय गाई जाती है। इससे कार्य में गति आती है व थकान का आभास कम होता है।

भणभणाट, भणभणाहट—देखो 'भणणा' (रू. भे)

उ०—छिडियोडा छत्ता रा टाटिया भणणा भणणा करता भवै ज्यू लोगा रै मूडा री वातां भणभणाट करती अक कानि सू दूजा कान ताई भणणाटा मारणा लागी।—फुलवाडी

भणभणाटी—देखो 'भणणा' (अल्पा., रू. भे)

भणभणाणो, भणभणावो—देखो 'भणणाणी, भणणावो' (रू. भे)

भणभणाणहार, हारो (हारी), भणभणाणियो—वि०।

भणभणायोडो—भू० का० कृ०।

भणभणाईजणो, भणभणाईजवो—भाव वा०।

भणसाल, भणसालइ—स० स्त्री०—कोषागार, खजाना।

उ०—नेव नत्रडडइ, खोलड खडहडइ, बीज भलहलइ, परनाल खलहलइ, पाणी तरणी भूणि भूणइ, भणसाल भीजइ।—व म

उ०—२ कुपाह तणउ घन उपारजिउं जलि उपतिष्टइ, कुपात तणउ घन उपारजिउ भणसालइ नूटइ, कुपाह तणउ घन उपारजिउ ऊम भट्ट जाइ।—व स

भणहण—देखो 'भणणा' (रू. भे)

उ०—फव हार धार घण फरहरत, वागीचा चादर जळ वहत। भर फूल फळित अडारभार, जुथ करत अमर भणहण गुजार।

—सू प्र

भणहणणो, भणहणवो—१ हवा का चलना।

२ देखो 'भणणाणी, भणणावो' (रू. भे)

उ०—१ एक साथ अन्नेक, फवै घरहरै फुहारा। विमळ पुहप विसतरे, अमर भणहणो गुजारा।—सू, प्र

उ०—२ भूखर वाइ भणहणणइ, तनि तानि छूटइ धुजि। मज्जन करतो माननी, गौरीसकर पूजि।—मा का प्र

भणहणहार, हारो (हारी), भणहणियो—वि०।

भणहणयोडो, भणहणयोडो, भणहणयोडो—भू० का०।

भणहणीजणो, भणहणीजवो—भाव वा०।

भणहणियोडो—देखो 'भणणायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० भणहणियोडो)

भणाडणो, भणाडवो—देखो 'भणणाणी, भणणावो' (रू. भे)

उ०—देवा दरसि फरसि जाइ द्वारे, पूजा करि डेर पाधारे। होम कराडि भणाडि विप्रा हद, जपि आवाहन सूर इमट पद।

—वचनिका

भणाडणहार, हारो (हारी), भणाडणियो—वि०।

भणाडियोडो, भणाडियोडो, भणाडियोडो—भू० का० कृ०।

भणाडीजणो, भणाडीजवो—कर्म वा०।

भणाडियोडो—देखो 'भणायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० भणाडियोडो)

भणाणो, भणावो ['भणणा' क्रि० का प्रे० रू०] १ कहलाना, बुलवाना।

२ पढाना, अध्ययन कराना।

उ०—गिराती नी आती व्है तो म्हारा कना सू सीख लीजै, म्है थनै भणाय देवूला।—फुलवाडी

३ पाठ कराना, मन्त्रोच्चार कराना।

४ रटाना।

भणाणहार, हारो (हारी), भणाणियो—वि०।

भणायोडो—भू० का० कृ०।

भणाईजणो, भणाईजवो—कर्म वा०।

भणायोडो—भू० का० कृ०—१ कहलाया हुआ, बुलाया हुआ २ पढाया हुआ, अध्ययन कराया हुआ, ३ पाठ कराया हुआ, मन्त्रोच्चार कराया हुआ ४ रटाया हुआ

(स्त्री० भणायोडो)

भणावणो, भणाववो—देखो 'भणाणी, भणावो' (रू. भे)

उ०—१ दाई, घाय भणावण वाला गुरु बीजा सारा ई अठैहीज छै। पूछ देखो, कदेई कोस बाहर पण निकालियो कोयनी।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ वितथवत ते देखी पडित, अहनिस्ति तेह भणावइ। मन्त्रीसर नदन मन ऊलटि, भोजन वस्त्र अपावड।—हीराणद सूरि

भणावणहार, हारो (हारी), भणावणियो—वि०।

भणावियोडो, भणावियोडो, भणावियोडो—भू० का० कृ०।

भणावीजणो, भणावीजवो—कर्म वा०।

भणित—कही हुई बात या कथा।

भणियण—वि०—पठित, पढा हुआ, विद्वान।

स० पु०—चारण कवि।

उ०—भोपत चाढ चाढ वन भणियण, जुग भण लाहर तूक जिम। उवह न को जळ पंसै भावै, उवह न को नीसरै इम।

—लाहर गीयल री गीत

भणियोडो—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ २ पढा हुआ, अध्ययन किया हुआ ३ पाठ किया हुआ, मन्त्रोच्चार किया हुआ ४ रटा हुआ ५ जाप किया हुआ

(स्त्री० भणियोडो)

भणी [अध्यय] एक प्रकार का प्रत्यय जो कई कारक प्रत्ययों का काम देता है।

ज्यू—जिम पहुचा अलवरगढ भणी। (को-कर्म कारक)

उ०—१ इणि परि ऊमा देवडी, जाणी मास्वत्त। सु प्रभाति कहिया भणी, पिगळ पासि पढत।—ढो मा

उ०—२ अस्व रथ गज चढी भूपति नगरथी सहू नीकल्या । कुडिन-  
पुर भणी साचरि, पदाति बहु आवी म्यल्या ।—नळाव्यान

भरणज—देखो 'भरणज' (रु भे )

उ०—हमी कलपत म राखव हेज, भरण गल मांमोय दखव भरणज ।  
—पा प्र

भण्यागरी—वि०—साथ रहने वाला, सहचर ।

उ०—काल ना किकर, यम ना सहोदर, प्रेतना पेठा, कालरात्रिना  
कुअर, भूत ना भण्यागरा, मममानि ना सहवासि ।—व स

भत—१ देखो 'भात' (रु भे )

उ०—१—भूपाळ विया सेवाळ तगी भत, कळिया मह ससार  
कहे । माया जाळ कळ चं माहे, राजा कमळ मरूप रहे ।

—जगन्नाथ मादू

उ०—२ गहमत गत असत अवर तत परगत, अखत दुचित रत  
भरथ अत । जगपत हित मुखदुति इण भत जिम, प्रभुत हुवत  
दिन रयणपत ।—२ रु

२ देखो 'भात' (रु भे )

भतई—१ देखो 'भातवी' (रु. भे )

उ०—१ मीप भर रोळी, थाळी भर मोती मेरा भतई नूतण मं  
गई जी वेगो सो आई मेरी मा का रे जाया, हम घर विडद उता-  
वली ।—लो गी

उ०—२ गगा के घोरें रैं वीरा जमना के घोरें, बांही के पार  
वसे मेरा भतई । वेगो मो आई मेरी माका रैं जाया, जामण का  
रैं जाया हम घर विडद उतावली ।—लो गी

२ देखो 'भात' (रु. भे )

भतलाणो, भतलावो—देखो 'वतलाणी, वतलावो' (रु भे )

भतलाणहार, हारो (हारी), भतलाणियो—वि० ।

भतलायोडी—भू० का० कु० ।

भतलाईजणो, भतलाईजवो—कर्म वा० ।

भतलायोडी—देखो 'वतलायोडी' (रु, भे )

(स्त्री० भतलायोडी)

भतवार, भतवारण, भतवारी—स० स्त्री० [स० भक्तहारिण] खेत पर  
भोजन ले जाने वाली स्त्री ।

उ०—१ काळ वरम रैं पडी बीजळी, गै'रो डदर गाजै । भाती ले  
भतवार खेत मे, मभ्र दोफारा आजै ।—चेतमानम्हा

उ०—२ वगत वटाळ राह, वाह दे टुकडा टाळै । भतवारण छिण  
पळक, ओकळी छाय उनाळै ।—दसदेव

भतवारी—स० पु० [भक्तम् वेला] खेत मे भोजन ले जाने का समय  
'भाता वक्त' ।

उ०—विकसी भाता ले भतवारां वाळी, चगी चौधरण्या सतवाग

वाली ।—ऊ का

भतार, भतारो—देखो 'भरतार' (रु भे )

उ०—१ नीलजु निधिरु मड अजागु काइ मारइ मारो, ईण  
जनमि मुभ्र पटुकुमर विंगु नही य भतारो ।—मालिभद्र सूरि

उ०—२ कोइ न त्रिहु जगि हुईय नारि, हिव पछि कोइ न होइमि  
ए । एक महलीय पच भतार, मतीय मिरोमणि गाई ए ।

—मालिभद्र सूरि

भति—देखो 'भात' (रु भे )

उ०—सामि सनाह विया दिम सुपहा, भड भावतो अंम भति ।  
क्रमियू नीर न पमियू काही, गिरा नरा श्रेका ज गति ।

—मीहा निरवाण रो गीत

भती—स० स्त्री०—१ पृथ्वी भूमि ।

२ देखो 'भात' (रु भे )

उ०—'वखतेस', 'मुजान' गोविंद रु 'पातिल' 'गोवरघन' रु  
लदानपती । करनेम' के पुत्र 'उदैवन देव' दहू उमगे अगराज  
भती ।—ला रा

भतीज, भतीजो—स० पु० [स० भ्रातृज] (स्त्री० भतीजी) भाई का  
लडका, भतीजा ।

उ०—१ माथै भाटी सूरमा, 'मवळे' जिमा सहाम । 'मवळे' जोड  
भतीज सक, 'तेजो' नारणदाम ।—रा रु

उ०—२ समर पतीजा बीज वरमाळ रा मार सो, भाळ रा वतीजा  
अमो भाळो । तेज पुज भाळ रा नयण तीजा तसो, भरीजा काळ  
रा जमो भाळो ।—महागणा भीमसिंघ रो गीत

रु० भे०—भत्तीजो, भत्तीज, भत्तीजउ, भातीजो, भातीज, भातीजो ।

भत्तळियो—देखो 'वधूळो' (अल्पा, रु भे )

भत्तळो—देखो 'वधूळो' (रु भे )

उ०—अरु श्रेक दिन जेठ रैं महीन मं बायर ठाकुरसी जी चौवारै  
मं विराजिया है । नैं राजपूत खनैं बंठा है । अरु जेसळमेरी जी  
भीतर सपाडै विराजिया जिसै भत्तळो आयो सू कपड़ा रेत सू सारा  
भरीजिया ।—द दा

भत्तळ्यो—देखो 'वधूळो' (रु भे )

भत्त—१ देखो 'भात' (रु भे )

उ०—भूप जडावें मुगट मभ्र, रोहण गिर उतपत्त । निस दीपग  
प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरव भत्त ।—वा दा

२ देखो 'भक्त' (रु भे )

भत्ति—१ देखो 'भक्ति' (रु भे )

उ०—जिनवर भत्ति समुल्लसिय, रोमाचिय निय अग । नांना  
विधि करि वरणवू, आणी मन उछरग ।—स कु

२ देखो 'भात' (रु भे )

उ०—असुराण अण्डुर ब्राह्म बलतर गात गिरव्वर गति । गति  
राख समव्वर उहं अव्वर भुजा डारण भत्ति ।—मा वचनिका

भत्ती—१ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—वीराघिवीर मिळै मीर, सूर घीर सत्थ ए । आरेण मत्ती  
भीम भत्ती, वाण पत्ती पत्थ ए ।—गु रू व

२ देखो 'भतई' (रू भे)

भत्तीजो—देखो 'भत्तीजो' (रू भे)

उ०—मांमो भारोजो हिळमिळ मुख मोढो, फोडो किंचित नह,  
फलका री फोडो । काको भत्तीजो सारें दिन काटो, घर मे घाटो  
नह, घाट री घाटो ।—ऊ का

भत्ती—स० पु० [स० भत्तम्] १ वेतन के अतिरिक्त किसी कारण  
विशेष से मिलने वाला धन या दैनिक व्यय ।

२ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—पीतरा 'सेवा' रा जागी घुरावें सतारा वार, घावें खळा खता  
रा भूढा घाड-घाड । अवीह भत्ता रा डका आवें सदा अठवारा,  
कपनी जहावें किलकत्ता रा किवाड ।—सकरदान सामोर

भत्रीज, भत्रीजउ—देखो 'भत्तीजो' (रू भे)

उ०—१ बीजा ही सार्य दळ सव्वळ, भाई वध भत्रीज भुजागळ ।  
महि लहडो खुरसाण मडोवर, अडिओ वडा सरस ग्रहि असिमर ।  
—र वचनिका

उ०—२ रीसाविउ राउल भत्रीजउ, तही लगइ छत थाणइ ।  
सातल मोह तणी परि गाजइ, सवळ वीर समीयाणइ ।

—का दे प्र

भथरट्ट—जाति विशेष ।

उ०—आहाण सेवइ वेसनड, अता नही कुलवट्ट । अमि भूलि मिउ  
भामिनी, को भरडउ भथरट्ट ।—मा का प्र

भथाइत, भथाइति, भथाइतु, भथाउ भथाउत, भथाउतिइ—स० पु०  
[स० भस्था + रा० प्र० आइत, आइति, आउतु] १ तरकसधारी ।

उ०—१ कठाल कसी, भडार भर भरा भरिया, रथ जूता, राउत  
पायक भथाइति गगादकि स्नान कीधा गोत्र देव पूज्या ।—व स

उ०—२ एव विध आयुध विसेसि डाचा भरिया, पत्तियुद्ध प्रवर-  
त्तिउ, हाथिउ हाथिइ, असवार असवारि, पायक पायकि, भथाइतु,  
भथाइति, सरासरि ।—व स

उ०—३ हाथिउ हाथिइ, घोडो घोडइ, रथ रथइ पायक पायवइ,  
भथाउत, भथाउतिइ, खड्गायुध खड्गायुवि ।—व म

२ तरकश बनाने वाली एक जाति या उम जाति का व्यक्ति ।

रू० भे०—भाथाइत ।

भथारी—१ देखो 'भाथी' (रू भे)

उ०—सिर वामी वधियो, वणं सिरपाव वखाणा । जड जमदह  
जीमणं, कमर जडकं केवाणा । कियो पुर कैमरां, भीड ऊपरा  
मथारी धनक बाह धारिया, कूत तोलियो करारी ।—वखतो खिडियो

२ देखो 'भाती' (रू भे)

भथूळियो—देखो 'वथूळी' (अल्पा, रू भे)

भथूळो—देखो 'वथूळी' (रू भे)

भथूल्यो—देखो 'वथूळी' (अल्पा, रू भे)

भदणो, भदवो—१ देखो 'भिदणी, भिदवो' (रू भे)

उ०—रवदा खग वाहवो 'रामावुत', रेणा पुड भदियो रतग ।

भुजग सुपेद लाल रग भदियो, भूली तिण घाटं भुयग ।

—रामावत गठीड रों गीत

२ देखो 'वधणी, वधवो' (रू भे)

भदणहार, हारी (हारी), भदणयो—वि० ।

भदिओडो, भदियोडो, भदघोडो—भू० का० कृ० ।

भदीजणो, भदीजवो—भाव वा० ।

भदर—१ देखो 'भदर' (रू भे)

उ०—नाई वारी वारी सू च्यारू जणा रें माथें हाथ फेरया । दुख  
अर इचरज सू पूछयो—अदाता भदर क्यू व्हिया, काई बात व्ही ।  
—फुलवाडी

२ देखो 'मद्र' (रू भे)

३ देखो 'मादवो' (मह, रू भे)

भदरक—स० पु० [स० भद्रक] १ सार, तत्व ।

उ०—रामचदजी आया घणा-ई घरम री घजा । हजारं रुपिया  
पाठमाला रें नाव सू चदो कर'र गिटया अर डकार-ओ को लीनी ।  
'ह तो कैवू ह आपा-नै हालणी जोयीजें अर जोर लगावणी  
जोयीजें ।' अवं हाली भला-ई कुई भदरक को रें'यो नी ।

—वरसगाठ

२ मनोहर सुदर ।

भदरकाळी—देखो 'भद्रकाळी' (रू भे)

भदरजात, भदरजाति, भदरजाती—देखो 'भद्रजात' (रू भे)

भदरा—देखो 'भद्रा' (रू भे)

भवाउ—देखो 'वघाऊ' (रू भे)

भवाउडो—देखो 'वघाऊ' (अल्पा, रू भे)

भदाऊ—देखो 'वघाऊ' (रू भे)

भदावुडो—देखो 'वघाउडो' (रू भे)

उ०—पहलो पव सावण हो लाग्यो, तो लाग्यां भदावुडो उडवा  
नै । मेरो मन मारुजी मिळवा नै ।—लो गो

भदावत—स० स्त्री०—राठोड वंश की एक उप-शाखा ।

उ०—सुजडा हथो भदावत सामळ, 'भीम' हरी, छळ घणी भुजा-  
गळ । सामळ जोड जोव सादावत, रिण पडिहार सजूभी रावत ।

—रा रु

भदाह—स० स्त्री०—अग्नि । (अ मा.)

भदियोडो—देखो 'भिदियोडो' (रू भे)

भवोडिया—स० स्त्री०—चोहान वंश की एक उप-शाखा ।



भद्रजात, भद्रजाति, भद्रजाती, भद्रजातीउ, भद्रजातीनाग—१ हाथी, गज । (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ काळी घड पावस कवळय, वग पकति दीप दतूसळय । हिलिया भद्रजातिय हीडुळता, परवत्त क पखिय सजुगता ।

—गु रू व

उ०—२ फवि तेल सिंदूर तिलवक फटा । भद्रजात भयकर स्याम भटा । निलवट्टु किरीट फिलत निलै । चपळा घण मभ चमक चलै ।—मा वचनिका

२ सफेद रंग का हाथी ।

उ०—१ रचे रिण वार खग मार देती रिमा, ज्यार भद्रजात कि कसै पोहप जेम । कपोळ भ्रमर सू क्रम कोडीक करण, तिमर गिर हूत उडियण लसै तेम ।—कविराज करणीदान

उ०—२ सादूळा तैं 'जमहड सभ्रम, भिड भद्रजाती असुर भगा । दीसै रायहरै 'दुजणमल', मोती महिळा मवड लगा ।—नैणसी

उ०—३ दम हस्त परिधि परिकरित, सप्तगिह, भूमि स्पर्सतउ, चत्वारिसदधिक गजलक्षण चतु सती दग्गसतउ, किल ऐरावणा-द्वितीय, इसउ हस्ति भद्रजातिउ ।—व स

रू० भे०—भद्रजात, भद्रजाति, भद्रजाती ।

भद्रणौ, भद्रबो—क्रि० स० [स० भद्र] अच्छा करना ।

उ०—पाचे पाटे भद्रिउ भीमि भिडी ऊपाडी रीस । नवि मारिउ छइ माडी वयणि, जिम नवि दीसइ राडी भयणि ।

—सालिभद्र सूरि

भद्रणहार, हारी (हारी), भद्रणियो—वि० ।

भद्रिओडो, भद्रियोडो, भद्रघोडो—भू० का० कृ० ।

भद्रौजणो, भद्रौजवो—कर्म वा० ।

भद्रतण्णी—स० पु० [स०] एक प्रकार का गुलाब का फूल ।

भद्रता—स० स्त्री० [स० भद्र] १ श्रेष्ठता, अच्छाई ।

२ शिष्टता, सभ्यता ।

३ भलमानसता, साधुता ।

रू० भे०—भद्रता ।

भद्रपीठ—स० स्त्री० यो० [स० भद्र + पीठ] राजा या देवता आदि के अभिषेक होने का सिंहासन ।

भद्रवल्लभ—स० पु०—वलराम का एक नाम ।

भद्रबाहुस्वामि—स० पु० [स० भद्र + बाहुस्वामी] यशोभद्र के शिष्य, कल्पसूत्र के रचनाकार, भद्रबाहुस्वामि ।

उ०—प्रतिबोध जवूस्वामि तणउ, तप तउ हृद प्रहार तणउ, महा-प्राणव्यान भद्रबाहुस्वामि तणउ, अल्पदेसना चिलातीपुत्र तणो ।

—व स

भद्रसेन—सं० पु०—१ कस द्वारा मारा डाला जाने वाला देवकी का एक पुत्र ।

२ कुंसी का एक पुत्र । (भागवत)

भद्रखेच—स० पु० [स० भद्र + क्षेम] कुशलता क्षेम । (अ मा)

भद्रा—स० स्त्री० [स०] १ द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि की सजा ।

उ०—चद्रई ग्यारमी देव है, तीसरी चद्र छइ खोडीला-जोगि । काळ जोगण भद्रा नही, पुख नछत्र नई कातिक मास ।—वी दे २ दुर्गा देवी ।

३ पृथ्वी, अरुणि ।

४ सुमेरु पर्वत से विभाजित होने वाली गंगा की चार धाराओं में से उत्तर की ओर जाने वाली एक धारा ।

उ०—भद्रा उत्तर कू चली, अपनै सहज सुभाय । दक्खन कू तव उत्तरी, अलकसनदा आय ।—गजउद्धार

५ अर्जुन की स्त्री सुभद्रा का एक नाम ।

६ कैकय राज्य की कन्या जो श्रीकृष्ण को व्याही गई थी ।

उ०—काळिंदी विदा भद्रा कृश्ररि, कहि लखमणा फिपाळ रै । रीछडी नाग जीती निमो, पटराणं प्रतिपाळ रै ।—पी ग्र

७ कल्याणकारिणि शक्ति ।

८ आकाश-गंगा ।

९ गौ, गाय ।

१० हल्दी ।

११ द्रुव, दूर्वा ।

१२ छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक कन्या ।

१३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति ।

१४ फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग जो कृष्ण पक्ष की तृतीया और दशमी के शेषार्द्ध में तथा अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में रहता है ।

उ०—साचरे मेल सिसपालना मामटा, अपसकुन अने अवजोग थया एकटा । दसासूल भद्रा वितीपात महरत दीयो, क्रमीयो काळ चद्र काळ सनमुख कीयो ।—रुकमणी हरण

१५ आर्या गीति या 'खवाण' का एक भेद विशेष । (पि प्र)

१६ फूहड़ स्त्री । (व्यग)

उ०—१ ईये भात छोकरी महर रोज ले आवै नै वाणीये नु ले जाड देव । चवळा सेर ४, तेल सेर १, रोज ले जाइ नै भद्रा नु राधि नै देव । भद्रा खाइ नै त्रिपति हुवै ।—स्याम सुंदर री वात

उ०—२ सु मोनुं ऊठ भेकि नै उतारै । ज्यु हु कपडो लूगडी सवाहु, काजळ टीको करू । जे यु हु जासु ती लोगाया कहिसी, भद्रा छै ।—कावळी जोईयो नै तीही खरळ री वात

रू० भे०—भद्रा, भद्रा, भद्रा, भद्रिका ।

भद्राकरण—स० स्त्री० [स०] सिर, दाढ़ी एवं मूछ मुढ़वाने की क्रिया,

हजामत । (डि की)

भद्रातिथ, भद्रातिथि—देखो 'भद्रा' (१) ।

भद्रानंद—स० पु०—संगीत में स्वर-भाषन की एक प्रणाली ।

भद्रासण—स० पु० [स०] राज सिंहासन जिसपर राजाओं का अभिषेक किया जाता है ।



उ०—अर आगे देवराज री रचियो आठ हाथ उच्छित, आठ हाथ लवायत, वत्तीस पूतली सहित चद्रकातमणि मय एक सिंघासण कोई प्रसाद री पीठ-भू खोदता कडियो तिकी ही आप रै भद्रासण बणायो ।—व भा

भद्रिका—स० स्त्री० [स० भद्रा] १ फलित ज्योतिष के अनुसार योगिनि दशा के अन्तर्गत पाचवी कथा ।

२ देखो 'भद्रा' (रू भे)

भद्रियोडो—भू० का० कृ०—अच्छा किया हुआ  
(स्त्री० भद्रियोडी)

भद्रोत्तर—स० पु०—जैनियो के एक व्रत का नाम ।

उ०—कनकावलि, रत्नावलि, मुक्तावलि सिंहविकीर्णित महासिंह-विक्रीडित गुणरत्नसवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर मरवतोभद्र यव-मध्यचन्द्रायण ।—व स

भनक, भनक—देखो 'भणक' (रू भे)

उ०—१ प्रयाति चोल-गोल की भनक पोल मे परें धपे प्रसूर पूर लें, वियान धान मे घरें ।—ऊ. का

उ०—२ माया माया फेर दी, तनक भनक गद्द कान । लगी चट-पट तुरत ही, जाग उठे भगवान ।—गजउद्धार

भननेटिय—स० पु०—चक्कर ।

उ०—कथ कौन करे कटकी कटके, पग अक घरे पटकी पटके ।

बननेटिय ले पितु बैठन मे, भननेटिय ले धन भेटन में ।—ऊ का

भषको—देखो 'भभकी' (रू भे)

भषत—स० पु०—चन्द्रमा, शशि । (हिं को)

भषोभष [देशज] अनुरूप, तुल्य, समान ।

उ०—सेवला री सूला रै उनमान माथा रा केम, जटा वितरियोडी भैसा जैडो माथो, आगळ डोढेक री लिलाडी, सामा आवळिया खाता भवरा, रीछ रै भषोभष रुवाळी, गौ रै जिमी खाल, घोर खोदणिया जिनावर री गळाई तीखा नख, सीपनिया, जिमा लाठा ।  
—फुलवाडी

भवकाणी, भवकावो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि० ।

भवकाणो, भवकाडवो, भवकाणी, भवकावो, भवकाणो, भवकावो—प्रे० रू० ।

भवकाणोडो, भवकाणोडो, भवकाणोडो—भू० का० कृ० ।

भवकाणो, भवकाणो—भाव० वा० ।

भवकाणो, भवकाडवो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि० ।

भवकाणोडो, भवकाणोडो, भवकाणोडो—भू० का० कृ० ।

भवकाणो, भवकाणो—कर्म वा० ।

भवकाणोडो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

(स्त्री० भवकाणोडो)

भवकाणी, भवकावो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि० ।

भवकाणोडो—भू० का० कृ० ।

भवकाणो, भवकाणो—कर्म वा० ।

भवकाणोडो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

(स्त्री० भवकाणोडो)

भवकावणी, भवकावो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकावणहार, हारो (हारी), भवकावणियो—वि० ।

भवकावोडो, भवकावोडो, भवकावोडो—भू० वा० कृ० ।

भवकावो, भवकावो—कर्म वा० ।

भवकावोडो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

(स्त्री० भवकावोडो)

भवकावोडो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

(स्त्री० भवकावोडो)

भवकी—देखो 'भभकी' (रू भे)

भवकी—देखो 'भभकी' (रू भे)

भवकाणी, भवकावो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

उ०—बराळा घीम चव रोस चाळा विदण तवत डीली तणो सामळ तेम । 'जसावत' तणा गव तेज माहे जळें, जवन खळ कीट आतस भवकाव जेम ।—महाराजा अजीतसिंह जी राठोड री गीत ।

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि० ।

भवकाणो, भवकाडवो, भवकाणी, भवकावो, भवकावो, भवकावो—प्रे० रू० ।

भवकाणोडो, भवकाणोडो, भवकाणोडो—भू० का० कृ० ।

भवकाणो, भवकाणो—भाव० वा० ।

भवकाणो, भवकाडवो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि० ।

भवकाणोडो, भवकाणोडो, भवकाणोडो—भू० का० कृ० ।

भवकाणो, भवकाणो—कर्म वा० ।

भवकाणोडो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

(स्त्री० भवकाणोडो)

भवकाणी, भवकावो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि० ।

भवकाणोडो—भू० का० कृ० ।

भवकाणो, भवकाणो—कर्म वा० ।

भवकाणोडो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

(स्त्री० भवकाणोडो)

भवकावणी, भवकावो—देखो 'भभकाणी, भभकावो' (रू भे)

भवकावणहार, हारो (हारी), भवकावणियो—वि० ।

भवक्कावियोडो, भवक्कावियोडो, भवक्कावियोडो—भू० का० कृ० ।

भवक्कावोजणो, भवक्कावोजवो—कर्म वा० ।

भवक्कावियोडो—देखो 'भभकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवक्कावियोडो)

भवक्कियोडो—देखो 'भभक्कियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवक्कियोडो)

भवण—देखो 'भवन' (रू भे)

उ०—उठा हू नागणेच्या भवण आविया, लाविया सरव रणवास लारे । गती गजराज हसा गवण गोमणी, 'इद्र' पर कामणी लवण वारें ।—मे म

भवुतासिद्ध, भवुतासिध—देखो 'विभूतासिध' ।

उ०—कोठे तो वाजा वाजिया भवुतासिध कोठे घुरा छै निसाण भवुतासिध वागा मे ।—लो गी

भवूत, भवूती—देखो 'विभूति' (मह, रू भे)

भवभकणो, भवभकवो—देखो भभकणो, भभकवो' (रू भे)

उ०—पिंड नाळपरा, भवभक भभरा । रत्र पत्रवभरा चोमटी चड रा ।—सू प्र

भवभकणहार, हारो (हारी), भवभकणियो—वि० ।

भवभक्कियोडो, भवभक्कियोडो, भवभक्कियोडो—भू० का० कृ० ।

भवभक्कीजणो, भवभक्कीजवो—भाव वा० ।

भवभक्कियोडो—देखो 'भभक्कियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवभक्कियोडो)

भभक—स० स्त्री० [अनु०] १ भभकने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

२ जल्दी, शीघ्र ।

उ०—तज गया गहवळ खाय तापा, भभक ओसुर भागिया । उण ठोड जिए रा रिखा आस्रम, जाग घूमर जागिया ।—रू

३ गध, बदवू ।

४ अग्नि, आग ।

उ०—सग पाहूड री घाता कवला भाड री सका, भ्रूसडा फाड री कना भाड री भभक । हदपा पाड री वाड घाड री 'वलूत' हाता, ताड आनाड री वर्ज राड री तुपक ।

—महाराजा वलवतसिध री गीत

रू० भे०—वभक ।

भभकणो, भभकवो—क्रि० अ० [अनु०] १ वेग से जल उठना, भडकना ।

उ०—१ थोडा मे ई घणो समभण री चेस्टा करज्यो के ओ अधारो खुद ई इत्तो गोटी जग्यो है के वो मत्तै ई सिळग नै भभकला ।—फुलवाडी

उ०—२ फोजा झडा फरहरे, भभकी तोफा भाळ । चित ओछकियो 'चिमन' री भैचकियो भुरजाळ ।—लिछमीदान वारहू

२ क्रुद्ध होना, उत्तेजित होना ।

उ०—सो हरीसीध री नाव सुणता ही भाई म्होकमसिध वंठी थो सो ईसो भभकियो जाणै दारू रा गज माहे आग री चिणगी पड़ी ।

—प्रतापसिध म्होकमसिध री वात

३ तेज दुर्गन्ध आना, बदवू फूटना ।

उ०—अति खूणा ऊडा थूडम थूडा, कूडापथ करदा है । मूछा विन मूडा भासत भूडा, भस्सूडा भभकदा है ।—ऊ का

४ मन ही मन मे कुठना, सतप्त होना, सुलगना । (लाक्षणिक)

उ०—मासी श्रेक सूटी तणी ऊडो निस्कारो न्हाक नै बोली—वेटी ! जुगा जुगा सू हर लुगाई रै मूडै ओ सवाल भभक है, पण आज दिन ताई कुण इण री जवाव दे सक्यो ?—फुलवाडी

५ द्रव पदार्थ का उमडना, तेज प्रवाह मे निकलना ।

उ०—१ खळ दस सहस्र अडै दळ खूटा, तीन सहस्र कमवज भड तूटा । भभकै घाव तडफडे भूमै, धायल हुवा किता भड घूमै ।

—सू प्र

उ०—२ तुछ जळ जगही माछळा तडफड तिरा विध भाराथ ।

भभकइ रुधिर भडजर भागा, एका कहर लाविया हाथ ।

—महादेव पारवती री वेनि

६ वाद्यो की ध्वनि होना ।

उ०—नोवत रा टकोरा लागे छै । नोवति भीगडि पडी नै रही छै । भेर, नफेर, करनाळ भभक नै रह्यो छै ।—रा सा स

७ गरमी पाकर उबाल आना, उबलना ।

८ आवेश मे होना या आना ।

भभकणहार, हारो (हारी), भभकणियो—वि० ।

भभकाडणो, भभकाडवो, भभकाणो, भभकावो, भभकावणो, भभकाववो—प्रे० रू० ।

भभक्कियोडो, भभक्कियोडो, भभक्कियोडो—भू० का० कृ० ।

भभक्कीजणो, भभक्कीजवो—भाव वा० ।

ववकणो, ववकवो, ववकणो, ववकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-

कणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभकणो, वभकवो, वभ-



जलाना, भठकाना ।

३ तेज दुर्गन्ध फैलाना, बदबू फैलाना ।

५ वाद्यो का बजाया जाना ।

भभकाणहार, हारौ (हारी), भभकाणियो—वि० ।

भमकाईजणौ, भमकाईजवौ—कर्म वा० ।

धमपकावो—ह० भे० ।

(स्त्री० भभकायोडी)

उ०—घट सेल पार बवार घाव, भभकार रुधिर पिचकार भाव ।

वि०—गहरा ।

च०—गपती क

गिर जात भूमि तन भाफ धारि फिर उठत मार मारतु बकारि  
—सा रा

सू० भे०—वभकार ।

२ देखो 'भमक' (रु मे )

उ०—१ तहां सोनहरी-पटैत विकराल रूप बाब भयकार करे ।

—५५—

२०—२ डाचकियो सबळ लियां दळ सारें, भभकारे तोह्य कर  
मुक। धीठ कुरीठ सकी नह पारें, चारें खेत खडी भ्रागचक।

—नवलसिंघ सेखावत री गीत

४०—३ एकत्र दिसि रावल अनम्म, आलिमपति दिसि एका, भम-

फारे वेह सुभट, राखण रजवट टेका — प च ची

मभकारणहार, हारी (हारी), मभकारणियो—वि०

भभकारोजणो, भभकारीजवो—कर्म वा० ।

(स्त्री० भभकारियोडी)

कावणी, भभकावघी—देखो 'भभकाणी, भभकावी' (रु मे)

भभकावणहार, हारो (हारी) भभकावणियो—वि० ।

भभकाविश्रोढी, भभकाचियोढी, भभकाव्योढी—भू० का० कृ० ।

भभकावीजणो, भभकावीजवो—कर्म वा० ।

भभकावियोडो—देखो 'भभकायोडो' (रु मे )

(म्य्री० भभकावियोही)

भभकियोडो-भू० का० कु०—१ वेग से जला हुआ, भटका हुआ  
२ शोषित हुआ हुआ, उत्तेजित हुआ हुआ ३ तेज दुर्गंध युक्त  
हुआ हुआ, बदलू से सना हुआ ४ तेज गति से द्रव पदार्थ उमहा  
हुआ, तेज प्रवाह से निकला हुआ ५ ध्वनिमान हुआ हुआ (वाद्य)  
६ गरमी पाकर उबला हुआ

(स्त्री० भभकियोडी)

मभकी-स० स्त्री०—१ झठी घमकी, घुडकी ।

## २ गहरी प्यास ।

३ जलन, दाह ।

रु० भे०—भवकी, यभकी ।

भभकौ-स० पृ०—१ आसवन यन्त्र । नलिका यन्त्र ।

वि० वि०—किसी वस्तु का अर्क या शराव निकालने का वह यंत्र जिसमें एक मिट्टी की डेगची या हाडी पर एक ताँवे की वालटी जैसा वरतन जिसकी किनारी ४ अंगुल डेगची के भीतर रहे, ऊपर लगा कर सधि लगा दी जाती है। एक कटोरा, कढ़ाई के आकार का, वालटी के पैदे में लगा दिया जाता है। वालटी में कटोरे के नीचे के भाग में एक नली लगा दी जाती है। डेगची के नीचे घ्राग लगाने पर उस पदार्थ की भाप बनकर अर्क उस नली की द्वारा बाहर निकलता रहता है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी नली होती है जिसमें से जल उष्ण होने पर बार २ निकलता रहता है और उसमें ठहा जल डालते रहते हैं।

२ शीघ्र उत्पन्न होकर समाप्त होने वाली चमक । (ज्वाला, लपट)

उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सघराज की गोटी, तारे की तूट । आतस की भभकी, चक्री की चाल, चपला को चमकी

छाती की ढाल ।—मयाराम दरजी री बात

३ रोष, क्रोध ।

#### ४ उत्तेजना, चग्रता ।

उ०—हाकालिया केहरी 'गुमान' बाळा बगा हाका, रारियां भभका  
क्रोव ढका ववी रोड । गजां काळा मोड बाळा रखे तू दूसरा 'गजा',  
जोडबाळा पोहा री मरोड जाडी जोड ।—गोपालदास दधवाडियो

५ आवेश, जोश ।

६ चमक, दमक दीप्ति, आभा ।

रू० भे० भपको, भवको, मभक्की ।

मभक्कणी, मभक्कवी—देखो 'मभक्कणी, मभक्कवी' (रू भे)

उ०—हर हिंदुनि हक्किय वीर किलक्किय, सोर मभक्किय ओर दह । सिर सेस लचक्किय भूमि मचक्किय, कील मचक्किय दत कहू ।

—ला रा.

उ०—२ 'अभैमल' आगळ जोष अपार, वधै वध खाग वधै जिए-वार । कटै सिलहक्क कडा कसणक्क, मभक्क डवक्क सोणक्क मभक्क ।

—सू प्र

उ०—३ पडियो घरति माक्की सुपेख, भयकर मभक्कै रुद्र भेख ।

—मा वचनिका

मभक्कणहार, हारो (हारी), मभक्कणियो—वि० ।

मभक्कियोडो, मभक्कियोडो, मभक्कियोडो—भू० का० कृ० ।

मभक्कजोणो, मभक्कजोवो—भाव वा० ।

मभक्कियोडो—देखो 'मभक्कियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मभक्कियोडो)

मभक्कौ—देखो 'मभक्कौ' (रू भे)

उ०—थया हाथ मे थमागी कूत ताखा क्रोध थडी को सी, हेम थद्रा चौमासै उमडी को सी हूळ । खीजिये पाराथ रो मभक्कौ वांण खडी को सी, मेल वैरीसाल वाळी चढी को सी फूल ।—महादान महह ।

मभरणी, मभरवी—क्रि० अ०—१ धवराता ।

२ भ्रम मे पडना ।

मभरणहार, हारो (हारी), मभरणियो—वि० ।

मभरियोडो, मभरियोडो, मभरियोडो—भू० का० कृ० ।

मभरीजोणो, मभरीजोवो—भाव वा० ।

मभरियोडो—भू० का० कृ०—१ धवराया हुआ २ भ्रम मे पडा हुआ ।

(स्त्री० मभरियोडो)

मभरूक—स० पु० [दि०] राजस्थानी लोक कथाओ मे प्रसिद्ध एक भूत भामरी ।

उ०—घड धार अपार लुहा घर रै, मभरूक भयकर पत्र भरै । परिवार सहेत हुवै अपती, जुगणी चवसठ सगति जिती ।—सू प्र

मभरूत—१ विकराल रूप ।

उ०—१ मभरूत रजी घोसर भसम काळदूत चख भाळ किय । वनि वसै भूतकाळा वयड, वनखडी अवधूत विध ।—सू प्र

उ०—२ वहि वाण वजर हूका वधै, मतवाळा ओवा मजा । जवाळ मे हुवै मभरूत जग धूत पठाणा कमधजा ।—सू प्र

उ०—३ वकै छकै वीफरै, हुवा मभरूत गहकै । खोख तीख नह चकै, थहै रिएहूत न थके ।—प्रतापसिध म्होकमसिध री वात

मभूत—देखो 'विभूति' (रू भे)

उ०—१ म्हारै घर रमती ही आई रे, तू जोगिया । कानां विच कुडल गळे विच सेली, अग मभूत रमाई रे ।—मीरा

उ०—२ जे सिद्धरें ओ भैरव सिद्धरें ओ अग मभूत । खादे ओ भैरव खादे ओ कावड मद भरी ।—लो गी

मभूतासिद्ध, मभूतासिध—देखो 'विभूतासिध' (रू भे)

उ०—वागा मे रे वगीचा मे थारै धूप रही गरणाय मभूतासिध वागा मे ।—लो गी

मभूतो—देखो 'विभूतो' (रू भे)

२ देखो विभूतासिद्ध ।

मभूति, मभूती—देखो 'विभूति' (रू भे)

मभो—देखो 'म'वर्ण ।

मभ्मीखण, मभ्मीखण—देखो 'विभ्मीखण' (रू भे)

उ०—परालवध का पावणा, देख दई का खेल । मभ्मीखण ने लक अर, हड्डमान ने तेल ।—अज्ञात

मभग—वि० [स० भ्रमर+अग] काला, कृष्ण ।

उ०—रामदास हरराम गुरारी, गुरू महिमा मच गाई । प्रकट मभग भुजग दस्यो पर, प्रवळ चली परवाई ।—ऊ का

२ भौरा ।

३ देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—१ वह वायक सिधजिम बोलता, तायक भुजा गयण तोलता । भेख तखिक खीजिया मभगा, दुरत रोस चख भडै दमगा ।—सू प्र

उ०—२ लीलाट ती पूतम रो चद जाण, अलका जी के सोभाती सोयी । वेंणी जाणै कचन री रेख मे मभगण सूती ।—पर्ना०

उ०—३ जग तोप भाल असमान जाय । उडता मभग धर पडै आय ।—वि स

उ०—४ रिए जग वागा रोस, अण भग री दीठी इसी । जिए रग इसडो जोस, जाणै, मभग जगाधियो ।

—प्रतापसिध म्होकमसिध री वात

उ०—५ भार गज टला फोजा मभग भोयणा, जुघ अडग ओपणां रुपै जाभा । क्रोध भर अतर भरवे अगन कोयणा, कवर धर दोयणा लियण काजा ।—रामलाल आढी ।

उ०—६ भोम उरडा भडां भार पडसी मभग, दवा सु लोयणा लाय भडसी दमग ।—महाराजा मानसिंह जोधपुर री गीत

(स्त्री० मभगण)

मभगर—स० पु०—काला सर्प, कृष्ण नाग ।

मभणी, मभवी—देखो 'भवणी, भववी' (रू भे)

उ०—१ पही, मभता जइ मिळइ, तउ प्री आवे भाय । जोवन वधन तोडसइ, वधण घातउ आय ।—ढो मा ।

उ०—२ हसती खेलती खूब खेलती अकासै हार्थ, रमती मभती

माय करै सुरा राज —मा वचनिका

भमणहार, हारो (हारी), भमणियो—वि० ।

भमिघोडी, भमिघोडी, भम्योडी—भू० का० कु० ।

भमोजणी, भमोजवी—भाव वा० ।

भमिघोडी—देखो 'भमिघोडी' (रू भे)

(स्त्री० भमिघोडी)

भमडी—स० स्त्री० [स० भ्रमर] घूम, घुमाव, चक्कर ।

उ०—दुराविध घमडी दै सणकारी साजी, भारी भमडी लै घर मे भूवाजी । चिलमी भ्रमली के जुलमी चितचावा, दासी बैस्या रा मदवा रै दावा ।—ऊ का

भमण—१ देखो 'भूण' (रू भे)

२ देखो 'भवन' (रू भे)

३ देखो 'भ्रमण' (रू भे)

४ देखो 'भ्रमर' (रू भे)

उ०—ऊहू साहू बिहु दिखण घरा ऊफणै, भमण दळ आलमा जळा भव का । 'पाळ' रा बिहु बळ डूवता पैरिया, 'नाथ' रा तणी बाणास नवका ।—राव सत्रसाल हाडा री गीत

भमणि—देखो 'भवन' (रू भे)

उ०—इणि छलि रति पमणइ, वर गरभु म आणमि चीति । पारस भमणि जोय लोपइ, कोपइ तू सवि रीति ।—मेरुनन्दन

भमणो, भमवो—देखो 'भवणो, भववो' (रू भे)

उ०—१ सपत दत भ्रम ऐ, घटाक पथ वग ऐ । घजा वैघगरा सिरै, ममै क पख भवखरै ।—गु रू व

उ०—२ भमिया अत्युलोक भुमण पिए भमियउ, माठ हजार लिजइ भड माथि । राजा सगर तरणउ ताइ रेंवत, बहु सबदई कुण वाघइ घाति ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ सुण समके कोइ सुघड सयाणा, भोदू मुण भम जावै । आया माघ न देवे उत्तर, वाछित वस्तु बतावै ।—ऊ का

उ०—४ मू थनै अर वापू नै अठै छोडनै जीवपुर मजूरी करण नै गयी जरूर पण मन तो म्हागे अठै ईज भमतो ।—रातवामी

भमणहार, हारो (हारी), भमणियो—वि० ।

भमाडणी, भमाडवी, भमाणो, भमाघो, भमावणी, भमाववो

—प्रे० रू० ।

भमिघोडी, भमिघोडी, भम्योडी—भू० का० कु० ।

भमोजणी, भमोजवी—भाव वा० ।

भमर—१ देखो 'भवर' (रू भे)

उ०—१ आलीजा अलवेलिया, हो हजा हुमनाक । भीनोडा रमिया भमर, छैल पियो मद छाक ।—बा दा

उ०—२ अछ्छरा बीद वणिया अछा, भडा तिलक अणिया-भमर । जमहूत भमर माडै जिजा, 'कमरा' पर बाघी कमर ।—मे म

उ०—३ उपर जियां घनूग उणिहारै, भमर वक पकति भव-हारै । मीसर भमर अहर परवाळक, बिहुवै जुलफ जाण अहि-वालक ।—मू प्र

उ०—४ मकर चक्र भमर सावळ घजर वेल सज, पमग जुघ मेळ घर उमग पमरा । भमनमो 'गजण' गळ सूहण घण ऊमळै, 'अजण' तण महण रण वहण भमुरा ।

—महाराजा अर्गोसिघ राठोड री गीत

उ०—५ अणताव कूत असमर भमर वच्छ मच्छ कुर्म मवळ । 'गजवध' मंडाणी मेर गिर, मपतमिघ दखणाघ दळ ।

—गु रू व

उ०—६ मरसत मात पसाव कर, दे मो अविरल मति । भोगी भमर भुवाळ जे, गुण गाऊ तसु भक्ति ।—डो मा.

उ०—७ कण्डा के कवूतर, भूरटा स्याह भमर । चपला नोनडा जग, पयला नेजी पवग ।—गु रू व

२ एक प्रकार का छंद ।

उ०—त्रिणि लघु वि गुर एह प्रमतार, वरण चरण आवै चय बार । होइ विलाख छयोस हजार, पणि मो सात छहोतरि पार । खरा रूप कहिया खाति, भमर छद सुणिजो इणि भाति ।

—ल पि

३ देखो 'भ्रमर' (रू भे)

उ०—एक साथ अन्नेक, फरै घरहरै फुहारा । विमळ पुहप विमतरै, भमर भणहणे गुजारा ।—सू प्र.

४ देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—पहिली ही सीह वळे पाखरियउ, वणता वर आभरण वखाण । भमरा विचड वाधियउ भामण, भवर तिलक ताइ ऊगउ भाण ।—महादेव पारवती री वेलि

भमरकडी—देखो 'भवरकडी' (रू भे)

भमरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भमरगुफा—देखो 'भवरगुफा' (रू भे)

उ०—भमरगुफा मकि रमै तजै भ्रम, जीतै निद्रा त्रिकुटो सजम ।

मन मोहणो नागणी मारै, खवै ताम अम्रत तत मारै ।—सू प्र

भमरडो—१ देखो 'भवर' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)

भमरछैल—देखो 'छैलभवर' (रू भे)

भमरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

भमरडड—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)

उ०—भमरडड मरिवा अणवीहतउ, पमरि पइसइ केतकिई हतउ ।

कठिन कटक कोडि कुटीरडड, पडिड वेचि पछड पुणि आरडइ ।

—सालिसूरि

भमरडो—२ देखो 'भवर' (अल्पा, रू भे)

भमणियो—१ चरखे का गोल चक्र ।

२ देखो 'भूण' (अल्पा, रु भे)

ममरभार—स० स्त्री०—एक प्रकार की भाग ।

ममरभीख—देखो 'भवरभीख' (रु भे)

ममरलउ, ममरलु, ममरलौ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ मेरु महीघर पर अविचल रहउ, मुक्त मन ए हिज रे देव सलूणा । ग्यानतिलक गुरु पद कज ममरलउ, 'विनयचद्र' करड सेव सलूणा ।—वि कु

उ०—२ हू पक्षिनी तू ममरलु, तू तरुअर हू वेलि । माघव महा-योवन माहि, हू सेलू तू खेलि ।—मा का. प्र

२ देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ प्रीतम मारा ममरला जी, काइक कीजै सक । फुल्या दीसै फुटरा जी, आफु आडै अक ।—वि कु

ममराण—१ देखो 'भ्रमर' (मह, रु भे)

उ०—भ्रूआवल वेहु मडी, ममराण गुजारा । भोयण (लोयण ?)

कीजै भामण, कोयण कुरगा रा ।—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'भवर' (मह, रु भे)

ममराई—देखो 'भवराई' (रु भे)

ममरामाखी—देखो 'भौरामाखी' (रु भे)

ममरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रु भे)

ममराळ—देखो 'भवराळी' (मह, रु भे)

ममराळी—देखो 'भवराळी' (रु भे)

उ०—रग केइक रातडा, भसम धूहर ममराळा । जटा जूट ऊजळा, केइक भूरा केइ काळा ।—सू प्र.

ममरावळि, ममरावळी—देखो 'भ्रमरावळि' (रु भे)

उ०—सोहै नीलावर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमाण । चपकमाळा हरत चित, जुत ममरावळि जाण ।—बा दा

ममरियो—१ देखो 'भवरियो' (रु भे)

२ देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

३ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रु भे)

ममरी—देखो 'भवरी' (रु भे.)

ममरेचा—स० स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।

ममरी, ममरघी—देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ हर ममरी होमी हरी, जीते जम री जग । कर उदिम रोलव करै, ममरी कीटी अग ।—र ज प्र

उ०—२ पडै मचकूर लघन खबर पाडिया, 'जोध' खग भाडिया घकी जमरी । राव विन फिरग भेले कवण राडिया, भमै नव

नाडिया बीच ममरी ।—कमजी दधवाडियो

२ देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

उ०—बंठा ते दरीया विचै, जेहवै आघो जाय । आय पड्या मम-रघा विचइ, बाजै सबलो बाय ।—प च चौ

ममळ—स० पु० [स० भ्रमर] १ काला, श्याम ।

उ०—समळ हुवा कपडा सकल, ममळ हुवो घट भग । कमळ बदन कुम्हलायगो, अमल खायगो अग ।—ऊ का

२ देखो 'भवळ' (रु भे)

ममलि—देखो 'भवळ' (अल्पा, रु भे)

ममहडी, ममहि—स० स्त्री० (स० भ्रू) भौंह ।

उ०—१ नासा सा शुक् चचडी, ममहडी दीसइ वेऊ वाकुडी ।

बोलु कि वहुना, कुमार जमलु काई अ ओपइ नही ।—प्रा फा स

उ०—२ चचल चपल तोरी आखडी, जैसी कमला दलची पाखडी ।

तोरी ममहि अछइ अणीआलडी, एहवइ नल जीइ हू छडी ।

—नळदवदती रास

ममाडणी, ममाडवी—देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

उ०—१ वधि खळ थटा करु भळ वेगा, तखा भुजग ज्यु ही भल तेगा । भळहळ गदा जेम खग भाडू, भीम पडव जिम गजा ममाडू ।

—सू प्र

उ०—२ भीम विना कुण गजा ममाडै, जारै हर विन कमण जहर । बीजा 'वाघ' विना बीलाडे, अवडा कुण मारै असुर ।

—तेजसी खिडियो

ममाडणहार, हारी (हारी), ममाडणियो—वि० ।

ममाडिओडी, ममाडियोडी, ममाड्योडी—भू० का० कृ० ।

ममाडीजणी, ममाडीजवी—कर्म वा० ।

ममाडियोडी—देखो 'भवायोडी' (रु भे)

(स्त्री० ममाडियोडी)

ममाडणी, ममाडवी—देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

उ०—१ भुजाडड ऊलाळि भाली ममाडै, आजको इसी मेर बाथा उपाडै । गरज्जै भली बोलियो भीम ग्राही, पतीसाह भली बोलियो पातसाही ।—गु रु व

उ०—२ छोडि महावत खभूठाणा, मद तळ जोड वहुता दांणा ।

धूघर घट कसे अवाडी, गय चीघा गयणाग ममाडी ।—गु. रु व

ममाणी, ममावी—देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

उ०—पेखे खलु आवती सभाय चाप चडपाणा, साथी भुजा ममाये मयक वाणा मोक । जूझ जाडो करै रामचद रै सायका भडे, लक

आडी पडै ज्यू गिरद लोका लोक ।—र रु

ममाणहार, हारी (हारी), ममाणियो—वि० ।

ममायोडी—भू० का० कृ० ।

ममाईजणी, ममाईजवी—कर्म वा० ।

ममायोडी—देखो 'भवायोडी' (रु भे)

(स्त्री० ममायोडी)

ममावणकुजर—स० पु० यी० [स० कुजर + आमक] भीम । (ह ना)

ममावणी, ममाववी—देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

उ०—सत्रा गहि कथ उडावत सीम, ममावत जाणि गजा घड

भीम। हिचै भड 'माल' वहै खग हाथ, निजोडत रोद समोभ्रम  
'नाथ'।—सू प्र

भमावणहार, हारो (हारी), भमावणियो—वि० ।

भमावियोडो, भमावियोडो, भमाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भमावोजणी, भमावोजवो—कर्म वा० ।

भमावियोडो—देखो 'भवायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भमावियोडो)

भमियाळ—वि०—जानकार, ज्ञाता ।

उ०—दियण विडण भमियाळ 'दूदउत', साच सील भमियाळ  
साही । भाजेवा भमियाळ न भारथि, नाकारे भमियाळ नही ।

—ईसरदाम बारहुट

भमियोडो—देखो 'भवियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भमियोडो)

भमुह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—भमुहा ऊपरि सोहलो, परिठित जाणि क चग । डोला, एही  
मारुवो, नव नेही, नव रग ।—डो मा

भम्मणी, भम्मवो—देखो 'भवणी, भववो' (रू भे)

उ०—तम्मे रम्मे मत्ये तेग तावा पट्टे वच्च तुट्टे, कोण घावा वम्मे  
वोम भम्मे काळ फोष । 'चद' वाळो डांगे लागी नेजा घम्मे  
मेछां चमू, ज्वाळ खंडी रम्मे जाणे इद्र वाळो जोष ।

—हुकमीचद खिडियो

भम्मणहार, हारो (हारी) भम्मणियो—वि० ।

भम्मियोडो, भम्मियोडो, भम्म्योडो—भू० का० कृ० ।

भम्मीजणी, भम्मीजवो—भाव वा० ।

भम्मरकडी—देखो 'भवरकडी' (रू भे)

भम्मरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भम्मरगुफा—देखो 'भवरगुफा' (रू भे)

भम्मरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

भम्मरभीख—देखो 'भवरभीख' (रू भे)

भम्मरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू भे)

भम्मियोडो—देखो 'भवियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भम्मियोडो)

भयंकर—वि० [स०] १ डरावना, विकराल, भयावह ।

उ०—१ सूनी घाहर सिंध री, जाय सके नहि कोय । सिंध खडा  
थह सिंध री, कयो न भयकर होय ।—वा दा

उ०—२ भरिया चा सूर भयकर भारथ, करता पुरुस प्रणांम  
कहइ । उर ईसवर तणइ ताइ ऊपर, रडमाळ भिलती रहइ ।

—महादेव पारवती री बोलि

२ अत्यधिक ।

उ०—धरमराज री बेटी कही—राजकवर ! दुनियां मे घणकरी

वाता तो श्रैडी व्हे के वाने जाणणां सू सुख उपजे अर घणकरी  
वातां श्रैडी व्हे के वाने जाणणां सू भयकर दुख उपजे ।

—फुलवाडी

३ प्रवल, जवग्दस्त ।

उ०—भाटी 'गघपत' साध भयकर, सग कायथ 'देहर' मतसद्धर ।  
पातसाह अजमेर परम्मे, कूच कियो तडभट भड करसै ।—रा रु  
रू० भे०—भयकार, भयकारी, भयगर, भयद, भयकर, भयकार,  
भयागर ।

भयकरता—स० स्त्री० [स० भयकर+तल्+टाप्] १ डरावनापन,  
विकरालता ।

२ अधिकता ।

३ प्रवलता ।

भयकरपीठ—स० पु० [स० भयकर=विद्याल+पृष्ठ] हाथी, कुजर ।

भयकरी स० स्त्री०—देखो के रूप विशेष का नाम ।

उ०—विगरूपा भयकरी मुड धारण वाराही । वजरणी भंरवी,  
दीरघ तवी प्रेतवाही ।—मा वचनिका

भयकार, भयकारी—देखो 'भयकर' (रू भे)

उ०—१ भयकार 'पात्रू' खला एम भायो, अगै लाय लागी परं वाय  
आयो । करे साग भाले समी वाद केहो, जिणी वार ओ वच्च री  
आग जेहो ।—पा प्र

उ०—२ मिळे गनीमा अकारी फोज भयकारी माथं, दल्लक सवारी  
भारी सूडा डड ढाल । धीवतो दुधारी खळा अहकारी दीह घोळ,  
खारी वार 'रासा' वेल आवियो 'कुमाळ' ।—पहाडखा आडो

भयग—स० स्त्री० [स० भू०] १ पृथ्वी, भूमि ।

उ०—माडिया सरोज भयग चइ माथइ, हरखाणी चित लावन  
हरि । अतिरगता विराजइ ऊपर, पणयळियां मीमलइ परि ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—रोस भयग पलग ससोमित, वारह मेघ सु आर वरावरि ।  
मेल्हि अचेत सचेत करे मन, वेद समत 'हमीर' मज हरि ।

—वि. प्र

भयगचर—सं० पु० [स० भुजगचर] गरुड । (नां मा)

भयगर—देखो 'भयकर' (रू भे)

भयद—देखो 'भयकर' (रू भे)

उ०—भव दगियाव भयद, लहरा ऊठे लोभो री । माहे ज्यां मत  
मद मनख घणा हूँ मरे ।—वा दा

भय—स० पु० [स०] किसी सभाव्य विपत्ति या अनिष्ट की आशंका से  
उत्पन्न वह मानसिक स्थिति जिससे प्राणी के मन में क्षोभ एवं  
चिन्ता व्याप्त हो जाती है । डर, खोफ ।

उ०—१ दिन ऊर्ग नित देखणी, दाता री दीदार । भागै भूख कळैस  
भय, 'वक' न लागै वार ।—घां दा

उ०—२ राणा रुस्या भय मोरे नाही, चित साहब से तागा ।  
मीरावाई तो सरणे आया, लोक लाज भय त्यागा ।—मीरा  
क्रि० प्र०—आणी, खाणी, होणी ।

२ अघर्म के द्वारा उत्पन्न तीन राक्षसों में से एक ।

३ अभिमति नामक स्त्री के गर्भ में उत्पन्न द्रोण का एक पुत्र ।

रु० भे०—भइ, भव, भवि, भै, भो ।

भयकर, भयकार—देखो 'भयकर' (रु भे)

उ०—हुय हक्क किलक्क समुक्क हला, भयकार घडी वण वार  
भला । सिर ढाल कडक्कड रुक सदै, जिम वाग डडैहड फाग जदै ।

—ग रु

भयकारमुखी—स० स्त्री० [स० भय+मुख] १ तोप ।

२ डराने मुह वाली ।

भयचक—देखो 'भैचक' (रु भे)

उ०—भयचक हुआ अनेक महाभड, दिव री भाज गई भकभूर ।  
अयो (आयो) दिख रई घट ऊपर, केवा मागण वडउ करूर ।

—महादेव पारवती री वेलि

भयट्टाण—स० पु० [स० भय+स्थान] भय का स्थान । (जैन)

भयडि—स० स्त्री० [स० भ्रकुटि] मोह ।

उ०—भयडिहि भुयणु भमाडइ, भाभरभोली तोइ । नयणि अमीसरु  
वीघइ, छूटइ तरुणु न कोइ ।—प्रा फा सं

भयणि, भयणी—देखो 'वहन' (रु भे)

उ०—अट्टावयपमुह सवि नमीय तित्थ जा घरि पडुच्चई । मणीचूडह  
मित्तह भयणि राउ, एकु परिहरीउ वच्चई ।—सालिभद्र सूरि

भयद—स० पु० [स०] १ सूअर । (अ मा)

२ देखो 'भयदाई' (रु भे)

भयदाई—वि० यो० [स० भय+दायक] (स्त्री० भयदा, भयदाणी) भय  
देने वाला, भयावना, डरावना ।

उ०—लगर लज्जा रा तरभगर लाडा, गोरख गाया रा गाहिड  
रा गाडा । भाई भयदाई लागत है भारी, मीगा लज्जा है मीगाळा  
सारी ।—ऊ का

रु० भे०—भयद ।

भयनाशन—वि० यो० [स० भय+नाशन] (स्त्री० भयनामणी) १ भय  
का नाश करने वाला ।

स० पु०—२ ईश्वर ।

भयपद, भयप्रद—वि० यो० [स० भय+प्रद] भय उत्पन्न करने वाला,  
भयानक ।

भयभजन—वि० यो० [स० भय+भजन] १ भय को मिटाने वाला ।

स० पु०—२ ईश्वर, भगवान् ।

भयभीत, भयभूत—भू० का० कृ० [स० भय+भीत] डरा हुआ

उ०—१ दाहू भूठ दिखावै साच को, भयानक भयभीत । माचा

राता साच सौ, भूठ न आनै चीत ।—दाहूवाणी

उ०—२ मुहडै भरि बोलियउ महीपति, तेडइ कुण इसडउ अरव-  
धूत । गढपत तितरइ दाखतउ गाहड, भड अणजाण हुयउ भय-  
भूत ।—महादेव पारवती री वेलि

भयमोचन—वि० यो० [स० भय+मोचन] १ भय को मिटाने वाला,

डर दूर करने वाला ।

स० पु०—२ ईश्वर ।

भयरव—देखो 'भैरव' (रु भे)

उ०—भालड भयरव आवती, उत्तरइ वड-छालि । बालड राख  
लगाडवा, चाचरि चाचरि चालि ।—मा का प्र

भयरवी—१ देखो 'भैरवी' (रु भे)

उ०—जिए वार पाल जम रूप जाण, भळकत जेठ मध्यान भाण ।

जूभार वीर तोले जवान, भयरवी सबद घोले भयान ।—पा प्र

भयहर, भयहरण, भयहरता, भयहारी—वि० [स० भय+हरण]  
(स्त्री० भयहरणी) १ भय को हरण करने वाला, भय दूर करने  
वाला ।

स० पु० २ ईश्वर, प्रभू । (ना मा)

भयहुभ—भू० का० कृ० [स० भयभीत] अति भयभीत । (जैन)

भयाणक, भयाणख—देखो 'भयानक' (रु भे)

उ०—१ जगरूप भयाणक जमाति जाणै डाकदारु नै डाक के  
हुन्नर से आणे । अगू के अरवनाड, चालते पहाड ।—सू प्र

उ०—२ सूरत के भयाणक, जमराणू के जोस । जगू के जालम,  
तीरमदाजू के मिरपोस ।—सू प्र

उ०—३ भयाणख गाडा किता जूग भाळ, दळा गोळिया पूर  
सामान दाह । जळावोळ हीलोळ हालत जाडा, अणी आरवा  
पूरवां थाट आडा ।—सू प्र

भयागर—देखो 'भयकर' (रु भे)

भयाण—स० पु०—१ एक विशिष्ट जाति का घोटा ।

उ०—तेजी उरडा गह्वरा तोरणा खुरमाणा भयाणा हयाणा रोह-  
वाला रुडवाला तोरका मदकोरा पीलूआ ।—व म

२ देखो 'भयानक' (रु भे)

भयाणउ—स० पु०—१ एक प्रदेश का नाम ।

उ०—अवध्या वणारसी चदेरी मल्लीवाल महवर महोव हरियाणउ  
भयाणउ रत्नपुर कामरु ओडियाण जालवर मिधु आरव वगाळ  
त्रिहृण भोट ।—व म

२ देखो 'भयानक' (रु भे)

भयाणक, भयाणख, भयाणग—देखो 'भयानक' (रु भे)

उ०—जुध-दुद राधव अनै इद्रजित भयाणक पडि भार । उण  
वार रत नद ऊभळै, हुय हाक घर गिर हलहनै ।—सू प्र

उ०—२ अणी सर मावळ फूटत ऊक, रुद्रायण वाह करै धण



रुक । भयाणख भेग सरा छड भार, दुहवळ घार रगत दुगार ।

—सू प्र

भर्याणी—देखो 'भयावणी' (रू. भे)

भयान—देखो 'भयानक' (रू. भे)

उ०—१ करि गमन अस्त रति सवि काळ, कुळ काक स्वान कूके कराळ । समसान गमुख कीनी पयान, वेताळ भूत भूये भयान ।

—ला रा

उ०—२ रीभाय हूर सुण राग रग,, जम हून करै खीजाय जग । पी जाय भठी इक सुरापान, भव जाय अरध भैसा भयान ।

—वि रा

भयानक—वि० [स० भय + आनक] १ वह जिसकी अमावारण आकृति या उग्रतापूर्ण आचरण से डर लगता हो । डरावना, भीषण ।

२ प्रबल, जबरदस्त ।

स० पु०—१ साहित्य के नी रमो मे से एक रस जिमका स्थाई भाव भय है । शत्रु, हिंसक जीव, निर्जन प्रदेश आदि उसके अवलंबन हैं । शत्रु की चेष्टाएँ, अराधायता उद्दीपन हैं । विवशता, गद्गद भाषण, प्रलय श्वेद, रोमांच, कप आदि अनुभाव हैं । पास, मोह, जुगुप्सा दैन्य, सकट, अपस्मार, सम्भ्रम, चिन्ता, आनेग आदि व्यभिचारी भाव हैं ।

२ बाघ । \* (डि को)

३ राहु । \* (डि को)

रू० भे०—भर्याण, भयागर, भयाणक, भयाणख, भयाण, भयाणक, भयाणख, भयाणग, भयान ।

भयागर—देखो 'भयकर' (रू. भे)

भयातिसार—स० पु० [म० भय + प्रतिमार] भय के कारण दरतें लगने का एक प्रकार का रोग ।

भयानुर—वि० [स० भय + आतुर] भय मे व्याकुल ।

भयावणी, भयावनी—वि० [स० भय + रा० प्र० आवणी, आवनी] डरावना, खौफनाक ।

रू० भे०—भयाणी, भयावणी ।

भयावह—वि० [म०] भयजनक, डरावना ।

भयी—देखो 'भार्ही' (रू. भे)

भरग—वि०—अत्यन्त काला ।

उ०—ठिकाणा गी मकान बढी नवी-चोटी अर बाबा आदम रै जमाना गी वण्योडी हो । वरसात मे सालोगाळ नील जम जमनै धवळा माळिया काळा भरग पडग्या हा ।—रातवासो

भर—स० पु०—१ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

उ०—१ रचे एग मचकूर, फुजा आपणा दिली भर । जिसीईज करि जवत, करा मोवा सर पद्धर ।—सू प्र

उ०—२ देवराज गोमा दया, पाता रुपा पाण । जूक तणा भर भल्लिया, उर सूरु व्रम आण ।—रा रू

२ किसी वस्तु के सग्रह हेतु वर्तनों को भर लेने का कार्य ।

३ भरने की अवस्था या भाव, भगव ।

उ०—धमय पयराण नीमाण वज घूमरा, परी थाक थवत होय पडै अग पाग । तरा जठ उपटै भरां मूकै तरग, उरग रस रग चढै कुग्ग अकळास ।—गु रू न

४ भार, बोझ, वजन ।

उ०—१ वण एक लिया किया एक कण कण, भर खचे भजियो भिड । वळभद्र खळै खळा गिर बैठी, चागो पळ ग्रीधणी निड ।

—वेनि

उ०—२ भरिया तर पुहप वहे दूटा भर, नाम वाण ग्रहिया करगि । वळि रितुराइ पताइ वेसभर, जण भुरडीतो रहै जणि ।

—वेनि

५ भरे हुए होने की अवस्था या भाव, पूर्णता, यथेष्टता ।

उ०—दिन दन बीता देसनू, कूच कियो वमवज्ज । महपति आयो मेडनै, भर वरना घर भुज्ज ।—रा रू.

६ तीत ।

स० म्पी०—७ तिन की फसल को खेत मे एक विशिष्ट तरीके मे एकत्र करने की क्रिया ।

८ मिट्टी या वातू रेत का बहुत ऊँचा और लंबायमान टीला ।

वि०—१ कुल, सब, गमस्त ।

२ पूर्णता प्राप्त, पूर्ण । ज्यू—भरजोवन, भर जवानी ।

उ०—भरजोवण ज्यु ही नेत्र छव भरिया, जोत कळा जोवता जुई । वारें दीहे वरम वारा री, हेमाचळ री कुवरि हुई ।

—महादेव पारवती री वेलि

वि०—३ भरण-पोषण करने वाला ।

अव्य०—१ तक, पर्यन्त ।

ज्यू—कोस भर चाल्या हा ।

उ०—काळ लकाळ करळाळ जडियो कमव वहे विकराळ रगताळ वाई । भेद छकटाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळ गौ भाळ भर घरण ताई ।—गु रू व

२ वय, अवकाश, परिणाम आदि की सपूर्णता या पूर्णता किसी इकाई के रूप मे सूचित करते हुए ।

ज्यू—गजभर, दिनभर, जीवनभर ।

उ०—रद्र-घरणी जपै, गाभळि रद्र, आज लगै तै लिया अनेक । जैमिध धूय तरणी धू जीता, उमर भर मो जुडियो अक ।

३ अच्छी तरह से, भली प्रकार से ।

उ०—छोगा नै एक वार आप भर देख लेती तो ठीक रै'ती ।

४ के, द्वारा या सहायता से ।

भरकुट, भरफूट—देखो 'भ्रकुट' (रू. भे) (डि को)

भरखमी, भरखनू, भरखवू, भरखिवौ, भरखीमी—वि० (म्पी० भरखमी)

सहनशील, सहिष्णु ।

उ०—१ घरती जेहा भरखमा, नमरा जेही केळि । मज्जीठा जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो मा

उ०—२ ऊठ भरखिवाँ हो । स्याळ रँ कुवदी मुमाव री घणी परवा कौ करता नी ।—फुलवाडी

उ०—३ आ वात कैय'नै वामणी आपरी अँक हाथ गोद मे सूता वाळक रँ माथै अर दूजो हाथ आपरा घणी रँ माथा माथै केरण लागी अर उठै ई माथो निवाया गुमघाम विह्योही वँटी री' इण लाठी दुनिया मे भरखिवा फगत दो जणा इज है—अँक ती घग्ती अर दूजो नार ।—फुलवाडी

उ०—४ आया गया क्या होय रे, कर लीजो कोई । घरती जँसा भरखीमा रे, पाणी जँसा न पाक । अन जँसा ओखद नहीं, जरणा जिसा न जाप ।—स्त्री हरिरामजी महाराज

रू० भे०—भारखमो, भारीखमू, भारीखमो, भारीखममी ।

भरग भरगु—देखो 'भ्रगु' (रू भे )

उ०—१ राखण मिथळेभराज लाखवात अघट लाज, करि अमाप सबल करग भरग चाप भजण ।—र ज प्र

भरगुलता—देखो 'भ्रिगुलता' (रू भे )

भरड—स० स्त्री०—१ ध्वनि विशेष ।

भरडकोट—स० पु०—एक किले का नाम जो राठौड राव मल्लिनाथजी के अधिकार मे था ।

उ०—भरडकोट आया भँले, कूकाऊ कर कूक । 'माला' रावळ माहरा, ऊपर करी अचूक ।—वी मा

भरडणो, भरडवो—क्रि० स० [अनु०] १ मारना, सहार करना ।

उ०—'कीट' कटारी चालवी, खटकी 'खुमाणा'ह । 'मोटै' ईमर भारियो, डाकी भरडणाह ।—वा दा स्या

२ कुचलना, रोंदना ।

३ दातो से चवाना ।

भरडणहार, हारो (हारी), भरडणियो—वि० ।

भरडिओडो, भरडियोडो, भरडघोडो—भू० का० कृ० ।

भरडोजणो, भरडोजवो—कर्म वा० ।

भरडणो, भरडवो—रू० भे० ।

भरडियोडो—भू० का० कृ०—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ  
२ कुचला हुआ, रोंदा हुआ ३ दातो मे चवाया हुआ  
(स्त्री० भरडियोडी)

भरडा—स० स्त्री०—एक जाति का नाम ।

भरडो—स० पु०—१ वह घोडा जिसका रंग न तो पूरा सफेद हो न पूरा काला हो ।

२ भरडा जाति का व्यक्ति । (सभा )

रू० भे०—भरडउ, भरडु, भरडो ।

भरडउ—देखो 'भरडो' (रू भे )

उ०—ब्राह्मण मेवइ वेसनड, अँता नही कुळवट्ट । भ्रमि भूलि मिउ भामिनी । को भरडउ भयरट्ट ।—मा का प्र

भरडणो, भरडवो—देखो 'भरडणो, भरडवो' (रू भे )

उ०—कालि भरडघा कोदिगा, आज विणाविमि वोर । हाकी काहिसि इम यथा, सीमि सुनु डोर ।—मा का प्र

भरडणहार, हारो (हारी), भरडणियो—वि० ।

भरडिओडो, भरडियोडो, भरडघोडो—भू० का० कृ० ।

भरडोजणो, भरडोजवो—कर्म वा० ।

भरडियोडो—देखो 'भरडियोडो' (रू भे )

(स्त्री० भरडियोडी)

भरडु—देखो 'भरडो' (रू भे )

भरण—वि० [स० 'भृ'] (स्त्री० भरणी) भरण-पोषण करने वाला, पालण-पोषण करने वाला ।

स० पु० [स० 'भृ'] १ किसी वस्तु को भरने की क्रिया या भाव ।  
२ पालन पोषण ।

३ खिला पिलाकर जीवित रखने की क्रिया या भाव ।

४ किसी पदार्थ के न होने या नष्ट होने मे की जाने वाली पूर्ति ।

५ वास की खपचित्रियो मे बना खाल से मढा हुआ अनाज आदि नापने का एक टोकरा ।

६ भेव, वादल । (ना डि को )

७ 'रघुवर जम प्रकाश' के अनुसार प्रथम गुरु के 'एगण' का नाम ।

८ कूडा, तगारी ।

अल्पा०—भरणकौ, भरणीयो ।

९ देखो 'भरणी' (रू भे )

भरणकौ—देखो 'भरण' (अल्पा, रू भे )

उ०—जठँ चूतो उण ठाया पर कठँई भरणकौ कठँई थाली नै कठँई कूडियो माड दियो घर ही माथै गूदडा नाख दिया अर सब रा माँचा ओरी मे ले लिया ।—रातवासी

भरणनद—स० पु०—वादल । (भ्र मा )

भरणनिवाण—स० पु०—मेघ, वादल । (ह ना मा )

भरणाटी स० स्त्री०—देखो 'भरणाटी' (अल्पा, रू भे )

भरणाटे—क्रि० वि०—वेग से तेजी मे ।

उ०—माप नै वा आपरी गाडी माथै मावळ वँटाण लियो नै टिचकारी दी, नै टिचकारी रँ समचै ई ऊदरा तो भरणाटे उडिया ।

—फुलवाडी

भरणाटी—स० पु०—चक्कर ।

अल्पा०—भरणाटी ।

भरणाणो, भरणावो—क्रि० म०—भ्रमित करना, धुमाना ।



उ०—भीठकिया नरणाघ, घणोरी उवार घालै । तीज दिन भड-  
काय, लादडी भर ले हालै ।—द दे  
नरणाणहार, हारो (हारी), नरणाणियो—वि० ।  
नरणाघोडी—भू० का० कु० ।  
नरणाईजणो, नरणाईजघो—कर्म वा० ।

नरणाघोडी—भ्रमित किया हुआ, घुमाया हुआ ।

(स्त्री० भरणाघोडी)

नरणियो—१ भरने वाला ।

२ देगो 'भरण' (अत्पा, रु भे )

नरणी—म०न्त्री० [म०] १ मत्तार्डम नक्षत्रो मे मे एक नक्षत्र । (ना मा )

२ भूमि खोदने के लिए अक्षुष्टा माना जाने वाला एक लग्न ।

३ माप को फाड़ डालने वाला एक कीड़ा विशेष ।

४ काच, चीनी या वातु का बना एक वर्तन विशेष जो गोलाकार  
एव गहरा होता है ।

५ करघे मे की ढरकी ।

६ चुनाई मे बाने का सूत ।

रू० भे०—वरणी, भरनी ।

नरणीजळ—स० स्त्री०—उत्तर और ईशान के मध्य की दिशा जिस ओर  
गस्तनृपि उदय होते हैं ।

नरणी—स० पु० [स० भरणी] १ किसी को सन्तुष्ट करने के लिए  
उसकी सेवाओं के बदले मे दिया जाने वाला द्रव्य या पदार्थ,  
एवज, मुआवजा ।

उ०—आमर वगैर उचारै, जीहवा घन राम नाम रट भट जो ।  
पोषणतो भर पायो, भोजन अहार भात चो भरणी ।—र ज प्र  
२ कमी-पूर्ति के रूप मे दिया जाने वाला पदार्थ या वस्तु ।

उ०—२ मूळी रं घणी मोठे रतन ऊगा-आयविया ताईं गीसण  
परवन नू कोउपमाव दियो । पचाम सास नगद, पचास लाख रो  
भरणी नै लाय रुपिया रो माल नवैनगर वाई मोढी नू भेलियो ।

—वा दा ख्यात

३ किसी हानि या अरुण की ममान मूल्य वाली अन्य वस्तु द्वारा  
की जाने वाली क्षति-पूर्ति ।

उ०—१ पाखतो आवता दीह्या तो डोकरी वळै हेली मारघो ।  
राजा जी वळै दोडता आया । जटीनै हाथ रो मानी करी उठीनै  
वळै घोटी उठनटायो । लारं दोउ-दोउ बाकेली चटायो पण कुच-  
गादी तो निर्गं ई नी आयो । घटी घटी लारो करण मू राजाजी रो  
हीमत बधी पण बधी । घूम घुमाय पाघरा डोकरी रं पाखतो  
आया । अरकी डोकरी हाको नी कर्घो । रोवती रोवती बोली—  
पाषणो, म्हारी नगळी दाळ पोषणो, गित्यानास जावे इण रो ।  
रिनुगा फोटवाळजी नै काईं जवार देवूला । म्ह गरीवणी इत्ती  
नरणी वीकर नाला । म्हारं तो पट भरण राईं जादा पटे ।

—फुलवाडी

उ०—२ सेठ रे मूडे भाग आयग्या, थूक उछाळता अपळ-गपळ  
बोलण लागा—आ लाली न्याल करिया । भळै सराध करोला ।  
पाच हजार रो भरणी, भरणी पडियो ।—फुलवाडी

भरणी, भरवी—क्रि० अ० [स० 'भृ'] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र,  
आधार या अवकाश का किसी पदार्थ के योग से पूर्ण या युक्त होना ।

उ०—१ नाडा भरियोडा नैडा निजराता, गाडा गुडकाता पैडा  
रडपाता । लाखै फूलाणी भीणा सुर लेता, डोधा गाडीणा डव-डव  
घुनि देता ।—ऊ का

उ०—२ भादवै नीर निवाण भरिये गिर पहाड पखाळिये । मिळि  
छपन कोढी मेघमाळा नदी पूरि हिमाळिये ।—ईसरदास वारहठ  
२ यौवन या स्वस्थता के कारण क्षरीर हृष्ट-पुष्ट होना ।

उ०—वारह वरस री ऊमर मे ई जद उण री डील पूरो भरी-  
जग्यो ही तो आज सोळै वरसा री क्यू वात पूछणी ।—फुलवाडी  
मुहा०—भरियोडील, हृष्ट-पुष्ट ।

३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति होना ।

ज्यू—स्कूल मे एक मास्टर री जगा खाली ही सो भरीजगी है ।

४ मन का श्रोत्र, सन्ताप, असन्तोष आदि से युक्त होना ।

ज्यू०—म्हें मा कनै गयो तो भरियोडी बैठी ही, देखता ही बरस  
पडी ।

५ आवेश, करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ  
कहने मे असमर्थ होना ।

ज्यू०—उणा री आ हालत देखनै म्हारी आख्या भरीजगी ।

उ०—नोजवान रं माय बडता ईं वामणी एक पीलजोत रं सामी  
मूडो करनै ऊभगी । दिवळा री भळ रं उनमान ईं वा थर-थर  
कापती ही । अणछक वा दुसकिया भरनै रोवण लागी । नोजवान  
रो काळजो ईं भरीजग्यो अर उण री आख्या जळजळी व्हेगी ।

—फुलवाडी

६ ऊबना ।

ज्यू०—ऐडी वाता सुण-सुण नै म्हारी तो मन भरीजगी ।

७ पशुओं, यानों आदि पर बोझ लदा जाना ।

८ किसी दरार, छिद्र या विवर का स्वतः बन्द होना ।

९ किसी वस्तु के संयोग से श्रोत-प्रोत या युक्त होना ।

ज्यू०—स्याही सू हाथ भरीजणी, कादा मे पग भरीजणी ।

उ०—मूर्छा सेडे माय भरी चिपके भीनोटी । अगली कोई उघडी  
कण कमज्या कीनाडी ।—ऊ का

१० जोशपूर्ण होना, जोश मे होना ।

उ०—झुलण घरा रम दिहो, असह नह करै इरादी । दिली  
लियण जिए दीह, जोम भरियो साहिजादी ।—सू प्र

११ घाटी का गनवती होना ।

क्रि० म०—१२ किसी रिक्त स्थान या वर्तन मे कोई वस्तु डालना,  
उडेलना या गिराना कि जियमे वह पूरा भर जाय ।

उ०—१ च्यार सप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यू माभी पाली । महिला नीर भरण नें मालही । खरौ जळ ऊढी तळ वाली ।—ऊ का

उ०—२ फळ अब, नारंग दाख पाचें मालणी छावा भरै, राजिद पाता जांम रावळ सामि तिण रुत सभरै ।—ईसरदास वारहठ  
१३ किसी पात्र, वस्तु या रेखांकन मे अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखना या लगाना ।

ज्यू—तसवीर मे रंग भरणी ।

१४ टेक्स देना या दण्ड मे घन रुपयादि देना ।

उ०—१ अनमी कष नमाविया, नाणा भरै नरेस । जीतो तू 'जैसिघदे', दिखण तणा सौ देस ।—वा दा

उ०—२ पड़ सांभर लगि सामद पाजा, रहसी दास होय अनि राजा । कुळ पैतीम सेव स्रव करसी, भूपति रैत जैम दड भरसी ।

—सू प्र

उ०—३ पीछे श्री पूली वर्गरे साराई नरमिध सू मिळिया, अरु कयो, 'म्हारो बदळो घेरावो धानू चारै महीना मे इतरो मासूल भरसी ।'—द दा

१५ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति करना ।

ज्यू—चपडासी री जगां भरणी ।

१६ निर्वाह करना, निबाहना ।

१७ कहना ।

उ०—भरइ, पळटइ, भी भरइ भी भरि, भी पळटेहि । ढाढी-हाथ सदेसडा, घण विलळती देहि ।—ढो मा

१८ किसी के मन मे तुष्टि, सन्तोष या पूर्णता की भावना पैदा करना ।

ज्यू—म्है उणाने आ बात कही जद उणारो मन भरीजियो ।

१९ किसी के मन मे किसी के प्रति विरोधी भावनाओ को अक्रु-रित्त करना ।

ज्यू०—उणै राम नें मोहन रें विरुद्ध भर दियो है ।

२० किसी यन्त्र या मशीन की चाबी या कुजी को घुमाकर या ऐसी किया करना कि वह यन्त्र संचालित हो जाय ।

ज्यू—घडी मे चावी भरणी ।

२१ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लादना ।

उ०—अब ए दूदा रा साथी भी पचास साथ है जिण थो समस्त राही सीस बडि सलीतो भरी दिल्ली पुगावो ।—व भा

२२ किसी वस्तु का संग्रह करना ।

ज्यू—व्योपादिया अनाज खरीदर कोठा भर लिया ।

२३ किसी छिद्र, सन्धि, मुह आदि को बन्द करने के लिए किसी वस्तु को ठूसना, जडना, बँटाना या लगाना ।

ज्यू—मोरी बंद करण सारु वी मे कपडा आदि भरणा ।

२४ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्ति या अंकित करना ।

ज्यू०—फारम भरणी ।

२५ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करना ।

ज्यू—बात री हा भरणी, साख भरणी ।

उ०—कमेडी वापडी काई करती, उणनै हुकारी भरणी पडियो ।

—फुलवाडी

उ०—२ विणजारी सोळें आना हामळ भरी तो उठें ई सायजादी सु इस्टरा री सगाई पक्की व्हेगी ।—फुलवाडी

२६ किसी मान या पैमाने मे भरकर द्रव चूरण या अन्नादि पदार्थों का मापना ।

भरणहार, हारी (हारी), भरणीयो—वि० ।

भराडणो, भराडवो, भराणो, भरावो, भरावणो, भरावधो  
—प्रे० रु० ।

भरिओडो, भरियोडो, भरघोडो—भू० का० कृ० ।

भरीजणो, भरीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

भरत—स० पु०—१ कैकयी के गर्भ से उत्पन्न अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र ।

२ एक सुविख्यात पुरुवशीय सम्राट जो शकुन्तला के गर्भ मे उत्पन्न राजा दुष्यन्त का पुत्र था ।

३ एक महायोगी राजपि जो ऋषभ राजा के पुत्र थे जिनका दूसरा नाम जडभरत भी है ।

४ नाट्यशास्त्र का प्रणयन करने वाला सुविख्यात आचार्य भरतमुनि ।

५ लवा पक्षी का एक भेद जो लम्बा होता है तथा झुण्डो मे रहता है ।

६ जैनों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम ।

७ ताबा और रागा मिश्रित धातु विशेष ।

उ०—१ कुरळा कीजें छै मिफ्या बांदण रो वखत हुवो छें, वनाती आसण विछें छें । पीतल रा भरत रा धूपिया आगे आण मेलजें छें ।—रा सा स.

उ०—२ आवू रें घणी पाहण परमार मरभ धातु माहे भरत री भरियो थीतकर री वीख हुतो सू मलाय अचळेसर है ।

—वा दा रुपा

८ वह खेत जिसमे वर्षा का पानी एकत्र हो जाता है । ऐसे स्थान पर मूंग बढ़िया होते हैं ।

उ०—सू मूंग किण भात रा छें ? मगरै रा नीपना, भरत रें खेत रा, हरियै रग रा, चुवळां जेवडा, इण भात रा मूंग हाया सू रळकायजें छें ।—रा सा स

९ देखो 'भरतक्षेत्र' (रु, भे)

१० देखो 'भरती' (रु, भे)

११ देखो 'वरत' (रु, भे)

उ०—फगत डीन रा आपा माथै काई काई करतव दिखाय ।  
कीकर ती डील नं लुछावै, कीकर इत्ता ऊचा कूदै, पोत्या माथै  
अवर दीडै, कंडा कंडा तरवारा रा हाथ बतवै । भरत माथै कंडा  
निरात सू चालै —फुलवाडी

रू० भे०—भरथ, भरह ।

भरतक्षेत्र—न० पु० [म०] भारतवर्ष ।

रू० भे०—भरतक्षेत्र, भरतक्षेत्र ।

भरतखंड—न० पु० [स०] पुराणो के अनुसार जम्बू द्वीप के नौ खण्डो मे  
एक, भारतवर्ष ।

रू० भे०—भरह्मखंड, भारतखंड ।

भरतक्षेत्र, भरतक्षेत्र—देखो 'भरतक्षेत्र' (रू भे)

भरतपुरिया—स० स्त्री०—रामावत साधुओं की एक शाखा ।

भरतपुरिलोटो—स० पु०—१ भरत धातु निमित्त पानी पीने का गोला-  
पार पाय ।

२ अनिश्चित विचारों वाला व्यक्ति ।

भरतर, भरतरि—स० पु० [स० भर्तृ] १ उज्जैन के राजा इन्द्रसेन के  
पोते जो अपनी स्त्री अनगसेना (जिसका दूसरा नाम पिंगला भी  
था) की दुश्चरित्रता से दुखी होकर विरक्त हो गए थे । इन्होंने  
शृगार, नीति एवं वैराग्य नामक 'शतकथयी' ग्रन्थ की रचना  
की थी ।

उ०—राज पाट तज भरतरी, किया आपणा काज । जोग ध्यान  
राजा लहे, तो वै बय छुहै राज ।—ह पु वा

ग० स्त्री०—२ पृथ्वी । (डि को)

रू० भे०—भरथरी ।

भरतवरस—देखो 'भरतवरस' (रू भे)

भरतवीणा—स० स्त्री०—कच्छपि वीणा से मिलती-जुलती एक प्रकार  
की वीणा ।

भरतान—स० पु०—युधिष्ठिर । (अ मा)

भरता—स० पु०—१ युधिष्ठिर । (ह ना मा)

२ राजा । (ह ना मा)

वि०—१ भरण-पोषण करने वाला, पालक ।

उ०—बिला वेदा मे वैदिक विधि बरगुणी, अपणी करगुणी सू जग  
पार उतरगुणी । निरभय नियता यता नर नारी । करता विम्बभर  
भरता मुग्धकारी ।—उ वा

२ देखो 'भरतार' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—ईव रूप मनि डम ठहराई, भरता एह अवर पित भाई ।

उरती ताण्ण मोन चलाण, ओ पडियो त्रप प्रागळ आए ।—सू प्र

भरताचार्य, भरताचार्य—ग० पु० (स० भरताचार्य) एक ऋषि  
का नाम ।

उ०—विबुधजन अवस्तभमेरु, पित्री मात्री गुरु आग्या प्रतिपालक  
सट्दरसन आसाविस्त्राम अभिनवठ उदारपुरुषोत्तम, भरताचार्य  
कविसभास गार इतिविद्धानि स्त्रीवरतुप्रालस्य ।—व स

भरतार—स० पु० [स० भर्तृ] १ पति ।

उ०—१ वनचर गण लीचा बहे, भागीरथ रै राह । स्त्रीसीता भर-  
तार सम, भागीरथी प्रवाह ।—वा दा

२ मालिक, स्वामी ।

३ ईश्वर, भगवान ।

रू० भे०—भतार, भरता, भरतार, भरथार ।

अल्पा०—भतारी ।

भरतियो—स० पु० [स० भृत्य] १ नौकर, सेवक, अनुचर ।

उ०—दास ब्रह्म भूटी नह दाखै, माधव कछु बुरी मत मान ।  
'तीलोके' घर रयी भरतियो, छीपा तणी छवाई छान ।

—भगतमाळ

२ कमी पूर्ति करने का भाव या क्रिया ।

३ भरत नामक धातु का बना हुआ गोलाकार पात्र जो शाक-भात  
वनाने के काम आता है ।

वि०—४ जादू-टोना करने वाला, यति ।

रू० भे०—वरतियो, वरतियो ।

भरती—स० स्त्री०—१ किसी चीज में कोई दूसरी वस्तु भरने की  
क्रिया या भाव ।

२ चित्रकारी या नक्काशी में सुन्दरता के लिए खाली स्थानों को  
भरने का कार्य ।

३ दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव, प्रवेश ।

४ क्षति-पूर्ति के सम्बन्ध में दिया गया धन या पदार्थ ।

रू० भे०—भरत, भरती ।

भरतेश्वर, भरतेश्वर, भरतेश्वर—स० पु० [म० भरत + ईश्वर] एक  
राजा का नाम ।

उ०—१ असह्यात मुनि सेतुज सीधा, भरतेश्वर नड पाट रे । राम  
अनं भरतादिक सीधा, मुगति तणी ए वाट रे ।—स कु

उ०—२ सधपति भरतेश्वर, जात्रा कर रे । थाप्या प्रथम प्रासाद,  
जय जय गिरनार गिरे ।—स कु

उ०—३ भरतेश्वर बाहुबलि आपमाहि सग्राम करइ, वासुदेव बल-  
देव द्वारिकानड दाध ऊवैसइ ।—व स

भरथ—देखो 'भरत' (रू भे)

उ०—तप ज्या कीध भरथ समतूले, देखे तेज इद्रासण झूले । दुति  
ज्या विघन करण तप दांमा, विदा कीध सुरपति सुरवांमा ।

—सू प्र

भरथनेर—देखो 'भाडगनेर' (रू भे)

भरथरी—देखो 'भरतरी' (रू भे) (डि को)

उ०—१ जगतणी मोह माया तज, जिम गोपीचंद भरथरी । चढ़ि रथां अमरपुर मझि चढ़, अमर क्रीत करि आपरी ।—सू प्र

उ०—२ दाढ़ कह था गोरख भरथरी, अनंत सिधो का मत । पर-कट गोपीचंद है, दत्त कहै सब सत ।—दाढ़वाणी

भरथाग्रज—स० पु० यो० [स० भरत + अग्रज] दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र । (अ मा)

भरथार—देखो 'भरतार' (रु भे)

उ०—थे तो म्हारा बहूजी भोळा घणा, भोळा बहूजी ए लो । वै तो है थारा ही भरथार, म्हारा वालाजी ओ ।—लो गी

भरदाज, भरद्वाज—स० पु० [स० भरद्वाज] १ अगिरसवशीय एक सुविख्यात ऋषि जिनका जन्म बृहस्पति के भाई उच्यथ्य ऋषि की पत्नी ममता के गर्भ से एव बृहस्पति के वीर्य से हुआ था ।

२ एक सुविख्यात ऋषि जो पुरुषम्राट भरत को पुत्र के रूप में प्रदान किया गया था ।

३ अगिरा कुलोत्पन्न एक ऋषि जो विश्वामित्र के पुत्र रैम्य ऋषि का मित्र था । इसके पुत्र का नाम यवक्रीत था ।

४ पूर्व मन्वन्तर का एक ब्रह्मर्षि ।

५ अगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि जिसका आश्रम गया द्वारा मे था ।

६ वाल्मीकि ऋषि का शिष्य जो प्रयाग में रहता था ।

७ एक अग्नि जो शयु नामक अग्नि का ज्येष्ठ पुत्र था ।

८ एक ऋषि जो शरशय्या पर पड़े भीष्म से मिलने गया था ।

९ एक धर्मशास्त्रकार जिसके द्वारा श्रौतसूत्र और धर्मसूत्र की रचना की गई है ।

१० एक राजा जो वायु के अनुसार अमित्रजित् राजा का पुत्र था ।

११ भरत नामक पक्षी ।

भरनी—देखो 'भरणी' (रु भे)

भरपाई—स० स्त्री०—१ वह अवस्था जिसमें कोई वस्तु पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय, भरपाने का भाव ।

२ वह आलेख जिससे किसी वस्तु की पूर्ण वसूली सूचित होती हो ।

क्रि० वि०—१ पूर्ण रूप में, पूरी तरह से ।

भरपूर—वि०—१ पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण ।

उ०—कठक जूट रहकळा, जूट नाळिया जवूरा । रथ वहला रैवत्त, भार पडतल भरपूरा ।—सू प्र

२ सब प्रकार से परि-पूरित जिममें किसी प्रकार की त्रुटि न हो ।

३ यथेष्ट, पर्याप्त ।

४ प्रसन्न ।

उ०—'सेन' लागी सत सेवा, भाव घर उर भूर । रूप घर कर 'मैन' को हरि, करी दुविधा दूर । तो भरपूर जी भरपूर, भगवत भाव सू भरपूर ।—भगतमाला

क्रि० वि०—१ पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से ।

उ०—दाढ़ पूरण ब्रह्म विचार ले, द्वैत भाव कर दूर । सब घट साहिव देखिये, राम रह्या भरपूर ।—दाढ़वाणी

रु० भे०—वरपूर ।

भरभड—वि०—धूलि घूसरित ।

भरभार—स० पु०—उत्तरदायित्व ।

उ०—१ आदीत अमूझी छीक ज्यू, जाणीजें जोधहपुरा । भरभार आज थारें भुजै, सह काज सुरताण रा ।—गु रु व

उ०—२ साह दरगाह बूझिये, भळे सकळ भरभार । 'केहर' ज्यू पत छळ करै, समरै तिका ससार ।—रा रु

उ०—३ विविध सब बाजि श्रिया, विविधपरि परिवार । राव करेवा रणि चडधा, भूप-सदनि भरभार ।—मा का प्र

भरभोलियो—देखो 'भडभोलियो' (रु. भे)

उ०—घूडकी तो चुपकी ऊभी रयी पण बीजा अर तीजा भरभो-लियै दाई मूडो कर'र कैयो म्हे-ई भाई रै बरावर पाती लेसा ।

—वरसगाठ

भरम—स० पु० [स० भ्रम] १ सशय, सन्देह, शका, अविश्वास ।

उ०—१ कितरा दिन लगइ चाकरी कीधी, एकण ध्यान रह्यो एकात । दीठउ साच तरइ वर दोन्हउ, भरम दिखायउ उभ्रत भ्रात ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सतगुर भेद बताइया, खोली भरम किवारी हो । सब घट दीसै आतमा, सब ही सून्यारी हो ।—मीरा

उ०—३ उर भरम छेह लेणो अगम, असकत उद्यम उक्कती । कर भाव पार गुण सर करण, साची नाम सरस्वती ।—रा रु

उ०—४ तिण सू आ रीत छै—माइत मूहडो देखै नही नै ताहरें मन में कोई भरम हुवै तो थे देख आवी ।—रिसालू री वात

क्रि० प्र०—उठणी, मिटणी ।

२ भेद, रहस्य ।

उ०—वणियाणी जाया तणी, भरम न गमणी भूल । नटियो कोडी ही न दे, भरणी करै कबूल ।—वा दा

क्रि० प्र०—खोलणी, काढणी ।

मुहा०—भरम काढणी—रहस्योद्घाटन करना ।

३ मिथ्या-ज्ञान ।

उ०—भवसागर का भरम भगाया, जगत छोड़ दीया । गुरु चरण मतन की सेवा, यह रस्ता कहीया ।—स्त्री हरिरामजी की वाणी [स० भर्मन] ४ मोना, स्वर्ण । (डि को, ह ना मा)

५ अवतार ।

उ०—माची कथा सुणावता, मति को मानै रीस । अलख निरजन छाडिकै, भजै भरम चौईम ।—ह पु वा

६ मार, तत्त्व ।

७ गुजाडश ।

उ०—सेम क्लम जितै समरम, इळा सुर ध्रम निगम आगम । सुखि तपो अण भरम प्रम सम, मरम निध जिम माल ।—रा रु  
८ वेतन, मजदूरी ।

९ विश्वास, प्रतीति ।

उ०—भावी की मोळी पडनै कह्यो—सेठा की बतावी तो जाच पडै । आपरी बात सुणिया पछे म्हनै अँडी लखावै के जाणै म्हारा माथा मे अणगिण टाटिया भणण भणण करै है । आप की बतायनै तूमार तो जोवो । जे अँडी-वँडी की बात व्हे तो राड नै दूपो देय मार न्हाकू । आपरै पगा मे पोत्यो मेलू, म्हनै व्हे जकी बात बतावो । सेठा रा तीर दोना रै ई ठाणै लागा । अँवै बाकी काम तो हाकरता पट जावैला । सेठ कडिया माय हाथ देय ऊभा व्हिया । उवासी खायनै कै'वण लागा—इत्ता वरस भरम बणियो रह्यो तो अँवै एक दो दिना मे की परळै नी व्हे । यनै सावचेत करणो, म्हारो फरज हो । म्है तो आ बात चावू के दूजां री वाता मायँ भरोसो नी करनै खुद रै हाथा माच री छाण-वीण करणो वत्ती है । भावी कह्यो—राम, राम । आपनै ओ वेम कीकर व्हियो के म्है आपरी बात मायँ अँभरोसो कळला । आपनै लिछमीजी री आण, व्हे जकी बात तुरत बतावो, आप फरमावोला जकी बात मायँ सोळै आना भरोसो कळला । सेठ उठा सू वहीर व्हेती वगत एक डक भळै मारियो—धारी सीता सतवती रै सत री भरम जिता दिन बणियो रै'वै उत्तो ई सावळ है ।—फुलवाडी  
मुहा०—भ्रम काढणो=रहस्योद्घाटन करना । भरम गमाणो=विश्वास खो देना । भरम निकळणो=विश्वाम हटाना । भरम निकाळणो=विश्वाम हटाना । भरम मिटणो=सन्देह मिटाना । भरम रहणो=विश्वास रहना ।

रू० भे०—भरम्म ।

भरमकारी—देखो 'भ्रमकारी' (रू भे )

भरमजाळ—देखो 'भरमजाळ' (रू भे )

उ०—सेठ तो आपरा परमेसर रै मूडा सू वगसीस री जाचना मुणनै चितवगियो व्हेगो । इत्ता दिन ओ काई खिलको व्हियो । घरवाळा री मगळी भगती निरफळ गी । चतर भाड कै'डा भरम-जाळ मे फसाया ।—फुलवाडी

भरमण—देखो 'भ्रमण' (रू भे )

भरमणा—स० स्त्री० [स० भ्रम] १ भ्रम, सन्देह ।

उ०—जळ-थळ माही भरमणा, विना निरजन राव । जोनी सकट आवणा, फिरणा ठाऊ ठाव ।—ह पु वा

२ विश्वाम, भरोसा ।

३ धोखा ।

४ भूल, गलती ।

६ मन म हाने वाला अतिशय ।

भरमणो, भरमवो—१ देखो 'भ्रमणो, भ्रमवो' (रू भे )

उ०—१ दुस्टी बाता तो कैडी मीठी-मीठी करै, पण माय रा माय वाप नै मारण रा करतव रचै । अँजै म्है इण मीठी बोली सू भरमीजू कोनी ।—फुलवाडी

उ०—२ दादू घट कस्तूरी अग के, भरमत फिरै उदास । अतरगत जाणै नही, तायँ सूँ घास ।—दादूवाणी

उ०—३ चेतन छोड करै जड पूजा, च्यारू धाम फिरेलो । अगा आपा खोजत नाही, घास देख भरमेलो ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज री वाणी

उ०—४ सहज ललाई सापरत, प्रीतम प्यारी पाय । निरखै भरम नायणी, जावक दे मिळि जाय ।—वा दा

भरमणहार, हारी (हारी), भरमणियो—वि० ।

भरमाडणो, भरमाडवो, भरमाणो, भरमावो, भरमावणो, भरमाववो

—प्रे० रू० ।

भरमिओडो भरमियोडो, भरम्योडो—भू० का० कृ० ।

भरमीजणो, भरमीजवो—भाव वा० ।

भरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू भे )

भरमर—देखो 'भ्रमर' (रू भे )

भरमरी—देखो 'भ्रमरी' (रू भे )

भरमवरधन स० पु० [स० भ्रमण् + वर्धन] तास, तावा ।

(ह. ना मा )

भरमाणो, भरमावो—देखो 'भ्रमाणो, भ्रमावो' (रू भे )

उ०—१ अवधू अठ मासे नगद निकासे, चौमासे चिपकदा है भामण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकंदा है ।—ऊ का

उ०—२ फक्कर फरक चेतन चीन्या, केवळ माया मूळ मिटाई । है सुखराम सोई निज ग्यानी, ओर जगत भरमाई ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज री वाणी

उ०—३ ऊपर है जितरै जीतरै सुख सू क्यू जीवोनी नै आपरी स्त्री सू क्यू छेटी पडो घण रै साथ क्यू सूवो नी—अठै तो रिण खेत मे सूवणी पडसी अरे भोळा घाडवी थनै किरण भरमायो है सो इण घर मे लूटण री उमग करनै आया ।—वी स. टी

उ०—४ कोई मिनख इण गधा लखणा व्हे । छोटी मोटी अटकळां सू आपरी मन भरमावै ।—फुलवाडी

भरमाणहार, हारी (हारी), भरमणियो—वि० ।

भरमायोडो—भू० का० कृ० ।

भरमाईजणो, भरमाईजवो—कर्म वा० ।

भरमाभरमी—स० स्त्री० [अनु०] १ सन्देहस्पद होने की अवस्था या भाव ।

उ०—स्याम घरम कुळ घरम न साजै, काम घरम अम्यास करै । भरमाभरमी पीड भोगवै, माचै गरमी हूत मरै ।

—कविराजा बाकीदास

२ भुलावा ।

३ भरौसा ।

भरमायोडो—देखो 'भ्रमायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भरमायोडो)

भरमार—स० स्त्री० यो० [स० भर+मार] अधिकता, बाहुल्य ।

भरमावणो, भरमाववो—देखो 'भ्रमावणो, भ्रमावो' (रू भे)

उ०—१ राजा की रीस में भल्ले छमको लागी । कह्यो—महलें अब

मीठी वाता सू भरमावण री चाला मत करो ।—फुलवाडी

भरमावणहार, हारो (हारो), भरमावणियो—वि० ।

भरमावियोडो, भरमावियोडो, भरमाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भरमावीजणो, भरमावीजवो—कर्म वा० ।

भरमावियोडो—देखो 'भ्रमायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भरमावियोडो)

भरमासतक—स० पु०—सिकलीगर । (डि को)

भरम्म—देखो 'भरम' (रू भे)

उ०—आदि तणी जोता अरध, भगो न मूक भरम्म । पहली जीव  
परदिया, किया क पहली क्रम्म ।—ह र

भरयोडो—देखो 'भरियोडो' (रू भे)

भरराट—स० पु० [अनु०] ध्वनि विशेष ।

भरराणो, भररावो—क्रि० अ०—१ भर-भर की ध्वनि होना ।

२ चक्कर आना ।

३ उडना ।

भरराणहार, हारो (हारो), भरराणियो—वि० ।

भररायोडो—भू० का० कृ० ।

भरराईजणो, भरराईजवो—भाव वा० ।

भररावणो, भरराववो, भरराणो, भररावो—रू० भे० ।

भररायोडो—भू० का० कृ०—१ भर-भर की ध्वनि हुवा हुआ २ चक्कर  
आया हुआ ३ उडा हुआ

(स्त्री० भररायोडो)

भररावणो, भरराववो—देखो 'भरराणो, भररावो' (रू भे)

उ०—सासा सणकावै नासा निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरो  
भररावै । पल पल पलका सू पडता परनाळा, मोटा मूगा री होठा  
में माळा ।—ऊ का

भररावणहार, हारो (हारो), भररावणियो—वि० ।

भररावियोडो, भररावियोडो, भरराव्योडो—भू० का० कृ० ।

भररावीजणो, भररावीजवो—भाव वा० ।

भररावियोडो—देखो 'भररायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भररावियोडो)

भरल—स० स्त्री० [अनु०] १ अट-सट बकने की क्रिया या ढग ।

वि०—२ अति चमकयुक्त ।

उ०—भरल तेज उडगाण अणी विकटा भलक, पांफ घांण वाण

अत जहर पायो । वहै दइवाण री घास जवना विचै, अरथा सिर  
जाण वीजाण आयो ।—राव अजीतसिंघ कानोड रा भाला री गीत  
क्रि० वि०—३ एकाएक, अकस्मात् ।

भरलकणो, भरलकवो—क्रि० अ० [अनु०] १ चमकना, दमकना ।

उ०—१ अग काढै आरसी, पोत भरलक पसम्मा । दरियाई कस  
दीध, राळ लूवै रेसम्मा ।—सू प्र

उ०—२ चसलकै तोप चरखा चलत, भरलकै सेल ग्रीधण भ्रमत ।  
फरहरै भड नीसाण फाव, असुराण फौज डम लगय आव ।—पे रू  
२ आग प्रज्वलित होना ।

उ०—दावानल भरलकै, तोप आठ सँ विचाळै तूजी । कसीस चदिया  
तुरग, पूर चकारो पेरीया । 'आभा'रा भडा दोळा असुर, फजर  
वजती फेरीया ।—बखतौ खिडियो

३ कोप करना, क्रोध करना ।

४ अण्ट-मण्ट बकना ।

भरलकणहार, हारो (हारो), भरलकणियो—वि० ।

भरलकियोडो, भरलकियोडो, भरलक्योडो—भू० का० कृ० ।

भरलकीजणो, भरलकीजवो—भाव वा० ।

भरलकणो, भरलकवो—रू० भे० ।

भरलकियोडो—भू० का० कृ०—१ कोप किया हुआ  
(स्त्री० भरलकियोडो)

भरलकणो, भरलकवो—देखो 'भरलकणो, भरलकवो' (रू भे)

भरलकणहार, हारो (हारो), भरलकणियो—वि० ।

भरलकियोडो, भरलकियोडो, भरलक्योडो—भू० का० कृ० ।

भरलकीजणो, भरलकीजवो—भाव वा० ।

भरलकियोडो—देखो 'भरलकियोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भरलकियोडो)

भरलको—स० पु० [अनु०] १ अकस्मात् आने वाले क्रोध का भाव ।  
२ चमक, दमक ।

३ आग की लपट, ज्वाला ।

भरलाट—देखो 'भरलाटी' (मह, रू भे)

उ०—रजपूता री आथ जकारै, कूता री भरलाट करा । सकळ  
कहै जावै सूता री, धूता री किम जाय घग ।

—उम्मेदसिंघ भारतसिंघ शाहपुरा री गीत

भरलाटतन—स० पु० [राज० भरलाट+स० तनु] सूर्य । (डि को)

भरलाटी—स० पु० [अनु०] १ चमक, दमक ।

२ आग की लपट, ज्वाला ।

३ क्रोध, गुस्सा ।

भरवा—देखो 'भराव' (रू भे)

भरवाई—स० स्त्री० [स० भरण] १ भरवाने की क्रिया या भाव ।

[स० भरण्य] २ उक्त के फलस्वरूप दिया जाने वाला पारिश्रमिक ।



रू० भे०—भराई ।

भरवाड—स० पु०—पशुपालक एक जाति विशेष । (नैणसी)

उ०—रुखमइयो बल्ल बोलइ छइ ताडी रे, काई भागा रे भरवाडा गोकल तणा रे ।—रुखमणी मगळ

रू० भे०—भरवाडा, भरवाडी, भरवड ।

भरवाणी, भरवावी—देखो 'भराणी, भरावी' (रू भे.)

उ०—काछवा सू पखालां ढोवाय ढोवायनै वो आपरै वास्तै मीठा पाणी री एक लाठी भील भरवाय न्हाकी ।—फुलवाडी

भरवाणहार, हारी (हारी), भरवाणियो—वि० ।

भरवायोडी—भू० का० कु० ।

भरवाईजणो, भरवाईजवो—कर्म वा० ।

भरवायोडी—देखो 'भरायोडी' (रू भे.)

(स्त्री० भरवायोडी)

भरसक—क्रि० वि० [भर+सकना] पूर्ण शक्ति के साथ ।

भरसूडी—स० पु०—मुह, मुख ।

उ०—अति खूणा ऊडा बूडम-थूडा, कूडापथ करदा है । मूछा विन मूडा भासत भूडा, भरसूडा भभकदा है ।—ऊ का

भरस्ट—देखो 'अस्ट' (रू भे.)

भरस्टा—देखो 'अस्टा' (रू भे.)

भरह—१ देखो 'भरत' (रू भे.)

उ०—वेणा यण करइ आलि विणि, करइ गानि ते सवि सुरर-मणी । अदग सरमडल वाजत, भरह भाव करी रमइ वसत ।

—अज्ञात

भरहखड—देखो 'भरतखड' (रू भे.)

उ०—पहिलु जुदीव वखाणउ जोधण लाख प्रमाण । भरहखड तमु भीतरि जाणउ नानाविह गुण ठाण ।—हीराणद सूरि

भरहपुराण—स० पु० [म० भरतपुराण] भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र का नामान्तर ।

उ०—पिगळ भरहपुराण परावत, विध विध जाणुण सयळ विभेक ।

—ईसरदास वारहठ

भरहभम—स० पु०—एक वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपट्ट मृदग करडि महल वेणु तलिमताल कमाल भरलरि भरि मदनभेरि जयभेणि भरहभम हलुक्क ढक्क युक्क नवक काहल काहली वरगा प्रभ्रति वादिअ ।—व म

भरहर—स० पु०—१ मादल, भेरी आदि वाद्यों की ध्वनि ।

उ०—१ मिब मग सन्मुख याज्यो, धप मप दो दो, भरहर भों भों मादल भेर वजाज्यो ।—घ व म

उ०—२ भेर प्रक करनाळ भरहर, मरण घर जैनगर सुदर । भेद ईंद नरिद सरभर, पाट पती परमाण ।

—महाराव हनुतसिध मेखावत री गीत

२ ईशान और उत्तर के मध्य सप्तऋषियों के उदय-स्थान वाली दिशा का नाम ।

उ०—मोभत था कोस ४ भरहर कूण मे । वास २ जाट वोहरा रजपूत वाणीया वसै ।—नैणसी

रू० भे०—भरहेर, भरिहडि भरिहडि, भरेहर ।

भरहरउ—वि०—नमकीन ।

उ०—फुटसगि घोडउ, हितूई ऊर गढी वेड पग देउनइ उमा-विउ, उन्हेउ तीन्हेउ सरहरउ भरहरउ आहासिउ नीलसिउ अणी-आलउ सूआनु सरसु मकोमल वीसरिउ वीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ ।—व स

भरहरणी, भरहरवी—क्रि० अ०—मादल, भेरि आदि वाद्यों की ध्वनि होना ।

उ०—जीतउ कान्ह वात इम मुणी, नगरलोक छइ वढामणी । मदनभेरि भूगल भरहरइ, वरण अढारइ जय जय करइ ।

—का दे. प्र

भरहरणहार, हारी (हारी), भरहरणियो—वि० ।

भरहरिओडी, भरहरियोडी, भरहरघोडी—भू० का० कु० ।

भरहरीजणो, भरहरीजवो—भाव वा० ।

भरहरी—देखो 'भररी' (रू भे.)

भरहवास—देखो 'भारतवरम' (रू भे.)

भरहसगीत—स० पु० [स० भरत+सगीत] भरत मुनि द्वारा रचित सगीत ।

उ०—मडपि मुहल दीइ भूपाल, नाचइ पात्र ऊगटइ ताल । जाणइ जेह भरहसगीत, पाठप्रवध ते गाइ गीत ।—का दे प्र

भरहेर—देखो 'भरहर' (रू भे.)

उ०—कोस ५ उतराव भरहेर रै साधै । जाट वसै, निखालस सारी सीव हुवै ।—नैणसी

भरहेरवय—स० पु० [स० भरत+ऐरावत] भरत और ऐरावत क्षेत्र का नाम ।

उ०—चार अतइ अठ बार जिन, दस गुण दुगुणा सार । विमय चालीस नमू सयन, भरहेरवय मभार ।—स कु

भरात—१ देखो 'भ्रात' (रू भे.)

२ देखो 'भराव' (रू भे.)

भराति—देखो 'भ्राति' (रू भे.)

उ०—चोर अन्याई ममवरा, सब मिळ वसै पाति । दादू सेवक राम का, तिनसों करै भराति ।—दादूवाणी

भराई—देखो 'भरवाई' (रू भे.)

उ०—हाथ अर माथा रै पाण वो ज्यू-त्यु करने आपरी पेट भराई कर लेती ।—फुलवाडी

भराडणी, भराडवी—देखो 'भराणी, भरावी' (रू भे.)

भराडणहार, हारो (हारी), भराडणियो—वि० ।

भराडिओडो, भराडियोडो, भराड्योडो—भू० का० कृ० ।

भराडोजणो, भराडोजवो—कर्म वा० ।

भराडियोडो—देखो 'भरायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भराडियोडो)

भराजक—देखो 'भ्राजक' (रू भे)

भराणो, भरावो—क्रि० स० [स० भरण] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, आघार या श्रवकाश का किसी पदार्थ के योग से पूर्ण कराना ।

२ भुगतान कराना, चुकवाना, श्रदायगी कराना ।

३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति कराना ।

४ ऊवाना ।

ज्यू—ऐडी वाता सुणा सुणा'नै म्हारो मन भराय दियो ।

५ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लदाना ।

६ किसी दरार, छिद्र या विवर को बन्द कराना ।

७ किसी वस्तु के सयोग से ओत-प्रोत या युक्त कराना ।

ज्यू—म्हारो कादा मे पग भराय दियो ।

[भरणी क्रि० का० प्रे० रू०] ८ किसी रिक्त स्थान या वर्तन मे कोई वस्तु डलवाना, उडेलवाना या गिरवाना ।

उ०—थें कैवो तो थारै वास्तै अठै ई सोना रा आठ मैल चुणाय दू, हीरा-मोत्या सू भंवरा भराय दू, फगत म्हारै ध्यान करन चीतण री जेज है ।—फुलवाडी

९ किसी पात्र, वस्तु या रेखाकन मे अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखाना या लगवाना ।

ज्यू०—तसवीर मे रंग भराणो ।

१० निर्वाह करवाना ।

११ घोडी को गर्भवती कराना ।

१२ कहलवाना ।

१३ किसी के मन मे तुष्टि, सतोष या पूर्णता की भावना पैदा कराना ।

१४ किसी यन्त्र या मशीन की चाबी या कुजी को घुमवाना या ऐसी क्रिया करवाना कि वह यन्त्र संचालित हो जाय ।

ज्यू—घडी मे चाबी भराणी ।

१५ किसी वस्तु का सग्रह कराना ।

१६ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तिया अंकित करवाना ।

१७ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति कराना ।

ज्यू—वकील चोर नै ऐडा सवाल पूछिया के उणा रै मूडा सू चोरी री हा भराय लीवी ।

भराणहार, हारो (हारी), भराणियो—वि० ।

भरायोडो—भू० का० कृ० ।

भराईजणो, भराईजवो—कर्म वा० ।

मराडणो, मराडवो, मरावणो, मराववो—रू० भे० ।

मरात, मराथ—देखो 'भारत' (रू भे) (डि को)

उ०—भज के खळा भराथ, गुणा वेद ब्रह्म गाथ । मुणै तो नमाय माथ, नाथ नाथ नाथ ।—र ज प्र

२ देखो 'वरात' (रू भे)

मरातिथो, मराथियो—देखो 'वराती' (अल्पा, रू भे)

मराती, मराथी—देखो 'वराती' (रू भे)

मरायोडो-भू० का० कृ०—गर्भवती कराई हुई घोडी ।

भरायोडो-भू० का० कृ० [स० भरण] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, आघार या श्रवकाश को किसी पदार्थ के योग से पूर्ण कराया हुआ २ भुगतान कराया हुआ, चुकवाया हुआ, श्रदायगी कराया हुआ ३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति कराया हुआ ४ ऊवाया हुआ ५ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लदाया हुआ ६ किसी दरार, छिद्र या विवर को बन्द कराया हुआ ७ किसी वस्तु के सयोग से ओत-प्रोत या युक्त कराया हुआ ८ किसी रिक्त स्थान या वर्तन मे किसी वस्तु को डलवा या गिरवाकर पूर्ण कर-करवाया हुआ ९ किसी पात्र, वस्तु या रेखाकन मे अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखवाया हुआ या लगवाया हुआ १० निर्वाह करवाया हुआ ११ किसी घोडी पर घोडा भराया हुआ अर्थात् घोडी को गर्भवती कराया हुआ १२ कहलवाया हुआ १३ किसी के मन मे तुष्टि, सतोष या पूर्णता की भावना पैदा कराया हुआ १४ किसी यन्त्र या मशीन की चाबी या कुजी को घुमवाया हुआ या ऐसी क्रिया करवाया हुआ कि वह यन्त्र संचालित हो जाय । १५ किसी वस्तु का सग्रह कराया हुआ १६ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तिया अंकित करवाया हुआ १७ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करवाया हुआ (स्त्री० भरायोडो)

मरारियो-स० पु० [दे०] गेहू अथवा जी के भूसे को एकत्रित कर मुर-क्षित रखने के लिए घास के धेरे मे बधा हुआ ढेर ।

मरारो—देखो 'भररो' (रू भे)

उ०—नवहृत्थी भोकरा, मसत फीफरा भरारा । बगला उरळी बिहू, बगलि नीकळै छिकारा ।—सू प्र

मराव-स० पु० [स० भरण+राज० श्राव] भरने की क्रिया या भाव ।

२ भरे हुए होने की अवस्था या भाव ।

३ वह वस्तु या रेखाकन जिसमे किसी रिक्त स्थान या श्रवकाश की पूर्ति की गई हो या की जाती है ।

४ सिंचाई के खेत मे वह स्थान या गड्ढा जहा पानी इकट्ठा हो जाता है ।

५ फोडे फुन्सी मे मवाद या पीप भर जाने की अवस्था ।

६ स्वीकारात्मक शब्द ।



७ इकट्ठा किया हुआ मलवा ।

८ देखो 'भरेत' (रू भे)

रू० भे०—भरवा ।

मरावणी, मरावणी—देखो 'मराणी, मरावी' (रू भे)

उ०—१ देखे (ताड़) चच विहगम दहलइ, रेखा सकति अनोपम रग । भरी किराही (कइ) विजिन्न भरावी, सचउ करि नासिका सुचग ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कहो तो मोतियन माग भरावा, कहो छिटकावा केस । मीरा के प्रभू गिरघरनागर, सुणियो विरद के नरेस ।—मीरा

उ०—३ लक्खू बोली—महनै श्रेडो डड भरावणी ई कोनी । पर-णीज्या तो आप म्हारा घणी व्हीला ।—फुलवाडी

उ०—४ ते गुफना उपदेसयी, भराव्यो सहसकूट । 'तेजसी' 'दोसीने' घरे, रिद्धि सम्रद्धि अछूट ।—कवियण

उ०—५ गडहि ए सति जिणद नवउ प्रासादु करावीउ ए । कचन ग मणिमय थम रयणमउ विव भरावीया ए ।—मालिभद्रसूरि

उ०—६ दूजड हथी वडै दम देमा, नर नायक जळ चाढै नेसा । प्रमण हूत भरावै पेमा, अम करै 'जालण' घर असा ।

—राव जालणमी री गीत

मरावणहार, हारो (हारो), मरावणियो—वि० ।

मरावियोडो, मरावियोडो, मराव्योडो—भू० का० कृ० ।

मरावीजणी, मरावीजयो—कर्म वा० ।

मरावा-स० म्नी०—ठठेरा जाति के अन्तगत पीतल को ढालने का व्यवसाय करने वाली एक शाखा । (मा म)

भरित्त-भू० का० कृ० [स० भर्] परिपूर्ण, भरा हुआ

उ०—महाराजकुमार श्री दलपतिजी दिन दिन स्वेत पक्ष चद्रमा री ज्यू परिवधवत होता पूरणिमा रै चद्रमा री परिसकळ कळा भरित्त विभूषित गात्र नीपना छै ।—द वि

भरिया-स० पु०—छोटे बच्चे का मल या विष्टा ।

भरियावळि-स०—गर्व-पूर्ण ।

उ०—बांका भीचि घण भरियावळि, इम बोलिया भुजाडड आमळि । भिडता भाजै सबळ भुजा वळि, अँ मुह रावत तो मुह आगळि ।—गु रू व

भरियोडील—देखो 'भरियोडील' (रू भे)

भरियोगवाड-स० पु० [भरियो+गवाड] १ गायो की मीड भरा स्थान । २ वैभव-सम्पन्न घर ।

भरियोडील-स० पु०—गठा हुआ वदन, हट-पुष्ट ।

रू० भे०—भरियोडील ।

भरियोटी-भू० वा० कृ०—गर्भवती हुयी हुई घोड़ी ।

भरियोडो-भू० वा० कृ०—१ कोई रिक्त स्थान, पात्र, आघार या

अवकाश किसी पदार्थ के योग से पूर्ण युक्त या भरा हुआ २ जीवन या स्वास्थ्यता के कारण हृष्ट-पुष्ट हुआ शरीर ३ भुगतान हुआ हुआ, चुका हुआ, अदायगी हुआ हुआ ४ कोई रिक्त पद या आसन नियुक्ति द्वारा पूरित हुआ हुआ ५ मन क्रोध, सन्तोष, असन्तोष आदि में युक्त हुआ हुआ ६ आवेश, करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने में अमर्त्य हुआ हुआ ७ ऊँचा हुआ ८ पशुश्री, यानो आदि पर बोझ लादा हुआ ९ कोई दरार, छिद्र या विवर स्वतन्त्र हुआ हुआ १० किसी वस्तु के संयोग से श्रोत-प्रोत या युक्त हुआ हुआ ११ कोई रिक्त स्थान या वर्तन किसी वस्तु के डालने, उढेलने या गिराने से परिपूर्ण हुआ हुआ १२ किसी पात्र, वस्तु या रेखा-कन में अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त पदार्थ रखा हुआ या लगा हुआ १३ भुगतान किया हुआ, चुकाया हुआ, अदायगी किया हुआ १४ कोई रिक्त पद या आसन नियुक्ति द्वारा पूरित किया हुआ १५ निर्वाह किया हुआ, निभाया हुआ १६ कहा हुआ १७ किसी के मन में तुष्टि, सन्तोष या पूर्णता की भावना पैदा किया हुआ १८ किसी के मन में किसी के प्रति विरोधी भावनाओं को अकुरित किया हुआ १९ किसी यन्त्र या मशीन को संचालित करने हेतु चाबी या कुंजी को घुमाकर वाञ्छित किया किया हुआ २० पशुश्री, यानो आदि पर बोझ लादा हुआ २१ किसी वस्तु का संग्रह किया हुआ २२ किसी छिद्र, संधि, मुह आदि को भरने हेतु किसी वस्तु को ठुसा हुआ, जडा हुआ, बँठाया हुआ या लगाया हुआ २३ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तियाँ किया हुआ २४ अपेक्षित समर्थन, सहमति स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति किया हुआ (म्नी० भरियोडी)

भरियोतरियो-वि० यो० [स० भरण+रा० प्र० तरियो] (स्त्री० भरीतररी) १ वैभवपूर्ण, सम्पन्न ।

उ०—श्री तीजी म्हाारी घर-वणो है । भाटा नै ई पूछली के म्हांरै थका इण री वारी कद आवै । ती ई लैणायत कँव के वारी में साजूला । म्है वारी माजू तो सगळी घर भरियो-तरियो रँवै ।—फुलवाडी

२ पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण ।

उ०—हिंदुआ अक मुमळमान रईम री कोठी नै वाळ दी । कोठी री मालक भरी-तररी कोठी नै छोड'र धूक मुठिया मे नाठो ।

—वरसगाठ

भरियोभरम-स० पु० यो० [स० भर+भ्रम] १ विश्वास ।

२ सम्पन्नता ।

भरिहडि, भरिहडि—देखो 'भरहर' (रू भे)

भरी—१ देखो 'भर' (५) (रू भे)

२ देखो 'वरी' (रू भे)

मरीगवाडी—स० स्त्री०—देखो 'भरियोगवाड' (रू भे.)

भरुआड—देखो 'भरवाड' (रू भे)

उ०—भरवा भाड भवाइया, भोई नइ भरुआड । भील भरठीया  
तेतला, भूय-तलि पाडइ खाड ।—मा का प्र

भरुज—स० पु० [स०] गीदड, शृगाल । (डि को)

भरुट—देखो 'भुरट' (रू भे)

भरुटियौ—१ देखो 'भुरट' (अत्पा, रू भे)

२ देखो 'भरुटौ' (अत्पा, रू भे)

भरुटौ—स० पु०—१ भारा, गट्टर ।

उ०—साभ पडी दिन आथम्यो जद भण भर खोखो घाम । वाघ  
भरुटौ सिर पर धरियो साम पडघा घर आय, मारुणी घणी  
कमावणी । लाय भरुटौ आगण पटक्यो दूखै म्हारी नाड । ठाण  
माय म्हारी भैम्या रिडकै गोरघा माय म्हारी गाय । मारुणी घणा  
कमामवणी ।—लो गो

२ देखो 'भुरट' (रू भे)

भरुसउ—देखो 'भरोसी' (रू भे)

उ०—१ एक भणइत हुतउ भरुसउ, जे छोडवमइ कान्ह ।  
कीघउ मेल मिल्या दलि आबी, तेह तणा परवान ।—का दे प्र  
भरुआडी—देखो 'भरवाड' (रू भे)

उ०—भरुआडी अहो भूर, चतुर नगर नी नारि । नाथ न जाणु रे  
वसि करी, परिहरि गिउ रे मुरागे ।—प्रा फा स

भरुवड—देखो 'भरवाड' (रू भे)

उ०—तरी आलि भरुवड तणउ, जासि ऊगतइ दीसि । खति  
खरानी काकमी, सिधु फाडसि नीमि ।—मा का प्र

भरेत—स० पु०—१ वह नीची भूमि जहा वर्षा काल मे पानी इकट्ठा  
हो जाता है ।

उ०—पान कूपळा काढिया रै, रग सुरगी रेत । ऊगी अळियो घाम  
अगूती, आधूण भरेत ।—चेतमानवा

२ वर्षाकालीन पानी को प्रचूर्णित करन वाली विशेष प्रकार की  
मिट्टी वाला खेत जिममे बुवाई करने के उपरान्त मिचाई की आव-  
श्यकता नहीं रहती ।

भरेहर—देखो 'भरहर' (रू भे)

उ०—सोभत था कोस ५ भरेहर कूण माहे, लोक कोई नहीं ।

—नैणसी

भरै—वि० [दे०] १ कारगर, सफल ।

उ०—१ नानी-मा री अटकळा कूण की भरै पडी नी ।

—फुलवाडी

उ०—२ वाता सुणतां ई वा तो प्रण कर लियो के व्याव कल्ला  
तो राजकवरजी रै ई साथै, नीतर ताजिदगी कवारी ई रैवूला ।  
सेवट राजकवरी री प्रण भरै पडियो—फुलवाडी

उ०—उण री मीट उण अपछरा रै साथै पडी । मन मे कह्यो—

आज रो श्री सिकार तो नामी भरै पडियो ।—फुलवाडी

उ०—३ फगत आ छोटी सी वात मिनख हमेसा ध्यान मे राखै तो  
वो कै'डी ई लाठी काम भरै पटक सकै ।—फुलवाडी

उ०—४ राजकवर कह्यो—म्हं इण लोभ री खातर श्री काम थोडो  
ई करियो हौ । पण पिडतजी वास्तै वात नामी भरै पडी । आज  
तो थै म्हारी लाज राख दी ।—फुलवाडी

भरोडी—देखो 'वणोडी' (रू भे) (शेखावाटी)

भरोटी—१ देखो 'भरुटौ' (अत्पा, रू भे)

२ देखो 'भुरट' (रू भे)

भरोटी-वि०—१ भारी वजन वाला ।

२ देखो 'भरुटौ' (रू भे)

३ देखो 'भुरट' (अत्पा, रू भे)

भरोडा—स० पु० [दे०] आख की पुतलियो पर होने वाला छोटी छोटी  
फुसियो का रोग । (शेखावाटी)

भरोती—स० स्त्री०—१ एक प्रकार का कर । (नैणसी)

२ प्रमाण, सवूत ।

उ०—कटारी जगत मे प्रगट 'चारप' करी, नरीद वा कटारी नाय  
नानी । 'सवाई' वात री भरोती दीद सह, महपती 'विजै' जद माच  
मानी ।—महाराजा विजैमिध री गीत

३ पुष्टि, समर्थन ।

४ प्राप्ति-रसीद ।

५ देखो 'भरती' (रू भे)

भरोस—देखो 'भरोसी' (रू भे)

उ०—भारी तुज्ज भरोस, रिण मे थित वावे रह्या । खीची लीनी  
खोम, सारी मोघाली सुरै ।—पा प्र

भरोसादार—वि०—भरोमे वाला, विश्वासपात्र ।

उ०—भरोसादार भला मनख जीव-जोग साथे लीजी । इद्र राजा  
की तरै का वीद राजा (हो) वीजी ।—मयाराम दरजी री वात

भरोसावद, भरोसावध—वि०—जिसपर भरोसा किया जा सके, विश्व-  
सनीय ।

उ०—डाढाळी सूअर राव सू विकराळ होय लडियो, भला भरोसा-  
वध राजपूता रा घोडा रुळ रहिया छै ।—डाढाळा सूर री वात

भरोसी—स० पु०—१ हठ विश्वास ।

उ०—१ सूर भरोस आप रै, आप भरोस सीह । भिड दहु ऐ  
भाज नही, नही मरण री वीह ।—वा दा

उ०—२ अरै उणने सोळै आना भरोसी व्हैगो के की करिया ई  
वा बचै नी ।—फुलवाडी

२ विश्वास ।

उ०—अठी कुमार 'दूदे' विजय रा वव घुगड वूदी आड आपम मे  
भरोसी भागी जणाइ कुमार 'रत्न' महित अनुज भोज री बडी

कुमराणी वालणीति रायकुमरी वूदी हू दिल्ली नरेस रं कने भेजि दीधी ।—व भा

३ आश्रय, सहारा, अवलव ।

उ०—१ चिडो कल्लो—जद आप ई मैल छोड नै जावो तो पछै म्हे किए रं मरोसै रं वा ।—कुलवाडी

४ आशा, उम्मेद ।

उ०—मा, थारै कैणा नै लोप, म्हे कोई मोटी मरोसो लेय थारी पावती आई ।—कुलवाडी

भळ—१ देखो 'भळावण' (रु भे)

२ देखो 'वळें' (रु भे)

उ०—जलाजी मारु, राखू घण रो पेटडलो भळ दूख्यो हो, मिर-गानैणी रा जलाल, ये तो घण री खवर न लीवी हो जलाल ।

—लो गी

भळ, भल-वि०—१ बहुत, अधिक ।

२ देखो 'भला' (रु भे)

उ०—१ ऊई लोहा दूर भळ, सूर न जाय सरकू । चढै गजा दातू सळां, रण रीभवं शरकू ।—वा दा

उ०—२ जीवण-दाता वादत्या, था सू जीवण पाय । भल लूआ वाजो किती, मुरवर सहसी लाय ।—लू

उ०—३ पण राखण आया प्रभू, भल श्रवळा री भीर । दस हजार गजवळ घट्यो, घट्यो न दस गज चीर ।

—रामनाथजी कवियो

३ देखा 'उळें' (रु भे)

उ०—१ भळ उोई निज भ्रात, छैल कुळ घर छिटकावै । प्रभु नै छोडै परो, जिकाण दिम फेर न जावै ।—ऊ का

उ०—२ भल नूती रं म्हारी जळवळ जामी वाप, रातादेअी म्हारी माय नै जे । भल नूती रे म्हारा कन्हकवर सा बीर, सैणा भतीजा भावजा जे ।—लो गी

४ देखो 'भलों' (मह, रु भे)

उ०—१ माता पितु वेटी बटा भल मरिया, प्यारां प्यारां नै मुस-कल परहरिया । जतर जर हरगू श्रम्यतर जडियो, पीतम प्यारी नै परहरगू पडियो ।—ऊ का

उ०—३ भल भगवान रा भोग, भीलणी रं घर पाया । मरस मलूणा स्वाद, जकारी किनी वडाया । खाडा खाया खाय, कियो थो गाली तवरो । माथ चढावण मोल, परम प्रसाद है जवरो ।

—दमदेव

उ०—३ मभी अच्छे साई, हमहि नल नाही हरि सुणै । गुनेगारी भारी वक्म, हितकारी मम गुनो ।—ऊ का

उ०—४ वनक कटोरा राखजै, भल सूरत भरियोह । निवळो मय हूँ रेहरी, उण पय ऊठियोह ।—वा दा

उ०—५ वणतइ वर जइ पहिरीयउ वागउ, भल चोली सूघइ सू भेव । श्रमडी कळा देखजै ईमर, देवा ? विराजइ देव ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६ श्री भल भड है आज रा, धाहर जासी थेट । चगी साव चखावसी, इभ रमणी आखेट ।—वा दा

५ देखो 'भालो' (मह, रु भे)

भलइ—देखो 'भली' (रु भे)

उ०—पियु आये सखि आपुने सुनि हरसित भई नारि । तवहि उत्तारी श्रग हो, दीनउ मोतिणहार । स्थूलिभद्र आये भलइ ए माइ जोवत जोवत माग के ।—स कु

भलउ—देखो 'भली' (रु भे)

उ०—गज रथ रमणि तुरगम रग महा भळउ ताम । जन परिजन परिपालन काल न पूजइ जाम ।—जयसेखर सूरि

भळक-स० म्त्री० [अनु०] चमक, कान्ति ।

उ०—१ कैजमा भळक सिलहा खळक, भळळ तेज अणिया भमर । देवडा चूर करिवा दुभल, 'सूर' चढे आरभ समर —सू प्र

उ०—२ भळळ तेज उडगाण अणी विकटा भळक, पाण घाण वाण अत जहर पायो । वहै दइवाण री घास'जवना विचै, अर्या सिर जाण बीजाण आयो ।—माली सादू

भळकणो-वि० [अनु०] (स्त्री० भळकणी) चमकने वाला, कान्तियुक्त ।

उ०—कोई, दयाणै तो हाथ मे भालो भळकणो ।

—पावूजी री परवाडो

भळकणो, भळकवो-क्रि० श्र० [अनु०] कान्ति प्रकट होना, चमकना ।

उ०—१ अछै घमगछ अचाणक वार, पवै पर जाणक वज्र प्रहार । भळम्मळ सूळ भुजां भळकत, खळखळ खून नदी खळकत ।

—मे म

उ०—२ 'सेर' रा करार वचन 'कुसलेस' सुणे, अभनमो 'पाल' विरदा उजाळो । वादळा दळा नागोर विचाळै, अरक जिम भळ-कियो 'हरा' आळो ।—पहाडखा आढो

भळकणहार, हारो (हारी), भळकणियो-वि० ।

भळकियोडो, भळकियोडो, भळकयोडो-भू० का० कृ० ।

भळकीजणो, भळकीजवो-भाव वा० ।

भळकणो, भळकवो, भल्लकणी, भल्लकवो-रु० भे० ।

भळकाडणो, भळकाडवो-देखो 'भळकाणी, भळकावी' (रु भे)

भळकाडणहार, हारो (हारी), भळकाडणियो-वि० ।

भळकाडियोडो, भळकाडियोडो, भळकाडयोडो-भू० का० कृ० ।

भळकाडोजणो, भळकाडोजवो-कर्म वा० ।

भळकाडियोडो-देखो 'भळकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भळकाडियोडो)

भळकाणी, भळकावो [भळकणी क्रि० का प्रे० रु०] चमकाना, कान्ति-युक्त करना ।

उ०—सक्रम सुभ स्रष्टि द्रष्टि लुभ देती, लपुट मपुट लख घूषट पट लेती । लुलकार लकुटी ले त्रकुटी सळ लाती, भूखी वाधण सी त्रकुटी भळकाती ।—ऊ का

मळकारणहार, हारो (हारी), मळकाणियो—वि० ।

मळकायोडो—भू० का० कृ० ।

मळकाईजणो, मळकाईजो—कर्म वा० ।

मळकायोडो—भू० का० कृ०—चमकाया हुमा, कातियुक्त किया हुआ (स्त्री० मळकायोडी)

मलकार—स० पु०—तीर ।

उ०—कलकार वीर वाणी कजाक, हलकार दुह वळ वाज हाक । धानक टकार मलकार धोह, ललकार मार अणपार लोह ।

—वि स

मळकारी—वि० [अनु०] (स्त्री० मळकारी) चमकने वाला, कान्तियुक्त ।

उ०—हो लाडीजी मुख सोहै नथ मळकारी । विदली सोहै रतन जरी री, फूला माग सवारी ।—रमीलेराज

मळकावणो, मळकाववो—देखो 'मळकाणो, मळकावो' (रू भे)

मळकावणहार, हारो (हारी), मळकावणियो—वि० ।

मळकाविओडो, मळकावियोडो, मळकाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मळकावीजणो, मळकावीजवो—कर्म वा० ।

मळकावियोडो—देखो 'मळकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मळकावियोडी)

मळको—स० पु०—१ चमक, कान्ति ।

उ०—अणियाळा नयण आजिया अजण, काजळ रेल सुरेख कर । इद्र तण्ड दिन मूठ शपूठी, मळका नाखइ वाम घर ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'टीडीमळकी' ।

मलकी—१ तीर, बाण ।

उ०—१ दाहू मलका मारै भेद सों सालै मळि पराण । मारणहारा जाणि है, कै जहि लागै वाण ।—दाहूराणी

उ०—२ सिरागारी भूखण सिलह, अति छविघागे आज । प्यारी किण ऊपर प्रगट, सजे मिकारी साज । सजे सिकारी साज आज किण ऊपर । मारण कारण अगा क रसिया रूप रं । चपळ चलाक चूटैत दियै दिलदार का, नैण मलका नेह, मलका सारका ।

—सिववगस पालावत

२ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ तरै रीस आई लाखा नू, सुकनै मळको पडियो थो तिको भान नै लाखं सोळकी राज नू चूकलियो ।—नैणमी

उ०—२ मलको लीयो भूखियो, चाव करै चहुवाण । 'सूज' घनम सभाळियो, अत सम अवसाण ।—वा दा ह्या

मळक्कणो, मळक्कजो—देखो 'मळकणी, मळकवो' (रू भे)

उ०—१ भिदै जाळिया रप सोभा मळक्की, वणै वीजळी जाण आभै वळक्की । मदोमता गोखा चढी हम मोहै, सची इदरा मिदरा जाण सोहै ।—सू प्र

मळक्कणहार, हारो (हारी), मळक्कणियो—वि० ।

मळक्कओडो, मळक्कयोडो, मळक्कयोडो—भू० का० कृ० ।

मळक्कीजणो, मळक्कीजवो—भाव वा० ।

मळक्कयोडो—देखो 'मळकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मळक्कयोडी)

मलक्को—देखो 'भालो' (रू भे)

उ०—नैण मलक्का लागणा, वोहा वाण वणाय । मदन लगावै मारका जिके पार हो जाय ।—पना

मळण—देखो 'मोळावण' (रू भे)

मळणो, मळवो—क्रि० स०—१ उत्तरदायित्व लेना, मुपुदंगी लेना ।

उ०—१ मारु 'जोधा' रिंगमला, भळे सत्रोधा भार । जाण हणू धावण मर्त, द्रोण उठावण वार ।—रा रू

उ०—२ जवनाण दळे वीजूमळे, देख भळे कुळ देस रो । इद्रभाण खग वढ ऊजळे, मिळे जोत 'मुकनेस' रो ।—रा रू

उ०—३ जोध वलै 'राजान' रो, भळे खवा कुळ वार । आभ समाहै ऊडळे, दीठे दळें करार ।—रा रू

३ मिळणो, मिळवो' (रू भे)

उ०—१ मन द्रढ रह घडके मती, त्रह त्रहिमा त्रवाळ । मिर घड ऊपर मावती, मळण न दू भुरजाळ ।—लिवमीदान वारहूठ

उ०—२ मडै मुरघर तणा थभ मोदा मुहै, चार जुग नाम राखण मचैला । भेट आवागमण चाढ जळ मेडवै, भळंगा वेहू प्रभ जोत । भेळा ।—पहाडवा आढो

उ०—३ निद्रवसि ते रायि दीठु, ग्रिहिवान मन चलिऊ अपूर व माटि भूपतिनू मन पखीमाहा भलिऊ ।—नळाख्यान

मळणहार, हारो (हारी), मळणियो—वि० ।

मळवाडणो, मळवाडवो, मळवाणो, मळवावो, मळवावणो, मळवाववो—प्रे० रू० ।

मळवाडणो, मळवाडवो, मळवाणो, मळवावो, मळवावणो, मळवाववो

सक० रू० ।

मळिओडो, मळिवोडो, मळ्योडो—भू० का० कृ० ।

मळीजणो, मळीजवो—भाव वा० ।

मलपण, मलपणी—म० पु० [मल+रा० प्र० पण] १ भलाई, अच्छापन ।

उ०—१ जोय 'वक' जळजात ज्यो, मजुत सत असत । बडवानळ कडवा वचन, जळ मलपण जाणत ।—वा दा

उ०—२ मरणो परणो मे गोडा खर गाळै, वनिता सुत जावो वेंती रें वाळै । मलपण खाचें पण राचें गूडै मे, माचें सूता रें हकी मूडै मे ।

—ऊ का

२ यश, कीर्ति ।

उ०—भलपण भावै रे, नर मूरख समझे नही । अलवत आवै रे, किरतव रो आणद 'करन' ।—लिखमीदान बारहठ

भलभ—कुपित, क्रोधित ।

उ०—यू वधेरा नै कई गाल काढी जकी वो अवारु थारी सोय मे भलम व्हियोडी आयो ।—फुलवाडी

भलभट, भलभट्ट—वि०—आग बवूला ।

उ०—१ राजा रीम मे भलभट व्हियोडी बीच मे ई बोली—अवै नी तो वारा माथा ई रे'वला अर नी वा सगला नै ऊधो ई सूभेला ।—फुलवाडी ।

उ०—मुखियो रीस मे भलभट्ट होयनै कै'वण लागो—थारी म्हारी काई न्यारी बात है ।—फुलवाडी

भलभल, भलभलाट—स० स्त्री० [गनु०] देखो 'भलल' (रू भे )

उ०—तिका री भालोट आगले पामे सू बाहर दीस छै, भलभलाट करती ।—सूरे खीवे काधलोत री बात

भलभलाणो, भलभलावो—क्रि० अ० [अनु०] चमकना ।

उ०—१ थोडी देर मे म्हारी सूटी सू एक भलभलातो जोत निकली । जोत बा'र आता ई म्हारी चीसा ढवगो ।—फुलवाडी

उ०—२ बोली मुळक री इमरत बरसावती बोली—इण निर-भागण रे बारणो भलभलातो ओ सूरज कठै सू ऊगियो ।—फुलवाडी

भलभलो—वि०—कम कडूवे स्वाद वाला ।

उ०—अरट ३० पाच ५० पाणी खारो भलभलो छै ।—नैणसी  
रू० भे०—बलबलो ।

भलभल—स० स्त्री० [अनु०] चमक ।

उ०—अछे धमगज अचाणक वार । पवै पर जाणक बज प्रहार ।  
भलभल सूळ भुजा भलकत । खलखल नून नदी खलकत ।

—मे म

भलम—स० पु०—१ अछापन, भलाई ।

उ०—१ प्रसव नाम इधकार जग जारै माटीपणी, अतुल दातार  
कीरत उजाळा । भलम वाता चिहु वेम अणियां भमर, वाह रे  
कवर अवधेस वाळा ।—रू

२ यश, कीर्ति ।

उ०—'जेहल' वित दीधा बिना, नर ऊजलो न होय । 'भाराणी'  
लीधा भलम, जमहर सांम्ही जोय ।—बा दा

३ सुन्दर, खूबमूरत ।

उ०—बीजड बाजवट आइ नड बड्ठी, देवाग वसत्र पहिराया  
देव । आगलि सखी आभरण आणइ, भलम मगार लहइ जड  
भेष ।—महादेव पारवती री वेल

रू० भे०—भलिम, मलिमि, मालिम, मालिमि ।

भलमनसत, भलमनसात, भलमनसाहत, भलमनसाही, भलमनसी, भल-

माणसी—स० स्त्री०—भला मनुष्य होने की अवस्था या भाव,  
भलमनसत, सज्जनता, मराफत ।

भलल, भललाट—स० स्त्री० [अनु०] चमक, कान्ति ।

उ०—१ कलल माच दल अकल काठल सबल कुजरां, चचल  
ऊछल सरल धसल चाळो । जवन दल ऊपरां खिवै वीजल जहीं,  
'अभा' सावल भलल तूफ आळो ।—वगतो निडियो

उ०—२ सूरतन तेज भललाट पीरम सरग, मित मुछल जेज न  
धरी अडीयभ । तेजवध वेहू आटाड कोटानवा, थया मुहमेज  
घरती तणा थभ ।—पहाड्यां आढी

उ०—३ आरख अगग जी हुतो, भललाट रवि दरसेण । स्प  
अनग रा जी जोया हुवै रद छवि जेण ।—र ज प्र  
२ तेज ।

उ०—भड बघे छक भलल, उछव चित वधे उमगा । वधे डाण  
मदभरा, पाण बह वधे पमगा ।—सू प्र

रू० भे०—भलभल, भलभलाट, भलहल, भलहलाट, भलहल ।

अल्पा०—भललाटो ।

भलललक—स० स्त्री०—चमक ।

उ०—भलललक तसूल वज्र अग भूखण कोर रवी पलललक करै ।  
नचता खलललक वज्र पग नेवर, तेज रवी भलललक तरै' ।

—मा वचनिका

भललाटो—देखो 'भलल' (अल्पा, रू भे )

उ०—अहणा को भललाटो तेज को अवार, जमीया को जोवणी  
वा ससार को सार ।—मयाराम दरजी री बात

भलहल—देखो 'भलल' (रू भे )

उ०—१ ताना लूहरि छकि तरग, सुदर कोकिल साद । भलहल  
नैणी वाग मे, आइ कर उदमाद ।—पना

उ०—२ सेखावत जलहर समर, फिर चलवळ फिरगाण । प्रधी  
संग कलहल पडै, भलहल ऊगा माण ।—गिरवरदान

उ०—३ भलहल साजा गज भिडज, मफा इका सुखपाळ । घोडा-  
वहल खासा घणा, दरगह मुहर दुभाळ ।—सू प्र

भलहलणो, भलहलबो—क्रि० अ० [अनु०] १ चमकना, दमकना ।

उ०—१ भूरा भुरजाळा अयुद भलहलिया, खलला नद नाळा  
वाल्हा खलहलिया । अवनी आंदोलन ओळा ओमरिया, पिडि भिडि  
'प्लामी' पै, गोळा जिम गिरिया ।—रू का

उ०—२ ह्य पाखर खलहल, भुजा भलहल प्रभागा । न्वाथा घोडा  
खडग, लडण माथा नभ लागा ।—मे म

२ प्रज्वलित होना ।

उ०—सूर विरत सलले, ज्वाळ भलहले फुणवर । कना प्रळै कति  
करण, किरण परजळे दिणकर ।—रा रू

भलहलणहार, हारो (हारी), भलहलणियो—वि० ।

भलहलओडा, भलहलियोडी, भलहलियोडी—भू० का० कृ० ।

मलह्लाजणो, मलह्लाजवो—भाव वा० ।

मलह्लाट—देखो 'मल्ल' (रू भे)

मलह्लाजियोडो—भू० का० कृ०—चमका हुआ  
(स्त्री० मलह्लाजियोडी)

मलहोडो—देखो 'भलो' (अल्पा, रू भे)

उ०—साकुर खडे पाखर सेर, फीजा वहै जोजण फेर । भल अस-  
वार मलहोडेह, घमघम कँजमा घोडेह ।—गु रू व

मला-वि०—१ ठोक, उचित ।

उ०—१ पता वर 'कलिआण' पख, घारा चड धारैत । भाई ग्रहु  
आया मला, आभ लगा अखडैत ।

—कल्याणसिध नगराजोत बाटेल री वात

उ०—२ वास पुर भाजता सोच पड चहुवळ, मकळ खळ माण  
तज सेव साधै । दुरै डूगरपरी धरकियो देवगरै, वाह वर मला तू  
खड्ग वाधै ।—मानसिध आसियो

उ०—३ ताहरा सेतरामजी कही—जु जो म्हारी पूठ राखी तो  
दरवाजै रा किवाड छै सु हू तोडू । अर पछ भीतर धे वडज्यो ।  
ताहरा राजा कही—'बहोत मला ।'—नैणसी

उ०—४ धे कही छो तो हाथी अठा ताई ले आबो, परमेस्वर  
मला करसी ।—रावमालदे री वात

फि० वि०—शोक से, खुशी से, प्रसन्नता से ।

उ०—मला पधारी भीचडा, गरक सिले मै गात । केहर वाळा  
कळह री, वळता कीजो वात ।—वा दा

अव्य०—१ जोर देने के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

उ०—१ कें अणछक पुटियो हेटै उतरतो उतरतो बोल्यो—आ ई  
कदै व्हे के म्है आवू कोनी । राजाजी नै खोटी करिया सरे मला ।

—फुलवाडी

उ०—२ यू आणो काई खोवै । म्है तो हाथी सू ई सवायो धारो  
गाड जाणतो । अँडी ठा'व्हेतो तो जावण देतो मला ।—फुलवाडी

उ०—३ भीटियो बोट्यो—मामाजी आस्या व्हेतो तो ओ दूजी वाग  
धारै कर्न मला आवतो ।—फुलवाडी

२ चाहे ।

उ०—वन वँठो मला चढो गिर बदरी, घरा भेम के धारो । चित  
नह लग्यो राम रै चरणा, नह जव लग निसतारो ।—रू  
रू० भे०—भल, भला ।

मलाई, भलाही—अव्य०—चाहे ।

उ०—१ जै ओ सजोग सजणी है तो थें मलाई किस्ती ई आटिया  
पजावो, आ वात भवै ई टळै नी ।—फुलवाडी

वि०—ठीक, उचित ।

उ०—१ धारो ओ ओमाण कदैई नी पातर के थें म्हारी मिनख-  
जमारी सुफळ अर सारथक करियो । मलाई आ वरसात व्ही अर  
मलाई म्है इण आमली रै हेटै आयो ।—फुलवाडी

उ०—२ चाम घव वरस चौईस मे, राजा नाम विराजियो । जग  
जैठ गजैसी' जनमियो, थाळ मलाई वाजियो ।—गु रू व  
रू० भे०—भलेई, भलेही ।

मळाण, मळामण, मळावण, मळावणी—देखो 'भोळावण' (रू भे)

उ०—१ नीर निवायो वारो आयो, घोरा पाळो वाधजै । घणी  
मलावण काई देऊ, हेली म्हारी सामजै ।—चेतमानखा

उ०—२ भूधर किसी मळावणी नइ, विरगु वाचा किम चलइ ।  
गज गुडीय तुरीय पलाणि चाल्या, कुअरि चालइ नइ माता  
मिळिई ए ।—रुकमणी मगळ

मला—देखो 'भला' (रू भे)

मलाई-स० स्त्री०—१ भला होने का भाव या अवस्था, भलापन,  
अच्छापन ।

उ०—उण पछै भतीजा री मलाई री काई पार है जकी फगत  
चोधी पाती री ई सानो काढियो ।—फुलवाडी  
२ उपकार ।

उ०—आप तो म्हाने फगत ओ आसीरवाद दो के म्है सुपथ चालता  
नी डिगा, नी डरा, साच अर धरम माथै हमेमा डिड रै'वां, कूड,  
अधरम सू मरिया ई पत्नी नी भेटा, लोभ अर मद रै गळाकर नी  
नीमरां, कर सका तो किणी री मलाई इज करा ।—फुलवाडी  
३ हित, लाभ ।

उ०—पण दरअमल आप रै सोचणा मे जकी मलाई अर मगळ  
री वात है, वा म्हारै सोचणा मे दुख अर कळेस री वात है ।

—फुलवाडी

रू० भे०—भलाही ।

मळाकौ-स० पु० [अनु०] १ चमक-दमक ।

उ०—लोयणा पळाका नगा सावळा मळाका लेती, सुढगा ओयणां  
वाजा पाखरा सानैत । चीर अगा पीन अगा नीसाण मेछ घडा  
चगी, विघूस पिलगा चा अगा 'चद' रो वानैत ।

—राव देवीमिव सेखावत री गीत

२ देखो 'वळाकौ' (रू भे)

उ०—राजाजी इत्ती भुळावण दैय घकै वधग्या । गळी गळी मे  
मळाका देवता रह्या ।—फुलवाडी

मळाणो, मळावो—देखो 'भोळाणी, भोळावो' (रू भे)

उ०—१ ताहरा वळै केसव जवाव कियो रामसिधजी नू, म्है तो  
ढाढा नही जु आगै वें मळाईज ।—द वि

उ०—२ आवै अनदातार नू, भारथ मळा भळाय । पितरेमुर  
जिण रा पडै नरक विचालै न्याय ।—वा दा

उ०—३ 'गोयद' यू व्है तरवार भुजा ग्रहि, अरि वळ मोडा  
आया । कोट तणी भुज लाज 'कला'रै, भाखर मूक भळाय ।

—गोयददाम भायल री गीत

मळाणहार, हारो (हारी), मळाणियो—वि० ।



मळायोडो—भू० का० कृ० ।

मळाईजणो, मळाईजवो—कर्म वा० ।

भलापण, भलापणो—स० पु०—भलेमानस होने का भाव, सज्जनता, शराफत ।

मळामळ—स० पु० [अनु०] जगमगाहट, चमचमाहट ।

उ०—नग जडियोडा आभूषण मळामळ करण लागा ।—फुलवाडी  
र० भे०—मळाहळ, भाळाभळ, भाळाहळ ।

मळामण—देखो 'भोळावण' (रू भे )

उ०—१ सुसरो सामु सवि मिळी, ढोला नै बहु प्रेम । निज पुत्री नी  
अति घणी, दै मळामण श्रेम ।—ढो मा

मळायोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे )

(स्थी० मळायोडो)

मळाव, मळावण—देखो 'भोळावण' (रू भे )

उ०—१ सचिव भणी निज राज्य मळाव, चाल्यो चतुरग सेन  
मिलाय । वाणारसी नगरी भणी नाम, चार प्रिया सयुक्त प्रकाम ।

—वि कु

उ०—२ एक कोई जोवार घावा पडियो फीज नै मळावण देवै  
हे ।—वी म टी

मळावणो, मळाववो—देखो 'भोळाणो, भोळावो' (रू भे )

उ०—१ हाजरियो रभा नै विना वारी ई टोळ'र लेजावती अर  
अवखा सू अवखो काम मळावतो ।—रातवासी

उ०—२ दोनू वोले 'देद' रा, 'सुदर' वेस सकज्ज । सारां आया  
दीससी, काज मळावण लज्ज ।—रा रु

उ०—३ भारथ ही कुलखेत करन, गो कथ रहारै । मेछा वाण  
मळावि, क्रीत कमधजा मळावै ।—गु रु व.

मळावणहार, हारो (हारी), मळावणियो—वि० ।

मळावियोडो—भू० का० कृ० ।

मळावोजणो, मळावोजवो—कर्म वा० ।

मळावियोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे )

(स्थी० मळावियोडो)

मळाहळ—देखो 'मळामळ' (रू भे )

उ०—गाम्हे सिर म्याग वही घममाण, जिको अघचद्र भळकून  
जाण । भवानिय दीघ सिदूरज भाळ, मळाहळ जाणि त्रिती चव  
भाळ ।—मू प्र

भलाही—देखो 'भलाई' (रू भे )

भळियार—म० पु०—हल के साथ बवा हुआ खोखले वास का उपकरण  
जो बीज बोने के काम आता है ।

भलिम, भलिमि—स० स्थी०—देखो 'भलम' ।

उ०—१ करण सुभ काज सुयण मिरताज, प्रवित चित लाज  
पहनि मिर पाण । भलिम भुजि भार अकलि अणपार, गगह

सिरदार जुगिति गुण जाण ।—ल पि

उ०—२ चिति प्रवीत लहण क्रीति चीज, भलिमि वार समिर  
'कन' 'भोज' । हद विहद अभिनमो हमीर, घर पछिम कूअर  
लखधीर ।—ल पि

भलीभात, भलीभाति—क्रि० वि०—पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से ।

उ०—वोली—थू भलीभात जाण के आ सावचेती तो म्है नीद रै  
माय ई नी पातरु ।—फुलवाडी

भलु भलू—देखो 'भली' (रू भे )

उ०—१ भूप-तणा अवसर भणी, अति आनदिउ चिति । 'भलु-  
भलु' भाखी कहइ, निपुण न चूकु नीति ।—मा का प्र

उ०—२ 'माधव ! तुम्हे म चालसिउ,' गोरी जपइ गुज्ज । भलू  
कराविसि भुइरु, माहि राविसि तुज्ज ।—मा का प्र

भळे—देखो 'वळ' (रू भे )

उ०—१ भिळ जाय जुवा लाखा भळे, लेऊ काई इण लाड मे ।  
परवात पिहर जास्यू परी, खावद पडज्यो खाड मे ।—ऊ का

उ०—२ रग देण दिन रात, चारणाचार कुचाळ । भाटो मोटो  
भळे, हूवता ऊपर डाळ ।—ऊ का

भले—अव्यय—प्रशंसा-सूचक शब्द ।

उ०—१ गदा ले खडो लागडो अग्र गामी, भले मात हिगोळ हिगोळ  
भामी । मुणी मे जिजा आदि अन्नादि माई, अवतार ले मामडा  
घाम आई ।—मे म

उ०—२ दया विचार आल दे दीधी, भले भले भाई भाई । वकरा  
कटत देख वणियाणी, उर मे भिन्न उपाई ।—मे म

भलेई—देखो 'भलाई' (रू भे )

उ०—नैणा न आवै नीद, भावै नहि अन्न रै । भलेई निंदो कोय,  
लाग गया मेरा मन रे ।—श्री हरिरामजी महाराज

भलेभले—देखो 'भिलेभिले' (रू भे )

भलेरउ, भलेरडो, भलेरडो, भलेरो—देखो 'भलो' (अल्पा, रू भे )

उ०—१ पोलि फूटरी पाटण तरणी, चीन्हुडी नइ ढीली तरणी ।  
वारी पोलि भलेरउ भाव, कूअर तरणु तलहटी तलाव ।

—कां दे प्र

उ०—वात इसी इम्म जि हुमि, मुनिवर ! मनि म हारि । भोगवि  
भोग भलेरडा, जे सरज्या ससारि ।—मा का. प्र

उ०—३ कोडे वारह काइमा, सात वरोडै साध । निपट भलेरा  
पाच नव, यो घटियो अपराध ।—पी प्र

(स्थी० भलेरी)

भळेवडो—स० पु०—वैल के सिर पर सींगो के इदं-गिदं बांधी जाने  
वाली रस्मी जिममे नाथ की रस्सी जुड़ी रहती है ।

उ०—वळदा रो सिरागार ई उण रो अगू तो हो । पिचरगा सूत  
री नाथा अर पिचरगा भळेवडा, रसमी फूदिया, सूत री राहडियां,

मूढा रँ मोहरा अर माथै चादी रा घूगरा बाळा छडा, गळा मे  
रेसमी गळकोढ, नागौरी घूघरमाळ, सीगडा चौपडियोडा, अणिया  
माथै चांदी रा कळसिया, कटाव री भूना, पगा रँ गुळी रा डोरा,  
ढेरवाळ सुथराई सू फूदीपाढ कतरियोडा ।—फुलवाडी

भलेही—देखो 'भलाई' (रू भे.)

भलै—१ व्याकरण मे वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से  
आप स्वतंत्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण  
मे सहायक होता है।

२ देखो 'वळै' (रू भे.)

उ०—१ खारी मीठे सू सरम है, भलै वतेरा पानडा । देस विदेस  
दुवाया वणै, खुसी ढाकधर खानडा ।—दसदेव

उ०—२ पछै हाथ जोडतो वोल्यो—अवकी भलै माफ कर । कोई  
नवो उपाव वता ।—फुलवाडी

भलैटिया—स० पु० [व व] अक्षरो का प्रारंभिक ज्ञान करते समय  
बच्चों द्वारा आडे-टेढे लिखे जाने वाले अक्षर ।

भलोडो—देखो 'भलो' (अल्पा, रू भे.)

उ०—जादम आयो जैत कर, जस खाट भलोडो ।—वी मा

भलो—स० पु० [स० भद्र, प्रा० भल्ल] (स्त्री० भली) १ भलाई, हित ।

उ०—थें जिनावर वगत माथै जकी भली कर सकी, वो मिनखा  
सू कदैई वण नो आवै ।—फुलवाडी

२ मगल, कल्याण ।

उ०—१ लखू एक ऊढी सास खाचती बोली—चाटता ई खाज  
हालणी वद व्हेगी । भगवान धारो भलो करै ।—फुलवाडी

उ०—२ परवार गयी पिस्तावणी, वरू न मूवा कथ रो । म्हारो  
महादुख मेट दै, भलो हुवै भगवत रो ।—ऊ का

३ नफा, लाभ ।

उ०—हूकै सू निज हेत, भलो भूडो नह भाळै । माहि वळै मा वाप,  
वारणै छाणा वाळै ।—ऊ का

वि०—१ अच्छा, बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—१ वजियो भलो भरतपुर वाली, गाजै गजर घजर नभ गोम ।  
पहिला सिर साहव रो पडियो, भड ऊभै नह दीधी सोम ।

—वा दा

उ०—२ भली अदेवी गाळ रा, सकळ अदेवा माहि । दाम तणी  
देवी भली, देवा मै दरसाहि ।—वा दा

उ०—३ 'जगड' सुत 'अमर' सुत नाम राखण जरू, सरू जस बोलिया  
सूर साखी । ठूक जाडा थडा भूक खळ ढाहि । रुक रजपूत वट  
भली राखी ।—जगो सादू

उ०—४ आपै ही जाणावसी, भली ज होसी वगि । कै मागिण  
दरसावियां, कै ऊछजिया खगि । खागि ऊछाजिये खडै, रिएण  
अरि दळा । सूर प्रगटाहिये, सो सरा सावळा । अभाग 'जसवत'  
जुध काम कजि आवियो । जुडता घवळ रो भली जाणावियो ।

—हा भा

२ ठीक, उचित ।

उ०—मन मे फेर घणी री माळा, पकडै नह जमदूत पलो । मिळै  
नही वकणा नू माया, भाया कम बोलणी भली ।—वा दा

३ खूब, अधिक ।

उ०—तेजमी रो भली बोलवाला रह्यो तिण री साख ।

—रावमालदे री बात

४ लाभदायक, श्रेयकर ।

ज्यू—कोई भली नौकरी मिळ जाय ती आ छोड देवा ।

५ परिस्थितियों आदि के विचार से उपयुक्त पड़ने वाला ।

६ रोग-रहित, निरोग ।

ज्यू—पै'ला में बीमार थी अब हू भलो-चगी हू ।

७ शुद्ध हृदय और सात्विक प्रवृत्ति वाला, सदाचारी, सज्जन ।

८ महान् ।

उ०—बडा तत तूझ लहै न विचार, पुरदर दूझ न जाणै पार ।

भला मुनि आदि न जाणै भेद, विरचिय तूझ न जाणै वेद ।

—ह र

त्रि० प्र०—कै'वाणी, वणणी, वाजणी, होणी ।

९ आकार, रचना, प्रकार, रूप, गुण, स्वाद आदि के विचार से  
जो मन को भाता हो, रुचिकर ।

ज्यू—इहाँ मकान भली बणाया ।

उ०—अन घन जिण घर आसरो, भला अरोगे भोग । पडसो हुवै  
न पास मे, लूलू करदे लोग ।—ऊ का

१० कल्याणकारी, मंगलकारी ।

ज्यू—भलो लग्न, भली दिन ।

उ०—राजि उठा हुती भलै मुहरत खडिया छै, पातिसाहजी सू  
घणी सुख हुयी छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै ।—द वि  
११ प्रशंसनीय ।

उ०—१ गुण जस गाजै मरग मे, ऊनड लाखा भूप । माराणी  
दाता भलो, राणी जाया रूप ।—वां दा

उ०—२ घणा मुगल मारिया । मवळी वेढ हुई । वेढ जेसंजी  
जीती । साथ रावजी रो घणी काम आयो । रावळ हापी निपट  
भलो हुवो ।—राव मालदे री बात

१२ प्रसन्न एवं सतुष्ट करने वाला, प्रिय या सन्तोषजनक ।

ज्यू—भली खेल, भली खबर ।

उ०—प्रीतम रो मुख पेवता, हिवडी होवै हेम । लूआ पण रोकै  
मिळण, भली निभावै नेम ।—लू

अव्यय—१ समर्थन या स्वीकृति प्राप्त करने हेतु जोर दिया जाने  
वाला शब्द । (वीकानेर)

ज्यू—तू उठै जाया भली ।

रू० भे०—भल, भलड, भलउ, भलु, भलू, भले, भलेरी, भलोस,  
भल्ल, भल्लो ।

अल्पा०—भलेरउ, भलेरडो, भलोडो, भल्लियो, भलहेडो ।







भलीस—देखो 'भली' (रु भे)

भल्ल—१ देखो 'भली' (मह, रु भे)

उ०—१ सेखो राव तिलोक्मी, जोगाडत जगमल्ल । वीरागर रा दीकरा, एक-एक हू भल्ल ।—नैणमी

उ०—२ ईदा आहव आगळा, पडिहारा पण-भल्ल । हरवल्ला आगे हुवा, चढे धलल्ला भल्ल ।—रा रु

उ०—३ गगाजळ निरमळ जेम नग, आइत घोर ओपित्त अग । भारति य चडिय 'तेजसी' भल्ल, परवाडमल्ल परचक्कपल्ल ।

—र ज. भी

उ०—४ सेन घमेडासल्ल पडं भल्लां प्रतिमल्ला । भल्ला भल्ला भल्ले उगता भडा अमल्ला ।—ऊ का

उ०—६ रहै लोक अणपार, हुवै धूमरा मुहल्ला । आवै रहै अनेक, भडज भड भल्ला भल्ला ।—सू. प्र

२ देखो 'भली' (रु भे)

उ०—विन्ने वळ दक्खन को धन्ने धल वाय घेर, वन्ने गजसीह दळयभन भुजान सा । भल्ले 'जसवत' हिंद टल्ल चल कावल पै, सल्ल कडि माह भिर भल्लन पठान सा ।—जैतदान वारहठ

भल्लक—स० पु० [स० भल्लक] रीछ, भालू । (डि को)

भल्लकणी, भल्लकवी—देखो 'भल्लकणी, भल्लकवी' (रु भे)

भल्लकणहार, हारी (हारी), भल्लकणियो—वि० ।

भल्लकियोडी, भल्लकियोडी, भल्लकियोडी—भू० का० कृ० ।

भल्लकौजणी, भल्लकौजवी—भाव वा० ।

भल्लकियोडी—देखो 'भल्लकियोडी' (रु भे)

(म्री० भल्लकियोडी)

भल्लियो—देखो 'भली' (रु भे)

उ०—घोडा हींस न भल्लिया, पिय नींदडी निवारि । वीरी कै पावणा, दळ-यम तूळ दुवारि ।—हा भा

भल्ली—१ देखो 'भली' (रु भे)

उ०—१ अ 'पाता' ताता अवसाणै, काज वणी वाजे कैवाणे । प्राप्ती 'भूपत' तणी 'पियल्लो', भूप 'अजीत' तणी व्रत भल्ली ।

—रा रु

उ०—२ दुग्जणमाल नाम ही ज्या, दुग्जण कू मल्ल । भाटी वीर आवाडे में, मुराडे ने भल्ल ।—रा रु

(म्री० भल्ली)

२ देखो 'भली' (रु भे)

उ०—निरुपम बुलबाली रूप नी चित्रमानी, अविकुल गुणवल्ली काम भूपाल भल्ली । कइ हुइ मुरगणी मानवी मड न जागी, अह व हुइ जि नारी तो ड तु हुइ गधारी ।—सालिमूरि

भयग—देखो 'भुजग' (रु भे)

उ०—१ पीय पीव म रटू रान दिन, हुजी मुधि बुधि भागी री ।

विरह भयग वैरौ ठसी है कळेजो, लहरि हळाहळ जागी री ।

—मीरा

उ०—२ जिनके मस्तक मणि वने, सो सकळ मिरोमणि अग ।

जिनके मस्तक मणि नहीं, ते विम भरे भयग ।—दादूवाणी

२ देखो 'भयग' (रु भे)

भवर—१ देखो 'भवर' (रु भे)

२ देखो 'भ्रमर' (रु भे)

भव—म० पु० [स०] १ मंसार, जगत ।

उ०—१ द्रुम मात विभेदण क्रमगत छेदण, ते जम कह भव विधु तर । मुत स्त्रीकौमल्य तार अहिल्या, करुणानिध सौ याद कर ।

—र. ज प्र

उ०—२ भव दरियाव भयद, लहरा उठै लोभ री । माहे ज्या मतमद, मनभ घणा हुवै मरै ।—बां दा

यो०—भवचक्र, भवजळ, भवजळनिधि, भवभरण, भवभव, भव भयहरण, भवमोचन ।

२ महादेव, शिव । (डि को ह ना मा)

उ०—१ राघव रट-रट हरख कर, मट मट अघ दळ महत । जनम मरण भय हरख जन, कज भव हर रिज कहत ।—र ज प्र

उ०—विहग भल्लो न चीनी विमनर । भव ही तणी न आमी भागि । घड 'घमळोत' तणी खग धारा, लिगि लिगि गयो अगा रा लागि ।—ईमरदाम वारहठ

यो०—भवभामिनी ।

३ जन्म । (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ जीवन राखी चोर ज्यु, पगी पगी स्वामी लागु हु पाय । ईणी भवि उलिगाणी हुवो, आवतइ-भव होई काळो हो नाप ।

—वी दे.

उ०—२ सावळ नहि मावे कावळ कावे, चावळ जे चुरंगदा है । जी फरक न जाणै अरक न आणै, भव भव नरक भुगदा है ।

—ऊ का

४ यमराज । (अ म)

५ स्वर्ग ।

६ ग्यारह, एकादश रु ।

उ०—भव तेरह मत ओण, कोय उप दोहा भावै । अख रीळा वधु ऊमै, शिविध आनद वधु धावै । दम तेरह मत्त रुद्र, रुद्र रुद्रह नव आवै । राय विधु तिए नाम रुद्र दम अन मत गावै ।—र ज प्र ७ जीवन ।

उ०—१ कहिता काम-कचोलही, दुख-दावा विरुथाय । भव माहरु आलिंगयु, स्वामी । मिरजी काई ।—मा का. प्र

उ०—२ ताहरा लोका जाईन तीठी री मा नु समझाई, 'हमकै दावडी मेल्हीयां ही ज वणै । बेटी रा भव बोड ना ।—भूमलो

६ कारण, हेतु ।

- १० कामदेव ।  
 ११ श्रीरामचन्द्र ।  
 १२ बादल, मेघ ।  
 १३ मास ।  
 १४ कल्याण ।  
 १५ कुशल, क्षेम ।  
 क्रि० वि०—८ कभी ।

उ०—वह दग्गू सू खान वहादर, आयी गढ़ जोधारण ऊपर । खोले पजो कोल दिखायो, भव न मिटे तुमारी भायो ।—रा रू  
 १६ देखो 'भय' (रू भे)  
 उ०—साह आपण घर री वाणियो छै । ईय नू ले आवता रो भव कोई नहीं ।—भूमखी  
 रू० भे०—भवि, भवी, भव्व, भह, भुव ।  
 अल्पा०—भवो ।

भवक—देखो 'भविक' (रू भे)

भवकेनु—स० पु० [यो०] वृत्सहिता के अनुसार कभी २ पूर्व में दिखाई देने वाला एक पुच्छल तारा ।  
 वि० वि०—ऐसी मान्यता है कि यह तारा जितने मुहूर्त तक दिखाई देता है उतने समय तक काल या महामारी का प्रकोप रहता है ।

भवकौ—स० पु० [अनु०] १ घटकन ।

उ०—जवाई—सासुडी में रुण भुण वैल जुताछूय येक तेरी लाडी ले चाल्यो । सासू—जवाईडा मेरी छाती भवका मारे रे क मेरी लाडी ना चले ।—लो गी  
 २ देखो 'भभकौ' (रू भे)

भवड—स० स्त्री०—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

उ०—अडथड मिरड मिरड भड श्रवभड, नवड भवड वड निवड नड । आवट कूटि तूटि कमणावटि, छूटि जडावटि फूटि छड ।

—कल्याणदास राव

भवण—१ देखो 'भवळ' (रू भे)

२ देखो 'भवन' (रू भे)

उ०—१ उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।—रा रू  
 उ०—दसरथ अप भवण हुआ रघुनदण, कवसल्या उर दुस्ट निक-दण । रूप चतुरभुज प्रकटत रीघी, दरसण निज माता नै दीघी ।  
 —र रू

उ०—३ निज गउवे चडि चडि वाट निहाळइ, महुरत पिएण आयो तिल मात । तीजड भवण वाधियउ तोरण, गिर मडप छांयउ वडगात ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ उडपती भवण इयारमै, आगम कथ अनम्मियो । 'गज-

वध' इता वळिवत ग्रह, ले जस राति जनम्मियो ।—गु रू व  
 उ०—५ विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सविता । वासर विसाळ लहिय, चक-वाणें मगळ भवण ।—गु रू व  
 ४ देखो 'भूण' (रू भे)

५ देखो 'भ्रमण' (रू भे)

उ०—कसम से घाट अहि कोम कध, भोम पाट लगो भवण । चढि रीस जाणि रावण चढे, राम हूत धमचक करण ।—सू प्र

भवणपति, भवणवई, भवणवइदेव—देखो 'भवनपति' (रू भे),

उ०—१ त्रिण राव त्रियोही भवणपति सिद्ध 'लल्ल' इम उच्चरै ।

इत्थ चवत्थी राव हुवै ती दिव जळतो कर घरै ।—नैणसी

उ०—२ भवणवई 'व्यन्तर' 'जोतिखि' ले लाल, पहिली दूजो देवलोको हो भविक जन । आगत कही दोना तणी रे लाल, गत पाचा नो थोक हो भविक जन ।—जयवाणी

उ०—३ भवणवइदेव असख्यात देवी सख्या बहु, प्रथम नारकि असखेय गुणीया सबहु । वोले वतीस मे छेचर पचेद्रिया, तिरिय असख्यात गुणा सख्य एह नी त्रिया ।—व व ग्र

भवणो, भदवी—क्रि० अ० [स० भू] १ होना ।

उ०—वधे भक्ति लद्धा, भवत नर स्पर्धा ध्रति वधै । वसे वो जिग्यासा, अगम गम आसा व्रत्ति वधै ।—ऊ का

२ देखो 'भवणी, भववी' (रू भे)

भवणहार, हारी (हारी) भवणियो—वि० ।

भवाडणी, भवाडवी, भवाणी, भवावी, भवावणी, भवाववी

—प्रे० रू० ।

भविओडो, भविओडी, भव्योडो—भू० का० कृ० ।

भवीजणी, भवीजवी—भाव वा० ।

भवतवता—देखो 'भवितव्यता' (रू भे)

भवतव्य—देखो 'भवितव्य' (रू भे)

उ०—पाचूपूत पड के, पटकि वैटे हिम्मत की, चूकि गी छमा की, भवतव्य वस चेतोई । द्रोपदी की लाज, व्रजराज जो न राखे तो, गुलाम दुमासन तो, कलाम छील लेतोई ।—र ज प्र

उ०—२ थये सचेतन महुरत, वकै भकै विरहाकुळ । हा भवतव्य अतीठ, असुर सिर मोड भडे तुळ ।—मा वचनिका

भवतव्यता—स० स्त्री०—देखो 'भवितव्यता' (रू भे)

उ०—१ वानुल जिम भवतव्यता जी, जिण जिण दिमे नु जाय ।

परवस मन माणस तणोजी, अण जिम पूठे घाय रे ।—वृ हस्त

उ०—२ जे भावित भवतव्यता रे हाँ, न चलै तास उपाय । जेहवो वावै रूखडो रे हाँ, तेहवा हीज फल थाय ।—वि कु

भवतात—स० पु० [स० भवतात] सूर्य, आदित्य । (ना मा)

भवतारक, भवतारण, भवतारन—म० पु० [म० भवतारक, भवतारण]

१ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा, ह नाँ मा)

२ श्रीकृष्ण । (अ मा)

भवती-स० पु०—एक प्रकार का जहरीला बाण । (अ ग)  
भवधरण-वि० यी० [भव+धरण] ससार को धारण करने वाला,  
स० पु०—ईश्वर ।

भवनतर-स० पु० [भव+अनन्तर] जन्मान्तर ।  
रू० भे०—भवातर ।

भवन-स० पु० [स०] १ गृह, मकान । (ह ना मा)  
उ०—लालच री दीड़ लहर, भवन बियां धन भाळ । बँठी थावर  
वारमो, काँव आण कराळ ।—वा दा  
२ महल, प्रासाद ।

उ०—किए सग खेलू होली, पिया तज गये हैं अकेली । माणिक  
मोती सब हम छोडे, गळ मे पहनी सेली । भोजन भवन भली नहि  
लागै, पिया कारण भई गेली, मोहे दूरी क्यू मेली ।—मीरा  
३ देवालय, मंदिर ।

४ ससार, जगत ।

५ गड, टुकड़ा ।

६ छप्पय छद का एक भेद ।

७ ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली के १२ लग्नों में से एक ।  
उ०—दसरथ 'अजन' घरे सुखदाई, रूप 'अभौ' प्रगट्यो रघुराई ।  
दाखें विप्र नवें ग्रह देखो, परम गुणें प्रत भवन सपेखी ।—रा रू  
रू० भे०—भवण, भमण, भमणि, भवण, भुवण, भोयण ।

८ देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—१ तीन भवन मा ताहरी रे, भलकइ निरमल तेज । सूरति  
देखी ताहरी वाल्हा, हसता आवै हेज ।—वि कु

उ०—२ पराव्रत गतगुरु प्रणम्य, पुन्य सब सत नमो । हरिराम  
मुर भवन मे या पद समी न को ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

भवनपति-स० पु० [स० भवन+पति] १ घर का मालिक, गृहपति ।  
२ राशि चक्र में किसी ग्रह का स्वामी ।

३ जैनियों के दस देवताओं का एक वर्ग या समूह जिनके नाम  
क्रमशः इस प्रकार हैं —१ असुरकुमार । २ नागकुमार ।  
३ सुवर्ण (सुपर्ण) कुमार । ४ विद्युत्कुमार । ५ अग्निकुमार ।  
६ द्वीपकुमार । ७ उदधिकुमार । ८ दिशाकुमार । ९ वायु-  
कुमार । १० स्तनितकुमार ।

उ०—'भवनपति' 'व्यतर' ने 'जोतसी' भेद विमानिक पावे । सुर  
वर ते मिलने सगला, नाम 'निवाणू' आवे ।—जयवाणी

४ ईश्वर ।

रू० भे०—भवणपति, भवणवइ ।

भवनार-स० स्त्री० [स० भव+नारि] १ पार्वति ।  
२ वैश्या ।

भवनेस-म० पु० [स० भवन+ईश] भवन का स्वामी, मालिक ।

भवपति-स० पु० [स० भवपिता] ब्रह्मा । (ना मा)

भवपाळी-स० स्त्री० [स० भव+पाली] ससार का पालन करने वाली,  
भुवनेश्वरी देवी । (ताम्रिक)

भवप्राण-स० पु० [स० भवप्राण] पार्वती । (अ मा)

भववधन-स० पु० [स० भव+वधन] १ सासारिक कष्ट एव दुःख ।  
२ जन्म-मरण का चक्र ।

भवबुद्ध-वि० [स० भव+बुद्ध] ससार को जागृत या प्रबोध करने  
वाला ।

उ०—नमो प्रम सत गऊ-प्रतिपाळ, नमो दुसटा-दळ दीनदयाळ ।  
नमो भव-बुद्ध भए भगवान, नमो ग्रह जीव दया उर ग्यान ।

—ह र

भवभजण, भवभजन-वि० [स० भव+भजन] १ ईश्वर ।

२ ससार का नाश करने वाला, काल, यमराज ।

भवभय-स० पु० [स० भव+भय] ससार में बार बार जन्म लेने व  
मरने का भय ।

भवभय-हरण-स० पु० [स० भव+भय+हरण] १ श्रीकृष्ण ।

(अ मा)

२ सासारिक भय अर्थात् जन्म-मरण का भय मिटाने वाला, पर-  
मात्मा, ईश्वर ।

भवभामिनी-स० स्त्री० [स० भव+भामिनी] १ पार्वती ।

२ वैश्या ।

भवमोचक, भयसोचन-वि० [स० भव+मोचक] सासारिक दुखों से  
छुटकारा दिलाने वाला ।

म० पु०—परमात्मा, ईश्वर ।

भवर—१ देखो 'भवर' (रू भे)

उ०—२ म्हारै मन वसियो भवर, उर रसियो रजवार । मो सुगणी  
री साहिवो, नीला को असवार ।—पना

२ देखो 'भ्रमर' (रू भे)

उ०—१ देखण नु चढण ईस ताइ दीसइ, जाळानळ मथ काढी  
ज्याग । मुख ताइ कवळ गउख सर माहे, लोचन भवर रह्या तनु  
लाग ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भेटिया कइक पीळा पमग, सोनैर कइक धूसर सुरग ।  
अणथाग वेग केई भवर अग, रसमी पोत किरमची रग ।—पे रू

भवरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भवरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे) (शा हो)

भवरतिलक—देखो 'भवरतिलक' (रू भे)

उ०—पहिली ही सीह वळे पाखरियउ, वणता वर आभरण  
वखाण । भमरा विचइ वाघियउ भामण, भवरतिलक ताइ ळगउ  
भाण ।—महादेव पारवती री वेलि

भवरमोख—देखो 'भवरमोख' (रू भे)

भवरार्द्र—देखो 'भवरार्द्र' (रू भे)

भवराभाटी—देखो 'भवराभाटी' (रु भे)

भवराळी—देखो 'भवराळी' (रु भे)

भवरियो—१ देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रु भे)

भवळ—देखो 'भवळ' (रु भे)

उ०—ग्रीध हळवळ समळ गळळ पळळळ गरा, त्रिमळ सळ वळी-  
वळ कळळ हूकळ तुरा । कळ सवळ हुवै भवळ सावळ करा, इळपति  
क्रोध भळ किसै दळ ऊपरा ।—महादान मेहदू

भवलील—स० पु०—शिव, महादेव ।

भव-वामा—स० स्त्री० [भव + वामा] १ पार्वती ।

२ वैद्या ।

भवविलास—स० पु० [भव + विलास] १ सामारिक सुख ।

२ मायाजाल ।

भवस—स० पु०—यवन, मुसलमान ।

उ०—१ 'मुहकम' चाळा मडिया, उर ज्वाळा अप्रमाण । वस  
'अरजण' हूये भवस, अरि कर लग्गो आण ।—रा रु

उ०—२ अर उगा आराण कठीरव कुजरा, पूजै कुण पीठाण  
प्रपोता पुज रा । दरियावां दा दोर भिल्ल नह दूवळा, भग्ना भवस  
सभीत भिडता भूवळा ।—किसोरदान वारहठ

[स० भविष्यत्] २ भावी, होनहार ।

उ०—१ अस अप्रवले भवस कळप तर आयस, जीवन गयी समेत  
जड । उडिया अनडपख जिम ईहग, वित कज भेवण विया वड ।

—रिवदान मेहदू

उ०—२ वडाई करं नर बोल मे वोलियो, भवस विण किणी सू  
देह भागं । लेख री कटारी प्राण भडपै लियो, लोह री कटारी पछै  
लागं ।—ओपो आढो

३ देखो 'भविष्य' (रु भे)

रु० भे०—भवसि, भवस्स, भवेस ।

भवसागर, भवसायर—स० पु० [स० भव + सागर] समार रूपी समुद्र ।

उ०—१ जळावोल कळजुग, महा दूतर भवसागर । मोह लोभ जळ  
माझि, हुवा गरकाव किता नर ।—जगो खिडियो

उ०—२ यह भवसागर अगम भरी है, काढ लेहु गहि वैया ।  
मीरा के प्रभू गिरवरनागर, तुम ही मोरे सैया ।—मीरा

भवसिधु—स० पु० [स० भव + सिधु] ससार रूपी समुद्र ।

उ०—पूरण-पुनीत क्षीराम पद, विघन हरण त्रैलोक्य वर । पर-  
णाम सुकवि ईसर पुणै, तत नाम भव-सिधु तर ।—ह र

भवसि—१ देखो 'भवस' (रु भे)

उ०—भवसि घडा वळि भाळ, वामण ज्यू 'वीठल' वधै । उतवग  
जाइ ब्रह्म डि अडै, पग सातमै पयाळि ।—र वचनिका

२ देखो 'भविष्य' (रु भे)

भवसुखा—स० स्त्री०—नदी । (अ मा)

भवस्त—देखो 'भविष्य' (रु भे)

उ०—त्रकालग्यानदरसी निज ब्रम कू पहिचानै । भूत भवस्त वरत-  
मान जुगति सों जाणै ।—सू प्र

भवस्स—१ देखो 'भवस' (रु भे)

उ०—खीची डहिया खाग 'गुमन' अरि गजणी । राव बहादुर रूप  
भवस्सा भजणी ।—किसोरदान वारहठ

२ देखो 'भविष्य' (रु भे)

भवानी—देखो 'भवानी' (रु भे)

भवातर—देखो 'भवनतर' (रु भे)

भवान-सर्व [स० भवत्] आप ।

उ०—आभा जगत उदार, भारत वरख भवान भुज । आतम सम  
आधार, प्रथवी राण प्रतापसी ।—दुरमी आढो

भवानी—स० स्त्री० [स० भवानी] १ शिवजी की स्त्री पार्वती ।

(ह ना मा)

२ दुर्गा, शक्ति ।

उ०—लखीजै अमी भाति आकास लागी, भवानी खडा पाण लीघा  
अभागो । हमेसा रहे सत्रु री सीस हाथै, मुखे रज तासळे छत्र  
माथै ।—मे म

३ एक प्रकार की मफेद किन्तु पखो मे कुछ २ श्यामता वाली  
चिडिया जिसके शकुन लिये जाते हैं ।

४ उल्लू जैसा किन्तु आकार मे छोटा एक पक्षी जिसके रात्रि मे  
शकुन लिये जाते हैं ।

५ संगीत मे विलावल ठाठ की एक रागिनी ।

वि०—महान् ।

उ०—कवर रा मूठा सू तौ की बोल नी निकळिया, जाणै वो  
बोलणी भूल ई गयी व्है । आज तो आ भवानी सान गमी पण गमी ।

—फुलवाडी

रु० भे०—भवानी ।

भवानीरथ—स० पु० [स० भवानी + रथ] दुर्गा देवी का वाहन, सिंह ।

भवा—स० स्त्री०—पार्वती । (अ मा, डि को)

भवाइया—स० स्त्री०—एक जाति विशेष ।

भवाईयो—स० पु०—भवाइया जाति का व्यक्ति ।

उ०—इतर-सिउ आवी रहिट,, भाड भवाईया मणि । धूरि घतूह  
सेवतु, खातु भूकी अ गि ।—मा कां प्र

भवाडणी, भवाडयो—देखो 'भवाणी, भवावी' (रु भे)

उ०—फरहरता कपि फाल, अम दै तै अमवारिया । भाराणी भुर-  
जाळ, भुज री भली भवाडियो ।—वां दा

भवाडणहार, हारी (हारी), भवाडणियो—वि० ।

भवाडियोडो, भवाडियोडो, भवाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भवाडीजणो, भवाडीजयो—कर्म वा० ।

भवाडियोडी—देखो 'भवायोडी' (रू भे)

(स्त्री० भवाडियोडी)

भवाणो, भवावी—क्रि० स० [स० भव] १ करना ।

२ देखो 'भवाणो, भवावी' (रू भे)

भवाणहार, हारो (हारो), भवाणियो—वि० ।

भवायोडी—भू० का० कृ० ।

भवाईजणो, भवाईजवो—कर्म वा० ।

भवाडणो, भवाडवो, भवावणो, भवाववो—रू० भे० ।

भावपत्त—स० पु० [स० भवा+पति] शिव, महादेव ।

भवाविध—स० पु० [स० भव+अवि] ससार रूपी सागर, जगत ।

उ०—भवाविध नाथ भावना, विभू नहीं विकारसी । मदीय मे न मूढता, त्वदीय है न तारसी ।—ऊ का

भवायोडी—भू० का० कृ० [स० भव] १ किया हुआ

२ देखो 'भवायोडी' (रू भे)

(स्त्री० भवायोडी)

भवाळ—स० पु० [स० भूपाल] राजा ।

भवावणो—देखो 'भवावणो' (रू भे)

(स्त्री० भवावणो)

भवावणो, भवाववो—१ देखो 'भवाणो, भवावी' (रू भे)

३ देखो 'भवाणो, भवावी' (रू भे)

भवावणहार, हारो (हारो), भवाणणियो—वि० ।

भवाविओडी, भवाविओडी, भवाव्योडी—भू० का० कृ० ।

भवावीजणो, भवावीजवो—कर्म वा० ।

भवावियोडी—१ देखो 'भवायोडी' (रू भे)

२ देखो 'भवायोडी' (रू भे)

(स्त्री० भवावियोडी)

भवि—१ भव्यजीव, मुक्तिगामी—प्राणी । (जैन)

क्रि० वि०—१ फिर, पुन ।

उ०—पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पाळण, दळपति दियण दोखिया दाव । भवि कोई पडिस त भलो भाविस्था, रावळ 'जाम' सरीखी राव ।—ईमरदास वारहू

२ देखो 'भय' (रू भे)

उ०—त्रिय थकित महल चढता तिकै, तिकै चढ़ै गिर तरवरा ।

भवि 'सूरतणै' मछरीक भड, एम हुवा थरहर उरा ।—सू. प्र

३ देखो 'भव' (रू भे)

उ०—१ इण भवि मारु कामिणी, अन-पांगी इण सथ ।

पूगळ नू महु को वळउ, न करउ म्हांकी कथ ।—डो. मा

उ०—२ जो महि असह मेछ कुळ जागै, भवि भवि जिण कुळ सू भय भागै । ततपर घरम सर्म प्रज तारण, सुरां सिहायक असुर सघारण ।—रा रु

३ देखो 'भावी' (रू भे.)

रू० भे०—भवी ।

भविअ—देखो 'भविक' (रू भे)

भविक—वि० [स०] १ ससार सबधी, ससार का ।

२ सिद्धि प्राप्त होने के योग्य ।

उ०—जलिद जामलि जादयु सामनउ । भविक केकिय आस भलउ वलउ ।—जयसेखर सूरि

रू० भे०—भवक, भविअ, भविय, भवीक ।

भविक-जन—स० पु० [स०] १ मोक्ष प्राप्त करने योग्य जीव ।

उ०—साधु साधवी सावक साविका, आगलि वड्ठा विनयी थिका ।

स्त्रीगुरु दीइ उपदेस ज सार, सभलु तमो भविक । विचार ।

—नळदवदती रास

२ सासारिक प्राणी ।

उ०—पहिलु मगत मनि घर ए, विहरता अरिहत के । भविक जीव प्रतिबोधता ए, केवल ग्यान अनत के ।—स कु

रू० भे०—भवियजण, भवियण ।

भवितव्य—वि० [स०] १ होने वाला, भावी, होनहार ।

स० पु० (न) [स० भवितव्य] २ जो अवश्यम्भावी है ।

रू० भे०—भवतव्य, हुतव, होतव, होतव्य ।

भवितव्यता—स० स्त्री० [स०] १ होनी, भावी, होनहार ।

२ प्रारव्य, भाग्य, किस्मत ।

रू० भे०—भवतवता, भवतव्यता, भावत, हुतवता, होतवता, होतव्यता ।

भविय [स०] १ देखो 'भव्य' (रू भे)

[स०] २ देखो 'भविक' (रू भे)

उ०—१ विरलउ पुण्यवत कोइ साहु, वेटारिद्धि तणउ समदाय ।

घरमवत विनयवत होइ, भविय कुहु वउ भणीइ सोइ ।—वस्तिग

उ०—२ पचेंद्रिय भव मनुस्यह तणु, आरय देस उत्तम कुल गणु ।

साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ग्यान द्रष्टि जोड भविया लोइ ।

—नळदवदती रास

भवियजण, भवियण—देखो 'भविकजन' (रू भे)

उ०—१ सिरिवत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नदणी । वड-रागि लहु वय लिद्ध सजम, भवियजण अणदणी ।—स कु.

उ०—२ हारे मोरा लाल आगल चढता, अतिभाली, नीली थवली पव । कु डे कु डे पादुका, वदे भवियण सरव मोरा लाल ।

—वि. कु

२—देखो 'भव्य' (५) (रू भे.)

भविष्य—वि० [स० भविष्य] १ वर्तमान काल के उपरान्त आने वाला ।

२ प्रत्यासन्न, निकट ।

स० पु० [स० भविष्य] आने वाला काल या समय ।

भविष्यत-स० पु० [स० भविष्यत्] होने वाला या आने वाला समय ।

उ०—नहि बहुत धोलवी सुमट नीत, प्रयूह भविष्यत ह्वै प्रतीत ।  
यह दुरगदास अक्खत अडोल, वलि विपद डिगहि नहि डगहि बोल ।

—ऊ का

रू० भे०—भवस, भवसि, भवस्त, भवस्स, भविस्स ।

भविष्यवाणी-स० स्त्री० [स० भविष्यत्+वाणी] आगे के लिए की जाने वाली बात या घोषणा ।

भवियोडो-भू० का० कृ० हुवा हुआ

२ देखो 'भवियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवियोडो)

भविस्स—देखो 'भविस्स' (रू भे)

भवी—१ देखो 'भव' (रू भे.) (अ मा)

२ देखो 'भवि' (रू भे)

भवीक—१ देखो 'भविक' (रू भे)

२ देखो 'भव्य' (५) (रू भे)

भवेस-स० पु० [स० भव+ईश] १ ससार का स्वामी, विष्णु ।

२ शिव, महादेव । (अ मा)

३ देखो 'भवस' (रू भे)

उ०—दुय चत्रमास बादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस ।

पूगो, नही चाकरी पकडी, दीघो नही भईठा देस ।—वा दा.

भवे-क्रि० वि० [स० भव] कभी भी, हरगिज ।

उ०—१ मुख सू दाखै म्यारजी, हसनै असन हवेह । मे ती तोनै मालकी, भूला नही भवेह ।—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ गूजरी-मा विचाळै ई आखती पडनै जवाव दियो—थनै किणी बात री भवै ई ओळबो नी आवैला ।—फुलवाडी

भवोदधि-स० पु० [स० भव+उदधि] ससार-सागर ।

उ०—जनम मरण रा जोड सू, विहनी किरपानाथ । भवोदधि मो ने तारनै, दीजै सिवपुर आथ ।—जयवाणी

भवोभव-स० पु० [स० भव] जन्म-जन्मान्तर ।

भवौ—देखो 'भव' (अल्पा रू भे)

भव्य-स० पु० [स] १ कुशल, क्षेम । (अ मा, ह. ना मा)

२ शिव, महादेव ।

३ रैवतमन्वतर का एक देवगण, जिसमे निम्न लिखित आठ देव शामिल थे—परिमति, प्रयनिश्चय, मति, मन, विचेतस्, विजय, सुजय एव स्योद ।

४ चाक्षुप् मन्वतर का एक देव ।

५ उत्तानपादवशीय एक राजा, जो ध्रुव राजा का पुत्र था । इसकी माता का नाम भूमि था ।

६ दक्षसावर्णि मन्वतर के सप्तऋषियो मे से एक ।

वि०—१ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—धूवा घोरा नाव, कडै लाका लामोडा । गाळा आडावळा, गगण चु बी डीगोडा । टोकी भव्य सोपान, सातसम सीतळ टोळी ।

डिस्सा दहा पडाळ, लुभाणी खितिज खोळी ।—दसदेव

२ शुभ, मंगलकारी ।

३ योग्य लायक ।

४ भविष्य मे होने वाला, या आने वाला ।

५ मोक्ष योग्य जीव ।

उ०—नीली भुइ भली सपजइ, भव्य जीवना अभिग्रह पलइ ।

सरोवर तु राजहस ऊमटइ पणि, पणि जल निरमल उमटइ ।

—नळदमयती रास

उ०—२ केवली थरम इस्यो कह्यो, आवे भव्य नै दाय ।

त्रिविध त्रिविध घरम करणै, माहणो जीव छ-काय ।—जयवाणी

भव्यक—देखो 'भव्य' (१) (रू भे) (ह ना मा)

भव्या-स० स्त्री० [स०] उमा, पार्वति ।

भव्व—देखो 'भव' (रू भे)

उ०—अममेव कोट कीधा इसा, भव्व जनम साफल भया । जग कही कथा वेदे 'जगा', गया गया प्र (प्रे) ता गया ।

—जग्गो खिडियो

भसधि-स० स्त्री० [स० भ+सधि] ज्योतिष मे अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों के चौथे चरण के बाद के नक्षत्रों की सधि ।

भस-स० स्त्री०—१ किसी पदार्थ की असह्य गव ।

२ देखो 'भस्म' (रू भे)

भसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भसण—देखो 'भुसण' (रू भे)

भसणउ—देखो 'भुसणी' (रू भे)

उ०—समुद्र खारउ, वाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन वोलणउ, सुणह भसणउ, ससउ नासणउ, राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ ।—व म

भसम—देखो 'भस्म' (रू भे)

उ०—रग केइक रातडा, भसम धूहर भमराळा । जटाजूट उजळा, केइक भूरा केइ काळा ।—सू प्र

उ०—२ जवन पेव सिर जोर, दियो छत्रपती छिपाए । भसम जाण आरियो, अगन कण जतन उपाए ।—रा रू

भसम्म—देखो 'भस्म' (रू भे)

उ०—३ ढाढी, एक सदैसहउ, प्रीतम कहिया जाइ । सा धण वलि कुइला भई, भसम ढढोळिसि आइ ।—ढो मा

उ०—सुत विनता तन सोय, जाम तजै जणणी जतन । तू राखै मभ तोय, भसम हाड भागीगथी ।—वा दा

भसमागि-स० स्त्री० [स० भस्म+अगि] भस्म करने वाली अग्नि, तीव्र ज्वाला ।



उ०—तडित वज्राणि श्रवणाणि भस्माणि तिम, जाणि प्रलाग री  
आणि जह्यो । खघ रो बहै पण कळस धी आणि खति, कमध री  
खाणि, वरजाणि कह्यो ।—पदमसिध राठोड री गीत

भस्मासुर—देखो 'भस्मासुर' (रू भे)

उ०—भस्मासुर रा विरोध माहे इद्रादिक देवता वाढा । इतरा  
माहे तोरण रा आखा । गुमान री गाढी । चवदै भवण मालिम ।  
अगजिया गजण ।—मा वचनिका

भस्मी—देखो 'भस्म' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ उणी री माउ तो जोगण हुई, अँ समीचार बीरम सुण  
नँ वैराग आयो । जद घर-वार छोड भस्मी पँरी ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाहेल री बात

उ०—२ जतु भलै अथवा जळै, कै पडियो रह जाय । किल  
भिमटा भस्मी कमी, इण नर तन सू थाय ।—वां दा

भस्मीय-वि० [स० भस्म] १ भस्म या राख के रग का ।

स० पु०—भस्म के रग का घोडा जो अशुभ माना जाता है ।

उ०—सदली भरडाज भस्मीय चित्रस, नील पीला गुरडा नुकरी ।  
मकडाज कील्याणीयपच, समदीयै चीन वहा कगडा चहीयै ।

—किसनौ घघवाडियो

भस्मी—देखो 'भस्म' (रू भे)

उ०—पिनाकी रीक्षियो 'कूपी' सतावी विरोध पूजा, वगसै निरम्भै  
घाम काटै पाप वध । के'वाण भस्मी कडा हूत कीघा प्रळेकारा,  
कैळाम ले गयो सारा पूजारा कमध । ऊमेद मादू

भस्म-स० पु०—भौरा ।

उ०—घरहरत मदभर धार, वप सघण जिम विसतार । वह लगर  
घर चख वोळ, क्रीडत भस्म कपोळ ।—सू प्र

भसोड-स० स्त्री० [दे०] कमल की नाल जिसकी तरकारी बनती है ।

भसुड, भभूड-स० पु० [स० भूश्+शुण्ड] हाथी, गज ।

वि० [दे०] राख या धूल से भरा हुआ ।

भसूडरा-स० [दे०] सोलकी वश की एक शाखा ।

भस्त—देखो 'वहिस्त' (रू भे)

उ०—दिइ दान निमणइ करइ, साहिब्व सेव सच्ची करइ । कुराण  
न्याइ पेखि चल्लइ, सो मुसलमान भस्त जि वरइ ।—व स

भस्म-स० स्त्री०—१ लकड़ी, कोयला आदि के जलसे पर बची हुई राख ।

क्रि० प्र०—होणी, करणी ।

२ चिता की राख जो पुराणानुसार शिवजी अग्निने शरीर पर  
लगाते हैं तथा जो गंगा में बहाने हेतु ले जाई जाती है ।

क्रि० प्र०—रमाणी, लगाणी ।

३ धूपदान, यज्ञ, हवनादि की राख जिसे पवित्र मानकर भक्त लोग  
भक्तक तथा अन्य अग्नो पर भी लगाते हैं, विभूति ।

४ गाधु-मन्यामियों के अग्नि-कुंड (धूणी) की राख जिसे वे अपने

शरीर पर मलते हैं ।

५ वैद्यक में, किसी धातु को फूक कर तैयार की गई राख, जो  
चिकित्सा में काम आती है ।

ज्यू-लोह-भस्म, स्वर्ण भस्म ।

वि०—१ जो जल कर पूरी तरह से राख हो गया हो, जला हुआ ।

रू० भे०—भस, भसम, भस्म ।

अत्पा०—भस्मी, भस्मी ।

भस्म-अग्नी-स० पु० [स भस्म+अग्नी] भस्म या राख के रग का घोडा  
जो अशुभ माना जाता है ।

वि०—१ वह जिसका शरीर भस्म के रग का हो ।

२ धूलि-धूसरित ।

भस्मक-स० पु० [स०] १ भाव प्रकाश के अनुसार एक प्रकार का रोग  
जिसमें भोजन तुरन्त पच जाता है तथा शीघ्र बिल्कुल भी नहीं  
होता है ।

२ भस्मासुर का एक नाम ।

वि०—भस्म करने वाला ।

भस्मकारी-वि० [स० भस्मकारिन्] भस्म करने वाला, जलाने वाला ।

भस्माकर, भस्माकर—देखो 'भस्मासुर' ।

उ०—भस्माकर कीनी भसम, हर रक्खणहारे, वालखिली जळ  
हवता, प्रभु तोहि पुकारे ।—भगतमाळ

भस्मागनी-स० स्त्री० [स० भस्म+अग्नि] शरीरस्थ पांच प्रकार की  
अग्नियों में से एक, जो खाए हुए पदार्थ के रसादि व समस्त  
धातुओं को भस्म कर देती है ।

भस्मासुर-स० पु० [स०] शिवोपासक एक प्रसिद्ध राक्षस जिसने शिवजी  
से यह वरदान प्राप्त किया था कि जिस किसी के मस्तक पर वह  
अपना हाथ रखेगा, वह भस्म हो जावेगा ।

वि० वि०—पुराणों में इस नाम का कोई उल्लेख नहीं मिलता है  
परन्तु उनमें प्राप्त कालपुष्ट एव वृक नामक राक्षसों से इसकी कथा  
काफी मिलती है । इसे शिवजी से इस प्रकार का वरदान प्राप्त था  
कि जिस किसी के मस्तक पर वह हाथ रखेगा वह वही भस्म हो  
जायेगा । एक बार वह भगवान शिव पर ही हाथ रखने को  
उतारू हो गया तो श्री विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके इसे  
स्वयं के मस्तक पर हाथ रखने से प्रवृत्त कर दिया जिससे उसका  
वही पर वध हो गया ।

रू० भे०—भस्मासुर ।

भस्मीभूत-वि० [स० भस्म+भूत] बिल्कुल जलकर राख बना हुआ ।

भउ, भऊ—देखो 'बहू' (रू भे)

मह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—वणी नैण भूहार भाल विचित्र, पडै दीपको काजल हेमपत्र ।  
विचित्र वणी मह की रेख वक, घरयी कामदेव कर (रा) में  
घनक ।—वगसीराम प्रीहित री बात

महराणी, महरावो—देखो 'महराणी, महरावो' (रू भे )

महराणहार, हारो (हारी), महराणियो—वि० ।

महरायोडो—भू० का० कृ० ।

महराइजणो, महराइजवो—भाव वा० ।

महरायोडो—देखो 'महरायोडो' (रू भे )

(स्त्री० महरायोडो)

महरो—१ देखो 'भवारी' (रू भे )

उ०—भीतर जाय महरो रौ मुह खोल कुवरसी नू दाखिल कियो ।

—कुवरसी साखला री वारत

२ देखो 'भारी' (रू भे )

महु—देखो 'वहू' (रू भे )

मां—देखो 'माय' (रू भे )

मांकडी—देखो 'माखडी' (रू भे )

मांकार, मांकारि—स० स्त्री०—भेरी नामक वाद्य की ध्वनि ।

उ०—१ न तालाचर वाइ ताल, 'हारु हारु' भणी न हीचकड़ वाली तिहा नही भेरी तणा मांकार, न वस वाइ भला वसकार ।

—नलदवदती रास

उ०—२ रय तणी रामति, मेघाडवर छत्र तणुड आडवर, सीकरी तणुड भमाल, अलवा तणी उमाल, भेरि तणे मांकारि, भल्लरी तणे भांकारि, सख तणे ओकारइ ।—व स

माख—स० स्त्री०—तलहटी ।

उ०—ढीवडा ११ चाच २५ सेवज चिणा छं । द्रहा १ हिंडोल भाखर री भाख पीवं ।—नैणसी

माखडी—स० स्त्री० [दे०] भूमि पर छितरने वाली वनस्पति विशेष जो प्राय वर्षा ऋतु मे होती है ।

रू० भे०—मांकडी ।

माखणो, माखवो—क्रि० स० [स० भा+अकन] घी, तेल आदि से हलका चुपडना ।

माखणहार, हारो (हारी), माखणियो—वि० ।

माखियोडो, माखियोडो, माखियोडो—भू० का० कृ० ।

माखीजणो, माखीजवो—कर्म वा० ।

माखियोडो—भू० का० कृ०—हलका चुपडा हुआ

माखो—स० पु०—घी, तेल आदि का हलका सा लेपन ।

उ०—लावी नोकदार झूती, तीला रं तेल री माखी दियोडो ।

—दमदोख

भाग—स० स्त्री०—१ गाजे की जाति का मादक पत्तियो वाला पीघा जिसे नशे के लिए पीसकर पिया जाता है ।

२ उक्त पीघे की पत्तियो को पीसकर बनाया हुआ तरल पेय ।

उ०—सावरियो म्हांनं भाग पिलाई, मेरी अखिया मे लाली काहे री कूडी (राधे) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी वणाई ।—मीरा

क्रि० प्र०—खाणी, पीणी

मुहा०—भाग खाणी, भाग पीणी=नाममन्त्री या पागलपन की सी बातें करना । भाग ऊगणी, भाग चढणी=पूर्ण नशे मे हाना ।

रू० भे०—भग, भागी ।

अल्पा०—भागडली, भागडी ।

मह०—भागड, भागडो ।

भागड—वि० [दे०] १ भाग का नशा करने वाला, मगेडी ।

उ०—भागड खारा खून कर, तू आण न डर तार । श्री ऊमो अहसी हरी, हामू बगसणहार ।—वा दा

२ देखो 'भाग' (मह, रू भे )

भागडभूतड, भागडभूतड—वि० [राज० भाग+भूत+ड] १ भाग पीकर मस्ती मे रहने वाला ।

२ मदमस्त, उन्मत्त ।

उ०—जोगी गरीवनाथ सिववाडी आयो । भागडभूतड थका रहै । कहै हमीर पतर पूरी जिणकू सिव वाडी का राज है ।

—वां दा ख्या

३ वेफिक्र, वेपरवाह ।

भागडली, भागडी—देखो 'भाग' (अल्पा, रू भे )

उ०—बीजा तो पुर का मायवा बीज मगावी जी मिरगानेण्या री भागडली, भुवाजी म्हारा राजन भाग पावौजी ।—लो गी

भागडो—देखो 'भाग' (मह, रू भे )

उ०—नचं मिव भांगडो पीया थाकं नही, कोपिया सागडो गढा देमी कही । जूजवा लागडो लक जावं जुही, खागडो न मावं आग खापा मही ।—सगतीदान

भागण—स० स्त्री० [स० भग्] १ टुकडे करने या तोडने का कार्य ।

२ वध् हत्या ।

भागणो—वि० [स० भग्] १ निवारण करने वाला, मिटाने वाला ।

२ विध्वंस करने वाला, नाश करने वाला ।

३ मारने वाला, पीटने वाला ।

४ सहार करने वाला ।

५ टुकडे-टुकडे करने वाला, तोडने वाला ।

भागणो, भागवो—क्रि० स० [स० भग्] टुकडे २ करना, तोडना ।

उ०—१ छोरा मोटा होय माय गेडिया भागें तो आरी अक्ल ठाणें आवें ।—फुलवाडी

२ खर्च करना ।

उ०—१ बत्तावो, तिजोरिया रा इत्ता रिपिया क्यू भागया । इण सू बती काई जाव्ती व्हे सकैं ।—फुलवाडी

उ०—२ पती जुद्ध मे दुसमणा री फौजा रा हाथी मारनं तो मोतिया रा ढिगला दिया है जिणरा प्रोत वा पोत चीडा न हाथियारं दाता रा चूडा मोल भागण री काम नही सो इमा वीर पती रा घर रा तोटा पर ही वारणें जाऊ ठू ।—बी म टी

३ मारना, पीटना ।

उ०—कोई आघ घड़ी रै उपरात नाड देखती देखती वेदराज टोकरिया रा माथा मे आवेस लिगतरा री जतराई । पछे हाथ मायला चिटिया सू सागेडी भांग्यो ।—कुलवाडी

४ निवारन करना, दूर करना, मिटाना ।

उ०—सुदर, गौरी, ओलू थारी परी रै निवार, चपक वरणी, वाबोमा री ओलू सुमरीजी भागसी ।—लो गी

५ विनाश करना, विध्वस करना ।

६ पराजित करना, हराना ।

७ लूटना ।

उ०—घाईती गाव भाग रह्या है—कोई गुडकती-गुडकती बोल्थी । घाईती गाव भाग रह्या है नै थै वाजरी मे लुक रह्या हो ! फिट रे नादारा थानै ।—रातवासी

८ मिटाना, नष्ट करना ।

उ०—हिंदूवाण री घ्राण देसाण हुगी, उणा री अलकार प्रकार ळगी । बुरज्जा चहू जाण लोकेस वाका, प्रथी आभ री बीच भाग पताका ।—मे म

९ सहार करना, मारना ।

१० नियम तोडना ।

ज्यू—एकासणी भागणी ।

११ रुपये को छोटे मिक्को मे परिवर्तित करना ।

१२ प्रकट करना ।

उ०—सु देवीदास आप ती उठा थी पाळो ही ज नीसरियो, चाकर एक साथे हुतो तिए नु कहो—तू डेर जाय राव रा आदमी आपण डेर तेड़ण नु आवसी तिए आगे कोई भेद मत सामे नै कहीजी-देवीवास मीकर गयो छै यु करने आघो काटजी ।—नैणसी भागणहार, हारो (हारी), भांगणियो—वि० ।

भागिओडी, भागियोडी, भाग्योडी—भू० का० कृ० ।

भागोजणी, भागीजवो—कर्म वा० ।

भजणी, भजवो, भाजणी, भाजवो, भानणी, भानवो, भाजणी, भाजवो, भाज्जणी, भाज्जवो—रू० भे० ।

भागरी-म० स्त्री०—एक प्रकार का घाम ।

भागरी-स० पु० [स० भृगराज] एक प्रकार का धुप जो प्राय गीली भूमि मे होता है तथा सफेद, पीले और काले इन तीन प्रकार के फूलो के भेद से यह तीन प्रकार का होता है ।

रू० भे० भगरो, भगराज ।

भागा-स० पु० [स० भग] बिगाड, खराबी ।

उ०—हू तो बँवू हू नांगा करण वाळा री काळो मूढी अर लीला पग हुवै ।—वरसगाठ

भागि—देखो 'भाग' (रू भे )

उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति तजारै री बाडी

री नीपनी, नीली घणी पाकी, पुराणी, आगे वखाणी तिए भाति री भागि घणी एलची, मिरचा पान, जावत्रीरै भेळ सू पाखाण री कूडीआ—सरवगरा घोटा सू ऊजळा प्राचारी घमोडी घणी ऊजळे मिसरी रै भेळ ऊजळा गरणा सू भारीजै छै ।—रा सा स

भागियोडी—भू० का० कृ०—१ टुकडे किया हुआ २ खर्च किया हुआ ३ मारा हुआ, पीटा हुआ ४ निवारण किया हुआ, दूर किया हुआ, मिटाया हुआ ५ विनाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ ६ पराजित किया हुआ, हराया हुआ ७ लूटा हुआ ८ मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ ९ सहार किया हुआ, मारा हुआ १० नियम तोडा हुआ ११ रुपये को छोटे मिक्को मे बदला हुआ, परिवर्तित किया हुआ १२ प्रकट किया हुआ १३ भग किया हुआ

(स्त्री० भागियोडी)

भागो—देखो 'भाग' (रू भे ) (अमरत)

भागिसुर-म० पु० [भाग+ईश्वर] भाग ।

उ०—१ इसै मे भागिसुर मगायजै छै, सू किण भात छै ? केसर री क्यारी दोळली, वासग-माथारी ।—रा सा स

उ०—२ आप कहियो रे ! भागिसुर री काई खवर ? तरै कहियो भागिसुर तइयार, साहिव ! कहूँ काहियो ?

—प्रतापमल देवडा री वात

भागंडी—देखो 'भगेडी' (रू भे )

भागो-स० पु०—छोटा खड, टुकडा (नुकरा) ।

उ०—अमल-रे वाटणहारै-नू कह्यो—सारीखी भागो करे, अर अमल नू माथो मत को धूणी महादेवजी बुरो मानमी ।

—प्रतापमल देवडा री वात

भाज-स० स्त्री०—१ किसी पदार्थ का घुमाने, मोडने या तह करने की क्रिया या भाव ।

२ विघ्न, बाधा ।

३ पचायती ।

भाजक-स० स्त्री० [स० भग] विघ्न, बाधा ।

उ०—अवकं जठे जावा वठे-ई भाजक लागे है । हू तो केवू हू भागा करणवाळा री काळो मूढो अर लीला पग हुवै ।—वरसगाठ

भाजघड-म० स्त्री० [स० भग+घट्] १ वह मभा या समिति जो किसी विवाद जा झगडे सुलझाने के लिए बुलाई जाय ।

२ चिन्तन, विचार ।

उ०—रात ती फिकर करता, भाज-घड करता करता व्यतीत कीवी ।—डाढाळा सूर री वात

३ खटपट, तोट-जोड ।

उ०—भाजघडा भाजी भिडा, श्रीवा अमल अमाप । थापे उथप सटपट थकी, तिका पतै परताप ।

४ सकटप ।

५ सलाह ।

भाजणो—देखो 'भागणी' (रू भे)

उ०—१ सत जण तरण चख कपा रुख साहरै, साहरै विरद भुजडह सिधाळा । वीस भुज भाजणा समर हथवाह रे, वाह रे राम अघघेस वाळा ।—र ज प्र

उ०—२ भाजणो त्रिवेघी घडा भेळणो भिडज भाळे, दाहणो गयदा खेत ढडोळणो ढाल । आगळो दळा अभग जेतखभ हुवो जुघे, 'जोधा' हरी जगजेठ जोघ जगमाल ।—जगमाल री गीत

भाजणो, भाजवो—१ देखो 'भागणी, भागवो' (रू भे)

उ०—१ वैं वारा भाला तो ऊ गिड-सूर वडोडो आपरी डाढा प्रळा रूपी दिवाय भाज न्हांकसी ।—वी स टी

उ०—२ पाडै किता, खडो जुधि न पडै, दुरित खवा असमाण दुहि । मरि-भरि वाम खाग अरि भाजै, केहरि का माथै कळहि ।

—तीकमदास खिडियो

उ०—३ रीदा भाजि ऊजळा रुका, वैंर वाळि, उजवाळि वट । पग निरलग, निरलग अग पडे, भुज निरलग निरलग भ्रकुट ।

—राठोड पदमसिध री गीत

उ०—४ वैंरड खड घड वेहडाह काली किरि भाजै कूलडाह । सेलां उमेळ फाटें सनाह, घरहरै सोण धारा प्रवाह ।—गु रू व  
उ०—५ दखै भाग ज्यारा जती वस दीता, सकी कत श्रीलोक री नाथ सीता । ब्रह्मड कोडेक भाजै वणावै, इसी राम माता कठै कामि आवै ।—सू प्र

उ०—६ जुग भल स्त्रीराम सुणाय जाये, माहरी अक सदेसी मेह, दुख तू तणो भाजिसै तिए दिन, दिन जिए राख थाइसै देह ।

—ईसरदास वारहट

उ०—७ सो सुणि दुरजणसाल, कोपि रणमस्त वकारे । कहियो था जिम कवण, मान भाजै छळ मारे ।—व भा

उ०—८ पाटण 'सीह' अचळ परणिया, 'मूळा' तणै माडहै 'माल' । भाटी तणो कमघ घट भाजै, सत्र तणो अरघगी साल ।

—गु रू व

उ०—९ सबळा गड गजण मदा, भाजण सबळा भूप । नरपत्ती वीकाण रा, राज नवैखड रूप ।—चतुरो वारहट

उ०—१० पांचसै खेत दखणो पडे, रिण वकै दिन पध्वरै । गज थटा भाजि जीते 'गजण', महाजुध्व मडोवरै ।—गु रू व

उ०—११ हड्डाधिराज हू छोटी राणी दाहडी मे जोडै ही जन्म लीघो तिकाही पछै बुदी पाइ चीतोड रा अघीस कूभा रा भाजिया बुवा ।—व भा

उ०—१२ इण ही वस मे भठनैरपुररै अघीस जसराज सोन-गिरै केही वार जवना री जोरदार कटक भाजियो ।—व भा

उ०—१३ वघ छोह जितू रिण वाही 'वोकै', सेन नमता साख

सुर । मिलक हिंदाळ भाज रुका मुह, इणी विहर रिडमाल उर ।

—राव वीका री गीत

उ०—१४ जठै कुमार लक्कडखान चौडे खेत जाइ कुठारखान भाजियो ।—व भा

उ०—१५ केहर तणी कळाइया, भणणाहट भमराह । भीजी गज सिर भाजता, मद सौरभ डमराह ।—वा दा

उ०—१६ सावळा तणी दे भीक आखाड-सिध । दुरित तै मेछ दळ भाजि दियो ।—कछवाहा वैंरसल खगारीत री गीत

उ०—१७ खाडुक-मल 'मानी' 'खेम' नद, चहवाण जेण भाजियो 'चद' । विरदैत जोघ घाटै-वराड, 'गोइद कणैठ काळी-पहाड ।

—गु रू व

उ०—१८ इहा नू माही वडणे नही दिया । राजूखा री वीवी वाहर आय कही—वावा थारी वैंर था लेय ही लियो । सावास छै, बडी रजपूती राखी । जसा पुरसा रा थै लडका था विसी ही कीवी । जनानी मरजाद मता भाजो—सूरे खीवे काघळोत री वात  
उ०—१९ रात रा आपरी नाणी भाज, आटी, घी, सकर आण चूरमी कर खावै अर वाकी री परभात रै पगा ऊचो मेल्ह कर राखै ।—सूरे खीवे काघळोत री वात

भाजणहार, हारी (हारी), भाजणिवो—वि० ।

भाजियोडी, भाजियोडो, भाजियोडो—भू० का० कृ० ।

भाजीजणो, भाजीजवो—कर्म वा० ।

भजणो, भजवो—रू० भे० ।

भाजियोडी—देखो 'भागियोडी' (रू भे)

(स्थी० भाजियोडी)

माड—स० पु० [स० भड] १ एक जाति विशेष जिसका पेशा स्वाग बनाकर, नाच गाकर हास्यपूर्ण तरीके से नकलें या परिहास करके लोगो को हंमाना होता है ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

वि०—निलंज्ज, वेशर्म ।

देखो 'भाडो' (महु रू भे)

रू० भे०—भड, भाडेरू ।

भाडणो, भाडवो—क्रि० स०—१ वदनाम करना ।

उ०—१ क्यो काई ? फजोतवाडो हुवै है । वाई री नगुद जागा-जागा भांडती फिरै है ।—वरसगाठ

उ०—२ ताह्रां 'ऊदै' अर 'काळ' कह्यो-'मै' सिख रै साथै नही जावा, भांडसी ।—नैणमी

उ०—३ दाम री भाम भेनी दुकर, भव सारं नै भाडियो, छिता पर इता गुण छोड दै, राड न छोडै राडियो ।—ऊ का

२ निन्दा करना ।

उ०—विचाळै ई दात पीसता बोल्या-ठाकुरजी रै सामी ऊमी यू ठाकुरजी नै ई भाडै, यनै सराप लागेला ।—फुलवाडो

मांडणहार हारी (हारी), मांडणियो—वि० ।

मांडियोडो, मांडियोडो, मांडियोडो—भू० का० कृ० ।

मांडीजणी, मांडीजवो—कर्म वा० ।

भडणी, भडवो—रू० भे० ।

भांडनी—स० पु० मनुष्य की ऊचाई के बराबर का एक पोधा जो श्रौपधि में काम आता है ।

भांडपति—स० पु० [स० भड=खजाना+पति] कोपाध्यक्ष ।

उ०—तडभाडागारिक, करपूरपट्टिक कोस्टाकारिक पारिग्राहिक प्रतिहार चतुद्वारिक कास्टिक राजद्वारिक सधिविग्रहिक भांडपति महाजनिक दूत दालिउट्ट ।—व स

भाडाई—क्रि० वि० [स० भड+रा० प्र० आई] १ सर्वत्र निंदा करने की क्रिया ।

२ भाड द्वारा किया जाने वाला कार्य ।

उ०—सेवट चौमामा रै उपरात श्रेक दिन साधू आप रै स्वाग री भेद परगट करने भाड री गळाई वजायनै जाचना करी । सेठ रै सामी हाथ जोडनै कछी—गरीब री भाडाई माथै रीभ करने वगसीम करी अदाता । म्है रावळी भाड ह ।—फुलवाडी

उ०—उक्त प्रकार का कार्य करने पर मिलने वाला पुरस्कार ।

रू० भे०—भडाई, भडाई ।

भाडाकार, भाडागार—स० पु० [स० भण्ड+आगर] कोप, खजाना ।

उ०—१ आस्थान सभा, स्त्रीकरणसभा, व्ययकरणसभा, घरम्माधिकरणसभा, देवकरणसभा, पंडितसभा, लेहासभा भाडाकार कोस्टाकार, सत्रागार, मठविहार प्रजा मंडप ।—व स

उ०—२ करि तुरग रथ पायकसेन भाडागार ५, कोस्टागार ६, गढ ७, सप्ताग राज्यलक्ष्मी ।—व स

भाडागारिक—स० पु०—कोपाध्यक्ष ।

व्यायामसाल, टगसाल, आस्थानसाला, स्त्रीकरणसभा, व्ययकरणसभा, घरम्माधिकरणसभा, देवकरणसभा, पंडित सभा, लेखकसभा, भाडागारिक कोस्टाकार, सत्राकार ।—व स

भाडियोडो—भू० का० कृ०—१ वदनाम किया हुआ २ निंदा किया हुआ ३ दूषित किया हुआ (स्त्री० भाडियोडी)

भांडार—देखो 'भंडार' (रू भे)

भाडेह—वि० [देश०] १ निंदा करने वाला, अपकीर्ति करने वाला ।

२ देखो 'भाड' (रू भे)

रू० भे०—भाडेह ।

भाडो—स० पु० [स० भड] १ वरतन ।

उ०—१ भरथ आया तड जाणियै, जब अनरच छूटै । दादू भाडा भरम का, गिर चोडे फूटे ।—दादूदाणी

उ०—यो सवार कुवधि को भांडी, साथ सगत नही भावै । राम

नाम की निंदा ठाणै, साथ-सगत नही भावै ।—मीरा २ शरीर ।

(स्त्री० भांडी)

रू० भे०—भंडी ।

मह०—भड ।

भाणग—स० पु० एक प्रकार का वाद्य । (व स)

भाण—१ देखो 'वाण' (रू भे.)

२ देखो 'भानु' (रू भे.)

उ०—१ अक्खेस राजा प्रभू धम असी, वडी रीत चालै सदा भाण-वसी । लडै काळ चाळा गहे वाद लागै, उभै हाथ जोडै गळ विप्र आगै ।—सू प्र

उ०—२ जाळघर तण्ड गरभ ताड जेहनी, वचन सकोमळ अधिक वखाण । वदन तणी छिन्न कळा जोवता, भयचक हुवइ दुवादस भाण ।—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'वहन' (रू भे)

उ०—आज म्हाारा वीरोजी चोवया वस रह्या, हरखी छै मा की जायी भाण, श्रोढायी घणदेवा चूनडी ।—लो गी

भाणउगवण, भाणउगाण—स० पु० [स० भानु+उदय] सूर्योदय ।

भाणउगाळी—स० स्त्री० [स० भानु+उदय+काल] सूर्योदय का समय ।

भाणकुळ—स० पु० [स०+भानु+कुल] सूर्यवश ।

भाणकुळजा—स० पु० [स० भानु+कुल+जा] सूर्यवशी व्यक्ति ।

भाणक्यो—देखो 'भाणेज' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० भाणकी)

भाणगोती—स० स्त्री० [राज० भाण+गोती] १ सोलकी राजपूत वंश की एक शाखा ।—बा दा ख्या

२ इस शाखा का व्यक्ति ।

भाणजडो—देखो 'भाणेज' (अल्पा, रू भे)

उ०—जाळी वी निरखी ओ वीजा भरोखा वी निरख्या जी राज, फुलडांरी सेजा भाणजडा री मन रल्यो जी ।—लो गी (स्त्री० भाणजडी)

भाणजो—देखो 'भाणेज' (अल्पा, रू भे.)

उ०—आ कय मासी जोर सू हंसी । सागै भाणजो ई हसणा मे उण री पूरी साथ दियो ।—फुलवाडी (स्त्री० भाणजी)

भाणनद—स० पु० [भानु+नद] १ सूर्य का पुत्र दानवीर कर्ण ।

उ०—पाणा पाण मारुथ ज्यू घानकी आवाण पती, सुरताण राहामाण द्रजोण मराह । छाजा मेर ऊछाण ज्यु दावा भाणनद छोळा, सोहै राण दळा येम दूजो 'धारासाह' ।—हुकमीचद खिडियो २ यमराज ।

३ राहु ।

४ सुमीव ।

५ शनि ।

भाणनदा-स० स्त्री० [भानु+नदा] सूर्य की पुत्री यमुना ।

उ०—भूलां मखतूळ जमा जळ भाग, पगप्पग होत उद्योत प्रयाग ।

मदाकण भाण-नदा वह मद, वहै मरमुत्ति प्रवाह बळद ।—मे म

भाणवस-स० पु० [भानु+वश] सूर्य का वश ।

भाणभाणकुळ-स० पु० [भानु+भानुकुल] १ सूर्यवश का सूर्य श्री राम-

चन्द्र जी । (ना मा)

२ ईश्वर । (ना मा)

भाणमती—देखो 'भानुमती' (रू भे)

भाणराणी-स० स्त्री० [भानु+राज्ञी] देवी, दुर्गा ।

भाणव-स० पु० [स० भणति इति भाणव] १ काव्यकार, कवि ।

(डिं को)

२ उत्तम वक्ता ।

३ चारणों के लिये प्रयुक्त एक पर्यायवाची शब्द ।

भाणसुत, भाणसुतन-स० पु० [स० भानु+सुत] १ यमराज ।

(ना मा)

२ शनि ।

३ कर्ण ।

४ सुग्रीव ।

भाणसुता-स० स्त्री० [स० भानु+सुता] सूर्य की पुत्री यमुना ।

भाणिजौ—देखो 'भाणेज' (रू भे)

भाणप्रताप—देखो 'भानुप्रताप' (रू भे)

भाणू—१ देखो 'भाणेज' (रू भे)

उ० श्रेक मामी कह्यो—म्हारा लाडेसर भाणू थू म्हारें अठे ठैर,  
दूजी मामी कह्यो—म्हारा लाडेसर भाणू थू म्हारें अठे ठैर ।

—फुलवाडी

(स्त्री० भाणी)

२ देखो 'भानु' (रू भे)

भाणेज, भाणेजी-स० पु० (स्त्री० भाणजी, भाणेजी) बहिन का पुत्र भानुजा ।

उ०—१ तद कह्यो—'भाणेज' और ठोडा रही । थे म्हारा देस छाडो ।' सु अँ छाई नही ।—नैणसी

उ०—२ थारी वहनड कागद मेहलियो । थारी भाणेजी परणाजं,  
माहेरी भरण घरे आवी ओ जुम्मार जी ।—जुम्मार जी रो गीत  
रू० भे०—भाणजी, भाणिजी, भाणू ।

भाणोत-स० पु०—राडोड वश की एक उप शाखा ।

भाणी-स० पु०—१ भोजन करने का पात्र ।

उ०—साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगलाकर ऊगदा है ।  
जग अण सम जाणें मोजा माणें, माणें भोज भरदा है ।—ऊ का  
२ भोजन, आहार ।

उ०—यु करता जीमण तयार हुओ, ताहरा नाथ नू भाणी  
मेलियो ।—नैणसी

३ देखो भानु (अल्पा रू भे)

उ०—रयणो भूखण चढी, आकास भूखणो भाणी । भूखण भूतळ  
इदी, भूखण साह फौज 'गजसिंधो' ।—गु रू व

भात-स० स्त्री०—१ किसी पदार्थ की बनावट या रचना का विशिष्ट  
दग या प्रकार, परिहृप ।

२ देखो 'भाति' (रू भे)

उ०—१ कूमाथळ मोताहळा, भरिया वग गिर भात । चद्र वरण  
गज रतन में, वगड वणिशा दात ।—वा दा

उ०—२ पीवण नै इमरत व्हे जेडो ठाडो निरमळ पाणी, खावण  
नै मीठा जामुन अर खिजूर री भात राताचुट्ट पेमली वोर, पछें  
काई चीज री दरकार । वादरा सारू तो जाणें सातू सुरग श्रेकठ  
व्हिया ।—फुलवाडी

उ०—३ अनेक जाति जाति भात भात मेछ आरहे । धुवे कि मेघ-  
माळ गोप सीस कोष घारहे ।—रा रू

उ० - ४ ताहरा रावजी हुकम कियो—'घिरत भूजाई मे ईयें पळी  
मो पुरसी । आघो पुरसं तो सुवार नू सक्ता दीजें । भरियो पुरसणी  
रजपूत नू । ईयें भात चूडीजी राज करें ।—नैणसी

उ०—सु राजा तो काहिए नू मन हकरें, पण लोक देखें अर राजा  
री राणी पण कही भात देखें, सु अँ हैरान रहै अर विचारें—जु  
आज ईयें वरावर सामत कोई नही ।—नैणसी

रू० भे०—मत, भति, भती, भन, भति, भती, भत्त, भत्ति, भत्ती,  
भातर, भाति ।

अल्पा०—भातडली ।

भातडली—१ देखो 'भात' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भाति' (अल्पा, रू भे)

भातभतीली—वि० (स्त्री० भातभतीली) बनावट, रचना, गुण-वर्ण,  
आकार-प्रकार के विचार से भिन्न-भिन्न वस्तु या प्राणी ।

ज्यू०—भात-भतीला मिनख ।

उ०—ब्रखमा डाली भातभतीली, फूल महक अणभीत री । ऊभ एक  
पग साजन सजें, जो'डा स्वागत भीत री ।—दसदेव

२ भिन्न-भिन्न प्रकार का कमीदा या चुनाई का काम किया हुआ ।  
(डिजाइन वाला)

भातर—१ देखो 'भात' (रू भे)

२ देखो 'भाति' (रू भे)

उ०—आइ नै राणैत्री रो मुजरौ कियो । सु ईयें भातर आया सू  
राणै रो साथ छिप गयो ।—देवजी बगडारत री बात

भाति—१ प्रकार, तरह ।

उ०—१ आगळी प्रिया प्री चौथे आरभि, केरा त्रिण्ह इण भाति  
फिरि । कर सागुस्ट ग्रहण कर सू करि, करी कमळ चपियो किरि ।

—वेलि



उ०—२ इसी तरह लिछमीजी भाति-भाति करि अरज स्त्री भगवान नै कीवी । अठै राजा ब्रह्मदमाण हजार बीस ब्राह्मण नै भोजन, गाया हजार दोय, हाथी, घोडा री सकळप भरियो ।

—पलक दरियाव री बात

२ चाल-ढाल, रग-ढग ।

३ आचार, व्यवहार की मर्यादा ।

४ प्रथा, रीति ।

रू० भे०—भत, भति, भती, भत, भति, भती, भत्ता, भत्ति, भत्ती, भात, भातर ।

भादू—देखो 'भोदू' (रू भे )

भादोली—देखो 'वदोली' (रू भे )

भादोली—देखो 'वदोली' (रू भे )

भान-स० पु० [स० भान] १ प्रकाश, रोशनी ।

२ ज्ञान, प्रतीति ।

३ आभास, महसूस ।

४ नाश, ध्वस ।

५ प्रकटन, प्रादुर्भाव, एव दृष्टिगोचर होना ।

६ देखो 'भानु' (रू भे )

उ०—सुरतान ग्रहन मोखन सुजान हिंदवान भान की करन हान । गळ फेरि छुरी जैचद गोत, अप्पन पोत करिये उदोत ।—ऊ का

भानगो, भानवी—देखो 'भागणी, भागवी' (रू भे )

उ०—१ दादू गुप्त गुण परकट करे, परकट गुप्त समाइ । पलक माहि भाने घडै, ताकी लखी न जाइ ।—दादूवाणी

उ०—२ तन मन सौज सवार सब, राखै विसवादीम । सो साहिब सुमिरे नही, दादू भान हदीस ।—दादूवाणी

उ०—३ त्रप खग दान लिया मुख नूर ज प्रमणा भान बिब्रीवट पूरज । बळबळ प्रथी सुजस सद बोलत सूरत तड दासरथी सूरज ।

—र ज प्र

उ०—४ हुरम कवीले के जतन साहिजादे जानी, खेमसाह' देखत हो मव चिता भानी ।—रा रू

भानणहार, हारी (हारी)भानणियो—वि० ।

भानियोडी, भानियोडी भान्योडी—भू० का० कृ० ।

भानीजणी, भानीजवी—कर्म वा० ।

भानमती—देखो 'भानुमती' (रू भे )

भानवी—स० स्त्री० [स० भानवी] यमुना नदी । (डि को )

भानियोडी—१ देखो 'भागियोडी' (रू भे )

(स्त्री० भानियोडी)

भानु—स० पु० [स० भानु] १ सूर्य, भास्कर ।

२ विष्णु ।

३ किरण ।

४ आक, मदार ।

५ वर्तमान अवसरपिणी के पन्द्रहवें अर्हत् के पिता का नाम । (जैन)

६ एक देव गन्धर्व जो कश्यप एव प्राधा का पुत्र था ।

७ सत्यभामा से उत्पन्न श्रीकृष्ण का महारथी पुत्र ।

स० स्त्री०—दक्ष की एक कन्या का नाम ।

रू० भे०—भाण, भागू, भान, भानू ।

भानुकप-स० पु० [स० भानु+कप] ज्योतिष के अनुसार सूर्य ग्रहण के समय कभी २ सूर्य में दिखाई देने वाला कपन जो अशुभ माना जाता है ।

भानुकाशमावस-स० स्त्री० [स० भानुकामावस्या] ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या ।

भानुज-वि०—सूर्य से उत्पन्न ।

स० पु० [स० भानु+जन] १ शनिश्चर । (२) यम । (३) कर्ण ।

भानुजा, भानुतनया, भानुतनूजा-स० स्त्री० [स० भानु+जा, तनया, तनूजा] १ यमुना नदी ।

२ राधिका ।

भानुपाक-स० पु० [स० भानु+पाक] सूर्य की धूप से शीपघ आदि को पकाने की क्रिया ।

भानुप्रताप-स० पु० [स० भानुप्रताप] तुलसीकृत रामायण के अनुसार कैकय देश के राजा सत्यकेतु के पुत्र का नाम ।

भानुमती-स० स्त्री० [स० भानुमती] १ अगस्ति ऋषि की बही पुत्री का नाम ।

२ सगर राजा की पत्नी शैब्यकन्या केशिनी का नामान्तर ।

३ धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन राजा की एक पत्नी ।

४ विक्रमादित्य की रानी जो राजा भोज की कन्या थी ।

५ नटो से मिलती-जुलती एक मुसलमान जाति या इस जाति की स्त्री जो गाना-बजाना करके अपना निर्वाह करती है ।

रू० भे०—भाणमती, भानमती ।

भानुमानु-स० पु० [स० भानुमान] पुराणों के अनुसार बृहदश्व के पुत्र का नाम । इसका दूसरा नाम भानुरथ भी था ।

उ०—कहि जिए सुतए वीर अप केहौ, जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ । जे सुत ब्रह्मदस्व भूप करण जय, ते सुत भानुमानु तेजोमय ।

—सू प्र

भानुवार-स० पु० [स० भानु+वार] रविवार, इतवार ।

भानुसप्तमी-स० स्त्री० [स० भानु+सप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी, जिस दिन शाकद्वितीय ब्राह्मण सूर्य की पूजा करते हैं ।

२ रविवार के दिन होने वाली सप्तमी तिथि ।

भानुसुत-स० पु० [स० भानु+सुत] १ यमराज ।

२ कर्ण ।

३ शनिश्चर ।

४ राहु ।

५ सुग्रीव ।

भानू-स० पु० [स० भानु] १ अग्नि, आग ।

२ देखो 'भानु' (रू भे) (ना मा)

भापटी-स० स्त्री० [दे०] वाम की पतली लकड़ी ।

भापणियो-वि०—१ भापने वाला ।

देखो 'भापणी' (अल्पा, रू भे)

भापणी—देखो 'भापणी' (अल्पा, रू भे)

भापणी-स० पु०—पलकों का वाल ।

अल्पा० भापणियो, भापणी ।

भापणी, भापवो-क्रि० स०—परिस्थितियों, क्रियाओं, चेष्टाओं, लक्षणों आदि से वस्तु-स्थिति का सही अनुमान लगाना । ताडना ।

उ०—रभा न बड़ी अचूकी बहूँ कैं जिकी आदमी हमेसा उगनें भावणकी घर नकटी राड सिवाय बतलावतो नही हो वो आज इण दूजी राग मे कोकर बोलण लाग्यो । लुगाईं री जात खतरा नैं भाप लियो ।—रातवासी

भापणहार, हारी (हारी), भापणियो—वि० ।

भापियोडी, भापियोडी, भापियोडी—भू० का० कृ० ।

भापिजणो, भापिजवो—कर्म वा० ।

भापियोडी-भू० का० कृ०—परिस्थितियों, क्रियाओं, चेष्टाओं, लक्षणों आदि से वस्तु स्थिति का सही अनुमान लगाया हुआ । ताडा हुआ । (स्त्री० भापियोडी)

भांव-स० स्त्री०—१ शासक वर्ग की ओर से गाव भाभी को दी जाने वाली पदवी ।

२ उक्त पदवी के उपलक्ष्य में दिया जाने वाला धन या वस्तुएँ ।

(पगडो, लाठी)

३ 'भावियो' का काम, वेगार आदि ।

रू० भे०—वाभ भाभ भाम वाभ

भावटी—देखो 'भावी' (अल्पा, रू भे)

उ०—ठाकर देखता ईज गरज्या—काई रैं भावटा, थारी आ पट-राणी काई कै'वैं कै किसा पेटिया पूरवो हो सो मही पीसणी पीसा ।—रातवासी

(स्त्री भावटी)

भाविडी—देखो 'भावी' (अल्पा, रू भे)

उ०—भावीडा हाथाजोडी करण लाग्या—आप बडा हो, आप मालक हो, आप धणी हो, आप रोटिया रा देवाळ हो ।

—रातवासी

(स्त्री० भावणकी)

भावी-स० पु० (स्त्री० भावण) चमड़े का काम करने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

उ०—थर-थर धूजती बोल्यो—वापजी ओ तो म्हें रावळो भावी ह ।

—फुलवाडी

रू० भे०—वाभी, भाभी, वाभी ।

अल्पा०—वाभीडी, भावटी, भांविडी ।

भामि—देखो 'भाव' (रू भे)

भाभर-स० पु०—जोश, आवेश ।

उ०—किरमाळ ऋडे तनयाण कपे, मळके किर दामण मेघ वपे । सरके जुड भाभर मेछ सही, जुध में धुजरेण पलाल जही ।

—रा रू

भांभरभोळव, भांभरभोळवी, भांभरभोळी—देखो 'भभरभोळी' (रू भे)

उ०—१ कोई रामा निज कतनउ, पालवि ऊभी सोहाय, भामिनी भाभरभोळवी, प्रीवडउ तव उजाय ।—प्राचीन फागु-संग्रह (स्त्री० भांभरभोळवी भांभरभोळी)

भाभरहूली-स० स्त्री०—एक प्रकार की मन्जी ।

उ०—भेडागारी भामटी, भाभरहूली भाति । भूसण भूली भारथी, भडहड भोली राति ।—मा का प्र

भाभराभूत—देखो 'भाभरीभूत' (रू भे)

भाभळभळको, भाभळभोळी-स० पु०—सायकाल का समय जब कुछ हल्का मा अधेरा रहता है ।

देखो 'भभरभोळी' (रू भे)

उ०—भाभळभोळी भामणी, ए तो गोरागी चढी गोख हो राज । दरसन सतयुग देखवा, ए तो भाख रहीव करोग हो राज ।

—महेन्द्रपुरी

(स्त्री० भाभळभोळी)

भाभराळी, भाभरी-वि०—उन्मत्त मस्त ।

भाभळी-स० स्त्री०—छोटे २ अग्नि-कण मिश्रित वह राख जिसमें किसी वस्तु को गाड़कर पकाया जा सकता है । (अमरत)

भाभाई-स० स्त्री—वेगार का कार्य ।

उ०—तद ओळुगवे कही, 'राज' म्हाहरी सांवळ को भाई छैं । सु श्री भाडणी रैं पेट री छैं । सु म्हे काल्ह वयो मागण गया हता, सु म्हाने आघा घर माही आवण ही दिया नही । हेणा भाभाई करम छैं ।—ठाकुरे माह री बात

भाभी—देखो 'भावी' (रू भे)

(स्त्री० भाभण)

भाम-स० पु० [स० भाम] वहिन का पति, बहनोई ।

उ०—मालवदेस रा पच्छिम प्रांत री पुहवीस रतळाम नगर री वसावणहार राठीड रत्नसिंह विस्वामघात करि आपरी भाम भ्रमरेस रा चरणा री छेदणहार गौड नरेस अरजुनसिंह, राणा-उत राजा रायसिंह, नवाब कासिमखान, करीमखान प्रमुख आपरा मुख्य सामंत सहायक करि बडा वरूथ रैं साध जूझण रा साहसी कुमार दारामाह नू 'श्रीरंग' 'मुराद' रैं साम्हें विदा कीधी ।—व भा

२ देखो 'भामिनी' (रू भे)



उ०—१ कर कर बाडा कपट रा, बाडा पाडण धाम । दिल  
चोरण भाडा दिए, भाडा बाळी भाम ।—वा दा  
उ०—२ दाम री भाम भेली दुकर, भव सारै नै भाडियो । छिता  
पर इता गुण छोड दै, राड न छोडै राडियो—ऊ. का  
उ०—३ जिग जनक आरभ राम रै, कर रिखी गवण सकाम रे ।  
भव सिला गीतम भाम रे, रज पाय तारी राम रे ।—र ज प्र

भामिनी—स० स्त्री०—एक प्रकार की सब्जी ।

उ०—भेडागारी भामिनी भामरहूली भाति । भूमण भूली भारथी,  
भडहड भोली राति ।—मा का प्र

भामण—देखो 'भामिनी' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ जब लू नित नाम तिलोचन वोटीयो, भामण भीयड होम  
भिडै । करवा ग्रह काज इसी न्याय आगळ, भाणरा कोय लिलाम  
मिळै ।—भगतमाल

उ०—२ श्रवधू श्रठ मासै नगद निकासे, चोमासै चिपकदा है ।

भामण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकदा है ।—ऊ का

भामणइ, भामणउ, भामणा, भामणा—देखो 'भामणी' (रू भे)

उ०—१ रति अनुकूल विलास घणा रळियामणा । भीसग दीसै  
इद्र, लिवू हू भामणा ।—वा दा

उ०—२ भुजा भामणा ककणा सज्ज कीर्णा । लसै सूळ डेरू  
खटखप्र लीर्णा । छऊ भैन छोटी दहू ओड छाजै । विचै पाट-राजीव  
माजी विराजै ।—मे म.

उ०—३ भड घोडा महगा थिया, एकण भाट उडंत । भड घोडा  
रा भामणा, जेथ जुडीजै कत ।—वी ल

भामिणि, भामिणी—देखो 'भामिनी' (रू भे)

उ०—१ करे विचार एम सिव कामणि, भेख सरीर घरे हरि  
भामिणि । सुता जनक वप करि ममताई, इम दवि मुता छळण  
काज आई ।—सू प्र

उ०—२ भुहारा तणी रेखा ताइ भामणि, घणू स कोमळ रूप  
घणइ । चाढी जाणि कवाण चाढतइ, तजी कुवरि बलोच तणइ ।  
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ भामणि स्त्रीप्रजराज घणां हित सू भजै । मिख नव  
घरणू जास क दुष्टि समापजै ।—वा दा

उ०—४ भारथ मत कर भामणी, मो भारथ नह मेळ । वापी  
कूप वताव विग, कै कर म्हा सू वेळ ।—वा दा

उ०—५ विडरी हिरणी सी फिरणी विजकाती, मुखडै मुसकाती  
जोरी जतळाती । ओलै भक आटा कोलै जिम कुयिगी, हावर  
भामणिया भामणिया हुयगी ।—ऊ का

भामणी—स० स्त्री०—१ न्योछावर, उत्सर्ग ।

उ०—हू तो हत्या भामणी, वडा समत्या वेह । ज्या 'जेहा' जादव

जिसी, नर निरमियो नरेह ।—वा दा

क्रि० प्र०—जाणौ, होणौ ।

२ वलैया ।

उ०—१ निस दीह सीस ऊपर रहौ, महाराजा 'अजमाल' रै ।

भामणी तुम्ह भगतावछळ, कर प्रणाम डडवत करै ।—गजउद्वार

उ०—२ तेही लक सागा सी जोजना गिणै तूछरेल । मूछरेल

श्रद्धांगा श्रयारा मेल भीच । डरावणे रूप रा दयता भागा दूछरेल ।

भामणै राम रा लागा पूछरेल भीच ।—र ज प्र

उ०—३ भडा जिका हू भामणी, केहा करू यखाण । पडियै सिर  
घड नह पडै, कर वाहे कैवाण ।—वा दा

रू० भे०—भामणइ, भामणउ, भामणी, भामणा, भामी ।

भामनि, भामिनी, भामनू—देखो 'भामिनी' (रू भे)

उ०—भामनि निज छोड भोग, परदार मन का प्रयोग । जाणुता  
नहि जुगति जोग, जन्म हार जाता ।—ऊ का

भामरि—देखो 'भाविर' (रू भे)

उ०—फिर भामरि दे सात, करै डडोत किताई । एक रूप भनमेख,  
पेख धारै प्रसनाई ।—रा रू

भामरी—देखो 'भामर' (अल्पा, रू भे) (वि प्र.)

भामा, भामिण, भामिणि, भामिणी, भामिनी, भामिणी—सं० स्त्री०  
[सं० भामिनी] १ स्त्री, श्रोत ।

उ०—१ आयी इळि वसत वधावण आई, पोइणि पत्र जळ एणि  
परि । आणद वणै काच मै अगणि, भामिणि मोति ए याळ भरि ।  
—वेलि

उ०—२ नीत्री कसवधी कसी कचुली, चचल लोचन भवकइ  
बीजली । कचन तनु गोरी हु नही सामली, भामिनी मुक्क थी नहि  
काइ भलि ।—स कु

उ०—३ जो तुम्ह सारीखी जुडै, भामिण तिणि भरतार । तो  
राही नै कान्हू ज्यु, कर मेळै करतार ।—डो मा

उ०—४ भामिणि भरतारह सरिसु, अहमति किम पडिहाइ ।  
रयण जडी जइवांणही, तउ पहिरीजइ पाय ।—हीराणद सूरि  
२ पत्नी, अर्द्धा गिनी ।

३ कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी ।

रू० भे०—भाम, भामण, भामणि, भामणी, भामनि, भामनी ।

भामी—देखो 'भामणी' (रू भे)

उ०—१ घणनांमी जी, घणनांमी, निज जोर परां घणनामी ।  
भुज लोक त्रिहूपत भामी, विरदैत बहै धुर बामी । जी घणनामी ।

—र ज प्र

उ०—२ गदा ले खडो लागडो अग्रगांमी, भले मात हिगोळ हिगोळ  
भामी । मुणी मै जिका आदि अन्नादि माई, श्रवतार लै भामडा  
धाम आई ।—मे म

उ०—३ विध रा रद्धक दीन रा वधव, सिव रा ध्यान निगम रा सार । जम रा जलव अतर रा जामी, मामी तो सिय रा भरतार ।

—र रु

उ०—४ अण सख्या मेटे असुराणी, रावण कुभ आद खल रेम । निडर किया सुर नर नागा नै, आचा तो मामी अवघेस ।—र रु

माय-स० स्त्री० [स० भूमि] दूरी, फामला ।

उ०—१ ताहरा वलै जंतमीजी बोलिया, कहियो—'खीमाजी' । इतरी माय नहीं लाभो, जोधपुर नै समेल विचै पावडी घणी छै ।

—नैणसी

उ०—२ म्है घणी अलगी माय सूं वारा दरमणां वास्तै आई हा ।  
—फुलवाडी

रु० भे०—भा, भू, भुइ, भुई, भुय, भुइ, भुई, भुय, भूय, भूय ।

मायकौ, मायलौ—स० पु० [स० भूमि] १ दूरी, फामला । २ भूमि ।

मायदाग—देखो 'भूमिदाग' (रु भे)

मारड—स० पु०—पक्षी विशेष ।

भाव-क्रि० वि०—लिए निमित्त ।

भावइ—देखो 'भावै' (रु भे)

भावण—देखो 'भावण' (रु भे)

भावणौ, भाववौ—देखो 'भावणौ, भाववौ' (रु भे)

भावणहार, होरो (हारी), भावणियो—वि० ।

भावियोडो, भावियोडो, भावियोडो—भू० का० कृ० ।

भावोजणौ, भावोजवौ—भाव वा० ।

भांवर, भावरि, भावरी—स० स्त्री [स० भ्रमण] १ परिक्रमा, फेरी ।

२ विवाह के समय वर-वधु द्वारा अग्नि के चारो ओर दिया जाने वाला चक्कर । फेरा ।

उ०—१ भावरि भावरि भूप री, नरपति वदन निहार । रजत महामाणक रतन, आपै सीम उवारि ।—र रु

उ०—२ काई करा और सग भावर, म्हानै जग जजाळ । मीरा प्रभू गिरधरलाल सू, करी माई हाल ।—मीरा

रु० भे०—भामरि

भावियोडो—देखो 'भावियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भावियोडो)

भावं—देखो 'भावं' (रु भे)

उ०—माघी बिना वमती उजार, मेरे भावं । एक समय मोतियन के धोके, हमी चुगत जुवार । सरवर छाड तलैया बैठे, पय लपट रही गार ।—मीरा

माहरी—देखो 'भ्रूह' (रु भे)

उ०—गजा प्राहार हाथळा मिह छूटी 'कुमळेम' गाज, कायरां पराजे बोल माहरै करूप । अमामी जोवार खेत उछाह रै साजि आघी, मूर रामसिध मामी राह रै सरूप ।

—कुशलसिंह चापावत री गीत

मा-स० पु०—१ आकाश ।

२ प्रकाश ।

३ मद । (एका ना मा)

४ उज्ज्वल । (एका ना मा)

स० म्त्री०—५ लक्ष्मी, श्री । (एका ह ना मा, ना मा)

६ यश, कीर्ति । (एका)

७ रात, रात्रि । (एका)

८ चमक, कान्ति, प्रभा । (ना मा)

उ०—मचोडा उरा साकडा आमणोटा, मडै पीठ मचा जिसा गात मोटा । जिका गोळ पीडा उभै चाक जोडै, तिका चामरी लूम भा लूम तोडै ।—व भा

९ मर्यादा । (एका)

१० किरण । (अ मा, डि को ना मा)

११ क्षोभा । (अ मा, ना मा ह ना मा,)

१२ विजली ।

स० पु०—१३ कुटुम्ब मे अपने मे वडे के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

माअलोड—१ देखो 'भालोड' (रु भे)

उ०—छएकार खतग निछट छणै, रुग वज्जिय पय प्रनक रणै । फर फाटस नाह सवाह फडै, माअलोड वमार करत भडै ।—पा प्र २ देखो 'भाली' (अरपा, रु भे)

माइ—स० स्त्री० [स० भाष्ट्र] १ भट्टी, माट ।

उ०—ह कुमलाणी कत विण, जलह विहणी बेल । विणजाग री माइ जिउ, गया धुकती मेल्ह ।—ढो मा

२ देखो 'भाई' (रु भे)

उ०—कटक सजे कीधो क्रमग, मो डम अप ममुभाइ । वाकड लग क्रमियो कवर, भूप पुगावण भाइ ।—व भा

माइगु—देखो 'भाग्य' (रु भे)

उ०—वडउ वडेरउ माइगु जाणि, स्रावक नइ घरि चडइ प्रमाण । करम ना जोइ एवटा फेर, घरम आडा छइ काटिआ तेग ।

—चिहुगत चउपई

मइटो—देखो 'भाई' (अरपा, रु भे)

उ०—सावण नेती डोला थे कगीजी भवरजी भाइछे करघीजी निनाण सिट्टा की रुत ठाया भवरजी परदेम मे जी, श्री जी म्हाग घणा कमाऊ उमराव धारी प्यारी नै पलक न आवडै जी ।

—लो गी

माइप, भाइपौ—देखो 'भाईपौ' (रु भे)

उ०—पछै नौ महिना मे माइपौ लेय विट्टदळास गयी ।

—गोपालदाम गौड री वारता

माइसाइत—स० पु०—१ एक चौहटे का नाम । (मभा)

२ देखो 'मइसाउत' (रु भे)

माई-स० पु० [स० भ्रातृ] १ किसी जीववारी के सबध के विचार से वह नर प्राणी जो उसी के माता-पिता या पिता से उत्पन्न हुआ हो।  
(अ मा, ह ना मा)

उ०—अर मोकल वम रा अवतस भाई माधोदास नू वडे वेग खास रक्को दे'र हल्लर बुलायो।—व भा

२ एक ही परिवार या वंश की पीढ़ी में उत्पन्न दूसरा पुरुष।

उ०—१ अर चाचाउत्त घोरदेव नू मारिया केडे तिकण रा भाई वेटा नू मडणगढ रा सात ग्राम देर वेधम ववावदा सूधी चीतोड रो याणो जमाइ दीयो।—व भा

३ अपनी जाति या समाज का कोई व्यक्ति, विरादरी।

उ०—१ लोक चुगल काने लगे, घू घू वोत्यो गेह। भाया सू भेळप नही, विपत लिखी त्या वेह।—वा दा

उ०—२ सोनग के भाई-वव, भतीजे दळ आगळ। मूरा तें सूरग, महापूरा से अदलू।—रा र

४ मित्र, दोस्त।

उ०—डाफाचूक व्हियोडा देंत री उण वगत रगत देखन राज-गरव न हसी आयगी। हमती ई वी बोल्यो—म्हारा भाई इण वाम्ते इत्तो दुख अर अचुभो करण री किमी बात, वरी रा वेम मे लडाभूम व्हियोडी वा मूडकी तो आ म्हारें पाखती ऊभी।

—फुलवाडी

५ पवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

६ नागाशाही माधुओ की एक शाखा जो प्राय गुरुद्वारो मे ग्रय माहिव के पुजारी होते हैं।

७ बोल-चाल की भाषा में छोटे या समवयस्क व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सम्बोधनवाचक शब्द।

ज्यू—अरे भाई ! योडी अठी आइजें।

उ०—भवण कवण रो हे रे भाई, जीव तिसा मरता रो जाई। पाणी तो हू देत पिलाई, ठाव देह रो हे ठकुराई।—ऊ का

८ घरेलू पशुओ के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला प्यार-सूचक शब्द।

उ०—खास ठगा रें वारण आयन वळदा री रामा ढीली करी। पुचकारतो बोल्यो—हो, भाई हो।—फुलवाडी

अव्य०—१ प्रशंसा सूचक शब्द, धन्य, वाह।

उ०—अकम्मात मिळियो इदोखें, नैण हीण इक नाई। दोनां हाय जोड दुरगा नै, दुग्वळ दमा दिग्गाई। दया विचार आख दे दीनी, भले भले भाई भाई।—मे म

२ आश्चर्य सूचक शब्द।

३ घृणा चोतक शब्द।

८० भे०—भइ, भई, भयी, भाइ, भाउ, भाऊ, भाय, भायर।

अल्पा०—भइयो, भाइडउ, भाईडो, भाईयो, भैयो, भायो।

भाईडउ, भाईडो—देखो 'भाई' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ तु ही रावत्त गोरल्ल, तु हीज दळ माही वडउ। तु ही रावत्त गोरल्ल, तु हीज मोरउ भाईडउ।—प च चौ

उ०—२ कडिया तूटोडा उण कुत्ता नै देव्या दूजोडा रें आसू छळक आया। पूछ्यो—भाईडा, थारी आ काई दुरगति व्ही।

—फुलवाडी

भाईचारी-स० पु० [म० भ्रातृ-चार] १ भाईपना, भ्रातृत्व, वन्धुत्व।

उ०—१ पीछे मुहतेजी नू कयो आप म्हासू पाघ करो तद मुहते जी भाईचारी कियो।—द. दा

उ०—२ मिनख रा सुख-दुख, हरख-विसाद, उणरी वेदना, उणरी चिंता अर उणरा मपना नै आपरी वाणी मे वाचणा सू ई मिनखी-चारी ववै, भाईचारी ववै। सगळी वसुना अक कुटुब लगै।

—फुलवाडी

२ मित्रता, दोस्ताना।

भाईजी-स० पु०—१ पिता, बाप।

२ भाई, भ्राता।

रु० भे०—भा'जी, भायजी, भायीजी।

भाईडो—देखो 'भाई' (अल्पा, रु भे)

भाईदूज-स० स्त्री० यो० [स० भ्रातृ + द्वितिया] कार्तिक शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला त्योहार जिस दिन वहिनें अपने भाई को भोजन कराती हैं।

रु० भे०—भाईबीज, भायूबीज

भाईपाचम-स० स्त्री० यो० [म० भ्रातृ + पचमी] भाद्रपद शुक्ला पचमी जिस दिन वहिनें भाई के राखी बाधती है।

भाईपो-स० पु० [स० भ्रातृ + रा० प्र० पो] १ एक ही पुरुष के वंशजों का समूह।

उ०—१ एक बाळक री वीर माता बाळक पुत्र री ओ पराक्रम देख मन मे हरख लाय कह रही छै—देखो मखी म्हारी पती इण कवर री बाप तो माहेरो लेने गयो छै, अनं इण रो काको भाईपा मे मिळण मारु गयो छै।—वी स. टी

उ०—२ भेळका करता आ बात दोहू कानी देख भारी, सजै ना करारी मोभा भाइपें सुधार। गया वेहू फोजा राजी-बाजी व्हे विचार गाढा, दिया डेरा सोडा बागा अगजी दातार।

—बादरदान घघवाडियो

२ मित्रता, दोस्ती।

रु० भे०—भाईयप, भायप, भायपो।

भाईबीज—देखो 'भाईदूज' (रु भे.)

भाईयप—देखो 'भाईपो' (रु भे.)

उ०—अर रजपूत सू भाईयप करे। जिकै रजपूत राजा रा भाई-वध हवै, तीया सू प्रीति करे।—नैणसी

भाईलो—देखो 'भायलो' (रु भे.)

उ०—भाईलि भेद देखाहीउ, सरोवरि करिउ विणास । एह पाणी नवि पीजीइ, असुरां हवि पूगी आस ।—का दे. प्र (स्त्री० भाईली)

भाईयो—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

भाईयो—देखो 'भासियो' (रू भे)

भाईवट, भाईवटी—स० पु० [स० भ्रातृ+वण्ट] १ पंतुक सम्पत्ति का भाईयो द्वारा किया जाने वाला हिस्सा ।

२ उक्त हिस्से का वह भाग जो उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ हो ।  
रू० भे०—भाईवट ।

अल्पा०—भाईवटी, भाईवटी ।

भाईवद, भाईवध—स० पु० [हि० भाई+वधु] १ भाई और मित्र-वधु आदि ।

२ अपनी जाति विरादरी या नाते के ऐसे लोग जिनके साथ भाईयो का सा व्यवहार होता हो ।

भाईवट, भाईवटी—देखो 'भाईवट' (रू भे)

भाउ, भाऊ—१ देखो 'भाई' (रू भे)

उ०—पचाली नउ भाउ पाच पच पचाल लेउ गिउ । एतइ केसवु राउ कुति मिलिवा आवीयउ ।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'बहूजी' (रू भे)

उ०—म्हारा काकोजी चरावै टोरडिया, म्हारा भाऊजी लावे छकि-यार । आज म्हारी वादळी वरमेगी ।—लो गी

३ देखो 'भाव' (रू भे)

उ०—१ बीत री दातार लखपति चीतज सप्रवीत । राखणी सर-जीत कीरति दाखणी हृद रीत । राज री मिरताज काडम लाज री रदराण । भाउ री दरिआउ देमल राउ री कुलभाण ।

—ल पि

उ०—२ जिहा सुद्ध आसय भूमि पटली, मोहियइ थिरवाय । तिहा ग्यान दरसन थभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय ।—वि कु

भाऊगढदी, भाऊगरदी—स० स्त्री०—लडाई भगडा ।

उ०—भाऊगरदी हुई जद पटेल माघजी री पग कटाणी । पठाण राणैखा आपरै घोडं चढाय लै निसरियो । पूनै गयां पडै पटेल वढी भाग पायो ।—बा दा ख्या

भाएली—देखो 'मायली' (रू भे)

उ०—कमालदी नै मूळराज इण विखा माहै भाएला हुवा था, पाघडी पलटी हुती ।—नैणसी

भाक—देखो 'भाख' (रू भे)

उ०—१ है बुकठीआ काकण हथी, केवा काढण काज कडछै । भाक समू भळकता भाला, धण लै अरियां खाग घडछै ।

—मोहकर्मसिध राठोड री गीत

उ०—२ तरै तेजसी चाकरा नै हुकम कीयो, जावो जोगेवर नै

मेहेवै पोहचाय आवो । कोस पचास री आतरी छै । चाकर मिनखा सूता ही जोगेसर नै महेवा री हाटा माहै मेल्हि आया । भाक फाटी । जोगेसर जागियो ।—जगमाल मालावत री बात

भाकणी भाकवी—१ देखो 'भासणी, भामवी' (रू भे)

उ०—नखी जाणि झूला जरीतास नाही, मिळी तामसी राजसी व्रत्ति माही । प्रकास किता लव दडा पताका, भलै डूगरा सीस ज्यू ताळ माका ।—व भा

२ देखो 'भाखणी, भाखवी' (रू भे)

भाकणहार, हारो (हारी), भाकणियो—वि० ।

भाकिओडो, भाकियोडो, भाक्योडो—भू० का० कृ० ।

भाकीजणी, भाकीजवी—भाव वा० ।

भाकर—देखो 'भाखर' (रू भे)

भाकरडो, भाकरडो भाकरियो—देखो 'भाखर' (अल्पा, रू भे)

भाखरखड—स० पु०—मूज की तरह का एक प्रकार का घास, जिसकी रस्सी बनाकर चारपाई बुनने के काम में लिया जाता है ।

भाकरी—स० स्त्री०—देखो 'भाखरी' (रू भे)

२ देखो 'भाखर' (अल्पा, रू भे)

उ०—लोवा-पोळ रै आग पठी जै-पोळ रै ऊपर हा । ६५ भरी भरा गजगीरी ताळा-कूची ऐ काम ऐ करायो, पथर मोघोगीये री भाकरी मू मगाय नै ।—नैणसी

भाकल—देखो 'भाकली' (मह, रू भे)

भाकलियो—देखो 'भाकली' (अल्पा, रू भे)

भाकली—स० पु० [दे०] ऊट के बालो से बना बिछाने का वस्त्र विशेष ।

मह०—भाकल, भाखल ।

अल्पा०—भाकलियो, भाखलियो ।

रू० भे०—भाखली ।

भाकसी—देखो 'भाखसी' (रू भे)

भाकियोडो—१ देखो 'भासियोडो' (रू भे)

२ देखो 'भाखियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भाकियोडो)

भाख [भास्=किरण] १ ऊषा काल ।

उ०—१ फोगल पछे घिटाळ, जगळा भीट भिटाळी । मूरज ऊगण वेळ, फडमला छवि निराळी । काटणुनै किरसाण, वखत वळ भाखां लागै । बाधा नाखै वाळ, मिलै मोट्यारा मागै ।—दसदेव

उ०—२ उण ती घोडी लेनै आघाहीज खडीया । तितरै मँ भाख पाटी साह नु नीद आई सु जागै नही ।—चोवोली

क्रि० प्र०—फाटणी ।

मुहा०—भाख पला नाखणा=सूर्योदय होना, रात्रि मिटना, अवकाश दूर होना ।

रू० भे०—भाक, भाखा, भाग ।

२ राजस्थानी (डिगल) का एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण के अंत में एक गुरु लघु सहित चौदह मात्राएं होती हैं तथा जिसके चारों चरणों का तुकांत मिलाया जाता है।

रु० भे०—भाक।

म० स्त्री० [मभाप्] ३ देखो 'भासा' (रु भे) (ह ना मा) मरम्बती।

४ देखो 'भामरा' (रु भे)

उ०—चिता सागर भूलती, नजर घरणी पर राख। मुख विलखे जोये नहीं, किरण ही सून नहि भाख।—जयवाणी

मागडी—स० स्त्री०—एक प्रकार का डिगल गीत।

वि० वि०—यह एक मात्रिक छंद गीत है। इस (गीत) में प्रथम ऊपर चार और पांच मात्राओं की गति पर 'जी' शब्द रख कर आगे १४ मात्रा और अंत में गुरु लघु रख कर आकण्ठी अर्थात् टेर रखी जाती है, जो गीत के हर द्वाले के उपरान्त बोली जाती है। इसी प्रकार इसके २५-२५ मात्रा के दो द्वाले बनाए जाते हैं। इसके उपरान्त २६-२६ मात्राओं के दो द्वालों वाला चैताल छन्द ऊपर के द्वालों के प्रसंग के मिठावलोकन पर रखा जाता है। चैताल छन्द में अंत में गुरु लघु रहते हैं।

रु० भे०—भाखरी।

२ देखो भाखर (अल्पा रु भे)

भाखरा—देखो 'भासरा' (रु भे)

उ०—'क्यों इया थोयै अलूजाड़ा में पड़े है? थारै वाप'न काकै थोड़ी मै'नत करी ही। छापा काढ़िया, भाखण दिया। पण टकार ई को सजी नी।'—वरसगाठ

भाखणो—वि० [स० भाप्] (स्त्री० भाखणी) बोलने वाला, कहने वाला।

भाखणो, भाखणो—क्रि० स० [स० भाप्] १ कहना, बोलना।

उ०—१ भाखियो तिका ही वाता, निभायी वेहूँ भडा, फाडेजी अनडा घडा गजा घडा फेर। लोहडा बजाय घडा 'कुसलै' जोधाए लियो, मारी घरा राज कीधी पड़े पछै 'सेर'।

—सेरसिंह मेडतिया री गीत

उ०—२ कोप करण नू काळका, सरसत करण सलाह। पूरण अन अनपूरणा, भाखे लोक भलाह।—वा दा

२ उच्चारण करना।

उ०—भागल भारथ भीड में, वाणी मह विमरत। मुख वापूडी मावडी, भाईडी भाखत।—वां दा

३ वर्णन करना।

उ०—और अधम तारे बहुतेरे, भाखत सत सुजान। कुबजा नीच भीलडी तारी, जाणै मकळ जहान।—मीरा

४ प्रकट करना, प्रकाशित करना।

उ०—१ दाखियो प्रभू कुण चित देव, भाखियो सुरा दुप राण भेव। अइलोक कीध रामण सत्रास, साहाय करो हरि जग निवास।

—सू प्र

उ०—२ देवी नारद रूप तें प्रसन्न नाख्या, देवी हम रै रूप तत ग्यान भाख्या।—देवि

५ देखो 'भासणी, भासवी' (रु भे)

भाखणहार, हारो (हारो) भाखणियो—वि०।

भाखियोडो, भाखियोडो, भाखियोडो—भू० का० कृ०।

भाखीजणी, भाखीजवी—कर्म वा०।

भकणो, भकवी, भक्खणो, भक्खवी, भक्खणी, भक्खवी, भक्खणी, भक्खवी, भक्खणी, भक्खवी—रु० भे०।

भाखर—स० पु०—१ पहाड़, पर्वत। (ह ना मा अ. मा, ना मा)

उ०—हाक डाक ब्रवक घमहमिया, भाखर विकट असट कुळ भमिया। कमवज दळ हालता कराळा, दहसत पई दसै द्रग पाळां।

—सू प्र

रु० भे०—भाकर।

अल्पा०—भक्खरी, भक्खरी, भाकरडी, भाकरियो, भाकरी, भाखरडी, भाखरि, भाखरियो।

२ देखो 'भाखरोत' (रु भे)

उ०—१ जोधा 'चापा' अखा, भला भणि' डूगर, भाखर 'माडण' 'मडळा' 'करन' वरण फीजां वीरव्वर।—गु रु व.

उ०—२ आखरि भार भाखरा आवै, घरि मोटी श्री विरद घरि। राजा राव वागा रणतूरा, सूर' 'मदना' तरुँ सिरि।

—मदनसिं सूरसिंह गौड री गीत

रु० भे०—भक्खर, भाकर।

अल्पा०—भाकरडी, भाकरियो।

भाखरकर—स० पु० [देशज] केर से मिलता जुलता एक वृक्ष जिसके पत्ते नीवू जैसे मुलायम, काटा केर जैसा, फल केर जैसा किन्तु आकार में बड़ा होता है। (जालोरगढ़)

भाखरखड—स० पु० [देशज] अरावली पर्वत के पास पाया जाने वाला एक प्रकार का घास जिसके रेशे की पतली रस्सिया बनती हैं तथा जो घाट धुनने के काम आती है।

भाखरगूदी—स० स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (जालोरगढ़)

भाखरानरेस—सं० पु० [दे० भाखर+स० नरेस] सिंह, व्याघ्र।

(डि को)

भाखरि—१ देखो 'भाखर' (अल्पा रु भे) (१)

२ देखो 'भक्खरी' (रु भे)

भाखरियो—देखो 'भाखर' (अल्पा, रु भे.)

उ०—भाखरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास, तरवरिया प्रफुलित किया, नीर निखरिया खास।—अज्ञात

भाखरी—स० पु०—१ देखो 'मखरी' (रू. भे)

२ देखो 'भाखर' (अल्पा, रू. भे)

भाखरोत—स० पु०—१ गहलोत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

२ राठोड वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

३ गोड वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भाखळ—देखो 'बाखळ' (रू. भे)

भाखल—देखो 'भाकली' (मह, रू. भे)

भाखलियो—देखो 'भाकली' (अल्पा, रू. भे)

उ०—खत्था खसलिया भाखलिया खार्च, वेम्हड दामोदर चामोदर बाघै। मुखिया मनमोहण दोहण घर मेढी, गोढै ढेरो व्है खूणी मे गेढी।—ऊ का

भाखलौ—देखो 'भाकली' (रू. भे)

भाखवणी, भाखववी—देखो 'भाखणी, भाखवी' (रू. भे)

उ०—कायथ त्याग विचारे काया, केसरिसिंघ राम का जाया। इण विघ अरज दई लिख आगै, भाखवहू तिए थी भ्रम भागै।

—रा रू

भाखवणहार, हारो (हारी), भाखवणियो—वि०।

भाखविघोडी, भाखवियोडी भाखव्योडी—भू० का० कृ०।

भाखवीजणी भाखवीजवी—कर्म वा०।

भाखवियोडी—देखो 'भाखियोडी' (रू. भे)

(स्त्री० भाखवियोडी)

भाखसी—१ कैदियों को सजा देने हेतु भूमितल में बनाई हुई कोठरी। (प्राचीन)

२ कारागार, जेल।

उ०—१ कामण खोडी कील सुत, पीरायत परवार। जन 'तुरछी' ग्रह भाखसी, मोह के जडै किमाड।—तुरछीदास

उ०—२ नाई होय करै अग मरदन, चाकर होय निवारै चीत। विरद निहार भाखसी वैठै, मूरत छिव पलटै मावीत।—मगतमाळ  
रू०—भे०—भाकसी।

भाखा—देखो 'भाख' (रू. भे) (शेखावाटी)

भाखा—देखो 'भासा' (रू. भे) (अ. मा)

उ०—वरणास्रम ध्रम मरजाद वेद, भाखा खट नवरस अरथ भेद। आखरा समद थागण अथाग, रूगर्गा चत्र छतीस राग।

—वि स

भाखाखीणी—वि०—अधभूखा।

उ०—लाडी लाखीणी घारा घघाती, पीवर ऊवारी पारा पय पाती। भाखाखीणा भड एवड ले आता, घाया घीणा रा गोघन रा घाता।—ऊ का

भाखारी—देखो 'भखारी' (रू. भे)

भाखावटी—देखो 'मखावटी' (रू. भे)

भाखियोडी—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ, बोला हुआ। २ उच्चारण किया हुआ ३ वर्णन किया हुआ ४ प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ (स्त्री० भाखियोडी)

भाखी—स० स्त्री० [स० भाषणम्] वाणी, बोली।

भाखोटो—देखो 'मखावटी' (रू. भे)

भाख्या—देखो 'भासा' (रू. भे)

उ०—किम आया किसउ ताइ कारिज, कहउ नहीं मेलिहया किए। मनुख्य तणी भाख्या बोलै मुख, जीव जिके वन रहइ जिण।

—महादेव पारवती री वेलि

भाग—स० पु० [स० भाग] १ किसी समूची वस्तु का प्रत्येक हिस्सा, खंड, टुकड़ा।

उ०—रच्यो फेर प्रासाद बाहादरा री, घनी भाग भू-भाग माठी घरा री। हुवो न इसी थान न आन हूणों, दिपै इदरा मदिरा हूत दूणों।—मे म

२ किसी समग्र वस्तु का कोई अंश। (पोशंन)

ज्यू—टाग का निचला भाग, मकान का अगला भाग इत्यादि।

३ गणित की एक क्रिया जिससे किसी वस्तु को बराबर कई खण्डों में बांटा जा सकता है।

४ देखो 'भाग्य' (रू. भे)

उ०—१ मिलै कटै मनवार किनारो भेलौ काठो। ओ तो महा अभाग, भाग मे लो मत भाठो।—ऊ का

उ०—२ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ पावै देह। भाग हुवै तो भागवत, साभळजै स्रवणेह।—ह र

उ०—३ सेठ ऊपरला मन सू जवाव दियो—घणी सखरी बात। घर मे सांतरी लोतरवाळी वीनणिया भाग सू मिलै।—फुलवाडी मुहा०—भाग फूटणी=अमफलता मिलना, हानि होना। २ भाग खुलणी, भाग जागणी=सफलता मिलना, लाभ होना।

५ देखो 'भाख' (१)।

उ०—दिनूगा भाग फाटया पै'ली पै ली जगळ मे लकडिया वाढण सारू जावती, मथारै दिन चढया सैर मे मारो वेचने पाछो वा इज पगा वळती।—फुलवाडी

भागणी—वि० (स्त्री० भागणी) १ भागने वाला, पलायनवादी।

उ०—राज, रखै तो च्यार रख, मत राखी चाळीस। अँ चाळीसू भागणा, अँ च्यारू चाळीम।—अज्ञात

२ कायर, डरपोक।

रू० भे०—भाजणी।

भागणौ, भागवौ—क्रि० अ०—१ दौडना, भागना।

उ०—कळेजे म्हारे वासुरी री धुन लागी। हू अपने ग्रह काज करत रही, सवण सुणत उठ भागी।—मीरा



२ युद्ध क्षेत्र से कायरता दिखाकर भाग जाना, पीछे हट जाना ।

उ०—१ सुग्री खबर जबगापत सारी, बल धेरे जाळोर विहारी ।

लडवा चाव कमधजा लागी, भूप मवाळ्य चौडे भागी ।—रा रु

उ०—२ घिन वे रावत घोरपै, भागा रावतियाह । घारा अणिया

मे घसै, चख मुख चोळ कियाह ।—वा दा

उ०—३ मुह न दियै पर मारियै, भागा न करै घाव । साढूळी

सात्रा गुणा, वेह कियो वनराव ।—वा दा

४ चुभना, घसना ।

उ०—श्रेकर वो घोडा री असवारी करण सारु उणरै लारै

दीडिथी तो उणरै डावा पग में काटो भाग्यो ।—फुलवाडी

५ मिटना, नाश होना ।

उ०—१ दिन ऊर्ग नित देखणी, दाता री दीदार । भागै भूख

बळेस भय, 'वक' न लागै वार ।—वा दा

उ०—२ जो महि अमह मेछ कुळ जागै, भवि भवि जिण कुळ स

भय भागै । ततपर घग्म मरम प्रज ताण, सुरा मिहायक असुर

सधारण ।—रा रु

उ०—३ कायथ त्याग विचारे काया, केसरिसिध राम का जाया ।

इण विध अरज दई लिख आगै, भाखव हू तिए थी भ्रम भागै ।

—रा रु

मुहा०—भूख भागणी=सम्पन्न होना ।

६ चल-विचल होना ।

उ०—आडवळे आघोफरइ, एवड माहे असन्न । तिए अजाण ढोलइ

तणइ, मूरस भागइ मन्न ।—ढो मा

७ विभक्त करना, हिस्से करना ।

८ व्यतीत होना, खर्च होना ।

उ०—चागी थाळ जनम ची वेळा, भागी दिन शमगळ भेळा ।

वाजण ससुर वचावा वाजै, नरपत मगण जणा निवाजै ।—रा रु

९ नष्ट होना, विध्वंस होना ।

भागणहार, हारी (हारी), भागणियो—वि० ।

भागिओडो, भागियोडो, भाग्योडो—भू० वा० कृ० ।

भागीजणी, भागीजघी—भाव वा० ।

भागणी नगवी, भागणी, भागवी, नजणी, नजवी, भाजणी, भाजवी,

नाजजणी, नाजजवी, चगणी, चगवी, चागणी चागवी—रु० भे० ।

भागदोष्ट-स० स्त्री० [भाग+दोष्ट] १ प्रयत्न, कोशिश ।

२ जल्दवाजी ।

रु० भे०—भागादोष्ट, भाजदोष्ट, भाजादोष्ट ।

भागघाम-स० पु०—ललाट, भाल । (अ मा)

भागघारी-वि०—१ हिम्मेदार, भागीदार ।

२ देखो 'भागवारी' (रु भे)

भागधेय-स० पु०—धर्म । (ह ना मा)

भागस्थ-स० पु० [स० भाग + फन्य] १ गणित में भाज्य को भाजक

न भाग देने पर प्राप्त होने वाली संख्या ।

२ प्रारब्ध का फल ।

भागबली—देखो 'भाग्यबली' (रु भे)

उ०—१ राणी सागी रायमल री बडो ठाकुर, भागबली हुवो ।—नैणसी

उ०—२ भागबली श्री बाघ है, मगळा गुण को खान । वतन आपरो लेय कर, पायो बहु सम्मान ।—ठाकुर जयतमी री वारता

भागभवरी-स० स्त्री०—घोड़े के ललाट की भौरी जो शुभ मानी जाती है ।

उ०—लिलाह रै विचाळै भागभवरी अर गोडा रै मायती बाजू खूटारोप ।—फुलवाडी

भागरा-स० पु०—श्रीराग का पुत्र माना जाने वाला एक सकर राग ।

भागरीकोट-वि० [स० भाग्य+कोट] भाग्यशाली ।

उ०—दे अणों मान पात्रा वडा दान मेर प्रमाण मोटो अनमान ।

राजवी राज राजेमरा रूप भागरीकोट 'भाराहरी' भूप ।—ल पि

भागल, भागल-वि०—युद्ध क्षेत्र से भागने वाला, डरपोक, कायर ।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नै कहै छै—हे कथ ।

आप भला भाग नै जीवता घर आया, अवे म्हारे वेम धारण करावो,

अवे म्हर्न आ चूडिया सू लाज आवै छै, सो हू तो हमें चूडिया पेलै

जनम भेंट सू ।—वी स टी

उ०—२ आसू नाखै आख सू, कर हूता किरमाळ । भागल न्ह

नाखै भिडज, असहा सिर आताळ ।—वा दा

२ व्रत को तोड़ने वाला ।

उ०—सागी सतहीणा है जतहीणा, मत हीणां भागदा है । पागल

सिस पाया दागल दाया, भागल सिर भागदा है ।—ऊ का

४ अगला, परिव ।

भागलखेल—देखो 'भागलखेल' (रु भे)

उ०—सिलंबघ घाट उभेलत सेल, खेलै नट जाणिक भागलखेल ।

घमघम चोट करै घमचाळ, वगाळ उलाळ रगन ववाळ ।—सू प्र

भागवत-वि० [स० भाग्यवत्] (स्त्री० भागवती) भाग्यशाली, खुश-

किम्मत वाला ।

उ०—१ ममरथ सगलड कामइ रे, तास भ्रात दुगरसी नांमइ रे ।

भागवत सगलइ कामइ रे, मन मोटइ लखमी कात ।—प च चौ

उ०—२ अह नाम सोय प्रभा घाम एता, जिकै तात विस्वैकमा

कीध जेता । हिमानी मखा माहरै एक हूती, अठाहूत मो उद्धरी

भागवती ।—सू प्र

२ देखो 'भागवत' (रु भे) (ह ना मा)

उ०—उठै ईमफा आसफा नाम खाखै, दुव काळिका चडिका अहे

दाखै । कतेवा कलम्मा उचारै कुरांणा, पढै भारथा भागवता

पुराणा ।—सू प्र

भागवत-स० पु० [स० भागवत] १ कृष्ण के प्रेम और भक्ति-रस की



कथाओं का एक पुराण जिसकी गणना अष्टादश पुराण में की जाती है।

उ०—१ तद पूतळी कही—लौमद्भागवत पुराण माही पचम स्कंध माही स्त्री महादेव रा पुत्र स्वामी कार्तिक भुक्तेस्वरी देवी रौ आराधन कियो।—सिंघासण वत्तीसी

उ०—२ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ धारै देह। भाग हूँ तौ भागवत साभळजै खवरोह।—ह र

३ सम्पूर्ण कथा या वृत्तान्त।

उ०—मगळी री सगळी भागवत वाच्या काई मतळव ? वा बीध मे ई ठमगी।—फुलवाडी

स० वि० [स० भागवत] ३ विष्णु भगवान सवधी, विष्णु सवधी।

४ तेरह की सरया। (डि को)

रू० भे०—भागवत, भागोत, भागीत।

भागवतगीता—देखो 'भागवतगीता' (रू भे)

भागवती—स० स्त्री० [स० भागवती] गोल दानो की एक प्रकार की कठी जिसे प्राय वंणव लोग गले में पहनते हैं।

भागवान—देखो 'भागवान' (रू भे)

भागवानी—स स्त्री० [स० भागवत + ई] सम्पन्नता, वनाढ्यता।

उ०—कदेही म्है भी था दाई भागवानी में टोरा थर टिल्ला लगावती।—दसदोख

भागसाळी—देखो 'भागसाळी' (रू भे)

भागहार—देखो 'भाग' (७) (रू भे)

भागहीण—देखो भागहीण।

उ०—जिणधी दो ही वार लढाई में पराजय पाई भागै प्रसाद रै अधीन भागहीण जवना रै अचिराज नामिफदीन अपरनाम महमूद तीजी वार साम्हें चलाई रण रौ रस चाखण रौ मनोरथ भी न जाणियो।—व भा

रू० भे०—भागहीण।

भागणी—वि०—भागने वाला, कायर।

उ०—ममपी आधी माडिया, 'घाघल' सुतन सवीर। समझ गयो जद मायरी, भागणी हूय भीर।—पा प्र

भागदौड—देखो 'भागदौड' (रू भे)

उ०—पाचम हुया व्यतीत, टिकै न टीव ठिकारुं। द्रुत-गत भागादौड, हेड रमवा हळमारुं।—दसदेव

भागि—देखो 'भाग्य' (रू भे)

उ०—नीपणा दे लास 'लावी', राखि जाणै नामो। सात्रवां री पाठ कढै, गाढवारी सामो। आपरो श्रीसाप मोटी, भागि मोटी एहो। जादवा री रूप भूपां, भूप जेहे जेहो।—ल पि

भागियोडो—भू० का० कृ०—१ दोडा हुआ, भागा हुआ।

२ युद्ध क्षेत्र से कायरता दिखाकर भागा हुआ, पीछे हटा हुआ

३ खण्ड-खण्ड हुआ, टूटा हुआ ४ चुभा हुआ, गडा हुआ. ५ क्षुधा शान्त हुआ हुआ ६ चल-विचल हुआ हुआ

७ देखो 'भागियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भागियोडो)

भागिली—वि०—भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागो—स० पु० [स० भागिन्] (स्त्री भागण, भागणि, भागणी, भागिण भागिणी) १ भाग्यशाली, खुश-किस्मत।

उ०—१ खस रा टाटा घेरिया, श्रृङ्गा ओरा जाय। भागी मिनख न भेटिया, लूभा विरथा लाय।—लू

उ०—२ कर नवल किसोरी सघर सोरी, मरियादा भेटदा है, त्रिमफळ वैरागी त्रिभवन त्यागी, भागी भुज भेटदा है।—ऊ का

उ०—४ मद भागणि मो सारसी, राज वैलें ली राय। कोडकपुर की कामणी, रखेली वी समाय।—पना

उ०—५ अराहे मराहे धणू अक्वलोके, रुधो नाग लोका तणी राजलोके। इसी भागणी कोण जे कूव जायो, हिंडोरी घलायो घरे हुल्लरायो।—नागदमण

२ हिस्सेदार, भागीदार।

३ अधिकारी, हुकदार।

उ०—वाप न्याव करै तो कवूल। वाप रौ कैणो लोपै वो डड री भागी।—फुलवाडी

भागीरथ—देखो 'भागीरथ' (रू भे)

उ०—वनचर गण लीधा वहे, भागीरथ रै राह। स्त्री नीता भरतार सम, भागीरथी प्रवाह।—वा दा

भागीरथी—स० स्त्री० [स०] गंगा नदी।

उ०—रटै भागीरथी सुणो लहरीरवण, लाल रग रुचिर चो नीर लागो। कळह तटि गवड है गै भडा कचरिया, मिडै पूरव तणो साह भागो।—राजा अनिरुद्धमिह गोड रौ गीत

मुहा०—भागीरथी गंगा होणो—कठिन काय, दुष्कर

भागू—वि० भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागोडो—देखो 'भागियोडो' (रू भे)

उ०—पग मे काटो भागोडो है, दण सू उठीजै तो कोनी।

—फुलवाडी

भागोटो—देखो 'भावोटो' (रू भे)

भागोत—देखो 'भागवत' (रू भे)

भागी—वि० [स० भग्न] १ टूटा हुआ, भग्न।

उ०—ठाकुरमिह भागै-मन उदास यक्यो नियाम गेरतो जावै छै।

—डाढ़ाळा सूर री बात

मुहा०—भागो मन—निराश, व्यथित।

भागोत—देखो 'भागवत' (रू भे)।

उ०—कहा गम कहा लवण नाम रहिया रामायण। कहा क्रमण

वळदेव प्रगट भागीत पुरायण ।

—महाराणा राजसिंघ जगतनिघोत री गीत

भागिदि-फि० वि०—तरकाल ।

उ०—भागिदि भुइ लुटै खिए छुटै बलि अम्भटै । प्रगट भट ऊठनै जिम पतगा । तिहा करै घाव देइ ओट वड वेग सू, मरद न मुई ज्जुई जिम मतगा ।—वि कु

भाग्य-स० पु० [स० भाग्य] १ प्रारब्ध, किस्मत ।

२ मोभाग्य ।

३ हर्ष ।

४ समृद्ध ।

रू० भे०—भाग, भागि ।

भाग्यचक्र-स० पु० [स० भाग्य+चक्र] भाग्य, तकदीर ।

२ अट्ट ।

रू० भे०—भागचक्र ।

भाग्यवळ-स० पु० [स० भाग्य+वळ] १ भाग्य, तकदीर ।

२ अट्ट ।

रू० भे०—भागवळ ।

भाग्यवळी-वि० [स० भाग्यवळ+ई] भाग्यशाली ।

रू० भे०—भागवळी ।

भाग्यभाव-स० पु०—फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली में जन्म-लन से नवा स्थान जिसे मनुष्य के भाग्य के शुभाशुभ के बारे में विचार किया जाता है ।

भाग्यवान-वि० [स० भाग्यवत्] १ भाग्यवान् खुशकिस्मत ।

२ समृद्धवान, हराभरा ।

३ अमीर, धनाढ्य ।

रू० भे०—भागवान ।

भाग्यवाली-वि० [स० भाग्यशाली] १ (स्त्री० भागसाळण) भाग्यवान ।

२ सपन्न, धनाढ्य ।

३ खुशकिस्मत ।

भाग्यहीण—अभाग, हतभाग्य ।

रू० भे०—भागहीण ।

भाउगनेर-स० पु०—१ भटनेर शहर का नामान्तर जिसे आजकल हनुमानगढ़ कहते हैं । यह घग्घर (प्राचीन मरम्बती) नदी के किनारे पर स्थित है ।

उ०—दना नाथ चडियो दुमल, रज गैण ढकाणी । देखण भाउगनेर दिग, पथ कीध पयाणी ।—वी मा

२ गाननगर जिले के हनुमानगढ़ शहर में स्थित एक प्राचीन विला, जिसका पुराना नाम भटनेर है ।

२ पुरु जिले के अन्तर्गत तारानगर तहसील में एक प्राचीन नगर भाटग जहा मोनगरे चौहानों का राज्य था ।

रू० भे०—भटनेर, भरथनेर ।

भाग्याणी-वि०—भाग्यशाली ।

उ०—अतरै अगी घाय उभी रही ताहरा यक्ष नाहरी नू कहै, 'सावास, तैं भली सोस कीयो ।' सु यक्ष हमें नाहरी नू कहै, मागै सु देउ । तू साची हुई ।' ताहरा भाग्याणी कहै, 'यक्ष, तू पाप जाणै अथवा घरम जाणै । मैं तो साच कीयो ।

—नाहरी हरणी घरमेकै वावत सावतसी री वात

भाडग्या-स० स्त्री—सोलकी वश की एक शाखा ।

भाड-स० पु० [स० भाट्ट] १ अन्न के दाने भूनने की मडभूजों की भट्टी या बड़ा चूल्हा ।

उ०—सू गा पाहड़ री वाता कबला भाड री सका, अमुडा फाड री कना भाड री भभक । हदवा पाड री घाड घाड री 'वळूत' हाता, ताड आनाड री बजै राड री तुपक ।

—महाराज वळूतसिंघ जी री गीत

२ लाक्षणिक अर्थ में वह स्थान जहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है ।

मुहा०—भाडभोकणी=निठला बैठ रहना । भाड फोडणी=महान् कार्य करना । भाड में जाणी=बर्बाद होना ।

देखो 'भट्टी' ।

भाडेती-स० पु० [स० भाट+वृत्ति] १ किराया देने वाला व्यक्ति, किरायेदार ।

२ भाडे की वृत्ति करने वाला, किराया लेने वाला ।

भाडो-स० पु० [स० भाटक] किसी दूसरे व्यक्ति की सेवाओं, वस्तु आदि के उपयोग के बदले में दिया जाने वाला धन ।

उ०—१ जग पड वचन कहै जोधपुरी, पता वचन नह खता पर ।

दहवारी काकल हुवै तण दिन, भाडो अस ची लीध भर ।—वा दा

उ०—२ म्हारी कै'णी मानी, गगाजी पाळा मत जावी, नामी

वळदा री कोई गाडी भाडै करली ।—फुलवाडी

भाच-स० स्त्री०—एक प्रकार की लाग (कर) जो जागीरदार द्वारा गाव वालों से वसूल किया जाता था ।

रू० भे०—वाछ ।

भाचक्र-स० पु०—काति-वृत्त ।

भाचर, भाचरियो, भाचरी-स० पु०—१ सूअर का छोटा बच्चा ।

उ०—वै च्यारू भाचरिया म्हनै कदास डणी सूवर रा दीसै ।

—फुलवाडी

रू० भे०—भूचर । ~~हृदे के कांजी~~

२ एरण, जिम पर लोहार-लोह-गमं करके पीटता है ।

उ०—तणै भ्रम 'ऊद' असवार चेटक तणै, घणै मगरूर बहरार घटकी । आचरै जोर मिरजा तणै आछटी, भाचरै वाचरै बीज भटकी ।—गोरधनजी चारण

भाछ—देखो 'भाच' (रू भे)

भाजक-स० पु० [स०] १ गणित मे वह सख्या जिमका किसी सख्या मे भाग दिया जाता है ।

वि०—२ विभाजन करने वाला, वाटने वाला ।

भाजकास-स० पु० [स० भाजक+अश] गणित में किसी राशि को भाग देने पर शेष बचने वाली सख्या ।

भाजड-स० पु०—१ भागने की क्रिया या भाव ।

उ०—भाजड मे भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नू जाइ हरियो ।—व भा

भाजण-स० पु०—वर्तन, पात्र ।

उ०—अमरित को भाजण निकट, भरघो घरघो नही पीन । यू देखा अमर न भया, परस्या विना प्रवीण ।—प्रवीण

२ भागने की क्रिया या भाव ।

वि०—भागने वाला, कायर, डरपोक ।

भाजणो-वि०—देखा 'भागणो' (रू भे)

भाजणो, भाजबो—१ देखो 'भागणो, भागबो' (रू भे)

उ०—१ बगतर सहित झूछलइ वरगा, धीव पडइ नेजाळ घड । भाजइ अंगिट श्री चा भिहता, घाय रमाडइ ति विघ घड ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सूर भरोमै आपरै, आप भरोसै सीह । भिड दहु ऐ भाजै नही, नही मरण री बीह ।—वां दा

उ०—३ भयचक हुबो, अनेक महाभड, दिख री भाज गई भकभूर । अयो (आयो) दिख रइ घट ऊपर, केवा मागण वडड करूर ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ जवक सबद नचीत कर, डर कर तू मत भाज । साडूळो खोजै सुणै, जळहर हदो गाज ।—बा दा

उ०—५ साजी बाजी सुरग सिधायो, मिळे दान खग दुवां मद । भेट हुबो नह जको भाजसी, कूरम घोकी मूळ कद ।—बा दा

उ०—६ भाज गई चिता भडा, घडा कठट्टे जग । नामा रक्खण देख खळ, साम्हा किया तुरग ।—रा रू

उ०—७ खुवा न भाजै पाणिया, अखा न भाजै अन्न । मुक्त नही हरि नाव विन, मानव साचै मन्न ।—ह र

भाजणहार, हारो (हारी), भाजणियो—वि० ।

भाजाडणो, भाजाडबो, भाजाणो, भाजाबो, भाजावणो, भाजावबो —प्रे० रू० ।

भाजिओडो, भाजियोडो, भाज्योडो—भू० का० कृ० ।

भाजीजणो, भाजीजबो—भाव वा० ।

भाजा-दौडी—देखो 'भागदौड' (रू भे.)

उ०—खेड री लूकही बाघ न डरावै, पण ठठारा री बिल्ली खडकं सू कद डरै, अरजन रै वेलीडा घणी भाजा दौडी करी, पण मामलै री जीत तो भुगानै री साचोट मे ही रैयो ।—दसदोख

भा'जी—देखो 'भाईजी' (रू भे)

भाजी-स० स्त्री०—१ तरकारी, सवजी ।

उ०—आदर करै अपार, तो भोजन भाजी भली । आणै मन अहकार, कडवा घेवर 'किसनिया ।—अज्ञात  
२ मास ।

भाज्जणो—देखो 'भागणो' (रू भे)

भाज्जणो, भाज्जबो—देखो 'भागणो, भागबो' (रू भे)

भाज्जणहार, हारो (हारी), भाज्जणियो—वि० ।

भाज्जिओडो, भाज्जियोडो, भाज्ज्योडो—भू० का० कृ० ।

भाज्जीजणो, भाज्जीजबो—भाव वा० ।

भाज्जियोडो—देखो 'भागियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भाज्जियोडो)

भाज्य-स० पु० [स०] वह सख्या जिसमें किसी सख्या का भाग दिया जाय ।

भाट-स० पु० [स० मट्ट] १ वश-वृत्त लिखने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति । (मा म)

(स्त्री० भाटण, भाटणी)

रू० भे०—भट ।

भाटक-स० पु० [स०] १ किराया, भाडा ।

[अनु०] २ शस्त्र विशेष से प्रहार करते समय उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—खडग तणां खाटक, खेडा तणां भाटक । तरूयारि तणां भाटक । धुनुस तणां घोकार, अणी तणां अगार । बाण तणां ब्रस्टि । इसी मूरा राउत तणां सौरयव्रत्ति ।—का दे प्र

भाटकणो, भाटकबो—क्रि० स०—क्रोध मे आग-बवूला होना ।

भाटकणहार, हारो (हारी), भाटकणियो—वि० ।

भाटकिओडो, भाटकियोडो, भाटक्योडो—भू० का० कृ० ।

भाटकीजणो, भाटकीजबो—भाव वा० ।

भाटकळ—देखो 'भटकळ' (रू भे)

उ०—दीपै भुजाई देव मै कळा, राणी राणि रावताळा । भडां हुवै भाटकळा आठो पुहर ।—गु रू व

भाटकियोडो—भू० का० कृ०—क्रोध मे आग बवूला हुवा हुआ (स्त्री० भाटकियोडो)

भाटखळ-स० पु०—मीठ, समूह, जमघट ।

भाटभाखा, भाटभायखा-स० स्त्री० [स० मट्ट+भापा] पिंगल भापा ।

भाटमोट-क्रि० वि० [अनु०] बहुत, लगातार, तडामडी ।

उ०—महतावा छीकादार अरु चोरमार । जिका पर आदमी तईनात पयादा अर असवार । गोकणियारी देणी च्यारु तरफा सू भाटमोट जिकारै बीच-बीच फिरणी हुकारी पण चोट ।

—प्रतापसिंह म्हेकमसिंह री बात

२ चुगलखोर ।

माटिय—देखो 'भाटी' (रू भे)

उ०—गमोभ्रम 'दूद' 'विहारिय' सूर, 'मघावत' 'बगवतसी' मगरूर।  
घटा सग लोह करे घममाण, पटायत माटिय एह प्रमाण।

—सू प्र

माटिया—म० पु०—गुजरात की एक जाति विशेष जो अपने आपको  
क्षत्रियों के अन्तर्गत मानती है।

माटियांणी—देखो 'भटियाणी' (रू भे)

उ०—केमोदास भाणावत मोटा राजा रो दोहितो। माटियाणी  
गजना नांनी हूतो। श्री केमोदासजी घणा वरम नांनी कर्न रह्या।

—बा दा ख्या.

माटियो—देखो 'भाटी' (अल्पा, रू भे)

भाटी—स० पु०—१ क्षत्रियों के अन्तर्गत की एक शाखा या इस शाखा  
का व्यक्ति। (मा म)

२ देखो 'भट्टी' (रू भे)

उ०—इक भाटी आवखी, पिये दुव्वार सरावा। मैसा आघा भखै,  
बोट नुकलमै कवावा।—सू प्र

रू० भे०—माटिय भाटीय, भाठी।

भाटीपी—स० पु०—जयसलमेर राज्य नाम।

उ०—आसकग्न 'पिराग' तण, पडियो खाग वजाड। सुतन मजीपे  
भोज मम, जल भाटीपे चाड।—रा र

भाटीय—वि०—१ भाटी वग का।

उ०—भाटीय 'भाण' हरनाथ भाख, 'अमरेस' खान रिएछोड  
आख। मूरजमल 'जीवण' येतसीह, अतसूर लेखो 'अखेई' अवीह।

—रा रू

२ देखो 'भाटी' (रू भे)

भाटी—म० पु०—१ पत्थर।

उ०—मिले कठे मनवार किनारी भेलो काठो। ओ तो महा-  
अभाग, भाग मे ली मत भाटी।—ऊ का

मुहा०—भाटा तिरणा=प्रभावशाली होना। भाटा नीचे हाथ  
दबणी=संकट मे फसना। भाटा पडणा=नष्ट होना, ईश्वर का  
कोप होना, दुःखद समाचार सुनकर महम जाना, विघ्न पडना।  
भाटा पिपलणा=असमर्थ कार्यं संभव होना। भाटा भागणा=  
अन्याय काय करना, जगह जगह भटकना। भाटा भिडावणा=  
नडाई करवाना। भाटा सू माथो फोडणी=व्यर्थ मिर  
खपाना (मि०भीत सू भचेडा लेना)। भाटी पटकणी=विघ्न डालना।  
२ समुद्र के जल की वह अवस्था जब वह ज्वार के पदचात वेग  
के साथ नीचे उतर कर पीछे हटने लगता है।

रू० भे०—भाटी।

अल्पा०—माटियो, भाटियो।

माठमोड—वि० वि० [अनु०] दाम्य प्रहार की ध्वनि। (भगवान रतनू)

माठियो—देखो 'भाटी' (१) (अल्पा, रू भे)

उ०—गरीबा गोता मेट, चुही वढ चम्मा चाळै। हाथी रो सो  
दात, माठियो भलो दिखालै।—दसदेव

भाठी—१ देखो 'भाटी' (रू भे)

२ देखो 'भट्टी' (रू भे)

उ०—भाठी मद वेचड खमार, चउद सहस चालइ चमार। द्राम  
रोकडा आपइ हाथि, उरति पूगडा लीधा साथि।—कां दे प्र

भाठीत—स० पु०—थवन, मुमलमान।

उ०—लोढता धूमता असुर लोहाखिया, भिडण भाठीत तोपियो  
भमरै। हुला प्याला मुहे ठेलियो हीदवै, करण रै नामियो, पियो  
कमरै।—राव जेतसी लूणकरण रो गीत

भाठी—देखो 'भाटी' (रू भे)

उ०—सूम नाम लेणी सुतो, मृग पकावण वेर। अन दिन उण रो  
आथ जू, डाटी भाठी देर।—बा दा

भाड—वि०—१ गरीब, बेचारा।

२ मूर्ख, नासमझ।

स० पु०—१ स्वर्णकार द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मोटे तारो  
को खींचने का एक औजार।

२ बड़ा मेढक।

भाडणी, भाडवी—क्रि० स०—१ छल करना, ठगना।

उ०—देवी वामण रूप बळराव भाडे, देवी रूप बळराव मेरु  
उपाडे। देवी मेरगिर रूप सायर वरोळे, देवी सायर रूप गिरमेर  
वोळे।—देवियाण

२ देखो 'वाढणी, वाढवी' (रू भे)

भाडणहार, हारी (हारी), भाडणियो—वि०।

भाडियोडो, भाडियोडो, भाडयोडो—भू० का० कु०।

भाडीजणो, भाडीजवो—कर्म वा०।

भाडळीआठम—स० स्त्री०—आपाठ कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

रू० भे०—भडळी अष्टम।

भाडळीनम—स० स्त्री०—आपाठ शुक्लपक्ष की नवमी तिथि।

रू० भे०—भडलीनम।

भाडिज—देखो 'माडेज' (रू भे)

उ०—ते किस्या घोडा—तेजी तुरग गह्वरा कारातोरा खुरमांण  
भयणा हयाणा रोहवाल रुडमाल तोरका मदकोरा पीलूया भाडिजा  
उराहा सेराहा।—व स

भाडियोडो—भू० का० कु०—१ छल किया हुआ, ठगा हुआ

२ देखो 'वाडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भाडियोडो)

माडेज—स० पु०—एक विशेष प्रकार का घोडा।

उ०—बणै लूमभूमा हुवा मज्ज दाजी, तुयारी खुरसाण माडेज

ताजी । किता खेत कबोज बाल्हीक कच्छी, उई फाळ लै लै फिरै  
ढाळ अच्छी ।—व भा

रू० भे०—भाडिज, भादिज, भारिजा ।

भाणी—वि० (स्त्री० भाणी) रुचिकर, सुहावना ।

उ०—मोठी रे लागइ वाणी जिन तरणी, जागइ जेह थी रे ग्यान ।

ए वाणी मन भाणी माहरइ, मानु सुधा रै समान ।—वि कु

भाणी, भावी—क्रि० स० [स० भा] १ रुचिकर लगना, अच्छा लगना,  
पमन्द आना ।

उ०—कमुद-जन विकस सकुछै कमल-कंस कुम्भ, भावका चकोरां  
नयण भायी । सबळ तम तोम मयुरा गयद तराँ सिर, अकळ  
गोकळ तरणी चद आयी ।—बा दा

२ शोभित होना, फवना, सुहावना लगना ।

३ चाहना, इच्छा करना ।

उ०—१ वह दगै सू खान बहादर, आयी गढ जोवाणै ऊपर ।  
खोलै पजो कोल दिवायो, भव नह मिटै तुम्हारी भायो ।—रा रू

उ०—२ आपनी ई भायी 'ऊमर' काम तै कियो । देव को सुहायो  
जहाँ पाव ना दियो ।—ऊ का

४ स्वादिष्ट लगना ।

माणहार, हारी (हारी) माणियो—वि० ।

भायोडो—भू० का० कृ० ।

भाईजणो, भाईजभो—कर्म वा० ।

भात—स० पु०—१ पकाए हुए चावल ।

२ व्यजन, भोजन ।

उ०—चडी भोग चयअसी, भात चयअसी पुहप भर । पुडी अस्ट  
परकार, अतै आचार अपपर ।—सू प्र

२ विवाह में कन्या पक्ष की ओर से दिया जाने वाला बड़ा भोज ।

उ०—१ बडा भात रो जीमण हौ । सेठ खुद घर घर जाय आखा  
गाव नै निवतियो ।—फुलवाडी

उ०—२ मारी जिनस कुमेर समोवड, खोल भडारा खात मू ।  
आछा भोग अनेक अचारा, भात दिया बहु भात सू ।—रा रू

३ विवाह के समय वर-वधू के ननिहाल वालो की ओर मे दिए  
जाने वाले वस्त्राभूषण आदि ।

उ०—जरिया हवा पेचा मेरे मुमरै ताई ल्याई रे । लपा भपा रो  
माडी मेरी सासू ताई ल्याई रे । बीरा, चूनडी उढाई घण देवा रे ।

भात लेकर आई जामण जाया रे ।—लो गी

४ विवाह मे बडे भोज के समय गाया जाने वाला लोक-गीत ।

रू० भे०—भत, भाय ।

भातडियो—स० पु०—गावो मे फिर-फिर कर घघा करने वाला सुनार ।

—मा म

२ देखो 'भात' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'भायो' (अल्पा, रू भे)

४ देखो 'भाती' (अल्पा, रू भे)

भातडो—स० पु०—१ खाने का सामान आदि भरने का चमडे का थैला ।

उ०—वो आपरे आटा रो भातडो ठाकर रो वेटी ने सोगरा पोवण  
सारु माय दियो ।—सू प्र

२ देखो 'भायो' (अल्पा, रू भे)

उ०—भार सोर भातडाँ, सूत सिलहा सामाना । मरव भार मिर-  
ताज, भार पुरकार खजाना ।—सू प्र

भातवी—स० पु० [रा० भात+रा० प्र० वी] भानजा या भानजी के  
विवाह मे वहन के लिए वस्त्राभूषणादि लाने वाले भ्रातृगण ।

उ०—उड वायसडा म्हारा पीयर जा, नूत पियर रा भातवी जे ।  
भल नूती रै म्हारी जळवळ जामी वाप, रातादेखी म्हारी माय नै  
जे ।—लो गी

रू० भे०—भतई, भत्ती, भाती ।

भात्ति—देखो 'भाति' (रू भे)

उ०—हई ! हई ! देव किसू करिउं, रत्न उदालिउ हत्थि । कालि  
किमू कारण हतू, आन अनेरी भात्ति ।—मा का प्र

भाती—स० पु०—१ खेत मे किसान या मजदूर के लिए भोजन लेकर  
जाने वाला व्यक्ति ।

उ०—हाल घरें हल डूगरा, वळद गऊ रै पेट । हाळी हीडै पालणै,  
भाती पूचो खेत ।—अज्ञात

२ देखो 'भातवी' (रू भे)

उ०—म्हारै रिमक फिमक भाती आज्यो, बीरा म्हारै काना नै  
पत्ता लाज्यो, म्हारै कुडळ वँठ घडाज्यो ।—लो गी

भातीजो—देखो 'भनीजो' (रू भे)

उ०—ए द्यै भात रहता, एक दिन सावळसाह अर सांवळसाह रो  
वेटा-भातीजें वैठा वाता करता हता अर राजा विजैमाल रा घोडा  
दोडता हता ।—वीजड वीजोगण री वात

भाती—स० पु० [स० भक्त] १ घर से बाहर जाते समय माथ मे लिया  
जाने वाला पकाया हुआ भोजन ।

उ०—पखवाडी वीत्या चौघरण मायें तीन दिना रो भाती बाघण  
लागी तो चौघरी मुळकनै कह्यो—बावळी, आ काई गैलाई करै ।  
हाल ताई घणी रा लखण सावळ ओळगिया कोनी दीसै ।

—फुलवाडी

२ किसी खेत मे काम करने वाले व्यक्ति के खाने के लिये खेत मे  
भेजा जाने वाला भोजन ।

उ०—विकमी भाता ले भतवारा वाळी चगी चौघरण्या सतवारा  
चाली । जीवन रायजादी मादी सिएगारी, नखसिख सचै मे  
ढळियोडी नारी ।—ऊ का

३ पुट ।

४ देखो 'भायो' (रू भे)

भात्रीज, भात्रीजो—देखो 'भतीजो' (रू भे)

उ०—१ कसरिया पहर मोड मायें कम, हसै वहमिया होडा-होड ।

कीधा भला देहृग कारण, काकै अनै भात्रीज कोड ।

—सुजाणसिध भवानीसिध सेखावत रो गीत

उ०—२ जाहरा गोगादेजी दलो मारियो, ताहरा दला रो भात्रीजो  
हासू पडोहियो चडि अर पूगळ नू दोडियो ।—नैणसी

भाय—देखो 'भात' (रू भे) (अ मा.)

उ०—असवारी तु आज करि, सेन सबळ लेई सायि । गग म  
भरडे आपणा, तेह नू काटे भाय ।—मा का प्र

भायडो—१ देखो 'भायो' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भातो' (अल्पा, रू भे)

भायळ—देखो 'भायो' (मह, रू भे)

उ०—हव वेरन कीजिय वेग हकै, धुणियाळ मिळो भड 'पाल'  
वकै । विजडी जड भायल वाव विनै, कड भीड कठठुत 'पाल' कनै ।

—पा प्र

भायाइत—देखो 'भयाइन' (रू भे)

उ०—लाख विच्यारि वाणिज्ज चालइ, वार लाख उलगाणा ।  
करकटीया हवमी भायाइत, फरसीवर सपराणा ।—का दे प्र

भायाळ—स० पु० [स० भस्त्रा+ग० प्र० आळ] तरकमवारी ।

उ०—एहवु आयस लहइ प्रवान, ऊदलपुरि ऊतारउ खान । सरिसा  
एक महस भायाळ, राजडीउ मेल्हिउ रखवाळ ।—का दे प्र

भायो—स० स्त्री० [स० भस्त्रका] १ लोहार की भट्टी मे आग सुलगाने  
की चमडे की धौकनी ।

२ पवार वश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

(वा दा ह्या)

भायो—स० पु० [स० भस्त्रा] तरकस, तुणीर ।

उ०—१ भाया कटि करगा भलि भालै, हेक लाख वानखर हालै ।  
जगी हवद जडिया जमजाळा, पाच हजार गयद पगराळा ।

—सू प्र

उ०—२ पाळा पार न पामीइ, जिम तारा आकामि । भडि भीडिया  
भाया कवच, सबळ मजाई पामि ।—मा का प्र

रू० भे०—भयारो, भातो, भुताण, भुथाण भूयड, भूथाण,  
भूथारण ।

अल्पा०—भातडियो, भातडी, भायडियो, भायडी ।

मह०—भायळ ।

भादउ, भादरउ—देखो 'भादवी' (रू भे)

उ०—भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिय कल्या बहु लोकोजी ।  
देखी करुणा ऊपजै, चद्रकाता जिम कोको जी ।—वि कु

भादरव—देखो 'भादवी' (मह, रू भे)

उ०—हाथी पूछल्यो होय, (अने) केम करी उठाडिये । जेठवा  
विचारी जोय, भादरवी जाय भाण ना ।—जेठवा

भादरवी—वि० [स० भाद्र+रा० प्र० वी] देखो 'भादवी' (रू भे)

भादरवी—देखो 'भादवी' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ फुरियो भादरवी घुरियो नह फीकी, नीरदरज आगे  
लागे नह नीकी । तिसिया सगारा भूपर नर तिरसै, विसिया  
अगारा ऊपर सू वरसै ।—ऊ का

उ०—२ भादरवै ले घूड, मोछवा गोगा माडा । पेचो पीऊ माज,  
चढावा खीर'र खाडा ।—दसदेव

भादव—देखो 'भादवी' (रू भे) (हि को)

उ०—रीतै अरपथ वीयो वड राजा, 'दूद' विनो तप दन्नकर । भादव  
जनम दूसरै भरसी, सूखा ईमर तणो सर ।

—राव दुरजणसाल हाडा रो गीत

भादवडो—देखो 'भादवी' (अल्पा, रू भे)

उ०—सखी अमीणी साहिबी, गिणै पराई देह । सर वरमै पर  
चक्र सिर, ज्यू भादवडै मेह ।—वा दा

भादवी—वि० [स० भाद्रपदी] भादो मास की ।

उ०—हुवै चम्मरां भाटका जोति हुवै, सदा ऊतरै आरती सांभ  
सूवै । तके भादवी माह ऊपान्त तिथी, पडै माय रै पाय प्रस्थीप  
प्रस्थी ।—मे म

स० स्त्री०—भादो मास की तिथि ।

रू० भे०—भादरवी, भादवी ।

भादवी—स० पु० [स० भाद्रपद] भादो नामक वर्षा काल के एक मास  
का नास ।

उ०—१ रात पडताई भादवा री काठळ रैज्यू चग गूजण लागता  
अर लूहर रै घम्मीडा सू जमीन घूजण लागती ।—रातवासो

उ०—२ लागी सर जही भर भादवी की रैन भळकी बीज को ।  
परिहा घणै हर की आगा जदि हाडो तीज को ।—पना

२ वृहस्पति के उम वर्ष का नाम जब वह पूर्व भाद्र पदा या उत्तरा  
भाद्रपदा मे उदय होता है ।

रू० भे०—भद्र, भद्र, भद्र, भादउ, भादर, भादरउ, भादरव,  
भादरवी, भादव, भादवी, भादु, भादुर, भादुवी, भादू, भादू, भादव,  
भादो, भाद्रव, भाद्रवइ, भाद्रवउ, भाद्रवळ, भाद्रवड, भाद्रवी,  
भाद्रव्व ।

अल्पा०—भादरवी, भादवडी, भादुडी, भादूडी, भाद्रवडउ, भाद्रवडी ।

भादायत—स० पु०—राठीड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का  
व्यक्ति ।

भादिज—देखो 'भाडेज' (रू भे)

उ०—तेजी उरडा गह्वरा तोरणा खुरसाणा भयाणा हयाणा  
रोहवाला रुडवाला तोरका मदकोरा पीलूआ भादिजा ओराहा  
केकांणा ।—व स

भादु—देखो 'भादवी' (रू भे)

उ०—सगी री भादु म भर वरसाळा, खळकै परनाळ नै खाळा ।



विजुरी चमकत विकराला, जादु विनु मोहि जजाला हो लाल ।

—घ व प्र

भादुडो—देखो 'भादवी' (रू भे)

उ०—सावण खेती भवरजी । ये करी जे, हा जी होता । भादुडे करघी जी नीनाण ।—लो गी

भादुर—१ देखो 'वहादुर' (रू भे)

उ०—जंपुर मे रिकाटि साहब, भादुर न्याय छाणी । सीकरि सापरा की, जालसाजि नै पिछाणी ।—शि व

२ देखो 'भादवी' (रू भे)

भादुवी, भादू, भादू—देखा 'भादवी' (रू भे)

उ०—१ समत १६६१ पोस अकबर पातसाह राजा सूरजसिंघ नु सारी जेतारण दीवी । सु राजा सूरजसिंघ समत १६७६ भादुवा सुदी २ काळ कीयी तठा सुधी रही ।—नैणसी

उ०—२ चम-चम चमकै वीजुरी, टप-टप वरसै मेह । भर भादू विलखत तजी, मली निभायो नेह ।—अज्ञात

उ०—३ भादू वरखा भूक रही, घटा चढी नभ जोर । कोयल कूक सुणावती, बोले दादुर मोर ।—अज्ञात

उ०—४ मेह मातो भादू भली, सेहरे चमकै वीज । पिय प्यारी सेजा रमै, आज काजळी तीज ।—कुवरसी साखला री वारता

भादूडो—देखो 'भादवी' (अल्पा, रू भे)

उ०—सीचै सीचै, ओ म्हारी सावणिया री लोर भादूडै री भड भेलंगी ।—लो गी

भादूनदी—स० स्त्री०—केवल वर्षा ऋतु मे उमडने वाली नदी, जो वाद मे सूख जाती है ।

भादवंव—देखो 'भादवी' (मह, रू भे)

उ०—उण गिरवर पै आये की, केहर तडव कीन । घणहर मानु इध्रन, भादवंव जलघर मीन ।—वगसीराम प्रोहित री बात

भादो—देखो 'भादवी' (रू भे)

उ०—अत अमाह दयानंद आयो, छोणी ग्यान घुमड घण छायो । सावण हरिकर सुख सरसायो, भादो अम्रत भड दरसायो ।

—ऊ का

मुहा०—न सावण सूखो न भादवी हरो=यथावत् ।

भाद्र, भाद्रपद—स० पु० [स० भाद्र, भाद्रपद] वर्षा ऋतु मे पडने वाला श्रावण और आश्विन के बीच का एक महीना । (डि को)

भाद्रपदा—स० पु० [स०] एक नक्षत्र-पुंज का नाम ।

भाद्रव—देखो 'भादवी' (रू भे)

उ०—उच दिवस असटमी आद पख भाद्रव आया, महाज्याग मधु-पुरी हुवो उच्छव मनभाया ।—रा रू

भाद्रव, भाद्रवउ, भाद्रवऊ, भाद्रवड, भाद्रवडउ, भाद्रवडो—देखो 'भादवी' (रू भे)

उ०—१ सवत सोल नव्यासीयइ रे मीर मोजा नु राज रे । अकबर-पुर माहि रही रे, भाद्रवड जोडी छइ मास रे ।—स कु

उ०—२ वाजरिया हरियाळिया, विचि विचि बेला फूल । जउ भरि वूठउ भाद्रवउ, मारू देस अमूल ।—ढो मा

उ०—३ छोडि चली सहु राजवी रे, जिम भाद्रवडे छाण रे । थाभा पूतली ने मुखे रे, देवतणी थई वाण रे ।—श्रीपाल

उ०—४ भाद्रवडइ सरोवर भरिया, नीर निरतर होय । रिदया भीतरि हु रडु, नीर निवारि न कोइ ।—मा का प्र

उ०—५ भाद्रवडा ! आविउ भलइ मयण-तणा मुहसाळ । काम जगावइ तेहनइ, जेह-सिरि वूढा वाळ ।—मा का प्र

भाद्रवी—देखो 'भादवी' (रू भे)

भाद्रवी—देखो 'भादवी' (मह, रू भे.)

उ०—वहै हैमरा सोख जाणै विवाणै, जुभाऊ घटा भाद्रवा जेम जाणै ।—सू प्र

भाद्रवोफडाव—स० पु०—बडा कडाह ।

भाद्रव्व—देखो 'भादवी' मह, रू भे )

उ०—१ इण विघ नवाव गय चढ प्रयाण, गज घडा अग्र चाले घुमाण । जिण वार चालिया असुर जास, मिळ घटा जाण भाद्रव्व मास ।—शि सु रू

उ०—२ वदन्न वणै कथ वाके विनाणै, जळै गारडू छेडियो नाग जाणै । किता कथ वारा भरै मद् काळा, वणै जाणि वारिद् भाद्रव्व वाळा ।—रा रू

भाद्रायण—स० पु०—पूर्व देश का एक खड, भद्राल, भद्रक ।

(गजमोख)

भाप भाफ—स० स्त्री० [स० वाष्प] १ किसी तरल पदार्थ, विशेषत पानी, का उष्णता पाकर खीलने से प्राप्त वह वाष्पीय रूप, जिसका आजकल शक्ति के साधनो मे उपयोग होता है ।

क्रि० प्र०—उठणी, निकलणी, वगणी ।

मुहा०—भाप लैणी=सेक करना ।

२ किसी द्रव की वह अवस्था जो उसके अधिव ताप से भयवा किसी रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वायु मे विलीन होने से प्राप्त होती है । (भौतिकशास्त्र)

३ मुह से निकलने वाली हवा ।

भाबर—देखो 'भाभर' (रू भे)

भाबीजी, भाबीसा—देखो 'भाभीजी, भाभीसा' (रू भे)

भाबोसा—देखो 'भाभोसा' (रू भे)

उ०—रायजादो लुळ लुळ पाछी जोवै, जाणु म्हारी जान मे भाबोसा पधारै नै हस्ती सिणगारै, रायजादो लुळ लुळ पाछी जोवै ।

—लो गी

भाभडाभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू भे)



उ०—दादी नै ताव भाभडाभूत । वंद नै लावै तो कुण ? आडोसी-  
पाडोसी कोई पल्लो ई नही छीपै ।—वरसगाठ

भाभज—देखो 'भावज' (रू भे)

उ०—वधजो कडवा नीव ज्यू वीरा, वधज्यो ओ हरियाळी री  
दोव । भाभज जिणज्यो दीकरा, भतीजा ओ परणी घर आव ।

—लो गी

भाभर—स० पु०—वर्षा ऋतु मे होने वाला क्षुप विशेष ।

भाभराभूत—वि०—१ पूर्ण वेग से, वेगपूर्वक, तेज ।

२ अत्यन्त क्रोधित ।

उ०—जग अथगा जूटवै, घजवड वागा धूत । भिडण भाभराभूत  
व्है, रीभै सो रजपूत ।—प्रतापसिध म्होकर्मसिध री वात

३ लापरवाह, बेसुध ।

स० पु०—एक ऐतिहासिक व्यक्ति का नाम ।

वि० वि०—गुजरात राज्य मे मजेवडी नामक ग्राम के एक कुम्हार  
की सुन्दर लडकी की सगाई पट्टण के राजा सिद्धराज जयसिंह के  
साथ निश्चित हुई थी । इसी बीच जूनागढ के राजा खगार के  
भाणजे बीसल ने खगार से इस लडकी की सुन्दरता का वखान  
किया, तो खगार ने इस लडकी का अपहरण कर लाने को  
कहा । लडकी को अपहृत करके जबरदस्ती खगार ने उससे  
शादी करली । तदुपरात सिद्धराज को इसका पता लगने पर राव  
खगार पर, वावरियावाड मे रहने वाले लोगो के मालिक, जिसे  
वावराभूत कहते थे, को साथ लेकर, चढाई कर दी और उसकी  
सहायता से विजय प्राप्त की । इसी वावराभूत को भाभराभूत भी  
कहते हैं ।

रू० भे०—भाभडाभूत, वाभराभूत, भेभराभूत ।

भाभा—स० स्त्री०—१ पवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का  
व्यक्ति । (वा दा ख्या)

२ राजा के उप-पत्नी के पुत्रो से चलने वाली शाखा । (जोधपुर)

३ माता एव पिता के बड़े भाई की स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्बोधन-  
वाचक शब्द । (जोधपुर)

स० पु० (व व) ४ बड़े भाई, पिता या अपने से बड़े सबंधी के  
लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक संबोधनवाचक शब्द ।

५ रईमी, जागीरदारो व राजाओ द्वारा चारण कवियों के लिए  
प्रयुक्त संबोधनवाचक शब्द ।

भाभी, भाभीजी, भाभीसा—स० स्त्री०—१ बड़े भाई की पत्नी ।

उ०—१ राणे रोस कियो था ऊपर, साधा मे मत जा री । कुळ कै  
दाग लाग छै भाभी, निदा हो रहि भारी ।—मीरा

उ०—२ साधा री मग निवारो राई, भाभीजी गोरल पूजी जी  
राज ।—मीरा

उ०—३ ओ भाय घाली जायफळ नै जावतरी, ओ तैल वनडा रै  
अग घडसी ओ । लेखी वा रा भाभीसा कर लेसी, ओ दमडा वा

रा वीराजी भर देसी ।—लो गी

२ जेठ की पत्नी ।

रू० भे०—वाभीजी, वाभीसा, भावीजी, भावीसा, वाभीजी, वाभीसा ।

भाभी—स० पु० (व व भाभा) १ पिता, बड़े भाई के लिए प्रयुक्त  
सम्मानसूचक शब्द ।

उ०—तरै किलाणदामजी फेर अरज कीवी के म्हारे घर मे ती  
लगावण री तेह है नही, नै मामाजी काकाजी दाम देवै नही ।

—नैणसी

२ राजा की उप-पत्नी का पुत्र । (जोधपुर)

३ पिता के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द ।

रू० भे०—माभीजी, वाभी, वाभीजी ।

माभीजी—देखो 'भाभी' (रू भे)

उ०—१ तव वखतसिहजी कहाई—जाळोर तो भाभंजी मोनू  
दीन्ही छै ।—मारवाड रा अमराबा री वारता

उ०—२ आप पाछी आवती मोहनसिगजी कही—भामाजी, हय  
मारी जावै, सो पहीच साळै रै दीवी सो दोय बटका हुवा अर तर-  
वार माही नीसर थार्भ मे लागी सो पत्थर री टुकडी दूर जाय  
पडियो ।—महाराजा स्रीपदमसिध री वात

२ देखो 'भाभीसा' (रू भे)

रू० भे०—वाभीजी ।

माभीसा—स० पु०—पिता एव बड़े भाई के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक  
शब्द । (जोधपुर)

उ०—पोळिया मे वैंठोडा माभीसा वरजिया, मत जावो कवर  
भगडा री लार (ए), भोमिया जी भगडे जूजिया ।—लो गी.

रू० भे०—वाभीसा, भावीसा, भाभीजी, वाभीसा ।

मामडळ—स० पु० [स० भा + मडल] सूर्य, रवि ।

उ०—पूठ मामडळ तेज प्रकास ए । जोयण सहस घज ऊँच  
आकास ए ।—वृ स्त

भाय—स० स्त्री०—१ कृपा, दया ।

उ०—गजमुख गणपतराय, भाभी तुम करी मो भाय । गुण राधे  
वर गाय, पावु बुधि रावळै पसाय ।—गजउद्धार

२ पसद ।

उ०—यह लीला गोपाळ की, किए पै वरणी जाय । जी जी अखर  
दो कहत, अपनी मत के भाय ।—गजउद्धार

वि०—समान, सदृश्य, तुल्य ।

उ०—१ भळाहळ रूप भळाहळ भाय, जुदै खळ आय तिहा उडि  
जाय । छछोहक वाहत भाल छडाळ, दुसारक डाळ पडै रवदाळ ।

—सू प्र

उ०—२ भड भिडे कमध 'अरजन्न' भाय । इस दिसी भीम सीसोद  
आय । प्रति दिवस अकस कदळ अपार, संसार सुणै मेछा सघार ।

—रा रु

उ०—३ झंसी पुरी विरच की, का पै वरणी जाय । मत पर-  
वाण वखाणियै, अपणै अपणै भाय ।—गजउद्धार  
३ कृपा, मेहरवानी, दया ।

उ०—दरसण दीजै स्यामजी, भगतवछळ कर भाय । ज्यू सकट  
मेरे सबै, तुरत-फुरत मिट जाय ।—गजउद्धार

४ चाहना, इच्छा ।

५ प्रकार, भाति, तरह ।

उ०—१ हसा बगला हाल सू, जिम अतरौ जणाय । कवत सुक-  
विया कुकविया, भेद प्रगट इण भाय ।—दा दा

उ०—२ नर विवने वा नह रहै, जग मे आ रहे जाय । कुळवती  
सू क्रीतरी, उलटी गति इण भाय ।—दा दा

वि०—६ मन को भाने वाला, रुचिकर ।

उ०—१ प्रस्नोत्तर चरचा मत पीगळ, भूसण सबद अरथ रस  
भाय । 'वाकै'दास जाणिया विघ विघ, राज अनुग्रह जगळराय ।

—दा दा

उ०—२ कुण वेटा कुण मायडी, कूण नारी प्रिय भाय । स्वारथ  
का सब हो सगा, परमारथ मुनिराय ।—जयवाणी

७ देखो 'भाई' (रू भे )

उ०—१ पिढ प्राण छूटसी, नाड तूटमी करगगा, घरा सेक धारसी,  
करे सुख मेक अळगा । काहि भाय कूकसी, सयण सायण सुत नारी,  
काया हूमी अकज, सबै माया दुपियारी ।—ज खि

उ०—२ आग न निकली लकडा माय ए, तिण मो दुख पडियो  
भाय ए । हू इण कारण दिलगीर ए, भाई ! जिहा दुखे तिहा  
पीर ए ।—जयवाणी

उ०—३ अठी साहरै समाधी हुवा केडै दारामाह नै अधिकार री  
काम भी छोटि दीघो तो भी तीन ही भायां री तखत मायै चला-  
वणी जाणि प्राची मै पुत्र नू भेजि अवाची कू आवता दो ही  
पुत्रा नू समुभावण साम्है जावता पातसाह नू पेलि ।—व भा.

८ देखो 'भाव' (रू भे )

भायकी-स० स्त्री०—हल्दी नीद, तद्रा ।

भायला—देखो 'भासा' (रू भे )

भायग-वि०—प्रिय, प्यारा ?

उ०—आम जळइ, घरती जळइ, दिनि दिनि जळती घाख । भायग  
माहरइ भेटयु, वारु भई बँसाख ।—मा. का प्र

भायजी—देखो 'भाईजी' (रू भे )

उ०—वेटा रै पारवती आया कँवती—देख वेटा अबै थारा भायजी  
नै चेतो व्हियो है ।—फुलवाडी

भायप-स० स्त्री०—देखो 'भाईपो' (रू भे )

उ०—१ ताहरां दाण माहै विसवो कर दियो वडी भायप कीवी ।

—नैणसी

उ०—मोटी भायप होय पिढा हुवै पूजता । बडाराज री गाव  
लोग सोह वूक्तता । न को लोपै लीह क घरे घचोलणा । एता दे  
किरतार, फेर नह बोलणा—अज्ञात

उ०—३ तद नापै साखळैरी भायप मे लाली हुतो तिणनू दिखायो ।

—द दा

भायपो—देखो 'भाईपो' (रू भे )

उ०—सेखै देखताही राव घोडा भेलि दीना, गोडा का समूचा  
भायपा नै मारि लीना—वि व

भायल-स० पु० १ पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—दस पडिया मड हिंदवा, रिण पँतीस मुगल । ऊपडियो  
घायल हुवै, भायल 'देव' दुमल्ल ।—रा रू

२ देखो 'भायेली' (मह, रू. भे )

भायली—देखो भायेली (रू भे )

उ०—१ ताखडा, नथीठा ओडिया तायला, घणा घायल किया  
आप घण घायला । मिडे जुघ पछे भीडी बटे भायला, रीठ वागो  
उभय ओड अजरायला ।—रा रू

उ०—२ भायला रै ऊखल खडी नार मिरगानयणी, उठ सवारा  
भगडो वा करै जी म्हारा राज ।—लो गी

उ०—३ आज सवारी उठिया जी गई, गई कुजा के पास । तू  
छै घरम की भायली ये, एक सदेम पहुचाय ।—लो गी  
(स्त्री० भायली)

भायसी, भायही—देखो 'भामियो' (रू भे )

उ०—देवराज अठै आइने भायसी एक भिजोय नांही चीरायनै  
जठै पाणि हुतो तितरी घरती दोळो फेर आपणी कीनी ।

—नैणसी

भायूबीज—देखो 'भाईबीज' (रू भे )

उ०—भायूबीज दहै मडा, पूर्तागियो पठाण । जलालियै सू अकलो,  
कूण सहै केवाण ।—जलाल बूबना री वात

भाये—देखो 'भावै' (रू भे )

उ०—भाये भळहळिया भुरटा रा भारा, अघ अग ऊलळिया  
उरगा रा आरा । बिरळा दाता री पाता बिरळाती, चौडै चाचर  
री चौडे चिरळाती ।—ऊ का

भायेली-स० पु० [स्त्री० भायेली] १ मित्र, दोस्त, मखा ।

उ०—भायेली कमालदी थो, तिणनू बीज उबारण नू सुपियो  
थो, सु कमालदी जीव ज्या राखै छै ।—नैणसी

२ प्रेमी, आशिक ।

उ०—भायेली दिलगिरी क्यो लाया जो, ना चित आयो म्हारी  
देसडी, ना चित आया माई वाप ।—लो. गी

रू० भे०—भाईली, भाएली, भायली, वायेली ।

मह०—भायल ।

भायोडो-भू० का० कृ०—१ रुचिकर लगा हुआ, अच्छा लगा हुआ,  
पसन्द आया हुआ २ शोभित हुआ हुआ, फवा हुआ, सुहावना  
लगा हुआ ३ चाहा हुआ, इच्छित ४ स्वादिष्ट लगा हुआ.  
(म्त्री० भायोडो)

भायो'—देखो 'भासियो' (रू भे)

भायो-स० पु०—१ सन्तान, पुत्र । (जयपुर)

ज्यू—श्री कुण कौ भायो छै ।

२ देखो 'भाई' (७) (अल्पा, रू भे)

उ०—१ श्री ससार मोहनी माया, देख रीझ मति भाया रे । अग  
जल नीर निगे करनाई, परतक मिथ्या पाया रे ।—सुखरामदासजी

उ०—२ काया कोट काच सो काचो, जतन करता जावै । भण  
गुरु ग्यान नफो इक भाया, अरथ श्रीर के आवै ।—क. का

उ०—३ तद सेठ केवण लागा—भाया अक बात अलूझगी है,  
थू चावै तो सुलझा सकै ।—फुलवाडी

भायोजी-स० पु०—१ बोलचाल की भाषा मे बड़ो के लिए प्रयुक्त  
शब्द । (जयपुर)

ज्यू—भायाजी, इसी वाता मे काई घरघो छै ।

२ देखो 'भाईजी' (रू भे)

भारग-स० पु०—चन्द्रमा, चाद ।

उ०—जहर विखम जारग, भुजा धारग भुजगम । भाल तेज  
भारग, जरा हारग लसे जम ।—सू प्र

भारगी-स० स्त्री०—एक प्रकार का पोधा जिसकी पत्तिया महुए की  
पत्तियो से मिलती हुई, गुदादार और नरम होती है और जिनका  
साग वनाकर खाते हैं । इसकी ऊचाई मनुष्य की ऊचाई के बरा-  
बर होती है ।

रू० भे०—भाङ्गी, भारिंगि ।

भारड-स० पु०—एक पक्षी विशेष ।

उ०—भारड पक्षी तणा ईडा कवण चित्रइ, सिंहनइ कवण चार-  
हडि सीखवइ, कुलीननइ विनय कुण सीखवइ ।—व स

भार-स० पु० [स० भार] १ वोझ, वजन ।

उ०—१ आडो अवळो क्यू फिरे, धवळो वापूकार । श्री हिज पार  
उतारही, थळ सामे श्री भार ।—वां दा

उ०—२ वणाधिप भूप भरी उण वार, भुजग न भालि सवयो भुव  
भार । भेळी हिज आवड बाहर भूप, रुनाहर चक्र सूदस्सण रूप ।  
—मे म

क्रि० प्र०—उखणणी, उठाणी, उठावणी, ऊचणी, ऊचाणी,  
उत्तरणी, उतारणी, रवणी, लेजाणी ।

२ तराजू या तुला द्वारा किसी वस्तु या द्रव का जाना जाने वाला  
गुणत्व, वजन (वेट) ।

क्रि० प्र०—लागणी ।

३ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, कार्यभार ।

उ०—१ घरियो भूप सुतन ध्वारण, 'कूपावत' 'हरभाण' सका  
रण । भेडतियो 'रामो' दळ माहै, सुतन 'कल्याण' भार जुव साहै ।

—रा रु

उ०—२ भालिया सार मोसर भले, मूझ भार भुज भालियो ।  
भूपाळ 'जैत' ऊणहीज भुज. हय कध थापलि हालियो ।—मे म

उ०—३ लाखा हूत वाजियो लोहा, भाम्मा वधै वीजळा भालि ।  
'जाधै' भार मूकियो ज्यारा, 'चापै' भार आवियो चालि ।

—विठळदास चापावत री गीत

क्रि० प्र०—उठाणी, उतराणी, उतारणी, ओढणी, भेलणी,  
दैणी, पडणी, लेंणी, सोंपणी ।

४ सभाळ, रक्षा ।

उ०—१ इण टावर री भार उण वास्तं आख मे काजळ जित्तो  
ई नी न्हेला ।—फुलवाडी

उ०—२ राव मडळीक तो गंहुलो हुवो । तरै 'जेमो' मडळीक री  
लोहडो भाई. तिए सारी घरती री नार सभायो ।—नैणसी

उ०—३ नरपाळ काळ मांभी निडार, 'भाणीत' भुज नवकोट  
भार । जैसिघ हरो जीपत्ति जग, इक पखर लवख पखर अमग ।

—गु रु व

क्रि० प्र०—लेंणी, सभाळणी ।

५ आश्रय, सहारा ।

६ समूह, भुण्ड, दल ।

उ०—१ अणपारा वेढ हिंदवा असुरां, कळ वारा देखतो कियो ।  
खग धारा वाहण खेडेची, गज भारा ऊपरा गयो ।

—कुसळसिघ री गीत

उ०—२ सीधुर दळवळ सवळ, पूर पंदल अणपारा । नदि सर  
दूटै निवाणा, भाण ढकै रज भारा ।—सू प्र

उ०—३ नेजा खासा तोग नवव्वति, पोह दीघा मो बिना दिलीपति ।  
सो ऊजळा कळ किस सारा, भिडज वधे ओरु गज भारां ।—सू प्र  
७ सेना, फौज ।

८ सकट, आपत्ति ।

उ०—१ नाळा पड धमक धवळा नीघस, राणै 'जगो' कमधज  
सिर रुठ । भार पडत पदम' नह भागो, दयाराम खग वागो दूठ ।

—दयाराम आसिया (चारण) री गीत

उ०—२ अक्रूर न जुजठळ भीम न अरजुण, खळ दळ लागो लोह  
खळ । पडतै भार प्रजा पीडता, श्रीरग कहियो सिवो सिवो ।

—सिवा वाढेल री गीत

उ०—३ कहियो नरपाळ आविया कटकां, धूणि छडाळ धरा पै  
घोळि । पोळि वडा गज वाज पामतो, पडतै भार न छाडू पोळि ।

—नरु अमरावत वारहूठ (सोदा) री गीत

६ कष्ट, तकलीफ ।

उ०—राजकवर कल्लो—जगल मे कदमूला री किसी बमी है मा  
कुदरत रे अखूट भंडार सू अलेखू जीवा री पेट भरीजै, पछै म्हारा  
ब्याळू री उरणै काई भार ।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—पढणो, लागणो ।

१० भूमि, पृथ्वी ।

११ पाप, अत्याचार ।

उ०—भार उतारै भोमि, अवधि मैदेह उवारे । वसे राम वैकुंठ,  
विमल जग जस विसतारै ।—सू, प्र

क्रि० प्र०—उतरणो उतारणो ।

१२ गौरव ।

उ०—भार अरथ कवि 'भारवी,' कायब कियो 'किरात' । मलय-  
नाथ टीका मही, वळै लिखी आ वात ।—सू प्र

१३ कठिन, दुष्कर ।

उ०—थरके कोट सहत पुर थाणा भार सताडे पडे भगणा ।  
'ऊदा हरा सकळ मिल आया, आद 'जगढ' जुध वाद अछाया ।

—रा रू

१४ सामान, सामग्री ।

उ०—परठि जीण पाखरा, तुरंग सभिया अतुलीवळ । भार  
अरावा भरै, मोहर खडकिया अमगळ ।—सू प्र

१५ दहेज । (रेवारी)

१६ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र ।

१७ वनस्पति की निश्चित सख्या का नाम ।

वि० वि०—देखो 'भारअठार ।

१८ बल, शक्ति ।

उ०—आसथान 'सोनग' 'अज' ऊभा, भाई ब्रह्म भुजाळा । गोयल  
खागा भार गाळिया, कमधज बड करनाळा ।

—राव अमथान री गीत

१९ क्रोध, गुस्सा ।

उ०—भट नाखू राज भिभी भार, भूडी भण ऊठै अत भार । ध्रक  
पापण तोनै तोनै, पापण पापण तोनै धिक्कार ।—र रू

भारअठार, भारअठार, भारअड्डार, भारअडार, भारअडार—स० पु०  
यो० [स० अष्टादश+भार] १ अष्टादश वनस्पति का नाम ।

उ०—१ वोम लागी वहे लोडता वारणू, हल्लवै द्रोण ऊपाड  
जाणे हणू । पाटमे भूल गै घातिया पाखरा । भारअठार आवू  
किरै भाखरा ।—गु रू व

उ०—२ सात समद नवसै नदी, अठ कुळ भारअठार । चार वेद  
गुण चवत है, तउ न लामै पार ।—गजउद्धार

उ०—३ सघण नीर सीतळ सु, करत विज्जण समीर-कर । उद-  
भिज भारअठार, पुहप घर परिमळ ऊपर ।—ह र

वि० वि०—राजस्थानी मे अठारभार तथा भारअठार शब्द का

व्यापक प्रयोग मिलता है जबकि हिन्दी मे इसका रूपान्तरित प्रयोग  
केवल एक स्थान पर रामचरित मानस मे निम्न प्रकार से मिलता  
है—'रोम' राजि अष्टादस भारा, अस्थि सैल सरिता नस जारा '  
अर्थात् मदोदरी अपने पति से कहती है कि १८ भार वनस्पति  
राम की रोमावलि हैं, पर्वत हड्डिया हैं और नदिया नसो का  
समूह है । वनस्पति शास्त्र मे समस्त वनस्पति को १८ भार मे  
विभक्त किया गया है । भार शब्द का एक अर्थ समूह या भुण्ड भी  
है । एक भार मे १२ करोड ३० लाख एक हजार छ मी आठ वृक्ष  
माने गए हैं—वारह कोटि वन वृक्ष, लाख तह तीस सुनिज्जै ।  
सोरह सन और आठ, भार एक ताहि गनिज्जै । इन १८ भारों का  
वर्गीकरण विभिन्न स्थानो पर विभिन्न रूप मे पाया जाता है, परन्तु  
मुख्यत इनका तीन प्रकार से वर्गीकरण किया गया है—१ पुष्पित,  
अपुष्पित आदि के आधार पर—अपुष्पा भार चत्वारि, अष्टो च फल  
पुष्पिता । वल्ली च पटभाराणि, वन भारस्य सख्यक । अर्थात् ४  
भार पुष्प-रहित, ८ भार पुष्पो के, ६ भार वल्ली के, इस प्रकार  
१८ भार हैं । २ कटु, तिक्त, कषाय आदि के आधार पर—कटु-  
कस्या भारचत्वारि, द्वौ भारौ तिक्त कथ्यते । अम्ला भारा त्रय  
उक्ता, मधुर भारकत्रयन् । क्षार भारमेक तु कषाय भारकद्वयम् ।  
मविष भारमेक द्वौ, भारौ निविषको तथा । अर्थात् ४ भार कटु,  
२ भार तिक्त, ३ भार अम्ल, ३ भार मधुर, १ भार क्षार, २  
भार कषाय, १ भार सविष, २ भार विष-रहित, इस प्रकार  
१८ भार हुए । ३ कटक, सुगन्ध तथा निर्गन्ध के आधार  
पर—पटभारा कटका ज्ञेया, पट भारश्च सुगन्धदा । निर्गन्धकाश्च  
पटभारा, भारा अष्टादशा स्मृता । अर्थात् ६ भार कटक,  
६ भार सुगन्धियुक्त और ६ भार सुगन्धिरहित, इस प्रकार १८  
भार हैं ।

२ आवू पर्वत का एक नाम ।

उ०—भरि कोम कसकत भार, ब्रह्म जात भार अठार । बडि विखम  
पाहड वाट, घण हुवै अवधट घाट ।—सू प्र

रू० भे०—अठारभार, अठारभार, अठारभार ।

भारउतारभू—स० पु० यो० [स० भार + उतार + भू] श्री वृष्ण ।

(अ मा)

भारखमी—देखो 'भारखमी' (रू भे)

उ०—पयपूर कटक्क हुव प्रघळा, जिदराव कजा मल हेमजळा ।  
वहतै दळवाट घमी विखमी, खळ चाडत सेस न भारखमी ।—पा प्र  
(स्त्री० भारखमी)

भारगव—स० पु० [स० भागव] १ भृगुकुल मे उत्पन्न व्यक्ति ।

२ व्यवन ऋषि ।

३ उशीनस, शुक्र । (अ मा)

४ जमदग्नि ।

५ परशुराम, जामदग्न्य ।

६ वाल्मीकि ।

७ उत्तर भारत में पाई जाने वाली एक हिंदू जाति ।

वि०—१ भृगु के वंश में उत्पन्न ।

२ भृगु सम्बन्धी, भृगु का ।

भारगवी—स० स्त्री० [भार्गवी] १ लक्ष्मी ।

२ पार्वती ।

३ दूत ।

४ उड़ीसा की एक नदी ।

भारगस्वरि—स० पु०—भांगामुरि राजा का नामान्तर ।

उ०—परवत नदी पथ बहु मेहिल्यु, पवन-वेगि ते जाय । भारग-स्वरि राजा मोहो पाम्यु, क्षणुइ वार न पाय ।—नळारुपान

भारज, भारजा, भारज्या—देखो 'भारया' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ इतरी सुण कळावत कही—महाराज ! थानू घन्य छै ।

हू थानू सत्यवरमी जाण म्हारी भारजा छोडी । आप इसी अवरम वयू करी ।—सिंघासण वत्तीसी

उ०—२ पिता तो प्रदिमन पोत्री अनिरुध । उखा को पति जें कै भारज्या उखा हुई ।—वेलि

उ०—३ सुणि परदेसी ताहरी भारजा, सूरिकता तामोजी । भोग-वतठ देखइ तू तेह नइ, नर नइ स्यु करइ तामोजी ।—स कु

भारहिया—स० स्त्री०—पडिहार राजपूत वंश की एक शाखा ।

भारण—स० पु० [स० भार + रा० प्र० ण] १ रहट के मध्य स्तम्भ को स्थिर रखने वाले काण्ट डंडों के पीछे लटकाया हुआ पत्थर या बोझ ।

वि०—घातक ।

उ०—ताहरा कह्यो विजाजी भुइ मारण छै । कहीयो मारण छै ।

—चौबोली

भारणि—१ देखो 'भारण' (रू भे)

उ०—वलता भुइ भारणि हुवै रे हा, अग तपइ अगार । आखडियइ आसू पडइ रे हा, जिम पावस जल घर ।—वि कु.

२ देखो 'भारणी' (रू भे)

भारणियो—स० पु० [स० भार] मोट को पानी में भरे जाने के लिए डुबाने हेतु उसके मुह पर बांधा जाने वाला वजनी पत्थर ।

भारणी—स० स्त्री० [देशज] पीटने का भाव, दड, सजा ।

उ०—१ सेवट आती आयनै उण रो घणी आछी तरै' भारणी उतारनै आपरा घर सू तगड दियो—फुलवाडी

उ०—२ कोई कह्यो-भाई चिडैला अर कोई कह्यो-घणी भारणी काडैला ।—फुलवाडी ।

क्रि० प्र०—उतारणी, काडणी ।

भारणी, भारघो—क्रि० स०—१ किसी पदार्थ को अगारो-युक्त राख में दबाना ।

उ०—१ दान घणी उत्तर दिये, हूने वित सत हार । मुहडो लै उण

मिनख रो, भोभर भीतर भार ।—वा दा.

उ०—२ जवन पेख सिर जोर, दियो छत्रपति छिपाए । भसम जाण भारियो, अगन कण जतन उपाए ।—रा. रू

२ गाढना, दफनाना ।

३ देखो 'भरणी, भरवी' (रू भे)

उ०—१ अकबरसाह गाफल गुमान सू भारघो, तहवरखान हाय सब राज बोझ धारघो ।—रा. रू

उ०—२ चुण्या सवारघा दह पडै, दहिया सव्वारै, भरिया सरवर रीतवै, रीता जळ भारै ।—केसोदाम गाडण

उ०—३ रूप मरदां मीर सब, लक करदा तूण, दाढ गरदा भारिया, अग जरदा दूण ।—रा. रू

४ देखो 'बुहारणी, बुहारवी' (रू भे)

भारणहार, हारो (हारी), भारणियो—वि० ।

भारघोडो—भू० का० कृ० ।

भारीजणो, भारीजबो ।—कर्म वा० ।

भारत—स० पु० [स०] १ घोर युद्ध, भयकर लड़ाई ।

२ लवो गाथा या वृत्तान्त ।

३ कसोदेदार कपडा ।

४ बहिया वस्त्र ।

उ० भारत रे वीरा, भावज ने ओढाय, म्हा ने घणमोला री चूनहीं जे ।—लो गो.

५ वह जो भरत के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो ।

६ भारतवर्ष का निवासी ।

रू० भे०—भारत्य, भारथ्य, भारत्थि, भारात, भाराध, भारायि, भारिथ्य ।

७ देखो 'भारतवरस' (रू भे)

८ देखो 'महाभारत' (रू भे)

उ०—भिडे भीम अरजुण कुरु भारत, गेहर-डांडिया रम कुल गारत । मरथो सुयोधन गो भक भारत, आरयवरत्त को करगो आरत ।—ऊ का.

भारतखड—देखो 'भरतखड' (रू भे)

भारतनद—स० पु०—संगीत की एक मुख्य ताल ।

भारतवरस—स० पु० यो० [स० भारत+वर्ष] हमारा देश, जो उत्तर में हिमालय, दक्षिण में भारतीय महासागर तक तथा पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्व में ब्रह्मा देश तक फैला हुआ है । हिन्दुस्तान, हिन्द ।

वि० वि०—पुराणानुसार यह जवूदीप के अन्तर्गत ६ खंडों में से एक खंड है जो हिमालय के दक्षिण में गंगोत्री से कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है ।

रू० भे०—भरतवरस, भरहवास, भारत ।

भारति—देखो 'भारती' (रू. भे.)

भारतियो—स० पु०—‘भारत’ नामक वटिया वस्त्र का विक्रेता ।

उ०—गया छौ, अरे बाबू भारतियो री हाट, था ने भारत बाबू मोलवा जे ।—लो गी

वि०—विवाह मे ‘माहेरा’ ले जाने वाला ।

भारती—स० पु० [स०] १ दमनामी सन्यासियो की एक शाखा विशेष ।

स० स्त्री० [स०] २ साहित्य मे एक वृत्ति का नाम, जिनका प्रयोग मुख्यतः रोद्र और वीभत्स रम मे होता था परन्तु आजकल इसका सम्बन्ध नाट्य अभिनय और रमाभिनय से जोड़ा गया है ।

३ सरस्वती । (ह ना मा)

उ०—नयणला भ्रम नी उपमा किसी, हईइ हारिउ वेढि जई वसी ।  
चरणचारिहि हम हरावती, वचनि जीणइ जीती भारती ।

—मालिभद्र सूरि

४ कविता (वाणी) ।

भामा संस्कृत प्राकृत भणता, मूक भारती ए भरम । रम दायिनी सुदरी रमता, सेज अतिरिख भूमि सम ।—वेलि

५ आह्वी नाम की वृत्ति ।

६ एक प्राचीन नदी का नाम ।

७ एक प्रकार का पक्षी ।

रू० भे०—भारति, भारथि, भारथि, भारथी ।

भारतीय—वि० [स० भारत] भारत सम्बन्धी, भारत का ।

भारत्य—१ देखो ‘भारत’ (रू भे)

उ०—विजा’ मनोहरदाम का, महेवैवा समरत्य । बाहा पाण निभाहणा, माहा मू भारत्य ।—रा रु

२ देखो ‘महाभारत’ (रू भे)

भारतिय—१ देखो ‘भारत’ (रू भे)

उ०—गगाजल निरमल जेम गग, आडत्ता धीर ओपित्त अग ।  
भारतिय चडिय तेजमी भल्ल, परवाढमल्ल परचक्कपल्ल ।

—रा ज मी

२ देखो ‘भारती’ (रू भे)

भारय—१ देखो ‘भारत’ (रू भे)

उ०—१ ‘अखा’ हर वाहत खाग उतग, जुई जिम भारय दारण जग ।  
वढोवळ लूवत रोद्र व्रजाग, भिई सुजि हुवै दुय भाग ।

—सू प्र

उ०—१ नममकार मूरा नरा, पूरा सतपुरमाह । भारय गज थाटां भिई, अई भुजा उरमाह ।—वा दा

उ०—३ माण दुयोजण ‘मालदे’, जिण बाबू जगहत्थ । भारय भिडिया जाम भड, साह हूत समरत्य ।—वां दा

२ देखो ‘महाभारत’ (मह, रू भे)

उ०—१ उठै ईसफा आसफा नाम आबै, दुवै कालिका चडिका

अहे दाखै । कतेवा कलम्मा उचारै कुराणा, पढै भारथा मागवतां पुराणा ।—सू प्र

उ०—२ राजा मान दियो घणौ, भारथ बाचै आय । राजनोक मे रात दिन, महल महलें जाय ।—प च चौ

भारथि—१ देखो ‘भारत’ (रू भे)

उ०—१ ‘भाखर’ हरा ऊजळै भारथि, ‘मदनौ’ सूर वकारि मूआ ।  
मिवराजा हर हरवळ पतिमाही, हरवळा हरवळ हुआ ।

—मदनसिध नै सूरसिध गोड री गीत

उ०—२ दियण विठण भमियाळ ‘दूद’ उत, साच सीळ भमियाळ सही ।  
भाजेवा भमियाळ न भारथि, नाकारै भमियाळ नही ।

—ईसरदाम वारहूठ

उ०—३ भारथि आगि व्रजागि महाभड, जोध जडाग वडा छळ जागै ।  
मेग अजाद देम दस मालिय, मुगळा कन्है पेमकम मांगै ।

—ल. पि

२ देखो ‘भारती’ (रू भे)

भारथ्य—१ देखो ‘भारत’ (रू भे)

उ०—१ ढोलइ करहउ भालियउ, मारु आई सथ्य । प्रिउ ए ऊमर-सूमरउ, करिस्यइ था भारथ्य ।—ढो मा

उ०—२ सोमीजै ‘कग्गेम’ सुन, ‘सिवी’ अभग समरथ्य । दाह दिलेमा उर दयण, भू-विजई भारथ्य ।—द दा

२ देखो ‘महाभारत’ (रू भे)

उ०—रामायण भारथ्य, विगत रण चारण बाचै । साचै दिल सूरमा, खडग गहि मूछा खाचै ।—मे म

भारदर—देखो ‘भारवरदार’ (रू भे)

उ०—साठ रुकमा जडत हीर तुकवा सलह, भूप हुकमा जळह राज भारा ।  
भारदर बोलियो भाग जुग भालियो, धुवै उजवाळियो खाग घारा ।—पहाडवा आढी

भारदवाज, भारद्वाज—स० पु० [स० भारद्वाज] १ अगिरम गोत्र का एक गोत्रकार एव मन्त्रकार ।

२ वैवस्वत मन्वन्तर के मत्त ऋषियो मे मे एक ।

३ एक श्रौतसूत्रकार जिनके नाम पर कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं ।

४ एक ऋषि, जिसने द्युमत्सेन राजा को आश्वासन दिया था कि तुम्हारा पुत्र एव सावित्री का पति मृत्यवान् पुन जीवित होगा ।

५ एक व्याकरणकार ।

६ द्रोणाचार्य ।

७ मगलग्रह ।

८ बृहस्पति का एक पुत्र ।

९ भरद्वाज कुल मे उत्पन्न व्यक्ति ।

१० एक चिडिया, जिसका शकुन लिया करते हैं ।

भारपलाण, भारपिलाण—स० पु० यी०—बोभा ढोने का ऊट का चारजामा ।



भारवध-म० पु०—रहट की माल के मिरे का वध ।

रू० भे०—भारावद, भारावध ।

भारवरदार—देखो 'भारवरदारी' (रू भे)

भारवरदारी—देखो 'भारवरदारी' (रू भे)

उ०—बहला भारवरदारी री मामान ढोने वाली सगळी रथ रै  
पूठें लगाय दीवी ।—कुवरसी साखला री वारता

भारभुज—स० पु०—राजा, नृपति । (डि को)

भारभोर—देखो 'भार' (१६) (रू भे)

भारमलरा—स० स्त्री०—कछवाहा वश की एक उप-शाखा ।

(वा दा ख्या)

भारमलोत—स० पु०—१ राठोड वश की एक उप शाखा ।

२ कछवाहा वश की एक शाखा ।

भारमाली—वि० [म० भार+मालिन्] भार धारण करने वाला ।

उ०—ब्रह्मडा द्रविड नृत्यकारी, ए उत्तरा नड गुरु रूपि नारी ।  
की जइ किमइ मारयि भारमाली, तउ वेगि आबइ सवि गाय  
वाली ।—मालिसूरि

भारया—म० स्त्री० [म० भार्या] १ पत्नी ।

उ०—मव अण्णा घरम माही चालै । स्त्रिया पति-सेवा करै ।  
पति निज भारया-रत रहै ।—मिमघण वत्तीसी

२ स्त्री, महिला ।

रू० भे०—भारज, भारजा, भारज्या, भारिजा, भारिज्या, भारिया ।

भारलदण—म० पु० [म० भार+लाघ प्रा लाद्ध रा लाघ] गधा, खर ।  
(अ मा)

वि०—भार लदने वाला ।

भारलदारी—वि० [स० भार+रा० लदारी] भार लदने वाला ।

उ०—मसाणिया नै कारटिया रे, वले जट वर्ण ते जटिया । कुभार  
गिरावा सोनारी रे, हुवो नायक भारलदारी ।—जयवाणी

भारव—स० स्त्री० [म०] घनुप की डोरी ।

भारवदोर—स० पु० [पा० वारवरदार] घोम्हा ढोसे वाला, भारवाहक ।

उ०—कठठ तोप गाडिया, नाद नीधमै नगारा । गन्ना जूय खोलजै,  
भारवरदार कतारा ।—वखतो खिडियो

रू० भे०—भारदर, भारवदर ।

भारवरदारी—म० स्त्री० [फा० वारवरदारी] १ भार वहन करने  
वाला । (शकटादि)

उ०—म्यारामजी माग्वाड आबण री मती कीधी, तव गुढदावण  
री हुकम दीधी । भारवरदारी आगे चलाट ग्यै, घोडा पर साकता  
भगाई छै ।—मयागम दरजी री बात

२ भार वाहन करने की क्रिया ।

रू० भे०—भारवरदागी ।

भारवहगात्र—म० पु०—रथ । (डि को)

भारवहण—स० पु०—गधा, खर । (ह नां मा)

भारवाहक—स० पु० यी० [स० भार+वाहक] भार वहन करने वाला,  
वजन ले जाने वाला ।

उ०—इहाँ बलि बीजउ द्रस्टात दाखव्यउ, भारवाहक नउ विचारो  
जी । भारवहइ तणउ कावडी भली, साज धिना नाकारी जी ।

—स कु

भारवाहीनाव—स० स्त्री० यी० [भारवाही+नाव] माल ढोने वाली  
नौका, डूही । (डि को)

भारवि—स० पु०—'किरातार्जुनीय' नामक महाकाव्य के रचयिता एक  
प्रसिद्ध संस्कृत कवि ।

भारसह—स० पु०—वनिया, वैश्य, व्यापारी । (डि को)

वि०—सहनशील, सहिष्णु ।

भारह—देखो 'भारत' (रू भे)

भारहारी—स० पु० [स० भारहारिन्] पृथ्वी का भार उतारने वाला,  
विष्णु ।

वि०—१ भार हरने वाला, २ भार उतारने वाला ।

भारात, भाराथ—१ देखो 'भारत' (रू भे) (डि को)

उ०—१ 'भारथ' सुत भाराथ, कर जैत 'केहर' हरा । समर पडे  
इक साथ, भाई भड लीवा अभग ।—शि सु रू

उ०—२ कमधजा वेहू भाराथ सबळा किया, सबळ साका किया  
सूर साखी । अभग 'ऊदा'हरे जिसे खेले अचड, 'राम'हर तिमी  
अखियात राखी ।—किसनो दुरसावत

उ०—३ तुछ जळ ज्याही माछळा तडफड, भड तडफड तिण विव  
भाराथ । भभकइ रुधिर भडजर भागा, एकण कहूर लाविया हाथ ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'महाभारत' (रू भे)

उ०—भाराथ रमायण भागवत, कथा पवित्र धरि धरि करां ।  
धरि मरण नेम मिर परि घरा, तुररा तुळमी मजरां ।—मू प्र

भाराथि—देखो 'भारत' (रू भे)

उ०—भाराथि खळा दळ भाजणी, गढ गाजणी गहगीर । धरिति  
मिरिनाम वधारणी, कुळ तारणी लखवीर ।—ल पि

भाराथियौ—स० पु० [स० भारत+रा० प्र० इयौ] युद्ध करने  
वाला, योद्धा ।

उ०—भुज लगा जडै त्रण पोहर भाराथिया, वासिया सुरग यर  
कीया गळ वाथिया । सूर 'सुस्ताण' रग घणा समराथिया, सुज  
घणा रग सुरताण' रा साथिया ।—किसनो आढी

भारावद, भारावध—देखो 'भारवध' (रू भे)

भारिगि—देखो 'भारगी' (रू भे)

उ०—भोलामा नइ भालकी, भरहु भारिगि भांगि । भभेडी ब्रह्माड  
घण, भोजपय भड चंगि ।—मा कां प्र

भारिजा—१ देखो 'बाडेज' (रू भे)



उ०—१ छत्रीस वरण तणा घोडा । कित्या कित्या घोडा ।  
उज्जरा, गह्वरा, कारा, तोरका, भारिजा, सीधूया ।—का दे. प्र  
२ देखो 'भारया' (रू भे)

उ०—राज करइ तिहा राजियउ, पुढरीक नाम नरिदौ जी । गुण-  
मुदरी तसु भारिजा, पामइ परमाणदौ जी ।—स कु

भारिज्या—देखो 'भारया' (रू भे) (ह ना मा)

भारिज्य—देखो 'भारत' (रू भे)

उ०—खडहिया वाका भडा, प्रघटी हुवै प्रसिथ्य । राठोडा अर  
मुगळा, नहु चुकै भारिज्य ।—रा ज रासो

भारिया—स० स्त्री० (व व) समूह ।

उ०—रोड वजि हैवरा आगि विक रारिया, घजर भाला खेवण  
त्रभागी धारिया । भौमि गुगळी गयण चढै रज भारियां, तूटिसी  
घणा सिर आजि तरवारियां ।—जालमसिंह मेडतिया री गीत  
२ देखो 'बोझ्या' ।

भारिया—देखो 'भारया' (रू भे)

उ०—कीधी सगाई तेहसू, 'सोमा' आई दाय । थापी तेह नी  
भारिया, मेली कुमारी अतेउर माय ।—जयवाणी

भारियो—स० पु०—१ वजन उठाने वाला, भार-वाहक ।

देखो 'भारी' (अल्पा, रू भे)

उ०—अनेके फळे भागिया व्रक्व ओप, लिये चाहि सेवा न को  
जाय लोप । मुगवाकर सुदर फूल सोहै, महायभ सोरभ निभू  
विमोहै ।—रा रू

भारीगण—स० पु०—वह बोझा या भार जो मोट खींचने के लिये  
लगाई जाने वाली दो लडकियों को स्थिर रखने हेतु उन पर रखा  
जाता है ।

रू० भे०—भारीगण ।

भारी—स० स्त्री०—घास लकड़ियों आदि का छोटा गट्टर ।

उ०—दलिया रांघे दळवळिया हलवाणें, वेचण बीदणियां ईव-  
णिया आणें । लादी भारी नें ओळावो लेती, दुरवख बारी नें  
बोळावो देती ।—ऊ का

उ०—२ लकड़िका री भारी बांधनं दोनू सागें ई आप आपरें घरें  
आवता ।—फुलवाडी

वि० [स० भार] १ जिसमें अधिक बोझ हो तथा जिसे उठाने में  
पर्याप्त शक्ति व्यय होती हो, बोझिल, वजनी ।

उ०—१ कोई कहै हळको कोई कहै भारी, मै तो लियो री ताख-  
डियां तोल । कोई कहै छानं कोई कहै चौडै, मै तो लियो री  
वाजता ढोल ।—मीरा

उ०—२ वो भारी देखन अक घण उघाय दियो । मन में आ  
कुटलाई विचारनं के भारी घण सू मकोडा री कमर भाग जानी,  
जद घण पाछी ले लेम्यु ।—फुलवाडी

२ अत्यन्त, बहुत, खूब ।

उ०—१ न्यात मेतरा मिळ निपुण, पामर सामी परखिया । अम-  
लिया देख भारी अघम, होका धारी हरखिया—ऊ का

उ०—२ लेता भारी लाल चोळरग लाग़ा चोखा । कोडी फेर  
किया अजव, द्रग घमळ अनोखा ।—ऊ का

उ०—३ गावा रूडो रूप, भूप घर री भल भारी । छायासयित  
हमेस, देस ओखद सुखकारी ।—दसदेव

उ०—४ यह आमेर जयसिंहजी रें परणियो थी सो उवा री  
भारी मुलाहिजी मो अमरमिधजी नू वादसाह नीकी तरें राखें ।

—राजमिहजी राठोड री वारता

३ भीषण, भयकर ।

उ०—१ सारी सस्ती में कुडळ छळ करियो, भारी हा हा ख  
भूमडळ भरियो । वसुवा काळी री ताळी तड वागी, भिडिया  
मोना री चिडिया पड भागी ।—ऊ का

उ०—२ साभळियत तरइ विसभर सउणे, सती दिपउ अत  
वळियत साध । वाणी ताइ ब्रह्मड वखाण्ड, भारी एक हुयउ  
भाराय ।—महादेव पारवति री वेलि

४ कठिन, मुश्किल ।

ज्यू—आज गुर्जी बहुत भारी हिसाब घालिया ।

उ०—महै बाबा रें मूडा सामी जोयो । देह्या उण रें डील री  
गसको ग्रैडो लखावती के कदास उण रें सास लेवणी ई भारी  
व्हेला ।—फुलवाडी

५ जोरदार ।

उ०—१ दमगळ मगळ उडिया चहुदिस, जूटो जिम ठाकुर जगळ ।  
खारी वार गयद सु खहती, भारी भुज खेली भगळ ।

—लिखमीदास गाडण

उ०—२ भारी अगं अगं रे भारत, हेकण जीम प्रताच हुवा ।  
मन मिळियोडा जिका मादवा, जीम करं व्णिण माह जुवा ।

—बा दा

५ विशाल, बृहत्, बड़ा ।

उ०—६ भडवा लोका रें जागीरी भारी, आवं आटे नें काटे  
उपकारी । परजापतिया नह परजा नें पाळें, टुकडें टुकडें नें टीवें  
टक टाळें ।—ऊ का

उ०—२ दानयार दहलियो, हुतो सकि हफतहजारी । तजि  
हरवळ तापहू, भिळे चदवळ दळ भारी ।—सू प्र

उ०—३ तरें वीरमदे चढ खडिया रीया थी नैडा आया तरें वीर-  
मदे हेरू नू कह्यो—गांव तो भारी लागं छै ।—द दा

६ हानि-प्रद, नुकसानकारी ।

उ०—१ तद पुटियो जवाव देवतो बोल्थो—थानं अवारू तो कोगता  
सूकै हे । वगत आया थारें माथें पडता आभा नें म्हं ई थामूला ।

टूचा नै वम मे राख्या करो । कठै ई औ गचळका भारी नी पढ जावै ।

—फुलवाडी

क्रि० प्र०—पडणी ।

७ आमानि मे न पचने वाला, गरिष्ठ ।

उ०—‘मावव’ साधन धरठ मडायो, खारो मुख लै घणी खिडायो ।  
छाक पियो जिण पेट छुडायो, भारी पाणी जनम भडायो ।

—ऊ का

८ ग्रहो के अनुसार अनिष्ट परिणाम वाला, बुरे शकुन का ।

ज्यू—आज री रात उण नै बहुत भारी है ।

९ विकार या मरावी (शरीर के किसी अंग में) जिसमें वह निकम्मा या सुस्त हो गया हो ।

उ०—वामणी डुस्किया भरती ई भारी गळा सू बोली-अंक वेस्या  
रा घर मे दूजी फेर कुण व्हे सकै ।—फुलवाडी

मुहा०—१ आख भारी होणी=आख दुखने आना । २ आवाज भारी होणी=जुखाम या अन्य कारण से आवाज भर्राई हुई सी होना । ३ कान भारी होणी=किसी विकारवश कान से अस्पष्ट सुनाई देना । ४ गळो भारी होणी=भावुकता में या रुदन या जुखाम के समय गले की आवाज भर्राई हुई होना । ५ तबीयत भारी होणी=रोग से अस्वस्थ होना । ६ पेट भारी होणी=अधिक खाने से अपच की अवस्था होना । ७ माथो भारी होणी=सिरदर्द होना ।

१० किसी व्यक्ति के मन मे व्याप्त अभिमान, घमंड या रोप जिम कारण वह किसी से सरलता से व्यवहार न करता हो ।

ज्यू—आजकल वै घहुत भारी पडै है ।

क्रि० प्र०—पडणी ।

११ सशक्त, बलवान ।

उ०—गोहिला री बडो घोम राज, अर डामी पण डीला घणा  
सिरीखा परधान, सु रिसाणा घका छाड गया । जाहरा आसथान  
जी री राज भारी पडियो । तद डामिया जाणियो, गोहिल मरावा ।

—नैणसी

क्रि० प्र०—पडणी ।

१२ तुलनात्मक दृष्टि से अधिक भिन्न, निपुण, चतुर, महान, बडा ।

ज्यू—औ विजळी री बडो भारी कारीगर है । आप गणित रा भारी विद्वान हो ।

१३ उत्तम ।

उ०—भरत्य विदा कीध दे मीव भारी, घरा चित्रकोठा वम  
चापधारी ।—सू प्र

१४ मुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—१ भुज च्यारे रुप विराजइ भारी, घरहरती घुळणी घण  
घाव । हेमाचळ गिरवर चा सेहर, वसत तणी रत हुई वणाव ।

—महादेव पारवती री वेल

उ०—२ भूरं मुखडै पर स्वदेण कण भारी, पडुची पोछ मे  
प्रीतम री प्यारी । नाचै खेलावण मेळावण नांही, जोवण जोगी  
वा वेळा जग माही ।—ऊ का

उ०—३ भारी छजे गीतडा भुरजा, विहद कवित कागुरा वणं ।  
ताकव कठ गिरा वज तोपा, तै रिप सूमा सीस तरणं ।

—कुसाळसिध स्यामसिधौत री गीत

अव्य—विल्कुल ।

उ०—आळा भोळा लोग । रोग सू अणभिग भारी । सिर सिरवारी  
वेर, खेर पनडी खै खारी दूखणिया ज्यू दगड, रगड भट नीम  
लगावै । पीडा सी पट ज्याय, काय क्रस आवी आवै ।—दसदेव

अल्पा०—भारयो, भारियो ।

मह०—भारी ।

भारीकन्यका—स० स्त्री०—जमीन, पृथ्वी । (अ मा)

भारीखमू, भारीखमो, भारीखम्मो, भारीणवू—देखो ‘भरखमो’ (रू भे)  
(डि को.)

(स्त्री० भारीखमी)

भारीगण—देखो ‘भारीगण’ (रू भे)

भारीगरौ, भारीघरौ—स० पु० यो० [भारी+समूह, गृह=घर] गृह  
सदस्य समूह ।

उ०—तद बांमण कह्यो—आज राखडी पूनू है । घर मे आखा  
लेवण जोग ई दाणा कोनी । छोटा मोटा दस मिनखा री भारी-  
गरौ है ।—फुलवाडी

भारीपण भारीपणी—स० पु० यो० [स० भारी+रा० प्र० पण, पणी]  
भारी होने का भाव, भारीपन ।

भारीबोल—स० पु० यो० [स० भारी+बील] गर्विले शब्द, गर्वोक्ति ।

उ०—गुजारव गैमरा, धुवै हव सामळ ढोळा, जादम सू कर जग  
फवै थिर भारीबोला ।—द दा

भारीलगनी—स० स्त्री० [स० भारी+लग्न] वह कन्या जिसके विवाह  
का लग्न ठीक न बैठता हो ।

भारु डो, भारुडी—स० स्त्री०—रहट की लाट को आगे खिसकने से  
रोकने के लिए उसके सिर के समीप रखा हुआ बोझ ।

भारोट, भारोठ—स० पु०—छत के पत्थरो के नीचे लगा हुआ वह  
लम्बा पत्थर जिस पर छत की शिलाएँ (पट्टियें) टिकी रहती हैं ।  
वि० वि०—आजकल इन पत्थरो की जगह लोहे की शहतीरें  
लगाई जाती हैं ।

भारी—देखो ‘भारी’ (मह, रू भे)

उ०—१ तूटै नारा अजड, अग ऊपरा अपारा । रत छूटै अणपार,  
घडा फूटै चवधारा ।—सू प्र

उ०—२ सीधं साहिवां सरारा करै करारा जुवाव स्वाल, उथाळा  
जोसैल चाळा घरा रा आखाण । भजे सामराथां खळां बांनैत विरदां  
भारा, विलायता भणा थारा ‘केहरी’ बाखाण ।—गीरादान आसियो

उ०—३ भहां मन्त्रिया जूय भारा, सजै निज दरवार सारा । भला पाता जूय भेळा, वखाणै पह जेण वेळा ।—सू प्र

उ०—४ वत्तीस अतेउर परिहरि, लीधउ सजम भारी, तप जप कठिण क्रिया करइ, साथइ साधु हजारी ।—स कु

उ०—५ भाये भळहळिया भुरटा रा भारा, अघ अग उलळिया उरगा रा भारा । विरळा दाता री पाता विरळाती, चौडै चाचर री चौडै चिरळाती ।—ऊ का

उ०—६ बी ऊदरा री पूछा री भारी वाघनै बाजार मे वेचण जावती ही ।—फुलवाही

मुहा०—करमा री भारी वाघणो=पाप कर्म करना ।

भाल, भाल-स० स्त्री० [स०] १ ललाट, मस्तक । (अ मा )

उ०—१ भुज आजान विसाळ भाल, कट सघ प्रकार नयण भ्रूह नासिक कमळ धनु सुक निरधार ।—र ज प्र

उ०—२ मधुकर अमत सुवास मद भाल सुधाकर भास । मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यान निवास ।—वा दा

रू० भे०—भालयळ, भालयळि, भालहळ, भालिअळ, भालियळ, भालीअळेय, भालीयळ ।

स० स्त्री०—२ खोज तलाश ।

उ०—नाई निरनं होयनै म्यानी बतावण लागी—म्है तो खुद अ्रेक चीता री भाल मे हो ।—फुलवाही

३ प्रतीक्षा ।

उ०—घो सुसिया नै पूछघो—अै लाहू कीकर वणाया । म्हनै ई उपाव वता, म्है ई वणालू । खिरगोसियो तो इणी भाल मे ई हो ।

कह्यो—इण मे कांई इदकाई ।—फुलवाही

४ निरीक्षण, जांच ।

५ खबर, सदेश ।

उ०—१ ईतराक समै चोमासा, री हूस आई । रग-रग री पोसाखा नै दाहू री भटिया कडाई । एक समै कवर वीरमदे कनै सुरा री भाल आई । जिका सिकार सारा के मन भाई ।—पना

उ०—२ इम कहै, राजा आपरा रजपूत खाग उतार म्हैल, केता-अ्रेक रजपूतां रा वानैत साथ लिआ, भाल आई थी, तठै जाअे सुअर मार पाछा पधारिया ।—कल्याणसिध वाढेल री वात

भाल-स० पु०—१ एहसान, उपकार ।

२ देखो 'वहाल' (रू भे )

उ०—राजकवर नीमराणा की, बाघरवाढे व्याई । परतख होय पागळी पावा थावर सग्या धाई । देख हवाल भाल वर देवी, चाल मराळ चलाई ।—मे म.

३ देखो 'भालू' (रू भे )

उ०—ठण दसा राखस आहुडै, भड भाल कपिगण दस भडै । लूथ-बथ अह घणसुर लडै, गज घरा नभ गडडै ।—र ज प्र

४ देखा 'भाली' (मह, रू. भे )

भालक, भालक-वि० [दि०] १ देखभाल करने वाला ।

उ०—पादाकाती पदाकाति विन पावै, धारयावरती जन अन विन अकुलावै । वहतौ अखलेस्वर अवगति अनदाता, तत सत जग पाळक जग भालक वाता ।—ऊ का

२ दर्शनीय ।

३ खोज या तलाश करने वाला ।

४ खबर या सदेश ले जाने वाला, सदेशवाहक ।

५ जांच करने वाला, निरीक्षक ।

६ प्रतीक्षा करने वाला ।

७ देखो 'भालू' (रू. भे )

उ०—कळ वोछुडि एक वसै गिरि कदरि, मंदिर भालक एक मरै । ग्रहि त्याग भुरै घन एक गमाय रु, के रिघ आदरि सधि करै ।

—रा रु

भालकी-सं० स्त्री०—वृक्ष विशेष ?

उ०—भीलामा नइ भालकी, भरडु भारिगी भांगि । भभेडी अहाड धण, भोजपत्र भड चंगि ।—मा का प्र

भालकी—१ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे )

उ०—ज्यू ही खीवै रा भालका री चमक दीठी त्यु ही तुरत ऊठ उठै प्राय अजाणख री होळै मी अ्रेक तीर पकड खैच्यो ।

—सुरेखीवै काधळोत री वात

२ देखो 'भाली' (अल्पा, रू भे )

भालडियो-स० पु०—१ वह बैल जिसके सींग भाले के समान तीक्ष्ण हो ।

२ देखो 'भाली' (अल्पा, रू भे )

३ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे )

रू० भे०—भालडियो ।

भालडो—१ देखो 'भाली' (अल्पा, रू भे )

उ०—राम लरूमण मही दुखि पाळ्या, पाच पाडव विदेसि भमा-डया । डूव नइ घरि जल वहिउ हरचदिइ, भालडो मरण लाध मुकु-दिइ ।—सालिसूरि

२ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे )

भालडो—१ देखो 'भाली' (अल्पा, रू भे )

उ०—भवरजी कोई भलके तो हाथा में जागु भालडा हो म्हारा राज । आछा तो चढिया भंवरजी अलवलिया अमवार ओ साईना ।

—लो गी

२ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे )

उ०—पेलै पार वरे वीद मराये वेवाणा परी, सोक सरा वाय-कुडा पुराये सादीह । फरा फाडै सत्रा तोडै चुराये भालडा फूटै, अकै-राडै फतै जांगी घुराये अवीह । —गभीरमिध सोलकी री गीत

भालचन्द्र-स० पु० यो [स० भाल+चन्द्र] शिव, महादेव । (हिं को )

भालडियो—१ देखो 'भालडियो' (रू भे)

२ देखो 'भालोड' (भल्पा, रू. भे)

भाळणो—वि०—देखने वाला ।

उ०—वम छतीम वरम, गनीमा गाळणो । आभाळो अघपती, भली द्रढ माळणो । जारजपचम जोध, ढिलीवै ढूकडो, आठू पहर अवीह नेडेचो ग्हे खडो ।—प्र प्र

स० पु०—देखने की इच्छा, मिलन ।

उ०—म्हारी मा रा रे जाया, छिन-छिन आवै रे मांयरा रा भाळणा ।—लो गो.

भाळणो, भाळवो—क्रि० म०—१ देखना ।

उ०—१ अणै पग मिद्ध सातू मुनि भाळ, मेल्लै पग माणक मोतिय-माळ । वदै पग रावत वस विसुद्ध, सेवै पग चारण किन्नर सिद्ध ।

—ह र

२ तलाश करना, खोज करना, ढूढना ।

उ०—रांगी तो कळिजुग री रूप एहा अभिरूप अवनीस री तिर-स्कार करि सुद्धात रै आसित अनेक जन रहै जिका मैं कोई दो ही लोक री खोवणहार ठाळियो, जिणरी सगति रै प्रभाव स्वरग लोक री मारग मुद्रित कराय कुभीपाक री निवाम भाळियो ।

—व भा

३ ममभना, जानना ।

उ०—अर एक ही घर री जुद्ध जाणि अठी उठी दोही तरफ रा सरवही स्वकीया माळिया ।—व भा

भाळणहार, हारी (हारी), भाळणियो—वि० ।

भाळप्रोडो, भाळियोडी, भाळ्योडो—भू० का० कृ०

भाळोजणो, भाळोजवो—कर्म वा० ।

भाळदार—वि० (स्त्री० भालदारण) १ ध्यानपूर्वक देखने वाला ।

२ तलाश करने वाला ।

भालनैत्र—स० पु० यो० [स० भाल+नैत्र] जिसके मस्तक पर नैत्र हो, गिव ।

भालपत, भालपति, भालपती—स० पु० यो० [स० भालूक + पति]

१ रीछो का स्वामी या मालिक ।

२ जामवत ।

उ०—जोमेल गयावक नील जती, फिर तार दुय दिसु भालपती । गंधमादन आद दवादस गाजिय, कीम ममाजिय क्रीत रा ।

—रा ह

भालम—देखो 'भलम' (रू भे)

उ०—वावेचो चहुवाण भरी तन गुण भालम री । मधु जगतमिह री मुनज वधु 'भालम' री ।—मगवान जी रतनू

भालमको—स० पु०—कीर्ति का रक्षक ।

भाळपळ—स० पु०—देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

उ०—जुध कळळ वाजिया वयळ वारह जसी, भळहळै भाळपळ सुजळ अदभूत । प्रगट रज बीज बीमड बीसा रसा पुड, राज मा नीपजै अजे रजपूत ।—महाराज रणसिंध री गीत

भाळवो—वि०—१ तलाश करने वाला, ढूढने वाला ।

२ देखने वाला ।

भाळहळ—१ देखो 'भळ' (रू भे)

२ देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

भालांक—स० पु० यो [स० भाल+अंक] शिव, महादेव ।

भालागोरी—स० स्त्री० [स० भल्ल+रा० प्र० गीरी] भाला या बरछा चलाने की विद्या ।

उ०—भालागोरी भेद मे वळ साह वखाणै, सेलहथा 'तखतेस' सुत हिंदू तुरकाणै । राजा रावळ राव राण जग सारा जाणै, आज 'प्रताप' प्रताप इळ वडवार वखाणै ।—मोडजी आसियो

भालावरदार—स० पु० यो० [स० भल्ल+फा० बरदार] भाला या बरछा चलाने वाला ।

भाळाभळ—देखो 'भळाभळ' (रू भे)

भालाळ, भालाळो—वि० [स० भल्ल+ प्र० आनुच्] १ भाला या बरछा धारण करने वाला ।

२ पावू राठीड के लिए प्रयुक्त शब्द ।

भालासींगो—स० पु० यो० [स० भल्ल+शृङ्ग] वह पशु जिसके सींग भाले के समान तीक्ष्ण हों ।

रू० भे०—भालीडसींगी ।

भाला-हृत्यो—हाथ मे भाला रखने वाला ।

उ०—एक एक नर्म खश आगळा, भाला-हृत्या भड सिहर । नव समद खाण नवमाहसा, राठीडा रिणमल्ल हर ।—गु र व

भाळाहळ—वि० [अनु०] १ भरा हुआ, पूरा भरा हुआ, पूर्ण ।

उ०—खुटहड गज ज्यू विलम, भरे पोरस भाळाहळ । पय रवेव धरि पभग, हरख चढियो भाळाहळ ।—सू प्र

उ०—भड बोले हरमाण, पोरस भाळाहळ । असुर थाट आछटू, भाट वाणास भळाहळ ।—सू प्र

२ देखो 'भळाभळ' (रू भे)

भालि—देखो 'भालोड' (रू भे)

उ०—१ 'विरह भालि सु मरि गई, हिवडै रही खटक । हरीया राम सनेह कु, जीवडो रह्यो अटक ।'—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ विरह भालि जाकै लगी, अग अग मे एक । जन हरिया तन बीच में, करिगी छेक अनेक ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

भाळिअळ—देखो 'भाळ' (रू भे)

भालिम, भालिमि—देखो 'भलम' (रू भे)

उ०—१ विधि एणि ववावे वसत वधाए, भालिम दिन दिन चढि भरण । हुलरावणै फाग हुलरायो, तग गहवरिया थिय तरण ।

—वेलि

उ०—१ आभी नवखडे प्रसिद्धि, माभी अमणीमाण । भालिम खाटण निवड भड, जालिम जोध जुआण ।—ल पि  
उ०—२ भालिमि कुळ भाण मन महिराण, जस रस जाण जुआण । तडमल तुडिआण विमळ वखाणि, सूरति नाण समाण ।—ल पि

भाळियळ, भालियल, भाळियळि, भालियलि—वि०—१ देखने वाला, दर्शक ।

२ देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

उ०—१ प्रगत परताप जिनरतन रो पाटवी, सकल सुख देंण कवि कहै घरमसीह । भालियल तेज किण्णाल जिम भालता, दलित भेट करै दौलति दीह ।—घ व प्र

उ०—२ भळहळ उज्जळ भाळियळ, कर तेज प्रभाकरा भुज परचड खळा भखण है भाट फुणधर । मन महाराण नभीर मत, गुरआत सूरगुर, चौरासी रूपक ममज, खट भाख वहोत्तर ।

—मोडजी आसिया

उ०—३ मुख सिख सवि तिलक रतनमै मडित, गयो जु हूतो पूठि गळि । आये किसन मांग मग आयो, भाग कि जाणै भाळियळि ।—वेलि

भाळियोडो—भू० का० कृ०—१ देखा हुआ २ तलाश किया हुआ, खोज किया हुआ ३ समझा हुआ, जाना हुआ (स्त्री० भाळियोडी)

भाळीअळेय, भाळीयळ—देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

उ०—१ कोमड खवै कडि कसै तूण, भड पत्यक भीखम करन द्रोण । केसर तिलकक भाळीअळेय, मुक्कता-भाळ सोहै गळेय ।

—गु रू व

उ०—२ आदू मजन करिष पाट पेहेरे देही दळ, तिलक कुकम भाळीयळ । कणै कान आटक वेण नासा मोतीहळ, हार उर चदन विलेप रची कांकण कटि मेखळ ।—गु रू व

भाली—१ देखो 'भाली' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भालोड' (रू भे)

भालु, भालुर—देखो 'भालू' (रू भे)

भालुनाथ—स० पु० [स० भालुक + नाथ] १ रीछो का स्वामी या मालिक ।

२ जामवत ।

भाळू—स० पु०—१ वह व्यक्ति जो शिकारी को शिकार की खबर देता है ।

उ०—इस समय मे भाळुवा आण अरज कीवी छै । भाखरा रा खुडा वेहुडा माहा सूअर नीचा उतरिया छै ।—रा मा स

वि०—१ तलाश करने वाला, खोज करने वाला ।

२ देखने वाला ।

भालू, भालुक—स० पु० [स० भालुक] वडे-वडे कान वाला काले रंग का एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, रीछ ।

रू० भे०—भाल, भालक, भालु, भालुक ।

भालेराव—सं० पु०—वह व्यक्ति जो भाला चलाने मे कुशल हो ।

उ०—यू करता लूकी बारह वरस रो हुवो । भालेराव घोडै अस-वार हुवो ।—नैणसी

भालोड—स० स्त्री०—१ किसी शस्त्र के आगे का नुकीला भाग ।

उ०—खीवै री कमर माही सखरा चवदै तीर सो केसरिया कमर-वध सू वधा छै । तिका री भालोड आगले पासे सू वाहर दीसै छै, भळभळाट करती ।—सुरेखीवै काधळोत री वात

२ तीर, बाण ।

उ०—१ इये समचै माहे च्यार सव जळधर रा घणो अर मुळ-ताणी कमाण घणो वाढ रा तोडिया भालोड जुवाना रै हाथों हता ।—राजा नरमिघ री वात

उ०—२ काळा भवरा कमद रा, दीळी फिरिया दीढ । खारा लाग खीविया, भीला रा भालोड ।—पा प्र

३ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

अल्पा०—भालडियो, भालडी, भालडी, भालडियो, भालि, भाली, भालोडी ।

भालोडी—१ देखो 'भाली' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भालोड' (रू भे)

भालोड—१ देखो 'भालोड' (रू भे)

उ०—१ गुण वाण सीघाणि गाढ, वाहति ताणक वाढ । वडूक बाणो मार, भालोड भग भभार ।—गु रू व

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडा भालोड करत भभार । एकू की मूठ विछुट्टु अमख, परै सर फूटै कोरी पख ।—गु रू व

२ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

भालो—वि०—१ देखने वाला, दशक ।

२ तलाश करने वाला, खोज करने वाला ।

भालो—स० पु० [स० भल्ल] लम्बे डडे पर नुकीला फल लगा हुआ एक वस्त्र विशेष, वरछा, नेजा ।

उ०—१ 'पवा' समत्या आगळा, हरथा 'चद' मुजाव । भाला जैत निभाहणा, 'वाला' ह्दा राव ।—रा रू

उ०—२ भाला री भन्नाका चक्काड केही पटेता नू पाडि कुमार आपरै देम री दिमा आडै पग धावण नू मरतै मारतै प्रयाण कीधो ।

—व भा

रू० भे०—भलक, भल्ली, भागलोड, भालोड ।

अल्पा०—भालकौ, भालडियो, भालडी, भालि, भाली, भालोडी ।

मह०—भल, भल्ल, भाल ।

भालोडसंगी—देखो 'भालामीगी' (रू भे)

भाव-स० पु० [स०] १ किमी वस्तु की स्थिति या होने की गत्ता, अस्तित्व, सत्ता ।

उ०—१ जो कुछ भाव वदे सोई माया, याकू नहि परगदा । भाव अभाव सू परे परमानद, सोई निजानद कदा । गुह्यदा मानी भणीता ।—सुपरामजी महाराज

उ०—२ तिलाकारी के पड़े जोति के जहर जरवफी चिग का बणाव । गुलजाफ के वगारे वसतका भाव । ऐसी हवा के बीच ऐमे डवर दरसाए ।—सू प्र

विलो०—अभाव ।

२ अवस्था, दशा, हालत ।

उ०—१ वो सोळ-सत्तरै सू किणी भाव कम नी लागतो । नित रो घडी दूध तो हा करता डकार जाती ।—फुलवाडी

उ०—२ पोहरा सू तो कदाम हाथाजोडी करधा, पग भाग्या, मूडा मे तिणकी दाव्या वचाव व्है सर्क पण मरधा दरवार म बीढी उठाया पछे मूडे मूड ना दे दियो के किणी दूजा रे साथे ना रा समचार भेज्या तो राजाजी किणी भाव नी छोडैला ।

—फुलवाडी

३ श्रद्धा, हादिक भक्ति ।

उ०—१ माने तीरथ मात नू, विमळ भाव वणिगाह । मात भला सुख मानियो, ज्या पूता जणिगाह ।—वा दा

उ०—२ चितामण लघाया जाण दरसण चवू, खळ तिता दधाया देत खाया । राव पगमडा कर वधाया सुराणी, अघाया भाव-रा आप आया ।—मेतमी वारहठ

उ०—३ अर कवरजी स्त्रीवीकीजी स्त्रीकरनीजी रो घणी भाव राखे हे ।—द दा.

यो०—भावभगत, भावभगति ।

४ दृढ प्रतीति, विश्वास ।

उ०—भीतर घर दृढ भाव, तो मांझल दृष्टा तिके । दुस्तर भव हरियाव, नर तरिया निरभर नदी ।—वा दा

५ कल्पना, भावना ।

उ०—गुण भागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण, वेळ निजर विद्वुसा, असह कवि भ्रमर अकारण । कळा तिमगळ तिता परग गुण दोस विचारक । पवे सिखर इम गुपत, किता गुण ओगुण कारक । उर भरम छेह लैणी अगम, अमकत उद्यम उक्ती । कर भाव पार गुण सर करण, साचो नाम मरस्वती ।—रा रु

६ मन मे उत्पन्न होने वाली कोई भावना, रयाल, विचार ।

उ०—१ गोप प्रिया गोपाळ, जाणवा रग भूमि जदन । कस लख्यो तिण काळ, भाव प्रमाणे 'भेरिया' ।—महाराजा घळवतसिध-रतलाम

उ०—२ इण रीति आपरा और भी विमेष बीरा नू वधाइ काका रा द्वार रो कवाड हीइ सेना समेत सलेम उठेही आडो रहियो ।

अर कार्क भी पुळियार होइ प्राची रो परिपर इकटो वरि फर भी दिनी पर चलायण दृढ भाव गहियो ।—व भा

उ०—३ मार्दतो रा हुतम मे ई म्हारे यामने मरव आणुद वर्म । दण हुतम मे रानी पटकण वाळा म्हारे मारु दुपदाई हे । म्है तो म्हारा भाव दरगाया । ममन्दारी न ममभावना म्है कोजा लागी ।

—तृनवाडी

७ प्रवृत्ति, मिजाज, रगभाव । (ह ना मा)

उ०—३ आता कठ लगटे भाई, खीवर मुग कज बाग मुणाई । विलोवीराव नर भाव ता वियतारे ।—र ज प्र

उ०—२ कवर मरणाई साचार गुणनां ही मलाइ रे'र तार हवो जिगण आपग घनादर रे भाटे घरवर जिगडा पानगाह भी तोडी तिणरो प्रतीतार दिगावणु रे काज केवळ बीर भाव रो जग चाहियो ।—व भा

उ०—३ 'दणिगण रे हारपाळ मलामूद मनम रा पत्र गुणता ही अरर उठाग माहि नीचा । जटे भीम रा गिवाहां तोरण रे बाहिर आया जिके राजा महित प्रावार मे प्रविष्ट नीचा । या बात करणपोचर पडता ही गड रा विपाद प्रामार बी मनी रा अग रो स्परस करता अत्र रा चालया मे विलव न होय तिण रीति सुगता ही मगीप आया । अत्र चक्री रा चक्र रे मगान मही रे मार्थे प्रतिविब पाटता चतुर्ग चक्र भेघमाळा मे चचळा रा चपळ भाव मे चूक पाटना चद्रहाम चलाया ।—व भा

८ मोहदा, पद ।

उ०—पद्मह दिन रहिया बाघीसमा पानगाह तैमूर रे गयां केई प्रतिमा मात्र सोळह वरस रहियां एकवीसमा पातसाह महमूद रे मरियां पाछे त्रिकम रा व्योम बाजी वेद विधु १४७० नमित साह रे समय मुलतान रा सूबादार मय्यदमलिक सुनेमान रे पुत्र मिजरनान नाम तेवीसमे पातगाह दिन्नी रो मपिराज भाव गहियो ।—व भा

९ प्राचरण ।

उ०—विजय रा लोभी रजपूत चाहे जिण समय आड सम विमम जुड करे । अर जनगादिक गुरुजनां नू टाळि तिकां रे साम्हे तो अनुगत भाव घरे ।—व भा

१० चित्त, मन ।

उ०—१ राजकवरी तो इण निसक भाव सू मिळी जाणुं वारी जुगा जूनी प्रीत व्हे । राजा राणी दोनू उणरा पगा मे पलका विछाय दी । अर राजकवर आपरा हाल मे ई मस्त हो ।

—फुलवाडी

उ०—२ राजकवर निरमळ भाव सू कह्यो—म्हारी वाई म्हारी मा री सीख पारी समझ मे सावळ वैंडी कोनी ।—फुलवाडी

११ तरह, प्रकार ।



उ०—१ पण उणरा पग भालणा अर रोवणा सू किणी दाई रो हीयो नी पसीजियो । अकरम अर पाप नै आपरै हाथा जलम देवण सारु वै किणी भाव राजी नी व्ही ।—फुलवाडी

उ०—२ पछे औ भरम काई तो भूडो अर काई भलो । थारै जीवण मे जको सजोग सजियो उणनै गाजा वाजा रै साथै बधाव । अपानै तो फगत अपारा पेंखडा तोडणा है, जे इण मे मिनख आडो फिरै, जोरावरी जतावै तो उणसू किणी भाव पडपणी है ।

—फुलवाडी

१२ अनुराग, प्रेम, प्यार ।

उ०—प्रीति न उपजे विरह विन, प्रेम भक्ति वयो होइ । सब भूटे दादू भाव विन, कोटि करै जे कोइ ।—दादूवाणी

१३ चोचला, नखरा, नाज ।

उ०—दीठा भाव दिखावणा, हुरकणिया रा हाथ । हात नही मन किमि हिचे, भेलै अम भाराय ।—बा दा

१४ हाव-भाव ।

१५ सम्मान, आदर, इज्जत ।

उ०—‘सूर’ रो कुरव्व साह, भाति भाति कीध भाव । देखता स राह दोइ, रोद खान भूप राव । भेलियो तुजक्क मोर, दीध हाथ पानदान । आखियो दिलेस एम, पाति हूत फेरि पान ।—सू प्र १६ भुकाव, विचार ।

उ०—इण कारण यो ही अधरम अनुमत मै जाणि उणानू मिळाइ छल कीधा एक भी अधम जीवण न पावै । तिएसू गगदेव रो आगम जाणि पहिली सूचना करि मोनू बुलाइ गमारा नू म्हारो सहायक भाव दिखावणी ।—व भा

१७ मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओं या विचारों का द्योतक आभास, छाया या संकेत जो किसी के चेहरे पर स्वयमेव लक्षित होता है ।

१८ किसी के मन में उठने वाले विचारों का वह मूल एवं अपरिपक्व रूप जिसमें उसका उद्देश्य व आशय निहित होता है तथा वाद में वह विकसित होकर विचार में परिणित हो जाता है ।

१९ कार्य, कृत्य, क्रिया ।

२० ढंग, तरीका ।

उ०—जोगी ई जाण्यो अकर वळे गोता खायलू । म्हारै डील रो कांई घिसं । इण भाव ई नी रुपिया मूँधा कोनी ।—फुलवाडी २१ आत्मा ।

उ०—१ वामणी उणी भात काठी छाती करिया अवचल भाव सू राजमैल रै वारै निकळी । कुण ई रोक-टोक नी करी ।—फुलवाडी

उ०—२ लक्खी री बाता सुणनै वामणी रा जीव में थोडो-घणो थावस आयो । वा निरांत भाव सू बोली—काया नै राखण सारु म्हनै अवपायली कणू का चाहीजें अर लाज ढकण सारु व्है जैडो

ई गामो ।—फुलवाडी

२२ जन्म, पैदाइश ।

२३ भग, योनि ।

२४ रति-क्रीडा, सभोग ।

२५ किसी पदार्थ, काम या बात का वह गुणात्मक अथवा धर्मात्मक तत्त्व जो उसकी मूल प्रकृति का सूचक होता है और जिसकी सत्ता से पृथक् तथा स्वतन्त्र मानी जाती है ।

ज्यू—सीतल री भाव सीतलता ।

२६ किसी कथन, लेख आदि का गूढार्थ, आशय, अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब ।

२७ किसी पद्य या गद्य अवतरण का सारांश ।

२८ साह्य के अनुसार छ भावों से युक्त पदार्थ जो जन्म लेता हो, रहता हो, बढ़ता हो, क्षीण होता हो, परिणामशील हो और नष्ट होता हो ।

२९ साह्य में बुद्धि तत्त्व का कार्य, धर्म या विकार जो वेदान्त के अनुसार ‘कर्म’ है ।

३० वैशेषिक में द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये छ पदार्थ जिनका अस्तित्व निश्चित तथा वास्तविक माना गया है ।

३१ किसी वस्तु का मूल्य, कीमत या दर ।

उ०—१ और भाव देता करै, लेता और हि भाव । धाव परायो हरण धन, साहा जात सुभाव ।—वा दा.

क्रि० प्र०—उत्तरणी, गिरणी, घटणी, चढणी, वढणी ।

३२ साहित्य में मानसिक अवस्थाओं का व्यञ्जक प्रदर्शन जिससे रस की उत्पत्ति होती है । साहित्यकारों ने इसे स्थायी, व्यभिचारी एवं सात्विक तीन वर्गों में विभक्त किया है ।

३३ साहित्य में नायका के यौवनावस्था में उद्भूत २८ अल-कारों में से एक ।

३४ संगीत में पाचवा अंग जिममें गाये जाने वाले गीत में वर्णित मनोभाव कोई शारिरिक चेष्टा से प्रत्यक्ष करके दिखाया जाता है ।

३५ जन्म कुडली का विचार करते समय रक्खी जाने वाली ग्रहों की १२ स्थितियों में से एक । (फलित ज्योतिष)

३६ ज्योतिष में साठ संवत्सरो में से आठवे सवत्सर की संज्ञा ।

३७ ज्योतिष में जन्म समय का लग्न ।

३८ उद्देश्य, हेतु ।

३९ कामना, वासना ।

४० कर्मों के उदय, क्षय, क्षयोपशम या उपशम से होने वाले आत्मा के परिणामों के नाम । (जैन)

वि० वि०—ये छ होते हैं—१ ओदयिक भाव । २ शोपशमिक भाव । ३ क्षायिक भाव । ४ क्षायोपशमिक भाव । ५ पारिणामिक भाव । ६ सान्निपातिक भाव ।



४१ वस्तु का गुण या स्वभाव । (जैन)

४२ किसी देवता के चढ़ाया हुआ प्रसाद ।

४३ विद्वान् ।

४४ आंतरिक ज्वर, मोतीभरा एव चेचक नामक रोग का प्रकोप ।

ज्यू०—इण नै तो माताजी रो भाव है ।

४५ आंतरिक ज्वर, मोतीभरा एव चेचक नामक रोग का नामान्तर ।

४६ धरती में किसी देवता की उपस्थिति अनुभव होते हुए तदनुसार अंगों का संचालन होने एव ध्वनि होने की क्रिया ।

क्रि० प्र०—आणो ।

४७ एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं तथा ४, ५, ५, पर यति होती है एव अन्त में लघु गुरु होते हैं ।

रू० भे०—भाउ, भाऊ, भाय ।

भावइ, भावइ—देखो 'भावै' (रू भे)

उ०—१ तुही ज सज्जण, मित तू, प्रीतम तू परिवारण । हिय-हड भीतरि तू वसइ, भावइ जाण म जाण ।—ढो. मा.

उ०—२ सज्जण हू तूऊ तू मुझउ, अवर म नेगी लेगि । मुकु तुक हियडा धेक छइ, भावइ काढ़ी देग ।—अजात

भावक-स० पु० [स०] १ कुशल, मंगल । (अ मा, ह ना मा)

वि०—२ किंचित्, जरा ।

३ भावना करने वाला, भक्त ।

४ देखो 'भावुक' (रू भे)

उ०—कमुद-जन विकस सकुट्टे कमल-कम कुम्भ, भावका चकोरा नयण भायो । सबल तम तोम मथुरा गयद तणे गिर, अवल गोकल तणे चद आयो ।—वां दा

भावगम्य-वि० यो० [स० भाव + गम्य] भावों के द्वारा जाना जा सकने वाला ।

भावइ, भावइदा—देखो 'भावट' (रू भे)

उ०—१ म्हारी तो सगळी वाता ऊधी । जीवण रा सगळा सरा-जाम सू म्हनें अणू ती चिड है । लुगायां रं कून्व री यैलिया भर हांचळा रं मास री म्हनें अणुती भावइ है ।—फुलवाडी

उ०—२ डावडी मोसा री डक मारती बोली—साटां अरोगण री अँडी ई भावइ व्हे तो माय पवारो ।—फुलवाडी

उ०—३ भूरी सुभरभर भावइवा भांगी, मोटी भोटी री आवइदा मागी । चारो नाणू व्हे खारी भर चारै, अपणी प्यारी पर प्राणांतक वारै ।—ऊ का

भावज-स० स्त्री० यो० [स० भ्रातृ + जाया] १ बड़े माई की स्त्री, भाभी ।

उ०—उभी भावज दइ छइ सीख, रतन कचोळो राय सांपजै भीख ।

ते नांउ पग मू ठनीजै, इगी ७ राया तणी तहीन अवास ।—बी द रू० भे०—भाभज, भाभज्या ।

घल्पा०—भाभजही, भावजही ।

वि० [स० भावन ज] २ भाव में उत्पन्न ।

भावजही—देखो 'भावज' (घल्पा, रू भे.)

उ०—धारी धीरी गा फिरं छं उद्याम, त्रिगत धारी भावजही । वन मट की भे कोयत, वन मट छोड कटि चली ।—बी गो

भावज्या—देखो 'भावज' (रू भे)

उ०—भाई माता भावज्या, नाम गये भूपाळ । अय हू राकम वग पडी, कदे न गिटं जंजाळ ।—पचदशी जी चारता

भावट, भावठ, भावठि, भावठी-स० स्त्री० [स० भावट] १ अनितापा, इच्छा ।

उ०—१ पातां जीवन पाळगर, अनसता आधार । 'जिही' भारह-मल्ल री, भावठ भजणहार ।—वां दा

उ०—२ सोना रतीई साधूई, नक-माहि चिउ भावि । भावठि छडी भांमिनी । लक्ष्मी जमनि निमावि ।—मा गा. प्र

२ भूय ।

उ०—धे तो भूमां नी भावठ भजउ, राजि निज मेघर तणा मन रजउ राजि ।—वि कु

३ दिल का भाव, भावना ।

४ शौक, चाव ।

५ पट्ट, दुग, तकलीफ ।

उ०—१ कवि तो राता 'घमल' कळोधर, भावठि भजण लील भुवाळ । लहवे सरै वसता लाजै, माणमरोवर तणा मुणाळ ।

—ईगरदाम वारहठ

उ०—२ मस्तक सुधर तिलक चिराजइ, दरगण दीठा भावठि भाजइ । पहिरइ नित नित नवा रगाउ, तेगदार माहे अधिकउ तागउ ।—तविवर सीसार

६ घोषा, जाल, चालाकी ।

उ०—अगुलकरम कराविउ ताणि, राइ फुवड पाहिर पराणि । रोमांचित दवदती धई, भावठि मगती नाहगी गई ।

—नळदवदती रास

वि०—मन को भाने वाली, अभिलाषित ।

उ०—भरी अघोडी भावठी, वंठा पेट फुलाइ । दाडू मूकर स्वांन ज्यो, ज्यो आवै त्यो खाइ ।—दादूवाणी

रू० भे०—भावइ, भावइदा ।

भावण-स० स्त्री०—रुचि, इच्छा, चाह ।

वि०—मन को अच्छा लगने वाला, लुभावना ।

उ०—गांवा गावा मे गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह भीतर चीतेरण चाती । गावइ डावड का भावण गुण गाता, गाया गरभाती गोरी गरव्वाता ।—ऊ. का

रू० भे०—भावण ।

भावणा—देखो 'भावना' (रू भे )

भावणो—वि०—१ सुन्दर, मनोहर ।

२ अच्छा, रुचिकर ।

३ प्रिय लगने वाला ।

भावणो, भाववो—क्रि० स०—अच्छा लगना, रुचिकर लगना ।

उ०—१ कृपणा जम भावें वठै, विवि विमुखां नू वैद । 'वाका' भोजन नह रुचै, ज्यारै वप ज्वर खेद ।—वा दा

उ०—२ जीकारी अमृत ज्युही, भावें जग नू भाळ । है रंकारी आक पय, गरळ वरावर गाळ ।—वा दा

२ प्रिय लगना, पसन्द आना ।

उ०—दादू जे साहिब की भावें नहीं, सो हम थै जनि होइ । सद्-गुरु लार्जे आपना, साव न मानें कोइ ।—दादूवाणी

३ सुन्दर लगना ।

भावणहार, हारो (हारी), भावणियो—वि० ।

भाविओडो, भावियोडो, भाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भावीजणो, भावीजवो—कम वा० ।

भावणो, भाववो—रू० भे० ।

भावत—क्रि० वि०—१ अकस्मात्, अचानक ।

उ०—मत 'सेन' निपाप चले अप सेवन, भावत विच मिळाप भयो । ग्रह लाये छाप जिका सिर गाडी, पेम अमाप धयो पठियो ।

—भगतमाळ

२ देखो 'भवतव्यता' (रू भे )

भावदया—स० स्त्री० [स० भाव+दया] किसी प्राणी की दुर्गति देखकर मन में दया भाव लाना । (जैन)

भावन—स० स्त्री०—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।

उ०—गवीजै लुहरा टपा भावन गहर, विरह जन विरह छीजै वराणा । दुबारा छोक पीजै 'अरम' दूसरा, रेणवा दिरीजै दरस राणा ।—चमनजी आढी

२ एक राजस्थानी छंद ।

३ रुचि, पसन्द ।

उ०—कोई कहियो रै प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की । आप न भावै लिख नहिं भेजै, वाण पडी ललचावण की ।—मीरां

४ देखो 'भावना' (रू भे )

उ०—१ वलि त्रिकाल पूजा करी, भावन भावी सुद्ध । उन्नति कीधी अति धणी, धरम कीधी अविरुद्ध ।—वि कु

उ०—२ स्त्रीजिनेस्वर नै मंदिर आवै भावन भावै, भवमायर लहु तरवा रे लो ।—वि कु

भावना—सं० स्त्री० [स०] १ अनुभव और स्मृति से उत्पन्न चित्त का एक संस्कार, विचार, खयाल, कल्पना ।

उ०—१ सकळ स्रष्टि का चितही कारण, कारण बहुविध ठाणी । नाना रूप भावना नाना, चवदह तवक च्यार खाणी ।

—श्री मुखरामजी महाराज

उ०—२ जद इज ती म्हें घडी घडी कूकू कै था भिनखा विचै तो जिनावर ई चौखा जकी मन री भावना नै लुकावै कोनी ।

—फुलवाडी

उ०—३ पण वाप तो दिखावटी अँडो व्यवहार करधी जाएँ की अजोगती बात नी व्ही । कै तो डर अर लोभ रै कारण पेटा री बात होठा चढै कोनी अर कै मायली अतम ई अक-मेक व्हेगी ।

भिनखीचारा री सिरै भावनावां री विणास व्हेगी ।—फुलवाडी

२ मन में उत्पन्न होने वाला किसी बात का चिंतन, ध्यान ।

उ०—पछें राजकवर रै सामी देखनै जळजळी आभ्या कै वण लागी—काटा काढ़ती वगत पजा भाथै आपरी आगळिया रा परस सू म्हनै म्हारी मा री याद आयगी । आपरा परस में म्हनै मा वाळी भावना लखाई ।—फुलवाडी

३ श्रद्धा, भक्ति, प्रेम ।

उ०—१ जगदवा कहियो चाहै जिमो कस्ट करो भावना सुद्ध न होय जरै ऊ कस्ट मातग रा न्हाण जिम ब्रथा फळ वतावै ।

—व भा

उ०—२ अँ तो फगत भावना रा फूल है, म्हारी हस्ती ई काई कै म्हें आपरी की वदगी कर सकू ।—फुलवाडी

४ कामना, इच्छा ।

५ उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ।

६ औपध आदि को किसी प्रकार के रस या तरल पदार्थ में वार-वार मिलाकर घोटना और सुखाना जिसमें उम औपध में रस या तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जाय ।

७ शक्ति, बल ।

उ०—इण विडरूप जगी खाका नै देख सास ती पै लाई ऊची चढ जावै । मोत री रूप इण सू ती की ढाळै ई व्हेला । इमी री कूपळो अजमावण री इण डील में किए ठीड अर कठै भावना व्हे मकै ।

—फुलवाडी

रू० भे०—भावणा ।

भावनामयशरीर—स० पु० यो० [स० भावनामय+शरीर] साध्य के मतानुसार मृत्यु से पूर्व मनुष्य द्वारा धारण किया जाने वाला शरीर जो उसके जीवन में किए हुए कर्मों के अनुरूप होता है । ऐसा भी मत है कि आत्मा के उस शरीर में पढ़ने पर ही मृत्यु प्राप्त होती है ।

भावनी—स० स्त्री०—पार्वती । (हिं को)

भावपरिग्रह—स० पु० [स०] जैन मतानुसार वह स्थिति जिसमें मनुष्य धन संग्रह नहीं करता या कर नहीं पाता, परन्तु धन-संग्रह की अभिलाषा रखता है ।

भावप्रधान-वि० यो० [स० भाव+प्रधान] वह जिसमें भावों की प्रधानता या तीव्रता हो।

भावभक्ति, भावभक्ति, भावभगत, भावभगति-स० स्त्री० यो० [स० भाव+भक्ति] १ आदर, सत्कार।

२ ईश-प्रार्थना, ईश्वर-भक्ति।

उ०—भावभगत भूषण सज्ज, सोल सतोस सिंगार। ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधरजी भरतार।—मीरा

भावमन-स० पु० यो० [स० भाव+मन] जैन मतानुसार पुरुषों के संयोग से उत्पन्न ज्ञान।

भावमाण-स० पु०—दान-द्रव्य लुटाना।

भावमैथुन-स० पु० यो० [स० भाव+मैथुन] मन में मैथुन का विचार करना। (जैन)

भावर-स० पु०—चोहान क्षत्रियों की एक शाखा।

भावरो-स० पु०—गेहूँ के साथ पैदा होने वाली घास विशेष।

भावली-स० स्त्री०—चाही खेती का एक हिस्सा जो दो बैलों की एक जोड़ी का माना जाता है।

भावलीघाव-स० पु०—एक प्रकार का मरकारी लगान।

भाववाचक-स० पु० यो० [स० भाव+वाचक] व्याकरण में पदार्थ के धर्म, गुण या भाव को सूचित करने वाली संज्ञा।

भाववाच्य-स० पु० यो० [स० भाव+वाच्य] व्याकरण में अकर्मक क्रिया का वह रूप जिसमें वह कर्ता के व्यापार को सूचित न करके क्रिया के व्यापार का ही बोध कराती है। इस अवस्था में कर्ता प्रथमा विभक्ति में युक्त न होकर तृतीया विभक्ति में युक्त होता है।  
ज्यू—जाईजणी, हसीजणी, दोडीजणी।

भावविकार-स० पु० यो० [स० भाव+विकार] यास्क के अनुसार जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश नामक छ प्रकार के विकार जिनमें जीव तब तक रहता है जब तक उसे ज्ञान नहीं होता।

भावव्यजक-वि० यो० [स० भाव+व्यजक] भाव को व्यक्त या प्रकट करने वाला।

भावसधि-सं० स्त्री० [स० भाव+सधि] वह स्थिति या वर्णन जिसमें दो विरोधी भावों की सधि होती है।

भावसवर-सं० पु०—जैन मतानुसार नवीन कर्मों के ग्रहण को रोकने वाला आत्मा का परिणाम या शक्ति।

भावसवलता-सं० पु० [स० भाव+सवलता] कई भावों की सधि का एक प्रकार का अलंकार।

भावहिंसा-सं० स्त्री० यो० [स० भाव+हिंसा] केवल मन में हिंसा का भाव आना जिसमें वह वास्तविक रूप से कोई हिंसा नहीं करता।

भावांतर-सं० पु० [स० भाव+अन्तर] हृदयस्थ विचारों में परिवर्तन हो जाना। (जैन)

उ०—करणी निरगि प्रकाश, आकाश धयी निगास हो। कहज्यो मुख पी रान, ग भावोतर गुनितान हो।—वि कु

भावाभाव-सं० पु० यो० [स० भाव+अभाव] १ भाव और अभाव, होना और न होना।

२ उत्पत्ति और नश्य या नाश।

भावाभास-सं० पु०—काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई व्यभिचारी भाव किसी रस का पोषक न होकर स्वतन्त्र रूप से भाव अवस्था को प्राप्त होता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

भावारथ-सं० पु० यो० [स० भाव+अर्थ] केवल भाव का अर्थ, अर्थ-प्राय, तात्पर्य।

भावारग-सं० पु०—'रघुवरजस प्रकाश' के अनुसार तीन पद्य भाषा का नाम।

भावालंकार-सं० पु० यो० [स० भाव+अलंकार] एक प्रकार का अलंकार।

भावाश्रित-सं० पु० [स० भाव+अश्रित] संगीत में अग-सञ्चानज द्वारा भाव दर्शाने का एक नृत्य।

वि०—जो भावों पर आधारित हो।

भावि—देखो 'भावी' (रू भे)

भाविक-सं० पु०—१ भविष्य में होने वाला अनुमान।

२ साहित्य में एक अलंकार जिसमें भूत और भविष्यत भावों का एक साथ वर्तमानवत् वर्णन किया जाता है।

वि०—१ भाव सम्बन्धी, भाव का।

२ भाव या आशय जानने वाला।

३ सम्मंज।

४ अमली, वास्तविक।

५ प्राकृतिक, नैसर्गिक।

६ भविष्य में होने वाला, भावी।

रू० भे०—भावीक।

भावियोग, भावियोगि—देखो 'भावीयोग' (रू भे)

उ०—दोन् ओड भावियोगि कोई कामि आवै, सेखां का पठाणां वर कोई भी न पावै।—वि व

भावित-वि०—१ विचारा हुआ, सोचा हुआ।

२ मिलाया हुआ, मिश्रित।

३ शुद्ध किया हुआ।

४ किसी सुगंध से सुवासित किया हुआ हो।

५ जिसमें किसी रस की भावना दी गई हो।

भावियोड़ी—सू० का० कृ०—१ अच्छा लगा हुआ, रुचिकर लगा हुआ।

२ प्रिय लगा हुआ, पसन्द आया हुआ ३ सुन्दर लगा हुआ

(स्त्री० भावियोड़ी)

भावियो—सं० पु०—जिसमें किसी रस आदि की भावना दी गई हो, मिला हुआ।

भावी-स० स्त्री० [स० भाविन्] १ होनहार, भवितव्यता ।

उ०—वीर महाबल धीर उर, सूरम सूरत धार । आवी आदर ऊठियो, भावी सीस विचार ।—रा रु

२ भविष्यकाल ।

उ०—१ पति विग्रह तो ग्रह परठाणा, लेख मिटै नह वैह लिखाणा । इण दोखण धप नह आदरसी, भावी साखि मुनिद तद भरसी ।—सू प्र

उ०—२ भावी थित पूरण गरभ, दममै मास उदार । जनमे कोसल मात जदि, रामचंद अवतार ।—सू प्र०

३ भाग्य, प्रारब्ध ।

उ०—१ भगवत करता नै करतव भुगतावै, पिछला पापा रा पांमर फल पावै । भावी भूलोडा भूको न्यू भाया, पोचा करमा रा पोचा फल पाया ।—ऊ का

उ०—२ अन्नू सीमासी रावी विसमासी, भीमा भावी भी भीमा निस भासी । तूहिन कठीरव तन कुजर तावै, डग-डगि चढ़ियोडा मरिया हुसकावै ।—ऊ का

४ श्रद्धा, भक्ति ।

रू० भे०—भवि, भावि, भावीस ।

भावीक-वि० [स० भाविन्] १ भक्ति या श्रद्धा भाव रखने वाला ।

(मा म)

२ देखो 'भावुक' (रू भे)

उ०—वेसवटो हजूर आय ऊभौ रह्यो नै आसीस भणी, 'राजन के राजा, साह गहण साह, मौखण आप भावीक, जो आरभ जो करे आली महिराण पूरव के बाजा बाजै, पूरव कै जैतवार, दखण के जैतवार, पछम कै जैतवार, उत्तर के जैतवार ।'

—मागावत भूळवे री वात'

३ देखो 'भाविक' (रू भे)

भावीजोग-स० पु०—१ होनहार भवितव्यता ।

२ प्रारब्ध, भाग्य ।

भावीस—देखो 'भावी' (रू भे)

भावुक-वि० [स०] १ भावना करने वाला, मोचने समझने वाला ।

२ वह कोमल हृदय जिसके मन में भावो का उद्वेग या संचार बहुत शीघ्र होता हो ।

३ वह जो भावो के वहाव में वर्तमान्य श्रक्तव्य को भूल जाय ।

४ अच्छी बातें सोचने वाला ।

५ समृद्धशाली ।

रू० भे०—भावक, भावीक ।

भावे-क्रि० वि०—चाहे, भले ही ।

उ०—१ साईं सू साचा रह्यो, वदा सू सतभाव । भावे लावा केस रख, भावे घोट मुडाव ।—दादूवाणी

उ०—२ ताहरां इयै राजा कहाई—'धु भावे हजार असवार लियो

अर भावे एकलौ सेतराम ल्यो ।'—नैणसी

२ श्रयवा, या ।

उ०—मुहता हुता पिण चीहा सु म्हे न कहीं नु काढा न किण ही भेळा हुवा । थाहरी छै ज्यू थां दाइ भावे न्यू करो । मारो भावे राखो ।—द वि

३ स्वत, अपने आप ।

उ०—लूकी रै हाथै नी आया जिण सू भावे ही अगूर खाटा व्हेगा ।—फुलवाडी

४ लिए वास्ते ।

५ अकम्पात, अचानक ।

रू० भे०—भावेइ, भावे, भावेई, भावेइ ।

भावी—देखो 'भाव' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ तीन से वरस घर में रह्या ही, रह्या रुडा भावी । सजम पाल्यो मात से हौ, सहस्र वरम नी आवी ।—जयवांणी

उ०—२ क्रस्ण नी मनियावट देखि करी, मद्रक नइ थयो भावी जी । सिंह केसरिया मोदक सूझता, पडि लाम्या प्रस्तावीजी ।

—म कु

भावोदय-स० पु० [स०] किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन करने का एक प्रकार का अर्थालंकार ।

भासकर—देखो 'भास्कर' (रू भे) (डि को, ह ना मा)

उ०—भीम तणा ग्रीवम भासकर, तेज भुजाडह लागि तिस । कूरम तणो मोखियो कस करि, रसक न रहियो तैण रस ।

—राव दुरणसाल हाडा री गीत

भास-स० पु० [स० भास्] १ प्रकाश, दीप्ति, प्रभा ।

२ सूर्य, भास्कर ।

३ किरण, मयूख । ४ गीव । ५ शकुत पक्षी ।

६ एक राजस्थानी छन्द विशेष ।

७ कठवा छन्द का नामान्तर । ८ पद्य खण्ड ।

भासक-वि० [स० भापक] १ भाषण करने वाला ।

२ बोलने वाला ।

भासकर—देखो 'भास्कर' (रू भे)

भासकरण-स० पु० [स० भापक] १ रावण का एक सेना नायक ।

२ सूर्य, भानु ।

भासग्य-स० पु० [स० भापाज्ञ] भापा जानने वाला, भापा का ज्ञाता ।

भासच्छन्ना-वि० यी० [स० भस्म+आच्छन्न] भस्म में आच्छादित ।

भासण-स० पु० [स० भाषण] १ वार्तालाप, बातचीत ।

क्रि० प्र०—करणी ।

२ बोली, आवाज ।

उ०—भासण उपमा और मनोरथ भेळिया । मरु आटी मखतूळ, क मोती भेळिया ।—वा दा.

३ किसी सभा, सस्था आदि में दिया जाने वाला व्याख्यान, उपदेश ।  
क्रि० प्र०—दैणी, करणी ।

उ०—करस्या वात कवल मळी सू मासण सुणस्या । गुण री है  
नहि गरज, चोज कर श्रीगुण चुणम्या ।—ऊ का  
रु० भे०—भाख, भाखण ।

भासणी, भासवी—क्रि० अ० [स० भास्] १ प्रतीत होना, मालूम होना ।

उ०—१ सत्सू सीमासी रावी विसमासी, भीमा भावीसी भीमा  
निम भासी । तू हिन कठीरव तन कुजर तावै, डग डगि चढियोडा  
मरिया दुसकावै ।—ऊ का

उ०—२ सुपने मन मान्या बहु फदा, भात भात रग भासी ।  
मिथ्या मन साची कर माने, आ चौगस चौरासी ।

—सोमुखरामदासजी महाराज

२ प्रकाशित होना ।

३ देख पटना, दिखना ।

उ०—अति खूणा ऊडा थूडम-थूडा, कूडा-पथ करदा है । मूछा  
विन मूडा भासत भूडा, भरसूडा भभकदा है ।—ऊ का  
४ शोभायमान होना ।

उ०—१ मधुकर भ्रमत्त सुवाम मद, भाळ सुधाकर भास । मोदक  
कर मन मोदमय, नित जय ग्यान निवाम ।—वा दा

उ०—२ करम कठिन दल चूरताजी, पूरता जगत नी आस ।  
जिनवर देव इहा भासता जी, सासता अरथ सुविलास ।—वि कु  
५ देखो 'भाखणी, भाखवी' (रु भे)

उ०—१ 'पाणि' पुस्तक सुवर्णण जनोंई, रूपवत एह वभण कोई ।  
जा विराट् त्रप चित्ति विभासइ, विप्ररूप त्रप ता इम भासइ ।

—सालिसूरि

उ०—२ मद मद हासै छै, प्यारी प्यारी भासै छै, निराळी इण  
री निरखण आनदकारी, सियावर म्हानिं निरखण दे सखि प्यारी ।

—गी रां

भासणहार, हारी (हारी), भासणियो—वि० ।

भासिशीडो, भासियोडो, भास्योडो—भू० का० कृ० ।

भासीजणो, भासीजयो—भाव वा० ।

भाकणो, भाकयो, भाखणी, भाख्यो—रु० भे० ।

भासतीक—स० पु०—सूर्य, रवि ।

उ०—यक्रुतुड मेघा ओज भेळा भासतीक वोम, भेळा लोहां लका  
भासतीक कहू समीर । हेळा काम रूपी 'अजो' ऊजेळा ऊद्दासतीक,  
वेळा नामतीक वेळा आसतीक बीर ।

—रावराजा अरजुनसिंह री गीत

भासमत—वि०—ज्योतिपूरण, चमकदार ।

भासमाण—स० पु० यो० [स० भास्+मान्] १ सूर्य, रवि ।

उ०—ऊमो राहा सीम भासमाण जोतै अत ऊगो, अनोखा अदगं  
गोखां पूगो आसमान । भूरी जमा काम जोगी हती वेढीगारी भूप,

जसे काम काम आयो जाणियो जिहान ।—चावडदान महं  
२ दिखाई देता हुआ, जान पड़ता हुआ ।

रु० भे०—भासवान ।

भासरु—वि० [स० भास्वर] प्रकाशमान, तेजस्वी ।

उ०—जवु कुमर तसु नदन, नदन तर समु छाया । कायकति बहु

भासरु, वासर नउ जिम राउ ।—प्राचीन फागु-संग्रह

भासवान—देखो 'भासमान' (रु भे) (डि को)

भासांतर—स० पु० यो० [स० भापा+अन्तर] अनुवाद, उल्था ।

भासान—स० पु०—सूर्य, रवि । (अ मा, ना मा)

भासा—स० स्त्री० [स० भापा] १ किसी जन-ममुदाय द्वारा अपने भाव  
एव विचारों को व्यक्त करने के लिए मुह से उच्चारण किए जाने  
वाला शब्दों एव वाक्यों का समूह । ज्ञान, वाणी ।

उ० आप म्हारै वास्तै काई काई फौडा भुगतिया उण नं दरसा-  
वण वास्तै म्हारा लोक मे वंडी की भासा ई कोनी ।—फुलवाही  
२ पशु-पक्षियों द्वारा भाव या मनोविचार प्रकट करने का अव्यक्त  
नाद ।

ज्यू—तोता री भासा ।

३ वर्तमान में किसी देश में प्रचलित बोली ।

४ हिन्दी का एक नाम ।

५ संगीत में एक प्रकार की ताल ।

६ सरस्वती ।

रु० भे०—भाक, भाख, भाखा, भाख्या, भायवा ।

भासावद्ध—भू० का० कृ० [स० भापावद्ध] १ (भाव या विचार) जो  
शब्दों या वाक्यों में बोलकर अथवा लिखकर व्यक्त किया गया हो ।  
२ देश भाषा में लिखा हुआ ।

भासासम—स० पु० [सं० भापासम] एक शब्दालंकार ।

भासासमिति—स० स्त्री० [स० भापा+समिति] जैन धर्म में एक प्रकार  
का आचार जिसके अन्तर्गत सब लोगों को प्रसन्न व सन्तुष्ट करने  
की बातचीत होती है ।

भासिक—वि०—दिखाई पड़ने वाला, मालूम पड़ने वाला ।

भासियोडो—भू० का० कृ०—१ प्रतीत हुआ हुआ, मालूम हुआ हुआ

२ प्रकाशित हुआ हुआ ३ दिखा हुआ

४ देखो 'भाखियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भासियोडी)

भासियो—स० पु०—मैस या मैमे का पूरा चमड़ा ।

रु० भे०—भाईयो, भायमी, भायही, भायो, भाहियो ।

भासी—वि० [स० भापिन्] १ बोलने वाला, कहने वाला ।

उ०—दया तणो मारग सुद्ध दाखै, तिरण सू तू न पतीजै रे । अमत

भासी नै हीण आचारी, ते गुरु आया रीकै रे ।—जयवांणी

२ भाषण करने वाला ।

भासुरह-वि० [स० भासुर] चमकीला ।

उ०—तव तलफ भीमणह घम्म धीरिमसुरिम सुविसालह । सजम  
लिर भासुरह दुसहद (व) य दाढ़ करालह ।—कवि पल्ह

भासूडा-स० पु०—सोलकी वश की एक शाखा ।

भासोलो—देखो 'वसूलो' (रु भे)

भास्कर-स० पु० [स०] १ सूर्य, आदित्य ।

२ आक, मदार ।

३ शिव, महादेव ।

४ अग्नि, आग ।

रु० भे०—भक्वर, भक्खरय, भासकर, भामकर ।

भाह—क्रि० वि०—पसद ।

उ०—राग रग दोनू तरफ, होवै बहुत उछाह । हाडा केरी सर-  
वरा, राठोडां मन भाह ।—राजसिंह री वारता

भाहर—देखो 'भररो' (मह, रु भे)

उ०—नाहर गोवरघन्न री, नाहर भाहर सद् । घर बाहर भांजण  
खळा, जाहर दळा विरद् ।—रा रु

भाहि-स० स्त्री०—भट्टी ।

उ०—इम कागद आवियो, पैखि वचै 'गजपत्ती' । अग पोरस  
ऊफणै, भाहि छित जैम विभत्ती ।—सू प्र

भाहरो—भारी या मोटी आवाज ।

उ०—वाकरा पकडीजै छै । सो किए भांति रा वाकरा जिकै कड-  
कती साव रा, वडकती नळी रा, भाहरै साव रा, मादळिए पेट  
रा, माडि बोर काचर रा, वरडणहार, घणै कूभट नै वावळी री  
टीसीआ रा आडणहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरिणोअ रा  
वंसणहार वाळखसी बोकडा, विसै बोकडा, खोरडै खोलहरी रा  
चारीओडा, सो ऊठा विसै बोकडा मसका री भाति सो लिहाई  
नै घातिआ छै ।—रा सा स.

भाहियो—देखो 'भासियो' (रु भे)

भिंगराज—देखो 'अगराज' (रु भे)

भिंगाणो, भिंगावो—देखो 'मिजोणो, मिजोवो' (रु भे)

भिंगाणहार, हारो (हारी), भिंगाणियो—वि० ।

भिंगायोडो—भू० का० कृ० ।

भिंगाईजणो, भिंगाईजवो—कर्म वा० ।

भिंगायोडो—देखो 'मिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० भिंगायोडो)

भिंगी—देखो 'भीगी' (रु भे)

भिंगो—देखो 'भीगी' (रु भे.)

मिगोणो, मिगोवो—देखो 'मिजोणो, मिजोवो' (रु भे)

मिगोणहार, हारो (हारी), मिगोणियो—वि० ।

मिगोयोडो—भू० का० कृ० ।

मिगोईजणो, मिगोईजवो—कर्म वा० ।

मिगोयोडो—देखो 'मिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० मिगोयोडो)

मिगोवणो, मिगोववो—देखो 'मिजोणो, मिजोवो' (रु भे)

मिगोवणहार, हारो (हारी), मिगोवणियो—वि० ।

मिगोविओडो, मिगोवियोडो, मिगोव्योडो—भू० का० कृ० ।

मिगोवीजणो, मिगोवीजवो—कर्म वा० ।

मिगोवियोडो—देखो 'मिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० 'मिगोवियोडो')

मिजाणो, मिजावो—देखो 'मिजोणो, मिजोवो' (रु भे)

मिजाणहार, हारो (हारी), मिजाणियो—वि० ।

मिजायोडो—भू० का० कृ० ।

मिजाईजणो, मिजाईजवो—कर्म वा० ।

मिजायोडो—देखो 'मिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० मिजायोडो)

मिजोणो, मिजोवो—देखो 'मिजोणो, मिजोवो' (रु भे)

मिजोणहार, हारो (हारी), मिजोणियो—वि० ।

मिजोयोडो—भू० का० कृ० ।

मिजोईजणो, मिजोईजवो—कर्म वा० ।

मिजोयोडो—देखो 'मिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० मिजोयोडो)

मिजोवणो, मिजोववो—देखो 'मिजोणो, मिजोवो' (रु भे)

मिजोवणहार, हारो (हारी), मिजोवणियो—वि० ।

मिजोविओडो, मिजोवियोडो, मिजोव्योडो—भू० का० कृ० ।

मिजोवीजणो, मिजोवीजवो—कर्म वा० ।

मिजोवियोडो—देखो 'मिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० मिजोवियोडो)

मिटणो, मिटवो—क्रि० अ०—अस्पर्श्य वस्तु से स्पर्श होना, छुआ जाना ।

मिटणहार, हारो (हारी), मिटणियो—वि० ।

मिटिओडो, मिटियोडो, मिटयोडो—भू० का० कृ० ।

मिटोजणो, मिटोजवो—भाव वा० ।

मिटणो, मिटवो—रु० भे० ।

मिटियोडो—भू० का० कृ०—अस्पर्श्य वस्तु से स्पर्श हुआ हुआ, छूआ हुआ

(स्त्री० मिटियोडो)

भिडज्ज—देखो 'भडज' (रु भे) (डि को)

भिडपाळ, भिडरपाळ, भिडवाळ, भिडिपाळ—देखो 'भिदपाळ' (रु भे)

(अ मा)



उ०—सिल विकट फरस 'सुखेण' रे, तिरसूल 'ग्वायख' तेण रे ।  
भिडपाळ गजगव विटप भड, घिख गदा वभीसण उवर घर ।

—र रु

भिडघोगवार—स० पु०—भिडो जैसी चिकनी फली वाला गवार ।  
भिडो—स० स्त्री० [स० भिड] १ एक प्रकार का पौधा व उसकी फली जिसकी तरकारी बनती है ।  
२ छोटे-छोटे सींग वाली गाय ।  
३ सीधी-साधी गाय ।  
४ छत के ऊपर चारो ओर बनाई जाने वाली छोटी दीवार ।  
५ कच्चे मकान के अहाते की दिवार को बरसात के पानी से बचाने के लिए उस पर जमाई हुई मिट्टी घास-फूस आदि का आवरण ।  
रु० भे०—बरडी, बिडी, विरडी, भीडी, वरडी, विरडी ।  
अल्पा०—भीडली ।

भिणत—देखो 'भणत' (रु भे)

भितर, भितरि—देखो 'भीतर' (रु भे)

उ०—विद्याविलास नरिंद पवाढठ हीयढा भितरि जाण्णी । अतराय विणु पुण्य करउ तुम्हि भाव घणेरउ आण्णी ।—हीराणुद सूरि

भिदपाळ, भिदिपाळ, भिदीपाळ—स० पु० [स० भिदपाल, भिदिपाल] १ छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक प्रकार का शस्त्र विशेष जिसके सहारे से बड़े-बड़े पत्थर शत्रु दल पर फेंके जाते थे ।  
२ एक छोटा डहा जो प्राचीन काल में फेंक कर मारा जाता था ।  
रु० भे०—भिदपाळ, भिदरपाळ, भिदवाळ, भिदिपाळ ।

भिभरणो, भिभरवो—देखो 'भीभरणो, भीभरवो' (रु. भे.)

भिभरणहार, हारो (हारी), भिभरणियो—वि० ।

भिभरिओडो, भिभरियोडो, भिभरघोडो—भू० का० कृ० ।

भिभरीजणो, भिभरीजवो—भाव वा० ।

भिभरियोडो—देखो 'भीभरियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भिभरियोडो)

भिभळ—१ देखो 'विभळ' (रु भे)

२ देखो 'विह्वल' (रु भे)

भिभरणो, भिभरवो—देखो 'भीभरणो, भीभरवो' (रु भे)

भिभरणहार, हारो (हारी), भिभरणियो—वि० ।

भिभरिओडो, भिभरियोडो, भिभरघोडो—भू० का० कृ० ।

भिभरीजणो, भिभरीजवो—भाव वा० ।

भिभरियोडो—देखो 'भीभरियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भिभरियोडो)

भिसट—देखो 'भ्रस्ट' (रु. भे)

उ०—भई अरुल मो भिसट कह्या कूबचन आई नै, सगत खिम्या रा समरु, विरद वडणी बाई नै ।—पा प्र

भि—स० पु०—तीर । (ह ना मा)

२ प्रेम ।

३ भैरव ।

४ सुमेरु पर्वत ।

स० स्त्री०—स्त्री, श्रीरत । (एका)

भिउड, भिउडि, भिउडी—देखो 'भ्रकुटी' (रु भे.)

उ०—विउड भिउड ताडिउ तु चपेटा ऊपाडिउ । कूयिर मनि विराडिउ वोळ वोळइ सु ताडिउ ।—सालिसूरि

भिक्षवन्नति—देखो 'भिक्षावृत्ति' (रु भे)

भिक्षा—देखो 'भिक्षा' (रु भे)

भिक्षाचरी, भिक्षाचारिया, भिक्षायरी—स० स्त्री० यी० [स० भिक्षा + चर्या] भिक्षाचर्या, भिक्षावृत्ति ।

रु० भे०—भिक्षायरी ।

भिक्षुधम्म—स० पु० [स० भिक्षु + धर्म] भिक्षु धर्म, यति धर्म ।

भिक्षु—देखो 'भिक्षु' (रु भे)

भिक्षणोस—स० पु०—सिंह, शेर । (अ० मा.)

भिक्षा—स० स्त्री० [स०] १ मागने का कार्य, याचना ।

उ०—ताहुरा एक दिन सागमराव रै गाम रो एक जोगी ईंदा रै गांव गयो । जोगी, रामचंद ईंदा रै घरे भिक्षा नू गयो ।—नैणसी २ मागी हुई वस्तु, भोख ।

रु० भे०—भिक्षा, भिक्षिया, भिक्ष्या, भिक्ष, भिक्ष्या, भिक्ष, भोख, भोच्छा ।

भिक्षाचर—स० पु० यी० [स० भिक्षा + चर] १ भिक्षा लाने वाला, भिक्षारी ।

उ०—किण ही पूछ्यो भोखण जो थें यू कह्यो एक महाव्रत भागां पाचू ई भागी सो यू साथे पाच किम भाग ? जद स्वामीजी बोल्या, पाप रो उदै हुव जव ससार मे ई जीव दुख भोगवै । जिम एक भिक्षाचर नै सहर मे फिरता पाच रोटी रो आटो मिल्यो ।

—भि द्र

२ साधु ।

उ०—आदि ही को तीरथकर, आदि ही को भिक्षाचर, आदि राय आदि जिन च्यारों नाम आदि आदि ।—घ व ग्र

भिक्षाचारी—स० स्त्री० यी० [म० भिक्षा + चारी] शुद्ध आहार आदि लेने की क्रिया । (जैन)

भिक्षाटण, भिक्षाटन—स० पु० यी० [स० भिक्षा + अटन] भिक्षा के लिए इधर-उधर घूमने की क्रिया ।

रु० भे०—भिक्षाटण, भिक्षाटन ।

भिक्षापात्र—स० पु० यी० [स० भिक्षा + पात्र] भिक्षा मागने का पात्र ।

भिक्षायरी—देखो 'भिक्षाचरी' (रु भे)

भिक्षु, भिक्षुक—स० पु०—१ भोख मागने वाला, भिक्षारी ।



२ सन्यासी, साधु ।

उ०—ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न सूद्र, ग्रही भिक्षु न योई । वानप्रस्थ ब्रह्मचारी में नाई, वरणाश्रम न दोई । —स्त्री सुखरामजी महाराज ३ रक, निर्धन ।

रु० भे०—भक्षु भिक्षू भिखग, भिखक, भिखग, भिक्षुक, भिच्छु भिच्छुक, भोक्क, भोखक, भोखग, भेखख ।

भिक्षुरूप—सं० पु०—शिव महादेव ।

भिक्ष्याटण, भिक्ष्याटन—देखो 'भिक्षाटण' (रु भे)

भिखग, भिखक, भिखग—देखो 'भिक्षुक' (रु भे)

(अ मा, ह ना मा)

उ०—१ नमो वपु दीरघ वामन वेख, भिखग पुरदर भाजण भेख । नमो नरसिध लिछम्मी-नाह, विसमर बिट्ठल आदि बराह ।

—ह र

उ०—२ जाणता तूम न जाण्यो-जाय, काया तो पाखें दाखें काय ।

मकोही कीट पतंग मुणाळ, भिखग तुहीज तुहीज भुमाळ ।—ह र

भिखमगी—सं० पु० [सं० भिक्षु + रा० प्र० मगी] (स्त्री० भिखमगी) भोख मागने वाला, भिखारी ।

भिखायत—सं० पु०—१ भिखारी, भिक्षुक ।

२ देखो 'विखायत' (रु भे)

भिखारी—सं० पु० [सं० भिक्षु + चारी] (स्त्री० भिखारिण, भिखारिण) भिक्षा मागने वाला, याचक ।

उ०—मकरसक्रायत वैठी मारी, क्षत्रिन हित लागी अति खारी ।

भू पर ब्राह्मण भये भिखारी, हे प्रवेस करगी हतियारी ।—ऊ का

रु० भे०—भिखियारी, भिख्यारी, भोखारी ।

भिखिया—देखो 'भिक्षा' (रु भे)

भिखियारी—देखो 'भिखारी' (रु भे)

उ०—भूवा भगनी रा थळचट भिखियारी, घन्यां कन्या रा गळकट हठवारी । राफा भरणावें गिरणावें रोता, गता निरणावें करमा रा गोता ।—ऊ का

भिक्षुक—देखो 'भिक्षुक' (रु भे)

भिक्ष्या—देखो 'भिक्षा' (रु भे)

उ०—जोगी चालें ऐसे भाय, सुनि सहर की भिक्ष्या खाय । तन मन चोलि आकासा चढे, सो जोगी मरिवे नहि बरे ।—ह पु वा

भिख्यारी—देखो 'भिखारी' (रु भे)

उ०—एक कुत्ता आयो सो कठोती मे एक रोटी री आटी ते ले गयो । जिए कुत्ता री लारें भिख्यारी नाठी, हेठे पडियो सो हाथ माहलो लोयो धूल मे मिल गयो ।—भि द्र

भिक्ष्यासी—देखो 'भिखारी' ।

उ०—जनम मरण सो कासू कहिये, कासू है चौरासी । हरस सोक दुख सुख है कासू, कैसे भया भिक्ष्यासी ।—स्त्री सुखरामजी महाराज

भिगोणी, भिगोवी—देखो 'भिजोणी, भिजोवी' (रु भे)

भिगोणहार, हारी (हारी), भिगोणियो—वि० ।

भिगोयोडो—भू० का कृ० ।

भिगोईजणी, भिगोईजवी—कर्म वा० ।

भिगोवणी, भिगोववी—देखो 'भिजोणी, भिजोवी' (रु भे)

भिगोवणहार, हारी (हारी), भिगोवणियो—वि० ।

भिगोविओडो, भिगोवियोडो, भिगोव्योडो—भू० का० कृ० ।

भिगोवीजणी, भिगोवीजवी—कर्म वा० ।

भिगोवियोडो—देखो 'भिजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० भिगोवियोडो)

भिडत—देखो 'भिडत' (रु भे)

उ०—वो उण नै फटकारतो कै'वण लागी—लाणत है थारी जात नै, पाणी रै माय लुक्कोडो क्यू बँठी । वारें आय नै भिडत कर ।

—फुलवाडी

भिग्गह—सं० पु० [सं० अग्निग्रह] धार्मिक नियम, प्रतिज्ञा ।

भिड—सं० पु०—१ वरं नामक उडने वाला कीडा ।

क्रि० वि०—समीप, नजदीक ।

२ देखो 'भट' (रु भे) (हिं को)

उ०—१ नभ घरा घूमरा भड निराट, घूमरा उडे भिड भिडज घाट । छूटिया प्रधारक अति छछोह वावता चन्नणा लियण वोह ।

—वि. स

उ०—२ भिड भिड भगई कोई वीर पढे भुव, परमेसर सू बाधी पली । मरणो हाथ आप रा माहै, वस छतीसा कहै 'वळो' ।

—बलू गोपाळदासोत चापावत री गीत

भिडक—सं० स्त्री०—१ चौकने की क्रिया या भाव ।

२ गुफा ।

उ०—भिडक मे जायगा प्रो० जमकरण हस्ते हुई ।—नैणसी

भिडकण, भिडकणी—वि० (स्त्री० भिडकणी) चौकने या चमकने वाला ।

भिडकणी, भिडकवी—क्रि० अ०—१ किसी आदित या किसी ऐसी वस्तु को देखकर पशुओं का उछल-फूद कर भाग जाना या भागने का प्रयास करना ।

उ०—पण जे म्हारी भँस्यां वारी विराट रूप देखनं भिडकणी तो । अर वारी अनेवो रूप देखनं पाहू भुसता नी ढविया तो म्हारें सारें री बात नी है, पै'ला कै दू ।—फुलवाडी

२ भयभीत होकर भाग जाना ।

३ देखो 'भडकणी, भडकवी' (रु भे)

भिडकणहार, हारी (हारी), भिडकणियो—वि० ।

भिडकाडणी, भिडकाडवी, भिडकाणी, भिडकावी, भिडकावणी,

भिडकाववी—प्रे० रु० ।

भिडकियोडो, भिडकियोडो, भिडक्योडो—भू० का० कृ० ।

भिडकीजणी, भिडकीजथी—भाव वा० ।  
 भडकणी, भडकवो, भडकणी, भडकवो—रु० भे० ।  
 भिडफमाड, भिडकवाड—देखो 'भडकिमाड' (रु० भे०)  
 भिडकाडणी, भिडकाडवो—देखो 'भिडकाणी, भिडकावो' (रु० भे०)  
 भिडकाडणहार, हारो (हारी), भिडकाडणियो—वि० ।  
 भिडकाडियोडो, भिडकाडियोडो, भिडकाडघोडो—भू० का० कृ० ।  
 भिडकाडीजणी, भिडकाडीजवो—कर्म वा० ।  
 भिडकाडियोडो—देखो 'भिडकायोडो' (रु० भे०)  
 (स्त्री० भिडकाडियोडी)  
 भिडकाणी, भिडकावो—क्रि० स०—१ किसी ऐसी आदत या वस्तु दिखाकर पशु को भागने में प्रवृत्त करना ।  
 २ झूठी बातों में विश्वास दिलाकर भुलावे में डालना, बहकाना ।  
 उ०—राणी राजा के कान में होलैं सू कह्यो—कवरा के भिडकायोडो के यत कैंतां पाए मानगी ।—फुलवाडी  
 ३ छुड़वाना, त्याग करवाना ।  
 उ०—हिंसा घरम प्रकास नै, साधा सु भिडकासी रे । वलि तीर-थकर ना साधु थी, निकली निहव थासी रे ।—जयवाणी  
 ४ देखो 'भडकाणी, भडकावो' (रु० भे०)  
 भिडकाणहार, हारो (हारी), भिडकाणियो—वि० ।  
 भिडकायोडो—भू० का० कृ० ।  
 भिडकाईजणी, भिडकाईजवो—कर्म वा० ।  
 भडकाडणी, भडकाडवो, भडकाणी, भडकावो, भडकावणी, भडकाववो, भडकाडणी, भडकाडवो, भडकाणी, भडकावो, भडकावणी, भडकाववो, भिडकाडणी, भिडकाडवो, भिडकावणी, भिडकाववो—रु० भे० ।  
 भिडकायोडो—१ किसी प्रकार की आदत पैदाकर या वस्तु दिखाकर पशु को भागने में प्रवृत्त किया हुआ ।  
 २ झूठी बातों में विश्वास दिलाकर भुलावे में डाला हुआ, बहकाया हुआ ।  
 ३ छुड़वाया हुआ, त्याग करवाया हुआ ।  
 ४ देखो 'भडकायोडो' (रु० भे०)  
 (स्त्री० भिडकायोडी)  
 भिडकाव—भिडकाने की क्रिया या भाव ।  
 भिडकावणी, भिडकाववो—१ देखो 'भडकाणी, भडकावो' (रु० भे०)  
 २ देखो भिडकाणी, भिडकावो' (रु० भे०)  
 उ०—या लोगा रे भिडकावणा सू ईं श्री लोग अडवडिया है ।  
 —फुलवाडी  
 भिडकावणहार, हारो (हारी), भिडकावणियो—वि० ।  
 भिडकाविघोडो, भिडकावियोडो, भिडकाव्योडो—भू० का० कृ० ।  
 भिडकावोजणी, भिडकावोजवो—कर्म वा० ।

भिडकावियोडो—१ देखो 'भडकायोडो' (रु० भे०)  
 २ देखो 'भिडकायोडो' (रु० भे०)  
 (स्त्री० भिडकावियोडी)  
 भिडकिमाड, भिडकिवाड—देखो 'भडकिमाड' (रु० भे०)  
 भिडकियोडो—भू० का० कृ०—१ किसी आदत या ऐसी वस्तु को देखकर पशु उछल-कूद कर भागा हुआ, या भागने का प्रयास किया हुआ ।  
 २ बहकावे में आया हुआ  
 ३ देखो 'भडकियोडो' (रु० भे०)  
 (स्त्री० भिडकियोडी)  
 भिडस, भिडज, भिडजाळ, भिडज्ज—१ देखो 'भडज' (रु० भे०)  
 (अ मा ह ना मा)  
 उ०—१ आसू नाखें आख सू, कर हुता किरमाळ । भागल नह नाखें भिडज, असहां सिर आताळ ।—बा दा  
 उ०—२ खल काळ माथाळ खाथाळ खडा, भिडजाळ आताळ ताताळ भडा । चुडखें घड ग्रीध अखें सवळी, हिय माभल पैल उठी हवळी ।—पा प्र  
 उ०—३ ईंदा जैता भोजराज, चोज कमधा काज । हीण करण हेवें दळा, जीण भिडज्जां साज ।—रा रु  
 २ देखो 'भट' (रु० भे०)  
 उ०—भिडज जूथ विजई भारथ, सहस अठार रहकळा साथे । धिख चख सुतर भार धारु दा, वह सामान सकट बारु दा ।  
 —सू प्र  
 भिडणी, भिडवो—क्रि० अ०—१ सलग्न होना, सटना ।  
 उ०—पैला गिगन में तारा सू तारो भिडियोडो हो ।—फुलवाडी  
 २ दरवाजे के कपाटों का परस्पर इस प्रकार सटना कि रास्ता बन्द हो जाय ।  
 ३ स्पर्श करना, छूना ।  
 उ०—१ सुणि इम वेंण वीर रस साजा, रग मजीठ कीव मुख राजा । अगन नयण धिखि नजर अगारा, भिडें मूछ अणिया भौहारा ।—सू प्र  
 उ०—२ आणद मोर सुसरि आवाजें, वीणा वस मधुर सुर वाजें । भुरजे भुरज भिडता भाजें, गहड सीख दें अवर गाजें ।  
 —आसी बारहट  
 ४ परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध दिशा में चलने वाले का टकराना, भिडना ।  
 ५ एक दूसरे प्राणी का परस्पर लडना, भिडजाना ।  
 ६ युद्ध करना, जूझना ।  
 उ०—'अखा'हर वाहत खाग उनग, जुडै जिम भारथ दाखण जग । वळोवळ लूवत रोद्र वजाग, भिडें सुजि सूर हुवें दुय भाग ।—सू प्र

उ०—२ नमसकार सूरानरा, पूरा मतपुरमाह । भारथ गज थाटां भिडै, अडै भुजा उरमाह ।—वा दा

उ०—३ माण 'दुयोजण' मालदे, जिण बाधो जगहृत्य । भारथ भिडिया जास भड, साह हूत समरत्य ।—वा दा.

७ किसी व्यक्ति का वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूझना या सवाल-जवाब करना ।

८ मैथुन करना, समोग करना ।

९ साक्षात्कार होना, आमना-सामना होना ।

उ०—कवर नै आपरै सुभाव रै आचरण रो भरम व्है सकै पर कवराणी नै धणी रै लखणा रो की भरम नी ही । खेत री माठ माथै भिडतां ई वा उणनै आछी तरै ओछव लियो ही ।

—फुलवाडी

१० सामना करना, मुकाबला करना ।

उ०—१ अकल सू भिडणा री हिम्मत पडै । वंडा टण्केल कुच-मादी रा ई घै छिलग्या ।—फुलवाडी

उ०—२ पछिम दिस भिडाणा वाप वेटा पछिम, भिडै पूरव दिसा बिन्है भाई । हेकलो 'वळा' रो दिखण चढियो हठी, कठै वाटी नही कुळ कमाई ।—सुभराम गौड वळिरामोत री गीत  
भिडणहार, हारो, (हारो), भिडणियो—वि० ।

भिडावणी, भिडाववो, भिडावो, भिडावो, भिडावणी भिडाववो  
—प्रे० रू० ।

भिडियोडो, भिडियोडो, भिडियोडो—भू० का० कृ० ।

भिडोजणी, भिडोजवो—भाव वा० ।

भडणी, भडवो, भडणी, भडवो, भिडणी, भिडवो—रू० भे० ।

भिडत-स० स्त्री०—१ टक्कर, आघात ।

क्रि० प्र०—होणी ।

२ युद्ध, सघर्ष ।

क्रि० प्र०—होणी करणी ।

३ आमना-सामना, साक्षात्कार ।

क्रि० प्र०—होणी ।

४ मुकाबला ।

क्रि० प्र०—करणी ।

५ दो वस्तुओं को आपस में टकराने से उत्पन्न ध्वनि ।

६ वाद-विवाद, बहस ।

भिडवच-स० पु०—एक प्रकार का कपडा ।

उ०—बासता भिडवच वच, सूपेत माल सुवध । कसवीम चौरा कोर, अगरेज फिरगी और ।—सू प्र

भिडावणी, भिडाववो—देखो 'भिडावणी, भिडावो' (रू भे)

भिडावणहार, हारो (हारो), भिडावणियो—वि० ।

भिडावियोडो, भिडावियोडो, भिडावियोडो—भू० का० कृ० ।

भिडावोजणी, भिडावोजवो—कर्म वा० ।

भिडावियोडो—देखो 'भिडावियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भिडावियोडो)

भिडावो, भिडावो—क्रि० स०—१ किन्हीं दो वस्तुओं को आपस में टकराना ।

२ किन्हीं दो प्राणियों को लड़ने या युद्ध करने में प्रवृत्त करना ।

३ स्पर्श करना, छुवाना ।

४ किसी व्यक्ति को वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूझने या सवाल-जवाब करने हेतु प्रवृत्त करना ।

५ किन्हीं दो वस्तुओं को आपस में सटाना, सलग्न करना ।

६ साक्षात्कार कराना, आमना-सामना कराना ।

७ मुकाबला कराना ।

८ लगाना, लेप करना, मलना ।

उ०—भममी अग भिडाव, हाण लाभ देखी हभे । नैणा नेह छिपाय, जाय वस्यो जी जेठवो ।—जेठवा

९ किसी को किसी व्यक्ति के प्रति उल्टी-सीधी बातें कहकर गलत धारणा बनवाना ।

ज्यू—वो म्हारं वास्ते उणानै भूठा साचा भिडाया है ।

मुहा०—भाटा भिडाणा=भूठी सच्ची बातें कहना ।

भिडावणहार, हारो (हारो), भिडावणियो—वि० ।

भिडावोडो—भू० का० कृ० ।

भिडावोजणी भिडावोजवो—कर्म वा० ।

भिडावणी, भिडाववो, भिडावणी, भिडाववो, भिडावणी, भिडाववो, भिडावणी, भिडाववो—रू० भे० ।

भिडावोडो—भू० का० कृ०—१ किन्हीं दो प्राणियों को लड़ने या युद्ध करने में प्रवृत्त किया हुआ २ स्पर्श कराया हुआ, छुवाया हुआ ३ किसी व्यक्ति को वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूझने या जवाब-मवाल करने में प्रवृत्त किया हुआ ४ किन्हीं दो पदार्थों को आपस में सटाया हुआ, सलग्न किया हुआ ५ साक्षात्कार कराया हुआ, आमना-सामना कराया हुआ ६ मुकाबला कराया हुआ ७ लगाया हुआ, लेप किया हुआ, मला हुआ ८ किसी को किसी व्यक्ति के प्रति उल्टी-सीधी बातें कहकर गलत धारणा बनवाया हुआ  
(स्त्री० भिडावोडो)

भिडाव—देखो 'भट' (मह, रू भे)

उ०—भिडै अस तोळा लोह भिडाव, गिलै रस ग्रीधण गूद गलाव ।

—गो रू

भिडावणी, भिडाववो—देखो 'भिडावणी, भिडावो' (रू भे)

उ०—डोकरी री वान सुणनै नाई नीची धूण करियां जावण लागी ती डोकरी कही—राम मारघा पूरी बात ती सुण, थू अठी री उठी भिडावण रं हेवा है, नी व्है ती राजाजी नै ई अठै भेज देज । म्हें वारा सू सगळी पृथ-ताळ कर लेवूना ।—फुलवाडी

मिडावणहार, हारो (हारी), मिडावणियो—वि० ।

मिडाविप्रोडी, मिडावियोडी मिडाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मिडावीजणो, मिडावीजवो—कर्म वा० ।

मिडावियोडी—देखो 'मिडायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मिडावियोडी)

मिडि—स० पु०—युद्ध, लड़ाई ।

उ०—पाडव मरे न सकियो मिडि भुइ, रुके चढे मुवो राठीड ।

किसन तणी अतेवरि कारणि, महिर धेन कारणि कुल मोड ।

—रतनू भग्मी

मिडियाळ, मिडीयाळ—१ मिडने वाला, टक्कर लेने वाला ।

२ देखो 'मट' (मह, रू भे)

उ०—काळ तणो पर कोपिया, मिडियाळ महाभड ।—वो मा

रू० भे०—मिडियाळ, मिडियाळ, मिडीयाळ ।

मिडियोडी—भू० का० कृ०—१ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ २ किन्ही दो प्राणियो मे लड़ाई या सघर्ष हुवा हुआ ३ कोई व्यक्ति वाग्बुद्ध या वाद-विवाद मे दृढतापूर्वक जूझा हुआ या सवाल जवाब करने मे प्रवृत्त हुवा हुआ ४ कोई पदार्थ किसी दूसरे पदार्थ मे सटा हुआ, सलग्न हुवा हुआ ५ विषय-भोग मे प्रवृत्त हुवा हुआ, मधुन क्रिया मे लगा हुआ ६ साक्षात्कार हुवा हुआ, आमना-सामना हुवा हुआ, ७ मामना या मुकाबला किया हुआ (स्त्री० मिडियोडी)

मिचक—स० स्त्री०—१ हिचकिचाहट, सकोच ।

२ वाधा, विघ्न ।

रू० भे०—मिचकी ।

मिचकणो, मिचकवो—क्रि० अ०—१ अनिच्छा, भय या सकोचवश किसी कार्य करने मे प्रवृत्त न होना, हिचकिचाना ।

उ०—काळिंदर सू डरै अर मिचकै ज्यू गाव रा सगळा लोग मासी-भाणजी सू डरता अर मिचकता ।—कुलवाडी

२ भयभीत होना, डरना ।

३ चौकना ।

उ०—धमक धमक घण वाजै हथोटा, कमतरिया रा वाजा । काची नीद मिचक गत जाजै, अँ मपना रा राजा ।—चेतमानखा

मिचकणहार, हारो (हारी), मिचकणियो—वि० ।

मिचकियोडी, मिचकियोडी, मिडक्योडी—भू० का० कृ० ।

मिचकीजणो, मिचकीजवो—भाव वा० ।

मिचकणो, मिचकवो, मिचकणो, मिचकवो, भुचकणो, भुचकवो

—रू० भे० ।

मिचकियोडी—भू० का० कृ०—१ अनिच्छा, भय या सकोचवश किसी कार्य मे प्रवृत्त न हुवा हुआ, हिचकिचाया हुआ २ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ ३ चौकना हुवा हुआ

(स्त्री० मिचकियोडी)

मिचकी—देखो 'मिचक' (रू भे)

मिचक—स० पु० [सं० भृत्य] १ भृत्य, नौकर ।

२ सेना ।

मिच्छ, मिच्छा—देखो 'मिक्षा' (रू भे)

उ०—खिज खाज न भोजन खोजन की, मिजमानिय मिच्छ न भोजन की । छिज वत्ता उदत्त दिगत छये, भल सत महत्त अनत भये ।—ऊ. का

मिच्छुक—देखो 'मिक्षुक' (रू भे)

मिच्छु—१ देखो 'विच्छु' (रू भे)

२ देखो 'मिक्षुक' (रू भे)

उ०—भ्रमँ न मिच्छु मिच्छुकी मया न दान मान की । न ओसवी चिकत्स्थान दोसवी निदान की ।—ऊ. का

मिछ, मिछा—देखो 'मिक्षा' (रू भे)

उ०—आयस पुरणि सूरि मिछ, जिम भाण नाण सतुट्ट मण । जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सकुउ तुम्ह गुण ।

—ऐ जै का स

मिजोणो, मिजोवो—क्रि० स०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ से किसी वस्तु या प्राणी को नीला या आर्द्र करना ।

२ पानी मे किसी वस्तु को इसलिए डालना कि वह भोगकर नरम हो जाय एव फूट जाय ।

ज्यू—दाळ मिजोणी ।

रू० भे०—मिगाणी, मिगावी, मिगोणी, मिगोवी, मिगोवणी, मिगोववी, मिजाणी, मिजावी, मिजोणी, मिजोवी, मिजोवणी, मिजोववी, मिगोणी, मिगोवी, मिगोवणी, मिगोववी, मिजोवणी, मिजोववी, भीगोणी, भीगोवी, भीगोवणी, भीगोववी, भीजोणी, भीजोवी, भीजावणी, भीजाववी, भीगोणी, भीगोवी, भीगोवणी, भीगोववी ।

मिजोवणो, मिजोववो—देखो 'मिजोणी, मिजोवी' (रू भे)

मिडकमाड, मिडकवाड—देखो 'मडकिमाड' (रू भे)

मिडज, मिडज्ज—देखो 'मडज' (रू भे)

उ०—१ 'भगवान' लोह भेलै मिडज, 'सुरताण' मुत्त छळ सांम निज्ज । 'नरपाळ' खाग पाडै खळाह, जळ चाडै जोगा रावळाह ।

—गु रू व

उ०—२ पूठि मिडज्जां आरुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसे त्रिज्जड । सत्तरि खान बहुत्तरि ऊमर, सीस विराजित मेवाडवर ।

—गु रू व.

मिडणो, मिडवो—देखो 'मिडणी, मिडवी' (रू भे)

उ०—मिडियो रुधनाथ 'भूपाळ' समोभ्रम, धार पहार विरुड घडै । पहला वरियाम डता पडिया, ता पाछै गोइददास पडै ।—गु रू व

मिडत—देखो 'मिडत' (रू भे)

भिडियाळ, मिडीयाळ—१ देखो 'भट' (रु भे)

२ देखो 'भिडियाळ' (रु भे)

उ०—खाथा सुर खडियाळ त्रिमक खडीयाळ तवला । चाका अरि  
चडियाळ हाक भिडीयाळह मला ।—पना

भिणकणो—स० पु०—१ भोरि की गुजार ।

२ मक्खियो की भिनभिनाहट ।

भिणकणो, भिणकवो—देखो 'भणकणो, भणकवो' (रु भे)

भिणकणहार, हारो (हारी), भिणकणियो—वि० ।

भिणकणोडो, भिणकियोडो, भिणकयोडो—भू० का० कु० ।

भिणकीजणो, भिणकीजवो—भाव वा० ।

भिणणो, भिणवो—देखो 'भणणो, भणवो' (रु भे)

उ०—पीछे उण री लुगाई भिणियोडो थी सू खत एक मा'राज  
पदमसिधजी रं नामे रुपिया १४०) रो लिख'र इण नू दीनो, जिण  
में मत्तू मा'राज पदमसिधजी रो अरु साख सूरज चद्रमा री लिखी ।

—द दा

भिणणहार, हारो (हारी), भिणणियो—वि० ।

भिणणोडो, भिणियोडो, भिणयोडो—भू० का० कु० ।

भिणोजणो, भिणोजवो—कर्म वा० ।

भिणभिण, भिणभिणाट—१ देखो 'भणण' (रु भे)

२ देखो 'भिनभिन' (रु भे)

भिणभिणाटो—देखो 'भणण' (अल्पा, रु भे)

उ०—गांव मे टाटिया वाला छत्ता री भिणभिणाटो उणी भात  
चालू हो ।—फुलवाडी

भिणभिणाहट—देखो 'भणण' (रु भे)

भिणभिणाणी, भिणभिणावो—१ क्रोवित होना गुम्मा होना ।

२ देखो 'भिनभिणाणी, भिनभिनावो' (रु भे)

उ०—नवी वात री तवोडो लागता ई भिनखा रूपी टाटिया भणण  
भणण करता भिणभिणावें अर थोडी ताळ भवभवायनै पाछा  
चूस्योडा छत्ता माथे आय चिपक जावै ।—फुलवाडी

भिणभिणाणहार, हारो (हारी), भिणभिणाणियो—वि० ।

भिणभिणायोडो—भू० का० कु० ।

भिणभिणाईजणो, भिणभिणाईजवो—कर्म वा० ।

भिणभिणायोडो—भू० का० कु०—१ गुम्मे मे भरा हुआ, क्रोध युक्त ।

२ देखो 'भिनभिनायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भिणभिणायोडो)

भित्त, भित्ति—देखो 'भीत' (रु भे)

उ०—भिरे अभित्ति भित्ति को सबुज के भवावनी, बिना प्रस्वेद  
वित्त को कुरोर हा कमावनी ।—ऊ का

भिदणो, भिदवो—क्रि० अ०—१ छेदा जाना, फोडा जाना ।

उ०—काळ लकाळ करठाळ जडियो कमध, वहै विकराळ रगताळ  
वाई । भेद छकडाळ चगताळ चूनाळ मिद, ताळ गी भाळ भर  
धरण ताई ।—गु रु व

२ घायल होना ।

३ रिसना ।

४ छिद्रित होना ।

उ०—जडकत सेल भिदें जरदाळ, कडकत कध वहै किरमाळ ।  
दादो जिण 'गोवरवन्न' दुभाल, डाहै 'गजसाह' अगं गजदाल ।

—सू प्र

भिदणहार, हारो (हारी), भिदणियो—वि० ।

भिदियोडो, भिदियोडो, भिदयोडो—भू० का० कु० ।

भिदीजणो, भिदीजवो—भाव वा० ।

भिदावणो, भिदाववो—क्रि० स० [भेदणो क्रि० का प्रे० रु०] भेदन  
करवाना, भेदने का कार्य करवाना ।

उ०—उठता अगा कध कोदड आणो, त्रिवरणी उरें होइकै वर  
ताणी । नचें थुग थेई रचें भेद न्यारा, भिदावें खळा है दळां वेग  
भारा ।—व भा

भिदावणहार, हारो (हारी), भिदावणियो—वि० ।

भिदावियोडो, भिदावियोडो, भिदाव्योडो—भू० का० कु० ।

भिदावीजणो, भिदावीजवो—भाव वा० ।

भिदावियोडो—भेदन करवाया हुआ, भेदने का कार्य करवाया हुआ ।  
(स्त्री० भिदावियोडो)

भिदि—देखो 'भेद' (रु भे)

उ०—दासी पूछि भिदि करी, तहो ग्रण्य कुण कुहु वाणी खरी ।  
वाहुक कहि नल' नु सारथि, वारस्त्रोय बीजु ते रथी ।—नळाव्यान

भिदियोडो—१ छेदा हुआ, फूटा हुआ ।

२ घायल हुआ हुआ ।

३ रिसा हुआ ।

४ छिद्रित हुआ हुआ ।

(स्त्री० भिदियोडो)

भिदियो—वि०—छिद्रित, छिद्रपूर्ण ।

उ०—आखा ज्यू सर बाण ऊळळें, भिदियो सोण स कूकू भाळ ।  
बीजें 'अखें' छेह्वा वाधा, त्रिविध घड हुता रणताळ ।

—भोजराज कवि

भिदुर—स० पु० [स० भिदिर, भिदुर] वज्र । (डि को, ना मा)

भिन—१ देखो 'भिन' (रु भे)

उ०—किडकी कारायण कनफडियां फूटी, तिडगी तारायण सो  
पुरसा तूटी । प्रतिदिन मोलापड भिन-भिन पद पूजें, घोळा नीरण  
बिन जीरण जिम घूजें ।—ऊ का

२ देखो 'भणण' (रु भे)

भिनभिन-स० स्त्री०—मक्खियो द्वारा उडते समय किया जाने वाला शब्द या ध्वनि ।

रू० भे०—भिए भिए ।

भिनभिनाड—देखो 'भिन भिन' (रू. भे.)

रू० भे०—भिएभिएाट ।

भिनभिनाणो, भिनभिनावी—कि० अ०—१ मक्खियो द्वारा उडते समय भिन भिन शब्द करना ।

२ देखो 'भिएभिएाणी, भिएभिएावी' (रू. भे.)

भिनभिनाणहार, हारो (हारी), भिनभिनाणियो—वि० ।

भिनभिनायोडो—भू० का० कृ० ।

भिनभिनाईजणो, भिनभिनाईजवो—भाव वा० ।

भिनभिनायोडो—भू० का० कृ०—भिन भिन शब्द हुवा हुआ (मक्खी) (स्त्री० भिनभिनायोडी)

भिन-स० पु० [स० भिद्] १ किसी चीज का खण्ड या टुकड़ा ।

२ गणित में, किसी इकाई का छोटा अंश या खंड जो बटे के रूप में व्यक्त किया जाता है ।

ज्यू— $\frac{1}{2}$ ,  $\frac{1}{4}$  आदि ।

३ नीलम का एक दोष जिसके कारण पहनने वाले को पति, पिता, पुत्रादि का शोक प्राप्त होना माना जाता है ।

वि०—१ पृथक्, अलग, जुदा । (हिं. को)

उ०—वळ वळ खळ डरें वाघ वन वन रा, घोर किन्नरा वासी गाढाळ । भारी 'नवल' विहद भिन्न-भिन्न रा, दिन दिन रा क्रूरम दाढाळ ।—नवलसिंघ सेखावत री गीत

२ दूसरे प्रकार का, अलग तरह का ।

३ काट या तोड़कर अलग किया हुआ छिन्न भिन्न ।

४ विभाजित ।

५ अपने वर्ग के कुछ ओरों से अलग और विशेष प्रकार का ।

६ कोई अन्य, अपर, दूसरा ।

रू० भे०—भिन ।

भिन्नता-स० स्त्री०—१ भिन्न होने की अवस्था या भाव, अलगाव ।

२ भेद, अन्तर ।

भिन्नचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू. भे.)

भिभरणी, भिभरवी—देखो 'भीभरणी, भीभरवी' (रू. भे.)

भिभरणहार, हारो (हारी), भिभरणियो—वि० ।

भिभरिओडो, भिभरियोडो, भिभरयोडो—भू० का० कृ० ।

भिभरीजणो, भिभरीजवो—भाव वा० ।

भिभरियोडो—देखो 'भीभरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० भिभरियोडी)

भिभरो-स० पु०—कपाल, योपडी, ललाट ।

उ०—सासा मणकावै नासा निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरी

भररावै । पल पल पलका सू पडता परनाळा, मोटा मूगा री होठां मे माळा ।—ऊ. का

भिभळ-स० पु०—देखो 'विभळ' (रू. भे.)

भिभरणी, भिभरवी—देखो 'भीभरणी, भीभरवी' (रू. भे.)

उ०—१ डूडी री आदेस सुणता ई सगळें लोगा मे खलवळ माचगी । वात नै मावळ नी केवटी ती जाणै जैडो उत्पात मच जावैला । अकर भिभरियां पछै रया माथै आकस राखणी अणूतो दूभर है । —फुलवाडी

उ०—२ घणी ई भिभरया तो पछै दूजा सू काई साधो लागै । —फुलवाडी

भिभरणहार, हारो (हारी), भिभरणियो—वि० ।

भिभरिओडो, भिभरियोडो, भिभरयोडो—भू० का० कृ० ।

भिभरीजणो, भिभरीजवो—भाव वा० ।

भिभरियोडो—देखो 'भीभरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० भिभरियोडी)

भिभरिया-स० स्त्री०—क्रोधावेश ।

उ०—बादरा री वात सुणनै घणी ई जोस चढै घणी ई भिभरिया खावै पण पग को हालै नी ।—फुलवाडी

भिरग—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

भिरगसुत—देखो 'भ्रगुसुत' (रू. भे.)

उ०—'समद-सुतन, सुत-पवण, भिरग सुत ओखिद भित्त आपो ऊदार । ऊभो करो चियारै आवै, सुन विजमल खट वरन सवार । —ईसरदास वारहू

भिरगु—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

भिरगुलता—देखो 'भ्रिगुलता' (रू. भे.)

भिरड-स० पु०—तर्तिया, वरं । (शेखावाटी)

भिरडणी, भिरडवी—कि० अ०—१ कुपित होना, नाराज होना ।

उ०—आज तो खुसी मे बावळा होयनै श्री निजराणी कथल करू, पण जे कदैई नवाव ईस्टूखा किणी कारण सू भिरड गयो तो श्री निजराणी घणी मूघो पडैला ।—फुलवाडी

२ मसलना ।

उ०—प्रडथड भिरड भिरड भड अवभड, नवड भवड वड निवड नड । आवट कूटि तूटि कसणावटि, छूटि जडावटि कूटि छड ।—कल्याणदास राव

३ मारना ।

उ०—भागा केई पकडि किता भिरडिया, धरि सूरापण परा घख । सत्रदळ गजा ऊपर 'सगतो', पडियो जाणै जटा-पख ।

—सगता गीड री गीत

भिरडणहार, हारो (हारी), भिरडणियो—वि० ।



भिरडियोडो, भिरडियोडो, भिरडियोडो—भू० का० कु० ।

भिरडोजणो, भिरडोजबो—भाव वा० ।

भिरडियोडो—भू० का० कु०—१ कूपित हुवा हुआ, क्रोवित २ मारा हुआ, ३ मसला हुआ  
२ देखो 'भिरडियोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भिरडियोडो)

भिरडो—स० पु०—एक औजार विशेष जिससे वस्तु दोनो ओर से दवाई जाती है ।

भिराडो—वि०—साहसी, बहादुर ।

उ०—कासमीर मुखमण्डण माडी, तू समी जगि न कोई भिराडो ।  
गीतनादि जिम कोइल कूजड, तू पसाइ सवि कुतिग पूजइ ।

—सालिसूरि

भिरावो—देखो 'विरावणी' (रू भे)

उ०—'वल्लभ' कूप खिणायो वेडो, भरियो नीर भिरावो भेडो ।  
नीवँ तळी निकाल्यो नेडो, जिण रो आव नाव रँ जेडो ।

—ऊ का

भिलकि भूमि की दराड ।

उ०—वीरभद्रग वाज्या, जयदक्षक वाजी, समहर सामह्या, ग्रह-  
ग्रहतं श्रवक तरणं ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ भेरि भुगल तरणं  
भूभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी, काहल तरणं कोलाहलि कान  
कमकम्या ।—व स

भिलणी—देखो 'भोलणी' (रू भे)

उ०—म्हारी भिलणी हे ! भगता रँ वस हू रहू, म्हानं भगता रो  
भलो भाव, भिलणी हे ।—गी रां

भिळणो, भिळवो—क्रि० अ०—१ किमी एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ मे  
इस प्रकार मिश्रित हो जाना कि वे दोनो एकाकार हो जायें तथा  
एक दूसरे से अलग न किये जा सकें ।

उ०—पहिली मूकी फलहुल गली मूकी साकर दूधइ भिळी । मूवयां  
सरस गविल पकवान मूवयां आणी ऊन्हा घान ।—हीराणद सूरि  
२ पदार्थों का एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिलना कि उनका  
स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहे ।

३ युद्ध के प्रसंग मे कोई मोर्चा, किला या गढ़ या गाव शत्रु के  
अधिकार में चला जाना ।

उ०—१ घोडा तुरकीया राहदार उपर नाख पाखर दोना ही  
पाखतिया लगाय तरगस २ कूटा मारधा भडीया रो भोलावट हाथ  
माहे ले वरखी नै रांणी दहड चढी, सकत रूप धार । मार हाक  
कहियो, 'आज रा मोरचे मिळै ।' नै इम कहि नै लोह मेलीयो ।  
च्यार प्रहर लोह भिळियो ।—राजा नरसिंघ री बात

उ०—२ मोनू काय भूठी कही, हू ती पांहरो चाकर छू । तर  
बुरहान ही चढ साथे हुवो । चाटसू गया । फिळसो मिळै नही ।

—राव मालदे री बात

उ०—३ पछै राव चद्रसेन आसरळाई ऊपर आया, गाव वाळीयो ।  
गोपाळदास, कल्याणदास, रामी ती जैतारण था । नरहरदास अठे  
थो सु गाव भालियो । गाव भिळियो नही ।

—रावचद्रसेन री बात

उ०—४ भिलम टोप सूवो सिर भडियो, पटभर हू चूडामणि  
पडियो । करि जय वसे नगर मभि लसकर, घटके नह भिळियो  
वरियावर ।—सू प्र

उ०—५ चित्तोड भिळियो जद साढे तीन सै लुगाया रो जवर  
हुवो ।—वा दा ह्या

उ०—६ चाची मेरो लई, इण भात मास १२ वितित हुवा पिए  
गढ भिळण री बात काई नही ।—राव रिंगमल री बात

उ०—७ प्रगटा पडवेस सुपह साचरिया, वाजी हाक न कोई वळै ।  
वाला चद ऊठ अतुळी वळ, भोजराज गढ तूभ मिळै ।

—भोजराज रूपावत री गीत

४ किसी खेत मे खडी फसल का पशुओ द्वारा चरा जाना ।

५ फसल कटने के बाद श्रवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओ  
द्वारा चरा जाना ।

६ शस्त्र प्रहार होना ।

उ०—१ सखी अमीणा कथ रो, अग ढीलो आचत । कडी ठहक्की  
वगतरा, नडी नडी नाचत । नडी नाचै भिडै, छोह लोहा भिळै,  
ऊससै सुवप मुख मूछ भोहां मिळै । खगा उनगा पिसण पाडि ऊभो  
खडो, कहू इण भाति ढीलो सखी कथडो ।—हा भा

उ०—२ च्यार प्रहर लोह भिळियो । बडी लडाई हुई ।

—राजानरसिंघ री बात

७ युद्ध करना, लडना ।

८ सम्मिलित होना, शामिल होना ।

उ०—१ हिलता हिलता हाय भिळो मत दुख सु भाई, मिळ मुरदा  
मनवार करो मत बुरो कमाई ।—ऊ का

उ०—२ चमू अकवर लोक सचेळो, भिळियो खान तहवर भेळो ।  
ओपे जांण प्रलै अहनाणै एकठ महण थया दोय आणै ।—रा रू

उ०—३ भाग जिकै कूड मभि भिळिया, रहे तिकै जुग चाढे  
रूप । 'साह' सुतन 'सेवो' वड सावत, भाजै खग मुह धोया भूप ।

—मोहकमसिंघ मेढतियो

९ दडना ।

१० हाना ।

उ०—भूपति टोटा मे दीवाळा भिळिया, मोटा मोटा रा कुळ  
मुगता मिळिया । वाघं गाठडिया वडिया चग वाळै, राली गूदड  
लै कांघे पर राळै ।—ऊ का

११ पहुचना ।

उ०—म्है अवे काम आस्या । रजपूती रा रीजवारा नै । जीलै  
चढावस्या । सूरजमढलै भिळस्या ।—पना



१२ अपना दल या पक्ष छोड़कर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर होना ।

ज्यू—वो कांग्रेस में भिलणी है ।

उ०—नगर-सेठ बोल्या—तो थूं ईं आ कुचमादिया रै साथै भिलणयो ।—फुलवाडी

१३ ससर्ग के कारण जू आदि जन्तुओं का शरीर या कपड़ों में प्रवेश करना ।

उ०—भिल जाय जुवा लाखा भळे, लेऊ काई इण लाड में । परवात पीहर जास्यू परी, खावद पडज्यो खाड में ।—ऊ का

१४ नष्ट होना, नाश होना ।

१५ ज्योति में विलीन होना ।

भिलणहार, हारो, (हारी), भिलणियो—वि० ।

भिलाडणो, भिलाडवो, भिलाणो, भिलावो, भिलावणो, भिलाववो—प्रे रू

भिलिओडो भिलियोडो, भिल्योडो—भू० का० कृ० ।

भिलीजणो, भिलीजवो,—भाव वा० ।

भलणो, भलवो, भिलणो, भिलवो, भीलणो, भीलवो—रू० भे० भेळणो, भेळवो—सक० रू० ।

भिलणो, भिलवो—देखो 'भिलणो, भिलवो' (रू भे )

उ०—माहोमाही ले लसकर मिलिया, सनद्ध सकलिया । टकारव लागे नवि टलिया, भड सहु कोई भिलिया ।—वि. कु

भिलणहार, हारो (हारी), भिलणियो—वि० ।

भिलिओडो, भिलियोडो, भिल्योडो—भू० का० कृ० ।

भिलीजणो, भिलीजवो—भाव वा० ।

भिलाडणो, भिलाडवो—देखो 'भिलाणो, भिलावो' (रू. भे )

भिलाडणहार, हारो (हारी), भिलाडणियो—वि० ।

भिलाडिओडो, भिलाडियोडो, भिलाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भिलाडोणो, भिलाडोवो—कर्म वा० ।

भिलाडियोडो—देखो 'भिलायोडो' (रू भे )

(स्त्री० भिलाडियोडी)

भिलाणो, भिलावो—क्रि० सं० [भिलणी क्रि० का प्रे० रू०] १ किसी एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित कराना कि वे दोनों एकाकार हो जायें तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकें । २ पदार्थों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित करवाना कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहे ।

३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव शत्रु के अधिकार में करवाना ।

४ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चरवाना ।

उ०—चेतो तो थाने राखणी चाहिजे के किणी रा ऊभा खेत नै कीकर भिलावा ।—फुलवाडी

५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस चारा आदि पशुओं द्वारा चरवाना ।

६ शस्त्र प्रहार करवाना ।

७ युद्ध कराना, लड़ाना ।

८ सम्मिलित कराना, शामिल कराना ।

९ तुड़वाना ।

१० करवाना ।

११ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी दल या गुट में शामिल होने को प्रवृत्त करना ।

१२ पट्टवाना ।

१३ किसी दल या पक्ष को छुड़ाकर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर होने में प्रवृत्त करना ।

१४ नष्ट कराना, नाश कराना ।

उ०—खेत री खाली तो उण री जलम भिलाय दियो ।

—फुलवाडी

१५ ससर्ग के द्वारा जू आदि जन्तुओं का शरीर या वस्त्रों में प्रवेश कराना ।

१६ ज्योति में विलीन करना ।

भिलाणहार, हारो (हारी), भिलाणियो—वि० ।

भिलायोडो—भू० का० कृ० ।

भिलाईजणो, भिलाईजवो—कर्म वा० ।

भिलाडणो, भिलाडवो, भिलावणो, भिलाववो, भीलाडणो, भीलाडवो, भीलाणो, भीलावो भीलावणो, भीलाववो—रू० भे० ।

भिलायोडो—भू० का० कृ०—१ कोई एक दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित कराया हुआ कि वे दोनों एकाकार हो गए हो तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकें । २ पदार्थों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित कराया हुआ कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना हुआ हो ३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव शत्रु के अधिकार में करवाया हुआ ४ पशुओं द्वारा खड़ी फसल चरवाया हुआ (खेत) ५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि चरवाया हुआ ६ शस्त्र प्रहार करवाया हुआ, भिडवाया हुआ ७ युद्ध कराया हुआ, लड़ाया हुआ ८ सम्मिलित कराया हुआ, शामिल कराया हुआ ९ तुड़वाया हुआ १० करवाया हुआ ११ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी दल या गुट में शामिल करवाया हुआ १२ किसी दल या पक्ष को छुड़ाकर गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर किया हुआ १३ पट्टवाया हुआ १४ नष्ट कराया हुआ, नाश कराया हुआ १५ ससर्ग के द्वारा जू आदि जन्तुओं का शरीर या वस्त्रों में प्रवेश कराया हुआ १६ ज्योति में विलीन किया हुआ (स्त्री० भिलायोडी)

भिलाळ—स० पु०—भीलो का समूह ।

उ०—धुरजाल कुदाळ अगार घखै, नह डाळ भिलाळ भालोड नखै ।

बलिया दल दोय वजै वगडो, जिदराव सो 'पाल' सजै भगडो ।

—पा प्र

भिलावी—स० पु० [स० भल्लातक] १ उत्तरी भारत के तराई क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक जंगली वृक्ष जिसके फल जामुन के आकार के लाल रंग के होते हैं तथा जो सूखने पर काले और चिपटे हो जाते हैं । (अमरत)

२ उक्त वृक्ष का फल जो औषध के काम आता है ।

रु० भे०—भिलावी ।

भिळावणो, भिळाववो—देखो 'भिळारो, भिळावो' (रु भे)

भिळावणहार, हारो (हारो), भिळावणियो—वि० ।

भिळाविओडो, भिळावियोडो भिळायोडो—भू० का० कृ० ।

भिळावीजणो, भिळावीजवो—कर्म वा० ।

भिळविओडो—देखो 'भिळायोडो' रु भे )

(स्त्री० भिळविओडो)

भिळियोडो—भू० का० कृ०—१ कोई एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित हुवा हुआ कि वे दोनों एकाकार हो गए हो तथा एक-दूसरे से अलग न हो सकते हो । २ कोई पदार्थ एक-दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित हुवा हुआ हो कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व घना हुआ हो ३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, ४ किला, गढ़ या गाव शत्रु के अधिकार में हुवा हुआ ४ पशुओं द्वारा चरा हुआ (खेत) ५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास फूस चारा आदि पशुओं द्वारा चरा हुआ (खेत) ६ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ ७ युद्ध हुवा हुआ, लड़ा हुआ । ८ सम्मिलित या शामिल हुवा हुआ, मिला हुआ ९ टूटा हुआ १० हुवा हुआ ११ किसी लक्ष्य-प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी दल या गुट में शामिल हुवा हुआ १२ किसी दल या पक्ष को छोड़कर गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर हुवा हुआ १३ नष्ट हुवा हुआ नाश हुवा हुआ १४ ससग के द्वारा जू आदि जन्तुओं का शरीर या वस्त्रों में प्रवेश हुवा हुआ

(स्त्री० भिळियोडो)

भिलियोडो—देखो 'भिळियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भिलियोडो)

भिलियो—देखो 'बिल्लो' (अल्पा, रु भे)

भिले—देखो 'भिले' (रु भे)

उ०—अलख अजोनी आतमा, अचळ अनूप अनंत । तू मारै तारै तू ही, भिले-भिले भगवत ।—ऊ का

भिल्ल—देखो 'भील' (रु भे)

उ०—१ राई गाई चरती सवि वाली, भिल्ल ने दलि घुरा बलि भाली । ऊस ना वदनि सासु न माइ, ग्वाल बाल पुर सांम्हा घाई ।

—सालिसूरि

उ०—२ आखि राति, हाथि काती, हाथि सुणही, वीजइ घणुही, इसी भिल्ली ।—व स.

(स्त्री० भिल्ली)

भिल्लो—देखो 'बिल्ली' (रु भे)

भिस—अव्यय [स० भृश] अत्यधिकता से, प्रचंडता से, बहुतायत से ।

भिसक, भिसज—स० पु० [स० भिषज] १ वैद्य, हकीम, चिकित्सक । (हि को)

भिसट—देखो 'भ्रस्ट' (रु भे)

उ०—१ साह इगलस धान के रजवाट सराई, कवराजा मौजा करै लख पटा लटाई । हुइया भिसट हरामखोर धम साम सवाई, जुजुठल हरचद जेहूँ 'फन' भोज कहाई ।—मोडजी आसियो

भिसटो—देखो 'विस्टो' (रु भे)

३ जतु मखे अथवा जळै, कै पडियो रह जाय । किन भिसटा भसमी क्रमी, इण नर तन सू थाय ।—वा दा

उ०—२ अण भजिया भजिया तरणी, दीखै प्रतख दुसाळ । भिसटा तो वायस भखै, मोती भखै मराळ ।—र रु.

भिसत—देखो 'वहिस्त' (रु भे)

उ०—१ अक सुरपति हसत अणुदत भिसत हलका अवत मदमत । बणत धण दुति भस्त वरसत, दान धप अवदात ।

—महाराव हणूतसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ असुर तरणी दल बळ ऊखेळू भिसत काय जमद्वारा भेळू । ओ कहि असुर न दिया अरावा, ओ हिज दिये करा तजि आवा ।

—सू प्र

भिसति, भिसतो—१ देखो 'वहिस्त' (रु भे)

उ०—पायी बडे फतै खेत लोहडै भिसति पायी, किलमा घपायी घडा वेहडा केवाण । आजमा उमाही ऊमा आलमा न घरे आयी, पछै आयी पातिसाही कुमायी प्रमाण ।—साहिजादा री वेढ री गीत २ देखो भिस्ती' (रु भे)

भिसम—देखो 'भीस्म' (रु भे)

उ०—बाहन धारै भिसम नादियो, गौरा के भरतारा । आक घतूरा को भोग लगत है, विस का करी अहारा ।—मीरा

भिसणी, भिसिणी—देखो 'ध्यसनी' (रु भे)

भिस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रु भे)

उ०—१ वो तिणकलो तो म्हारी मती ई भिस्ट कर दी ।

—फुलवाडी

उ०—२ छाती माथा कूटती कै'वण लागी—हे भगवान, इत्ता दिन म्हें किण री पूजा करी ! म्हारी तो घरम ई भिस्ट व्हेगी ।

—फुलवाडी

उ०—३ ऊमर में कदै ई माया री परम नी करघी जकी धारै गिया पछै हाथ लगाय भिस्ट व्हेणी पडघी ।—फुलवाडी

भिस्टो—देखो 'विस्टो' (रु भे)

भिस्त—देखो 'वहिस्त' (रु भे)

उ०—१ तिहा आखी बैठा तुरत, सबल साथ सु साहि । चितइ मानव लोक मे, आणी भिस्त अल्लाह ।—प च चौ

उ०—२ जलता है आराम वदन का, किर गिलारी सराह का । इतना जोर रमराज है सिर, भिस्त तो क्या था सिपाही ।

—रसीलौराज

भिस्तनसीन—स० पु० [फा० वहिस्त+नसीन] स्वर्गवास, देहावसान ।

उ०—पीछे स० १७१६ पातसाह साजिहानजी भिस्तनसीन हुवा ।

—द दा

भिस्ती—स० पु० [फा० वहिस्ति] १ मुसलमानों के अन्तर्गत एक जाति विशेष जो मसक के द्वारा पानी ढोने का कार्य करती है ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति, सक्का ।

उ०—ग्रैंक दिन भिस्ती रै ती कोई काम थी, अर भिस्ती री लुगाई पातसाह वास्त खानो लेय आई ।—साई री पलक मे खलक रु० भे०—भिसती ।

भिहांणी—स० स्त्री०—किसान व खेतीहर मजदूरो के खेतों में रहने का मकान या भोपड़ा ।

उ०—एता कमाम लै अगोणी भूमि आया, जादू की भिहांणी दाव-लेणिया कहाया ।—शि व

भौग—१ देखो 'भौगी' (मह, रु भे)

२ देखो भौगी' (मह, रु भे)

भौगणी, भौगवी—देखो 'भौजणी, भौजवी' (रु भे)

भौगणहार, हारी (हारी), भौगणियो—वि० ।

भौगिओडो, भौगियोडो, भौग्योडो—भू० का० कु० ।

भौगीजणी, भौगीजवी—भाव वा० ।

भौगियोडो—देखो 'भौजियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भौगियोडी)

भौगी—स० स्त्री०—वर्षा ऋतु के बाद एवं शरद ऋतु के प्रारम्भ में पाया जाने वाला एक कीट विशेष जिसकी गर्दन पर हरे रंग का चमकदार ठोस आवरण (पदार्थ) होता है ।

उ०—१ भौगी री गळाई उणरी रीटो नाक राती लाल व्हेगी ।

—फुलवाडी

रु० भे०—भौगी ।

मह०—भौग ।

भौगोणी, भौगोवी—देखो 'भौजोणी, भौजोवी' (रु भे)

भौगोणहार, हारी (हारी), भौगोणियो—वि० ।

भौगोयोडो—भू० का० कु० ।

भौगोईजणी, भौगोईजवी—कर्म वा० ।

भौगोयोडो—देखो 'भौजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० भौगोयोडी)

भौगोवणी, भौगोववी—देखो 'भौजोणी, भौजोवी' (रु भे)

भौगोवणहार, हारी (हारी), भौगोवणियो—वि० ।

भौगोवियोडो, भौगोवियोडो, भौगोव्योडो—भू० का० कु० ।

भौगोवीजणी, भौगोवीजवी—कर्म वा० ।

भौगोवियोडो—देखो 'भौजोयोडो' (रु भे)

(स्त्री० भौगोवियोडी)

भौगी—स० पु०—भौगी नामक कीट के गर्दन पर का ठोस हरे रंग का चमकीला आवरण जिसे ग्रामीण स्थियां अपने आभूषणों एवं लड़कियां गुड़िया सजाने में काम में लेती हैं ।

उ०—ईंढी कवडाळी माथे पर ओडी, छैली अलकावळ मुखई पर छोडी । भणकें भालरियो भूमरिया भटकें, लूमी भौगां री खूणी तळ लटकें ।—ऊ का

रु० भे०—भौगी । मह०—भौग ।

भौच—स० पु० [स० अभ्यञ्च] १ योद्धा, सुमट ।

उ०—१ कीयो रामायण लक कुरखेत भारथ कीयो, ओय कोइ पेखियो भौच ग्रैही । शिनयण तरण नारद पूछे ग्रिण्हे, कही भगवत 'भगवत' केही ।—दुरसो आढो

उ०—२ बड चापावत 'वलू', कमध 'भाऊ' कूपावत । अवर भौच उमराव, रोस भरिया बहु रावत ।—सू प्र

रु० भे०—भौछ, भौच ।

मह०—भौचरड ।

भौचणी, भौचवी—क्रि० म०—१ बलपूर्वक किसी प्राणी या वस्तु को दवाना, सकुचित करना ।

ज्यू—भीड में भीचीजणी ।

उ०—१ जोर सू चिमटी भौचतां ईं जू री पिदडको निकळग्यो । —फुलवाडी

उ०—२ वीं जोर सू नखा नै भौचिया । लोई री तूताडियां छूटण लागी ।—फुलवाडी

२ सम्पुटावस्था में करना, बन्द करना ।

उ०—१ मुड मुड पडतोडी आखडियां मीचें, भूखां मरतोडी मूठडियां भौचें । सीधी सैणी सी मैणी सुण माल्हे, बैसक पुरबमणो हसणी तजि हालें ।—ऊ का

उ०—२ रेसम री जात कवळा केस, गुलावी नख । बघ्योडी मूठघा में जाणें आखी दुनिया ईं भौच्योडी ।—फुलवाडी

उ०—३ डोकरी भौचनें मूडी वद कर लियो । नीचला होठ में उण री दात गडग्यो ।—फुलवाडी

३ आवेश या क्रोध में दांतों को पीसना ।

४ मूर्छावस्था में दांत जुड़ जाना ।

५ कुपणता करना, कजूसी करना ।

भौचणहार, हारी (हारी), भौचणियो—वि० ।

भौचिओडो, भौचियोडो, भौच्योडो—भू० का० कु० ।

भौचौजणी, भौचौजवी—कर्म वा० ।

भौजणी, भौचवी—रू० भे० ।

भौचरड—वि०—१ काटने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—घुघर घण्ण कीरति घर घण, राम हेक गजवाग रत ।

भुजळक दत सथ तरा भौचरड, 'मेघ' तणी हसती मसत ।

—महाराज छत्तरसिंघ री गीत

२ देखो 'भौच' (मह, रू भे)

भौचियोडी—भू० का० कृ०—१ बलपूर्वक किसी प्राणी या वस्तु को दबाया हुआ. २ सम्पुटावस्था मे किया हुआ, बन्द किया हुआ ३ आवेश या क्रोध मे दातो को पीसने की अवस्था मे हुआ हुआ ४ मूर्छाविस्था मे दातो का जबड़ा जुड़ा हुआ. ५ कुपणता या कजूसी किया हुआ  
(स्त्री० भौचियोडी)

भौछ—देखो 'भौच' (रू. भे)

उ०—असुरा पठई एक मड घाया, एक पड्ठा मेल्हाणि । मारी म्लेछ भौछ बलवता, वान छोडाव्या प्राणि ।—कां दे प्र

भौज—देखो 'भौज' (रू भे)

भौजण—देखो 'भौजण' (रू भे)

भौजणी, भौजवी—देखो 'भौजणी, भौजवी' (रू भे)

भौजणहार, हारो (हारो), भौजणियो—वि० ।

भौजियोडी, भौजियोडी, भौजियोडी—भू० का० कृ० ।

भौजौजणी, भौजौजवी—भाव वा० ।

भौजिया—स० पु०—छोटे बच्चो का मूत्र ।

भौजियोडी—देखो 'भौजियोडी' (रू भे)

(स्त्री० भौजियोडी)

भौजोणी, भौजोवी—देखो 'भौजोणी, भौजोवी' (रू भे)

भौजोणहार, हारो (हारो), भौजोणियो—वि० ।

भौजोयोडी—भू० का० कृ० ।

भौजोईजणी, भौजोईजवी—कर्म वा० ।

भौजोयोडी—देखो 'भौजोयोडी' (रू भे)

(स्त्री० भौजोयोडी)

भौजावणी, भौजाववी—देखो 'भौजावणी, भौजाववी' (रू भे)

भौजावणहार, हारो (हारो), भौजावणियो—वि० ।

भौजावियोडी, भौजावियोडी, भौजावियोडी—भू० का० कृ० ।

भौजावौजणी, भौजावौजवी—कर्म वा० ।

भौजावियोडी—देखो 'भौजावियोडी' (रू भे)

(स्त्री० भौजावियोडी)

भौट—स० स्त्री०—१ छुआछूत का दोप ।

उ०—१ भळे न उतरे भौट, घीठ जद सीस धुणावै । प्रात भाट पादरी, साट पावडा सुणावै ।—ऊ का

उ०—२ खेतर खुली रैवै, मिनख पछी पमु पीवै । आखी जीया जूण, जगत री जळ सू जीवै । भौट भावना अठै, पळीडी काची कालर । बळायी अर वामण भरै, सघट तट पालर ।—दसदेव  
२ देखो 'भौट' (रू भे)

भौटको—देखो 'भौट' (अल्पा, रू भे.)

भौटणी, भौटवी—कि० स०—१ अस्पश्यं वस्तु को स्पर्श करना, छूना ।

२ पाम नही फटकना, नितान्त अभाव होना ।

उ०—पाली पढतोडी वरुणालय बीटै, भाळी कढतोडी करुणा नहि भीटै । राता मोटी व्है दिन छोटा रोवै, हाथा पावा रा खोटा दिन होवै ।—ऊ का

३ देखो 'भौटणी, भौटवी' (रू भे)

भौटणहार, हारो (हारो), भौटणियो—वि० ।

भौटियोडी, भौटियोडी, भौटियोडी—भू० का० कृ० ।

भौटीजणी, भौटीजवी—भाव वा०/कर्म वा० ।

भौटणी, भौटवी, भौटणी, भौटवी—रू० भे० ।

भौटारी—देखो 'भौटारी' (रू भे)

भौटियोडी—भू० का० कृ०—१ अस्पश्यं वस्तु को स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ २ पास नही फटका हुआ, नितान्त अभाव हुआ हुआ ३ देखो 'भौटियोडी' ।

(स्त्री० भौटियोडी)

भौटारी—स० पु० [दे०] भडवेरी के छोटे ढेरो (भौटो) को एकत्रित कर बनाया हुआ बड़ा ढेर ।

उ०—श्रेक दिन वो जगळियो हरख सू खाका पिदावती राजकवर नै ववाई दी के जैसाणी री सीव सू पद्रह कोस उरली वाजु श्रेक श्रेह मे भीटोरा रै उनमान माच्योडी सूवर आपरी भूइण अर चार रेढा साथै मछरा करै हे ।—फुलवाडी

रू० भे०—वीटोरी, भौटारी, भौटहरी, भौठहरी, वीटोरी ।

भौडली—देखो 'भौड' (अल्पा, रू. भे)

उ०—भार का गधा, कुमार का नाय, विणजारा का बहल, भौडली गाय, चोदुवा का चायक, चुगलू का भीत, कायर का कळम, भागलू की भीत ।—दुरगादत्तजी वारहठ

भौडियो—वि०—छोटे २ सीमो वाला बेल ।

(स्त्री० भौडो)

भौडी—देखो 'भौडी' (रू भे)

उ०—१ चौसासा रा दिन हा, तो ई सेठ-सेठाणी साळ री आगळ जडनै माय सूवता । भौडी डाक नै चोरा रै आवण री सळवळ सुणी तो दोनू ई जाणै जित्ता डरिया ।—फुलवाडी

उ०—२ पण तुगला विना उण री जीव को लाग्यो नी । वा उठै ई भौडी माथै वंटी री ।—फुलवाडी

भौत—देखो 'भौत' (रू भे)

उ०—१ साधा जोड़ साधडा, साधा तोड़ सग। दरसण दे लेवे  
दिरव, आदा भौत अनग।—ऊ का

उ०—२ कनक महल छाजा-कनक, कोट कागरा भौत। सबहि के  
इकसारसे, ब्रह्मपुरी की रीत।—गजउद्धार

भौतडी—स० पु० (व व भौतडा) १ गृह, मकान, भवन।

उ०—चेजा चाढ बघ चौरासी, घरिया अहल कहल गुण धोड।  
जाग्र नही दीहड़ जातै, गीता तरणा भौतडा गोड।

—अनिरुद्धसिंघ गोड री गीत

२ देखो 'भौत' (मह, रु भे)

उ०—१ हुवै ध्रोह आडग नै मोत वादल जुही, सार जट लगी  
रावत समीमी। उरड पडियो मुरड 'पातला' ऊपरै, भौतडा पुराण  
जैम 'भीमो'।—भीम गेहलोत री गीत

उ०—२ कळी सेत वन पाळटै पडै कळस, खसै खुभी हुवै मडप  
खागो। भौतडा भाजि ढहि जाइ घरती भिळै, गीतडा नह जाय  
कहै 'गागो'।—राव गागो

रु० भे०—भौतडी।

भौतर—देखो 'भौतर' (रु भे)

उ०—१ ऐसी पीर विरह तन भौतर, जागत रैन विहानी। ऐसा  
वैद मिलै कोई भेदी, देस विदेस पिछानी।—मीरा

उ०—२ इतर मे अँ सरदार भौतर नू गया। राजूखा ऊठ साम्हो  
आय नै मिलयो।—सूरेखीवै काधलोत री वात

उ०—३ गावा गावा मे गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह भौतर चीते-  
रण चाती। गावड ढावडका भावण गुण गाता, गाया गरभाती  
गोरी गरवाता।—ऊ का

भौतहर—देखो 'भौतिहर' (रु भे)

वि० [सं० भौत+हर]—भय को हरने वाला, भयहारी।

भौति—१ देखो 'भौत' (रु भे)

उ०—घरि घरि कै विसै भौति हीगुलु री गारि सो लीपै छै।  
फिटक की ईटा सो भाति चुणै छै।—वेलि

२ देखो 'भौतर' (रु भे)

भौतियो—स० पु०—१ मिट्टी को कच्ची दीवार पर बनी घास-फूस की  
छोटी झोपडी।

२ खपरैल के मकान मे नेव (छाजन) को सहारा देने वाला  
लकडी का डडा।

रु० भे०—भौतियो।

भौदणो, भौदवो—देखो 'वीधणो, वीधवो' (रु भे)

भौदणहार, हारो (हारी), भौदणियो—वि०।

भौदियोडो, भौदियोडो, भौदघोडो—भू० का० कृ०।

भौदीजणो, भौदीजवो—कर्म वा०।

भौदियोडो—देखो 'वीधियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भौदियोडी)

भौनणो, भौनवो—१ देखो 'भौनणो भौनवो' (रु भे.)

२ देखो 'भौजणो, भौजवो' (रु भे)

उ०—मूछा सेडे माय भरी, चिपके भौनोडो। अगली कोई उधडी  
कठण, कमज्या कीनोडी।—ऊ का.

भौनणहार, हारो (हारी), भौनणियो—वि०।

भौनिओडो, भौनियोडो, भौन्योडो—भू० का० कृ०।

भौनीजणो, भौनीजवो—कर्म वा०।

भौनियोडो—१ देखो 'भौनियोडो' (रु भे)

२ देखो 'भौजियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भौनियोडी)

भौनो—देखो 'भौनो' (रु भे)

(स्त्री० भौनी)

भौभर—स० पु०—१ सिर, मस्तक।

२ क्रोध, गुस्सा।

३ वर्षाकालीन एक जन्तु, फीगुर।

रु० भे०—वीभर, भीमरी।

भौभरी—देखो 'भीभर' (३) (रु भे)

उ०—भौभरि भमती लीहवड, स्रावण नी चकचाल। उहा मिर  
तिठा अभी यमड, विरुदणी आ मन काल।—मा का प्र

भौभरणो, भौभरवो—क्रि० स०—१ क्रोध करना, गुस्से होना।

२ लाक्षणिक अर्थ मे विखरना।

भौभरणहार, हारो (हारी), भौभरणियो—वि०।

भौभरिओडो, भौभरियोडो, भौभरघोडो—भू० का० कृ०।

भौभरीजणो, भौभरीजवो—भाव वा०।

वीभरणो, वीभरवो, भौभरणो, भौभरवो, भौभरणो, भौभरवो,  
भौभरणो, भौभरवो, भौभरणो, भौभरवो—रु० भे०।

भौभल, भौभल—स० पु०—महोत्सव।

उ०—पथमादि आग वसत पाचिम राग फाग परीखिये। हित धाम  
धाम धमाळ सुख हुय उरव भौभल ईखिये।—रा रु

१ देखो 'विभल' (रु भे)

२ वि० स्त्री०—मुग्धा।

उ०—मघर वांणि बोलि भौभली, करइ विलास ते प्रेम आकुली।  
लाया बोल ते बोलइ वयरो, रतिपति रमीइ पूनमरयणि।

—प्राचीन फागु-संग्रह

(स्त्री० भीमली)

भीमक—देखो 'भीमक' (रु भे)

भीमगरु—स० पु०—भीम का पुत्र।

भीयाडो—स० पु०—भैस का चमडा।

भीयो—स० पु०—१ वह वास जिस पर जुलाहे लोग करछी की लम्बाई  
से बड़ा हुआ ताने का सूत लपेट कर रखते हैं।

२ देखो 'भीम' (अल्पा, रु भे)

भोंव—देखो 'भीम' (रु भे)

उ०—१ जरासिंह सिसुपाळ कहा, दूसासण कहा भोंव । कँरुदळ पाढो कहा, खगा जु पढती सीव ।—ह पु. वा

उ०—२ घटि घटि नारद घटि २ राम, आनदरूप सकळ घटि आन । घटि घटि घू देखो घरि ध्यान, घटि घटि भोंव भरथ उनमान ।—ह. पु वा

उ०—३ यौ वीरारस आगळा, भड नवकोट दुवाह । भेख 'अरज्जण' भोंव भड, देख अकव्वर साह ।—रा. रु

भोंवराज—देखो 'भीमराज' (रु भे)

भो—अव्यय [स० अपि] १ निश्चय रूप से, अवश्य, जरूर ।

ज्यू—मैं भी गाव जाऊला ।

२ अधिक, ज्यादा ।

ज्यू—आ दवाई और भी अच्छी है ।

३ औरों के अतिरिक्त, साथ या सिवाय ।

उ०—वेद सास्त्र और पुराण री विचार ओहीज है, सिद्ध और मुनि भी यू कैव है, और इण में सका भी नी है कै जिण रै ऊपर रांम क्रपा करन देखे उणनै विमुद्ध सत परा मिलै है ।

—कर्नल ठा श्री श्यामसिंह राठीड

४ फिर, पुन ।

उ०—भरइ, पलटइ, भी भरइ, भी भरि, भी पलटेहि । ढाढी हाथ सदेसडा, घण विललती देहि ।—ढो मा

५ धिक्कारात्मक अर्थ में बुरा, निर्लज्ज या अनुपयुक्त ।

उ०—ताहरा प्रथीराजजी कछो—फिट रं भादैवाळा ! भी हाडी चाटी ।—नैणभी

६ तक या पर्यन्त ।

७ कई स्थान पर केवल जोर देने के लिए विशेषत किसी में अनुपयुक्तता दिखाई देने पर प्रयुक्त शब्द ।

ज्यू—आप भी कंडी वाता करो ।

रु० भे०—'वी' ।

भोअ—देखो 'वी' (रु भे)

भीउ—देखो 'भीम' (रु भे)

भीक—देखो 'भिक्षा' (रु भे)

उ०—१ घर घारी घवरायनै, भणिया मागे भीक । नाणो ले प्रमु नाव री, ठरे काळजी ठीक । श्री३म् हृदयम् ।—ऊ का

उ०—२ गावें मुख हरजस गोपाळ, मुद्रा छाप तिलक गळ माळ ।

मांगे भीक फिर दळ माह, राति पडे न लागे राह ।—रा रु

भीकण—देखो 'भिक्षुक' (रु भे)

उ०—ढीढवाण सांभ र सहेतां भजमेरा डड, नाळनोळ डडे खडे

उछडे नीहार । दिली रा नायवा डडे अडडा लगावें डड, भीकणा न डडे भीक न मेली भडार ।—महाराजा अजीतसिंह री गीत

भीकम—स० पु०—१ वह पुरुष जिसका लिंग कटा हुआ हो । (मा म )  
२ देखो 'भीस्म' (रु भे)

रु० भे०—भीखम, भीसम ।

भीकमचादी—स० स्त्री०—पुरुष के लिंग को काटने की क्रिया । (म मा )

रु० भे०—भीखमचादी, भीसमचादी ।

भीकमपचक—देखो 'भीखमपचक' (रु भे)

भीख—देखो 'भिक्षा' (रु भे)

उ०—१ सुसीख हेति सीखकै, तमाम तीख आत मै, भले सरीक ईख के, न भीख मागते भमै ।—ऊ का

उ०—२ नाहर जो गाजिस नही, अँ गज वहता ईख । सर सर कमळ सुगध री, भमर न मागिस भीख ।—वा दा

उ०—३ मारग री मगती हू, म्हनै राजा रा मै'ला सू काई लैणी-दैणी नी । भीख दैणी है तो अठै ई दे दो ।—फुलवाडी

२ देखो 'वीख' (रु भे)

उ०—इतरी सुण कुवरसी खुम हाळ सू लावी लावी भीख भरी ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ तद नीठ घोडो पाखो वाल भीखा लगाईयो ।

—मारवाड रा अमरावां री वारता

भीखक, भीखग—देखो 'भिक्षुक' (रु भे)

उ०—१ रति अनुकूल विलास घणा रळियामणा । भीखग दीसै इंद्र लिवू हू भामणा ।—वां दा

उ०—२ 'चदण' चदण वीटियी, अन भीखग उरगाह । इण कारण आया नही, चारण पखी तांह ।—वा दा

भीखण—देखो 'भीमण' (रु भे)

उ०—अनमी आटीला थळिया थळवाळा, विपदा वाटीला वळिया वळ वाळा । दुरजय दीखण मे निरभय दिन दूट्हा, भीखण दुग्भिल मे भुजवळ नह भूला ।—ऊ का

भीखणो, भीखबो—क्रि० स० [स० भिक्षु+रा० प्र० णो] भीख मागना, याचना करना ।

उ०—१ पूज चढावि म पत्थरि, मूकी संभू महेम । भीखारी भीखण गयु, को जाणइ कुण देसि ।—मा का प्र

उ०—२ ऊचा नीचां मे आगळ नह ईवै, भागल भकभूरा भेळा भड भीखे । मगण मगण सू पद पद रद पीसै, हूमा दैमोतां दळ ओमळ दीसै ।—ऊ का

भीखणहार, हारो (हारी), भीखणियो—वि० ।

भीखिओडो, भीखियोडो, भीखोडो—भू० का० कृ० ।

भीखीजणो, भीखीजवो—कर्म बा० ।



भीखम—१ देखो 'भीखम' (रू भे) (डि को)

उ०—१ अरजण वाण जिसी आखाडै, गज खग भाडै गीत गवाडै ।  
'अखी' 'रिदावत' रावत एही, जोखम विरिया भीखम जेही ।

—रा रू

उ०—२ रुखमणीजी कठ भाई रुकमइयो । सो राजा भीखम सो  
अरु माता सु कहै छै । जु मुनै तो इह अकल उपजै छै ।—वेलि  
२ देखो 'भीकम' (रू भे)

भीखमआठम—स० स्त्री० यो० [स० भीष्म+अष्टमी] भाष शुक्ला अष्टमी ।

भीखमक—देखो 'भीष्मक' (रू भे)

उ०—दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति, पुर दीपति अति  
कूदणपुर । राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर अमुर  
सुर ।—वेलि

भीखमचादी—देखो 'भीकमचादी' (रू भे)

भीखमपचक—स० स्त्री० [स० भीष्म+पचक] कातिक शुक्ला एकादशी  
से पूर्णिमा पर्यन्त पाच दिवस ।

वि० वि०—वैष्णव सम्प्रदाय वाले इन पाच दिनों को बहुत पवित्र  
मानते हैं तथा इन दिनों में तीर्थाटन एवं व्रतादि करते हैं ।

रू० भे०—पचभीख, पचभीखण, पचभीखम, भीकमपचक, भीसम-  
पचक ।

भीखारी—देखो 'भित्तारी' (रू भे)

उ०—भीखारी भमता फिरइ, ऊन्हा-जिमा कहावि । थान-विहूणउ  
तु थयु, अलवेसर आहा आवि ।—मा का प्र

भीखियोडो—भू० का० कृ०—भीख मागा हुआ  
(स्त्री० भीखियोडो)

भीगणो भीगवो—देखो 'भीजणो, भीजवो' (रू भे)

भीगणहार, हारो (हारी), भीगणियो—वि० ।

भीगिओडो, भीगियोडो, भीग्योडो—भू० का० कृ० ।

भीगीजणो, भीगीजवो—भाव वा० ।

भीगियोडो—देखो 'भीजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीगियोडो)

भीगोणो, भीगोवो—देखो 'भिजोणो, भिजोवो' (रू भे)

भीगोणहार, हारो (हारी), भीगोणियो—वि० ।

भीगोयोडो—भू० का० कृ० ।

भीगोईजणी, भीगोईजवो—कर्म वा० ।

भीगोयोडो—देखो 'भिजोयोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीगोयोडो)

भीगोरारि—स० पु०—हाथी, गज । (ना मा)

भीगोवणो, भीगोववो—देखो 'भिजोणी, भिजोवो' (रू भे)

भीगोवणहार, हारो (हारी), भीगोवणियो—वि० ।

भीगोविओडो, भीगोवियोडो, भीगोव्योडो—भू० का० कृ० ।

भीगोवीजणो, भीगोवीजवो—कर्म वा० ।

भीड—स० स्त्री०—समूह जमघट ।

उ०—१ ताहरा साह नू लेनै ठाकुरो लोठाकुर द्वारै आयो । उठै  
लोका री भीड, सो ठाकुर द्वारै जाय सघीया नही भीतर ।

—ठकुरै साह री बात

उ०—२ पाडै घजा चम्मरा सु पक्खरा थडमा पाडै, नरां गिरां  
पाडै करा ऊघडा निराट । पाडै थूळ बगाळां अडाळा दळा भूळ  
पाटै, साहा वेहू सीस पाडै भीड फाडै वाट ।

—राव सयमाळ री गीत

क्रि० प्र०—करणी, लागणी, होणी ।

मुहा०—भीड छटणी, भीड हटणी=समूह का तितर-वितर होना ।

भीड हटाणी=समूह को तितर-वितर करना ।

२ सकट, आपत्ति, मुसीबत ।

उ०—१ यु करता कितरै एकै दिनै एक साहूकार रै तोटी आयो,  
सबळी भीड पडी ।—वाघी लिखमी री बात

उ०—२ जब जब भीड पडी भक्तन पर, आपहि क्रसण पधारै ।  
मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, हरि भक्ता नैं त्यारै ।—मीरा

क्रि० प्र०—पडणी ।

३ मदद, सहायता ।

उ०—१ अनियँ अर अजेन्ट आहुव, घुरवाया रव तोष घमीड ।  
पती नीमाज आहुवै पूगो, भारत री खीचावण भीड ।

—मोहवत बारहठ

उ०—२ तरे जसोधर वामण बोलियो—महाराजा मांरा सांसण  
राजा महेसदाम गोहल खोम लिया छै तिए सू मे वोहत परेसान  
छा नैं राज मोटा खत्री छी, गऊ ब्रामण रा प्रतपाळक छी, सो  
राज कनै पुकार आया छा । तरै सीहोजी दिलासा कीवी नैं कयो,  
थाहरी भीड करमा ।—रा व वि

उ०—३ चाप करा घप राम चढे, माफ रजी तद भाण मढे ।  
खोहण के असुराण खप, पख मिवा पळ खाय तपे । रे नित सो  
जन भीड रहै, कूण जना दुख देण कहै ।—र ज प्र

क्रि० प्र०—करणी, खींचणी, बोलणी, आणी ।

४ किसी वस्तु का बाहुल्य या अधिकता ।

ज्यू—आजकल काम री वीत भीड पडै है ।

६ भिडने की क्रिया या भाव ।

७ लोहार एवं बढ़ई का एक औजार विशेष जिससे वे किसी पदार्थ  
को मजबूती से पकड़ते हैं ।

८ बेलगाडी में आगे की ओर छोटे व बड़े तखते के बीच का रिक्त  
स्थान ।

रू० भे०—बीड़, भीयड़, भीर, भीरि, भीरी, भीडी, भीरी ।



भीडणी-स० स्त्री०—घोड़ो के चार-जामा कसने की क्रिया या भाव ।

उ०—पड़ भगाए देस देस, अग्रवाए पीडणी । सलाह पाछलै पुरै,  
मिटी तुरेय भीडणी ।—रा रू

भीडणी भीडनी-क्रि० स०—१ कवच पहनना ।

उ०—१ हूई मुरदर ऊपर हल्ला, महा अग्रवळ जोर मुगल्लां ।  
पेख खडा सभ लक्खा खूरा, भीड वगत्तर अगा भूरा ।—रा रू

उ०—२ सजै ओपरा टोप सौभा सिघाळी जिकै भीडियां दस  
नागोद जाळी । सवाहुन ऊरुन जघात्र सगी, चहै बसचील्हा रहै  
एक रगी ।—व भा

२ चिपकाना ।

उ०—हिया सू भीड होकी हमे, राज भल्लेई राख ली । आप सू  
अरज इतरी अवस, चुपके पाणी चाख ली ।—ऊ का

३ कजूसी करना ।

४ शरीर के किन्ही अंगो को परस्पर मिलाना ।

५ बन्द करना ।

उ०—१ जग थित भूठी जाणणी, भूठी भीड म रखव । माया मेवो  
माहुवा, चगा चाखव चरख ।—वा दा

६ बाहु-पाश में लेना, आलिंगन करना ।

७ शस्त्र धारण करना, या सुसज्जित होना ।

उ०—विसर रा नगरा नाद वाजिया । आ वात सुणताई माहुला  
सीह ज्यू गाजिया सिलह भीडिया ।—पना

भीडणहार, हारो (हारी), भीडणियो—वि० ।

भीडिओडो, भीडियोडो, भीडयोडो—भू० का० कृ० ।

भीडोजणो भीडोजवो—कर्म वा० ।

भीडवणो, भीडववो, भीडणो, भीडवो—रू० भे० ।

भीडवणो, भीडववो—देखो 'भीडणी, भीडवो' (रू भे )

उ०—पिछाण लियो निज वधव पूत, हली भर प्रेम भरीखय  
हूत । पडै चख नीर रिलै प्रथमीज, भूवा उर भीडव लीन भतीज ।

—पा प्र

भीडाणो, भीडावो—देखो 'भिडाणी, भिडावो' (रू भे )

भीडाणहार, हारो (हारी), भीडाणियो—वि० ।

भीडायोडो—भू० का० कृ०

भीडाईजणो, भीडाईजवो—कर्म वा० ।

भीडायोडो—देखो 'भिडायोडो' (रू भे )

(स्त्री० भीडायोडो)

भीडियोडो—भू० का० कृ०—१ कवच पहना हुआ २ चिपकाया  
हुआ ३ कजूसी किया हुआ ४ शरीर के अंगों को परस्पर  
मिलाया हुआ ५ बन्द किया हुआ ६ बाहुपाश में लिया हुआ  
७ शस्त्र धारण किया हुआ, सुसज्जित हुआ हुआ

८ देखो 'भिडियोडो' (रू भे )

(स्त्री० भीडियोडो)

भीडि, भीडी, भीडू—स० पु०—सहायक, मददगार ।

उ०—पीहर पतळा रा सैणा रा प्यारा, तारक तूटा रा नैणा रा  
तारा । सीरी सिटियारा सूल्हा रा सारा, भीडी भूखा रा फूला रा  
भारा ।—ऊ का

२ मित्र, दोस्त ।

उ०—१ जै ओ कूव रो सूरज उण रै अतस रा भीडू रो अस  
व्हैतो ती काळजा मे आ सूळ क्यू खटकती ?—फुलवाडी

३ खेल में अपने पक्ष का खिलाडी ।

उ०—थोडी ताळ ढवनं मामी कै'वण लागी—वेटी, श्री तो सजोग  
रा खेल है पाती आया भीडूवा नै लेय कवडो रो पाळी जीतणी  
है । भीडी वदळणा अषा रै सारै कठै । यनै जकी भीडी मिळियो  
है वो अरव छुटेला कोनी ।—फुलवाडी

४ रक्षक ।

उ०—लसै ओज पूरै तिकै फोज लाडां, गऊ विप्र भीडू दया लाज  
गाडां ।—व भा

५ सग-साथी, (पति)

उ०—जँडो-तँडो ई भीडू थारै पाती आयो, उण नै ई साचा मन  
सू अगेज । इण साची प्रीत रै आसरै ई थारै म्हारै भाग रो  
वदळी लिरीजैला ।—फुलवाडी

[स० भीरू] कायर, डरपोक ।

रू० भे०—भीडी, भीडू, भीयड, भीर, भीरि, भीरी, भीरू, भीरू ।

भीडो—स० पु०—१ बैगन ।

२ देखो 'भीड' (मह, रू भे )

भीच—देखो 'भीच' (रू भे )

उ०—१ घण अम्हसम्हा सिलहवध घाटां, वजि सावळां घमक अवि-  
याटा । अग भिदि पडै एण अहिनाणै, जुडि जामवत भीच लक  
जाणै ।—सू प्र

उ०—२ जीता भीच अजीत रा, 'ईदै' पाई हार । आस परकलै देस  
री, आस तजी तिण वार ।—रा रू

भीचडो—देखो 'भीच' (अल्पा, रू भे )

उ०—१ भला पधारो भीचडा, गरक सिलह में गात । कैहर चाळा  
कळह री, वळता कीजो वात ।—वा दा

उ०—२ साईं एहा भीचडा, मोलि महुगै वासि, ज्या आछन्ना  
दूरि भी, दूरि यका भी पासि ।—हा भा

भीचणो, भीचवो—देखो 'भीचणी, भीचवो' (रू भे )

भीचणहार, हारो (हारी), भीचणियो—वि० ।

भीचिओडो, भीचियोडो, भीचयोडो—भू० का० कृ० ।

भीचीजणी, भीचीजवो—कर्म वा० ।

भीचियोडो—देखो 'भीचियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीचियोडो)

भीचरड—वि०—१ सहारक, विध्वंस करने वाला ।

उ०—घुघर घण्ण कीरति घर घण, राम हेक गजबाग रत ।  
भुजळक दत सग तरा भीचरड, मेघ तणो ह्मती मसत ।

—महाराजा छत्रसिंघ री गीत

२ देखो 'भीच' (मह., रू. भे)

भीच्छा—देखो 'भिक्षा' (रू भे)

उ०—स्वइच्छा दिच्छा तें इतर, नहिं इच्छा सद सुखी । अमं  
दिच्छा दीजें समुखमुख भीच्छा उन मुखी ।—ऊ का.

भीछ—देखो 'भीच' (रू भे)

उ०—आवळा भीछ कडछे प्रगट ऊससैं, चाक चकरी फिरै नाक  
ठढहड चिसैं । आग घकि लोयणा रूप वणियो असैं, 'केहरी' तणो  
किण सीस आवघ कसैं ।—जालमसिंघ मेढतिया री गीत

भीज—स० स्त्री०—भीजने की क्रिया या भाव ।

उ०—भीज रीक भेली भली, पावस पाणी पै'ला । मतवाळा मन-  
वार री, छाक म ठेली छैल ।—वां दा

रू० भे०—भीज ।

भीजण—देखो 'भीनण' (रू. भे)

भीजणो, भीजवो—क्रि० अ० [स० अस्म्यज] १ गीला या आद्र होना ।

उ०—१ केहर तणो कळाइया, भणणाहट भमराह । भीजी गज  
सिर भाजता, मद सौरभ डमराह ।—वां दा

उ०—२ जद हाडो बोल्यो—बा'रै पाणी मे भीजू म्हारी वाई,  
आघो उघाड, नातर थारी वीरो मर जासी ।—फुलवाडी

उ०—३ लागी मोहि राम खुमारी ही । रिमझिम वरसैं मेहडा,  
भीजें तन सारी ही । चहु दिस चमकैं दामणी, गरजैं घन भारी ही ।

—मीरां

उ०—४ पेच सुरगी पाघ रा, ठाकैं मत घर ढाल । काछी चढ  
आछी कहू, हजा भीजण हाल—वां दा.

२ दयाद्रं होना, द्रवीभूत होना ।

३ लाक्षणिक अर्थ मे किसी तत्व का किसी के अन्दर पहुच कर  
व्याप्त होना, एक रस होना ।

उ०—१ रीझैं साभळ राग, भीजैं रस नह भैचकैं । नैडो आवैं  
नाग, पकडीजैं छावड पडैं ।—वां दा

४ किसी वस्तु का पानी या किसी तरल पदार्थ मे भीग कर फूल  
जाना ।

ज्यू—चिणा भीजणा, मोठ भीजणा ।

[स० भिद्य] ५ भेदन करना, छेदना ।

उ०—वेउ बेलइ सरसी तनि, सीतलि लाखारामि । नीरगु नेमि

न भीजइ, खीजइ नारी नामि ।—जयसेखर सूरि

भीजणहार, हारी (हारी), भीजणियो—वि० ।

भीजिओडो, भीजियोडो, भीज्योडो—भू० का० कृ० ।

भीजीजणी, भीजीजवो—भाव वा० ।

भीगणो, भीगवो, भीजणी भीजवो, भीनणी, भीनवो, भीगणी,  
भीगवो, भीवणी भीववो—रू० भे० ।

भीजियोडो—भू० का० कृ०—१ गीला या आद्रं हुवा हुआ २ दयाद्रं  
हुवा हुआ, द्रवीभूत हुवा हुआ ३ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व  
का किसी के अन्दर पहुच कर व्याप्त हुवा हुआ, एक रस हुवा  
हुआ ४ कोई पदार्थ पानी या किसी तरल पदार्थ मे भीगकर  
फूला हुआ ५ भेदा हुआ, छिद्रित ।

६ देखो 'भीनियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीजियोडो)

भीजोडो—देखो 'भीजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीजोडो)

भीजोणो, भीजोवो—देखो 'भिजोणो भिजोवो' (रू भे)

भीजोणहार, हारी (हारी), भीजोणियो—वि० ।

भीजोयोडो—भू० का० कृ० ।

भीजोईजणी, भीजोईजवो—कर्म वा० ।

भीजोवणी, भीजोववो—देखो 'भिजोणो, भिजोवो' (रू भे)

भीजोवणहार, हारी (हारी), भीजोवणियो—वि० ।

भीजोविओडो, भीजोवियोडो भीजोव्योडो—भू० का० कृ० ।

भीजोवीजणी, भीजोवीजवो—कर्म वा० ।

भीजोवियोडो—देखो 'भिजोयोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीजोवियोडो)

भीट—स० स्त्री०—१ झड-वेरी के पत्तो सहित कटे हुए सुखे डठलो व  
काटो का समूह ।

२ छोटे २ केर वृक्ष ।

उ०—कैरा री भीटां गाव दोळी घणी थो तिकारी मोरचो लियो ।  
—सुरेखीवे काघळोत री वात

३ देखो 'भीट' (रू भे)

रू० भे०—भीट, भीठ ।

अल्पा०—भीटकियो, भीटकी, भीटकियो, भीठकियो, भीठकी ।

मह० भीटड ।

भीटकियो—देखो 'भीट' (अल्पा., रू. भे)

भीटड—देखो 'भीट' (मह., रू. भे)

भीटणो, भीटवो—देखो 'भीटणो, भीटवो' (रू भे)

उ०—दाहू यहू मन तीना लोक मे, अरस परस सव होइ । देही  
की रक्षा करै, हम जनि भीटे कोइ ।—दाहूबाणी

भीटणहार, हारी (हारी), भीटणियो—वि० ।

भीटिओडो, भीटियोडो, भीटचोडो—भू० का० कृ० ।

भीटीजणो, भीटीजवो—भाव वा० ।

भीटहरी—देखो 'भीटोरी' (रू भे)

उ०—तरै कटक री पाखती भीटहरा चार आण राखिया था, भाटिया री साथ नैडो आयो तरै भीटहरा लगाय दिया । रात री चानणी हवो ।—नैणसी

भीटियोडो—देखो 'भीटियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीटियोडो)

भीठ—स० पु०—१ युद्ध, संग्राम, लडाई ।

उ०—कुरवसी कर चाळा, रच रोसाळा, भीठ वडाळा भोपाळा । रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा सीस भुजाळा सूडाळा ।

—भगतमाळ

२ अनेक तलवारो का एक साथ प्रहार होने की क्रिया, प्रहार ।

उ०—इम कहि नै अरजन फीज माहि लोह भेलियो । अरजन माथे तरवारिया भीठ पडे छै ।—अरजन हमीर भीमोतरी वात ३ भीठ ।

उ०—नळ-काय सिर भूण खूडिया भुज दो भारी । पूठी-पेट सपीठ, नीमचक नाडा सारी । सूरत भूरत चोक, सदाव्रत सरस पावण । भीडां वाजे भीठ, नीर परसाद लावण ।—दसदेव ४ प्रहार, वार ।

उ०—मत घडको भाखै 'मदू' से सायव सारै । राठोडा रिण रीठ-स्या, देय भीठ अफारै—वी मा ।

५ प्रहारो मे उत्पन्न ध्वनि ।

६ देखो 'भीट' (रू भे)

भीठकियो, भीठको—देखो 'भीट' (अल्पा, रू भे)

उ०—सिर सेला ज्यूं सूळ, अमीरा दोरी डाढी । गरीवारै ना गडै, पांव जूत्या विन वाढी । भीठकिया भरणाय, घणोरी उवार घालै । तीजें दिन भूडकाय, लादडी भर ले हालै ।—दसदेव

भीटहरी—देखो 'भीटोरी' (रू भे)

उ०—इतरै वडा भीटहरा आगै बळ रहीया छै, तिकारी भळ आकास लागी छै ।—माडणसी कूपावत री वात

भीठी—स० पु०—कपटी मित्र ।

भीड—देखो 'भीड' (रू भे)

उ०—१ सुरजन त्रप रण-मस्त सह, भोज कुमारक भीड । भामी अकवर भेजिया, नांमी प्रतिभट नीड ।—व भा

उ०—२ सबळ भीड समळी, भूभ ग्रहियो भूभारै । साम काम हणमत, कमध कुळ मग सभारै ।—गु रू व

भीडणो, भीडवो—१ देखो 'भीडणो, भीडवो' (रू भे)

उ०—१ अवला अवलइ अक्षरइ, पांमीजइ परतक । वि कर भीडी वाय दिइ, पणि ते वघन लक्ष ।—मा का प्र

उ०—२ 'कामकदला' । कही कही, ऊठि आलिगन देय । सबल भुजा भीडी करी, पुढइ पच्छर लेय ।—मा का प्र

उ०—३ बाहुलता विवही वली, भीडणि भागु विप्र । कुबुवि अे कायर थई, छाडी चालिउ क्षिप्र ।—मा का प्र

उ०—४ 'माधव' । मुभ माहि करी, खरी विघाता खोडि । आलिगन अति भीडती जउ कर सरजत कोडि ।—मा का प्र

उ०—५ प्रीतम रइ कारण पारवती, राखीयउ जाणे ग्राम रस । भीडीयउ उर ऊपर काचू भर, कसणा रेसम तणा कस ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६ रुदया भीडी रोमवी, अचलि आसू लूहि । बाह करी गाल गहि वरिउ, माधव सिजतु मोहि ।—मा का प्र

भीडी, भीडू—देखो 'भीडी' (रू भे)

उ०—ओ ती अलौकिक और ही रूप हो मुनिवरजी । काई भगता री भीडू आप ही आगयो हो राज ।—गी रा

भीत—वि० [स० भीत] भयभीत, डरा हुआ ।

उ०—अठी वीरमदेव नू जवना रा मारिया जाणि ग्राम सेत्रावा हू चलाइ राठोड गोर्ग वीरमदेवोत आपरा वाप रा वाडणहार नू विसारि विना ही अपराध भाजड मे भीत सकट रै हेठे सपत्नीक सूता जोइया दला नू जाइ हणियो ।—व भा स० स्त्री० [स० भीति] भय, डर, आतंक ।

उ०—प्रगल्भ कठ पेल देत, कठ कठिराव को, दुहृत्थ, हृत्थ ठेल देत, हृत्थलै प्रदाव को । उन्हे न भीत और अभीत व्हे न त्या अगै, भगै न वाह जान दै, न वाह नाव रै भगै ।—ऊ का स० स्त्री० [स० भित्ति] दीवार ।

उ०—१ आसिफला अकवर कहै, भीता भुरजा जोय । वाको गढ भड वाकडा हलो किया की होय ।—वा दा

उ०—२ चौरग दत गयदा चडत, पाखाण भीत आठू पडत । घुनो विसाळ चौडो घडेय, आणा गुण घातै आपडेय ।—गु रू व रू० भे०—भीत, भीति, भीति ।

अल्पा०—भीतडो, भीतडो ।

भीतडो—१ देखो 'भीतडो' (रू भे)

उ०—कोटडियो 'वाघो' कठै, 'आसो' डाभी भाज । गवरीज जम गीतडा, गया भीतडा भाज ।—वा दा

भीतर—अव्य० [स० अन्तर] १ अन्दर, में ।

उ०—१ डोढो पडदो देखियै, सुमा घरै सिवाय । भीतर जम किकर विना, जीव मात्र नह जाय ।—वा दा

उ०—२ यळ ऊपर लोभी अपत नह राखै निज नाम । यळ भीतर खाटे अघम, दाटै राखै दाम ।—वा दा

उ०—३ दान घणो उत्तर दियै, हू तै वित सत हार । मूहडो लै उण मिनख रो, भोमर भीतर डार ।—वा दा

उ०—४ अई चीतगढ ओर सू, तू गाजियो न जाय । भीतर ज्या मन भावणी, बाहर जिका बलाय ।—बां. दा

२ गुप्त रूप से, चुपके ।

उ०—जग मे कहै जोगी भीतर भोगी, सोगी सम सीवदा है । महिलानै भोगी गूगी भोगी, रोगी जिम रोवदा है ।—ऊ का

स० पु०—१ अन्त पुर, रनिवास ।

उ०—तद सेतराम दग्गार मांय आथ वैंठी । ताहरां दरवारी ईया री पोसाख अर वळ देव अर भीतर जाय राजा सू अरज गुदराई ।

—नैणसी

२ अन्दर वाला भाग ।

रू० भे०—भितर, भितरि, भीतर, भीति, भीतरि ।

भीतरलो-वि० [स० अम्पतर + रा० प्र० लो] (स्त्री० भीतरली)

१ भीतर का, अन्दर का ।

उ०—१ पछै राणी कुमी, रिणमलजी मांडवगढ ऊपर आया । ताहरा भीतरला पण साको राखियो ।—नैणसी

उ०—२ सो उवै भाग केई भीतरली खिडकी मे वड गया ।

—पदमसिंह री वात

२ आपस का, पारस्परिक ।

उ०—भीतरला फूटा भडा, कै खूटा सामान । इण गढ़ मे होसी धमल, खम तू आमिफखान ।—बा दा

भीतरवाडियो-स० पु०—१ राजमहल के भीतर का नौकर ।

उ०—राजारथा दास्यां सु प्रीति न करै । राजा रा भीतरवाडियो सु भाईयप मतां करै । टटपूजीयै वाणीये सु प्रीत न करे ।

—बाप री सीख री वात

२ देखो 'भीतरियो' (रू भे)

भीतरि-१ देखो 'भीतर' (रू भे)

उ०—तुही ज सज्जण मित तू, प्रीतम तू परिवारण । हियदह भीतरि तू वसइ, भावइ जाए म जाए ।—ढो मा

२ देखो 'भीतरी' (रू भे)

उ०—पहिलु जवुदीव बखारणउ, जोअण लाख प्रमाण । भरहखड तसु भीतरि जाएणउ, नानाविह गुण ठाण ।—हीराणदसूरि

भीतरियो-स० पु० [स० अम्पतर + रा० प्र० यो०] १ मंदिर के भीतर मूर्ति के पास रहने वाला वल्लभीय ठाकुर का प्रधान पुजारी ।

२ देखो 'भीतरवाडियो' (रू भे)

भीतरी-वि०—१ भीतर का, अन्दर का ।

२ गुप्त, गोपनीय ।

३ अभिन्न, घनिष्ठ ।

४ सच्चा ।

ज्यू—मै उणनै भीतरी मन सू चावू ह ।

२ देखो 'भीतरि' (रू भे)

भीतरीटाग-स० स्त्री० यो०—कुसती का एक पेंच जिसमें खिलाडी विपक्षी को, जब वह पीठ पर होता है, भीतर ही से टाग मारकर गिरा देता है ।

भीति-स० स्त्री० [स०] १ भय, डर, आतंक ।

उ०—चैण दैण जसु चरण, ईति अति भीति निवारण ।

लील लाछि लख गान, विमलकीरति वधारण ।—घ व अ

२ देखो 'भीत' (रू भे)

उ०—१ गहर भै भीति त्रसणा नदी तखि वहै, अनंत आगै बह्सा मित नांही । साध आकास मे अटक उलटा चढघा, प्राण मन सुरति आकास माही ।—ह पु वा

उ०—२ जिसिया कुल तीणइ मानि वचन, जिमी भीति तिसा चित्राम, जिसी आकृति तिसा गुण ।—व स

३ देखो 'भाति' (रू भे)

रू० भे०—भीत, भैत ।

भीतिकर, भीतिकारी-वि० यो० [स० भीति + कर] भयानक, डरावना ।

भीतियो—देखो 'भीतियो' (रू भे.)

भीतिहर-स० पु० यो० [स० भित्ति + हर] दुर्ग, किला ।

उ०—अेवडउ साड सीधण-कउ घर, जिकइ गागुरणि सारीखउ भीतिहर । त्या अेक पुरुख का पछोपा बाहिरउ जाण्यइ वीण्यइ हुवइ छइ ताटीहर ।—अ० वचनिका

रू० भे०—भीतिहर ।

भीनउ—देखो 'भीनी' (रू भे)

उ०—१ तू उपजइ न खपइ नहु आइस, कुल न कहइ कहियइ उकलीण । भीनउ नादि विनोद महा भडि, बसभ चढइ तइ बावइ वीण ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ बीनवी अंपति न बीनउ भीनउ नेमि न जामु, सत्यभामा रीसारण दारुण बोलइ तामु ।—जयसेखर सूरि

भीनण-स० पु०—१ सूखी रोटियो को छाछ (मट्ठा) मे भिगोने की क्रिया ।

२ उक्त प्रकार से भीगा हुआ खाद्य पदार्थ ।

रू० भे०—भीजण, भीजण ।

भीनणी भीनबो-क्रि० अ०—१ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व का किसी के भीतरी भागो मे पहुच कर अच्छी तरह व्याप्त होना, सम्मिलित होना ।

२ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना ।

उ०—अपनी कवान आलमसा हाथ दीनी, डाढी नोस हाथ दीनी रार रोस भीनी ।—रा रू

उ०—२ प्रथम नेह भीनी महाक्रोध भीनी पछै, लाभ चमरी समर भोक लाग । रायकवरी बरी जेण बागै रसिक, बरी घड कवारी तेण बागै ।—बा दा

३ अनुरक्त होना ।

४ युक्त होना ।

५ देखो 'भीजणी, भीजवी' (रू भे.)

उ०—शालीजा अलवेलिया, हो हुआ हुसनाक । भीनोडा रसिया भमर, छैल पियो मद छाक ।—वा दा

भीतणहार, हारो (हारी), भीनणियो—वि० ।

भीनिओडो, भीनियोडो, भीन्योडो—भू० का० कृ० ।

भीनीजणो, भीनीजवी—भाव वा०, कर्म वा० ।

भीनरवाई—स० स्त्री०—आर्द्र भूमि, भीगी पृथ्वी ।

भीनरवाडो—स० पु०—भीगा भू-भाग ।

भीनियोडो, भीनोडो—भू० का० कृ०—१ किमी तत्त्व का किसी के अंदर पहुँच कर अच्छी तरह व्याप्त हुआ, सम्मिलित हुआ हुआ (लाक्षणिक अर्थ में) २ अनुरक्त हुआ हुआ. ३ युक्त हुआ हुआ, सहित.

४ देखो 'भीजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीनियोडी, भीनीडी)

भीनीडो—स० पु०—भीगा या आर्द्र स्थान ।

भीनी—वि० [स० भीनी] १ अनुरक्त ।

उ०—१ वर कन्यां विन्हे घातिया वानइ, वेह वारा वरसा रा बाळ । भमर ज्युही केतकी भीना, भीली चक्रवर्ती भूवाळ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ऊमा 'अचळी' मोहियो, ज्यू चदण भूयग । रात-दिवस भीनी रहै भपरी सुमना रग ।—अज्ञात

उ०—३ भेख लिया जद दुख सुख त्यागा, राम नाम रग भीना । घट घट मे साहब सत् जाण्या, दुरमत दूरी कीना ।

—श्री सुखरामजी महाराज

२ युक्त, सहित ।

उ०—१ जोधपुर द्रुग जोधपुरी, कळा तप तेज कळकळ । भाद्रवै माम भीने मिहरि, किरि भासकर भळहळ ।—गु रू व

उ०—२ सु जेत ताहरा ही ज सिकार रम नै लू रो भकोळियो थकी घणै तावडें सी वैमार थकी आय नै खसखानं माहै आय पोढियो । मु खमखानं वाहरा घणो रो छडकाव कीयो । चदन रो लेपन कर केसरिया भीनी दुपटो मोड नै पोढियो छै ।

—जेतमाल पुमार री वात

उ०—३ सज देखी सिरदार की, घज सूरत चित घार । मुळकी उण मोसर मही, रग भीनी रिभवार ।—पना

३ परिपूर्ण, पूर्ण, भरा हुआ ।

उ०—वाला रस भीना वचन, सज भीना तन साज । चदा चदनी चतुर रा लोयण भीना लाज ।—अज्ञात

४ भीगा हुआ, गीला, आर्द्र ।

उ०—१ खेडा गांमां री गळती जे खावै, आघा दामा मे बळती दे

खावै । विलखी अजल विन धावै वेराजी, भीनी वाफणिया आवै घर माजी ।—ऊ का

उ०—२ खोळा टकियोडा गळ मे खूगाळी, जळ जुत ठोडो गर टिमकी जघाळी । भीने काचळिये घम घम डग भरती, घसळा देतोडो घमघम पग घरती ।—ऊ का.

५ मद, धीमा ।

ज्यू—भीनी-भीनी सुगध ।

६ लाक्षणिक अर्थ में, मस्त, मतवाला ।

ज्यू—नमा में भीनी है ।

७ हल्के काले रंग का मनुष्य ।

८ धीत-प्रोत, सना हुआ ।

यी०—मावी-भीनी ।

रू० भे०—भीनी, भीनउ ।

भीफरणो, भीफरवी—देखो 'विकरणी, विकरवी' (रू भे)

उ०—खदा उरड तोडतो रूका, चळ चळ घतिया लोवळ चाव ।

भीफर सरळ भाजिया खग वळ, सीधुर फवियो 'करण' सुजाव ।

—द दा

भीभळ—देखो 'विभळ' (रू भे)

उ०—१ नवमात ससि वदन, अरक फाडतक ऊजळ । डसण हीर किर ललित, मुख लोयणा भीभळ ।—गु रू व

उ०—२ साहिव कछुछ न जाइयड, तिहा परेरउ द्रग । भीभळ नयण सुवक घण, भूलउ जाइसि सग ।—ढो मा

२ देखो 'विहूल' (रू भे)

भीभलणो, भीभलवी—क्रि० अ०—गर्म होना, उष्ण होना ।

उ०—अथ वरसा, आविउ आसाढ, अतरग सबाढ, काठई लोह, घाम तणउ निरोह, छामि खाटी, वीयाइ माटी, पांणी भीभलइ, गुडउ गूजरीवरण साभलीइ ।—व स

भीभलणहार, हारो (हारी), भीभलणियो—वि० ।

भीभलियोडो, भीभलियोडा, भीभल्योडो—भू० का० कृ० ।

भीभलीजणो, भीभलीजवी—भाव वा० ।

भीभलियोडो—भू० का० कृ०—गर्म हुआ हुआ, उष्णता प्राप्त ।

(स्त्री० भीभलियोडी)

भीभू—स० पु० [स० भीम=भयकर] सिंह, शेर ।

उ०—भीभू लक मुराळ गति, पिक सुर जेही वांण । ढोला मधिर माळवी, जेहा हम निवाण ।—अज्ञात

भीम—स० पु० [स०] १ शिव, महादेव ।

उ०—गन भूत-प्रेत पिसाच कौतुक अत ततु जटा जुटी । जय व्योम केस महेश त्रिक भीम भूतप घूर्जटी ।—ला रा

२ विष्णु

३ वायु के सयोग से कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न कुरुवंशीय पांडु राजा का एक पुत्र । (व. मा, ह ना मा)

४ एक पूरुवशीय राजा जो वायु पुराण के अनुसार महावीर्य राजा का पुत्र था ।

५ एक राक्षस, जो लका नरेश रावण का मित्र था ।

६ एक कुरुवशीय राजा, जो मत्स्य पुराण के अनुसार रुचिर राजा का पुत्र था ।

७ एक देवगर्भव जो कश्यप एव मुनि का पुत्र था ।

८ अग्नि जो पांचजन्य अथवा तप नामक अग्नि का पुत्र था ।

९ तीसरे मरुद्गणों में से एक ।

१० विकुठ देवों में से एक ।

११ एकादश रद्वों में से एक ।

१२ एक पूरुवशीय राजा, जो इलिन एव रथन्तरी का पुत्र था ।

१३ एक राक्षस, जो देवताओं एव हिरण्याक्ष के बीच हुए युद्ध में मारा गया था ।

१४ आनर्त (गुजरात देश) का एक राजा, जो सत्वत राजा का पुत्र था ।

१५ एक राक्षस, जो कश्यप एव खशा के पुत्रों में से एक था ।

१६ एक यादव राजा जो दाशार्ह (विदुरथ) राजा का पुत्र था ।

१७ एक राजा जो भागवत के अनुसार विजय राजा का पुत्र था ।

१८ हरिवंश एव ब्रह्म पुराण के अनुसार एक यादव राजा ज्यामघ का पुत्र ।

१९ विदर्भ देश की कौडिन्य नगरी का राजा, जो चित्रसेन राजा का पुत्र था ।

२० विदर्भ देश का एक राजा जो दमयंती का पिता था ।

२१ कुम्भकरण का एक पुत्र ।

२२ साहित्य में भयानक रस ।

२३ एक नदी का नाम । (अ मा )

वि०—१ बहुत बड़ा, विशाल ।

२ भीषण, भयानक, घोर ।

उ०—१ प्रल्लंघन करेवा नीम दांमण पतन, गयण फूट घटा भीम गरज । उठाव अछलतो जेम हलधर अनुज, बल तक यद्रथी भला चरज ।—वा दा

उ०—२ सेसि चलड जल उछलड, सायर छटइ सीम । वाया विण वाजड मवद, महा भयकर भीम ।—मा कां प्र.

रू० भे०—भीव, भीउ, भीमि, भीभू, भीमेण, भीव ।

अल्पा०—भीयो, भीमडो, भीमलो भीमियो, भीमो ।

भीमएकादशी—स० स्त्री० [स० भीमएकाशी] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी ।

२ कार्तिक शुक्ला एकादशी ।

३ माघ शुक्ला एकादशी ।

भीमक—देवों 'भीमक' (रू भे )

उ०—चूडा मडण चूडामणी जी, भीमक घरि अवतार । बघव ह्यमईयो गली जी, मन्नीसर मति सार ।—रुक्मणी मगल

रू० भे०—भीमक, भीमक ।

भीमकुंड—स० पु०—एक जलाशय जो तीर्थ माना जाता है ।

उ०—हारे मोरा लाल सूरयकुंड भीमकुंड नै, पासं पगला जान ।

श्रोलखाभूल आवियो, फरसीजे जिन न्हाण मोरा लाल ।—वि कु

भीमकुमार—स० पु०—भीमसेन का पुत्र घटोत्कच ।

भीमगज—स० पु०—पांडुपुत्र भीम द्वारा आकाश में फेंके गए हाथी ।

उ०—१ गोरा नह भेटै भीमगजां, वर लहै न कमधज खोल घजा ।

घर लहसी कमधज खोल घजा, गोरा जद मिळसी भीमगजा ।

—महाराजा मानसिंह जी रौ गीत

उ०—२ मोमू ऊवेळोह, तुरत हुवो जिण रौ तवां । भीमगजां भेळोह, करतो जे पावू कमध ।—पा. प्र

भीमडात, भीमढाथ—स० पु०—रग विशेष का घोड़ा ।

उ०—सोवन रा ताजी च्यार साल, पच दोक दिना पोरस अपाल ।

धुर केक माळवी सरस धज्ज, भीमढाथ थळी वाळा मिडज्ज ।

—सू प्र.

भीमडो—देखो 'भीम' (अल्पा, रू भे )

उ०—तिण वार 'भगवत' 'केहरी' तण वणै त्रिजडां वाहतो ।

'भीमडा' पाडव जेम भारथ, गज घडा भड गाहतो ।—सू प्र

भीमचंडी—स० स्त्री०—एक देवी का नाम ।

भीमजी—स० पु०—दामाद को गये जाने वाला एक लोक गीत ।

भीमतळाव—स० पु०—बड़ा सरोवर ।

उ०—माय, भर रे नाडा भर नाडियो, माय, भरियो, रे भीमतळाव पपश्रियो दोल्यो खावढ रै खेत मे ।—लो गी

भीमता—स० स्त्री०—भयानक होने की अवस्था या भाव, भयानकता ।

भीमतिथ, भीमतिथि—स० स्त्री० यौ० [स० भीम + तिथि] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी ।

२ कार्तिक शुक्ला एकादशी ।

३ माघ शुक्ला एकादशी ।

भीमथली—स० स्त्री०—जैसलमेर जिले का एक भू-भाग ।

भीमनाद—स० पु० यौ० [भीम + नाद] भीषण ध्वनि, भयकर आवाज ।

उ०—डाक काळ रूपी डाच उवेई कटार डढा, भीमनाद भेई रेई गयदा गभीर । आहेई तेई पेई वीर देवीसिंह आळा, केई लाग तूही छेई डाखियो कठीर ।—दीलतसिंह हाडा रौ गीत

भीमपळासी—स० स्त्री०—सगीत में सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी ।

भीमफलोदया—स० स्त्री० यौ० [भीम + फलोदया] भयकर फलों को देने वाली ।

भीमवळ—स० पु०—१ एक प्रकार की अग्नि ।

२ घृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

भीममुख—स० पु०—एक प्रकार का बाण ।

भीमरथ—स० पु०—१ घृतराष्ट्र का एक पुत्र ।



२ युधिष्ठिर की सभा का एक नृपति ।

३ कौरव पक्ष का एक योद्धा, जो द्रोण निर्मित गरुडव्यूह में खड़ा हुआ था ।

४ भागवत, विष्णु एवं वायु पुराण के अनुसार विकृति राजा का पुत्र ।

५ एक राजा जो भागवत एवं वायु पुराण के अनुसार केतुमत् राजा का पुत्र था ।

**भीमरथी-स० स्त्री०—**१ एक पौराणिक नदी ।

२ वैद्यक के अनुसार मनुष्य की ७७ वर्ष के ७ वें महीने की सातवीं रात के बाद होने वाली कठिन अवस्था ।

**भीमल-स० पु०—**१ सिसोदिया वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

२ पवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

**भीमसकरी-स० स्त्री०—**दक्षिण की एक बड़ी नदी ।

उ०—दिखण में भीम नदी भीमसकरी कहाँ है ।—वा दा ख्या

**भीमसेण, भीमसेन [स० भीमसेन]** १ पांडु पुत्र भीम का नामान्तर ।

रू० भे०—भीमसेण, भीमसेनु, भीमसेन ।

**भीमसेनी-वि०—**भीमसेन सम्बन्धी ।

**भीमसेनीएकादसी—**देखो 'भीमएकादसी' ।

**भीमसेनीकपूर-स० पु०—**एक विशेष प्रकार का कर्पूर जो सुमात्रा आदि द्वीपों में होने वाले वृक्षों के रस से तैयार किया जाता है ।

उ०—केसर-कस्तूरी, भीमसेनीकपूर री मरदन हुँवें, तिण री कीच मचियौ रहै । सो इण भांत जलाल गहरो मोज आणद सू रहै ।

—जलालबूचना री बात

**भीमसेनु—**देखो 'भीमसेन' (रू भे)

उ०—सवा कमल नी इच्छा करइ, भीमसेनु तउ वनि वनि फिरइ । असउण देखी बोलइ राउ, भीम पासि बछेदिइ जाउ ।

—सालिभद्र सूरि

**भीमा-स० स्त्री०—**१ दक्षिण भारत की एक नदी जो पश्चिमी घाट से निकल कर कृष्णा नदी में मिलती है ।

उ०—भीमा धुनि पयवस्वनी, गोदावरी गहीर । ऊनतभद्रा पूरणा, किसना निरमल नीर ।—वा दा

२ दुर्गा, देवी ।

वि० स्त्री०—भयकर, भीषण ।

उ०—अत्यु सीमासी रावी बिसमासी, भीमा भावीसी भीमा निस भासी । तूहिन कठीरव तन कुजर तावै, डगडगि चडियोडा मरिया हुसकावै ।—ऊ का

**भीमि—**देखो 'भीम' (रू भे)

उ०—साधीउ पच्छेवाणु भीमि पुरोहितु लाखहरै । भेलहीउ दोधु पीयाणु, केडइ आधी पुणु मिलए ।—सालिभद्रसूरि

**भीमी-स० स्त्री०—**१ भीम राजा की कन्या दमयंती ।

२ भीष्मक राजा की पुत्री रुक्मिणी ।

उ०—ताहाथी आधी नैसघ आगलि भीमी ना गुण भाखि । प्रेम ऊपायु नल राजा नि सुणता दीठा पाखि ।—नळाख्यान  
रू० भे०—भीमी ।

**भीमू, भीमेण—**देखो 'भीम' (३) (रू भे) (डि को)

उ०—१ ताकडा 'अजन' 'भीमेण' ताय, खागडा उरस थी भचक खाय । 'अमपती' जती गोरवख एम, तैरे' सख वारह पथ तेम ।

—वि स

उ०—२ अरजन हूतो अनै, कियो कोमड करगै । महाजोध भीमेण, गदा आपडै उमगै ।—वखतौ खिडियो

**भीमोत-स० पु०—**राठोड वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

**भीमोत्तर-स० पु०—**बड़े रोएदार तथा गोल पत्तों वाली एक प्रसिद्ध वेल जिसके फल बड़े और गोल होते हैं, कुम्हड़ा ।

**भीमोदरी-स० स्त्री०—**दुर्गा ।

**भीमो—**देखो 'भीम' (अल्पा, रू भे)

**भीय—**देखो 'धी' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

**भीयड़—**१ देखो 'भीड़' (रू भे)

२ देखो 'भीड़ी' (रू भे)

उ०—जव लू नित नाम तिलोचन बोल्यो, भामण भीयड़ होय भिडै । करवा ग्रह काज इसो मीय आगळ, माणस कोय लिलाम मिळै ।—भगतमाल

**भीयो—वि०—**बड़ा हुआ, भयभीत ।

**भीर—**देखो 'भीड़' (रू भे)

उ०—१ पण राखण आया प्रभू, भल अबळा री भीर । दस हजार गज वळ घट्यो, घट्यो न दम गज चीर ।—रामनाथ कवियो

उ०—२ भीर म्हे जकां भीरी विसभर, गाज कुण सकै 'जसराज' रा गाव । राव एक थाप ऊथापिया रिडमला, रिडमला पुडदडी राखिया राव ।—वा दा

उ०—३ वेली बापूकारिया, पूरे वेल सवाय । धीर बधारी भीरिया, भीर सकज्जा पाय ।—रा रू

उ०—४ दाहू महाजोध मोटा वळी, सो सदा हमारी भीर । सब जग टठा क्या करै, जहा तहा रणवीर ।—दाहूवाणी

उ०—५ पछै वेगी ही राणा जी ऊपर हाजीखा आयो । राठोड देईदास जैतावत रावमालदे री फोज बडो माथ लैन हाजीखा री भीर आया था ।—रावमालदे री बात

२ देखो 'भीड़ी' (रू भे)

उ०—दुरजोधन वीर करै ग्रह द्रोपा, खांच सभा विच चीर खडी । पचियो पण भीर हुवो परमेसर, चीर न खूटोय सोभ चडी ।

—भगतमाल

**भीरव—**देखो 'भीड़ी' (रू भे)



उ०—असी सहम सेना अठी, सहस उठी वासट्टि । भडा ओपिया भीरवां, नीर गया मुख नट्टि ।—व भा

भीरि, भीरी—देखो 'भीडी' (रू भे)

उ०—१ भरथ न सयवण वळभद्र भीरी, वधव लखण न पूगो वेल । ओखामडळ विटियो असुरा, चीटल सादवियो 'वाडेल' ।

—सिवा वाडेल री गीत

उ०—२ वेली वापूकारिया, पूरे वेल सवाय । घीर वधारी भीरिया, भीर सकज्जां पाय ।—रा रू

उ०—३ भीर म्हे जका भीरी विसभर, गांज कुण सकं जसराज रा गाव । राव एक थाप उयापिया रिडमला, रिडमला पुडवडी राखिया राव ।—वा दा

२ देखो 'भीड' (रू भे)

उ०—एहिज परि थई भीरि कजि आया, घनजय अनै सुयोवन । मासे मगसिर भलउ जु मिळियो, जागिया मीट जनारजन ।—वेलि

भीरु—वि० [स० भीरु] १ कायर, डरपोक ।

२ चादी, रोप्य । (डि को)

३ देखो 'भीडी' (रू भे)

रू० भे०—भीरु ।

भीरुता—स० स्त्री०—१ कायर या डरपोक होने की अवस्था या भाव ।  
२ डर, भय ।

भीरु—स० स्त्री० [स० भीरु] १ स्त्री, श्रीरत । (ह ना मा)

२ देखो भीरु' (रू भे)

उ०—हलकार भीरु बडा हिंदू ताहरा तुडताण । सममेर भाले करो सेहरा, सामळें सुरताण ।—जसी बारहूठ

३ देखो 'भीडू' (रू भे)

उ०—भूधर तूही हारिया भीरु, आपण तू ही अनाया नाथ ।

—श्रीप्री आढो

भीरुक—स० पु० [स० भीरु+कन्] १ चादी । (डि को)

२ वन, जंगल ।

३ उल्लू ।

भीरी—देखो 'भीड' (मह, रू भे)

उ०—चपा वार उघाडीया वलि चालणि काड्यु नीरी रैं । सती सुमद्रा जस थयउ, त मइ तस कीघो भीरी रैं ।—स. कु

भील—स० पु० [स० भिल्ल] (स्त्री० भीलण, भीलणी) १ प्राचीन काल मे राजपूताना, सिंध और मध्य भारत के जंगलो व पहाडो मे पाई जाने वाली एक अनुसूचित जाति ।

२ इस जाति का व्यक्ति ।

उ०—१ मैणी पेंगू मेर वावरी विळळा वै'ता, भाळी थोरी भील रात रा मार्ग रैं'ता ।—ऊ वा

उ०—२ दोय आदमी साथ लेनै जिण मेवासा मे भील रहती तठै ही आप जाय पहाँतो ।—प्रतापसिंध म्हीकमसिंध री वात

र० भे०—भिल्ल । अत्पा०—भीलडी ।

पर्याय—ताडी, कमठाळ आहेडी, काडी, सावळी, नायक ।

भीलडी—देखो 'भील' (अत्पा, रू भे)

उ०—१ कही छो रावत हरीभिघ रा घर माहे ईमडी रजपूत नहीं सो उण भीलडें नू मारें ।—प्रतापसिंध म्हीकमसिंध री वात

उ०—२ भीला री वस्ती मे कोई रैं व्याव ही, भीलड्यां री राग ई

छानीं नहीं रैं'वै ।—रातवामी

(स्त्री० भीलडी)

भीलडी, भीलण, भीलणी—म० स्त्री०—१ भील जाति की स्त्री ।

२ शिवरी, जिसने श्रीराम को वनवास मे जूठे वेर खिलाए थे ।

उ०—१ भीलडी चुग किया भेळा, वो'त हित सू वोर । प्रीत कर

रघुनाथ पाया, कोय'क साडो कोर ।—भगतमाळ

उ०—२ वन मे हुती स्योरी भीलणी ज्यांका अरोग्या ठाकुर

वोर । ऊच नीच हरि ना गिरां, ऐमी म्हाारा हरिभगता री कोर ।

—मीरां

रू० भे०—भीलि, भील, भीली ।

भीळणी, भीळवी—देखो 'भिल्लणी, भिल्लवी' (रू भे)

उ०—आज मोनु मुवो चाहोजें । तरं अखैराज आदमीया १५ तया

२० कूदीया । सु अखैराज हेले वरछी नव आगळ मडी, सु के लागी

के टळी । श्री लोह भीळीया । दोलतियो भागी ।—नैणसी

भीळणहार हारी (हारी), भीळणियो—वि० ।

भीळाडणी, भीळाडवी, भीळाणी, भीळावी, भीळावणी, भीळाववो

—प्रे० रू० ।

भीळिओडो, भीळियोडो, भीळ्योडो—भू० का० कृ० ।

भीळीजणी, भीळीजवी—भाव वा० ।

भीलप—स० पु०—१ विलाप ।

उ०—कासू मा भीलप करै, ह वाजू सुरताण । सूरजमल री

सारधू, मो पठै अमरांण ।—पा प्र

२ धवराहट ।

३ कायरता ।

भीलभूसण—स० पु० [स० भिल्लभूपण] गुजा या घुपची जिमकी मालाए भील लोग पहनते हैं ।

भीलवाडा—स० पु०—भीलवाडा जिले की मिट्टी का बना एक प्राचीन सिक्का ।

भीळाडणी, भीळाडवी—देखो 'भिल्लणी, भिल्लवी' (रू भे)

भीळाडणहार, हारी (हारी), भीळाडणियो—वि० ।

भीळाडिओडो, भीळाडियोडो, भीळाड्योडो—भू० का० कृ० ।

भीळाडोजणी, भीळाडोजवी—कर्म वा० ।

भीळाडियोडो—देखो 'भिल्लियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीळायडिडी)

भीळाणी, भीळावी—देखो 'भिल्लणी, भिल्लवी' (रू भे)

उ०—तरे रजपूत कैयो भीजल जाय नै वाला भोपत सु मिल नै  
कही—हू किलो भीलाय देसू।—नैणमी  
भीलाणहार, हारो (हारी), भीलाणियो—वि०।  
भीलायोडो—भू० का० कृ०।  
भीलाईजणो, भीलाईजवो—कर्म वा०।

भीलायोडो—देखो 'भिलायोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भीलायोडो)

भीलामो—देखो 'भिलावो' (रू भे)

उ०—भीलामो नइ भालकी, भरहु भारिगि भांगि। भभेडी ब्रह्मांड  
घण, भोजपत्र भड चंगि।—मा का प्र

भीलावणो, भीलाववो—देखो 'भिलारणो, भिलाववो' (रू भे)  
भीलावणहार, हारो (हारी), भीलावणियो—वि०।  
भीलाविओडो, भीलावियोडो, भीलव्योडो—भू० का० कृ०।  
भीलावीजणो, भीलावीजवो—कर्म वा०।

भीलावियोडो—देखो 'भिलायोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भीलावियोडो)

भीलावो—देखो 'भिलावो' (रू भे) (अमरत)

भीलि, भीलि, भीली—देखो 'भीलणी' (रू भे)

उ०—रघुवर भीली कर रे, बिलकुल सीता वर रे। रुचि कर-  
कधु फल रे, जमि हसि पीवो जल रे।—र ज प्र

भीव—देखो 'भीम' (रू भे)

उ०—अकवर न जुजठळ, भीव न अरिजण, खळ-दळ लागा, लोह  
खिंवो। पढतं भार प्रजा पीडती, स्त्रीरग कहियो—सिवो 'सिवो'।  
—सिवा वाडेल रौ गीत

भीवणो, भीववो—देखो 'भीजणो, भीजवो' (रू भे) (अमरत)  
भीवणहार हारो (हारी), भीवणियो—वि०।  
भीविओडो, भीवियोडो, भीव्योडो—भू० का० कृ०।  
भीवीजणो, भीवीजवो—भाव वा०।

भीवसेन—देखो 'भीमसेन' (रू भे)

भीवियोडो—देखो 'भीजियोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भीवियोडो)

भीसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भीसण—वि० [स० भीषण] १ भयानक, डरावना।

२ दुष्ट, उग्र।

३ दुष्कर, विकट।

४ दुष्परिणाम के रूप में होने वाला, बहुत ही बुरा।

स० पु०—१ साहित्य में एक रस।

२ ब्रह्मा।

३ शिव, शंकर।

४ एक राजा, जो मत्स्य के अनुसार हृदिक राजा का पुत्र था।

५ वय नामक असुर का पुत्र।

६ एक असुर, जिसे हनुमान ने परास्त किया था।

भीसणता—स० स्त्री० [स० भीषणता] १ भयकरता, डरावनापन।

२ उष्णता, उग्रता

३ दुष्करता, विकटता।

भीसणी—स० स्त्री० [स० भीषणी] सीता की एक सखी।

भीसम—१ देखो 'भीस्म' (रू भे) (डि को)

२ देखो 'भीकम' (रू भे)

भीसमआयी—स० स्त्री० [स० भीष्म + आर्या = भीष्ममाता] गंगा, भागी-  
रथी। (डि को)

भीसमचांदी—देखो 'भीकमचांदी' (रू भे)

भीसमपचक—देखो 'भीष्मपचक'।

भीसमसू—देखो 'भीष्मसू' (रू भे)

भीसमास्टमी—देखो 'भीष्मास्टमी' (रू भे)

भीसुर—वि०—दीप्तिमान।

उ०—चदवदण अगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ। नासिक दीप-  
सिखा जिती, केळ-गरभसुकमाळ।—ढो मा

भीस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भीस्म—स० पु० [स० भीष्म] १ गंगा से उत्पन्न कुरु राजा शान्तनु का  
पुत्र, गागेय (डि को)

पर्याय—गगकाज, गागेय, सतनुमुत्तन कुरुईस, कुरुदेव, द्रढव्रती।

२ शिव, महादेव।

३ राक्षस, असुर।

३ साहित्य में एक रस।

वि०—१ भयकर डरावना।

रू० भे०—भीकम, भीष्म, भीसम।

भीस्मक—स पु० [स० भीष्मक] विदर्भ देश का भोजवशीय नरेश, जो  
रुक्मणी का पिता था।

रू० भे०—भीष्मक, भीमक, भीमक।

भीस्मकसुता—स० स्त्री० यो० [स० भीष्मकसुता] श्रीकृष्ण की पत्नी,  
रुक्मणी।

भीस्मपितामाह—देखो 'भीष्म' (१)

भीस्ममणि—स० स्त्री० [स० भीष्ममणि] हिमालय के उत्तर में मिलने  
वाला एक सफेद रंग का पत्थर या मणि। (शुभ)

भीस्मसू—स० स्त्री० [स० भीष्मसू] गंगा, भागीरथी। (डि को)

रू० भे०—भीसमसू।

भीष्मास्टमी—स० स्त्री० [स० भीष्माष्टमी] माघ शुक्ला अष्टमी, जिस  
दिन भीष्म ने प्राण त्यागे थे।

रू० भे०—भीसमास्टमी।

भुं—१ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—आगं वेहसूर बँठा छै । तठै पीठवै पागहो छाडीयो । पीठवै नू पूछीयो,—‘कठा सू वळीयो?’ इयँ वात कही, ‘बाबाजी आधी भु सू वळीयो । सिकार कियो हुतो सो म्हँ समधडै नू दीयो ।’

—पीठवै चारण री वात

२ देखो ‘भूमि’ (रु भे)

भुअ—देखो ‘भू’ (रु भे)

उ०—भुअ सजोडै दीप, वांकडो कवाण नै जीप हो । माहो माहि न छीप तँ भाल विसाल समीप हो ।—वि कु

भुआरी—देखो ‘भवारी’ (रु भे)

भुइर—देखो ‘भवारी’ (रु भे)

उ०—माघव ! तुम्हे म चालसिउ, गोरी जपड गुज्म । भलू करा-विमी भुइर, माहि राखिसि तुज्म ।—मा का प्र

भुइ—१ देखो ‘भूमि’ (रु भे)

उ०—१ रीति रहावणी जी ऊवो आदरी कीरति कवि करैजी । पर भुइ पस्सरी प्रघट प्राकमीजी खत्रवट वपि खरी वासी खग वसै जी ।—ल पि

उ०—२ मेघ घणो बूटो । घरती अजै नीली नही हुइ छै । त्रिणि अकुर नही हुआ छै । जहा कही ऊठै ची भुइ छै ।—वेलि टी.

२ देखो ‘भाय’ (रु भे)

उ०—अठा सू आगं खारो सरू व्है जावै । खारो लालाणा सू लगाय नै राखी तक पाच कोस री भुइ में फेल्योडो है ।—रातवासी

भुइण—१ देखो ‘भूमि’ (रु भे)

२ देखो ‘भुवन’ (रु भे)

भुइदाग—म० पु० [स० भूमि+दग्ध] १ शव को भूमि में दफनाने की क्रिया ।

२ वह दिन, जिस रोज किसी शव का दाह-संस्कार हुआ हो ।

वि० वि०—इस दिन यात्रा करना अशुभ माना जाता है ।

रु० भे०—भूमिदाग ।

भुइरौ—देखो ‘भवारी’ (रु भे)

भुई—१ देखो ‘भाय’ (रु भे)

उ०—१ ताहरा दूदो बोलियो—रे ! भौ कुण बोलै ? कह्यो जी ‘मेघो’ बोले छै । कह्यो—रे । इतरी भुई सुणीजै छै ।

—दूदैं जोधावत री वात

२ देखो ‘भूमि’ (रु भे)

उ०—१ तिसडै वासली चोरि कपडा नाखि भन-भन आइनै सूतो । ताहरा कह्यो विजाजी भुई भारण छै ।—चोबोली

उ०—२ सूरतन सुजळ सार करि सावू, घोवण लागो सिवो सघीर । पिड भुई सिला ऊपरै पटकै, मरै डरै घट काटै मीर ।

—मोहकर्मसिध मेडतियो

भुईवायली—स० स्त्री०—वयल की जाति का एक वृक्ष जिसके मूल

स्थान से ही बहुत सी छोटी छोटी एव पतली टहनिया निकली होती है । जल वर्चुक ।

रु० भे०—भुइवावली, भूईवावली, भूवावली, भूवावली ।

भुइरौ—देखो ‘भवारी’ (रु भे)

भुकार—स० पु०—वाद्य ध्वनि ।

उ०—अथ राजप्रस्थानं, पवनोद्धतिधूलिपट सहस्रसंख्य तरणि किरणि सुमट विपुक्त हवका वृक्कार विसितकातरजन, ममाम्रदग भेरी भुकार वधरिक्त दिगतर ।—व स

भुगर—स० पु०—एक प्रकार का विलाशय जतु विशेष ।

उ०—प्रगत तणी प्रताप नही पास्यो नर देही, जग मै बीजै जनम हुस्यो भुगर कन सेही ।—अरजुनजी वारहठ

भुगरौ—स० पु०—रग विशेष का घोडा ।

उ०—अनड कालुमा किहाडा किसोयरा गगाजला हसला नीलडा हरीअडा कछेला भुगरा इस्या तुरगम ।—व स

भुगळ—देखो ‘भूगळ’ (रु भे)

उ०—वीरभद्रग वाज्या, जयद्वक वाजी, समहर सामह्या, ग्रहग्रहे त्रवक तरो ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टलटलित, भेरि भुगळ तणे भूभू-याटि भूकिइ मिलकि फाटि ।—व स

भुगारणी, भुगारवौ—देखो ‘घुगारणी, घुगारवौ’ (रु भे)

भुगारणहार, हारौ (हारी), भुगारणियौ—वि० ।

भुगारिओडो, भुगारियोडो, भुगारयोडौ—भू० का० कृ० कृ० ।

भुगारीजणी, भुगारीजवौ—कर्म वा० ।

भुगारियोडौ—देखो ‘भुगारियोडौ’ (रु भे)

(स्त्री० भुगारियोडौ)

भुच—देखो ‘भूच’ (रु भे)

भुजाइयो—स० पु०—अतिथियो को भोजन कराने वाला ।

उ०—रामसिध करमसेणोत वडो दातार, वडो भुजाइयो हुतो ।

—वा दा स्या

भुजाई, भुजायी—स० स्त्री०—भोज विशेष ।

उ०—पछै गुजरात नु असवार हुवा, डेरो सालावास हुवो । दिन रहा पछै कूष हुवो सथलाराँ चैत सुद ७ पधारिया, चठे दसराहा री भुजाई चैत सुद ६ हुई ।—नैणसी

२ देवताओ को चढाये जाने वाला भोजन ।

उ०—करि भुजाइ चाढि कडाळा, विधि विधि सह भोजन वडाळा । पाति रचि चौसर प्रौंचाळै, कवि रजपूत पोखिया काळै ।

—र वचनिका

३ भूजने की क्रिया ।

४ रसोई ।

रु० भे०—भुजाई, भूजाई, भूजाई ।

भुजाडणी, भुजाडवौ—देखो ‘भुजाणी, भुजावौ’ (रु भे)

भुजाडणहार, हारो (हारी), भुजाडणियो—वि० ।

भुजाडिओडी, भुजाडियोडी, भुजाडचोडी—भू० का० कृ० ।

भुजाडीजणो, भुजाडीजवो—कर्म वा० ।

भुजाडियोडी—देखो 'भुजायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुजाडियोडी)

भुजाणो, भुजावो [भूजाणो क्रि० का प्रे० रू०] १ भूजने का काम किसी व्यक्ति से कराना ।

२ किसी को भूजने में प्रवृत्त करना ।

भुजाणहार, हारो (हारी), भुजाणियो—वि० ।

भुजायोडी—भू० का० कृ० ।

भुजाईजणो, भुजाईजवो—कर्म वा० ।

भुजाडणी, भुजाडवो, भूजावणो, भुजाववो, भुवाणो, भुवावो, भुनाडणो, भुनाडणो, भुनाणो, भुनावो, भुनावणो, भुनाववो

—रू० भे० ।

भुजायोडी—भू० का० कृ०—१ भूजने का काम किसी व्यक्ति से करायो हुआ २ किसी को भूजने में प्रवृत्त किया हुआ (स्त्री० भुजायोडी)

भुजावणो, भुजाववो—देखो 'भुजाणो, भुजाववो' (रु भे)

भुजावणहार हारो (हारी), भुजावणियो—वि० ।

भुजावियोडी, भुजावियोडी, भुजाव्योडी—भू० का० कृ० ।

भुजावीजणो, भुजावीजवो—कर्म वा० ।

भुजावियोडी—देखो 'भुजायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुजावियोडी)

भुडु, भुडो—देखो 'भूडो' (रु भे)

उ०—१ इण भात हालतो देखन गोडवाड पाखती सोनगरां री ठुकराईसु सोनगरा नू अमावा हुआ जु ए पाखती भुडो, इण नैडा थका म्हाणु विगाड, तरें राव रिणमलनु परणाय नै वेसासिया । आवो जाव हुई ।—राव रिणमल री बात

उ०—२ देव ! अह्य-प्रति लोभीठ, बीजा लील भूयाळ । सुख संपत्ति सुहणइ नही, भवसिद्धि भुडइ भाळि ।—मा का प्र

उ०—३ त्यामे आगे थो तिणनू भडारी रतनचद कयो स्त्रीजोरो भुडो करो छो नै इद्रसिधजी रा वाछिया करो छो नै भाटी नै राठोड आमासामा मर जासी ने थाहरे मतीज री वर लेणो हुवें तो मोनू मारो ।—रा व वि

उ०—१ हे ब्रद्धा तु माहरे, पासं वहिली आवि । स्यु भुडो आलस करे, खिण एक बार म लाइ ।—वि कु

उ०—४ कुमरी विचारें रहिनै जीवती रे, स्यु करिस्यु निस दीस । मरण नथी का दे तो पापिया रे, फिट भुडा जगदीस ।—वि कु (स्त्री० भुडो)

भुणगेता—स० पु०—सोलकी वश को एक शाखा ।

भुदाणो, भुदावो—देखो 'भुजाणो, भुजावो' (रु भे)

भुदाणहार, हारो (हारी), भुदाणियो—वि० ।

भुदायोडी—भू० का० कृ० ।

भुदाईजणो, भुदाईजवो—कर्म वा० ।

भुदायोडी—देखो 'भुजायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुदायोडी)

भुय—१ देखो 'भूमि' (रु भे)

उ०—१ परवान फिरिया पण श्री तो न मानें । कह्यो—'जी, भात्रीजो भुय भोगवें काकं वेंठे ? यो तो मोनू नीद नही आवें ।'

—नैणसी

उ०—३ आहियो आमाडाह, गाजें नै गुडकी कियो । वूठी भेदा-ळाह, निवळी भुय पर नागजी ।—अज्ञात

उ०—४ तरें राव रें आदमिये पाणी रें मिस कर हाथी छोडिया तरें ऊपरठाई कह्यो—हाथी कठी ले जावो छो ? तरें उणा कह्यो—नाठा तो भुय अगली पाणी पाय ल्यावां छा ।—रावमालदे री बात

उ०—५ भुय परखी, हें नरां, कहा परखी वीद । भुय विन भला न नीपजें, कण, प्रण, तुरी, नरीद ।—अज्ञात

२ देखी 'भाय' (रु भे)

उ०—१ ताहरा अरडकमल वोलियो—'वडा भाटी ! जाहै ना, ह घणी भुय थो आयो ह ।—नैणसी

उ०—२ ताहरा मेघो माळियें चढियो । कह्यो—'रे घोडया ईयें तरफ मता उछेरो ! दूदो जोधावत आयो छें, घोडया ले जासी, ताहरा दूदो वोलियो । कह्यो—'ओ कुण वोलें ? कह्यो, जी' मेघो बोले छें । ताहरां कह्यो— रे ! इतरी भुय सुणीजें छें ?—नैणसी

भुरट—देखो 'भुरट' (रु भे)

भुरटियो—देखो 'भुरट' (अल्पा, रु भे)

भुवाणो, भुवावो—देखो 'भवाणो, भवावो' (रु भे)

उ०—पछें विसमिल्ला कं परा'र करणें रें गलें पाक रुह वण'र चादर हटाई । कन पडयो तेज कानाळो तासळो (तगारी) सभायो अर करणें रें गलें माथें आपरें दोना हाथा रें जोर सू भुवा'र दे मार्यो ।—दसदोख

भुवणि—देखो 'भुवन' (रु भे)

उ०—अखिल रजरीत रा सिध लागा अरसि, भुवणि मेछाण रा माण भागा । निभै नरनाथ ग्रहि हाथ निरवाहियो, अहि 'सिवो' दोइण दिलेस आगा ।—नरहरिदास वारहठ

भुवरियो—देखो 'भवर' (अल्पा, रु भे)

भुवाळी—देखो 'भवळ' (रु भे)

उ०—१ डागें आपरी वेटी वेई वर देखणनै काठी कमर बांध ली । आडसर, मूमासर, रिणोसर राजगढ च्यारा कानी भुवाळी खावण नीसर्यो ।—दसदोख

उ०—२ घर हाळा घणी ही समझावै, पण सिर मे गूग चढायेडो,  
भुवाळो खांती फिर् । माने कद ! माथे मे राख घाल राखी है ।

—दमदोख

भुवारी—१ देखो भवारी ।

२ देखो 'भू' (रु भे)

उ०—राधा तेरी बोली माही, मुडक घणी । तीखा तीखा नैण  
भुवारा बाका, मानी कवाण तणी ।—मीरा

भुवास-स० पु०—१ यह खूटा जिममे घोडे के पिछले पैरो की रस्सी  
बांधी जाती है ।

२ देखो 'भूयाम' (रु भे)

भुहरी, भुहारी—देखो 'भू' (रु भे)

उ०—१ सूरज करे सलाम, भिडे मोसरा भुहारै । काय लियू  
ईनाम, काय जमघाम विचारै ।—सू प्र

उ०—२ भुहारा तणी रेखा ताइ भांमणि, घणू स कोमल रूप  
घणइ । चाढी जांणि कवाण चाढतइ, तजी कुवरि बलोच तरणइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'भवारी' (रु भे)

उ०—माल सगळी गढ नीचं भुहारा छं तिणा माहे घातियो ।

—नैणमी

भुही—देखो 'भाय' (रु भे)

२ देखो 'भूमि' (रु भे)

भु-स० पु०—१ कीआ ।

२ सपं ।

३ हड्डी ।

४ बेसक । (एका०)

भुभग—देखो 'भुजग' (रु भे)

उ०—गोधूळ गोम गहत ए, वरहास वेग वहत ए । पढताळ पाइ  
पवण ए, भुभ भार कपि भुभग ए ।—गु रु व.

भुभगम, भुभगमि—१ देखो 'भुजगम' (रु भे)

उ०—विरह-भुभगमि हू डगी, खिण खिण दामड देह । माहरइ  
माघव-केरडी, आस भभी-रस श्रेह ।—मा का प्र

भुभ्र—देखो 'भू' (रु भे)

उ०—गोधूळ गोम गहत ए, वरहास वेग वहत ए । पढताळ पाइ  
पवण ए, भुभ्र भार कपि भुभ्रग ए ।—गु रु व

भुभ्रण—देखो 'भुवन' (रु भे)

भुभ्रणपति—देखो 'भुवनपति' (रु भे)

उ०—गैरर अरि गजणी, भगत दुख भजणी । भुभ्रणपति खाटणी,  
विरदभारी कान्ह कीरति करै ।—पि प्र

भुभ्रन—देखो 'भुवन' (रु भे)

भुभ्रपति—देखो 'भूपति' (रु भे)

उ०—गुरुदेव सुमति समापि गुण, भुभ्रपतिज जेम रतन भण ।  
पित जासु 'महेस' नरेस पर, गढ वेदि लिखी जिणि देवगिर ।

—र वचनिका

भुभ्रवळ-स० पु० [स० भू+वळ] १ राजा, नृप ।

२ वीर, योद्धा ।

घ०—रिणमाल जोघ उण वार रा, वळ अणमाप भुभ्रवळा ।  
वाधियो प्राण ब्रह्ममड नू, जाण क वावन जुभळां ।—रा रु

भुभ्रा—देखो 'भूभ्रा' (रु भे)

उ०—जा अवा लीघी जनम, सोयाप मुरद्धर । परवाडो कीघो पहल,  
'करनल्ल' भुभ्रा कर ।—जुभारसिध मेडतियो

भुभ्राजी—देखो 'भूभ्राजी' (रु भे)

भुभ्रारी—१ देखो भू' (रु भे)

२ देखो 'भवारी' (रु भे)

भुभ्राळ-स० पु०—१ केश, बाल ।

उ०—जईनखान, अर सेखकरीद पातिसाहजी रा हाथा कटारी ।  
भालियो । ताहरा साह फतलह कहियो जे पातिसाहजी भुभ्राळ  
उतरावणा हीज तो भुभ्राळ उतराडीज ।—द वि

२ आयं गीति या खघाण (स्कव) छद का भेद विशेष । (पि प्र)

२ देखो 'भूपाल' (रु भे)

उ०—'अजी' रुघनाथ उभै दइवाण, 'जसावत' खाग हणै जवनाण ।  
'चुडावत' जूटत यो कळिचाळ, 'भदावत' जूटत अग्रज भुभ्राळ ।

—सू प्र

उ०—२ जाणता तूभ न जाण्यो जाय, काया तो पाखे दाखे काय ।  
मकोडी कीट पतण मुणाल, भिखग तु ही ज तु ही ज भुभ्राळ ।

—ह र

उ०—३ कुश्रर कुळोवर वीनमइजी, साभळि भीम भुभ्राळ ।  
पंच्याणु क्षोहणि मीलैजी, जेह नइ श्रीजी ताल ।—रुक्रमणी मगळ

भुभ्रासासू-स० स्त्री०—देखो 'भूभ्रासासू' (रु भे.)

भुइ—देखो 'भूमि' (रु भे)

उ०—१ घरापति आज लखधीर रज घणी, घणी भुइ जास जस  
वास रिधि घणी । कवी निति देखि मन माहि विळकुळै, भली  
विधि तेज रवि जेम भळहळ ।—ल पि

उ०—२ उत्तरदी भुइ जु उपढइ, पाळउ, पवन घणाह । हर-  
णाखी, हम नइ कहइ, साम्ही सालै जाह ।—ढो मा

२ देखो 'भाय' (रु भे)

उ०—आढा डूगर, भुइ घणी, तियां मिळीजइ एम । मनिहू खिणहि  
न मेल्हियइ, चकवी दिणीयर जेम ।—ढो. मा

भुइभ्रांवळी-स० स्त्री० [स० भूम्यामलक] वरसात मे ठडे स्थानों मे  
प्राय घरो के आस-पास होने वाला क्षुप विशेष ।

र० भे०—भुई आबळी ।

भुइ—१ देखो 'भूमि' (रु भे)

उ०—१ खडा-खड फाट भडा भड खग, पडै निरलग नरा सिर पग । भडा करि-माळ रिखग भडत, पडै भुइ घाउ निहाउ पडत ।—गु रू व

उ०—२ दुस्सासण जिकै जिंसा दुरजोधन, रिख असधामा द्रोण रिख । भारथ भुइ जिकै कदै नह भाजै, परदळ भजण पाच-मुख ।—गु रू व.

२ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—आडा डूगर, भुइ घणी, सज्जण गही विदेस । मागी तागी इ पखुडी, केतो वार लहेस ।—ढो मा

भुङ्गण—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—बिसन घण वरण किसन जग करण भुङ्गण उत्तारण भार । सुजि सार सुर साधार गमण असुर गह पर, अगम यह विघन मिटे वह वार करतार भजि स्त्रीकार ।—पि प्र

२ देखो 'भुवन' (रू भे)

भुई—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

२ देखो 'भाय' (रू भे.)

भुईआंवल्लो—देखो 'भुइआंवल्लो' (रू भे)

भुईरिंगणी-स० स्त्री०—कटकारी नामक एक प्रकार का छोटा क्षुप ।

भुई—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—तणा देस रजपूत, देस गढ चाडि न मूष्ठा । हुआ सरव भुई भूत, देव मिद्वान न हूआ ।—गु रू व

भूकणी, भूकत्री—देखो 'भूकणी, भूकत्री' (रू भे.)

२ देखो 'भूकणी, भूकत्री' (रू भे)

भूकणहार, हारी (हारी), भूकणियो—वि० ।

भूकियोडो, भूकियोडो, भूकियोडो—भू० का० कृ० ।

भूकीजणी, भूकीजयो—कर्म वा०/भाव वा० ।

भूकियोडो—१ देखो 'भूकियोडो' (रू भे)

२ देखो 'भूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भूकियोडो)

भूकियो—देखो 'भूखो' (अल्पा, रू भे)

भूख—देखो 'भूख' (रू भे)

उ०—चित निद्रा परिहरइ रे, चिता ले जाई दुक्व । चिता अह-निसि तन दहइ, चिता फेडइ भूख ।—प च ची

भूखड—देखो 'भूखो' (मह, रू भे)

भूक्त-भू० का० कृ० [स०] १ जो खाया गया हो । (भक्षित)

२ जिसका भोग किया गया हो ।

३ जिसे भुना लिया गया हो ।

भूक्तकार-स० पु० [स०] रसोईदार, रसोईया । (हि. को)

भूक्तभोग-वि० [स०] जिसने भोग किया हो ।

रू० भे०—भूक्तभोग ।

भूक्तयोगी-वि० [स०] जिसे किसी कार्य का फल भोगना पडा हो ।

रू० भे०—भूक्तभोगी ।

भूक्ति-स० स्त्री० [स०] १ चार प्रकार के प्रमाणों में से एक ।

(धर्मशास्त्र)

२ ग्रहों का किसी राशि में एक एक अक्ष करके गमन ।

३ वह अवस्था, जब कोई किसी पर अपना अधिकार करके उसका उपयोग करता है, दखल ।

४ आहार, भोजन ।

५ किसी पदार्थ का किया जाने वाला भोग ।

भूखडी-स० स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक ।

भूखमरी-स० स्त्री०—निर्धनता, कगाली ।

भूखमरी-वि० (स्त्री० भूखमरी) १ जो भूखों मरता हो, भूखा ।

२ जो खाने पीने को बहुत लालायित रहता हो ।

३ कगाल, दरिद्री ।

भूखारी-स० पु० [फा बुखारा] रूसी तुर्किस्तान का एक प्रसिद्ध नगर, जो वहा की राजधानी भी है । यहा का सौन्दर्य प्रसिद्ध है, बुखारा ।

उ०—साचो रग नामदेव के लाग्यो, छिन मे छान छवागोजी ।

मुलक भूखारा का बादसाह के लाग्यो, राज मुलक को त्याग्योजी ।

—मोरा

भूखालु—देखो 'भूखो' (मह, रू भे)

भूखालुवो-स० पु०—देखो 'भूखो' (रू भे)

उ०—तेरा, रे वीरा, भूखालुवा, घणदेवा ने भात पसाव । तेरा, रे वीरा, तिमालुवा, घणदेवा ने सरवत घोळ पिलाव ।—लो गो

भूगटी—देखो 'भूकुटि' (रू भे)

उ०—पाच लाख पैजार, भूगटी जिका रे 'भेरिया' ।

—महाराजा बलवत्सिंह

भूगत-स० पु० [स० भूक्त] १ भोजन, आहार ।

उ०—अख रतो मदा करेवा अचडा, वैर वाराह कमध वरियाम ।

आश्रं दळे सामही आयो, रुक भूगत करवा बळराम ।

—बळराम राठोड री गीत

३ घन, द्रव्य ।

४ भुगतने की क्रिया या भाव ।

भूगतणो, भूगतवो-क्रि० स०/अ० [स० भूक्त] १ उपभोग करना, भोगना ।

उ०—कर हुकम मूक कवूल, इळ भूगत निज अणभूल । सुण वयण पति 'इद्रसाह', लिख दीध हुकम सलाह ।—रा रू

२ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन करना ।

उ०—१ जग मामल चुगली जिसी, हीण विसन अह है न । विण चुगली भूगत विथा, चुगली कीवा चैन ।—वा दा.



उ०—२ काणियो काचर पाछो वळती वगत वाने फेर सीख दीनी-नेकी री बमाई करी, सुख पावोला, म्हारा चोवळा मे हाथ घालियो तो थें थारी जाणो, पछे म्हारें जेडी भूडो नी हे। अर्थ करिया जेडा भुगतो।—फुलवाडी

उ०—३ तद वो मुळकने जवाव दियो—म्हें वंढो हू जितें ई अँ वेसरिया कसूवल ओढें, नीतर रडापो भुगतणो पढतो।—फुलवाडी

उ०—४ म्हारें घर री हाण भुगतिया ई जें वडेरा री सीख साची व्हे जावें तो म्हें लाख भरपाया।—फुलवाडी

३ भार उठाना, (कष्ट) भेलना।

उ०—१ गूजर वावो उणनें समभावतो कै'वण लागो—वेटी, यू यू फालतू रा फोडा भुगतें, यू इता घड्या करे।—फुलवाडी

उ०—४ वेटी विचाळें ई जोर सू खिलखिल हसी, जाणो कोयल हसी व्हे। बोली—वा ! म्हें तो जेडी कवराणी, वंढी ई महाराणी।

आप वधाई सारू फालतू ई फोडा भुगतिया।—फुलवाडी

४ अनुभव करना, देखना।

उ०—उजास री पोल आयगी ही। भतीजी फेर आगे कै'वण लागीं—पण म्हें तो अँकर भुगतियोडी हू।—फुलवाडी

५ ऋण, देन-दारी आदि का चुकना या पटना।

६ गुजरना, व्यतीत होना।

७ पूरा होना, निवटना।

८ खबर होना, सदेश प्राप्त होना।

भुगतणहार, हारो (हारी), भुगतणियो—वि०।

भुगताडणी, भुगताडवी, भुगताणी, भुगतावी, भुगतावणो, भुगताववी—प्रे० रु०।

भुगतिओडी, भुगतिओडी, भुगतियोडी, भुगत्योडी—भू० का० कृ०।

भुगतीजणो, भुगतीजवो—कर्म वा०।

भगतणो, भगतयो—रु० भे०।

भुगताण—स० म्त्री०—१ किसी के ऋण, देनदागी मूल्य आदि चुकाने की क्रिया या भाव, परिशोध।

उ०—टोकरी मुळकने मोमी भारती जवाव दियो—जै राजा रँ आगें खजाने मू ईं प्रीत री भुगताण व्हे तो खजानो तो थारें पायतो हे ई, पछे प्रीत मारू भवता यू फिगे।—फुलवाडी

२ निवटारा, फैला।

३ किसी के बदले में कुछ देने की क्रिया या भाव।

उ०—म्हारी मदद री वो पाछो इण रूप मे भुगताण करे'ला म्हें मा बात मपना मे ई नी जाणी ही।—फुलवाडी

४ मदद भेजने की क्रिया भाव।

५ प्राप्ति-रमीद।

ज्यू—पया दे दिया न भुगताण ले आया।

भुगताडणी, भुगताडयो—देखो 'भुगताणी, भुगतावी' (रु भे)

भुगताडणहार, हारो (हारी), भुगताडणियो—वि०।

भुगताडिओडी, भुगताडियोडी, भुगताडयोडी—भू० का० कृ०।

भुगताडोजणो, भुगताडोजवो—कर्म वा०।

भुगताडियोडी—देखो 'भुगतायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुगताडियोडी)

भुगताणो, भुगतावो—क्रि० स०—१ उपभोग कराना, भोगवाना।

२ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन कराना।

३ भार उठाना, कष्ट भेलाना।

४ अनुभव कराना, देखाना।

५ ऋण, देनदारी, मूल्य आदि चुकाना।

६ गुजराना, व्यतीत कराना।

७ पूरा करना, निवटाना।

८ खबर देना, सदेश देना।

भुगताणहार, हारो (हारी), भुगताणियो—वि०।

भुगतायोडी—भू० का० कृ०।

भुगताईजणो, भुगताईजवो—कर्म वा०।

भगताडणो भगताडवो, भगताणो, भगतावो, भगतावणो, भगताववी, भुगताडणी, भुगताडवो, भुगतावणो, भुगताववी

—रु० भे०।

भुगतायोडी—भू० का० कृ०—१ उपभोग कराया हुआ, भोगाया हुआ।

२ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन कराया हुआ

३ भार उठाया हुआ, (कष्ट) भेलाया हुआ ४ अनुभव कराया

हुआ, देखाया हुआ ५ ऋण, देनदारी, मूल्य आदि चुकाया हुआ

६ गुजराया हुआ, व्यतीत किया हुआ ७ पूरा किया हुआ, निवटा

हुआ ८ खबर या सदेश दिया हुआ

(स्त्री० भुगतायोडी)

भुगतावणो, भुगताववो—देखो 'भुगताणी, भुगतावी' (रु भे)

उ०—१ किराी रा जीव नै नी सतावणो, मिनख री कालजी नी वाळणो, मिनख री आदर वरणो, खुद भुगत लेणो पण आपरें स्वारय री खातर दूजा नै नी भुगतावणो मिनख री घरम फगत ओ इज हे।—फुलवाडी

उ०—२ फीज री कठी अणिया फिरं, निजर देख नै घावजो। सामळी जिता काना सवद, जळद आय भुगतावजो।—पे रु

भुगतावणहार, हारो (हारी), भुगतावणियो—वि०।

भुगताविओडी, भुगतावियोडी, भुगताव्योडी—भू० का० कृ०।

भुगतावीजणो, भुगतावीजवो—कर्म वा०।

भुगतावियोडी—देखो 'भुगतायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुगतावियोडी)

भुगति—स० पु० [स०] १ विषयोपभोग, सात्त्विक सुख।

उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जम परिमळ, नव रस ततु विधि अहोनिषि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, भुगति पूल पळ भुगति मिसि।—वेलि



२ भोजन, आहार ।

उ०—सिध नाथ बल उपजियो सहस बल, सरं राम बासै सकति ।  
उत्तमगम पावणी आयो, भूरं दी खागा भुगति ।

—महाराज अमरसिध हाडा री गीत

रू० भे०—भुगती ।

भुगोल, भुगोल—देखो 'भूगोल' (रू भे )

उ०—खित जासिय ऊमर पाय सही, नभ सूरज चद भुगोल नही ।  
जिंदराव ले जासिय वित्त जठै, कह 'पाल' वतासिय मूह कठै ।

—पा प्र

भुडको—देखो 'वुगती' ।

भुडको—स० पु०—गोल नलीदार मुह वाला पानी रखने का मिट्टी का जलपात्र, सुराही ।

भुडती—देखो 'मडीती' (रू भे )

भुडव—देखो 'वुरद' (रू भे )

उ०—गै-जूहां गनीमा थाट मेहत्तै गजवां घेर, भूटकं नागीर फेर  
फीजा की भुडव । लाखा बीच 'आपा'नु सोपाळ 'बीजै' मार लीघी  
गोपाळ ज्यू फीघी कालमेचनै गुडद ।—हुकमीचद खिडियो

भुचकणो, भुचकवो—कि० अ०—कम्पायमान होना ।

उ०—महा क्रोधगी गनीमा हूत हुचकं नरीद माघो, भुचकं भूलोक  
वादी चकं कोम भार । बोमगी अरावा भाल वताळ वचक बकं  
बाजद्रा 'वहादेरस' हकं जेण वार ।—हुकमीचद खिडियो

भुचकणहार, हारी (हारी), भुचकणियो—वि० ।

भुचकियोडो, भुचकियोडो, भुचकियोडो—भू० का० कृ० ।

भुचकीजणो, भुचकीजवो—भाव वा० ।

भुचकियोडो—भू० का० कृ०—कणायमान हुवा हुआ ।

भुचरको—स० पु०—१ टक्कर, भिडन्त ।

२ प्रहार, चोट ।

३ चूणं चूरा ।

भुजग—स० पु० [स० भुजग] (स्त्री० भुजगण, भुजगणी, भुजगिनी)  
१ सर्प, साप । (अ मा, ह ना मा )

उ०—अध कूप ससार श्री, भीतर काळ भुजग । बाछे सुख नर  
ऐय वस, सबळ अविद्या सग ।—वां दा

२ शेषनाग ।

उ०—चणाघिप रूप भरी उण वार, भुजग न भालि सव्यो भुव  
भार । भेली हिज 'आवह' बाहर भूप, र नाहर चक्र सुदस्सण  
रूप ।—मे म

३ पति ।

४ उपपत्ति, यार ।

५ स्वामी, मालिक ।

६ राजा, नृप ।

उ०—इण कुळ ही देवट अभिघांनी, मही भुजग हुवी रणमानी ।

कुळ जिण रा देवडा कहावै, दान समर अनुपम दरसावै ।—व मा.

७ हट योग मे, कूडलिनी रूपी नागिन का पति या स्वामी ।

८ प्राचीन भारत मे राजा का एक प्रकार का नौकर ।

९ सीसा नामक धातु ।

१० चौबीस विहरमानो मे से पन्द्रहवें विहरमान, श्रीभुजगस्वामी ।

उ०—भुजग देव भावइ नमू भगति युगति मन आणि । भुजंगनाथ  
वदित सदा, सुरनर नायक जाणि ।—वि कु

रू० भे०—भमग, भयग, भवग भुमग, भुजग भुयग, भुयग, भुयगि,  
भुवग, भूमग, भूयग, भूवग ।

भुजगचर—स० पु० [स० भुजग + चर्] १ गरुड । (डि को )

२ मयूर, मोर ।

रू० भे०—भुयगचर ।

भुजगपत, भुजगपति, भुजगपती—स० पु० [स० भुजगपति] १ शेषनाग ।

२ वासुकी ।

रू० भे०—भुजगपति ।

भुजगपास—स० पु० यौ० [स० भुजग + पाश] नागपाश नामक एक प्राचीन अस्त्र ।

भुजगप्रयात—स० पु० वारह वर्णों के एक चरण का एक वर्णिक छन्द जिसमे पहला, चौथा, सातवा व दसवा लघु होते हैं । प्रत्येक चरण मे चार यगण होते हैं ।

रू० भे०—भुजगीप्रयात ।

भूजगभुज, भुजगभोजिन—स० पु० [भू० भुजगभोजिन्] १ गरुड ।

२ मोर मयूर ।

भुजगम—स० पु० [स० भुजगम] १ सर्प, साप, नाग ।

(अ मा, ह ना मा )

उ०—जहर विखम जारग, भुजा धारग भुजंगम । माळ तेज भारग,  
जरा हारग लमै जम ।—सू प्र

२ शेषनाग ।

रू० भे०—भुजगम, भुजगमि, भुजगम, भुयगम, भूवगम, भूयगम,  
भूयंगमि ।

भुजगमचर—देखो 'भुजगचर' (रू भे ) (ह ना मा)

भुजगरसन—स० स्त्री०—दो की सख्या \* (डि को )

भुजगविष्णु भित—स० पु० [स० भुजगविजृ भित] २६ वर्णों का वर्णिक छन्द जिसमें दो मगण, एक तगण, तीन नगण एक रगण, एक सगण एव अन्त मे लघु गुरु होते हैं ।

भुजगासन—स० पु० [स०] योग के चौरासी ग्रामनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमे सर्व प्रथम उल्टा सोकर, जिससे पाव के अगूठे से नाभि पर्यंत का भाग पृथ्वी का स्पर्श करता रहे । दोनों करतलो को नाभि की दोनों बाजू मे पृथ्वी पर रखकर क्षिर की तरफ का

भाग ऊचा रखना होता है इससे कुडलिनी जागृत होती है व जटराग्नि की वृद्धि होती है ।

भुजगी-स० पु० [स० भुजग + डीप्] १ प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण वाला एक वणिक छंद जिसमें पहले तीन यगण व अन्त में एक लघु व एक गुरु होता है ।

२ बारह वर्ण वाला एक गीत जिसमें चार यगण व अन्त में गुरु होता है ।—र. ज प्र

३ देखो 'भुजग' (रु भे)

उ०—भुजगी लचकें देत कोम धकें भोम भार, वकें बळोवळी खेळा पिलकें वीराण । छिलें धाव चळूळा सूरमा धावा लोह छकें, उभै-मेन हकें उचकें आगण ।—हुकमीचंद खिडियो

भुजगीप्रयात—देखो 'भुजगप्रयात' (रु भे)

भुजगेन्द्र-स० पु० यो० [स० भुजग + इन्द्र] शेष नाग ।

रु० भे० भुजगेंद्र ।

भुजगेस, भुजगेसर-स० पु० यो० [स० भुजग + ईश, भुजग + ईश्वर] १ शेषनाग ।

उ०—मुनिद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजगेस देवेस सव्वेस मेळा । विदेह प्रत ग्या कहें एम वाक, पुत्री जौ वरें सो ज ताणें पिनाक ।

—सू प्र

२ पतजलि ऋषि का एक नाम ।

रु० भे०—भुजगीस, भुजगेस, भुजगेस्वर, भुजगेस, भुजगेसुर ।

भुज-स० पु० [स०] १ हाथ ।

२ मकान के एक ओर की दीवार ।

३ हाथी की सूट ।

४ वृक्ष की डाली, शाखा ।

५ रेखागणित में कोई किनारा या सिरा या उस पर खींची हुई रेखा ।

ज्यू—त्रिभुज, चतुर्भुज ।

६ रेखागणित में समकोणों का पूरक कोण ।

७ ज्योतिष में तीन राशियों के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति ।

८ दो की संख्या । ४ (डि को)

९ चार की संख्या । ४ (डि को)

१० देखो 'भुजा' (रु भे) (प्र मा)

उ०—१ नममकार सूरान नरां, पूरा मतपुग्साह । भार्गव गज घाटा भिहें, घटै भुजां उरमाह ।—घा दा

उ०—२ घन्य कस्यो मय ऊमरा, गाहम देव प्रचह । हुवा सुरगा वांगु मुण, भुज लागा ग्रहमड ।—रा रु

यो०—भुजप्रतर, भुजप्राजान, भुजतळ, भुजप्राण, भुजदड, भुजपाप, भुजवध, भुजवधन, भुजवळ, भुजवाथ, भुजभूमण, भुजमूळ, भुजमीस ।

मुण०—भुज नर भेटणी—गने लग कर मिलना ।

भुज में भरणी—आलिंगन करना, गले लगाना । भुजभार—उत्तरदायित्व ।

रु० भे०—भुज्ज, भुय ।

भुजअतर-स० स्त्री० यो० [स० भुज + अन्तर] छाती, वक्षस्थल ।

(डि को)

भुजप्राजान—वि० [स० भुज + प्राजानु] जिसके हाथ घुटने तक लंबे हो, प्राजानुबाहु ।

उ०—'सकत' सेर मन मेर, वेर दुम्भर भर भल्लण । भुजप्राजान प्रमाण, पाण असहा खग पल्लण ।—रा रु

रु० भे०—भुजाप्राजान ।

भुजकट-स० पु० यो० [स० भुज + कटक] नाखून । (प्र मा)

रु० भे०—भुजकाटी, भुजाकट ।

भुजक-स० पु० [स० भुजिष्य] नौकर, अनुचर । (ह ना. मा)

रु० भे०—भुजक ।

भुजकांटी—देखो 'भुजकट' (रु भे) (डि को)

भुजकोटर-स० स्त्री० यो० [स० भुज + कोटर] बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, काख । (डि को)

भुजख—देखो 'भुजक' (रु भे) (प्र मा)

भुजग—देखो 'भुजग' (रु भे.) (प्र मा, ह नां मा)

उ०—अर अल्प धन भुजग नायक रैं समान लज्जा पाय प्रामार रो समूह नाक रूप विदेस में थियो जुधो ।—व भा

भुजगपति—देखो 'भुजगपति' (रु भे)

भुजगळ—देखो 'भुजळग' (रु भे)

उ०—दह गजर भुजगळे काळां दळां, समर दै दवा चौमठि सगायें । डमर भर 'भगत' उत जिका नाराज डहे, मगळा सिध वडै जिम खला मार्ये ।—सुनमानसिध हाडा री गीत

भुजगीस—देखो 'भुजगेस' (रु भे)

उ०—रारिया सुभट तूटै दमग रीस रा, त्रिलोचण जिसा छूटै नयण तीमरा । मिर कर्म ऊकसैं लसैं भुजगीस रा, जोय दससीस थट कोम जगदीस रा ।—र ज प्र

भुजगेन्द्र—देखो 'भुजगेंद्र' (रु भे)

भुजगेस, भुजगेस्वर—देखो 'भुजगेस' (रु भे)

उ०—भुजगेस महेंस दुजेस रिखी, नित पै रज चाहत माधव रे । तजि आन उपाय सबै 'किमना' भज राधव राधव राधव रे ।

—र ज प्र

भुजङ-स० पु०—वीर, योद्धा ।

भुजठाळक—१ देखो 'भुजळग' ।

उ०—ताजीम पाय कहियी तिका, बाह धिनीधिन बाहुजां । लाख हू हेक हेको लडण, भुजठाळक म्हाली भुजां ।—मे म

भुजङ-वि० [स० भुजदण्ड] १ बलवान, योद्धा ।

२ प्रचंड, जबरदस्त ।

३ समर्थ, शक्तिशाली ।

उ०—सारगपाण जयराम तिलोक स्वामी । भूपाळ-भूप भुजडह प्रचड भांमी ।—र ज प्र

४ आभूषण विशेष ।

५ देखो 'भुजा' ।

उ०—१ सखी अमीणी साहिबी, वोह जूझो बलबड । सौ थाभै भुजडह सू, खडहडतो ब्रह्मड ।—वा दा

उ०—२ किसे काम आवणरण कालो, बाघे माथे मोड विलालो । भुजडह पकड रुठियो भालो, लेवा भचक ऊठियो 'लालो' ।

—ब्रजुवाई

रु० भे०—भुजडह, भुजयडह, भुजाडह, भुजादड, भुज्जडह, भुडह, भुयडह, भुवडह, भूयडह, भूडह ।

भुजडाण-वि०—लम्बी भुजाओ वाला वक्षस्थल ।

२ भुजाओ को तोडने वाला, पराक्रमी ।

उ०—पहसी जद काम दोहसी पाळी, दाढयाळी असुरा भुजडाण । वा आवे ऊपर इकताळी, देसणोक वाली दीवाण ।—अज्ञात

भुजतळ-स० पु०—भुजाओ के मध्य का भाग ।

उ०—काचळ कातरिया बाजू मे काठा, भुजतळ भेटे जा भेटे अघ माठा । कर मे काकणिया जसदा गळ काठी, अदभुत मोरा पर लुढतोही आंटी ।—ऊ का

भुजत्राण-स० पु० [स० भुजत्राण] युद्ध के समय पहनने के हाथ के दस्ताने ।

भुजदड—१ देखो 'भुजडह' (रु भे )

उ०—दुजणसिध दर्ईवाण, सूर बोलै 'सबळावत' । भूप भडा भुजदड, पटा इण कजि पूजावत ।—सू प्र

भुजन—देखो 'भजन' (रु भे ) (अ मा )

भुजपरिनाग-स० पु० [स०] दक्ष प्रजापति राजा की पुत्री कडुनामा के गर्भ से उत्पन्न नवकुली नागो में से एक ।

भुजपाळ-स० पु०—योद्धा, वीर । (ना मा )

भुजपास-स० पु० यो० [स० भुज+पास] १ किसी के गले मे हाथ डालने की क्रिया, गलवाही ।

भुजवद भुजवध-स० पु० [स० भुज+वध] १ भुजा पर धारण करने का एक आभूषण विशेष ।

उ०—भूली लाज काज सुनि सजनी, परघी अधिक रस फदन । मीरा के प्रभू गिरधरनागर, करि राखी भुजवधन ।—मीरा

रु० भे०—भुजवद ।

भुजवधन-स० पु० [स०] आलिंगन ।

भुजवळ-स० पु० [स० भुज+वळ] १ भुजाओ की शक्ति, सामर्थ्य ।

उ०—अनमी आटीला थळिया थळ बाळा, विपदा वाटीला वळिया वळबाळा । दुरजय दीखण मे निरभय दिन दूल्हा, भीखण दुरभिख मे भुजवळ नह भूला ।—ऊ का

२ शालिहोत्र के अनुमार घोडे के अगले पैर मे ऊपर की ओर को

होने वाली भौरी ।

३ मुखिया, प्रधान ।

रु० भे०—भुजावळ, भुजावळि, भूयवळि ।

भुजवळी-वि०—बलिष्ठ भुजाओ वाला, पराक्रमी ।

उ०—भुजवळी कान भाराथ मड, 'खीम' उत करै खळ विहड खड ।

'राजघर' रुकि राखति राज, 'सामळ' सुतन्न 'सदी' सकाज ।

—गु रु. व

रु० भे०—भुजावळि ।

भुजवाथ-स० पु०—दोनों भुजाओ को गले मे डालकर किया जाने वाला आलिंगन, गलवाही ।

भुजभूषण-स० पु० यो० [स० भुज+आभूषण] भुजा पर बाधने का एक आभूषण । (हिं को )

भुजमूळ-स० पु० यो० [स० भुजमूल] १ कांख ।

रु० भे०—भुजामूळ ।

भुजमोचक-स० पु० [स०] सर्प का विप३तारने की एक नीले रंग की रत्नमणि ।

रु० भे०—भुजमोचक, भुजमोचक, भुजमोचक ।

भुजयडह—देखो 'भुजडह' (रु भे )

उ०—ऊछळेंय फेंण मुख भाट लाग, भळकत जेम दरियाव भाग ।

पग सघर पूठ पीडा प्रचड, देवळ तन थामा भुजयडह ।—पे. रु

भुजळक, भुजळग-स० स्त्री०—तलवार । (हिं को, ह नां मा )

उ०—१ घुघर घणण कीरति घर घण, राम हेक गजबाग रत ।

भुजळक दत सत्र भीचरड, 'मेघ' तणी हसती मसत ।

—महाराज छत्रसिध हाडा री गीत

उ०—२ वड पडू विहर थाटा, 'विलद' भुजळग भट सेला भचडि ।

खुग वसू कहे 'हटमल' सुतन, अमूनि जिम खाटे अचडि ।—सू प्र

उ०—३ लगस ऊपटा फौज गज थाटा भुजळग लहर, सूरतन ठहर

जळ गहर साजा । प्रथीपत 'अभो' आयो उलट छत्रपती, रोद सर

विलद पर समद राजा ।—अभसिध राठोड री गीत

रु० भे०—भुजगळ, भुजठाळक ।

भुजलठी-वि०—१ हाथ मे लाठी रखने वाला ।

२ ढडे के वल काम करने वाला ।

भुजवद—देखो 'भुजवध' (रु भे )

भुजसभू-स० पु०—युद्ध का भार उठाने वाला, योद्धा ।

भुजसीस-स० पु० यो० [स० भुज+सीस] भुजा का ऊपरी हिस्सा, कंधा । (हिं को )

भुजाण, भुजान—देखो 'भुजा' (रु भे )

उ०—देवीदास 'विसन्न' तण, जाणे विसन भुजान । भाजेवा तेढा

भडा, वेढा तणी 'विसन्न' ।—रा रु

भुजा-स० स्त्री० [स०] १ हाथ, हस्त । (हिं को )

उ०—जगनाथ अतरतणी जामी, गाहणी खळ गुरह गामी। साच वायक सिया सामी, भुजा भांमी भुजां भांमी।—र ज प्र २ बाहु, वाह।

रु० भे०—भुज, भुजाण, भुजान, भुजाट, भुजि, भुज्ज, भुया, भूजा।  
भुजाभ्राजान—देखो 'भुजाभ्राजान' (रु भे)

उ०—तनु रा तात सिधु भणकता नरा, आय अपछर भुका मगा असमान रा। श्रौय लागं गजव भुजाभ्राजान रा, रंवतां चढाई कठी राजान रा।—जवांनजी आढी

भुजाई—देखो 'भुजाई' (रु भे)

उ०—१ राठीह ज तै कियो रिणह, गहण भुजाई भटकळह। पळ घाप कियो पळहारिया, कळळ, विंद कोळाहळह।—गु रु व

उ०—सो सात सी खासा यारा सू भुजाई आरोणं और मगतजन भाट सारा मुंहडा आगे वंठ जोमं और रांधियो कौरी लगर वटं।

—जलाल वृबना री बात

भुजाकट—देखो 'भुजाकट' (रु भे) (ह ना मा)

भुजाग—स० स्त्री०—नागिन, सपिनी।

उ०—गनीम गड्ड गव्वतीय गव्व को गमावनी, जहांन आन मान जोर सोर तै जसावनी। रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-वनी, लगं विपच्छ लच्छ पै भुजाग वच्छ भच्छनी।—ऊ. का

रु० भे०—भुजाग।

भुजागळ—स० पु०—१ रक्षक, पहरदार।

उ०—'जैत' सुजाव पखा चावण जळ, भाटी उदियाभाण भुजागळ। भुजलग हथ विजपाल भठारी, मुहणीते 'सागो' मिएधारी।

—रा रु.

२ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—बीजा ही साथै दळ सव्वळ, भाईवय भत्रीज भुजागळ। महि लहडो खुरसाण मडोवर, अडिअो वडा सरस ग्रहि असिमर।

—वचनिका

३ विशाल, बडा।

स० स्त्री०—४ अगला, वेंडा। (डि को)

उ०—सुजडा हथो 'भदावत', 'सामळ', 'भांम' हरो छळ घणी भुजा-गळ। 'सामळ' जोड जोघ 'सादावत' रिण पडिहार सजूभो रावत।

—रा रु

वि०—५ लम्बी भुजा वाला।

भुजाग्र—देखो 'भुजाग' (रु भे)

भुजाट—१ भयकर, जबरदस्त।

२ देखो 'भुजा' (रु भे.)

उ०—१ उभे भुजाटां वरद रजवाट रा ओपिया, जवन द्रहवाट रा होय जावें। जुघ समै अमीरळ रूप जजराट रा, खाट रा बाघ कुण फेट खावें।—गुलजी आढी

उ०—२ अडो थडी आग वूठां घकावें वीराण भाघा, महावीर क्रोध चाळें लागा तो महीप। किरीठी कराळो रीस जेंद्रथी मिटावा

कोप्यो, सधवा भुजाटां करी भीम ज्यू सहीप।

—वादरखान घघवाडियो

भुजाडड, भुजाडडि—देखो 'भुजाडड' (रु भे)

उ०—गात मेर कज भीम, महाजोधा ऊतळी वळ। भुजाडड पर-चड, जेम गगाजळ ऊजळ।—गु रु. व

उ०—२ सामत सुहद दीप सरव, जीपत जिकै जुघ महा प्रव्व। प्रोचाळ महा जोधा प्रचड, डोलता डहे नम भुजाडड।—गु रु व.

उ०—३ भीम तणा ग्रीखम भासकर, तेज भुजाडड लागि तिस। कूरम तणी मोखियो कस करि, रसक न रहियो तेण रस।

—दुरजणसाल हाडा री गीत

उ०—४ भुजाडड उलाळि भाली भमाडें। आजोकी इसी मेर बाधा उपाडें। गरज्जं भली वोलियो भीम ग्राही, पतीसाह सू माहरी पातसाही।—गु रु व

उ०—५ आ बात सुणता ई सादूळा सीह ज्यु गाजिया सिलेह भीडीया। ढालडा खडवडिया। भुजाडड जिके ब्रह्मह अडिया सिधुवा पाना वागा।—पना

उ०—६ 'कुसळावत' 'धीठल' रण कोडे, ऊभी गयण भुजाडड ओडें। 'वैणावत' 'द्याली' वरदाई, स्यांम घरम व्रत प्रीत सवाई।

—रा रु

भुजाडो—स० पु०—१ सहार करने वाला। - पराक्रमी।

भुजावड—देखो 'भुजाडड' (रु भे)

उ०—अर कवर भी आरुठ होतां ही त्रिभागी तोमर भुजाडड थी भमाड सनुवा रें साम्हे आपरो वाह भोक्रियो।—व भा

भुजापत, भुजापति—स० पु० [स० भुज+पति] वीर, योद्धा।

भुजावळ—देखो 'भुजवळ' (रु भे)

भुजावळि—देखो 'भुजवळ' (रु भे)

उ०—दूत लक्षण कला सवि जाणू, मू हरइ हुसि राज पराणउ।

ए युधिष्ठिर नरेंद्र सूयार, नामि बल्लभ भुजावलि सार।

—सालिसूरि

२ देखो 'भुजवळी' (रु भे)

भुजाविच—स० स्त्री०—कोहनी। (डि को)

भुजामूळ—देखो 'भुजमूळ' (रु भे)

भुजायत—स० स्त्री०—लक्ष्मी, रमा। (अ मा)

भुजाळ—वि० [स० भुज+रा० प्र० आळ] १ लम्बी भुजाओ वाला।

उ०—दुनी चा काळ भुजाळ दईत, जिके दळ साभ उभे द्रह जीत। असल्या तूभ तणा अवतार, ब्रह्ममा रुद्र लहे न विचार।—ह. र.

२ भयकर।

उ०—उठियो तिणवार वडो उतळीवळ, सूरजसिध सहस बल। कोपनळ काळ भुजाळ कमघज, दोमजि भजण सनु दळ।—गु रु. व

३ बहादुर, वीर।

उ०—१ भरै हिक स्रोणी पिड भुजाळ, विडै हिक वीर हुप्रा विक-  
राळ । करै हिक हाका जोष कठीर, वारा हिक भीक हुवै घर  
धीर ।—गु रू व

उ०—२ भोकै भाभी भाळ, काळ चाळ भटकै 'कमो' । भटकै  
क्रोध भुजाळ, खटकै उर खूदाळमो ।

—प्रतापसिध म्होकमसिध री वात

उ०—३ भाजिया जिकै भुजाळ, अममाल' विरद उजाळ । मडियो  
न घकै मुगल्ल, इम जीपियो 'अममल्ल' ।—सू प्र

उ०—४ रुधनाथ 'भीम' भाटी मुजाळ, काळी-पहाड चालती  
कोळ । 'जोग-रज' पिता नप छलि निम्रत, जमदाह हणै गरज  
प्राण अत ।—गु रू व.

उ०—५ मध नायक 'माडण' हरी, 'राजी' भीम भुजाळ । सयळ  
छभा पगति सुहृद, जाणक मुगतामाळ ।—गु रू व

४ समर्थ, शक्तिशाली ।

उ०—१ भूपति लखपति भुजाळ, आदि रीति जादवा उजाळ ।  
सूर धीर मात्रवा संघार, खागि त्यागि दूसरी खगार ।—ल पि

उ०—२ कपाळ विसाळ सिंघाळ किसन्न, वहाळ भुजाळ उजाळ  
विसन्न । मुणाळ भुयाळ छत्राळ महेश, आदेस आदेस आदेस आदेस ।

—ह र

५ देखो 'धुरजाळ' (रू भे)

रू० भे०—भुज्जाळ ।

अल्पा०—मुजाळो, भूमाळो, भूजाळो ।

भुजाळि—१ समर्थ, शक्तिशाली ।

२ देखो 'धुरज' (रू भे)

उ०—तनू प्रवन्ध तोपकै तुरग कधतें तनै, भुजाळि आळि भोलितें  
वहै विभा विभाव नैं । गरिदु म गरिदु जै बहेक तिन्न सालितें,  
गरिदु में गरिदु तै गुरै कती गजाळि तै ।—ऊ का

भुजाळो—देखो 'भुजाळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ भायल 'आसो' 'रतन' भुजाळा, 'अजमल' जतन वस  
उजवाळा । राजा निकट 'मुकन' तन रावत, कृत गुण खीची  
'सिबी' 'कलावत' ।—रा रू

उ०—२ वडहथ 'रासो' 'सामळ' वाळी, 'भैरव' 'नाहर' तरणी  
भुजाळो—रा रू

उ०—३ वरव्वीर 'खूमाण' वीराधवीर, कळी-मूळ साडूळ वेंवै  
कठीर । भलो भीच 'कल्याण-मल्लो' भुजाळो, 'मानावत' वेढीमणो  
मच्छराळो ।—गु रू व

उ०—४ रुड मूड रोळिया, 'भीम' पाडियो भुजाळो । भारथ कुर-  
खेत रै, हुझो जुघ लका वाळी ।—गु रू व

उ०—५ तेडै 'केहरि' वार तिण, भड थाट भुजाळा । आया दर-  
गह ऊवरा, वहसै बिरदाळा ।—सू प्र

उ०—६ भाटी सुरताणोत, 'रुघी' वोले विरदाळी । भागै पडि  
ऊपडै, भिडै उज्जैण भुजाळी ।—सू प्र.

उ०—७ अढाभीड आछटै, वाह सारसी भुजाळै । जुघ 'पीळो'  
मेलियो, खळा मोकळा विचाळै ।—वखती खिडियो

भुजावेद—स० पु० [स० भुजा+वेद=चार] १ गरुड । (डि को)  
२ विष्णु ।

भुजि—देखो 'भुजा' (रू भे)

भुजिया—स० पु० [व. व भुजिया] (व व) १ वेसन के पकोडे ।

२ वारीक सेव । (वीकानेर)

उ०—वैवतोडा मांय सू आखर अक जणै दया करैर टावरां तै  
दो पईसां रा भुजिया दिराया ।—वरसगांठ

३ भूना हुमा खाद्य पदार्थ ।

भुजीस—स० पु० [स० भुजग] नाग, सर्प ।

भुज्ज—१ देखो 'भुज' (रू भे)

उ०—परचड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पच दिन । 'गजसाह'  
वसुह राखी पगै, डहै भुज्ज डिगियो गिगन ।—गु रू व

उ०—१ पछिम पुरव उतराध, इळा दखणाधह आगळ । हिडूवाण  
खुरसाण, दुह भुज्जै दुन्है छळ ।—गु रू व

२ देखो 'भुजा' (रू भे)

भुज्जडड—देखो 'भुजडड' (रू भे)

ई०—रुधव्व जुज्ज सामवेद, आमना अथव्वण । ग्रईस राण वेदमन्न,  
बोलियत व भण । जुडित्त एक जोरदार, थोर भुज्जडड ए । जेठी  
प्रचड ग्रीठ पिड, मल्ल जुघ मड ए ।—गु रू व

भुज्जन—१ देखो 'भोजन' (रू भे)

२ देखो 'भजन' (रू भे)

भुज्जाळ—१ देखो 'धुरजाळ' (रू भे)

उ०—१ तिसोता जिसी नीर गभीर टाकौ, घिलूमै विचै जाळ  
भुज्जाळ वाकौ । जिका कोट नू देवता हाथ जोडै, चहू कूट रै वीच  
वैकूट चोडै ।—मे म

२ देखो 'भुजाळ' (रू भे.)

उ०—घरिये ग्राम लगै घाराळै, भीगी भीम लियै भुज्जाळै । दिल्ली  
फौजा मग निहाळै, खुरम खडो मैदान विचाळै ।—गु रू व

भुटत—देखो 'भूटान' (रू भे)

उ०—जेथ वरफ वरसै जमै, परवत सिखरा पत । 'वक' सियाळै  
लोभवस, भाळै चौण भुटत ।—वा दा

भुटकणो, भुटकवो—क्रि० स०—१ भिडना, टक्कर खाना ।

२ युद्ध करना ।

३ देखो 'भटकणो, भटकवो' (रू भे)

भुटकणहार, हारी (हारी), भुटकणियो—वि० ।

भुटकिओड़ो, भुटकियोडो, भुटकयोडो—भू० का० कृ० ।

भुटकीजणो, भुटकीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

भुटकणो, भुटकवो—रु० भे० ।

भुटकियोडो—भू० का० कृ०—१ भिडा हुआ, टक्कर खाया हुआ २ युद्ध किया हुआ. ३ देखो 'भटकियोडो' (रु. भे.)  
(स्त्री० भुटकियोडो)

भुटकणो, भुटकवो—१ देखो 'भुटकणो, भुटकवो' (रु. भे.)  
२ देखो 'भटकणो, भटकवो' (रु. भे.)

भुटकणहार, हारो (हारी), भुटकणियो—वि० ।

भुटकियोडो, भुटकियोडो, भुटकियोडो—भू० का० कृ० ।

भुटकीजणो, भुटकीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

भुटकियोडो—१ देखो 'भुटकियोडो' (रु. भे.)

२ देखो 'भटकियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री० भुटकियोडो)

भुटणो भुटवो—क्रि० अ०—मन ही मन क्रोधित होना ।

उ०—इत्ता बरस बै लोग कलजुग रो नाव सुणता हा जको पर-  
तख आपरी आह्वा देख्यो । महाराणी रै मायें ठौर तो किणी रो  
नी चालतो, पण माय रा माय भुटता ।—फुलवाडी

भुटणहार, हारो (हारी), भुटणियो—वि० ।

भुटाडणो, भुटाडवो, भुटाणो, भुटावो, भुटावणो, भुटाववो

—प्रे० रु० ।

भुटियोडो, भुटियोडो, भुटियोडो—भू० का० कृ० ।

भुटीजणो, भुटीजवो—भाव वा० ।

भुट्टणो, भुट्टवो—रु० भे० ।

भुटाडणो, भुटाडवो—देखो 'भुटाणो, भुटावो' (रु. भे.)

भुटाडणहार, हारो (हारी), भुटाडणियो—वि० ।

भुटाडियोडो, भुटाडियोडो, भुटाडियोडो—भू० का० कृ० ।

भुटाडीजणो, भुटाडीजवो—कर्म वा० ।

भुटाडियोडो—देखो 'भुटायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री० भुटाडियोडो)

भुटाणो, भुटावो—क्रि० स०—मन ही मन क्रोध दिलाणा ।

भुटाणहार, हारो (हारी), भुटाणियो—वि० ।

भुटायोडो—भू० का० कृ० ।

भुटाईजणो, भुटाईजवो—कर्म वा० ।

भुटाडणो, भुटाडवो, भुटावणो, भुटाववो—रु० भे० ।

भुटायोडो—भू० का० कृ०—मन ही मन क्रोधित किया हुआ ।

(स्त्री० भुटायोडो)

भुटावणो, भुटाववो—देखो 'भुटाणो, भुटावो' (रु. भे.)

भुटावणहार, हारो (हारी), भुटावणियो—वि० ।

भुटावियोडो, भुटावियोडो, भुटावियोडो—भू० का० कृ० ।

भुटावोजणो, भुटावोजवो—कर्म वा० ।

भुटावियोडो—देखो 'भुटायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री० भुटावियोडो)

भुटियोडो—भू० का० कृ०—मन ही मन क्रोधित हुआ हुआ ।

(स्त्री० भुटियोडो)

भुट्टणो, भुट्टवो—देखो 'भुट्टणो, भुट्टवो' (रु. भे.)

भुट्टणहार, हारो (हारी), भुट्टणियो—वि० ।

भुट्टियोडो, भुट्टियोडो, भुट्टियोडो—भू० का० कृ० ।

भुट्टीजणो, भुट्टीजवो—भाव वा० ।

भुठार, भुठौर—स० पु०—गुजरात एव मरुस्थल प्रदेशों में पाई जाने वाली घोड़े की जाति विशेष ।

भुडड—१ देखो 'भुजडड' (रु. भे.)

उ०—श्रीई वीरघटा धोक मातगां ताजान वाळो, रोई वीजे  
विखमी वाजान 'वाळो' रीठ । श्रोक अगा श्रैराकलै भुडडां  
आजान वाळो, नहगा 'राजान' वाळो हाकलै नश्रीठ ।

—हुकमीचद खिडियो

भुणकमळो—देखो 'भूणकमळो' (रु. भे.) (डि. को.)

भुताण—देखो 'भाथो' (रु. भे.)

भुतेस—देखो 'भूतेस' (रु. भे.)

भुत्तभोग—देखो 'भुत्तभोग' (रु. भे.) (जैन)

भुत्तभोगी—देखो 'भुत्तभोगी' (रु. भे.) (जैन)

भुत्तियो—देखो 'भूतियो' (रु. भे.)

उ०—घणो तनपट करी तो इण रजवाहें रा ई भुत्तिया विखेर  
देवूला ।—फुलवाडी

भुथाण—देखो 'भाथो' (रु. भे.)

उ०—भुथाण कवाण जुआण समल्ल, मिळें मीरजादा हसा भुज्ज  
मल्ल । विन्टै फीज फीजा घणो चत्रवाह, सकै सार आवद्ध लीघा  
सनाह ।—वचनिका

भुदार—देखो 'भूदार' (रु. भे.)

भुघर—देखो 'भूघर' (रु. भे.)

भुघरी—देखो 'भूघर' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—कुलट उलटह उलट पालट, अरट घट घट प्रगट अणवट,  
छूट छट छम नीर छट छट, तीम खट रट जमण तट तट, भूघरी  
वड भाग ।—मुरारदास वारहठ

भुनगो—स० पु० [प्रनु०] १ प्राय शिशिर ऋतु में फूलो आदि पर  
उड़ने वाला एक छोटा कीड़ा या पतंगा ।

२ लाक्षणिक अर्थ में बहुत ही छोटा या तुच्छ व्यक्ति अथवा पदार्थ ।

भुनगो, भुनवो—क्रि० अ०—आग के ताप से भुना जाना ।

२ बन्दूक, तोप आदि से शरीर छिद्रित हो जाना ।

१ रुपया, नोट आदि का छोटे-छोटे सिक्कों में परिवर्तित होना ।

भुनणहार, हारो (हारी), भुनणियो—वि० ।



भुनिओडो, भुनियोडो, भु-योडो—भू० का० कृ० ।

भुनीजणो, भुनीजवो—भाव वा० ।

भुनाडणो, भुनाडयो—देखो 'भुनाणो, भुनावो' (रू भे)

भुनाडणहार, हारो, (हारी), भुनाडणियो—वि० ।

भुनाडिओडो, भुनाडियोडो, भुनाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भुनाडीजणो, भुनाडीजवो—कर्म वा० ।

भुनाडियोडो—देखो 'भुनायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुनाडियोडो)

भुनाणो, भुनावो—क्रि० स० [भुनाणो क्रि० का० प्रे० रू०] १ भुनने का काम किसी दूसरे से करवाना ।

२ किसी को कुछ भुनने में प्रवृत्त करना ।

३ नोट, रुपये आदि को सिक्को में परिवर्तित करना/कराना ।

भुनाणहार, हारो (हारी), भुनाणियो—वि० ।

भुनायोडो—भू० का० कृ० ।

भुनाईजाणो, भुनाईजवो—कर्म वा० ।

भुनाडणो, भुनाडवो, भुनावणो, भुनाववो—रू० भे० ।

भुनायोडो—भू० का० कृ०—१ दूसरे से भुनने का काम कराया हुआ

२ किसी को कुछ भुनने में प्रवृत्त किया हुआ ३ नोट, रुपये आदि को छोटे सिक्को में परिवर्तित किया हुआ

(स्त्री० भुनायोडो)

भुनावणो, भुनाववो—देखो 'भुनाणो, भुनावो' (रू भे)

भुनावणहार, हारो (हारी), भुनावणियो—वि० ।

भुनाविओडो भुनावियोडो, भुनाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भुनावीजणो, भुनावीजवो—कर्म वा० ।

भुनावियोडो—देखो 'भुनायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुनावियोडो)

भुपति—देखो 'भूपति' (रू भे)

भुपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू भे)

भुबि—देखो 'भूमि' (रू भे.)

भुमारव—स० पु०—शेर, मिह । (डि को.)

भुभ्रत—देखो 'भूभ्रत' (रू भे)

भुमड, भुमडळ—देखो 'भूमडळ' (रू भे)

उ०—प्रचढ बाहु दढ कै भयै प्रचढ पिह मै, घमड की घटाय दै मिले न सो भुमड मै । डरै न सिव-डोल तो स्व डोसतै डरावनै, करोळ टोळ टोळ कोल तै करावनै ।—ऊ का

भुमण—देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—भमिया अत्रय लोक भुमण पिए भमियउ, साठ हजार लिजड भइ साथि । राजा सगर तएउ ताइ रेंवत, बहु सबदइ कुण वाघइ घाति ।—महादेव पारवती री वेलि

भुम्मि, भुम्मी—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—१ तिका हिज हेत दगी नह तोप, रही बजि रीठ बिह वळ रोप । जिका सणणकि मणयकिय जेह, सुवा मड भुम्मि हुवा घडसेह ।—मे म

उ०—२ तुरां खुरा पुरांह भुम्मि सुर सोम तजय । न होय ग्यांन सेन तै अनेक रग भेजिथ ।—रा रू

भुयग—देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—१ सदा तो नाव लियै स्त्रीरग, भखै नह ताह ससार भुयग मुरार जिका-ह वसै तू मुख, ससार समद तिरै तै सुख ।—ह र.

उ०—२ खेब पर घाख कर बैरिया गम खरै, जहर करतो जिको जगत जाए । नरदा 'नीवा' तणै छावहै भाल नस, श्रेता में भुयग विख कीध आणै ।—दुरगादास राठीड री गीत

उ०—३ जिके घरती रा घणी पताळ वासी भुयग नै घण रा घणी दोलतवत श्री बिन्हे एकै वग हूता सु घरती री पुड भेदनै विमरै पंठा, उठै रहण लागा ।—रा सा स

भुयगचर—देखो 'भुजगचर' (रू भे) (ना मा)

भुयगम—देखो 'भुजगम' (रू भे)

उ०—१ आज ज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ । विरह भुयगम की डसी, लवथवती गळ लाइ ।—डो मा

उ०—२ चपळ नेत्र सारग, रेव अरूहा मकरद । दीपक-नासा दिपत, सरद-रैणी मुख-इद्रह । डमण-वीज-दाडम, वेणि वासग भुयगम, भटियाणी वर कमध, समद गगा नदि सगम ।—गु रू व

उ०—३ उदर दर खण मरै, पैस भोगवै भुयगह । हळ वरि मरै वहिल्ल, हरी जव चरै तुरगह ।—नैणसी

भुयगेस, भुयगेसुर—देखो 'भुजगेस' (रू भे) (अ मा)

भुयद—स० पु० [स० भू+इन्द्र] राजा, नृप ।

उ०—अप्राज्ञ अनड घटा आरोहै, भुप 'मान' मगवान भुयद । आवै हाथ नही तिण आटै, मसळ हातळ 'जगी' मइद ।

—महादान महह

भुय—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—मीत अन उदत खग पत भमै कात मग, मुहं नद पछी खावत डर समोड । कमळ अह टळै भुय टळै पारथ कळह, रण अनड हलै तो पलै राठीड ।—नाथी वारहठ

२ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—१ नरसघ ७वरस री उमर, तिकै नू छाती कन्है लीया थकां रांणी लडै छै । अर पठाण थोडा अर घणी भुय रा खडीया आया । लोहै तो सगळा नू पछाणा हेठै दीना ।—राजा नरसिध री वात

उ०—२ सुदारै गोठ मे नवी सुनाई आय वपरावा सतावी करो भुय अळगी छै ।—कूरसी साखला री वारता

३ देखो 'भुज' (रू भे)

भुयग, भुयगि—देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—निसी भरी सूती सुदरी, वालम कठ विलगि । मोहण-वेली



मारुई, पीधी नाग भुयणि ।—ढो मा  
सुयण, सुयणि, भुयणी—देखो 'भुवन' (रु भे)

उ०—१ गम-निसा तिस भुयण ताप दाळिद गमण, धूप जळ  
सरण समपण सुधा घन । दन-प्रिया मछ सुरां रज-प्रिया दुधिया,  
किरणघण म्हण गिर सोम सुत 'क्रन' ।

—महाराणा जगत्सिध सीसोदिया री गीत

उ०—२ सभ सभ उमग बारह सधण, विसुध चित्त कायक वयण ।  
तेरहा भाण पय राम तो, भल सेवै चवदह भुयण ।—र ज. प्र

उ०—३ घर गगाजळ धार, आणी तपकर ऊजळो । ओ मोटी  
उपगार, भागीरथ कीधी भुयण ।—बा दा

उ०—४ 'वाघ' उत उचरै, सुणी खट तीस वस, जुरा आगळि रहै  
वदू जाही । भोज वीकम तणी सुजस सारै भुयण, नरा तिण वार  
रा मडप नाही ।—राव गागी

उ०—५ दलो कहै दईवाण, साच वचन भायां सुणी । भुयण  
न उगै भाण, 'वीरम' सू चूका वचन ।—गो. रु

उ०—६ अदपत नै दिया री अजस, लोभी अजस लिया री ।  
भुयण साच जणायो 'भीमा', हाथा हेत हिया री ।—किसनजी आढो

उ०—७ अविकि वेटउ धायराठु सो नयणै आवठ, अवाला नउ  
पुत्तु पडु त्रिहु भुयणि प्रसिद्धउ ।—प प च

उ०—८ भगिनि त्रिहु भुयणह तणी, सुणी न वीजी सान । तु  
ऊगी प्रह पाडवा, अधकार अग्यान ।—मा का प्र

उ०—९ हले चले दुनी मालवि मनव हालिया, भुयण मुर डिगे  
आम भिल्ला । प्रिधी ची नाथ कवि पात वेळा पडी, वडै तरवर  
कुवर पलै विलगा ।

—अनूपसिध करणमिधोत री गीत

२ देखो 'भवन' (रु भे)

भुयणपत, भुयणपति, भुयणपत्ती—स० पु० [स० भुवनपति] इन्द्र ।

उ०—राण महराण एही कियो 'राजसी', तेण जळ न्हाण दुनियाण  
तरियो । नरा रै पती मोटी इसी निवधियो, भुयणपत सुग रै  
नीठ भरियो ।—महाराणा राजसिंह री गीत

२ देखो 'भवनपति' (रु. भे)

भुयदह—देखो 'भुजदह' (रु भे)

उ०—विहु खवै दो भाथा करयलि कोदडो, वालीवेसह वाली  
भुयदह पयडो ।—प प च

भुयमोग्रग, भुयमोगग—देखो 'भुजमोचक' (रु. भे) (जैन)

भुया—देखो 'भुजा' (रु भे) (जैन)

भुयाळ—देखो 'भूपाळ' (रु. भे)

भुरगी—वि०—बुझा हुषा । (कोयला)

उ०—फाळा, निरजीव अर भुरगा कोयला मे वासदी री परस  
पाता ईं जिण भात जीवण साचरै, नै जगमग करण लागै उणी

भात काली मासी इण वाळ-कन्हैया रै जलम पछै जगमग जगमग  
करण लागी ।—फुलवाडी

भुरट—देखो 'भुरट' (रु भे.)

उ०—मासी नै तो अँडो लखायो जाणै कोई उण रा माथा मे सूळां  
भुरट अर काटा चिगदै । नस नस वीधीजगी व्हे ज्यू ।—फुलवाडी

भुरटियो—देखो 'भुरट' (भल्पा, रु भे)

भुरड—स० पु०—कवच बनाने वाला, लुहार । (वाकीदास)

भुरकणी, भुरकवो—देखो 'बुरकणी, बुरकवो' (रु भे)

भुरकणहार, हारो (हारो), भुरकणियो—वि० ।

भुरकियोडो, भुरकियोडो, भुरकयोडो—भू० का० कृ० ।

भुरकीजणी, भुरकीजवो—कर्म वा० ।

भुरकाणी, भुरकावो—देखो 'बुरकाणी, बुरकावो' (रु भे)

उ०—१ लुटता ईं सगळा फाला फूटग्या । चिणां री खार वांमे  
अँडो चडियो, जाणै घाव मायै मिरचा अर लूण भुरकाया ।

—फुलवाडी

उ०—खुदोखुद ईं मन करै जणा भाडो देती, हळकी हाथ करती ।

दूध पाय मूडा मे वानी री चिमटी भुरकाती ।—फुलवाडी

भुरकाणहार, हारो (हारो), भुरकाणियो—वि० ।

भुरकायोडो—भू० का० कृ० ।

भुरकाईजणी, भुरकाईजवो—कर्म वा० ।

भुरकायोडो—देखो 'बुरकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भुरकायोडो)

भुरकियोडो—देखो 'बुरकियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भुरकियोडो)

भुरकि, भुरकी, भुरक्की—स० स्त्री०—१ महीन चूणं ।

उ०—म्है हील रै दरद री नामी ओखद जाणू । अँक चिमटी  
भुरकी लेवता ईं दोडण लाग जावैला ।—फुलवाडी

२ वक्षीकरण मत्र से मत्रित भस्म या घूलि ।

उ०—१ वाजी मोहै जीव सब, हमको भुरकि वाहि । दादू कंसी  
कर गया, आपण रह्या छिपाइ ।—दादूबाणी

उ०—२ सुण्यो रूप वेदै सुपेख्यो सवेही, बडा भाग री नागरी  
नारि वेहि । महा मोद आणद देखै भुरक्की, मुलाडी वळी नाथ  
नाखी भुरक्की ।—ना दा

उ०—२ दादू भुरक्की राम है, सब्द कहै गुरु ग्यान । तिन सब्दो  
मन मोहिया, उनमन लागा ध्यान ।—दादूबाणी

उ०—३ चारि वरण का मूल कहाँ, हरि परम सनेही पीव ।  
हारि जीति भुरक्की पडी, तहा अलूघा जीव ।—ह. पु वा

उ०—४ कोइक भुरक्की नाखी इम कहै रे, बोलै ज्यू मन री आवै  
दाय रे । ग्यानी तो जाणै गैला सारखा रे, ए खूत माखी ज्यू  
खेल माय रे ।—जयवाणी

भुरङ्गणी, भुरङ्गणी—क्रि० स० [अनु०] १ महीन चूर्ण करना ।

२ सहार करना, मारना ।

क्रि० अ०—३ ताप से झुलसना ।

उ०—१ भूरा रू भुरङ्गजियां, लूआ बैरण लाय । चटका लागी चोगिरद, पड़े डिडाय डिडाय ।—लू

उ०—२ भरिया तरु पुदप वहै छूटा भर, काम बाँण ग्रहिया करगि । वळि रितुराड पसाइ वेसधर, जण भुरङ्गीतौ रहै जगि ।

—वेलि

भुरङ्गणहार, हारी (हारी), भुरङ्गणियो—वि० ।

भुरङ्गिओडो, भुरङ्गिओडो, भुरङ्गयोडो—भू० का० कृ० ।

भुरङ्गीजणी, भुरङ्गीजणी—कर्म वा०/भाव वा० ।

भुरङ्गियोडो—१ महीन चूर्ण किया हुआ ।

२ सहार किया हुआ, मारा हुआ ।

३ ताप से झुलसा हुआ ।

(स्त्री० भुरङ्गियोडो)

भुरज—१ शिखर ।

२ शिखरदार वादल, वादल ।

उ०—आणद मोर सुगरि आवाजै, वीणा वस मधुर सुर बाजै । भुरजे भुरज मिहता भाजै, 'गहड़' सीख दे अवर गाजै ।

—आसो वारहट

३ देखो 'बुरज' (रू भे)

उ०—१ 'गजन' सुतण साह छल्ल गाढी, भाजै भुरज उरह भँभीत । पाण सुजह कपाढे पोगर, जोरवर एही रिणजीत ।

—महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—२ आसिफखा अकबर कहै, भीता भुरजां जोय । बांकी गढ़ भड बाकहा, हलौ किया की होय ।—बा दा

उ०—३ कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, राखै रज रिणतूर रुई । दम्मासा गरज वहै ब्रज दोमज, गज पाताहक भुरज गुई ।

—गु रू व

भुरजाळ—स० पु०—१ योद्धा, वीर ।

उ०—गुजर्व पर ठाल नखै गिरजां, भुरजाळांय आण ग्रही भुरजां । ग्रह मोद करी वरणाव घणी, तिण री सुत बाळक नाथ तणी ।

—पा प्र

२ गढपति, राजा ।

रू० भे०—भुरज्जाळ । अल्पा०—भुरजाळी ।

३ देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

उ०—१ ज्वाळा तै जम्मीकै थरहरतै थाळ, कमठ का कध सेस का कपाळ । प्रळैकाळ का पावस भातसू का उक भुरजाळ । सिखराळ दुरुगू के भड मिहज भूक काळ ।—सू प्र.

उ०—२ सब दिन गी मुख कुडसिर, पाणी सू भरपूर । अन भुरजाळां भुरजसा, गढ़ चीतोड कपूर ।—बा दा.

भुरजाळी—वि० (स्त्री० भुरजाळी) १ शिखर वाला ।

उ०—१ ऊचा गिगन मे भुरजाळा वादळ भवाभव वीजळिया पळकावता हा, हरियळ कूख नै वधावण सारु ढोल नगारा घुरावता हा ।—फुलवाडी

उ०—२ भूरा भुरजाळा अबुद भळहळिया, खाळा नदनाळा वालहा खळहळिया । अबनी आदोळन ओळा ओसरिया, पिडि मिडि प्लासी पै गोळा जिम गिरिया ।—ऊ का

२ देखो 'भुरजाळ' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ भुरजाळी छै फोजा री सिरदार ।—पावूजी रा पवाडा

उ०—२ सदा रुखाळी भुरजाळी पावू कमघा वस री सूर, चारणां आसरी थारी सदा रहै नचीत । प्रवाडा अनेका इळा नकी कोई पार पावै, आवै यू ऊताळी साय वस री अदीत ।—वादरदान घघवडियो ३ देखो 'बुरजाळ' (अल्पा., रू भे)

भुरजाळी—स० स्त्री०—गोल सींग वाली भैंस ।

भुरजास—देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

उ०—सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा, भूपत निवाजा भ्रात भणै ।

भुरजास भभीखण कृत दत कचण साख पुराणण वेद सुणै ।

—रू

भुरजी—देखो 'भुरजाळी' ।

उ०—साख री पछै काई पूछणी—वाजरी रा सिरटा हाथ हाथ लावा, दाणी देखी तौ परढां रा ढोळा व्है जिती । मूगा, चवळां री फळिया भुरजी भैंस रा सींग व्है जिती । एक एक फळी मे मुट्टी-मुट्टी दाणा ।—रातवासी

भुरज्जा—देखो 'बुरज' (रू भे)

उ०—'अवरग' 'तहवर' ऊपर, किर कोपै जगदीस । पवै भुरज्जां वज्र पर, पडो गुरज्जां सीस ।—रा रू

भुरज्जाळ—१ देखो 'भुरजाळ' (रू भे)

उ०—भुरज्जाळ आया स्त्रीगोपाळ कामपाळ मीर, निराताळ चाळ बावै जितो 'सुजा'नद । लेर बीडो कपनी सू जमीदारा थान लेवा, फोजा करै फिरगी न नाखै फेर फद ।—कविराजा बांकीदास

२ देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

भुरट—स० पु०—१ एक प्रकार का घास जिसका पौधा गेहू के पौधे के समान होता है । गेहू की तरह इस पर भी वालें आती हैं इसके बीज अत्यन्त छोटे होते हैं जो वालों पर लगने वाले कांटे के भूमखे के धन्दर रहते हैं । इसके बीजों की रोटी भी बनाते हैं ।

उ०—१ ताहुरा राव गागै रा परधान सेखै कनै आया नै सेखै नू कह्यो—'सेखा ! जितरी घरती माहै करड, इतरी घरती थारी नै जितरी घरती माहै भुरट, उतरी म्हारी ।'

—नैणसी

उ०—२ भाये भळहळिया भुरटां रा भारा, अब अग ऊलळिया उरगां रा आरा बिरळा दाता री पांता बिरळाती, चोडै चाचर री चीडे चिरळाती ।—ऊ का

२ उक्त घास का बीज जो काटे के झूमने में रहता है ।

३ मोलकी वन की एक शाखा ।

रू० भे०—भूट, भरोटी, भुरट, भुरट, भुरत ।

अर्था०—भूरटियो, भुरटियो, भुरटियो, भुरटियो ।

भुरटियो—देखो 'भुरट' (प्रल्पा, रू भे )

भुरट-स० पु०—ज्वार का भुट्टा । (परवतसर, नावा)

भुरणाट—देखो 'भुरणाट', (रू भे )

उ०—भवरा रा भुरणाट, गजवै माख्या गावै । चीट्या डोलै चाव, महक मधुरासत चावै । हरिया स्वेत गुलाब, तीन रंग फोग फवीला, सेरु रम रस खाय, कुलखणा पसु कवीला ।—दसदेव

भुरणो, भुरवो—कि० अ०—किसी वस्तु या पदार्थ का, विकृतावस्था प्राप्त होने पर, धीरे २ नष्ट-प्राय या समाप्त होना ।

उ०—भट भट आख्या देखता, भट-भट पडिया फूल । भुर भुर केला मूकिया, भुर भुर गई ममूल ।—लू

भुरणहार, हारो (हारो), भुरणियो—वि० ।

भुरिओडी, भुरियोडी, भुरयोडी—भू० का० कृ० ।

भुरीजणो भुरीजवो—भाव वा० ।

भुरियोडी—भू० का० कृ०—कोई वस्तु या पदार्थ विकृतावस्था प्राप्त होकर नष्ट प्राय या समाप्त हुवा हुआ (स्त्री० भुरयोडी)

भुरत—देखो 'भुरट' (रू भे )

भुरभुर-म० स्त्री०—ऊमर या रेतीली भूमि में उगने वाली एक प्रकार की घास ।

भुरभुरी-वि० (स्त्री० भुरभुरी) वह पदार्थ जिनके कारण हल्के से दबाव से अलग-अलग हो जाय ।

रू० भे०—भुरभुरी ।

भुररी-म० स्त्री०—वाजरी की वालो पर दाना पडने के पूर्व उत्पन्न होने वाला एक फलनुमा पदार्थ ।

भुरस, भुरसी—१ देखो 'भुरसी' (रू भे )

उ०—१ अण तरै का बीद राजा मयाराम आला-नीला बास रोप न परणीया न पांच से पांच स माहरा ब्राह्मण न भुरसी दीधी । —मयाराम दरजी की बात

२ देखो 'भुरज' (रू भे )

उ०—२ केहरसिध ऊदावत रै गळा री तोख री कडी भुरस में दियो हुती ।—वां दा ह्या

भुरीगार—देखो 'भुरीगार' (रू भे )

भुरियो—देखो 'भुरी' (प्रल्पा, रू भे )

उ०—तद उवा जानिया री पण जिहाज उठे आय लागी अ कपडा पहिर अ गार करे छे, पण जानी दिलगीर । जो बीद तिकी भुरियो

कीझी ।—ठकुरै साह री बात

उ०—२ वदे पग लच्छि सहेत विसन्न, समीप मुकत्ति ज 'देव' सुतन्न । अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तुम तणी अत भाग ।

—सू प्र

२ देखो 'भुरी' (रू भे )

उ०—राखै वेख न राग, भाखै नह जीहा भुरी । दरसन करता द्राग, मिटै जनम रा 'मोतिया' ।—रायमिह सादू

भुलभुल-स० स्त्री०—घूष में तपी हुई गर्म मिट्टी ।

उ०—घोराघोरा घर घूषल घुरघाई, थळ थळ ऊथळती बळती घुरकाई । पडती पुळ पुळ पर भुलभुल भरभूजै, सरकर सर सोखत गिरवर दर गूजै ।—ऊ का

भुलसणो, भुलसवो—कि० अ० [अनु०] भुलसना, जलना ।

उ०—हयकप नरा तुरा गज हळवळ, तूटि अगारा सार-तड । आप 'घराज' वचाणो ओलै, भुलसाणो मेवाड भड ।

भुलसणहार, हारो (हारो) भुलसणियो—वि० ।

भुलसाडणो, भुलसाडवो, भुलसाणो, भुलसावो, भुलसावणो, भुलसाववो—प्रे० रू० ।

भुलसिओडी, भुलसियोडी, भुलस्योडी—भू० का० कृ० ।

भुलसीणणो, भुलसीजवो—भाव वा० ।

भुलसाडणो, भुलसाडवो—देखो 'भुलसाणो, भुलसावो' (रू भे )

भुलसाडणहार, हारो (हारो), भुलसाडणियो—वि० ।

भुलसाडियोडी, भुलसाडियोडी, भुलसाडियोडी—भू० का० कृ० ।

भुलसाडीजणो, भुलसाडीजवो—कर्म वा० ।

भुलसाडियोडी—देखो 'भुलसायोडी' (रू भे )

(स्त्री० भुलसाडियोडी)

भुलसाणो, भुलसावो—प्रे० रू०—भुलसाना, जलाना ।

—वखतसिध री गीत

भुलसाणहार, हारो (हारो), भुलसाणियो—वि० ।

भुलसायोडी—भू० का० कृ० ।

भुलसाईजणो, भुलसाईजवो—कर्म वा० ।

भुलसाडणो, भुलसाडवो, भुलसावणो, भुलसाववो—रू० भे० ।

भुलसायोडी—भू० का० कृ०—भुलसाया हुआ, जलाया हुआ ।

(स्त्री० भुलसायोडी)

भुलसावणो, भुलसाववो—देखो 'भुलसाणो, भुलसावो' (रू भे )

भुलसावणहार, हारो (हारो), भुलसावणियो—वि० ।

भुलसावियोडी, भुलसावियोडी, भुलसावियोडी—भू० का० कृ० ।

भुलसावीजणो, भुलसावीजवो—कर्म वा० ।

भुलसावियोडी—देखो 'भुलसायोडी' (रू भे )

(स्त्री० भुलसावियोडी)

भुलसियोडी—भू० का० कृ०—भुलसा हुआ, जला हुआ ।

(स्त्री० भुलसियोडी)

भुलाडणी, भुलाडवी—देखो 'भुलाणी' भुलावी' (रु भे)

उ०—मुण्यो रूप वेदे सुपेक्ष्यो सवेही, वडा भाग री नाग री नारि वेही । महा मोद आणद देखे मुरक्की, भुलाडी वळी नाथ नाखी भुरक्की ।—वा दा.

भुलाडणहार, हारो (हारी), भुलाडणियो—वि० ।

भुलाडिओडी, भुलाडियोडी, भुलाडघोडी—भू० का० कृ० ।

भुलाडीजणो, भुलाडीजवी—कर्म वा० ।

भुलाडियोडी—देखो 'भुलायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुलाडियोडी)

भुलाचार—स० पु०—भ्रम, भ्राति । (गजमोख)

भुलाणी, भुलावी—देखो 'भोलाणी, भोलावी' (रु भे)

उ०—१ म्याळमित्री तो पूरी बात भाखी ई कोनी अर उठा सू फदाका भरतो न्हाट गियो । कठ ई आ नी व्है के स्याळ उणनै मरियोडी हिरण भुलाय दै अर खुद उण सू पैला गगाजी दोड जावै ।—फुलवाडी

उ०—२ पाछो कोई नवो काम नी भुलावू जितै उठै ई वैंठो रै'जै ।  
—फुलवाडी

उ०—३ तद राणी जी कह्यो—म्हारी सरण आयोडा नै किरण रै भरोसै भुलाय नै जावू ।—फुलवाडी

भुलाणहार, हारो (हारी), भुलाणियो—वि० ।

भुलायोडी—भू० का० कृ० ।

भुलाईजणो, भुलाईजवी—कर्म वा० ।

भुलाणी, भुलावी—क्रि० स०—१ किसी बात या प्रसंग का मस्तिष्क से भुला दिया जाना, विस्मृत कर देना ।

उ०—ऊठी जागळू मे कोई नाम तक नही काहें कुवर नू पण भुलाय दीन्हो ।—कुवरसी साखला री वारता

२ किसी कण्ठस्थ किए हुए पाठ आदि को वाणी-विहीन कर देना ।

३ गलती या त्रुटि करना या कराना ।

४ भ्रम मे डाल देना, धोखे मे डालना/डलवाना ।

५ अनुरक्त या आसक्त करना/कराना ।

६ घमड में इतराना ।

७ अभ्यास छुडाना ।

भुलाणहार, हारो (हारी), भुलाणियो—वि० ।

भुलायोडी—भू० का० कृ० ।

भुलाईजणो, भुलाईजवी—कर्म वा० ।

भुलाडणी, भुलाडवी, भुलावणी, भुलाववी—रु० भे० ।

भुलापी—स० पु०—१ भूलने का भाव । २ विस्मृति ।

३ भ्रम, धोखा ।

भुलायोडी—देखो 'भोलायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुलायोडी)

भुलायोडी—भू० का० कृ०—१ किसी बात या प्रसंग को मस्तिष्क से उतारा हुआ, भुलाया हुआ, विस्मृत किया हुआ २ किसी कण्ठ-स्थ किए हुए पाठादि को भुलाया हुआ ३ भ्रम मे डाला हुआ, धोखे मे डाला हुआ. ४ गलती या त्रुटि कराया हुआ. ५ अनुरक्त या आसक्त कराया हुआ. ६ घमड मे इतराया हुआ ७ अभ्यास छुडाया हुआ  
(स्त्री० भुलायोडी)

भुलावण, भुलावणी—देखो 'भोलावण' (रु भे)

उ०—१ नाडी मे वहती वेळा नाई नै भुलावण दी के वो जावै नी पण लावा वाळ कोजा लागै । पटिया छोटनै पळै जावै ।

—फुलवाडी

उ०—२ घडी अघ-घडी रात ढळिया सेठ वहीर होवण लागा जणां सेठाणी भुलावण देवती बोली—ज्यू त्य करनै पोहरा री गळी कादणी है । कोई मिळ जावै तो ई कजिया किरण वास्तै करो ।—फुलवाडी

भुलावण, भुलावणी—देखो 'भूल' ।

भुलावणी, भुलाववी—देखो 'भोलाणी, भोलावी' (रु भे)

भुलावणहार, हारो (हारी), भुलावणियो—वि० ।

भुलाविओडी, भुलावियोडी, भुलाव्योडी—भू० का० कृ० ।

भुलावीजणो, भुलावीजवी—कर्म वा० ।

भुलावणी—देखो 'भुलावनी' (रु भे)

भुलावणी भुलावणी—देखो 'भुलाणी, भुलावी' (रु भे)

उ०—धुरा तू सुराराय नो नामवेई, कहीजै पुनः रावळा रूप केई । तु ही भोलाणी भेम सभू भुलावै, रजोमूरती लेख तूही रळावै ।

—मे म

उ०—२ डोकरी बात नै भुलावण सारू इण दावत आगै पूछियो ई कोनी कै उणरी रीस रो काई कारण है ।—फुलवाडी

भुलावणहार, हारो (हारी), भुलावणियो—वि० ।

भुलाविओडी, भुलावियोडी, भुलाव्योडी—भू० का० कृ० ।

भुलावीजणो, भुलावीजवी—कर्म वा० ।

भुलाणी, भुलावी, भुलावणी, भुलाववी—रु० भे० ।

भुलाविणी, भुलाविनी—देखो 'भोलावण' (रु भे)

भुलावनी—वि०—भुलाने वाला ।

(स्त्री० भुलावनी)

उ०—नाना विध के रूप घर, सब बाधे भामिनी । जग विटव परलै किया, हरिनाम भुलाविनी ।—दादूदासी ।

भुलाविणी—देखो 'भूल' ।

भुलावियोडी—देखो 'भोलायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुलावियोडी)

भुलावियोडी—देखो 'भुलायोडी' (रु भे)

(स्त्री० भुलावियोडी)

भुलावी-स० पु०—१ घोखा, भ्रम ।

उ०—सूता न तज स्याम सिषाया, हां हे ! वां तो दियो भुलावी भाम हे ।—गी रां

क्रि० प्र०—दंणी ।

२ विस्मृति ।

३ छल, कपट ।

भुलित-वि०—भूला हुआ ।

उ०—व्यथा विरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग सयोग सुहाय ।  
अनाग्रह भुलित आन उपाय, प्रफुलित ज्यू पतनी पति पाय ।

—ऊ का

भुवग—देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—मन भुवग यह विस भरा, निरविस क्यो ही न होइ । दादू  
मित्या गुरु गारुही, निरविस कीया सोइ ।—दादूवाणी

भुवगम—देखो 'भुजगम' (रू भे)

उ०—विना भुवगम हम डसै, विन जळ ह्वै जाइ । विन ही  
पावक ज्यो जळै दादू कुछ न वसाइ ।—दादूवाणी

भुव—देखो 'भुमि' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ वणाधिप भूप भरी उण वार, भुजग न भालि सवयो  
भुव भार । भेली हिज आवड वाहर भूप, व नाहर चक्र सुदस्सण  
रूप ।—मे म

उ०—२ विथा भुव भार फणफण व्याळ, कणकण फोज  
जणजण काल । प्रथीपति वाहर एण प्रकार, डकावत नाहर  
लेत डकार ।—मे. म

भुवडड—देखो 'भुजडड' (रू. भे)

उ०—दखिण खेत कुरुखेत, महा जुध भारथ मत्तै, भारि ओडि  
भुवडड, वाथ भरतै निहसत्तै ।—गु रू व

भुवण, भुवणो—देखो 'भुवन' (रू. भे)

उ०—१ भयभीत हुआ चौदह भुवण, सवै गरभ तिय दिस दसिय ।  
रघुनाथ कहौ सक डवर रिण, कमर आज किय पर कसिय ।

—रू

उ०—२ घरहरिया भुवण त्रिण्हे विथका भडि, घरजइ भ्रम सोई  
नही घर । ईसर तो सरणइ ऊवरिजइ, हरिसकर समरीयो हर ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ कवाडठ रतन गारि कुदण री, युगति सिलावट चुणी  
सुजाण । तेज खमइ कुण देख तिया रउ, भुवण जिहा ऊगइ भाण ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ अरक 'जसो' जगि आथमै, गौ चकवां गुणियाह । भुवण  
अघारो भाजिसी, त्रिभुवण पति कुणियाह ।—हा भा

उ०—५ सूरत घन जैसिध सारधू, मली-मली त्रिहु भुवण मणी ।  
मा कैरवां तणी न कियो अत, तो जेही पाडवा तणी ।

—गोरघन वोगसी

२ देखो 'भवन' (रू भे.)

उ०—महाराजा 'अजमाल' सू, अरज करै उमराव । भुवण तजै  
रहियो विलै, अभवण हदौ राव ।—रा रू.

भुवणपत, भुवणपति—देखो 'भुवनपति' (रू भे.)

भुवणोसवर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू भे.)

भुवणोसरी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू भे)

भुवणोस्वर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू भे)

भुवणोस्वरी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू भे)

भुवन—स० पु० [स० भुवन] १ ससार, जगत ।

२ जल, पानी (ह. ना मा)

३ पृथ्वी ।

४ स्वर्ग ।

५ मानव, मनुष्य जाति ।

६ तीन की सख्या #

७ चौदह की सख्या #

८ देखो 'लोक' (४), (५) ।

रू० भे०—भुइण, भुवण, भुअण, भुअन भुइण भुमन, भुयण,  
भुयण, भुयणी, भुवण, भुवण, भुवन्न, भुयण, भुवण, भुवण  
भोण, भोन, भोयण, भोयणउ ।

९ देखो 'भवन' ।

उ०—चित सुद्धि रासि ग्रह इम चवेस, कहि ग्रह प्रताप वरणन  
कवेस । रवि छठै भुवन खळ हणै रूक, आराण फतै पावै अचूक ।

—सू. प्र

भुवनक्षोभिनी—स० स्त्री० [स०] महाविद्या ।

उ०—आकासगामिनी सौदांमिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवन-  
क्षोभिनी कामरूपिणी मन-रतभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी  
वरसणी कोमारी खग रूपिणी ।—व स

भुवनगुरु—स० पु० यो० [स० भुवन + गुरु] जगद्गुरु ।

उ०—प्रथम नरेमर प्रथम भिक्षाचर, प्रथम केवल घर प्रथम रिसी  
री । प्रथम तीरथकर प्रथम भुवनगुरु, नाभिराय कुल कमल ससी  
री ।—स. कु

भुवनपत, भुवनपति—स० पु० [स० भुवन + पति] १ ईश्वर ।

२ इद्र ।

३ राजा, बादशाह ।

४ समुद्र ।

रू० भे०—भुअणपति, भुयणपत, भुयणपति, भुयणपत्ती, भुवण-  
पत्त, भुवणपति, भुवनपत्ता, भुवनपत्ति ।

भुवनेस—स० पु० [स० भुवनेश] १ शिव की एक मूर्ति ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

भुवनेसर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू भे)

भुवनेसरी, भुवनेसी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू भे.)

उ०—हीगोळ राय अठ दम हथी, भ्रखै मयख भुवनेसरी । कवि जोड पाण ईसर कहै, उदो उदो आसापुरी ।—देवि

भुवनेस्वर-स० पु० [स० भुवनेश्वर] १ शिव की मूर्ति या रूप ।

२ उड़ीसा मे पुरी के पास स्थित तीर्थस्थान जहा उक्त शिव की मूर्ति है ।

रू० भे०—भुवनेसर, भुवनेस्वर ।

भुवनेस्वरी-स० स्त्री० [स० भुवनेश्वरी] १ देवी ।

उ०—१ देवाण विद्या दत्तावरी, देवी घनदातावरी । चहुवाण वस रूपक चवा, सारसत्त भुवनेस्वरी ।—नैणसी

उ०—२ राजा भोज पूछी—सिंहासन की उत्पत्ति कहो । तद पूतली कहो—स्त्रीमद् भागवत पुराण माही पचम स्कव माही स्त्री महादेव रा पुत्र स्वामी कारतिक भुवनेस्वरी देवी री आराधन कियो—सिंघासन वत्तीसी

२ दस महा-विद्याओं मे से एक । (तांत्रिक)

रू० भे०—भुनेसरी, भुवनेस्वरी, भुवनेसरी, भुवनेसी ।

भुवन्न—देखो 'भेखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—१ भुवन्न तरण नरदेव भुयग, प्रमेसर तोरा कीट पतग ।

प्रार्म कुण तोरा पार प्रचढ, वसं रोम रोम बिखै ब्रह्मड ।—ह र

उ०—२ जगत्ते जाते आते जाण, प्रसन्न थयो हरि दीठे प्राण ।

दीठो हिव माति न आपो दाख, भुवन्न नही सी ठाम स भाव ।

—ह र

भुवपत्त, भुवपति, भुवपती, भुवपत्त, भुवपत्ती—देखो 'भूपति' (रू भे)

उ०—१ अन अनेक भुवपत्त, वाग खवणा सुण रत्ते, नमि प्रणाम

आधीन करे, सेवा बहु भत्ते ।—महाराणा प्रताप री छप्पय

उ०—२ छक वडियो अणछेह, पमग चडियो भुवपत्ती । जाण

चढयो जेठ री, सुरज सपतास सपत्ती —मे म

भुवपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू भे)

उ०—१ घडी नव चद चढ्या घटियाळ, प्रणामत पाव लख्यो

भुवपाळ । भळे कर खाति लखी रण भूमि, घावा भरपूर रह्या

भड घूमि ।—मे म

उ०—२ सुणे जद वचन 'भैरव' सूर, नरापत घोय चखा चद

नूर । भ्रगूटीय रेख चढे मुर भाळ, भिडे भ्रह्म सूख अडे भुवपाळ ।

—पे रू

भुवमड—देखो 'भूमड' (रू भे.)

भुवरलोक-स० पु० [स० भुवलोक] अंतरिक्ष ।

भुवरियो-वि०—वह जिसमे कई घुमाव या घुघर पडे हुए हो, घुघराला ।

उ०—परघळा आसणां रा, कागरे धूवरा, मोटे पूठे रा, छोटै पीडा

रा, भागरं पूछ रा, भुवरियं रु'रा, चोळमं रग रा, लांघियं सीह

ज्यू लका चडिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाठ करता थका,

वेस्या ज्यू भाला करता थका मातं हाथी ज्यू हुकारा करता थका,

इसा ऊठ मेकजै छै ।—रा. सा स

भुवलोक—देखो 'भूलोक' (रू भे)

भुवा—देखो 'भूआ' (रू भे)

भुवाजी—देखो 'भूआजी' (रू भे)

भुवाणो, भुवाधी—देखो 'वोवाणो, वोवाधी' (रू भे)

उ०—कोठे भुवाळ ढोडा इलायची रे म्हारा लोटण करवा, कोठे

भुवाळ नागर वेल, ऐ जी श्री मिरगा नैण्णी रा ढोला, मारुणी

उडीकें घर आव ।—लो. गी

भुवाणहार, हारो (हारी), भुवाणियो—वि० ।

भुवायोडो—भू० का० कृ० ।

भुवाईजणी, भुवाईजवो—कर्म वा० ।

भुवायोडो—देखो 'वोवायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुवायोडो)

भुवाळ-स० पु०—१ बाल, केश ।

उ०—ताहरा हेकं रजपूत नू भुवाळां हू भालि भोकि करि नीची

नाखियो । उण नू धाव किया ।—द वि

२ देखो 'भूपाळ' (रू भे)

उ०—१ गाव दस सिर बाण गजं, प्रगट खळ जन भूप भजं ।

जनक पण रख चाप भजं, मलै अवव भुवाळ ।—र ज प्र

उ०—२ सरसत मात पमाव कर, दे मो अविरळ मत्ति । भोगी

भमर भुवाळ जं, गुण गाळ तसु भत्ति ।—ढो मा.

भुवाळो—देखो 'भवळ' (रू भे)

उ०—वूडी-भोळी डोकरघा नै आपरा वेटा वेगा सा छुडा ल्यावण

रा वसती घमड दिखाल्ले है । भुवाळी खांवती फिर । घर घर गेडा

काटे ।—दसदोख

भुवासासू—देखो 'भूआसासू' (रू भे)

भुवासुसरी—देखो 'भूआसुसरी' (रू भे)

भुवि, भुवी—देखो 'भूमि' (रू भे)

भुस—देखो 'भूसी' (मह, रू भे)

उ०—कह्यो—'वीरम' वावडो, नही तर उदै री खाल कढाळ छू,

अर भुस भराउ छू ।—नैणसी

भुसण-स० पु०—कुत्ता, स्वान । (अ मा, ह ना मा)

रू० भे०—भसण ।

भुसणो-वि०—१ भुसने वाला (कुत्ता) ।

२ व्यर्थ वकवास करने वाला ।

रू० भे०—भसणउ ।

भुसणो, भुसवो—क्रि० अ० [अनु०] १ कुत्ते का भौं-भौं शब्द करना, भूंकना ।

उ०—१ गहवरियो गजराज, मद छकियो चालै मतै । कूकरिया

वेकाज, रोय भुसं वयू राजिया ।—किरपाराम



उ०—२ कुत्ता रै भुसणा रो डर तो पूरो पूरो मिटग्यो हो, पण राजाजी री खीभ री डर तो उणी भात कायम हो।—फुलवाडी  
२ व्यर्थ मे किसी के लिए भला-बुरा कहना या वकना।

भुसणहार, हारी (हारी), भुसणियो—वि०।

भुसाडणो, भुसाडवो, भुसाणो, भुसावो, भुसावणो, भुसाववो

—प्रे० रु०।

भुसियोडो, भुसियोडो, भुसियोडो—भू० का० कृ०।

भुसीजणो, भुसीजवो—भाव वा०।

भूसणो, भूसयो—रु० भे०।

भुसाडणो, भुसाडवो—देखो 'भुसाणी, भुसावो' (रु भे.)

भुसाडणहार, हारी (हारी), भुसाडणियो—वि०।

भुसाडियोडो, भुसाडियोडो, भुसाडियोडो—भू० का० कृ०।

भुसाडीजणो, भुसाडीजवो—कर्म वा०।

भुसाडियोडो—देखो 'भुसायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भुसाडियोडो)

भुसाणो भुसावो—प्रे० रु०—१ कुत्ते को भौं-भौ शब्द करने या भौंकने मे प्रवृत्त करना।

२ व्यर्थ मे किसी के लिए भला-बुरा कहने को प्रवृत्त करना।

भुसाणहार, हारी (हारी), भुसाणियो—वि०।

भुसायोडो—भू० का० कृ०।

भुसाईजणो, भुसाईजवो—कर्म वा०।

भुसाडणो, भुसाडवो, भुसावणो, भुसाववो—रु० भे०।

भुसायोडो—भू० का० कृ०—१ कुत्ते को भौं-भौ शब्द करने या भौंकने मे प्रवृत्त किया हुआ २ व्यर्थ मे किसी के लिए भला बुरा कहने मे प्रवृत्त किया हुआ

(स्त्री० भुसायोडो)

भुसावणो, भुसाववो—देखो 'भुसाणी भुसावो' (रु भे)

भुसावणहार, हारी (हारी), भुसावणियो—वि०।

भुसावियोडो, भुसावियोडो, भुसावियोडो—भू० का० कृ०।

भुसावीजणो, भुसावीजवो—कर्म वा०।

भुसावियोडो—देखो 'भुसायोडो' (रु भे)

(स्त्री० भुसावियोडो)

भुसियोडो—भू० का० कृ०—१ भौं-भौ शब्द किया हुआ (कुत्ता)

२ व्यर्थ मे किसी के लिए भला-बुरा कहने मे प्रवृत्त हुवा हुआ.

३ नाराज

(स्त्री० भुसियोडो)

भुसी—१ देखो 'भूसी' (रु भे)

२ देखो 'भूसी' (अल्पा, रु भे)

भुसुडी—देखो 'काकभुसुडी'।

भुह—देखो 'भ्रू' (रु भे)

उ०—जुधि भाल् कराळ उठत जठै, असि हाकलिया 'बखतेस' अठै। चख चोळा भळाहळ रीस चढी, भुह उपर मोसर जाय भिडी।—सू प्र

उ०—२ चख चचळ मन अचळ, कमळ चख भुहा अलीअळ। तन ऊजळ पति रत्त, रूप भरता रुचि मझळ।—गु रु. व

भुहर—देखो 'भ्रू' (रु भे)

उ०—मिल चहुर मूछा भुहर भर, वज पखर गूघर भिडज वर। गज चीर फरहर खुल अगार, भुक अतुर लोयण अगन भर। अर आवियो आराण।—र रु

भुहार, भुहारव—देखो 'भ्रू' (रु भे)

उ०—१ मुछार भुहार मिळै मगरूर, सोभा मुख जाणक ग्रीखम सूर। भयकर रूप वणै जिम भेस, महाभड 'केसर' री 'मुकदेस'।

—सू प्र

उ०—२ अग रोम ऊल्हस तेज, चख मुख रातवर। मूछ भुहारां मिळै पाव नह लगै घरा पर।—प्रतापसिध म्होकर्मसिध री वात

उ०—३ डरै जुघ वीच तुरी 'अजवेस' भुहारव उपर मूछ भिडेम। मुखे चख चोळ सरूप मजीठ, घवीडत सावळ मूगळ वीठ —सू प्र.

भुहि—देखो 'भूमि' (रु भे)

उ०—मूझइ रडइ भुहि पडइ मनि कंप थाइ, देखी जतू कटक उत्तर सून्य थाइ। 'पाछउ हव वलि ब्रह्मद मइ म मारि, खूटा पखइ कहिन भूलउ का विचार।'—सालिसूरि

भू-स० पु० [अनु०] १ रुदन की आवाज, या ध्वनि।

उ०—आ कयनै वो फेर भू भू करनै रोवण ठूकी।—फुलवाडी  
२ देखो 'भ्रू' (रु भे)

उ०—१ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई, तिका स्वप्न रै माहि पिंदा वताई। सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा तिथो आक भू वांकडा नेत तीखा।—मे म

उ०—२ दाता री पाणी 'कडीया री केहरी, हाल री हस, भूआ री भमर, कुरज री नस।—मयाराम दरजी री वात

भूइ—देखो 'भूमि' (रु भे)

उ०—साह वळ यडो विहवळ, हुवै त्रिखावत जळ मोकळै। कळि मूळ आइ पैठी, कमी, भूइ कठै भाखर वळै।—गु रु व

भूइरी—देखो 'भवारी' (१) (रु भे)

भूई—देखो 'भूमि' (रु भे)

भूईवावळी—देखो 'भूईवावळी' (रु भे)

भूक-स० स्त्री०—गधे के रेंकने से उत्पन्न ध्वनि।

भूकण-स० पु० [अनु०] १ गधा, खर। (ह ना मा.)

उ०—सठ मडळ खोता हुवै, वत्ता कुकवि बणंत। भूकण लागी भूकवा, जाण जमा दीपत।—वा दा

२ कुत्ता, स्वान।



रू० भे०—भूकण ।

भूकणो, भूकवो—क्रि० अ०—१ गधे का रेंकना ।

उ०—१ पण गधा नै तो कुमत सूझियोडी ही । वो तो फेर चीर्भो चीर्भो करण लागो । वो जाण्यो भूकणा मे ई मीघाई है ।

—फुलवाही

२ कुत्ते का भो-भो शब्द करना, भुमना ।

३ व्यर्थ बकवास करना ।

उ०—भगवत करतानै करतव भुगतावै, पिछला पापा रा पामर फल पावै । भावी भूलोडा भूकौ क्यू भाया, पोचा करमा रा पोचा फल पाया ।—ऊ का

भूकणहार, हारो (हारी), भूकणियो—वि० ।

भूकियोडो, भूकियोडो, भूकयोडो—भू० का० कृ० ।

भूकौजणो, भूकौजवो—भाव वा० ।

भूकणो, भूकवो, भूकणो, भूकवो, भूखणो, भूखवो—रू० भे० ।

भूकियोडो—भू० का० कृ०—१ व्यर्थ बकवास किया हुआ २ रेंका हुआ (गधा)

(स्त्री० भूकियोडी)

भूखर—वि०—अति शीतल ।

उ०—भूखर वाइ भणहण्ड, तनि तनि छूटइ धूजि । मज्जन करती माननी, गौरीसकर पूजि ।—मा का प्र

भूगडो—भाड मे सेका हुआ चना ।

उ०—जवाईडा, मेरी नो मण कोरी काचो चावै रे क, मेरी लाडो ना चलै । सासूडी, मैं दस मण का भूगडा भुना द्यू अ क, तेरी लाडो ले चलू ।—लो. गी

व० व०—भूगडा ।

भूगरो—स० स्त्री०—लाल मुह वाली भेड ।

भूगळ—म० स्त्री०—१ नरसिंघा नामक बाजा ।

उ०—जीतव कांह वात इम सुणी, नगरलो क छइ वढामणी । मदनभेरि भूगळ भरहरइ, वरण अढारइ जय जय करइ ।

—का दे प्र

२ सार्वजनिक स्थानो, कारखानो या मीलो मे भारी स्वर मे होने वाली समय सूचक ध्वनि या आवाज जो यन्त्र विशेष के द्वारा उत्पन्न की जाती है और निर्धारित समयो मे होती रहती है, मीटी, विसल ।

वि०—१ मूर्ख, नासमझ ।

२ देखो 'भूगळी' (मह, रू भे)

उ०—बाजरी देखी तो पत्ता भूगळ रा भूगळ, सावळा भवर ।

—रातवासी

रू० भे०—भूगळ ।

भूगळी—स० स्त्री०—वास या धातु निर्मित खोखली नली जिसके द्वारा फूक मारकर अग्नि को प्रज्वलित किया जाता है ।

भूगळी—स० पु०—धातु या लकड़ी का बना बड़ा नल ।

मह०—भूगळ ।

भूगो—स० पु० [दे०] १ वर्षा ऋतु मे होने वाला सफेद रंग का उद्भिज्ज पदार्थ विशेष जिसे 'फूवी' भी कहते है एव जिमका शाक भी बनता है । (शेखावाटी)

उ०—भादू महीने भूगा होमी, तीवणिया री ताह । बाजरिया री रोटी खावा, वाह रै माझी वाह ।—लो गी

२ वाम का अक्षुर ।

उ०—पीव पीठ काढघी पिसण, गाजी उर विच गाड । जाण वास भूगो जवर, फूटथो घरती फाड ।—रेवतसिंघ भाटी

३ एक कीट विशेष ।

उ०—फूकारा वादिया घड फाई, जत्र न लागै भडा जग । भूगा काळ तणो कळ भारथ, खत्री तू भ हाडो खडग ।

—कवर अमानसिंघ हाडा री गीत

४ पशुओ की चराई का एक 'कर' जो भूतपूर्व देशी राजयो व जागीरो मे लिया जाता था । (वीकानेर)

भूच—स० पु०—१ रेगिस्तान, ऊपर भूमि ।

उ०—जै मोटा भाई छो थै थाहरै ठिकारै जावो । इण भूच घरती मे कासू करिस्थो—ठाकुर जैतसी री वारता

२ अपठित, मूर्ख ।

रू० भे०—भूच, भूछ ।

भूचक—स० पु०—सूअर का वच्चा ।

भूचणो, भूचवो—क्रि० स०—१ उपभोग करना, भोगना ।

उ०—१ सगुरा संत सयम रहै, सन्मुख सिरजनहार । निगुरा लोभी लालची, भूचे विसय विकार ।—दादूवाणी

उ०—२ दाद यो फूटे थै सारा भया, सवे सधि मिळाइ । बाहुड विसय न भूचिये, तो कवहू फूट न जाइ ।—दादूवाणी

२ मागना, याचना करना ।

उ०—सह कामी सेवा करै, मांग मुग्ध गवार । दादू ऐसे बहुत हैं, फल कै भूचणहार ।—दादूवाणी

भूचणहार, हारो (हारी), भूचणियो—वि० ।

भूचियोडो, भूचियोडो, भूचयोडो—भू० का० कृ० ।

भूचीजणो, भूचीजवो—कर्म वा० ।

भूचाळ—देखो 'भूचाळ' (रू भे)

भूचियोडो—भू० का० कृ०—१ भोगा हुआ २ मांगा हुआ ।

(स्त्री० भूचियोडी)

भछ—वि०—१ कटा हुआ २ मीचा हुआ

३ देखो 'भूच' (रू भे)

उ०—जगळ रा वसणहार भूछ लोक छा ।—नैणसी

भूजणो, भूजवो—क्रि० स०—१ किसी खाद्य पदार्थ को तेल या घी मे पकाना ।

२ अग्नि या ताप से किसी वस्तु को बहुत गर्म या लाल कर देना ।

उ०—चांद किरण राखू रमी, कोरा टीवडिया । भात पैली भूजिया, लूझा कडकडिया ।—लू

३ किसी वस्तु को अगारों पर सेंक कर पकाना ।

४ ताप द्वारा किसी वस्तु को इस प्रकार जला डालना कि उसका जलांश शुष्क हो जाय ।

उ०—चूण लेण रे चाव मे, चिडियां खोलै चांच । भीतर सारी भूजवै, लूझा अकरी आच ।—लू

५ मास, मछली, आदि पकाना ।

उ०—राजा नल री बात तो थै सगळा जाणो ई हो के ठाव मे भूजियोडी मछली पाछी पाणी मे वडगी ।—फुलवाडी

६ गरम वालू मिट्टी मे दाने आदि पकाना या भूनना ।

७ लाक्षणिक अर्थ मे गताना, दुख देना ।

८ लाक्षणिक अर्थ मे, क्रोध मे झुल्लाकर बोलना ।

उ०—तरै दासी ऊची जाय किवाहां री छेकड माहि मूढी घालि नै कह्यो—चावडीजी कुवरजी नै जगाय उरा मैलो । तरै चावडी भूजती बोली, मालजादी राहां, पारै वाप नै जरै ही मारि गाठडी वाघि भरोखै रै मारग नाख दीघो ।—जगदेव पवार री बात

९ लाक्षणिक अर्थ मे, भ्रम की भाग मे भुलसना ।

उ०—अज मेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूजदा है । नाभा फत नामी कथा निकामी, भ्रम गामी भूजवा है ।—ऊ का १० बडूक तोपादि की गोतियो से शरीर छिद्रित करना, मारना । भूजाणहार, हारी (हारी), भूजाणियो—वि० ।

भुजाडणो, भुजाडवो, भुजाणी, भुजावो, भुजावणी, भुजाववो

—प्रे० क० ।

भूजियोडी, भूजियोडो, भूज्योडी—भू० का० क० ।

भूजोत्रणी, भूजोत्रवो—कर्म वा० ।

भूनणो, भूनवो—रू० भे० ।

भूजवो—स० पु०—एक प्रकार का भुना हुआ मास ।

भूजाई—देखो 'भुजाई' (रू भे)

उ०—१ भोजन विविध चाव भूजाई, सदा नवनवी गोठ सवाई । चावा सबद कहे नित चावा, अकसो सिरै तणो उमरावा ।

—रा क

उ०—२ ताहरा रावजी हुकम कियो—'घिरत भूजाई मे ईयै पळी सौं पुरसो । आघो पुरसै तो सवार नू सभा दीज ।—नैणसी

उ०—३ गोरस की उभेल जीमे परज्याद । सकरसै वोहै तरत-करका सयाद । ऐसी विघ रस आई । राजेस्वरू की भूजाई ।—सू० प्र

उ०—४ मदनी कुवरजी रा हुकम पखी ही ज भूजाई रा चरू, थाळी, भूजाई री भिरणकार, घोडो चहुवाण रामदास री पेस री, परणिया तदि पेसकस कियो हुतो, बीजी ही भूजाई री समदाव सह मदनी ले गयी ।—द वि

भूजियोडी—भू० का० क०—१ कोई खाद्य पदार्थ तेल या घी में पकाया

हुआ २ अग्नि या ताप ने किसी वस्तु को गर्म या लाल किया

हुआ ३ किसी वस्तु को अगारों पर सेंक कर पकाया हुआ

४ ताप द्वारा किसी वस्तु को इस प्रकार जलाया हुआ कि उसका जलांश शुष्क हो गया हो । ५ मास या मछली आदि को पकाया हुआ

६ गर्म वालू मिट्टी में दाना पकाया या भुना हुआ लाक्षणिक अर्थ में, क्रोध में झुल्लाया हुआ ८ लाक्षणिक अर्थ में, मत्ताया हुआ, दुग्धित किया हुआ ९ लाक्षणिक अर्थ में, भ्रम की भाग में भुलसा हुआ

(स्त्री० भूजियोडी)

(स्त्री० भूजियोडी)

भूज—सं० स्त्री०—वन्नामी, अपयय ।

उ०—पण आप तो दया रा ई रूप हो, गरीब अस्यानत जाण उण री लिहाज रागियो, पण अदाता आ नीच गरीबा रा तो लखण ई वोदा है । भलाई करता भूज हाथ लागै ।—फुलवाडी २ कलक ।

उ०—भूज री ओ ठीकरो म्हारै गळे बाधियो जको तो ठीक है, पण अर्थ आ चाकरी म्हारा सू वण नी आचै ।—फुलवाडी

३ दोप, घुटि ।

उ०—घणो ई चानणी रात है, ठाडा लैरका चानै, पण गाणो मुणनै नेत री घणी सोटा जरकाया तो आंस्यां आडी अघारी आय जावैला, पछै म्हनै भूज मत देजै ।—फुलवाडी

पु० [स्त्री० भूजण] ४ सूअर ।

उ०—१ भूजण तो भडा जिणै, हिरणी जिणै मुगट्ट । पांन पखकै उठ चलै, यागड चालै थठ ।—अज्ञात

उ०—२ सूवर सूतौ नीद मे, भूजण पहरा देत । उठो सूवर नीदाळका, फीज हिलोळा लेत ।—लो गो

भूजण—सं० स्त्री०—१ गलह-प्रिय स्त्री ।

२ देखो भूज (४) (स्त्री)

भूजसूरी—सं० पु०—ग्राम्य-सूअर ।

उ०—जद स्वामीजी बाल्या—वोइ भूजसूरी निस्टो ग्यातो ही । माहुकार दिसा जातो सहजे द्रष्टि पडी देखने भूजसूरी बोल्थो माहुजी रो पिण मन हुमो दीसै है ।—भि द्र

भूजाई—सं० स्त्री०—१ शिकायत ।

उ०—मासी फिळा माथ इज ऊभी मिळगी । जाणै जितो मोळवो दियो । आमनो जतायो । बाढळ री भूजायां करी ।—फुलवाडी २ निदा, अपकीर्ति ।

उ०—सुरग मे ई रात-दिन अत लोक री भूजायां सुण सुणै म्हारा तो कान पाकग्या, पण इत्ता दिन जकी बातां सुणी वें साथ भूठी अर वेपीदा ही ।—फुलवाडी

क्रि०—करणी, होणी ।

३ दोप, अवनगुण ।

उ०—थारी खुद री ई बात लै । थू जलम सू भूडो घोडो ई ही । ठगा रै सिखावण सू थामै भूजायां सांचरी ।—फुलवाडी

४ खराबी ।

उ०—सास्तर रा सास्तर लुगाया री ताडना सू भरघा पडघा है, भूडो तो आ मे की खामी अर भूडायां निजर नी आवै ।

—फुलवाडी

५ कुरूपता ।

६ अभद्रता ।

७ बुरा होने का भाव या बुरापन ।

८ आलोचना ।

भूडापण, भूडापणो—देखो 'भूडाई' ।

भूडोडी—देखो 'भूडो' (अल्पा, रु मे )

उ०—हाथा हूकलिया लटकता लोटा, रिण रिण रीकता सुपनै मे रोटा । कोडी कोडी लै कलियोडा कूगा, ढाळा भूडोडा ढळियोडा ढूगा ।—ऊ का  
(स्त्री० भूडोडी)

भूडोळ-स० पु यो०—भूकम्प भूचाल ।

भूडो-वि० [स्त्री० भूडो] १ अनुचित, खराब ।

उ०—१ भूडा-भूडो वातडी, भूमी करिये काय । हू प्यारी इण जोध की, तो घर माहे नाय ।—गज उद्धार

उ०—२ अपा दो जीवा सारू तो मोकळी पण हाथा कमायोडी घन सुवयारथ लागे तो काई भूडो वात ।—फुलवाडी

२ बुरवस्था या खराब अवस्था वाला, बेकार ।

उ०—पल पल माही पिये, चूपकर चिलम्या चाडे, घन री कर कर घूवो, कई इण माही काडे । आणे रोज उधार, करज कर टाट कुटावे, निज तन री कर नाम, ओगणी सास उठावे । बुढापे सग्या होवे बुरी, जग में भूडो जीवणी, हजार माय ओगण हुवे, पण बी होकी पीवणी ।—ऊ का

३ अशोभनीय, असुन्दर, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ क्रोधी कपटी पूर, भूडो दीस तूर । घरम री द्वेसियो ए, मच्छर विसेसियो ए ।—जयवाणी

उ०—२ कैता ई मोरिया रै सुरगी पाखा री रुपाळी छत्तर तण-ग्यो । मोर खुसी मे नाचण लागो । पैला मोर वांडा जैता । घणा भूडा लागता ।—फुलवाडी

उ०—३ मूछा विन मूछा भासत भूडा, भरसूडा भभकदा है । लडथड गळ लजा हतरस हजा, मनमथ काम मददा है ।—ऊ का.

उ०—४ मोताहळ मुकताह, पहरथा मेळ ज नह पडे । गज री भूल गवाह, भूडो लागे भेरिया ।—महाराजा बलवत्सिंह रतलाम

४ अनिष्टकर, असुभ, अमंगलिक ।

उ०—म्हारी जीमणी आख फरुकी तद सू ई सोच्यो के की भूडा समाचार आवला ।—फुलवाडी

मुहा०—भूडो भली होणी=मीत हो जाना, मर जाना ।

५ जिसमे शालीनता व शिष्टता आदि का नितान्त अभाव हो ।

अश्लील, असम्यक्तापूर्ण, भद्र ।

ज्यू—वो बीत भूडो बोलै है ।

मुहा०—भूडो बोलणी, भूडो बकणी=गालिया देना ।

६ दयनीय ।

उ०—सूवर अर भाचरिया सू ई भूडो हालत है इण री ।

—फुलवाडी

७ अलाभकारी, हानिकारक ।

उ०—१ अपणी जाण अभाग, गजव नहिं खाय गधेडो । सूकर भूडो समझ, निपट निकळै नहिं नेडो ।—ऊ का

उ०—२ हूकै सू निज हेत भली भूडो नह भाळै । माहि वळै मा-वाप वारणै छाणा वाळै ।—ऊ का

उ०—३ मरणै परणै मे गोडा खर गाळै वनिता सुत जावो वंती रै वाळै । भलपण खाचै पण राचै भूडै मे, माचै सूता रै हूको मूडै में ।—ऊ का

मुहा०—भूडो करणी=अहित करना, बुरा करना, कष्ट देना ।

२ भूडो बीतणी=अहित होना, गडबड होना, अव्यवस्था होना ।

८ जो सहन करने योग्य न हो, असह्य, कष्ट-प्रद ।

उ०—जाहर जस खुस वोहजुत, सुदता कुसम सुसोह । काटां सू भूडो कपण, वप अपजम बदवोह ।—वा दा

९ खतरनाक, क्रूर ।

उ०—आइदा ध्यान राखजै । जै अवे कदैइ केस गमाय दियो तो थू थारी जाणै । पळै म्हारै जेडी भूडो नी है ।—फुलवाडी

१० क्रुद्ध, नाराज ।

उ०—ताहरा कुवर रिसायनै कहियो—जु हाथी तो न छो छो, पण म्हारी नाम मालदे छै । मेढतै री ठोड मूळा बुहाऊ तो मालदे ।

ताहरा राव गांगेजी कहाडियो वीरमदेजी नू—जु थे ओ कांसू कियो, जितरै हू जीवू तितरै तो थै म्हारै परमेस्वर छो, पण हू पुहतो न ! ताहरा मालदे थां सू भूडो छै, थानु दुख देसी ।

—नैणसी

११ अकीर्तिकर, निदनीय ।

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या रजपूत री वेटी सभाम करता न्हास जावै ते सूर किम कहीये । तिए ने राजा पटी किम खावा दे ।

लोकीक मे आवळ किम रहे । भूडो दीसै । ज्यू भगवत रा साधु वाजै नै कारण पडिया असूभतो दिया अल्प पाप बहुत निरजरा कहे असूभता री थाप करै ते इहलोक मे भूडा दीमै ।—भि द्र

१२ निम्न स्तर वाला ।

उ०—जै रुपिया छां ती जाट गूजर कहावा । हाडोती मे भूडा दीसां । न द्या तो मारीजा ।—नैणसी

क्रि० प्र०—दीखणी, लागणी ।

मुहा०—भूडो दिखाणी=नीचा दिखाना । भूडो लगाणी=वदनाम करना । भूडो बाजणी, भूडो लागणी=वदनाम होना ।

१३ जो घृणा करने योग्य हो, घृणित, गदा, हेय ।

स० पु०—१ निदायुक्त कविता ।

उ०—भला होता जद भूडां कहता, भूडा रा काई भूडा । भला भूडा री वरत राखता, सरग गया वं भूडा ।

—सादूल जी वोगसी (सरवडी)

२ अहित कामना सूचक कविता ।

रू० भे०—भाडी भुडु ।

अल्पा०—भूडोडो ।

मह०—भूडो ।

भूण-स० पु० [स० भ्रमण] काष्ठ या धातु निर्मित एक गोलाकार बड़ा चक्र जो कुए से पानी निकालते समय चडम वी रस्मी के चलने में सहायक होता है ।

रू० भे०—भवण, भमण, भवण, भूण ।

अल्पा०—भमणियो भूणियो, भूणियो ।

भूणकमळी, भूणमथो-स० पु०—ऊट । (डि को)

रू० भे०—भूणकमळी, भूणकमळी ।

भूणियो—देखो 'भूण' (अल्पा, रू भे)

भूथरा-स० पु०—उलभे या बिपरे हुए गिर के बाल ।

भूवाड़ी—देखो 'भूभाडी' (रू भे)

भूवावळी—देखो 'भूईवावळी' (रू भे)

भूभ-स० स्त्री०—मस्ती ।

उ०—भह खळा भहा ऊतरं भूभ, कुजर कडहत गूडत कूभ ।

तेगा तमच्छ तूतति तोत्र, ऊतरक हुलां सावळा भोव ।

- गु र व

भूभलिया-स० पु०—पड़िहार वन की एक शाखा ।

भूनाडो-स० पु० [अनु०] १ भू-भू राने की तेज ध्वनि ।

२ तेज आघी ।

उ०—करकर हू भाडा सासण किचलावै, वाजै भूभाडा वासण बिचलावै । चमकैला डागळ गोडा चिक चिकता, जंतू जळ रिकता सिकता मे सिकता ।—ऊ का

रू० भे०—भूवाड़ी ।

भू-भूकार-स० स्त्री० [अनु०] भूकार यानि गधे के रेंवने की आवाज ।

भूय—देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—तरं देवराज कामदार नू कह्यो—'ओ वडी मुहती वडे दरवार गी पग्धान इतरा राईतन छोडनं मांनू जाण नं इतरी भूय आघी, तो इण री जरूर भरय सारणी ।—नैणसी

उ०—२ छळ करि दोन्यू असवार कि, चाकर नें घणी रे । जाता नवि जाणै कोइ कि, गया तं भूय घणी रे ।—प च चो

भूयास-स० पु० [स० भून्याग] १ किसी पदार्थ के एक छोर को भूमि में इस प्रकार दबाकर जमाना कि उगवा कुछ अथ भूमि के अन्दर गड जाय ।

२ किसी चीज का वह अथ जो इस प्रकार जमीन में गड़ा या घसा हुआ हो ।

३ देगो 'भुवाम' (रू भे)

भू'री—१ देखो 'भवारी' (रू भे) (वरदा)

२ देगो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)

उ०—हृग्गा वीर मेरा रै, मारुगी वादम्यानं गळ घोट । जामण का रै जाया, भू'रा कटवावू रै जां री चामटी—लो गी

भूवणी, भूवघो—देगो 'भवणी, भवघो' (रू भे)

उ०—सुणता ही लोगां रा होठ गूक जावें अर मुडता ही माघी भूवण लाग जावै —दसदोस

भूवणहार, हारी (हारी), भूवणियो—वि० ।

भूविघोडो, भूविघोडो भूवघोडो—भू० का० वृ० ।

भूवीजणी, भूवीजघो—भाव वा० ।

भूवारो—१ देगो 'भवारी' (रू भे)

२ देगो 'भ्रू' (रू भे)

भूवाळी—देगो 'भवळ' (रू भे)

उ०—१ भूव-तिन तथा नीद भोगता यथा चकडूँद्विर्ष दाई भूवाळी खावता रंता ।—दसदोस

उ०—२ कठ माघां पड रं'या, माघी भूवाळी पा रं'यो ही । ठाकरां देव'र जमी माय हाथ दे'र वंठगी ।—दसदोस

भूविदेयता-स० पु०—स्वर्ग ।

भूविघोडो-भू० का० कृ०—देखो 'भविघोडो' (रू भे)

(स्त्री० भूविघोडो)

भूसणी, भूसघो—देगो 'भुमणी, भुमघो' (रू भे)

उ०—कुत्ती घणी भूसं । घणी इ कही हे कुत्ती । सावां ने मत भूस ।—भि द्र

भूसणहार, हारी (हारी), भूसणियो—वि० ।

भूसिघोडो, भूसिघोडो, भूसघोडो—भू० का० कृ० ।

भूसीजणी, भूसीजघो—भाव वा० ।

भूह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ खव चीळ मूछ भूह चढी, तामन उठी तमोगुणी । मेह री गाज जाणै मरद, सारदूळ कानां सुणी ।—मे म

उ०—२ रोस नयन मुख रक्त, मूछ भूह नि मग चट्टिय । कर कट्टिय किरवान, कुवत मुखतै खळ कट्टिय ।—ता रा

भूहर-स० स्त्री०—आकाश में छाया हुआ घूम, कुहरा या रजकण जिससे आकाश स्पष्ट नहीं दिखाई देता ।

भूहरियो—देखो 'भूहरी' (अल्पा, रू भे)

उ०—धूड घमाला से भरी, ज्यू भूहरियो भाण । ओपै अग आदीत सी, उदयागिर परवाण ।—जसमा ओहणी री बात

भूहरी-वि० (स्त्री० भूहरी) १ घूलि से आच्छादित, घुमिल ।

उ०—महराण कमध दूजी 'गजण' कोपियो, पिसण घड वरण पड घसण पासै । भेद रज गयण तन वरण थय भूहरी । भेद रत घरण अहि अरण भासै ।—कविराजा करणीदान  
२ देखो 'भवारी' (रू भे)

उ०—प्रगटघउ खरउ भूहरी, तिण माहि प्रतिमा अति भली । जेठ सुद इग्यारस सोल बासठ, विव प्रगटघउ मन रा बली ।—स कु  
३ देखो 'भू' (रू भे)

भूहार, भूहारी—१ देखो 'भू' (रू भे)

उ०—१ मुख मूछ अणी भूहार मिळ, अरण वदन छक ऊफणै ।  
अजरज उपासक जिण वखत, दीठा (हिज) आवै देखणै ।—सू प्र  
उ०—२ साम घरम कुळ घरम सभारै, आच 'गजैसी' खडग उभारै । ऊफणियो असमान अवारै, मिलिया मूछ अणी भूहारै ।  
—गु रू व

२ देखो 'भवारी' (रू भे)

भू-स० स्त्री० [स० भू] १ भूमि, पृथ्वी । (अ मा, डि को)  
उ०—प्रव प्रव 'जोध' प्रसण पडियाळग, निहसता रण भड निवड ।  
लगै जिका वापीकी लाधी, भू भाजेवा प्रसण भड ।  
—महम्मदजी वारहठ

२ ससार, जगत ।

उ०—वाना अग धारणा भू जाहरा करेगी वाता, उधरेगी हाथा दत बारणा उवाड । उच्छाहा भरेगी खाग धारणा खरेगी अग, बारणा वरेगी 'चैन' लोहडा वजाड ।—सूरजमल मिसण  
स० पु० [स० भू] ३ विष्णु । ४ राजा, नृप । ५ भूपण ।  
६ साधु, महात्मा । (एका)

७ पानी, जल । (ना डि को)

उ०—वाळक वरळावै आवा अभिलाखै, भू-भू वू-वू विन भाखा नहि भाखै । सूर्य सीरावण व्याळू ले बासै, वेळा व्याळू री सीरा-वण सासै ।—ऊ का

८ एक की सख्या । \* (डि को)

९ देखो 'भू' (रू भे)

रू० भे०—भुय, भुव, भूय ।

भूय—देखो 'भू' (१), (५) (रू भे)

उ०—जुग जुग मे जगदीम, धरे अवतार नरायण । भूय चौ भार उतार, फेर तप साध परायण ।—गजउद्धार

भूयडह—देखो 'भुजडह' (रू भे)

उ०—१ खाई-राव सिरै नव-खडा, मारु तो सिर भारथ मडा । भारथ भळायो तो भूयडह, मांडे तू थामा ब्रह्मडा ।—गु रू व  
उ०—२ भागेसुर वासु रहि जडण रिणवड ही जोडै । फतैवान सारिखा म्लेछ भूयडह मरोडै ।—राव मालदे री वात

भूयणतरि-स० पु० [स० भवन + अन्तर] आकाश ।

उ०—मन्नीसर वली मोकलिउ, 'मिलज्यो देई मान' । परवानइ परखिउ असिउ, भूयणतरि जिम भानु ।—मा का प्र.

भूयपति, भूयपती, भूयपत्नी—देखो 'भूपति' (रू भे)

भूयवळां—देखो 'भुयवळां' (रू भे)

उ०—रिमराह तियार ववै रणवट्टा, 'खेम' समोभ्रमि रोकि खळा ।  
रुकै रिमराह वहादर राजै, भार ग्रहे निय भूयवळां ।—गु रू व  
भूया-स० स्त्री० [स० पुष्पा, पुष्पा, पुवपा, भूया, बुया] पिता की वहिन ।

उ०—ऊठ भूया कर आरती आरतडी ए वाई थारोडो नेग । कही देसो आरती वीरा कही श्री आरतडी री नेग ।—लो गी  
मुहा०—भूयाजो फिरणी, भूयाजो बोलणी=निर्वनता या टोटा होना ।

रू० भे०—भूया, भुवा, भुवा ।

भूयाऊ-स० स्त्री०—पृथ्वीकाय ।

उ०—वावीस सात तीन दस वरस सहस्रें आय । भूयाऊ वाऊ वणती दिन तेऊ काय ।—वृ हस्त

भूयाडो-स० पु०—पिता की वहिन का पति ।

रू० भे०—भूडो ।

भूयाळ—देखो 'भूपाल' (रू भे)

भूयासासू-स० स्त्री०—ससुर की वहिन, पति या पत्नी के पिता की वहिन ।

रू० भे०—भूयासासू, भूयारसासू, भुवासासू, भूवासासू ।

भूयासुसरो—पति या पत्नी के भूया का पति ।

रू० भे०—भूवासुसरो ।

भूइ—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—जूनउ गड गिरनार बुलीउ, काछ तणी भूइ चापी । काथ-गेहडी अनइ पारकर, ठट्टू थरहर कापी ।—का दे प्र

भूइवावळी—देखो 'भूइवावळी' (रू भे)

भूकत, भूकथ-स० पु० यो० [स० भू + कत] नृप, राजा । (डि को)

भूकप-स० पु० [स०] किन्ही प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी में होने वाला क्षणिक कपन जिसके कारण कभी-कभी जमीन फट जाती है एवं जल की जगह स्थल तथा स्थल की जगह जल हो जाता है, भूचाल ।

भूक-स० पु०—१ नाश, सहार ।

उ०—१ लसियो सुत 'गजण' 'पाल' सुत लडियो, भारथि भडा घडां करि भूक । रुक सरिस वहता गो राजा, रावत रह्यो वाहती रुक ।—विठळदास चापावत री गीत

उ०—२ भिडें वक्र उजळ मूछ मुहार, उभैं ससि बीज तणी उण-हार । भिडें खग 'रेण' करै खळ भूक, 'रेणायर' ऊपर बाजत रुक ।—सू प्र

उ०—३ ग्रीव पडै सिर गुडै, भडा घड पडै भिडज्जा । कोट पडै कगुरां, भूक हुय पडै भिडज्जा ।—सू प्र

२ देखो 'भूकी' (रू भे)

३ देखो 'भूख' (रू भे)

भूकण—१ देखो 'भूकण' (रू भे) (अ मा)

० देखो 'भूषण' (रू भे)

उ०—थावरा जगमा माहा तीरत थयी, ग्रह नरा सुरा सुजग गम  
आरो। प्रथी मँवडो भूकण वणै कैलपुर, धुरह धन दुख महण  
थारो।—महाराणा राजसिंघ री गीत

भूकणो, भूकवो—देखो 'भूकणो, भूकवो' (रू भे)

उ०—१ गरघव-वत गावै डर डमगावै, हरखावै हूकदा है। विन  
तप व्रत वसिया कद्रप कसिया, भग रमिया भूकवा है।—ऊ का

उ०—२ दिली लखै दिगदाह, विगत हित माह विचारी। खर भूक  
रख खँग, स्वान कूकै सुखहारी।—रा रू

भूकणहार, हारी (हारी), भूकणियो—वि०।

भूकियोडो, भूकियोडो, भूकियोडो—भू० का० क०।

भूकीजणो, भूकीजवो—भाव वा०।

भूकाक—स० पु०—एक प्रकार छोटा वाज पक्षी।

भूकियोडो—देखो 'भूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भूकियोडो)

भूकि देखो 'भूकी' (अल्पा, रू भे)

उ०—पुळियो निज पाए लुपुधि लगाए, जाय जु हारि घणी जगत।  
अधिको धन आपै असुभ उथापै, भूकि किश्रो दाळिद भगत।

—पि प्र

भूकियो—देखो 'भूकियो' (अल्पा, रू भे)

उ०—भाग री घणी सोभाग री भूकियो, खाग री खाटियो वाट  
खावै। वेहू राहां विचै तीन वादै 'वलू', बीभरै खेत नोसाण  
वावै।—वलू चापावत री गीत

भूकी—देखो 'भूकी' (अल्पा, रू भे)

भूकीहली—एक कन्द विशेष।

उ०—भसम भराडो भमरिया, चोलहिरा चांडाळ। भूकीहली  
भूवतरी, कद मकद विसाळ।—मा का प्र

भूकीडो—१ देखो 'भूकी' (अल्पा, रू भे)

उ०—वादां रै आढा वहे, सोडा मिळनै सँग। भूकीडा ममता फिरै,  
साहू खावै लँग।—ऊ का

भूकी—स० पु०—१ महीनतम-चूर्ण, चूर्ण।

२ सुदम टुकडो का ढेर।

३ नाश, संहार।

४ महीन पीसी हुई बुकनी।

५ देखो 'भूखो' (रू भे)

अल्पा०—भूकि, भूकी।

उ०—भूकां पीसणहार यू, ज्यू जग कमळाकत। नागां ढांकणहार

इग, जिम तरवरा वसत।—वा दा

भूखड-स० पु० [स०] १ पृथ्वी का एक भाग।

२ नी की मर्या। \*

भूखडियो—स० पु०—छत्तीस प्रकार के घस्त्रो मे से एक। (अ मा)

भूख-स० स्त्री० [स० वृभुधा] १ शरीर के स्वाभाविक वेगो में से एक  
वेग जिसमे खाने की प्रवृत्ति इच्छा होती है।

उ०—१ दिन ऊनै नित देगणी, दाता री दीदार। मार्ग भूख  
कळेग भय, 'वक' न लागै वार।—वां दा

उ०—२ राजा मन गटकै घणू, ऊमा ग्रहनिजि जेह। भूख गई  
तिम वीसरी, नवि रीठा री नेह।—ढो मा

मुहा०—१ भूख मरणी=बहु श्रवस्था जय भूख लगकर बाद में  
कुछ भी खाने की इच्छा न हो। २ भूख लागणी=कुछ खाने  
की इच्छा होना। ३ भूखा मरणी=भोजन के अभाव में व्या-  
पुन होना।

२ कमी, टोटा।

उ०—तद इरदखा कै'वण लागी इण घरती मार्य म्हनै मवसे पणी  
भूख दितली रा पातमाह रै दीवै।—फुनवाडी

मुहा०—भूखा मरणी—अभाव ग्रस्त स्थिति होना।

३ अभिलाषा, कामना।

उ०—१ लामू मण घान निपजाय नै ई उग री भूख नौ मिटी  
तो म्हा भोळा जीवा नै माग्था उण री काई माघी लागैला।

—फुनवाडी

उ०—२ तद इरदखा कछी—जमलमेर दरबार रै खजाने लुटा-  
खोमी री सगत अणू ती है तो ई यारी मन नी भरघी। अ मातू  
सिधासण वाने म्हारा नाम सू निजर कर दीजो। भूख री अण-  
गिण माया रै भेली आ माया ई पडी रै'वैला।—फुनवाडी

३ आश्चर्यकता, जहरत।

४ दरिद्रता, कगाली।

ज्यू—उण रै लाइ रै भूख बापरगी।

रू० भे०—भूख, भूक, भूषि।

भूखण—देखो 'भूखण' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ सी थिर राखण काज, क भूखण साजिया। जडिया  
रच्छया जय, मनोज मुनी दिया।—वां दा

उ०—२ भडां-सोह-भूखण गोपि भ्रतार, विसन्न व्रदावन-लील-  
विहार। नमो ब्रह्मा-केवल राखण अज्ज, नमो अच्युतानंद गोविंद  
अज्ज।—ह र

उ०—३ राग खट तीस घुनि व्यग, भूखण सुरस पात पद। जिकै  
विण समझ चहळ पक्की जिही, जे न रघुनाथ चौ नाम जाँखै।

—र ज प्र.

उ०—४ राजसभा के भूखण दिल के उदार। विरदू के भारे  
समसेर बहादुरू के समसेरू के चितारे।—सू प्र.



उ०—५ रयणी भूखण चंदी, आकास भूखणी भाणी । भूखण भूतल  
इंदी, भूखण साह फीज 'गजसिंधी' ।—गु रू च  
भूखणी, भूखवी—देखो 'भूखणी, भूखवी' (रू भे)  
भूखणहार, हारो (हारी), भूखणियो—वि० ।  
भूखिओड़ी, भूखियोड़ी, भूख्योड़ी—भू० का० कृ० ।  
भूखीजणी, भूखीजवी—भाव वा० ।

भूखलमेर—स० पु०—जमलमेर का व्यापारिक नाम ।

भूखाण—देखो 'भूखण' (रू भे)

उ०—राण दल पलटतां सुयर 'भाली' रहे, भाण अम रोक  
आराण भाले । राज रै कठ भूखाण उण चौसरा, रभ चौसरन  
को सीस राळे ।—कल्याणमिह भाले री गीत

भूखाळ—देखो 'भूखो' (मह, रू भे)

उ०—इक पड़े रीठ गोळा अतर, देखि रूठा कमधज राडिया ।  
भूखाळ वधै जिम देखि भख, आया वागा उपाडिया ।—सू प्र

भूखाळुओ, भूखाळुवो, भूखाळू, भूखाळी—देखो 'भूखो' (अल्पा, रू भे)

उ०—माभी मेर अमग भड, मारु अमली-माण । गिळण गढा  
भूखाळुओ, ओवासै जमराण ।—गु रू व

भूखि—देखो 'भूख' (रू भे)

उ०—हसवाणी रिदि आणी प्राणी परवसि थ्यु घणू । भूखि भागि  
प्रीति लागी, जागी तु मन सणमणू ।—नळाख्यान

भूखियोड़ी—देखो 'भूकियोड़ी' (रू भे)

(स्त्री० भूखियोड़ी)

भूखियो—देखो 'भूखो' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ परमेसर तू वसत पाणी, सत भूखियां साक रसाळ ।  
गूगा वाच तू हीज गिरघारी, वेढी तू हीज अलख विसाळ ।

—ओपी आढी

उ०—२ तेथ फिरे रडवडे थकित, हुओ पथ हूली । लाघणियो  
भूखियो, सीह किरि डाणा हूली ।—गु रू व

उ०—३ तरै चारण कल्यो—'महे भूखिया नै माहरै वेटी जरूर  
परणावणी, वे ठाकुर आज म्हानु निवळा देखै छै तो महे ओल  
पिए देस्या ।—नैणसी

भूखो—वि० [स० वुभुक्षित] (स्त्री० भूखी) भूख से पीडित भूखा

उ०—१ मुह न दियै पर मारिये, केहर कठण प्रवव । भूखो याहर  
मै सुऐ, कै गाहै गज गव ।—वा दा

उ०—२ सक्रम सुभ सस्टी द्रस्टी लुम देती, लपुट सपुट लख  
घूषट पट लेती । लुळकर लकुटीले प्रकुटी सळ लाती, भूखी बाधण  
सी अकुटी भळकाती ।—ऊ का

२ दीन, गरीब ।

उ०—पीहर पतळा रा सैणा रा प्यारा, तारक तूटा रा नैणा रा  
तारा । सीरी सिटिया रा सुल्हा रा सारा, भीडी भूखी रा फूला

रा भारा ।—ऊ का

३ अभिलाषी, इच्छुक ।

उ०—१ व्याव री भूखी गवो तो ज्यू भीटियो कह्यो—त्यू ई  
करियो । आख्या आढी पाटी वाव नै उण रै लारै दुरग्यो ।

—फुलवाढी

उ०—२ जवानी री भूखी वकरी सेवट आपरी जीव गमायो ।

—फुलवाढी

४ कपण, कजूस ।

५ निघन, कगाल ।

उ०—वै आज घनवान है, पीसै रा वणी है अर वारै च्यारा पास  
अडधू चालै है । म्है ले'णै सू कळीज्याडी एक टोटैरो दूर, घाटायत  
अर भूखो फकीर हू ।—दसदोख

रू० भे०—मुकौ, भूखी, भूको ।

अल्पा०—भुकियो, भुखाळू, भुखाळवी, भुकियो, भूखाळवी, भूखा-  
ळुओ, भूखाळी, भूखियो, भूखाळवी, भूखाळी ।

मह०—भुखवड, भूखाळ ।

भूखाळवी, भूखाळी—देखो 'भूखो' (अल्पा, रू भे)

भूगणी, भूगवो—कि० अ०—१ भग्न होना, खडित होना, टूटना ।

उ०—आलम दखण गयो उताळी, वढी सोच उर वधव वाळी ।  
भोम गई सांभर सुण भूगो, परहस लीधा दखण पूगो ।—रा रू  
२ दुखित होना ।

भूगणहार, हारो (हारी), भूगणियो—वि० ।

भूगिओड़ी, भूगियोड़ी, भूग्योड़ी—भू० का० कृ० ।

भूगीजणी, भूगीजवी—भाव वा० ।

भूगरन—स० पु० यो० [स० भू+गभ] १ घरती का भीतरी भाग ।  
२ विष्णु ।

३ संस्कृत के महान् कवि भवभूति का नामान्तर ।

भूगरभसास्तर—स० पु० [स० भूगभंशास्त्र] पृथ्वी के सघटन एवं उसके  
ऊपरी व भीतरी तत्वों के विवेचन का शास्त्र ।

भूगळ—देखो 'भूगळ' (रू भे)

उ०—चोरी चढीयो भोज की, वाजइ वरगू भूगळ भेर । हुवउ  
खघारउ रावडइ, धार कउ द्विज चाल्यो अजमेर ।—वी दे

भूगियोड़ी—भू० का कृ०—भग्न, खडित, टूटा हुआ  
(स्त्री० भूगियोड़ी)

भूगोल, भूगोल—स० पु०—१ पृथ्वी, घरती । (हि को)

उ०—भजण जाय भूगोल मन उठा लग भर्म नह, नर्म नह जटा  
लग सास नाकी, छपी वडवा अगन लाय सी छोकरी, डोकरी वढी  
आकाय डाकी ।—फर्तमिघ वारहठ

२ वह शास्त्र या विद्या जिससे पृथ्वी के बाह्य एवं प्राकृतिक  
विभागों, जैसे पहाड़, नदियां, उद्योग, खनिज आदि बातों की  
जानकारी होती है ।



रू० भे०—भूगोल ।

भूगोलक—स० पु० [स० भूगोल + क] भूमण्डल ।

उ०—भूमिया भूगोलक नभ गोलक भाई, कविजण करुणा रस अलमिति अधिकारी । सूका सरवरिया तरवरिया सूका, च्याग वरणास्रम भय भ्रम क्रम चूका ।—ऊ का

भूडो—देखो भूआडो' (रू भे)

भूचकणी, भूचकवी—क्रि० अ०—१ डगमगाना, डावाडोल होना ।

उ०—महाक्रोवणी गनीमा हुता हुचके नरिद्र 'माघी', भूलोक भूचक वाघी लचके कोम भार । वोमगी अरावा भाळ वेताळ वभक वक, वाजद्रा 'वहादरेस' हुके तेण वार ।—हुकमीचद खिडियो २ कपित होना घडकना ।

उ०—सगा सेला खगा ऊकेला सावळा, अरस गज भूचका घका आया । खागहारी विन्हे रजवाट रा खटाऊ, थाट रा घणी मुह मेज थाया ।—रामसिंघ हाडा रो गीत

भूचकणहार, हारो (हारी), भूचकणियो—वि० ।

भूचकियोडो, भूचकियोडो, भूचकियोडो—भू० का० कृ० ।

भूचकीजणी, भूचकीजवी—भाव वा० ।

भूचकियोडो—भू० का० कृ०—१ डगमगाया हुआ, टोला हुआ २ कपित हुआ हुआ

(स्त्री० भूचकियोडो)

भूचक्र—स पु० [स०] १ पृथ्वी की परिधि ।

२ विपुवत् रेखा ।

भूचर—स० पु० [स०] १ भूमि पर विचरण करने वाला ।

उ०—१ पूर पिये भर जोगणी, भर पत्र उलट्टे । भिलिया वेचर भूचरा, मोटे मासट्टे ।—द दा

उ०—२ हर अपछर रिख हर, चढ खेचर ग्रह भूचर । सिरवर कौतिग सुवर, रुधिर पळ घत मिळ डवर ।—सू प्र

[स० भूचर] २ शिव, महादेव ।

३ भूत, पिशाच ।

४ एक सिद्धि (तत्र) ।

रू० भे०—भूचराद, भूचर, भूचार, भूचारी ।

५ देखो 'भाचर' (रू भे)

उ०—अस ई काळ पडयो तो अँ भाचरिया भूचरिया पाळणा दूभर व्हे जावला ।—फुलवाडी

भूचराद—देखो 'भूचर' (रू भे)

उ०—पसु अजाद भूचराद होव घात प्राणय । असख जात पखि वाण वेघजे उडायय ।—रा रू

भूचरी—स० स्त्री० [स०] योग शास्त्र के अनुसार समाधि अग की एक मुद्रा जिमके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनों एकत्र हो जाते हैं ।

भूचर—देखो 'भूचर' (रू भे)

उ०—जो अम्हार वयणु गुपोसिद्ध, निस्चि सो वर मझ परणेमि । वेचर भूचर भूमिघरी ।—प प च

भूचरोत—स० पु०—गेहरोत वन के क्षत्रियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—२ चाचाग दिग्गण नू भुयमाजळ माहजी मिवी । २ मेरो यातण रँ पट रा २, २ महिगी, २ भवणगी, २ भूचर रा भूचरोत ।—नैणसी

भूचार, भूचारी—देखो 'भूचर' (रू भे)

उ०—१ ग्रह गह ग्रीव गहर, मग चाल मिळ दळ मूर । मिळ वेचर ये भूचार, रिएण जाण चाने लाग ।—मि. सू रू

उ०—२ मध्य कछ सुमुमार मगर गाहा जळ अच । चौपय उरपरि भुजपरि साप भूचारी तेय ।—त्र रती.

भूचाळ—स० पु० [म० भूचाल] विन्ही प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी में होने वाला क्षणिक कपन जिमके कारण कभी-कभी जमीन फट जाती है एवं जल की जगह थल तथा थल की जगह जल हो जाता है ।

उ०—थडी कर जद आणी चहीजँ, वरती मे भूचाळ । पालण मे मे सोज्या पिरयीगाळ ।—चेतमानखा

रू० भे०—भूचाळ ।

भूछाय—स० पु०—अधेरा । (ह ना मा)

भूजणी—स० पु०—राग-द्वेष, मन मुटाव ।

उ०—जेइ ले जगळ सू लावँ, फोगा सू चुम भूजणी । चिरच माय सकर घी पावँ, भूले व्यावां भूजणी ।—दमदेव

भूजणी, भूजवी—क्रोध करना, गुस्सा करना ।

उ०—पेट नै भाठा मारतो थकी लोगों रा घर भरावँ है । घर हाळी पर भूजँ दात भीचँ । वापडी दाता मे लावण लिया रात दिन पाणी पीसणी करँ ।—दमदोख

भूजणहार, हारो (हारी), भूजणियो—वि० ।

भूजियोडो, भूजियोडो, भूजियोडो—भू० का० कृ० ।

भूजीजणी, भूजीजवी—भाव वा० ।

भूजा—स० स्त्री० [स०] १ सीता, जानकी । (अ मा)

२ देखो 'भुजा' (रू भे.)

भूजाई—१ देखो 'भुजाई' (रू भे)

उ०—तठा उपरायत भोइया नै हुकम हुवी छै । भूजाई रा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यो ।—रा सा स.

२ देखो 'भोजाई' (रू भे)

भूज्ज—प्र०—फिर, पुन ।

भूभाळी—देखो 'भुजाळ' (अल्पा, रू भे)

भूटकी—स० पु० [अनु०] वहुक छूटने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

उ०—पछै राजाजी जोस मे हुकम दियो के इस बघियोड नार नै भठै ई भूत न्हाको । हुकम मिलण रै समचै श्रेकण सागै चाळीस वट्का रा भूटका विह्या ।—फुलवाढी

भूटान-स० पु०—नेपाल के पास का एक प्रदेश ।

रू० भे०—भुटत ।

भूडड, भूडडह—देखो भुजडड' (रू भे )

उ०—१ घमळी वापूकारियो, वाळी है बलिवड । घुरि माथी घुरै नही, भरि ओढै भूडड ।—गु रू व

उ०—२ दावै लागी जमी घणा हिंये दूखिया दायणा दूठ, प्रवाडा अचूकिया ले भूडडां पाडीस । 'जुवारी' भोपाळ 'डूगी' दुहत्या भूखिया जगा, सेखा चाळी दूकिया विहत्या गौरां सीस ।

—सकरदान सामोर

उ०—३ छडाळा ऊपाडि चाडि जैसिध रा भडा छाती भूडडा वजाडि यू घपाडि चडा भाव । पाडि झडां छाकिया घूमाडि जाडा थडा पूर, राडि जीतो भाडि खडा घाडि मारू-राव ।

—राजा वखतमिध री गीत

उ०—४ खिम कूत अदभूत, भडा वाका भूडडै । वादळ वादळ वळकि, वीज लत्ता ब्रह्मडै —गु रू व

उ०—५ ताम भीम' ऊठियो, खाग घुरै भूडडह । जहं पाउ पायाळ, अडै मत्थो ब्रह्मडह ।—गु रू व

उ०—६ पडियाळग पडे प्रिसेण पीध, 'सुरजन्न' समोन्नम मानसिध ।

ओढै भूडड ब्रह्मड ओट, 'चापावत' गुडै गयद चोट ।—गु रू व

भूडोल—देखो 'भूकप ।

भूडो-स० पु०—वालू रेत का टीला ।

भूण-स० पु०—१ जल भ्रमण, जल विहार ।

[स० भूण] २ गर्भस्थ शिशु ।

३ देखो 'भूण' (रू भे )

उ०—१ खूटा खडा, वळा डूचिया, हाला सू हळ ठाटिया । सिर-घर अर सैतीर साळा, खूड भूण थग पाटिया ।—दसदेव

उ०—वाचै विडद अरट री पनडी, भूण गिडगिडी गाजै । गोफण रा सरणाटा आगै, तोप वट्का लाजै ।—चेतमानखा

भूणकमळो—देखो 'भूणकमळी' (रू भे )

भूणहत्या-स० स्त्री० [स० भूण. + हत्या] गर्भस्थ शिशु को गर्भ-पात द्वारा गिरवा देना ।

भूणियो—देखो 'भूण' (अल्पा, रू भे )

भूत-स० पु० [स०] १ दार्शनिक दृष्टि से वे मुख्य तत्व या उपकरण जिनसे सृष्टि की रचना हुई है । द्रव्य, महाभूत ।

वि० वि०—दार्शनिको ने पांच मूल भूत माने हैं जो इस प्रकार हैं—आकाश, पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि । परंतु आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार ये मूल भूत नहीं हैं क्योंकि ये भी कई मूल भूत द्रव्यों के संयोग से बने हैं ।

२ जीव, प्राणी ।

उ०—आपी पै हूता सो तू आप, विसभर भूत-सरख बियाप । सवै कुछ जागा बंठी साह, मिनक्खा देवा नागा मांह ।—ह र

३ सृष्टि का कोई जड या चेतन पदार्थ ।

४ वीर भद्र ।

उ०—जाजुळी धाराळ नारसिध री सटा री जायी, प्रळैकाळ घटा री छटा री जायी पूत । रिमा घु उथाळी चढी रीस री रटा री जायी, भाळी किना ईस री जटा री जायी भूत ।

—कविराजा सूरजमल्ल मीसण

५ भूगु ऋषि का पुत्र, एक महर्षि का नाम ।

६ एक हैहयवंशीय राजा ।

७ भागवत के अनुसार वसुदेव एवं पौरवी का पुत्र एक यादव राजा ।

८ मृत शरीर, शव ।

९ रुद्र द्वारा सती के उदर से उत्पन्न पिंगल, सनिपग, कपर्दी तथा नील लोहित वर्ण वाले प्राणी, एक प्राचीन भारतीय मानव जाति का समूह ।

वि० वि०—शिव को भूतनाथ इसी लिए कहा है ।

उ०—कजाकणि डाकणि काळि कळेज, जिमावत साकणि बूह अजेज । जुडावळी नूतत भूत पिसाच, अछै रण ताळ पखाळत आच ।—मे म

(स्त्री० भूतण, भूतणी) १० लोक व्यवहार में किसी मृत शरीर की आत्मा जिसे मोक्ष प्राप्त नहीं हुई हो, प्रेत, शैतान, जिन ।

उ०—१ नंखा रा सोगन करै, भं मानै सुण भूत । रामत ठूला री रमै राडोली रा पूत ।—बा दा

उ०—२ हाजी रा इण मकान मे उणुरी मोट्यार बेटी अर वह जिणारै हाथा री मेदी ही को उतरी ही नी मर गया और दोनू अगति जाय नं भूत बूह्या ।—रातवासी

उ०—३ पांणि मितरै, पावै, आकडे में लोटो दुळावै, भूतणी काहें जमी मे वूरै जिद जरू करै, खेजडे मे कीलै ।—दसदोख

क्रि० प्र०—आणो, उतरणो, काढणो, चढणो, निकालणो, लागणो ।

वि० वि०—लोक मान्यता के अनुसार जिस मृत व्यक्ति की मोक्ष नहीं होती वह भूत बन जाता है और उसका यह रूप कभी २ लोगों को दिखाई भी देता है और अनेक प्रकार के उपद्रव भी करता है । यह भी माना जाता है कि कभी २ यह किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश करके उसके मस्तिष्क पर पूर्ण अधिकार कर लेता है और उसके होशहवाश बिगाड देता है जिससे वह बकने लगता है और पागलो की सी हरकतें करने लग जाता है ।

मुहा०—१ भूत उतरणो=प्रावेश समाप्त होना । २ भूत चढणो, भूतसवार होणो=प्रावेश में आना, किसी धुन का सवार होना । ३ भूत मरै नै पलीत जागै=नया विघ्न उत्पन्न होना । ४ भूत

यणणी=भस्मीभूत होना, शरीर मूल युक्त होना, किसी कार्य करने के लिए पागलो की तरह पीछे पडना, दत्तात्रि से किसी कार्य में लगना । ५ भूत जगणों=ताम्रिक साधना द्वारा द्मशानो में भूतो को बुलाना । ६ भूत लागणो=किसी को भूतादि बाहरी माया का असर हो जाना ।

१० बीता हुआ समय या जमाना ।

उ०—अकाल ग्यानदरसी निज ब्रम कू पहिचान । भूत, भवरत, वरतमान जुगति सों जाँगै ।—सू प्र

११ व्याकरणों के अनुसार तीन कालों में से एक जो व्यतीत घटना का सूचक होता है ।

ज्यू—मैं उठे काल गयो हो ।

१२ राक्षस, असुर ।

१३ पाच की संख्या । ५

वि०—१ जो घटित हो चुका हो, बीता हुआ ।

२ जो किसी विशिष्ट अवस्था या रूप को प्राप्त हो चुका हो ।

ज्यू—भस्मीभूत ।

३ जो अस्तित्व में आ चुका हो, बना हुआ ।

४ समय के अनुसार व्यतीत हुआ हुआ, पुराना ।

ज्यू—भूतपूर्व मन्त्री, भूतकाल ।

रू० भे०—भूतक ।

अल्पा०—भूतडियो, भूतडी ।

भूतअतक—स० पु० [स०] यमराज, घर्मराज ।

भूतआत्मक—वि० [स०] पच तत्वों का बना हुआ शरीर ।

भूतआवास—स० पु० [स० भूतआवास] शिव ।

भूतक—स० पु० [स०] १ पुराणानुसार सुमेरु पर के २१ लोकों में से एक ।

२ देखो 'भूत' (रू भे)

भूतकला—स० स्त्री० [स० भूतकला] पचभूतो को उत्पन्न करने वाली एक प्रकार की शक्ति ।

भूतकाल—स० पु०—विता हुआ समय ।

भूतकालिक—वि० [स० भूतकालिक] जो बीते हुए समय में हुआ हो या उससे संबंध रखता हो, भूतकाल संबंधी ।

भूतकालिककृत स० पु० [स० भूतकालिक कृत] क्रिया से बना हुआ भूतकाल सूचक विशेषण रूप ।

भूतकृत—स० पु० [स० भूतकृत] क्रिया का वह रूप जिस से यह सूचित होता हो कि क्रिया भूतकाल में समाप्त या पूरी हो चुकी है (व्याकरण)

ज्यू—आणी क्रिया का भूत कृत 'आयी' है । पढणों क्रिया का भूतकृत पडियो है ।

भूतखानो—स० पु० [स० भूत+फा० खाना=घर] बहुत मैला कुचला या

अधरे वाला स्थान जिसे देखने से भूतो के आवाज का सा आभास होता है ।

भूतगण—स० पु० [स०] शिव के अनुचरो का समूह ।

भूतघ्न—स० पु० [स०] १ ऊट ।

२ भोजपत्र ।

३ लहसुन ।

रू० भे०—भूतहन ।

भूतडियो—स० पु०—१ एक प्रकार का रंग विद्योप का घोडा ।

उ०—हरणा मेघ बागल बोदळिया, भूतडिया मलीया भलीया ।

अट आरीयै सम बादलिया द्म, मारचीया पटीया मलीय ।

—किसनजी घघवाडियो

२ देखो 'भूत' (अल्पा, रू भे)

भूतडी—देखो 'भूत' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ डाकण साकण भूतडा ए, यक्ष राक्षस महाघोर के । दयावत ऊपरे ए, केहनी न चाले जोर ए ।—जयवाणी

उ०—२ कूमर चलयो सामी जवे, काढी खडग मूख बोल वै । बल समाय रे भूतडा, मारु वाजत डोल वै ।—रिसालू री वारता

भूतचतुरदसी—स० स्त्री० [स० भूतचतुर्दशी] कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी ।

भूतचारी—स० पु० [स०] शिव, महादेव ।

भूतजग—स० पु० यो० [स० भूतयज्ञ] १ वह यज्ञ जिसमें भूत व पिशाचों को बलि दी जाय ।

२ गृहस्थ के लिए पच यज्ञों में से एक यज्ञ जिसमें वह समस्त जीवों को आहुति देता है ।

भूतजून, भूतजोणी—स० स्त्री० [स० भूतयोनि] १ प्रेतयोनि ।

२ परमेश्वर ।

भूतदमन—स० पु०—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक । (व व.)

भूतधाम—स० पु० यो० [स० भूत+धामन] १ द्मशान भूमि, मरघट ।

२ पुराणानुसार इन्द्र का एक पुत्र ।

भूतनाथ—स० पु० [स०] शिव, महादेव । (डि को)

उ०—साली सोमाडा सोयणा आली भाण री कयोठी सोहै, दकानी काळ री मरवाण री डचाक । विलावा पाण री दूत नाथ री हाक वाळी, भाली लीराण री भूतनाथ री भचाक ।

—सुरजमल्ल मीसण

भूतनायक—स० पु० [स०] महादेव, शिव ।

भूतनायिका, भूतनायिका—स० स्त्री० [स० भूतनायिका] दुर्गा, देवी ।

भूतप—देखो 'भूतपति' (रू भे)

उ०—पती-सीत भूतप परकासी, वासी सिव उर वास वैसेस ।

आपी तसां लक आसत अत, नरा सत्र हण नमी नरेस ।—र. ज. प्र.

भूतपक्ष, भूतपक्ष—स० पु० [स० भूतपक्ष] कृष्ण-पक्ष ।

भूतपत, भूतपति-स० पु० यो० [स० भूत+पति] १ शिव, महादेव ।  
(डि को)

२ ईश्वर ।

रू० भे०—भूतप, भूतापति ।

भूतपाळ-स० पु० यो० [स० भूत+पालनम्] १ प्राणियो का पालन करने वाला, विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

भूतपूज, भूतपूज-स० स्त्री० [भूतपूजिमा] आश्विन मास की पूजिमा ।

भूतपूरव-वि० [स० भूत पूर्व] वर्तमान से पहले का ।

भूतभायखा—देखो 'भूतभासा' (रू भे)

भूतभावन-स० पु० [स० भूतभावन] १ परब्रह्म ।

२ विष्णु ।

भूतभासा-स० स्त्री० यो० [स० भूतभापा] एक प्रकार की प्राकृत भाषा, पेशाची भाषा ।

रू० भे०—भूतभायखा ।

भूतमिङ्ग-वि०—मस्त, उन्मत्त ।

भूतभैरव-स० पु० [स०] भैरव की एक मूर्ति का नाम ।

भूतम-स० पु० [स० भूतमम्] स्वर्ण, सुवर्ण, सोना । (डि को)

भूतमात्रा-स० स्त्री० [स०] साख्य के अनुसार पचभूत का आदि, अमिथ एव सूक्ष्म रूप । ये पाच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ।

भूतराज, भूतराट-सं० पु० यो० [स० भूत+राट्] शिव, महादेव ।

उ०—चढी छाक ले आंमखा गूद कोण चीलां रजां चले । धू काज दाकले गणा भूतराट धीग । पैराक चमुरां केक ऐराक छाक ले पूरी । साकुरां हाकले उमी वेळा उदैसीग ।

—उदैसिध चहुवाण रौ गीत

भूतळ, भूतळि, भूतलि-स० पु० [स० भूतल] १ पृथ्वी, घरातल ।

उ०—१ मदायण तो माग, पग देतां पुरखा तणा भूतळ । जागे भाग, अघ भागें खिण एक में ।—बा दा

उ०—२ हेरै हरियाळी भूतळ हरखाती, गहरो ऊचे गळ हरियाळी गाती । धिन घण छकि जाती छाती लख छाती, जाभर भण-काती जाती मदमाती ।—ऊ का

उ०—३ ऊपरिषा पूतार विछूटड, भूतळि भाजइ पाउ । वाढी सूढि ढोलीइ ढाचा, घरिण वलइ नीहाउ —कां दे प्र

२ ससार, दुनिया ।

३ भूमि तल, पाताल ।

भूतळेस-स० पु० [स० भूतल+ईश] शिव, महादेव ।

उ०—मैमता विभाड रथी प्राहां रगा भाराय में, महा बकी वार पांव अचल्लां मांडीस । वार वार भूतळेस लै रुडहार भार बणै, प्रधीनाथ जही वार झाटक पांडीस ।—भगत राम हाडा रौ गीत

भूतवास-स० पु० [स० भूतवास] १ शिव, महादेव ।

२ विष्णु ।

३ भूतो का निवास स्थान, श्मशान भूमि ।

भूतवाहन-स० पु० [स०] शिव, महादेव ।

वि०—भूतो पर सवारी करने वाला ।

भूतविद्या-स० स्त्री० [स०] भूत-प्रेतो को बुलाने, बात करने एवं दूर करने की विद्या ।

भूतहन—देखो 'भूतघ्न' (१) (रू. भे) (डि को.)

भूताण-स० पु०—१ देखो 'भाथी' (रू भे)

उ०—जीण परवर असि जडै, जडै असुरा जरदाळा । कसि जमदढ खग कसै, कसै भूताण कराळा ।—सू प्र

२ देखो 'भूत' (मह, रू भे)

भूतापति—देखो 'भूतपति' (रू भे) (डि को)

भूतात्मा-स० पु० यो० [स० भूत+आत्मा] १ शरीर ।

२ जीवात्मा ।

२ शिव, महादेव ।

४ परमेश्वर ।

भूताधिपति-स० पु० यो० [स० भूत+अधिपति] महादेव, शिव ।

भूतापि-स० पु०—परमेश्वर ।

भूतायत-स० पु०—शिव महादेव ।

उ०—पाळवा ज्वाळा तु प्रकास, भूतायत भैरव तुही म्यास । सीको तरसो मया तू सघीर, वेंता मास पावी कटवीर ।—रामदान लाळस

भूतार-स० पु० [स०] भूमि का उद्धार करने वाला, ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—सुरां रूप अमूप ससार साधार, भुजां भाभण तास दातार भूतार । गहगीर गोविंद गोपाळ गभीर, हरी नाम विच्चारि उच्चारि 'हमीर' ।—पि प्र

भूतारण—देखो 'भाथी' (मह, रू भे)

उ०—भूतारण मिडिया पूरजें ग्रीधण पक्खा । नडा भीड नायका दीघ टकार धनखां ।—पा प्र.

२ भूत-प्रेत ।

[स० भू+तारण] भूमि का उद्धार करने वाल, परमेश्वर ।

भूतावळ, भूतावळि, भूतावळी-स० पु० यो० [स० भूत+अवलि] १ भूत-प्रेतो का समूह, प्रेत-मण्डली ।

उ०—जिण री वडै जोस मे, भूतावळ भेटो । कुण जाणै वावै कवण, पावै कुण पेटो ।—वी मा

२ कपोल कल्पित कथाए, कृहापथियों की गोष्टी ।

उ०—भागवत कथा भूतावळी, हिरण दरस हींढोरचा । परवीण होय जाणै पुरुस, मालजादा रा मोरचा ।—ऊ का

भूतावास-स० पु०—१ ससार, जगत ।

२ शरीर, देह ।

३ विष्णु ।

४ बहेडा । (डि को )

भूति-स० पु० [स०] १ शिव । २ विष्णु ।

३ पितृगण ।

४ बृहस्पति ।

५ विश्वमित्र का एक पुत्र ।

६ अगिरस् ऋषि का एक पुत्र, जो अत्यन्त क्रूर एवं क्रोधी था ।

७ एक यादव राजा जो वायु पुराण के अनुसार सात्यकि के पुत्रों में से एक था ।

८ राजा का एक मंत्री ।

९ ऐश्वर्य, वैभव ।

१० धन सम्पत्ति ।

११ सोभाग्य ।

१२ जन्म, उत्पत्ति ।

१३ घटित होने की दशा या भाव, अस्तित्व ।

१४ गौरव, महिमा ।

१५ वृद्धि ।

१६ अधिकता, बाहुल्यता ।

१७ वृद्धि नाम की श्रौषधि ।

१८ अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ ।

१९ भूतृण ।

२० सत्ता ।

२१ लक्ष्मी ।

२२ मुक्ति, मोक्ष ।

२३ रगो आदि से हाथी के मस्तक पर बनाए जाने वाले वेल-वृटे ।

२४ पकाया हुआ मांस ।

२५ रुसा नामक घास ।

[सं० भू०] २६ सत्य । (ह ना. मा)

भूतियो-स० पु०—मदार (आक) के फल के अन्दर का रूई जैसा पदार्थ ।

मुहा०—भूतिया विकेरणा=नाश करना, मिटा देना, नष्ट करना ।

रू० भे०—भूतियो ।

भूती—देखो 'भूति' (रू. भे)

उ०—चाल मजवूत ढग ढाल मजवूत कीनें, भाल मजवूत मजवूत भयो भूती मे ।—ऊ का

भूतेलियो—देखो 'व्यूह' (रू. भे)

भूतेस, भूतेसर-स० पु० [सं० भूत+ईश, ईश्वर] १ शिव, महादेव ।

(ना डि को, ह नां. मा)

उ०—१ करे तै (अण) दूक भूतेस को डड, वेटी दसरत्थ तरुो वळवड । आयो रिख कोप सवत अगार, तज वळ चाप कियो दुज तार ।—ह र

उ०—२ रिखय मख कर रखवाळ, तारी रिख घरण चरण रज हूता । राख जनक पण रघुवर, भागी कोदड भूतेस ।—र. ज प्र

उ०—३ दधि भ्रजाद वळि सेख, नाग भूतेस भलपण । रूप काम आरभ रांम, सर विद्या अरजण ।—गु रू व.

उ०—४ भारत अरिहीण करा भूतेसर, हारा नही कर लै हर होड । आच कियो समापति आर्ग, कर मे कर दीवी कर कोड ।

—मोहवत वारहूठ

उ०—५ हाय चलाय दिखणाद दळ हणिया, ऊकणिया खत्रवट अण पार । भणिया दे माथी भूतेसर, 'दुरजणिया' मोटा दातार ।

—दुरजणसिंह भाटी रो गीत

२ परमेश्वर, ब्रह्मा ।

३ स्वामी कार्तिकेय ।

रू० भे०—भूतेस ।

भूतेसरी-स० स्त्री० [स० भूतेसरी] पार्वती ।

२ दुर्गा देवी ।

भूतेसुरय, भूतेस्वर-स० पु० [स० भूतेसुर] शिव, महादेव ।

उ०—भूतेस्वर भुयतलि खर, हरिस्चंद्र हरिकेत । वद्धरणी-विचि थई जतां, सरगि सघावइ प्रेत ।—मा का प्र

उ०—२ यडलू पहाडो रो गुफा में भूतेस्वर विराजै है, नंदवाणा ग्रामण सेवा करै है ।—वा दा ख्या

भूती-वि० [स० भूत] हुवा हुआ ।

उ०—एक यात्री दूसरे नू कही—भाई ! घण्णी-घण्णी जायगा देखी पण एक क्षणयाकर नाम परवत पर एक तपस्वी दीठी । उसडो कही न भूती न भविस्यति ।—सिधायण वत्तीसी

भूतीन्माद-स० पु० यी० [स०] भूत पिशाचो के आक्रमण के कारण होने वाला उन्माद रोग । (वैद्यक)

भूथड, भूथाण, भूथारण—देखो 'माथी' (मह, रू. भे)

उ०—१ तरं तरगस तीन भूथड लीना, कवाण तीन अढारटकी लीवी, तरवार दोय, कटारी एक, सिलहै सावत होय घोडे पाखर लगाय सिकारपुर साम्हा माह्या ।—वी दे.

उ०—२ चित्रहकूट सू भुज चड, कस भूथाण गह कोमड । पिरभू किता बासर पाय, अत्रय तरुँ आश्रम आया ।—रू

उ०—३ वुगलार भीड वाडो वहसि, जमदख खग साजा जकडि ।

भूथाण कसि भुह मूछ भिडि, पाण पाण साकळ पकडि ।—सू प्र.

उ०—४ बीज बचा बाणिकां, भरै तीरा भूथारण । खर जमदख खग खरा, दुगम बाघे भड दारण ।—सू प्र

उ०—५ दुजल छतीसुहि डाविया, भूथारण भेडीह । धनुस भुजा

डड धारिया, आया आहेडीह ।—पा प्र

उ०—६ सादी वाधी सम्मसेर, मच्छरियो माभी मेर । ताण सीग

निभं तरु, भेडावियो भूथारण ।—गु. रू व

भूवड—देखो 'भुजड' (रू. भे)

स० पु०—वीर, योद्धा ।

भूदाग—देखो भूईदाग' (रू भे )

भूदार, भूदारक—स० पु० [स० भूदार ] सूअर, वाराह ।

(अ मा , डि को , ह ना मा )

रू० भे०—भूदार ।

भूवेव, भूवेवत—स० पु० [स० भूदेव ] १ ब्राह्मण ।

उ०—१ वस्या किण वाहालि करी, भूमहली भूदेव । कोडि कोटिध्वज क्षय गया, करता वस्या-सेव ।—मा का प्र

उ०—२ वली प्रभाति पधारिया, महादेव नी सेव । ततखिणि तै तेडाविउ, भेटि-मणी भूदेव ।—मा कां प्र

२ राजा ।

भूधर—स० पु० [स० भूधर ] १ पहाड, पर्वत ।

(अ मा , ना मा , ह ना मा )

उ०—मुरधर रा भूधर कहीजै, ललवळिया लुळ लैरडा । जाणै किसडी वाय लागी, घोर घसै सै सैरडां ।—दसदेव

२ परमेश्वर । (ना मा , ह ना मा )

उ०—भूधर तूही हारिया भीरु, आपण तूही अनाया नाथ । केसव तूही साथ कुसाया, सायव तूही न साथ साथ ।—घोषो आढो ३ विष्णु ।

उ०—राज तणी इच्छा रघुराया, अखिल चराचर जीव उपाया । राज अग्या म्हारे सिर राखिस, मूधर तूभ तणा गुण भाखिस ।

—ह र

४ श्रीकृष्ण ।

उ०—भूधर किसी भलावणी नइ, विष्णु बाचा किम चलइ । गज गुदीय तुरीय पलाणि चाल्या, कुअरि चालइ नइ माता मिलिइ ए ।

—रुमणी मगळ

५ वाराह अवतार ।

६ शेष नाग ।

७ राजा, नृप ।

८ शिव ।

९ बल, वृषभ । (डि को )

१० किसी पात्र मे पारा रखकर उसका मुह मिट्टी से धन्द करके औषध तैयार करने का एक ढंग ।

११ सात की सख्या । \*

रू० भे०—भूध ।

अल्पा०—भूधरी ।

भूधरघणी—स० पु० यी० [स० भू+धर+राज० घणी] विष्णु ।

उ०—रामचद्र करसी रुडा, सगळी विध स्त्रीरग । भगता-पत भूधर-घणी, चाढण रूप सुचग ।—ह र

भूधरेस्वर—स० पु० यी० [स० भू+धर+ईश्वर] १ पर्वतो का राजा, हिमालय ।

२ शिव ।

३ राजा ।

४ इन्द्र ।

भूधरी—देखो 'भूधर' (अल्पा , रू भे )

उ०—भख पुहचावै भूधरी, अजगर रै अनय्यास । किम भूलै सता 'किसन', सभरता सुख रास ।—र. ज. प्र

भूधाता—स० पु० [स० भूधातृ] ब्रह्मा । (नां. मा )

भूध—देखो 'भूधर' (रू भे )

भूनणी, भूनवो—देखो 'भूजणी, भूजवो' (रू भे )

भूनणहार, हारी (हारी), भूनणियो—वि० ।

भूनिओडो, भूनियोडो, भून्योडो—भू० का० कृ० ।

भूनीजणी, भूनीजवो—कर्म वा० ।

भूनेता—स० पु० [स० भूनेतृ] राजा, नृप ।

भूप—स० पु० [स० भूप +ज] राजा, नृप ।

(अ मा , डि को , ह ना मा )

उ०—वणाधिप भूप मरी उण वार, भुजग न भालि सक्थो भुव भार । भेळी हिज आवढ बाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप ।

—मे. म.

२ राजकुमार ।

रू० भे०—भूप, भूपम ।

भूपग—देखो 'भूप' (रू भे ) (डि को )

भूपज—स० पु० [स०] राजा, नृप ।

उ०—अवर अमीर भूपजा आगळि, करै सिलाम दहू जोडे कर । सयदा विदा किया गज सिक्का, घर अन लीघ न लीघ मुरद्धर ।

—सू. प्र

भूपत, भूपति, भूपती—स० पु० यी० [स० भू+पति] राजा, नृप ।

(डि को , ह ना मा )

उ०—१ बाघ हत भाखै ईम बाघणी, अजका हुआ तजी गिर अण । भाला अवस चकासै भूपत, रात दोह न गिरौ 'रामेण' ।

—महाराव राजा रामसिध री गीत

उ०—२ वडे वडे भूपत सहत, अन जुरत दरवार । बाहर ठाढे वाज गज, सोभत अधिक अपार ।—गजउद्धार

उ०—३ खमा भणि जोगणि खाचत खून, सुरा कर माचत मेह प्रसून । भखध्वज भूपति दोयण भूळ, त्रलोयण लोयण रूप असूळ ।

—मे म

उ०—४ भूपति टोटा मे दीवाळा भिलिया, मोटा मोटा रा कुळ भुगता भिलिया । वावै गाठडिया वडिया चग वाळै, राली गूदह लै कावै पर राळै ।—ऊ का

२ मेघ राग का पुत्र एक राग । (सगीत)

३ ईश्वर ।

४ शिव, महादेव ।

५ इन्द्र ।



६ एक सनातन विश्व देव ।

७ मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम ।

रू० भे०—भुअपत्तिअ, भुपति, भुवपत, भुवपति, भुवपती, भुवपत्त, भुवपत्ती, भूअपति, भूअपती, भूअपत्ती, भोपति ।

भूपवन-स० पु० यो० [स० भूप+वन] सिंह, शेर । (हिं को)

भूपाण, भूपाळ, भूपालि-स० पु० [स० भू+पाल] राजा, नृप । (हिं को)

उ०—१ खीच रा डला खावै खिसक, नीच तळा कुळ नाळ रा ।  
नित मीच आख वंटे निलज, भिछ अमल भूपाळ रा ।—ऊ का

उ०—२ तइ दिख राजा तणइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुवर सिरदार । नव खड रा भूपाळ नमइ जिण, परग्रह लहइ तिणण कुण पार ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ असटम पुत्र पुज अप वालो, वासदेव भूपाळ वडाळो । पाट भगत अप अतर पाखै, राजा घरमवभ हित राखै ।—सू प्र

उ०—४ निसुग्री एह वात भूपालि, कालमुहव हुउ ततकाल । नयर माहि हुउ हाहाकार, कोई काई न लहइ पार ।

—हीराणुद सूरि

रू० भे०—भुआळ, भुपाळ, भुयाळ, भुवपाळ, भुवाळ, भूआळ, भूवाळ, भोपाळ, भोवाळ, भोपाळ, भोवाळ ।

भूपाळी-स० स्त्री० [स० भूपाली] सगीत मे एक रागिनि विशेष ।

भूपुत्र-स० पु० [स० भूपुत्र ] १ नरकासुर नामक राक्षस ।

२ मगल-ग्रह ।

भूपुत्री-स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी ।

भूफोड-स० पु०—वर्षा ऋतु में उगने वाली एक प्रकार की वनस्पति ।

रू० भे०—भफोड, भँफोड ।

भूवळ, भूवळि-स० पु० [स० भू+वल] वीर, योद्धा ।

उ०—१ अर डगा आराण कठीरव कुजगा, पूजै कुण पीठाण प्रपोता पुजरा । दरियावा दा दोर भिलै नह दूवळा, भगा भवस सभीत भिडता भूवळां ।—किसोरदान वारहूठ

उ०—२ सत्रा गाहती गै'जूहां ढाहती वाहती सार, मह चढी भूवळा साहती आसमाण । चत्रवाहा आरोहती चाहती अचूडा चीज, ऊ आयो 'जवानीसिध' याहती आराण ।

—जवानीसिध री गीत

उ०—३ वहै राह भाळै सूचा निसारा आज री वेला, धूकळां आज री छटा भूवळा घारीक । वाना बघ जोरावर साज री वदेता वोलै, तणा 'पदमेस भूरा राज री तारीफ ।—गोरादान आसियो

उ०—४ आरुहता भगदत्त, अस्सि रागा चाडतो । गै'जूहा गोडतो, खग भूवळि भाडतो ।—गु. रू व

२ राजा, नरेश ।

भूवावळी, भूवावळी—देखो 'मुईवावळी' (रू भे)

भूभट-स० पु० [स०] १ वीर, योद्धा ।

२ राजा नृप ।

भूभरता-स० पु० [स० भू+भर्तृ] राजा, नृप । (अ मा)

भूभळ-स० स्त्री०—गर्भ राख या धूल ।

भूभळिया-स० पु०—पडिहार वक्ष की एक शाखा ।

भूभळियो—१ देखो 'भूमळी' ।

उ०—भसै खसै निहसै रिसै, पोरस दाखै पाण । आभ लगै जळ ऊछळै, तै भूभळियो भाण ।—गजउद्धार

२ देखो 'विभळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—भूभळिया नैणा की, अमरत सा वैणा की । मेह कौ ममोलो, वादळा की बीज, होळी की भाळ, सामण की तीज ।

—मयाराम दरजी री वात

भूभळी-वि० [स्त्री० भूमळी] १ धुवला ।

२ धूलिधूसर ।

भूभारधर-स० पु० [स०] शेष नाग । (अ मा)

भूभूआटि, भूभूयाटि-स० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष ।

उ०—१ भेरी भाकारि, भूगल तणै भूभूआटि भूम फाढी, नीमढ्या नीसाण नै नादि नदी निरभर प्रतिनाद नीपना ।—व स

उ०—२ वीर अदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, ग्रहग्रहतै अवक तणै ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टलटालउ, भेरी भूगल तणै भूभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी, काहल तणै कोलाहलि कान कमकम्या ।—व स

भूभो-वि०—भयकर, भयावह ।

उ०—भटकै क्रोध भाळ धुवि भूभो । अरक उठै थाभै रथ ऊभो ।  
—सू प्र

भूभ्रत-स० पु० [स० भूमृत] १ राजा, नृप । (अ. मा)

२ इन्द्र का हाथी । (ना मा)

३ पहाड, पर्वत ।

रू० भे०—भूभ्रत ।

भूमग—देखो 'भुजग' (१) (रू भे)

भूमड, भूमडळ-स० पु०—१ पृथ्वी, धरती । (हिं को)

उ०—१ सारी स्रस्टि मे कुडल छळ करियो, भारी हाहा रव भूमडळ भरियो । वसुधा काळी री ताळी तड वागी, भिडिया सोना री चिडिया पड भागी ।—ऊ का

उ०—२ भूमडळ असुर खळ कई कीवा भसम, विसम गति आणि केवाणि वागै । एकजि त्रिपुर जैसिध उवारिणै ऊवरै, अकळ माहेस 'वखतेस' आगै ।—कीरतदान वारहूठ

रू० भे०—भूमड, भूमडळ, भुवमड ।

भूम—१ ज्ञान ।

२ भूमि, दिशा, जगल ।



३ देखो 'भूमि' (रू भे) (हि को)

उ०—१ जितरै दलै चाकर नू कह्यो—म्हारो पेट कसमसै । तरै कहियो—'वाहिर भूम चालो' ।—नैणमी

उ०—२ विखमी भूम रात रो बासी, पथी राह न पायो । अबली ठीठ ग्राम पण अळगी, अब किरणा दिन आयो ।—भीखजी रतनू

उ०—३ तपै भूम अम्मर हुय ताता, मुरझाई भगती पितु माता । बागी भाट पिछम दिस बाता, वक हुवो सब देस विवाता ।—ऊ का

उ०—४ साजै सार छत्रीस सिपाई, तयार हुवा रण मडण ताई । पाखर तुरा गयदा पाखर, भूम परा सम जाणै भाखर ।—रा रू

उ०—५ लछी रूप हरि भगति, घरस हिंदू धानतर । वेद चद्र मिए किया, भूम रभा बळ कुजर । घेन पूज सुर घेन, विमधु चरणा अत वदा । धनुष माण त्रप कलप, सव जस मह विरदा ।—रा रू

उ०—६ भव ब्रह्मा जिए भजै, भजै तिण नाम पाप भर । भर टाळण सह भूम, भूम-पतन की जेण सर ।—र ज प्र

४ होश ।

५ अक्ल, बुद्धि ।

६ दक्षता, चतुराई ।

७ मोन ।

भूमणौ, भूमवौ—क्रि० अ०—अमण करना, घूमना ।

भूमणहार, हारो (हारो), भूमणियो—वि० ।

भूमिओढी, भूमियोढी, भूम्योढी—भू० का० कृ० ।

भूमोजणो, भूमोजवौ—कर्म वा० ।

भूमघा—स० पु० [स० भू+मध्य] अधेरा । (अ मा)

भूमवाव—स० पु०—छोटे राजपूत जागीरदारो व भू स्वामियो मे वसूल किया जाने वाला एक सरकारी कर ।

भूमय—सं० स्त्री० [स० भूमयट्] सूर्य की पत्नी, छाया ।

वि०—मिट्टी से बना हुआ ।

भूमविहार—स० स्त्री०—नदी, सरिता । (अ मा)

भूमि—स० स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, अवनि । (ह ना मा)

उ०—वाघ सीह गज द्रैठि पडइ सतीय सयरि ते नवि आभिडइ । राति पडती पडव रडइ वलि वलि मूछी भूमि पडइ ।—प प च २ स्थान, जगह ।

३ पृथ्वी का वह तल या पृष्ठ भाग जिस पर प्रकृति के जीव चरा-चर विचरते हैं ।

४ वह भू-भाग जिस पर किसी का सत्व हो ।

५ ऐसी जमीन जिस पर खेती-बाड़ी होती हो ।

६ प्रदेश या प्रान्त ।

७ आघार या जड़ ।

८ धन-सम्पत्ति या वैभव ।

९ जन्म स्थान ।

१० योग शास्त्र के अनुसार योगी को क्रमानुसार प्राप्त होने वाली अवस्थाए ।

११ फासला, दूरी ।

रू० भे०—भुइ, भुइण, भुई, भुय, भुही, भुइ, भुइ, भुइण, भुई, भुई, भुवि, भुम्मि, भुम्मी, भुय, भुवि, भुवी, भुहि, भूइ, भूइ भूम, भूमी, भूम्मी, भूही, भोम, भोमि, भोमी, भोय, भोम, भोमि, भोमी ।

भूमिकत—स० पु० यो० [स० भूमि+कत] राजा, नृप ।

उ०—अति बर्ध क्रीत दीरघ आव, सुजि हुवै जोग दारण सभाव ।

उच्छाह सदा राखै अनंत, कामणि जिम भुगतै भूमिकत ।—सू प्र

भूमिका—स० स्त्री० [स०] १ वह वक्तव्य या आलेख जो किसी ग्रन्थ या रचना के पूर्व दिया जाता है ।

२ मकान की मजिल ।

३ किसी महत्त्वपूर्ण बात का अभीष्ट परिणाम प्राप्त करने हेतु कही जाने वाली बात ।

मुहा०—भूमिका वाधणी—कुछ कहने से पहले प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ और बातें कहना ।

४ वेदान्त के अनुसार चित्त की पाच अवस्थाए—क्षिप्त, भूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और विरुद्ध ।

५ नाटक आदि मे किया जाने वाला अभिनय ।

६ इमशान भूमि ।

७ देखो 'भूमि' ।

रू० भे०—भोमका ।

भूमिगम—स० पु०—ऊट ।

भूमिचपौ—स० पु०—सफेद फूलो का एक पोधा विशेष जिसकी छाल, पत्ते, जड़ आदि औषध के काम आते हैं ।

भूमिचर—वि० [स०] भूमि पर विचरण करने वाला ।

उ०—जळचर खेचर भूमिचर, भोग करइ लयलीन । दैव दम्भाडइ देहडी, दुमि जणा अम्ह दीन ।—मा का प्र

भूमिज—स० पु० [स०] १ सोना, स्वर्ण ।

२ मगल ग्रह ।

३ नरकासुर राक्षस ।

वि०—भूमि से उत्पन्न ।

भूमिजा—स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी ।

भूमिजीवी—वि० [स०] भूमि जोत कर अपना निर्वाह करने वाला, कृषक, खेतीहर ।

भूमियभ—स० पु० यो० [स० भूमि+स्तम्भ] १ राजा, नृप ।

२ खंभा ।

भूमिवाग—देखो 'भुइवाग' (रू भे)

भूमिदेव—देखो 'भूदेव' (रू भे.)

भूमिपाळ—स० पु० [स० भूमिपाल] राजा, नृप ।

भूमिपुत्र-स० पु० [स०] १ नरकासुर राक्षस ।

२ मगल ग्रह ।

भूमिपुत्री-स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी ।

भूमियावट—देखो 'भोमियावट' (रू भे)

भूमियोडो—भू० का० कृ०—धूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ  
(स्थी० भूमियोडी)

भूमियो—देखो 'भोमियो' (रू भे)

उ०—१ इयै प्रस्तावि पातिसाह खीयकवर दिली राज करता  
वरस १६ सोळह हुआ छै । भूमिया सकळ दस दिसि रा आइ  
मिळिया छै ।—द वि.

उ०—२ तथा पछै कितरै हेक दिन अँ सोरठ नू गया । सेवूजासू  
कोस ४ सीहोर गाव छै, तठे जाय रह्या छै । रावळ कहाडै छै ।  
भला रजपूत भूमिया छै ।—नैणसी

भूमिसुत-स० पु० [स०] १ नरकासुर राक्षस ।

२ मगल ग्रह ।

भूमिसुता-स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी ।

भूमिसुर-स० पु० [स०] ब्राह्मण ।

भूमिद्र-स० पु० [स०] राजा, नृप ।

भूमी—देखो 'भूमि' (रू भे) (अ मा., नां मा)

भूमियाचारो—देखो 'भोमियाचारो' (रू भे)

उ०—सोजत रे दैम में रिणमलां रो आगे तो जोर दखल भूमिया-  
चारो थो, हिंमं हो छै ।—सोजत रे मडळ रो वात

भूमिरूह-स० पु० [स०] वृक्ष, पेड़ ।

भूमिलेप-स० पु० [स०] गोवर ।

भूमि—देखो 'भूमि' (रू भे)

भूयग—देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—१ कीयो मरदन घन सघळइ अग, पचजटा छइ सीरह  
भूयग—वो दे

उ०—२ विरह भूयगमि हु डसि, चदन-सगि भूयगि । अँ मन लहइ  
असिद्धि तणी, तै तिम लाईइ अगि ।—मा. का प्र

भूयगम, भूयगमि—देखो 'भुजगम' (रू भे)

उ०—माता तु प्रेमावती, पिता तु विदुरी विजोग । विरह  
भूयगम ऊपनु, गरुड न मानइ गोग ।—मा. का प्र

भूय-स० पु०—१ सिंह, शेर । (अ मा)

[स० भूयस्] २ बहुत, अधिक ।

[अव्य०] ३ फिर, पुन ।

उ०—धरा सुधेनु छूय छूय, दूय दूय धू धरै । क्रतू समान राजसूय,  
भूय-भूय भू करै —ऊ का

४ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—जँ आज ती किही वडै सगै मेहरवांनगी करी सो अळगी

भूय री नारेळ म्हानु अठै सांम्ही आयो ।

—कुवरसी साखला री वारता

भूयगाम-स० पु० यो० [स० भूत+ग्राम] १ भूतों का समुदाय ।

२ शरीर, देह ।

भूयच्छण-स०—पवन, हवा ।

भूयण-स० स्त्री०—१ पृथ्वी, भूमि । (डि को)

२ देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—सजे सिणगार सवि कामिनी, भूयण सिरि छज्जइ ठढी, के  
स्यामा के गौर, केह गुण गाहा पढी ।—प व चौ

भूयणतरि-कि० वि०—ससार मे ।

उ०—कौडि अनतइ ति रहिउ, भूयणतरि भरपूर । रनि वनि रक्षा  
करइ, भ्राति म आणिसि भूर ।—मा का प्र

भूयणपति—देखो 'भवनपति' (रू भे)

उ०—अवधि वली ! अन्नतलता, फोक थयां फल-फूल । सेठउ  
आविउ सन्दिनु कइ भूयणपति भूत ।—मा का प्र

भूयत्य—भूतार्थ । (जैन)

भूयवलि—देखो 'भुजवलि' (रू भे)

उ०—तिणि कुलि मुणीइ सतगु राओ, भूयवलि भजइ रिउ भडि-  
वाओ । दाणि जगु ऊरिगु करए ।—प प व

भूयाल—देखो 'भूपाळ' (रू भे)

उ०—दैव ! अह्य-प्रति लोभीउ, बीजा लील भूयाल । सुख सपति  
सुहणइ नही, भवसिद्धि भुइइ भालि ।—मा का प्र

भूर-स० पु० [स० भूरि] १ एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे शरीर  
पर भूरी २ महीन चित्तिया पड जाती हैं ।

२ भ्रम, सदेह ।

३ देखो 'भूरि' (रू भे) (अ मा., ह ना. मा)

उ०—१ सेन लागो सत सेवा, भाव धर उर भूर । रूप धर कर  
सैन को हरि, करी दुविधा दूर ।—मगतमाळ

उ०—२ साभ पढी आयमियो सूर, करइ साथ रा विछावणा  
भूर । ढोला पाखिली चढकी फिरइ, मारु स्त्री सु निद्रा करइ ।

—ढो मा

४ देखो 'भूरी' (मह. रू भे)

भूरइ—घुलि. घुल ।

उ०—इंद चद पमुख देव बीहना, हथिया जिम निनादि सीहना ।

पुछइद गडरी सवि वाली, भूरइ नगर ऊपरि चाली ।—सालिसूरि

भूरची, भूरछी—देखो 'भूरसी' (रू भे)

भूरज-स० स्त्री० यो० [स० भू+रज] १ पृथ्वी की घुलि गर्द, मिट्टी ।

२ देखो 'वुरज' (रू भे)

भूरजपत्र—देखो 'भोजपत्र' (रू भे) (डि को)

भूरजाळ—देखो 'वुरजाळ' (रू भे)

उ०—दगै तोफा वहे गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जो लार सकै सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ वाकडो बीटियो दूजा गढा मोळै, लोहा जाळ घसै केही नसैणी लगाय ।—वा दा

भूरटी—देखो 'भूरी' (अल्पा, रु भे)

उ०—भैस्यां चरावै, वो ती भूरटी, वो ती ल्यावै-ल्यावै घरा अे चराय, भैसा आरणा ।—लो गी.

(स्त्री० भूरटी)

भूरदक्षिणा—देखो 'भूरसी' ।

भूरदाडो—स० पु०—यवन, मुसलमान ।

उ०—ज्यान मढी वज्जर, भूरदाडा चव फेरा । भौह चढी मौसरा हाथ कड्डी समसेरा ।—सू प्र

भूरभूर—देखो 'भुरभुर' (रु भे)

उ०—चिरे वहिस्थ हस्थि कै चिकार चूर चूर ह्वै, भिगै भटाळि भाल मे, भिखार भूरभूर ह्वै ।—ऊ का

भूरसी—स० स्त्री० [स० भू+श्रि] १ किसी वडे यज्ञ, दान, विवाहादि की समाप्ति पर उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाने वाली दक्षिणा ।

२ किसी वडे खर्च के बाद किया जाने वाला छोटा खर्च ।

रु० भे०—भुरस, भुरमी, भूर, भूरची, भूरछी ।

भूरह—स० पु० [स० भूमि+रुह] वृक्ष, पेड़ ।

भूरि—स० पु० [स०] १ ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

३ शिव ।

४ भेंट, उपहार ।

५ दान ।

६ इन्द्र ।

७ स्वर्ण, सोना ।

८ वालु रेत ।

वि०—बहुत, अधिक प्रचुर ।

उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरड भड अणपार ए ।

मिटि जळण घरणि विनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए ।

—रा रु

रु० भे०—भूर, भूरी ।

भूरिक, भूरिज—स० स्त्री० [म०] पृथ्वी, अवनि ।

भूरिमायु—स० पु०—गोदड, सियार । (डि को)

भूरियो—देखो 'भूरी' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ ईया भवर री जानि मे म्हारो भूरियो न चरतो चारो रे ।

म्हारो गोरवद वळती कर ।—लो गी

उ०—२ कठोर काटकै छूटे सांकळा राटकै किनी, मेळे चमू थाट कै अरेहा सत्रा मीच । केवाण भाटकै बाळ भाडिया भूरिया केंवा, विभाडिया लाठ कै बूरिया घोरा बीच ।—सकरदांन सांमोर

उ०—३ चाळै लागा यळा घकी, बीचळा भटवकै चखा, भूल पेखै आवळा चौवळा दखै भोक । काळ रुपी सेखा हकै बाजिंद्रा वरा रा कोट, भैचकै भूरिया सिहा परा रा भूलोक ।

—डूगजी जवारजी री छावळी

(स्त्री० भूरी)

भूरिसरव—स० पु० [स० भूरिश्रवस्] १ कुरुवंशीय एक राजा, जिसका वध महाभारत युद्ध में सात्यकि द्वारा हुआ था ।

२ अगिरिस् ऋषि का एक शिष्य, जो अत्यन्त क्रोधी एवं क्रूर था ।

३ एक यादव राजा, जो वायु पुराण के अनुसार सात्यकि के पुत्रों में से एक था ।

४ मार्कंडेय पुराण में निर्दिष्ट पितरों का एक गण ।

भूरी—स० स्त्री०—भूरे रंग की भैंस ।

वि०—१ भूरे रंग की ।

उ०—एकली भूरी भोट दो गोविण्या भरै ।—फुलवाडी

२ देखो 'भूरि' (रु भे.)

भूरीगार—देखो 'बुरीगार' (रु भे)

भूरेचा—स० पु०—चौहान वंश के क्षत्रियों की एक शाखा ।

भूरेस—स० पु०—सिंह, शेर ।

उ०—रिमाखेसे लागो दीखे इद्र ज्यू जभ पे हठी, आहसी भाराथा ऊठो हणू ज्यू ओपाळ । छूटा बाण लाठा मदां पाण हू भूरेस छूटो, गोरा गजा माथै हठी सीघळी 'गोपाळ' ।—गुलाबसिंघ महद्द

भूरी—स० पु० [स० वभ्र] १ मिट्टी के समान रंग ।

२ सिंह, शेर ।

३ ऊट ।

उ०—छेवट ठाकर मून तोडघो अर बोल्यो—मन चगा तो कठोती मे गगा । खडो सेठां भूरा नै । अर भूरा नै खडता ईज वो आगला पग सू अ.खडम्यो ।—रातवासी

४ यूरोप का निवासी, यूरोपियन ।

५ एक कवूतर विशेष, जिसकी पीठ काली एवं पेट पर सफेद छींटे होते हैं ।

६ महीन चूर्ण, चुकनी ।

७ एक विशेष प्रकार का अमल ।

उ०—कोटही मे भात-भात रै अमला री गळणिया भरती ही—काळी, मेवती, भूरी, मरीडी, आगराई नै किसनागर अर मेडी ऊभा वाईसा रै हिये भात भात रै विचारा रा गोट ऊठता हा ।

—फुलवाडी

८ भूरे रंग का भैंसा ।

वि०—१ मिट्टी के समान रंग वाला, वभ्र ।

उ०—१ थळ भूरा वन भूखरा, नही सु चपउ जाइ । गुणे सुगवी म रवी, महकी सह वणराइ ।—ढो. मा

उ०—२ भूरा भुरजाळा अचुद भळहळिया, खाळा नद नाळा वाल्हा खळहळिया । अचनी आदोलन थोळा ओसरिया, पिडि मिडि प्यामी पे गोळा जिम गिरिया ।—ऊ का

उ०—१ पदमणि पुरसा रे पगरण नह पूरा, भूखा सूतोडा सगर-एवै भूरा । रोजा निसवासर सठा मे साजे, वैकृति कठा मे अल-गोजा बाजे ।—ऊ का

२ गोर वर्ण वाला ।

उ०—भूरें मुखडे पर स्वेदण कण भारी, पटुची पोळछ मे प्रीतम री प्यारी । नाचै खेलावण मेलावण नाही, जोवण जोगी वा वेळा जग माही ।—ऊ का

३ वीर, योद्धा ।

उ०—१ हुई मुरदर ऊपर हल्ला, महा अप्रवळ जोर मुगरला । पेख खडा सभ लवखा खूरा, भीड वगत्तर अगा भूरा ।

—रा रु

उ०—२ बिजडा भाट त्रमाट बाजता, स्यामध्रम सूरतन साहि, सत छाडे टेभा अवछडिया, गिड भूरा मडिया गज-गाहि ।

—वैरीसाल हाडा रो गीत

उ०—४ मिघ नाथ वळ उपजियो सहस वळ, सरै राम वासै मकति । उत्तराम पावणो आयो, भूरै दी खागां भुगति ।

—अमरसिध हाडा रो गीत

४ उदार-हृदय, दानवीर ।

५ यशस्वी ।

उ०—१ मारु राव सोहता आगरै किया दाभै मूह, हाथळां ठोहता खळा खाग रे ही कोट । भरोसै भाग रे थोहता भाळियै तू भूरै, नोहत्या वाघ रे गळे हार ज्यू नौकोट ।

—महाराजा मानसिधजी रो गीत

उ०—२ रागरग जहै ततकार सहला रमण, जसकरा भडा सामन जहुरा । ऊदैपुर महल गोखा पीयण आसवा, भूप जोखा करण आव भूरा ।—चमनजी आडो

६ देखो 'भवारो' (रु भे)

रु० भे०—भुरी ।

अल्पा०—भूरटो, भूरियो ।

मह०—भूर ।

भूरीबाघ-स० पु०—वीर, बहादुर ।

उ०—कीधो हृद विखो घरा रे कारण, महावेध मढाणी । देसा चावो कियो देवडा, भूराबाघ भटाणी—नाथूसिध देवडा रो गीत  
२ केसरी मिह ।

भूल-स० स्त्री०—१ भूलने की क्रिया या भाव ।

२ अज्ञानता या भ्रमवश किमी को कुछ का कुछ समझने का भाव, गलती ।

उ०—वा भूल सू थारै लाडुवा री सभाळ गटकायगी । इण नै तो अठै ई पूगे इनाम इकरार मिळायी ।—फुलवाडी

३ अशुद्धि, त्रुटि ।

ज्यू—हिमाव मे भूल होणी ।

४ अपराध, दोष, कसूर ।

उ०—कमेटी छवरा छवरा आसू दुलकायनै उण रा पग पकडती अर उण सू वीणती करती जद साप कैवती—अवकी तो भूल व्हेगी, अव कदै ई धारा विचिया नै नी खावू ।—फुलवाडी

५ पाखड, आडम्बर ।

उ०—मिदर, तीरथ, मय द्रत माळा, मोटी भूल मिटाई । पिड नख दरमण घत निलजापण, फिर वयो सिरड फसाई ।—ऊ का  
६ चूक ।

उ०—आप खुमी खुमी पधारी, अव म्हे वरजण री भूल नी कर ।  
—फुलवाडी

७ कमी, अभाव ।

ज्यू—इण मे कई भूना रैयगी है ।

८ विस्मृति ।

भूलणी, भूलवो—क्रि० अ०—१ याद या स्मृति मे न रहना, विस्मृत हो जाना ।

उ०—१ चुरी चुगल मुख मे वसै, आछी री नह अंग । माखी वैसे स्वानमुग, भूल न वैसे भ्रग ।—वा दा

उ०—२ भूली लाज काज मुनि सजनी, परयो अधिक रस फदन । मीरा के प्रभू गिरधरनागर, करि राखी भुजवधन ।—मीरा

२ अनुक्त या अमक्त होना, खोना ।

३ घमड मे इतराना या फूलना ।

४ गलती या त्रुटि करना ।

ज्यू—मैं काले हिसाव मे पाच रुपिया जोडणी भूल गयी ।

५ भ्रम या धोखे मे पडना ।

उ०—खट् दस्मन भूला फिरै, लारै वरणज चार । ओ अवसर आवै नही, गोता खाय गवार ।—श्री हरिरामजी महाराज  
क्रि० स०—६ विस्मृत करना, भुला देना ।

उ०—१ ऊनह री आचार, भाराणी भूली नही । जेहा जग दातार, जीवै घर अवर जितै ।—वा दा

उ०—२ अडज, स्वेदज जरा उड्डिज, माया सब तूफ म भूल व मुज्ज । म राख पट्टो आडो मूह, जहा कुछ देखू त्या सब तूह ।  
—ह र

७ गलती करना ।

उ०—महुतउ वेग सभा आविउ राजा रमिड बोलावीउ । डाहा भूलइ केती वार तुम्ह सरिखा नु किसिउ विचार ।—हीराणद सूरि  
८ अभ्यास छूटना ।

उ०—कवर रा मूडा सू ती कीं बोल नी निकळिया, जाणै वो बोलणी भूल ई गियो व्हे ।—फुलवाडी  
भूलणहार, हारो (हारो), भूलणियो—वि० ।

भुलाडणो, भुलाडवो, भुलाणो, भुलावो, भुलावणो, भुलाववो  
—प्रे० रु० ।

भूलियोडो, भूलियोडो, भूल्योडो—भू० का० कृ० ।  
भूलीजणो, भूलीजवो—कर्म वा० ।

भूलभुलैया—स० स्त्री०—१ बहुत सी गलिया एव दरवाजो वाली इमारत जिसमे प्रवेश करने पर पुन निकलना दुर्लभ होता है ।  
२ बहुत चक्करदार एव पेचीली बात ।

भूलिग—स० पु०—एक प्रकार का छोटा पक्षी जो सिंह की दाढो मे से मास निकाल कर खाता है ।

भूलियोडो—भू० का० कृ०—१ विस्मृत हुवा हुआ २ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुआ, खोया हुआ ३ घमड मे इतरा हुआ फूला हुआ ४ गलती या त्रुटि किया हुआ ५ भ्रम या धोखे में पडा हुआ ६ विस्मृत किया हुआ ७ गलती किया हुआ ८ अभ्यास छूटा हुआ  
(स्त्री० भूलियोडो)

भूलोक—स० पु० [स० भूलोक] १ ससार, जगत (मृत्यु लोक)  
उ०—महाक्रोधगी गनीमां हुता हूचकै नरिंद 'माधो', भूलोक भूचकै वाधो चकै कोम भार । चोमगी आरावां झाल वेताळ वमकै वकै वाजद्रा 'वहादरेस' हकै तेणवार ।—हुकमीचद खिडियो  
रु० भे०—भुवलोक ।

भूलोडो—देखो 'भूलियोडो' (रु भे)

उ०—भगवत करतानै करतव भुगतावै, पिछला पापा रा पामर फळ पावै । भावो भूलोडा भूको क्यू भाया, पोचा करमा रा पोचा फळ पाया ।—ऊ का  
(स्त्री० भूलोडो)

भूलो—वि० [स्त्री० भूली] १ विस्मृत हुवा हुआ ।

२ भ्रम मे पडा हुआ, भ्रमित ।  
३ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुआ, खोया हुआ ।  
४ गलती या त्रुटि किया हुआ ।  
५ घमड मे इतरा हुआ, फूला हुआ ।  
स० पु०—६ विस्मृति ।

क्रि० प्र०—पहणो, होणो ।

भूवग—देखो भुजग' (रु भे)

उ०—छाकिया गज धिकिया भूवग छेड, तै लिखिया कर कर लीध तेड । छेडिया चाक जुघ पहल चाय, सूरान हूत केवाण साय ।

—वि स

भूवतरी—एक कन्द विशेष ।

उ०—भसम मराडी भमरीया, चोलहिरा चाडाल । भू-कोहली भूवतरी, कद विकद विसाल ।—मा का प्र

भूवण, भूवणि—१ देखो 'भुवन' (रु भे)

२ देखो 'भवन' (रु भे)

भूवर—स० पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष ।

भूवरियो—वि०—१ गोलाकार, गोल आकृति का ।

उ०—इण भात री तिजारी सू गोरी भूवरिया पृहचा सू दुजण साह्या कटोरा मे भला जुवान मचकावै छै ।—रा मा स  
२ देखो 'भुवरियो' (रु भे)

भूवल, भूवल—स० पु० [स० भू+वल] भूगोल ।

उ०—१ नाग कुमार नरनाह सुरनाहा जेण तिहुयणि जिन्ना, तिहुयण सल्लविरुद्धी विव खाउ एस भूवलए अभययतिक

उ०—२ अहह रूप असभम भूवलइ कवण कामिणि एह मम तुलइ । हिव हठिउ मभ मन्मथ मारिवा, एह जि ऊडण अग ऊगारिवा ।—सालिमूरि

भूवल्लभ—स० पु० यो० [स० भू+वल्लभ] राजा, नृप ।

भूवा—देखो 'भूआ' (रु भे)

उ०—१ भूवा भगनी रा थळचट भिखियारी, धन्यां कन्या रा गळकट हठधारी । राफा भरणावै गिरणावै रोता, गता निरणावै करमा रा गोता ।—ऊ का

उ०—२ सावळियो वहनोई मागा, सोदरा वहन मागा, हाडा घोवण फूको मागा, झडू देवण भूवा ।—लो गी

भूवाजी—स० स्त्री०—१ कगाली, दरिद्रता ।

उ०—दुरविध घमडी दै सणकारी साजी, भारी भमडील घर में भूवाजी । चिलमी भ्रमली के जुलमी चितचावा, दासी वेस्या रा मदवा रं दावा ।—ऊ का

२ देखो 'भूआ' (रु भे)

भूवारि—स० स्त्री०—हाथी पकड कर रखे जाने या बाधे जाने का स्थान ।

भूवाळ—देखो 'भूपाळ' (रु भे)

उ०—वर कन्या विन्हे धातिया वानइ, वेई वारां वरसा रा वाळ । भमर ज्युही केतकी भीना, भोली चक्रवर्ति भूवाळ ।

—महादेव पारवती री वेलि

भूवाससु—देखो 'भूआससु' (रु भे)

भूवासुसरी—देखो 'भूआसुसरी' ।

भूविदार—स० पु० [स०] सूअर । (अ मा)

भूविद्या—स० स्त्री० यो० [स० भू+विद्या] भू-विज्ञान ।

भूसक्र—स० पु० [स० भूशक्र] राजा, नृप ।

भूसण—स० पु० [स० भूपण] १ अलंकार, गहना ।

२ शोभावृद्धि करने वाली वस्तु या गुण ।

३ साहित्य मे अलंकार ।

उ०—प्रस्नोत्तर चरचा मत पीगळ, भूसण सवद अरथ रस भाय । वांकांदास जाणिया विध विध, राज अनुग्रह जगळराय ।—वा दा

४ वनस्पति विशेष, जिसका शाक वनता है।

उ०—भेडा गारी भामटी, भांभरहूली भाति। भूषण भूली भारथी, भडहड भोली राति।—मा का प्र

५ भूषण कवि।

६ बारह की सख्या। ४

वि०—वाहरवा।

रू० भे०—भूखण, भूकण, भूकण, भूपाण, भूखाण।

भूषणोपमा—स० पु० [स० भूषणोपमा] उपमा अलंकार का एक भेद।

भूषणभोजन—स० पु०—६४ कलाश्रो मे से एक।

भूसरग—स० पु० [स० भू+स्वर्ग] सुमेरु पर्वत का नाम।

भूसी—स० स्त्री०—१ किसी वस्तु के छोटे २ छिलको या टुकड़ो का चूर्ण।

ज्यू—ईसवगोल की भूसी।

रू० भे०—भुमी।

२ देखो 'भूमी' (अल्पा, रू भे)

भूसुर—स० पु० यो० [स० भू+सुर] घरती का देवता, ब्राह्मण।

भूसी—स० पु०—१ गेहूँ, जौ आदि के सूखे डठलो के महीन छोटे-छोटे टुकड़े जो गाय-भैस आदि को खिलाये जाते हैं।

२ चोकर, चापड।

रू० भे०—भुस।

अल्पा०—भुमी, भूसी।

भूह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ मूछ जाय भूहा मिली, मिलिया भुज अममान। साची सामत 'चादियो', पावू' री परधान।—पा प्र

भूहड—स० पु०—१ सोलकी वष के सत्रियो की एक दाखा जो पहले सिध (वर्तमान पाकिस्तान) मे थी और मुसलमान हो गई।

२ इस शाखा का व्यक्ति।

भूहर—स० स्त्री०—आकाश मे छाए हुए धूलिकण।

भूहरणी, भूहरबी—फ्रि० अ०—धूलि कणो का आच्छादित होना, गर्द छा जाना।

भूहरणहार, हारी (हारी), भूहरणियो—वि०।

भूहरिओडी, भूहरियोडी, भूहरघोडी—भू० का० कृ०।

भूहरीजणी, भूहरीजवी—माव वा०।

भूहरियोडी—भू० का० कृ०—धूलि-कणो से आच्छादित हुवा हुआ (स्त्री० भूहरियोडी)

भूहरी—१ देखो 'भवारो' (रू भे)

२ देखो 'भ्रू' (रू भे)

भूहार, भूहारी—१ देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—वणै नैण भूहार भाल विचन, पडै दीपकी काजळ हेमपत्र।

विचिन वणो भह्वी रेख वक, घरची कामदेव कर (रा) मे घनक।

—वगसीराम प्रोहित री वात

२ देखो 'भवारो' (रू भे)

भूहि—देखो 'भूमि' (रू भे)

भेंइसि—देखो 'भैम' (रू भे)

उ०—गदह गाइ नइ भेंइसि, ऊंट छाली नइ एवठ। अमहनइ ए आघार, तिया घणिया नै धेवड।—स कु

भेंच—देखो 'भीच' (रू भे)

उ०—वडा भेंच भूपाळ के काळवाळा, गिडै नाग सु केण केवांन खाळा। अहीराव नै दावडा एह आडा, गुणा वेद जोता कही क्रोड गाडा।—ना इ

भेंट—देखो 'भेट' (रू भे)

भेंटणी, भेंटवी—१ देखो 'भीटणी, भीटवी' (रू भे)

उ०—१ सेठ कल्लो—म्हें कमाई मारु दिमावर जावू हू। सगळा घर वाळा म्हनें कलूस मानें ती ई कमाई रं विना म्ह अणचीत्या घन नै नी भेंटू।—कुलवाडी

उ०—२ मिनख री उणियारी होयन म्हें मिनख री लोई मास सपना मे ई नी भेंटू।—फुलवाडी

२ देखो 'भेटणी, भेटवी' (रू भे)

भेंटणहार, हारी (हारी), भेंटणियो—वि०।

भेंटिओडी, भेंटियोडी, भेंटघोडी—भू० का० कृ०।

भेंटीजणी, भेंटीजवी—कर्म वा०।

भेंटियोडी—१ देखो 'भीटियोडी' (रू भे)

२ देखो 'भेटियोडी' (रू भे)

(स्त्री० भेंटियोडी)

भेंटी—देखो 'भेटी' (रू भे)

उ०—के इत्ता मे वो वळद जोर सू उण वाळदिया रा मोरा में भेंटी दी।—फुलवाडी

भेंसाखदियो—स० पु०—सोने या चांदी पर खुदाई करने का एक कीला। (स्वराकार)

भेंसाव—देखो 'भैसाव' (रू भे)

भे—सर्व० [स० भवन्त] आप।

भेइरवी—देखो 'भैरवी' (रू भे)

भेउ—वि०—१ भेद जानने वाला।

२ देखो 'भेद' (रू भे)

उ०—१ भेकवीस मूरछा, त्रिण (ह) ग्राम निसपति सुर। लहण भेउ खटराग कठे, अखलै माखतर।—गु रू व

उ०—२ चउवीसमउ जिणेसर देव, तिहि जाएवा आपिउ भेउ। मोवसमारगि इण परि जाइ, यति बीजा जे स्रावक थाइ।

—चिहुगति चउपइ

उ०—३ विनयकीरति अभिरामिहि नांमिहि जाणउ एउ, अण अनेक वखाणए, जाणए अगम भेउ।—प्राचीन फागु सप्रह

भेक-स० पु० [स० भेक] १ मेढक ।

उ०—१ सुक पिक लगे सवाद, भल थोड़ी ही भाखणी । ब्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यू भरिया ।

—महाराजा बलवत्सिंह (रतलाम)

२ देखो 'भेख' (रू भे)

उ०—१ करनला कयी सुणियो न कान । वक्रत भेक मुख चोळवान ।—रामदान लाळस

उ०—२ फदा मे मोडा रै फसगो, रुळगो रेहडली । भेक धारतां कीधी भूडी, कुवधा केहडली ।—ऊ का

उ०—४ चौर गुरु बिच्छू चटकावै, ग्यान राब विरळा गटकावै । भेक छाछ कारण भटकावै, लुच्चा वागळ ज्यू लटकावै ।—ऊ का

भेख-स० पु० [स० वेश] १ किसी मनुष्य का वस्त्रादि के पहनावे से प्रकट बाह्य रूप-रंग, वेश ।

उ०—१ तन उजळा मन सांवळा, युगला कपटी भेख । इससे तो कागा भला, बाहर भीतर अके ।—अज्ञात

उ०—२ अजमेर रो सुवैदार सताजी बावळियो दिखणी भाऊ रा जग सू कगाल रै भेख किसनगढ छतरी मे आय बैठो ही । माळी कना सू भूला माग खाधा ।—वां दा ख्या

क्रि० प्र०—बणाणी, बदळणी ।

२ वह कृत्रिम पहनावा जो वास्तविकता छिपाने के लिए धारण किया जाय ।

उ०—भेख लिया सू भगत नह, ह्वै नह गहणा हूर । पोथी सू पडित नही, ससतर सू नह सूर ।—वां दा

क्रि० प्र०—धारणी ।

३ साधु सन्यासी का पहनावा या वेश-भूषा जो विशिष्ट सम्प्रदाय का सूचक होता है ।

उ०—१ जे साईं का ह्वै रहै, साईं तिसका होइ । दादू दूजी वात सब, भेख न पावै कोइ ।—दादूवाणी

उ०—२ नमो वपु दीरघ वामन देख, भिखग पुरंदर भाजण भेख । नमो नरसिंह लिछम्मी-नाह, विसभर बिटुळ आदि बराह ।—ह र

उ०—३ सोफी सबद सुणाय, चोर रंग देत चिगाई । बैरागी नै जगत, जगत नै भेख विगाई ।—ऊ का

४ सन्यास ।

उ०—१ सुखमा वरणू सुख सागर की, अपनी रुख भेख उजागर की । चित चाह उछाह पया चुणिले, सब सत समाज कया सुणिये ।

—ऊ का

उ०—२ पितह पुत्र विरोधे, भ्रितह सोम विग्रहे भ्राता । सजण जणा नि क्रोधे, खिम्या समो भेख जो नथि ।—गु रू व

५ मत, सम्प्रदाय ।

उ०—१ तडण कर कविता तणो, घालू चडण धूब । भडण जोगे

भेख रो, खडण करणी खूब ।—ऊ का

उ०—२ अरणे अरणे भेख की, सब कोई राखे टेक । निगम निमाणा एक है, गोळूदाज अनेक ।—अज्ञात

६ देखो 'भेक' (रू भे)

उ०—गढ़ि गोळ गोफळ अलति पीनहि, जिहा रतन पायल रेख । नेपुरा नादइ रणभूणइ, बहु द्विवधि प्रतिरव भेख—रुक्मणी मगळ  
रू० भे०—भेक, भेग, भेस ।

भेखख—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

भेखज—देखो 'भेसज' (रू भे)

उ०—१ निरतर अतर मे निज नाथ, स्वयं घर ध्यान घनतर साथ । जरा रिपु भेखज के ढिग जाय, महाजन जामरण मरण मिटाय ।—ऊ का

भेखणी, भेखवो—क्रि० स०—१ सन्यास लेना ।

२ भेप बदलना ।

भेखणहार, हारी (हारी), भेखणियो—वि० ।

भेखियोडो, भेखियोडो, भेखियोडो—भू० का० कृ० ।

भेखीजणी, भेखीजवो—कम वा० ।

भेखधारी—क्रि० यो० [स० वेश + धारी] भेप धारण किया हुआ, सन्यासी, साधु ।

उ०—जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी, जेहवी हो बादल केरी छाहडी जी । जेहवी मित्राई भेखधारी नी, तेहवी हो कापुरसा रो बाहडी जी ।—वि कु

भेखियोडो—भू० का० कृ०—१ सन्यास लिया हुआ २ भेप बदला हुआ (स्त्री० भेखियोडी)

भेग—देखो 'भेख' (रू भे)

उ०—भूघर कही—खरची दिरावो । ताहरां साठ रिपिया दिराया सो पल्ले बाघ, अतीत रो भेग घर बाहिर हुवो सो ढीगसर जाय पहुचियो ।—सूरेखीवें कांघळोत रो वात

भेड-स० स्त्री० [स० भेड] १ वकरी के आकार प्रकार का एक पालतू चौपाया जानवर जिसकी ऊन व खाल कई कामो मे आती है तथा मांस खाने के काम आता है ।

मुहा०—भेड चाल=अनुकरणीय प्रवृत्ति ।

२ बेल । (अ. मा)

३ राज मडक, बडा मँढक ।

४ बहुत ही सीधा-सादा या मूर्ख व्यक्ति ।

रू० भे०—भेडी ।

भेडणी, भेडवो—क्रि० स०—१ टक्कर लगाना, भिडाना ।

उ०—डाक काळ रूपी डाक उवेडे कटार उठ्ठा, भीमनाद भेडे रेडे गयदा गभीर । आहेडे तेहुं पेडे वीर देवीसिंघ आळा, केडे लाग तूही छेडे डाखियो कठीर ।—कवर दीलतमिष रो गीत



२ धारण करना, कसना ।

उ०—१ दुजल छतीसुहि डावियां, भूधारण भेडोह । धनुम भुजा  
डड धारिया, आया आहिडीह ।—पा प्र

३ प्रहार करना ।

४ भिडाना, सटाना ।

५ सुसज्जित होना ।

भेडणहार, हारी (हारी), भेडणियो—वि० ।

भेडिओडो, भेडियोडो, भेडघोडो—भू० का० कृ० ।

भेडीजणो, भेडीजवो—कर्म वा० ।

भेडणो, भेडवो—रू० भे० ।

भेडव—वि०—घोडा, सुभट ।

भेडाव—स० पु०—भेडिया । (शेखावाटी)

भेडियो—स० पु०—जगली कुत्तो से मिलता जुलता एक मासाहारी जान-  
वर जो भेड वकरी आदि को उठाकर ले जाता है ।

भेड—क्रि० वि०—१ बराबर, समानान्तर ।

२ समीप, निकट ।

उ०—१ इण रीति प्रमारा रा सहाय काज सोभक्ति रा सेत मे  
जय रा दुहुमी घुराय प्रथ्वीराज रा बीरां भूहार भेड मासुरी लोभ  
आणियो ।—व भा

उ०—२ भजे बास चोथो नरी 'भेफ' भेड, नरानाह यू नानणो द्रग  
नेड ।—व भा

भेडो—स० पु०—१ नर भेड ।

२ देखो 'भेडो' (रू भे)

उ०—१ पच्छ ग्रहे प्रालब्ध, नही पुरुमारथ नेडो । चोखं मत नही  
चाय, भाय आवं मत भेडो ।—ऊ का

उ०—२ पडियो सेडो पेखि, भवन भेडो भणणाव । भीताहि मेड  
भरी, गरट माख्या गणणाव ।—ऊ का

भेजणो, भेजवो—क्रि० स०—१ किसी व्यक्ति को आदेश देकर या आग्रह  
से कहीं जाने के लिए प्रवृत्त करना, रवाना करना ।

उ०—१ पाय हुकम पागडै, पाव दीघी छत्रपत्ती । भैरव दोना  
भेजि, सकनि तेडी त्रिसक्ती ।—मे म

उ०—२ ठाकरसा सो बात सुणनै घणा ई हमिया । वणवारिया  
नै भेज सेठा नै कोट मे बुलाया ।—फुलवाडी

२ किसी वस्तु या पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी  
साधन द्वारा पहुँचाना ।

उ०—विणजारो थोडो फेर जोर सू कह्यो—हुकम, म्हारी अरज  
तो सुणावो, नगर कठियारा वाळो ईह्वा म्हारै मार्य श्री निज-  
राणो भेजियो है, कवूल फरमावो ।—फुलवाडी

भेजणहार, हारी (हारी), भेजणियो—वि० ।

भेजवाडणी, भेजवाडवो, भेजवाणो, भेजवावो, भेजवावणी, भेज-  
वाववो, भेजाडणी, भेजाडवो, भेजाणो, भेजावो, भेजावणी, भेजा-  
ववो—प्रे० रू० ।

भेजिओडो, भेजियोडो, भेजघोडो—भू० का० कृ० ।

भेजीजणो, भेजीजवो—कर्म वा० ।

भेजाडणी, भेजाडवो—देखो 'भेजाणो, भेजावो' (रू भे)

भेजाडणहार, हारी (हारी), भेजाडणियो—वि० ।

भेजाडिओडो, भेजाडियोडो, भेजाडघोडो—भू० का० कृ० ।

भेजाडीजणो, भेजाडीजवो—कर्म वा० ।

भेजाडियोडो—देखो 'भेजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेजाडियोडो)

भेजाणो, भेजावो—प्रे० रू०—१ किसी व्यक्ति को आदेश देकर या  
आग्रह से कहीं पर जाने को प्रवृत्त कराना, रवाना करवाना,  
मिजवाना ।

२ किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन  
द्वारा पहुँचाना, मिजवाना ।

भेजाणहार, हारी (हारी), भेजाणियो—वि० ।

भेजायोडो—भू० का० कृ० ।

भेजाईजणो, भेजाईजवो—कर्म वा० ।

भेजाडणी, भेजाडवो, भेजावणी, भेजाववो—रू० भे० ।

भेजायोडो—भू० का० कृ०—१ किसी बड़े व्यक्ति को आदेश देकर  
साग्रह कहीं पहुँचने में प्रवृत्त कराया हुआ, रवाना कराया हुआ  
२ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन  
द्वारा पहुँचाया हुआ, मिजवाया हुआ

(स्त्री० भेजायोडो)

भेजावणी, भेजाववो—देखो 'भेजाणो, भेजावो' (रू भे)

भेजावणहार, हारी (हारी), भेजावणियो—वि० ।

भेजाविओडो, भेजावियोडो, भेजावघोडो—भू० का० कृ० ।

भेजावीजणो, भेजावीजवो—कर्म वा० ।

भेजावियोडो—देखो 'भेजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेजावियोडो)

भेजियोडो—भू० का० कृ०—१ किसी व्यक्ति को कहीं पर जाने में प्रवृत्त  
किया हुआ, रवाना किया हुआ, भेजा हुआ २ किसी पदार्थ को  
एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुँचने में प्रवृत्त  
किया हुआ

(स्त्री० भेजियोडो)

भेजी—देखो 'भेजो' (अल्पा, रू भे) (अमरत)

उ०—१ जमलजी सरफुद्दीन माल कोटरी पोळ आगं ऊभा देख  
रावजी देवदासजी नू दिवी हुती वारा खिजमतदार रै कनै हुती  
श्रेक मुगळ वन्दूक लेण भूकियो जद कडियाळी गेडी मुगळ रै मार्य  
जडी । गैडी रा लगणा सू नाक मे भेजी निसरी—वा दा ह्या

उ०—२ आंत भोज भेजो असत, नैण नली भख तेह । आमित नर  
नाखें उदर, आणै हरख अछेह ।—वा दा

भेजो—स० पु०—१ मस्तिष्क, दिमाग ।

उ०—१ हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हाणी, जग मे दैविच्छा  
किए ही नह जाणी । वादळ बीजळिया नभ मे नहि नेडी, भेजो  
भणुणायो भळकी पुळ भंडी ।—ऊ का

उ०—२ पण वा पूगी-पूगी जितरें तो एक तरवार ठाकर रो भेजो  
फौडर कनपडा रो लपतरो उखेलती खाधा तक जाय पूगी ।

—रातवासो

मुहा०—भेजो खाणी, भेजो चाटणी—मस्तिष्क को पूरा थका देना ।  
२ खोपडी के अन्दर का गुदा, मगज ।

उ०—उण समय चहुवाण कन्है घणा मेरा रा माथा सू माथा  
मिहाय भेजा काडिया ।—व भा

भेट—स० स्त्री०—१ मिलन, मुलाकात ।

उ०—१ माजी वाजी सुरग सिंघायो, मिळे दान खग दुवा मद ।  
भेट हुवो नह जको भाजसो, क्रम धोको मूक कद ।—वा दा

उ०—२ भिनखा मे थळियो, जिनावरा मे नळियो अर भोजन मे  
दळियाळी कंधत कूडी कोनी, सोळै आना साची है । आ भाग्या सू  
भेटा हुवै न, घोरियाळा गांव देखा ।—दसदोख

२ सप्रयोजन किसी से मिलना, साक्षात्कार करना ।

उ०—सती जती कव सूर, मेहप मित पिढत मुगध । जाणै भेद  
जरूर, भेट हुआ सू भेरिया ।—महाराजा वल्लवतसिंह (रतलाम)  
३ किसी को सम्मानपूर्वक दिया जाने वाला उपहार, सौगात,  
नजराना ।

उ०—‘अजण’ भेट आणियो, कमध पह लिया उछव करि । विद  
इद वणि वरै, सकति रूपा बहु सुदरि ।—सू प्र  
४ भिहन्त, टक्कर, युद्ध ।

उ०—भुजगां तणी भेट थारा भुजा री, दिमी अतरा गत छोटी  
हुजा री । सदा आणियो नागणी बोल सारी, थयो वेद पासै नकी  
वेण थारो ।—ना दा

५ दर्शन ।

उ०—वे कर जोडी वीनवु रै, सुणिजो थभण पास । प्रभु परदेसइ  
चालता रै, एक करु अरदास । जीवनजी वेगी देज्यो भेट ।—स कु  
६ देवता या पूज्य व्यक्ति की सेवा मे भक्ति एवं श्रद्धा से अर्पित  
की जाने वाली वस्तु ।

उ०—कियो हरख कमधज्ज, निरख नायक ब्रह्मडा । भेट प्रांम  
गज भिहज, पूज प्रम घाम घमडा ।—रा. रू

फि० प्र०—आणी, चढाणी ।

७ कर, टैक्स ।

उ०—दाण, पूछी, हल मोम भाग, भेट, तलारक्षक, वद्धापन,  
मलवरक वल, चचा, चारिका, गढ, वाटी, छत्र, आलहण, थोटक,  
कुमारादि सुखडी इति क्रमेणा रा दम करा जाता ।—व स

रू० भे०—भेंट, भेटि ।

अल्पा०—भेटडी ।

भेटकी—देखो ‘भेट’ (अल्पा रू भे )

उ०—१ इण गवाडी पूग्या पैली पैली तो वै घणी वाता विचा-  
रनै आर्व पण डोकरी सू भेटका व्हेता ई की वात कैवणी वारै  
हाथ री वात नी रै वै ।—फुलवाडी

उ०—२ म्हारै साथै ई वो कम कोगत नी करी वेटी ! भेटका व्हे  
जावै तो पैल फटकारै फारगती कर दू ।—फुलवाडी

उ०—३ चमचमाट करतो परभातियो तारी ऊगो जित्तै ई सेठा नै  
किणी सू भेटका नी विह्या —फुलवाडी

भेटण—स० स्त्री०—१ मिलने की क्रिया या भाव ।

२ स्पर्श करने की क्रिया या भाव ।

भेटणो—स० पु०—१ विनती, प्रार्थना ।

उ०—चित्त इम लेई राजाजी रो भेटणो, आयो गुरा के पास ही  
महामुनी । स्वेताविका नगरी हो जाता भाव सू, वदणा करे  
उल्लास हो महामुनि ।—जयवाणी

२ मिलाप ।

३ टक्कर, भिडत ।

४ देखो ‘भेट’ (रू भे )

उ०—इक आवी पाश्रे पडइ, अलगा करइ जुहार । इक अनोपम  
भेटणा, सुपइ सपति सार ।—मा का प्र

भेटणो, भेटवो—फि० स०—१ मिलना ।

उ०—१ चीरी रही घन हीयडउ लगाई, जाणिक बाछरू है भेलही  
गाई । नयन ते आसू खेरिया, कव म्है भेटस्या साभरघा-राव ।

—वी दे

उ०—२ मह लागी पाप अभनमा ‘मोकळ’, पड सुदतार भेटतां  
पाप । आज हुवा निकळक अहाडा, पेखे मुख ताहरी ‘परताप’ ।

—महाराणा प्रतापसिंह री गीत

२ साक्षात्कार होना, भेट करना ।

३ आलिंगन करना ।

उ०—१ कर नवल किसोरी सघर सोरी, मरियादा भेटता है,  
विसफळ वैरागी त्रिभवन त्यागी, भागी भुज भेटदा है ।—ऊ का

उ०—२ हरिखीय उग्रसेन वेटीय भेटीयड वर अवरोध, जगगुरु  
अमीय समाणिय बाणीय जन प्रतिबोध । उपमम तरुवर रोपइ  
लोपइ मन सदेह, मुक्ति तणउ पथ दाखिय राखिय त्रिभुवन रेह ।

—नेमिनाथ फागु

उ०—३ काचल कातरिया वाजू मे काठा, भुजतल भेटे जा भेटे  
अध माठा । कर मे काकणिया जसदा गल काठी, अधभुत मोरा  
पर लुठतोडी आटी ।—ऊ का

४ टकराना, भिडना ।

उ०—१ भयकर रूप भुजा जुध भार, हणें खल भूत भणें वलि-  
हार । खणखण खेटक भेटत खाग, रिखेस्वर वीण भणइभण  
राग ।—मे म

उ०—२ अधिप 'भीम'रं अग, विजय कीधा कई वारा । मड  
साधव घण भेटि, किया घड पार कटारां ।—व भा.

५ युद्ध करना, लडना ।

६ दर्शन करना ।

उ०—१ मोरो मन तीरथ मोहियउ, मड भेटघउ हो पदम प्रभु  
पास । मूलनायक प्रतिमा भली, प्रणमता ही पूरै मननी आस ।

—स कु.

७ तीर्थयात्रा करना ।

उ०—पाचै पाडव सघ करि, सेयुज भेटघउ अपारीजी । कास्ट  
चैत्य विव लेपनउ, ए वारमों उद्धारो जी ।—स कु

८ स्पर्श करना, छूना ।

उ०—१ गोह सरीखा पामर गाऊ, व्याध कवधा श्रीध वताऊ । नै  
सट पापी गौतम नारी, तै रज पावा भेटत तारी ।—र ज प्र

उ०—२ जिन चरण ध्रुव अटल कीनै, राखि अपनी सरण । जिन  
चरण अह्माड भेटघी, नख मिखी स्त्री भरण ।—मीरा

उ०—३ वरियाम सिलह पोसा विचै, भुजा 'अभै' नभ भेटियो ।  
तदि जाणि भांण श्रीखम तराी, काळी घटा लपेटियो ।—सू. प्र

९ अस्पृश्य का स्पर्श करना, अशौच लगना ।

ज्यू—मरियोडा जिनावर भेटणा ।

उ०—सिवियाण 'कल्याण' तराँ अत सीधो, अगै भेटिया असत  
अग्यान । आजस् आभडछौत उतरियो, छोण गगोदक हुवो  
सिनान । ।—दूदो आसियो

१० ससर्ग मे लाना ।

उ०—सदाई लगै खाग नै त्याग सूर, परतै जै प्रिथीनाथ भूपाल  
पूरा । पर स्थो न भेटे गऊ विप्र पाळै, चलै राह वेक्षी खिप्रि धम्म  
चालै ।—वचनिका

११ अर्पण करना, चढाना ।

१२ प्राप्त करना ।

उ०—१ सब सुख मेरे साइयां, मगल अति आनद । दादू सज्जन  
सब मिलै, जव भेटे परमानद ।—दादूवाणी

उ०—२ मोत नै इण विध हरख सू भेटणी तो आज पे'ली कईई  
नी सुणी ।—फुलवाही

१३ उदय होना ।

उ०—असै दिनकर भेटोयां, निसकर जाहि नसाय । यु 'हरीया'

गुर भेटोयां, अग्य अधारा जाय ।—जी हरिरामदासजी महाराज  
भेटणहार, हारी (हारी), भेटणियो—वि० ।

भेटिओही, भेटियोही भेटघोही—भू० का० कृ० ।

भेटोजणी, भेटोजघो—कर्म वा० ।

भेटणी, भेटवो, भेडणी, भेडवो—रू० भे० ।

भेटरडो—स० पु०—जो व गेहू का मिश्रण ।

भेटा—स० पु० (व व.) १ मिलाप, मिलन ।

उ०—१ तद इहा रै आ रीत जो जै दिन परणीजै ते दिन हीज  
सिर गूथणी कर रात वीदणी भेटा करै वीद सों ।

—ठकुरै साह री वात

उ०—२ किसनजी बोल्हो—भाग चोखी ही है । जद ही था जिसा  
भला माणसां सू भेटा हुआ है ।—दसदोख

२ टक्कर, भिडत ।

उ०—खेता करहु खलन सो, भेटा लेहु भीर । मन हेटा करहु न  
मरद, वेटा तू है वीर ।—कैसरीसिंघ वारहट

भेटि—देखो 'भेट' (रू भे)

भेटो—स० स्थी०—१ पशुओं या मनुष्यों द्वारा सिर से किया जाने  
वाला आघात, प्रहार या चोट ।

उ०—जोधपुर गढ मार्य मुकनदासजी नें छिपीयें ठाकर उदावत  
परतापसिंघजी मारिया तद भीम धनी सिनान करण गा हा पण  
पाछा आया गढ मार्य लोहा पोल रा किमाड तोड भेटो सू 'धनो'  
काम आयो नें छिपीये ।—वी स टी

२ टक्कर, भिडत ।

उ०—धेटी लाज आगेटी पळैटी ज्यू ऊजळी धारा, जेटी भार  
पडैतै कण्ठी कार्ये जोम । हेटी चखा न धारै प्रथमी जीत गोरा  
हूता, भीम ज्यू करवां भेटो खाघो वीर भीम ।—जसो आढो  
३ तुकवन्दी ।

उ०—भेटो री तुक भागवा, ऊभै लघु आणोर । रखै नेम इण  
रीत री, सो हिं खुड सांणोर ।—पि प्र

४ नम्बर खुलने वाले जुए में जुआरी द्वारा सुबह और शाम के  
लिए लगाया जाने वाला एक अक्षर ।

वि० वि०—उस दिन दोनों समय वही नम्बर खुल जाने पर ६४  
गुना वैसा मिलता है ।

५ सहारा ।

रू० भे० - भेटो ।

भेटो—देखो 'भेटा' ।

उ०—पिण मन माहि हिंवै जाणूं अछू रै, कोइक पुण्य प्रमाण ।  
वधवजी तुम सू भेटो हुआ रै, तो भय भागो सुलतान ।—प च चौ.

भेडणी, भेडवो—देखो 'भेटणी, भेटवो' (१) (रू भे)

उ०—१ कूयर तुरीय खेडउ राड हइ लेउ भेडउ । कुरुपति दल  
रोली तउ बलउ सैन्य भेली ।—सालिसुरि

उ०—२ रोसि पाडव चडघा रथ खेडघा, तउ सुसरम दल नामउ

भेड्या । भीम भीसण गदा लेउ घायउ, तउ सुसरम छप चित्ति  
विछाहिउ ।—सालिसूरि

२ देखो 'भेडणी, भेडवी' (रू भे.)

भेडणहार, हारी (हारी), भेडणियो—वि० ।

भेडिओहो, भेडियोहो, भेडघोहो—भू० का० कृ० ।

भेडीजणो, भेडीजवो—कर्म वा० ।

भेडव—स० पु०—योद्धा, वीर ।

भेडवणो, भेडववो—देखो 'भिडाणी, भिडावो' (रू भे.)

उ०—भीम भीडतउ जमण तडै, कूटइ कुरव वीर । पाडइ द्रउडइ

भेडवइ, वावी वीलइ नीर ।—सालिभद्र सूरि

भेडवणहार, हारी (हारी), भेडवणियो—वि० ।

भेडविओहो, भेडवियोहो, भेडव्योहो—भू० का० कृ० ।

भेडवीजणो, भेडवीजवो—कर्म वा० ।

भेडवियोहो—देखो 'भिडायोहो' (रू भे.)

(स्त्री० भेडवियोहो)

भेडा—स० स्त्री०—एक प्रकार की रग बिरगी वतख ।

भेडागारी—स० स्त्री०—शाक बनाने वाली वनस्पति का नाम ।

उ०—भेडागारी भांमटी, भाभरहली भाति । भूमण भूली भारथी,  
भहहड भोली राति ।—मा का प्र

भेडागारी—देखो 'वेडागारी' (रू भे.)

(स्त्री० भेडागारी)

भेडियोहो—१ देखो 'भेटियोहो' (रू भे.)

२ देखो 'भेडियोहो' (रू भे.)

(स्त्री० भेडियोहो)

भेडो—स० पु०—भेड का मूत्र ।

भेणो—स० पु०—पजाव का एक तीर्थ स्थान भेणो साहव जहा सिकुखो  
का गुरुद्वारा भी है ।

भेणो, भेधो—देखो 'भेयणो, भेयवो' (रू भे.)

भेणहार, हारी (हारी), भेणियो—वि० ।

भेयोहो—भू० का० कृ० ।

भेईजणो, भेईजवो—कर्म वा० ।

भेदग—वि०—भेद जानने वाला ।

उ०—राजान कुअर किसान एक रजपूत छै । दूत हकीकत कहै छै,  
जु राजान कुअर उठती वहीरी जुवान आजान वाहू राजहस लीलग  
छै । भेदग छै । तिमा ही पोरम रा गाढ, तिमा ही कामवट रा  
अग, तिसा ही रजपूतवट रा आचार देख नै महाराजा राजेसर  
अजमेर रं थाणै राखैछा छै ।—रा सा स

भेदगार—वि०—भेदन करने वाला ।

उ०—समर वाग वण्ण कुसम, भमर जिम करि भेदगर । दू दूहा  
मभि एक, सुवप अम्मर काइ सकर ।—सू प्र

भेदगी—वि०—भेद जानने वाला, रहस्य जानने वाला ।

भेद—स० पु० [स० भेद] १ भेदने या छेदने की क्रिया या भाव, छेदन,  
वेधन ।

२ दरार, फटन ।

३ अलहदगी, अलगाव ।

४ भगडा, अनैवय ।

५ गुप्त वात ।

उ०—१ दे दे दरसण दौड, भेद घर री लै भारी, दे दे दरसण  
दौड, निलज भागै लै नारी ।—ऊ का

उ०—२ 'केहर' साम घरम पण कीधो, दियो जीव पण भेद न  
दीधो । बोले बोल वधती वाजी, राव हुवो उर 'इदर' राजी ।

—रा. रू.

उ०—३ सेवट खपता खपता मथी री वेटी राजकवर सू भेद री  
साची बात जाणी ।—फुलवाडी

उ०—३ खवासजी पूरी बात बताई जित्तै जित्तै वादळ आपरा मन  
मे सै जुगत विचारली । पै'ली बताया बात री सगळो मठ मर  
जावै, इण वास्तै किणो नै कीं भेद नी दियो ।—फुलवाडी

मुहा०—१ भेद खोलणी=गुप्त बात प्रकट कर देना । २ भेद  
देणी=गुप्त बात प्रकट कर देना । ३ भेद पाणी=गुप्त बात जान  
लेना । ४ भेद बताणी=गुप्त बात बता देना, गुप्त बात प्रकट  
कर देना । ५ भेद मिळणी=गुप्त बात का पता लगना । ६ भेद  
लैणी=गुप्त बात का पता लगाना ।

३ छिपा हुआ वह रहस्य या तत्त्व जिसे साधारण बुद्धि से न जाना  
जा सके, मर्म ।

उ०—१ अग्र देखइ इक चिटी उधाडी, विघ आखइ तउ कहतउ  
वेद । माता नमो तुम्हारी महिमा, भूलउ तउ ब्रह्मादि (क) भेद ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तासो पीर कहू तन केरी, फिर नहि भरमो खानी ।  
खोजत फिरु भेद वा घर कौ, कोई न करत बखानी ।—मीरा

उ०—३ बडा तत तूझ लहै न विचार पुरदर तूझ न जाणै  
पार । भला मुनि आदि न जाणै भेद, विरचिय तूझ न जाणै वेद ।

—ह र

४ तात्पर्य, गूढार्थ ।

उ०—१ लागू हू पहली लुळे, पीतांबर गुर पाय । भेद महारम  
भागवत, प्रामू जास पसाय ।—ह र

५ अन्नर, फर्क ।

उ०—१ हसा वगला हाल सू, जिम अंतरी जणाय । कवत सुक-  
विया कुकविया, भेद प्रगट इण भाय —बा. दा

उ०—२ उए दिन रा तमासा अर आज रा तमासा मे थानै की  
भेद निर्ग आवै ।—फुलवाडी

६ मतमतान्तर ।

उ०—हुए हिंदु बल हीण घरा पण खीण सुरा ध्रम । मिटे वेद मरजाद, भेद गुण आद पडे भ्रम ।—रा रु

७ किस्म, तरह, प्रकार ।

८ विश्वास घात ।

९ घोखा ।

१० द्वैतता ।

११ प्राचीन राजनीति में शत्रु की वश में करने हेतु चार उपायों में से एक जिम्मे द्वारा शत्रु के मित्रों में परस्पर भगडा उत्पन्न कर दिया जाता है ।

उ०—इएन तो भेद सूकाव करणी पडमी । सूर वीर न भेद पाडन पराजित करणी—आ वहेरा री सीख है ।—कुलवाडी

रु० भे०—भिदि, भेउ, भेदि, भेव ।

भेदक—स० पु० [स०] १ सगीत के भेद जानने वाला, सगीतज्ञ ।

उ०—पाछइ प्रोहित राखियउ, तेइचा मागणहार । जे भेदक गीतां-तणा, वात करइ सुविचार ।—ढो मा

२ भेदने या छेदने वाला, वेधक ।

भेदकसूत्र—स० पु० [स० भेदकसूत्र] एक प्रकार का शस्त्र ।

भेदकातिसयोक्ति—स० पु० [स० भेदकातिसयोक्ति] एक अर्थालंकार जिसमें वास्तविक अभिन्न उपमेय को भिन्न (अभेद होने पर भी भेद) कहा जाय । इसके वाचक शब्द प्रायः 'और' वा इसके पर्याय 'नवीन', 'न्यार' आदि होते हैं ।

भेदकारी—वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला ।

२ मिलावट ।

भेदग, भेदगर—वि०—१ भेद या रहस्य जानने वाला ।

उ०—१ 'हणु' अगद खल 'प्रहारण', 'भालपत' नल नील भारण । आद भेदग दस अघारण, वडा डारण वीर ।—र रु

उ०—२ नारी नदी निघात, चाहीजे भेदग चतुर । वाता ही मे वात, रीझ खीझ मे 'राजिया' ।—किरपाराम

उ०—३ जागी भडा कवी गुण जोडा, साकुर तूज समैला । ऊदा-वत सुवराम अभनमो, भेदग राखै भेला ।

—केसरीसिध उदावत री गीत

उ०—४ वहै करारा लोह ओरै जठे वहादर, भेदगर खरारा अम भाखै, जतन न करै 'रतन' जिद रा जुहती, 'रतन' ईजति तणा जतन राखै ।—पूरणदास महियारिखी

उ०—५ स्रुत सभ्रत छद खट पच नव सपूरण, भेदगर च्यार दस बोध भाळी । अरथ जुत बोलवो हैल बीजा 'अजा', वेळ अम्रत-तणा उदध वाळी ।—र ज प्र

२ भेद बताने वाला ।

३ गुप्तचर ।

भेदडी—स० स्त्री०—आटे व चावल का बना पतला खाद्य पदार्थ, राव ।

भेदजमा—स० पु०—वलभद्र । (अ मा)

भेदणी, भेदवी—क्रि०स० [स० भेदन] १ भेदन करना, छेदना, वीधना ।

उ०—१ भेदे तै वार किता भूगोल, करती आणी गग किलोल ।

वळे तै केता वार दईत, इद्रासण दीघी सक्र अजीत ।—ह र

उ०—२ काळी-कठळी बीजुळी, नीची खीवइ निहल्ल । उर भेदती सज्जणा, ऊचेवती सल्ल ।—ढो मा

२ विदीर्ण करना ।

उ०—मम झील करी हल वार म लावी, वेग चढी वहिळा वहिळा । भिडता भड सूरज मडल भेदै, मूळ भरै रम मूझ मळा ।

—गु रु. व.

क्रि० अ०—३ व्याकुल होना ।

उ०—तिण वेला पथी एक कि, भूख तिस भेदीयउ रे । विण अमलें गहिलें देहकि, पथ अति देखियउ रे ।—प च चौ.

भेदणहार, हारो (हारी), भेदणियो—वि० ।

भेदिओडी, भेदियोडी, भेदघोडी—भू० का० कृ० ।

भेदीजणी, भेदीजवी—कर्म वा० ।

भिदणी, भिदवी—रु० भे० ।

भेदन—स० पु०—भेदने या छेदने की क्रिया ।

वि०—भेदने या छेदने वाला, दस्तावर ।

रु० भे०—भेयण ।

भेदनकालद्वी—स० पु०—श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम । (ह ना मा)

भेदबुद्धि—स० स्त्री०—फूट, अलगाव ।

भेदभाव—स० पु० यी० [स० भेद + भाव] १ मन में होने वाला वह भाव कि अमुक और अमुक में अन्तर है ।

२ पक्षपात-पूर्ण नीति ।

३ अन्तर, फरक ।

४ मतैक्य का अभाव ।

५ एकता या एकात्मता का अभाव या विचार ।

६ पारस्परि विरोध या वैमनस्य, आपसी अनवन या बिगाड, फूट ।

उ०—पीछे वीकानैर रै भेदभाव री वाता करमचद पातसाहजी सू वीहत जाहर कीवी । अर काम दीवाणगी री मुहता वेद ठाकुरसी नू हुवो ।—द दा

रु० भे०—भेवभाव ।

भेदागळ—वि०—भेद या रहस्य जानने वाला ।

उ०—भेदागळ री भूख, भू पडियां भाजै नहीं । दाखा होव दूख, जीव तळमलै 'जेठवा' ।—जेठवा

भेदि—देखो भेद' (रु भे)

उ०—१ अणत काल जीव रहइ निगोदि, सूक्ष्म वादर छइ विहु भेदि । सतर वार एक ऊसासह माहि, वली वली ऊपजइ तीह वलइ जाइ ।—चिहुगति चउपई

उ०—२ सतीय वेउ छइ कासगि रही, इद्रह आयसु तु तुम्ह कही । मेल्हउ पडव वरइ वछेदि, विणु हथियार वाधा भेदि ।—प प च.

भेदिनी-स० स्त्री०—योगियों की पटचक्र को भेदन करने की शक्ति या सिद्धि ।

रू० भे०—भेयणी ।

भेदियोडो—भू० का० कृ०—१ भेदन किया हुआ, छेदा हुआ, वेधन किया हुआ २ विदीर्ण किया हुआ ३ व्याकुल हुआ हुआ (स्त्री० भेदियोडी)

भेदियो—देखो 'भेदी' (अल्पा, रू भे)

भेदी-वि० [स० भेदिन्] १ भेदन करने वाला ।

उ०—डगा घीसता साकळा सूत डोरा, घरा यू खणै ज्यू वणै खेत घोरा । भळा जूह वै वेरिया व्यूह भेदी, विजै मित्र जे चित्र सग्राम वेदी ।—व. भा

२ रहस्य जानने वाला ।

३ गुप्तचर, जासूस ।

रू० भे०—भेदू ।

अल्पा०—भेदियो ।

भेदीसवद-स० पु०—१ शब्द सुनकर निशाने पर वाण चलाने वाला । २ अजुन ।

३ दशरथ ।

भेदुर—देखो 'मिदुर' (रू भे)

भेदू—देखो 'भेदी' (रू भे)

भेद्य-वि०—भेदन करने योग्य, जो भेदा जा सके ।

भेभराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू भे)

भेमसेनीकपूर—देखो 'भीससेनीकपूर' (रू भे)

भेय—देखो 'भेद' (रू भे)

उ०—जिए सासन जे अवर, बहुय सिद्धत प्रसिद्धि । तै जाणइ सवि भेय वेय, वपु दै पिग बुद्धि ।—ऐ जै का स

भेयण—१ देखो 'भेदन' (रू भे)

२ देखो 'भुवन' (रू भे)

३ देखो 'भवन' (रू भे)

भेयणी—देखो 'भेदिनी' (रू भे)

भेयणी, भेयवी—क्रि० स०—गीला करना, भिगोना ।

२ औपधि को भावना देना । (अमरत)

भेयणहार, हारो (हारो), भेयणियो—वि० ।

भेयोडो—भू० का० कृ० ।

भेईजणो, भेईजवो—कर्म वा० ।

भेणो, भेवो, भेवणो, भेववो—रू० भे० ।

भेयोडो—भू० का० कृ०—भिगोया हुआ (स्त्री० भेयोडी)

भेयो—वि०—भीगा हुआ, गीला । (अमरत)

भेर-स० पु०—१ तरवृज, मतीरा ।

[स० भेर] २ एक प्रकार का वाद्य, जो भेरी नामक वाद्य से आकार-प्रकार में भिन्न होता है ।

उ०—रोडि द्रुमति डोल रवद, सहनाई भेर सह, निफेरी भेरी निनद, नीसाण धुवे । पचसद दमाम पूर, रुई हूड रिणतूर, प्रमाणै मेघ पडूर (पडूर), हैरान हुवै ।—गु रू व

३ बड़ा डोल ।

४ बड़ा नगारा ।

अव्य०—१ फिर, पुन ।

२ और ।

उ०—कदच जो कहा समद री सीप तिका पण न फवै इण रै समीप । भेर जो मीढा छोटी सी मीन, तिका ती लाजा मरती हुई जळ मे लीन ।—र हमीर

३ देखो 'भेरी' (मह, रू भे)

उ०—हुई पहिरावणी हरखीउ राई, अचल बधी राजकुमार । चोरी चढियो भोज की, वाजइ वरगू भूगळ भेर ।—वी दे

भेरव—देखो 'भैरव' ।

भेरवी—देखो 'भैरव' (अल्पा, रू भे)

भेरि—देखो 'भेरी' (रू भे)

उ०—हस्ती, हयवर, घन, देखकर, फूल्यो अग न माइ । भेरि दमामा एक दिन, सब ही छाड़े जाइ ।—दादूबाणी

भेरी-स० स्त्री० [स० भेरि, भेरी] १ युद्ध में प्रयुक्त वाद्य विशेष ।

उ०—१ खेलै कळावर वीग डडाळा पत्ताळा खमें, रणकै भेरी वीरूप सूरार भरै रीस । खेळा मिलै वीर चडा मारतडा पग खदै, अहै ऊमो सुरताणा चहूवाणा ईस ।—राव मयसाळ री गीत

२ तुरही के आकार का वाद्य विशेष ।

उ०—१ वीर अदग वाज्या, जयद्वक वाजी, समहर सामह्या, ग्रहग्रहतै श्रवक तरणै ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुगळ तरणै भूभूयाटि भूकिइ मिलकि फाटी ।—व सा

उ०—२ तूटा गज सिर करै श्रवका, दातूसळा वजावै डका । गत श्रत करि सिधू सुर गावै, वयड सूडची भेर वजावै ।—सू. प्र.

उ०—३ इण भात री अनेक आसीस दियै छै । असी गहरै साद कविराज बोलै छै, जाणै नगारै डकौ हुवो कना भेर घाव हुवो । इण भात कविराज आमीम देवै छै ।—रा मा स

३ डोलक ।

उ०—भमा अदग भेरी भुकार बधिरिकत दिगतर, रथचक्र घन-घनारवि पूरित गिरिघरणि विवर उत्फालितरज पुजमलिनीकत गगनमडल ।—व स

४ डोल ।

उ०—विसम ढाक स ठूकस ढमढमी, भरहरी भर भेरि विहामणी । उच्चरी तुररी कुररी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्धसी ।

—सालिमूरि



भेरीपरीक्षा—स० स्त्री०—७२ कलाओं में से एक ।

भेरू, भेरू, भेरूजी—देखो 'भैरव' (रू भे)

उ०—१ पाचू पाडव फेरि, घेरि अपणें घरि आया । चावड के सिर चोट, भैद भेरू का पाया ।—ह पु वां

उ०—२ मुलताणी ताखी मछीपटण तासतो टुकडी दुमैणा वासतो मीसजर भेरू तनसुख चोरसी अटायण दुमामी सालु जरकसी कचीयो चून्डी जामसाइ मुगीपटण जामावाडि सुप ।—व स

भेरी—देखो 'भेळी' (रू भे)

उ०—जन हरिदास भै सिध तजि, भेरै बैठ जाय । सो गुर सिख कूलै चल्या, अपणें मतं मिळाय ।—ह पु वा  
(स्त्री० भेरी)

भेळ—स० पु०—१ मिलावट, मिश्रण ।

उ०—१ ओसर मोसर माय, व्यावडा आडी आवें । चारै पारै मिळा, करहला मौज भणार्व । कूतरडी रै भेळ, गिणीजै नीरी माडी । पण । धिटाळै टळै, नरा अपजस अवाडो ।—दसदेव

उ०—२ थोडी घणी काळाई री भेळ ती म्हामे है, आ वात म्है आच्छी तरै जाणू ।—फुलवाडी  
२ वर्णं सकरता ।

उ०—बोलै मीठी बाण, काना लपराइयां करै । पारख बिना पिछाण, भेळ जगत में 'भैरिया' ।—महाराजा वल्लवतसिंह रतलाम

भेळकौ—स० पु०—मेल-मिलाप, प्रेम ।

उ०—आ झाली रीत कीसु अमरावा, लोग तरफ की छाडै लज । भगतणिया सू करै भेळका, भेळी नहीं रिए में भिडज ।

—कविराजा वाकीदास

२ भिडत, टक्कर ।

उ०—भेळका करता आ वात दोहू कानी देख भारी, सजै ना करारी सोभा भाईपै सुधार । गया वेहू फौजां राजी-वाजी व्है विचार गाढा, दिया डेग सोढा बागा अगजी दातार ।

—वादरदान घघवाडियो

३ आमना-सामना, मुलाकात ।

४ स्पर्श करने या छूने का भाव ।

भेलझी—देखो 'भेली' (अल्पा, रू भे)

भेळण—देखो 'भेळ' (रू भे)

भेळणी, भेळबी—क्रि० स०—१ मिश्रित करना, मिलाना ।

उ०—१ भासण उपमां और मनोरथ भेळिया, मझ आटी मखतूळ क मोती भेळिया ।—वा. दा

उ०—२ ताहरा त्रिभुवणसी री भाई पदमसी हुतो, तियै नू भवायो—'तू त्रिभुवणसी नू मारै तो तोनू टीको देवा । ताहरा पदमसी लोभायै थकै जाइ नै त्रिभुवणसी नू पाटा माहै, सोमल नाँव माहै, भेळियो—नैणसी

२ शामिल करना, सग में करना ।

उ०—१ ताहरा चारण री मा बोली—'वेटा चूडा ! केरडा आघेरां जगळ माहै टोघडा चरै छै, तिहा माहै भेळ आव । ताहरा चूडो केरडा ले अर भेळण गयो ।—नैणसी

उ०—२ जीत दळ सझि हलै राजा, वाजता रिएजीत वाजा । राव 'ईदी' माण रोळै, भीम गयदा हूत भेळै ।—सू प्र.

३ भोकना ।

उ०—१ कहै पिरोहित राज अणकळ, 'माहव' री 'विजपाळ' महा-वळ । भेळू तुरग भमर गज भारा, घडछू दुसह ऊजळी घारा ।

—सू प्र

उ०—२ दीठा भाव दिखावणा, हुकरणियां रा हाथ । हात नहीं मन किमि हिचै, भेळै अस भाराथ ।—वा दा

उ०—३ अँ राठीड महावळी, करो दिलासा तेड । भेळण जगां वारग्रह, वघे तुरगा खेड ।—रा रू

४ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव जीतकर अधिकार में ले लेना ।

उ०—१ गाव भेळियो, सारो लूटियो ।—सुदरदास भाटी री बात

उ०—२ पछै भाटिए कोस-कोस डेरी करनै उठै देवीसिध नू तेडियो । तेडनै ऊमरकोट भेळियो ।—नैणसी

उ०—३ सो उहा माहै बाहर निसरण वाळी कोई नहीं और अँ चलाय भेळै मो एक तो अरावै आगै जोर न लागै ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—४ पतळी भीत फळेह, माय ज सावत सूरमा । भेळी नाहिं मिलेह, रावत ऊभा राजिया ।—किरपाराम

उ०—५ तिकी ओ तो सदा ई कवारी घडा री भेळणहार रिए री रिझवार । चवरी ऊपर वीद जाय जिण भात बिहसती विळ-कुळतो अलवलियो भवर हुवो थकी ताखडी कवरा रा साथ नू लेय नै तुरी तोरिया ।—प्रतापसिध म्होकर्मसिध री बात

५ किमी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चराना ।

६ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओं को चराना ।

७ नष्ट करना, वर्नाद करना ।

८ तोड़ना ।

९ किमी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल करना ।

१० पहुचाना, पहुचा देना ।

भेळणहार, हारी (हारी), भेळणियो—वि० ।

भेळोडो, भेळियोडो, भेल्योडो—भू० का० कृ० ।

भेळीजणो, भेळीजवो—कर्म वा० ।

भेळप—स० पु०—१ साथ या शामिल रहने का भाव ।

उ०—इकलापी मिनख री आ इज गत ब्हिया करै । मिनख तो सगत अर भेळप सू सुघरै ।—फुलवाडी



२ प्रेम, अनुराग ।

उ०—लोग जुगल काना लग्या, घुघू वोल्थो गेह । भाया सू भेळप नही, विपत लिबी विधि तेह ।—वा दा

३ मित्रता, मेल ।

उ०—१ सावळ अणिया साकही, चोरग वणिया चेत । अणिया सू भेळप नही, हुकणिया सू हेत ।—वा दा

उ०—२ वटपाडा रा वस नू, माजी लीघो मार । भेळप राखे मान भय, मूसा सू मजार ।—वा दा

उ०—३ वो स्याळ दोना री भेळप मे भज घालण रा घणा ई कळाप करिया ।—फुलवाडी

उ०—४ हुळकर मलारराव दिखण मे वेटी री व्याव कियो जद भेळप रें तावें बुलायोडा व्याव ऊपर वूदी सू उमेदमिघजी राव राजा दिखण मे गया हुता ।—वा दा रूया

४ एकता, संगठन ।

उ०—१ जोध सवळ वळ अगळी, महवेची 'विजपाळ' । भेळप राखण आपणी, दाखी प्रीत विसाळ ।—रा रू

उ०—२ आप पवारो तो आप री इच्छा पण इण घर में सदा मपत वणी रें वै, म्हने ओ वरदान दिरावो । किणी भात घर वाळां री भेळप नी तूट ।—फुलवाडी

५ माझा सीरवाळी ।

उ०—चिडी बोली—भेळप री घघो तो वत्तो इज है, पण हाडा भाई थनं भेळो थुडणी पडेल, म्हारं जोडें विरोवर काम करणी पडेल ।—फुलवाडी

६ सयोग ।

उ०—लिछमी अर सुरसत री भेळप विरळी ठोड ई लाघै, पण उण बामाण रें पाखती ग्यान ई अणू तो ही अर माया ई अणू ती ही ।—फुलवाडी

भेळपदार-वि०—१ साथ रहकर या मिलकर काम करने वाला, साथीदार ।

२ मित्र, दोस्त ।

उ०—भेळपदार गिनावत भाई, समय देख पलटें सगळाई । कीजें जेज मती तू काई, आवें देमणोक सू आई ।

—श्री करणीदेवी री गीत

भेळमभेळ-क्रि० वि०—१ किसी कार्य या घटना की सलग्नता में, साथ ही साथ ।

उ०—मन में सोच्यो के अपारं घरं ले जायनं रोट्या तो पवाडणी ई पडेल । विरया ओ क्यू पडपच करू । भेळमभेळ अठे ई जीमाडणी सावळ है ।—फुलवाडी

२ शामिल ।

उ०—वो खुद अणुमाप घन कमायनं लावेल । अपारी घन उण रें भेळमभेळ जुड जावेल ।—फुलवाडी

भेळवाड-स० पु०—१ सम्मिश्रण ।

२ साथ या शामिल रहने की क्रिया या भाव ।

३ हिस्सेदारी, साझेदारी ।

४ फसल कटने के बाद अवशेषों को खेत में मिलने वाला घास सहित पमल का अवशिष्ट भाग ।

भेळाडणी, भेळाडवी—देखो 'भेळाणी, भेळावी' (रू भे )

भेळाडणहार, हारी (हारी), भेळाडणियो—वि० ।

भेळाडियोडो, भेळाडियोडो, भेळाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भेळाडीजणी, भेळाडीजवी—कर्म वा० ।

भेळाडियोडो—देखो 'भेळायोडो' (रू भे )

(स्त्री० भेळाडियोडो)

भेळाणी, भेळावी—क्रि० स० [भिलणी क्रि० का० प्रे० रू०] १ मिश्रित कराना, मिलवाना ।

२ शामिल कराना, संग में कराना ।

३ भोकाना ।

४ आक्रमण कराना ।

५ फुड के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीतकर शत्रु के द्वारा अधिकार करवाना ।

उ०—भेळाया भुरजाळ ज्यां, पाणेची गम पैठ । जिके कहाणा खोय जस, वसुयामडळ वेंठ —वा दा

६ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चराना/चरवाना ।

७ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि को पशुओं को चरवाना ।

८ नष्ट कराना, बर्बाद कराना ।

१० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल कराना ।

भेळाणहार, हारी (हारी) भेळाणियो—वि० ।

भेळायोडो—भू० का० कृ० ।

भेळाईजणी, भेळाईजवी—कर्म वा० ।

भेळाडणी, भेळाडवी, भेळावणी, भेळाववी—रू० भे० ।

भेळापी-स० पु०—१ एक साथ रहने की क्रिया या भाव ।

२ मैत्री दोस्ती ।

३ हिस्सेदारी, साझेदारी ।

भेळायोडो—भू० का० कृ०—मिश्रित कराया हुआ, मिलवाया हुआ

२ शामिल कराया हुआ, संग में कराया हुआ ३ भोकाया हुआ

४ लूटाया हुआ, लुटवाया हुआ ५ फुड के प्रसंग में कोई मोर्चा,

किला, गढ या गांव जीतकर शत्रु के अधिकार में करवाया हुआ

६ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चराया हुआ

७ फसल कटने बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि का पशुओं को

चरवाया हुआ ८ नष्ट कराया हुआ, बर्बाद कराया हुआ

९ लुटाया हुआ १० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु

किसी को अपने दल या गुट में शामिल कराया हुआ

(स्त्री० भेलायोडी)

भेलावणी, भेलावणी—देखो 'भेलाणी, भेलावी' (रू भे)

भेलावणहार, हारी (हारी), भेलावणियों—वि० ।

भेलाविघोडी, भेलावियोडी, भेलाव्योडी—भू० का० कृ० ।

भेलावीजणी, भेलावीजणी—कर्म वा० ।

भेलावियोडी—देखो 'भेलायोडी' (रू भे)

(स्त्री० भेलावियोडी)

भेलायोडी—भू० का० कृ०—१ मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ  
२ शामिल किया हुआ, सग में किया हुआ ३ भोका हुआ.  
४ लूटा हुआ ५ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या  
गाव जीतकर अधिकार में लिया हुआ ६ किसी खेत में खड़ा  
अनाज पशुओं द्वारा चरा हुआ ७ फसल कटने के बाद अवशिष्ट  
घास-फूस, चारा आदि पशुओं को चराया हुआ ८ नष्ट या बर्बाद  
किया हुआ ९ तोड़ा हुआ १० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-  
सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल किया हुआ

(स्त्री० भेलायोडी)

भेलायी—स० पु०—विभिन्न प्रकार के पदार्थों का सम्मिश्रण ।

भेली—स० स्त्री०—गुड़ या किसी अन्य वस्तु की गोल पिंडी या बट्टी ।

उ०—शेकर गुल्ल न कुरटता ऊदरी गुल्ल री भेली रै हेटै आयगी ।

—फुलवाडी

रू० भे०—भेली ।

अल्पा०—भेलडी ।

भेळो, भेलो—वि० (स्त्री० भेळी, भेली) १ एकत्रित, उकट्टा ।

उ०—१ तद पाया दोनू सरदारा री लीन्हो । सो वटका-वटका  
न्यारा सा चुग, भेळा कर, ओठिया लिया, बीजा सारा नै दाग कर  
पाछा आया ।—सूरेखीवै काधलोत री वात

उ०—२ भीलडी चुग किया भेला, वो'त हित सू घोर । प्रीत कर  
रघुनाथ पाया, कोय'क खाडी कोर । ती किसोर जी किसोर, किरपा  
करणहार किसोर ।—भगतमाल

उ०—३ भेळो तै कीधी भलो, जळहर ओ जळजाळ । घुन मुघरी  
पुहमी धवै, दुसह निवार दुकाळ ।—बा. दा

उ०—४ ठाकरा रै मोकळा वरसां सू कोई वाळगोपाळ नी हुवी ।  
रावळी मे ठकुराण्या री घाड भेळी कर घाप्या पण नुवो कानली  
नी वापरथो ।—दसदोख

उ०—५ जब राजा दोया नै भेळा कर पूछथो ।—भि द्र  
२ शामिल, साथ ।

उ०—१ अर जाहरा कुवरजी ! जीमण नू बुलावै ताहरा काळी नू  
भेळो वेसाणज्यो ।—नैणसी

उ०—२ राव हूँ रौ काको गिरघर चादावत पण, दोलताबाद  
दूदा भेळो काम आयी ।—नैणसी

उ०—३ नरसिंघ ऊदावत । खेतसीरै गूँ काम आयो मानसिंघ

भेळो ।—नैणसी

उ०—४ ताहरा जमलै कह्यो, ठाकुरै जै कही रै वडकु  
हुँवै ती भेळी सुवाणी ।—लाखें फूलाणी री गीत  
३ सम्मिलित ।

उ०—तरै राव नामनै समरा, सूरार गाढा था तठै आय  
भेळा हुय टीकी राव सुरताण रै काढियो ।—नैणसी  
४ सकुचित ।

उ०—मगरमच्छ वादरा री वात सुणु नै धणी ई भेळ  
विह्यो, पण धवै काई कारी लागै ।—फुलवाडी  
५ सचित या मग्रहित ।

ज्यू—रूपया भेळा करणा ।

उ०—१ आपरी माया री विहद वणाणती वगत वो  
सखिया जेडा दांता नै काढतो फेर कै'वण लागी—कोई  
ऊमर मे इत्ता कांकरा ई भेळा नीं कर सकै जित्ता म्है मो  
करिया हू ।—फुलवाडी

उ०—२ नगर सेठां रै ई पाछो विणज में वरगत ।  
दिना मे गई उण सू दूणी माया भेळी करनै बतावेला ।

—पू

६ समेटने की क्रिया या भाव ।

ज्यू—विद्यावणा भेळा करना ।

७ मिश्रित हुआ, मिश्रित ।

८ छोटी नाव, डोनी ।

९ साभा, सीर ।

उ०—चोमासा रा दिन नैडा आया तो एक दिन हाडो ।  
कह्यो—चिडी बँन, अंस अपा भेळी खेती करा थे ।—फुलव  
१० व्यवस्थित रूप से जमाने की क्रिया ।

ज्यू—गावा भेळा करणा, विखरघोडी समान भेळी करणी  
रू० भे०—भेरी, भैरी, भैली ।

भेध—देखो 'भेद' (रू भे)

उ०—१ वीजई वाजवट आइ नइ वइठी, देवांग वसत्र प  
देव । आगळि सखी आभरण आणइ, भलम सगार लं  
भेध ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भूलै फार सताव भेध, भल चाहे भारै । श्री  
अगद आदि, सुणता प्रसतारै ।—सू प्र

उ०—३ सो भरत डड अर करत सेव, भटकियो वबर इ  
भेव । मुणियो खिज दै फुरमाण मूक, तू नोकर न दियू हा

—

उ०—४ भव तूं जाणै भेध, वेध्यो मछ जिणवार री ।  
सहदेव, वेल करै ती आ वगत ।—रामनाथ कवियो

उ०—५ दरसण हुवा न देव, भेव विहृणा भटकिया । सूना  
सेव, जूण गमाई 'जेठवा' ।—जैतदान बारहूठ

उ०—६ सता सायक तू सदा, दुसटा खायक देव । केसव तो वर-  
गुन करू, भल गुरु दीनी भेव ।—भगतमाळ

उ०—७ दीनवधु देवदेव, भाखत स्रुति भ्रह्म भेव । जेता जग  
सो अजेव, गहर गरुड गाम रे —र ज प्र

उ०—८ कळजुग मे कळदार विन, भाया पडियो भेव । जिण घर  
माया जोर मे, दरसण आवै देव ।—ऊ का

उ०—९ रज-रज हुआ 'जगो' भरियो रज, भिळवा मुगत जाणियो  
भेव । समहर भ्रुगट लियण दससहस्र, दम सो करग ववाया देव ।

—जगरामसिध री गीत

भेवणो, भेववो—क्रि० स० [स० भेदनम्] १ भिगोना, आर्द्र करना ।

उ०—१ वणतइ वर जइ पहिरीयउ वागउ, भल चोली सूघइ सू  
भेव । अमही कळा देखजै ईसर, देवा ? विराजइ देव ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ठाकुर कहाँ—रीही आवै है । मो नू उठाणो, वैठो करो,  
छोतरा भेवो ।—प्रतापमल देवडा री वात

२ तरबतर करना ।

भेवणहार, हारो (हारी), भेवणियो—वि० ।

भेवाडणो, भेवाडवो, भेवाणो, भेवावो, भेवावणो, भेवाववो

—प्रे० रु० ।

भेविओडो, भेवियोडो, भेव्योडो—भू० का० कृ० ।

भेवीजणो, भेवीजवो—कर्म वा० ।

भेवभाव—देखो 'भेदभाव' (रु भे )

भेवाडणो, भेवाडवो—देखो 'भेवाणो, भेवावो' (रु भे )

उ०—कहियो—गाढा सन्दोरा हाँ । खावै को फेर करावियो है,  
अमल भेवाडिया है ।—प्रतापमल देवडा री वात

भेवाडणहार, हारो (हारी), भेवाडणियो—वि० ।

भेवाडिओडो, भेवाडियोडो, भेवाडघोडो—भू० का० कृ० ।

भेवाडोजणो, भेवाडोजवो—कर्म वा० ।

भेवाडियोडो—देखो 'भेवायोडो' (रु भे )

(स्त्री० भेवाडियोडो)

भेवाणो भेवावो—क्रि० स०—१ भिगोवाना, आर्द्र करवाना ।

२ तरबतर करवाना ।

भेवाणहार, हारो (हारी), भेवाणियो—वि० ।

भेवायोडो—भू० का० कृ० ।

भेवावीजणो, भेवावीजवो—कर्म वा० ।

भेवायोडो—भू० का० कृ०—१ भिगोवाया हुआ, आर्द्र करवाया हुआ

२ तरबतर करवाया हुआ

(स्त्री० भेवायोडो)

भेवावणो, भेवाववो—देखो 'भेवाणो, भेवावो' (रु भे )

भेवावणहार, हारो (हारी), भेवावणियो—वि० ।

भेवाविओडो, भेवावियोडो, भेवाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भेवावीजणो, भेवावीजवो—कर्म वा० ।

भेवावियोडो—देखो 'भेवायोडो' (रु भे )

(स्त्री० भेवावियोडो)

भेवो—देखो 'भेद' (अल्पा, रु भे )

उ०—सियाळू ऊनाळू विमळ वरसाळू सब मुखी । दयाळू ही देवा  
भजन विन भेवा द्रप दुखी ।—ऊ का

भेस—देखो 'भेख' (रु भे )

भेवियोडो—भू० का० कृ०—१ भिगोवा हुआ, आर्द्र किया हुआ २ तर-  
बतर किया हुआ ।

(स्त्री० भेवियोडो)

३ देखो 'भेख' (रु भे )

उ०—जोगिया नै कहियो रै आदेस । आऊगी मैं, नाहि रहूगी,  
कर जोगन को भेस ।—मीरा

भेसज—स० पु० [स० भेपज] १ ओपधि, दवा । (हि को )

२ चिकित्सक, वैद्य ।

रु० भे०—भेखज, भैखज ।

भेसधारी—भेस को धारण करने वाला ।

उ०—सावक ही प्रससवा जोग अराधक । साव ही प्रससवा जोग  
अराधक । पिण खोटा नाणा रा साथी भेसधारी अराधक नही ।

—भि द्र

भेसाद—देखो 'भैसाद' (रु भे )

उ०—नीवाज मदन परमार विसनू-अरथ मंदिर करायो जद खेज-  
ढला सू भेसाद री मूरत आय विराजो ।—वा दा रुपा

भेहरण—स० पु० [स० भयहरण] ईश्वर, भगवान ।

वि०—भय को दूर करने वाला ।

भै—स० स्त्री०—भेड के बोलने की ध्वनि ।

उ०—गोवै चरतोडी पेडा थिग गेडी, भै-भै करतोडी भेडा ढिग  
भेडी । ऊणा ऊरणिआ खरसणिआ ओलै, डरडा नरडा विण अर-

डादै टोलै ।—ऊ का

रु० भे०—भै ।

भै—देखो 'भैस' (रु भे )

भैचक—देखो 'भैचक' (रु भे )

भैचकणो, भैचकवो—देखो 'भैचकणो, भैचकवो' (रु भे )

उ०—अजक पर घर थरक उद्रक चमक उजबक तुरक भैचक,  
अटक कटका सत्रा अतक अरक तक ओजास । पति मुलक जदवस

दीपक कनक बगसण लियण रूपक, लखपती सक सुयण लायक  
जगि सरस जस वास ।—ल पि

भैचकणहार, हारो (हारी), भैचकणियो—वि० ।

भैचकिओडो, भैचकियोडो, भैचक्योडो—भू० का० कृ० ।

भैचकीजणो, भैचकीजवो—कर्म वा० ।

भेण—देखो 'बहन' (रु भे )

भेणचोद—देखो 'भेनचोद' (रू भे)

भेण्ड—देखो 'बहन' (मह, रू भे)

उ०—जरिया हूँ पेचो मेरे सायब ताई ल्याई रे। लपाभपा रो  
चूनड तेरी भेण्ड ताई ल्याई रे।—लो गी

भेन—देखो 'बहन' (रू भे)

उ०—छऊ भेन छोटी दहू ओड छाजै, विचै पाट राजीव माजी  
विराजै। खडो लागडो वीरवीराधि खेतू, करै रागडा छागडा राह  
केतू।—मे म

भेफोड—देखो 'भूफोड' (रू भे.)

भेरू—देखो 'भैरव' (रू भे)

उ०—चडी हाक वागता घूमडी भेरू डाक चोई, नार-तडी तमासै  
लागता गैण भाग। मडी तोपा नागणी जागता आयो रोस मायै,  
नवीपरा पीधळै उडडी काळो नाग।—जसो आढो

भेस—स० स्त्री० [स० महिप] १ गाय जैसा ही दूध देने वाला एक  
भारी डील डील वाला पशु।

उ०—कीच निहारघा कनै, भेस रोचळणू भारी। पैल बलद  
पग प्रगट, खिसै नह दीठा खारी।—ऊ का

२ आक या मदार का फल जिसमे रुई के आकार के रेशे निगलते  
हैं और जिन पर आक के बीज चिपके रहते हैं।

३ लाक्षणिक अर्थ मे काली व मोटी औरत।

४ क्रूर।

रू० भे०—भइस, भइस, भैइसि, भै', भैसि, भैसी, भै', भैस, भैसी।  
अल्पा०—भैसडली, भैसडी।

भैसडली, भैसडी—देखो 'भैस' (अल्पा, रू भे)

उ०—भैसडिया दस बीस सुवाडी बाखडी, चर चर लीला घास,  
वाडा मे रहे खडी। चोखा चावळ आण सकर मे ओलणा। एता  
दे करतार तो फेर नई बोलणा।—अज्ञात

भैसडी—देखो 'भैसो' (अल्पा, रू भे.)

भैसपूछी—स० पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष जिसकी पूछ पृथ्वी को  
छूती हो। (शा हो)

रू० भे०—भैसापूछी।

भैसागुल—स० पु०—एक प्रकार का गुल विशेष। (अमरत)

रू० भे०—भैसागुल।

भैसात—स० पु०—विसायती।

उ०—तबोली सुधार ठीक भैसात ठाह। नव नार इण नाम कहे  
हिव पाचै कारू।—घ व ग्र

रू० भे०—भैसात।

भैसाद—स० स्त्री०—माहीपासुर मर्दनी, एक देवी का नाम।

रू० भे०—भैसाद।

भैसापाज—स० स्त्री०—महिपासुर नामक राक्षस को मारने वाली  
देवी, दुर्गा।

भैसापूछी—देखो 'भैसपूछी' (रू भे)

भैसामाता—स० स्त्री०—बडे-बडे दानो का पीतला रोग।

भैसालसन—स० पु०—एक प्रकार का गहरा लाल दाग या निशान जो  
प्राय गाल, गर्दन या पेट पर होता है।

भैसासुर—स० पु०—महिपासुर नामक एक राक्षस।

भैसि, भैसी—देखो 'भैम' (रू भे)

भैसी—स० पु० [स० महिप] १ भैस नामक पशु का नर, महिप।

उ०—१ कजली वन कुजर घणा, अग भैसा अगराज। पशु पक्षी  
सब भात कै, अक अक सिरताज।—गजउद्धार

उ०—२ भरै पत्र भैसा अजा रथ भोगै, अलकका छका छाक दाह  
अरोगै।—मे म.

२ मदार वृक्ष का फल।

३ लाक्षणिक अर्थ मे काला व मोटा मनुष्य।

रू० भे०—भइसी।

अल्पा०—भैसडी, भैसही।

भैस—स० पु० [स०] १ नक्षत्र, तारा।

२ देखो 'भै' (रू. भे)

३ देखो 'भय' (रू भे)

उ०—हुवै मुवा विन मुकत नह, भै विन हुवै न प्रीति। सुधा पिया  
विन अमरपद, ह्वै न दिया विन क्रीत।—वा दा

उ०—२ उपन्ना दागव दोय अजीत, भयै तिरु देव अथा भै-भीत।  
पड्डा आण तुहाळी पूठ, उवार विसन कहै सुर ऊठ।—ह र

भैखज—देखो 'भैसज' (रू भे)

उ०—जग कायरि काळख भडै, घण खाघा रण घाव। भखिया  
कडवी भैखजा, तूटे तण रो ताव।—रेवतसिंह भाटी

भैडी—वि० (स्त्री० भैडी) १ भयकर, डरावना, खतरनाक, बुरा।

उ०—१ हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हाणी, जग मे दैविच्छा  
किएही नह जाणी। वादळ बीजळिया नभ मे नहि नैडी, भैजी  
भणणायो भळकी पुल भैडी।—ऊ का.

उ०—२ निरगुण अणविद्या छाई जग जिगु। विद्या बीसरगो  
सद्गुण वस विस्णु। हा हा जगदीस्वर भैडी पळ हेरी, गाफल दुनिया  
पर भैडी पुल गेरी।—ऊ का

रू० भे०—भैडी।

भैचक—वि०—१ भौचकका, चकित, विस्मित।

२ घबराया हुआ।

३ भयभीत, डरा हुआ।

उ०—१ रघुवर तित रहयाजी, मोटी कर मया। भैचक खळ  
भयाजी, गहबळ तज गया।—रू

उ०—२ छुडावण घणा खपियो दिली छातपत, रुक भैचक हुवा  
देख दोय राह। पुराण नवा 'वीका' तणा परवाडा, सीस बांध  
गयो जगळ-पातमाह।—द दा

४ महान् बडा, प्रचण्डकाय ।

५ भयकर, डरावना ।

स० पु०—यह एक भयकर जलजन्तु होता है, जो मीका पाकर भैंस या घोड़े जैसे पशु को अपने तन्तु के बल दबा लेता है । यह आकार में गोल होता है । जब यह जल में चक्कर काटना है तो पानी भावरे काटने लग जाता है । इसके चारों ओर कई तंतु होते हैं, जिनसे यह अपने शिकार को फसा लेता है । यह जानवर प्रायः चम्बल नदी में भैंसरों के पास पाया जाता है ।

र० भे०—भयचक, भैंचक, भैंचक, भैंचक्य ।

भैंचकणी, भैंचकवी—क्रि० अ०—१ भयभीत होना, डरना ।

उ०—१ मोहरें चढिया मयद रैं, भैंचक जाय भडाक । गैवर भूलै गाळवो, चीसै चढ चित चाक ।—वा दा

उ०—२ जळनिध सहल जुआण, 'मामा' तू वेडा सजै । भैंचकि पडै मगाण, मिमर अरव ऐराक मफ ।—वा दा

उ०—३ छलग वाछरु घरु न उच्छरै चरै चिरै । फलग भैंचकी थकी न नैचकी चकी फिरै ।—ऊ का  
२ सभ्रमित होना ।

उ०—रीफे साभळ रांग, भीजै रस नह भैंचक । नंडो आवै नाग, पकडीजै छावड पडै ।—बां दा

३ भौचक्का होना, स्तमित होना ।

४ चौकना ।

५ घबराना ।

भैंचकणहार, हारो (हारी), भैंचकणियो—वि० ।

भैंचकियोडो, भैंचकियोडो भैंचकियोडो—भू० का० कृ० ।

भैंचकीजणी, भैंचकीजवी—भाव वा० ।

भैंचकणी, भैंचकणी—र० भे० ।

भैंचकियोडो—भू० का० कृ०—१ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ  
२ सभ्रमित हुवा हुआ ३ भौचक्का हुवा हुआ, स्तमित हुवा हुआ  
४ चौका हुआ ५ घबराया हुआ  
(स्त्री० भैंचकियोड़ी)

भैंचकणी, भैंचकणी—देखो 'भैंचकणी, भैंचकणी' (रु भे )

उ०—१ हुवो सोच आसुरां हुवो मद सोच दिलेसर । हुवा देस भैंचक हुवा अवेनेस भयकर ।—रा रु

उ०—२ दडीदडी तूट माथा कमवा पावडा देवै, रिमा सीस खाथा सार वजावै आराण । हैकपे कायरा प्राण छूटगा वीराण हासै, भैंचक भूलोक रत्या थभायो सु भाण ।—वादरदान घघवाडियो भैंचकणहार, हारो (हारी), भैंचकणियो—वि० ।

भैंचकियोडो, भैंचकियोडो—भू० का० कृ० ।

भैंचकीजणी, भैंचकीजवी—भाव वा० ।

भैंचकियोडो—देखो 'भैंचकियोडो' (रु भे )

(स्त्री० भैंचकियोड़ी)

भैंण—देखो 'वहन' (रु भे )

उ०—माळीडा री डीकरी यै तू छै घरम की भैंण, तेरै कनौकर डोलो नीसरचो यै किम यै उमावै जाय वाई म्हानै भेद बता दै यै ।  
—लो गी

भैंणडी—देखो 'वहन' (अल्पा, रु भे )

उ०—आई थाकी माकी जाई भैंणडी जी राज जी । पीया घोय घोय जी क पगल्या पीव ।—लो गी

भैंणचोद—देखो 'भैंचोद' (रु भे )

भैंणो—देखो 'वैणो' (रु भे )

भैंत—१ देखो 'भीति' (रु भे )

उ०—नही तू काळ नही तू क्रम्म, नही तू व्याळ नही तू ब्रह्म ।  
नही तू देव नही तू दैत, नही तू भंव नही तू भंत ।—ह र  
२ देखो 'वैत' (रु भे )

भैंत—देखो 'वहन' (रु भे )

उ०—वाई जैसिघजी की 'अभा' नै विवाही, अभसिघजी भैंत व्याही जैसा ही ।—शि व

भैंतडी—देखो 'वहन' (अल्पा, रु भे )

उ०—आई तेरी मा की जाई भैंतडी जी राज, ओ वीरा रोय रोय तूक समद भी, कोल वीर ऊपर चढ हैली दियो जी राज, यै वाई रुसडी नणद जानै छाया ।—लो गी

भैंचोद—स० पु०—अपनी वहन से कुकर्म करने वाला (गाली वाजारु) ।

र० भे०—भैंणचोद, भैंणचोद ।

भैंभग—वि० [५० भय + अग] १ भयभीत ।

उ०—है हीस हुअ, भैंभग भुअ, । भुज फीज भडा, घण रूप घडा ।  
—गु रु व

२ देखो 'भूजग' (रु भे )

भैंभीत—१ निर्भय, निहत्तर ।

उ०—१ गोळा गावै गीत, राग मुणावै 'राण' नै । 'भारत' री भैंभीत, आछी लडै 'उम्मेदियो' ।—अज्ञात

उ०—२ चूडा नावै चीत, काचर काळाऊ तणा, भूप भयो भैंभीत, मडोवर रै मा लियै ।—आल्ही वारहूठ  
२ जवरदस्त, बडा ।

उ०—१ 'गजन' सुतण साह छळ गाडो, भाजै भुरज उरड भैंभीत ।  
पाण सुजड ऊपाडै पोगर, जोरावर अहेरी रिण जीत ।

—महाराजा जमवतसिघ री गीत

उ०—२ रजी घोम सू वीटिया गज्ज राजै, वडै अगडै जाणि रीछ विराजै । भयाणक भैंभीत सोभत भार, क्रमै जाणि आधी निसा अवकार ।—वचनिका

३ देखो 'भयभीत' (रु भे )

भैंभेकार—स० पु०—हाहाकार ।

उ०—'जगहू' जग जीवाडियो, भाजै भैभंकार । कीधी जै जंकार  
अन, बागी राय सधार ।—वा दा

भैमी—देखो 'भैमी' (रु भे)

भैमी—देखो 'वहमी' (रु भे)

भैया—स० पु०—भाटी यश की एक पाया जो मुगलमान हो गए हैं ।

भैयो—देखो 'भाई' (अल्पा, रु भे)

उ०—वीराजी मनावें मीरा ये मानों, भैया री पत राग, भक्ति  
छोड़ी हरिनाम की ।—मीरा

भैरवाण—देखो 'भैरव' (महु., रु भे)

भैरव—स० पु० [स०] १ तेल और गिहू से पूजे जाने वाले एक  
देवता, जिनकी उत्पत्ति शिव ने मानी जाती है ।

वि० वि०—भैरव की उत्पत्ति के विषय में मेरी पौराणिक कथा  
है कि एक बार ब्रह्मा और विष्णु गर्वोद्धत हुए और उन्होंने वाद-  
विवाद में शिव की निंदा करके उनका अपमान किया । तब भग-  
वान् रुद्र की कृपा से एक महान् ज्योति प्रकट हुई, जिसमें मे महा-  
काल भैरव की उत्पत्ति हुई । इस भैरव ने अपनी शक्तियों के नामून  
में ब्रह्मा के पाँचवे मुख को, जिसने शिव की निंदा की थी काट  
छोड़ा । परिणामतः वह गिर भैरव के हाथ के चिपक गया । ब्रह्मा  
का गिर कटने के साथ एक ब्रह्मा-हत्या नामक कन्या का जन्म हुआ,  
जिसने भैरव का पीछा किया । चूँकि शिव ने भैरव को काशी का  
अधिपति बनाया, अतः वह उस कन्या ने पीछा छुड़ाने के लिए  
नाना तीर्थों में घूमता हुआ काशी पहुँचा । वहाँ वह कन्या पाताल  
में प्रवेश कर गई एवं भैरव के हाथ में भी गिर छूट गया, अतः  
यह स्थान कपालमोचनतीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ । ब्रह्मवैवर्त  
पुराण के अनुसार भगवान् श्री कृष्ण के दक्षिण भेग में भयंकर,  
सहार, काल, असित, क्रोध, भीषण, महाभैरव एवं राट्वाग नाम  
के अष्टभैरव उत्पन्न हुए । कई लोगों का मत है कि वीरभद्र और  
भैरव एक ही हैं परन्तु वास्तव में दोनों अलग-अलग हैं । वीरभद्र  
के अनुयायी वीरों की संख्या ५२ है एवं भैरव ६४ माने गए हैं । वे  
मुख्यतः काला और गोरा दो प्रकार के भैरव माने गए हैं जिनकी  
पूजा शनिवार या रविवार को की जाती है तथा इनका स्वरूप  
उग्र माना जाता है एवं माथ में दो कुत्ते इनके आगे मेवक के रूप  
में माने जाते हैं ।

६४ भैरवों की नामावली निम्न प्रकार है—१ उरध केम (उध्व-  
केश) । २ विष्पाक्ष । ३ घोर रुद्रिण । ४ रक्त नेत्र ।  
५ विगाक्ष । ६ । ७ अस्वर । ८ स्वीय कुभ या  
स्वयभुव । ९ इडाचार । १० इंद्र मूरति (इन्द्र-मूर्ति) । ११  
कोलाक्ष । १२ उपपाद । १३ रितुत्ताव (रुद्रतूत्तमव) । १४ मिद्धेय ।  
१५ वलिक (वलिक) । १६ नीलपाद । १७ एक दण्ड (एक  
दण्डक) । १८ इरापति । १९ अघहारी । २० विघ्नहारी ।  
२१ अतक । २२ उरधपाद (उध्वपाद) । २३ कवल (कम्बल) ।

२४ गजज (गजज) । २५ गर (गर) । २६ मोमुग ।  
२७ जपान (जपान) । २८ गमुनाथ (गमुनाथ) । २९ बाग्गु ।  
३० जटाल । ३१ अजटाल । ३२ । ३३ न्कार  
(नकार) । ३४ अटवारी २५ टगपाणि । ३६ गणि  
(गणि) । ३७ अटगु (अटगु) । ३८ जवर (जवर) ।  
३९ रुकुनिग । ४० तट्टिनि (तट्टिनि) । ४१ । ४२  
रतुर (रतुर) । ४३ पनार । ४४ नदक (नन्दक) । ४५ केन्हा-  
रवागी । ४६ पनाथ । ४७ वरवरी (वरवरी) । ४८ भीम-  
रूपक (भीमरूपक) । ४९ भन्पक्ष (भगपक्ष) । ५० कालमेघ  
(कालमेघ) । ५१ भुयात । ५२ तम्बोठ (तम्बोठ) । ५३  
रीर । ५४ यगिज । ५५ मुग्जातिार । ५६ दुहुव ।  
५७ पातात्र-रक्षक । ५८ महाउक्ष । ५९ ज्यापाद । ६०  
यसोमिथा । ६१ पटारव । ६२ दुरागेह । ६३ मणिभद्र ।  
६४ रमाधवा ।

मन्त्रार के अनुसार ये ६४ नाम निम्नांकित ८ भागों में विभक्त हैं।  
(१) १ भगिताग । २ विजालाक्ष । ३ मार्तण्ड । ४ मोदक-  
प्रिय । ५ स्वर्द्ध । ६ विष्णुगुप्त । ७ भैरव । ८ म-  
रानर ।

(२) १ म । २ क्रोध । ३ जटाधर । ४ विद्वम्प । ५ वि-  
पाक्ष । ६ रूपधर । ७ वज्रधन । ८ महापाय ।

(३) १ चट । २ प्रलयांतक । ३ भूमिकप । ४ नीलकण्ठ ।  
५ विष्णु । ६ कुत्तपालक । ७ मुष्णपाल । ८ रामपाल ।

(४) १ क्रोध । २ विगलक्षण । ३ अक्षम्प । ४ घरा-  
पात । ५ कुट्टिन । ६ मयनाथ । ७ रुद्र । ८ पितामह ।

(५) १ अर्धतभैरव । २ वटुनाथक । ३ नार । ४ नूत-  
यैताल । ५ विनेय । ६ विपुरान्तर । ७ वरद । ८ पर्वतवासी ।

(६) १ भीषण । २ भयहर । ३ सर्वज्ञ । ४ कालाग्नि ।  
५ महारुद्र । ६ दक्षिण । ७ मुषहर । ८ अस्तिधर ।

(७) १ कपाल । २ जगिभूषण । ३ हस्तिचर्मस्वरवर ।  
४ योगीश । ५ अक्षराक्षक । ६ सर्वज्ञ । ७ सर्वदेवेश ।

८ सर्वभूतहृदिस्थित ।  
(८) १ महारभैरव । २ अतिरिक्ताग/कालाग्नि । ३ प्रियवर ।  
४ घोरनाद । ५ विशालाक्ष । ६ योगीश । ७ ।

८ ।  
२ शिव महादेव । (हिं को)

३ शिव के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं ।

४ साहित्य में भयानक रत ।

५ ताल के मात मुख्य भेदों में से एक ।

६ संगीत में एक राग का नाम ।

उ०—छतीम राग छाजती, निहाव घाव नोवती । भजै विभाभ  
भैरव, रली कली कली रव ।—रा रु

७ एक प्रकार का घड़िया वस्त्र । (सभा)



उ०—चीणी विलीदी जरवाफ, सुखम वस्त्र बुलबुल, चसमा, श्रवल कथीपा, अटाण वस्त्र, टसरीया भैरव, नारी कुजर, सखरा सेला, सीलूथान, घणा मुगटा ।—व स  
८ एक प्रकार की चिड़िया विशेष, जिसके रात्रि में शकुन लिए जाते हैं ।

वि० [स० भै+रव] १ भीषण शब्द वाला ।

२ जो देखने में भयकर हो, भयानक ।

३ घोर विनाश करने वाला ।

४ बहुत उग्र, तीव्र या विकट ।

रू० भे०—भइरव, भयरव, भेरव, भेरु, भेरु, भैरवी, भैरु, भैरु, भैरुजी ।

अल्पा०—भैरवी, भैरुडी ।

मह०—भैरवाण ।

भैरवभाष्य, भैरवभाष्य—स० स्त्री०—पहाड आदि बहुत ऊँचे स्थान से मनोकामना की सिद्धि के लिए महादेव या भैरव का नाम लेकर छलांग लगाने की क्रिया ।

रू० भे०—भापभैरव, भाफभैरव ।

भैरवभोली—स० स्त्री० १ दशनामी सन्यामियों द्वारा भिक्षा मागने का एक प्रकार का विशेष ढंग जिसमें भोख मागते समय यदि कोई घर छूट जाता है और वह भोख देना चाहता है तो भिक्षुक उल्टे पैरों उस घर पर जाता है न कि घूमकर ।

२ इस प्रकार की भिक्षा की भोली ।

रू० भे०—भैरुभोली ।

भैरवमस्तक—स० पु०—संगीत में ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक ।

भैरवा—स० पु०—पक्षी विशेष । (सभा)

भैरवी—स० स्त्री०—१ तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार की देवी विशेष जो महाविद्या की मूर्ति मानी जाती है ।

२ चामुण्डा, दुर्गा, देवी ।

उ०—१ भवानी नमो दच्छ लोकेम छोनी, भवानी नमो जोग निद्रा अजोनी । भवानी नमो जोगनी जुथ्य मथ्यी, भवानी नमो भैरवी बीस हथ्यी ।—मे म

उ०—२ देवी कोमारी चामुंडा विजैकारी, देवी कुवेरी भैरवी क्षेमकारी । देवी अगस ब्रह्म हस्ती मयखे, देवी पंख केकी गरुड धिरट पखे ।—देवि

३ उल्लू से मिलती जुलती एक प्रकार की चिड़िया का नाम ।

(कोचरी)

उ०—उणी वखत डावी तरफ नदी री डा' पर आयोडा गोगा खेजडा पर बैठयोडी भैरवी बोली—कै SS क—कै SS क—चरर चरर चरर ! रात रा पै'ला पौर मे वैरण इसी नी बोली के जाणे भाठा में करवत चाली व्हे ।—रातवासी

४ पार्वती ।

५ संगीत में भैरव राग की पत्नी, जो प्रातःकाल गाई जाती है ।

६ एक प्रकार का बढिया वस्त्र ।

रू० भे०—भइरवी, भयरवी, भैरवी ।

भैरवीचक्र—स० पु०—तांत्रिकों का वह अनुष्ठान जो कुछ विशिष्ट तिथियों, नक्षत्रों व समय में किया जाता है, जिसमें चक्र में बैठकर देवी पूजन व मद्यमान करते हैं ।

भैरवेस—स० पु० यौ० [स० भैरव+ईश] शिव, महादेव ।

भैरवी—देखो 'भैरव' (अल्पा रू भे)

उ०—खांडा हत्यउ भैरवी रै कर डमरु नै डाक । तिणु अवसर प्रगटवी तिहां, आव्यो मारती हाक ।—स्त्रीपाल

भैरस—स० पु० [स० भय+रस] भय उत्पन्न करने वाला साहित्यिक रस ।

उ०—अपछरा सिंगार रस किआ । नारद हास रस किआ । काइ-रे भैरस बीभच्छरम किआ । सुरे सातरस अदभुतरस किआ ।

—र वचनिका

भैराहर—स० पु०—ऊठ ।

उ०—१ वुगर वलीच ववाळ, जूग जालोरी जव्वर । अजगर कध अझीभ, अगुट मुदगर भैराहर ।—सू प्र

उ०—२ 'नाहर' सुत नरनाह, कहै हाजर छक कारण । घैसाहर सिणगार, दुती भैराहर दारण ।—सू प्र

उ०—३ सीसा भार सतोल, भार बाणा गाढाभर । गज भार गोळिया, भार गोळा भैराहर ।—सू प्र

भैरिपु—स० पु० [स० भयरिपु] ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—पार ब्रह्म दुख हरण, प्राण तहां मन लाय । भेद सहत भैरिपु भजो, हरि गाईजै त्यु गाय ।—ह पु वा

भैरु—देखो 'भैरव' (रू भे)

उ० तणै तार सँतार बीणादि तंत्री, वणै बीस वत्तीस भैरु वजंत्री । डफा मादळा नाद डैरु डमकै, घरा व्योम पाताळ धूजै धमकै ।—मे म

भैरुजी—स० पु०—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।

२ देखो 'भैरव' (रू भे)

उ०—भैरुजी ऊँचै सँ घोरै थारो देवरी, भैरुजी, घजा अँ फरुकै असमान, सेवगा की, श्री बाबा, भली करो ।—लो गी

भैरु भोली—देखो 'भैरवभोली' (रू भे)

भैरु डी—देखो 'भैरव' (अल्पा., रू भे)

भै'रौ—१ देखो 'भवारी' (रू भे)

२ देखो 'भेळी' (रू भे)

उ०—मोहरै महराण रँ दळा रा महाबळ, भुजा वळ वनपती कीध भैरी । राजि रा पमाडा हवै सह रीघिया, बीघिया कवाडां जही वँरी ।—नगराज खीची री गीत

(स्त्री० भैरी)

भैली—१ देखो 'वहल' (रू भे.)

२ देखो 'भेली' (रू भे)



भँळो—देखो भँळो' (रू भे)

उ०—हमें सेतराम अठै रहै चाकर-वासैं अर साथ भँळो करै, घोडा भँळा करै, वडै सैमान सू रहै ।—नैणसी

भँस—देखो 'भँस' (रू भे)

उ०—बूदी में सवाईराम ओसवाल चरचा करतां भिखु कही—  
गाय भँस रा मूहड़ा आगैं घणी चारो नाल्या ओगाळो करै ।

—भि द्र.

भँसडो—देखो भँसी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ बलि चाढ़े वोकडा, रुधर भँसडा जरुर । वदन चोळ करि विखम, लोह कांविया सिद्धर ।—सू प्र

(स्त्री० भँमडी)

भँसागूगळ—देखो 'भँसागूगळ' (रू भे)

भँसागोह—देखो 'पाटडागोह' ।

भँसात—देखो भँसात' (रू भे)

भँसाद—देखो 'भँसाद' (रू भे)

भँसी—देखो 'भँस' (रू भे) (अमरत)

भँहरण—म० पु० यो० [स० भय+हरण] १ ईश्वर, परमात्मा ।

(ह ना. मा)

उ०—परम रीति पर प्रीति, परमनिधि आपण स्वामी । जुराकाळ भँहरण, करण निरभय निज नामी ।—ह पु वा

भों—१ देखो 'भव' (रू भे)

उ०—आयो धीग बूढाहड आळो, भोरा सीस लो त्यो भांनि । भों की आस छोड दी भोम्या, छावो कहु डूगरा छानि ।

—राजसिंघ भाखरोत री गीत

२ देखो 'भय' (रू भे)

भोंगरी—स० पु०—ऊट के चरने का एक प्रकार का घास, जो जैसलमेर में होता है ।

भोंदू—वि०—१ बँवकूफ, मूख ।

उ०—१ भूला भोंदू फेर मन, मूरख मुग्ध गवार । सुमिर सनेही आपना, आत्मा का आधार ।—दादूबाणी

उ०—२ सुण समझै कोई सुघड सयाणी, भोंदू सुण भमजावै ।

आया साध न देवै उत्तर, वाछित वस्तु बतारवै ।—ऊ का

२ सीधा-सादा, भोला ।

रू० भे०—भादू, भोदू ।

भोंपणियो—देखो 'भापणी' (अल्पा., रू भे)

भोंपणी—देखो 'भापणी' (अल्पा, रू भे)

भोंपणो—देखो 'भापणी' (रू भे)

भोंपू—स० पु०—१ फूंक से बजने वाला तुरही के आकार का बाजा ।

२ कारखाना या फैक्ट्री में समय सूचित करने हेतु बजाई जाने वाली सीटी ।

३ मोटर आदि वाहनो में यात्री को सचेत करने हेतु बजाया जाने वाला बाजा, हॉर्न ।

भोंय—देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—मुहड़ा धी यो वाक्य बोल्यो । अबला असत्री नै लिया घणी भोंय अहीर तू आयो छै ।—बेलि

भोरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू. भे)

भोंवळ—देखो 'भवळ' (रू भे) (अमरत)

भोंसले—स० पु०—मराठो के राजकुल की एक उपाधि ।

भोह—देखो 'भ्रू' (रू. भे) (डि को)

भो-अव्य०—१ हे ! अरे !

उ०—मित्र पिता को किसकी माता, भो सुत वनिता किसके आता । जग सब दीखत आता जाता, सबका मन इण माहि समाता ।—ऊ का.

२ देखो 'भय' (रू भे)

उ०—१ दिवस केता दिल दगजै गुमर धरिया, आय गाजै रोष तारजै रोपिया । भो तेण भाजै सयल साजै तखत राजै तेह, वर कठ वामा धरी घामा किता कामा वद किया । भय भेट भारी धनुमधारी अरज सारी येह ।—र रू

उ०—२ तारै डोलोजी बोलिया, म्हाने तो भो कोई नहीं ।

—ढो मा

३ देखो 'भव' (रू भे)

उ०—लगर में बैठ'र जीमै, कतार में कासण माजै, नूषा डरता रे'वै, बोदा री भो भाजै । अफसर रै हुकमा हाल जकी मोज सू मालै ।—दसदोख

भोई—स० पु० (स्त्री० भोयण) १ पालकी या डोली उठाने का पेशा करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, कहार ।

(मा म)

उ०—१ भोई मेहर भजइ ठाठिया, चालइ कहार कमाणी । च्यारि सहस साथइ साचरीया, वहइ पखाली पाणी ।—का दे प्र

उ०—२ चढता भोई नू कह्यो—'रे, पनोतै रै बाहळै भूजाई करिज्यो ।'—नैणसी

उ०—३ भोई खोई भरडीया, सोनी नइ सूतार । व्यवसाईया साहू जातिना, जे जोईइ तिणी वारि ।—मा का प्र

२ हाथी पर अम्बारी आदि कसकर तैयार करके महावत के सामने लाने वाला व्यक्ति ।

उ०—१ हाथिया रै बाट खरच रा दाम लेखी कर दिया । महावत भोई साथै दिया —नैणसी

३ खरादने वाला, खरादी ।

४ भोजन करने वाला, भोजी ।

५ तीर के फल और लकड़ी को जोड़ने वाला लोहे का छल्ला ।

उ०—ताहर डैर रा भील सिद्धर री आड किया, कमरै घुघर-माळा बाधिघा वंस नै पगा घुणा में पाल तीर चलावै, भगदै गाडा

अलवाणा पगा अेक वैंत च्यार आगळ भाल तीर री, अढाड  
आंगळ भोई ।—वा दा ख्या

भोक्ता-वि० [स० भोक्तु] १ खाने वाला, भोजन करने वाला ।

२ उपभोग करने वाला ।

३ भोग करने वाला ।

स० पु०—स्त्री का पति, स्वामी ।

भोग-स० पु० [स० भोग] १ भोगने की क्रिया या भाव ।

२ इच्छा-भूति या प्रसन्नता की दृष्टि से अभीष्ट या सुखद वस्तु को  
अपने मनमाने ढंग से उपयोग में लाने की क्रिया या भाव ।

उ०—करि सनान धम करै, घरै प्रम ध्यान स्यामधम । काया  
जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम ।—सू प्र.

३ उपयोग ।

उ०—जै था लोगों नै सुखी होवण री थोडो घणी चावना है तो  
आज सू डण वात रो प्रण करलो कै हाथा कमाया बिना यें किणी  
चीज रो भोग नी करीला ।—फुलवाडी

४ देवी देवताओं के उपभोगार्थ मूर्ति के सामने रखा जाने वाला  
भोज्य पदार्थ, नैवेद्य ।

उ०—१ धूप दीप नैवेद्य आरती, सब ही सौंज लै आ री । वह  
विष सू पकवान वणाकर, करी भोग की तयारी ।—मीरा

उ०—२ है ! उठो सामूजी राखी लापसी, है देवता रै भोग  
लगाड । उठो वाइमा बांधी राखडी, थारां वीरीसा जतन कराव ।

—लो गी

क्रि० प्र०—लगाएँ, मेलएँ ।

५ भोजन करने या खाने की क्रिया या भाव ।

क्रि० प्र०—लागएँ ।

६ भोज्य पदार्थ, खाना, भोजन ।

उ०—१ अन घन जिण घर आसरो, भला अरोगे भोग । पइसो  
हुवै न पास मे, लूलू करदै लोग ।—ऊ का

उ०—२ क्यू काम कमावै, तन मन तावै, खावै भोग खटदा है ।  
बिदवाहा वासै सोगन सासै, कासै रोग कटदा है ।—ऊ का

७ वह अवस्था जिसमें किसी भूमि या संपत्ति को अपने अधिकार  
में रखकर उससे पूर्ण लाभ उठाया जाता है ।

८ कच्चा भुक्ति ।

९ आराम, चैन, ऐश ।

१०—सभोग, मैथुन ।

उ०—सइया समै रावजी महिलां पघारीया तरै अपछरा मुजरि करै  
नै सीख मांगी । अबै ती साहिवजी मोनै लोका दीठी । राज पीण  
हकीगत कीही सो म्हैं ती जावसू । रग भोग विलास करनै अलोप  
हुई ।—वीरमदे सोनगरा री वात

११ सभोग शक्ति ।

उ०—भोग वधावण भखी, भोग फिर दूर भमैला, रोग मिटावण

रखी, जनम री रोग जमैला । सोग हुटावण सबी, सोग में पडिया  
सिडस्यो, लोक रीत सू लघी, लोक सू चिडस्यो लडस्यो । ओखदि  
पिछाण खावो अमल, ओखदि है नह अकल री, असल री मजो  
क्यू और है, निकमू आनद नकल री ।—ऊ का.

१२ घर, मकान ।

१३ निवास-स्थान ।

उ०—गढ चितौड ना रहा, नही रहण का जोग । वसस्या रुडी  
द्वारिका, जहा हरि भगता का भोग ।—मीरां

१४ सुख ।

उ०—सता समाध अगम घर सोऊ, दस दिस राम रमैथो दोऊ ।  
जगत भोग सपना सम जोऊ, हमहीं गाय सिध में होऊ ।—ऊ का

१५ दुख, कष्ट ।

१६ पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया जाता है ।

१७ किसी काम से, बात से प्राप्त होने वाला फल ।

१८ किराया, भाडा ।

१९ राज्य कर ।

उ०—१ पत्र जेण लिखी इण विध प्रियोग, भेजो सताव खुरमाण  
भोग । मो पाटि वड्डा पछो माल, उपजेस सकळ भेजो अपाल ।

—सू प्र

उ०—२ आवैं दाव कळहण दुनियान सोह ऊचरै, वडी घर राव  
रुका विभाडी । उघारी राडि रजपूत आवैरि घरि, 'पहाडी'  
'कामा' ले भोग पाडी ।—फतैमिध नरुका री गीत

२० जागीरदार द्वारा कर-स्वरूप लिया जाने वाला कृपि की उपज  
का कुछ निश्चित अंश या हिस्सा, हासिल ।

उ०—१ उदपुर री हवेली रा गाव नजीक तिण री हैसो भोग री  
वरसाळी हैसो लाग सूघो आध उनाळी हैसो आध पढै ।—नैणसी

उ०—२ सबळो भरीजै तद हासल इजाफा हुवै । काठा गोहू मण  
१५००० बीज बावैं तिकै साठा नीपजै । बीज बावैं तितरी भोग  
आवैं । बीजी लागत घणी छै ।—नैणसी

२१ ज्योतिष में, सूर्य आदि ग्रहों का मीन, मेष आदि राशियों में  
अवस्थित रहने का काल या समय ।

२२ साप का फन ।

उ०—१ बबी अदर पोडियो, काळो दवकै काय । पूगी ऊपर  
पाघरी, आवैं भोग उठाय ।—वी म

उ०—२ दूजा गज री पोगर अरिसिध री पाघ ऊपर आयी जाएँ  
पूग्या रा पूज पर नागराज भोग उठायो ।—व मा

२३ साप ।

२४ आय आमदनी ।

उ०—घरती माहै थाणा ठोड-ठोड राखिया छै, पण घरती भोग  
पड सकै नही ।—नैणसी

२५ बलि ।

२६ दावत, प्रीतिभोज ।

२७ लाभ, फायदा ।

२८ धन, सम्पत्ति ।

२९ वैश्या के साथ सभोग करने पर उसको दिया जाने वाला धन ।

३० शरीर, देह ।

३१ परिमाण, मान ।

३२ प्रारब्ध, भाग्य ।

३३ छप्पन की सख्या ।

३४ शासन, हुकूमत ।

३५ मालगुजारी ।

३६ देखो 'सभोग' (रू भे)

रू० भे०—भोग, भोग ।

भोगण—वि०—भोगने वाला ।

भोगणजसी—स० पु०—राजा, नृप । (डि को)

भोगणो—वि० (स्त्री० भोगणी) १ भक्षण करने वाला, खाने वाला ।

उ०—भाग उद्योत रं समै पळ भोगणो, धोगणी मोत रं समद थागै । असुर उर खोतरं मेछ आरोगणी, जोगणी जोत रं रूप जागै ।—खेतसी वारहूठ ।

२ उपभोग करने वाला ।

३ उपयोग करने वाला ।

४ सभोग करने वाला ।

५ सहन करने वाला ।

भोगणो, भोगवो—क्रि० स०—१ दुख-सुख या पाप पुण्य के फल को सहन करना ।

उ०—१ दूखिया देखी देवनि अति दूखडू लागि । पणि भोगव्या विणु वयम छूटीयि ये कीर्षा आगि ।—नळाख्यान

उ०—२ आछा करम करिया हे तो सुरग री आणद सुरग ई मे लेजै । नीतर नरक री, सताप तो भोगणो हे इज ।—फुलवाडी

उ०—३ हाथा काम बिगाडियो, फळ तो म्हनै ई भोगणो पडसी ।  
—फुलवाडी

२ स्त्री प्रसंग या सभोग करना ।

उ०—१ चोरा जुगती कुगती कीनी, भोग भोगणें घण सुख भीनी । कपटी दरसण मूरत कोनी, दिव्य धरम बोळावणि दीनी  
—ऊ का

उ०—२ मोडा दुग्गह माळिया, गावर फोगं गाल । भोगें सुदर भाभणी, मुफत अरोगं माल ।—ऊ का

३ उपभोग करना ।

उ०—१ हसतो हसतो ई कै'वण लागो—अो विणजारी इण माया नै भोगें के आ माया इण विणजारा नै भोगें ।—फुलवाडी

उ०—२ इण रा करम मे धन री आमद री तो जोग है, पण उणनं भोगण री जोग कोनी ।—फुलवाडी

उ०—३ भूख तिस तथा नीद भोगता थका चकडूडियै दाई भूवाळी खावता रेंता ।—दसदोख  
४ भुगतना ।

उ०—१ स्त्रीमुख सिडै सेदखाना जिसी, नाक भरै ज्यू नारदो । भव जाण नरक भोगें जका नै, लानत दै ललकार दो ।—ऊ का  
५ किसी कार्य, पदार्थ, बात आदि के शुभ या अशुभ फलों का वहन करना या सहना ।

६ आनन्द लेना, ऐश करना ।

उ०—१ वरखां री ठमर हीय सुरग रा सुख भोगवें (पडियां थण पहली पडै) सो आ पारख काही पडो मरनै तो पाछो कोई आय सकं नही नै आ कहै थण पडिया पहला पडै सो कोई वार मरनै पाछो आयोक काई ।—वी स टी

उ०—२ रतन जटित पहिरो आभुसण, भोगो भोग अपारी । मीराजी यें चली महल मे, थानै सोगन म्हारी ।—मीरा

७ उपयोग में लाना, वरतना ।

उ०—नार नपुसक रा घरा, अदतारें घर अत्य । भागहीण भोगें नही, देखै परसै हत्य ।—या दा.

८ शासन करना, राज्य करना ।

भोगणहार, हारो (हारी), भोगणियो—वि० ।

भोगाडणो, भोगाडवो, भोगाणो, भोगावो, भोगावणी भोगाववो  
—प्रे० रू० ।

भोगिओडो, भोगियोडो, भोग्योडो—भू० का० कृ० ।

भोगीजणी भोगीजवो—कर्म वा० ।

भोगवणो, भोगववो—रू० भे० ।

भोगता—स० पु० [स० भोक्ता] १ पति, भरतार । (अ मा, ह ना मा)  
२ उपभोक्ता ।

३ जागीरदार की एक किस्म । (बीकानेर)

भोगदेह—सं० पु० [स०] मनुष्य का मरने के उपरांत स्वर्ग या नरक में जाकर पाप या पुण्य फलों को भुगतने के लिए धारण किया जाने वाला सूक्ष्म शरीर । (पौराणिक)

भोगनो—स० पु०—१ कान के पास का हिस्सा, कनपटी ।

२ लघु मस्तिष्क ।

उ०—१ नित नेम हियै भूलै नही, चालै सदा सचेत नै, भोगना फूट परत्रिय भजै, हाय तजै इण हेत नै ।—ऊ का

उ०—२ खुद री भोगनो तो फूटयो जकी फूटयो ई, गहारा पेट नै विरथा ई दुखायो ।—फुलवाडी

मुहा०—भोगनो भगाणी=ठगाना । २ भोगनी फूटणी=मस्तिष्क का ठीक काम न करना । ३ भोगनी गाव जाणी=मस्तिष्क का ठीक काम न करना । ४ भोगनी भवणी=मस्तिष्क का ठीक काम न करना ।

३ सिर, मस्तक ।

उ०—१ खेत रँ माह पग ई दे दियो तो भोगना बिखेर दूला ।

—फुलवाही

उ०—२ वँ वळ कोपरिया रा घणवट बजाया । कोपरिया चूकनै  
किताक चूकता । च्यारा रा भोगना बिखरग्या ।—फुलवाही

४ प्रारब्ध, भाग्य ।

भोगपत, भोगपति—स० पु० [स० भोगपति] किसी नगर आदि का  
प्रधान अधिकारी सूवेदार ।

भोगपत्र, भोगपत्र—स० पु० यी० [स० भोगपत्र] १ वह पत्र जिसके  
अनुसार व्यक्ति विशेष को किसी पदार्थ के उप-भोग का अधिकार  
दिया गया हो ।

भोगपाळ—स० पु० [सं० भोगपाल] १ भोगपति ।

२ साईस ।

भोगभाड़ी—स० पु० यी० [स० भोग+भाटक] कृषक द्वारा जागीरदार  
को चुकाई जाने वाली एक लाग या कर विशेष जो वह खलिहान  
में निकाले हुए अनाज में से उसका हिस्सा उसके (जागीरदार के)  
घर पहुंचाने पर देता है ।

भोगभूमि—स० स्त्री० यी० [स० भोग्य+भूमि] १ क्रीडा स्थल ।

२ विलास का स्थान ।

३ जैन मतानुसार वह लोक जिसमें किसी प्रकार का कर्म नहीं  
करना पड़ता है और सब प्रकार की सुख भोग की आवश्यकता  
एक कल्पवृक्ष द्वारा पूर्ण होती है ।

भोगळ, भोगल—स० स्त्री० [स० भुजागल] अर्गला । (उ र)

भोगळाळ, भोगळाळू—वि० [स० भोग+लाभ+रा० प्र० ऊ] किसी को  
ऋण देने के बदले में प्राप्त वह घर, भूमि या खेत जिसका उपभोग  
करने का ऋणदाता को पूर्ण अधिकार होता है एवं उस पर कोई  
व्याज नहीं लिया जाता ।

भोगळावो—स० पु० [स० भोग+लाभ] एक प्रकार का ऋण या कर्ज  
लेने का ढग विशेष ।

वि० वि० 'भोगळावा' में रुपया कर्ज देने वाला बिना किसी ऐव-  
जाना के गिरवी रखे हुए मकान या जमीन की आमदनी का उपभोग  
करता है और फजदार रुपयो का व्याज नहीं देता । रहन रखी  
हुई भूमि की उपज का लाभ या मकान का किराया ही सूद  
समझा जाता है ।

भोगलिप्सा—स० स्त्री० यी० [स० भोग+लिप्सा] सभोग की इच्छा,  
व्यसन ।

भोगळियाळ, भोगळियाळी—स० स्त्री०—कटार । (डि को)

उ०—आहें मान आगळे असपत, चित्त उतकाय धारियो चोज ।  
इण मे छै ज चिपण कोई आबो, भोगळियाळ दिवाळें 'भोज' ।

—राव राजा भोजराज री गीत

भोगळियो—स० पु०—वह व्यक्ति जो ऋणदाता के यहा व्याज (सूद) के  
उपलक्ष में नौकरी करता है ।

भोगळी, भोगली—सं० स्त्री०—१ स्त्रियो के सिर के आभूषण 'बोर'  
के पीछे का भाग ।

२ देखो 'भूगली' (रू भे)

भोगळी—स० पु०—बैलगाड़ी के चक्के के बीच में लगाया जाने वाला  
लोहे का उपकरण ।

भोगवण—स० पु० [स० भोग+रा० प्र० वण] भोग करने योग्य  
वस्तु ।

उ०—हमें वरदळ हुई काठ गूघट हिये, सजें नख सिख बिचें सोळ  
सिएगार । राज राजेसवर जोड कायम रही, भोगवण घरा  
'अग जीत' भरतार ।—द्वारकादास घघवाडियो

भोगवणो, भोगवणी—देखो 'भोगणी, भोगवी' (रू भे)

उ०—१ ५ रावळ लखणसेन करन री । करन पछें पाट बैठो ।

भोळी सो ठाकुर हुवो । वरस १८ जैसलमेर भोगविधो ।—नैणसी

उ०—२ प्रथीराज कह्यो, 'दीवाण ! आप तो घणा ई दिन  
घरती भोगवी, हमे म्है मोटा हुवा, दीवाण विराज्या रही, म्है  
घरती री खबर लेस्या ।'—नैणसी

उ०—३ तरै प्रथीराज परधानानू कह्यो, 'हुई सु नीवडी म्है थानू  
विगर पूछिये विचार कियो तिण री फळ म्हे रुही भोगवां छा,  
हमें थे भली जाणो त्य करी ।—नैणसी

उ०—४ राव राजा पदवी अजीतमिधजी तीन वरस भोगवी पछें  
रामसरण हुआ ।—वा. दा स्या

उ०—५ जद काणो पाढीसी रँ घर जाय कही—रे ! गंवार ने  
इतरा वरस रजपूताणी थे भोगवी । अजू ही नीं घाप्यो ।

—काणा रजपूत री बात

उ०—६ तद कुंवर फूलमती नृ हाथ पकड अर फेरा लेनै परणीज  
अर उठै भोगवी ।—चोबोली

उ०—७ स्याम घरम कुळ घरम न साजें, काम घरम अभियास  
करै । भरमा-भरमी पीड भोगवे, मांचै गरमी हूत मरै ।

—कविराजा वाकीदास

उ०—८ धळिहारी तूभ तरणइ बहुनामी, महि पाळिग ताइ अचळ  
महि । वाक सबळ टाळियउ विसभरि, सुर नर सुख भोगवइ सहि ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—९ अनेक सुगध वस्तु सु भरगजा सो खवलित कीजै छै ।  
महला की बिखै अनेक सुख भोगविजै छै ।—वेलि. टी

उ०—१० जक्षेस वारिईस की सुरेस नेस प्री जिसा, 'अभो' त्रिलोक  
मे अचभ भोग भोगवै इसा ।—रा रू

उ०—११ जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरव कृत पुण्य पाप ।  
विण भोगविषा तै नवि छूटियइ, करता कोडि कळाप ।—प च चौ  
भोगवणहार, हारी (हारी), भोगवणियो—वि० ।

भोगविश्रोडो, भोगविशोडो, भोगव्योडो—भू० का० कृ० ।

भोगवीजणो, भोगवीजवी—कम वा० ।

भोगवती—स० स्त्री० [स०] १ गगा ।

२ पाताल गगा ।

३ नागिन ।

४ नागो की पुरी जो पाताल मे है ।

५ द्वितीया तिथि की रात्रि ।

रू० भे०—भोगवती ।

भोगवान—स० पु० [स० भोगवन्] १ साप ।

२ गाना, गीत ।

भोगविलास—स० पु० यो० [स०] सुख-चैन की वह स्थिति जिसमे मनुष्य इन्द्रियो या वासनाओ की तृप्ति मे लिस रहता है ।

उ०—राजा स्यामसुंदर नु कह्यो, 'ये एक वार दरवार आईं मुजरी करिने डेरै तुरत गया करो । हिवै स्यामसुंदर सुख सु आस्या सु भोगविलास करै छै ।—स्यामसुंदर री वात

भोगसरीर—देखो 'भोगदेह' ।

भोगसील—देखो 'भोगीसैल' (रू भे )

उ०—आदि सहर मडोवर थो । सामन्न माहि नै पदमपुराण माहै वात छै । भोगसील परवत मेर री वेटी कहै छै ।—नंगसी

भोगांतराय—स० पु०—जैन मतानुसार वह अंतराय जिसका उदय होने से भोगो की प्राप्ति मे विघ्न पडता है । मतांतर से—वह कर्म जिसके उदय होने से जीव स्वतन्त्रता पूर्वक उपलब्ध होने वाली भोग सामग्री का मन की कृपणातावश एव सकीर्णतावश, ईच्छा रहते हुए भी उपभोग नहीं कर सकता है ।

भोगाडणो, भोगाडयो—देखो 'भोगाणो, भोगावो' (रू भे )

भोगाडणहार, हारी (हारी), भोगाडणियो—वि० ।

भोगाडिओडो, भोगाडियोडो, भोगाडयोडो—भू० का० कृ० ।

भोगाडोजणो, भोगाडोजवो—कर्म वा० ।

भोगाणो, भोगावो—क्रि० स० ['भोगणो' क्रि० का प्रे० रू०] १ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन कराना ।

२ स्त्री प्रसंग या सभोग कराना ।

३ उपभोग कराना ।

४ भुगताना ।

५ आनन्द लेने मे प्रवृत्त करना, ऐश कराना ।

६ उपयोग मे लेने को प्रवृत्त करना, वरताना ।

भोगाणहार, हारी (हारी), भोगाणियो—वि० ।

भोगायोडो—भू० का० कृ० ।

भोगाडणो, भोगाडवो—कर्म वा० ।

भोगाडणो, भोगाडवो—रू० भे० ।

भोगायोडो—भू० का० कृ०—१ दुख सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन कराया हुआ २ स्त्री प्रसंग या सभोग कराया हुआ ३ उपभोग कराया हुआ ४ भुगताया हुआ ५ आनन्द लेने मे प्रवृत्त

किया हुआ, ऐश कराया हुआ ६ उपयोग मे लेने को प्रवृत्त किया हुआ, वरताया हुआ (स्त्री० भोगायोडो)

भोगावणो, भोगाववो—देखो 'भोगाणो, भोगावो' (रू भे )

भोगावणहार, हारी (हारी), भोगावणियो—वि० ।

भोगाविओडो, भोगावियोडो, भोगाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भोगावोजणो, भोगावोजवो—कर्म वा० ।

भोगावियोडो—देखो 'भोगायोडो' (रू भे )

(स्त्री० भोगावियोडो)

भोगावती—देखो 'भोगवती' (रू भे )

भोगि—देखो 'भोगी' (रू भे )

भोगियोडो—भू० का० कृ०—१ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन किया हुआ २ स्त्री-प्रसंग या सभोग किया हुआ ३ उपभोग किया हुआ ४ भुगता हुआ ५ आनन्द लिया हुआ, ऐश किया हुआ, ६ उपयोग में लिया हुआ, वरता हुआ (स्त्री० भोगियोडो)

भोगियो—देखो 'भोगी' (अल्पा, रू भे )

उ०—कहू सूकर कहू स्वान मति, मोरमूष उर काग । कहू जोगी कहू भोगिया, कहू रोवै कहू राग ।—ह पु. वां

भोगिओभमर—देखो 'भोगियोभवर' (रू भे )

उ०—तटा उपराति करिने भोगिओभमर लजा छयल हसनाक जवान निजरवाज बाजार माहै ऊभा जोहा खाए छै ।—रा सा स

भोगियोभवर—स० पु०—विलास-प्रिय, विलासी ।

भोगिसैल—देखो 'भोगीसैल' (रू भे )

भोगी—स० पु०—१ सर्प, सांप । (अ मा, ह ना मा )

२ छंद शास्त्रकार एक विद्वान का नाम ।

उ०—किबळो पिच्छू कहैं लहू लघु अक लहावै गिराँ छद वस गुरु कवी लघु चार कहावै । बीजा दीरघ वरण जपै गुरु आदि सजोगी, विसरग अग सिर विदू भगै तारख सो भोगी ।—रू

३ शेष नाग ।

उ०—खूब वजाई खग तें घारा घमचक्कै, कुवकै क्रोड कराहि कै कमठेस मचक्कै । नीसासा नासानुगी, आसागज तक्कै, भोगी भोगन झिलि सकै, भुम्मि अकवक्कै ।—व भा

४ नृप, राजा ।

उ०—राज करता नरक पडता, भोगी जोरै लीया । जोग करता मुक्ति पडता, जोगी जुग जुग जीया ।—मीरां

५ जमींदार ।

६ धनी, सम्पत्तिशाली ।

७ सगीत मे एक राग का नाम ।

वि०—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता ।

उ०—सुरसर सुजल बमल सजोगी, दल मल अघ ओघो दुख दद ।  
साभ कमल पद राम असोगी, मन अलियल भोगी मकरद ।

—र ज प्र

२ खाने वाला ।

उ०—१ देवी जखणी भखणी देव जोगी, देवी तम्मळा भोज भोगी निरोगी, देवी मात जानेसुरी बल मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा ।—देवि.

उ०—२ कट उडियाण लिया डमरु कर, भाग घतूरा भोगी ।

—क कु वो

३ इन्द्रिय सुख का अभिलाषी, विषयासक्त ।

४ विषय-भोग मे रत, विषयी ।

उ०—१ जग मे कहे जोगी भीतर भोगी, भोगी सम भोवदा है, महिला नै भोगी भूगी गोनी, रोगी जिम रोवदा है ।—ऊ का

उ०—२ भोगिय मोख कुरोगिय भोजन जोगिय जोखत जोधत जैसे । पातर को उपदेस पतीब्रत, कातर को सुर सिधु न तैसे ।

—ऊ का

उ०—३ अति कोक कळा भोगी अपार, दातार सूर अति चित उदार । बलिवत हुवै अजानवाह, अमि गयद हुवै दल बल अथाह ।

—सू. प्र

५ आनन्द लुटने वाला ।

उ०—सियाजी रा गै'णा निरख हरि नैणा जल भरै, प्रियाजी रा प्यारा सहज गुण मारा हिय घरै । हरि चित्ता सारी तदपि दुख भारी चित करै, विजोगी है जोगी भगति रस भोगी सब परै ।—गी रा

६ ऐश आराम करने वाला ऐश्याश ।

उ०—जिहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विसाल वाडी । जिहा पढइ छात्र चउसाल, तिहा इसी अनेक लेसाळ ।—सभा

अल्पा०—भोगियी ।

भोगीकुसम—स० पु०—भ्रमर, भौरा । (अ मा)

भोगीसल—स० पु० [स० भोगीशल] जोधपुर मे मंडोर के पास के पर्वत का नाम, जिसकी पुरुषोत्तम (मल) मास मे परिक्रमा लगाई जाती है ।

वि० वि०—ऐसा कहा जाना है कि मरुभूम्यान्तर्गत 'भोगीसल' पर्वत के स्थान पर सर्पों का एक बड़ा भारी विल (विबर) था । ये सर्प ब्राह्मणों की बहुत सताते थे । ब्राह्मणों ने इनके दुख से दुखित होकर इन्द्र का आह्वान किया तब इन्द्र ने हिमालय के पुत्र को आज्ञा दी कि तुम उनके विल पर जाकर स्थित हो जाओ । इन्द्र की आज्ञा से वह पहाड़ यहा आकर स्थित हो गया । तदन्तर राजा जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित का बदला लेने के लिए एक यज्ञ किया जिसमे वह इन सर्पों की आहुति देने लगा । तब सर्पों ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि 'अब हम किसी को भी न सतायेंगे अतः आप हमारी रक्षा करो ।' तब ब्रह्माजी ने उनको मरु-देश का यह पहाड़ बतलाया कि 'तुम यहां निभंय रहो ।' साथ ही यह वरदान

भी दिया कि 'जो मनुष्य श्रावण की पंचमी को तुम्हारी पूजा करेगा उसे अभीष्ट फल मिलेगा । ब्रह्मा की आज्ञा से उन सभी सर्पों ने इस पहाड़ मे आकर निवास किया इसीलिए इसका नाम भोगीशल या नागार्द्र पहा, जिसका अर्थ सर्पों का पहाड़ होता है ।

र० भे०—भोगसील, भोमसैल ।

भोगेसर भोगेस्वर—स० पु०—एक तीर्थ का नाम । (पौराणिक)

भोग्य—वि०—१ उपभोग करने योग्य, भोगने लायक ।

उ०—भोग्य चित भजै, भोगणी गरज्जै । नीर धार निजै, सोहडै सलज्जै ।—रा रू

भोग्यमान—स० पु०—जो भोगा जाने को हो ।

भोड—देखो 'भोड' (रू भे)

भोडकियो—देखो 'भोड' (अल्पा, रू भे)

उ०—घीवरी मतीरा नाख दिया । जिका नै देख'र गमू वोलियो—  
ना रे भाई ! मतीरडा, भोडकिया ज्यू हैं, अर है-ई थोडा सा ।

—घरसगाठ

भोडणी भोडवौ—क्रि० स०—नाश करना, मिटाना ।

उ०—जडभरत अतीत सम रस रा छाकिआ राम रस प्यालै रा पीअणहार दया घरम रा पाळणहार करम-जाळ रा भोडणहार तापस अस्ताग जोग रा साभणहार सात रस माहि गलताण होइ नै रहिआ छै ।—रा सा स

भोडणहार, हारी (हारी), भोडणियो—वि० ।

भोडिओडी, भोडियोडी, भोडयोडी—भू० का० कृ० ।

भोडीजणी, भोडीजवौ—कर्म वा० ।

भोडणी भोडवौ—र० भे० ।

भोडियोडी—भू० का० कृ०—नाश किया हुआ, मिटाया हुआ (स्त्री० भोडियोडी)

भोडीरी—देखो 'भोसडी री' (रू भे)

भोडी—देखो 'भोसडी री' (रू भे)

भोचकियो—देखो 'भोसकियो' (रू भे)

भोज—स० पु० [स०] १ किसी विशिष्ट अवसर या उपलक्ष मे निमंत्रित व्यक्तियों को खिलाया जाने वाला भोजन, दावत ।

२ खाद्य-सामग्री, खाने-पीने की वस्तुएं ।

उ०—साकर धिरसाळी थिर भर धाळी, अगलाकर ऊगदा है । जग वरण सम जागुं मोजा मारुं, भाणुं भोज भरदा है ।—ऊ का.

३ यादव कुल के अन्तर्गत एक राजवंश ।

४ एक लोक समूह, जो सुदास राजा का अनुचर था ।

५ यादववंशीय सात्वत राजा का पुत्र ।

६ मार्तिकावत् (मृत्तिकावती) नगरी का एक राजा, जो द्रोपदी के स्वयंवर मे उपस्थित था ।

७ पुराणों के अनुसार महाभोज राजा के वंशजों के लिए प्रयुक्त सामूहिक नाम ।

८ एक राजवंश, जो हैहयवंशीय तालजघ राजवंश मे समाविष्ट था ।



६ मत्स्य पुराण के अनुसार एक राजा, जो प्रतिक्षत्र राजा का पुत्र था ।

१० कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषिगण ।

११ कान्यकुब्ज देश का एक राजा ।

१२ परमारवंशी मालवे का एक प्रसिद्ध राजा, जो बहुत विद्वान एवं विद्या प्रेमी था ।

उ०—'जवदळ' 'पदम' 'रायसी' जुजस्टळ, 'हरचंद' 'वीकम' 'भोज' हुवा । माणी मत्ता छता महमडळ, गता न माणी जीता मुवा ।

—गोरधन खीची

भोजक, भोजग—स० पु०—१ एक सूर्योपासक राजा ।

२ शाकद्वीपी ब्राह्मणों का एक नाम ।

वि०—१ भोजन करने वाला ।

२ भोग करने वाला, विलासी ।

भोजडली—स० स्त्री० (स० भुजंपत्र) चिट्ठी, पत्र ।

उ०—पीवडले लिख भोजडल्या पठावा, कही भं भेजा सदेस ।

भोजडल्या, सायब, हम ना पतीजा सदेसै न श्रावें म्हारी वीर ।

—लो गो.

२ देखो भोजाई' (अल्पा, रू भे)

भोजण—देखो 'भोजन' (रू भे)

उ०—अख अठार भोजण भाणि, तवोळ मुख तरणि । वाजेंद्र राह वाहणि आरूळ वळे । रिति वरखा सरद्द, हैमत सेंसर हृद ।

वसत गीखम सद्द, सुख सगळे ।—गु रू व

भोजन—स० पु० [स०] १ खाद्य पदार्थों को भक्षण करने की क्रिया ।

२ पेट भरने हेतु खाया जाने वाला खाद्य-पदार्थ, खाने की वस्तु ।

(अ मा, ह मा मा)

उ०—१ भोज न गिणें चढावें मूढी, जोजन दूरो जाय । खोज न करे निकाळे, खोडा मादो भोजन माय ।—ऊ का

उ०—२ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसन गोविंदजी की । निर-मळ नीर वहत यमुना की, भोजन दूध दही की ।—मीरा

३ विशेष अवस्था में खाई जाने वाली कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुएँ ।

रू० भे०—भुज्जन, भोजण, भोजनु, भोयण ।

अल्पा०—भोजनियो ।

भोजनखानो—स० पु० [स० भोजन + फा० खान] रसोईघर, पाकशाला ।

भोजनभट, भोजनभट्ट—स० पु० [स० भोजन + भट्ट] बहुत अधिक खाने वाला, पेहू ।

भोजनसाळ, भोजनसाळा—स० स्त्री० [स० भोजनशाला] १ रसोईघर, पाकशाला ।

उ०—१ माय वाग है जठें मैल तीन नवा कराया । वाग रै ऊपर भोजनसाळ कराई ।—मारवाड री ख्यात

उ०—२ देवीसिधजी वगैर पकड़िया ज्यानू रस्सा सू बांध भोजन-साळा हेटली ओरियां ज्या में घालिया ।—बा दा ख्या

भोजनालय—स० पु० [स०] १ रसोईघर, पाकशाला ।

२ वह स्थान जहाँ मृत्यु लेकर पका हुआ भोजन खिलाया जाता है ।

भोजनियो—देखो 'भोजन' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ राम नाम विन घडी न सुहावै, राम मिले म्हारा हिय-रा ठगय । भोजनियो नहि भावें म्हानें, नोंदडली नहि आय ।

—मीरा

उ०—२ अगली तो पेड़ी जी झूमादे राणी पग घरघी, भोजनियों रो थाळ ज हाथ, चौथी तो पेड़ी जी झूमादे राणी पग घरघी, पांतां री दवी श्रे ज हाथ ।—लो गो

भोजनु—देखो 'भोजन' (रू भे)

उ०—भोजनु आणइ मारग वहइ करइ भगति सरसी दुवख सहइ ।

नवउ अवासु करी नछ रमइ पचह पडव मरसी भमइ ।—प प. च.

भोजपत्र—म० पु० [स० भुजंपत्र] १ ऊँचे पर्वतों पर पाया जाने वाला मझोले आकार का वृक्ष, जिसकी छाल प्राचीन काल में कागज की जगह लिखावट में काम आती थी ।

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरहु भारिणि भाणि । भमेडी ब्रह्माड घण, भोजपत्र भड चणि ।—मा का प्र

२ उक्त वृक्ष की छाल ।

रू० भे०—भूरजपत्र ।

भोजपरीक्षक—स० पु० यो० [स० भोजन + परीक्षक] रसोई या भोजन की परीक्षा करने वाला ।

भोजपुरियो—स० पु०—भोजपुर का रहने वाला, भोजपुर का निवासी ।

भोजपुरी—स० स्त्री०—भोजपुर की बोली या भाषा ।

वि०—भोजपुर से सम्बन्धित, भोजपुर का ।

भोजराजोत—स० पु०—राठोडों की एक उप-शाखा ।

भोजरू—स० पु०—शरपखा ।

भोजबसी, भोजाणी—स० पु०—१ शेखावत कछवाह क्षत्रियों की एक उप-शाखा 'भोजराजजीका' या उस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ किसन खडपुर कै बात ढावी परम असी, सारा ही ब्रिमाह नोलगढ़ का भोजबसी ।—शि व

उ०—२ बीसी च्यारि भोजाणी हरा कै बस जाया, दोनू खाप ही का वाजि तेगा कामि आया ।—शि व.

२ राठोड वंश की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भोजाई—स० स्त्री० [स० भ्रातृ + जाया] (व. व. भोजाया) १ बड़े भाई की स्त्री, भाम्नी ।

उ०—१ जळहरजामी बावो मांगा, रातादेशी माय, कान्हकवर सो वीरो मागा, रात्री-सी भोजाई ।—लो गो.

उ०—२ ताहरा आफळियो, कह्यो—भोजाई कासू कियो ? हू आपच कर मरीस ।—नैणसी

रू० भे०—भउजाई, भुजाई, भोजाई ।

अल्पा०—भोजडली, भोजी ।

भोजावत—स० पु०—१ राठोडों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भोजी—वि०—भोजन करने वाला, खाने वाला ।



भोजी—देखो भोजाई' (अल्पा, रु भे)

भोजीसुधा—स० पु० [स० शुधाभोजिन्] इन्द्र । (अ. मा)

भोज्यविधि—स० स्त्री०—६४ कलाओं में से एक कला । (व. स.)

भोट—स० पु०—१ भूटान देश का नाम, जहा के घोड़े मणवूत होते हैं ।

(सभा)

२ तीव्र ताप, प्रचंड गर्मी ।

उ०—पड रही तावडें री भोट, तिरसा सू सूखा होट, सुणी रिस-भजी ।—जयवाणी

३ वीछार, झडी ।

उ०—दुयणा कोट सभावियो, गोळां चोट निहाव । भोट पडत गोळिया, ओट न रक्वै राव ।—रा रु

४ अग्नि ।

रु० भे०—भोट, भोड ।

भोटणी, भोटवी—क्रि० स०—१ दातो से तोडना या काटना ।

२ भोजन करना, खाना ।

उ०—जिए वगत इक्कीम माणुगर हाथिया रें नित्रराणा री वात सुणन रांणीजी खुमी मे वावळा सा व्हेण लागा इण वगत इस्टरा आपरी तूटी टपरी मे वैठी लूखी मकूनी रोटी मिरचा री चटणी सू भोटती हो अर मिरचां री बळत रें कारण सूसाडा करतो हो ।—फुलवाडी

३ शस्त्र प्रहार करना, प्रहार करना ।

भोटणहार, हारी (हारी), भोटणियो—वि० ।

भोटिओडो, भोटियोडो, भोटचोडो—भू० का० कृ० ।

भोटीजणी, भोटीजवी—कर्म वा० ।

भोठणी, भोठवी—रु० भे० ।

भोटो—वि० (स्त्री० भोटो) १ जिमकी धार, किनार या नोक तीक्ष्ण न हो ।

उ०—साम्ही नाई नें कै'वता—यू डरतो डरतो काईं टपोरिया देव । थारी पाचणी भोटो ठे तो म्हारी कटार क्लिवां ।

—फुलवाडी

२ लाक्षणिक अर्थ में मन्द बुद्धि वाला ।

३ मद ।

उ०—भीडकी मद पाणी रें मांय सू ईं टर-टर करतो वोल्पो—टूच विच थारी अकल घणी भोटो है, पं'ला उणन तीखी करन लाव ।

—फुलवाडी

भोट—देखो 'भोट' (रु भे) (सभा)

भोठ—देखो 'भोट' (रु भे)

उ०—१ रुका वागी रीठ, भोठ पडै माथा भडां । जोडन मामा-रीठ, आयो दीसै ऊगलो ।—राठोड ऊगो

उ०—२ ताहुरा हरदास बोलियो—'केरी वेटिया ? तरवारां रा माथै भोठ पडसी ।—नैणसी

रु० भे०—भोड ।

भोठणी, भोठवी—देखो 'भोटणी, भोटवी' (रु भे)

उ०—ताहुरां माडण कहै 'निसग पीई ।' इतरै पाणी नू हाथ घालण लागो इतरै डाग री सिर माहे भोठी सु गत नही ।

—माडणसी कूपावत री वात

भोठणहार, हारी (हारी), भोठणियो—वि० ।

भोठिओडो, भोठियोडो, भोठचोडो—भू० का० कृ० ।

भोठीजणी, भोठीजवी—कर्म वा० ।

भोठियोडो—देखो 'भोटियोडो' (रु भे)

(स्त्री० भोठियोडो)

भोड—स० पु०—१ कठोर व वेकार हिंदवान (मतीरा) ।

२ मस्तक, सिर ।

उ०—ओखा लादा ऊटा लदै, कई भोडां भारिया । वन रा वाळा सै'रा वजं, वार गाव रा भ्यारिया ।—दसदेव

३ देखो 'भोडल' (मह, रु भे)

अल्पा०—भोडकियो, भोडकियो, भोडकी, भोडली, भोडी ।

मह०—भोडक, भोडल ।

भोडक—देखो 'भोड' (रु भे)

उ०—१ मुडदा कडहट मे पड़िया नह मावै, सडिया वासै सब विकरद वमकावै । भाडा खाडां मे भोडक अडवडता, सता आस्रम जिम तूवा तडभडता ।—ऊ का

उ०—२ भटका सू नवी भोडक काटन ह्रीद रें माथें कडा मे टेरे देव । भोडक सू टपक टपक छाटा पडता रें'व ।—फुलवाडी

भोडकी—देखो 'भोड' (अल्पा, रु भे)

भोडणी, भोडवी—देखो 'भोटणी, भोटवी' (रु भे)

भोडणहार, हारी (हारी), भोडणियो—वि० ।

भोडिओडो, भोडियोडो, भोडचोडो—भू० का० कृ० ।

भोडीजणी, भोडीजवी—कर्म वा० ।

भोडळ—स० पु०—१ अन्नक नामक खनिज धातु ।

उ०—१ छरहे मास सेत गज छाया, कारण एण कळप ह्वै जाया । पट देवळ भिदि जात प्रकासै, जिम भोडळ मभि दीप उजासै ।—सू प्र

उ०—२ जग श्री भूटो जाण, सुख इण री भूटो समझ । हे दोळ वाता हाण, भोडळ पळको 'भेरिया' ।

—महाराजा वळवतसिंह (रतनाम)

२ श्वेत, सफेद । \*

३ देखो 'भोड' (मह, रु भे)

भोडळी, भोडली—वि०—१ बुद्ध, मूर्ख ।

२ भोळा, नासमझ ।

उ०—इम सुणी सेठ मनि हरखियो जी, परखियो स्त्री तणी भाव ।

भोडली एम जाण नही जी, इहा न कोलावन साव ।—वि कु

३ देखो 'भोड' (अल्पा, रु भे)

भोडागार-म० पु०—भडार ।

भोडियोडी—देखो भोडियोडी' (रु भे)

(स्त्री० भोडियोडी)

भोडी—१ देखो 'भोड' (अल्पा, रु भे)

२ छोटा मतीरा ।

भोण—१ देखो 'भवन' (रु भे)

उ०—नवै नाट रायसिंह पेड वेदन नह परणा भएँ भाटिया भोन  
नारवारी बुधकरणा ।—पा प्र

२ देखो 'भुवन' (रु भे)

भोनमती-वि० यो० [स० भ्रमण+मती] अपनी बात पर स्थिर न  
रहने वाला ।

भोत—देखो 'बहुत' (रु भे)

उ०—१ भयकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत  
चराग । जिका जगि जोति छिपा छिप जात, द्रगा मग भोत सपट्ट  
दिखात ।—मे म

उ०—२ वाणी घुलि-गाठ परी, रसना गुण रटकी । अरु छुटायै  
छूटै नही, भोत वार भटकी ।—मीरा

भो'तर—देखो 'वशोतर' (रु भे)

भोतेरी—देखो बहुतेरी' (रु भे)

उ०—रूपैया तो भोतेरा लेनो म्होरा रो निरघन अत न पार ।  
तिना तो भोतेरी लेलो, अगिया रो निरघण अत न पार ।—लो. गी.  
(स्त्री० भोतेरी)

भोथार-स० पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।

भोदू—देखो भोदू' (रु भे)

भोन—१ देखो 'भवन' (रु भे)

२ देखो 'भुवन' (रु भे)

भोपणियो—देखो 'भापणो' (अल्पा, रु भे)

उ०—घुलै जद आगडिया मे नीद, पलक मे भोळैपण रो मोल ।  
नन्हा भोपणिया रो पाळ, भरीजै सुख समदर वेछीळ ।—साभ

भोपणी—देखो 'भापणो' (रु भे)

उ०—नळापळ अगनिया रो कोर, भोपणी किरण भूला रो भार ?  
बिहारै गळे अडोळी नार, सोधवा इण घन्ती वो हार ।—साभ  
भोपाई-स० स्त्री०—१ भोपा के क्रिया कलाप ।

२ भोपे' की सिद्धि या चमत्कार ।

उ०—गिद्धा सिद्धाई घरणी मे घसगी, भोपा भोपाई फाफा मे  
फसिगी । भूठा जोतसिया जोतिस की भूठी, करमा कळपाया वरसा  
नह वूठी ।—ऊ का

भोपाटप, भोपाडक, भोपाडकर, भोपाडकरी-स० स्त्री०—१ भोपा  
द्वारा किया जाने वाला ढोंग ।

२ ढोंग, आडम्बर ।

उ०—दरवारी कह्यो—अदाता, अँ तो रिजक रो अटकळवाजिया  
हैं । भाड इण भात रो थोथी भोपाडकरिया नीं करँ तो वो भाड  
ई काई ।—कुलवाडी

३ ढोंगपूर्ण वमकी या आतक ।

ज्यू—म्है जाळ थोडी भोपाडकर करने आऊ ।

भोपाळ—देखो 'भूपाळ' (रु भे) (डि को)

उ०—१ सोज्या घर रा चानणा रे भूसा रा भोपाळ । पाळणें में  
सोज्या प्रथीपाळ ।—चैतमानखी

उ०—२ कुरवसी कर चाळी, रच रोसाळां, भीठ वडाळां,  
भोपाळां । रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा, सीस भुजाळा  
सूडाळा ।—भगतमाळ

भोपाळी, भोपाली-स० स्त्री०—संगीत मे एक रागिनी ।

भोपी-स० पु० (स्त्री० भोपण, भोपी) १ किसी देव विशेष का शरीर  
मे प्रवेश अनुभव करते हुए उसी प्रकार क्रिया-कलाप करने वाला  
मनुष्य । (नैणसी)

उ०—सिद्धा सिद्धाई घरणी मे घसगी, भोपा भोपाई फाफा मे  
फसिगी । भूठा जोतसिया जोतिस की भूठी, करसा कळपाया वरसा  
नह वूठी ।—ऊ का

२ देव विशेष की पूजा करने वाला, पुजारी ।

उ०—रा० भारमल जोवावत रो दत्त, भोपा देवसी राठीड नाग  
रोचा जी रो भोपी चापो गेला वसै ।—नैणसी

३ भील जाति के व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान  
सूचक शब्द ।

भोबर—१ देखो 'भोभर' (१) (रु भे)

२ देखो 'भोभरी' (मह, रु भे)

भोबरी—देखो 'भोभर' (२) (अल्पा, रु भे) (डि को)

भोभर-स० स्त्री०—१ छोटे २ अगारेयुक्त गर्म आग ।

उ०—१ दान घणी उत्तर दिए, हू ते वित सत हार । मुहडो लै  
उण मिनख रो, भोभर भोतर भार ।—वां दा

उ०—२ म्हारै इण भूर्प मे भोभर सू श्रोतया वासदी रँ कारण  
कीकर ई लाय लाग जावँ तो काई सगळी ऊमर वासदी सू वर  
करिया सर जावँला । लाय रँ दूजै दिन ई म्हनै चूल्है वासदी तो  
चेतन करणी ई पहेला ।—कुलवाडी

रु० भे०—भोबर ।

अल्पा०—भोबरी, भोभरी ।

२ देखो 'भोभरी' (रु भे)

भोभरि—देखो 'भोभर' (१) (अल्पा, रु भे)

उ०—उलकै नीं तु आप सु ज्यु जोगी जट्टा, पात्रिस पाप सताप में  
ज्यु भोभरि भट्टा ।—घ न घ

भोमरी—देखो 'भोमर' (२) (अल्पा, रु भे)

भोमीत—देखो 'भयभीत' (रु भे)

भोम-स० स्त्री० [स० भोम] १ मंगल ग्रह।

उ०—सुकीर नालिका सरूप, वेस रीत राजियै । सुरू गुरू र भोम सुक, राज द्वारा राजियै ।—सू प्र.

[स० भूमि] २ बाहुबल द्वारा अधिकार मे की हुई भूमि।

उ०—एक डोली या भोम री पैदास १२५०००) सवाई हमार छै ।  
—नैगसी

वि० वि०—प्राचीन काल मे राजपूतो के द्वारा कब्जे की हुई खेती योग्य भूमि को उनके वंशज अंग्रेजी सत्ता तक उपयोग करते रहे । जिसका वे किसी को कर नहीं देते थे और जिसे वे स्वयं की भूमि कहते थे । ऐसी स्वउपाजित भूमि भोम कहलाती थी, क्योंकि यह किसी से इनायत के तौर पर प्राप्त नहीं हुई थी ।

२ इमशान भूमि ।

३ अग्नि, आग । (ना डि को)

४ राज्य ।

उ०—१ इम कहै वयण सँदेस आय, परदेस दवावौ खळ पजाय । पर भोम दवावौ खगा पाण, पर भोम जिक्का वाजै पचाण ।

—सू प्र

उ०—२ खूदाळम जपै तू खुरम, सुकरि खग सभाहियो । भर भार भलावै भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियो ।—गु रु व  
५ स्थान ।

उ०—अगम भोम सू म्हे चल आया, पूरा कारण ब्रह्म पठाया । पोची जात हीण घर पाया, लिछमी वर सू प्राण लगाया ।—

ऊ का.

६ ज्ञान, बुद्धि ।

७ परिचय, जानकारी ।

८ ध्यान, मत्कर्तता ।

९ कार्य करने की दक्षता ।

१० देखो 'भूमि' (रु भे) (अ मा, डि को)

उ०—१ जिती भोम लीघा जळ जावै, आनन राम रटती आवै । सो रुद्रवति जळ गग समाणै, एकर कनक कळस मझि आणै ।

—सू प्र

उ०—२ कसमसे घाट अहि कोम कष, भोम पाट लगौ भवण, चडि गैस जाणि रावण चढै, रामहूत घमचक करण ।—सू प्र

उ०—३ निजर परवखँ राठवड, अकबर तेज दिणद । जाणै व्योम विमान सम, भोम प्रगटघो इद ।—रा रु

भोमअस-स० पु० [स० भोम + अस] रक्तवर्ण का मूगा या लाल ।

उ०—सरा में ज्यू मानसरोवर, तरां में ज्यों कलपतरोवर । खगा में ज्यों राजहस, नगा मे भोमअस । नसां में ज्यों नेहरो नसो, रसा में ज्यों सिरुगार री रसी । तुरगां में ज्यों सूरज री तुरग, दुरगां

में ज्यों इण भांति चद्रदुरग ।—र हमीर

भोमका—देखो 'भूमिका' (रु भे)

उ०—१ कुत्ता कागला जूटै, मजुरा रा माथा फूटै है । घर मुसाण भोमका सा हो रै'या है ।—दसदोख

उ०—२ बैठा सू वेगार भली, जायनै मसाणां री भोमका मे ई हळ जोती पण जोती ।—फुलवाडी

भोमदती-स० स्त्री०—उत्तर दिशा का दिग्पाल ।

२ सार्वभौम दिग्गज ।

भोमबाव-स० पु० [स० भोम + अव] 'भोमियो' से वसूल किया जाने वाला एक सरकारी कर विशेष ।

वि० वि०—देखो 'भोमियो' ।

भोमवार—देखो 'भोमवार' (रु भे)

भोमविज्जा-स० स्त्री० [स० भूमि + विद्या] भूकम्प के द्वारा शुभाशुभ फल को जानने की विद्या । (जैन)

भोमसँल—देखो 'भोगीसँल' ।

भोमि—देखो 'भूमि' (रु भे)

उ०—१ बापीकी भोमि बराबरि बोलै, घड त्रि सरूप रचे घण घाइ । सूरु वट उजवाळी सेखै, रावा वट उजवाळी राइ ।

—सेखा सूजावत नै गांगा बाधावत री गीत

उ०—२ कनिया भोमि विवर लघु काया, आयस जेम दास घरि आया । वदियो वळि घर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय ।—सू प्र

उ०—३ भार उतारै भोमि, अवधि सँदेह उवारै । वसै राम वैकुण्ठ, विमळ जग जस विसतारै ।—सू प्र

भोमियाचारौ—देखो 'भोमीचारौ' (रु भे)

उ०—भला रजपूत भूमिया छै । गाव ४०० माहे उणां री भोमियाचारा री ग्रास लागै छै ।—नैगसी

भोमियाजी-स० पु०—गाय, ब्राह्मण, धर्म, गाम और भूमि की रक्षाय एव परोपकार के लिए युद्ध करता हुआ वीर-गति को प्राप्त वीर, जिसकी वाद मे पूजा भी की जाती है ।

भोमियावट-स० पु०—पिता की सम्पत्ति प्रायः जमीन व अचल सम्पत्ति का उसकी सन्तान मे बराबर विभाजित होने की प्रथा या ढग ।

रु० भे०—भूमियावट ।

भोमियोजी—देखो 'भोमियाजी' (रु भे)

भोमियो-वि०—१ जानकार, विज्ञ ।

२ चतुर, दक्ष ।

स० पु०—१ स्वबाहुबल द्वारा उपाजित भूमि का स्वामी ।

उ०—१ अरु वारह दिन सहर में रहा था सो सगळै सहर मे लोगा रै वेला वखत हाडी चढी नहीं सो उठै आपरो आघार थो । आप पघारी तो सूरज ऊगै । भोमिया आप दवा लिया था सो आप जाणो हीज छी ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ आया राठोड है खड़े प्रजा चढन अघड़े । भगण भोमिया  
हर, गया अलग ऊतरै ।—गु रू व

वि० वि०—प्राचीन काल में खेती योग्य भूमि पर कब्जा कर  
लिया । तदन्तर अंग्रेजी राज्य-काल तक उनके वंशज उसका  
उपभोग करते रहे और कोई भी उस भूमि का कर या लगान राज्य  
में नहीं देता था, क्योंकि उनका कहना था कि वह भूमि उनकी  
स्वयं की वापसी है तथा किसी के द्वारा इनायत की हुई नहीं है,  
ऐसे भूमिदार भोमिया कहलाते थे ।

२ लुटेरा डाकू ।

३ क्षेत्र विशेष का पूर्ण जानकारी या विज्ञ व्यक्ति ।

उ०—तर्क जमलगेर या कोस २५ आयवण नू मगलीकाथल छै,  
तठै रहे छै । वा ठोड मगलीकाथल कहावै छै । तठै द्रम छै । सु  
भोमियो होय सु डांडी आवै । असँघो डांडी टलै सु घोडी अमवार  
गरक हु जाय ।—नैणसी

४ खेतिहर राजपूत, जो किसी प्रकार का कर न देता हो ।

५ चूहा ।

६ देखो 'भोमियाजी' ।

रू० भे०—भोमीयो, भोम्यो ।

भोमी—देखो 'भूमि' (रू भे )

उ०—पाँखी नरिद पुत्रा, भोमी गढ़ वद भारिया । खट-मेक जतन  
कीजै, कथित आदि जुगादि ।—गु रू. व

भोमीचार-म० पु०—भूमि का आधिपत्य ।

उ०—जिण दिना में इतरा भोमीचार जाटा रा है जिण री याद ।  
लाघडिये वा सेखमर लारै गाव ३६० है सू अँ गाव गोदारा रा है ।  
—द दा.

भोमीचारो-स० पु०—१ 'भोमियो' की आवादी का घनत्व वाला स्थान ।

उ०—१ गाय सिध मेक घाट जल पीवै, साडिया रा वरग सूना  
ही चरै, वाजारा री हाट में कोई वोपारी ताळो न मारै । वडो  
वांकी भोमीचारै री जायगां छै तिए रै चिकोड री उगूणी दिसा  
छै ।—टाढाळा सूर री बात

उ०—२ कूब ययो सुण अम्टक न्यारा, चळ चळिया थळ भोमी-  
चारा । इळ जतने प्रव जोम अछायो, असंख दळै जंतरण आयो ।  
—रा रू

२ 'भोमियो' का अधिकार ।

उ०—और पिरराजजी वडावड आव काटन आवेर सू लायी नै  
महारोठ में लगाया । पछै कितराक पीडियां पछै मारोठ में गोडा  
री भोमीचारो रै यो ।—मारवाड री रयात

३ लूट-नमोट, डकैती ।

उ०—पातगाह री बेटो परणीयो देपाळ घघ रजपूत । अठै देपाळ-  
पुर राज करै । अठै ओ भोमीयोचारो करै । सो ईय पासै अमवार  
२५ रहै । मा वडा तरवारीया अर देपाळ पिए वडो तरवारीयो ।

जैसोई दातार वडो रजपूत । सो ओ भोमीचारो करै । परखडां रा  
माल ले आवै । तठै गाम माहे लेनै खावै खरचै । गाम माहे वडो  
गडो वळवत । सु देपाळ अठै ईय भात सु रहै ।

—देपाळ घघ री बात

४ कृषि योग्य भूमि का 'भोमिया' द्वारा निशुल्क उपभोग करने  
की क्रिया ।

५ जमींदारी ।

रू० भे०—भोमियाचारो, भोमीचारो, भोमियाचारो ।

भोमीबळ-स० पु०—१ जल, पानी । (हिं को )

भोमीयाचारो—देखो 'भोमीचारो' (रू भे )

उ०—पोकरणा राठोडा रा गांव ३० । पोकरणा राठोड जगमाल  
मालावत रा पोतरा पोकरणा रै परगनै भोमीयाचारै गांव खामे ।  
पेस कसी, नाळ वडो घणी का दै नहीं, ना कदै चाकरी करै ।

—मारवाड री रयात

भोमीयो—देखो 'भोमियो' (रू भे )

उ०—१ अठै जमीयत कर रहीया भली भात सो । उपरा वरखा  
लागी । भोमीयो सारो ही गळै । भोमीया खड गया ।

—राजा नरसिंह री बात

उ०—२ तिकी गया जी रै कोठे पिड भरावण नै गया थ्या, पाछा  
घळता थकां मारग मै भोमीया उठघा, भोमीया सु लडाई कीनी ।  
भोमिया नै मारि घरती सरद करि, आपरै नांमै कनवज सहर  
वसायो नै राजस्थान बाध्यो ।—राजा रास्तेस्वर री वारता

भोयकर—देखो 'भयकर' (रू भे )

उ०—अखाहा महोदद डोहती अकटा, पेख तन सुपह विमुहा  
पधारै । 'भीम' सरखो कहर 'माल' हर भोयकर, जहरगाजी सकर  
तुईज जारै ।—चुतरी मोतीसर

भोयग - देखो 'भुजग' (रू भे )

उ०—२ पदमण नाग नारावां पैण, अघकी भोयग नमो पै  
आण । वडा छत्री छटकी बीछू री, चारण सु टाळै चहुआण ।

—आसाजी गाहण

भोयगमडळ-स० पु० [स० भुजग+मडल] नागलोक, पाताल ।

उ०—आनन रामराम सुण आणै, अतर आणै रांम उर । भोयग-  
मडळ लोह जणावण, गोरिवै कुजा प्राणगुर ।

—महाराणा स्त्री कुमा री गीत

भोय —१ देखो 'भूमि' (रू भे )

उ०—कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय मे पहणा  
रे । कोई दिन न्याना तो कोई दिन पीना, कोई दिन भूवे ही मरणा  
रे ।—मीरा

२ देखो 'भोग' (रू. भे ) (जैन)

भोयडली-स० पु० (स्त्री० भोयडली) एक अश्रूत व नीच जाति ।

उ०—मख ममदा नीपजै, ज्याहू की न्यारी न्यारी जात । एक सख सेवा चढे दूजी भोयडल्या के हाथ ।—मीरा

भोयण—१ देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—मार गज टला फोजा भमग भोयणा, जुध अगग श्रयणां रूपै जाभा । क्रोध भर अतर मखै अगन कोयणा, कवर घर दोयणां लियण काजा ।—रामलाल आढी

२ देखो 'भोजन' (रू भे)

उ०—खारा नइ खोटा, मीठा मधुरा भक्ष, काचा नइ कोरा, कदा मूल अमक्ष । रयणि भोयण घण, परदारा गम (न) किद्ध, तोहि घपति नही मुक्त, जिम खारइ जलि पिद्ध ।—ऐ जै का स

३ देखो 'भवन' (रू भे)

भोयणउ—देखो भुवन' (रू भे)

उ०—जाउ जागइ तांड मागइ, जांड जोयणउं ताउ भोयणउ, जेतिय राति तेतउ जागर, जेवडउ खाडउ तेवडउ घाउ ।—व स

भोर—स० पु०—१ सवेरा, प्रात काल ।

उ०—१ पसु लासुवा पिळ पडे सै, रवै न टोडा टारडा । छडी वूधरा मिस लुळ करा, नित घर भोर जुहारडा ।—दसदेव

उ०—२ तुमसो तो मन लाग रह्यो, तुम जागो मोहन प्यारै । भोर भई चिडियां चहचहई, कागा बोले कारै ।—मीरा

२ घोखा, भ्रम ।

वि०—३ चकित, स्तमित ।

रू० भे०—भोर ।

भोरड—वृद्ध ।

उ०—हु यौवन तनि जालवु, चढी सुमालइ मीत । भव जातइ भोरड थसिइ, चतुर । म चूकिसी चीत ।—मा का प्र

भोरणी, भोरवी—क्रि० स०—भ्रम मे डालना ।

उ०—घडी ठगारी जानीयै, हरीया माया जोरि । और किनी मु ना टरी, लीया त सव जुग भोरि ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज भोरणहार हारो (हारी), भोरणियो—वि० ।

भोरिओढो, भोरियोढो, भोरघोढो—भू० का० कृ० ।

भोरीजणो, भोरीजवो—कर्म वा० ।

भोरियोढो—भ्रम मे डाला हुआ ।

(स्त्री० भोरियोढी)

भोरी—स० स्त्री०—शीतला रोग का भेद विशेष । (अमरत)

भोरी—स० पु०—१ कण दाना, महीन टुकड़ा ।

उ०—१ वा आपरै कटोरा मू चूरमा री श्रेक भोरौ नीचे न्हाक दियो ।—फुलवाडी

उ०—२ कुट-कुट करती श्रेकली सगळी रोटी खायगी । चिढी नै श्रेक भोरौ ई की दियो नी ।—फुलवाडी

उ०—३ स्याळ खिरगोसिया नै केर रा पांन माथै श्रेक टोपो खीर अर मालपुआ री एक भोरौ पुरस दियो ।—फुलवाडी

२ देखो 'भोळी' (रू भे)

भोळ—देखो 'भोळ' (रू भे)

२ देखो 'भोळानाथ' (मह, रू भे)

उ०—सिल किस्तूरी गध समाली घण मिरगाळें, गग वहावणहार हेमाळ-सीम हिमाळी । लेत विमाली मेघ सावळी इमो लुभावै, भोळ नादियै कीच गुदळता, सीग सुहावै ।—मेघ

भोल—स० पु०—स्त्री की योनि, भग ।

भोळउ—देखो 'भोळी' (रू भे)

उ०—जो ठगु बोलि तो भोळउ, न बोलि तो मितभामी, भोग-चपल तो कदप्यावितार, अक्सइ तो परनारिसहोदर, जो टालि माथि तो पुण्यवत जि होइ ।—व स

भोळणो, भोळवो—देखो 'भळणो, भळवो' (रू भे)

भोळणहार हारो (हारी), भोळणियो—वि० ।

भोळिओढो, भोळियोढो, भोळयोढो—भू० का० कृ० ।

भोळीजणो भोळीजवो—भाव वा० ।

भोळप—स० स्त्री०—१ गलती, त्रुटि, भूल ।

उ०—१ तरै माळी पण वात सुणी थी सो माळी जाणी—आज साह जलाल वूवना रै महल जायसी, सो भोळप करै छै ।

—जलाल वूवना री वात

उ०—२ भगळी वात सुणनै सेठ बोल्यो—गैणी ती उणनै सूपणी ई पडैला । सात पीढिया री साख जावै । जायनै सावळ ममका । यू भोळप री वाता करिया घर री साख कीकर रै वंला ।

—फुलवाडी

उ०—३ सु घरती आसिया दाव लीवी । आ वात सागंजी वीका-नेर सुणी । जो सिरदारा री भोळप सू जमी जाय छै । तद सागंजी राव जैतमीजी सू मदत री वीनती करी ।—द दा

२ अविवेक ।

उ०—१ भतीजै उणनै ममकाई—इण मे आपरी की चूक कोनी । भोळप सू भूल व्है ई जावै तो भगवान इण माथै की विचार नी करै ।—फुलवाडी

उ०—२ मा नै सोनळ माथै अणू ती रीस आई । उणनै भोळन अर टावर पणा वास्तै खासी भली आडै हाथा ली ।—फुलवाडी

३ भुलावा, भ्रम ।

उ०—१ म्है घणा दिन भोळप मे रह्यो । थें सगळा ई जाळमाजी मे कवरां रै भेळा हो ।—फुलवाडी

उ०—२ सरकार री लोग खास खेती सो तमासगीर गयी हुती सो खात राख कजियो न कियो और फोजदार पण भोळप सू चढियो ।

—डाढाला सूर री वात

रू० भे०—भोळप ।

भोळवणो, भोळववो—क्रि० स०—१ भुलावे में डालना ।

उ०—१ जे के, म्हारी वेटी, देख्यो सपना माय, के थारी साथण भोळवै । ना ना, म्हारी माता, देख्यो सपना माय, ना म्हारी साथण भोळवै ।—लो गी

उ०—२ किया काचा अमा सूरहर कळोघर, डरत गत न पीघो  
फूल-दाह । वडा री भोळवी हूर आवी वरण, मेलती गइ नीसास ।  
मारु ।—नरहरदास वारहठ  
उ०—३ गमइ सहनइ वरसा रुहु एहवइ धन महिसी चारए  
परणामिइ ते मुगध भोलुव्या, व्रत्ति करइ सुविचार ए ।

—नलदवदती रास

२ घोखा देना ।

उ०—करि करी करवउ प्रिय जोवती, भमइ भीरु रणागिरा  
रोयती । मरण नइ भइ गिउ मभ भोलवी कियू किह्या उरतु  
हिंवल ओलवी ।—सालिसूरि

३ पुचकारते हुए समझाना ।

४ देखो 'भळणी, भळवी' (रू भे )

भोळवणहार, हारो (हारी), भोळवणियो—वि० ।

भोळविओडो, भोळवियोडो, भोळव्योडो—भू० का० कृ० ।

भोळवीजणो, भोळवीजवो—कर्म वा० ।

भोळवणो, भोळववो—रू० भे० ।

भोलाण, भोलावण—देखो 'भोळावण' (रू भे )

भोळाई—स० स्त्री०—भोलापन, सरलता, सीवापन ।

भोळाणो, भोळावो—क्रि० स०—कुछ समय के लिए किसी की देख-रेख  
या निगरानी में रखना ।

उ०—१ पीछे स० १६३८ तोसणीवाळ कलीजी तिणा री भतीजी  
तिलोकसी नागीर सू बीकानेर आयो । महाराज रायसिधजी कार-  
खाने री चाकरी भोळाई ।—द दा

उ०—२ आगे दसमी दीदी वालिया नै भोळाइ दियो ।

—सयणी चारणी री बात

२ सोंपना, सुपुर्द करना ।

३ हुक्म देना, बतलाना ।

ज्यू—ओ काम म्हें उण नै भोळाय दियो हु ।

४ भुलाना ।

५ घोखा करना, छल-कपट करना, भ्रम में डालना ।

उ०—१ हिंवे जगदेवजी हुवेली भाई लेनै पाछा घोडा री ठीह  
आवे तो चावडी, घोडा दीसै नही नै रथ रा खोज दीसै । तरै  
जाणियो चावडी नै कोई भोळाय नै ले गयो ।

—जगदेव पवार री बात

उ०—२ तरै चावडी जाण्यो म्हारी साळी मालजादी मोसू घणो  
दगो कीन्हो नै मोनै जोर भोळाई ।—जगदेव पवार री बात  
६ हिदायत देना ।

भोळाणहार, हारो (हारी), भोळाणियो—वि० ।

भोळायोडो—भू० का० कृ० ।

भोळाईजणो, भोळाईजवो—कर्म वा० ।

भळाणो, भळावो, भळावणो, भळाववो, भुळाणो, भुळावो, भुळा-

वणो, भुळाववो, भोळावणो, भोळाववो—रू० भे० ।

भोळानाथ—स० पु०—शिव, महादेव । (हिं को )

उ०—भोळानाथ दिगवर ये दुख मेरा हरी रे । सीतळ चदन वेल  
पतरवा, मस्तक गग घरी रे ।—मीरा

मह०—भोळ ।

भोळापण, भोळापणी—स० पु०—१ नादानी, नासमझी ।

उ०—नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ । मैं  
भोळी भोळापण कीन्हो, राख्यो नही विलमाइ ।—मीरा

२ भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ समझने का भाव, अज्ञानता,  
असावधानी ।

उ०—कोई एक वीर पुरस मारीज गयो नै लार नावाळक जाण  
सत्रुआ हलो करणी विचार्यो तठै उण वीर पुरख री स्त्री आपरा  
वाळक री परिचै सत्रुआ नै करावे छै—हे सत्रुआ थै हू जाणू  
भोळापण भूला छो क्यू कि म्हारी पुत्र आठ वरस री वाळक जाण  
युद्ध री मतो करो छो ।—वी स टी

३ सीधापन सरलता, सादगी ।

उ०—ठगा री सिरदार आपरी वेटी नै ममखरी रा भाव सू कह्यो—  
वेटी, आरो भोळापणो तो देख के अँ खुद चलायनं मठै ठगीजण  
सारु आया है ।—फुलवाडी

४ मूर्खता ।

भोळावट—जिम्मेवारी, उत्तरदायित्व ।

उ०—घोडा तुरकीया राहदार ऊपर नाख पाखर दोना ही पाख-  
तीया लगाय तरगस कूटा मारया भडीया री भोळावट हाथ  
माहै लै वगछी नै राणी दहड चढी, सकत रूप धार ।

—राजा नरसिंह री बात

भोळावण, भोळावणि—स० स्त्री०—१ निगरानी में देने की क्रिया या  
भाव, सभाळ ।

उ०—१ पन्नामारु आप ती सिधावी परदेस, म्हारी नै भोळावण  
किण नै दे चाल्या हो ।—लो. गी

उ०—२ धाय धावड सहेली खवास सू मिळी । तरै सासु तिलक  
काळि नै नाळेर दनै चावडी री भोळावण जगदेवजी ने दीधी ।

—जगदेव पवार री बात

२ सावधानी रखने के लिए कथन, देख-रेख ।

उ०—१ अरु पडगना री सभाळ थाणेंदार पडियार वेळीजी, प्रोहित  
विक्रमसी, वंद लालोजी, लाखणसी मय जमायत कै देस में वा पड-  
गना में गया, अरु जावतो कियो । नै किले री भोळावण वास्तं किता  
श्रेक सिरदार वा किलेंदार नापंजी साखलेंनू राखियो ।—द दा

उ०—२ सु राजा घडी घडी री खबर मगावै । जैत सांमघरमी छै,  
इम बार बार कहै, उसताद नू भोळावण देवो ।

—जैतमाल पुमार री बात

३ सिफारिश ।

उ०—आणद मे इतरी अळूभी, विसेस विगति न वूभी । चतरुनै



इणहीज सरभरा मै राखी, इण वात री घणी भोळावणी दाखी ।

—र. हमीर

४ हिदायत, शिक्षा ।

रु० भे०—मळ, मळण भळाण, भळामण, भळावण, भळावणी, भळाव, भळावण, भुळावण, भुळावणी, भुळाविणी, भुळाविनी, भोळाण, भोळावण, भोळावणी ।

भोळावणी, भोळावणी—देखो 'भोळाणी, भोळावी' (रु भे.)

भोळावणहार, हारो (हारी), भोळावणियो—वि० ।

भोळाविषोडी, भोळाविषोडी, भोळाविषोडी—भू० का० कृ० ।

भोळावीजणी, भोळावीजणी—कर्म वा० ।

भोळाविषोडी—देखो 'भोळायोडी' (रु भे.)

(स्त्री० भोळाविषोडी)

भोळि—स० पु० [सं० बहुलिट] ऊट । (डि को)

भोळीचक्रवर्त, भोळीचक्रवर्ति भोळीचक्रवर्ति—स० पु०—शिव, महादेव ।

उ०—१ अगत्वचा पहिरि रुमाला, भोळीचक्रवर्ति वणियो भेख । चडियो ब्रह्म भव वभूति चढावै, वर तोरण वांदिवा विसेख ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाणी इम आकास चवाणी, ओ भोलीचक्रवर्ति भूवाळ ।

आ ओ तपइ रइ जो ईस्वर, तप करिस्तु मिळसी ततकाळ ।

—महादेव पारवती री वेलि

भोळेपण—सीधापन, सरलता ।

उ०—सास मे सपना री ससार, अलेखा सरगा रै उणिहार । तिरै हे भोळेपण रै तोर, बिहि री मन चीती मनुहार ।—सांभ

भोळेरव—स० पु०—पृथ्वीराज के समकालीन गुजरात के राजा भोळे-भीम के लिए प्रयुक्त ।

उ०—लोधी दळ परमार दळ आवू भोळेरव । गाजे जादव देव-गिर, लीधी करन सुजाव ।—वां दा

भोळें—क्रि० वि०—भ्रम से, भ्राति से ।

उ०—१ गजसिंघज गंभर गोडिया, तीह कलेवर पजरा । सावज्ज सीह व्याया सवण, रहि भोळें गिर कदरा ।—गु रु व

उ०—२ पाजो सुवो भरियो । थवोहलां खाय वै । चानणी रात रा बीलाय आबै ती, दूध रै भोळें पी जाय ।—पना

रु० भे०—भोळावै, भोळ ।

भोळनाथ—देखो 'भोळीनाथ' (रु भे.)

भोळी—वि० (स्त्री० भोळी) १ सरल स्वभाव, सीधा ।

उ०—१ कामी क्रोधी कण कलकी कुटिल कजाक कसाई, चोर चुगल चालाक चतुर सू भोळी आछी भाई ।—ऊ का

उ०—२ सु कुवर 'जोगी' भोळी सो ठाकुर हुतौ । सु 'जोगी' सू धरती रस नह आई, नै धरती माहै मोहिलां री दखल हुबण लागी ।

—नैणसी

उ०—३ नगर आइ जोगी रम गयारै, मो मन प्रीत न पाइ । मै भोळी भोळापण कीन्हो, राख्यो नही विलमाइ ।—मीरा

२ मासूम, निरीह ।

उ०—१ भोळी-भोळी बाळिकावा रा सोवणा गिरस्थ वाग-वगेचा वळण सू उवारी, नी तो भारत सूनी हो जावैलो ।—दसदोख

उ०—२ माईता रै मरिया भोळा रेढा रा काई दीन व्हेला ।

—फुलवाडी

३ मूर्ख, बेवकूफ ।

उ०—१ तरसै देख अवर वनतावा, भूलै गधुवर भोळा । जद करसी पिसतावी जम रा, दूत फिरैला दोळा ।—र रु

उ०—२ वेहद रा वासी हद मे हासी, आसी विख उफणदा है, खूटोडा खोळा गाफल गोळा, भोळा इस्क भणदा है ।—ऊ का

उ०—३ नाई कह्यो—वापजी, काई अरज करू म्हारो वाप साव इज भोळो अर अवूभ ।—फुलवाडी

उ०—४ म्है राजाजी जित्ती भोळी कोनी जकी कविता सुणनै राजी व्हे जावू—फुलवाडी

४ सयाना, समझदार ।

५ निश्चल ।

६ अभाव ।

उ०—सुंदर गौरी ओलू थारी परी रै निवार, चपक वरणी, वाभोसा रा भोळा सुसरोजी भागसी ।—लो गी

७ नासमझ ।

उ०—नगर कोतवाळ कह्यो—आप ई कंडी भोळी बातों करो । घरवाळी नै तो सूती छोड छानै आयौ ।—फुलवाडी

८ भ्रम ।

उ०—१ कदेही संहला निकळी नही सो दीवाण पधारो काळीयै ब्रह्म विराजज्यो । म्हे पिए आवां छा । रांगोजी भोळा हुआ, या री तरदोज चूक जाण्यो नही—राव रिएमल री बात

उ०—२ काई वा इत्ती रूपाळी है ? वा आपरा रूप मे हवगी । इदगपुरी री अपछरावा रा ई भोळा भाजै जेडी, अबोट अखूट रूप ।—फुलवाडी

रु० भे०—भोळउ, भोरो, भोळवी, भोळवी, भोळो ।

भोळीनाथ—स० पु०—शिव, महादेव ।

रु० भे०—भोळीनाथ ।

भोवाळ—देखो 'भूपाल' (रु भे.)

उ०—दाद जैतल करण दाद देदल वानगदेव, वैरसीह लखमण विरद-विसाळ । 'माला' हरी मनमोद मोटें पाट मेरगिर, भाटिया भवाडै भला भीवजी भोवाळ ।—नैणसी

भोसकियो—स० पु०—स्त्री की योनि ।

रु० भे०—भोसकियो, भोसक्यो ।

अल्पा०—भोसकी, भोसडी ।

मह०—भोसड, भोसडी ।



भोसकी—देखो 'भोसकियो' (अल्पा., रु. भे.)

भोसक्यो, भोसकी—देखो 'भोसकियो' (रु. भे.)

भोसड, भोसडी, भोसडी—देखो 'भोसकियो' (गह., रु. भे.)

भोसडी रो-वि०—एक श्रद्धाली गाली।

रु० भे०—भोडी रो, भोडी।

भोसागर—देखो 'भवसागर' (रु. भे.)

उ०—१ तुम सुनो दयाल म्हारी श्रज्जी। भोसागर मे वही जात हू, काढी तो थारी मरजी।—मीरां

भोहणो, भोहवो—क्रि० स०—उपभोग करना, भोगना।

उ०—शर घणां देमा रा लूटणहार घारा रा अधीम पराइ भूमि रा भोहणहार मेडतिया बलभद्र नू रामपुरे लेजाइ विवाहियो।

—व. भा.

भोहणहार, हारी (हारी), भोहणियो—वि०।

भोहिश्रोडो, भोहियोडो, भोह्योडो—भू० का० कु०।

भोहीजणी, भोहीजवो—कर्म वा०।

भोहियोडो—भू० का० कु०—उपभोग किया हुआ, भोगा हुआ।

(स्त्री० भोहियोडी)

भों-स० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।

उ०—सिव मग सम्मुख थाज्यो, घप मप दो दो, भर हर भों-भों मादल भेर वजाज्यो।—घ. व. प्र

भोंकणी, भोंकवो—देखो 'भूकणी, भूकवो' (रु. भे.)

उ०—कायर कूकर कोटि मिल, भोंकं अरु भायै। दादू गरवा गुरुमुखी, हस्ती नहि लागै।—दादूवांणी

भोंकणहार, हारी (हारी), भोंकणियो—वि०।

भोंकिश्रोडो, भोंकियोडो, भोंक्योडो—भू० का० कु०।

भोंकीजणी, भोंकीजवो—भाव वा०।

भोंकियोडो—देखो 'भूकियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री० भोंकियोडी)

भोंचक-वि०—हक्का-बक्का, धवराया हुआ।

रु० भे०—भोंचक।

भोंजाई—देखो 'भुजाई' (रु. भे.)

उ०—तिस परि भोजन पूर कनक-थाल विराजमान करि विजयमत-गारु नै श्रज कीवी भोंजाई की तयारी।—सू. प्र

भोंडेरू-स० पु०—विवाह आदि श्रवसरो पर अपनी हमेशा की सेवाओं के बदले कुछ विशेष नेग लेने वाली जातियों का समूह।

भोंपणी—देखो 'भापणी' (अल्पा., रु. भे.)

भोंपणी—देखो 'भापणी' (रु. भे.)

भोंर, भोंरी—देखो 'भ्रमर' (रु. भे.)

उ०—१ हमारु रस सारस राजहस, ब्रह्म भोंर भकार वेपार वसं।—रा. रु.

उ०—फल-फूल के भार भरी श्रद्धार भार। ठाम ठाम के ऊपर मोरु का तटय भोंरु का गुजार।—सू. प्र.

भोंरामाखी-स० स्त्री०—बड़ी जाति की एक विशेष मक्खी।

रु० भे०—भमरामाखी।

भोंरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रु. भे.)

भोळ, भोळि—देखो 'भवळ' (रु. भे.) (प्रमत्त)

भोंह—देखो 'भ्रू' (रु. भे.)

उ०—काडियां खगा मुजरा करै, भोंह मूछ अणिया भिडी। सूरज पमाव आगं गर्भे, हम त्रिहु वागां ऊपडी।—सू. प्र

भोंहारी—१ देखो 'भ्रू' (रु. भे.)

उ०—सुणि हम वैण वीररम साजा, रग मजीठ कीध मुख राजा। अगन नयण विमि नजर अगारां, भिडे मूछ अणिया भोंहारां।

—सू. प्र

२ देखो 'भंवारी' (रु. भे.)

भो—१ देखो 'भय' (रु. भे.)

उ०—१ ताहरा रायसल रो रावनू अणो अत भो सदा धमक रायै। को वहे रायसल कांम आयो, को कहे कांम नहीं आयो।

—नैणमी

उ०—२ लोगा बात वणाई कै—मिघ में आळन, नांप में भो, वामण मे फूट अर सोधा गोघां रै पल्ले हारना छाती तो मुक्त वसती नही, उजड जाती।—दमदोष

उ०—३ भो मेडि उभै ससाग भव, डम कुण कुळ उद्वारमी। परसियो राय जोघहपुरे, विस्वनाथ वाणारसी।—गु. रु. व

२ देखो 'भव' (रु. भे.)

उ०—१ श्री सिध अठवाडी मिकार नै मूडी नीं घालै, पण घंठी करण वाला नै तीन भो मे ई नी छोडै।—कुलवाडी

भोआरी—देखो 'भ्रू' (रु. भे.)

भोग—देखो 'भोग' (रु. भे.)

उ०—परदार प्यार हुयगो प्रमत्त, धिन सीगां रो बैलियो, भोग रै माय भवता भवर, गयो जनम सब गेलियो।—ऊ. का

भोड-स० स्त्री०—१ सूर्य की बड़ी घूप व गर्मी।

२ अत्यधिक खुजली का रोग, जिसमे छोटी २ फूसिया हो जाती हैं।

भोचक—देखो 'भोचक' (रु. भे.)

भोजाई—देखो 'भोजाई' (रु. भे.)

भोटी-वि० (स्त्री० भोटी) जो तीक्ष्ण या पना नही हो, बिना धार वाला।

उ०—जिए वगत वो जैपर राजा रै सामा इक्कीस नवलखा हारा रो निजराणी घकै करियो उण वगत ईस्टूखा अके काळा भाटा रै माथे रगड रगडनै भोटी कवाडी रो पानी करतो ही।—कुलवाडी

भोड, भोडक—देखो 'भोडक' (रु. भे.)

उ०—कटक काछी तरुं, 'गाजीसाह' नरिंद। बाघं नेत विराजियो, भोडक बाघं विंद।—गु. रु. व

भौंडिडुभ-स० पु० [स० भय+दुदभि] भय के समय का युद्ध के संकेत स्वरूप बजाया जाने वाला युद्ध वाद्य विशेष ।

भौण—१ देखो 'भवन' (रू. भे)

२ देखो 'भुवन' (रू. भे)

भौत—देखो 'वहुत' (रू. भे)

उ०—तठे भौवराजजी अरज करी कै हजरत हम दोय जणा दोन में आयै सै तुमारा दोन बडा होय तो भौत आछी बात है ।

—द दा

भौतिक-स० पु० [स० भौतिक] १ शिव, महादेव ।

[स० भौतिक] २ आख, कान आदि इन्द्रिया ।

३ आधि व्याधि, कष्ट, उपद्रव ।

वि०—१ पथिव, क्षरीर सबन्धी ।

२ पचभूत से बना ।

३ पचभूत से सम्बन्धित ।

४ लौकिक, सामारिक ।

५ भूत-योनि से सम्बन्धित ।

६ प्राकृतिक नियमों, सिद्धान्तों, रूपों आदि से सम्बन्ध रखने वाला ।

भौतिकसृष्टि-स० स्त्री० [स० भौतिकसृष्टि] पुराणानुसार दैव, मनुष्य और तिर्यक योनि की समष्टि ।

भौदोष-स० पु० [स० भयदोष] वह दोष जब मनुष्य स्वेच्छा से नहीं अपितु लोकोपवाद के भय से सामयिक कर्म करता है । (जैन)

भौपणियो—देखो 'भापणो' (अल्पा, रू. भे)

भौपणो—देखो 'भापणो' (रू. भे)

भौपति—देखो 'भूपति' (रू. भे)

उ०—भौपति वहीत कळै माया मे, भीर मलिक सुलिताना रे ।

जन हरिदास विरळा जन कोई, उलटी पाख उडांणा रे ।

—ह पु वा

भौपाळ—देखो 'भूपाल' (रू. भे)

भौप्रद—देखो 'भयप्रद' (रू. भे)

भौम—१ देखो 'भोम' (रू. भे) (अ मा)

२ देखो 'भूमि' (रू. भे)

उ०—१ चित्त माह चित्तवै, भौम इक राह निभ्रम्मा, खुगासाण घमसाण, रांण घेरियो मुहम्मा ।—रा रू

उ०—२ वाघे फोज अकठवर वाळी, नीरघ जाण पलट्टे नाळी । प्रबळ रजो ऊठी चहु पासा, ऊठी भौम कि मिळण अकासा ।

—रा रू

भौमप्रदोष-स० पु० [स० भौमनप्रदोष] मंगलवार को पडने वाला प्रदोष का व्रत, जो विशेष महत्व का माना जाता है ।

भौमवार-स० पु० [स०] मंगलवार ।

रू० भे०—भौमवार ।

भौमासुर-स० पु०—नरकासुर नामक एक राक्षस ।

भौमि, भौमी-स० स्त्री०—१ पृथ्वी की कन्या, सीता ।

उ०—खुध्यावत हू मातहू वैण अवखै, भरै मात भौमी फळा वीण भक्खै । झिया छाह राविया ब्रच्छ सूधा, अनै रास कोरा लिया ब्रच्छ ऊधा ।—सू प्र

२ देखो 'भूमि' (रू. भे)

उ०—१ ब्रज मे आबोला जी ब्रजवासी, रामा था विन भौमि उदासी । ब्रन्दावन थारी सूखण लागी, कुज कुज कुमळासी ।—मीरा

उ०—२ रोड बजि हैवरा आगि धकि रारिया, धजर भाला खेवण ब्रमागो धारिया । भौमि गूगळी गयण चढै रज भारिया, तूटिसी घणा सिर आजि तरवारिया ।

—जालमसिंध मेडतिया री गीत

उ०—३ सोभि ज्ञान मिरदार रूप अणुपार विराजै, रतन निकरि किरि हचिर भौमि वैरागर आजै ।—रा रू

भौमीचारी, भौमीयाचारी—देखो 'भौमीचारी' (रू. भे)

उ०—भौमीचारी माडियो, वारी वदै जिहान । जस हूता न करै जुदा, दई सदा परधान ।—रा रू

भौम्यो—देखो 'भौमियो' (रू. भे)

उ०—जणी रजपूताणी ओठी लै जणी माहै हाडा, चादु ओर वमत मेल माथै लै चाल्या जो एक भौम्या रै गाम आया ।

—पचमार री बात

भौयग—देखो 'भुजग' (रू. भे)

उ०—भड बका वहै छकडुद सज कज भौयग, पतग चवचुद गत मुद हेकण पयग । सुद कळ खळा वुद करसी सयग, खुद छळ वळा दळ वुद करसी खयग ।—बदरीदाम खिडियो

भौयण—१ देखो 'भवन' (रू. भे)

२ देखो 'भुवन' (रू. भे)

उ०—हलै चलै दुनीयाळ विमन वहाळिया, भौयण मुरडिगै घर आभ भिळगा । प्रिथी चौ नाथ कधिपात वेळा पडो, वडै तरवर कुवर पळै विळगा ।—महाराजकुमार अनोपसिंह री गीत

भौर—देखो 'भोर' (?) (रू. भे)

उ०—चोर अचूकी सू चवै, भौर हुआ घर भेख, थई नफा नै दौडता, थारा अवळा लेख ।—अज्ञात

भौरिक-स० पु० [स०] १ किसी राजा या रईस के सोने के जेवर आदि रखने के विभाग का अध्यक्ष ।

२ अध्यक्ष ।

भौळप—देखो 'भौळप' (रू. भे)

उ०—१ जे भौळप राखी छी सो वाजिव नहो ।

—जयसिंधजी री वारता

उ०—२ कियो आप मू हेत, म्हँ वडी भौळप करी, आपरा लखण अव निजर आया । अरज सुण गहारी बडा ठाकुर अमल, कळक मत लगजै मूक काया ।—ओपी आढी

भोळवणी, भोळवणी—देखो 'भोळवणी, भोळवणी' (रू भे.)

उ०—इण तरै घण आपरै पिता री स्त्री नै आपरै माता तिण री मा नानी अनै मामा रै पिता नानै (नानी नानै) वीर बाळक नै वर लैण री हठ करता भोळवणी (पीटायी) ।—वी स टी भोळवणहार हारी (हारी), भोळवणियो—वि० ।

भोळविओडो, भोळवियोडो, भोळव्योडो—भू० का० कृ० ।

भोळवीजणी, भोळवीजणी—कर्म वा० ।

भोळवियोडो—देखो 'भोळवियोडो' (रू भे )

(स्त्री० भोळवियोडो)

भोळावण—देखो 'भोळावण' (रू भे )

उ०—चाकरी री बेहराव, टेरा वनात सामान सरची लीधी । असवार सो तीन (३००) सू चढियो । लारली भोळावण भाई देवाने दीधी ।—जखडा मुखडा भाटी री वात

भोळाव—देखो 'भोळै' (१) (रू भे )

उ०—कडिया सु'वै पाणी मै पैठा पगां रा नय भावै छै । दूध रै भोळावै धिलाव वासीजै छै ।—रा सा स

भोळि—देखो 'भवळ' (रू भे ) (अमरत)

भोळै—देखो 'भोळै' (रू भे )

उ०—१ खोखडा डवर समीर सै भोला खावै । मळियागिर के भोळै भूल पखेसर मिएसर भुजग आवै ।—सू प्र

उ०—२ दग तोफां वहै गोळा रोहळा मारछा दोळा, जी लार सकं सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ वाकडो वीटियो दूजा गढा भोळै लोहां जाळ घसै केही नसेणी लगाय ।—वा दा

भोळी—स० पु०—१ भुलावा ।

उ०—वैर लेवण हारु सारु सोहै बीजा कुल गै एक ही बाळक है नै एक ही जुद्ध सारु ऊमसै है सो इण ने यू कोई तरै भोळी दे'र थथोपी वा पोटाय नै अवार जुद्ध न करै इण तरह सू भुलावसो ।—वी स टी

२ देखो 'भोळी' (रू भे )

उ०—१ लाइया लगरा पेखि पट्टाभरां, डीन भोळी पढै कुजरा डूगरा । गज्ज ऊघोळियो रज्ज सू गूढळा, घोम मै पव दीपै किरै धूवळा ।—गु रू व

उ०—२ भोळा प्राणी राम भज, तू तज भोड तमांम । दीहा छेल्लै देख रे, कंसै हूता काम ।—र ज प्र

उ०—३ बाई तो जवरी काम करियो । भोळी सैण दुस्मण री गरज सार्जै ।—फुलवाही

भोवाळ—देखो 'भूपाल' (रू भे )

उ०—घन जननी जिण जायो वीसलराव, वीसल समी नवि कोई भोवाळ । रूप अपूरव पैलीयो, लावण लाहु अरी पकवान ।

—वी. दे

भोसिध, भोसिधु—देखो 'भवसिधु' (रू भे )

उ०—अपरपार अपार, पार भीमिध उत्तारण । तुम नरहरी निरवस, वस (तोहि) माघा मुख कारण ।—ह. पु वा

भोह—देखो 'भू' (रू भे )

भोहण—देखो 'भवन' (रू भे )

भोहरी, भोहारी—देखो 'भू' (रू भे )

उ०—भोहरा जाणै भमर भमाय, मूगफळी मी आगुळी । कूम-कळी, कर नख जीसा, वनक कुडळ घज मोहइ कांन ।—त्री दे

भ्याड—स० पु०—बडा भेडक ।

उ०—भ्याड, जोग, भय भेक, वारिज कै भेळा वसै । इनकी भवरी अ्रेक, रसकी जाणै, 'राजिया' ।—किरपारांम

भ्यारियो—तुच्छ, भौदू, मूर्ख । (वीकानेर)

भ्यास—देखो 'भाम' (रू भे )

उ०—नही तो छम्म नही तो माम, नही तो भम्म नही तो म्यास ।

नही तो नाम नही तू नेम, नही तू प्रीत नही तू प्रेम ।—ह र.

भ्रग—स० पु० [स० भूग] १ भ्रमर, भवरा ।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—१ देखी तेह तडाग अनोपम, पकज नांनारग । चक्रवाक सारम सुभ वोलि, अति गुजारव भ्रग ।—नळाख्यान

उ०—२ वुरी चुगल मुह मे वसै, आछी री नह भ्रग । माखी वसै स्वान मुख, भूल न वसै भ्रग ।—वा दा

२ हाथी, गज । (डि को)

३ लता, बेल ।

४ अभ्रक ।

५ दालचीनी ।

६ देखो 'भ्रगु' (रू भे )

उ०—सनिस्चर पुठि पाग देइ खाट वइसइ, कोडि देव उलग करइ, आस्थानइ इद्र मालि, ब्रह्मा पुरोहित पुणउ करइ, भ्रग रीसि आचमन दिइ ।—व स

भ्रगराज—स० पु०—१ भगरा नामक वनस्पति ।

२ काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, भीमराज ।

३ बडा भौरा ।

रू० भे०—भिमराज ।

भ्रंगरीट—स० पु०—१ शिव का द्वारपाल ।

२ लोहा ।

भ्रगली—स० पु०—एक वाद्य विशेष ।

उ०—वाजिया ताल कसाल तिवली, भेरि वीणा भ्रंगली । अति हरस माचइ पात्र नाचइ, भगति भामिनी सवि मिनी ।

—ऐ. जं. का. स

भ्रगार—स० पु०—१ पक्षी विशेष । (सभा)

२ राज्याभिषेक के समय काम मे आने वाला घट ।

उ०—चोसठि व्यजन रूप आहार दइ, एक स्थाल विसाल, वाटुली सीप कचचोलां, अगारादिक भाजन सरवै समोपइं ।—व स.  
३ स्वर्ण, सोना ।

४ लॉग ।

अगारी-स० पु०—भीगुर ।

अगि—देखो 'अगी' (रू भे)

उ०—इतर-सिउ घावी रहिउ, भाड भवाईया सगि । घूरि घतूर सेवतु, खातु भूकी अगि ।—मा कां प्र

अगिरीटि—देखो 'अगु' (रू भे)

उ०—रभा नाचइ, ब्रह्मपति पुस्तक वाचइ, इद्र माली, ब्रह्मा परो-हित, अगिरीटि रीसि आचमन करावइ ।—व स

अगी-स० पु०—१ शिव, महादेव ।

२ शिवजी का एक गण ।

३ गुजार करने वाला एक प्रकार का पतिगा ।

४ भौरा ।

उ०—मिण (गुी) माणक हेम ताटक महै, चलै भाण दोय जगा जोत चहै । लसै चवुका बिंद जाडी लपेटघी, चितै दूज के चद अगी वसटघी ।—वगमीराम प्रोहित री वात

५ भाग, विजया ।

रू० भे०—अगि, अगिगि ।

अगीस-स पु० [स० भृगीश] शिव, महादेव ।

अता-वि०—आन्ति वाला, सदेही ।

उ०—सुरताण साल अता सबद, उर तै चिंता आकरी । तप लेख करै पतिसाह तो, च्यारू सोवा चाकरी ।—रा रू

अति—देखो 'आति' (रू भे)

उ०—विरहण वस विहसक किसुक नहि ए अति । विलवइं विरह करालिय वालिय इम एकति ।—जयसेखर सूरि

अमणो, अमणो—देखो 'भवणो, भवणो' (रू भे)

उ०—अे सामहा उठ आया । तरै आप पागढी छाडिओ । ई आनू घोहत लछीवान देखनै अमिओ । तरै सारा ही आय मलिआ ।

—कल्याणसिंह वाढेल री वात

असणो-वि०—नाश करने वाला ।

उ०—भूतळ भूरां असणो वेटी हुव बढ भाग । दागळ कर दुवणा दल्या, दस पीढी रा दाग ।—रैवतसिंह भाटी

असणो, असणो—क्रि० स०—नाश करना ।

असणहार, हारो (हारो), असणियो—वि० ।

असियोडो, असियोडो, असियोडो—भू० का० कृ० ।

असीजणो, असीजवो—कर्म वा० ।

असियोडो—भू० का० कृ०—नाश किया हुआ ।

(स्त्री० असियोडो)

अकुड-वि०—जिसकी अकुटि चढी हुई हो ।

स० पु०—सिर, मस्तक ।

उ०—मड घमंड जुघ थड विहड रुडमुड, भुड अकुड चड त्रिपत ग्रघ भुड ।—सू प्र

अकट, अकट्ट, अकुट, अकुटक, अकुटि, अकुटी, अकुटी-स० स्त्री० [स० भृकुटि, भृकुटी] १ भौह, भ्रू ।

उ०—१ अकुटी कमान वान वाकै लोचन, मारत है तक कस कै री । मीरां के प्रभु गिरघरनागर, कैसै रहू घर बस कै री ।—मीरा

उ०—२ गति गयद, जघ केळि ग्रभ, केहरि जिम कटि लक । हीर डसण, विद्रम अघर, मारू अकुटि मयक ।—डो मा

उ०—३ सक्रम सुम स्रटि द्रस्टी लुभ देती, लपुट सपुट लख घूघट पट लेती । लुळकर लकुटी लै अकुटी सळलाती, भूखी वाघण सी अकुटी भळकाती ।—ऊ का

२ ललाट ।

स० पु०—३ शिर, मस्तक ।

उ०—१ मिहै हिक नीजुडियँ अकुटेह, चहै हिक रोस पडत चटेह । जुटै हिक वथा जोघ जुआण, पोरस्स हुवै हिक वाहै पाण ।

—गु रू व

उ०—२ कर सूळ विकटह सुभट कीचट, राम थट भट भपट रीभट । पछट वज्जघट कुघट ऊपट, रगट भट फुट अकुट मरकट ।

—सू प्र

उ०—३ हरी हरा रहा चह तरफा असेस होत, नमेस इसट्टा धार खत्री वट्टा नेम । पडै पावा सार भट्टा हजार अकुट्टा पेस, अरचवै भूतेस-नामी मारहट्टा अ्रेम ।—महेमदान कूपावत री गीत

उ०—४ भूव पट याही मभ प्रगटत असे वीर, द्व द मैं अदट वट दो दन विदार कै । परै कट अकुट पैं रटै मुख मार मार, घावा दै कमघ घट फट लग धारकै ।—जैतदान वारहू

रू० भे०—भरकुट, भरकूट, भिउड, भिउडि, भिउडी, भुगटी, अकट, अकट्ट, अकुट, अगट, अगिट, अगुट, अगुटि, अगुटी, अगुट्ट, अगुटी, अगुटी, अगुटीय, अकुटि, अकुट्ट, अकुट्टह, अगुट, अकुटि ।

अख—देखो 'भक्ष' (रू भे)

उ०—१ अख अढार भोजण भाणि तंबोळ मुख तरणि । वाजेंद्र राह वाहणि, आरुढ वळै । रिति वरखा सरइ हैमत सैमर हद, वसत गोखम सइ सुख सगळै ।—गु रू व

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजान सिलामति पनरह दिन ताई जान राखि घणी मनहारि करि भातिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह अख भोजन रा वणाव कीजै छै ।—रा सा स

उ०—३ पग पगा सपडै, आख सपडै क अघै, भूखँ अख सपडै, जेम लोभी द्रव लडै ।—ज खि

२ देखो 'भख' (रू भे)

उ०—हव रम भलभ प्रवल हुई, धित खेंग लए नट रम घई । सिध ताजण 'घांघल'री समरी, अख लेवण काज उनै भवरी ।—पा प्र

अखण—देखो 'अखण' (रू. भे.)

अखनिस—स० पु० [स० निशा + भ + रक्ष] चन्द्रमा, शशि । (ना मा)

अग—देखो 'अगु' (रू. भे.)

अगट, अगिट—देखो 'अकुटि' (रू. भे.)

उ०—१ सुभट समट घट गरट हट चाहमा, विकट रजवट उछट  
अघट वै बाहसा । निपट वसलो अगट कठी नव माहमा, अरक  
अघरक हरक धरक भुक अफछरा ।—महादांन महइ

उ०—२ वगतर सहित अछलड वरगा, धीव पडइ नेजाल घड ।  
भाजइ अगिट अरी चा भिडता, घाय रमाइ ति विध घड ।

—महादेव पारवती री वेलि

अगु—स० पु० [स० भृगु] १ एक गोत्र प्रवर्तक मुनि, जो ब्रह्मा के पुत्र  
माने जाते हैं ।

२ सप्त ऋषियों में से एक प्रसिद्ध मुनि, जो शिव के पुत्र माने  
जाते हैं ।

३ परशुराम ।

४ जमदग्नि ।

५ शुक्राचार्य ।

६ शिव, महादेव ।

७ शुक्रवार ।

८ श्री कृष्ण ।

९ पहाड़ के शिखर की समतल भूमि ।

रू० भे०—भरग, भरगु, भिरग, भिरगु अग, अगिरीटि, अगू,  
अगु ।

अगुकरछ—स० पु०—प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध नगर जो आजकल  
भडौंच कहलाता है ।

अगुट, अगुटि, अगुटी, अगुट्ट, अगुट्टी—देखो 'अकुट' (रू. भे.)

(ह नां मा)

उ०—१ बुगर वलीच बवाल, जूग जांलोरी जव्वर । अजगर कध  
अभीम, अगुट मुदगर भैराहर ।—सू प्र

उ०—२ पाट अग वरग जग भाट रागां पडे, वहे घड खाग  
पडिया अगुट वडवडे । हर खडा वीर चोसट सहत हठहडे, लूथवथ  
हुवा अमराव खावद लडे ।—ठा मुरताणसिंह री गीत

उ०—३ हीमाचल नारद नू हसिया, कवरि आबिया गोद कियइ ।  
वर कोइ एक साखडत वतावउ, दही जियइ रइ अगुटि दियइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ दीपत अगुटि बीदि मिदूर, सीसी भाळ जनु प्रतवव सूर ।  
नवनवी रूप सीबा नवीन, प्रतपाळ वचन करिये प्रवीन ।

—रामदान लालस

उ०—५ आप सिलह कसि आवधा, भरि असुल अगुट्टी । चढे  
'किसन' असि भइ चढे, अग नयण उछट्टी ।—सू प्र

अगुतुग—स० स्त्री० [स० भृगुतुग] हिमालय की एक चोटी (तीर्थ) ।

अगुनद, अगुनदण—स० पु० [स० भृगुनद] परशुराम ।

अगुनाथ—स० पु० [स० भृगुनाथ] परशुराम ।

अगुपत, अगुपति, अगुपती, अगुराम—स० पु० [स० भृगुपति, भृगुराम]  
परशुराम ।

उ०—जोयी अगुपत मव जगत, भोम उतारै भार । सहमाजुन कु  
साभीयी, परसरांम अवतार ।—गजउद्वार

अगुलता, अगुलात—देखो 'अगुलता' (रू. भे.)

उ०—१ वैजतीमाळा, अदिक रिमाळा, कौस्तभ मणि सोहदा है ।  
अगुलता छाजै, विविध विराजै, अति ही रूप अनदा है ।

—गजउद्वार

उ०—२ वण अगुलात उवर विमतीरण तण दासरय घनौ जन  
तारण ।—र. ज प्र

अगुमुत—स० पु०—१ शुक्राचार्य ।

२ शुक्र-ग्रह । (ना मा)

रू० भे०—भिरगुमुत ।

अगू—देखो 'अगु' (रू. भे.)

अगूट, अगूटी, अगूटीय—देखो 'अकुट' (रू. भे.)

उ०—१ अढे भुज्ज अममान, भिडे मूछाल अगूटे । चढे रीम चख  
चोल, खाग स तोलउ सूटे ।—पे रू

उ०—२ मुणै जद वचन 'भैरव' सूर, नरापत घोष चन्दा चढ  
नूर । अगूटीय रेख चढे मुरभाल, भिडे भूहू मूछ अढे भुगपाल ।  
—पे रू

अगुस—स० पु० [स० भृगु + ईश] परशुराम ।

अत—स० पु०—१ एक देव जाति । (अ मा ना मा)

वि०—२ अति, बहुत ।

३ देखो 'आता' (रू. भे.)

४ देखो 'अत्य' (रू. भे.)

उ०—१ कितक भरथ हण लियत पल्लवकर, उचर घनुख गह  
उठिय अभाग । तिकण खत अत सह लसकर तज, चपल सिखर  
गय नजिक सुचग ।—र रू

उ०—२ आगल चपति वात उचारी, समै पाय निज अत सु  
विचारी । मुक्कनदास कर अरज मिळाय, लेख हितु अप पाय  
लगाया ।—रा रू

अतखड—देखो 'भारतखड' (रू. भे.)

उ०—भारी तोल समभ गुण भारी, मेहै भारी राय तन मड ।  
भारी उदक रोज कर भारी, भारी जै राजा अतखड ।

—रामदान गाढ़ण

अतार—देखो 'भरतार' (रू. भे.)

उ०—रत्ता ती नाम जिकै रहमाण, जिका नह धार्य आवा जाण ।  
भरौ गुण तोरा लच्छि-अतार, लगै नह त्या तन पाप लगार ।

—ह र.

अत्य-स० पु० [स० भूत्य] नीकर, चाकर। (अ मा, ह नां मा)  
उ०—खवास पामवान कपापात्र अत्य रास्ट भर, सुघर सुचाल  
मभ्य सबको सुहायो तू। काहूको न बुरी कीनीं दान सनमान दीनी,  
लोभ को न पथ लीनी घरम रुख धायो तू।—ऊ का।

रू० भे०—अत, अतयळ, अत।

अद्रजाती—देखो 'भद्रजात' (रू भे)

उ०—मदुकर वरण तरण छक माती, घुमड मचाती दूद धरै।

भोटी समप हमै अद्रजाती, गुणीयण हाती जेम गिए।—अज्ञात

अद्रजोध-स० पु०—वीरभद्र नामक महादेव का एक वीरगण।

अम-स० पु०—१ अमण करने या घूमने की अवस्था या भाव।

२ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किसी को कुछ का कुछ समझ लेता  
है, भूठा विश्वास।

२ भूल, गलती।

उ०—अमिया भूगोलक नम गोलक भाई, कविजण करुणारस अल-  
मिति अधिकाई। सूका सरवरिया तरवरिया सूका, च्यारु वरण-  
सम भय अम क्रम चुका।—ऊ का

३ एक रोग विशेष जिसमें मनुष्य चक्कर खाकर जमीन पर ब्रह्मेश  
पड जाता है।

४ वेहोशी, मूर्छा।

५ पुत्र।

उ०—१ खत्रवट वह खाग तियाग अखूटित, समहर जीपणहार  
सत्र। तारण कवि, 'केहरी' तणै अम, 'जगो' जगो भाखै जगत्र।

—जगरामसिंह रौ गीत

उ०—२ तणै अम 'ऊद' असवार चेटक तणै, धरै मगर वह-  
रार घटकी। आचरै जोर मिरजा तणै आछटो, भाचरै चाचरै  
बीज भटकी।—गोरधन वोगसो

६ देखो 'भरम' (रू भे)

उ०—१ अज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूजदा है।  
नाभा कृत नांमी कथा निकामी, अम गामी भूजदा है।—ऊ का

उ०—२ भूपति आयो पुर विभ्रमियै, सारग विजै मिळै तिण  
समियै। आसोवाद करै इम अखै, राजा किए कारण अम्म  
रखै।—सू प्र

उ०—३ हुए हिंदु बळहीण, धरा पण खीण सुरा धम। मिटै  
वेद मरजाद, भेद गुण आद पडै अम।—रा रू

उ०—४ तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाल। मिळियो  
उर अम भेटवा, हिंदू धम रखवाळ।—रा रू

रू० भे०—अम्म, अम्ह, अहम।

अमक-स० पु० [स० अम] भय, डर, घातक। (अ मा)

अमकारी-वि० [स०] १ अम मे डालने वाला।

२ सन्देह उत्पन्न करने वाला।

३ विश्वास या प्रतीति वाला।

४ गुजाइश वाला।

५ सार या तत्त्व वाला।

६ भेद या रहस्य वाला।

रू० भे०—भरमकारी।

अमगामी-वि० [स० अम+गामिन्] १ चलचित्त, डावाढोल।

२ अमित।

अमजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

अमण-स० पु० [स० अमण] १ घूमना-फिरना, विचरण।

उ०—थोडा दिन बीतिया सेखर आइयो, मो किए ही बी री वात  
नही वूझी। जद फेर यो अमण नू वन माही नोसरि गयो।

—मिधासण वत्तीमी

२ यात्रा, सफर।

३ चक्कर, फेरी।

उ०—सिसमार चक्र ध्रुव विण सु तो, भजै न कुण रिसि गण  
अमण। अगमै साह 'अवरग' सू, कमधा विण चाळी कवण।

—रा रू

४ आना-जाना, आवागमन।

५ घोखा, भूल।

६ अम, भ्राति।

रू० भे०—अमण, भरमण भवण।

अमणी-वि०—१ अमण करने वाला, फिरने वाला।

२ यात्री।

३ चक्कर या फेरी लगाने वाला।

अमणी, अमघी—क्रि० अ० [स० अमणम्] १ घोखा खाना।

उ०—वात वळै असुरा विसतारी, घर विस असट दिलासा धारी।  
कितराई सुण अमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा।

—रा रू

२ सफर करना, यात्रा करना।

३ वहकना।

४ चकित होना।

५ देखो 'भवणी, भववी' (रू भे)

उ०—१ हाक डाक त्रवक धमहमिया, भावर विकट असटकुळ  
अमिया। कमधज दळ हालता कराळा, दहसत पडै दसै द्रगपाळा।

—सू प्र

उ०—२ अवर ग्यान नह व्यान उचारै, आप जेम प्रिया प्रिया  
उचारै। सिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियै, भूली चित माया  
भ्रित अमियै।—सू प्र

उ०—३ मन अमिया सुण कोप महानै, थयो सोच सब हिंदुसथानै।

—रा रू

उ०—४ उड रहियो मन लाग अलगै, गुड्डी जाण अमै गयणै।

ऊभा दास खिजमती अगो, ताव वित्तव लखै टगटगो।—रा रू



उ०—५ मधुकर अमृत सुवास मद, भाल मुधाकर भास । मोदक  
कर मन मोदमय, नितजय रयान निवास ।—वा दा  
अमरणहार, हारो (हारी), अमणियो—वि० ।  
अमियोडो, अमियोडो, अमियोडो—भू० का० कृ० ।  
अमीजणो, अमीजवो—भाव वा० ।

अममूलक—वि० [स० अम+मूलक] अम के कारण उत्पन्न ।  
अमर—स० पु० [स० अमर] १ काले रंग का पतंगा, जो भू भू की  
ध्वनि करता हुआ उड़ता है, भौरा । (ह ना मा)  
उ०—अहि-वेल पथ कपूर सुख, तबोल लाल सोहत मुख ।  
आघ्राण छाभा परिमळ असख, गुजारव डवर अमर पख ।

—गु रू व

उ०—२ चणणकै भड चिहूर, छीजि कातर छगणकै । टणणकै  
टामक, अमर फीला भणणकै ।—व भा  
२ इयाम रग ।  
३ लहर, तरग । (ह ना मा)  
४ प्राण, जीव, आत्मा ।  
५ दोहे का एक भेद, जिसमे २२ गुरु तथा ४ लघु वर्ण होते हैं ।  
६ छप्पय छद का ६५ वा भेद, जिसमे ६ गुरु और १४० लघु से  
१४६ वर्ण या कुल १५२ मात्राएँ होती हैं ।  
७ देखो 'भवर' (२) (रू भे)  
उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण । वेळ निजर  
विद्वत्ता, असह कवि अमर अकारण ।—रा रू  
रू० भे०—भग, भमर, भवर, भमग भमण, भमर, भरमर, भवर  
भवर ।  
अल्पा०—भमरो, भवरो, भवरियो, भवरघो, भउरो, भमरडो,  
भमरडड, भमरघो, भवरियो, भवरघो, भमरलड, भमरलो, भम-  
रियो भमरो, भौरा ।  
मह०—भमराळ, भमराण ।

अमरकेतु—स० पु० [स०] एक राक्षस ।

उ०—प्रवल भुज जुद्ध विण मा उपमम थयो, निठुर कायर अमर-  
केतु नाठी । घन्य ही घन्य जोगणि कहै चित्त घरि कीयो राक्षस  
थकी हीयो काठी ।—वि कु

अमरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

अमरावध—स० पु०—हाथी ।

अमरावळ—देखो 'अमरावळी' (रू भे)

उ०—महला पूनम चंद मुख, आठम चंद ललाट । केहर कड ज्यू  
खीण कड, भू अमरावळ घाट ।—वा दा

अमरावळी—स० स्त्री० [स० अमर+अवलि] १ अमरो की श्रेणी  
या पक्ति ।

२ प्रत्येक चरण म ५ सगण युक्त १५ वर्ण का मात्रिक छद ।

रू० भे०—अमरावळि, अमरावळी, अमरावळ ।

अमरी—स० स्त्री०—१ मिर्गी नामक रोग ।

२ जलुका नाम की लता, पटपदी ।

अमवाहण—स० पु०—इन्द्र । (अ मा, ना मा)

अमाडणो, अमाडवो—१ देखो 'अमाणी, अमावो' (रू भे)

२ देखो 'भवाणी, भवावो' (रू भे)

अमाडणहार, हारो (हारी), अमाडणियो—वि० ।

अमाडियोडो, अमाडियोडो अमाडयोडो—भू० का० कृ० ।

अमाडीजणो, अमाडीजवो—कर्म वा० ।

अमाडियोडो—१ देखो 'अमायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भवायोडो' (रू भे)

(स्त्री० अमाडियोडो)

अमाणी, अमावो—कि० स०—१ घोखा देना ।

२ धक्काना ।

३ सफर कराना, यात्रा कराना ।

४ चाकत करना ।

५ देखो 'भवाणी, भवावो' (रू भे)

अमाणहार, हारो (हारी), अमाणियो—वि० ।

अमायोडो—भू० का० कृ० ।

अमाईजणो, अमाईजवो—कर्म वा० ।

अमाडणो, अमाडवो, भरमाणो, भरमावो, अमावणो, अमाववो  
—रू० भे० ।

अमायोडो—भू० का० कृ०—१ घोखा दिया हुआ २ सफर या यात्रा  
कराया हुआ ३ देखो 'भवायोडो' (रू भे)

(स्त्री० अमायोडो)

अमावणो, अमाववो—१ देखो 'अमाणी, अमावो' (रू भे)

२ देखो 'भवाणी, भवावो' (रू भे)

अमावणहार, हारो (हारी), अमावणियो—वि० ।

अमावियोडो—भू० का० कृ० ।

अमावीजणो, अमावीजवो—कर्म वा० ।

अमावियोडो—१ देखो 'अमायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भवायोडो' (रू भे)

(स्त्री० अमावियोडो)

अमियोडो—भू० का० कृ०—१ घोखा खाया हुआ २ यात्रा या सफर  
किया हुआ ३ देखो 'भवियोडो' (रू भे)

(स्त्री० अमियोडो)

अमना—देखो 'भरमणा' (रू भे)

उ०—मन मेरा समझ समझ पग घरना, मिटै भव जळ अमना ।  
कनक कामनी ज्वाळ बुरी है, उण सू निशि दिन डरना ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

अमावणकुजर—स० पु०—पांडु पुत्र भीमसेन । (ह ना मा)

अमि—स० स्त्री० [स०] उतानपाद पुत्र ध्रुव राजा की पत्नी, जो शिशु-  
मार प्रजापति की कन्या थी ।



भ्रमी-वि० [स० भ्रमिन्] १ जिसे भ्रम हो, भ्रम वाला ।

२ चकित, भौंचक्का ।

३ वह वस्तु जो छूटने पर मुड़ जाती है जिससे निशाना ठीक नहीं बैठता ।

भ्रमुवल्लभ-स० पु० [स० भ्रमुवल्लभ] ऐरावत हाथी । (नां मा)

भ्रम्म—देखो 'भ्रम' (रू भे)

उ०—१ भज हरि नाम टलै मन भ्रम्म, कथै हरि नाम जलै तन क्रम्म । जपै हरि नाम अहोनि स जीह, ससार तिका न सतावै सीह ।

—ह र

उ०—२ आ घात वात रमतो इसी, पडिस भ्रम्म भूलिस पगा । हरिनाम वरत ऊपर हलव, जीव नटु जेही 'जगा' ।—ज. खि

भ्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—निमो राम जेण तरी भ्रम्ह नारी, यू ही ताडका मार बाणा उधारी । सुबाह कियो खड खड सरखै, निमो च्यार सै कोस मारीच नखै ।—२ ज प्र

३ देखो 'भ्रम' (रू भे)

भ्रसड—देखो 'भ्रसुड' (रू भे.)

भ्रसडी-वि०—भयकर, जबरदस्त ।

भ्रसस-स० स्त्री० [स० भृश] निदा, अपकीर्ति ।

भ्रससनीय-वि०—निंदनीय ।

उ०—घायकै भ्रससनीय घाम तै धरघौं, काम तै प्रससनीय काम नां करघौ ।—ऊ का

भ्रसुड-स० पु०—हाथी का मस्तक ।

उ०—१ हे देवी काली—तथा कालही वावळी आज म्हारो पती जुद्ध करसी सो लोही पीण ओ छोटी खपर काही लोघो हाथी रा भ्रसुड रो कडाव होवै जेही खप्पर (माया रो आघो भाग) लै—तथा रिण समे हाथी रा चाचरा माथै ढाल वधै छै सो कडाव होवै जेही होवै छै ।—वी स टी

उ०—२ जमी पुड घर हरै उठै रुका जरक, देख कपणा थरक पीठ दीधी । हचण रण सुकर जमदाढ ग्रहिया हरक, करी वालै भ्रसुड गरक कीधी ।—गुनावसिंह चूडावत रो गीत

२ हाथी की सूड ।

रू० भे०—भ्रसुड ।

अल्पा०—भ्रसूडो ।

भ्रसूडो—देखो 'भ्रसुड' (अल्पा, रू भे)

उ०—पचू पटा वहतां मद पूरण, सारी दरगह सोधै । सिधुर तरण भ्रसूडै सुजडी, जडी अमनमै 'जोधै' ।—रतनसिंह रो गीत

भ्रस्ट-वि० [स० भृश+क्त] नीचे गिरा हुआ, पतित ।

२ खराब, ह्वित ।

३ बदचलन, दुराचारी ।

४ बरवाद, नाश ।

५ भूला-भटका ।

रू० भे०—भ्रस्ट, भसट, भिसट, भिसट, भिस्ट, भीसट, भीस्ट ।

भ्रस्टा-वि० [स० भृश] कुलटा, पृथली ।

रू० भे०—भ्रस्टा ।

भ्रस्टाचार-स० पु० [स० भ्रष्ट+आचार] १ दुपित और निंदनीय आचार । २ घूस, रिश्वत ।

भ्रहम—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—पुणै कमण तर पत्र, भ्रहम माया कुण भवखै ।—र ज प्र २ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—रघुवर महाराज गाव नहचै यक पल न लाव, रक करै सोई राव, सुद्ध भाव साम रे । दीनवधु दवदेव, भाखत लुति भ्रहम भेव, जेता जग सो अजेव, गहर गरुड गाम रे ।—र ज प्र

३ देखो 'भ्रम' (रू भे)

भ्रमहचार—देखो 'ब्रह्मचरध' (रू भे)

भ्रमहचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

भ्रहमाण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह, रू भे)

उ०—भारा आकात हुवदी भूमि, वरतदी सुरवार विक्खम्मी ।

अमरु कथ भ्रहमाण अखम्मी, थदै उथ्यल थानूदा ।—र ज प्र

भ्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

भ्रहमेण—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—ते रज पाय तरी रिख तरणी मभ वेदां वरणी भ्रहमेण ।

ढहिया विरद वडा भुजडडे, तीख करे मिथळापुर तडे । जटघर चाप विहडे जेण ।—र ज प्र

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

भ्रहामण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—अप सुवारथी मरो आदमी, सत छोडै सो मरो सती । भणियो नह सो मरो भ्रहामण, जत्र मत्र विण मरो जती —अज्ञात

भ्रहास—देखो 'वरहास' (रू भे)

उ०—चढै जद बाघहसीह सुजाण, चढै अरिकाळ सुपुत्रह-भाण । चढै सुज यू 'चतुरेस' भ्रहास, नमे सिर सूर किया अरिनास ।

—शि सु रू

भ्रह देखो 'भ्र' (रू भे)

उ०—सुणै जद बचवन 'भैरव' सूर, नरांपत घोय चखा चढ नूर । अगूटीय रेख चढै मुर भाळ, मिढै भ्रह मूख अढै भुवपाळ ।—पे रू

भ्रांत-स० पु० [स०] १ विरोध, वैमनस्य, शत्रुता ।

उ०—१ भाया घालै भ्रांत, अजर दांणी जारण करै ।—अज्ञात

उ०—२ तपस्या मे क्या दोखो दुसमणा रै कह्या सू छी दीवांण री निजर माफक छै । क्या दोखिया म्हानै हरामखोर कहि मन माहै भ्रांत नांखी ।—राव रिणमल री बात

२ घमना-फिरना, भ्रमण ।

३ विचार ।

उ०—अतरी ताड़ भ्रांत न आंणी अतरि, हित हिज करे जाणियउ हेक । माता पिता मिळण ऊमाहइ, ऊपिया सिव वचन अनेक ।

—महादेव पारवती री वेलि

वि० [स०] १ भ्राति या भ्रम मे पडा हुआ, घोखे मे डाला या पडा हुआ ।

उ०—फितरा दिन लगइ चाकरी कीधी, एकण ध्यान रह्यो एकात । दीठउ साच तरइ वर दीन्हउ, भरम दिखायउ उभ्रत भ्रात ।—महादेव पारवती री वेलि

२ सदेह, भ्रम, शक ।

उ०—उत्तमकुमार किहा अछै आगनि कहि ब्रतात, जीवै छै किवा मूओ, भांजि भांजि मन भ्रात ।—वि कु

३ भूला हुआ, भटका हुआ ।

४ चक्कर खाया हुआ ।

५ इधर-उधर घूमा हुआ ।

रू० भे०—भरात ।

भ्रांतापहनुति—स० पु० [स० भ्रान्तापहनुति] किसी भ्राति को दूर करने के लिए सत्यवस्तु के वर्णन का एक काव्यालंकार ।

भ्रांति, भ्रांती—स० स्त्री० [स० भ्रान्ति] १ भ्रम, घोखा ।

उ०—दिस वतावो ब्रहन कू, तो सुख पाऊ वेम । भिळिया भ्रांति भागसी, जासी सरव अन देस ।—स्री हरीरामजी महाराज  
२ सदेह, शक ।

उ०—अतरि घुरा पचमी एह, छठी लिखी कोठा रो छेह । पगति छठी पाचमी पाति, भेळी करे न कीजै भ्रांति ।—ल पि.

३ भूल-चूक ।

४ घबड़ाहट, परेशानी ।

५ मोह ।

६ प्रमाद ।

७ चक्कर, फेर ।

८ एक काव्यालंकार जिसमें उपमान के समान उपमेय को देखने से उपमान का भ्रम हो जाता है, उपमेय को उपमान समझा जाता है ।

रू० भे०—भराति, भ्र नि ।

भ्रांतिजया—स० स्त्री०—डिगल साहित्य मे प्रयुक्त होने वाला एक अलंकार विशेष ।

वि० वि०—यह वस्तुतः भ्रान्ति अलंकार ही है, परन्तु डिगल गीतो मे इसके दो भेद बताए हैं—१ एकरंगी भ्रान्ति, जो सदेह अलंकार के नजदीक रहती है तथा २ निश्चय भ्रान्ति, यह पूर्णतया भ्रांति अलंकार है । (क कु वो)

भ्रामक—वि० [स० भ्रामक] १ भ्रम मे डालने वाला ।

२ घोखे मे डालने वाला ।

३ सदाय या सन्देह में डालने वाला ।

४ घुमाने या चक्कर देने वाला ।

५ धूर्त, चालाक ।

भ्रामणी, भ्रामवी—क्रि० श्र०—१ भ्रमण करना ।

२ घूमना-फिरना ।

३ चक्कर खाना ।

४ भटकना ।

उ०—करी कृपा तो सेवा कीजै, लिवरावी तो नाम ज लीजै । पखै रजा कोई चलण न प्रांमै, भगत वछ्छ पडियो जुग भ्रामै ।

—ह र.

५ यात्रा करना, सफर करना ।

क्रि० स०—६ घुमाना, फिराना ।

उ०—वपु स्यामसुंदर मेघ रुचि फवि तडिन पीत पटवर । मुज वाम चाप निखग कटि तट, दच्छ कर भ्रामित सर ।—र ज प्र  
भ्रामणहार, हारी (हारी), भ्रामणियौ—वि० ।

भ्रामियोडी, भ्रामियोडी, भ्राम्योडी—भू० का० कृ० ।

भ्रामीजणी, भ्रामीजवी—भाव वा० ।

भ्रामर—स० पु०—१ दोहा छंद का एक भेद विशेष, जिसमे २१ गुरु एव ६ लघु होते हैं ।

२ गोलाकार ।

उ०—चमर घार परवार करी भ्रामर परिक्रमा । भुज लवत डडोत, वयण ब्रत पेख ब्रह्मा ।—रा रु

स० स्त्री०—३ परिक्रमा, भावरी ।

४ बहुत से लोगो का मडल बनाकर किया जाने वाला नृत्य ।

वि०—५ भ्रमर मन्वन्वी ।

भ्रामरी—देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रु भे)

भ्रामियोडी—भू० का० कृ०—१ भ्रमण किया हुआ २ घूमा-फिरा हुआ ३ चक्कर खाया हुआ ४ भटका हुआ ५ यात्रा या सफर किया हुआ ६ घुमाया या फिराया हुआ (स्त्री० भ्रामियोडी)

भ्रामी—१ ब्राह्मण की स्त्री ब्राह्मणी ।

२ एक प्रकार का गाथा छंद ।

उ०—मीना अगी तीन कके भण, तव वीह कका नाम काळी तण । भ्रामी वसश सेत तन भासत, वसन लाल खिन्नणी सुवासत ।

—र ज प्र

२ देखो 'ब्राह्मी' (रु भे)

भ्राजक—स० पु० [स० भ्राजक] त्वचा मे स्थित पित्त (वंद्यक) ।

भ्राजणी, भ्राजवी—क्रि० श्र०—शोभायमान होना ।

उ०—१ कज सख गदाजं चक्र उछाज, आयुध साज भुज भ्राज । मह गी दुजमान रिखि नर राज सुचित जराज दत साज ।

—र ज प्र

उ०—२ सोमि जान सिरदार रूप भरणपार विराजै, रतन निकरि  
किरि रुचिर भौमि वैरागर आजै ।—रा रु  
आजणहार, हारी (हारी), आजणियो—वि० ।  
आजियोडी, आजियोडी, आजियोडी—भू० का० कृ० ।  
आजीजणौ, आजीजणौ—भाव वा० ।

आजियोडी—भू० का० कृ०—शोभायमान हुवा हुआ।  
(स्त्री० आजियोडी)

आत—स० पु० [स० आतृ] सहोदर, भाई । (अ मा)

उ०—१ आत मित्र जुग जुग भला, नीत प्रमिद निराट । जुगल  
भुजा कर जाणिवा, कृपणां जुगल कपाट ।—बा दा

उ०—२ मात न तात न आत सुत, सगा न सूदर साथ । 'हरीया'  
जासै हेकली, करि वोलाऊ हाथि ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज  
रू० भे०—भ्रत, आता, भ्रित ।

आतविजेसर—स० पु०—श्री कृष्ण का भाई बलभद्र । (ना मा)  
आता—देखो 'आत' (रू भे)

उ०—तुही माता ताता बहिन निज आता भल तुही । तुही दाता  
खाता भवळ अनदाता वळ तुही ।—ऊ का

आतालछी—स० पु० [स० लक्ष्मी + आता] चन्द्रमा, शशि । (हि को)  
आतीज, आतीजो, आतीज, आतीजो—देखो 'भतीजो' (रू भे)

उ०—१ जाम निसा जावता भूमा सू मिल आतीजो । कथं ऊवर  
कटार जही जद पोहरो बीजो ।—पा प्र

उ०—२ विजही सू बीजाह, पिड मे खीची पाडियो । भाळै आती-  
जाह, रिम तो साख राखियो ।—पा प्र

आसड—स० स्त्री०—भडभूजे की भट्टी ।

उ०—उत्पणकाल पट्टतड, जिसी दावानल तणी उवाला तिसी लू  
वाड, जिसउ वावन्न पल तणउ गो घमिउ हुइ तिसिउ आदित्य  
तपड, जिसी आसड तणी वेळ तिसी भूमिका घगघगइ ।—व स

अगि—देखो 'अगी' (रू भे)

उ०—फवें मोगरी सेवती जाय फूली, अगी पति सेवति भूली  
भमूली । लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप  
देखै ।—रा रु

अक्रुट, अक्रुट—देखो 'अक्रुटि' (रू भे)

उ०—१ गुहें जूह मद-गघ, सेन अनमथ सुभट्टह । घड वेहड ऊक-  
रड, कटै कोपट्ट अक्रुट्टह ।—गु रु व

उ०—२ चद सूर लग नाम चढावै, करि जस समदां तणै कडै ।  
सूरा मरण सामि-घम साटो, वसुधा दीन्ही अक्रुट वडै ।

—महेश कल्याणमलौत साखला री गीत

अगुरिसि—स० पु० [स० भृगु + अगुरि] परशुराम ।

उ०—कमलापति कैवल्य अति विस्वविवाता जेह । भलपण अ  
अगुरिसि तणउ, पाद्ग मारिउ तेह ।—मा का प्र

अगुलता, अगुलात—स० स्त्री० यो० [स० भृगु + राज० लात] विष्णु  
भगवान के वृक्षस्थल पर भृगु ऋषि द्वारा मारी गई लात का चिन्ह ।  
उ०—सुंदर तन घनस्याम, भुजा आजान चतुरभुज । कुडल तिलक  
मणिमुकुट, धरण अगुलता गरुडध्वज ।—सू प्र  
रू० भे०—भरगुलता, भिरगुलता, अगुलता, अगुलात ।

अत—१ कोयल ।

उ०—कक ककी अत (अत) नील कुलगा, अवरचर सर छैदै  
अगा ।—रा रु

२ देखो 'आत' (रू भे)

उ०—सिधासणी वा इद्रासणी वा, प्रिथीपती वा सरगपती वा ।  
अत सुरी वा अत नरी वा, दिलीसरी वा जगदीसरी वा ।

—गु रु व

३ देखो 'अत्य' (रू भे)

अहम—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—भूमडल पाज नभ सिखर पुर उवर भव, गुरत दुत गहर मुद  
कोप छिब गाथ । रिख रिखी रिख उदव अहम कज दामरथ, नाग  
खग दघ हरी हर विरचनाथ ।—र ज प्र

२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

अक्रुटि—देखो 'अक्रुटि' (रू भे)

अह, अह—देखो 'अह' (रू भे)

असड—देखो 'असड' (रू भे)

उ०—गजा ऊघडे असड तुड घडई पाताळ गोम, वडई जरदा  
कडो ऊडै खगा वूर । अह रवां भडै मुख गंगा रवा भडै भुजा,  
साल मीत कुसुचीडै लडै माहासूर ।—पहाडखा आडो

अह—देखो 'अह' (रू भे)

उ०—१ अमै प्रत्यह व्यूह पैं समस्तु अह लों भिरी । अमै प्रत्यह  
अपमा दुरूह दत ली किरि ।—ऊ का

उ०—२ ये जु पासि सखी त्यां जव स्त्रीकृष्णजी अर रुखमणीजी  
को आखिया थें अर मुख का विलास थें अतहकरण जाण्यो । तव  
ये अह ही मे थोडो थोडो हमि ।—वेलि

अह—देखो 'अह' (रू भे)

अण—देखो 'अण' (रू भे)

अह—देखो 'अह' (रू भे)

उ०—१ दखैं नाम अल्लाह दे हाथ दाढी, चवैं राम मूछा वळै  
अह चाढी ।—सू प्र

उ०—२ चपळ नेत्र सारग, रेख अह मांकरद । दीपक-नासा दिपत  
सरद-रणी मुख-ईद्रह ।—गु रु व

अह—स० पु० [स] आख के ऊपर के घनुषाकार वाल, मीह ।

रू० भे०—भवहारी, भवारी, महारी, भमुह, मह, भुअ, भुवारी,  
भुहरी, भुहारी, भुआरी, भुह, भुहरी, भुहार, भुहारव, भू भूह,



## म

म-स० पु०—देव नागरी वर्णमाला के प वर्ण का अन्तिम वर्ण । यह सघोष, अल्पप्राण द्व्योष्ठ्य अनुनासिक व्यंजन के लिए प्रयुक्त होता है और अनुनासिक स्पर्श व्यंजनों के समान इसके उच्चारण में भी नासिका मार्ग पूर्णतः उन्मुक्त रहता है ।

म-स० पु०—१ मगलग्रह । २ दुष्ट । ३ गुड । ४ मिलन । ५ सुन्दर । ६ रूप । ७ मगलगीत । ८ उत्सव । (एका) ९ देखो 'म' (रु भे)

मइ—१ देखो 'म्है' (रु भे)

उ०—१ स्त्रीवासु पूज्य जिनिसर ताहरी ओलग हो मइ कीवी सहीजी ।—वि कु

उ०—२ पिण तुम्हे सगुण सा पुरीम सवाई, पाई हो हो बाहुङ्गी मइ तुम तणीजी ।—वि कु

२ देखो 'मे' ।

उ०—चमोद्र चित्त मइ उपभोग आण्युरै ।—स कु  
३ देखो 'मय' (रु भे)

मकड—१ देखो 'मकड़ी' (रु भे)

उ०—१ करह द्राक्षावनि किसिउ करइ, ऊदिर रत्न करइ किसिउ करइ, मकड नाग वल्ली दलि किसिउ करई ।—य स

उ०—२ असि भफ मकड पाळ ए, पडकति सात पयाळ ए । खेडत खँग जुवाण ए, सुरजाणि वोम विवाण ए ।—गु रु व  
२ देखो 'माकण' (रु भे)

मकलक-स० पु० [स०] एक ऋषि का नाम । (महाभारत)

मकवाणा—देखो 'मकवाण, मकवाणा' (रु भे)

मकवाणी—देखो 'मकवाणी' ।

मकुवाणा—देखो 'मकवाणा' (रु भे)

मकू-स० पु० [स० मकू] गति या चाल में होने वाली तेजी, शीघ्रता, वेग । (अ मा)

रु० भे०—मकू ।

मकड़ी—देखो 'मकड़ी' (रु भे) (शा हो)

मख—१ चित्रपट दिखाकर निर्वाह करने वाली भिक्षु जाति ।

२ देखो 'मख' (रु भे)

उ०—लाख हमलै मख लागि, न न आणियो पिनाक ।—रामरासी

मखू—देखो 'मकू' (रु भे.) (ह ना मा)

मग-स० पु०—१ मिह, वनराज । (अ मा., ना डि को, ह ना मा)  
२ देखो 'माग' (रु भे)

उ०—वर्ण 'मुजग रूप वेणि मग सीस मोतिय । प्रजा लजै न छय पाति, जोय तास जोतिय ।—सू प्र

३ देखो 'मारग' (रु भे)

मगजण—देखो 'मागण' (रु भे)

उ०—दातारा री वत्तही, दातारा भावत । वरी मगजण पामणा,

अणचित्वा आवत ।—वा दा

मगजाई—देखो 'मगजाई' (रु भे)

मगण—देखो 'मागण' (रु भे)

उ०—१ घन देणी जिण घगडै, हैको पुरुख न होय । सुपन ही नहि सचरै, लोभी मगण लोय ।—वा दा

उ०—२ मिळनी मगण नू कहै, मुदी करू मालूम । मारग लागी मत टिकी, हाजर नाजर सूम ।—वा दा

मगणि, मगणी—देखो 'मगनी' (रु भे)

मगणी, मगबी—देखो 'मागणी, मागबी' (रु भे)

उ०—१ मोटो दाता मगियो, तोटी भाजै तेण । कीजै मायर खेप किल जुडै जवाहर जेण ।—वा दा

उ०—२ तन अमित मोल्य मडित रतन, आभूखण गुण ऊधरै । स्र गार साजि मग मसख, महाराजा मडोवरै ।—रा. रु

मगणहार, हीरो (हारी), मगणियो—वि० ।

मगिओडो, मगियोडो, मग्योडो—भू० का० वृ० ।

मगीजणी, मगीजबी—कर्म वा० ।

मगत—१ देखो 'मागत' (रु. भे)

२ देखो 'मगती' (मह, रु भे)

उ०—भगता पाच तथा सात भली तरह मू करी । घणा भाट मगतजणा नै राजी किया ।—पलक दरियाव री वात

मगतड—देखो 'मगती' (मह, रु भे)

मगतजण—देखो 'मगतजण' (रु भे)

मगतराय-स० पु०—याचको में अग्रगण्य, अत्यधिक दीनता दिखाने वाला याचक ।

मगतवाड, मगतवेड-स० पु०—याचक दल, याचको का समूह ।

मगताई-स० स्त्री०—१ मागने का कार्य ।

उ —कुटुब तज्यो चेला बहू सीन्हा, कर वाता दळ चतुराई । श्री यू करमी, श्री यू देसी मगता का मगताई ।

—श्री सुखरामजी महाराज

२ दीनता और हीनता का भाव ।

३ नीचता ।

मगतौ-म० पु० (स्त्री० मगतण, मगती) याचक, भिक्षुक, भिखारी ।

उ०—१ तद श्री डरियो और कही—भाई हू गरीब मगतौ छू मोसू महाराज री किसो काम छे ।—माह रामदत्त री वारता

उ०—२ खुद तो लोगा री कमाई माथे मछरा करो अर म्हनै इछा परवाण मागण री आदेस करो । म्हनै ये काई मगती जाणी ।

—फुलवाडी

रु० भे०—मगती ।

म०—मगन, मगनह, मगति, मगन ।  
मगदली, मगदली—देवा 'मगदली' (रु भे)

मगन—१ देवी 'मांगण' (रु भे)

२ देवी 'मगन' (रु भे)

मगनी—म० श्री०—१ मागने की प्रिया या भाव ।

० कुछ समय के लिए मागनर ली जाने वाली वस्तु ।

२ एक प्रकार की प्रथा विशेष जिसमें घर और नन्या दोनों पक्ष के व्यक्ति घर और नन्या के विवाह सम्बन्ध की निश्चित करते हैं, मगद ।

म० म०—मागि, मगली ।

मगर—१ देवी 'मगर' (रु भे)

२ देवा 'मगरी' (मह, रु भे)

उ०—जोतयाग मलकें मिला नदि जल । चमकें मगर उल्ले चचल ।

—सू प्र.

मगल—वि० [म० मगल] १ शुभ, मागनिक, सुख, सौभाग्य देने वाला ।

मुहा०—पट मगल लग्गा=देव मंदिर, घर या मकान के द्वार बन्द करना । (शुभ)

० मग्दिवान ।

१ वीर, बहादुर ।

म० पु० [म० मगन] १ कल्याण, कुशल धर्म, हित ।

उ०—गगनति गिरा निवागी मुग्गण । मगल करण भ्रमगल मेटण ।—रा रु

० हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द ।

उ०—१ मूरन पृछे टीपणी, मुकन न रेगं मूर । मरणा नू मगल गिरणं, मगर चटें मुग मूर ।—वा दा

उ०—२ निगनिय नीति उदगल नाय । मुनी किय मगल जगल गाय ।—ऊ वा

३ मगल के मात दिनों में से एक दिन, जो सोम के पश्चात् और बुध के पूर्व पड़ता है, भोमवार । (अ मा)

४ गौरजगन् में पृथ्वी के बाद पड़ने वाला नव ग्रहों में से एक ग्रह । (अ मा)

उ०—जायें तही जाचर घरा मन महता मर्य । मगल री जगणी मरी, मरणा री मर्य ।—वा दा

वि० वि०—पृथ्वी के पश्चात् यह ग्रह पड़ने पड़न पड़ता है । इसका दाय ४२०० मील है और सूर्य से दूरी १४ १०,००००० मील है ।

यह छह महीने की परिधिमा ६८७ दिन में गच्छता है । ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस ग्रह का जलवायु पृथ्वी के जलवायु से बहुत बड़ा मिलता जुलता है और यहाँ स्थल और जल विद्यमान हैं ।

५ दिव्य ।

६ दिव्य का एक गीत विशेष ।

७ दिव्य त 'मगिनी' मांगोर (छाटी मांगार) छंद का भेद विशेष जिसमें प्रथम छंद में १० लघु, २६ गुरु कुल ६६ मात्राओं तथा दसो

क्रम में दोष ढाळे में १२ लघु, २५ गुरु, कुल ६२ मात्राओं होती हैं । (वि प्र)

८ एक छंद विशेष जिसमें प्रथम दो नगण फिर पांच भगण और अन्त में दो दीर्घ वर्ण होते हैं । (ल वि)

९ शुभ अवसर या आयोजन के समय गाया जाने वाला गीत, मागनिक गीत ।

उ०—घर घर बघाई हुवें छै घर घर उछाह हुवें छै । घर घर मगल गायें छै ।—पचदही री वारता

मुहा०—मगल गावणी=शुभ अवसर पर आनन्द के गीत गाना, प्रसन्न रहना ।

१०—देवी देवता के कपाट बन्द करते समय गाया जाने वाला लोक-गीत विशेष ।

११ वह घोड़ा जिसके कंठ, ललाट व शिर पर भोंगी हो । (शुभ)  
(शा. हो)

१२ लाल या रक्त वर्ण ।

१३ विवाह मंडप में वर-वधू द्वारा वेदी के चारों ओर दी जान वाली भावरी ।

उ०—चोथे मगल रामचंद मुर तरणि श्रीराम आगें क्रमि आणि अनति सीता वाम सु भग ।—रामरामो

१४ वीर पुरुष, योद्धा ।

उ०—लतयोवथ लागी रै, आहुडिया मगला आगा रै । घरा दस लाग पिया घेरे रै, सेसविया 'अचल' खागें रै ।

—रावत अचलदास सगतावत री गीत

१५ विवाह ।

१६ एक देव जो स्वायम्भुव मन्वन्तर के जित देवों में से एक था ।

१७ देवी 'मदकल' (रु भे)

१८ देवी 'मगला' (रु भे)

उ०—१ मघण ताम वूठी ममराया । मंगल प्रजल भ्रमगल माया ।  
—गु रु व

उ०—२ हुतासण मगल जलण हुबहु, दावक-नल पायक वन दह, धवण ऊगण दहण धोमह, वासदेव वज्राग । जुई भरियण लाग जाळें, प्रसण तग धाय प्रजाळें, बडे राजा अक—वाळें मरी बाळ प्राग ।—महाराजा गजनिह री गीत

मुहा०—मगल मेलणी=प्रतिष्ठ करना, किसी के अहित की चाहना करना ।

यी०—मगलघस्ट, मगलकरण, मगलकलस, मगलपारी, मगल-गान, मगलगीत, मगलगीरीवन, मगलघट, मगलचटिका, मगलचार, मगलफळ, मगलदायक, मगलधमल, मंगलपाठ, मंगलपाठी, मंगल-प्रद, मगलरूप, मगलवाद, मगलवार, मंगलवारी, मंगलवेळा, मंगलवृक्ष, मगलवृत्त ।

मंगलप्रस्ट—देवी 'मगलमगल' (रु भे)

मंगलकरण-वि० [स० मंगलकरण] (स्त्री० मंगलकरणी) कल्याण करने वाला, हित करने वाला ।

स० पु०—१ गजानन, गणेश ।

२ देखो 'मंगलकरणी' (रू भे)

मंगलकरणी-वि०—कल्याण करने वाली ।

स० स्त्री०—१ केसर ।

२ देखो 'मंगलकरण' ।

मंगलकलश-स० पु० यी० [स० मङ्गलकलश] विवाह आदि शुभ अवसरों पर पूजा के लिए रखा जाने वाला जल से भरा हुआ घटा या कलश ।

मंगलकारी-वि०—आनन्द करने वाला, मांगलिक ।

रू० भे०—मंगलाकारी ।

अल्पा०—मंगलाकारी ।

मंगलकारी, मंगलकारी—देखो 'मंगलकारी' (अल्पा०, रू भे)

उ०—ससार माहँ जीवसु ता सीम सरणा चारोजी । गणि समय-सुंदर इम कहइ, कल्याण मंगलकारी जी ।—स कु

मंगलगान-स० पु० यी० [स० मंगलगायन] शुभ अवसर पर गाए जाने वाले गीत, मांगलिक-गीत ।

उ०—सहचरीय रभ समान । गावत मंगलगान ।—सू प्र

मंगलगोरीवरत-स० पु० यी० [स० मंगलगोरीव्रत] स्थियो द्वारा किया जाने वाला व्रत विशेष ।

रू० भे०—मंगलागोरी ।

वि० वि०—यह व्रत श्रावण माह के कृष्ण पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ किया जाकर भाद्रपद कृष्ण पक्ष के अन्तिम मंगलवार तक किया जाता है । इस प्रकार यह व्रत चार मंगलवारों में पूर्ण होता है ।

मंगलग्रह-स० पु० [स० मंगलग्रह] शुभग्रह ।

मंगलग्रह—देखो 'मंगलकलम' ।

मंगलचडिका-स० स्त्री० [स० मंगलचण्डिका] दुर्गा का एक नाम ।

मंगलचार, मंगलचारि—देखो 'मंगलाचार' (रू भे)

उ०—१ तीन श्रद्धत ढाल गज तोरण, चहु दिसि कलल मंगलचार चवरी बढी पेवियी चगतै, 'करण' कळोघर राजकवार ।

—किसनो प्राढी

उ०—२ तब पिगल तेढी सुभवार, परिणाव्यउ करि मंगलचारि ।

—ढो मा

मंगलछाया-स० स्त्री० [स० मंगलछाय] लक्ष वृक्ष ।

मंगलणी, मंगलवी—क्रि० अ०—१ प्रज्वलित होना, जलना (होली) ।

मंगलणहार, हारी (हारी), मंगलणियो—वि० ।

मंगलांडणी, मंगलांडवी, मंगलाणी, मंगलावी, मंगलावणी, मंगला-

ववी—सक० रू० ।

मंगलश्रीडो, मंगलियोडो, मंगलघोडो—भू० का० कृ० ।

मंगलीजणी, मंगलीजवी—भाव वा० ।

मंगलदायक-वि० [स० मङ्गलदायक] कल्याण व आनन्द देने वाला ।

उ०—पोस महा सुख पेखता, स्त्री नर पति 'अमसाह' । आयो रस लाइक अवनि, मंगलदायक माह ।—रा रू

मंगलधमल, मंगलधवल—देखो 'धवलमंगल' (रू भे)

उ०—१ मंगलधमल उदमाद, वज्र वाजय जिण वेळा । ग्रहि ग्रहि उडि गुडिया, मिळै सज्जण घण मेळा ।—सू प्र

उ०—२ हुवै मंगलधमल दमगल वीर हक, रग तूठी कमध जग रुठी । सघण वूठी कुसुम बोह जिण मोड सिर, विखम उण मोड सिर लोह वूठी ।—वा दा

उ०—३ घांम घाम मंगलधवल, हुए हगाम हलोर । छडक पगारा नीर छित, घुरै नगारा घोर ।—र रू

उ०—४ राणा ऊमरकोट रा, गया जमारी जीत । ज्यारा मंगलधवल मे, गवरीजै जस गीत ।—वा दा

मंगलपाठ-स० पु० यी० [स० मङ्गलपाठ] १ किसी उत्सव आदि के पूर्व देव तुष्टि के लिए किया जाने वाला पाठ ।

२ कल्याण या क्षेम के लिए किया जाने वाला पाठ, स्वस्ति पाठ ।

मंगलपाठक-स० पु० [स० मंगलपाठक] भाट, वदीजन ।

मंगलपाठी-वि० यी० [स० मङ्गलपाठी] मांगलिक या कल्याणकारी पाठ करने वाला ।

मंगलरूप-स० पु० यी० [मंगलरूप] १ शुभ व आनन्ददायक रूप ।

२ ईश्वर । (ना मा)

मंगलवाद-स० पु० [स० मङ्गलवाद] आशीर्वाद, आशीष ।

मंगलवार-स० पु० [स० मङ्गलवार] सप्ताह के सात दिनों में से एक जो सोमवार के पश्चात् और बुधवार के पूर्व पडता है, भीमवार ।

मंगलवारी-वि०—मंगलवार से सम्बन्धित, मंगलवार का (की) ।

उ०—होली सुक सनीचरी, मंगलवारी होय । चाक चहोई मेदनी, विरला जीवै कोय । (शकुन)

मंगलवेला-स० स्त्री० [स० मङ्गलवेला] शुभ काल, शुभ अवसर, मांगलिक समय, मुहूर्त ।

मंगलसूत्र-स० पु० यी० [स० मङ्गलसूत्र] १ किसी भी शुभ अवसर पर कलाई में बांधा जाने वाला धागा ।

२ वह डोरा जो सौभाग्यवती स्त्री अपने गले में तब तक बांधती है जब तक उसका पति जीवित रहता है ।

३ तावीज या बाजूबद की डोरी ।

४ स्थियो के गले में धारण किया जाने वाला आभूषण विशेष जो सुहाग चिन्ह माना जाता है ।

वि० वि०—यह प्रायः स्वर्ण निर्मित होता है और धागे में पीले



या काले मोतियो के साथ पिरोकर अथवा सोने की जजीर मे पिरोकर गले में धारण किया जाता है ।

मगलस्तान-स० पु० [स० मङ्गलस्तान] मगल कामना से किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान ।

मगला-स० स्त्री० [स० मगला] १ पार्वती गिरिजा ।

(अ मा., ह ना. मा )

२ दुर्गा ।

उ०—तुही काळिका ज्वाळिका वज्रकाया । तु ही मगला तोतळा जोग माया ।—मे म.

३ पतिव्रता स्त्री ।

४ दूर्वादल, दूव ।

५ भोर के समय विष्णु, शिव या कृष्ण की पूजा के लिए गाई जाने वाली आरती ।

६ तुलसी ।

७ हल्दी । (अ मा )

८ एक देवी जिम्ने त्रिपुर वध के समय भगवान् शंकर को वर-प्रदान किया था ।

९ ज्वाला ।

१० अग्नि, आग ।

उ०—काढी दळा सू मगला प्रळे समदा ऊभळी किप्ता, खळा धू अहठी जख गे थडा खाणास । सरगा विछूठी तूटी माघ पव्वै काळा सीस । वीर 'चूडा' वाळो ज्वाळा बीजळा वाणास ।

—तेजरांम ग्रामियो

रू० भे०—मगल, मगळि, मागळी ।

मगलाकार-वि० यो० [स० मगलाकार] मगल करने वाला ।

उ०—कोरी कळस कुभार, वणावै आखा लावै । व्यावा वेहां रोप, नेग विन तोरै पावै । खोपर ढकणी खिडा, वीर वनढो वण ज्यावै ।

माटी मगलाकार, निरन्तर काज सरावै ।—दसदेव

मगलाकारी—देखो 'मगलाकारी' (रू भे )

मगलागोरी—देखो 'मगलागोरीवरत' ।

मगलाचरण-स० पु० [स० मङ्गल+आचरण] १ किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व पढा जाने वाला या उच्चरित किया जाने वाला मांगलिक मन्त्र या पद्य ।

२ सफल सम्पूरणता या मगल अथवा शुभ की कामना से किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ मे लिखा जाने वाला पद्य या श्लोक ।

उ०—नियम मगलाचरण नह, काव्य समापत काज । काव्य उचारण कु कवि ए, करै महाकवराज ।—बा दा

मगलाचार, मगलाचार-स० पु० यो० [स० मङ्गल+आचार] १ आनन्दोत्सव, हर्षोल्लास ।

उ०—१ वर लाडो मोतिया वधाया, अति आणंद विनोद अति ।

मगलाचार सिवपुरी माहें, गूडी ऊछली दैव गति ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ मागलिक कृत्य ।

उ०—१ पीछै सब वात की तयारी कर अकबर जलालदीन का श्रीजुदसाह की साहजादी सै व्याह हुवा अरु बहुत उद्यव मगला-चार हुवै ।—द दा

उ०—२ आला नीला वास कटाइनै कळस कर घणां मगलाचार कर लगन जोय दैत्य दमनी नु परणियो ।—पचदडी री वारता  
३ किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ मे मगल कामना हेतु उच्चरित किया जाने वाला मन्त्र, श्लोक या पद्य ।

४ मागलिक गीत ।

उ०—मगलाचार कृष्ण रुक्मणी की नर नारी सुर गावै । पदै लहै यद्वराजा की, मन वद्धित फळ पावै ।—रुक्मणी मगळ

रू० भे०—मगलचार, मगळच्यारि ।

अल्पा०—मगलाचारो ।

मगलाचारो, मगलाचार—देखो 'मगलाचार' (अल्पा, रू भे )

उ०—वाट जोवता आविवा रे, हरखा सहु नर नारो । सघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मगलाचारो—स कु

मगलाचौथ-स० स्त्री० [स० मगलाचतुर्थी] शुक्ल पक्ष की वह चतुर्थी जिस दिन मगलवार हो ।

मगलाडणो, मगलाडवो—देखो 'मगलाणो, मगलावो' (रू भे )

मगलाडणहार, हारो (हारो), मगलाडणियो—वि० ।

मगलाडिओडो, मगलाडियोडो, मगलाडघोडो—भू० का० कृ० ।

मगलाडीजणो, मगलाडीजवो—कर्म वा० ।

मगलाडियोडो—देखो 'मगलायोडो' (रू भे )

मगलाडियोडो—देखो 'मगलायोडो' (रू भे )

मगलाणो, मगलावो—क्रि०स० [मगलाणो क्रि० का सक० रू०] १ प्रज्वलित करना, जलाना (होली) ।

उ०—पीछै हेरायत घोळहरै गया नै जाय आस-पास हेरो लगायो । अरु या सिरदारा होळी रात पोर एक गया मगलाई ।—द दा

२ देव मंदिर आदि के कपाट वंद करवाना ।

मगलाणहार, हारो (हारो), मगलाणियो—वि० ।

मगलायोडो, मगलायोडो—भू० का० कृ० ।

मगलाईजणो, मगलाईजवो—कर्म वा० ।

मगलाडणो, मगलाडवो, मगलावणो, मगलाववो—रू० भे० ।

मगलामुखी-स० स्त्री० [स० मगलमुख+रा० प्र० ई] वेदया, रही ।

मगलायोडो—भू० का० कृ०—प्रज्वलित की हुई, जलाई हुई (होली) ।

मगलायोडो—भू० का० कृ०—देव मंदिर आदि के कपाट वंद करवाया हुआ

मगलावम-स० पु० [स० मङ्गल+आवम] १ कार्य का शुभारम्भ, श्री गणेश ।

२ गजानन का नामान्तर ।

मगलालय-स० पु० [स० मङ्गल+आलय] परमेश्वर । (डि को )

मगलावणो, मगलाववो—देखो 'मगलाणो, मगलावो' (रू भे )

उ०—ताहरा होळी नै मगळावै नै पहर १ रात गई, ताहरा गागो साहणी कने गयो —नैणसी

मगळावणहार, हारो (हारी), मगळावणियो—वि० ।

मगळावियोडो, मगळावियोडो, मगळावियोडो—भू० का० कृ० ।

मगळावोजणो, मगळावोजवो—कर्म वा० ।

मगळावियोडो—देखो 'मगळावियोडो' (रू भे )

मगळावत—स० पु० यो० [स० मगळावत] शिव-पार्वती के निमित्त स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला एक व्रत ।

मगळि—१ देखो 'मगळा' (रू भे )

उ०—अनु आलण पख आपरा, नारि तजै ग्रिह नेह । चढि चचल मरवर चली, मगळि जाळण देह ।—वचनिका

मगळिक—स० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । (व म )

२ देखो 'मागळिक' (रू भे )

मगळिकाथळ—देखो 'मगळिकाथळ' (रू भे )

मगळियोडो—भू० का० कृ०—प्रज्वलित हुई, जली हुई (होली) ।

मगळियो, मगळियो—स० पु०—मिट्टी का वह जल-पात्र जो व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् द्वादसे के क्रिया कर्म में प्रयोग में लाया जाता है ।

उ०—मृत्यु चेत घरम नर करं, आता खडी उठावता । मगळिया मोसर भरावै, मीणो घडो भरावता ।—दसदेव

रू० भे०—मागळियो ।

मगळी—वि०—१ वह जिसकी जन्म कुण्डली में जन्म के चौथे, आठवें, बाहरवें घर में मंगलग्रह पड़ा हो । यह अशुभ माना जाता है ।

वि० वि०—देखो 'मोळियामगळ' ।

२ देखो 'मागळिक' (रू भे )

उ०—१ आज मिरति मगळी आज पति वरत सभाळै । ऊपणो जग अस, आज सुज वस उजाळै ।—रा रू.

उ०—२ ढोल सुणता मगळी मूछा भूह चढत । चवरी ही पह-चाणियो, कवरी मरणो कत ।—वी स

स० पु०—३ एक प्रकार का प्राचीन वाद्य विशेष जो मागलिक श्रवसरो पर बजाया जाता था ।

उ०—अदग, ढोल, मगळी, रवाव तार सार ली । वजति वेरि वेरिय, भण कि भुकि भेरिय ।—रा रू.

४ प्रवचन न होने के कारण उसी अवसर पर किया जाने वाला स्वस्ति पाठ । (जैन मत)

५ देखो 'मगळा' (रू भे )

मगळीक—१ देखो 'मागळिक' (रू भे )

उ०—१ मूढा में मगळीक गुल देय नै व आपरा वेटा नै घर वाळा रो वदळो लेवण साह विदा करियो ।—फुलवाडी

उ०—२ सहनाय मुरमला रग मवाद । नववती घोर मगळीक नाद ।—सू प्र

उ०—३ समार तिका हिज वात सरहदी, राय हर जिका दिखाळी रीत । गीत तिकै मगळीक गाईजै, गाया तियइ दिहाडइ गीत ।

—महादेव पारवती री वेलि

मगळीकमाळा, मगलीकमाला—स० स्त्री०—मागलिक पदार्थों की पक्ति या श्रेणी ।

उ०—पूरवारजित पाप खीजइ, मनुस्यभव क्रतारथ नीपजावीयइ, छावकाचार साचवीइ, सरव दुख प्रमारजीइ, ईण परि स्त्री घरम समारावता जिम उत्तम मगळीकमाळा प्रामउ तिम स्त्री घरम नइ विसइ सदैव सावधान हुयो । इत्युपदेस ।—व स

मगळीकाथळ—स० पु०—रेगिस्तान में पाया जाने वाला वह स्थल जहां बालू रेत इस प्रकार की होती है कि उसकी सतह पर पैर रखते ही मनुष्य या प्राणी उसमें घस जाता है ।

उ०—तिकै जैसळमेर था कोस २५ आथवण नू मगळीका-थळ छै, तठै रहै छै । वा ठोड मगळीका-थळ कहावै छै । तठै द्रुम छै । सु भोमियो होय सु डाडी आवै । असैघो डाडी टळै ।—नैणसी  
रू० भे०—मगळिकाथळ ।

मगळ्य—वि० [स० मगल्य] १ मंगलकारक । २ मंगलदायक ।

३ सुन्दर । ४ साधु । ५ शुभ । ६ पवित्र ।

स० पु० [स० मगल्यम्] १ तीर्थस्थलो से लाया हुआ जल जो राज्याभिषेक के अवसर पर उपयोग में लाया जाता है । २ वेल । ३ दही । ४ चन्दन काष्ठ । ५ सिन्दूर । ६ स्वर्ण, सोना । ७ वटवृक्ष । ८ नारियल का वृक्ष या फल ।

मगळ्या—स० स्त्री० [स० मगल्या] १ दुर्गा का एक नाम ।

२ एक प्रकार का अग्ररू जिममें चमेली के फूल जैसी महक आती है ।

मगवाणो, मगवावो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे )

उ०—राज री कोजी सू कोजी लुगाया हेर हेर मगावै और वारै साथै प्रीत करै ।—फुलवाडी

मगवाणहार, हारो (हारी), मगवाणियो—वि० ।

मगवायोडो—भू० का० कृ० ।

मगवाईजणो, मगवाईजवो—कर्म वा० ।

मगवायोडो—देखो 'मगायोडो' (रू भे )

(स्त्री० मगवायोडो)

मगसखानो—स० पु०—बड़े तम्बू के अन्दर राज्यामन लगाए जाने के लिए छोटा तम्बू ।

उ०—उस वखत चौसरियै पति करि जरकसी समियांना । स्त्रीमाप का मगसखाना खडा करि सुनहरी की चौकी घरी ।—सू प्र

मगसर, मगसिर—देखो 'मिगसर' (रू भे )

उ०—१ समत् १६७६ रा मगसर माहै कुवर अमरसिध उदैपुर परणीया ।—नैणसी

उ०—२ सवत् १६२७ मगसिर मुदि ६ पातिमाहजी री मेलिहयो घेसुवान तेडण आयो ।—द वि

मगाडणो, मगाडवो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे )

उ०—खवरदार नर जवर नू, वमत मगाडें मोल । विगडें उण  
दिन वाणियो, तोलण हूता तोल ।—व दा  
मगाडणहार, हारी (हारी), मगाडणियो—वि० ।  
मगाडिओडो, मगाडियोडो, मगाडघोडो—भू० का० कृ० ।  
मगाडीजणो, मगाडीजवो—कर्म वा० ।

मगाडियोडो—देखो 'मगायोडो' (रू भे )

(स्त्री० मगाडियोडो)

मगाणो, मगावो—क्रि० स० [मागणो क्रि० का प्रे० रू०] १ अपनी इच्छा पूर्ति के लिए किसी को अभीष्ट पदार्थ लाने के लिए आदेश करना, मगवाना ।

उ०—परिणाम समय रें हजारों वीविया रा हाथ बगडी बिहूण करि काचा कुभ जिम उजळा लोहा खड खड होय परलोक पायो ।  
जिण रा कटिया सीस नू थाल में मगाय जवनराज री सुता वर-  
माळा पटकण री विचार कियो ।—व भा  
२ मांगने का काम दूसरे से करवाना, किसी को मागने में प्रवृत्त करना ।

३ किसी से यह कहना कि अमुक स्थान या अमुक व्यक्ति से अमुक पदार्थ ले आना ।

उ०—हरष मिळें आदर करे, पोसे थाल मगाय । मीठी उत्तर मोकळें, मीठी सूव कहाय ।—वा दा

मगाणहार, हारी (हारी), मगाणियो—वि० ।

मगायोडो—भू० का० कृ० ।

मगाईजणो, मगाईजवो—कर्म वा० ।

मगवाणो, मगवावो, मगाडणो, मगाडवो, मगवाणो, मगवावो, मगाडणो, मगाडवो, मगाणो, मगावो, मगावणो, मगाववो—रू० भे० ।

मगायोडो—भू० का० कृ०—१ अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अभीष्ट पदार्थ लाने के लिए आदेश दिया हुआ, कहा हुआ । २ मांगने का काम दूसरे से करवाया हुआ ३ किसी से पदार्थ आदि मगवाया हुआ

मगावणो, मगाववो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे )

उ०—घण सुण थारा घरम सू, सावत लायो सीस । मोल अवार मगावसु, पाघा वीम पचीम ।—वा दा

मगावणहार, हारी (हारी), मगावणियो—वि० ।

मगाविओडो, मगावियोडो, मगाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मगावोजणो, मगावोजवो—कर्म वा० ।

मगावियोडो—देखो 'मगायोडो' (रू भे )

(स्त्री० मगावियोडो)

मगिण—देखो 'मागण' (रू भे )

उ०—जिसी नूर नरपती, इसी मामत सूर नर । जव जैमोइ जगमा, सोभि तैमैइ मद गिधुर । समण वरद सपजै, सवद तेसा वाजता । मुख विरद मगिणा, इसा जै सद कवित्ता ।—रा रू.

मगित—देखो 'मगतो' (मह, रू. भे )

उ०—राण उदयसिध री पुत्री परणि, घणौ उच्छव करि, मगित जणा री घणौ आसीस ले करि, करह केवाण, सोना, सावदू, रुपदया, महुरा घणौ दै, \* वीकानेर पधारिया छै ।—द वि

मगियोडो—देखो 'मागियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मगियोडो)

मगेज—स० पु०—गर्व, अभिमान ।

रू० भे०—मगेज ।

मगेजण—वि० स्त्री०—गर्विता, मानिनी ।

उ०—इदरियो घररायो, ए घोडी मवरी-मवरी चाल चौमासी लग गयो ए ! मगेजण हळवा-हळवा हाल ।—लो गी

रू० भे०—मगेजण ।

मगेडो—स० पु० [स० मार्ग + रा० प्र० एडो] द्वार, दरवाजा ।

रू० भे०—मगरणो, मागेडो, मागेरणो ।

मगेतर—स० स्त्री०—१ वह लडकी जिसमें विवाह होना निश्चित हो चुका हो, होने वाली वधु ।

पु०—२ वह लडका जिसका विवाह किसी लडकी से होना निश्चित हो चुका हो । (मा म )

मगेरणो—देखो 'मगेडो' (रू भे )

मगोल—स० पु०—१ (मगोलिया देश से) मध्य एशिया और उसके पूर्व की ओर तातार, चीन, जापान आदि प्रदेशों में बसने वाली जाति, मगोलिया निवासी ।

२ इस जाति का व्यक्ति ।

मच, मचक—स० पु० [स० मच्च] १ वह ऊँचा बना स्थान या तहत जिस पर बैठकर जन-समुदाय के सामने कोई कार्य किया जाय अथवा उपदेश या व्याख्यान दिया जाय, स्टेज, चौकी ।

२ खेत की रखवाली या सिकार करने के लिए बनाया गया ऊँचा मचान ।

३ पलग, खाट ।

उ०—१ वप पूरें वरैजी आतुर बाण दमसिर आय । आपो आपरें जी वैठा कनक मच बिल्लाय ।—र रू

उ०—२ अर महीप भी आपरी माळा नू मच पर ही भेलि ए दिसा री मारग लियो ।—व भा

रू० भे०—मांचइ, मांचउ ।

अल्पा०—माची ।

मचिका—स० स्त्री० [स०] कुर्सी ।

रू० भे०—माची ।

मचोनमच—स० पु०—महप ।

उ०—पुत्र जन्मोत्सव करावइ, दंपक निसेप हूउ, सरवथ मीर चोलाळिया गोमाय पांणी सिचाइ, मचोनमच बाधा, वानेरवा बाधी, हट्ट मोभा मरवत्र रची ।—व. स.

मच्छावाचा-स० पु० [म० मनस्+वाञ्छा] शिव की तुष्टि के लिए किया जाने वाला व्रत जो इच्छा पूर्ति के उद्देश्य से किया जाता है।  
वि० वि०—यह व्रत पुरुष तथा महिला दोनों ही के द्वारा किया जाता है। इसे श्रावण मास के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ कर कार्तिक मास के अन्तिम सोमवार तक आने वाले सभी सोमवार के दिन किया जाता है। सोमवार के दिन व्रत करने वाले एकत्रित होकर कथावाचक से कथा सुनते हैं। यह व्रत निरन्तर चार वर्ष तक किया जाता है। तदपश्चात् व्रतोद्घापन होता है।

मछर—देखो 'मछर' (रू भे)

उ०—तै गुरुवा गिरनार, फाई मन मछर वरघो। मरता रा' खेंगार, एको सिखर न ढालियो।—अज्ञात

मछा—देखो 'मसा' (रू भे)

मछी—देखो 'मच्छी' (रू भे)

उ०—जु मछी जळ विन मरै, जळ मन जाणै नाह। तु पिउ की जिय अति कठिण, हु चाहु पीय छाह।—ढो मा

मज-स० पु०—१ रग।

उ०—आद गुर भगण, फळ सुजस स्वामी मयक, जनक ध्रम मगळा मात सित मज। अगारारिस मुमा वाह रस हास यण, कळदी राव कुळ वैस्य त्रय कज।—रू

२ देखो 'मजु' (रू भे)

उ०—मुख निकट प्रकासित नाम मज। कित उलट प्रगट किरि सुघट कज।—रा रू

३ देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—मछर घर मज सुरसत सुजल माटका।—किसनजी आढो

मजण-स० पु० [स० मार्जनम् या माज] १ स्नान।

उ०—१ कुम कुमै मजण करि घोट वसत धरि, चिहुरै जळ लागी चुषण। छीणै जाणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूल गुण।

—वेलि

उ०—२ जळवा काज नळकी जादम। धुर ऊठी पतिवरत तणै ध्रम। रट हरि मुख पति ध्यान रहायो। मजण कर सिणगार मगायो।—रा रू

२ दात साफ करने का चूर्ण, मजन।

वि०—नष्ट करने वाला, मिटाने वाला।

उ०—माण मजण धूरि भजण थाट। पर दुख पल्लण भूल भल्लण वस चल्लण वाट।—ल पि

रू० भे०—मजणि, मजन, मजण, मजन, मज्जण, मज्जन।

मजणि—देखो 'मजण' (रू भे)

उ०—कवळा कूपळ अवर कुम्हलिया घणी निसासा। कोरै मजणि लूखी लट मुख हिलै उसासा।—मेघ

मजणी, मजबो—क्रि० अ० [स० मार्जन] १ स्वच्छ होना, मंजा जाना, चमक पाना (वस्तु)।

२ दक्ष होना, कार्यकुशल होना।

३ अनुभवी होना (व्यक्ति)।

४ पारगत होना।

५ स्नान करना, नहाना।

६ देखो 'माजणी, माजबो' (रू भे)

उ०—जिका पार जोवता वार लगौ वरणता, तडित सार अवनतार अणी गुण धार अनता। वेदाणी तन मजि रजि आ भीच लगनै, घडै सघर पुळ सज्जि घूप डवर वासनै।—रा. रू

मजणहार, हारो (हारी), मजणियो—वि०।

मजाहणी, मजाहबो, मजाणी, मजाबो, मजावणी, मजावबो

—प्रे० रू०।

मजिओडो, मजियोडो, मज्योडो—भू० का० कु०।

मजीजणी, मजीजबो—भाव वा०।

मजणी, मजबो, मज्जणी, मज्जबो—रू० भे०।

मजन—देखो 'मजण' (रू भे)

उ०—१ मजन करै सधीर मन, सूरु मारा धार। कायरडा मजन करै, आसु धार मझार।—वा दा

उ०—२ ऊठे वे दळ जोव अकारा, साभ सरीर तरणा ध्रम सारा। कहि गगा तन मजन कीधा, दांन वित्तान मान करि दीधा।

—रा रू

मजमून—देखो 'मजमून' (रू भे)

मजर-स० पु० [स० मज्जर] १ मोती।

२ मोर पख की चन्दिका के ऊपर के महीनतम बाल।

उ०—मजर मोर चन्द्र सिर माधव। सोभा सहत प्रपित सिणगार।  
—ह ना मा.

वि०—१ सुन्दर, मनोहर।

२ देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—भाराथ रामायण भागवत, कथा पवित्र धरि धरि करा। धरि मरण नेम सिर परि घरां, तुररा तुलसी मजरां।—सू प्र

मजरणी, मजरबो—क्रि० अ०—वृक्षो या पोषो पर मजरी आना, बोर युक्त होना।

उ०—१ अवर मोरीजै छै। कूपळा फूटीजै छै। बगराइ मजरी छै। वासावळी फूट रही छै।—रा सा स

उ०—२ मजरै अदभुत चैत्र मासै, पागरै पत्र कोमळा। सी जाय घर दिसि घाम प्रगटे, हुवै अवर त्रिम्मळा।—ईसरदास वारहूठ

मजरणहार, हारो (हारी), मजरणियो—वि०।

मजरिओडो, मजरियोडो, मजरयोडो—भू० का० कु०।

मजरीजणी, मजरीजबो—भाव वा०।

मजुरणी, मजुरबो—रू० भे०।

मजरि—देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—मञ्जी तहा मयण वसत महीपति, मिला सिंघासण घर मघर ।  
मार्थ अब छत्र मडाणा, चलि वाड मजरि ढलि चमर ।—वेनि  
मजरिनेत्र-स० पु०—एक रग विशेष का घोड़ा जो अशुभ माना जाता  
है । (सा हो)

मजरियोडो—भू० का० कृ०—मजरी आया हुआ, बीराया हुआ (वृक्ष या  
पौधा), फूला हुआ (वृक्ष)  
(स्त्री० मजरियोडी)

मजरी—सं० स्त्री० [स० मजर + डीप] १ कुछ विशिष्ट पौधों के फल  
आने से पहले भीको में लगे हुए दानों का समूह अर्थात् फूलों के  
प्रारम्भिक रूपों का समूह ।

ज्यू—तुलसी मजरी, आम मजरी ।

उ०—१ आसमान ऊतरी इद रो अपछरा, मरोवर रो हम, मरद  
को कमल, बमत की मजरी, भाद्रवा की वादली ।

—लाली मेवाही रो वात

उ०—२ महाराज नू राज रीभै समाप्यो, थिरु राज रो राज  
देसाण थाप्यो, जठै भाडिया पड, स्त्रीखड जैडी, नगा पज रो  
मजरी रूप नैडी ।—मे म

२ एक राग विशेष ।

उ०—सरी सरी सपोसय सुताळ माळकोमय । मिठास भाग मजरी  
गरी गरी समुज्जरी ।—रा रू

रू० भे०—मज, मजर, मजरि, मजुर, माजरि, माजरी ।

मजरीक—स० पु०—१ मोती ।

स्त्री०—२ तुलसी ।

मजळी—देखो 'मजुळ' (रू भे)

उ०—प्रतख चख पोडणी, महा मदन मोहिणी, मयक मुखव  
मजळी, करार नेत कजळी ।—मा वचनिका

मजवती—स० पु०—एक वर्णिक छत्र ।

मजा—स० स्त्री० [स०] वकरी ।

उ०—१ कहियो—सोलखिया रो ओज तो इण समय हिंदुस्थान  
रा अधकार नू मइद आगळी मजा करि बांधव जना रा दुख रूप  
सुसीम नै उडावै छै ।—व भा

उ०—२ जिण वाळक नै आपरी भुवा मजा रो दूध दे'र नीठि-  
नीठि पाळि दस बरस रा वय मे आणियो —व भा

२ मजरी ।

३ लता, वेल ।

मजाणो, मजावो—क्रि० सं० [मजाणो क्रि० का प्रे० रू०] राख, मिट्टी  
आदि से रगड़कर स्वच्छ कराना, चमकाना । (वर्तन आदि)

मजाणहार, हारो (हारी), मजाणियो—वि० ।

मजायोडो—भू० का० कृ० ।

मजाईजणो, मजाईजवो—कर्म वा० ।

मजावणी, मजाववो, मांजाणो, मांजावो—रू० भे० ।

मजायोडो—भू० का० कृ०—राख, मिट्टी आदि में माफ कगया हुआ,  
चमकाया हुआ (वर्तन आदि), मजाया हुआ  
(स्त्री० मजायोडो)

मजार—१ देखो 'मारजार' (रू भे)

उ०—१ उदैराज उद्यम किया, सब कुछ होवै तयार । गाय भैम  
कुल मे नही, दूध पिवै मजार ।—उदैराज

उ०—२ सोभा अति मागर तणी जी नहि वरणी जाय । देवि  
भरयो मजार दधि पय भाळै पी जाय । पय मोळै पी जाय, बलो  
उण भात सू । हयो सभ्रम होय, क्षीर मिधु खात सू । वणिग्यो  
ताळि बिदद् 'वखत' अप वार रो । उण पर अधिक आराम वाम  
छपधार रो ।—मिववगम पाह्हावत

२ देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—कीरति नही कुराण मा, मिण्णिज वरग मजार । राजा  
क्रिया रासि रै, देव तिको दातार ।—पी प्र

मजारखळ—स० पु० [स० मजारि + खल] श्वान, कुत्ता ।

(अ मा, ह ना मा)

मजारही—१ देखो 'मारजार' (अल्पा, रू भे)

उ०—वाट काटे मजारही, मामही छीक हणइ कपाळ । घाडो  
लुकडो आवज्यो, गोगडी कउ प्रीय पाछो हो वाळ ।—वी, दे  
२ देखो 'मजा' (अल्पा, रू भे)

मजारखळ—स० पु० [स० मजारिखल] घेर मिह । (अ मा)

मजारी—देखो 'मारजार' (रू भे)

उ०—नाचै मोर निहारै अहिण ऊपरै, मूमक सीम न धारै घात  
मजारियां । माहोमाह न मारै वर कुन्यादरा, ऐमे तेज अकारै राजै  
रघुपति ।—र रू

मजावट—स० स्त्री०—मांजने या स्वच्छ करने (वर्तन) की क्रिया  
या भाव ।

मजावणी, मजाववो—देखो मजाणो, मजावो (रू भे)

उ०—ते दूमातउ देखी पडित एक दिवम बोलावइ । मविहु छा'प  
तणा सवि पाटा पाटी मदा मजावइ ।—हीराणंद सूरी

मजावणहार, हारो (हारी), मजावणियो—वि० ।

मजाविओडो, मजावियोडो, मजाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मजावोजणो, मजावोजवो—कर्म वा० ।

मजावियोडो—देखो मजायोडो (रू भे)

(स्त्री० मजावियोडी)

मजासणी—देखो 'मजासणी' (रू भे)

मजियोडो—भू० का० कृ०—१ दक्षता प्राप्त किया हुआ, कुशल, अनुभवी  
२ मजा हुआ, राख आदि से साफ हुआ हुआ. (वर्तन)  
(स्त्री० मजियोडी)

मजिल—स० स्त्री० [अ०] १ वह स्थान जहा यात्रा करते समय मार्ग में ठहरते हैं, पड़ाव विश्राम स्थल ।

२ वह स्थान जहा तक पहुँचना हो, गन्तव्य स्थल ।

३ ऊपर-नीचे बने हुए होने के विचार से मकान का खण्ड, माला ।

४ एक दिन की यात्रा ।

५ नक्षत्र ।

६ चाद का घर ।

७ लम्बी यात्रा ।

रू० भे०—मजल ।

मजीठ—देखो 'मजीठ' (रू भे)

उ०—एक बड़ठा कहूँ कथा कल्लोल । एक बड़ठा वीकई मजीठ चोल ।—नल्ल दवदती रास ।

मजीठी—देखो 'मजीठी' (रू भे)

उ०—काळी मजीठी कियी, नइणै नीदालुद्ध । अवर लागी ऊठियो, विदवा वस विमुद्ध ।—हा भा

मजीयासणी—देखो 'मजासणी' (रू भे)

मजीर—स० पु० [स० मजीर] १ पैरो में पहिने का एक आभूषण विशेष, नूपुर, भाभर । (अ मा)

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

३ वह ढण्डा या खम्भा जिसमें मयानी का ढण्डा बधा रहता है ।

४ प्रथम गुरु के नगण के प्रथम भेद का नाम । (हिं की)

५ देखो 'मजीरी' (मह, रू भे)

उ०—बड़े प्रात स्त्रीमात मजीर वागै । जरां गात जंमात जम्मात जागै ।—मे म

मजीरा—स० पु० (व व) [स० मज्जीर] १ कासी या पीतल के प्यालानुमा युग्म वाद्य जो प्रायः ढोलक के साथ बजाये जाते हैं ।

२ 'पिंगल प्रकाश' के अनुसार १८ वर्णों का वर्णिक छन्द विशेष ।

रू० भे०—मजीरा ।

मह०—मजीर, मजीर ।

मजु—वि० [स० मज्जु] सुन्दर, मनोरम । (अ. मा, ह ना मा)

उ०—रिख सिख गगाराम सेवै, पद कज मजु सीतावर । सो 'राघो'पँ किसना चीतव, निस दिवस उर चगा ।—र ज प्र

रू० भे०—मज, मजू ।

मजुकेसी—स० पु० [स० मज्जुकेसिन्] श्री कृष्ण ।

मजुघोस—स० पु० [स० मज्जुघोष] तांत्रिकों का देवता ।

मजुघोसा—स० स्त्री० [स० मजुघोषा] १ एक अप्सरा का नाम ।

उ०—इद्र लोक री अपछरा, मजुघोसा नाम । देव भाव सब निस्ट कर, कहौ द्रस्ट घर काम ।—पा प्र

वि० वि०—इसको मेधाविन ऋषि ने पिशाच बनने का शाप दिया था ।

२ अप्सरा । (अ मा, ना मा.)

रू० भे०—मजुघोसा, मजघोसा ।

मजुनासी—स० स्त्री० [स० मज्जुनाशी] १ दुर्गा का एक नाम ।

२ इन्द्राणी का एक नाम ।

मजुर—१ देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—मिळि अब साख प्रसाख रसमय अमिति मजुर अजुरे ।

रसहीन अनि तर सरव रंणा सीत छल कति सचरै ।—रा रू

२ देखो 'मजूर' (रू भे)

मजुरणो, मजुरवो—देखो 'मजरणी, मजरवो' (रू भे)

उ०—मिळि अब साख प्रसाख रसमय, अमिति मजुर मजुरै ।

—रा रू

मजुरियोढो—देखो 'मजरियोढो' (रू भे)

(स्त्री० मजुरियोढी)

मजुळ—वि० [स० मज्जुल] १ सुन्दर, मनोहर । (अ मा, ह ना मा)

उ०—ताकव त्रप तणी जी कर कर मुणै मजुळ कीत । घट उमडा धणी जी, पूछै गहर गुण घर प्रीत ।—र रू

२ सुरीला ।

रू० भे०—मजळी, मजूळ ।

मजुसी—स० पु० [स० मजुसी] १ एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य ।

२ देखो 'मजूसी' (अल्पा, रू भे)

मजू—१ देखो 'मजु' (रू भे)

२ देखो 'मजूसी' (अल्पा, रू भे)

मजूघोसा—देखो 'मजुघोसा' (रू भे)

मजूडी—देखो 'मजूम' (अल्पा, रू भे)

मजूर—वि० [अ०] जो स्वीकार कर लिया गया हो, स्वीकृत ।

उ०—महतजी ने पूछ्यो तो वं खुद आपरै मूडा सू मजूर करियो के सेठां रै कैणा मूजव ई म्हा वा'री मुगति री उपाय करियो है ।

—फुलवाही

मजूरडी—देखो 'मजूसी' (अल्पा, रू भे)

मजुरी—स० स्त्री०—१ मजूर होने का भाव, स्वीकृति ।

मजूळ—देखो 'मजुळ' (रू भे)

मजूस—देखो 'मजूसी' (मह, रू भे)

उ०—तुम उपगार गिरास छिपाय, तु मुझ नँ तिण मजूस । तिण

मजूम मे एक, भरवारै घाल्यो ठूस ।—घ व अ

रू० भे०—मजू ।

मजूसडी—देखो 'मजूसी' (अल्पा, रू भे)

मजूसी—देखो 'मजूसी' (अल्पा, रू भे)

मजूसी—स० पु० [स० मजूपा] १ छोटा पिटारा या पिटारी, डिब्बा ।

२ पक्षियों का पिजरा ।



३ हाथी का होदा ।

रु० भे०—मज्जुमी ।

अल्पा०—मज्जुडी, मज्जुरडी, मज्जुसडी मज्जुमी ।

मह०—मज्जु', मज्जुम, मज्जुम ।

मज्जेस—स० पु०—देशी चरखे के नीचे का सीधा लम्बा डडा या पट्टी जिमपर चरखा जमा रहता है ।

मभ्म—देखो 'मध्य' (रु भे )

उ०—१ केमर मिलक सराज दी वे मूळहत्थाह । जाण कदोई ऊयल, खाजी मभ्म कडाह ।—नैणमी

उ०—२ बावालि काइन सिग्गिया, मारु मभ्म थळाह । प्रीतम वाटत कावडी, फल सेवत कराह ।—ढो मा

मभ्म—१ देखो 'मध्य' (रु भे )

उ०—बावा कुरफडी मरावहो के सरवरियो फोडाव । जब म्है सूता नोद भर, तव वोली मभ्म रात ।—ढो मा

२ देखो 'मध्यम' (रु. भे )

मभ्मान—देखो 'मिजमान' (रु. भे )

मभ्मानी—देखो 'मिजमानी' (रु भे )

मभ्मली—देखो 'मध्य' (रु भे )

उ०—जीव चा सवद सुण जीवडा, महियल जल थल मभ्मली । आलेव पुरुस अपरम परम, जलहर सद सु सभ्मली ।—हं र

मभ्मली—देखो 'मभ्मली' (रु भे )

(स्त्री० मभ्मली)

मभ्मा—स० स्त्री० [स० मध्या] १ कमर, कटि । (जैसलमेर)

२ देखो 'मध्य' (रु. भे )

उ०—थण मभ्मा जिम खीर सीर, जिम कुदरत कमावै ।

—केसीदास गाहण

मभ्मार—देखो 'मध्य' (रु भे )

उ०—१ ऊठे सीर भाला अनल, आभ धुआ अघियार । थोळा जिम गोळा पढै, मेछा कटक मभ्मार ।—वा दा

उ०—२ और आसरी नाहिन तुम्ह विन, तीनू लोक मभ्मार । आप विना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यो सव समार ।—मीरा

मभ्मारडी—१ देखो 'मारजार' (रु भे )

अल्पा०—मजा ।

मभ्मारि, मभ्मारै, मभ्मारी, मभ्माळ, मभ्मि—देखो 'मध्य' (रु भे )

उ०—१ एक अहेडो वईह मभ्मारी ले वांणा उरहु हणी, जनम दीज्यो जगनाथ दुवार ।—वी दे.

उ०—२ भोगर उण चद्र कूप मभ्मारै । आकसमात् वांणी उच्चारै ।

—सू प्र

उ०—३ मतरै सै गुणश्रीम मे, मिगसर मास मभ्मारी रे । यात्रा करी जिनवर तनी, घरम सील चित घारो रे ।—घ व अ

उ०—४ आरावा ऊछल आतस भाल । मडै किर भाद्रव मेह मभ्माळ ।—मा वचनिका

उ०—५ दादू मभ्मि सरोवर विमल जळ, हसा केलि कराहि ।

मुक्ताहळ मुक्ता चुगै, तिहि हसा डर नाहि ।—दादूवाणी

उ०—६ बावा म दइस माहवा, सूधा एवाळाह । कवि कुहाड सिरि घडउ, वासउ मभ्मि थळाह ।—ढो मा

मभ्मि—१ देखो 'मध्य' (रु भे )

उ०—मभ्मि समदा बीट घर, जळ सू जामोपत्त । किर ही अव-गुण कूफडी, कुरळी मभ्मि रत्त ।—ढो मा

२ देखो 'मध्यम' (रु भे )

मभ्मिपार—वि० [स० मध्य + रा० प्र० पार] मध्य का, मभ्मला, बीच का ।

मठ—देखो 'मठ' (रु भे )

मठणी, मठवी—क्रि० स०—रचना, बनाना, निर्माण करना, सृजन करना ।

उ०—मार आयो मधुपुरी, स्त्री दूलह 'अभमाह' । परमोछव परणा-यवा, सुख मठे 'जैमाह' ।—रा रु

मठणहार, हारी (हारी), मठणियो—वि० ।

मठाडणी, मठाडवी, मठाणी, मठावी, मठावणी, मठाववी

—प्रे० रु० ।

मठियोडी मठियोडी, मठयोडी—भू० का० कृ० ।

मठीजणी, मठीजवी—कर्म वा० ।

मठाणी, मठावी—क्रि० म०—वनवाना, सृजन कराना, निर्माण कराना, रचवाना ।

मठाणहार हारी (हारी), मठाणियो—वि० ।

मठायोडी—भू० का० कृ० ।

मठाईजणी, मठाईजवी—कर्म वा० ।

मठावणी, मठाववी—रु० भे० ।

मठायोडी—भू० का० कृ०—वनवाया हुआ, रचित, निर्मित ।

(स्त्री० मठायोडी)

मठावणी, मठाववी—देखो 'मठाणी, मठावी' (रु भे )

मठावणहार, हारी (हारी), मठावणियो—वि० ।

मठाविओडी मठावियोडी, मठाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मठावीजणी, मठावीजवी—कर्म वा० ।

मठावियोडी—देखो 'मठायोडी' (रु भे )

(स्त्री० मठावियोडी)

मड—स० पु० [स०] १ आभूषण, गहना ।

उ०—चांपावत चढ वळवड रखपाळ । मुरघर के मड, सिभू कोप रिणुताळ ।—रा रु

२ रचना, सृष्टि ।

उ०—१ आदू खट रस ऊपरा, माडी नवरस मड । कुकवि कहै विध सू कियो, आचारजा अफड ।—वा दा



उ०—२ अधिकारी गीता अवस, चारण सुकवि प्रचड । कोड प्रकारा गीत की, मुरधर भाखा मड ।—र ज प्र  
३ ब्रह्माण्ड ।

उ०—चमू काल वल चड, उवाल किर मड जळायण । सरस कोप किर सिभु महा, दिख दभ मिटावण ।—रा रु  
४ शरीर, देह । (अ मा)

५ निर्भरता ।

उ०—जोधपुर रिणमला माथं मड त्यू जेसलमेर कालण रा पर-  
वार ऊपर सारी साहिबी री मदर ।—नैणसी

६ देखो 'मडप' (रु भे)

उ०—माढी जिग मड प्रधान सुमित्र ।—रामरासो

७ देखो 'मडाण' (रु भे)

८ देखो 'माढी' (रु भे)

९ देखो 'माडाणी' (रु भे)

उ०—वनि वनि विकमड वेउळ, खेउ लगाइ चीति । दीठा द्राखह  
मडव मड वधारइं प्रीति ।—जयसेखर सूरि

१० देखो 'मड' (रु भे)

उ०—मड मे काली माता जागिया, पुरी मे जगन्नाथ बावो जागिया,  
वगळ मे हणमान बावो जागिया, परीडे पितर देवता जागिया,  
मदिर मे सती माता जागिया, मड मे भैरु बावो जागिया ।—लो गी  
११ देखो 'मुड' (रु भे) (अ मा)

उ०—घण मेळ घमसाण, राखम आहेही रमण । चड मड वे भ्राता  
चढे, प्राजळिता निज प्राण ।—मा वचनिका

उ०—२ तो चड मड राजि भारत ने चाढीजै । कलहागारी रा हाथ  
देखीजै दिखाइजै ।—मा वचनिका

१२ देखो 'माड' (रु भे)

स० स्त्री०—पानी पीने या भरने के लिये किसी कुए या तालाब  
पर जाने या जाकर एकत्र होने की क्रिया या भाव ।

उ०—कुवा रखी बाय एक चहुवाण तेजसी री कराई छै, तिण रो  
खारो पाणी । घणी सहर री मड उण ऊपर छै ।—नैणसी

मडग्री—देखो 'मडवो' (रु भे)

मडक—देखो 'मडको' (मह, रु भे)

मडकियो—देखो 'मडको' (अल्पा, रु भे)

मडको—स० पु० [स० मण्डक] १ मँदे की धी तथा शक्कर के समिश्रण  
से बनी रोटी विशेष ।

उ०—१ एक घृत पूरण अनइ सरकरा चूरण, सातूअ कवालित  
अनइ गोघृत मिलित, एक मडक अखड अनइ सिंहरुली खड ।

—व स

उ०—२ ओ ए दासी ओ ए बादी वूझा थाने बात, काई म्हारी  
जच्चा राणी पथ लियो, राज । मीठे को मडको, अळसी को तेल  
वो थारी जच्चा राणी पथ लियो राज ।—लो गी

२ मोटी चपाती जिसे आग के अगीरो पर ही सेका जाता है ।

रु० भे०—माढी ।

अल्पा०—मडकियो ।

मह०—मडक ।

मडण—स० पु० [स० मण्डनम्] १ सजावट, शृंगार ।

२ आभूषण, गहना ।

३ शोभा ।

उ०—१ स्त्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेड सत्र दसमाथ विहडण ।  
जाहूर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूर कुळ मडण ।

—र ज प्र

उ०—२ 'भाराणी' जस भार, भुज मडण थारा भुजा । ऊर्ग दीह  
उदार, पाता घर पूगे पवग ।—वा दा

४ किमी कथन या सिद्धांत का युक्ति आदि देकर पुष्टीकरण ।  
प्रमाण द्वारा कोई बात सिद्ध करना ।

विलो०—खडन ।

रु० भे०—मडन ।

मडणसाढां—स० पु० यो० [स० मडन + कोट] हाथी, गज ।

(ना डि को)

मडणछत्र—स० पु० यो० [स० मडन + छत्र] आकाश, नभ । (ना मा)  
मडणो, मडवो—क्रि० अ० [स० मडनम्] १ होने की स्थिति में आना,  
कुछ होना ।

उ०—१ छेह घणें ऊछज छरा, केहर फाई डाच । ऐरावत कुळ  
ऊपरा, मोच मडोजै नाच ।—वां दा

उ०—२ मावडियो जुघ मडिया, विलखी करै विलाप । आढा  
म्हारै आवजो, जणणी रा व्रत जाप ।—वा दा

उ०—३ मडियो वाद दिली मेवाडा, समहर तिको दिहाई सीव ।  
भवस न पैठा किसा भाखरा, भाखर किसै न विडियो 'भीव' ।

—भीम सीसोदिया री गीत

२ ठनना, पक्का होना, निश्चित होना ।

उ०—अडियो दळ रांवण राम तणी, मडियो अत ही जुघ जोर  
घणो । हथियार ले राखस आण अढे, गिरि रूख ले वानर रीछ  
लढे ।—गी रा

३ कटिबद्ध होना, तत्पर होना, उद्यत होना, उतारू होना ।

उ०—१ ताहरा सादूळ अपूठो घिरियो । रजपूत साम्हा मडियो ।  
लडाई हुई, रजपूत काम आयो ।—नैणसी

उ०—२ अर सामोर बारहठ जोहठ री पाघ रँ आर्ट मटोवर रा  
नरेस पडिहार हम्मीर नू गजि राणें लाखा री पण विगडाई जठे  
तठे जिम तिम मरण मडियो, परतु आपरें आगार ही अवसाण  
आयो ।—व भा

उ०—३ राव चद्रसेन नीसरियो । देवडी बीजी हरराजोत पिय  
नीसरीयो । उहड जैमल मुदायत हुय मडियो ।

—राव चद्रसेन री बात

४ उत्पन्न होना, अकुरित होना ।

उ०—सुण बाकी पातसाह आस मडी उर अतर । मूनदीन फिर  
मीर, पीर परसिया अजैपुर ।—रा रु.

५ स्थिर होना, रुपना, जमना, रुकना ।

उ०—१ वागी खग्गा वे घड़ी, ज्या वज्जै घडियाळ । पाव न मडै राव पिढ, गो छडै रिएताळ ।—रा रु

उ०—२ वरगळ भडै ऊधडै वगतर, चौधारा धारा खग चोट । ओट होय मंडियो 'अमरावत', काळो पडै न ममंत कोट ।

—खेमराज सोदो

उ०—३ थिजडा भाट वडाट बाजता, स्याम घम सूरतन साहि । सत छांडै टेभा अवछडिया, गिह भूरा मडिया गज गाहि ।

—वैरीसाल हाडा रो गीत

६ अटल होना, अडिग होना, हट होना, डटना ।

उ०—वदन तेज कळपत रो वयळ बाढव वणै, ऊफणै क्रोध पोरस अमामी । मडांणो हेक राजा घणै मछर सू, साहजादा दुहु तरणै सांमहो ।—रूघो मूहती

७ जुडना, लगना ।

ज्यू—दरवार मडणो, मेळो मडणो ।

उ०—आगळि रितु राय मडियो अवसर, मडप वन नीभरण अदग । पचवाण नायक गायक पिक, वसुह रग मेळगर विहग ।

—वेलि

८ आरम्भ होना, शुरू होना ।

ज्यू—घट्टी मडणो, रामत मडणो ।

उ०—१ छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मडियै जिणै आणद मई । कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रित चित्राम थई ।

—वेलि

उ०—२ एकर उदयापुर में उण नटणी री रामत मडो । राणीजी कई वरसा सू उण रामत रा कोढाया हा ।—फुलवाडी

९ स्थापित होना, कायम होना ।

ज्यू—प्याळ मडणो, पोसाळ मडणो ।

उ०—महमूद मीर निरखे निवळ, कचर घाण घमसाण करि । मडियो तखत दिल्ली मुगळ, कातर वस पठाण करि ।—व भा १० किसी दुकान सस्था या कार्य का नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालु होना, निश्चित समय पर खुलना ।

ज्यू—दुकान मडणो ।

११ उमडना, उभरना, मडराना ।

उ०—१ हुई फोज हाजरी, वोभ नाग न वरदासै । जाण गजव गाजती, मडो काठळ चवमासै ।—मे म

उ०—२ दादुरा डहिडहै सावण आवण वैरी सिध कहै । इसो समइयो घण रह्यो छै । वरखा मडनै रही छै । विजळी मिळो मिळ करनै रही छै ।—रा. सा स

१२ चित्रांकित होना, चित्रित होना ।

उ०—१ ओ कवळें मडियोडा ठाकरसा रो ई पुत्र परताप है के आपरी हवेली मे किणी भात री चोरी-चकारी नी व्ही ।

—फुलवाडी

उ०—२ जोई जळद पटळ दळ सावळ ऊजळ, घुरै नीसाण सोइ धणघोर ।—प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मडै किरि तडव गिरि मोर ।—वेलि

उ०—३ भावज म्हारी ए, देखो भावज काई ए जिनावर जाय । मोरा पर मडिया है जिण रं माडणा, माडणा जी, म्हारा राज ।

—लो गो

१३ लिखा जाना, दर्ज होना ।

उ०—१ सातळमेर पोकरण जागीर मे मडो, अमल न हुवो ।

—नैणसी

उ०—२ डोढो दूणो मडियोडो लंगो उतारं तो कीकर ।

—फुलवाडी

१४ किसी यन्त्र का पुर्जे आदि व्यवस्थित लगकर कार्य करने की स्थिति मे आना ।

ज्यू—अरट मडणो डोलर हीडो मडणो ।

१५ अंकित होना, चिन्हित होना ।

उ०—१ जमी माथै लगूरा रा एकठ घणा सारा खोज मडियोडा देखनै उण रा मन मे खुडको विह्यो के कठई माटा लगूरिया तो कुबद नी करम्या ।—फुलवाडी

उ०—२ आयण रा खड खायनै हिरणी आई तो काई देखै के आडो तो खुलियोडो । छान वा'रै खोडिया ना'र रा खोज मडियोडा ।

—फुलवाडी

१६ बनना, निर्मित होना ।

उ०—हरीया जळ की ओवरी, बीच मिनख रा वास । पल मडै पल ढहि परै, हरिजन रहै उदास ।—हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ उलटा मन असमाण कु, मिळै त्रिवेणी तट । जन 'हरीयै' जाह मडोया, सुगति सबद का मट ।—हरिरामदासजी महाराज

१७ उपयोग की दृष्टि मे किसी वस्तु का किसी के सहारे लगना, सटना, सलग्न होना, सहारा बनना आधार बनना ।

उ०—प्रिथु वेलि कि पच विव प्रसिध प्रणाळो, आगम निगम कजि अखिळ । मुगति तणी नोसरणी मडो, सरग लोग सोपान इळ ।

—वेलि

१८ ग्रहण करने या लेने के लिये या गिरते हुए को झेलने के लिये पात्र, वस्तु या हाथ रक्खा जाना, पसरना, फैलना ।

ज्यू—पल्लो मडणो, पाळो मडणो, घडो मडणो, हाथ मडणो ।

उ०—दाता आगं मडियो दाता हदो हत्य । दातारां सिर ऊपरै, सो नित रहो समत्य ।—वा दा

१९ तनना ।

उ०—१ मत्री तहा मयण वसत महीपति, सिळा सिधासण घर सवर । माथै अव छत्र मडांणां चलि वाइ मजरि ढलि चमर ।

—वेलि

उ०—२ सुरताण राण सकोडिया, सभि लीवा दे सहि सहि ।  
मालदे सीस छत्र मडियो, 'माल' हुवो मडलीक महि ।

—राव मानदेव री बात

२० घोडा, ऊट आदि सवारियो पर चारजामा या जौन बाधा  
जाना, कसा जाना ।

उ०—१ मारग मे वो इज ऊट पाछो सामो धकियो । पिलाण  
मडियोडो देखनै सूठ बाई मन करियो के माथे बैठा चाला तो ठीक  
रै'व ।—फुलवाडी

उ०—२ ब्रह्माणी हस चढे, मोर कौमारी मडे । नारसधो सिध  
सिरै, नर बाहनी नर चढे ।—मा वचनिका

२१ सृजन होना, सृष्टि होना ।

उ०—तू अनाद जुगद आद तूक हूत मडानी - केसीदास गाइण

२२ रचा जाना, रचित होना ।

ज्यू—चवरी मडणी, व्याव मडणी ।

उ०—महा मडियो ज्याग उज्जेण खागा मधे, रुदन विलखावती  
रही रोती । हेळवी अमरा' रै हियै करती हरख, 'जसा' अपछर  
रही वाट जोती ।—महाराजा जसवतसिंह री गीत

२३ मनाया जाना ।

उ०—आगमि सिसुपाल मडिजै ऊछव, नीसाणै पढती निहस । पट  
मडप छाड़जै कुदणपुर, कुदणमै वार्म कळस ।—वेलि

२४ सजना, सवरना, सुसज्जित होना, तैयारी होना ।

उ०—इम कुभ अधारी कुच सु कचुकी, कवच सभु काम क कळह ।  
मनु हरि आगमि मडे मडप, वधण दीध कि वारगह ।—वेलि

२५ आच्छादित होना, ढका जाना ।

२६ तैयार होना, उद्यत होना, प्रस्तुत होना ।

२७ छितरना, बिखरना ।

२८ प्रवन्ध होना, व्यवस्था होना ।

२९ व्यक्त होना । ३० सम्बन्ध जुडना, मेल होना ।

३१ सधान होना । ३२ शोभित होना ।

उ०—१ दत स्रेणि दीठा पछी, मणि मडिड मडाण । भमहि धनुख  
थी सीखव्या, नर नाखेवा बाण ।—मा. का प्र

उ०—२ माग फूल सिर फूल, जहाऊ मडिया । खिए खिए निरखै  
नाह, हिए दुख खडिया ।—बा दा

क्रि० स०—३३ रत्न आदि कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु मे  
बैठाना, जमाना, जडना ।

३४ ढोल आदि श्रवणवाद्यो के मुख पर चमडा चढाना ।

३५ अभिमन्त्रित गडा या ताबीज पर वातु-पत्तर चढाना, आवे-  
ष्टित करना ।

३६ तस्वीर, चित्र आदि को सुरक्षार्थ, शीशा लगी किसी चौखट मे  
बैठाना, स्थिर करना ।

३७ सुसज्जित करना, सजाना, सवारना ।

३८ शूगार करना ।

३९ कुछ करना ।

उ०—१ मीरेखान चढी राण मडो । खळ पकडो मारी वळ खडो ।

—रा रु

उ०—२ घण वोले जोघार, हिचण तोले नम हाथे । विण प्रारम  
रूप रा, मडे आरम किण माथे ।—मे म.

उ०—३ वध बीरा सह बोळिया, केसर कुड दुकूल । वळे तरुण  
मड वरजिया, मडे साहस मूल ।—व भा

४० देखो 'माडणी, माडबो' (रु भे)

उ०—१ जीवत म्रित हुई साहिजहा, दिल्ली वै सुरताण । राति  
दीह अदर रहे न मडे दीवाण ।—वचनिका

उ०—२ रुखाळा मोरचै मडे लुळै लाडवा री भाव अर भूजिया  
री ओडी सू सिरावण करै अर रात नै सी-सी कोसा री सरदातो  
भर जावै ।—दसदोख

मडणहार, हारी (हारी), मडणियो—वि० ।

मडाडणो, मडाडयो, मडाणो, मडावो, मडावणी, मडाववो

—प्रे० रु० ।

मडिओडो, मडियोडो, मडघोडो—भू० का० कृ० ।

मडोजणो, मडोजबो—भाव वा०/कर्म वा० ।

मडणी, मडबो—रु० भे० ।

मडन—देखो 'मडण' (रु भे)

मडप—स० पु० [स० मडप] १ देव मन्दिर, देवालय । (ह ना मा.)

उ०—अवचळ मडप तर आगाहट, सुर जिम थापे कवेसुर । मुह  
मागियो सो दीघो मोने 'पता' समोभ्रम रायपुर ।—दुरसी आडो  
२ भवन ।

उ०—१ कळी सेत अन पालटै, पडे जोखिम कळस, खसै खुभी हुवे  
मडप खागो । भीतडा भागि ढहि जाइ घरती मिळै, गीतडा नह  
जाय कहै 'गागो' ।—राव गागो

उ०—२ 'वाघ'उत ऊचरै, सुणो खट तीस वस, जुरा आगळि रहै  
वदू जाही । भोज वीकम तणी सुजस सारै भुयण, नरा, तिण  
वार रा मडप नाही ।—राव गागो

३ विवाह सस्कार या किसी उत्सव या समारोह के लिए छाया  
हुआ स्थान, वितान ।

उ०—१ तेडावि मोटाराय राणा, रचो मडप माळ । ए जक्ष क्यं-  
वर सिधि साधिक, आविया सुर चाल ।—रुमणी मगळ

उ०—२ आगमि सिसुपाल मडोजै ऊछव, नीसाणै पढती निहस ।  
पट मडप छाड़जै कुदणपुर, कुदणमै वार्म कळस ।—वेलि

४ छाया हुआ वह स्थान जहा पर बहुत से व्यक्ति घुप वर्षा आदि  
के बचाव के लिए बैठ सकें ।

५ चारो ओर से खुला तथा ऊपर से छाया हुआ स्थान ।

६ देव मन्दिर मे मूर्ति-स्थल के ठीक सामने दर्शको के बैठने तथा भजन कीर्तन करने के लिए मडलाकार व गुम्बजाकार बना हुआ भाग ।

उ०—चावड बुरज ऊपर माता जी चावडाजी री मडप करायो नै थापना करी तिए मडप आगे राव मालदेवजी नवी मडप फेर करायो । श्री मिदर नै मडप स० १९१४ रा भादवा वद ५ सोर उडियो तरां मडप सिखर गयो ।—मारवाड री ख्यात

७ राजाप्रासाद, देवालय आदि के ऊपर बना गोलाकार या गुम्बजाकार ऊचा सिखरनुमा भाग ।

उ०—१ छाजा पडे अछेह मडप उडि पडे महला । मुगलाणिया अमाप, पडे आधान दहला ।—सु प्र

उ०—२ मरद कसणा जरद तणा तूटे मछर, जवन चा दळा जूटे हुआ जग । खहेले देवला मडप न हुवे विखड, अखड 'सूजा' तणी जतै उतमग ।—सुजाणसिध सेखावत री गीत

८ देव मन्दिर मे मूर्ति पर तना हुआ वस्त्र, चदोवा, वितान ।

उ०—कटहडा मडप कराळ झळि काठ भक्त भाळ । हिम हीर जळि हिडलाट, अगीर दमग उपाट ।—सू प्र

९ तबू, शामियाना ।

उ०—इभ कुभ अघारी कुच सुकचुकी, कवच सभु कामरु कलह । मनु हरि आगमि मडे मडप, वधण दीघ कि वारगह ।—वेलि

रू० भे०—मड, मडपि, मडव, माडव ।

अल्पा०—मडवो ।

मडपपुर—स० पु० [स०] मडोर नामक नगर का नामांतर ।

उ०—रात मडपपुर ईस, 'चड' सुत कहिय चडहुह । सत्रुमाळ तिम सबळ, महत वणीय विरोध मह ।—व भा

मडप-राइ—स० पु० [स० मडपराज] राजा ।

उ०—हइ कप हिडुकार घर-घर प्रति हूवठ घणउ । मिळियइ मडप-राइ कइ कुण ऊपरइ कधार ।—अ वचनिका

मडपाळ—स० पु० [स० मडपाल] राजा, नरेश ।

उ०—मयाळ मडपाळ मेघमाळ माहनी नही । हिलव से प्रलब थभ, बिब सोहनी नही ।—ऊ का

मडपि—देखो 'मडप' (अल्पा, रू. भे)

उ०—आणइ अनुचर आकुला चाकुला चाउरि पाट । माडइ मडपि माडणी आडणी ऊपरि घाट ।—जयसेखर सूरि

मडरणो, मडरवो—क्रि० अ० [स० मडल] चारो ओर से घिरना, चारो ओर छा जाना ।

मडरणहार, हारो (हारी), मडरणियो—वि० ।

मडरियोडो, मडरियोडो, मडरयोडो—भू० का० कृ० ।

मडरीजणो, मडरीजवो—भाव वा० ।

मडराणो, मडरावो—क्रि० अ० [स० मडल] १ मगलाकार रूप में छा

जाना, चारो ओर से घिर जाना ।

२ पक्षियो, पतंगो आदि का मडल बनाकर चक्कर लगाते हुए उडना ।

३ किसी स्थान या व्यक्ति के आस-पास चक्कर लगाते रहना ।

मडराणहार, हारो (हारी), मडराणियो—वि० ।

मडरायोडो—भू० का० कृ० ।

मडराईजणो, मडराईजवो—भाव वा० ।

मडरायोडो—भू० का० कृ०—१ मडलाकार रूप में घिरा हुआ, घेरा या मडल बनाकर छाया हुआ । २ गोल घेरे में चक्कर लगाते हुए उडा हुआ । ३ किसी स्थान या व्यक्ति के आस पास घूमा या घिरा हुआ

(स्त्री० मडरायोडो)

मडरियोडो—चारो ओर से छाया हुआ ।

(स्त्री० मंडरियोडो)

मडल—स० पु० [स० मडलम्] १ किसी एक बिन्दु के चारो ओर समान अन्तर पर घिरी हुई परिधि, चक्र के आकार का घेरा, वृत्त । उ०—१ अर सिधु रै सीस पताका खुलाय अनीका रा ओष मिळाय प्रथी रा पुड चलावती जिकण भद्र काली रै घरै निमणण लगावती अरबुद रै ऊपर प्रस्थान कीधी । दरकूचा जाय दुरग रै प्रतना री पलेटी दीधी किना सुमेरु परवत रै चोतरफ जवु दीप री मडल थियो ।—व भा

२ चद्रमा या सूर्य के चारो ओर पडने वाला घेरा जो बादलो की बहुत हलकी तह या कुहरा रहने पर दिखाई पडता है ।

उ०—कायर थाको दोडकग, ससि सू करै पुकार । अग ज्यू मूफ बसावजै, मडल तराँ मझार ।—वां दा

३ दृष्टि के सम्मुख पडने वाले पदार्थ विशेष का गोलाकार भाग ।

ज्यू—मुख मडल, चन्द्र मडल ।

४ किसी प्रकार की गोलाकार आकृति या रचना ।

ज्यू—नभ मडल, भूमडल ।

उ०—अस्विनि चैत्र माम पख ऊजळ । थित सब सकति होत मडल थळ ।—मे म

[स० मडल] ५ श्वान, कुत्ता । (अ मा, डि को ह ना मा)

उ०—वद 'जसी' जिएवार कवर अगळ जोडै कर । मीणां अघम गमार घाँ छक अनड रहै घर । वीरा सम्मुह वेग पूछ पटक मडल मित । एक खीची भाइ सबळ कीधा खळ सकित । अभिधान 'गय' सगो सगर, निम्मदेव अगज निडर । असवार एक जडिया उठै ओखलिया भाला भरर ।—व भा

६ चारो दिशाओ का घेरा जो गोल दिखाई देता है, क्षितिज ।

ज्यू—दिगमडल ।

७ कुछ विशिष्ट प्रकार के लोगों का वर्ग या समाज ।

ज्यू—मित्र मडल, मूढ मडल ।

उ०—सठ मडल स्रोता हुवै, वक्ता कुकवि बणत । भूकण लागी भूकवा, जाण जमा दीपत ।—वां दा  
८ डेर ।

उ०—अर सैकडा अत म्लेच्छा रा मडल रै बीच करणाट राजा रो कुमार नरसिंह देव घणा घावा करि घायल पडियो थकौ भी चेतन समेत भाडियो ।—वं भा

९ दल, समूह ।

उ०—१ तेज पूज त्रप सुतण, हुवौ जस वेस भळाहल । साईना साधिया, मिले खेलै मक्ति मडल ।—सू प्र

उ०—२ तितरै स्त्रीकृष्णजी घोडा तेज खडि कै सत्रु की सेन्या को मडल थौ ते मारि आया ।—वेलि टी

१० देश । (अ मा, डि को)

उ०—१ पर मडल पर दीप मे, हृद घर घर कथ होत । कीरत वर, जेही कुवर, जाडेचां घर जोत ।—वा दा

उ०—२ पदहृ दिन रहिया पछै, मुगळ मीर तैमूर । क्रम इण मडल जीतकरि, गो ग्रह पाणियपूरा ।—व भा

उ०—३ कुसल विहावउ सज्जणा, पर मडलै ययाह । जउ विह हिया न हारिस्पइ, वलै मिलेवउ त्याह ।—डो मा

११ वारह राज्यो का क्षेत्र, वर्ग या गुट । (प्राचीन)

१२ समीपवर्ती प्रदेश या भू-भाग ।

१३ व्यवस्था या प्रशासन की दृष्टि से प्रान्त का एक विभाजित भाग, डिवीजन ।

१४ चालीस योजन लम्बा व बीस योजन चौडा भू भाग ।

१५ ग्रह के घूमने का कक्ष ।

१६ आकाश, नभ ।

उ०—घरती घान न नीपजै, तारा न मडल होय, म्हे मन घरला अवरसां, पिरथी परलै होय ।—अज्ञात

१७ कोई गोलाकार दाग या चिन्ह ।

१८ वृत्ताकार या अण्डाकार विस्तार या फैलाव ।

१९ एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।

[स० मडल] २० युद्ध स्थल मे की जाने वाली एक प्रकार की व्यूह रचना विशेष ।

[स० मडलम्] २१ ऋग वेद का एक खण्ड, भाग ।

२२ पांच क्षामियानो को मिलाकर चार खम्भो पर खड़ा किया जाने वाला खेमा ।

२३ एक जाति विशेष का सर्प । (अमरत)

२४ ससार । (जैन)

२५ तीर्थ स्थान ।

उ०—अवधपुरी मधुपुरी द्वारिका, चित्रकूट यमुना सी । गोवरधन गोकुल वृन्दावन, बीच मडल चौरासी ।—मीरा

[स० मडल] मुडी हुई तलवार विशेष, खांडा ।

मडलश्रीखी—स० पु०—द्वारिका प्रदेश का समीपवर्ती क्षेत्र, श्रीखामडल ।

उ०—इम लीध मडल श्रीखी उदार । घर समद वीटि गढ संखो-घार ।—सू प्र

मडलदिल्ली—देखो 'दिलीमडल' ।

मडलक—स० पु० [स० मडलकम्] मडलीक राजा, एक क्षेत्र या सूवे का अधिपति ।

उ०—राजा जुवराज कुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सामंत, लघु-सामंत तलवर तथपाल चतुरमीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक स्त्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकार घरमाधिक सोवरणणिक देवक मडलक गहुरक उस्टक इस्टिकाक ।—व स

मडलकरिणिक—राज्य के एक क्षेत्र अर्थात् मडल (सूत्रा) का कार्यकारी अधिकारी ।

उ०—जुवराज कुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सामंत लघुसामंत तलवर तथपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहकाहक स्त्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरिणिक, घरमाधिकरिणिक सौ वरणकरिणिकदेव करिणिक मडलकरिणिक उस्टकरिणिक ।

—व स

मडला—स० स्त्री०—राठोड वंश की एक उप-शाखा ।

मडलाग, मडलाप्र—स० स्त्री० [स० मण्डल+अप्र] तलवार ।

(ह ना मा)

उ०—तिण समय चहुवाण कुमार मडलाप्र री आघात देर नाहर राज रा तुरग री खध पाखर समेत भाडियो ।—व भा

मडलाधीस—देखो 'मडलेस्वर' । (डि को)

मडलावत—१ देखो 'मडला' (रु भे)

उ०—मडलावत, रूपावत, भाटी कछावाहा, तवर, चद्रावत पवार, सोनगरा इतरा साथ लिया ।—मारवाड रा अमरावा री बात  
२ इस शाखा का व्यक्ति ।

मडलि—देखो 'मडली' (रु भे)

मडलिक—देखो 'मडलीक' (रु भे)

उ०—१ राय राणा मडलिक आखडलीक सामंत महासामंत लघु-सामंत स्त्रीगरणा वयगरणा घरमाधगरणा ।—व स

उ०—२ जयकुजर हाथीया तणइ कुमस्थलि चडिउ, पाखती अग-रक्षक तण्णी ओलि, मडलिक तणइ परिवारि, पताका फुरकती मेघाडवर तणइ आडवरि ।—व स

मडली—स० स्त्री० [स० मण्डली] १ मानव दल, मानव समूह ।

२ गोलाकार, वतुल ।

उ०—भुरजमाळ फण मडली, मोर भाळ विख भाळ । जाण सख बँठो जमी, मिस चीतोड कराळ ।—वा दा

३ समान उद्देश्य या विचार रखने वालो अथवा एक ही प्रकार का कार्य करने वालो का समूह या दल ।

उ०—अमित गुलाला अरगजा, केसर अतर फुलेल । हुवै सबोली मडली, होळी हँदा खेल ।—रा रु

स० पु०—४ एक प्रकार का सांपो का वर्ग विशेष ।

५ बट वृक्ष ।

६ काटे हुए चनों व गेहूँ का खेत में ढेर । (वीकानेर)

७ नाच या खेल करने वालों का एक झुंड । (वीकानेर)

८० भे०—मडलि ।

मडलीक, मडलीक—स० पु० [स० माडलिक] १ प्रान्त या क्षेत्र अथवा मडल विशेष की रक्षा या शासन करने वाला व्यक्ति, प्रशासक ।

२ राजा, नृप ।

उ०—१ माडेची घरा 'अना' कुल मडण, वड दातार अभनमा 'वीक' । मोड वध्या आयी तू मारग, मोड वधा सके मडलीक ।

—द दा

उ०—२ उअकार अनाहत अवखर, सिद्धि बुद्धि दे सारद गुणोसर । मडलीका मोटी कुल मडडा, रसरिण सुवारिणी क्रीति राठउडा ।

—रा ज सी.

३ वारह राज्यों का अधिपति ।

८० भे०—मडलिक, मांडलिक ।

मडलेसर, मडलेस्वर—स० पु० [स० मडल+ईश्वर] १ एक मडल का शासक या अधिपति । (डि को)

२ वारह राज्यों का स्वामी, अधिपति ।

३ खाम्बी माधुओ मे कई साधु मडलियों का सर्वोपरि साधु, बड़ा महत्, मठाधीश ।

४ महादेव का एक नामांतर ।

८० भे०—मडळाधीस ।

मडय—देखो 'मडप' (रू भे)

उ०—वनि वनि विकसइ वेउल खेउ लगाहइ चीति । दीठा द्रावह मडव मड वधारइ प्रीति ।—जयसेखर सूरि

मडवी—देखो 'माडवी' (रू भे)

उ०—वणै चत्र घाए रूचै पतिव्रता । मिया मडवी उरमिळा सत्यक्रता ।—सू प्र

मडघी—स० पु०—१ एक प्रकार का कदम ।

८० भे०—मडघी, मडुघी ।

२ देखो 'मडप' (अल्पा, रू भे)

उ०—ऊचो मो मडवो रोपायो मेरे वावल, रेमम तणी ए वघाय, घो ल्यो भावज घर आपणू, मैं तो जावूगी पियाजी नै देस ।

—लो गो

३ देखो 'माडी' (रू भे)

मंडाण—स० पु० [म० मंडनम्] १ मंडित करने की क्रिया या भाव ।

२ किसी आयोजन विशेष के प्रारम्भ में की जाने वाली व्यवस्था, प्रसंग ।

ज्य—बिनाह रा मडाण, राज तिनक रा मडाण ।

३ रचना, बनावट ।

उ०—१ जैमल जैसावत नू परगनी थो । पछै जैमल रं चाकरं वेढ कीवी । कटक काछी भागी । पछै मु जैमल कोट फेर सवरायी । सहर रो मडाण निपट मखरो छै, बडो बाजार गुजरात रो तरं' कंहलवा रो छायो छै ।—नैणसी

उ०—२ मूठी जेतली जमारी नरा ग्रहे काय काठी मूठी, पुण्य किया गाढी मूठी सावती प्रमाण । मोटी धणी याद करी मूठी वाता लागी मती मूठी धूळ तणी थारी देह रो मडाण ।

—ओपी आढी

४ आडवर ।

उ०—ऊपर सू इसी मडाण माड राखियी ही कै कई बात रो ओछ की दीखती ही नी ।—इक्केवाली

५ मजघज, मजावट ।

उ०—जी हो वदीखाना मोकलया लाला, कीधा बहु मडाण । जी हो नगरी नी सोभा करी लाला, बाजै विविध निसाण ।—जयवाणी ६ तैयारी ।

उ०—हैजमाण आरी सूरण ठोड ठोड हाथा, नीसाण बजाण मिधु कायरा नरम । धुवाण आतसां पूर ठाणाण लपट धुआं, फटका मडाण केण ऊपरं कुरम ।—पहाडखा आढी

७ चिह्न, निशान ।

८ किसी घटना या बात की भावी गति विधि के लक्षण, आसार ।

ज्यू—महामारी रा मडाण, मेह रा मडाण ।

उ०—जिण सर्म महामारी रे मडाण नरां रो नास देखि कोईक कच्चा मत्र रा देणहार भाहव रा अमेघ सामतर सूचिया घोडं चढण रो हूस धारि दारासाह हाथी रूप तखत हू हेठो उतरियी ।

—व भा

८० भे०—मड ।

मडाई—स० स्त्री० [राज० मडाण] १ मडने की क्रिया या भाव ।

२ मडने का व्यवसाय ।

३ मडने का पारिश्रमिक ।

८० भे०—मडाई ।

मडाडणी, मडाडवी—देखो 'मडाणी मडावी' (रू भे)

उ०—सासण हगत समार्वे सोवन, सारी रोर मिटं हिक साथ । मेवाडो जा हाथ मडाडे, हेटे किणी न मांडं हाथ ।—सुगजी आढी मडाडणहार, हारी (हारी), मडाडणियो—वि० ।

मडाडियोडो, मडाडियोडो, मडाडयोडो—भू० पा० कृ० ।

मडाडोजणी, मडाडोजवी—कर्म वा० ।

मडाडियोडो—देखो 'मडायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मडाडियोडो)

मडाणी, मडाघी—क्रि० स० [‘मडणी’ क्रिया का प्रे० रू०] १ होने की स्थिति में लाना ।



२ ठनवाना, पक्का करवाना, निश्चित करवाना ।

३ कटिवद्ध करवाना, तत्पर, उद्यत या उतारू होने के लिये प्रेरित करना ।

४ स्थिर करवाना, रुपवाना, जमवाना ।

५ अटल या अडिग करवाना, टूट होने या टटने के लिये प्रेरित करना ।

६ जुडवाना, लगवाना ।

७ स्थापित करवाना, कायम करवाना ।

उ०—१ तरै गढ री ठोड देखतो फिरै छै । पछै जैसलमेर था कोस आथवण नू मोहाण रा भाखर छै, तठै गढ मडायो, सु वामण ईसो वरस १४० री हुवी थी ।—नैणमी

उ०—२ मडारी ताराचद नारणोत मे देहुरा मडाया, देहुरी पार-सनाथजी री नै देहुरी स्त्री ठाकुरजी री नै देहुरी स्त्री मादेवजी री ।

—मारवाड री ख्यात

८ आरम्भ करवाना, शुरू करवाना ।

९ किसी दुकान, सस्था या कार्य को नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालू करवाना, खुलवाना ।

१० चित्राकित करवाना, चित्रित करवाना ।

११ लिखवाना, दर्ज करवाना ।

उ०—१ भाटिया री पीढी चारण रतनू गोकळै इण भांत मडाई ।  
—नैणमी

उ०—२ खाता मडाय अगूठा रा निसाण दिरावण री वात तो अलगी वो किणी भासामी नै मूडा सू हकरावती ई नी हो ।

—फुलवाडी

१२ अकित करवाना, चिन्हित करवाना ।

१३ निर्माण करवाना, बनवाना ।

१४ किसी यन्त्र के पुर्जों को यथा स्थान लगवाकर कार्य करने योग्य बनवाना ।

उ०—अौर गढ मे चौकेळाव मे वेरो भाखर मे सुरगा सु खोदाय करायो नै ऊपर अरठ मडायो नै दाय कोठार वाग मे सेमान रा कराया ।—मारवाड री ख्यात

१५ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु का किसी के सहारे लगवाना, सटवाना, सलग्न करवाना, सहारा बनवाना, आधार बनवाना ।

१६ ग्रहण करने या लेने के लिये या गिरते हुए को फेलने के के लिए पात्र, वस्तु या हाथ रखवाना, पसराना, फेलवाना ।

१७ तनवाना ।

१८ धोडा, ऊट आदि सवारियों पर चारजामा कसवाना, बघवाना ।

उ०—तद एक दिन रिणमलजी धोडै ऊपर जीण साज-बाज मडायो भर धोडै ऊपर असवार हुवा ।

—रिणमल राठोड री वारता

१९ सृजन करवाना, सृष्टि करवाना ।

२० रचना करवाना, रचवाना ।

२१ मनाने के लिये प्रेरित करना ।

२२ सुसज्जित करवाना, सजवाना, सवराना ।

२३ आच्छादित करवाना, ढकवाना ।

२४ तैयार करवाना, प्रस्तुत करवाना ।

२५ छितरवाना, बिखराना ।

२६ प्रबन्ध या व्यवस्था करवाना ।

२७ व्यक्त करवाना ।

२८ सम्बन्ध जुडवाना, मेल करवाना ।

२९ सघान करवाना ।

३० रत्न आदि कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु मे बिठवाना, जम-वाना, जडवाना ।

३१ ढोल आदि वाद्यो के मुख पर चमडा चढवाना ।

३२ अभिमन्त्रित, गडा या ताबीज पर घातु-पत्तर चढवाना, आवे-ष्ठित करवाना, मन्त्रित करवाना ।

उ०—तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत री जश मादळिया मे तथा चौकी मे मडाइजजौ ।—वी स टी

३३ तस्वीर, चित्र आदि को सुरक्षार्थ, ढीशा लगी किमी चौखट मे बिठवाना, स्थिर करवाना ।

३४ शृ गार करवाना, सुसज्जित करवाना ।

३५ कुछ करवाना ।

मडाणहार, हारो (हारी), मडाणियो—वि० ।

मडायोडो—भू० का० कु० ।

मडाईजणी, मडाईजवो—कर्म वा० ।

मडाडणो, मडाडवो, मडावणो, मडाववो, मडाडणो, मडाडवो, मडाणो, मडावो, मडावणो, मडाववो, मडाणो, मडावो—रु० भे० ।

मडायोडो—भू० का० कु०—१ होने की स्थिति मे लाया हुआ २ ठन-वाया हुआ, पक्का व निश्चित करवाया हुआ ३ कटिवद्ध कर-वाया हुआ, तत्पर, उद्यत या उतारू होने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ स्थिर कराया हुआ, रुपवाया हुवा, जमवाया हुआ ५ अटल या अडिग करवाया हुआ, टूट होने या टटने के लिए प्रेरित किया हुआ ६ जुडवाया हुआ, लगवाया हुआ ७ स्था-पित व कायम करवाया हुआ ८ आरम्भ या शुरू करवाया हुआ ९ नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालू करवाया हुवा, खुल-वाया हुआ (दुकान, सस्था, आदि) १० चित्राकित या चित्रित करवाया हुआ ११ लिखवाया या दर्ज करवाया हुआ १२ अकित करवाया हुआ, चिन्हित करवाया हुआ १३ बनवाया हुआ, निर्माण करवाया हुआ १४ उपकरणो या पुर्जों को सुव्यवस्थित लगवाकर कार्य करने योग्य बनवाया हुआ (यन्त्र) १५ उपयोग की दृष्टि से किसी के सहारे लगवाया हुआ, सलग्न करवाया हुआ, सहारा या आधार बनवाया हुआ १६ ग्रहण करवाया हुआ,



ऊपर से गिरते हुए को सभालने के लिये रखवाया हुआ, पसराया हुआ, फैलाया हुआ (हाथ, पल्ला, पात्र) १७ तनवाया हुआ १८ चारजामा कसवाया हुआ (घोड़ा, ऊट, सवारी) १९ सृजन या सृष्टि करवाया हुआ २० रचना करवाया हुआ, रचवाया हुआ २१ मनाने के लिये प्रेरित किया हुआ २२ सुसज्जित करवाया हुआ, सजवाया हुआ, सवराया हुआ. २३ आच्छादित करवाया हुआ, ढकवाया हुआ २४ तैयार करवाया हुआ, प्रस्तुत करवाया हुआ २५ छितरवाया हुआ, विखरवाया हुआ २६ प्रबन्ध या व्यवस्था करवाया हुआ २७ व्यक्त करवाया हुआ २८ सम्बन्ध जुड़वाया हुआ, मेल करवाया हुआ २९ सधान करवाया हुआ ३० किसी दूसरी वस्तु में बिठवाया हुआ, जमवाया हुआ, जड़वाया हुआ (रत्नादि) ३१ मुख पर चमड़ा चढ़वाया हुआ (वाद्य) ३२ धातु-पत्र चढ़वाया हुआ, आवेष्टित करवाया हुआ, मड़ित करवाया हुआ ३३ किमी चौखट में बिठवाया हुआ, स्थिर करवाया हुआ ३४ शृंगार करवाया हुआ, सुसज्जित करवाया हुआ ३५ कुछ करवाया हुआ (स्त्री० मढायोडी)

मडावणी, मडावणी—देखो 'मडाणी, मडावी' (रू भे)

उ०—१ गुरि वीनविउ अवसरि राउ, सविहु बँठा करउ पसाउ । तुम्हि मडावउ नवउ अखाडउ, नव नव भणि पूय रमाडउ ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ पातसाह मदमद वडो घरमात्मा हुवो । ओ ओखदा री हाट मडावी बँध राखिया ।—नैणसी

उ०—३ ढोलाजी रै ऊटिया मोलावी । ढोलाजी रै काठिया मडावी—लो गी

मडावणहार, हारी (हारी), मडावणियों—वि० ।

मडाविओडी, मडावियोडी, मडाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मडावीजणी, मडावीजवी—कर्म वा० ।

मडावियोडी—देखो 'मढायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मडावियोडी)

मडावी—देखो 'मढवी' (रू भे)

मड़ित—वि० [स०] शोभित, विभूषित, सजाया हुआ ।

उ०—महिनयर घर प्रति दीप मड़ित माल जोत मनोहर । किर व्योम नाखत्र परखि कमळा सोभ धारत सुदर ।—रा रू

२ छाया हुआ, छाजनयुक्त, आच्छादित ।

३ जटित, जड़ा हुआ ।

उ०—तन अमित मौल्य मड़ित रतन, आभूषण गुण ऊधरै । स्र गार साजि मगै ससत्र, महाराज मडोवरै ।—रा रू

मड़ियोडी—भू० का० कृ०—१ होने की स्थिति में आया हुआ, कुछ हुआ हुआ, २ ठना हुआ, पक्का या निश्चित हुआ हुआ ३ कटिबद्ध

या तत्पर हुआ हुआ, उद्यत या उत्तारु हुआ हुआ. ४ उत्पन्न हुआ हुआ अकुरित हुआ हुआ ५ स्थिर हुआ हुआ, रुपा हुआ, जमा हुआ ६ अटल या अडिग हुआ हुआ, दृढ़ हुआ हुआ, डटा हुआ. ७ जुड़ा हुआ, लगा हुआ ८ आरम्भ या शुरू हुआ हुआ. ९ स्थापित व कायम हुआ हुआ १० नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालु हुआ हुआ, नियत समय पर खुला हुआ (सस्था या कार्य) ११ उमड़ा हुआ, उभरा हुआ, मढराया हुआ. १२ चित्रांकित व चित्रित हुआ हुआ १३ लिखित, दर्ज हुआ हुआ १४ उपकरणों सहित सुव्यवस्थित होकर कार्य करने की स्थिति में आया हुआ (यन्त्र) १५ अंकित हुआ हुआ, चिह्नित हुआ हुआ १६ बना हुआ, निर्मित हुआ हुआ १७ उपयोग की दृष्टि से किसी के महारे लगा हुआ, सटा हुआ सलग्न हुआ हुआ, सहारा या आधार बना हुआ १८ ग्रहण करने या ऊपर से गिरते हुए को फेंकने के लिये रक्खा हुआ, पसरा हुआ, फैला हुआ (हाथ, पल्ला, पात्र) १९ तना हुआ २० चारजामा कसा हुआ, वधा हुआ (घोड़ा, ऊट आदि) २१ सृजित, सृष्टि हुआ हुआ २२ रचित २३ मनाया गया हुआ २४ मजा, सवरा, व सुमज्जित हुआ हुआ २५ आच्छादित हुआ हुआ २६ तैयार, उद्यत व प्रस्तुत हुआ हुआ २७ छितरा हुआ, विखरा हुआ २८ प्रबन्धित, व्यवस्थित हुआ हुआ २९ व्यक्त हुआ हुआ ३० सम्बन्ध जुड़ा हुआ, मेल हुआ हुआ ३१ सधान हुआ हुआ ३२ जड़ा हुआ, जमाया हुआ किसी के अन्दर बँठाया हुआ (रत्नादि) ३३ मुख पर चमड़ा चढ़ा हुआ (वाद्य) ३४ धातु-पत्र चढ़ा हुआ, आवेष्टित, मड़ित (गड़ा, तावीज) ३५ चौखट में स्थिर किया हुआ, बँठाया हुआ ३६ सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ ३७ शृंगार किया हुआ ३८ कुछ किया हुआ ३९ देखो 'मड़ियोडी' (रू भे) (स्त्री० मड़ियोडी)

मडी—स० स्त्री०—१ दशनामी साधु सन्यासियों के रहने का स्थान, मठ ।

उ०—१ तीरथ जात समस्त सकल साधा मिल सगा, रास तमासा रमै हुळम नाचै हुडदगा । सांजी मेळा साग देव राखी चशोळी । मिंदर मडी मसाण होळिका फाग हरोळी । भागवत कथा भूतावळी हिरण दरस हीडोरचा । परवीण होय जाणै पुरस, मानजदाँ रा मोरचा ।—ऊ का

उ०—२ सीत निवारण जीरण कथा, ताकै थेंगळ लागी । गिर तर मडी मसाण चौडै ऐसै रह अनुगामी ।

—सुखरामदासजी महाराज

२ वह स्थान जहा थोक माल बेचने की बहुत सी दुकानें हो, व्यापार केन्द्र ।

ज्यू—घान री मडी, साग री मडी ।

रू० भे०—मडी, मडी, मडी ।

अल्पा०—मडुली ।

महुआ—देखो 'मढवो' (रू भे)

महुक, महुक—स० पु० [स० महुक] (स्त्री० महुकी) १ एक प्रसिद्ध छोटा जलचर जीव मेंढक, दादुर।

उ०—चतुर पुरुष वातक सखी सखि मिट गई तरस तुरत। हरि हर रूप नक्षत्र नउ सखि नाठउ तेज निततरे। धयउ दुरित जवा-सक अतरे मुनिवर महुक हरखत रे। जिहा विजयमान भगवत रे विकसित त्रय भुवन वनत रे।—वि कु

२ एक प्राचीन ऋषि।

३ दोहा नामक छन्द का पाचवा भेद जिसमे १८ गुरु और १२ लघु वर्ण सहित ४८ मात्रायेँ होती हैं।

४ रुद्रताल के बारह भेदों में से एक। (सगीत)

५ एक प्रकार का वाद्य विशेष। (प्राचीन)

६ एक प्रकार का नृत्य।

७ घोड़े की एक जाति विशेष या इस जाति का घोड़ा। (शा हो)

महुकपरणी—स० स्त्री० [महुकपर्णी] १ ब्राह्मी वृत्ति।

२ मजिष्ठा, मजीठ।

महुकासन महुकासन—स० पु० यौ० [स० महुकासन] योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दोनों पावों को घुटने के स्थान पर मोड़कर दोनों पंजों का ऊपरी भाग पृथ्वी को स्पर्श कराकर और दोनों पावों के अगूठे गुदा के पास आमने सामने लाकर बैठना होता है।

वि० वि०—इस आसन से बैठकर शिर पर प्रथम बाये हाथ की ठेउनी रखने और उस पर दाहिने हाथ की ठेउनी रखने से उत्तान महुकासन कहलाता है।

महुकी—स० स्त्री० [स० महुकी] १ मादा मेंढक, मेंढकी।

२ स्वेच्छाचारिणी स्त्री, छिनाल स्त्री।

महुकर—स० स्त्री० [स० महुकर] लोह कीट जो भस्म बनाकर औषधियों में उपयोग में लिया जाता है।

मढेरी—स० स्त्री० [स० मढप] १ विशाल भवनों या हवेलियों के तोरण द्वार पर बना बड़ा छज्जा जिमका उपयोग उत्सव आदि के अवसर पर स्त्रियां बैठकर गीत आदि गाने के लिए करती हैं।

२ मकान की छत पर चारों ओर बनी हुई छोटी दीवार।

रू० भे०—मुडेर।

मडेलो—स० पु० [स० मडप+रा० प्र० लो] बड़े से छोटे आकार के क्रम से एक के ऊपर एक रखे हुए बर्तनों का समूह। (ढूढाड)

मडोर, मडोउर, मडोवर[स० मडपपुर] राजस्थान के प्रसिद्ध नगर जोधपुर में उत्तर में छ मील की दूरी पर बसा हुआ एक प्रसिद्ध अति प्राचीन ऐतिहासिक नगर जो मरु-प्रदेश की प्राचीन राजधानी था।

उ०—मठी चीतोड रा अधीस राणा लाखा रा पट्टपकुमार चूडा थी पुत्री री सबध करण रैं काज मडोउर रैं नरेस राठोड रणमाल आपरा पोळिपात्र भेजिया।—व भा

मडोवरी—वि० [स० मण्डपपुर+रा० प्र० श्री] मडोर नगर का, मडोर नगर सबन्धी।

स० पु०—१ मडोर नगर का निवासी।

२ राठोड वंशीय राव चूडा के वंशजों के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द।

उ०—मुहरि माडिज काजि दिग-विजय मडोवरी, घर धमल सिरै परिगह घरीसै।—गु रू व

मड—स० पु० [स० मडप] १ दशनामी साधु सन्यासियों के रहने का स्थान, मठ।

२ चौकी या चबूतरे पर बना हुआ छोटे आकार का मंदिर जिममें किसी देव या देवी विशेष की मूर्ति स्थापित की जाती है।

३ देवी का मंदिर।

उ०—१ इअत खाळ वहे मड आगळ खाण पळाकण खडी। ए नर अमर जातरी आए, चवर ढुळाई चडी।—अज्ञात

उ०—२ आई कीज ऊदरा, मेहाजी मड माय। किएक चुगां कोठार री, पड्या रहा पडछाय।—हिगळाजदान कवियो

वि० वि०—इस शब्द का अधिकतर प्रयोग देवी या महादेव के मंदिर के लिये ही किया जाता है।

रू० भे०—मड, मड़।

मड़णी, मड़वी—देखो 'मडणी, मंडवी' (रू भे)

उ०—१ पण हाडा नै वेम पडग्यो—हो न हो माय भीटियो इज है। वी मड़ियोडा खालहा मार्ये जोर सू टूच मारी। डेमकी फूटगी।

—फुलवाडी

उ०—२ म्हारे वीरेजी मडायो चग वाजणो, म्हारी रेगर मड कर लायो'रे रगीलो चग वाजणो।—लो गो

मड़णहार, हारो (हारी), मड़णियो—वि०।

मडवाडणी, मडवाडवी, मड़वाणी, मड़वावी, मड़वावणी, मड़वाववी, मड़वाडणी, मड़वाडवी, मडानी, मड़ावी, मडावणी, मडाववी

—प्रे० रू०।

मड़िओडी, मड़ियोडी, मड़योडी—भू० का० कु०।

मड़ीजणी, मड़ीजवी—भाव वा०/कर्म वा०।

मड़ाडणी, मड़ाडवी—देखो 'मडाणी, मडावी' (रू भे)

मड़ाणहार, हारो (हारी), मड़ाणियो—वि०।

मड़ाडिओडी, मड़ाडियोडी, मड़ाडयोडी—भू० का० कु०।

मड़ाडीजणी, मड़ाडीजवी—कर्म वा०।

मड़ाणी, मड़ावी—देखो 'मडाणी, मडावी' (रू भे)

उ०—१ म्हारे वीरेजी मडायो चग वाजणो, म्हारी रेगर मड कर लायो'रे रगीलो चग वाजणो।—लो गो

उ०—२ खीर-खाड रो थनै थाल पगोसू, थारी मोने मे चाच  
मढाऊ कागा, कद म्हांगो मारुजी घर आवै ।—लो गी  
उ०—३ ऊडि उडि म्हाारा ऊ सरवरिया रा हम, सुरग थारी  
पावड़ी । सोने मढाऊ थारी चूच, रूपा की दोइ आवड़ी ।

—गीरा

मढ़ाणहार, हारो (हारी), मढ़ाणियो—वि० ।

मढ़ायोडी—भू० का० कृ० ।

मढ़ाईजणो, मढ़ाईजघो—कर्म वा० ।

मढ़ायोडी—देखो 'मढ़ायोडी' (रू भे )

(स्त्री० मढ़ायोडी)

मढ़ावणो, मढ़ावघो—देखो 'मढ़ावणो, मढ़ावघो' (रू भे )

मढ़ावणहार, हारो (हारी), मढ़ावणियो—वि० ।

मढ़ाविघोडी, मढ़ाविघोडी, मढ़ाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मढ़ावीजणो, मढ़ावीजघो—कर्म वा० ।

मढ़ाविघोडी—देखो 'मढ़ायोडी' (रू भे )

मढ़ियोडी—देखो 'मढ़ियोडी' (रू भे )

(स्त्री० मढ़ियोडी)

मढी—देखो 'मढी' (रू भे )

उ०—१ जमकि जमकि तत मति पतित काळ ढगत ढग तोही ।

मोह मढी मे सो रछा यह अचभा मोही ।—ह पु वा

उ०—२ फलोधी था खबर आई—भाटियां रो साथ पोकरण  
आयो । गाव नु ढोवो कीयो श्री जो रं साथ बाहर नीमर वेढ  
की । ऊवै हाटां ताऊ आधा, मढी कर्न वेढ की । तरं राजाजी रो  
साथ जीतो, वेढ भाटिया हारी ।—नैणमी

मढूकळी—देखो 'मढकी' (अल्पा, रू भे )

मणणो—देखो 'मणणो, मणवो' (रू भे )

उ०—मणै कुयारी मेघडी, भलो भलो भरतार । माहरो दुख-मुख  
माहवा, हीअडो जाणएहार ।—पी ग्र.

मत, मतर—देखो 'मत्र' (रू भे )

उ०—१ चरचा करता चुगल सू, प्रकृत हुवै परतत । चुगली काना  
सुणए सू, मैलो हुवै गुर-मत ।—वा दा

उ०—२ पागळा खडै जमदूत फीटा पडै जोखमी ऊघडै नयण  
जूटी । दिया बरदान मतर मढ़ादेव रा, वभूती घनतर तणी वूटी ।

—मे म

उ०—३ उणनै इण भात हमता देख दोनां रो ई जीव ठाणै  
आयो । जे वा थोडी ताळ फेर नी हसती तो वाने भवळ खाय हेट  
गुडणो ई पडतो । निस्चै आ डोकरी तो की न की मतर सारि-  
योडी है ।—फुलवाडी

उ०—४ आज ई म्हारै समझाया पछै श्री ऊमर मे कदै ई अम-  
लांणी रो नाव लेलै तो म्हनै कै'जो । सेठां पूछयो—आप कर्न अई  
काई मतर है ।—फुलवाडी

उ०—५ जतर मतर लिख के लावै, थोखद लावै घसकै रो । जो  
कोई लावै म्याम वंद को तो उठ खोलू हम के रो ।—मीरा

उ०—६ परी उग भांत मूंडी उघाडघा सूती ही । पलकां मूछोडी ।  
रेममी होठ, तीखो नाक । किणी माधु रा मतर सू गुलाव रो फूल  
तो इण उणियारा रो रूप धारण नी कर लियो ।—फुलवाडी

उ०—७ डोकरी समझायण लागी—आप चावो तो राजाजी रो  
भावना पलट मको । अठै वंठाई कोई मतर फूकी तो वै काले रो  
काले महाराणी नै तेडवा सारू वीम घोडा रो रथ जुतायनै भेज दै ।

—फुलवाडी

उ०—८ पछै वारा स्वारथ माथं धूकती कछी—वापडा होण  
पुन्या जादू मतरा सू ई वातो सारणी चावै ।—फुलवाडी

मतरकार—देखो 'मत्रकार' (रू भे )

मतरजतर—देखो 'जतर-मतर' (रू भे )

मतरणा—देखो 'मत्रणा' (रू भे )

मतरततर—देखो 'मत्रतत्र' (रू भे )

मतरणो, मतरवो—क्रि० सं० [स० मत्रम्] १ मत्र द्वारा सम्पन्न करना,  
पवित्र करना, अभिमन्त्रित करना ।

२ जादू टोना करना ।

३ वशीभूत करना ।

उ०—पाछा राजी विह्या राजाजी नै मतरणा तो माव सैल ।

—फुलवाडी

४ झाड-फूक करना ।

५ फुसलाना, भुलावे मे डालना ।

उ०—म्हनें तो अवार वाळी वात मिसखरी रो लखावै । ए कैणा  
घूड रा राजाजी है । ए तो मिनखा दाई मिनख है । वेटा, यू म्हनें  
काई मतरै, म्है घणी दुनियां देखी ह ।—फुलवाडी

६ किमी के मन मे अभिमान या गर्व उत्पन्न करना, फुलाना ।

उ०—म्हारै जैडी हजार मासिया ई थारी अकल नै नी पूग सकै ।  
थनै जो काम करणी है, वो सब पैला सू ई तेवडियोडी है, पछै  
म्हनें फालतू क्यू मतरै ।—फुलवाडी

मतरणहार, हारो (हारी), मतरणियो—वि० ।

मतरिघोडी मतरियोडी, मतरघोडी—भू० का० कृ० ।

मतरीजणो, मतरीजघो—कर्म वा० ।

मत्रणो, मत्रवो—रू० भे० ।

मतरवाद—देखो 'मत्रवाद' (रू भे )

मतरवादी—देखो 'मत्रवादी' (रू भे )

मतरविद्या—देखो 'मत्रविद्या' (रू भे )

मतरसाधक—देखो 'मत्रसाधक' (रू भे )

मतरसाधन—देखो 'मत्रसाधन' (रू भे )

मतरसिधी—देखो 'मत्रसिद्धि' (रू भे )

मतराई—स० स्त्री० [स० मत्रता] १ अभिमन्त्रित करने का कार्य ।

२ फाड़-फूक करने का कार्य ।

३ जादू टोना करने का कार्य ।

रु० भे०—मत्राई ।

४ देखो 'मित्राई' (रु भे)

मतरियोडो-भू० का० कृ०—मत्र द्वारा सम्कृत किया हुआ, पवित्र किया हुआ अभिमंत्रित किया हुआ २ जादू-टोना किया हुआ ३ वशी-भूत किया हुआ ४ फाड़-फूक किया हुआ ५ फुमलाया हुआ, भुलाव में डाला हुआ ६ किसी के मन में अभिमान या गर्व उत्पन्न किया हुआ, फुलाया हुआ  
(मत्री० मतरियोडो)

मतरियोडोडोरो-स० पु० यो० [स० मत्र-सूत्र] सूत या रेशम का वह धागा जो मंत्रित कर शरीर के किसी अंग पर बांधा जाता है, मत्र-सूत्र, गढ़ा । (मि ताती २)

मतरी—देखो 'मत्री' (रु भे)

मतरोडियो-म० पु०—१ बनावटी मित्रता ।

रु० भे०—मितरोडियो ।

२ देखो 'मित्र' (अल्पा, रु भे)

मतव्य-म० पु० [स०] किसी कार्य अथवा बात के सम्बन्ध में वह विचार जो मन में स्थिर किया गया हो ।

उ०—मतव्य मान गतव्य ग्यान वेदिक विधान घर ध्येय ध्यान ।

—ऊ का

मतु-स० पु०—अपराध, गुनाह ।

उ०—तो भी मतु विहूण जनक री मित्र मारण में म्हारो तो मन आघात री उत्करस न मानै ।—व भा

मत्र-स० पु० [म०] १ देवाभिसाधन गायत्री आदि ब्रह्मिक वाक्य जिसके द्वारा देवस्तुति तथा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो । वि० वि०—वैदिक मत्र तीन प्रकार के माने गये थे । छंदोबद्ध या पद्य रूप में रचित मत्र जो उच्च स्वर में उच्चरित किये जाते थे उन्हें 'ऋचा' कहते थे । ऐसे ही गद्य रूप के मत्रों को जिनका उच्चारण मंद स्वर में किया जाता था 'यजु' कहते थे और पद्य रूप में गाए जाने वाले मत्रों को 'साम' कहते थे । निरुक्त में भी मत्रों के 'परोक्षकृत', 'प्रत्यक्षकृत' और 'आव्यात्मिक' तीन भेद बताये गए हैं । २ वेदों का वह भाग जिसमें उक्त प्रकार के मत्रों का संग्रह हो । ३ कोई ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो दैवी शक्ति से युक्त माना जाता हो और जिसका उच्चारण किसी देवता को प्रमन्न करके अपनी कामना पूरी करने के लिए किया जाता हो ।

उ०—तठै नदी ग जल सू पुद्गल पवित्र करि कोई सिद्ध रा दीघा मत्र रा जाप पूरवक तत तैल रा कटाह में बड़ा २ राजा भूप लीधी ।—व भा

वि० वि०—ऐसे यत्र एकाक्षरी और बिना स्पष्ट अर्थ वाले होते हैं । तत्र शास्त्र में ऐसे अक्षरों को बीजाक्षर कहते हैं ।

४ गोप्य या रहस्यपूर्ण बात । (मत्राणा, सलाह, परामर्श)

उ०—१ अर अनामय पूछण री व्याज करि पिता नू बडा भाई रै समेत मारि साह होण री सकल्प करि दिल्ली मायै आपरी चतुरंग चमू चलाई । तिकी मत्र उपव्हर भी चार लोका रा चतुर पणा थो चौडे आयो थको पहली ही इसी घाट घड़ता तीजा साहजादा अरगजेव रै सहायक बणियो ।—व भा

उ०—२ जयमल पतं जवाव जद, हजरत तरणी हज़र । मत्र करे लिख भेलिया, साभळ हरखें सूर ।—वा दा.

उ०—३ विपत मत्र विपरीत, अघरम आळम ऊधणी । अपजम मोर अनीत, पे'ला घर वाछें पिसण ।—वा दा

उ०—४ ताहरा ईदं चवडै नू कह्यो—आपं मडोवर लेस्या । ताहरा कह्यो—भला ताहरा रजपूत सरव एकठा हुआ । मत्र कियो । ताहरा च्यार-च्यार ठाकुर गाडी माहै बैठा ।—नैणमी

५ चौसठ कलाओं में से एक । (काम शास्त्र)

६ कोई ऐसी बात या शिक्षा जो किसी प्रकार का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को गुप्त रूप में बतलाई, समझाई या सिखाई जाय, कार्य सिद्धि या गुर दग या नीति ।

यो०—गुरु मत्र ।

मुहा०—गुरु मत्र देणो=गुप्त रीति से अपनी बात किसी को कान में कहना, सिखावट में लाना, बहकाना ।

७ विचार ।

उ०—असुचि मत्र दिल्लीम उपायो । बारि पटक गोपळ विगहायो ।

—व भा

८ जादू ।

९ तांत्रिक साधना या विद्या ।

रु० भे०—मत, मतर ।

१० देखो 'मत्री' (रु भे)

उ०—महि कनवज महि जग मुकट, आयो मत्र उदार । छक चढियो चढियो छभा, जैचद करण जुहार ।—सू प्र

मत्रकार-स० पु० [स०] मत्र दृष्टा ऋषि ।

रु० भे०—मतरकार ।

मत्रकुसळ-वि० [स० मत्रकुशल] १ परामर्श देने में कुशल ।

मत्रकून-म० पु० [म० मत्रकृत] १ वेद रचयिता ।

२ वेदपाठी, मत्रोच्चार करने वाला ।

३ परामर्शदाता, सलाहकार ।

४ दूत ।

मत्रग्य-स० पु० [स० मत्रज] १ मत्री ।

२ पंडित, ब्राह्मण ।

३ गुप्तचर ।

४ वेदज्ञ ।

मन्त्रजल-स० पु० [स० मन्त्रजल] अभिमन्त्रित जल ।

मन्त्रजाण-स० पु० [स० मन्त्रज्ञ] दूत । (डि को)

मन्त्रणा-म० स्त्री० [स०] १ परामर्श । २ सलाह ।

रू० भे०—मन्त्रणा ।

मन्त्रणी-वि० स्त्री०—१ मन्त्र सम्बन्धी क्रिया करने वाली, जादू-टोना करने वाली ।

उ०—१ तुही जगणी मन्त्रणी शत्रुजामा, तुही घत्रणी तत्रणी बुद्धि घामा ।—मे म

उ०—२ नमो मन्त्रणी तत्रणी मेघमाळा, नमो सकरी सुदरी प्रेम साळा ।—मा वचनिका

मन्त्रणी-स० पु० [स० मन्त्रण] परामर्श, सलाह, मन्त्रणा ।

उ०—१ ताहरा महेवै ही किरौडी आयो । ताहरा कांनडदे सरव राजपूत तेडिया । कामेतिया मालैजी नू तेडिया । तेडनै मन्त्रणी कियो—जु कासु करस्या ।—नैणमी

उ०—२ आलोच्यो आलोच श्रमहारी ए अछै । कीज्ये तोह विचार कहो जे तुम अछै । दादल बोले वारू कीयो ए मन्त्रणी, पण इक माहरी घात सुणि आलोचणी ।—प च चो

मन्त्रणी, मन्त्रवी—देखो 'मन्त्रणी, मन्त्रवी' (रू भे)

उ०—तरै महाराज उभराणै पगे गोतमजी रा पगा गया । प्रणाम करि अरज कीधी—महाराज अग्र्यान पणै मन्त्रियो पाणी खवास मोनै पायो —रा व

मन्त्रणहार, हारी (हारी), मन्त्रणियो—वि० ।

मन्त्रियोडो, मन्त्रियोडो, मन्त्रियोडो—भू० का० कृ० ।

मन्त्रोजणी, मन्त्रोजयो—कर्म वा० ।

मन्त्र तत्र-स० पु० यो० [स०] १ जादू टोनेका कार्य विशेष ।

२ कुछ विशिष्ट क्रियायो के माथ जादू टोने के रूप मे किये जाने वाले मन्त्र विशेष ।

रू० भे०—मन्त्र-तत्र ।

मन्त्रदेव, मन्त्रदेवता-स० पु० [स०] वह देवता जिसका मन्त्र मे आह्वाव किया गया हो ।

मन्त्रपाळ, मन्त्रपाल-स० पु० [स० मन्त्रपाल] राजा को मन्त्रणा देने वाला, सलाहकार ।

उ०—राय राणा मडलिक आखडलीक सामत महासामत लघु सामतस्त्रीगरणा वयगरणा घरम्माधिगरणा श्रमात्य महामात्य सुहा-सोला उचित बोला दासदीकोला गादीया मसूरीया पुडपुडीया कावडीया दीवारिक तलार मुडउवा मेनहय मन्त्रपाल तत्रपाल स्नेष्टि भारथपति जीणइ सभा ।—व स

मन्त्रपूत-वि० [स०] १ मन्त्र द्वारा पवित्र किया हुआ ।

स० पु०—२ गरुड । (अ मा, ह ना मा)

मन्त्रप्रयोग-स० पु० यो० [स०] १ मन्त्र द्वारा काम लेने का भाव या क्रिया ।

२ मन्त्र का प्रयोग ।

मन्त्रवीज-स० पु० [म०] मन्त्र विशेष का प्रथमाक्षर, मूलमन्त्र ।

मन्त्रमुग्ध-वि० [स०] मन्त्र द्वारा मोहित किया हुआ, वशीभूत किया हुआ ।

मन्त्रमूरत, मन्त्रमूर्ति-स० पु० [म० मन्त्रमूर्ति] शिव, महादेव ।

(ना मा)

मन्त्रमूल-स० पु० [स० मन्त्रमूल] इन्द्रजाल, जादू ।

मन्त्रयोग-स० पु० [स०] १ मन्त्र का प्रयोग ।

२ मन्त्र पढ़ने का कार्य ।

३ इन्द्रजाल, जादू ।

मन्त्रवाद-स० पु० [स०] पुरुष की ७२ कलाओं मे से एक कला विशेष ।

रू० भे०—मन्त्रवाद ।

मन्त्रवादी-वि० [स० मन्त्रवादिन्] मन्त्र का उच्चारण करने वाला, मन्त्रज्ञ ।

उ०—१ आया मन्त्रवादी क्रिया गति सू बोलायो अग । सरवथा न छोडू पायो राजा रो सरीर । लाडलो कवार तथा महाराणी प्राण लेहू, घारी मना रवा हुओ प्रधान मन्त्री वीर ।

—राजमिह कृपावत रो गीत

उ०—२ वागधर सुजाण चित्रजाण घातुनिस्पत्तिजाण ज्योतिम-जाण मन्त्रवादी यत्रवादी तत्रवादी घातुवादी ।—व स

रू० भे०—मन्त्रवादी

मन्त्रविद्या-स० स्त्री०—१ मन्त्र तत्र की विद्या ।

२ मन्त्र-तत्र शास्त्र ।

रू० भे०—मन्त्रविद्या, मन्त्रविद्या ।

मन्त्रवी—देखो 'म १' (रू भे) (डि ना मा)

उ०—१ मत सीखै मन्त्रवी, राग सीखै रसचारी । सीखै ध्रम कुल सकल रीत सीखै छत्रधारी ।—सू प्र

उ०—२ घोडा लाख दोढ री जमीत लीधा रहै । दरियाव माहै जेहाज मारै । तिण रो माल चीजा घणो ही भेली हुवै । तिण रै सुजाण साह मन्त्रवी छै ।—कहवाट सरवहिया री बात

उ०—३ मिळि मिळि मोटा मन्त्रवी, सूर सुभट रजपूत । इण विध आलोचै तिसै, आयो आलम पूत ।—प च चो

मन्त्रसंस्कार, मन्त्रस्कार-स० पु० [स० मन्त्रसंस्कार] १ मन्त्र पढ़कर किया जाने वाला संस्कार ।

२ मन्त्रग्रहण के पूर्व किया जाने वाला तत्रोक्त संस्कार ।

३ विवाह ।

रू० भे०—मन्त्रसंस्कार ।

मन्त्रसहिता-स० स्त्री० [स०] वेदो का वह भाग जिसमे मन्त्रो का संग्रह है ।

मन्त्रसाधक-स० पु० [स०] तांत्रिक साधना करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—मन्त्रसाधक ।

मन्त्रसाधन-स० पु० [स०] किसी मन्त्र को साधने या सिद्ध करने की क्रिया या भाव ।

रू० भे०—मन्त्रसाधन ।

मन्त्रसिद्ध, मन्त्रसिद्धि-वि० [स० मन्त्रसिद्ध] १ जो मन्त्र द्वारा सिद्ध किया गया हो ।

२ मन्त्र की साधना कर सिद्ध करने वाला ।

मन्त्रसिद्धि-स० स्त्री० [स०] मन्त्रों द्वारा प्राप्त शक्ति, मन्त्र की सफलता ।

रू० भे०—मन्त्रसिद्धि ।

मन्त्रसंस्कार—देखो 'मन्त्रासंस्कार' (रू भे )

मन्त्राई—१ देखो 'मित्राई' (रू भे )

२ देखो 'मन्त्राई' (रू भे )

मन्त्रि—देखो 'मन्त्री' (रू भे )

उ०—१ राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघु मामत तलवर तत्रपाल चतुर्गुप्तिक ताडकपति मन्त्रि महामन्त्रि ।

—व स

मन्त्रित-वि० [स०] मन्त्रों द्वारा सुसंस्कृत अभिमन्त्रित ।

मन्त्री-स० पु० [स० मन्त्रिन्] १ सलाहकार या परामर्श देने वाला व्यक्ति, परामर्श दाता ।

उ०—जिए राजा रैं अनेक मन्त्री वाणी रा जुद्ध मे महाप्रतिभट ।—व भा

२ राजा का वह प्रधान व्यक्ति जिसके परामर्श से राज्य का संचालन होता है, आमात्य ।

उ०—१ कवि पंडित गायक कथक मन्त्री गज भडमल्ल । ती दरवार जिता तिता जग चावा जेहल्ल ।—बा दा

उ०—२ भडारी अखड नेम आसकरन भागी, राजा दल राज काज साजा छल जागे । वरधमान नद इद्र 'अगजीत' का मन्त्री, सरव सावधान जैसे थांन थांन जन्नी ।—रा रू

३ राज्य के विभाग विशेष के कार्य का संचालन करने वाला व्यक्ति, (मिनिस्टर) ।

४ संस्था अथवा संगठन विशेष का एक पदाधिकारी जो सम्बन्धित संस्था अथवा संगठन का प्रमुख कार्य भार वहन करता है, सचिव ।

५ शतरंज के खेल में वजीर नाम की गोटी ।

रू० भे०—मन्त्री, मन्त्र, मन्त्रवी, मन्त्रि, मन्त्रिनी, मिन्त्री ।

मन्त्रीपाराय-स० पु० यो० [स० पार्यमन्त्री] श्री कृष्ण । (डि को)

मन्त्रीसर, मन्त्रीस्वर, मन्त्रेस्वर-स० पु० [स० मन्त्रीस्वर] राज्य कार्य संचालकों में प्रधान, महामन्त्री, महामात्य ।

उ०—१ तठै एकदा समाजोग रैं बिखै राजा भोज रा घर रा नै राजा मान रा घर रा नाळेर आया । तिणा साथै मन्त्रीसर आया छै ।—रीसाळ री बात

उ०—२ हस्ति सहस्रदल कमळ, पुरुष प्रमाण मिहासण, कटी प्रमाण पादपीठ पाछइ थई आइनु, डावइ मन्त्रीस्वर जिमणइ पुरोहित ।—व स

उ०—३ सामंत सूर्रा सुहुड घण, हय गय सह्य न पार । सेनांनी साहमिक भट मन्त्रेस्वर सुविचार ।—मा का प्र

मन्त्रीलियो—देखो 'मित्र' (अल्पा रू भे )

उ०—केई मित केई मन्त्रीलिया, ताही मित अनेक । विपत पडथा बाटले, सो सोआ मे एक ।—

२ देखो 'मन्त्रीलियो' (रू भे )

मन्थ-स० पु० [स० मन्थ ] १ मथन, विलोडन ।

उ०—जथा के कडक्क छटा मेघ जोडा । मचै सिंधु के मय पव्वे घमोडा ।—व भा

२ मलना अथवा रगड़ना क्रिया का भाव ।

३ दही विलोने का दड, मथानी ।

४ एक प्रकार का मृग ।

५ एक प्रकार का शरवत विशेष जो कई पदार्थों के ममिश्रण से बनाया जाता है ।

६ बाल रोगों के अन्तर्गत माना जाने वाला एक प्रकार का ज्वर ।

७ देखो 'मन्थ' (रू भे )

उ०—चेला लावै मागकर, बैठा खावै मन्थ । रांग भजन का नाथ है, पेट भरण का पंथ ।—अज्ञात

मन्थचल-स० पु० यो० [स० मन्थचल] मन्थराचल पर्वत का नामान्तर ।

मन्थगिरि-स० पु० यो० [स० मन्थगिरि] मन्थराचल पर्वत का नाम ।

मन्थज-स० पु० [स० मन्थजम्] मन्थजन, नवनीत । (डि को)

मन्थन—देखो 'मथन' (रू भे )

मन्थणी—देखो 'मथणी' (रू भे )

मन्थणी, मन्थवी—देखो 'मथणी, मथवी' (रू भे )

उ०—ग्यान के मथान सु, मिथ्यात मोह मथ मथ ।—घ व प्र

मन्थनहार, हारौ (हागी), मन्थनियो—वि० ।

मन्थिओड़ी, मन्थियोड़ी, मन्थोड़ी—भू० का० कृ० ।

मन्थीजणी, मन्थीजवी—कर्म वा० ।

मन्थन-स० पु० [स० मन्थन ] १ मथने की क्रिया या भाव, विलोडन ।

२ मथन करने का दण्ड, रई ।

३ देखो 'मथन' (रू भे )

रू० भे०—मथण ।

मन्थनी—देखो 'मथणी' (रू भे )

मन्थपरवत, मन्थपरवत—देखो 'मथपरवत' (रू भे )

मन्थरां-क्रि० वि० [स० मन्थरा] घीमा, मद । (अ मा )

मन्थरा-स० स्त्री० [स०] १ कैकई की प्रमुख दासी जिसने उसे बहका कर राम को १४ वर्ष का बन्दास दिलवा दिया था ।

रू० भे०—मन्थरा ।

अल्पा०—मन्थरी ।

२ देखो 'मन्थुरा' (रू भे )



मथाण-वि०—१ मथने का, मथन सम्बन्धी ।

उ०—घणा रोद्र घेरै, फिर चक्र फेरो । मथाणी मटल्लै, मही जाण हल्लै ।—रा रू

२ देखो 'मथाणी' (रू भे)

उ०—समद प्रलय विहार स्त्रीरग, वेद मुख वाणी । बल चवद रतन उधार हित वप, कठण पिठ घारी मद्र कछप । उदघ कर मथाण अणघट, प्रगट कज-पाणी ।—र. ज. प्र

३ देखो 'मथाणी' (मह, रू भे)

उ०—देव दाणव भेला करि स्रप को नेत्री करि । मंदराचल परबत को मथाण करि समुद्र माह थी काढि लीधी ।—वेलि टी

४ देखो 'मथाण' (रू भे)

५ देखो 'मथाण' (रू भे.)

रू० भे०—मथान ।

मथाणी-स० स्त्री०—१ 'रघुवर जस प्रकास' के अनुसार दो तगण का वर्ण छंद विशेष ।

२ देखो 'मथाणी' (रू. भे)

३ देखो 'मथाणी' (रू भे)

मथान—देखो 'मथाणी' (मह, रू भे)

उ०—१ ग्यांन के मथांन सू मिथ्यान मोह मथ मथ ।—घ. व ग

उ०—२ दसमी भावना एम भावत लोक स्वरूप मथान रे । जिम विलवणुत विलवता थका सरीर नउ सस्थान रे ।—स कु.

२ देखो 'मथाणी' (मह, रू भे)

मद-वि० [स०] १ देवकूफ, मूर्ख, मूढ । (प्र. मा)

२ कृपण, कजूस ।

उ०—सत्रियां गुर आखै राव खीची, मूठी भीची वहै मवा । नह रहै नाम सभाया नीची, सीची कीरत रहै सदा ।

—गोरघनसिंह खीची

३ तनिक, थोडा । (प्र. मा)

४ कान्तिहीन, फीका, निष्प्रभ ।

उ०—सरद घटा जिम ऊनली, दिस दिस घटा विलद । नगर थटा रुख निरखिया, स्वरग छटा है मद ।—वा दा

५ कमजोर, क्षीण ।

उ०—रचियी जिण जग राजसू, मेछा कर बल मद । पत कनीज दल पागळी, जग जाहू जैचद ।—वा दा

६ जिसकी चाल, गति, प्रवाह, वेग कम हो, धीमा, मथर ।

उ०—तिण उपवनि भोलै नदि तीरा । सीतल मद सुगध समीरा ।

—सू प्र.

७ हल्का, धीमा ।

उ०—१ बांकी चितवन'र मद मुसकान ।—मीरा

उ०—२ आ छोटी मूकाड़ किसडीक सोहे, ओ मद हास किए नू न मोहै ।—र हमीर

८ खल, दुष्ट ।

९ प्रभावहीन ।

ज्यू—मदबिख ।

स० पु० [देशज] १ घोड़ी की गर्दन का एक रोग विशेष ।

(घा हो)

[स० मद] २ चार प्रकार के हाथियों में वह हाथी जिसके वक्ष और मध्य भाग की घली ढीली, पेट लम्बा, चमड़ा मोटा, गर्दन और काख मोटी और पूछ की चवरी मोटी हो ।

(हिं को)

उ०—ठणै भद्र मदां त्रगां वम ठावा । छटा फैल हानै किनां सैल छावा ।—व भा

३ शनिश्चर । (प्र. मा)

४ यमराज, यम ।

५ देखो 'मद' (रू भे)

उ०—१ नमी जग जीवण नंद, महाविस्ल नाग उत्तारण मद ।

—ह र

उ०—२ उत्तर आजस उत्तरउ, पाळउ पडइ रवद । का वामदर सेयियइ, कह तरुणो कइ मद ।—डो मा

प्रत्यय [फा०] किसी गुण या पदार्थ युक्त या सम्पन्न ।

ज्यू—अकलमद, दौलतमद ।

६ देखो 'मदी' (मह, रू भे)

रू० भे०—मदउ ।

मदउ—१ देखो 'मद' (रू भे)

२ देखो 'मदी' (रू भे)

मदक-वि० [स०] मूर्ख, मूढ ।

२ देखो 'मदी' (रू भे)

मदकमाऊ-वि० यौ०—कम उपार्जन करने वाला ।

मदकोरा-स० पु०—१ घोड़े की जाति विशेष ।

मदग-वि० [म०] १ मदगति से चलने वाला, धीमी चाल चलने वाला ।

स० पु०—२ भोजक जाति के व्यक्तियों के अनुसार शाक द्वीप के चार बरों में से एक वर्ण ।

मदगति-स० स्त्री० [स०] १ ग्रहों की गति की वह अवस्था जब वे अपनी कक्षा में घूमते हुए सूर्य से दूर चले जाते हैं । (ज्योतिष)

३ धीमी चाल ।

मदजुर, मदज्वर-स० पु० [स० मदज्वर] प्रायः निरन्तर बना रहने वाला या चढ़ने वाला वह ज्वर जिसमें शरीर का तापमान सामान्य से बहुत अधिक न हो ।

मदता—देखो 'मदी' ।

मदफळ-स० पु० [स० मदफल] ग्रहों की गति का एक भेद ।

(फलित ज्योतिष)

मदभाग, मदभागी-वि० पु० [स० मदभाग्य] (स्त्री० मदभागण) हस्त-भाग्य, मदभाग्य ।

उ०—१ और घण्णई आवसी, चिही कमेड़ी काग । हसा फेर न आवसी, सुण सरवर मदभाग ।—प्रज्ञात



उ०—२ क्रिया करो म्हारै भवन पवारो नहि यो जिवहो जासी ।  
मैं मदभागण काहै को मरजी, पिया मोसू रहत उदासी ।—मीरा

मदमति, मदमती—देखो 'मतिमद' (रू भे)

उ०—१ छद ह्वै सुखद भो भणद को कही । मदमती 'ऊमरी'  
विफद में फयो।—ऊ का

उ०—२ मन वछै कित मदमति, केय काळिका क्रीति ।

—मा वचनिका

मदर-सं० पु० [स०] १ मदराचल पर्वत ।

उ०—देख सखी होळी रमै, फोजा मे घव एक । सागर मदर  
सारखी होहै घनड अनेक ।—घो स

२ इद्र । (डि को)

३ वरुण । (ह ना मा)

४ पुराणानुसार कुश द्वीप का एक पर्वत ।

५ स्वर्ग ।

६ देखो 'मदिर' (रू भे)

उ०—१ उत्तम जग भीत चीत मड घड मदर । कळी सपैत जाणि  
सेत, धार घम्मळा गिर ।—गु रू. व

उ०—२ घणा उछाह र्यों सराह नाह कूरमा धरै । मने कमध  
चीत जास प्रीत वास मदरै —रा रू

७ देखो 'मदरा' (रू भे)

८ देखो 'मदार' ।

रू० भे०—मद्र ।

मदरगर, मदरगिर, मदरगिरि, मदरगिरी—स० पु० [स० मदरगिरि]  
मदराचल पर्वत का नामान्तर ।

रू० भे०—मदागिर ।

मदरा—स० पु०—प्रत्येक चरण मे एक भरण का छद विशेष ।

मदराचल—स० पु० [स० मदराचल] मदराचल पर्वत जिससे देवताओं  
ने समुद्र को मया या ।

उ०—नमो कमडाघर रूप सुकाय । नमो मदराचल पीठ भ्रमाय ।  
—ह र

रू० भे०—मद्राचल, मद्राचल ।

मदरियो—देखो 'मदिर' (अल्पा, रू भे)

उ०—कर केसरिया खडवा [कीजें मदरिए साजन मेलीजें । 'सूर'  
हरा भरदास सुणीजें, देस पधारी दरसण दीजें ।

—द्वारकादास दधवाड़ियो

मदरी—वि० [स० मद] (स्त्री० मदरी) मद, धीमा ।

उ०—कोयळ वैरण मदरि-मदरि बोल, ज्यू कित भावै भवरजी  
नै गोरडी ।—लो गो

मदल—देखो 'मादल' (रू. भे)

मदवाड, मदवाडि, मदवाडी—देखो 'मादगी' (रू भे)

उ०—१ नर मांदी निरखिनै, वंद कफ वात बतावै । जो पूछै  
जोतमी, लार ग्रह केई लगावै । भोपी कहै भूत छै, सोभ बीजासणि  
लीधी । जत्र मत्र रा जाण, कहै कोई कामण कीधी । मदवाड़ एक  
नव नव मता, मूळ न जाणै को मरम । कहै साधु असुभ पूरन  
करम, धरि सुखकारी इक घरम ।—घ व. ग्र

उ०—२ मरगी नह मदवाडि, गया गुजरात थी नीसरि । गयउ  
सोग सताप घणी, हरख हुयउ धरि धरि ।—स कु

मदहास—स० पु० [स० मदहास] मुस्कान ।

उ०—मदहास मुळकै झिधा, द्र गी विद्योया पै वज्ज ऐ ।

—मा वचनिका

मदा—स० स्त्री० [स०] १ उत्तर फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तर भाद्रपद  
और रोहिणी नक्षत्र मे पडने वाली सक्रान्ति ।

[स० मदाकिनी] २ गंगा नदी ।

मदाप्राखर—स० पु० [स० मद + प्रखर] मद भाग्य, मद प्रारब्ध ।

उ० कमळादै प्राणद करो, सुख सिंधु हरसाल । मदाप्राखर मेट  
दे वदै सेवक 'बाळ' ।—वालाबखस बारहठ

मदाइण—देखो 'मदाकिनी' (रू भे)

उ०—काटळ भावध मूककर, मन मदाइण भ्रम । भाषध राखै  
ऊजळा, मैला ज्या रा मभ्र ।—बा दा

मदाक—वि० [स० मद] तुच्छ, तनिक । (अ मा)

मदाकण, मदाकणी, मदाकनी, मदाकिण, मदाकिणी—'देखो' मदा-  
किनी (रू भे) (अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—१ भूला मखतूल जमाजळ माग, पग पग होत उद्योत प्रयाग,  
मदाकण माण नदा वह मद, वहै सुरसति प्रवाह बलद ।—मे म

उ०—२ उदर मरै पीधी उदक, मदाकणी मभार । तिका उदर  
त्रिभुअण तणी, मरण लिया भुजभार ।—बा दा

उ०—३ नारायण पग नीर, मानू किन मदाकनी । सापड जेथ  
सरीर, हर को नारायण हूए ।—बा दा

उ०—४ जिण पय मदाकिण जनम, घघनासणी अपार, जिण  
भजता भघजाण री, विसमय किसू विचार—र ज प्र

मदाकिनी—स० स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो  
स्वर्ग मे बहती है और जो एक अयुत योजन लम्बी है ।

२ गंगा का नामान्तर ।

३ आकाश गंगा ।

४ चित्रकूट के पाम बहने वाली एक नदी का नाम ।

५ सात प्रकार की सक्रान्तियों मे एक

६ प्रत्येक चरण मे क्रमश दो दो नगण ॥ और दो दो रण  
॥ का एक वणिक छन्द विशेष । (वि प्र)

७ पुलस्त्यपुत्र विश्रवस् नामक ऋषि की दो पत्नियों में से एक ।  
भगवान् शंकर के प्रमाद से इसे कुवेर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ।  
ॐ भे०—मदाङ्गण, मदाकण, मदाकणी, मदाकनी, मदाकिण,  
मदाकिणी, मदागणी, मदागिणी, मदायण, मदायणी,  
मदायिणी ।

मदाक्रांता—स० स्त्री० [स०] प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण,  
नगण दो तगण और अतः मे दो गुरु वाला सत्रह अक्षरों का वर्ण-  
वृत्त विशेष ।

मदागनी—१ देखो, 'मदाग्नि' (रू भे )

२ देखो 'मदाकिनी' (रू भे )

मदागिणी—देखो 'मदाकिनी' (रू भे )

उ०—सागर वस उद्धरण कारण, आण मथा सीस मदागिणी, तै  
भागीरथ तणी सहजै 'गाजीसाह' हुप्रो' कमघज्जै ।—गु रू व

मदागिर—देखो 'मदरगिरि' (रू भे )

मदाग्नि—स० स्त्री [स०] पाचन शक्ति मद हो जाने का एक रोग  
विशेष ।

ॐ भे०—मदागनी ।

मदायण, मदायणी, मदायिणी—देखो 'मदाकिनी' (रू भे )

उ०—१ मदायण तो माग, पग देता पुरखा तणा । भूतल जागै  
भाग, अघ भागै खिण एक मे ।—वा दा

उ०—२ कावेरी जल स्त्रीकलस, घसियो सनमुख धार । ऐरावत  
किर आवियो, मदायिणी मझार ।—वां दा

मदार—स० पु० [स० मदार] १ इन्द्र के नन्दन कानन के पाच वृक्षों में  
से एक । (हि को, ना मा)

उ०—१ पत्रां विहगेस वाली मदार हैंमक पन्वै, घोम काळकूट  
मेघधारा गगधार । धूपदान क्रीत रांम माहवाह मोटा घरणी,  
तीनू बाता तूक तणी मोखरी दातार ।—रू

उ०—२ कलपव्रक्ष सतान, परिजाती हरि चदण, तर मदार  
दुवार, आण उगा मुख अप्पण ।—रा. रू

२ आक, मदार ।

उ०—चूका वयण मदार चाढ़तां, सुर नर साही मान असत्त । भीळ  
भाव आवियो भूरो, भीळा सभू तणी भत्त ।—गु रू व

३ घतूरा ।

४ मदराचल पर्वत ।

ॐ भे०—मदर ।

५ एक असुर, जो हिरण्य कशिपु का ज्येष्ठ पुत्र था ।

६ धौम्य ऋषि का पुत्र ।

७ डिगल का एक छद विशेष जो उमग छद और सिंहचाल के योग  
से रचा जाता है । पहिले दो चरण उमग के और फिर एक सिंह-  
चाल का ।

यि० यि०—इस छद में उमंग छद के चरणों के साथ उमंग के और

सिंहचाल के साथ सिंहचाल के तुक मिलाये जाते हैं ।

मंदारक—स० पु० [स०] मदार वृक्ष ।

मदाळासा—देखो 'मदाळासा' (रू भे.)

मदासय—स० पु० [स० मद+आसय] अश्लील या अनुचित ग्रंथ  
का भाव ।

मदिर—स० पु० [स० मदिरम्] १ वह भवन जिसमें पूजा या उपासना  
की दृष्टि से देव-मूर्ति स्थापित की गई हो ।

२ भवन, मकान ।

उ०—१ प्रभू भजता प्राणिया, कीजै ढील न काय । भर बत्था  
अथ काढजै मदिर जलते माय ।—ह र

उ०—२ गरक घणै जल गूदहा, ले तन सू लपटाय । अत्थ वत्थ  
भर काढजै, मदिर जलता माय—वां दा

३ महल, प्रासाद ।

उ०—मिळिया सेज आपणइ मदिर, वे घण जाण बिहु घण नेह ।  
पहिलउ ई हूतउ पारवती, सहिस गुणउ वाधियउ सनेह ।

—महादेव पारवती री वेलि

[स० मद्र] ४ वरुण । (हि को)

ॐ भे०—मदर मदिर, मिदर, मिदिर ।

अल्पा०—मदरडो, मदरियो, मदिरडो, मदिरडउ, मदिरयो, मिद-  
रडो, मिदरियो ।

मदिरडउ—देखो 'मदिर' (अल्पा रू भे )

उ०—प्रिय सुखिइ सुर मदिरडउ लही ।—सालिसूरि

मदिरि—देखो 'मदिर' (रू भे )

उ०—द्रूपदी रहइ ते मति भाली । ग्या विराट् अप मदिरि चाली ।

—सालिसूरि

मदी—स० स्त्री० [स० मद+रा प्र ई] १ मद होने की क्रिया, अव-  
स्था या भाव ।

२ व्यापार केन्द्र पर पदार्थों के भाव या दर उतर जाने की स्थिति  
या अवस्था ।

उ०—वाणियो कह्यो — मदी तेजी री रूप धारा सू काई छांनी  
म्हैं तो आप कैवली ज्यू करु ला ।—फुलवाढी

३ बाजार की वह स्थिति जिसमें वस्तुओं का क्रय विक्रय कम  
होता हो, क्रय विक्रय की मद स्थिति ।

ॐ भे०—मदता, मदीवाढ ।

मह०—मदीवाढी ।

मदील—स० स्त्री० [अ०] जरदोजी का बना हुआ एक प्रकार का वस्त्र  
विशेष जिसे सिरबंदी बनाने के लिए उपयोग में लिया जाता है ।

—व स

ॐ भे०—मदील ।

मदीवाढ—स० स्त्री०—१ देखो 'मदी' ।

२ देखो 'मादगी' (रू भे )

मदीवाडी—१ देखो 'मदी' ।

२ देखो मादगी (मह, रु. भे)

मदुर—स० स्त्री० [स० मदुरा] अश्वशाला, घुहशाला ।

उ०—यों बुदीस अवनोक में गजराज चलाया, मिळि हयपाळक  
मदुर ना तिम हयन तुकाया—व भा

मदोच्च—स० पु० [स० मद+उच्च] ग्रहों की एक प्रकार की गति  
जिसमें राशि आदि का संशोधन करते हैं ।

मदोदर—वि० [स० मद+उदर] (स्त्री० मदोदरी) १ छोटे या पतले पेट  
वाला । (२) मयदानव का एक नामान्तर ।

उ०—मदोवर सहर री आदि थापना मदोदर दईतरी कीवी छे ।

—नैणसी

२ देखो 'मदोदरी' (रु भे)

मदोदरि, मदोदरी, मदोवर, मदोवरी—स० स्त्री० [स० मदोदरी] मय  
दानव की कन्या जो रावण की पट्टमहिणी थी ।

उ०—१ हालै वाग दिसां कुळ हाणी, जाजुळ वात मदोदरि  
जांणी ।—र रु

उ०—२ मदोदरी वायक रावण सु ।—र रु

उ०—३ लका मुख छोडि अत लीघी, करणी कर करम दूर कीघी ।

मदोदरी सील सदा सुगति ।—जयवाणी

उ०—४ राणी कछी मदोदरी थे बुरा कमाया ।

—केसोदास गाढण

रु० भे०—मदोदर ।

मदी—वि० [स० मद+रा० प्र० मी] (स्त्री० मंदी) १ सुस्त, शिथिल,  
आलस्य युक्त ।

उ०—हृए हिंदु बळहीण, घरा पण खीण सुरां ध्रम । मिटे वेद  
मरजाद, भेद गुण आद पढे भ्रम । ठाम ठाम पुर ग्राम, काम,  
हरिषांम अकाजा । पडित मदा पढे करे जिज्ञा आवाजां । जग लोक  
वाण सीखे जवन, पढे ब्रह्म मुख पारसी । हित देव सेव आधा हुवा,  
काई लग्गा आरसी ।—रा रु

२ मद गति से कार्य करने वाला ।

३ रहित, हीन ।

उ०—नरपति लीघी नागपूर, अरिगंजे 'अमसाह' । गह मवे 'ईंदो'  
गयी, दिल्ली हृदै राह ।—रा रु.

४ अस्वस्थ, रुग्ण ।

५ जो स्वभाव से उग्र न हो ।

६ बाजार की वह स्थिति जिसमें क्रय विक्रय का कार्य मद हो ।

रु० भे०—'मदठ' ।

मदर—१ हाथियों की एक जाति विशेष ।

२ देखो 'मदर' (रु भे)

उ०—समद प्रलय विहार कीरंग, वेद मुख बांणी । बळ चवद

रतन उधार हित वप कठण पिठ धारी मदर कछप उदव कर मयाण  
अण घट, प्रगट कज पाणी ।—र ज प्र.

मदराचळ—देखो 'मदराचळ' (रु भे)

मधरी—देखो 'मदरी' (रु भे)

मन—देखो 'मन' (रु भे)

उ०—देखत ही दिल परचीया, मिथ्या अपरचा मन । जनहरिया  
बिन देखिया, ताहि न परचै तन ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मनव—देखो 'मानव' (रु भे)

ममता—देखो 'ममता' (रु भे)

ममद—देखो 'मैमद' (रु भे)

उ०—मैया के माया नै ममद सोहै, रखडी रो अजब सुहाग ।

—लो गी.

मयली—देखो 'मायली' (रु भे)

उ०—१८३२ री साल मयली वाग नैभल रो करायो नै वाग रो  
कमठो मैलायत कवळ—चोकी वगलौ आददे सारा पासवानजी हा  
हुवो, तिएरा रु ५०००००) पाच लाख अदाज लागा ।—नैणसी  
(स्त्री० मयली)

मयगळ, मयगल—देखो 'मदकळ' (रु भे)

उ०—बिहु पला सनइ वइ नीपना मुभटे जरहि जीणसाळा लीघी ।

मयगळ गुहिया सुहादडि सुहवडि घातिया ।—रा सा स

मरुधन्वा—देखो 'मरुधन्वा' (रु भे)

उ०—द्रुत 'मरुधन्वा' लीजे दवाय । जब राज बीज निरबीज जाय ।

—क का

मवर—देखो 'मोर'

मस—देखो 'मास' (रु भे)

उ०—१ जह गिरवर तह मोरिया, जह सायर तह हस । जह बाघो  
तह भारमलि जह दारु तह मस ।—आसो वारहठ

उ०—२ पुनह राभे सव पशु अखे, सरेह केम वन मस ।

—वात वाढेल कल्याणसिंह नगराजोत री

वि०—मांसल, पुष्ट ।

उ०—मारु-लक दुइ अगुळा, वर नितम्ब उर मस । मल्हपइ मांस  
सहेलिया, मान-सरोवर हस ।—ढो मा

मसचर, मसचार—देखो 'मांसचर' (रु भे)

उ०—१ भुक परी बरै रेवा काळ कूकै भपु, चूकै डाक नेरवा गहकै  
मसचार । कठ रुकै कायरा जवांणा लुकै सुकै कई । घुकै प्राण मुकै  
के भभवकै सोणवार ।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ पाडि खळ सबळ दळ लियां रण पोढियो, मसचरां मनोरथ  
लिय मेळा । 'भीम' गजसाहि' निखाहि जुग जुग भेळपण 'भीम'  
'गजसाहि' गा भुगति मेळा ।

—भीमसिंह हाडा अर गजसिंह कछवाह री गीत

मंसव—देखो 'मनसव' (रू भे )

मनसवदार—देखो 'मनसवदार' (रू भे )

उ०—कै गोळा कै गोळिया, कै तरवारा धार । मरै गडै कबरा  
महीं, बीवा मनसवदार ।—बां दा.

मसा—स० स्त्री० [स० मशा] १ इच्छा, कामना, लालसा ।

उ०—१ राजा खुद हलफलियो नीचे उणरै पाखती बैठ गयो ।  
पूछयो—रागी काई बात व्ही ? थू आ भेस कीकर धारण  
करियो । म्हनै तुरत बता, थारी काई मसा है । म्है तुरत पूरण  
करू ।—फुलवाडी

उ०—२ आ भोळी डोकरी तो आगळिया रा पेरवा माथै नचावै ।  
अर जठा लग राजाजी री मसा पूरी नी व्हे तठा लग नाचणो ई  
पहैला ।—फुलवाडी

२ मर्जी, स्वेच्छा ।

उ०—१ जे किणी घरगोहिया राजपूत रै सांगे उण री न्याव  
व्हियो व्हेतो तो नी वा इत्ता दिन मसा परधोण लापतै रै' पाती अर  
नीं इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गाव में पग घर सकती ।

—फुलवाडी

उ०—२ थां राजावा रै काई, ज्यू मसा व्हे त्यू डूडी फिराय दो ।

—फुलवाडी

उ०—३ म्हाने घापनै मिठाइया खावण दै अर थू थारी मसा  
मुजव रिपिया ले लेजै ।—फुलवाडी

१ अभिप्राय, आशय, मतलब ।

४ इरादा, सकल्प ।

५ मनोरथ ।

६ मन, चित्त, बुद्धि ।

उ०—आपरी सांती मिळ जावै तो म्हे खुद ई उणनै परसादी  
चखाय दां । म्हानै तो आपरी मसा री कायदो राखणो पडै । अर  
वा गेली राह समझै के म्हे उण सू डरां ।—फुलवाडी

रू० भे०—मछा, मनछा, मनछा, मनसा, मसछा ।

अल्पा०—मनसूडी ।

मसहार, मसाहार, मसाहारी—१ देखो 'मासाहार' (रू भे )

२ देखो 'मासाहारी' (रू भे )

उ०—अपत्तां तियार, हुए मसहार । कमाळी कपाळ, रबं रुढ-  
माळं ।—गु रु. ब.

मंसूख, मसूख—वि० [अ० मसूख] रद्द, खारिज ।

(आज्ञा या निश्चय)

मसूखा—स० स्त्री० [अ०] मसूख या रद्द कर दिए जाने की क्रिया  
या भाव ।

मसूवी, मसोबी—सं० पु० [अ० मसूब] १ विचार, इरादा ।

२ सकल्प ।

३ अभिलाषा, मनोरथ ।

४ योजना ।

उ०—विणियाणी तो आ कैयनै निरात सू आपरी हवेली में गो  
परी अर चोर वाडा मे चापळनै बैठग्यो । आज उण रा मन में  
खुसी री पार नी हो । वो बैठो बैठो मन मे मसूबा बावण लागो  
कै धरै जाताईं अक पक्की हवेली चुणाळला ।—फुलवाडी

५ कल्पना, भावना (विचार) ।

उ०—१ दोनू जणा आखै दिन कुदडका मारता । नी तावडो गिएता  
अर नी भूख । रेत रा घोरा वानै सोना रा टीवा ज्यू लखावता ।  
सांचेली दुनियां नै छोड वै सपनां अर मसोबां री दुनियां मे अस्ट-  
पोर सैर करता ।—फुलवाडी

उ०—२ गूजरी रै कसूवल ओरणा रा रग मे आख्यां रा डोळा  
घोळतो नाई सोचण लागो जे नाई री जात में जलम नी लेय तो  
इण राज री राजा व्हेतो तो' ' । पण कुत्तां री भुसणो सुणनै  
उण रै सगळें मसोबा री पोखाळो व्हेगो ।—फुलवाडी

रू० भे०—मनसूवी, मनसोवी मनसोमी ।

मह—१ देखो 'माय' (रू भे )

उ०—किया रवाना दोलती, बीसळनद विगोय । कपण हिया मह  
कागसी, नहि फेरे नर लोय ।—बा दा

२ देखो 'मै' (रू भे )

महगो—देखो 'मू'गो' (रू भे )

उ०—सो जे सारा भेळा होय चालस्यो जणा आगै महगा रहिस्या  
रिजक आघो मिळसै ।—गोपाळदास गोड री वारता

महण—देखो 'महण' रू भे )

महदडली—देखो 'मै'दी' (रू भे )

उ०—बनडा महदडली दिन च्यार हाथ रचाल्यो । बनडा काज-  
ळिया दिन च्यार नैण घुटाल्यो ।—लो गो

महदी—देखो 'मै'दी' (रू भे )

उ०—माई म्हानै सुपना मे परणी गुपाळ । राती पीरी धूनर  
पहरी, महदी पान रसाळ ।—मीरा

महमाझ, महमाई—देखो 'महामाया' (रू भे )

उ०—महमाझ चढै प्रगट मयद, गह करै गर्मे मेछी मयद । नीकडो  
काट भाटा निराजि, पीजरै दळा मुगळा अपाजि ।

—मा वचनिका

महल—देखो 'महल' (रू भे )

उ०—वैठी रांप्या रै माय, महला रै माय । भक्ति छोडो जी  
साळिगराम की ।—मीरा

महि, मही—देखो 'माय' (रू भे.)

उ०—१ राजा दास कुसळ हू रहिया । बैरी सकळ सुजळ महि  
बहिया ।—सू. प्र.

उ०—२ मानवियां मन बन मही, लागी लालच लाय । 'वांका'  
इण सतोस विए, बीज केण बुझाय ।—बा दा

म-स० पु० [स० म] १ समय, काल । २ विप, जहर । ३ विष्णु ।  
४ ब्रह्मा, ५ चन्द्रमा, ६ यम, ७ शिव, ८ राम, ९ हाथी,  
गज । १० मस्तक । ११ धारीर । १२ युद्ध । १३ समूह (एकां.)  
१४ मगण गण SSS (विगल)

१५ मध्यम स्वर (सगीत)

[स० म] १६ जल १७ सुख, कुशलता ।

सर्व० [स० अह] १ सर्वनाम उत्तम पुरुष मे कर्त्ता का रूप, मैं ।

उ०—दैवइ लिखिउं ते नवि टलइ', वाडव रहिउ विचारि । धीर  
धरी धर उडितु, हईडा हवइ म हारि ।—मा का प्र  
२ 'मैं' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और पण्ठी के अतिरिक्त  
और विभक्तियों के लगने पर प्राप्त होता है ।

उ०—१ रे । तैं म नैं रावजी खनै ओलभी दरायो, पण हमै वगडी  
वैगी छाडज्यो ।—व दा

उ०—२ सो वसतसेना सुणै कहियो वित्त निकाम । मानो गुण  
दासी म नैं, घनदामी घण घाम ।—व भा

[अव्य०] निपेध सूचक शब्द—मा, मत, नहीं ।

उ०—१ घीरा घीरा ठाकुरों, गुम्बर किया म जाह । महुगा देसी  
झूपडा, जै धरि होसी नाह ।—हा भा

उ०—२ जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह । प्रजपत रोटी  
बांटाणां, मोटी-नीद म देह ।—वां दा

उ०—३ अहज्ज, स्वेदज्ज जरा उडिज्ज । माया सब तूफ म  
भूलव मुज्ज ।—ह र

रू० भे०—म ।

मह-सर्व०—१ मैं ।

उ०—१ गौड चौड गाजणउ कनूजउ, मरहठ मइ वसि कीधा ।  
साड देस नइ सिंधु सवालख, गूजर सोरठ लीधा । मइ लीधा  
मालव चदेरी, माडव सारगपुर । रिणयभोर चौडोत्र भलागड,  
वली लीउ नागुर ।—कां दे प्र

उ०—२ मइ जाणिउ तूं माघवु, पुरिस मन नी आस । गाडर  
आणीउ ऊन नइ, खाधु तिणि कपास ।—मा कां प्र  
२ मुफ ।

उ०—१ विरह-वितवन विधि घणी, सो मइ सही न जाय । मुफ  
मरवांनु सोहिलु वाडव म मारे, माय ।—मा कां प्र

उ०—२ जिण दीहे पावस भरइ, बाबीहउ कुरळाइ । तिणि दिन  
कउ दुख वल्लहा, मइ वयउ सहणउ जाइ ।—दो मा  
३ मेरा ।

उ०—मइ धरि रहिवउं ।—उ र

क्रि० वि०—भदर, भीतर, मे ।

४ देखो 'मई' (रू. भे)

रू० भे०—मइ ।

मइगळ—१ देखो 'मदकळ' (रू. भे)

उ०—१ वाग्ह लक्ख त छइ वड पइदळ । मदिमत्ता चवरासी  
मइगळ ।

उ०—२ स्वधासण चढी सामळी जी, वडट्टो सारग प्रांण । मइगळ  
नई मद पाई ज्यइ जी, दीजई खमोड्याण ।—रुक्मणी मंगळ

मइव—देखो 'मयद' (रू. भे)

उ०—१ सूती लख ससार सब, 'पातल' सूं पुळ-जाय । मरख दसा  
मे मइव रै, जीव न नंही जाय ।—ऊ का

उ०—२ आखैं रोस कसाइया, किय मूछा विय-चद । चाढे भूंहा  
वकिया, कि (र) कणणियो मइव ।—गु रू व

उ०—३ हाडा रा वस नू वीजा मैं वधती बताइ लाज रूप लगर  
रा खैचिया पैला रा प्रतिमल्ल मदालागा मइव माधाणी मुकुद  
सिध, मोहणसिध, कन्हीराम, जूभारसिध च्यारि ही भाई पैलानूं  
जयससय जणाइ खागां रा खेल्ह मैं खड विहड होइ बिमाणा बैठा  
नारिया रै साथ गळवाह कीधां ।—व भा

मइ—१ देखो 'मइ' (रू. भे)

उ०—१ जीव संताप्या मइ घणा, पर आसायें वीध । वलि रात्रि  
भोजन करधा काज अकारज कीध ।—वि कु

उ०—२ मइ घणी । थार मिलहीय आस । मइला राजा थारउ  
कीसउ हो वेसास ।—वी दे

२ देखो 'मय' (रू. भे)

उ०—दुख दावानल उपसम्यो, वूठठ अमिय मइ मेह । मुफ  
आगणि सुरतरु फल्यउ, भाग भव भ्रमण सदेह ।—स कु

३ देखो 'महीन' (रू. भे)

मइण—देखो 'मदन' (रू. भे)

उ०—१ वत्तीस लखण सुभ आचरण, बाळपणै हूओ तण ।  
कमघज्ज कुअर कमघज्ज हर, राज हस मूरति मइण ।—गु रू व

उ०—२ मन मोहन कामनी, वळैं सुरगा मेह । रग लुब्ध रोचा  
रहधा, जिम मइण नै मेह ।—दो मा

मइत—स० पु० [स० मृतक] शव । (मुसलमान)

रू० भे०—मयत ।

मइयळ—देखो 'मैयिल' (रू. भे)

मइयळी—देखो 'मैयिली' (रू. भे) (अ मा)

मइदो—देखो 'मैदो' (रू. भे)

उ०—भगरीआ लाह, माठा लाह, सिंहकेसरिया लाह, पाटण तणा  
कदोई, घतस्य मइदो मोई वणी सेव पातली ।—व स

मइमत, मइमत—देखो 'मैमत' (रू. भे)

उ०—पातिसाह पर भविय आव उतारि भभगा । कह गिडावि  
गोमट्ट ताडि आठुमें तुरगा । कह समीर मइमत भोमि लोटइ घाइ  
भरिया । कह हडहडइ तुरग भग भसमारि कतरिया ।

—रा. ज सी

महयल—देखो 'महीतल' (रू भे.)

उ०—जस गल्ह रहावण जे महल, महयल भजे मेहवर 'गजमल्ल',  
'मल्ल' 'गर्ग' कुली रिए दुमल्ल राठोड हर ।—गु रू. व.

महयो—देखो 'मईयो' (रू भे)

महलो—सर्व०—१ मेरा, मुभको ।

उ०—'मइला' राजा थारु कीसठ हो वेसास ।—वी दे

२ देखो 'मैलो' (रू भे)

उ०—मुख मइलइ चितठ उज्जलड । दुई पगि उतरी कही हो  
सदेस ।—वी दे

३ देखो 'मायलो' (रू भे) (स्त्री० मइली)

मई—वि०—विनीत, नम्र स्वभाव वाला ।

स० पु०—अग्नेजी वर्ष का पाचवा महीना ।

क्रि० वि०—मे ।

उ०—भलो भलो सारो जग भाखे, कही न लाई वात कई । मागज  
घरा वधावण मोटा, मोटी पाघ ससार मई ।—द दा

१ देखो 'मय' (रू भे)

उ०—१ सब ही कथा मालम सखी, लघराज कही दुधराज लखी ।  
लख श्रोज तणा गुण अग लई, मुणिया मव छद प्रसाद मई ।

—पा प्र

उ०—२ सिय सोहै अग वाम हे, हे म्हारी सखी ! हे सहेली ! सिय  
सोहै अग वाम हे । जगदवा महिमा मई हे ।—गी रा

२ देखो 'महीन' (रू भे)

३ देखो 'मही' (रू भे)

रू० भे०—मई ।

मईधुन—देखो 'मईधुन' (रू. भे)

मईन—देखो 'महीन' (रू भे.)

मईनी—देखो 'महीनी' (रू भे)

उ०—भवारा मे पटकियोही मूढकिया बारै मईना ताई अरहावती  
रेंवे ।—फुलवाही

मईप—देखो 'महीप' (रू भे)

मईस—देखो 'महीस' (रू भे)

मईमन—देखो 'महिमन' (रू. भे)

मईयो—स० पु० [स० मय] मादा ऊठो के भुण्ड मे रखा जाने वाला  
नर ऊठ ।

रू० भे०—मइयो, मयो, महियो, मायो ।

मउग—स० पु०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—मभा मउग महल कडव भल्लरि दुडुक्क कसाला । काहुल  
तिलिमा वसी सखी पणवी य वारसमी ।—व स

२ देखो 'मूग' (रू भे)

मउ—देखो 'महुओ' (रू भे.)

उ०—आव फलें नीची लुलें, मउ फलें पत खोय । जिण री रम जे  
नर पियै, पत्ता कठा सू होय ।—अज्ञात

मउड—देखो 'मोड' (रू भे)

उ०—छोगी मिग्पेच मउड जोई दडिए रमै नइ वहमै होई ।

—घ व प्र

मउडी—१ देखो 'मोडी' (रू भे)

उ०—चद सूरज वीर वादण आव्या, निरति नहीँ निस दीम ।  
अगावती तिण मउडी आवी, गुरुणी कीधी रीम ।—स कु

(स्त्री० मउडी)

२ देखो 'महुओ' (अल्पा, रू भे)

मउज—१ देखो 'मोज' ।

उ०—साहिवा काड मउज करी नइ, साहिवा काइ मउज  
करउ । मउज करउ काइ अग सुहाता सुणि सुणि नै विगताली  
याता ।—वि कु

२ देखो 'मूज' (रू भे)

उ०—काममीरी बिन्है विराजइ काने, माघी विचइ रहियइ  
मिदूर । चढती मउज रमण पिए चढती, सेहरा विजइ ऊगतऊ  
सूर —महादेव पारवती री वेल

मउठ—देखो 'मोठ' (रू भे)

उ०—सगलइ हुवउ मृगाल, अन्न चिहु दिसि थी आयउ । आप  
आपणइ व्यापारी मकी अधिकारइ लायउ । वाजरी चउला मउठ  
के के धान सुहगा कीधा । सुहगा मुहगा मरव, लोक ते आणी  
लीवा ।—स कु

मउड, मउडि—देखो 'मोड' (रू भे)

उ०—१ घर उपइ घरणी, गगन उपइ तरणि, अक्ष उपइ पल्लवि,  
ताबूल उपइ चूरण, वल्ल उपइ रणि मउड उपइ मस्तक सणि ।

—व स

उ० २ समरइ मउडि मउडिइ फुटइ, हारि हार तुटइ, हियउ  
हियउ दलइ ।—व स

मउनावणी, मउनाववी—देखो 'मनाणी', 'मनावी' (रू भे)

उ०—मतसील प्रभावइ रे ! दुख नइ मउनावइ रे, बहु आणद  
वधावइ, दिन रयणी गरवइ रे ।—प च. ची

मउनावणहार, हारी, (हारी), मउनावणियो—वि० ।

मउनाविओडो मउनावियोडो, मउनाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मउनावीजणी, मउनावीजवी—कर्म वा०

मउनावियोडो—देखो 'मनायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मउनावियोडी)

मउर—१ देखो 'मोड' (रू भे)

२ देखो 'मोर' (रू भे.)

उ०—१ अगि अमोखण अच्छियउ, तन सोवत सगळाइ । मारु  
अबा मउर जिम, कर लगइ कुमळाइ ।—डो. मा



उ०—२ रूपडा नउ उठीगणउ, हरिद्रा तणउ रग पाणी तणउ  
तरग दासी तणउ हेज, आवा तणउ मउर कलाल नउ लेखउ ।

—व स

मउरणी, मउरवी—देखो 'मौरणी' 'मौरवी' (रू भे )

उ०—१ ढाढी एक मंदेसड डोलइ लगि लइ जाइ । जौवन  
चापउ मउरियउ कळी न चुटुइ आइ ।—ढो मा

उ०—२ मउरिया ब्रख मसत वसत माणुवा, चचळ बाण धनख  
सिर चाढ ।—महादेव पारवती री वेलि

मउरणहार, हारी (हारी), मउरणिपी—वि० ।

मउरियोडो, मउरियोडो, मउरघोडो—भू० का० कृ० ।

मउरीजणी, मउरीजवौ—भाव धा० ।

मउरियोडो—देखो 'मौरियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मउरियोडो)

मउलसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू भे )

मउळी—देखो 'मौळी' (रू भे )

मउळू मउळू, मउळू—देखो 'मौळी' (रू भे )

उ०—रोस चढी कुण ही न मनावीय, रांघती सीधती खारू मउळू  
करइ ।—व स

(स्त्री० मउळी)

मऊ—स० पु०—१ मालव प्रदेशान्तर्गत एक प्रसिद्ध स्थान व शहर  
का नाम ।

स० स्त्री०—२ प्रजा, रय्यत ।

उ०—१ गाव घणा लागै, चवदै चेढीरा । पैहली तो घणा गाव  
वसता । हिमै गाव १४० वसै छै । १०० पारकर रा घणिया रै ।  
गाव ४० सोढाराम री मऊ वसै ।—नैणसी

उ०—२ मऊ रा टोळा रा टोळा सहर कानी भाग्या जा रह्या  
हा । सबराइ बाळ बिखरघोडा भर पेट चेंढोडा । च्यारू मेर एक  
ईज घावाज ही—भूख ! भूख ! भूख !—रातवासी  
रू० भे०—मऊवाडो ।

मऊडी—देखो 'महुआ' (अल्पा, रू भे )

उ०—मऊडी लेहरा खाय, कोयलडी हृद बोली ।—लो गी

मऊजी—देखो 'माजी' (रू भे )

मऊवाडो—देखो 'मऊ' (मह., रू भे )

मएडो—स० पु०—एक प्रकार का अशुभ रग का घोडा । (शा हो )

मसोतो—देखो 'मसोतो' (रू भे )

मकद—स० पु०—एक प्रकार का कद ।

उ०—भसम भराडी भमरीया चोलहिरा चाडाल । भू-कोहली भूव-  
तरी कद मकद विसाल ।—मा का प्र

मकइ—१ देखो 'मत्कुण' (रू भे )

२ देखो 'मरकट' (रू भे )

मकडाण—१ देखो 'मकराणी' (मह., रू भे )

२ देखो 'मकराणी' (मह., रू भे )

मकडी—स० स्त्री०—१ एक प्रकार का आठ पैरो वाला प्रसिद्ध कीडा  
जो अपने मुह से लसीला पदार्थ निकालते हुए जाल बुनता है और  
उसमे फसे हुए कीट, पतंगो, मक्खियो आदि का रक्त चूसता है ।  
(डि को)

उ०—१ मकडी का सिर माखी तोडधा, जवुक सिध जगाया ।

कुजर मगर दत तळ चूरधा, हिरणी चीता खाया ।—ह पु वा

उ०—२ मत जकडी भव माग, मकडी जाळा जेम मन । हर द्रढ़

कर पकडी हिया, लकडी हरी पळ लाग ।—र ज प्र

पर्याय०—१ जाळकार । २ जाळिक । ३ मरकट । ४ लूता ।

५ लालासाव ।

२ एक प्रकार का रोग जो नीचे के होठ पर होता है । इससे होठ  
मे सूजन आ जाती है और उसमे पीप पड जाती है ।

उ०—भाड-वोरां जैडी छोटी आख्या लिलाढ माथै सा'तेक आढा  
सळ, मूडा माथै खत री ठोड कानी कानी तुगिया अगोडी, निचला  
होठ माथै मकडी री भगवौ चाटो ।—फुलवाडी

३ एक प्रकार का घास विशेष । (शेखावाटी)

४ हाथी की पीठ पर 'तैहरू' की बांधने के कारण हाथी की पीठ  
के निचले भाग पर पूछ से कुछ ऊपर रस्सी की कसावट के कारण  
पडने वाला जखम या उससे होने वाला दाग ।

५ माया । (सत साहित्य)

रू० भे०—मकरी, मक्री, मकडी ।

मकडूव—स० स्त्री०—बक, टेढ़ापन, ऐंठ ।

उ०—श्रोध भाला घसण थोग धानक अरी । बनी नव जौवनी  
रतनगर बावरी । फोज पतिया मोहर दिया ठरई परी । कैलपुर  
धुद मकडूव सूधी करी ।—महादान महह

मकडी—स० पु० [स० मकंट] १ मकंट के रग से मिलते जुलते रग  
का घोडा ।

उ०—कुमेत नीला समदा मकडा सेली समद भूवर बोर सोने री  
कागडा गगाजळ अनेक रग का घोडा ।—रा सा स  
२ वोडा ।

३ एक प्रकार का घास विशेष जिसके बीज की रोटी बनती है  
और उपवास के अवसर पर फलाहार के रूप में खाई जाती है ।

रू० भे०—मकडी ।

मह०—मकड ।

मकतव—स० पु० [अ० मकतव] वह स्थान जहां पढना लिखना सिखाया  
जाता है, पाठशाला, विद्यागृह ।

मकतूल—वि० [अ० मकतूल] १ जो कत्ल कर दिया गया हो ।

२ प्रेमी ।



३ देखो 'मखतूळ' (रु. भे)

मकदूर-स० पु० [अ० मकदूर] सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—'भारथ' हम से जुध करे, येँ ता क्या मकदूर। पाव घरी में हम करे, उसके गढ़ चकचूर।—ला रा

रु० भे०—मकदूर, मगदूर, मगदूर।

मकदोख-स० पु०—हीरे का एक दोष। इसके अनुसार हीरे के मध्य में मल होता है। यह अशुभ माना जाता है।

मकनउ, मकनौ—देखो 'मुकनौ' (रु. भे)

उ०—मकना मेकदत घटा अमळा, किल्लत धूमत रिणा विकळा।

—मा वचनिका

मकवरी-स० पु० [अ० मकवर] वह इमारत जिसमें किसी का शव दफनाया गया हो, रोजा, मजार।

मकवल-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी, मलवारी, लाछरी, अघोतरी, अमरी, गगापारी, मोती चूरि, हमरु, मसरु, रत्नकवल, छाइल, मकवल, अगल साउला।—व. स.

मकवूजा-वि० [अ० मकवूज] जिसपर अधिकार किया गया हो, अधिकृत।

मकरद-स० पु० [स०] १ पुष्परस जिसे मधुमक्खियां और भीरे चूमते हैं।

उ०—१ स्त्रीपत चरण सरोज रो, गगाजळ मकरद। अलियळ ज्यु कर पान अद, अधिकावण भाणुद।—बा दा

उ०—२ अढ़ार भार वनस्पती मकरद फूलादि रा रस माणतो थकी वहै छै।—राजान राउत री बात

२ फूल का केसर, पराग कण।

३ कृद पुष्प।

४ कोयल।

५ मधु मक्षिका।

६ अमर, भीरा। (अ. मा.)

उ०—मुख की उपमा कहा कहू, सरस सुधा को कंद। देखत रत लज्जित भई, मूल रह्यो मकरद।—कुवरमी साखला री वारता

७ प्रत्येक चरण में २१ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष। (ल. पि.)

८ ढिंगल गीत 'वेलिया साणोर का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५० लघु ७ गुरु कुल ६४ मात्रायें और अन्य द्वाले में ५० लघु ६ गुरु कुल ६२ मात्रायें होती है। (पि. प्र.)

वि०—श्याम, कृष्ण, काला।

उ०—१ मालव देसावर घणी राजा भीम नरिंद। तास घणी धू माळवी सुंदर सिर मकरद—ढो. मा

उ०—२ चपळ नैत्र सारग, रेखा भ्रूहा मकरद। दीपक नासा दपंत, सरद रैणी मुख ईंद्रह।—गु. रु. व

रु० भे०—मकद।

मकर-सं० पु० [सं० मकर.] १ बारह राशियों में से दसवीं राशि

जिसकी आकृति मकर (जंतु) के समान मानी गई है।

२ घडियाल या मगर नामक प्रसिद्ध जल जंतु जो कामदेव की ध्वजा का चिह्न और गंगा तथा जलदेव वरुण का वाहन माना गया है।

उ०—सुर अतुर गिर कर स्रवण स्त्रीवर। तळप परहर अतुर षड तुर। चकरघर मग सवर सचर। सिथळ पर घर जाण ईसर। छाड नगवर घरण दूछर। मकर यर सर चकर मोख'र। फद हर पग मथर कर फिर। वळ सुकर गह सुकर रघुवर, तार मिधुर ताम।—२ ज प्र

३ माघ मास।

४ एक प्रकार का लग्न विशेष। (ज्योतिष)

५ नौ निधियों में से एक निधि। (अ. मा., ह. ना. मा.)

६ मछली। (अ. मा., ह. ना. मा.)

७ एक प्राचीन पर्वत का नाम।

८ रण-स्थल पर सैनिक व्यूह रचना का एक प्रकार। (प्राचीन)

९ मस्ती, उन्माद।

उ०—मदमसत ऊढावे रेत करता मकर। आदेवां तेथ घर दसत आवै।—तिलोकजी वारहूठ

१० मौज।

११ ऐश्वर्य।

१२ गर्व, अभिमान।

उ०—हरर डोकर डमर अतर भरतो डकर, अत मकर वण कहती अभूभा। पाट रखवाळ 'जैमाळ' हर पचाले, दास सग वाट रिडमाल दूजा।—पहाडवा प्राढी

१३ छप्पय छंद का ४१ वा भेद जिसमें ३० गुरु ६२ लघु से १२२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं अथवा ३२ गुरु ८४ लघु से ११६ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

१४ दर्पण।

उ०—१ मुख मकर में रैण का 'हरिया' दरसी नाहि। उदय भया जब सूर का मुख परकासी माहि।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ अँ तो इण भात खडिया आवै छै। पण पना नँ तो ढील न सुहावै छै। आ तो उकळाइ थकी खिलोक भरोखे खिलोक ढोलिये आवै छै। इण रा आमां सामा फिरवा सू मकर चानणी की तो रूप दरसावै छै।—पनां

[फा० मक्र०] १५ छल, कपट, फरेब।

कहा०—रोटी खाणी सक्कर सू दुनिया उगली मकर सू स्वार्थी होना।

१६ नखरा, अदा।

१७ देखो 'मक्रूर' (रु. भे.)

अव्यय रा०—निपेव सूचक शब्द 'मत कर, ठहर।

रु० भे०—मक।

मकरकुण्डल-स० पु० [सं० मकर कुण्डल] मकर (जंतु) की आकृति का कान का आभूषण विशेष।

मकरकेत, मकरकेतन-स० पु० [स० मकरकेतनम्] कामदेव ।

रु० भे०—मक्रकेत, मक्रकैत ।

मकर केतु-स० पु० [स० मकरकेतु] १ कामदेव ।

२ श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का नामान्तर ।

मकरध्वज, मकरधुज, मकरध्वज-सं० पु० [स० मकरध्वज] १ कामदेव ।  
(अ मा, ह ना मा)

उ०—१ मकरध्वज बाह्यि चढ्यो अहिमकर, उत्तरवाउ बाए  
अउर । कमळ बाळि विरहिणी वदन किय, अवपाळि सजोगि उर ।

—वेलि

उ०—२ समर मनोज अनग पंचसर मनपथ मदन मकरध्वज  
मार ।—वेलि

२ रस सिंदूर (श्रीपवि)

३ मछली के गर्भ से उत्पन्न हनुमानजी का एक पुत्र जो अहि-  
रावण का द्वारपाल था । (पीराणिक)

४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीम द्वारा मारा गया ।

मकरपत, मकरपति, मकरपती-स० पु० [सं० मकरपति] १ कामदेव ।

२ ग्राह मगरराज ।

मकरमोयी-स० पु०—कम धी के साथ आटे को भूनकर बनाया हुआ  
घूरमा ।

मकररासि-स० पु० [स० मकरराशि] बाह्य राशियों में दशवीं राशि  
जो मकर के आकार की होती है । (ना मा)

उ०—१ रवि मीन रासि सनि करक राह । अरु मकररासि केतह  
अथाह ।—सू प्र

उ०—२ रवि मकररासि निवास राजत उत्तर मगहर अनुमर ।

—रा रु

मकरव्यूह-स० पु० [स० मकर + व्यूह] मकर के आकार की की  
जाने वाली एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना विशेष । (प्राचीन)

मकरसक्रांत, मकरसक्रायत, मकरसक्रांत, मकरसक्रांति, मकरसक्रा-  
यत-स० स्त्री० यो०—मकर राशि में सूर्य का प्रवेश होने का दिन  
तथा इस दिन पर मनाया जाने वाला पर्व ।

उ०—तठा उपराति राजान सिलामति उण रित माहि सूरजजी  
पणि मकरसक्रात भेळा हुआ छै ।—रा सा सं

उ०—२ अहिमकर कहता सूरथ जब मकरसक्रांति आंणि चढ्यो,  
तव उत्तर को वाउ प्रवळ बाजण लागी ।—वेलि टी

उ०—मकर सक्रायत वैठी भारी, क्षत्रिय हित लागी अतिखारी  
भू पर ब्राह्मण भये भिखारी, हे प्रवेश करगी हठियारी ।—ऊ का

मकरसातम-स० स्त्री० [सं० मकर सप्तमी] माघशुक्ला सप्तमी ।

मकराण—१ बलुचिस्तान के समीप के प्रदेश का नाम, मकरान ।

उ०—मिळै नहीं मकराण ताज केच माभल तुरी । जेहलियँ धण  
जाण, मौजा दियण मंगाविया ।—बा दा

२ देखो 'मकराणी' (मह, रु. भे.)

३ देखो मकराणी' (मह, रु. भे.)

मकराणी-स० पु०—१ बलुचिस्तान के समीप मकरान प्रदेश का  
व्यक्ति ।

२ उक्त प्रदेश का एक प्रकार का प्रसिद्ध घोड़ा ।

३ मकरान प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों की एक जाति ।

रु० भे०—मकडाण' मकराण' ।

वि०—मकराने का, मकराना सबधी ।

मकराणी-स० पु०—१ बलुचिस्तान के समीप का मकरान नाम का  
एक प्रदेश ।

२ राजस्थान प्रान्त के नागौर जिले का एक नगर जो सगमरमर  
नामक प्रसिद्ध पत्थर की खान के लिए प्रसिद्ध है ।

३ सगमरमर नामक प्रसिद्ध पत्थर जो मकराना नगर के समीप की  
खानों में पाया जाता है ।

उ०—तिण समै रतनां रा रंवास में एक मकराणा री महल है,  
जिण मे इण री धणी सारी सहल है । सू इण री पगयलियांरा  
प्रतव्यव हू फरस तो मूगिया री छिब पावै है ।—र हमीर

वि०—मकराने का ।

रु० भे०—मकडाण, मकराण ।

मकराई-सं० स्त्री० [अ० मकर + रा० प्र० ई०] १ धूर्तता, ढगाई ।

२ छल, कपट ।

३ गर्व, अभिमान ।

मकराक—देखो 'मकराक्ष' (रु. भे.)

मकराकर-स० पु० [स० मकर + आकर] १ समुद्र, सागर । (हि को)

उ०—जिण समय दो ही फौजा रा हिलोळा समुद्र रें समांण  
प्रमाण में आया अर तोपां री गाज हू सेस रा सीसां समेत मकराकर  
मेखळा मही रें मचोळा लगाया ।—व भा.

मकराकृत, मकराकृति-वि० [स० मकर + आकृत] मकर (जंतु) की  
आकृति के अनुसार बना हुआ ।

उ०—सुदर स्याम मनोहर मूरत, सोभा अधिक अपार । क्रीट  
मुकुट मकराकृत कुडळ, गळ पुस्पन को हार ।—मीरां

उ०—२ हां रे सखी देख्यो री नद किसोर । मोर मुकुट मकरा-  
कृति कुडळ पीतावर भणक हरोळ ।—मीरां

मकराक्ष, मकराख, मकराख्य-स० पु० [स० मकराक्ष] लंकापति  
रावण के भतीजे का नाम जो खर नामक राक्षस का पुत्र था ।

उ०—१ मारै तैं वार किता मकराख, सानुज्ज उबारै वेदां साख ।

—ह र

उ०—२ नमो मकरारख्य ईंद्रजीत मार, नमो नव राक्षस बंस  
सहार ।—ह र

रु० भे०—मकराक ।

मकराळ, मकरालय-स० पु० [सं० मकरालय] समुद्र, सागर ।

मकराय-स० पु०—सागर ।

उ०—विद्या रतन पसाव बीदगा, दाताराव भाव दरियाव । कीरत नाव घाव चहुकानी, कायव जळमाळ मकराय ।—फ कु पो

मकरासन-स० पु० [स०] हाथ और पैर पीठ की ओर कर लेने का एक आसन । (तांत्रिक)

मकरासय, मकरास्य-स० पु० [स० मकरास्य] वरुण ।

मकरी-स० स्त्री०—मछली ।

वि०—१ अभिमानी, गर्व करने वाला ।

२ टेढ़ी, तिरछी, व्यगपूर्ण ।

उ०—बाबहिया वग चचही, बोल्यो मकरी बाण । काहू बोलतो मुस्ट करे, कै परदेसी पिव आण ।—ढो. मा

देखो 'मकरी' (रू भे)

रू० भे०—मछली ।

मकरहू-वि०—अपवित्र, घृणित ।

मकरोणी, मकरोवी—थोड़े घी में आटा, मँदा या वेसन भूतना या भून कर कोई खाद्य पदार्थ बनाना । (अमरत)

मकरोणहार, हारी (हारी), मकरोणियो—वि० ।

मकरोयोडी—भू० का० कृ० ।

मकरोवीजणी, मकरोवीजवी—कर्म वा० ।

मकरोयोडी—थोड़े घी में आटा, वेसन या मँदा भुना हुआ या भूनकर कोई खाद्य पदार्थ बनाया हुआ ।

(स्त्री० मकरोयोडी)

मकरोवणी, मकरोववी—देखो 'मकरोणी, मकरोवी' (रू भे)

मकरोवणहार, हारी (हारी), मकरोवणियो—वि० ।

मकरोविघोडी, मकरोवियोडी, मकरोव्योडी—भू० का० कृ० ।

मकरोवीजणी, मकरोवीजवी—कर्म वा० ।

मकळ—देखो 'मक्कळ' (रू भे)

मकवाण, मकवाणी—स० स्त्री०—१ भालावश की एक शाखा ।

रू० भे०—मकवाणी, मकुवाणी, मकुवाण, मकुवाणी ।

मकवाणी—स० पु०—भाला वश की मकवाण शाखा का व्यक्ति ।

रू० भे०—मकवाणी, मकुवाणी ।

मकवी—स० पु०—१ मक्का अनाज का वह पोधा जो मुट्टा लगने के पूर्व की अवस्था में हो ।

२ एक प्रकार का पोधा विशेष ।

मकसद, मकसब—स० पु० [प्र० मकसद] १ उद्देश्य ।

२ मशा, इच्छा ।

उ०—तरं केहीक गांव राव सातल केलवा सू वरसिध नू जोधपुर रा दिया तिके सुणीया, कही आपरी मकसद कीयो, मांहरा पेसकसी राखी सु कुण वासतै ।—नरुसी

३ आशय, तात्पर्य ।

मकसूद—स० पु० [प्र० मकसूद] १ अभिप्रेत, उद्दिष्ट ।

उ०—१ हक हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद । दीदार दरिया ऊरवाहै आमद मौजूदे मौजूद ।—दादूवाणी

उ०—२ दरवार दोजिक गरक गुरमा मनी मारं मीर । महर का मकसूद एही, पढद पोसै पीर ।—ह पु वां

२ कामना, इच्छा, रुचाहिश ।

उ०—मेरे एक तू रहमान, मकसूद मेरी प्रीति तुम सू । और सू क्या काम ।—ह पु वां

रू० भे०—मकसूद ।

मकान—स० पु० [अ० मकान] १ भवन, गृह ।

उ०—पछै व्याव क्यू करी ? मरियां किसा मकान साथै चालै, पछै मकान क्यू चुणावो ?—फुलवाडी

२ रहने की जगह, निवास स्थान, आवास ।

उ०—रुडे तीरथ राज रै, नित जळ कीजै न्हान । तो पिण न हुए पाकतन, मूळ पुरीख मकान ।—वां दा

रू० भे०—मुकान, मुकाम ।

मकाम—१ देखो 'मुकाम' (रू भे)

उ०—मौजूद खबर मावूद खबर, अखाह खबर वजूद । मकाम के चीज हस्त, दादनी सजूद ।—दादूवाणी

२ देखो 'मकान' (रू भे)

मकाई—वि० [अ० मक्का + रा० प्र० ई] मक्के का, मक्का सम्बन्धी ।

स० पु०—मक्के का निवासी ।

उ०—मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जस थांनी ताई ।

—रा. रू

देखो 'मक्की' (रू भे)

मकाय—देखो 'मकोय' (रू भे)

मकार—स० पु०—१ देवनागरी लिपि का 'म' अक्षर ।

उ०—मनी मन माहू रकार मकार, लगा धक धूनन की सलकार ।—ऊ का

२ पिंगल में मगण का सक्षिप्त रूप ।

३ देखो 'मक्कार' (रू भे)

मकाळ—स० स्त्री०—१ शीत काल में ताप सँकने के लिए आग जलाने का एक पात्र विशेष ।

उ०—उतराव रो पवन ऊनामळो टीया खाईन रहीयो छै । तिणि रीति मांहे छोह ढालियां ऊडा मोहरां मांहे ऊडा तहखाना मांहे खैर कोइला री मकाळा जगाडी छै ।—रा सा सं

मकियारणी—देखो 'मखियारणी' (रू भे)

मकियो—स० पु०—१ मक्का अनाज के पीके के लगने वाला मुट्टा जिसे सेक कर खाया जाता है ।

२ स्त्रियो द्वारा धारण किया जाने वाला पैरो का आभूषण विशेष ।

३ पुरुषेन्द्रिया, शिश्न (बाजारू) ।

क्रि० प्र०—घलावणी, घालणी, मेलणी ।

मकी—देखो 'मकी' (रु भे)

उ०—बाबा म देई माळवै, जिण देसे कुरुख । जव मकी री खावणो, माणस नही ते मूक ।—डो मा

मकीचूस—देखो 'मकीचूस' (रु भे)

मकुद—देखो 'मकुद' (रु भे)

मकुआण, मकुआणा—देखो 'मकुआण' (रु भे)

मकुआणो—देखो 'मकुआणो' (रु भे)

मकुट—देखो 'मकुट' (रु भे)

मकुनो—देखो 'मकुनो' (रु भे)

मकुर—देखो 'मकुर' (रु भे)

मकनीरोटी—स० स्त्री०—गेहू व चने के आटे के मिश्रण से बनी रोटी ।

उ०—जिण वगत इक्कीम मांणिगर हाथिया रै निजराणा री वात सुणनै राणीजी खुमी मे वावळा मा हैण लागा । उण वगत इस्टरां आपरी टूटी-टपरी मे वैठो लूखी मकनी रोटी मिरचा री चटणी सू भोटती हो अर मिरचा री वळत रै कारण सूमाडा करतो हो ।—फुलवाडी

मकसरीफ—देखो 'मकसरीफ' (रु भे)

मकोडी—स० स्त्री०—चीटी ।

उ०—मकोडी कीट पतंग मुणाल, भिखग तु हीज तु हीज भुवाळ ।  
—ह र

मकोडी—स० पु०—१ लोह पर खुदाई करने का एक योजार विशेष ।

२ देखो 'मोकी' (अल्पा, रु भे)

रु० भे०—मकोड ।

मकोट—स० पु०—चीटा, मकोडा ।

मकोड—१ देखो 'मोकी' (अल्पा, रु भे)

२ देखो 'मकोडी' (रु भे)

मकोय—स० पु०—एक प्रकार का क्षुप विशेष जो काकमाची के नाम से भी जाना जाता है और औषधि में काम आता है ।

रु० भे०—मकाय, मको ।

मकी—सं० पु०—'मैने कहा' का सक्षिप्त रूप ।

देखो 'मोकी' (रु भे)

देखो 'मकोय' (रु भे) (अमरत)

देखो 'मकसरीफ'

रु० भे०—मकी ।

मक—देखो 'मोकी' (रु भे)

मकड—देखो 'मरकट' (रु भे)

२ देखो 'मकुण' (रु भे)

मकर—स० पु०—१ गर्व, अभिमान ।

उ०—तज मकर फकर तसू, उर सुध करखे रात अपदे । वस करदे इंद्री अबस, तन मकी तप सीळ तपदे ।—र. ज. प्र

२ छल, ढोंग, पाखंड, धूर्तता, फरेब ।

उ०—तद कान्हो वोल्यो तमक, मत करणा मकर । वीरोटण पण वेवता, नह मोभ चढै तर ।—ठाकुर जुभारमिह मेडतियो

उ०—छहगस खपर हाथ लिया । मुख बीही मकर मुख ऊपर चखिया ।—मा वचनिका

४ देखो 'मकर' (रु भे)

मकळ—स० पु० [स० मक्कल] प्रसव के पश्चात् जच्चा के नाभि के नीचे पमळी, मूत्राशय तथा उसके ऊपर वायु की ग्रंथी बनने से होने वाला दर्द । (अमरत)

रु० भे०—मकळ ।

मक्कार—वि० [अ०] घोखा देने वाला, कपटी, धूर्त, कृतघ्न ।

रु० भे०—मकार ।

मक्कारी—म० स्त्री० [अ० मक्कार + रा० प्र० ई] घोखा देने की प्रवृत्ति या कार्य । छल, कपट ।

मक्कासरीफ—स० पु० [अ० मक्क] हजरत मुहम्मद माहव का जन्म स्थान, जहां गुमलमान हज के लिए एकत्रित होते हैं ।

उ०—गरीबपरवर मक्का सरीफ री यात्रा में चैन चाहिज ।

—नी प्र

रु० भे०—मक सरीफ, मकी, मक्कसरीफ ।

मक्की—स० स्त्री० [देशज] १ एक प्रसिद्ध अन्न जिसका पीया ज्वार व बाजरी के पीये के समान ही ५-६ फीट ऊंचा होता है । इसके भुट्टे में इस अन्न के दाने लगते हैं ।

रु० भे०—मकई, मकी ।

२ देखो 'माखी' (रु भे)

मक्कीचूस—देखो 'मक्कीचूस' (रु भे)

मक्कुन—स० पु०—जाघ का कवच ।

उ०—हठीती हाजिर भई कटिवध कसाया । हूरां सूर मत्त ही धर साज बनाया । यो जावक लग्न चरन यो लगर लाया । यों नेडर पग अकुरै यों मक्कुन आया ।—व भा

मक्कसरीफ—देखो 'मक्कामरीफ' (रु भे)

मक्को—स० पु० [अ० मक्क] १ देखो 'मक्का सरीफ' ।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय, मगरिदै मक्के मन्नत मनाय ।

—ऊ का

२ देखो 'मकी' (रु भे)

मक्खण—देखो 'माखण' (रु भे) (डि को)

मक्खी—देखो 'माखी' (रु भे)

मक्खीचूस—वि० [स० मक्खिका + राज० चूसणो] प्रति कृपण, महा-कज्जुम ।

रु० भे०—मकीचूस ।

मक्खीमार—देखो 'माखीमार' (रु भे)

मक्कूर—देखो 'मकदूर' (रु भे)

मक्कंद—देखो 'मकरद' (रु भे)

उ०—पाए सुचग स्याम पाट, पै कनक नूपर । मक्र द कज रक्मि-  
मान, पीत भोर ऊपर ।—सू प्र

मक्र—देखो 'मकर' (रू भे)

उ०—१ माता कर मक्र लहे चक्र मोख । तिततिल अग न जग  
सतोख ।—मे. म

उ०—२ मक्र सीस भेटवा, चक्र ही कोप चलावै । कना मक्र कर  
क्रोध, वज्र पहाड़ा पठावै ।—र. ज प्र

उ०—३ दिसा दिसा न मान तोप माननी दर्ग नही । अडोळ चक्र  
नक्र मक्र आननी अगै नही ।—ऊ का.

मक्रकेत, मक्रकैत—देखो 'मकरकेत' (रू. भे) (डि को)

उ०—१ सिधाराव रं गणेश ब्रधा राव रं दिनेस सोहै । जोध बळी  
राव रं लकेस रो हे जेम । त्रिळोक राव रं मक्रकेत तायजादी  
तेम । उम्मेदराव रं 'अजी' रायजादी येम ।

—रावराजा अजीतसिंह री गीत

उ०—करा मक्रकेत रं लचोला लेती तूजी किना, नक्र रं मचोळा  
हू हचोळा लेती नाव ।—र हमीर

मक्री—देखो 'मकरी' (रू भे)

मक्षिका—स० स्त्री० [स०] १ मक्खी ।

२ मधुमक्खी ।

मक्षसी—स० पु०—१ सज्ज रग का घोडा जिसके शरीर पर काले चक्र  
या दाग होते हैं ।

२ श्याम रग का घोडा ।

मख—स० पु० [स०] १ यज्ञ । (अ मा, ह ना. मा)

उ०—१ मुनि कीधो भारभै मख, बलि रघुवीर दुहाह ।

—रामरासी

उ०—२ वहिया मख रिख ठोड ठोड, फाडे भय कोड ।

—र ज प्र

रू० भे०—मख, मखल ।

२ देखो 'माखी' (मह, रू भे)

मखडपाव—स० पु०—वह घोडा जिसके पांव चलते या दौड़ते समय  
जमीन में घसते हैं । (अशुभ) (शा हो)

मखण—देखो 'माखण' (रू भे)

मखणी—स० पु० [देशज] एक प्रकार का घास विशेष । (जयसलमेर)  
अल्पा०—'माखणियो' ।

मखतूळ—स० पु० [सं० महर्घतूल] काला रेशम ।

उ०—१ भूला मखतूळ जमा जळ भाग । पगप्पग होत उद्योत  
प्रयाग ।—मे म

उ०—२ खाती रा गोळ चदण री रुख काट लाज रग री डोलियो,  
आया पाया रतन जहाव ईसां ढळावो जाभा हीगळू । धमचोर वेभ  
भणाय दावण घलावो मखतूळ री । सूआ वरणी सीड भराय गाल  
मसीरा गादी गीडवा ।—लो गी

रू० भे०—मकतूल, मखतूळ ।

मखतूळी—वि०—१ काले रेशम का ।

स० पु०—२ एक प्रका का घाम जिगके पत्तो व बीजो से भीनी  
भीनी सुगन्ध आती है ।

उ०—सुण सुण रे जोधाणा रा तेली, ओ घाणी काढी केसर ने  
किस्तुरी । ओ माय घाली मरवो ने मखतूळी हो ।—लो गो

मखत्राता—स० पु० [स०] १ यज्ञ की रक्षा करने वाला, यज्ञ रक्षक ।

२ श्री रामचन्द्र भगवान का नामान्तर ।

मखदूम—स० पु० [अ० मखदूम] (स्त्री० मखदूमा) १ वह जिसकी सेवा  
या खिदमत की जाय ।

२ मालिक, स्वामी, पूज्य ।

३ एक प्रकार के मुमलमान धर्माधिकारी ।

उ०—अरथ कर नवा फुरमांग री आयता, लिया कर माह रं कान  
लागै । कहै मखदूम जग हेक मजहब करो, 'जमी' हिंदू धरम मस्त  
जागै ।—नरहरदास बारहठ

मखदोखी, मखद्वेसी, मखधेखी, मखधेसी—स० पु० [म० मखदोपिन्]

१ राक्षस, असुर । (ना मा)

२ शिव का एक नामान्तर । (अ. मा)

मखन—देखो 'माखण' (रू भे.)

मखनाय—स० पु० [म०] विष्णु का एक नामान्तर ।

मखमल—स० पु० [अ० मखमल] [वि० मखमली] बहुत चिकना व  
रोएदार एक प्रकार का प्रसिद्ध कपडा ।

उ०—वा इडां सू मखमल री जात फूटरा रुपाळा विचिया निक  
लिया ।—फुलवाडी ।

रू० भे०—मखमली, मुखमल ।

मखमली—वि० [अ० मखमल + रा० प्र० ई] १ मखमल का, मखमल  
सम्बन्धी ।

२ मखमल के समान, मुलायम ।

३ देखो 'मखमल' (रू. भे)

मखयारणी—देखो 'मखियारणी' (रू. भे०)

मखरक्षक—स० पु० [स०] १ यज्ञ की रक्षा करने वाला ।

२ श्री रामचन्द्र भगवान का एक नामान्तर । (ना मा)

मखवाळ—स० पु० [स० मख + आलुच] यज्ञ करने वाला, ऋषि ।

उ०—आयो ग्रह अमसाह' अटक फौजा उजवकी । अवधि जेम  
आवियो, राम परणौ जानकी । गाजि फरसि असपती, भाजि घानख  
मुदफर । मखवाळा मडळी, करे सगळा राजिदर । राजा 'अजीत'  
दसरथ ज्यो, सुत सजीत परखै सही । वारणा लिए 'अमसाह' रा,  
जणणी कोसत्या जिही ।—रा रू

मखसाळा—स० स्त्री० [सं० मखशाला] यज्ञशाला ।

मखसूद—देखो 'मकसूद' (रू भे)

उ०—हिंवै मालदेव विचारण पडियो जू किराड वात कही । दीठी

कासू कीजै । बिना मखसूद उपाव हुवा जे लडीजै छै त, ई घात वे-  
सूली ।—अमीपाळ साह री बात

मखहूळ—देखो 'मखतूळ' (रू भे)

उ०—केसा रा जूडा बांधीजे छै, ऊपरा मखहूळ रा डोरा बांधी-  
जै छै ।—रा सा स

मखाणो—स० पु०—१ तिल, इलायची, पोस्त के दाने को चीनी मे पाग  
कर तयार की जाने वाली मिठाई ।

२ देखो 'तालमखाणो' ।

मखारणो—देखो 'मखिआरणो' (रू भे)

मखालय—स० पु० [स०] यज्ञशाला ।

मखिआरणो—स० पु० [स० मक्षिका+आवरण, मुख+आभरण]

भक्तरी के आकार का चमड़े या सूत का बना एक प्रकार का उप-  
करण विशेष जो घोड़े व बैल के मुख पर शोभा बढ़ाने तथा  
मखियों से रक्षा करने हेतु बांधा जाता है, तिलहारी ।

रू० भे०—मकियारणो, मखियारणो, मखारणो, मखियारणो ।

मखिका—स० स्त्री०—एक प्रकार का शस्त्र । (व म)

मखियारणो—देखो 'मखिआरणो' (रू भे)

मखी—देखो 'माखी' (रू भे)

मखेस—स० पु० [स० मख+ईश] राजसूय यज्ञ ।

मखोळ, मखोल—देखो 'मखोळ' (रू भे)

मखोळियो—देखो 'मखोळियो' (रू भे)

मखोळ, मखोल—स० पु०—मजेदार तथा व्यंगपूर्ण बात जो प्राय किसी  
को हास्यास्पद बनाने के लिए कही जाती है ।

रू० भे०—मखोळ, मखोल ।

मखोळियो—वि०—मजेदार बात या मजाक करने वाला । व्यंगपूर्ण  
चुटकी लेने वाला, मखोल करने वाला, मसखरा ।

रू० भे० 'मखोळियो' ।

मख—स० पु० [स० मधुक] १ मधु, सहृद ।

उ०—अहर पयोहर, दुइ नयण मीठा जेहा मख । डोला, एही  
मारुई जाणुं मीठी दख ।—ढो मा

२ देखो 'मख' (रू भे)

उ०—देवी जम्मणो मख आहूति ज्वाला । देवी वाहिनी मत्र  
लीला विसाला ।—देवि

मग—स० पु० [स० मग् (गति) + अच्, पृपो० सिद्धि] १ मगध देश ।

२ मगध देश का निवासी ।

३ भोजक जाति के ब्राह्मणों के अनुसार शाकदीप के चार वर्णों मे  
से एक वर्ण । (मा म)

४ देखो 'मूग' (रू भे)

उ०—मग गोधूमादि, दिव्य, प्रथवी रतन सुरग ।—वि. कु.

५ देखो 'मारग' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ धुर घण घटा जिही मग छायो । औरग वळै अजैगढ  
आयो ।—रा रू

उ०—२ करणो सो अब ही कियो, मरणो वेस महीप । दिन्ली  
मग मोनू दहे, दीजे पग कुळदीप ।—व भा

रू० भे०—मगस ।

मगज—स० पु० [अ० मग्ज] मस्तिष्क, दिमाग ।

उ०—ऊडा वेरा सू चिही नै काढै तो कीकर काढै कोई जुगत  
बिठावै । की मगज मे वैठो नी ।—फुलवाही

मुहा०—१ मगज खपाणो=किसी समस्या के हल के लिए दिमागी  
जोर् लगाना । बहुत अधिक सोचना । २ मगज खाली=व्यर्थ की

बकभक्क कर किसी की परेशान करना । ३ मगज खाली करणो=  
व्यर्थ की बकभक्क कर अपने दिमाग को परेशान करना या मस्तिष्क

थकाना । ४ मगज चाटणो=देखो 'मगज खाणो' । ५ मगज  
पचाणो=व्यर्थ की सिर पच्ची करना । ६ मगज फिरणो=

मानसिक सतुलन बिगड़ना, पागलपन का असर होना । ७ मगज  
भरणो=किसी को बहकाना, गुमराह करना । ८ मगज मारणो=

देखो 'मगजपचाणो' ।

२ फल आदि के अन्दर का गुदा, गिरी ।

३ गर्व, अभिमान ।

उ०—१ साह मिळै निज मगज सवायो । 'अजन' विवा हुय डेरा  
आयो । दोनू राह गात छत देखै । लखि गति सकळ मिरै दुति  
लेखै ।—रा रू

उ०—२ मणघर विख अण माव, मोटा नह धारै मगज । वीछू  
पूछ वणाव, राखै सिर पर राजिया ।—किरपाराम

४ रोव, दबदबा ।

५ देखो 'मगद' (रू भे)

उ०—जद तेली री वेटी नू भीतर बुलाय एक आछो वेस आदा मण  
मगज खाजा दस रुपिया गहणै रा और उण तेली नू सिर पाव  
दियो ।—ठाकुर जेतसिंह री वारता

रू० भे०—मगज ।

मगजचट—वि० [अ० मग्ज+राज० चोटणो] बहुत बातूनी, बकवास  
करने वाला, बकवादी ।

मगजचट्टी—स० स्त्री०—बकवाद, बकभक्क ।

मगजपच्ची—देखो 'मगजमारी' ।

मगजमारी—स० स्त्री०—मगज पच्ची करने की क्रिया, सिर पच्ची ।

मगजाई—स० स्त्री० [अ० मग्ज+रा० प्र० आई] १ गर्व अभिमान ।

उ०—महितल मगजाई मेलै थळ मेली ।—ऊ का

२ गौरव ।

उ०—पेट माय खोटी पुळ पडियो, भेटण कुळ मगजाई नै ।

रू० भे०—'मगजाई' ।

—ऊ. का.



मगजी-स० स्त्री० [अ० मगज+रा० प्र० ई] १ गर्व, अभिमान ।

उ०—१ तुटै कळा छूटै ठोठ ठोठ री सचाणी तोपा नायां हाहा  
गोठ री कुरम्भा झाडी लीक । जोठ रा ठिपाणा घणा मगजी मेले  
ही जठै तठै रही रोठोठ री हेक चोरुनीक ।—नवजनी लालम

उ०—२ रायगीग जमीग मू मिलतो मगजी राये । दागै दवागीरा  
हूना नरमी दैमोत ।—रायसीग री गीत

२ किसी वस्त्र में सिलाई के साथ निकाली गई किनारी ।

क्रि० प्र०—कटाणी, घालणी ।

मगजू-स० पु०—ढोल का एक उपकरण ।

मगण-स० पु० [स०] छद्म दास्य के आठ गणों में से एक जिसमें  
तीन गुरु वर्य होते हैं ।

वि०—देखो 'मगन' (रू भे)

मगत—देखो 'मगतो' (मह, रू भे)

मगतजण-स० पु० [स० मार्गण+याचना] याचक ।

रू० भे० मगतजण ।

मगतो—देखो 'मगतो' (रू भे)

उ०—राणी म्हाने पेछी कही महाराज मगतण होय मीरा जगत  
लजायो, कीन्ही मारो काज ।—मीरा

(स्त्री मगतण, मगतो)

मगथग—वि० [स० मार्ग+राज० थग] लुटलूटाता हुआ ।

उ०—जडलग प्रलग भलग भल्ले । मगथग वल्ले पग डग मिल्ले ।  
—पा प्र

मगद-स० पु० [मगध=परिवेष्टने] १ मंदे को घी के साथ मेक उसमें  
उचित मात्रा में ढाकर मिला कर बनाया हुआ सुस्वादु चुरचुरा  
व्यंजन विशेष ।

उ०—गह से तो मीरांवाई उतरघा जी, हाथ में मगद को धाल ।

—मीरा

उ०—२ तताळ घेवर, पायल घेवर, तल्या गुद, कुडलाकत जळेवी,  
मीठउ मगद, आछुमाळ निगद, ग्रीस्यु मीर, जीमतां मन हुई घणीक ।

—व स

२ देखो 'मगध' (रू भे)

रू० भे०—मगज, मगदळ, मगध ।

मगदळ, मगदल-स० पु० [देशज] १ उड़द या मूग के आटे को घी में  
भूनकर उसमें ढाकर मिलाकर बनाया जाने वाला एक प्रकार का  
व्यंजन विशेष ।

२ देखो 'मगध' (रू भे)

उ०—उत्तरतां घेवर, तळया गुद कुडलाकत जळेवी, सीरा लापसी,  
मीठउ मगदळ, साकर नू चूरमु ।—व स

मगदूर—देखो 'मकदूर' (रू भे)

उ०—१ नटस्यू तोँ हू नठस्यू, जावो पघारी, कोनी धालू आटी ।  
मूछी मगदूर बापडी री कै म्हारे यकां आ नटे ।—कुलवाडी

उ०—२ मूछी मगदूर बापरा री ते म्हारे यकां कोर्दे म्हारे मंत  
भेळाय दे ।—कुलवाडी

मगध-स० पु० [म०] १ दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम । (डि को)  
२ देखो 'मगध' (रू भे)

रू० भे०—मगध मगह, मगहर, मगहर, मागध ।

मगधपनि-स० पु० यी० [म०] १ मगध देश का राजा ।

२ जरामय का नामान्तर ।

रू० भे०—मगधपनि ।

मगधवरणसर—एक प्रकार का घातुपण ।

उ०—जावक मानव गोबुद्धर उरमिक मगधवरणसर वदवपुष  
कसल भगव अन्नमेगक तुग ।—ध स

मगधाण-स० स्त्री०—मूर्खता ।

उ०—मुगळाण मुगय बुद्धी बि गुर मन्द मापु उपदेसी । दिप्र मेर  
उदपि रहणी, नह मूर्ति मगधाण ।—गु रू व

मगधेश, मगधेश्वर-स० पु० [स० मगधेश, मगधेश्वर] जरामय का  
नामान्तर ।

मगन—देखो 'मगन' (रू भे)

उ०—१ राजकवर आज वैसी दण गत री यिनकी ती देखियो  
ही दण गातर चौ अगू ता कोट स मगळी तमामो देखणा में  
मगन हो ।—कुलवाडी

उ०—२ लीला बिना मगन होय रेता, नहीं नगर नहि नामा ।  
अपना सहज घाप निन जायो, नहि कोई काम घकांमा ।

—श्री हरिगंमजी

उ०—३ मद पांत मगन माटा रहे, देय हकीमां दान जू । परणी  
तज पातर रये, सग गुणा री खान जू ।—ऊ का

रू० भे०—मगण ।

मगनता-स० स्त्री० [स० मगन+रा० प्र० ता] १ प्रसन्नता, हर्ष, खुशी ।

उ०—तद वरमयां हमापूजी में हकीगत सारी कही । तारा हमऊ  
जी कयो जो वरमया आज हमारे दिली घरें आवें जैमी मगनता  
भई है ।—द दा

२ तत्त्वोन्नता, लवलीनता ।

३ मस्ती ।

मगर-स० पु० [स० मकर] १ घडियाल । (डि को)

उ०—अति सेवि धूप आसावरी, रूप सकति धायण रखी । घम-  
जगर अजर तोपा घरी, मगर, मूर, नाहर मुखी ।—सू. प्र.

२ मछली ।

यी०—मगरधर ।

[राज०] पीठ ।

उ०—१ जावता ई मा'राज पदमसिपजी सावतराय नू मांग री  
वाह करी । सांग उण री छाती में लागी सू फोड छाती, फोड



मगर घर घोड़े रो पीठ फोड़, काछ फोड़ हाथ एक पार हुई वा  
सावतराय रा घोड़े ऊपर प्राण मुक्त हुवा ।—३ दा

उ०—२ तथा उपरायत सूळागरियां होसनाका नै हुकम हुवै छै—  
जाजमा कनारै सूळा तयार करी, सू हिरणा रा मगर पसवाडा  
पीडा सू मांम उत्तारजै छै ।—रा सा स  
४ करील वृक्ष के पुष्प (शेखावाटी) इसका दूसरा नाम 'वाट'  
भी है ।

वि०—पूर्ण, पूरा ।

यो०—मगरपचीस, मगरपचीसी ।

अव्य० [फा०] लेकिन, परन्तु ।

मुहा०—अगर मगर करणी—घाना कानी करना । प्रत्युत्तर देने  
मे असमर्थ होना ।

देखो 'मगरी' (मह, रु भे.)

रु० भे०—मगर ।

अल्पा०—मगरि, मगरियो ।

मगरघर—सं० पु० [सं० मकरगृह] सागर, समुद्र । (हि को)

मगरपचीस—वि०—भरपूर जवान, पूर्णयुवा ।

उ०—१ सुजि जल पियै जरत विण सूरति । मगरपचीस हुवै  
दिब मूरति ।—सू प्र

उ०—२ सोळें वरसा कामणी, मगरपचीसां कत । अं दिन फेर  
न आवसी, जीवन रा महमत ।—अज्ञात

रु० भे०—'मगरपचीस' ।

मगरपचीसी—सं० स्त्री० [राज० मगर+पचीसी] भरपूर जवानी, पूर्ण  
युवावस्था ।

उ०—१ सरधा घटगी सेंग, वेग बिरधापण वळियो । निकळण  
रो रथ नही कळण ऊडी में कळियो । मगर-पचीसी माय, होकरो  
वणगी डाकी । हागडियां निठ डिंगे, थिंगे टांगडियां थाकी । ऊठगी  
उमेद वंठण उठण, भेद न पैला भाळियो । बहु गरय 'देह वादी  
विपद, करगी अनरथ काळियो ।—ऊ का

उ०—२ असपत सू मुरड साहियो असमर, जुध रूपी सुज हुवो जद ।  
दीठी वरस सितर मे 'दुरगी', मगरपचीसी तणी मद ।

—दुरगादास राठीह रो गीत

उ०—३ मरदा मरणी हक्क है, मगरपचीसी माय । महला भूरै पद-  
मणी, मित ह्याया माय ।—अज्ञात

रु० भे०—मगरपचीसी ।

मगरपचीस—देखो 'मगरपचीस' (रु भे)

मगरपचीसी—देखो 'मगरपचीसी' (रु भे)

मगरव—देखो 'मगरि' (रु भे)

मगरवी—वि० [अ० मगरिबी] १ पश्चिम का, पश्चिमी ।

सं० स्त्री०—२ देखो 'मगरवे' (रु भे)

मगरमच्छ—सं० पु० [सं० मकर+मत्स्य] मगर या घड़ियाल नामक  
प्रसिद्ध जल जन्तु ।

उ०—काम फोष लोभ मोह अहता, ये डोले जल माई । काळ  
मगरमच्छ सब कू खावै, वच सकैला नाई ।

—श्री हरिरामजी महाराज

मगरि—१ देखो 'मगर' (अल्पा रु भे)

उ०—बावहिया निळ पखिया मगरि ज काळी रेह । मति पावस  
सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह ।—ढो मा

२ देखो 'मगरी' (अल्पा, रु भे)

मगरिव—सं० पु० [अ० मगरिव] पश्चिम दिशा ।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय, मगरिव मक्के मन्नत मनाय ।

—ऊ का

रु० भे०—मगरव ।

मगरियो—सं० पु०—१ कृषक म्त्रियो का एक गीत

२ गांव या कस्बे के समीप जलाशय के निकट का वह मैदान जहा  
प्राय मेला लगता है ।

३ मेला ।

उ०—तीज तिवार मगरिया महे, रतनागर रो रूप है । देवकरण  
राव सो दांती भोम भडाणे भूप है ।—दसदेव ।

फ्रि० प्र०—महणी ।

४ देखो 'मगरी' (अल्पा, रु भे)

५ देखो 'मगर' (अल्पा, रु भे)

मगरी—देखो 'मगरी' (अल्पा, रु भे)

उ०—मोहकी मगरी रो पाणी ढाळो ढाळो ढळियो रे । आवू थारा  
पाहाडा में अग्रजे वडियो रे, काळी टोपी रो ।—तो गो

मगरूर—वि० [अ० मगरूर] १ जिममे गुरुर या अहकार या गर्व हो,  
गर्वीला, अभिमानी ।

उ०—१ अमीरजादी जवन मगरूर थो, तिण सोंस खाधी तू बाग  
रा मेवा नही खावमी, आ कहि न चलो गयो ।—नी प्र

उ०—२ बाग रो सैल फिरै छै । अस रस बिना महा मगरूर फैल  
करे छै ।—पना

उ०—३ इस त्रिहुवै घड अहर, भीच मगरूर 'अमा' रा । फतै  
करण ऊफणै, डरै वव रै वरारा ।—सू प्र.

२ वीर, जोशीला ।

उ०—पित कुरव लूण भूपाळ रो, करि ऊजळ जुध जस करगि ।  
मगरूर भेदि सूरज मडळ, सूरजमल पडुतो सरगि ।—सू प्र

मगरूरी—सं० स्त्री० [अ० मगरूर] गर्व, अभिमान ।

उ०—१ दूत रो वचन सवण मे पडता ही नाहरराज कहियो  
राजा अनगपाळ तो सबव रा सभव रो सहज बात कीधी जिकी  
बहुवांणा मगरूरी रें मतै साचो वणाय कीधी ।—व भा

उ०—२ जे उठ खडा हो गवार ऐसी मगरूरी करै सो कुण ।

—दूलची जोइये रो बारता

मगरेव—स० स्त्री०—१ एक प्रकार की तलवार विशेष ।

उ०—तठा उपरायत तरवारियां रा कमसारिया खुले छै । सू तरवारियां किए भांत री छै ? सीरोही री नीपनी, वे आगळा बाढ़ भेरियां धका जनैव मगरेव पुढतकाळ सेफ धिलायती म्यांन मांहा काढ घास मे नाखजै तो पांणी रै भोळावै जनावर ठूग बाहै ।—रा सा स

२ तलवार ।

रू० भे०—मुग्राव ।

मगरोपा—स० स्त्री०—गहलोत वंश की एक शाखा ।

मगरी—स० पु० [स० मर्कर] १ पर्वत, पहाड़ ।

उ०—१ तळाव उदैसागर दोळा चौगिरद मगरा छै, पांयडा दो सो तथा ढाहसी उदैसागर री पाळ री वधेज छै—नैणसी

उ०—२ मगरां केरा बाहळा, ओछा नरां सनेह । बहुता वहै उतावळा छटक दिखावै छेह—अज्ञात

उ०—३ चित सुध, 'अभो' पयपै 'चिमनो', ऊपर खड आया अर-यद । खोसे घन मगरा वळ खाघो, गळे जिको वांधो गिरयद ।

—जादूरांम आढो

० पत्थरीली या ककरीली ऊची भूमि, कठोर भूमि ।

उ०—खेत मगरा रा, जुवार हुवै, चिणा हुवै । अरट चार हळ ६० री धरती छै ।—नैणसी

अल्पा०—मगरि, मगरियो, मगरी ।

३ देखो 'मगर' (अल्पा, रू भे०)

मगधन—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र । (ध स)

उ०—कद दोकद चुपदी मासपदा तनुवध सरवध कमरवध मगधन फमलवना दरीयाखाना ।—व स

मगवान—देखो 'मघवा' (रू भे)

उ०—१ हेळा मगवान 'भोज' 'फन' हाथा, दांन करण कव हरण दुख । छत्रघर कवर आंन नह छाजै, राज कवार 'जवान' रुख ।—जवानजी आढो

उ०—२ अग्राजै अनड घटा धारोहै, भूप मान' मगवान' भुयद । आर्व हाथ नही तिण आटे, मसळै हातळ 'जगो' मयद ।

—महाराज मानसिंह री गीत

मगवाणो, मगवावो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे)

मगवाणहार, हारो (हारो), मगवाणियो—वि० ।

मगवाविशोडो, मगवाविघोडो, मगवाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मगवावीजणो, मगवावीजवो—कर्म वा० ।

मगविचसानु—स० पु० [स० मार्ग विवस्वत्] आकाश । (नां मा.)

मगस—स० पु०—भोजक जाति के ब्राह्मणों के अनुसार शाक द्वीप के चार वर्णों में एक वर्ण । (मा म)

रू भे—मग ।

मगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—पिया मोहि दरमण दीजो हो । मगसर ठड बहोसी पडै, मोहि वेगि सम्हाळो हो ।—मीरा

मगससि—सं० पु० यो० [स० मार्गशशि] 'आकाश' (नां मा.)

मगसिर, मगसीर—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—१ मगसिर सुदी दसमी दिनह हो ।—म. कु

उ०—२ आसू कातिग कहा, सांम भादवै ज सामणि । माह पोह मगसीर, चेत वंसावा फागणि ।—ईसरदास वारहू

मगसुर—स० पु० यो० [स० मार्गसुर] आकाश । (घ मा)

मगसो—वि० [स्त्री० मगमी] १ कान्तिहीन, निष्प्रभ, फीका ।

उ०—दावो पडघोडी कै भोलो लागघोडी साथ लुगयुकी पडै ज्यू वादळ री डोल लूखी पडग्यो । दीप दीप कर्तो उणिपारी साव मगसो पडग्यो ।—फुलवाडी

२ जो यथेष्ट चमकीला या तेज न हो, धूमिल, मलिन ।

उ०—देस देस रा इकरग मपेत छै । जाहरी सपेती आगं बगला ही मगसा नजर आवै ।—रा सा स

३ जो उच्च या श्रेष्ठ न हो, बुरा, बद, मद ।

उ०—वां री खरी कमाई र मगसो भाग पतीजै । वा री रळिया पर गुमान । मन खिवरा फीजै ।—फुलवाडी

४ तेज हीन, मद ।

उ०—थोडा घणां उजास रै कारण वीजळिया मगसो चमकती ही ।—फुलवाडी

५ जिमका प्रकाश क्षीण हो गया हो, घुघला, निस्तेज ।

उ०—उण रै ग्यान री उजास गरीबी री अपार घुघ में मगसो पडग्यो ही ।—फुलवाडी

६ प्रभावहीन ।

मगह—देखो 'मगध' (रू भे)

मगहपति—देखो 'मगधपति' (रू भे)

मगहर—सं० पु० [स० मृगहर] १ वायु, पवन ।

उ०—रवि मकर रासि निवास राजत, उत्तर मगहर अनुमरे । दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति, रैण लघु पण आदरे ।—रा, रू

रू० भे०—'मगहर' ।

२ देखो 'मगध' (रू भे)

मगा—देखो 'मघा' ।

मगाडणो, मगाडवो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करिने राजान सिलामति केसरिये वागै चदा-चदा जुमान माहिल वाडिआ री साथ ऊपडिआं घटा रा चुवता पटी रा खासीआं बाहा रा बोलता कहारा राजान राजावत रै वेपारै वास्ती बाकरा मगाडीजै छै ।—राजान राउत री वात बणाव

मगाडणहार, हारो (हारो), मगाडणियो—वि० ।

मगाडियोडो—भू० का० कृ० ।

मगाडीजणो, मगाडीजवो—कर्म वा० ।

मगाड्योडो—भू० का० कृ०—देखो 'मगायोडो' ।

(स्त्री० मगाड्योडो)

मगाणो, मगाबो—देखो 'मगाणो, मगाबो' (रू भे)

मगाणहार, हारो (हारो) मगाणियो—वि० ।

मगायोडो—भू० का० कृ० ।

मगाईजणो, मगाईजबो—कर्म वा० ।

मगायोडो—भू० का० कृ०—देखो 'मगायोडो' ।

(स्त्री० मगायोडो)

मगावणो, मगावबो—देखो 'मगावणो, मगावबो' (रू भे)

मगावणहार, हारो (हारो) मगावणियो—वि० ।

मगाविश्रोडो, मगावियोडो, मगाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मगावीजणो, मगावीजबो—कर्म वा० ।

मगावियोडो—भू० का० कृ०—देखो 'मगायोडो'

(स्त्री० मगावियोडो)

मगीआ—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—कस्तूरीआ प्रतापीआ कुसभीआ मोलीआं माडवीआं मीणीआ  
वाटलीआं जलोदरीआ मगीआ जोडदरीआ प्रागीआ चुकडीआ ।

—व स

मगेज—देखो 'मगेज' (रू भे)

उ०—१ ज्यू ज्यू सूकें जीव जग, त्यू त्यू लूआ तेज । वालें जाळें  
सोसवें, ठूणो चढें मगेज —लू

उ०—२ भवैराई का पेच मगेज भ्रमाडिया, विध ऊतरियो आय-  
सहेली वाडिया ।—वगसीराम प्रोहित की वान

मगेजण—देखो 'मगेजण' (रू भे)

मगेरणो—देखो 'वारणो' ।

मगहर—१ देखो 'मगहर' (रू भे)

२ देखो 'मगघ' (रू भे)

३ देखो 'मघा' (रू भे)

उ०—भादवउ वरसड छड मगहर गभीर । जळ, थळ, महीयळ  
सहु भग्धा नीर ।—वी दे

मग, मगड—देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—१ चदण तापड ससि जळड, पवन करड प्रकास । मेह तणा  
मग रूघीया अहो! रे आसो मास ।—मा का प्र

उ०—२ नव जळ भरिया मगडा, गयणि घडकड मेह । इत्यतार  
जड आविसिड, तई जाणि सिड मेह ।—अज्ञात

मगडो—देखो 'मारग' (अल्पा, रू भे)

मगज—देखो 'मगज' (रू भे)

उ०—मगज भइयो वई चाहि न रखे मुकट, यन सघण माहि  
मुरळी वजावें । इसा हर धके चढ कुण अहीरो, अगूठो दिखावें  
घरां आवें ।—वा दा

मग्गि—देखो 'मारग' (अल्पा, रू भे)

उ०—माणिक रतन अमोल मणि, मीढ न कियो तिए मग्गि ।

रूप अनूप तुरग रै, लोक तिया मन लगि ।—रा रू

मग्दूर—देखो 'मकदूर' (रू भे)

उ०—घबकी डोकरी किडकतो वोल्यो—आया वापड। म्हारै थकां  
घर री फिकर करण वाला । किए री मूडी मग्दूर कै म्हारै वंठा  
घर री कोई सोच करै ।—फुलवाडी

मग्न—वि० [स०] १ किसी कार्य में निमग्न या तल्लीन ।

२ प्रसन्न, आनन्द में लीन ।

३ डूबा हुआ, सराबोर ।

उ०—देम माहि आवता ही थोठी नू मीख दे'र विपत्ति रा महा-  
रणव में मग्न भागळियाणी पुत्र सहित वेस री विपरयास करि  
कैराळ ग्राम रा ठाकुर रोहडिया वारहठ आल्हा रै वास जाइ रही  
अर थोहा दिना में वडा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ  
चारण री चाकरी मे चित्त लगाइ चातुराई री रीक चही ।

रू० भे०—मगण, मगन ।

मघ—१ देखो 'मघा' (रू भे)

२ देखो 'मघवा' (रू भे)

३ देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—कम कळम भरि नीसरी, ग्रीख भरै मघ जोय । पतिव्रता  
दूजा घका, 'हरिया' सहै न कोय ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मघई—वि० [स० मगघ] १ मगघ देश का ।

स० पु०—एक प्रकार का तांबूल विशेष ।

उ०—भाग त्रगुण पकज पर मेळें, मघई पान छगुण रस मेळें ।

—सू प्र

मघबळ—स० पु०—तीर, वारण । (अ मा)

मघबाण, मघधान, मघधानू, मघव, मघवाण, मघवांणो, मघवान,

मघवा—स० पु० [स० मघवन्] (स्त्री० मघवाणी) सुरपति इन्द्र

का एक नाम । (अ मा, डि ना मा, ह ना मा)

उ०—१ लहर समद बकमण लखा, महर उमळ मघवान ।

—सिवबगस पाल्हावत

उ०—२ ववी जद घोर जगदा वग्गा, लडण मेघनाद रिए लग्गा ।

भिड तिए सेस भुजू वळ मग्गा, मिटा सोच मघधानूवा ।

—र ज प्र

उ०—३ कमळ उदध कळवरछ, भाण मघवांण, मेर समि । वदन  
सहज दत, तेज राज, गरुवत दीठ लसि ।—र ज प्र

उ०—४ रज परसण उदमाद करै रिख, मरै हूम मघवांणो ।

फत दत कीट किया हू यधकी, हरि नग झोट रहाणी ।—र. ज प्र

उ०—५ मेघ जिको तावै मघवा रै, वारै रज विना नह वीख ।

सुरग हरी रग पीत दरसिया, रिख वादळ लसिया अतरीख ।

—महाराजा भीमसिंह री गीत

उ०—६ सीता सी राणी वेद वखाणी, सारग पाणी साम ।  
मीढ़ न मघवाणी बल ग्रहमाणी, नही रुद्राणी नाम—र ज प्र  
यी०—मघवापुर, मघवारिपु ।

रू० भे०—मगवान, मघ, मघवाह, माघव, माघवाण, माघवान ।

मघवापुर—स० पु० [स० मघव + पुर] इन्द्रपुरी, सुरलोक ।

उ०—बाली वय सुत बिहडियो, घट भाजै घण घोर । भीनी भुव  
सोणित भिनी, मघवापुर मे मोर ।—अज्ञात

मघवारिपु—स० पु० [स० मघव + रिपु] इन्द्र का शत्रु, मेघनाथ ।

मघवाह—स० पु० [मघ] १ ब्रह्मा के चौदह पुत्रों में से एक (मनु) जो  
मानव सृष्टि के मूल पुरुष माने जाते हैं ।

२ देखो 'मघवा' (रू भे)

मघा—स० पु० [स० मघा] पाच तारो वाला सत्ताईस नक्षत्रों में से  
दसवा नक्षत्र ।

उ०—१ अकुस सीस वरुण गुण ऐसी, जग वेधियो मघा सनि जैसी ।

—रा रू

उ०—२ आदित्यवार अनइ वली, मूळ मघा रेवति । पोढी पुस्य  
पुनरवसु, सेजि चढइ नही सत्य ।—मा का प्र.

रू० भे०—मगा, मगहर, मघ ।

मघाभव—स० पु० [स० मघा + भव] शुक्र ग्रह का नामान्तर ।

मघोनी—स० स्त्री० [स० मघवा] इन्द्र की पत्नी, शक्ति ।

मड—देखो 'मडो' (मह, रू भे)

मडक—स० स्त्री० १ मुडना क्रिया का भाव, मोड़ ।

२ गर्व, अभिमान ।

मडकल—वि० [मृतक + ल = तुल्य] १ क्षीण-काय, कृश, दुबला-पतला ।

२ जिसमें कुछ भी दम न हो, शक्तिहीन ।

रू० भे०—मडियल, मडियो ।

मडतग—स० पु०—१ सारंगी में वह स्थान जहाँ सभी तारों को एकत्रित  
कर बाधा जाता है । इसे सिन्धी में कुरदी भी कहते हैं ।

२ देखो 'मरतग' (रू भे)

मडहट—देखो 'मरघट' (रू भे)

मडहटो—देखो 'मरहटो' (रू भे)

उ०—नेजाहलां मडहटो निहसै, घण खागां बहिया रत घाव ।  
दुरंग गिरद वाळा वेळा हुम, रगिया सुरग खीचिया राव ।

—राजा फतेसिंह खीची की गीत

मडहठ—देखो 'मरघट' (रू भे)

उ०—देहली लग महली पिण दीडी, फलमा लग मा बहण फिरी ।

मडहठ लागी कूटव ची मेळो, कियेण न सुख दुख बात करी ।

—प्रथवीराज राठोड

मडाघाट—स० पु० [स० मृत + घट] नदी पर वह स्थान जहाँ पर शव  
जल प्रवाह में बहा दिया जाता है, मुरदाघाट ।

उ०—बाणियो गगाजी पूगो तो पहा रा डर सू वो भीधी मडाघाट  
मायै ई गियो ।—कुलवाडी

मडियल—देखो 'मडकल' (रू भे)

मडियो—१ देखो 'मडो' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'मडकल' (रू भे)

उ०—मडियो कुडियो मेर, सग सडियो न सुहावै । पडियो रहे  
परेत, दैत ज्यू दात दिखावे ।—ऊ का

मडोठो—देखो 'मरहटो' (रू भे)

उ०—दुय चत्रमास बादियो दिखणी, भोम गई जो लिखत भवेस ।  
पूगो नही चाकरी पकडी, दीघो नही मडोठा देस ।—वा दा

मडोड—देखो 'मरोड' (रू भे)

मडोडी—देखो 'मरोडी' (रू भे)

मडो—वि० [स० मृत] १ मरा हुआ, मृत ।

२ दुर्बल, क्षीण, काय ।

३ शक्ति हीन, अशक्त ।

स० पु०—शव, लाश ।

उ०—१ सेठ तो साचेला मडा री गळाई सास ऊंचो चाढ़ लियो ।  
—कुलवाडी

उ०—२ अकण साह री वेटी मुवो सु मडो इण खेडै बल पावै नहीं ।  
—नंगुसी

रू० भे०—मडो ।

अल्पा०—मडियल, मडियो ।

मह०—मड, मडउ ।

मचक—देखो 'मचक' (रू भे)

मचकद, मचकध—देखो 'मुचुकुद' (रू भे)

उ०—वेढ रा विखम तासा तबल वजासी । यर दुरग छोड भाग  
अगी—प्रगासी । लाय दसकय वाळै सदन लगासी । जोष मचकध  
सुतो थको जगासी ।—कवर रतनसिंह जी की गीत

मच—स० पु० १ पुष्टता, सुदौलता ।

उ०—१ ठाकुरा घोडा हाथिया जवा री नै बाढ री मच दोसै नहीं,  
कीं बात सू ।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ किणई वैगण बायडा अर किणई वैगण पच । किणई  
चढै आफरी ने किणई चढे मच ।—अज्ञात

क्रि० वि०—शीघ्रता से, भटके के साथ ।

रू० भे०—'मच' ।

मचक—स० स्त्री०—१ मचकना क्रिया का भाव ।

२ लचक, दबाव ।

उ०—तिण पर उतरादी तरफ तो स्त्री तीजांमाजी मिदर १६०२  
रा फागण बंद २ तयार करायो । उतराधा घाट पर सू पछै  
१६०६ रा बरस मिदर मचक खादी तद दूजो मिदर घासमडी में  
करायो ।—मारवाड की ख्यात

३ शरीर के अंग पर विशेष दबाव पढ़ने से नाडी के अस्त व्यस्त होने की दशा ।

रु० भे०—मचक, मचकक, मचक ।

मचकणी, मचकवी—क्रि० अ०—१ आघात और वोभ पाकर दबना, मुकना, लचकना ।

उ०—१ वीर जोद्धारा री जुद्ध होवण लागी तिए सू धरती धूजण लागी तद नागणी नाग न पूछै छै—हे नाग ! आज धरती मे घरराट काई तरह होवै छै तद नाग कही—हे नागण आ धरती मचकै छै । नागण कछी क्यू—तद फेर नाग कहै—इण धरती रा भोगण चाळा घणी इण जमी सारु आज रण मे अड़िया है ।—वी स टी

उ०—२ मचकै फुणाटा चील लचकै कमठी मोर, वोम ढकै उडै खेहा रुकै धीर वाट । अजादा दधेस मुकै भेचकै भवेस मोट, तण धू नरेस हकै हैजमा तुराट ।—अनोपसिह राठोड री गीत  
२ घक्का या भटका खाकर हिलना, भूलना ।

उ०—लचकै गोडी लागता, मचकै हीड मचोळ । तन दमकै दांमणि तरह, भमकै पग रमभोल ।—सिववगस पाल्हावत

३ पैर न जमना, पीछे हटना, अपने स्थान पर ठहर न सकना ।

उ०—मेळियो 'जसे' वळ दिली-दळ मचकता, प्रवळ भुज वळ सरळ तरळ पूगो ।—नाथी सांदू

मचकणहार, हारी (हारी), मचकणियो—वि० ।

मचकियोडो, मचकियोडो, मचकयोडो—भू० का० कृ० ।

मचकीजणी, मचकीजवी—भाव वा० ।

मचकणी, मचकवी—रु० भे० ।

मचकाणी, मचकावी—क्रि० स०—१ प्रहार करना, आघात करना, मारना ।

उ०—म्हारी म्हारी छाळिया नै दूवी दही पाळ । म्हारियो आवै ती सोटे री मचकाऊ ।—लो गी

२ भूले मे पेंग या भटका लगाना भूले मे भोका लेना ।

उ०—यी भळकी वकी हुवी, हळकी लग हाथाह । साथण सू छाती भिडी, हीडी मचकाताह ।—पना

३ खाना खाना, भोजन करना । (व्यग्य)

४ मसलना, मलना ।

५ सम्भोग करना, मैथुन करना ।

उ०—माणी घर मचकाय, प्यारी कर 'दोलत' 'पदम' । आन्नम चौथे आय चौदी ते दीवी 'चिमन'—लक्ष्मीदान वारहठ

६ पैर न जमने देना, पीछे हटाना, अपने स्थान पर ठहरने मे असमर्थ करना ।

मचकाणहार, हारी (हारी), मचकाणियो—वि० ।

मचकायोडो—भू० का० कृ० ।

मचकाईजणी, मचकाईजवी—कर्म वा० ।

मचकाडणी, मचकाडवी, मचकावणी, मचकाववी, मचकाणी, मचकावी—रु० भे० ।

मचकाडणी, मचकाडवी—देखो 'मचकाणी, मचकावी' (रु भे)

मचकाडणहार, हारी (हारी), मचकाडणियो—वि० ।

मचकाडियोडो, मचकाडियोडो, मचकाडयोडो—भू० का० कृ० ।

मचकावीजणी, मचकावीजवी—कर्म वा० ।

मचकायोडो—भू० का० कृ०—१ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ.

२ (भूले मे) भोका या भोटा लगाया हुआ ३ खाना खाया हुआ (व्यग्य) ४ ममला हुआ ५ सम्भोग किया हुआ

६ पैर न जमाया हुआ, पीछे हटाया हुआ, अपने स्थान पर ठहरने मे असमर्थ किया हुआ ।

(स्त्री० मचकायोडी)

मचकावणी, मचकाववी—देखो 'मचकाणी, मचकावी' (रु भे)

उ०—१ इण भात री तिजारी सू गोरो भूवरिया पुहचा सू दुजण साहा कटोरा मे भला जुवान मचकावै छै । देवडी गळणी सू खीची चाढ छायजै छै ।—रा सा स

उ०—२ सेखी सावळदास री वेगी गई विलाय । मालूपा मचकावता, कादा रोटी खाय ।—अज्ञात

मचकावणहार, हारी (हारी), मचकावणियो—वि० ।

मचकावियोडो, मचकावियोडो, मचकाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मचकावीजणी, मचकावीजवी—कर्म वा० ।

मचकावियोडो—देखो 'मचकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० मचकावियोडी)

मचकियोडो—भू० का० कृ०—१ आघात या वोभ के प्रभाव से दबा हुआ, लचका हुआ २ घक्का या भटका खाकर हिला हुआ, भूला हुआ ३ पैर न जमा हुआ, पीछे हटा हुआ, अपने स्थान पर ठहर सकने मे असमर्थ हुवा हुआ

(स्त्री० मचकियोडी)

मचकुद—देखो 'मुचुकुद' (रु भे)

मचकूर—स० पु०—१ विशेषत लिखित विवरण ।

२ वृत्तान्त, हाल, वार्ता ।

उ०—१ तठे राजावा सारा मनसोभो कीयी जो किए ही तरें साची खबर मगावी, काई मचकूर है ।—द दा

उ०—२ राजा कनकरथ सारी हुकीकत पूछी । वेणीदास, चदण, हरदान सारी मचकूर हुवी सो मालम कियो ।

—पलक दरियाव री बात

३ सलाह, मन्त्रणा, मसविदा ।

उ०—करता हम मचकूर, अडर 'अवरण' दळ आया । राजलोक भूप रा, सज्जि खग सुरग वसाया ।—सू प्र.

४ फौज, लसकर ।

उ०—अरु अठै पातसाहजी मचकूर नू कूच तरफ ईरान री कियो ।  
—द दा

५ चर्चा, जिफ ।

उ०—ताहरा मा पण आहीज कही—हालण रै वास्ते सारी लोक  
आतुर छै । महाराज निपट काहुल करै छै । थारी मुलाहिजो करि  
दवायन कहै न छै । तैमू सवारै तो हालिया सरसी । उठै कुवर  
आहीज कही कं हालसा । इतरी कहि ऊठियो, आपरी डोढी गयो ।  
सदामद आवतां साम्हा सहल—सहेली त्यूं हीज मुजरी कियो ।  
भीतर ले गया । उठै पण इण हीज भाति मचकूर हुवो सो साह  
अजैपाळ आपरै कहै सुणियो ।—पलक दरियाव री बात  
६ वार्तालाप, बात ।

उ०—उठै उहा आछा किवाड था सो खोलाया, 'जो बडा सिरदार  
ताक खोल । हमै कितरी ताल बचीस ? म्हे बाहर खडा सो हरगिज  
छोडा नही । कुहाडा मगाय किवाड तोडस्या । तैमु सिरदार छै,  
बाहर नीसर काम आव ।' इण भांत मचकूर करै छै ।

—कवरसी साम्ला री वारता

७ मालूम ।

उ०—पडै मचकूर लधन खबर पाडिया । जोध खग आडियां धको  
जमरी ।—कमजी दधवाडियो

रू० भे०—मछकूर ।

मचकोडणी, मचकोडवो—क्रि० स०—पराजित करना, हराना ।

उ०—मारी मलिक अवाला कीधा, मचकोडिउ तरकाणउ ।

—का दे प्र

२ भोजन करना ।

मचकोडणहार, हारो (हारी), मचकोडणियो—वि० ।

मचकोडिओडो, मचकोडियोडो, मचकोडघोडो—भू० का० कृ० ।

मचकोडोजणी, मचकोडोजवो—कर्म वा० ।

मचकोडियोडो—भू० का० कृ०—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ  
२ भोजन किया हुआ

(स्त्री० मचकोडियोडो)

मचकोडणी, मचकोडवो—क्रि० स०—मुख मुद्रा बनाना, मुख की आकृति  
को बिगाडना ।

उ०—पण चौपडियं घडै छाट लागं तो बारें बात लागती । सगळा  
मूडो मचकोड'र कं'ता—चैन री अवकारो ईज धणो मार्ये चाढलै ।

—वरसगाठ

मचकोडणहार, हारो (हारी), मचकोडणियो—वि० ।

मचकोडिओडो, मचकोडियोडो, मचकोडघोडो—भू० का० कृ० ।

मचकोडोजणी, मचकोडोजवो—कर्म वा० ।

मचको—स० पु०—१ झूले में लगने वाला भोका, या भोटा ।

क्रि० प्र०—देणो, लगणो ।

२ धक्का ।

३ चापलूसी का कार्य ।

४ रति क्रिया में पुरुषेन्द्रियो द्वारा लगने वाला धक्का ।

क्रि० प्र०—देणो, मारणो, लगवाणो, लगावणो, लागणो ।

रू० भे०—मचक्यो ।

मचक्यो—देखो 'मचक' (रू भे )

मचकणो, मचकवो—देखो 'मचकणो, मचकवो' (रू भे )

उ०—हय हिन्दुनि हविकय वीर किलविकय, सोर भविकय ओर  
दह । सिर सेस लचविकय भूमि भविकय, कोल मचविकय दत  
कहू ।—ला. रा

मचकणहार, हारो (हारी), मचकणियो—वि० ।

मचकियोडो, मचकियोडो, मचकघोडो—भू० का० कृ० ।

मचकोजणी, मचकोजवो—भाव वा० ।

मचकियोडो—देखो 'मचकियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मचकियोडो)

मचक्यो—देखो 'मचक्यो' (रू भे )

उ०—गोळा रीठ बाज यभा, गोरभा नीहाव गाजै । बांजपै  
मचक्यो पीठ, कुरभां भवान ।

—राव राजा उम्मेदमिह वूदी री गीत

मचणी, मचवो—क्रि० प्र० [अनु०] १ होना, घटना ।

उ०—अमला खोवा बाजिया, मचै भडा मनुवार । जागडिया दूहा  
दियै, सिधू राग मभार ।—वा दा

२ छिडना, आरम्भ होना, घूम घाम से घुरू होना ।

उ०—१ मच घांमघूम सर सेल मार, पडशास आस आठू प्रकार ।  
—रा. रू

उ०—२ मचियै काकळ मदत री, वीर न देखे वाट । एक अनेकां  
सूं हिचै, छाती वजर कपाट ।—वा दा

१ जोर से होना, तेज होना, तेजी आना, तीव्र रूप से होना ।

उ०—१ प्रथम गजर तोपां पडे, गोळा वजर गुडांण । मचियो  
जिए दिन माभिया घोर प्रलै घमसाण ।—व भा

उ०—२ सक चउदह सत्रह सम उज्जैणी रण एह । हुवो हजार  
मरण हद, मचि अशिधारा मेह ।—व भा

४ चारो ओर फैलना, अधिक प्रभावी होना ।

उ०—जैन वाम मचिया वडजोरां, गहरे सुर आई गिणगोरां ।

—ऊ का

५ पुष्ट होना, मोटा ताजा होना ।

ज्यू—नारा री मचणी, बछेरा री मचणी ।

६ प्रबल होना, उग्र होना ।

७ मस्ती में आना ।

८ लाक्षणिक अर्थ में अनीति करना, नाजायज हरकतें करना ।

मचणहार, हारो (हारी), मचणियो—वि० ।

मचियोडो, मचियोडो, मचघोडो—भू० का० कृ० ।

मचोजणी, मचोजवो—भाव वा० ।



मचमचणी, मचमचबी, मचणी, मचबी, मांचणी, मांचबी,  
माचणी, माचबी—रु० भे० ।

मचमचणी, मचमचबी—देखो 'मचणी, मचबी' (रु० भे०)

(स० ३, ४, ५, ६)

उ०—मैमद मचमचिया जदो, सक्कियो फिरग समाज । चट उग-  
णीसं चोपने मतो कियो महाराज ।—जुगतीदान देथो

मचमचणहार, हारो (हारो), मचमचणियो—वि० ।

मचमचिओडो, मचमचियोडो, मचमचयोडो—भू० का० कृ० ।

मचमचोजणी, मचमचोजबी—भाव वा० ।

मचमचाट, मचमचाहट, मचमचो—स० स्त्री०—१ मस्ती ।

२ कामातुरता ।

३ आतुरता ।

मचरको—स० पु०—१ किसी भारी अथवा बोझिल वस्तु का दबाव ।

उ०—चहल तिहु लोक चळ सिद्ध आसण चले, हरी ताळी खुली  
सूलहाथा । कमठ पर भार पड छिले रस कचरका, मचरका मेस  
रा हले माथा —र रु

२ धर्पण ।

गुहा०—मचरको मारणी, मचरको लगाणी—घांत बढाने के भाव  
से अपनी ओर से कुछ कहना, चिन्तागारी डालना ।

मचळ, मचळण—स० स्त्री०—१ 'मचळणी', क्रिया का भाव । मन की  
घबराहट ।

२ देखो 'मचळाण' (रु० भे०)

३ देखो 'मचळी' (रु० भे०)

मचळणी, मचळबी—क्रि० अ०—१ किसी वस्तु आदि की प्राप्ति के  
लिए आतुर होना या उद्विग्न होना ।

२ किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जिद्ध करना, हठ करना ।

३ किसी काय के करने या कहीं जाने में इन्कार हो जाना ।

उ०—१ चरखां गडि चक्र मगा मचळै, चरहू धिर थाय पगा न  
चलै, जह हू करि जगम देत जिजा, तन अद्र मतगज रग तिका ।

—मे म

४ चलना ।

उ०—मरि पेटिय सोर महोर हकी, मध्र सूकर बाघ मुखी  
मळकी । मग दीरघ तोप कितो मचळै, उन्मत्त करीगन लागि  
टलै ।—ता रा

५ विचलित होना ।

उ०—दिगंता लों ढोरें मचळ, मन मोरें मुदमुदी । विदातो भक्कोरें  
विसय, विस वोरें बुदबुदी ।—ऊ का.

मचळणहार, हारो (हारो), मचळणियो—वि० ।

मचळिओडो, मचळियोडो, मचळ्योडो—भू० का० कृ० ।

मचळोजणी, मचळोजबी—भाव वा० ।

मचळणी, मचळबी—रु० भे० ।

मचळाण, मचळाण, मचळाट—स० स्त्री०—१ दू, गध ।

रु० भे०—मचळ, मचळण, मचळाण, मचळांद, मचळाट, मिच-  
लाण, मिचलाट ।

मचळी—स० स्त्री०—कैय, वमन ।

मचली—देखो 'माचो' (अल्पा, रु० भे०)

मचळो—वि० (स्त्री० मचळी) १ अप्रिय, जो मचलाहट उत्पन्न करता हो ।

२ अम्ल-युक्त ।

रु० भे०—मिचळो ।

मचाण, मचान—स० पु० [स० मच + हि० आन (प्रत्य०)] वह ऊचा  
आसन या मच जिस पर बैठकर कृषक अपने खेत की रखवाली  
करता है या शिकारी शिकार करता है ।

मचाणी, मचावो—क्रि० स० [अनु०] १ आरम्भ करना, जारी करना ।

उ०—सो उठारै अधीस दलै नाम जोइये आपरा वंभव समेत आधी  
अवनी देर आगे कीवो आपरा वचावण रो उपकार विचारि बडा  
आदर रै साथ भेलियो तो भी महाभूढ बाहणी रै वसीभूत अनेक  
उद्भव मचाइ ऊवट ही बहियो ।—व भा

२ करना, मचाना ।

उ०—सुरां सुरताणा दिल्ली उदैपुरा राणा सुणी । कछवाहा  
चव्हाणा मचाणा रणं कीच ।—हाहा कछवाहा रो गीत  
३ चारो ओर फैलाना, अधिक प्रभावशाली बनाना ।

उ०—१ खिच्यो कुल 'दूदो' अरि खावण, राही दुलह हुवो बळ  
रावण । मारि खळां घर कूक मचाई, चढी जिए बहुवार नचाई ।

—व. भा

उ०—२ दिल्ली रा दळ मे दरोळ देखता ही माहजादा री सेना  
बडे जोर बघी थकी आगे आइ उछाह रै उफाण महाप्रळै मचायो ।

—व. भा

उ०—३ हाथी, चीता, हिरण, लूकही अर छाळीनारिया इत्याद  
सरब जिनावरा नै गघो एक मोटा सिंघासण साथै बैठनै समझा-  
वण लागी—इण जगळ मे की कायदो कानून कोनी । थें सगळें  
रुळपट मचाय राखी है ।—फुलवाडी

उ०—४ जोत रा दरमण व्हेता ई सगळा लोग खम्मा खम्मा री  
एकर फेर हाक मचाय दी ।—फुलवाडी

४ जोर पकड़ाना, तेज करना ।

५ पुष्ट एवं मोटा ताजा करना ।

६ प्रबल एवं उग्र बनाना ।

७ मस्तो में लाना ।

८ अनीति कराना, नाजायज हरकतें कराना ।

मचाणहार, हारो (हारो), मचाणियो—वि० ।

मचायोडो—भू० का० कृ० ।

मचाईजणी, मचाईजबी—कर्म वा० ।

मचणी, मचबी, —अक रु० ।

मचावणी, मचावबी—रु० भे० ।



मचामच—स० स्त्री० [अनु०] 'मचमच' की शब्द ध्वनि जो किसी पदार्थ को दबाये जाने से उत्पन्न होती है।

मचावणो, मचावबो—देखो 'मचाणो, मचावो' (रू भे.)

उ०—१ गाहे गजराजा गुहां, रुहिर मचावै कीच। ज्यारै नवग्रह पाधरा, जे बका रण बीच।—बा दा

उ०—२ तीजणियां हीडा मचावै है, लक लचावै है।—र हमीर मचावणहार, हारो (हारो), मचावणियो—वि०।

मचाविप्रोडो, मचावियोडो, मचाव्योडो—भू० का० कृ०।

मचावीजणो, मचावीजबो—कर्म वा०।

मचीडो—जोर, ताकत।

उ०—ई मुसाफरी में घरा अर गाव रं बीचाळै जगां भोल लेवै है। जगा राज रं गढ रो बडा मचोडा सूं मिलै है।—दसदोख

मचोळ—स० स्त्री०—१ तरंग, लहर, हिलोर।

२ धक्का, आघात, भटका।

उ०—पीठ बढवडात कूरम घटा प्रळै री। मही खडखडात हेजम मचोळां—ग्रशात

३ देखो 'मचोळी' (मह, रू भे)

उ०—लचकै गोडी लागता, मचकै हीड मचोळ। तण दमकै दामणि तरह, भमकै पग रममोळ।—सिवबगस पाल्हावत

मचोळणो, मचोळबो—क्रि० स०—१ विलोडित करना, मथना।

२ विध्वंस करना, तहस नहस करना।

३ भूले के पेंग या भोका लगाना।

उ०—मचकै हीड मचोळता, लचकै भीणीं लक। तन दमकै दामणि तही, मुखडी जाण मयक।—र हमीर

४ भोजन को चवाना।

मचोळणहार, हारो (हारो), मचोळणियो—वि०।

मचोळिप्रोडो, मचोळियोडो, मचोळ्योडो—भू० का० कृ०।

मचोळीजणो, मचोळीजबो—कर्म वा०।

मचोळियोडो—भू० का० कृ०—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ।

२ विध्वंस किया हुआ। ३ पेंग या भोका लगा हुआ (भूला)

४ चयाया हुआ. (भोजन)

(स्त्री० मचोळियोडो)

मचोळो—स० पु०—१ हिंडोला या भूला भूलते समय उस पर इस प्रकार जोर या भटका लगाना जिससे भूले का वेग बढ जाए और वह दोनों ओर अधिक दूरी तक भूले।

२ धक्का, टक्कर।

उ०—१ अर तोपां री गाज हू सेस रा सोसा समेत मकराकर मेखळा मही रं मचोळा लगाया।—व भा

उ०—२ या सुणता ही अणिलपुर री अधीस सेना रा सभार सूं मही रं मचोळा देतो गजनवी री वेग भेलण रं काज जवनेस री राह रोकि ।—व. भा.

३ मोठ (चडस) की लाव खींचने के स्थान का वह ग्राहरी हिस्सा जहा पर बेल सकते हैं और लाव की कीली निकाली जाती है, भोला। ४ मस्ती में भूमने की क्रिया, भूमना।

उ०—दुरद मचोळा दे रह्या, सुभट सचोळा साज। बचां न इण खोळा बिचं, भोळा कथ उठि भाज। भोळा कथ उठि भाज, आज नहि ऊवरा। पा'रो नगर पहाड, बमां जयां विम्भरा।

—सिवबगस पाल्हावत

रू० भे०—मच्छोळो, मछोळो,।

मह०—मचोळ।

मच्च—देखो 'मच' (रू भे)

मच्चक—देखो 'मचक' (रू भे.)

मच्चकणी, मच्चकबो—देखो 'मचकणी, मचकबो' (रू. भे.)

मच्चकणहार, हारो (हारो), मच्चकणियो—वि०।

मच्चकिप्रोडो, मच्चकियोडो, मच्चक्योडो—भू० का० कृ०।

मच्चकीजणो, मच्चकीजबो—भाव वा०।

मच्चणी, मच्चबो—देखो 'मचणी, मचबो' (रू भे)

उ०—वीता अधूरां वार पूरा वेध वच्चए। मेले प्रहार धार सार मार मारं मच्चए।—रा. रू

मच्चु—देखो 'मत्त्यु' (रू भे) (जैन)

मच्छ—स० पु० [स० मत्स्य प्रा० मच्छ] १ बड़ी मछली।

उ०—इक कहत मोद अषाढ, गिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण बीच बाह न तोर।—रा रू

२ ग्राह, मगर।

उ०—मच्छां रं जळजीव जिम, सबजी तरा सदीव। अदतारा धा जीव इम, जस दातारां जीव।—वां दा

रू० भे०—मछ, मछी, माछ, माछु, माछो।

अल्पा०—माछळउ, माछळी, माछलो।

मह०—माछळ।

३ सात गुरु और ३४ लघु मात्राओं का दोहे का एक भेद।

४ छप्पय छद का २३ वां भेद जिसमें ४८ गुरु, ५६ लघु से १०४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। मतान्तर से ६८ गुरु, १२ लघु से ८० वर्ण तथा १४८ मात्राओं का भी माना जाता है।

५ मत्स्य के आकार का हाथ की हथेली में होने वाला एक प्रकार का सामुद्रिक चिह्न जो शुभ माना जाता है।

६ देखो 'मत्स्य' (रू भे)

उ०—मच्छ कच्छ बाराह महमहण। नारसिंह बांमन नारायण।

—ह. र.

यो०—मच्छप्रसवारी, मच्छवेदणी।

वि०—१ प्रबल, शक्तिशाली। २ भीमकाय।

२ देखो 'माछर' (रू भे)

मच्छप्रसवारी—स० पु० यी० [स० मत्स्य+राज० अमवारी] कामदेव, मदन । (डि को)

मच्छर—देखो 'माछर' (रु भे)

मच्छरस—स० पु० [स० मत्स्य+राज० देश] प्राचीन विराट देश का नामान्तर ।

मच्छर—१ देखो 'मछर' (रु भे)

उ०—१ कर थक्के तरवार, म्लेच्छ कर थक्के मच्छर । बरि थक्के बरि हूर, सूर बरि थक्के अछर ।—ला रा

उ०—२ मच्छर और न सग्रहै, भा मछरीका आद । अहै कमघा अगली, विचया हूता बाद ।—रा. रु.

उ०—३ कमघज 'छाहै' कीध कीपियै, माहधरा ऊपर मच्छर । 'धूहड़' हरी ध्रुण खग घारां, सत्र लूटे बलीयो समर ।

—राव छाहा रो गीत

उ०—४ छोडावियो मच्छर 'छाहावत', कलह वार ग्रहे केवाण । मिहंत खेत भीन-पुर भागो, चौरग साधत सीह चहुवाण ।

राव तीडा रो गीत

२ देखो 'माछर' (रु भे.)

मच्छरमाण—स० पु० [स० मत्स्य+रा० माण] गर्व को मिटाने वाला ।

उ०—ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिळे महादल मच्छरमाण । तारां वतलायो तीहावत', डागियां ताय दीनवियै नाग ।

—राव मलखा रो गीत

रु० भे०—मछरमाण ।

मच्छराळ—देखो 'मछराळ' (रु भे)

उ०—'जसवत' मढोवर दिग्गपाळ, 'महेस' कळोवर मच्छराळ ।

—गु रु व

मच्छराळी—देखो 'मच्छराळ' (अल्पा, रु भे)

उ०—दाढाली बाढाली बघै, रढाली करता दीड । मानै नही मच्छराळी, मझाली मरम्म ।—घ व ग

(स्त्री० मच्छराळी)

मच्छरि—१ देखो 'माछर' (रु भे)

२ देखो 'मछर' (रु भे)

उ०—पाहाहै 'मादूळ', भाजि चहियो मिडवायो । चीतोडी चतुरग, भीम दल मेले आयो । बलि बोले सीसोद, मूछ वळ घालै मच्छरि । अर्भ-दान आपियो, भाव पैलालि चिनी करि ।—गु रु व

मच्छरियो—१ देखो 'मछरीक' (अल्पा, रु भे)

२ देखो 'माछर' (अल्पा, रु भे)

मच्छरी—१ देखो 'मछर' (रु भे)

उ०—भोग दिखाडइ भुवि घणां, विधि विधि तणा विचित्र । मूछ समारइ मच्छरी मन्मथ-केग मिथ ।—सा कां. प्र

२ देखो 'माछर' (रु भे)

मच्छरीक—देखो 'मछरीक' (रु. भे)

मच्छरूप—स० पु० [स० मत्स्य+रूप] मत्स्यावतार, मच्छ अवतार ।

उ०—मच्छरूप करि वेद उधारधा, ऐसा अचिरज किया । भक्ति हेतु हरि आप पधारधा, ले ब्रह्मा कूं दीपा ।—ह. पु वां  
रु० भे०—मछरूप ।

मच्छरंत—देखो 'मछरंत' (रु भे)

मच्छवा—देखो 'मछवा' (रु भे)

मछवो—देखो 'मछवो' (रु भे)

मच्छवेदणी—स० स्त्री० [स० मत्स्य+वेदिनी] मछली पकड़ने का काटा ।

मच्छावतार—देखो 'मछावतार' (रु भे)

मच्छिया—स० स्त्री० [स० मक्षिका] मक्खी ।

मच्छियारी—देखो 'मछियारी' (रु भे)

मच्छी—स० स्त्री० [स० मत्स्य] प्रमिद जल जतु, मछली । (डि को)

उ०—आंणि अछी गति ओझळै, ज्यू मच्छी जळ माई । निजरि तिरच्छी न्हाळता, वरछी सी वह जाय ।—र हमीर

पर्याय—अडज, अनमिख, अलूकी आतमासी, इदुजयकर, कुळ-खय, कुसळी, खडपीण ग्रहवार, चंचळ, जलआवार, जादस, भल, तिम, थिरजीह, पयनिग्त पाठीन, प्रथुरोमा, वैसारिण, मकर, मोन, वारचर, वारज, विसार, वैसारण, सवर, सफर, सलकी, मिघचारी, मिघचोरी, सुकसार ।

यो०—मच्छीकेतु, मच्छीमार ।

रु० भे०—मछो, मछी, माछि, माछिणी, माछी ।

अल्पा०—मछली, मछली, माछलडी, माछली, माछिळी ।

मह०—मच्छ, मळ, माछ, माछळी, माछली ।

२ बाह, जघा आदि की मास पेशी ।

३ उक्त मास पेशी का पकाया हुआ मास ।

४ मच्छी के आकार का सोने चांदी का लटकन जो आभूषणो मे लगाया जाता है ।

५ पैर में धारण करने का महिलाओं की एक आभूषण विशेष ।

मच्छीकेतु—स० पु० [स० मत्स्यकेतु] कामदेव ।

रु० भे०—मछीकेत ।

मच्छीमार—मच्छी पकड़ने का व्यवसाय करने वाला, मछुआ ।

उ०—पातर भगतण पैव, परम मन मे सुख पाई । मिळियां मच्छी-मार, करे ज्यू मोव कमाई ।—ऊ का

रु० भे०—मछलीमार ।

मछदर, मछदरनाथ, मछदू, मछद्वानी, मछद्वो—स० पु० [स० मत्स्य+इन्द्र] नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध नवनाथो मे एक, मत्स्येन्द्रनाथ ।

उ०—भाए तेजगीरां तीरां विध्या मेंघा जै भाखा, जाण मछद्वानी जोग मत्ती रो बोधाण जो भार । जम्मीरा जीवीरा बीरा बीरभद्र जेम, जोयजो 'हम्मीरां' भ्रेम 'खेम' रो जोधार ।—हुकमीचद विडियो

रु० भे०—मछिंदर, मछेंदर, मछेंद्र, माछंदर, माछद्र ।

मछ—१ देखो 'मच्छ' (रु भे )

उ०—१ पड़े कौट उर टकर, पड़े गज धकें अपारा । जळ धारो मछ जेम, घसै सामो खग धारो ।—सू प्र

उ०—२ मणिबध तीन मणि जब प्रमाण । मछ कच्छ कुम गज रथ महाणि ।—सू प्र

२ देखो 'मच्छी' (मह, रु भे )

उ०—खळकै लहर समद जळ खारी । दाभै मछ कछ जीव दुए ।

—सांवळदान कवियो

३ देखो 'मत्स्य' (रु भे.)

मछकणो, मछकवो—देखो 'मचकणो, मचकवो' (रु भे )

मछकणहार, हारो (हारो), मछकणयो—वि० ।

मछकाडणो, मछकाडवो, मछकाणो, मछकावो, मछकावणो, मछकावघो—प्रे० रु० ।

मछकियोडो, मछकियोडो, मछकयोडो—भू० का० कु० ।

मछकीजणो, मछकीजवो—भाव वा० ।

मछकाणो, मछकावो—देखो 'मचकाणो, मचकावो' (रु भे )

मछकायोडो—देखो 'मचकायोडो' (रु भे )

(स्त्री० मछकायोडो)

मछकावणो, मछकावघो—देखो 'मचकाणो, मचकावो' (रु भे )

उ०—दूजो मारी देखसी, सारी साधणियाह । म्यारांमजी मछकावतां हीडा रो तणियाह ।—मयारांम दरजी रो वात

मछकावियोडो—देखो 'मचकायोडो' (रु भे )

(स्त्री० मछकावियोडो)

मछकियोडो—देखो 'मचकियोडो' (रु भे.)

(स्त्री० मछकियोडो)

मछकूर—देखो 'मचकूर' (रु भे )

उ०—मारु मो मनुहार को, पीवो दारु पूर । माफ करावो म्यारजी, मरुधर रो मछकूर ।—मयारांम दरजी रो वात

मछगंधा—देखो 'मत्स्यगंधा' (रु भे )

मछगात—वि० [स० मत्स्य+गात्रम्] महाकाय, बडे शरीर वाला ।

मछट्यळ—स० स्त्री०—'निसाणी' छद का एक भेद विशेष, जिसमे प्रतिचरण २६ मात्राए होती हैं । १३ ओर १६ मात्राओ पर यति एव अंत मे दो कुरु होते हैं ।

मछपति—स० पु० [स० मत्स्यपति] वरुण देव । (नां मा, ह ना मा )

मछपळ—स० पु० [स० मत्स्य+पाल] समुद्र । (अ मा )

मछचारस—स० स्त्री० [स० मत्स्य+द्वादशी] अगहन मास के शुक्ल पक्ष को द्वादशी ।

मछर—स० पु० [स० मत्सर] १ गर्व, अभिमान ।

उ०—१ अजमेरा ऊतरै, कमळ कूं बोल चढावै । मेलिह पराक्रम

मछर, कुळह काळख लगावै ।—गु रु व.

उ०—२ वाता विसतारे वणै, सठ भागै मरवग्य । मूग ग्रहे छाई मछर, तीखो मिलियां तग्य ।—बा. दा.

उ०—३ 'सूर' रो दिली दरगाह असहा सिरै, हियै चढ प्रवाहा लियण हिलियो । मूहा सैदां तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैदां मुहा भाण मिलियो ।—देवराज रतनू

२ ओज, तेज ।

उ०—अं अखीयात कीध 'भासावत, रोदा सू तेवढे रिण । व वधियो वरघापण वढता, पोरस मछर जवानपण ।

—दुरगादास भामकरणीत रो गीत

१ जोश, साहस ।

उ०—वदन तेज कळपत रो वयळ बाढव वणै, ऊफणै क्रोध पोरस भ्रमांमो । मंडांणो हेक राजा वणै मछर सू, साहजादा दुहु तणै मांमहो ।—रुघो मुहती

४ शौर्य, पराक्रम ।

उ०—इण भाति पकति वंठा देवगण आप आपरा दुख रो विवेद कियो । इतरा मांहे छिलत मछर सूर पूर रो उजाघर केवियां रो काळ सत्रा रो साल, बोलिया इद महाराज ।—मा बचनिका  
५ क्रोध, कोप, गुस्सा ।

उ०—१ दसैं अहर जमदूत, मछर छिलत मेलियो । कूभे बाळो कूत, हेमै वप सासर हुवो ।—नैणमी

उ०—पूरव पळम घरा दध-गारु, दिखण तणो खूटो बळ दारु । मक उत्तराघ घरा तो सारु, मछर घरै किए ऊपर मारु ।

—चतुरो मोतोसर

६ शत्रुता ।

उ०—मनै सैज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मछरीक भेले मछरमाण । 'सूर' भय ताहरै कमय भाखाडनिघ, साधरै पापर सुये 'सुरताण' ।—दुरमो आढो

७ डाह ईर्ष्या ।

८ मलीनता कलुपता ।

९ प्रमाद आलस्य ।

१० देखो 'माछर' (रु भे )

रु० भे०—मछर, मच्छर, मच्छरि, मच्छरी, मछरि ।

मछरगुर—वि० [सं० मत्सर+गुरु] १ वीर शिरोमणि ।

२ महा अभिमानो, गर्वीला ।

मछरणी, मछरवो—क्रि० सं०—१ गर्व करना, अभिमान करना ।

घ०—ते चात्या चिति हरखता, मत्तायत मछरति । बइठा दीघद वारणि, हाक दीइ हलकति ।—मा का प्र

२ कोप करना, क्रोध करना ।

उ०—रिम गजण सिध मछरियो राजा, जो जिण ठाम स बुवा जुवा । भाला चौडा समा मळहळै, हालाहर हैकप हुवा ।—द. दा

३ आलस्य करना, प्रमाद दिखाना ।

४ आनन्द करना ।

मछरणहार, हारी (हारी), मछरणियो—वि० ।

मछरिओडो, मछरियोडो, मछरचोडो—भू० का० कृ० ।

मछरीजणो, मछरीजवो—कर्म वा० ।

मछरमाण—देखो 'मच्छरमाण' (रु भे )

उ०—मनै सँज कतारिया महल सुख माळिया, मछर मच्छरीक मेले  
मछरमाण ।—दुरसो आडो

मछरा—स० पु० [व व] आनन्द, मोज ।

उ०—१ खुद तो लोगा री कमाई माथै मछरा करो अर म्हनै इछा  
परमाण मागगा री आदेस करो ।—फुलवाडो

उ०—२ वै कैवै के राजा री देह मे कोई पीढ अर कळेस ऊपजै  
अर रया साजी सूरि सुख चैन सू मछरा करै तो उण रा राजा  
पणा में धूळ ।—फुलवाडो

मछराळ—वि० [स० मत्सर+आलुच्] (स्त्री० मछराळी) १ वीर,  
बहादुर ।

उ०—१ माभी 'मेघ' हरो मछराळ, हूतलमल्ल हाथाळ । जैत्र-  
वादी जमजाळ, केबिया री काळ सूर घोर सप्पखाळ ।—ल पि

उ०—२ 'रामो' लुघ 'माहव' री मछराळ । रमै खग झोट खळा  
विकराळ ।—सू प्र

२ गर्वोला, अभिमानी ।

उ०—१ मुह रावत मछर भयकर माडण, महि 'महळावत' मछ-  
राळ । 'पातावत' 'परभुमीह' पचाइण 'रूपा' जीपण रिएताळ ।

—गु रू व

उ०—२ लखपति विरदाळ कळहिल काळ, असुरा काळ खत्री अड-  
साळ । मिणिघर मछराळ, भीच भुजाळ, इळ खपाळ पखा  
अजुआळ ।—ल पि

३ कोप करने वाला, क्रोध करने वाला ।

४ योद्धा ।

५ द्रुतगामी, तेज गति वाला ।

उ०—खड्गरू वहुइ गति नंदघोख, मछराळ अचप्पळ पमण मोख ।  
अगराण पृथि आह्वि अबीह, सुजडाहय चडियउ करमसीह ।

—रा ज सी

रु० भे०—मछराळ ।

अल्पा०—मछराळी, मछराळी ।

मछराळी—देखो 'मछराळ' (अल्पा, रु भे )

उ०—मछराळा मूछाळ, वेहद हद वेढीगारा । सुर भगा लख वार,  
प्रथी इक छात्रप सारा ।—मा वचनिका

मछरि—देखो 'मछर' (रु भे )

उ०—१ कमधज्ज गरजि कठीर जिम, महाकोप चडियो मछरि ।

—गु रू व

उ०—२ साक्षिया वीरमदेव सभ्रम, मछरि चडि रिए मोर । कर  
जोडि बीवी तोडि ककण, नयण नाखै नीर ।

—चादा वीरमदेश्रोत मँडतिया री गीत

मछरियोडो—भू० का० कृ०—१ गर्व किया हुआ, अभिमान किया हुआ  
२ कोप किया हुआ, क्रोध किया हुआ ३ प्रमाद किया हुआ  
४ आनन्द किया हुआ, मस्त ।

(स्त्री० मछरियोडो)

मछरीक—स० पु०—चोहान राजपूतो के लिये प्रयोग किया जाने वाला  
सम्मान सूचक शब्द ।

उ०—हुई दळ मूगळ चाढत हीक, महावळ राड करै मछरीक ।

—सू प्र

रु० भे०—मछरीक ।

अल्पा०—मछरियो ।

मछरूप—देखो 'मछरूप' (रु भे )

उ०—मोरां तू हीज मछरूप, तू सख मवाला ।—केमोदास गाडण  
मछरैत [स० मत्सर+रा० प्र० एत] जवरदस्त, शक्तिशाली ।

उ०—नामैत घेंत मिळिया निजोड, कामैत भीच नखतैत कोड ।  
वानैत कौडि अग्रैत वीर, परचैत जाण मछरैत पीर ।

—मा वचनिका

रु० भे०—मछरैत ।

मछळणी, मछळवो—देखो 'मछळणी, मछळवो' (रु भे )

मछळाण, मछळांद, मछळाट—देखो 'मछळाण' (रु भे )

उ०—तठा उपरायत खरगोम होसनाक वणावै छै । मछळांद  
मिटायजै छै ।—रा सा स

मछळी—१ देखो 'मछळी' (अल्पा, रु भे )

उ०—१ डावर नैण नाचती भवती पूतळिया जाएं दो मछळिया  
रमै नाचै ।—फुलवाडो

उ०—२ जळ से प्रीत करी मछळी नै, विछुरत प्राण तजै । भगा  
की प्रीति लगी नादा से, सनमुख सेळ सहै ।—मोरां

२ देखो 'मछळ' (मह, रु भे )

मछळीमार—देखो 'मछळीमार' (रु भे )

मछळा—स० स्त्री० [स० मत्स्य] मछळी पकडने व बेचने का व्यवसाय  
करने वाली जाति विशेष ।

रु० भे०—मछळा ।

मछवो—स० पु०—मछळा जाति का व्यक्ति, मछळी को जाल द्वारा पकडने  
का कार्य करने वाला व्यक्ति ।

रु० भे०—मछवो ।

मछाचर—स० पु० [स० मत्स्य+चर] १ छोटे २ जल जन्तु ।

उ०—सुजळ कळा पोडिम झुवरण दान घरिया सकी, ऊजळ पय  
सुरा छट भुजां उनमान । मछाचर दमग वड चात्रगा मागणा,  
समद चद गिरद इद कुवर 'सुनमान' ।—सुनमानसिंह हाडा रीतग

२ वगुला ।

वि०—मछली खाने वाला ।

मछावतार—स० पु० [स० मत्स्यावतार] चौबीस अवतारों में से विष्णु का एक अवतार, मत्स्यावतार ।

रू० भे०—मच्छावतार, मछ ।

मछिदर—देखो 'मछदर' (रू भे )

मछियारी—स० पु० [मत्स्य+रा० प्र० यारी] मछली पकड़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति, मछुआ ।

उ०—राजकवर की बात सुणनै मछियारी डग डग हसियो । हसतो हसतो ई बोल्यो—आ बात म्हारें सोचण री नी है, मछ-लिया रें सोचण री है ।—फुलवाडी

रू० भे०—मच्छियारी ।

मछी—देखो 'मच्छी' (रू भे )

उ०—तुम भयै तरवर में भई पखिया । तुम भयै सरवर में तेरी मछिया ।—मीरा

मछीकेत—देखो 'मच्छीकेतु' (रू भे )

मछीपटण—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—मछीपटण मनभावती, काचु दियो मिवाइ । प्रीतम पोडै पिलग परि, सुदर डोलें वाइ ।—व. स

मछेदर, मछेद—देखो 'मछदर' (रू भे )

मछेछी—स० स्त्री० (स० मीनाक्षी) एक लता विशेष जिसके पुष्पो की तरकारी बनाई जाती है । इसके फल मछी के आकार के होते हैं ।

मछोदरी—स० स्त्री० [स० मत्स्य+उदर+रा० प्र० ई] मत्स्य के उदर से उत्पन्न होने वाली, सत्यवती ।

वि० वि०—देखो 'मत्स्यागधा' (रू भे )

मछोळी—देखो 'मचोळी' (रू भे )

उ०—मदवी को मछोळी हाथी की हाल, तीजणीया को तुररी । रूप की मुसाल ।—मयाराम दरजी की बात

मजकूर—वि० [अ०] १ पूर्वोक्त, जिक्र किया हुआ ।

स० पु०—१ विवरण ।

२ चर्चा, जिक्र ।

३ पूर्व लिखित विवरण, उल्लेख ।

उ०—तिण ववन रें विरुद्ध चाल न चलै, ज्यू तवारीख में मजकूर छै ।—नी प्र

४ वृत्तान्त, हाल, वार्ता ।

उ०—तद बादसाह कही वहा काम काज का मजकूर किसमें पूछै ।

—गौड गोपाळदास की वार्ता

५ सलाह, मन्त्रणा ।

६ वर्तमान, हाजिर ।

उ०—हुसग साह वेटा स्याम करां में छै । तिकी आपरें वेटा नू कही थी सी मजकूर—नी. प्र.

मजघोसा—देखो 'मजुघोसा' (रू भे )

मजण—देखो 'मजण' (रू भे )

मजणी, मजवी—देखो 'मजणी, मजवी' (रू भे )

मजणहार, हारी (हारी), मजणियो—वि० ।

मजिओडी, मजियोडी, मज्योडी—मू० का० कृ० ।

मजीजणी, मजीजयो—भाव वा० ।

मजदूर—स० पु० [अ० फा० मजदूर] (स्त्री० मजदूरण, मजदूरणी) बोझा ढोने वाला व्यक्ति, मजदूरी करने वाला, श्रमिक ।

रू० भे०—मजूर ।

अल्पा०—मजूरडी, मजूरियो ।

मजदूरी—स० स्त्री० [अ० फा० मजदूरी] १ मजदूर या श्रमिक का कार्य ।

२ वह धन जो किसी नियत कार्य या श्रम के लिए दिया जाता हो, पारिश्रमिक ।

३ जीवन यापन के लिए किया जाने वाला कोई छोटा मोटा कार्य ।

रू० भे०—मजूरी ।

अल्पा०—मजूरडी ।

मजन—देखो 'मजण' (रू भे )

मजनू—स० पु०—अरब का एक प्रसिद्ध 'कैम' नामक किशोर जो लंला नामक किशोरी पर आसक्त होकर उसके प्रेम में पागल हो गया था ।

वि०—प्रेम में दीवाना, प्रेमीन्मत्त ।

मजब—१ देखो 'मजहब' (रू भे )

२ देखो 'मुजब' (रू भे )

मजबी—देखो 'मजहबी' (रू भे )

मजबूत—वि० [अ० मजबूत] १ दृढ़-पुष्ट ।

२ दृढ़, ठोस ।

उ०—दळ वळ सू घेरो दियो, प्रवळ हुमाऊ पूत । गँलोता चीतोड गढ, मिळ कीधो मजबूत ।—बा दा

३ सबल, बलवान ।

उ०—कुल रजपूत मजबूत करतार कीनों, रग मजबूत मजबूत रज-पूती में ।—ऊ का

४ अटल, स्थिर ।

उ०—चित सू आगम चितवै, आ मजबूत उपाध । 'बक' जुहै नह बाँछियो, इण कारण ह्वै आध ।—बा दा

५ स्थायी, पक्का ।

उ०—विदीया साळ रो कमठी सबत् १९०२ फीरच साव अजट रा कै'णा सू लडका न पढावण साळ तठै ई साळ रो कमठी बढी मजबूत वीयो ।—मारवाड की ख्यात

मजबूती—स० स्त्री० [अ० मजबूती] १ पुष्टता ।

२ दृढ़ता ।

३ स्थिरता ।

४ बल, शक्ति ।

मजदूर-वि० [अ०] विवश, लाचार ।

मजदूरी-सं० स्त्री० [अ०] विवशता, लाचारी ।

उ०—घासी म्हारी फेर विगडगी । मथी दरद सू फाटै । फगत दवाव रै कारण काम री मजदूरी ।—फुलवाडी

मजमान—देखो 'मिजमान' (रू भे )

मजमानदारी, मजमानी—देखो 'मिजमानी' (रू भे )

मजमून-सं० पु० [अ० मजमून] १ विषय, इवारत ।

उ०—फेर इण मजमून री गीत ।—द दा

२ लेख, विवरण, लिखावट ।

उ०—मजमून पहला—तू वंदी निरवळ छै प्रभू जोरावर छै तिण तो नू बडो कियो छै । मजमून बीना विचार कर गरीवां ऊपर प्रभू री सोप रै उतावळ सू काम मत कर ।—नी प्र

रू० भे०—मजमून ।

मजमो-सं० पु० [अ० मजम] १ बहुत से लोगो का समूह, जन समुदाय की भीड़ ।

उ०—वो जिए वगत उठै पूगो, लाठा सामियांना हेटै पूरी मजमो जमियोही हो ।—फुलवाडी

२ वह स्थान जहा लोगो की भीड़ हो ।

मजराफ-सं० पु०—एक वाद्य विशेष । (ब स)

मजल—देखो 'मजिल' (रू भे )

उ०—१ जे कोई ही चैन परलोक नै अठारो चाहे तिको विगैर मदद ऊठा विचारा री मजल नै पहुँचै ।—नी प्र

उ०—२ मल्हार री कूच करायो मजल एक डेरा कर मोनू सीख दीवी ।—मारवाड री ख्यात

उ०—३ उठा सू हालिया फोज बडी घणी सो मजल छोटी हुवै । महनो एक मारग मे लगायो ।—गोड गोपालदास री वारता

उ०—४ सीहाजी साम्ही चलायो नै कही—दिन री दिन डेरी जठै हुवै तठा री खबर म्हानु मेलजो । नै वह मजल दस पांच सीहाजी भेळा हुवो ।—मारवाड री ख्यात

उ०—५ माहाराज रै समईयै री खबर हुई । आ जाणै छै, लोक राजा नू मजल पोहचावण नू गया छै, राणी दहड सती हसी, अर 'नरसव' छोटी छै ।—राजा नरसिंघ री बात

मजलस, मजलिस-सं० स्त्री० [अ० मजलिस] १ सभा ।

उ०—ऐसी विध भुजाई की तैयारी करि हवालगीरू नै अरज गुजराई । तिस वखत खिलवत के लोगू के बीच मजलस बणवाई ।

—सू प्र

२ महफिल, नाच रंग ।

उ०—विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरबार आया । मजलस हुई । साथ मे अमल पाणी री मनवाग हुवै छै । विचित्रकुमार री नजर ओल्लगुवां माही छै । ओल्लगुवा पण हुलनै गावै छै । रवाव-सारगी, डोल-मजरी बाजै छै ।—पलक दरियाव री बात

३ नाच रन का स्थान ।

रू० भे०—मजलेस ।

मजलिसी-वि०—१ मजलिस मे बैठने वाला ।

२ मजलिस सम्बन्धी ।

मजलेस—देखो 'मजलिस' (मह, रू भे )

उ०—सुकवि देख सभरै, कोड उच्चरै विरहा । रीत 'अजन' राठोड, जोड लखि हृद समदां । वासिव घर मजलेस, नेस लखि ईम परक्खो । 'अभै' जिसो नर अवर, राज घर कुवर निरक्खो ।

—रा रू

मजहब-सं० पु० [अ० मजहब] १ धर्म, दीन ।

उ०—जनाजा सू उण री करणी रा वारा में पूछताछ करै कै धारी रव कुण है, थारी मजहब कांइ है ।—फुलवाडी

उ०—२ अरथ कर नवा फुरमाण री आयता, लिया कर साह रै कान लागै । कहै मखदूम जुग हेक मजहब करी, 'जसी' हिन्दू-धरम मदत जागै ।—नरहरदास बारहठ

२ सम्प्रदाय, पथ, मत ।

रू० भे०—मजब ।

मजहवी-वि० [अ० मजहवी] १ धार्मिक ।

२ मजहब से सम्बन्धित ।

३ साम्प्रदायिक ।

रू० भे०—मजवी ।

मजाक-सं० स्त्री० [अ० मजाक] १ हसी ठट्टा, दिलगी, हास परिहास, मखौल ।

उ०—म्हारै घकै तो फगत काम होवणी चाहीजै । आप मजाक मे ई हुकम फरमाय दियो तो अर्व वदो तो दोनू टक लीद ई जोखेला । —फुलवाडी

२ तिरस्कार ।

फ्रि० प्र०—उडाणी, करणी, सहणी ।

रू० भे०—मजाख ।

मजाकियो—देखो 'मजाकी' (अल्पा, रू भे )

मजाकी-वि०—मजाक करने वाला, हसी ठट्टा या दिलगी करने वाला ।

उ०—काडै दोसण कायवां, बाता दिए विगोय । पूछै अरथ रु पह-लिया, सूव मजाकी मोय ।—वा दा

रू० भे०—मजाखी ।

अल्पा०—मजाकियो ।

मजाख—देखो 'मजाक' (रू भे )

मजाखी—देखो 'मजाकी' (रू भे )

मजाज—देखो 'मिजाज' (रू भे ) (डि. को)

मजार-सं० पु० [अ० मजार] कब्र समाधिस्थल ।

उ०—इमान मा उत्पत्ति जे, नोज मजार निवेस । कमाल पयपे मूळरज, तास न कोई वेस ।—नैणसी



२ देखो 'मध्य' (रु भे)

मजारी—देखो 'मारजार' (रु भे)

मजाल—सं० म्जी० [अ०] १ शक्ति, सामध्य ।

उ०—अर जो अं पगा ऊमा हुवं तो चोरी हुवं इसी कै री मजाल छै ।—राजा भोज अर खापर चोर री बात

उ०—२ तरै रजपूते कह्यो—मजाळ छै । पछै उग्रसेन नु सीवाणा री विचार कियो कह्यो तोड दियो, सु उठै जा ।

—राव चद्रसेन री बात

२ हीसला, हिम्मत ।

उ०—आप उरणै इत्ती मार्य नी चाहता तो उण री काई मजाळ के घर घर यू वेळ वाता बकती फिरै ।—फुलवाडी

मजासणो—सं० पु० [सं० मसि—आसनम्] स्याही रखने का पात्र, दवात ।

उ०—वो धम धम नीचै उतरियो । पगाथिया पर मेलियोडो मजासणो पग री ठोकर सू ऊधो हुय यो । अर इण अपमान सू वै री मरीर टुकड़ा टुकड़ा हुयगयो ।—वरसगाठ

रु० भे०—मजासणी, मजीयासणी, मज्याणी, मज्यासणी ।

मजाह—देखो 'मध्य' (रु भे)

उ०—वार वार वावरै, सार ऊपरै सनाहा । बीज जाण वादळे मिलै ऊछळै मजाहा ।—रा रु

मजिस्टर, मजिस्टर, मजिस्ट्रेट—सं० पु० [अ० मजिस्ट्रेट] फौजदारी अदालत का दण्डनायक, न्यायाधीश ।

मजिस्ट्रेटी—सं० स्त्री०—मजिस्ट्रेट का पद या अदालत ।

मजीठ—सं० स्त्री० [म० मजिठा] १ पहांडी क्षेत्र में पाई जाने वाली एक लता विशेष जिसके सूखे डठलो व जड़ को उवालकर गहरा लाल रंग बनाया जाता है । वैद्यक में इस लता के डठलो आदि का प्रयोग अनेक रोगों में होता है ।

उ०—घण रत छूटत फूटत घाट । मजीठ कि जाणि दुळै रंग माट ।

—सू प्र

२ लाल रंग ।

३ लाल रंग का घोड़ा जो शुभ माना जाता है । (शा हो)

वि०—मजिठा के रंग का, लाल रंग का, रक्त वर्ण का ।

उ०—वदन मजीठ रूप विकराळा, पमगां चढै पूर पखराळा ।

—सू प्र

रु० भे०—मजीठ, मज्जीठ ।

अल्पा०—मजीठी ।

मजीठउ—देखो 'मजीठी' (अल्पा, रु भे)

उ०—तुम्ह सु लागत नेहलउ, जाण मजीठउ राग, पट्टकूल फाटै धके, रहै आगा सु लागो रे ।—प च चो

मजीठियो—मजीठ के रंग के समान रंगदार कपड़ा विशेष ।

वि०—मजीठ के रंग का, मजीठ सबधी ।

मजीठी—वि०—१ मजीठ का, मजीठ सबधी ।

२ लाल, रक्त वर्ण ।

३ देखो 'मजीठ' (अल्पा, रु भे)

रु० भे०—मजीठी ।

मजीठी—वि० (स्त्री० मजीठी) १ मजिठा के रंग का, लाल रंग का, रक्त वर्ण का ।

उ०—कामा काम कमधज दीठो, पलका अनर अमी पइठो । रत्ता लोचन गुल मजीठी, आवि सिंघासण सिंघ बइठो ।—गु रु व  
सं० पु०—मजीठ के रंग से मिलते जुलते रंग का घोड़ा विशेष ।

(शुभ)

रु० भे०—मजीठ, मज्जीठी, माजिस्टो ।

मजीत, मजीद—देखो 'मसजिद' (रु भे)

मजीर—देखो 'मजीर' (रु भे)

२ देखो 'मजीरा' (मह, रु भे)

उ०—एक इकतारी आयो, डोलक अर मजीरा मगवाया ।

—दसदोम

मजू—देखो 'मजूस' (रु भे)

मजूर—देखो 'मजदूर' (रु भे)

उ०—१ तद कुवर कही रै एक माणम म्हारी तै पासं मजूर राखें तो राखा ।—चौवोली

उ०—२ सु सुपीयारी आयण मजूरणी रो वेस करनै मार्य घडी ले नीसरी ।—नैणसी

(स्त्री० मजूरण, मजूरणी)

मजूरडी—देखो 'मजदूरी' (अल्पा, रु भे)

उ०—कारी कुटका वरसाळै मे, टळै ऊटा मजूरडी । डोली पर आगळी देवण, माडण खूब खजूरडी ।—दसदेव

मजूरडी, मजूरियो—देखो 'मजदूर' (अल्पा, रु भे)

(स्त्री० मजूरडी)

मजूनी—देखो 'मजदूरी' (रु भे)

उ०—१ वेल बघावो भावै घोडा बघावो, चाडै करावो मजूरी ।

—मीरा

उ०—२ खरी मजूरी कर अर खरा रिपिया ले । यू ओजी ताक्या तो बात नी वर्ण ।—फुलवाडी

उ०—३ सील अर साहम रै मागै मरदानगी सू मजूरी करै, आपरी टापरी रुखाळे ।—दसदोम

मजूस—देखो 'मजूसी' (मह, रु भे)

उ०—गैणा गांठा सू सेंठी मजूस भरनै वा रामदुवारा कानी वहीर वही ।—फुलवाडी

मजूसी—देखो 'मजूसी' (रु भे)

मजेज—क्रि० वि०—१ शीघ्र, तुरत ।

२ देखो 'मिजाज' (रु भे)



उ०—१ तुल वाद बरोबर राज तेज । महाराज आप बघतं मजेज ।  
—सू प्र.

उ०—२ समाधान री तिएण समै, जिय सह सवयो न जेज । प्यारी  
नह जावा परत, मत घर मान मजेज ।—र हमीर

उ०—३ ढळकता ढाल मदघर घजा, घंट घोर अग्राज घण ।  
चढिया मजेज होता चमर, तेज पुज 'अगजीत' तण ।—सू प्र

मजेदार—वि० [फा० मज दार] १ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

२ आनन्द देने वाला ।

मजेदारी—सं० स्त्री० [फा० मज + दारी] १ स्वाद, जायका ।

२ आनन्द, मजा ।

मजरी—वि० (स्त्री० मजरी) अच्छी तरह, सुविधापूर्वक, सतोषजनक ।

उ०—जे कोई टीका-टमका करै, माळा-मिणियाँ फेरै, पोथी पानढी  
उघाहें वो आपरो मजरी घाकी धिका लेवै ।—दसदोख

मजो—सं० पु० [फा० मज] १ किसी कार्य करने से आने वाला आनन्द,  
लुत्फ, मोज, मस्ती ।

उ०—१ लाफसीर घीरो धूवो नूती कर दियो है । हाती भर हरख  
रो मजो ले लियो है ।—दमदोख

उ०—२ जद ई सोखी नाई मे ही मजो नी आवै, गजो ऊपरली  
गळी जावै है ।—दसदोख

उ०—३ रात रा कुळवै-कुळवै काकडिया रा ठोरी दे आवै । गधो  
तो थोडा दिना मे मुस्तड न्हैगो । मजो वणियो पण वणियो ।

—फुलवाडी

क्रि० प्र०—आणो, करणो, देंगो, वणणो, लाघणो, लूटणो,  
लेवणो, लैणो, होणो ।

मुहा०—१ मजो आणो=आनन्द होना, सुख मिलना, मस्ती आना ।  
२ मजो किरकिरी होणो=सुख मे व्यवधान पडना, कोई आनन्द  
का प्रसंग चल रहा हो वहा एकाएक दुख की बात होना । रग मे  
भग पडना ।

२ खाने-पीने की वस्तुओं से मिलने वाला स्वाद, जायका,  
रस, तृप्ति ।

मुहा०—१ मजा उढावणा=खूब माल-मलीदा खाना, इच्छित  
भोजन करना, मस्ती छानना ।

३ सुख, चैन आराम ।

उ०—कूजडो दुकान मांढनै वजार मे बैठती अर कूजडो ओडो  
लेयनै फेरी लगावती । मजा मे घर रो गुजराण चालती हो ।

—फुलवाडी

४ किसी बात या प्रसंग से होने वाला मनोरंजन, हसी ।

५ तमाशा, खेल ।

६ सैर ।

७ दह, सजा, फल ।

उ०—१ कात्योडी फाळी ऊन, पैसी पूरी कांमळी अर पीळी कांनी

रा केई पट्टडा पुळस अर अदालत हाळानै खील खील'र उढावै है ।  
खून्या नै मजो चला देणो है ।—दसदोख

उ०—२ परणजियां पछें इण रो वट काढूला, आट रो मजो  
बतावूला ।—फुलवाडी

मुहा०—१ मजो चलाणी, मजो चलावणो=दण्ड देना, कोई चोट  
करना, सजा देना, बदला या प्रतिशोध लेना । २ मजो बता-  
वणो=देखो 'मजो चलाणी' ।

८ स्त्री सभोग मे मिलने वाला रति सुख, आनन्द ।

मज्ज—देखो 'मध्य' (रू भे )

मज्जण—देखो 'मजण' (रू भे )

उ०—सुच्छ अमळ तासीर फवै अलि फूटरी । मज्जण पीवण  
मधुर स्वाद मधु घूट रो ।—अज्ञात

मज्जणो, मज्जवो—क्रि० सं०—१ जमीन मे गड्ढा करना, खोदना ।

उ०—पना को तनू येम 'गोपाळ' सज्जै । घरा नेत बघी हय खुर  
मज्जै ।—ला रा

२ देखो मजणो, मजवो' (रू भे )

मज्जन—देखो 'मजण' (रू भे )

उ०—निरमळ जळ जतनइ करी, माहि मिझ कपूर । एक चितई  
अतिसिद्ध घणो, मज्जन दोइ चतूरि ।—मा का प्र

मज्जा, मज्जाव—सं० स्त्री० [सं० मज्जा] १ शरीर की हड्डी के भीतर  
का गूदा जो चिकना और कोमल होता है । (डि को )

२ फलो आदि के अन्दर का गूदा ।

उ०—फुट वानरेण कच नालिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मग-  
ळिक । कुकुम अखित पराग किजळक । प्रमुदित अति गायति पिक ।

—वेलि

३ पौधो के बीच की नस ।

मज्जारस—सं० पु० [सं० मज्जा + रस] बीर्य, शुक्र ।

मज्जीठ—देखो 'मजीठ' (रू भे )

उ०—घरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि । मज्जीठां जिम  
रचवणा, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो मा

मज्जीठी—देखो 'मजीठी' (रू भे )

उ०—मज्जीठें मुहरग, नयण जोती जालनळ । थिक्क वक क्रिम  
लक धोर वाहू डड हस्थळ ।—गु रु व

(स्थी० मज्जीठी)

मज्झ—१ देखो 'मध्य' (रू भे )

उ०—१ माजन बोलावै हू खडी, ऊभी वजारां मज्झ । लाख घरा  
री वसतडी, लागै विरगी अज्ज ।—अज्ञात

उ०—२ मज्झ नदी पाणी मे बैठो । खिण्णो विसाई खायनै ऊभी  
व्हियो ।—फुलवाडी

उ०—३ मज्झ ! मरइ तु हू मरुं, मन ऊमर न मराइ । माघव  
मूकी मज्झ विण, अवरां ऊपरि जाइ ।—मा का प्र.



उ०—१ तुल वाद धरोबर राज तेज । महाराज आप बधर्त मजेज ।

—सू प्र.

उ०—२ समाधान री तिए समै, जिय सह सक्थो न जेज । प्यारी नह जावा परत, मत घर मान मजेज ।—र हमीर

उ०—३ ढलकता ढाल मदघर घजा, घट घोर अप्राज घण । चढिया मजेज होता चमर, तेज पुज 'अगजीत' तण ।—सू प्र

मजेदार-वि० [फा० मज दार] १ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

२ आनन्द देने वाला ।

मजेदारी-स० स्त्री० [फा० मज + दारी] १ स्वाद, जायका ।

२ आनन्द, मजा ।

मजैरी-वि० (स्त्री० मजैरी) अच्छी तरह, सुविधापूर्वक, सतोषजनक ।

उ०—जे कोई टीका-टमका करै, माछा-मिणियो फेरै, पोथी पानढी उघाई वी आपरो मजैरी घाकी घिका लेवै ।—दसदोख

मजो-स० पु० [फा० मज] १ किसी वायं करने से आने वाला आनन्द, लुत्फ, मौज, मस्ती ।

उ०—१ लाफसी'र घीरी धूबो नूती कर दियो है । हातो भर हरख रो मजो ले लियो है ।—दसदोख

उ०—२ जद ई सोखी नाई मे ही मजो नी आवै, गजो ऊपरली गळी जावै है ।—दसदोख

उ०—३ रात रा कुळवै-कुळवै काकडिया रा ठोरी दे आवै । गघो तो थोहा दिनां मे मुस्तड व्हेगो । मजो बणियो पण बणियो ।

—फुलवाडी

क्रि० प्र०—आणो, करणो, देंगो, वणणो, लाघणो, लूटणो, लेवणो, लैणो, होणो ।

मुहा०—१ मजो आणो=आनन्द होना, सुख मिलना, मस्ती आना । २ मजो किरकिरी होणो=सुख मे व्यवधान पडना, कोई आनन्द का प्रसंग चल रहा हो वहा एकाएक दुख की बात होना । रग मे भग पडना ।

२ खाने-पीने की वस्तुओं से मिलने वाला स्वाद, जायका, रस, तृप्ति ।

मुहा०—१ मजा उहावगा=खूब माल-मलीका खाना, इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना ।

३ सुख, चैन आराम ।

उ०—कूजडी दुकान मांडनं बजार मे बैठती अर कूजडी थोडी लेयनं फेरी लगावती । मजा मे घर रो गुजराण चालती हो ।

—फुलवाडी

४ किसी बात या प्रसंग से होने वाला मनोरंजन, हसी ।

५ समाशा, खेल ।

६ सैर ।

७ दड, सजा, फल ।

उ०—१ कात्योडी काळी ऊन, पैसी पूरी कांमळी अर पीळी कानी

रा केई पट्टा पुळम अर अदालत हाळानं खील खील'र उडावै है ।

खून्या ने मजो चखा देणो है ।—दसदोख

उ०—२ परगिजियां पछै इण रो वट काढूला, आट रो मजो बतावूला ।—फुलवाडी

मुहा०—१ मजो चखाणो, मजो चखावणो=दण्ड देना, कोई चोट करना, सजा देना, बदला या प्रतिशोध लेना । २ मजो बतावणो=देखो 'मजो चखाणो' ।

८ स्त्री सभोग मे मिलने वाला रति सुख, आनन्द ।

मज्ज—देखो 'मध्य' (रू मे)

मज्जण—देखो 'मजण' (रू मे)

उ०—सुच्छ अमळ तासीर फवें अलि फूटरो । मज्जण पीवण मधुर स्वाद मधु घूट रो ।—अज्ञात

मज्जणी, मज्जवो—क्रि० स०—१ जमीन मे गड्ढा करना, खोदना ।

उ०—पना को तनू येम 'गोपाळ' सज्जै । घरा नेत वधी हय खूर मज्जै ।—ला रा

२ देखो मजणो, मजवो' (रू मे)

मज्जन—देखो 'मजण' (रू मे)

उ०—निरमळ जळ जतनइ करी, माहि मिस्र कपूर । एक चितई अतिसिइ घणी, मज्जन दोइ चतूर ।—मा का प्र

मज्जा, मज्जाव—स० स्त्री० [स० मज्जा] १ शरीर की हड्डी के भीतर का गूदा जो चिकना और कोमल होता है । (डि को)

२ फलो आदि के अन्दर का गूदा ।

उ०—फुट वानरेण कच नालिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मगलिक । कुकुम अखित पराग किंजळक । प्रमुदित अति गायति पिक ।

—वेसि

३ पौधों के बीच की नस ।

मज्जारस—स० पु० [स० मज्जा + रस] धीर्य, शुक्र ।

मज्जीठ—देखो 'मजीठ' (रू मे)

उ०—घरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि । मज्जीठां जिम रचवणा, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो मा

मज्जीठी—देखो 'मजीठी' (रू मे)

उ०—मज्जीठें मुहरग, नयण जोती जाळनळ । थिवळ वक क्रिम लक थोर वाहू डड हत्यळ ।—गु रू व (स्त्री० मज्जीठी)

मज्भ—१ देखो 'मध्य' (रू मे)

उ०—१ साजन बोलावै हू खडी, ऊमी बजारा मज्भ । लाख घरा री बसतडी, लागै विरगो अज्ज ।—अज्ञात

उ०—२ मज्भ नदी पाणी मे बैठो । खिलेक विसाई ग्वायनं ऊमो ग्हियो ।—फुलवाडी

उ०—३ मज्भ ! मरइ तु हू मरू, मन ऊमर न मराइ । माधव मूकी मज्भ विए, भवरा ऊपरि जाइ ।—मा का प्र.

२ देखो 'मुक्त' (रु. भे)

मञ्जली—१ देखो 'मञ्जली' (रु. भे)

(स्त्री० मञ्जली)

२ देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—रांमा हवइ रुडु हसइ, रुठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदीउ,  
तु घर मञ्जलि आवि ।—मा का प्र

मञ्जि, मञ्जे—१ देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—१ महाजुध मञ्जि छिब्रं अममाण, दुवो हृदमाल लहै  
दइवाण ।—सू प्र

उ०—२ गिए छप्पय चा वरण लघु । त्यां मञ्जे दळ टाळ ।

—र ज प्र.

२ देखो 'मध्य' (रु. भे)

मज्जाणी, मज्जासणी—देखो 'मजासणी' (रु. भे)

मक्त—देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—१ भूप कहै घनि घनि घनि भाई । कळजुग मक्त सतजुग  
अधिकार ।—सू प्र

उ०—२ लीघी दिसि लका-तणी, मक्त हईडा सिउ चपि । रोई-  
रोई नइ रहिउ, थाकु थिरथिर कपि ।—मा का प्र

उ०—३ प्रकुटवध तिण गीतनै, कहै सरव कवियाण । राघव  
जस जिण मक्त रटै, वळै सतारथ वाण ।—र ज प्र

देखो 'मुक्त' (रु. भे)

उ०—वहु गुणवती गोरडी, कठि विलाइ कत । मक्त पाहि तुक्त  
चल्लही, ते कहीइ कुण तत ।—मा का प्र

मक्तताळी—स० पु०—महादेव । (ना. डि को)

मक्तधार—स० स्त्री० [स० मध्य+हि० धार] १ जल प्रवाह की बीच  
की धारा ।

२ अमहाय अवस्था ।

उ०—छांड गयो मक्तधार सांवरो, बिना अकल की जाट ।—मीरां  
३ किसी कार्य अवस्था वात के मध्य की स्थिति ।

मुहा०—मक्तधार में छोडणी—किसी को सकट की स्थिति में  
डालना, इस प्रकार की स्थिति में किसी का साथ छोडना । कोई  
काम धूरा रहने देना, अपूर्णविस्था में छोडना ।

मक्तम—देखो 'मध्यम' (रु. भे)

मक्तमान—देखो 'मिजमान' (रु. भे)

मक्तमानी—देखो 'मिजमानी' (रु. भे)

उ०—पै'तां भे पविपात रं प्रमाण पूगता ही उठी रा भी कायर  
पल-पिचल पिया । अर सूर हता तिके कवर दूदं मक्तमानी मिळाइ  
निहाल किया ।—च भा

मक्तसी—वि० [स० मध्य+रा० प्र० सी] (स्त्री० मक्तली) १ बीच का,  
मध्य का ।

रु० भे०—मक्तली, मज्जली, मक्तली ।

२ देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—विध बलमीक विधान, रचि सखेप कहू गुण राघव । अनह-  
मेर उनमान, मेरहु जेम प्रिथी दत्त मक्तली ।—सू. प्र.

मक्तलोक—स० पु० [स० मध्यलोक] सुमेरु पर्वत के १,०००४० योजन  
की ऊचाई पर मध्यवर्ती लोक । (जैन)

मक्ता—देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—आद पुरख मक्ता अछत छत रा बड आणी ।

—कैसीदास गाहर

मक्तार, मक्तारि, मक्तारं—देखो 'मध्य' ।

उ०—१ बोलै वेद लाभ ग्रह वासत, तीरथ अडसठ सुफळ तयार ।  
निज मन हुलस सापडै जे तर, जस रघुवर सुरसरी मक्तार ।

—र ज प्र

उ०—२ ज्यां जस छत्र तणावियी, माथै जगत मक्तार । जिकै  
छत्रघर जाणणा, सुदतारा सिणगार ।—वा दा

उ०—३ समय सुदर कहै ध्यान इक तेरठ, मेरे चित्त मक्तार ।

—स. कु.

उ०—४ रमै हसै नरिंदर, मक्तार राज मिंदर । करै उछाह  
सुक्किया, पचास सातसै प्रिया ।—सू प्र

उ०—५ कहि तु काळिज माहां धरू, राख हृदय मक्तारि । मूर्कनि  
मूर्की माघवा ! पगलू रखै पधारि ।—मा का प्र

उ०—६ ऐक बार मेल्हो अगद, महि लक मक्तारै । दर्ई हुकम  
अगद दियो, वप ताम वधारै ।—सू प्र

मक्तली—देखो 'मक्तली' (रु. भे)

(स्त्री० मक्तली)

मक्ति, मक्ती—देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—सिव सकती सम भुगती, सिव मक्ति सकति सकति सिव  
मक्ति ।—गु. रु. व

उ०—२ तज मक्कर फक्कर तसू, उर सुध करखै रात अरदं ।  
वस कर दे इद्री अवस, तन मक्ती तप सील तप्पदं ।—र ज प्र

उ०—३ उण अवसर मक्ति 'अमर', अघक घर दूद उठायो । मिळि  
असपति खुरभ, अधिक दळ वळ मक्ति आयो ।—सू प्र.

मक्ते, मक्तेण, मक्ते—१ देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—१ सिव सकती सम भुगती, सिव मक्ति सकति सिव मक्ते ।  
—गु. रु. वं

उ०—२ लिजीयो नदरेण हीरा, सायर मक्तेण रतन नेपती ।

—गु. रु. वं

उ०—३ मासी आ भीड देखी तो आपरा छवूं चीतरां न लेय भीड  
रं मक्ते आय ऊमगी ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मध्य' (रु. भे)

महर्षान—स० पु० [स० मध्याह्न] दोपहर को समय, मध्य दिवस, दिन का मध्य काल ।

उ०—सयणी खेलती महर्षान तळाव आई छे ।—सयणी री बात

मटव—ऐसी बरती जिसके आस पास ढाई कोस (पाच मील) तक कोई बस्ती न हो ।

उ०—केवडउ राज्य चक्रवरति तणउ चउद रत्न, नव महानिवान, सोल सहस्र यक्ष, नवाणु सहस्र द्रोणमुख, अठितालीस सहस्र पाटण, चउवीस सहस्र करवट, चउवीस सहस्र मटव, सोल सहस्र खेटक, चउद सहस्र सवाहन, छपन्न अतरदीप ।—व स

मट—१ देखो 'मटकी' (रू भे)

उ०—तन प्रथक नरां गण तुरग तुड । मट जेम फुटे गज किता मुड ।—रा रू

२ देखो 'मड' (रू भे)

उ०—उलटा मन असमाण कू, मिले श्रिवेणी तट । जन हरीय जाह महीया, सुरति सबद का मट ।—अनुभव वांणी

मटक—स० स्त्री०—१ गति चाल ।

२ मटकने की क्रिया, नाज, नखरा, अदा ।

३ गर्व, अभिमान ।

उ०—झड वागा जाय जिकै नर झूठा, मछर तणी भागवै मटक । कटकां सरणन छूटे कांघाळ, कांघळा छूटे कटक ।

—रतनसिंह चुडावत री गीत

मटकणी, मटकवी—क्रि० अ० [स० मट] १ चलते या बातें करते समय नाज नखरे के साथ शरीर के अंगों का हिलते या लचकते रहना, मटकना ।

उ०—१ एक दिन छानै माखण रा केई लूदा डकार, होठा, मूडा, अर हाथ रे माखण लाग्या थका ई वो मटकती, नाचती, हाथ री आगळी नै हिलावती नानी-मां रे माग्ही अबूझ अजाण बणनै गावण लागी—मैया मोरी में नहि माखण खायो ।—फुलवाडी

उ०—२ निपट बकट छवि नैना अटकै । देवत रूप मदन मोहन को, पियत पियूख न मटकै ।—मीरा

२ नखरे के साथ नेत्र, भृकुटि, कटि आदि का हिलना या लचकना ।

३ गव करना, ऐंठना ।

मटकणहार, हारो (हारी), मटकाणियो—वि० ।

मटकाडणी, मटकाडवी, मटकाणो, मटकावो, मटकावणी, मटकाववी

—प्रे० रू० ।

मटकाडोडी, मटकावोडी, मटकावोडी—भू० का० कृ० ।

मटकीजणी, मटकीजवी—भाव वा० ।

मटकाचर—देखो 'मुठकाचर' । (शेखावाटी)

मटकाणो, मटकावो—क्रि० स०—१ चलते या बात करते समय कुछ नखरे के साथ अंगों को हिलाना या लचकाना, मटकाना ।

उ०—विडतजो, खुसी रैवी रा दोय सबद कैया, हाथ री सीध सू वैठण री सेन करी अर मूडै नै मटका र नस री लटकी करियो ।

—दसदोख

२ नखरे के साथ नेत्र, भृकुटि, कटि, नितम्ब आदि अंगों को हिलाना या लचकाना ।

३ खाद्य पदार्थों को खाना या निगलना ।

मटकाणहार, हारो (हारी), मटकाणियो—वि० ।

मटकायोडी—भू० का० कृ० ।

मटकाईजणी, मटकाईजवी—भाव वा०/कर्म वा० ।

मटकारणी, मटकारवी, मटकावणी, मटकाववी—रू० भे० ।

मटकायोडी—१ चलते या बात करते समय नखरे के साथ अंगों को लचकाया हुआ ।

२ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ ।

३ खाद्य पदार्थ खाया हुआ या निगला हुआ ।

(स्त्री० मटकायोडी)

मटकार—स० पु० [स० मुष्टिका+आकार] १ मुट्टी के आकार की छोटी ककडी । (काचरा)

२ नाज, नखरा ।

उ०—मोह्या मुख मुलकै सहु, तिम निजर तणी मटकार रे ।

—वि० कु

मटकारणी, मटकारवी—देखो 'मटकाणो, मटकावो' (रू भे)

मटकारणहार, हारो (हारी), मटकारणियो—वि० ।

मटकारिओडी, मटकारियोडी, मटकारघोडी—भू० का० कृ० ।

मटकारीजणी, मटकारीजवी—कर्म वा० ।

मटकारियोडी—देखो 'मटकायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मटकारियोडी)

मटकाळो—वि० (स्त्री० मटकाळी) मटकने वाला, नखरे करने वाला ।

उ०—हिरण घसै खुरताळी, मारी आखि लीधी मटकाळी हो ।

—वि० कु

रू० भे०—मटकीलो ।

मटकावणी, मटकाववी—देखो 'मटकाणो, मटकावो' (रू भे)

उ०—अमली ठाकरडा डेरा मे भावै । मोटी घसका घड़ मावा मटकावै ।—ऊ का

मटकावणहार, हारो (हारी), मटकावणियो—वि० ।

मटकाविओडी, मटकावियोडी मटकावोडी—भू० का० कृ० ।

मटकावीजणी, मटकावीजवी—कर्म वा० ।

मटकावियोडी—देखो 'मटकायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मटकावियोडी)

मटकावोडी—भू० का० कृ०—१ शरीर के अंगों को नखरे के साथ लचक दिया हुआ २ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ ३ खाद्य पदार्थ खाया हुआ, निगला, हुआ

मटकी—स० स्त्री० [स० मातंकी] १ मिट्टी का बना जल भरने का छोटा पात्र, छोटा मटका । (डि को)

उ०—१ रूप देख अटकी, तेरी रूप देख अटकी । देह तै बिदेह भई बुरि परि सिर मटकी ।—मीरा

उ०—२ चादणी रें सागं चाद ठारी वरसावणी चालू करदी ।

मटकिया मे पाणी जम जातो ।—फुलवाडी

२ एक प्रकार का लोक नृत्य ।

उ०—नाचण लागी नाचवा, रभ नाच नचाया । ताजण मटकी तोयचा, लख तान लगाया ।—वी मा

३ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

रू० भे०—माटकी ।

अल्पा०—मटली, माटली ।

मटकीली—देखो 'मटकाळी' (रू भे )

(स्त्री० मटकीली)

मटकी—स० पु० [स० मातिक] १ मिट्टी का बना हुआ जल भरने का पात्र विशेष ।

उ०—पय रेत जरद घटका पडै, रटकां गोळा रीठ रा । हाथिया सीम कुटका हुवै, मटकां जाण मजीठ रा ।—सू- प्र

रू० भे०—मट, माटकी ।

[स० मट स्फटि] मटकने का भाव, नाज नखरा ।

उ०—झे भागणिया रा लच्छण है । ईसर री गवर व्है ज्यूं वण ठण'र मटका करती फिरै है ।—रातवासी

रू० भे०—मटरकी, मट्ट, मट्टी ।

मह०—मटली ।

मटखोरी—स० पु०—एक प्रकार का हाथी । (द्विपित)

मटणी, मटवी—देखो 'मिटणी, मिटवी' (रू भे )

उ०—रमिक जिकण जग रटत । मुण रघुवर शघ मटत ।

—र ज प्र

मटणहार, हारो (हारी), मटणियो—वि० ।

मटिओडी, मटियोडी, मटघोडी—भू० का० कृ० ।

मटोजणो, मटोजवी—भाव वा० ।

मटमेली—वि०—मिट्टी के समान रंग वाला, मटमैला ।

मटघोडी—देखो 'मिटघोडी' (रू भे )

(स्त्री० मटघोड़ी)

मटर—स० पु०—१ शरद् ऋतु मे भारत के प्राय सभी भागो मे होने वाला एक मोटा गोलाकार द्विदल अन्न जो अपने पौधे की फलियो मे गिरलता है ।

२ २म अन्न का पौधा ।

रू० भे०—मटर ।

मटरकी—देखो 'मटकी' (२) ।

उ०—जद वा ऊदरी आपरै रूप री वखाण गुणने मिजाज मे मटरका करती घरे आयगी ।—फुलवाडी

उ०—२ मारी ऊमर मड मे बैठी ई मटरका करिया है वाणियां नै टावर को दिया नो ।—फुलवाडी

मटरगन्, मटरगस्ती—स० स्त्री०—१ धीरे धीरे घूमना ।

२ व्यर्थ इधर उधर घूमना ।

मटरमाळा—स० स्त्री०—गले का आभूषण विशेष ।

मटली—देखो 'मटकी' (रू भे )

मटल्ली—देखो 'मटकी' (मह, रू. भे )

उ०—घणा रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरै । मथारु मटल्लै, मही जाण हल्लै ।—रा रू

मटवी—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—पट्टकूल, हीरवडि गजवडि नीलवडि सेवश्रीवडि सोवनवडि जादर पोतीपट साउली अगहल नेत्र रावेठउ सांभारावउ मटवी फूलपगर कणवीरउ पोतिउ, सेत चउवडियउ ।—व स

मटाडी—देखो 'मोतीड' । (शेखावाटी)

मटाणी, मटावी—१ देखो 'मिटाणी, मिटावी' (रू भे.)

२ देखो 'मठाणी, मठावी' (रू भे )

मटाणहार, हारो (हारी), मटाणियो—वि० ।

मटायोडी—भू० का० कृ० ।

मटाईजणो, मटाईजवी—कर्म वा० ।

मटायोड़ी—१ देखो 'मिटायोड़ी' (रू भे )

२ देखो 'मठायोड़ी' (रू भे )

(स्त्री० मटायोड़ी)

मटि—देखो 'माटि' (रू. भे )

उ०—हार महीनि कहि कामिनि, गुणवत छि तू नवि घटि । पर-नारिना वि पयोधरनि, स्परस करिछि सा मटि ।—नळाख्यान

मटिया, मटीया—स० पु०—मटमैला रंग, खाकी रंग ।

वि०—मटमैलै रंग वा, खाकी रंग का ।

उ०—लावी गोळ बांया रो ढीलो कुहती, मटिया गोळ फेंटी ढावै पसवाडै की तीखो अर ढीगो —फुलवाडी

देखो 'माटी' (अल्पा, रू भे )

उ०—हरिया मन की वासना, जाह ताह होसी साथि । अंसै मटीया खान की, चाक चढंगी हाथि ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मटियामेट—स० पु०—विनाश या लोप, पूर्णतः ध्वस्त, विध्वंस, सर्वनाश, विनष्ट, तहस नहस ।

क्रि० प्र०—करणी, होणी ।

मटियाळ—१ देखो 'मटियाळी' (मह, रू भे )

२ देखो 'मटियाळी' (मह, रू भे )

मटियाळी—स० स्त्री०—चिकनी मिट्टी (भूमि) ।

वि०—मटमैली, खाकी रंग की ।

देखो 'मटियाळ' (मह, रू भे )

मटियाळी, मटीयाळी—वि० (स्त्री० मटियाळी) १ चिकनी मिट्टी वाला । (भू-भाग)

उ०—१ घरती हळवा ३० खेत वाठा मटीयाळा ।—नंगुसी

उ०—२ घरती हलवा ६० खेत काठा मटियाळ ।—नैणसी  
२ खाकी रंग का, मटमैला ।

मटियोडी—देखो 'मिटघोडी' (रू भे )  
(स्त्री० मटियोडी)

मटियोनीलो—स० पु०—एक शुभ रंग का घोड़ा । (शा हो.)  
मट्ट, मट्टी—स० स्त्री०—हाथ की तीमरी छगुली जो मध्यमा और  
कनिष्ठा के बीच में है, अनामिका ।  
वि०—प्रिय ।

मट्टकनाथ—एक तीर्थ स्थान का नाम ।

उ०—मट्टकनाथ अरु मानसरोवर, मानलता अरु हांसी । मीरा के  
प्रभु गिरधरनागर, सहज कटै यम फासी ।—मीरा

मटोटणी, मटोटबी—देखो 'मठोठणी मठोठबी' (रू भे )

उ०—थोड़ी देर में अटकती बोल्यो—तकतूली व्हे ज्यू थाकोही  
भलाई दीसू, पाणी रै लगावण सू लूखां टुकड़ा भलाई मटोटू पण  
यें मोत्या सू भरघा म्हारा भवारा नो देख्या ।—फुलवाडी  
मटोटणहार, हारी (हारी), मटोटणियो—वि० ।  
मटोटिओडी, मटोटियोडी, मटोटघोडी—भू० का० कृ० ।  
मटोटोजणो, मटोटोजबी—कर्म वा० ।

मटोटियोडी—देखो 'मठोटियोडी' (रू भे )  
(स्त्री० मटोटियोडी)

मट्ट—१ देखो 'माट' (रू भे )

उ०—तई कुंभ तूटा, छिले छोण छूटा । मही रंग मट्टा, फवै जाणि  
फुट्टा ।—सू प्र  
२ देखो 'मटको' (मह, रू भे )  
३ देखो 'मठ' (रू भे )

मट्टिया, मट्टी—देखो 'माटी' (रू भे )

मट्टी—१ देखो 'माटी' (रू भे )

उ०—फिर फूटै विच चोहटा, रंगरेजा मट्टे ।—द दा  
२ देखो 'मटको' (रू भे )  
३ देखो 'मट्टी' (रू भे )

मट्ट—१ देखो 'मठ' (रू भे )

उ०—गिरकदर पाहाड, गाहि पाए केकाण । किया मट्ट मैवास,  
प्रज्ज पाळी मेलहाण ।—गु रू व  
२ देखो 'मट्टी' (मह, रू भे )

मट्टी—दही मथ कर मक्खन निकालने के बाद शेष रहने वाला घोल,  
तक्र ।

उ०—१ वो मट्टो व्हे जंडो दूध अर गूजरी रै हाथा घाल्योडी ।

—फुलवाडी

उ०—२ देखू कैंडीक सडपा पडतो दही अर मट्टो व्हे जंडो जाडो  
दूध घाली हो ।—फुलवाडी

रू० भे०—मट्टी, मठी, मट्टी ।

मह, रू० भे०—मट्ट ।

मठ—स० पु० [सं० मठ, मठ] १ वह स्थान जहां दशनामी साधु अपने  
गुरु के साथ रहते हैं ।

२ दशनामी संन्यासियों के किसी बड़े साधु का निवास स्थान ।

३ वह स्थल जहां विद्यार्थी दीर्घावधि तक रहकर ज्ञानार्जन करते  
थे । (प्राचीन)

उ०—अथ नगर वर्णन, भाडागारिक, कोस्टाकार सत्राकार  
मठ विहार प्रपामहप त्रिक चतुएक चत्वर चतुस्पथ राजमारग  
सरोवर ।—व स

४ देवी का मंदिर ।

उ०—१ जद रावजी गढ छोड स्त्रीमाताजी करणीजी रै मठ  
गया ।—ठाकुर जैतमी री वारता

उ०—२ मठ अदर सुदर मूरत्ती, स्त्रीकरणी जय जयति सकत्ती ।  
—मे. म.

५ गर्व, अभिमान ।

उ०—भूपका मोड माठा, मठ भान रै । ईढ मघवान रै, अरण  
आथा ।—लिछमणसिंह सीसोदिया री गीत  
मुहा०—मठमारणी=गर्व खदित करना ।

६ छवि, शोभा ।

उ०—१ म्है जाणती के उण कमसल छोकरी रे परवाण मोरै  
सास दूजो उणियारी लाघैला कोनी । अर लाघ्यो तो अंडो लाघ्यो  
के उणारा रूप री सगळो मठ ई मार दियो ।—फुलवाडी

उ०—२ पण श्री डकरेल चोर तो बाडी री सोभा री जाणै  
मुळगी मठ ई मार दियो ।—फुलवाडी

मुहा०—मठ विगाडणी, मठ मारणी—शोभा नष्ट करना ।

७ आनन्द, खुशहाली, मजा ।

उ०—१ नसी तो सगत मागै । झांझरकं दो घडी रात थकां ऊठतो  
नै भाग सू माथा-फोडी करतो । नसा री सँग मठ मारघो जावतो ।  
—फुलवाडी

उ०—२ राम मारघा बात रै विचाळै हुकारी तो दिया कर ।  
बिना हुकारै बात री सगळो मठ ई मर जावै ।—फुलवाडी  
८ महत्त्व ।

उ०—नसा मे बडबडावण लागी—लुगाई लाज-सरम छोडनै फीटी  
व्हे जावै तो सगळा आणद री मठ मर जावै ।—फुलवाडी  
९ ऊंचा लम्बा टीला ।

उ०—लकडी थारी रीढ लास री भावळ लै'रा । दिस्सा मठ ढम  
ढेर, ईळ जल ऊडा वेरा ।—दसदेव ।

वि०—१० कृपण, कजूस ।

उ०—१ महण सुभावा कमद गुर तायजादी मठा, खगा वळ  
दली दळ खायजादी । पायजादी सुजस सायजादी पनी । राय-  
जादा मुगट रायजादी ।—मेगराज आढी



उ०—२ चाचर चरु सुकाळ, जग 'अभमल' 'चूडा' जिही । खलक चरु जळ खाळ, मठा पहा वहिया मगज ।—सू प्र.  
रू० भे०—मठ, मट्ट, मट्ट ।

मठ—देखो 'मठोठ' (रू भे )

उ०—१ भळं छक सुतन 'जगतेस' वड भाग रै । दत मठा त्याग रै मठ दै लै ।—माधीसिंह सीसोदिया री गीत  
उ०—२ अघप सुता पति हूत कहै कथ औसान रा । सवागण दान रा दयण सागै । आखवा मठ तज वही जो आन रा । अणी अप 'मान' रा तणा आगै ।—रामलाल आसियो

मठणी, मठवी—क्रि० अ०—१ मथा जाना ।

२ देखो 'मठाणी, मठावी' (रू भे )

मठणहार, हारो (हारी), मठणियो—वि० ।

मठाणी, मठावी, मठावणी, मठाववी—प्रे० रू० ।

मठिओडो मठियोडो, मठचोडो—भू० का० कृ० ।

मठीजणी, मठीजवी—भाव वा० ।

मठघारी, मठपति—स० पु० [स० मठघारिन्, मठपति] १ दशनांभी साधुओं के निवास स्थान (मठ) का अधिकारी, साधु या महन्त ।

२ मठाधीश, मठ का स्वामी ।

रू० भे०—मठपति, मठपत्नी ।

मठमठो—वि० (स्त्री० मठमठी) १ न अधिक सख्त न अधिक मुलायम ।  
२ कृपण, कजूस ।

मठर—स० स्त्री०—जिद्, हठ ।

उ०—अवीढा खेल खेलै, भुजा आपरां । मीर रद्द हुवै, मेलै मठर माण ।—म जयसिंह आमेर रा घणी री वारता

पु०—देखो 'मटर' (रू भे )

उ०—मोठ मठर चूला फली रे लाल, छमकारया देह वधार । मुल फूल फल पानडा रे लाल, अथाणा सुखकार ।—प च चौ

मठरी (सी)—स० स्त्री०—मैंदे का बना हुआ एक मोठा पकवान जो घी में तल कर बनाया जाता है ।

मठसेडी, मठसेड़ी—स० स्त्री०—वह गाय या भैंस जिसका दुग्ध दोहन कठिनाता से होता हो ।

उ०—काया कठसेडी मठसेडी कापै । हागी देला नै तेला नै ढापै ।

—ऊ का

रू० भे०—माठसेडी, माठसेड़ी ।

मठाठ—देखो 'मठोठ' (रू भे )

मठाणी, मठावी—क्रि० स०—किसी पदार्थ को मथ कर गाढ़ा करना, मथना ।

मठाणहार, हारो (हारी), मठाणियो—वि० ।

मठायोडो—भू० का० कृ० ।

मठाईजणी, मठाईजवी—कर्म वा० ।

मटाणी, मटावी, मटावणी, मटाववी, मठावणी, मठाववी

—रू० भे० ।

मठाधीश—स० पु० [स० मठाधीश] मठ का अधिकारी, महन्त ।

मठारणी, मठारवी—क्रि० स०—१ मठरना नामक औजार से कसेरो, सुनारो आदि द्वारा पत्तरो या चद्दरो को पीटना ।

२ पत्तरो, चद्दरो आदि को पीटकर गोलाई में लाना ।

३ गूदे हुए आटे को हाथों से इस तरह मसलना व सुवारना कि उसमें लोच पैदा हो जाय ।

४ धीरे धीरे तथा बड़ा-बड़ा कर कोई बात कहना ।

मठारणहार, हारो (हारी), मठारणियो—वि० ।

मठारिओडो, मठारियोडो, मठारचोडो—भू० का० कृ० ।

मठारीजणी, मठारीजवी—कर्म वा० ।

मठावणी, मठाववी—देखो 'मठाणी, मठावी' (रू. भे.)

मठावणहार, हारो, (हारी), मठावणियो—वि० ।

मठाविओडो, मठावियोडो, मठावचोडो—भू० का० कृ० ।

मठावीजणी, मठावीजवी—कर्म वा० ।

मठोड़णी, मठोड़वी—देखो 'मठोठणी, मठोठवी' (रू भे )

मठोड़णहार, हारो (हारी), मठोड़णियो—वि० ।

मठोड़िओडो, मठोड़ियोडो, मठोड़चोडो—भू० का० कृ० ।

मठोड़ीजणी, मठोड़ीजवी—भाव वा० ।

मठोटणी, मठोटवी—देखो 'मठोठणी, मठोठवी' (रू भे )

उ०—चौधरी तो कळाकद रो परसाद खावण ठूकी जकी दो थाल बगळ बगळ मठोटग्यो ।—फुलवाडी

मठोटणहार, हारो (हारी), मठोटणियो—वि० ।

मठोटिओडो, मठोटियोडो, मठोटचोडो—भू० का० कृ० ।

मठोटीजणी, मठोटीजवी—कर्म वा०/भाव वा० ।

मठोटी—स० स्त्री० १—मरोडने की क्रिया या भाव ।

उ०—चौधरी रा हाथ मे कळाई सैठी झिलियोड़ी ही । मठोटी देवती बोल्यो—बावी, कालै हाथ जोडिया, पगा मे पोतियो मैलियो, पण थांरो काळजो नी पसीजियो ।—फुलवाडी

२ मरोडने के कारण पडने वाला बल ।

३ किसी प्रकार का घुमाव-फिराव या चक्कर ।

४ मन में होने वाला क्षोभ या कपट जिसका कारण दुख, व्यथा, दुर्भाव आदि हो ।

५ रह रह कर पेट में अचक्के के कारण होने वाली पीडा भरी ऐंठन, पेचिश ।

मह० रू० भे०—मठोटी ।

मठोटी—देखो 'मठोटी' (मह, रू भे )

मठोठ—स० पु०—१ गर्व, अभिमान, अकड ।

उ०—ठठोर सत्रु गोठ की जवान गोठ लें जवैं । वही मठोठ मे बहे  
दु होठ दत तें दवैं ।—ऊ का ।

२ स्वाभिमानता ।

३ कृपणता, कजूसी ।

४ मकानो मे स्तम्भ के ऊपर लगाया जाने वाला पर्यर ।

रू० भे०—मठठ, मठाठ ।

मठोठणो, मठोठवो—१ खाना, निगलना ।

उ०—१ घोड़ी रोजीना रो दोय सेर दाणी मठोठ जावैं । पण  
असवारी वास्तै अदण ई नी दे ।—फुलवाडी

उ०—२ दिन मे चार बगत रोटया रो ठोरी देतो, आथण सवार  
वत्तीस सोगरा मठोठ जाती ।—फुलवाडी

२ गर्व करना, ऐंठना ।

३ कजूसी करना, कृपणता दिखाना ।

४ ऐंठन देना, घुमाना ।

मठोठणहार, हारो (हारी), मठोठणियो—वि० ।

मठोठिओडो मठोठियोडो, मठोठघोडो—भू० का० कृ० ।

मठोठीजणो, मठोठीजवो—कर्म वा०/भाव वा० ।

मटोटणो, मटोटवो, मटोटणो, मटोटवो, मटोटवो

—रू० भे० ।

मठोठियोडो—भू० का० कृ०—१ खाया हुआ, निगला हुआ २ गर्व  
किया हुआ, ऐंठा हुआ ३ कजूसी किया हुआ, कृपणता दिखाया  
हुआ ४ ऐंठन दिया हुआ, घुमाया हुआ  
स्त्री० मठोठियोडी)

मठो—१ देखो 'मठो' (रू भे )

२ देखो 'माठो' (रू भे )

उ०—मुरें अवान वानलें, प्रायाण मे कठा मठा । अरेन प्रांन  
फायदै, विफायदे सठा सठा ।—ऊ का

मठो—१ देखो 'माठो' (रू भे )

२ देखो 'मठो' (रू भे )

मडि, मडो—देखो 'मडो' (रू भे )

मड—देखो 'मड' (रू भे )

उ०—१ मझि वन सघन सकति काळी मड । गगा तीर प्रगट कुर-  
हैगड ।—सू प्र

उ०—२ जोया गड मड पोलि पगार किहइ न लाघी महता सार ।  
—हीराणद सूरि

मडगोरख—स० पु०—द्वारिका के निकट का एक तीर्थ स्थान, गोरखमडी ।

मडणो, मडवो—देखो 'मडणो, मडवो' (रू भे )

उ०—१ चाप करा अप राम चढै, माझ रजी तद भाण मडै ।

खोहण के असुराण खपै, पख सिवा पळ खाय प्रपै ।—र ज प्र

उ०—२ घडनो दियो ही जकारो पाछो घेरघो नहीं, मडणो  
लियो जका रो ओठो मोडघो नहीं ।—दसदोख

उ०—३ थे पैला तो खरचो करता लखी कोयनी, पछै बीजा माथे  
कसूर मडो ।—वरसगांठ

मडणहार, हारो (हारी), मडणियो—वि० ।

मडियोडो, मडियोडो, मडघोडो—भू० का० कृ० ।

मडोजणो, मडोजवो—कर्म वा०/भाव वा० ।

मडपति, मडपत्ती—देखो 'मडपति' (रू भे )

उ०—'पाटण' नयर 'दुस्रम' राय यदा । वाद हुयो मडपति स्युं  
तदा ।—ऐ जै का स

मडाई—देखो 'मडाई' (रू भे )

मडाणो मडावो—देखो 'मडाणो, मडावो' (रू भे )

उ०—वीर फराम बडाडवा, दव खाती डोवैं । केक मुला तागा  
करै हुव हाका होवैं । हिंदू मन हरखत होये, घण डोल घडावैं ।

वाढ फरासह 'वीरमो', मह डोल मडावैं ।—त्री मा

मडाणहार, हारो (हारी), मडाणियो—वि० ।

मडायोडो—भू० का० कृ० ।

मडाईजणो, मडाईजवो—कर्म वा० ।

मडायोडो—देखो 'मडायोडो' (रू भे )

(स्त्री० मडायोडी)

मडियोडो—देखो 'मडियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मडियोडी)

मडो—देखो 'मडो' (रू भे )

मडुली—देखो 'मडो' (अल्प, रू भे )

उ०—खेलि अम्हारी क्षीपवी, हवी हवइ मसवासि । मडुली मांहि  
मडउ रहिउ, मन माघव नइ पासि ।—मा का प्र

मडो—देखो मडो (रू भे )

उ०—दाहू मडा मसाण का, केता करै उफान । अतक मुरदा  
गोरका, बहुत करै अभिमान ।—दाहूवाणी

मणघर—देखो 'मणघर' (रू भे )

मण—स० पु०—१ ४० सेर का एक तोल ।

उ०—१ कासू काज करेह, सिधुर बाघा सांकळा । भगवत पेट  
भरैह, मण नित चाहियै 'मोतिया' ।—रायसिंह साद्

उ०—२ मण मण आटो, मण मण चावळ मगाया नै रसोई  
कराई, सो सरव जीमिया ।—देपाळघघ री वारता

मुहा०—मण मण रा घूटिया भरणा—आर्थिक सकट मे जीवन  
व्यतीत करना, किसी बात को प्रकट न करने के लिए दीर्घाधि  
तक मौन रहना ।

रू० भे०—मणू, मणू ।

२ सुवृत्त । (डि को )

३ देखी मणि' (रू भे )

उ०—महाराज रघुवस मण, सुज रावण समथग धुन सर पाणा  
घरै ।—र ज प्र

उ०—२ मण सरद चकित निस, रति पतिह लघणीक मदह चलत ।  
मिथलेस कुवरी, सीता सुतन । कवि एती श्रोपमा कहत ।—२ ज प्र  
मणकरणका—देखो 'मणिकरणिका' (रू. भे)  
मणकौ—१ देखो 'मणियो' (रू. भे)  
उ०—दादू काया महल मे नमाज गुजारू, तह श्रीर न आवन  
पावं । मन मणकै कर तसवीह फेरू, तब साहिव के मन भावं ।  
—दादूवाणी

२ देखो 'मणिकौ' (रू. भे)  
मणगयण—स० पु० [स० गगनमणि] सूर्य । (डि. को)  
उ०—आठुआं चाढता घकै साबळ अणी, खेलता घसळ खत्रवाट  
आखेट । विठतां सेस मणगयण लागा वधै, नग भिडज करग राजा  
तणा नेट ।—नाथी सांदू  
मणगुती [स० मनोगुती] चारो ओर घूमते हुए मन को निग्रह करके  
रखने का भाव । (जैन)  
मणचौ—देखो 'मळीचौ' (रू. भे)  
मणछिउ—वि० [स० मनवाछित] मन मे चाहा हुआ, इच्छित ।  
उ०—अज्जि जु देवु लोइ द्वियउ, सघ मणछिउ देइ फलु ।  
—ऐ जै का स

मणछौ—देखो 'मळीचौ' (रू. भे)  
मणणी, मणवी—देखो 'मुणणी, मुणवी' (रू. भे)  
उ०—सगुह हात्थीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ, मउडघा माकड  
जिम खेलावइ, पाखरिया घाट हणइ, महायोध समुख मणइ, दल  
वइ भाजि, ' तूर्यं वाजइ ।—व स  
मणघर—देखो 'मणिघर' (रू. भे)  
उ०—१ मानव नको नको ताइ मणघर, भमण तणा अनेरा  
भेव । इसडउ रूप अनूप आखियइ, देवागना न कोई देव ।  
—महादेव पारवती री वेलि  
उ०—२ घणनामी इम सुरां विगत घण, जण जटायु भर अक  
जण । वण द्विग गोइ घरे पत त्रिभवण, मणघर छवरी हरख मण ।  
—रू

मणपुत्र—स० पु० [स० मनपुत्र] दानरूप, कीलरूप, तपरूप, भावरूप  
ओर दयारूप आदि शुभ मन रखने का भाव । (जैन)  
मणरथ—देखो 'मनोरथ' (रू. भे) (जैन)  
मणसिल—देखो 'मैनसिल' (रू. भे)  
मणहर, मणहारी—देखो 'मनोहर' (रू. भे)  
उ०—मणहर नवरस मकै सुदरि नारीण सरस सबधा । निरुपम  
कहै निबधा, सुणत सीणा जाण सुगणा ।—डो मा  
मणा, मणाई—स० स्त्री० [स० मनाक्] १ अभाव, कमी ।  
उ०—१ कुळ उघोर 'प्रताप' कहता, पोढो घरू घणा व्रद पाय ।  
मणा न तो कुळ मणा न तोमै, मणा न सुकव बगवाणां माय ।  
—महाराणा प्रताप री गीत

उ०—२ निवसइ लोक तिहा अतिघणा जिह घरि रिद्धि तणा  
नही मणा ।—हीराणुद सूरि  
उ०—३ बापी पाव कबीर बगार्ई, चौखी ईटा पकी चणार्ई ।  
मूरख मिळ ना रखी मणार्ई, धुम खर गिडक पियो घणार्ई ।  
—ऊ का

२ पराकाष्ठा, चरममीमा ।  
मणावध—क्रि० वि०—मनो की तादाद मे ।  
उ०—थे कलम रा भार माटे मणावध रिपिया भेळाकर लिया  
अर म्हे लाखा मण भार उचायने ई मूठी रं परवाण रिपिया भेळा  
नी कर सकिया ।—फुलवाडी  
मणारभ—स० पु०—सागर ।  
उ०—मणारभ मयै काढ़ियउ माहव, जहर डतउ किण बीजइ  
जरइ ।—महादेव पारवती री वेलि  
वि०—अप्रवल, समथ, दक्षिणालो ।  
उ०—मोई घड मोरठ मेछ मणारभ, बाह विलागा वर श्री  
वेय ।—सरवहिया जैमा कवाटोत री गीत

मणाळ—देखो 'मुणाळ' (रू. भे)  
उ०—१ अग मणघर की मणाल मोडता, सिंहलोक श्रोपमा किमी ।  
—महादेव पारवती री वेलि  
उ०—२ कर माळ फुणाळ मणाळ कळी । रुहराल हुई कर 'पाल'  
रळी । वढ हड्ड कडक्क वडक्क वजै । भडु घाट भडक्क घडक्क भजै ।  
—पा प्र

मणि—स० स्त्री० (पु०) [स० मणि] १ बहुमूल्य रत्न, जवाहर ।  
उ०—१ मणि माणिक हीर पन्ने सोयन समुगत मीनकै काम पाद्य  
पर जवहरी किलगी घरी सो साजोतिकी सिखा परि मानू नव ग्रह  
नै पकति करी ।—सू प्र  
उ०—२ जो मन मार मेरे मन उपज्यो, ज्यो कचन मणि साची ।  
—मीरां

२ हाथ की कलाई ।  
यो०—मणिवध, मणिसूत्र ।  
३ आभूषण ।  
उ०—गज ठणिया घण ग्राह बाह जणियां बादाळक । तणिया  
करभ तिमिस चरम मणिया चउ चालक । मणिया रयण प्रमोल  
रोप अणिया मोती रुख । सोहत घणिया सीप मिळै असिबर  
फणिया मुख ।—व भा  
४ घडा ।  
५ योनि का अग्रभाग ।  
६ लिंग का अगला भाग ।  
यो०—मणिवध ।  
७ एक प्रकार का विष नाशक पदार्थ विशेष जो किसी २ काले  
सर्प के सिर मे होना माना जाता है ।

वि० वि०—ऐसी मान्यता है कि यह मणि सर्प दश पर लगाने से सर्प का विष उतर जाता है।

यो०—मणिघर।

८ मणि के आकार का हाथ की कलाई या हथेली में होने वाला एक सामुद्रिक चिह्न जो शुभ माना जाता है।

उ०—कहि हस्त चिह्न बाणिक प्रकार। सति साम दुरग विध वचन सार। मणिबध तीन मणि जब प्रमाण। मध्य कच्छ कुंभ गज रथ मडाणि।—सू प्र

९ सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, कुल भूषण।

रू० भे०—मण, मणी, मयण मणि, मणि।

मणिग्रार—१ देखो 'मणियारी' (रू भे)

२ देखो 'मणियारी' (मह, रू भे.)

(स्त्री० मणिग्रारी)

मणिग्रारी—देखो 'मणियारी' (रू भे)

(स्त्री० मणिग्रारी)

मणिक-म० स्त्री०—घोड़े की चोटी पर होने वाली भौरी (चक्र)।

(शुभ) (शा हो)

मणिकरुणिका-स० स्त्री० [स० मणिकरुणिका] काशी के पास के पांच मुख्य घाटों में से एक।

रू० भे०—मणकरुणिका।

मणिकार—देखो 'मणियारी' (मह, रू भे)

उ०—सौवरणकार कास्यकार मणिकार पूगी फल तावूलिक मालिक सोनिक सरोवर।—व स

मणिकूट-स० पु०—कामरूप देश के पास का एक पर्वत। (पौराणिक)

मणिकेतु-स० पु०—एक छोटा पुच्छल तारा जिसकी पूछ इवेत मानी गई है।

मणिकौ-स० पु०—१ चालीस सेर वजन का तोल या वाट।

रू० भे०—मणिकौ, मणीकौ।

अल्पा०—मणियौ।

मणिजल-स० स्त्री० [स० जलमणि] विजली, विद्युत। (ह ना मा)

मणिजाळ—एक प्रकार का आभूषण।

मणिजालक—एक प्रकार का आभूषण।

उ०—मुद्रानतक दम मुद्रिका अगुलीयक अगूथला हेम जालक मणिजालक रत्नजालक मानक।—व स

मणिघर-स० पु० [स०] १ वह कृष्ण सर्प विशेष जिसके मस्तक में विष नाशक मणि हो।

उ०—ख्यात कर देखियो वश खटतीसर्न, भात परढोटिया रग मिळियो। भाण हिदवाण दुनियाण हण विचाळी, मणिघर सुपातां तू हिज मिळियो।—नीमाज ठाकुर उम्मेदमिह री गीत  
२ सर्प, नाग।

उ०—हितवां स बीटियो अलग न होवै, द्याए साख ऊपरि छर

छात। मणिघर तेथि जेथि मळयातर, 'पाचो' जेथि तेथि कवि पात।—नादण वारहूठ

वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि।

रू० भे०—मणघर, मणवर, मणीघर, मणघर, मणिघर, मणिघर।

मणिनील—देखो 'नीलमण' (रू. भे)

मणिपुर, मणिपूरक-स० पु०—योग विद्या के अनुसार योग साधना के ८ चक्रों या कमलों में से तृतीय चक्र या कमल जिपका स्थान नाभि या नाभि के पास माना जाता है। इसका रंग कहीं हरा और कहीं नीला लिखा मिलता है। यह दम दल वाला तथा इसके देवता कहीं शिव और कहीं विष्णु माने गये हैं।

मणिबध-स० पु०—हाथ की कलाई।

उ०—मणिबध तीन मणि जब प्रमाण। मध्य कच्छ कुंभ गज रथ मडाणि।—सू प्र

२ पुरुषेन्द्रिय के अग्र भाग के नीचे का वह धेरा जो अग्र भाग की सीमा बनता है।

मणिबधन-स० पु० [स०] अगूठी का वह स्थान जहाँ पर रत्न जड़ा होता है।

मणिबीज-स० पु० [स०] अनार का पेड़। (अ. मा)

मणिभद्र-स० पु० [स०] शिव के एक प्रधान गण का नाम।

मणिभू, मणिभूमि-स० स्त्री० [स०] १ रत्न खान।

२ हिमालय क्षेत्र का एक तीर्थ। (पौराणिक)

३ रत्नजडित फर्श।

मणिमंडित-वि० [स०] जिसमें रत्न जड़े हों, रत्न जडित।

मणिमड—देखो 'मणिमय' (रू भे)

उ०—ता वणि पेखइ मणिमड भूयणु, तीछै निवसइ नारीरयणु।  
—प प च.

मणिमय-वि० [स० मणि+मस्तक] श्रेष्ठ, शिरोमणि।

उ०—पिलगि महारिण पोडियो काळो भला कहाय। जस जोवग साजै 'जसो' मणिमय फोज मलहाय।—हा भा

स० पु० [स० मणिमय] संधा नमक।

मणिमय-वि० [स० मणि+मयट्] मणियुक्त, रत्न जडित।

स० पु०—सगीत में, कनटिकी पद्धति का एक राग।

रू० भे०—मणिमई।

मणिमाळ, मणिमाळा-स० स्त्री० [स० मणिमाला] १ मणियों या रत्नों का हार।

उ०—ओम नमस्ते चडका चद्रभाळ री नवीन आभा, छटा मणि-माळ री भुजाटा रही छाय। आरोहा लकाळ रीक सत्रा धू भाळ री आग, रमा रूप जयो काछ पचाळ री राया।

—नवलजी लाळस

२ चमक, दीप्ति, आभा।

३ गाल पर या अन्यत्र प्रेम क्रीडा में दातों से काटने पर बना गोल

नक्ता या दाग ।

४ नदमी का नाम ।

५ एक बारह पक्षीय वृक्ष जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण तगण होते हैं ।

६ एक प्रकार का आभूषण ।

उ०—अद्वि तणउ मगन, चाळ घट जुअल दीप प्रदीप मणिमाला ।  
प्रवान बदरवान ए द्रव्य मगलीक ।—व म

मणिपट, मणिपर-म० पु०—जोधपुर द्विजिन के बाहमेर जिले व उनके ग्राम पाम के प्रदेश के भू-भाग का नाम, मालानी ।

रू० भे०—माणपट, मणिपट, मणिपर ।

मणिपादर-मं० पु० [अ० मनिपादर] डाकवर द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान की रुपया भेजने का आदेश, घनादेश ।

मणिपावधञ्ज नक-स० पु० यो०—घोड़ों का एक रोग जिसमें घोड़ों के कंठ दुगने लगते हैं और कंठ से घटर घटर की ध्वनि निकलती है । घोड़े का खाना पीना छूट जाता है । (शा. हो )

मणिपार—१ देखो 'मणिपारा' (रू भे )

२ देखो 'मणिपारी' (मह, रू भे )

मणिपारा-म० स्त्री० [म० मणिपार] १ एक सुमनसा जाति विशेष जो विमायती का काम करती है ।

२ पाच या मामान एवं चूरी देवने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

रू० भे०—मणिहार, मणिहारा ।

मणिपारी-म० स्त्री०—चूड़ी सुई, चागा, फोशा कपा, मोती मचिका आदि पुष्टकर मामान देवने का काम ।

ज्यु—मणिपारी मास, मणिपारी घषा ।

स्त्री०—मनिपारा जाति की स्त्री ।

रू० भे०—मणिहारी ।

मणिपारी-म० पु० [स० मणिपार, मणि+ह,=ले जाना] (स्त्री० मणिपारी) मणिहारा जाति का व्यक्ति ।

२ कान या मामान एवं चूरी आदि के देवने का व्यवसाय करने वाली जाति का व्यक्ति, मनिहारा, चूटिहारा ।

उ०—जद बीरगल्लो योन्या—घोलयल्ला दोहरा भव जीवा प्रा दान मिमाई । अने एक नदण मणीपारा नो वगण मिमायो ।

—भि. द्र

रू० भे०—मणिपारी, मणिहारी ।

मह०—मणिपार, मणिपार, मणिपार, मणिहारा ।

मणिपो-म० पु० [म० मणिप] १ माता में विरोधा जाने वाला दाना, मणिमा ।

उ०—नदणी न ग्यामोजी वृक्षो—त नदण मणिपारा नो वगण मोरवी है गो घी मणीपो नरहा गो है वं मोना रो है कं रक्षा माळा गो है ।—नि द्र

फि० प्र०—विरीणो, पोणो, वीघणो, वेघणो ।

रू० भे०—मणको, मणिको ।

२ गर्दन की उमरी हड्डी जो ठोड़ी के नीचे होती है ।

३ गर्दन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ की ऊपरी भाग में होती है ।

४ गला, ग्रीवा ।

मुहा०—मणियो मोहणो=हत्या करना, गला घोटना ।

५ रत्न, मणि ।

वि०—मन के तोल का, ४० सेर के वजन का ।

उ०—सो खोजीजी घणा मोद सू वो सवा मणियो कादो राजाजी रै निजर करियो—फुलवाही

मणिरागम्यान-स० पु० [स० मणि+राग+ज्ञान] मणियों के रंगों का ज्ञान करने की एक योग्यता जो ६४ कलाओं में से एक है ।

मणिवक-स० पु० [स०] पुष्प । (ना मा, ह ना मा )

रू० भे०—मणिवक, मणिवक ।

मणिवास-स० पु० [स० मणिवास] रत्न जटित वस्त्र ।

उ०—विधु भळमळ मणिवास, धिप धिपुरारि तुम्होनम ।

—राम रासो

मणिहार—१ देखो 'मणिपारा' (रू भे )

२ देखो 'मणिपारी' ((मह, रू भे )

मणिहारा—देखो 'मणिपारा' (रू भे )

मणिहारी—देखो 'मणिपारी' (रू भे )

उ०—मणिहारी जा री सखी, अथ न हवेली आव । पीव मुवा घर आविया, विधवा किमा वणाव ।—वी स

मणिहारी—देखो 'मणिपारी' (रू भे )

(स्त्री० मणिहारी)

मणी—देखो 'मणि' (रू भे )

उ०—१ तम गिर गुफा न पायदे, जेथ मणी जोगेस । कीजे आदर कुकविया, दरमे तम जिण देस ।—वा दा

उ०—२ खिरी सीम कुभा मणी हेम साळ । जया नारि वक्षोज चोळी जहाळ ।—व भा

मणीको—देखो 'मणिको' (रू भे )

मणीची—देखो 'मणीची' (रू भे )

मणीघर—देखो 'मणिघर' (रू भे )

मणीवक—देखो 'मणिवक' (रू भे )

मणीमाळ, मणीमाळा—देखो 'मणिमाळा' (रू भे )

मणीवक—देखो 'मणिवक' (रू भे )

मणु—१ देखो 'मन' (रू भे.)

उ०—विकमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ ।

—ऐ. जं का स.

२ देखो 'मनुस्य' ।

३ देखो 'मनु' (रु भे )

मशुअ—देखो 'मनुज' (रु भे )

मशुअ—वि० [स० मनोज] सुन्दर, मनोहर । (जैन)

मशुअ—देखो 'मनुज' (रु भे )

उ०—१ नवरस देसण बाणि, सबणजलि जे नर पियहि । मशुअ जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्यु कलि तिहि ।—सारमूर्तिमुनि

उ०—२ मशुअ तिसयतिहुत्तर, नारय चउदसय तिरिय अठयाला । देव अठनवइसय, पणसयतेसट्टि जिय भेया ।—स कु

मशुअ—देखो 'मनवार' (रु भे )

मशुअ, मशुअ—सर्व०—१ मुझे, मुझको ।

२ देखो 'मण' (रु भे )

३ देखो 'मन' (रु भे )

४ देखो 'मनुज' (रु भे )

उ०—मशु कोहि मिली दिसि कस्मली, ललीय धूलि दिनि अवर नइ मिली । करइ दाहु विदाहु हियइ घरइ, 'कहु कीचक हुइ मरत मरइ ।'—सालिसूरि

मशुअ—देखो 'मनुज' (रु भे )

उ०—उभी उभी इमु म वोलिइ पडव वीजा मशुअ म तोलि, जग च्छसिवा घर अघतरइ रुठा जगनु, जीवीउ हरइ ।—सालिसूरि

मणो क—वि०—एक मन के लगभग ।

मणोअ—देखो 'चितामणि' । (अ मा )

मणोगय—स० पु०—मनोगत भाव, मन के भाव । (जैन)

मणोरथ—देखो 'मनोरथ' (रु भे )

मणोरम—देखो 'मनोरम' (रु भे )

मणोरह, मणोरहु—१ देखो 'मनोरथ' (रु भे )

२ देखो 'मनोहर' (रु भे )

उ०—पुत्र प्रभाविहि पामीयउ पहिलु कूतादेवी, पुत्र मणोरहु पूत पुण सुमिणा पच लहेवि ।—सालिसूरि

मणोहर, मणोहार—देखो 'मनोहर' (रु भे )

उ०—अनेकि तिहा चद्रोआ, चद्रमा आवइ जेहनइ जोआ, अतिहि मणोहार, माहि मणि माणिक्य रत्न तणउ सभार, तेजि करी नसाइइ अघकार ।—व स

मतग—स० पु० [स० मतग] १ हाथी ।

उ०—१ रामसिध 'जैत' का सो जैत ही निबाहे, कूपावत जग में मतग सैल ढाहे ।—रा रु

उ०—२ चरखी हजारों डाक भाला डाकदारा चलै, खहत अचल्लै मारा बिछूटा खतग । वापुकारा बोल बोल फोजदारां नीठ बाधा, महा जगा जैत बारां खमारा मतग ।—हुक्मीचद विडियो २ बादल । (अ मा , ना मा )

३ एक ऋषि का नाम ।

४ एक दानव ।

५ एरावत हाथी ।

६ एक प्राचीन राजा जो शाप के कारण व्याध बना ।

७ फर्श की विद्यावन को उठने में रोकने के लिए उसके कोनो पर रखा जाने वाला भार, मीरफर्श ।

उ०—लाहानूर मुसैद अजील की चोपस्मी गिलमू की विद्यायत करै । जवाव जवाव के ऊपर सबज हमरग वर मतगै धरै ।

—सू प्र

अल्पा०—मतगी ।

वि०—मस्त, उन्मत्त ।

रु० भे०—मर्यंग मातग ।

मतगज—स० पु० [स० मतगज] हाथी । (अ. मा , ना मा , ह ना मा )

उ०—चरखां गडि चक्र मगा मचलै, चर ह थिर थाय पगा न चलै । जड हू करि जगम देत जिका, तन अद्र मतगज रग तिका ।

—मे म

मतगरिप, मतगरिपु—स० पु० [स० मतग + रिपु] शेर, बाघ ।

(हि को , ह ना मा )

मतगी—स० पु० [स० मतगिन्] १ बहुत से हाथियों का स्वामी, गज यूथ का स्वामी ।

२ हाथी का सवार ।

३ महावत ।

मतगी—देखो 'मतग' (अल्पा , रु भे ) (७)

मत—स० पु० [स०] १ राय, विचार, सम्मति ।

उ०—सगळा गोड एक मत होय ऊठिया । मुदै तो गोपाळदास वीजा भाई सारा हुकम सिर ऊपर भलियो ।

—गोड गोपाळदास री वारता

२ उदाहरण दृष्टान्त ।

उ०—विस मुख जास वसत मोठा बोला हस मिळै । उरग तणी कर अत, मोर प्रकासै एह मत ।—

३ सोच समझ कर निश्चित की हुई बात ।

उ०—१ आपा मेटे हारि भजै, तन मन तजै विकार । निर वैरी सब जीव सौं, दादू यहू मत सार ।—दादूवाणी

उ०—२ निर वैरी निज आतमा, साधन का मत सार । दादू दूजा राम बिन, वैरि मझ विकार ।—दादूवाणी

४ ऋषियों, मुनियों, महात्माओं या धर्मग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित कोई सिद्धान्त ।

उ०—मत भेदन खेद खुबी मत की, सत चूप चुभी उपनिसत की । फटकार हूलाहल तें फिरगी, धन आनद अमृत घा धिरगी ।

—ऊ का

५ किसी विशिष्ट महापुरुष के सिद्धान्त का अनुयायी मप्रदाय, पथ ।

६ लोकतंत्र के क्षेत्र में, अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए किसी व्यक्ति अथवा समाज को प्राप्त वह अधिकार जिससे वह अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुकूल दो या अधिक व्यक्तियों, पक्षों आदि में से किसी एक या कुछ का अधिकारिक रूप में समर्थन कर सकता है, वोट ।

७ उक्त के द्वारा किसी का किया जाने वाला समर्थन ।

अव्य०—१ निषेधवाचक शब्द, नहीं, न ।

उ०—१ हे भूटो सोचो हिण, अल्लेस्वर री आण । मत अण्णाओ माहुआ, जग नू साचो जाण ।—वां दा

उ०—२ पुन्य प्रताप होय अग पूरन, पाप प्रताप अपगी । प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत भीत कुसगी ।—ऊ का.

२ स्यात्, शायद ।

उ०—१ बावहिया, चडि गउससिरि, चडि ऊचइरी भीत । मत ही साहिव बाहुडइ, कउ गुण आथइ चीत ।—ढो मा

उ०—२ बावहिया, चडि डूगरै, चडि ऊचइरी गाज । मत ही साहिव बाहुडइ, सुणि मेहां री गाज ।—ढो मा

रू० भे०—मती ।

३ देखो 'मति' (रू भे )

उ०—१ साह दुकानां चोरटा, साहव काना चाड । लागं त्रित मत हर लिए, वे सोभा का फाड ।—वां दा

उ०—२ मात है ! जग जीवण नैं, मुख अयमर हूय दीनी है, मत हीणी है माय । रतन फेंकनै जतन ककर री कीनी है ए माय, माता है ! अमरत जाण हळाहळ मो नैं पायो है । मत हीणी है माय ।

—गी रा

उ०—३ अलख निरजन अज अविकारी, व्याप रया सब जग माही । आप तणी गत मत कुण जाणै हो ? नमो नमो ही माई ।

—गी रा

४ देखो 'मात्रा' (रू भे )

उ०—पहल प्रतिय पद सोळ मत, दुन चव ग्यारह दास । चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिए नू भाख ।—र ज प्र

५ देखो 'मत्त' (रू भे )

मतकुण—देखो 'मत्कुण' (रू भे ) (डि को )

मतकेमास, मतकेवास—वि०—१ असाधारण बुद्धि वाला, तीव्र बुद्धि वाला ।

२ बल में अद्वितीय ।

मतक्षेत्र—पु०—निर्वाचन क्षेत्र ।

मतगणना—स्थी०—जनमत संग्रह ।

मतदान—पु० [सं० मतदान] किसी प्रकार के निर्वाचन के समय अथवा किसी विषय या प्रस्ताव के सम्बन्ध में पक्ष अथवा विपक्ष में मत देने की क्रिया । (वोटिंग)

मतदान-केंद्र—पु० [सं० मतदान केन्द्र] निर्वाचन का वह स्थान या केन्द्र

जहां निर्वाचन के समय किसी विधेय क्षेत्र में आकर मत-दाता मतदान करते हैं । (पोलिंग स्टेशन)

मतदान-फोस्ट—पु० [सं० मतदानफोस्ट] पर्दे की ओट, जिममें रंगी पेटो में मत-पत्र छोड़ा जाता है । (पोलिंग बूथ)

मतदान पेटिका—स्थी०—वह पेटो जिममें मतदाताओं द्वारा मत छोड़े या डाले जाते हैं । (बैलेट बाक्स)

मतदाता—पु० [सं०] प्रजातंत्र में मत देने का अधिकार प्राप्त व्यक्ति । अपना प्रतिनिधि निर्वाचित करने हेतु मतदान का अधिकार प्राप्त नागरिक ।

मतपत्र [सं०] विभिन्न उम्मीदवारों के नाम और नामा के प्रागे अस्ति चिह्न वाला पत्र जिमें मतदान पेटिका में डालने हैं । शानका पत्र, गूड मत पत्र ।

मतवाळ—देखो 'मतवाळ' (रू भे )

मतवाळ, मतवाळु—देखो 'मतवाळो' (रू भे )

उ०—जिमणवार लिगीट छड, राजानइ वडमपानइ मुवर्णमड पाट, योजानइ वडमवा चुकीवट, विमाल मेजवट । मतवाळु ए भावड ।

—र ग

मतभेद—पु० [ग०] किसी विषय या विद्वान्त पर किसी दल, समूह या पक्ष के सदस्यों का एक मत न होना ।

मतमद—देखो 'मतिमद' (रू भे )

उ०—भव दरियाव भयद, लहरा ऊठे लोभ री । माहै ज्या मतमद, मनण घणा दूवै मरै ।—वां दा

मतलब, मतलब—सं० पु० [अ० मतलब] १ तात्पर्य, अभिप्राय, आशय ।

उ०—भवारा जित्ता लाठा अर कम बर्ण, उत्ता ई सावळ । वीनली भीता यू ई मोत्यां री ठोड रु वला । पाई मतलब ?—फुलवाडी २ स्वयं का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, स्वार्थ ।

उ०—१ प्रीत उतारण पार, जेवरळा नाघै जगत । हेतू बर्ण हजार, मतलब अण्णै मोतिया ।—रायमिह गांदू

उ०—२ नांणी नोरायण प्रद परायण रांमायण रोसदा है । छळ बळ कर छानै, मतलब मानै, मूरख गळ मोसदा है ।—ऊ का

मुहा०—मतलब गांठणी=स्वार्थ सिद्धि करना । २ मतलब काढणी, मतलब निकाळणी=स्वार्थ सिद्धि करना । ३ मतलब हो जाणी=स्वार्थ सिद्ध हो जाना ।

३ पद, वाक्य, शब्द का अर्थ, माने ।

४ उद्देश्य, विचार ।

उ०—जिए मतलब सू आई ही वो ती थनै बिना बताया ई पार पड्यो ।—फुलवाडी

५ सम्पर्क, सम्बन्ध, वास्ता ।

ज्यू—मारो उण सू कोई मतलब नही ।

रू० भे०—मुतलब ।

मतलविषी—देखो 'मतलवी' (अल्पा, रू भे )



मत्तलबी—वि० [अ० मत्तलब + रा० प्र० ई] वह जो केवल हित का ध्यान रखता हो, अपने स्वार्थ में लीन रहने वाला, स्वार्थी।

उ०—ऐही म्हारा सू काई गरज पजगी। थां मत्तलबी आधा रो कीं भरोसी नी।—फुलवाडी

रू० भे०—मुत्तलबी।

अल्पा, रू० भे०—मत्तलबियौ, मुत्तलबियौ।

मत्तल—देखो 'मत्तिवत्' (रू भे)

उ०—प्राण सटै ही प्रीति जुहती जो दीसै 'जमा'। आदरि रुही रीति, मति छोडै मत्तल तू।—जसराज

मत्तवाय—देखो 'मथवाय' (रू भे)

उ०—कडिया चीस, पगा सरणा, मत्तवाय, ऊबका, उछाटा, रू रू तूटणी और हाडकां रो कुलणी।—फुलवाडी

मत्तवारो—देखो 'मत्तवाळो' (रू भे)

उ०—धूम रह्यो दुरयोधन राजा, जैसे गज मत्तवारो।—मीरा (स्त्री० मत्तवारी)

मत्तवाळ—स० स्त्री०—१ नशा, खुमारी, मस्ती।

उ०—वरच्छिद्य वेधत घाट बराळ। मदां छकि जाणि पडै मत्तवाळ।—सू प्र

२ मजलिस, महफिल।

उ०—१ रळा राग जह रग, वणावै दारू देसां। मुलकत मन मत्तवाळ, कोटहथा हुवै हमेसा।—दसदेव

उ०—२ सेज रमां सुख कराजो, करस्या रग मत्तवाळ।—मीरा ३ मदिरा-पान।

उ०—सै होळो नै ढळी जाजमा, होय रही मत्तवाळ। बोटल वो जग-जग करै, कोई प्याता करै पुकार।—हूगजी जवारजी री छावली ४ किसी उपकरण मे लगे हुए दस्ते या हत्ये को दृढ़ करने के लिए उसमे लगाई जाने वाली लकड़ी की पतली पट्टी।

५ मजाक, दिल्लगी।

६ शराब, मदिरा।

रू० भे०—मत्तवाळ।

७ देखो 'मत्तवाळो' (मह, रू भे)

मत्तवाळो—देखो 'मत्तवाळो' (अल्पा, रू भे)

उ०—वाई घर आयो छै मारू मत्तवाळो। ऊनै ज्यू त्यू विलमाजै बाई घर यारै के म्हारै।—लो गो

मत्तवाळो—वि० (स्त्री० मत्तवाळी) १ नशे आदि के प्रभाव से मस्त, नशे मे घूर।

उ०—भीज रीऊ भेली भली, पावस पांणी पल। मत्तवाळा मन-धार री, छाक म ठेलो छल।—वा दा

२ उन्मत्त, मस्त, मत्त। (डि. को)

उ०—बाजता घट बिहवै बळा, ऊरघ सूड उछाजता। धाभता क्रोध ज्वाळा दग्धा, गज मत्तवाळा गाजता।—भे म.

३ किसी प्रकार के अभिमान या मद के कारण मस्त और लापर-वाह, अल्हद, मदोन्मत्त।

उ०—मत्तवाळो इम मुणै, कमध दारण 'कुसळावत'। जाळ खामा गजा, घणा मुगळा दळ घावत।—सू प्र

४ रसिक, रतिप्रिय।

उ०—वादळ काळा बरसिया, अत जलमाळा आण। काम लगी चाळा करण, मत्तवाळा रग माण।—वा दा

रू० भे०—मत्तवाळू, मत्तवारो, मत्तिवाळो।

अल्पा०—मत्तवाळो।

मह०—मत्तवाळ मत्तिवाळ।

पु०—१ दुर्ग या पहाडी पर मे शत्रुओं को मारने के लिए लुठकाया जाने वाला पत्थर।

२ देखो 'मलो'।

मत्तस्याखडग—स० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार विशेष।

मत्तस्याघांनी—स० स्त्री० [स० मत्तस्याघानी] शिकार करते समय मछली फसाने का यंत्र। (अ मा)

मत्तहीण, मत्तहीण, मत्तहीणी—देखो 'मत्तिहीण' (रू भे)

मत्ता—देखो 'मती' (रू भे)

उ०—रावजी वाता पूछी सो कही फेर जोगी वाळी वात कही और समझायो जे आ किही नू जाहर मत्ता करज्यो।

—नारि सांखले री वारता

२ देखो 'मता' (रू भे)

उ०—एक बडो सहर छै पण राखस सूतो कर राखियो छै। वाजार री हाटा मत्ता सु भरी पडी छै।—चौवोली

मत्तांतर—स० पु०—विचारभेद, मतभेद।

मत्ता—स० स्त्री० [अ० मत्ता] १ लक्ष्मी, वन-दीलत।

उ०—१ जबदळ, 'पदम', रायसिध जुजळळ, हरचद प्रीछत भोज हुमा मारणी मत्ता छता मही मडळ, मत्ता न मारणी जिता मुआ।

—गोरघन खीची

उ०—२ जगमाल रे सिवदास अरजुनसिंह अँ दिय हुमा सो बडा ही मरद हुइया हजारा री मत्ता लूटी पछै हिमार री फोजदार चढ भाइयो।—ठाकुर जेतसिंह री वारता

२ माल, असवाव।

उ०—तद रजपूत कही, 'लु मोनै महाराज, क्या ईसी दीजै, सु फेर कही रो आमत न हु। अर बँठो खावां अर खुटे नही, सु दीजै। तद समुद्रजी आपरै कामेतीयां नू पूछी 'इसडी कोई वस्त छै ? तद परवाने कही, 'जु एक खीरसख छै सु दीजै।' तिकी रजपूत नू सख दे, घोडा दे, मत्ता देनै विद्या कियो—बूढी ठग राजा री वात

मत्तालब—स० पु० [अ० मत्तालिब] मत्तलब का बहु वचन।

उ०—नौख न जोख करे नव रोजे, जोख न भूखण घरे जवाहर ।  
दमकत करे न मिले दिवाणा, घरजी फरज मत्तालव ऊपर ।

—सू प्र

मत्तानवी—१ राजाघो द्वारा जागीरदारों से लिया जाने वाला एक कर ।

२ देखो 'मत्तालवी' (रू भे)

मत्ताह—देखो मता' (रू भे)

उ०—आगे देखें तो कासू घर पण सूना पड़ीया छे । मत्ताह घणा  
ही छे पण मनख री जात नही ।—चोबोली

मति-स० स्त्री० [स० मत्+वितन्] १ बुद्धि, अक्ल ।

उ०—वाह चदन सुगम सेव्यइ, भाव सचारिक वघइ । तेथीस धति  
मति स्मरण, लज्जा सोक निद्रादिक मघइ ।—वि कु

२ राय, मम्मति ।

३ इच्छा, कामना ।

४ साहित्य के अतर्गत एक प्रकार का सचारी भाव ।

रू० भे०—मत, मती, मत्त, मत्ति, मत्ती, मत्त्य ।

५ देखो 'मती' (रू भे)

उ०—१ पूत घणों में पालियो, जूझण तू मति जाइ । हू मोडे  
आऊ हर्मे, सुत दो ही समुझाइ ।—व भा

उ०—२ मति करो म्हारी व्याव सगाई, क्यू वाधो जजाळ ।

—मोरां

६ देखो 'मिति' (रू भे)

मतिगुर-वि० [स० मति+गुर] तीक्ष्ण बुद्धि वाला, प्रतिभावान ।

मतिघण-वि० [स० मति+घन] विद्वान, पंडित । (ह ना मा)

मतिजीवी-वि० [म० मति+जीविन्] १ बुद्धि पूर्वक काम करने वाला ।

२ विवेकी ।

३ जिसकी जीविका दिमागी काम से चलती हो, बुद्धि-जीवी ।

मतिघर, मतिघोर-स० पु०—बुद्धिमान, विवेकशील ।

उ०—द्वादम रामचंद्र सुत दीठा, गुण तोलण जग हूत गरीठा ।

प्रकट बडो सग्रांममीह पहु, मतिघर सुकवि मिलिद कज महु ।

—व भा

मतिभ्रस-पु०—बुद्धि की वह अवस्था जबकि बुद्धि कुछ भी सोचने या  
समझने में असमर्थ हो जाती है, बुद्धिभ्रस ।

मतिभ्रम-पु०—बुद्धि या समझने की शक्ति विकृत हो जाने के कारण  
होने वाले भ्रम में मनुष्य कुछ उल्टा-मोधा समझने लगता है ।

मतिमत—देखो 'मतिवत' (रू भे)

मतिमद-वि० [स० मदमति] मूख, बुद्धिहीन ।

रू० भे०—मदमति, मदमती, मतमद ।

मतिमान-वि० [म० मति+मतुप्] विवेकशील, समझदार ।

मतिवत-वि० [स० मति+वत्] (स्त्री० मतिवती) चतुर, बुद्धिमान,  
विचारवान ।

रू० भे०—मनवत, मतिमंत ।

मतिमान-वि०—बुद्धिमान, विवेकी ।

उ०—श्री साढा तीन घर छे राजसिंहजी बडो साहसी मतिमान  
गुण खान हूवो ।—राठीड राजमिह री वारता

मतिवाळ—१ देखो 'मतवाळो' (मह रू भे)

२ देखो 'मतवाळ' (रू भे)

मतिवाळो-वि०—बुद्धिमान ।

२ देखो 'मतवाळो' (रू भे)

उ०—१ भारा खग तूटत ऊपर भाळ । मुढे नह सूर लडे मतिवाळ ।

—सू प्र

उ०—२ भुरज भुरज आरवा, दुगम जुय गोळदाजा । मतिवाळा  
मेलियां, कगुर कगुरे सकाजा ।—सू प्र

मतिसार-वि०—बुद्धिमान ।

मतिहीण, मतिहीण-वि० [स० मतिहीन] निर्वुद्धि, मतिहीन ।

रू० भे०—मतहीण, मतहीण ।

अल्पा०—मतहीणी, मतीहीणी ।

मतिहीणी—देखो 'मतीहीण' (अल्पा, रू भे)

मतो-स० स्त्री०—निषेधवाचक शब्द, न नही, मत ।

उ०—दामोदर दीजे मती, कायर काठे वाम । सरण राखे सूर रे,  
तेथ न व्यापे ग्राम ।—बा दा

रू० भे०—मत, मता, मता, मति, मत, मत्त, मत्ति ।

२ देखो 'मति' (रू भे)

उ०—मिळकै लख गोरन मती एक, इत एक एक की मत अनेक ।

उत रेल तार उद्दम अगार, गोरव इत विद्या विन गवार ।—ऊ का

३ देखो 'मिति' (रू भे)

मतोरो—देखो 'मतीरो' (मह, रू भे)

उ०—मीठा हुवे मतोरो, खूब खाटोडा फोगां । काचर काकडिया,  
टीडमा सागा जोगा ।—दमदेव

मतोरोडो—देखो 'मतोरो' (अल्पा, रू भे)

मतोरियो—देखो 'मतीरो' (अल्पा, रू भे)

मतोरी—देखो 'मतीरो' (अल्पा, रू भे)

मतोरी-स० पु०—तरबूज की जाति का एक लता फल, हिंदवान ।

मुहा०—मतीरा री भारी वाघणी=मूर्ख ममूह को सगठित करने  
का असफल प्रयाम करना ।

मह०—मतोरी ।

अल्पा०—मतोरोडो, मतोरियो, मतीरी ।

मतीहीण, मतीहीणी—देखो 'मतिहीण' (रू भे)

मतू—देखो 'मत्तू' (रू भे)

उ०—जिणर्मे मतू मा'राज पदमसिधजी री अरु साख सूरज चद्रमा  
री लिखी ।—द दा

मतूडी—देखो 'मति' (अल्पा, रू भे)

मते, मतेई—देखो 'मते' (रू भे)

उ०—१ कागद समाचार पण कोई जावे नहीं आपरें मते तो कोई कागद मेल सकें नहीं सरम करें ।—कुवरसी साखला री वारता  
उ०—२ उगारी नूराणी देखने स्वामी बोल्या—आज तो ये कजिया रें मते आया दीसी छौ ।—भि द्र

मते-स० पु०—१ इच्छा, इरादा ।

उ०—उठे थमि दो दीह लाखा उठाऊ, हठा ले भटा भेजियो द्रग भाऊ । जिकी बात भाऊ घणी नीच जाणी, पिता रें मते नीटि सोही प्रमाणी ।—व भा  
२ विचार ।

उ०—राव जोधा मारवाड घणी बडो राजा छै । गुजरात रें मुहडै इण रो गुलक छै नै हजरत गुजरात ऊपर मुहम करण मते छै । तो राव जोधा नू आपरी करो ।—राव जोधाजी रें वेटा री बात  
वि०—कटिवद्ध, सन्नद्ध ।

अव्य०—१ अपने आप, स्वत ही ।

उ०—हसी हसी मे राजाजाजी रें स्त्रीमुख सू मते ई आ घात निकळगी ।—फुलवाडी  
२ हरगिज ।

उ०—चलायने आई तो अवे बिना बताया पाछी मते ई नी जावण दू ।—फुलवाडी  
३ लिए ।

उ०—सु तिण नै जाम सते सुख हुतो । सु आजमखान गिरनार लेवण मते । तरें जाम इणरी ऊपर करे ।—नैणसी देखो 'मती' (रू भे )

उ०—आन घरम एकादमी, जोग जिग आचार । इन आसैं भुली मते, हरीया विना विचार ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज  
रू० भे०—मते, मतेई मते ।

मतोमति-अव्य०—अपने आप अपनी अपनी इच्छानुसार, आप ही आप ।  
मतो-स० पु०—१ विचार विमर्श, परामर्श, सलाह ।

उ०—१ प्रभु आगळ करि करि सुर प्रणाम । घरि मतौ गए इम धाम धाम ।—सू प्र

उ०—२ सह बोलिया सकाज, मतौ करे विहुवे मिमल । मन वछित महाराज, ऐ मोहमदीय असपती ।—सू प्र  
२ इरादा, विचार ।

उ०—ओ हाकी सुणने राजा री मन की मोळी पडियो । वो उठे जावण साहू मतौ करियो ।—फुलवाडी  
१ निर्णय, निश्चय ।

उ०—तद सेठ कह्यो—आप जावण री ई पूरो मतौ कर लियो तो पछे म्हेँ ठावू ई कीकर ।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—करणी, होणी ।

रू० भे०—मत्ती ।

मत्कुण-स० पु० [स० मत्कुण] १ रक्त घुसने वाला कीड़ा, खटमल ।

रू० भे०—मकड, मकड, मक्कड, मत्कुण, माकड, माकण, माकर, माकुण, माकड, माकण ।

अल्पा०—माकडियो ।

२ पांच वर्ष का हाथी । (हिं को)

३ बिना दातो का हाथी ।

४ छोटा हाथी ।

रू० भे०—मत्कुण ।

मत्त-वि० [स० मत्त] १ मस्त, मतवाला । (हिं को)

उ०—सत्य न को बळ हत्य के, ना जीवै छळ मत्त । जै पामै रिप सग्रहै, तप हूता छत्रपत्त ।—रा. रू

२ उन्मत्त, मदोन्मत्त ।

उ०—मगरूर घतावत मत्त मदा, उन्मत्त मुनेस्वर दत्त अदा ।

—भे. म

स० पु० [स०] वह हाथी जिसके मस्तक से मद भरता हो ।

२ देखो 'मात्रा' (रू भे )

उ०—कर कर आद मे हिक नगण मुभकर । घुर उगणीस मत्त नहचै घर ।—र ज प्र

३ देखो 'मात्र' (रू भे )

उ०—अकबर साहू निरविषया, जेता चांपावत्त । सीढ़ सहस्रा मत्थणै, लख गिणै त्रिण मत्त ।—रा रू

रू० भे०—मत, मति, मती, मत्ती, मत्तो ।

मत्तगयद-स० पु० [स० मत्त+गजेन्द्र] १ सर्वथा छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे मात भगण और अत मे दो गुरु होते हैं ।  
२ मस्त हाथी ।

मत्तभाय-स० पु०—मस्ती, उन्मत्तता ।

मत्तवाळी—देखो 'मतवाळी' (रू भे )

उ०—अखडी ब्रह्म डी चडी आनदी अनूप आई, महामाई सुरां राई नमो तोनै माय । चिरत्ताळी महाकाळी मत्तवाळी चित्तचीवी, अनीवी सुरगी चगी अनगी सदाय ।—मा वचनिका  
(स्त्री० मत्तवाळी)

मत्तायत-वि०—मदमस्त ।

उ०—ते चाल्या चिति हरखता, मत्तायत मछरति । वड्डा दीवड वारगि, हाक दीड हलकति ।—मा का प्र

मत्ति—१ देखो 'मति' (रू भे )

उ०—एह वचन गजा सुणी, चितै इम निज चित्त । घन माहैसदत्त ग्रहपति, जेह नी अविरल मत्ति ।—वि कु

२ देखो 'मती' (रू भे )

३ देखो 'मिति' (रू भे )

मत्ती—१ देखो 'मति' (रू भे )

उ०—वीराधिवीर मिळें मीर, सूर धीर सत्य ए । आरेण मत्ती सीम मत्ती, वाण पत्ती पत्य ए ।—गु रू व

२ देखो 'मती' (रू भे )

३ देगो 'मति' (रु भे)

मत्तू-स० पु०—ऋण प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा तबान या ऋण पर किए गए हस्ताक्षर ।

उ०—ग्रह प्रभू चीघरियां कुछ कवण उवारै, मत्तू अत्तू मे गत्तू दे मारै । आगो ऊमर आरौ कस आयो, छळ वळ भुतळव कर वस कर छिटकायो ।—ऊ का

रु० भे०—मत्तू ।

वि०—साक्षी स्वरूप हस्ताक्षर करने वाला ।

मत्तै—देगो 'मत्तै' (रु भे)

उ०—१ जिए थो स्वतंत्र सभव मे एक आपरा आलय हू काडि देण रो उपकार करि जिकण रा मीलणा में महियो न जाइ इसडा अनेक गनरय कुमाई मन मत्तै वहै तिकण रो अत तो इसडो ही गटावै ।—व भा

उ०—२ छठी महमूदसाह नू जीति दिल्ली पै पद्वद दिन पातसाही करि आरयावरत रा कै ही अवीसा नू दडि मीर तैमूरग्वेग रै पाछो गयां कैडी दिल्ली रा सूबादार जठी तठी आप आप रै मत्तै रहण हुका ।—व भा

मत्तो—१ देखो 'मत्त' (रु भे)

२ देखो 'मत्तो' (रु भे)

मत्प—१ देगो 'माथै' (रु भे)

उ०—तरेरम कुभ दुहायळ तत्थ । आडागिरि मत्प को हत्थ अगत्य ।—मे म

२ देगो 'माथो' (रु भे)

उ०—वेह समत्थ वणावियो, वाघ डाच जम वत्थ । जिए माभळ लग जाडिया, माय जाय गज मत्थ ।—वा दा

मत्पण-वि०—मथने के लिए, मथने को ।

रु० भे०—मथण ।

मत्पणी, मत्पवी—देगो 'मथणी, मथवी' (रु भे)

मत्पणहार, हारी (हारी), मत्पणियो—वि० ।

मत्पियोडो, मत्पियोडो, मत्पियोडो—भू० का० कु० ।

मत्पियोजणी, मत्पियोजवी—कर्म वा० ।

मत्पारी—देगो 'मथारी' (रु भे)

मत्पे—१ देगो 'माथै' (रु भे)

उ०—'पररेज'ताह सत्थे, दै कमधज लज भूड्डे । सुरताण खुरम मत्पे, दै बीहो कीघ फुरमाण ।—गु रु व

२ देगो 'माथो' (रु भे)

मत्पे—जैनियों का एक अभिवादन ।

उ०—पछै स्वामीजी पधारया जद मिवरामदासजी सतोयचवजी स्वामीजी ने आवठा देगने मत्पेन वदामि कहिने उभा थया ।

—मि. द्र.

मत्पेहण—देगो 'मथन' (रु भे)

उ०—भिहवायो सारो भुआ-मडळ, वसुधा गोधम गहण चिहू-वळ । किलवा महण मत्पेहण कदळ, दिल्ली मातो दुद दमगल ।

—गु रु व

मत्पे—१ देखो 'माथै' (रु भे)

उ०—डोहत सूडाडड ए स्त्रीखड सरपक हिड ए । गज-वाग मत्पे मैगळा, वळकत्त वीजक वडळा ।—गु रु व

उ०—२ सीगाळो अब खल्लणी जिए कुळ हेक न थाय । जास पुराणी वाड जिम, जिए जिए मत्पे पाय ।—हा भा

२ देखो 'माथो' (रु भे)

मत्पे—देखो 'माथो' (रु भे)

उ०—ताम 'भीम' ऊठियो, खाग धूर्ण भूडडह । जडे पाउ पायाळ अडे, मत्पे ग्रहमडह ।—गु रु व

मत्पे—देखो 'मति' (रु भे)

उ०—वचन माहार चिति आणु, भली छितुभ मत्पे ।—नळार्यांन

मत्पे—देखो 'माता' (रु भे)

मत्स—देखो 'मत्स्य' (रु भे)

उ०—मगध मडळ अग वग कलिग कासो कुमट्ट पचाळ जागळ विदेह सडिल्ल मळय वस्त मत्स दसारण चेदी सिधु सूरसेन भग ।

—व स.

मत्सर—म० पु० [स०] १ क्रोध, कोप ।

२ डाह, ईर्ष्या ।

३ गर्व, अभिमान ।

उ०—मनि मावीग्रह मत्सर रहीउ, पाछइ अरजुनु अति गहगहीउ ।

—प प. च

मत्सरता—स० स्त्री० [स०] १ डाह या ईर्ष्या का भाव ।

२ गर्व करने का भाव, अहंकारिता ।

३ कोप या क्रोध करने का भाव ।

मत्सरी—वि०—१ डोह या जलन रखने वाला, ईर्ष्यालु ।

२ क्रोधी ।

३ अभिमानो ।

मत्सरीक्रता—स० स्त्री० [स०] सगीत मे एक मूर्च्छना का नाम ।

मत्स्य—स० पु० [स०] १ मछली ।

२ ज्योतिष मे मीन नामक राशि ।

३ विष्णु के दस अवतारो मे से पहला अवतार जो मछली के रूप मे हुआ था ।

रु० भे०—मच्छ, मछ, मत्स, मांछ ।

अल्पा०—माछळी, माछलो ।

४ पुराणानुसार विराट देश ।

वि० वि०—इस देश की स्थिति के सम्बन्ध मे ऋग्वेद में उसे इन्द्र-प्रस्थ से दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम तथा सूरसेन या मथुरा से दक्षिण मे बताया है । उपनिषदो, ब्राह्मणो आदि मे उल्लेख मिलता है कि वत्स, साल्व, कुरु-पांचाल आदि जनपद मत्स्य के

द्वर्ष गिर्द ही थे। महाभारत के विराट पर्व (१=१०-१४) में कुछ देश के चारों ओर जो जनपद गिनाये गए उनमें पांचाल, चेदि, मत्स्य, दशार्ण, नवराष्ट्र, मल्ल, शाल्व, युगन्धर आदि हैं। वर्तमान अलवर, भरतपुर और जयपुर का कुछ भू-भाग मत्स्य प्रदेश का ही क्षेत्र माना जाता है।

मत्स्यगंधा-स० स्त्री० [स०] कुरुवश के शातनु राजा की पत्नी, जो चित्रागद एव विचित्र वीर्य राजाओं की माता थी। इसके 'काली', गधवती, योजनगधा, गधकाली, सत्यवती, आदि नामान्तर भी प्राप्त हैं।

वि० वि०—पीराणिक आख्यान के अनुसार मत्स्यगंधा उपरि-चर वसु राजा की कन्या थी। इसकी माता का नाम अद्रिका था जो ब्रह्मा के शाप के कारण मछली का स्वरूप प्राप्त हुई अप्सरा थी। इस मछली स्वरूप अप्सरा से उत्पन्न होने के कारण इसके शरीर से मछली की गंध आती थी। इसी कारण यह 'मत्स्यगंधा' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसे मल्लाहों ने पाल पोस कर बड़ा किया था। मल्लाहों के परिवार में रहकर वह नाव चलाने का कार्य करने लगी। एक दिन पाराशर ऋषि ने इसे देखा और अत्यधिक रूप-वती होने के कारण इसके साथ समागम की इच्छा प्रकट की। पाराशर ऋषि ने ही इसे कौमार्यावस्था में वेदव्यास नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई। कौमार्यावस्था में व्यास का जन्म होने के पश्चात् शातनु राजा से इसका विवाह हुआ जिससे इसे चित्रागद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए।

रू० भे०—मछलगंधा।

मत्स्यदेसि, मत्स्यदेसी-वि०—मत्स्य देश का, मत्स्य राज्य का।

मत्स्यपुराण-स० पु० [म० मत्स्यपुराण] अठारह पुराणों में से एक। यह महापुराण कहलाता है।

रू० भे०—मच्छपुराण।

मत्स्यमुद्रा-स० स्त्री० [स०] दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर बाये हाथ की हथेली रख कर दोनों अंगूठों को हिलाने की तांत्रिकों की एक मुद्रा।

मत्स्यासन-स० पु० [स०] योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें दोनों पैरों की स्थिति पद्यासन की तरह रखकर सीधे लेटकर दोनों हाथों की कुहनी को सिर पर रखते हैं। इससे मल शुद्धि होती है।

मत्स्येन्द्रनाथ—देखो 'मछंदर'।

मत्स्येन्द्रासन-स० पु० [स०] योग के चौरासी आसनों में से एक। इसमें बाये पैर की जाँघ के मूल में रखी दाहिने पैर की एड़ी को, बाये हाथ को पीठ के पीछे से घुमाकर पकड़ते हैं तथा दाहिने पाव के घुटने के पास भूमि पर रखे हुए बाये पैर के अंगूठे को दाहिने हाथ से, जो घुटने के बाहर निकलता है, पकड़ते हैं। उक्त स्थिति बनाकर मुह को बाईं ओर मोड़कर बैठने से मत्स्येन्द्रासन होता है। इस

आसन क्रिया से कुडलिनी जागृत होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

मथ—१ देखो 'माथ' (रू भे)

२ देखो 'माथी' (मह, रू भे)

मथण-स० पु०—१ समुद्र। (ह ना मा)

२ मथने की क्रिया।

३ देखो 'मथन'।

रू० भे०—मथाण, मत्थण।

मथणी-स० स्त्री०—१ दही मथने का काष्ठ का बना मथ-दंड।

उ०—१ जरे मनसा मथणी मथ जाण, करे कथणी कथ कै गुज-रांण। कुजीव कुसग कहा कुमळात, विजोगण पीव सजोगण वात।

—ऊ का

उ०—२ फजरा हथणी सी दधि मथणी फुरती, माटां घर घर में धणहर सी घुरती। खूली आथणिया साथणिया खाती, फूली-फूली फिर फूलाळी गाती।—ऊ का

२ देखो 'मथाणी' (रू भे)

रू० भे०—मथणी, मथनी, मथाणी, मथनी।

मह०—मथाण, मथान।

मथणौ, मथवौ—क्रि० स० [स० मथनम्] १ मथानी या रई के द्वारा दूध या दही को इस प्रकार हिलाना या मथना कि उस पर मक्खन आ जाय, विलीना।

उ०—१ आखी कळी री आव सो, जगत सरब री जीव। करता निज हथ काटियो, धण गोरम मय घोव।—सिवबगस पाटहावत

उ०—२ जाणपणउ कळा तियइ तन जीवण, विध बिन्है ही लागा वाद। मथ काळी जाणी महामह प्यारभ, माडी तिण रूप री भ्रजाद।—महादेव पारवती री वेलि

२ कई द्रव पदार्थों को हिला हुला कर एक करना, विलोहित करना।

उ०—अरि डरिया तस केही अचभौ, माखवा राव नमी परवाण।

मथि हाथियं कियो जळ मैळी, मिळतो नदी डरै महिराण।

—गाढण नेती

३ उथल-पुथल करना, अस्त-व्यस्त करना।

४ नष्ट-भ्रष्ट करना।

५ किसी कार्य का बार बार अभ्यास करना।

मथणहार, हारौ (हारी), मथणियो—वि०।

मथिओड़ी, मथियोड़ी, मथ्योड़ी—मू० का० कृ०।

मथीजणी, मथीजवौ—कर्म वा०।

रू० भे०—मथणी, मथवौ, मथ्यणी, मथ्यवौ।

मथदंड-स० पु० [स० मथदण्ड] दही मथने का काष्ठ का बना उपकरण।

मथन-स० पु० [स० मथन] १ गनियारी नामक वृक्ष।

[स० मथिल] २ छाछ, तक्र, मठा। (अ. मा)

३ दधि, दही। (अ. मा)

४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र विशेष ।

५ देखो 'मथन' (रू भे)

रू० भे०—मथण ।

मथनी—देखो 'मथणी' (रू भे)

मथपरवत—स० पु० [स० मथन पर्वत] मदराचल पर्वत का नाम ।

रू० भे०—मथपरवत, मथपरवत ।

मथरा—१ देखो 'मथुरा' (रू भे.)

२ देखो 'मथरा' (रू भे)

मथवाय—स० पु० [स० मस्तवात] शिर मे होने वाली पीडा, शिरशूल ।

रू० भे०—मथवाय, मथवाह ।

मथवाळ—स० पु० [स० मस्तक + वाल] स्त्रियो के शिर के वे बाल जो शिर की घुलाई करते या कधी करते समय शिर से अलग हो जाते हैं ।

मथवाह—स० पु०—१ हाथी को चलाने वाला, महावत ।

२ देखो 'मथवाय' (रू भे)

मथाण—स० पु०—फुण्ड, समूह, दल ।

उ०—देवळ तू मन कर फिकर, मोटो देख मथाण । कळह विरोळु एकलो, घासाहर घमसाण ।—पा प्र

२ नाश, ब्वस ।

उ०—केलपुरे अठी उठी चक्र वेग फेर कीधी, मार टक्र मार हटी सेन रो मथाण ।—बद्रीदाम खडियो

१ बडा नगर, शहर ।

४ सागर ।

५ देखो 'मथाण' (रू भे)

उ०—बोहळी गूजरा रो थाट भैसियांरो लाहोर कने था आणी । सोना रो मथाण ले आयो ।—नैणसी

६ देखो 'मथाणी' (मह, रू भे)

उ०—मिळ मथाण धाराळ तरुं मुह, जत्र कत्र सत्र होयें जणी जण । वार वार दध जेम विलोभै, ताईयां दळ नगराज तण ।

—दूदा नगराजीत खीची रो गीत

वि०—वह जो मथा गया ।

मथाणा—स० पु०—प्रत्येक चरण मे दो तगण सहित ६ वरुं का वणिक छद विशेष ।

मथाणी, मथानी—स० पु० [स० मथनम्] १ वह पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

२ देखो 'मथणी' (रू भे)

उ०—वादळ रा मन में मथाणी घुमती वद वही तो करोत चालती सो लखाई ।—फुलवाडी

रू० भे०—मथणी, मथनी, मथाणी, मथनी ।

मह०—मथाण, मथान, मथाण, मथान ।

मथाणी, मथावी—क्रि० स० [मथणी क्रि० का प्रे० रू०] मथन कराना, मथने का कार्य दूसरे से कराना ।

मथाणहार, हारी (हारी), मथाणियो—वि० ।

मथायोडो—भू० का० कृ० ।

मथाईजणी, मथाईजवो—कर्म वा० ।

मथारी—स० स्त्री०—१ कटीली भाडियो को काटकर बनाया हुआ वह भार जो सिर पर डोया जाता है ।

२ 'शीवण' नामक घास का वह छोटा ढेर जो घास को काटते समय बनाया जाता है । (जैसलमेर)

मथारी—स० पु०—१ बीचो-बीच का ऊपर का स्थान, शिखर ।

उ०—वो ढोल लय नै उण रें माथे चडियो, ठेट मथारें चढनं जोर जोर सू ढोल घमकावण लागो ।—फुलवाडी

मुहा०—दिन मथारें आणी—तेज धूप चढ़ना, दोपहर का समय होता, सूर्य का शिखर पर आना ।

२ उद्गम स्थान ।

उ०—मेह मथारें बरसियो, नदी किराढा मार । घोडा हींसन भल्लिया, सीस किराढा भार ।—बा दा

१ किसी मकान, टीवा, पर्वत आदि का सबसे ऊपर का शिरा, चोटी ।

४ अन्तिम मजिल ।

५ किसी वंश का आदि पुरुष ।

६ अन्त, छोर, हृद, सीमा ।

उ०—१ हजार सू दस हजार घणा वत्ता व्हे । इण गिणती रो काई मथारी, लाख, दसलाख, करोड ।—फुलवाडी

उ०—२ चौधरी ई मन मे जाणली के भ्रंदिपणा रो काठी मथारी आयायी हे, अबै हाथ-पग नी हिलाया तो सूवनं खेलरा व्हे जावाला ।—फुलवाडी

७ पूर्वजो की जन्म भूमि, पूर्वजो का उद्गम स्थान ।

रू० भे०—मथारी ।

८ देखो 'माथासरो' (रू भे)

मथावटी—स० स्त्री०—१ सिर का ऊपरी भाग ।

२ शिर ।

३ ऊपर का भाग ।

रू० भे०—माथावटी ।

मथासरो—देखो 'माथासरो' (रू भे)

मथित—वि० [स० मथित] मथा हुआ, विलोहित ।

रू० भे०—मतीय ।

मथिति—स० स्त्री० [स० मथित] छाछ, मठा । (ह नां. मा)

मथियळ—स० पु०—वह जो मथा गया, सागर, समुद्र ।

उ०—१ रे मथियळ रे नाथियळ थिर रही, थरक म कनक कोट थिर थाय । 'गागावत' गाजियो न गाजै, गाँजै राव अगजिया गाय ।

—राव मालदेव रो गीत



उ०—आह कमध तूफ पग ऊडा, हाथां गयण छिवै हथवाह ।  
मथियल ने धुणियल नह मीढा, समवड तूफ तणी 'गजसाह' ।

—किसनी आढी

मथियोडो—भू० का० कृ०—१ मया हुआ, विलोडित २ उथल-पुथल  
किया हुआ, अस्त-व्यस्त किया हुआ ३ नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ  
(स्त्री० मथियोडो)

मथिला—देखो 'मथिला' (रू भे)

मथी—स० स्त्री० [स०] दही मथने का मथदड, रई ।

मथीत—स० पु० [स० मथित] १ दही । (ह ना मा)

२ देखो 'मथित' (रू भे)

मथुरा—स० स्त्री०—१ पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी  
जिसकी गिनती पुराणानुसार सात मोक्ष दायिनी पुरियों में होती है ।

२ देखो 'मथरा' (रू भे)

रू० भे०—मथरा ।

मथुरी—देखो 'मथरा' (रू भे)

मथेण, मथेरण—स० पु०—वह जैनी यति जो विवाह कर लेता है ।

उ०—१ उण री वेटी फलोधी रा मथेण स्त्रीचद नू परणार्ह ।

—वा दा ह्यात

उ०—२ आघाकरमी थानक मे रहे अनं घर छोडधा कहे तिण  
ऊपर स्वामीजी ब्रस्टात दिथो ज्यू जती रें उपासरी, मथेरण रें  
पोसाळ, फकीर रें तकियो, भक्ता रें अस्तल, फुटकर भक्त रें मढी,  
कनफडा रें आसण, सन्यासी रें मठ, रामसनेहिया रें रामदुवारो  
कठेयक कहे राममोहिलो, घर रा घणी रें घर, सेठ रें हवेली, गाम  
रा घणी रें कोटरी, कठेयक कहे रावळी, राजा रें महल तथा दर-  
बार, अनं साधा रें थानक, नाम मे फेर है वाकी सगळा घर रा  
घर है ।—भि द्र

मथे—१ देखो 'माथे' (रू भे)

२ देखो 'माथी' (रू भे)

मथोग—स० पु०—कलक, घब्बा ।

मथ्य, मथ्यई—१ देखो 'माथी' (मह, रू भे)

२ देखो 'माथे' (रू भे)

उ०—घर पीरस मेछां घणी, कामणि हदी कथ्य । साभळि वैठी  
साप्रत, महानिर्दिदा मथ्य ।—मा वचनिका

मथ्यो, मथ्यो—देखो 'मथणी, मथवी' (रू भे)

उ०—हिरणायख हाणें सख सभाणें, हयग्रीवा खळ हता है ।  
हरणाकुस हत्त महणसु मथ्ये छितलें वळि छळता है ।—र ज प्र  
मथ्यणहार, हारो (हारी), मथ्यणियो—वि० ।

मथ्योडो, मथ्योडो, मथ्योडो—भू० का० कृ० ।

मथ्योजणो, मथ्योजवो—कर्म वा० ।

मथ्योडो—देखो 'मथियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मथ्योडो)

मथ्ये—देखो 'माथे, माथे' (रू भे)

उ०—पाल्हे डेग परठिया, मारग मथ्ये आय । सिरकण ताणें  
तातिया, डेरा किया वणाय ।—जसमा ओडणी री वात

मदती—स० स्त्री० [स०] विकृत धँवत की चार श्रुतियों में से दूसरी  
श्रुति का नाम ।

मदद, मदध—देखो 'मदाध' (रू भे)

उ०—१ गुडिया ढाहै मदध गज, ताता चाळ तुरग । साकड भीडो  
सुरग व्हे, जिको कहीजें जग ।—वा दा

उ०—२ वरतें आप वसत रित, इम करता आणुद । नव पल्लव  
तर नीसरें, मधुकर हुवें मदध । मधुकर हुवें मदध सवज वन  
सोहणा ।—सिववगस पाल्हावत

उ०—३ पडै कटि सीरस वीर पठांण, मद्राचळ चक्र चमू महराण ।  
गुडै गिड-कध मदध मुगल्ल, ह्याली रिखराज हसैं खल-खल्ल ।

—मे म

मदन—देखो 'मदन' (रू भे)

उ०—प्रतख चख पीतणी, महा मदन मोहिणी । मयक मुख  
मजळी, करार नेत कजळी ।—मा वचनिका

मद—स० पु० [स०] १ मादक पदार्थों के सेवन में होने वाली वह उद्धे-  
गपूर्ण अवस्था जिसमें मस्तिष्क ठीक प्रकार से कार्य नहीं करता,  
नशा, खुमारी ।

उ०—हड हड हसत, मसत मदिरा मद, घड-हड सेर घवाडें ।  
चडचड चाव जोगण्या चौसट, घडघड भूमि घुजाडें ।—मे म  
२ अहकार, गर्व । (अ मा, ह ना मा)

उ०—लछवर घनख साथ, तेज निज हर लिया, रद कर मद दुज  
राम, अवधपुर आविया ।—र ज प्र

मुहा०—मद उतरणी=गर्व घूर-घूर होना । २ मद उतारणी=  
गर्व नष्ट करना । मद चढणी=गर्व में घूर होना ।

१ अपनी विशिष्टता या श्रेष्ठता के कारण व्यक्ति की वह मानसिक  
दशा जिसमें वह किसी दूसरे को तुच्छ समझता है, थोथा अभिमान,  
भूठा अहकार ।

४ वह मानसिक अवस्था जिसमें यौवन अथवा काम वासना के  
प्रभाव से उचित अनुचित का ध्यान नहीं रह जाता, कामोत्तेजा,  
कामुकता ।

उ०—१ हमें कवर मदन रें जोरें, सुगध रें घोरें । जीवन मद  
चुवतो, प्रेमातुर हुवतो । 'सुखिया' नू साथ लेइ चवढारो मारग  
टाळिया, हालियो विनालो छोगा राळिया ।—र हमीर

उ०—२ 'रतना' मद में मत्त निसक हुई थी तिरारा सकोज हू  
रूकण लागी, लाज रें भार आखिया भुकण लागी ।—र हमीर  
५ उन्मत्तता, पागलपन, मतवालापन ।

६ हर्ष, आनन्द ।



७ जोश, आवेग, उत्तेजना ।

उ०—करां खग मोगर धूण करूर । पटाभर आहुडिया मद पूर ।  
—गो रु

मुहा०—मद भरणी=मतवाला होना, मदमस्त होना ।

८ एक प्रकार का स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओं यथा मस्त हाथी, ऊट, सिंह आदि के मस्तक और घोवा के सघि-स्थल से निकलता है ।

उ०—१ केहर तणी कळाइयां, भणणाहट भमरांह । भीजी गज-मिर भाजता, मद सोरम डमरांह ।—वा दा

उ०—२ दिक्पाळा रा गाढ समेत दिग्गजा रा मद छूटि । आठूही अनेकप चकितपणा का चीकार करण लागा ।—व भा.

उ०—३ मद भरं करै आकास मून' रिम भरं चरै ताते सु चून । गूगळा मस्त बोले दुगाळ, भुकता सखुवी नुखता सभाळ ।—पे रु

वि० वि०—हाथी के मद मे सुगंध होती है और सिंह व ऊट के मद में सिंह और ऊट की वू (गंध) आती है ।

६ मदिरा, शराब ।

उ०—आलीजा अलवेलिया, हो हजा हुमनाक । भीनोडा रसिया भमर, छेल पियो मद छाक ।—वा दा

१० मधु, शहद ।

उ०—धूप दीप नैवेद पुस्य फळ । कस्मीरज मळयज नागज कळ ।  
मद अग-मद तावूळ महावर । वन घनसार घिरत बैसांनर ।

—मे म

११ कस्तूरी ।

१२ एक विशिष्ट स्राव जो विशेष वृक्षों तथा पत्थरों के सन्धि स्थलों से निकलता है ।

१३ धीर्य ।

१४ कामदेव, मदन ।

१५ एक दानव जो कश्यप एवं दनु का पुत्र था ।

१६ एक दानव जो च्यवन ऋषि से उत्पन्न हुआ था ।

१७ छप्पय छद का ४२ वां भेद जिसमे २६ गुरू, ६४ लघु मे कुल १२३ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है ।

१८ दो भगण का एक छद विशेष ।

१९ मस्त हाथी । (हि को)

२० खाता या खाते का विभाग ।

२१ वह लम्बी लकीर जो बही मे खींचकर उसके नीचे भिन्न-भिन्न रकमे लिखते हैं ।

२२ किसी कार्य या कार्यालय का विभाग, शाखा ।

२३ काला, श्याम । (हि को)

रु० भे०—मद, मदि, मद्, मघ, मय, महि ।

अल्पा०—मदड़ी ।

मदअध—देखो 'मदाध' (रु. भे.)

उ०—उत्तरती बातें करें, औरों की अणवध । निज मुख पाणी ऊतरै, ईखै नह मद-अध ।—वा दा

मदउत्कट—स० पु० [स० मदउत्कट] मतवाला हाथी, मदमस्त हाथी ।  
(हि को)

वि० [स० मदउत्कट] १ नशे मे चूर ।

२ कामुक ।

३ अहकारी, अभिमानी ।

मदकध—स० पु० [स० मद+स्कध] १ ऐरावत, हाथी । (हि को)  
२ हाथी ।

रु० भे०—मदगध ।

मदक—स० पु०—१ अफीम के सार से बनाया जाने वाला मादक पदार्थ जिसे चिलम पर तम्बाकू के साथ पीते हैं ।

२ साह ।

मदकार—वि०—जिससे मद उत्पन्न हो, मद वद्धक ।

मदकरण—स० पु०—हाथी । (ना हि को)

वि०—मतवाला, मस्त ।

मदकळ—वि० [स० मदकळ] १ मस्त, उन्मत्त ।

उ०—इण कारण बूदी समेत छोटा बडा १२ ग्रामा रो प्राप्त पाइ मदकळ मातग मारण रो मन करता सियाळ रें समान छत्रधारिया रो अनुकरण करै ।—व. भा

२ अस्पष्टतया बोलने वाला ।

३ धीरे धीरे प्रेमालाप करने वाला ।

४ मदोन्मत्त ।

५ मन्द मधुर ।

६ मदमाता ।

स० पु० [स० मदकळ] १ मतवाला हाथी ।

२ बाईस लघु और १२ गुरु कुल ३५ वर्ण या ४८ मात्रा का दोहा नामक छन्द का भेद विशेष ।

३ आर्या गीति या खद्याण (स्कवक) का भेद विशेष ।

रु० भे०—मङ्गळ, मगळ, मद्गळ, मयगळ, मद्गळ, मदगर, मदगळ, मदग्गळ, मद्गळ मयगळ, मयगळि, मयगळ, महगळ, मेगळ, मैगळ, मैगळय, मैगळ ।

मदगध—१ देखो 'मदकध' (रु. भे.)

उ०—१ कळह रचै दसकध, नवग्रह वध निवारियो । हुवा धनुस गुण सबद, है गतमद जग मदगध ।—वा दा

उ०—२ वार्धे सिखर वढे लावै प्रव, इळ पुढ नांम वधै अनमध । दीन्हा नको नहीं कोइ देसी, मारू राव जिसा मदगध ।

—महाराजा रायसिंह की गीत

मदगधा—सं० स्त्री० [स०] १ मदिरा, शराब । (हि को)

२ भाग ।

मदगर, मदगळ—देखो 'मदकळ' (रु. भे.)

उ०—हे सखी इसा तोटा ऊपरै तो हू अनेक वेळा वारणै जाऊ जिण तोटा मे ही पोत (तेवटा री चीढा) तो गज मोतियां री ने चूढो ही उणहीज मैगळ (मदगळ) मदोनमत हाथी रा दांत री है ।  
—बी. स. टी

मदगळत-वि०—मदमत्त, मस्त ।

उ०—मदगळत जूह मैगळमसत, सिणगार खडा किय सदोमत्त ।

—गु रू व

मदगळित-वि०—मदच्युत ।

उ०—समद जाह खाहउ पक्षाळियउ । अनेक राह मदगळित करि मेहल्या ।—वचनिका

मदगू-स० पु०—जल काग, जल कोआ । (डि को)

मदगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—भाज राज वत वेव करै नट राज तणी कळ । गजां राज घण गरज, गाज सरराज मदगळ ।—सू प्र.

मदडो—देखो 'मद' (अल्पा रू भे)

उ०—मदछकिया भवरजी मदडो तो मोलाय, ओ कोडीला भवरजी कोई मदडो तो पावी मूगा मोल री हो म्हारा राज ।—लो गी  
मदछकियो—वि० (स्त्री० मदछकी) नशे में मदमत्त, मस्त, मद से परिपूर्ण ।

उ०—चवसठ मभि वावन चिरताळा । मदछकिया रमै मतवाळा ।

—सू प्र

मदछाक-स० पु०—मदिरा से परिपूर्ण (प्याला) ।

मदजीवण-स० पु०—शराव का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कलाल ।

मदजभर, मदभड, मदभर-वि०—वह जिसके मद का स्राव होता हो ।

स० पु०—१ हाथी ।

उ०—१ कही तो आणा किलमरा, मदभर मतवाळा । साहिजादा कै अमीर सू चित ह्वै चकचाळा ।—सू प्र

उ०—२ दोय लाख दताल मसत गाजत मदजभर । सात लाख नीसाण घुरै दुदभि लख घुम्पर ।—सू प्र.

२ सिंह ।

३ ऊट ।

रू० भे०—मदाभर ।

मदत—देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—दीवार अरज मान मदत साथ दीवी ।—नैणसी

मदतकार, मदतदार—देखो 'मददगार' (रू भे)

मदति, मदती, मदत्तिय—देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—१ 'नाग' दुरग पति जवन, साह 'दोलत' दळ सव्वळ । सेखै सुज पतिसाह, मदति आणियो महावळ ।—सू प्र

उ०—२ वागा ऊपडै विखमीवार घडकै आकास घर । खरी खेघ वाजी खरा वहसै दुवाह । निहसै कै'वाण नागै ऊससै विचै आराण,

साह री मदति साजै जांगळू री साह ।—जगो साहू

मदद-स० स्त्री० [प्र०] सहायता, सहारा, सहयोग ।

उ०—रिणी मे मुत्सही साथ फेर राख पधारिया जे हिसार नू कांम पडे मदद चाहिजे तो सताव जाय सामल हुयने ।—नैणसी

रू० भे०—मदत, मदति, मदती, मदत्तिय, मदा ।

मददगार-वि०—मदद करने वाला, सहायक, सहयोगी ।

रू० भे०—मदतकार, मदतदार ।

मदधर-स० पु०—हाथी ।

उ०—ढळकता ढाल मदधर घजा, घट घोर अग्राज घण । चढियां मजेज होतां चमर, तेज पुज 'भगजीत' तण ।—सू प्र  
२ सिंह । ३ ऊट ।

मदन-सं० पु० [स० मदन] १ कामदेव । (अ मा, ह ना मा)

उ०—वागायत प्रथमी विचै, निज अलवर सर नाम । नीर हवद छळिया नहर, तर सर सवज तमाम । तर सर सवज तमाम, छ रितु छवि छाविया । मानहु मदन महीप वितान वणाविया ।

—सिववगस पालहावत

यी०—मदन-कदन ।

२ वसन्त ।

३ घतूरा ।

४ रति क्रीडा, सभोग ।

५ कामवासना, कामेच्छा ।

उ०—मगसर महीना मे मेरे मन मे उठे तरग । अरध निसा मे आय के मदन करत मोहे तग ।—लो गी

६ भीरा ।

७ मंना पक्षी ।

८ मोलसिरी ।

९ उडद ।

१० ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म से सातवें गृह का नाम ।

११ डिगल के 'वेलिया' साणोर छद का भेद विशेष जिसके प्रथम ढाले मे १४ लघु, ५ गुरु से कुल ६४ मात्रायें हो तथा अन्य ढालो मे ५४ लघु, ४ गुरु से ६२ मात्रायें हो ।

१२ छप्पय छद का २२ वां भेद जिसमे ४६ गुरु ५४ लघु से १०३ वर्यं या १५२ मात्रायें होती हैं ।

१३ आर्यागीति या 'खघाण' (स्कधक) का भेद विशेष ।

रू० भे०—मदण, मदन, मदन्न, मयण, मयणि, मयन, मैण ।

मदनकटक-स० पु० [स० मदनकण्टक] साहित्य मे सत्त्विक रोमांच ।

मदनक-स० पु०—१ प्रथम आठ लघु और फिर एक सगण का ११ वर्यं का वृत्त विशेष ।

२ मदन-वृक्ष, मदनफल ।

३ मोलसिरी ।

४ घतूरा ।

मदन-कदन-स० पु० [स०] शिव, महादेव । (डि को)

मदनका-स० पु०—छे लघु वर्यं का वृत्त विशेष ।

मदनगोपाळ-म० पु० [स० मदनगोपाल] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

मदन-ग्रह-स० पु० [स० मदनग्रह] १ योनि, भग ।

२ फलित ज्योतिषानुसार जन्म कुहली में सातवा स्थान ।

३ मदनहर नाम का एक छन्द विशेष ।

मदनचतुर्दशी, मदनचौथ-स० स्त्री० [स० मदनचतुर्दशी] चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी ।

मदनताळ-स० पु०—संगीत में एक प्रकार का ताल विशेष जिसमें पहले दो द्रुत और अंत में दीर्घ मात्रा होती है ।

मदनतेरस-स० स्त्री० [स० मदनप्रयोदशी] चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की प्रयोदशी ।

मदनदमन-म० पु० [स० मदनदमन] शिव का एक नाम ।

मदन-दिवस-स० पु० [स० मदनदिवस] मदनोत्सव का दिन, वसंत ।

मदनदोळा-स० स्त्री०—संगीत में, इन्द्र ताल के छ भेदों में से एक ताल विशेष ।

मदनपति-स० पु०—१ इन्द्र ।

२ विष्णु ।

मदनपाठक-स० पु० [स० मदनपाठक] एक पक्षी विशेष, कोकिल, कायल ।

मदनफल-स० पु०—मनफल ।

मदन-भवन-स० पु० [स०] १ योनि, भग ।

२ जन्म कुण्डली में जन्म स सातवा स्थान । (फलित ज्योतिष)

रु० भे०—मदनालय ।

मदन भेरी-स० स्त्री०—वाद्य विशेष ।

उ०—मदनभेरी वाज्या नीमाण, तु ढीली पुहुतउ सुरताण ।

—का दे प्र

मदन-मस्त-वि०—१ मतवाला, मस्त ।

२ कामामत्त, विषय में लीन ।

३ चम्पे की जाति का एक फूल ।

मदन-महोत्सव-म० पु० [स० मदनमहोत्सव] चैत्रमास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत मनाया जाने वाला प्राचीन भारत का एक उत्सव विशेष ।

मदन मोहन [स०] १ योगिराज कृष्ण का नामान्तर ।

२ ईश्वर का एक नाम ।

मदनरस—एक श्लोक ।

उ०—घोड़ाचोनी मदनरस, अन्नक पारु वग । खाइ ते मिउ खप करी, आपण कीजइ सग ।—मा का. प्र

मदन-रेखा-स० स्त्री०—एक महासती ।

रु० भे०—मयणुरेहा ।

मदनसदन—देखो 'मदनभवन' (रु. भे.)

मदनमाही-न० पु०—राजपूतानांतगत भूतपूर्व झालावाड राज्य का एक निक्का विधेय ।

मदनाकुस-स० पु० [स० मदनाकुश] १ लिंग ।

२ नख, क्षत ।

३ योनी, भग ।

उ०—पेट ज्यू लच्छी पाट की नितव नारियल जाए । मदनाकुस की जायगा त्रिवली सीप ममान ।—कुवरसी साखळा री वारता

मदनातक-स० पु० [स०] महादेव, शिव ।

मदनाध-वि० [स०] कामाध, कामासक्त ।

मदनातुर-वि० [स०] कामातुर ।

रु० भे०—मयणातुर ।

मदनायुध-स० पु० [स०] १ कामदेव का अस्त्र ।

२ भग, योनी ।

मदनारि-स० पु० [स०] महादेव, शिव ।

मदनालय—देखो 'मदनभवन' ।

मदनी-स० स्त्री०—१ सुरा वारुणी । (अ मा)

२ कस्तूरी ।

मदनोत्सव-स० पु० [स० मदनउत्सव] मदन महोत्सव ।

मदघ्न—देखो 'मदन' (रु. भे.)

मदपश्रसण-स० पु०—शराब की महफिन में शराब के दीर के साथ खाई जाने वाली खाद्य सामग्री । (डि को)

मदपटाघर-स० पु०—हाथी ।

वि०—मदमत्त, मस्त ।

उ०—घर्कं क्रोध हरसाह जैहवार जुध बटाघर । दुरद मदपटाघर जेम दोव । धार खग जटा ऊघटा पडे छटाघर, जटाघर मुगटधर खेल जोव ।—हुक्मीचद खिडियो

मदपती-वि०—१ उन्मत्त, मस्त, मतवाला ।

२ शराब पीने वाला ।

मदपान-स० पु० [स० मद] मुरापान, मदिरापान ।

मदभाव-स० पु०—हाथी के अधिक मद स्त्राव होने की बीमारी । इस बीमारी के कारण हाथी छटपटाता है, सबको मारने दौड़ता है । उसके शरीर में दर्द होता है । वह जंजीरो के बंधन को तोड़कर भागने का प्रयत्न करता है ।

मदमणी-स० स्त्री०—युवती, महिला ।

मदमत-वि० [स० मदमत] मतवाला, मस्त ।

मदमत्त, मदमसत, मदमस्त, मदमातो-वि० [स० मद+फा० मस्त] (स्त्री० मदमती, मदमत्ती, मदमाती) १ मतवाला, मस्त ।

उ०—१ चडे ताम गजपती, करे ससकर आडवर । भड वका वर तुरी, लिया मदमत्ता कुडर ।—गु रु व

उ०—२ मा दीहड मदमत्ती छत्र चमर द्यती ।—मे म ,

उ०—३ सकि सज्जि तीन सलाम, अति खमै सिर इतमाम । जुडि खडा विदु कर जोड, मदमसत गज घड मोड ।—सू प्र.

उ०—४ सो कैसे पोसाक कू सैं जलूस मदमस्त गयद की चाल ।  
आवधू से कहा जूढ ढळकती छाल ।—सू प्र.

उ०—५ असी लख तोखार लख मैंगल मदमाता । हाली अली-  
मसद दयत राकस दीसता ।—राव मालदे री बात

उ०—६ मदवा पी पी सब मदमाती, मैं विन पिया मदमाती । प्रेम  
भटी का मैं रस चाख्या, मैं छकी रहू दिन राती ।—मीरा

उ०—७ और सखी मद पीवन आई, मैं मद की मदमाती । मैं मद  
पीयो पचवटी को, छकी रहू दिन राती ।—मीरा

उ०—८ मदमस्त सोमित महामाया, पात्र मदरा पूरये । चख  
चोळ गोसा जोस चचळ घुळै लौचन घूरये ।—मा वचनिका  
२ मदनोन्मत्त, कामातुर ।

स० पु०—हाथी ।

रू० भे०—मदोन्मत्त, मदोमद, मदोमस्त, महोमत्त ।

मदमूक—देखो मदमोख ।

उ०—रग भौम उत्तग सुझाळै रोदा मारुत मूकै माण । मदमूक  
महाबळ प्रम परध्वळ वाराभास वसाण ।—मा वचनिका

मदमोख—स० पु०—हाथी ।

उ०—परवत पख प्रचढ ए । मल्हपति माणकडह ए । मदमोख जूह  
महाबळी । सदरूप मेघक सिधळी ।—गु रू व  
वि०—मदमत्त, मस्त ।

उ०—१ छूरा खग ऊपाडि, सीह करि साकळ छूटा । मुरडि खम  
मदमोख, जाण सूडाहळ छूटा ।—गु रू व

उ०—२ आवतां ही महा वेछाड मदमोख अडोली अठेल पहाड  
रूप हाथी सामही आयो ।

—कल्याणमिध नागराजोत वाढेल री बात

रू० भे०—मदमूक ।

मदरदन—देखो 'मदरदन' (रू भे )

उ०—पहलां तो बडारण मदरदन कियो पछे सपाढो कराइयो ।

—कुवरसी साखला री वारता

मदरसी—स० पु० [अ० मदरसा] पाठशाला, विद्यालय ।

मदरा—देखो 'मदिरा' (रू भे ) (अ मा )

मदरागध—स० पु०—कदम का वृक्ष । (अ मा )

मदराळ—वि०—मुद्रा धारण करने वाला ।

स० पु०—योगी, मुनि ।

मदरास—स० पु०—१ 'दक्षिणी भारत का एक प्रांत जिसका पुनर्नाम-  
करण तमिलनाडु किया गया है ।

२ इस प्रांत का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह ।

रू० भे०—मद्रास ।

मदरी—देखो 'मधरी' (रू भे )

मदळ—स० पु०—घर के मुख्य द्वार पर शिल्पकारी से युक्त लगाये जाने  
वाले पत्थरों के नीचे सहारे के लिए लगाये जाने वाले वे पत्थर

जिन पर शिल्प की खुदाई के साथ मध्य-भाग में एक रेखा खींची  
हुई होती है जिसके कारण वह दो भागों में विभक्त दिखाई देता है ।

मदलेखा—स० पु०—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात-सात  
वर्ण होते हैं ।

मदव—स० पु०—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—अथ वस्त्र, देवागचीर चीनासुक पटासुक पट्टुकूल पट्टहरी  
मदव गजवडि सुवर्णपण्डि क्रस्णपण्डि माठउ जादर भाती गतु  
जादर ।—व स

मदवी—वि० स्त्री०—मस्त, उन्मत्त, मदयुक्त ।

स० पु०—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटा सारनाला खासटां अगिहिल कवीच सजरामा मदवी  
फूल-पगरीया सारीपी तिलवास गरबम सूत्र राजिउ वयराजीउं ।

—व स

मदवी—वि० (स्त्री० मदवी) १ मदिरापान करने वाला, शराबी ।

उ०—सातु मिळ सहेलिया, माढा कर मनुहार । मद पायो म्यारांम  
नै, ऊगायो अणपार । वेलीया कमर बाधी छै भारवरदार लादी  
छै । घोडा, ऊट भीजै छै, यदवी जी मैला मे रोजै छै ।

—मयारांम दरजी री बात

२ मदोन्मत्त, मस्त ।

उ०—वरियो तप हिक धार, अग न फिरियो एक चित । बाधा  
ज्यां दरवार, मदवा कुजर मोतिया ।—रायसिंह सादू

३ कामातुर, कामविल्लल ।

उ०—जिण समैरा रस री किसी छेह, धण जिका तो घरती नै  
मदवी जिका सांघणरी मेह । इण भात सुरत जग जूटा, घाइल  
हुइ छूटा ।—र हमीर

४ गर्व में चूर, गवित ।

उ०—अर राव रतनसीजी सैल सी सिरदार मदवी हुवी नै मुंडे  
आगै कामेती तेजसी रायमलोत हो ।—द दा.

रू० भे०—मदवी ।

मदसुदन, मदसूदन—देखो 'मधुसूदन' (रू भे )

मदांभर—देखो 'मदभर' (रू भे )

मदांति—देखो 'वेदाती' (रू भे )

उ०—वेसाखि का मदांति साख्य सोगत नैयायक । भीमासक मुख  
मुखर वादि गुरु गर्व निवारक ।—अभयतिक यती

मदांघ—वि० [स० मद+अंघ] १ वह जिसे अभिमान या अहंकार के  
नशे में भले बुरे का ज्ञान न हो, अन्य को तुच्छ समझे, दर्प में चूर ।

उ०—कहें क्या घ्यावे धी कहन नही आवे कुल कुले । मदांघो  
मायावी तुम से हम भावी सम तुलें ।—ऊ का.

२ कामातुर, कामसक्त, कामाध ।

३ मदोन्मत्त, मत्वाला ।

रू० भे०—मदघ, मदअध ।

अल्पा०—मदाघो ।

मदांघी—देखो 'मदाघ' (रू भे.)

मदा—देखो 'मदद' (रू भे.)

उ०—तोहें पण आदमी भेलीयो—'म्हैं पा कन्है आया छा, किम मदा करणी हुवैं तो वंगी करजौ ।—राजा नरसिंघ री बात

मदाखिलत—स० स्त्री० [म० मदाखिलत] १ दाखिल होने की क्रिया या भाव ।

२ दखल, हस्तक्षेप ।

मदाखिलत-वेजा—स० स्त्री० [म० मदाखिलत+फा० वेजा] अनुचित रूप में कहीं प्रवेश करना, अतिक्रम करना, अनधिकार प्रवेश ।

मदार—स० पु० [म०] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

उ०—१ पातसाही सारी री मदार साहजादे दारासकोह माथे छैं ।  
—नैणसी

उ०—२ महाबतखान नु सारी मदार दे परवेज रैं मुहँ आगैं देमा री हीद् तावीन दे खुर्म वासैं विदा कीयो ।—नैणसी  
२ निर्भरता ।

उ०—जोधपुर रिंगमलां माथे मड त्यू जेमलमेर केलण रा परवार ऊपर मारी माहिबी री मदार ।—नैणसी

३ आश्रय ।

४ मुसलमानों का एक पीर ।

५ हाथी ।

६ आक नाम का पौधा ।

मदारत—स० स्त्री० [म० मुदारात] आदर सत्कार, आवभगत ।

उ०—प्रथम शोक दोस्त दुस्मन सू मनुहार मदारत करी काम विगर सलाह अकलवता रैं आरभ मत करी ।—नी प्र

मदारी—स० पु० [म० मदार] १ बदर, रीछ आदि जानवरों को सिखा गमभाकर उनका खेल दिखाने वाला व्यक्ति ।

२ बाजीगर, तमाशा दिखाने वाला ।

३ सूफी मत के मुसलमानों की एक शाखा ।

४ शाह मदार नामक पीर का अनुयायी ।

५ गिट्टी का हुक्का (मेवात) ।

मदारो—स० पु०—मीमा पर गढा हुआ पत्थर ।

मदाळ—स० पु० [म० मद+आलुच् या मदकल] १ हाथी ।

उ०—भडा फरकैं मदाळा पीठ आरवा नत्रीठा भडैं, घुपडा ऊधड़ें वे विरडा सूर धीर ।—फतहराम आसियो

२ एक रंग विशेष । (अमरत)

वि०—मदोन्मत्त, मतवाला ।

उ०—१ राळा कराळा भाळा अताळा विछूटैं वाण, तइ खेन पाळा मटे वे ताळा तमाम । मदाळा दताळा काळ नेजाळा सुडाळा माथे । वाघ चाळा 'कीता' धाळो आछटैं वाणस ।  
—राजा रायसिंह काना री गीत

उ०—२ महावीर पाहें पछाहें मइदां । गहै दत गोकैं मदाळा गइदा ।—व भा.

अल्पा०—मदाळी ।

मदालसा—स० स्त्री० [स०] पुराणानुसार काशी देश के ऋतुध्वज राजा की पत्नी जिसके प्रथम छे पुत्रों ने अल्पायु में ही सन्यास ले लिया और अन्तिम पुत्र अलकं को जब राजा राज्य भार सौंपने लगे तो वह भी अपने पिता के साथ सन्यासी हो गया । एक बार पाताल केतु नामक राक्षस ने इसका हरण किया लेकिन राजा ने पाताल केतु को पराजित कर उसे पुन प्राप्त कर लिया ।

रू० भे०—मदालसा ।

मदाळी—देखो 'मदाळ' (अल्पा, रू भे.)

मदावर—स० पु०—हाथी ।

उ०—मदावर लोहनी साकल ओढि, आलान स्तभ मोढि हस्तिताल भाजि पत्तार गाजइ कमाड फाडइ वन माहि साचरइ ।—व. स वि०—मदमत्त, मतवाला ।

मदि—देखो 'मद' (रू भे.)

उ०—बाइ मोकलि न सू मदि मातठ । वूड कीचक परेशी रातु ।  
—सालिसूरि

मदिमाती—देखो 'मदमत्त' (रू भे.)

मदियो—स० पु०—एक जगली पोधा विशेष ।

रू० भे०—मदियो ।

मदिरा—स० स्त्री० [स०] १ कुछ विशेष अन्नो, फलों तथा वृक्षों की छाल को सडाकर उनका भभके से खींचकर निकाला जाने वाला नशीला द्रव, आसव ।

२ शरीर ।

३ बाईस वर्णों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात भरण और अत में एक गुरु होता है । इसे मालिनी भी कहते हैं ।

वि० वि०—रघुवर जस प्रकास में केवल सात भरण का ही मदिरा छद माना गया है ।

४ रक्त-वर्ण, लाल-वर्ण ।

रू० भे०—मदरा, मदीरा ।

५ एक स्त्री जो देवदैत्यो ने किये समुद्रमंथन में निकले हुए चौदह रत्नों में से एक थी । इसे 'सुरा' नामान्तर भी प्राप्त था ।

६ श्री कृष्णपिता वसुदेव की अनेक पत्नियों में से एक । वसुदेव की मृत्यु के पश्चात् देवकी, भद्रा एवं रोहिणी नामक अन्य वसुदेव पत्नियों के साथ यह सती हो गयी ।

मदीनी—स० पु० [अ० मदीन] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहां इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने समाधि ली थी ।

वि० वि०—यह मुसलमानों का पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता है ।

मदीय—सर्व०—मेरा ।

उ०—मवाध्यानाथ भावना विभू नहीं विकारसी। मदीय मे न मूढता त्वदीय है न तारसी।—ऊ. का

मदीयुन-वि० [फा०] जिस पर कर्ज का दावा किया गया हो।

मदीरा—देखो 'मदिरा' (रु भे)

मदील—देखो 'मदील' (रु भे)

उ०—विभाति अक कोट लक धोवती वनी। मदील की चमक ज्यो दमक दामिनी।—मे म

मदुरोग-स० पु०—घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष। (शा हो)

मदुरी, मदुरी-स० पु० [स० मधुज्वर] प्राय २१ दिन तक का एक मियादी बुखार, मधुर-ज्वर।

मदेरी—देखो 'मधरी' (रु भे)

उ०—होले भवरजी मदेरा जी बोल हा वो मद छकियाजी कोई सेज्या मे सूत्यो पूत कलाळ रो।—लो गी.

मदोवध-स० पु० [स० महोदधि] सागर। (डि को)

मदोदत्त-वि० [स०] १ मदोन्मत्त, मदमत्त।

२ गर्व मे चूर, अभिमानी।

मदोन्मत्त, मदोन्मत्त, मदोन्मत्त, मदोन्मत्त, मदोन्मत्त—देखो 'मद-मत्त' (रु भे)

उ०—मदोन्मत्त हस्ती मेलिह चाल्यउ।—अ वचनिका

उ०—२ वर तुरग उत्तग, कर्ण साकति विराजित मदोन्मत्त मात्तग, जाण जळ वादळ गरजित।—गु रु व

उ०—३ भरत दाण कुजर। गिरै कि नीर नीकर। मदोन्मत्त मंगल। करै प्रवीत काजल।—गु रु व

मद—देखो 'मद' (रु भे)

उ०—१ जोधा राकसे जरद् मंगला उतारै मद, बाहाली खाटे विरद्, मरदा मरद् रिमा खागे करै रद्, वहू लियै सु सबह हीद् ऐहद् विहद् जद जद जद्।—ल पि

उ०—२ रोल है पक्खर। गै गुहै भवखर। मद मै नीकर। घोर घटा सर।—गु रु व

उ०—३ उत्तर आज उत्तरीयउ, पाळो पड़ै रवद्। कै वैसनर सेवीयै, कै तरणी के मद।—ढो मा

मद्गळ—देखो 'मदकळ' (रु भे)

उ०—उभै तरफि आरवा, मढे दळ उभै मद्गळ। उभै तरफि वधि अणी, दमग भाळा दावानळ।—सू प्र

मद्गळ, मद्गळ—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—१ तली ताळ टवकडा मद्गळ वस विसाल। निरति करड नव राग मा, माढी मस्तक धाल।—मा का प्र

उ०—२ भेरि मद्गळ ढोल नीसाणा, वाज्या चढघो बोल प्रमाण।

—कनक सोम

२ देखो 'मादळियो, मादलीयो' (मह, रु. भे)

३ देखो 'मादळ' (रु भे)

मद्गोमत्त—देखो 'मदमत्त' (रु भे)

उ०—मद्गोमत्त खम मरोड, जूह वहति गैतुळ जोड। मरसी वरन मद्गोमत्त, पाखा उडिया परवत।—गु रु. व.

मद्गम—देखो 'मध्यम' (रु भे)

मद्गरी—१ देखो 'मधरी' (रु भे)

२ देखो 'मधुर' (अल्पा, रु. भे)

३ देखो 'मधुरी' (रु भे)

मद्गि—देखो 'मध्य' (रु. भे)

उ०—अधिकु कहू आसाड सू, माठउ महीअळ मद्गि। पगदडा पथी तणा, तद भज्या भव सिद्धि।—मा का प्र

मद्गर, मद्गरी—देखो 'मधुर' (रु. भे)

उ०—तीखा तमतमा राईतां, मीठा मद्गुरा गल्या तल्या मचमचां इस्या सालणां तणी मुगति।—व स

मद्दे—देखो 'मध्य' (रु भे)

मद्घ—देखो 'मद' (रु भे)

मद्घप-वि० [स०] मद्य पीने वाला शराबी, नशेवाज।

मद्घपान-स० पु० [स०] मदपान, सुरापान। ३२

मद्ग-स० पु०—१ पचनद मे स्थित एक प्राचीन देश।

२ इस देश का एक राजा।

३ मारवाड प्रदेश।

उ०—प्रथम देस जेसाण वीकाण प्रगटी पछै, बरजियो भाण वेडी उबारयो। अवे परब्रह्म वाली प्रकति अद्रजा, घजाळी मद्र भवतार धारयो।—मे म

वि० [स०] कुशल, प्रसन्न। (ह ना मा)

मद्रक, मद्रकि-वि०—मद्र देश का।

उ०—बीजी मद्रकि मद्रधूय पडु तणइ घर नारि। गभु घरीऊ गभु घरीऊ देवि गधारि।—सालिभद्र सूरि

मद्राचळ—देखो 'मदराचळ' (रु भे)

उ०—पडै कटि सीरस बीर पठाण। मद्राचळ चक्र चमू महाराण।—मे म

मघ-स० पु० [स० मध्याह्न] १ दोपहर का समय।

२ देखो 'मधु' (रु भे)

३ देखो 'मध्य' (रु भे)

४ देखो 'मद' (रु भे)

मघक-स० पु०—महुषा नाम का वृक्ष।

मघकर—१ पुत्री को विवाहोपरान्त विदा देते समय गाया जाने वाला लोक गीत।

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

३ देखो 'मधुकर' (रु भे)

मघकीट, मघकीटग, मघकेटभ—देखो 'मधुकंठभ' (रु भे)

उ०—१ लकापति रामण सारिखा कृभक्रन इद्रजीत मारिखा, हिरणाखस हिरणकामिव सारिखा मुर दाणव महावळी सारिखा,

मधकीट महिषासुर नारिणा तिकै पण खै गया, वामस्ट मारकड  
मधा मे बखी, ती आजरै काळ सभ नै निमभ महाजोवार, असुरा  
धगु निहार, तिए रो उदिम कीजै दोखी मरै सुजस लीजै ।

—मा वचनिका

उ०—२ माघा गिरि राया जै महामाया, सातां दीपा मा छाया ।

बोइडा गिरि काया घघ घमाया मधकीटग तैं माराया ।—पी प्र

मधन-म० स्त्री०—भैरव राग की पुत्र वधू एक रागिनी । (संगीत)

मधम—देखो 'मध्यम' (रू भे)

उ०—१ स्वर वाज्यू का भेद कहि दिखाया सो कैंभे खडज रखव  
गधार मधम पचम धईवत नितान्न सप्तमुर के अलाप करि  
कोकिल की बांणी सैं बोलते है ।—सू प्र

उ०—२ नहि जया उत्तम मधम कनिष्ठा, नहि कोई लाभ न हांणी ।  
अप्रमेय चेतन निज केवल सो सुखराम निरवाणी ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

मधमति—देखो 'मधुमति' (रू भे)

मधर-कि० वि०—१ भीतर, अन्दर ।

उ०—गरवा सादर न, तरे प्रीत पाळत । सकर विन, सायर  
यहनि कोर मधर धारत ।—अज्ञात

२ देखो 'मध्य' (रू भे)

मधरी-वि० (स्त्री० मधरी) १ मद, धीमा, क्षीण ।

उ०—१ आघो रहग्यो ठगली, आघो रहग्यो छाज । सागर सट्टै ।  
धगु गर्द, (धव) मधरी मधरी गाज ।—अज्ञात

उ०—२ दिन साधमियां पछे वै अणू ता चोकस विह्या दसम री  
पानणी री मधरी उजाम हो ।—फुलवाडी

उ०—३ टूळकी, भीठी, मधरी बोली मे पेमजी गुरली दालाल नै  
कैंयो घर आप मुट्टे मायें बैठयो ।—दसदोख

२ छोटे गद का, ठिगना ।

म० पु०—ऊट की चाल ।

रू० भे०—मदरी, मदरी, मदुरी, मदूरी, मदरी, मदुरी ।

मधवन—देखो 'मधुवन' (रू भे)

मधवाचारी-म० पु० [म० मधवाचार्य] दक्षिण भारत के मध्यकालीन  
मन प्रसिद्ध साधव । (बाह्यद्वी गतावरी)

मधवी—देखो 'मदवी' (रू भे)

मधि—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—१ नई साय दण धिध गही, गुणी डम बहे सुजाण । मांडै  
बाधव माय मधि, पतिन माध प्रमांण ।—नू प्र

मधिवह्य मधिवह्य-म० पु० [म० पाण्डवमध्य] १ अर्जुन ।

(ह ना मा)

२ पाण्ड पुत्र भीम ।

मधिम—देखो 'मध्यम' (रू भे)

मधियो—देखो 'मदियो' (रू भे)

मधिलोकेश-स० पु० [स० मध्यलोकेश] राजा । (ह ना मा)

मधीणी-स० स्त्री०—दूध न देने वाली गाय, भैंस आदि ।

मधीणी-स० पु०—जिस घर धीणा अर्थात् दूध देने वाले पशु न हो ।

मधु-स० पु० [सं०] १ शहद ।

उ०—सेवक सुकवि करत नित सेवा, मधु मिष्ठान चढ़न प्रति  
मेवा ।—मे म

२ मदिरा ।

३ चैत्रमास । (डि को)

४ दूध । (अ मा, ह ना मा)

५ धी । ६ मक्खन । ७ मिश्री । ८ शिव ।

९ विष्णु द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य ।

१० शत्रुघ्न द्वारा मारा जाने वाला असुर लवण के पिता का नाम ।

११ महुये का पेड़ ।

१२ फूरो का रस, मकरद ।

१३ वसत ऋतु । (अ मा)

१४ मुलेठी ।

१५ अमृत । (ह ना मा)

१६ वन, जंगल ।

१७ अशोक वृक्ष ।

१८ भीरा ।

१९ जल, पानी ।

२० भैरव राग का पुत्र एक राग (संगीत) ।

२१ श्रीकृष्ण ।

२२ विष्णु भगवान ।

२३ प्रत्येक चरण में दो लघु वर्णों का वर्णिक छंद विशेष ।

२४ घोड़े का एक रोग विशेष । (शा. हो)

वि०—१ भीठा ।

यो०—मधुकठ, मधुमय, मधुदीप ।

२ पीला । (डि को)

१ मधुर ।

रू० भे०—मध, मधू, महु ।

मधुकठ-स० पु० [सं०] कोयल ।

मधुक—देखो 'मधूक' (रू भे)

मधुकर, मधुकरि-स० पु० [स० मधुकर] (स्त्री० मधुकरी) १ भौरा,  
भ्रमर ।

उ०—१ चरण आरण धिक्ता रूप चोळ । क्रीडा करत मधुकर  
कपोळ ।—नू प्र

उ०—२ कोहांमणि कुहू कुहू करइ, कोविन आवा डालि । तदप्रर  
नयनलव चरउ, मधुकरि मणिकिइ मालि ।—मा. कां. प्र.

२ चन्द्रमा । (अ मा)



३ डिगल का एक गीत (छंद) जिसके द्वाले के प्रथम चरण में १६ मात्राएँ दूसरे व तीसरे में १४ तथा चौथे में ६ मात्राएँ होती हैं।  
४ भिक्षा।

रु० भे०—मधकर, मधुकरी, मधुकर, मधूकर, महुकर, महुयरी, महुअर।

मधुकरी—स० स्त्री०—१ पके व्यजन की भिक्षा।

२ देखो 'मधुकर' (रु भे०)।

मधुकीट, मधुकीटक, मधुकीटव, मधुकीटभ, मधुकैंटव, मधुकैंटभ—स० पु० [स० मधुकैंटभ] मधु और कैंटभ नाम के दो भाई दैत्य जो विष्णु के द्वारा मारे गए थे। (पौराणिक)

उ०—१ विद्वता पाच हजार लग, बीता वरसाण। माग माग वर बोलिया, मधुकीटव दारण।—गजउद्धार

उ०—२ रचियो लेख अलेख, आये अद्भुत जुत जाण। मधु-कैंटव कर मेरसा, कट्टे कानाण।—गजउद्धार

उ०—३ सुर सान्निध्य कज्ज, ब्रह्माणी रूप अनेक विध करिय। मधुकीटक रिएण मज्ज, असुर निरदळण जायो जय अवा।

—मा वचनिका

रु० भे०—मधकीट, मधकीटग।

मधुकर—देखो 'मधुकर' (रु भे०)

उ०—फरस पाणी फावेस उभे ढसणेस अघक्कर। निले अरघ नखतेम मसत भणणेस मधुकर।—सू प्र

मधुग्राहक—स० पु०—भौरा। (अ मा, ह ना मां)

मधुघोस—स० पु० [स० मधुघोप] कोयल।

मधुजा—स० स्त्री० [स०] पृथ्वी (मि० मधु=विष्णु)।

मधुतम, मधुतर—स० पु०—भौरा, भ्रमर। (अ मा)

मधुता—स० स्त्री०—तमाल पत्र। (अ मा)

मधुत्रय—स० पु० [स०] शहद, घी और चीनी के मिश्रण से बना पदार्थ।

मधुद—स० पु०—भौरा। (अ मा)

मधुदीप—स० पु०—कामदेव। (ह ना मा)

रु० भे०—मधुदीपक।

मधुदैत्य—स० पु०—१ वह घोडा जिसके कान व मस्तक सपेद रंग के हो और शेष शरीर एक रंग का हो। (अशुभ) (शा हो)

२ मधु नामक एक राक्षस।

मधुघूल—स० स्त्री० [स० मधुघुलि] शक्कर, चीनी।

रु० भे०—मधुघूल।

मधुप—स० पु० [स०] १ भौरा, भ्रमर। (अ मा)

२ शहद की मक्खी, मधुमक्खी।

३ उद्व का एक नाम, ४ काला, श्याम। \* (डि को)

रु० भे०—मधुप।

मधुपक्क—वि०—शहद या शक्कर की चासनी में पचाई हुई।

मधुपति—स० पु० [स०] श्री कृष्ण।

मधुपरक—स० पु० [स० मधुपर्क] १ दही, घी, शहद, जल और चीनी

का समाहार जो यज्ञ आदि में आहुति देने और देवताओं को भोग लगाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

उ०—१ पच्छिम दिसि पूठ पूरव मुख परठित, परठित ऊपरि आतपत्र। मधुपरकादि सस्कार मडित, श्री वर वे बैसाणि तत्र।  
—वेलि.

उ०—२ श्री वेद जमणिका आगै, ज्वाळ अमळ वेदी मधि जागै। मधुपरकादि सरस रस माधुर, ससकार परखै देवासुर।—रा रु

मधुपुर, मधुपुरी—स० पु०—मथुरा नगरी का नाम।

उ०—मारु आयो मधुपुरी, स्त्री दूल्ह 'अभसाह'। परमोछव पर-गायवा सुय मंठै 'जैसाह'।—रा रु

मधुप्रकासी—स० पु० [स० मधु+प्रकाशिन] वन, जंगल।

रु० भे०—मधुप्रकासी।

मधुप्रिय—स० पु० [स०] श्री कृष्ण के वडे भाई, बलराम।

(अ मा, डि को)

मधुवन—देखो 'मधुवन' (रु भे०)

मधुभार—स० पु०—प्रत्येक चरण के अंत में जगण सहित ८ मात्रा का मात्रिक छन्द विशेष।

मधुमई—स० स्त्री०—मालती लता। (अ मा)

वि०—मधुयुक्त।

मधुमक्खी—स० स्त्री० [स० मधुमक्षिका] फूलों का रस चूस कर शहद इकट्ठा करने वाली एक प्रकार की प्रसिद्ध बड़ी मक्खी।

रु० भे०—मधुमाखी।

मधुमती—स० स्त्री०—१ प्रत्येक चरण में दो नगण और एक गुरु के अनुसार सात वणों का एक वण वृत्त।

२ पावती का एक नाम।

३ दुर्गा का नाम।

रु० भे०—मधुमति।

मधुमथन—स० पु० [स०] विष्णु।

मधुमाखी—देखो 'मधुमक्खी' (रु भे०)

मधुमात-सारंग—स० पु०—सारंग राग का एक भेद।

मधुमाधव—स० पु० [स०] मालश्री, कल्याण, और मल्लार के मेल से बना एक राग। (संगीत)

मधुमाधवसारंग—स० पु० [स०] ओडव जाति का एक सकर राग जो मधुमाधव और सकर राग के योग से बनता है। (संगीत)

मधुमाधवी—स० स्त्री० [स०] भैरव राग की सहचरी एक रागिनी।

(संगीत)

मधुमारण—स० पु०—मधु नामक दैत्य का सहार करने वाले श्रीकृष्ण।

मधुमालती—स० स्त्री० [स०] मालती नामक पीले फूलों वाली एक लता।

मधुमास—स० पु०—१ चैत्रमास।

२ वसंत ऋतु।

रु० भे०—मधुमास।

मधुमेह-स० पु० [स०] प्रमेह रोग का बड़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब गाढ़ा एवं श्वेत तथा शर्करा युक्त आता है ।

मधुमेही-स० पु० [स०] वह व्यक्ति जिसे मधुमेह रोग हो ।

मधुरगी-स० पु० [स० मधु = शराब + रगी] श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम । (ना मा)

मधुर-स० पु० [स० मधुरम्] १ मोठा पदार्थ, रस या शरबत ।

२ मिठास ।

[स० मधुर] ३ शक्कर, गुड़ ।

४ लाल गन्ता ।

५ मक्खन । (अ मा)

६ बादाम । ७ चावल । ८ आम विशेष ।

९ जंगली बेर । १० मटर । ११ महुआ ।

१२ धान । १३ लोहा । १४ विप, जहर ।

१५ मक्खी ।

१६ प्रत्येक चरण में २०-२० मात्राओं वाला एक मात्रिक छंद ।

१७ एक असुर जो वृत्रासुर का पुत्र था ।

१८ स्कंध का एक सैनिक ।

१९ बिन्दुमत्त राजा का पुत्र, एक राजा ।

वि० [स्त्री० मधुरी] १ स्वाद की दृष्टि से जो मधु के समान मोठा हो, मोठा, स्वादिष्ट ।

२ जो सुनने में अच्छा जान पड़े, मोठे स्वर वाला, कर्ण प्रिय ।

उ०—१ मधुर वचन मनहर कहो हो, हाजी म्हारा खबरों में अन्नत सिंचाय ।—गी रा.

उ०—२ बावहिया रत पविया, बोलइ मधुरी बाणि । काइ लव-तउ माठि करि, परदेसी प्रिठ आणि ।—ढो मा

३ मनोहर, सुन्दर, मोहक, प्रिया । (अ मा, ह. ना मा,)

४ जो सब प्रकार की कद्रुताओं से रहित हो ।

५ गति की दृष्टि से जो धीमा हो, मंद ।

उ०—विज्जुलिया नीळज्जिया, जळहर तू ही लज्जि । सूनी सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि ।—ढो मा

६ धीर, शांत ।

७ सुस्त, उदास ।

क्रि० वि०—मधुरता से, मोठे स्वर से प्यार से ।

रू० भे०—मद्धुर, मधूर, महर, महरउ, महर, माधुर ।

अल्पा०—मद्धुरी, मधुरी, मधुरी ।

मधुरता-स० स्त्री० [स० मधुर + ता प्र०] १ मधुर होने का गुण, भाव या दशा ।

२ मोठाम, माधुर्य ।

३ सुन्दरता, कोमलता ।

४ मोहकता ।

रू० भे०—मधुराई, मधुरता, माधुरता ।

मधुरत्रय-स० पु० [स०] शहद, घी और शक्कर इन तीनों का समूह ।

मधुरमा—देखो 'मधुरिमा' (रू भे)

मधुरसा-स० स्त्री० [स०] १ दाख, दाक्ष ।

२ मुनक्का । ३ भगुरो का गुच्छा ।

रू० भे०—मधुरसा ।

मधुराई—देखो 'मधुरता' ।

उ०—नदन वन रा फल भला हो, आता भूपति भेट । मधुराई वारी रही हो, थारा धीरा हेट ।—गी रा.

मधुराज-स० पु० [स०] भौरा ।

मधुराश्रत-स० पु० [स० मधुरामृत] १ फूलों का रंग, पराग ।

उ०—भवरों रा भरणाट, गूजवें माख्या गावें । चीटया डोलें चाव, महक मधुराश्रत चावें ।—दमदेव

२ शहद का मोठा रस, अमृत ।

मधुरिपु-स० पु० [स०] मधु नामक राक्षस के शत्रु, विष्णु ।

मधुरिमा-स० स्त्री० [स० मधुर + इमनिच्] १ मधुर होने की दशा या अवस्था ।

२ मोठाम, माधुर्य ।

उ०—अब माखिनी मधुरिमा, जगी सेलडी जगीस । ओ रस अलगा नारिधी, सि सरज्या जगदीस ।—मां का प्र

३ सुकुमारता, सुकोमलता ।

४ मोहकता ।

रू० भे०—मधुरमा ।

मधुरी-स० स्त्री० [स० मधुर + ई प्र०] १ शराब ।

२ फूक कर बजाया जाने वाला बाजा ।

३ देखो 'मधुर' (स्त्री०)

मधुरी—देखो 'मधुरी' (रू भे)

२ देखो 'मधुर' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ वजसी थाढी वायरी, गजसी मधुरी गाज । धण जद तजसी ढोलोयो, सजसी जाग समाज ।—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ दात दमकं अहर दुत, जाण चमकं वीज । ज्यारी धुनि मधुरी सुणें, रहै तपोघन रीज ।—मां दा

उ०—३ तीखां तमतमा खाटा खारा कहुआं कसायलां मीठां मधुरां गलिआ चोपडा, काचां पाकां छोट्यां छुवरया वधारिया

अणवधारिया, इस्यां सालणा ।—व स

(स्त्री० मधुरी)

मधुलोलुप-स० पु० [स०] भौरा, भ्रमर ।

मधुवन-स० पु० [स० मधुवन] १ मधुरा के पास, यमुना के किनारे का वन, जिसमें मधुदैत्य रहता था । बाद में शत्रुघ्न ने इसके पुत्र लवण को मार कर वहां मधुपुरी स्थापित की ।

२ व्रज में यमुना तट का एक वन ।

३ किष्किन्धा के पास सुग्रीव का एक वन ।

४ वह वन जिसमे प्रेमी व प्रेमिका का मिलन होता है ।

५ कोयल, कोकिला ।

रू० भे०—मधुवन, मधुवन ।

मधुवनमधुप, मधुवनसिधु—स० पु०—१ ईश्वर, परमेश्वर । (नां मा)

२ श्री कृष्ण । (अ मा)

मधुवनी—स० पु०—श्री कृष्ण । (अ मा)

मधुवरत—स० पु० [स० मधुव्रत] अमर, भौरा ।

(ना मा, ह ना मा)

मधुसख, मधुसखा—स० पु० [स० मधुसखा] कामदेव, मदन ।

मधुसदन—देखो 'मधुसूदन' (रू भे)

मधुसहाय, मधुसारथि—स० पु० [स०] कामदेव, मदन । (डि को)

रू० भे०—मधुस्वारथी, मधुसारथी ।

मधुसुवन, मधुसूदन—स० पु० [स० मधुसूदन] १ मधु नामक दैत्य को मारने वाले, विष्णु, ईश्वर ।

उ०—हिये बसाई हरख सू, मधुसूदन महाराज । नर जिण सू ललचै नहीं, सो त्रिभुवण सिरताज ।—बां दा

२ श्रीकृष्ण । (अ मा)

उ०—सतबार जरासघ आगळ खीरग, विमहा टीकम दाध बग । मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नाखै अलग ।

—जमणोजी सोदो

३ अमर, भौरा ।

४ शहद की मक्खी, मधुमक्खी ।

रू० भे०—मधुसदन, मधुसूदन ।

मधुस्रवा—स० स्त्री०—सजीवनी बूटी । (अ मा)

मधुस्रवा-नीज—स० स्त्री० यी०—श्रावण शुक्ला तृतीया तिथि ।

मधुस्वर—स० स्त्री० [स०] कोयल ।

मधुस्वारथी—देखो 'मधुसारथि' (रू भे) (ह. नां मा)

मधुहता—स० पु० [स० मधुहत्] १ मधु नामक दैत्य को मारने वाला, विष्णु ।

२ श्रीकृष्ण ।

३ शिकारी पक्षी ।

वि०—१ शहद को नष्ट करने वाला ।

२ आगम बतलाने वाला ।

मधुहेतु, मधुहेतु—स० पु०—कामदेव, मदन । (डि को)

मधू—स० पु०—१ युद्ध, समर । (अ मा)

२ देखो 'मधु' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ बोहो लोह भूप सुभङ्गा बकसि, स्त्रीहार्य खग साहियो ।

करि क्रीष मधू मायै किर्ना, लखमी-बर नदक लियो ।—मे म

उ०—२ सनी सी मधू दाख अनार सेवा । दियो आणि लचै, सुधा जाणि देवा ।—रा रु

उ०—३ लालच रस रै लाग, माखी लपटाणी मधू । उडणी

वळियो आग, जिणरै मुसकल जीवणो ।—बां दा.

मधूक—स० पु० [स०] १ महुए का पेड़ ।

२ उक्त पेड़ के फूल व फल ।

३ शहद की मक्खी ।

४ अमर, भौरा । ५ मुलेठी ।

रू० भे०—मधुक ।

मधूकफळ, मधूकफल—स० पु० यी० [स० मधूक+फल] महुए के फल ।

उ०—जिणि द्राक्ष फल भरिउ हुइ कवल, तसु किसिउ रुचइ मधूक फल ।—व स

मधूकर—देखो 'मधुकर' (रू भे)

उ०—गवर मात सिव तात, सिध पूजित सुरेसुर । मद सुगध ऊपर भमै, मद-मत्त मधूकर ।—ठाकुर भूभारसिंह मेढतियो

मधूदीपक—देखो 'मधुदीप' (रू भे)

मधूघूळ—देखो 'मधुघूळ' (रू भे)

मधूप—देखो 'मधुप' (रू भे)

उ०—विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप । मनडो विलूघो रे ताहरै रूप, जेम विलूघो रे कमल मधूप ।—वि कु

मधूप्रकासी—देखो 'मधुप्रकासी' (रू भे) (नां. मा)

मधूमास—देखो 'मधूमास' (रू भे)

उ०—मधूमास आमोज मे रास मंडै, तिहु लोक री डोकरी तेथि तडै ।—मे म

मधूर—स० पु०—१ कामदेव, मदन । (अ मा)

२ देखो 'मधुर' (रू भे)

मधूरता—देखो 'मधुरता' (रू भे)

मधूरसा—देखो 'मधुरसा' (रू भे) (अ मा)

मधूसारथी—देखो 'मधूसारथि' (रू भे) (डि को)

मधूसूदन—देखो 'मधुसूदन' (रू भे) (डि को)

मधे—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—दव तो लागी छे राजाजी वन मधे, हिरण ससादिक बलं माय —जयवाणी

मध्य, मध्य—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—कथ इम सासत्र कहै, दुलह लहिजे पूरव दत । आज दिय अधिकार, मध्य सरस्वति द्वारामति ।—सू प्र

मध्य—देखो 'मध्य' (रू भे)

मध्य—स० पु० [स०] १ किसी पदार्थ या स्थान के बीच का भाग, मध्यभाग ।

२ बीच की अवस्था, मध्यावस्था ।

३ कमर, कटि ।

४ पेट, उदर ।

५ घोड़े की कोख या वक्खी ।

६ सगीत में स्वरों के तीन सतको मे से बीच का सतक जिसका उच्चारण स्थान वक्षस्थल व कण्ठ होता है ।

७ पश्चिम दिशा ।

८ विश्राम ।

९ सोलह वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था ।

१० दस अरब की संख्या ।

वि०—१ बीच का, बीचवाला, मध्यवर्ती ।

२ मझोला ।

३ जो बुरा भी न हो, बहुत अच्छा भी न हो, ठीक-ठीक, उचित ।

४ जो न तीव्र हो, न मदा हो, मध्यम ।

५ जो किसी दल या पक्ष से सम्बन्धित न हो, तटस्थ, निरपेक्ष ।

क्रि० वि०—६ बीच में, मध्य में, दरम्यान ।

उ०—तुही गिर्वरा विर्वरा बीच गाजै । तुही रावळां देशळां मध्य राजै ।—मे म

रू० भे०—मजार, मझ, मंझम, मझली, मझा, मझार, मझारि, मझारी, मझारै, मझारो, मझाळ, मझि, मझिम, मजार, मज्ज, मज्झ, मज्झि, मझा, मझ, मझा, मझार, मझारि, मझारी, मझि, मझी, मझ्झ, मझि, मझे मध, मधि, मधे मध्य, मध्वि, माज, मांझ, मांझि, माझू, माझ, माझि, माझी ।

मध्यकुरु—स० पु० [स०] एक प्राचीन देश जो उत्तरकुरु और दक्षिणकुरु के मध्य में स्थित था ।

मध्यखंड—स० पु० [स०] पृथ्वी का वह भाग जो उत्तर क्रान्तिवृत्त और दक्षिण क्रान्तिवृत्त के मध्य में पड़ता है । (ज्योतिष)

मध्यता—सं० स्त्री०—१ मध्य होने की अवस्था या भाव ।

२ बीच बचाव ।

मध्यत्ररेख—स० पु० [स० मध्यत्ररेखा] रेखा । (अ मा)

मध्यवेस—स० पु० [स० मध्य+देश] १ भारत के मध्य का प्रदेश, मध्य-प्रदेश ।

२ मध्य भाग ।

मध्यनायक—एक आभूषण विशेष जो छाती पर रहता है ।

उ०—पादसकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सरवहार मध्यनायक कृष्णनायक नीलनायक आभरानि ।—व स

मध्यपात—स० पु०—ज्योतिष में एक पात ।

मध्यम—स० पु० [स० मध्यम] १ संगीत में सुरग्राम का चौथा स्वर ।

वि० वि०—इसमें प्राण वायु नाभि से उठकर हृदय और मोठ पर आकर रुकती है । इसका स्वर-स्थान हृदय है ।

२ एक राग विशेष । (संगीत)

३ साहित्य में तीन प्रकार के नायको में से एक ।

४ वह उप-पति जो नायिका के कुपित होने पर अपना अनुराग प्रगट न करे और उसकी चेष्टाओं से उसके मन के भाव ताड ले ।

५ मध्यदेश ।

६ प्रान्तीय शासक, सूवेदार ।

७ व्याकरण में तीन पुरुषों में से मध्यम पुरुष ।

[स० मध्यम] ८ कमर, कटि ।

वि० [स० मध्यम] १ जो दो विपरीत दिशाओं या सीमाओं के बीच में हो, बीच का, मध्य का ।

२ जो न बहुत बड़ा हो न छोटा हो ।

३ मझोला ।

उ०—इण रीति सिधदेव १ मुहब्बतखान सहित मध्यम २ कुमार भोज रै सहाय बडा कूबर दूदा नू मारण रै काज बुदी ऊपर अन्नर री अनीक आयो ।—व भा

४ पक्षपात शून्य, निरपेक्ष ।

५ हल्का । ६ नीच ।

रू० भे०—मझम, मझिम, मझम, मझम, मधम, मधिम ।

मध्यमद्वय—स० पु०—हाथी के बराबर हीरा माणिक की राशि का स्वामी । (जैन)

मध्यमपदलोपी—स० पु० [स० मध्यमपदलोपिन्] व्याकरण में एक समास जिसमें प्रथम पद से द्वितीय पद का मध्यम्व वतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है, लुप्त पद समास ।

मध्यमपुरुष—स० पु० [स० मध्यमपुरुष] १ व्याकरण में तीन पुरुषों में से वह पुरुष जिससे बात की जाय ।

२ बीच-बचाव करने वाला व्यक्ति, मध्यस्थ ।

मध्यमरात्रि—स० स्त्री० [स० मध्यरात्रि] मर्द्धरात्रि, आधीरात ।

मध्यमलोक—देखो 'मध्यलोक' (रू भे)

मध्यमान—स० पु० [स० मध्यमान] संगीत में एक ताल जिसमें आठ लघु और ४ दीर्घ मात्राएं होती हैं ।

मध्यमा—सं० स्त्री० [स०] १ हाथ की पांच अंगुलियों में से बीच की अंगुली ।

२ वह लड़की जो विवाह योग्य हो गई हो ।

३ वह युवा स्त्री जो यौवन की मध्यावस्था को पा चुकी हो ।

४ रजस्वला नारी ।

५ अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका मानापमान या आदर-अनादर करने वाली नायिका ।

६ नाद के चार भेदों में से एक ।

उ०—१ परा नाभ में वसत है, पस्यती हिरदे मझार । मध्यमा कठ में खुलत है वैखरी सव्द उचार ।—स्त्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ पराचित चितवन करै, पस्यती मनन मनार । मध्यमा लखत व्यवहार कू, वैखरी ऊ अहकार ।—स्त्री हरिरामजी महाराज

उ०—३ हृदय स्थान मध्यमा, बदन में वैखरी । चतुर भाति की गिरा, नरायण है खरी ।—साधक सुधा

मध्यमेळ—देखो 'तूवेळ' । (२)

मध्यरेखा—स० स्त्री० [सं०] ज्योतिष और भूगोल शास्त्र में वह रेखा जिसकी कल्पना देशान्तर निकालने के लिये की जाती है । यह रेखा

उत्तर दक्षिण रहती है, जो उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों को काटती हुई एक वृत्त बनाती है।

मध्यलोक-स० पु० [स०] पृथ्वी।

रू० भे०—मध्यमलोक।

मध्यविवरण-स० पु० [स० मध्यविवरणं] सूर्य या चन्द्र ग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार जिसमें उनका मध्य भाग पहले प्रकाशित होता है।  
(वृहत्संहिता)

मध्यस्थ-वि० [स०] १ दो प्रति पक्षियों के बीच में पड़कर विवाद मिटाने वाला, मध्यता करने वाला।

२ तटस्थ, निरपेक्ष।

३ अपनी हानि न करते हुए दूसरों का उपकार करने वाला।

४ मध्यवर्ती।

५ मझोला।

६ उदासीन।

स० पु०—शिवजी की एक उपाधि।

मध्यस्थता-स० स्त्री०—१ मध्यस्थ होने की अवस्था या भाव।

२ बीच-बचाव।

मध्यागुलीयक—एक आभूषण विशेष।

उ०—चतुस्त्रनायक, त्रिसटनायक आद्यगुलीयक मध्यागुलीयक सर्वांगुलीयक लघुचूडक मुक्ताचूडक मोतीसरा करणी।—व स

मध्यान—देखो 'मध्याह्न' (रू भे)

उ०—१ लगी हॉम विलास, वित्ती अग्यात प्रात मध्यांन साय-काळ निसीत, रत भूप चूप मदनाय।—रा रू

उ०—२ मध्यान में विराजमान ध्यान में धुनी। रुद्राक्ष माळ पांन में मुद्रा उनमुनी।—मे म

मध्या-स० स्त्री० [स०] वह नायिका या स्त्री जिसमें लज्जा एवं काम-वासना समान हो। (काम शास्त्र)

उ०—१ केवाळा राइ-कुअरि, केय मुगधा कुळवती। के मध्या माणणी, जिसी सूरज फायती।—गु रू व

उ०—२ इसी इसी खोडस वरसा री मुगधा मध्या प्रोढ़ा रूप री निघान।—रा सा स

मध्याह्न, मध्याह्न-स० पु० [स० मध्याह्न] दिन का मध्य भाग, ठीक दुपहरी का समय।

उ०—मिळि माह तणी माहुटि सू मसि व्रन, तपि आसाढ तणी तपन। जन श्रीजन पणि अबिक जाणियो, मध्यरात्रि प्रति मध्या-हन।—वेलि

रू० भे०—मध्यान।

मध्ये-क्रि० वि० [स०] १ बीच में, मध्य में, में।

२ विषय में, बाबत, सम्बन्ध में।

३ लिए।

रू० भे०—मउम्मे, मम्मे, मम्मेण, मद्धे, मधे, मध्वे।

मध्वास्त्रवलद्वि-स० स्त्री०—अट्टाईस प्रकार की सन्धियों में से लद्वि तक जिसमें मुनने वालों को उसकी वाणी मधुर लगे।

उ०—प्रक्षीण महाणसी लद्वि, क्षीरास्त्रवलद्वि, मध्वास्त्रवलद्वि, जीवबुद्धि, कोस्टबुद्धि पादांनुसारिणीलद्वि।—व स

मनग—देखो 'मन' (मह, रू भे)

मनछा—देखो 'मसा' (रू भे)

उ०—मनछा परब्रह्म हिगोळ माता। समें सात पो'रा रमै दीप साता।—मे म

मनतर—देखो 'मन्वतर' (रू भे) (प्र मा)

मन-स० पु० [स० मनम्] १ अन्त करण, हृदय। (ह ना मा)

उ०—१ कथूं केम ईसर कहै, खाण सकळ व्रत खेत। बाणी स्रवण मन बसी, निगम अगोचर नेत।—ह र

उ०—२ आह मन महि नरिदी पारधि सभावइ। सह दलि रमलि करतउ गगातहि आवइ।—प पं च

पर्या०—अंतहकरण, अतिद्वी ऊचळ, गूढ-पथ, चंचल, चेत, चित्त, दिल, पित्त-मन-मय, मानस, हृद।

२ प्राणियों में अन्त करण की वह वृत्ति या शक्ति जिसके द्वारा उनको वेदना सकल्प, इच्छा द्वेष, प्रयत्न, बोध और विचार आदि का अनुभव होता है। चित्त, बुद्धि, मस्तिष्क, दिमाग।

उ०—१ देंत मन में जाण्यो के इत्ती माया री लेखी वतावणा सू इण आदमी नै उणरो रुतबो मानणो ई पडैला।—फुलवाडी

उ०—२ इण परि देखी बाप पराभव घन सागर सुपवीत। मान घरी मन माहि नीसरिउ नयर बाहरि चलचीत।—हीराणद सूरि

मुहा०—१ मन अटकणी=आसक्ति होना, प्रेम या मुहब्बत होना, बार-बार किसी की याद आना, मन रुकना। २ मन आणी=

इच्छा होना, इरादा होना। ३ मन उक्ताणी=कहीं से या किसी से जीव उचटना, उक्ता जाना, विरक्ति होना। ४ मन उतरणी=

उदासीन होना। ५ मन उलझणी—देखो 'मन अटकणी'। ६ मन ऊठणी=जी नही लगना, देखो 'जीव ऊठणी'। ७ मन कच्चो करणी=हिम्मत हारना, दुःख या आफत से घबराना, भावुक होना। ८ मन करणी=इच्छा करना, इरादा करना, कल्पना करना। ९ मन काठो करणी=हिम्मत रखना, धैर्य रखना, कजुसी करना। १० मन कावू में रेंणी=इच्छा ए वश में रहना, सयमशील होना। ११ मन खराब होणी=अशुचि होना, मन की असामान्य अवस्था होना, नाराज होना, मन में विकार पैदा होना। १२ मन खाटो पडणी (होणी)=घृणा होना, अन्तर पड जाना। १३ मन खिचणी=प्राकपित होना, वशीभूत होना। १४ मन-खोलणी=दुराव हटाना, अपने भाव या विचार प्रगट करना। १५ मनचालणी—देखो 'मन करणी'। १६ मन चौगुणी होणी=

हिम्मत और उत्साह बढ़ना। १७ मन टटोळणी=हृदयगत भाव ज्ञात करने का प्रयत्न करना। १८ मन टूटणी=हतोत्साह होना,

मन उचट जाना, प्रेम समाप्त हो जाना । १९ मन ठा' माथे नी रें'णी=चित्त का अस्थिर होना, चबराहट के कारण मन स्थिति का खराब होना । २० मन ठै'रणी=चित्त स्थिर होना, मन लगना । २१ मन डिंगणी=प्रतिज्ञा, सकल्प या वचन से विमुख होने की अवस्था आना २२ मन हुलणी=थोड़े थोड़े स्वार्थ या न्यून रसास्वादन के लिये नियत खराब करना । २३ मन डोलणी=लालच लगना, चित्त चञ्चल होना, मन में विकार पैदा होना । २४ मन तडफणी=किसी को देखने या पाने के लिये उत्कंठा बढ़ना, जी छटपटाना । २५ मन तोड़णी=किसी को अप्रिय लगने वाला कार्य करना, हतोत्साह करना । २६ मन दैणी=मन के भाव प्रगट करना, किसी के प्रति आसक्त या मुग्ध होना, देखो 'मन लागणी' । २७ मन फाट जाणी, मन फाटणी=अनुचित या अशुद्ध के कारण किसी के प्रति घृणा के भाव बनना, विरक्ति होना, उदासीन होना । २८ मन फिरणी=किसी काम या बात से मन हट जाना । २९ मन फीकी पड़णी=हतोत्साह होना, उदासीन होना । ३० मन फेरणी=किसी कार्य से मन को हटा लेना, किसी के प्रति वैर रख हो जाना । ३१ मन बघणी=उत्साह बढ़ना, किसी के प्रति प्रेम के भाव बनना । ३२ मन बिगडणी=देखो 'मन खराब होना' । ३३ मन बै'लणी=देखो 'मन लागणी' । ३४ मन भरणी=तृप्ति होना, सतोष होना । ३५ मन भागणी=चित्त वृत्ति का इधर उधर फिरना, चित्त अस्थिर रहना, किसी कार्य या वातावरण में मन न लगना, उसे छोड़कर जाने का प्रयत्न करना । ३६ मन भाणी=मन को अच्छा या भला लगना, प्रिय लगना, पसंद आना, उपयुक्त लगना । ३७ मन भारी करणी=उदास होना, दुखी होना । ३८ मन मरणी=देखो 'मन टूटणी' । ३९ मन मानियो=यथेष्ट, इच्छित । ४० मन मानी=इच्छित कर्म, अपनी मर्जी से सब कुछ करना । ४१ मन मारणी=भावों को जबरदस्ती दबा देना, उत्साह समाप्त करना, हताश होना । ४२ मन मार बैठणी=उत्साह छोड़कर किसी कार्य के प्रति नि चेष्ट हो जाना । ४३ मन मार रें'णी=देखो 'मन मारणी' । ४४ मन मिळणी=परस्पर सम्पर्क बनना, दोस्ती होना, प्रेम होना । ४५ मन मीठी करणी=किसी दूसरे की वस्तु को दबा लेना, देने योग्य वस्तु को न देना, सतोष करना । ४६ मन मुटाव होणी=परस्पर मिश्रता टूट कर दुराव बढ़ना, एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष की भावना बनना । ४७ मन मे आणी=मन के अन्दर किसी प्रकार के भाव बनना, कोई बात ध्यान या समझ में आना, इच्छा होना । ४८ मन मे कै'णी=मन ही मन कुछ कहना । ४९ मन मे चोर बैठणी=सदेहास्पद भावना बनना, अन्त करण का अस्पष्ट होना, घोका या विद्वेषाघात करने की भावना बनना । ५० मन मे जमणी=किसी भावना या धारणा का दिल में जमना, कोई बात ठीक समझ में आना । ५१ मन में घरणी=किसी बात या कार्य का निश्चय करना, किसी बात को मन में

रखना, प्रगट न करना । ५२ मन में धारणी=सकल्प करना, निश्चय करना, हृदयगम करना, धारण करना । ५३ मन में पायी जाणी=किसी अनुचित बात या व्यवहार के प्रति दुखी होना, भावनाओं पर ठेस लगना । ५४ मन में बसणी=दिल में हरदम रहना, अच्छा लगने के कारण हर वक्त ध्यान में रहना । ५५ मन में बैठणी=देखो 'मन में जमणी' । ५६ मन में भरणी=मन के विचार व भावों का सग्रह करना, देखो 'मन में घरणी' । ५७ मन में मरोड करणी=छल कपट करना । ५८ मन में राखणी=किसी बात या विचार को मन में छुपाकर गुप्त रखना, धारण करना । ५९ मन में लाणी=किसी बात पर गौर करना, विचार करना, मोचना । ६० मन मैली करणी=किसी के प्रति क्रुद्ध होना, नाराज होना, किसी के प्रति द्वेष या दुर्भाव रखना । ६१ मन मोकळी करणी=उदार बनना, क्षान्ती धारण करना । ६२ मन मोडणी=देखो 'मन फेरणी' । ६३ मन मोटी करणी (होणी)=उदारता दिखाना, सहनशील होना । ६४ मन मोळी पड़णी=देखो 'मन फीकी पड़णी' । ६५ मन मोवणी=वश में करना, प्रभावित करना । ६६ मन रमाणी=दिल बहलाना, मन को कामो में लगा देना । ६७ मन राखणी=किसी की बात मान लेना, इच्छा पूरी करना, प्यार करना । ६८ मन रा लाहू खाणा=हवाई किले बनाना, ख्याली पुलाव पकाना, काल्पनिक खुशी में मग्न होना । ६९ मन री गाठ खुलना=मनो-भाव प्रगट होना, रहस्योद्घाटन होना । ७० मन री मन मे रें'णी=इच्छाए पूरी न होना इरादे पूरे न होना । ७१ मन रो मारियो=दुखी । ७२ मन रो मैली=छली, कपटी, धूर्त । ७३ मन ललचाणी=किसी के प्रति लालायित होना । ७४ मन लागणी=किसी काम में चित्त लगना, देखो 'मन अटकणी' । ७५ मन लेणी=देखो 'मन टटोळणी' । ७६ मन सू उतरणी=देखो 'मन उतरणी' । ७७ मन सूवा बाधणा=देखो 'मन रा लाहू खाणा' । ७८ मन हरणी=देखो 'मन मोवणी' । ७९ मन हरी होणी=प्रसन्नता या खुशी होना । ८० मन हाथ में लैणी=वश या काबू में करना । ८१ मन हारणी=कायल होना, हताश होना । ८२ मन ही मन=मन-मन में ही कुछ करना, स्वयमेव, भीतर ही भीतर । ८३ मन होणी=देखो 'मन आणी' ।

कहा०—मन चगा तो कठौती में गया=अपना दिल साफ है तो किसी का डर नहीं ।

३ न्याय के अनुसार आत्मा या जीव से भिन्न एक द्रव्य ।

वि० वि०—वैशेषिक दर्शन में मन को एक अप्रत्यक्ष द्रव्य माना है । सख्या, परिणाम, पृथक्त्व, सयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और सस्कार मन के गुण वतलाये गये हैं । मन अणु रूप है । मन चित्त, बुद्धि एवं अहंकार से भिन्न एक तत्त्व है ।

४ इच्छा, इरादा, कामना, अभिलाषा ।



उ०—नितु नितु राउ अहेडइ चह्लइ । रोसि चढी राणी इम बुल्लइ,  
प्रियतम पारधि मन करउ ।—प प च

५ विचार, धारणा, कल्पना, ख्याल ।

६ प्रकृति, स्वभाव ।

७ स्फूर्ति, उत्साह ।

८ प्रतीति, आभास ।

९ भुकाव । १० प्रतिभा ।

११ सम्मान । १२ मान सरोवर झील ।

१३ भव्य तुषित एव माध्य देवो मे से एक ।

उ० मागि अरजन तणा हयियार । वेगि वेगि मन लायसि धार ।

—सालिसूरि

वि०—१ इवेत ।

२ चचल । \* (हि को)

रू० भे०—मनु मणु, मणू, मणू, मनग मनव, मना मना, मनि  
मनी, मनु मनु, मन्त्र, मन्त्रि ।

अल्पा०—मनडउ, मनडो, मनहु, मनडो मनवो, मनियो, मनुघो ।

मनउपग, मनउपयग—स० पु०—घोडा । (हि ना मा)

कि० वि० अपनी मर्जी से, मन माने ढग से ।

उ०—कविता की कदर मुज कु वी दीखाइ, कोणासा चाकर सै  
रासा की पोथी मगाइ । क्यार घडी से एक पाना वाचकर मनउपग  
अरय किया, देखकर एक उमराव ने धुथकारा दिया ।

—दुरगादत्त बारहठ

मनऊच—दातार, दानी, उदार । (ह ना मा)

रू० भे०—मनऊचो ।

मनऊचो—स० पु०—१ अभिमान, घमंड ।

२ देखो मनऊच' (रू भे)

मनक—देखो मनुष्य' (रू भे)

मनकरी—सं० स्त्री०—एक प्रकार की घास, जिसमें लाल रंग का बारीक  
शना निकलता है ।

मनकामना—देखो 'मनोकामना' (रू भे)

मनकूळ, मनकूळा—वि० स्त्री० [अ० मन्कूल] १ एक स्थान में दूसरे  
स्थान पर ले जाने योग्य, चल । (सपत्ति)

२ जिसकी नकल तैयार करली गई हो, प्रतिलिपित ।

मनखच—स० स्त्री०—मन मुटाव, वैमनस्य ।

उ०—एक वरस लग बड रयो आलण अप वूहो मगनीत । मनखच  
दूज वरस लग, अत लगी करण अनीत ।—पा प्र

मनखचो—वि०—१ उदासीन, विरक्त ।

२ अप्रसन्न ।

मनख—देखो 'मनुष्य' (रू भे)

उ०—१ भव दरियाव भयद, लहुरा ऊठे लोभ री । माहै ज्यां  
मतमद, मनख घणां हूवै मरै ।—बां दा

उ०—२ हातां ठाली हालणी, जाको सपत जोड । मोत सरीखी  
मनख रै, खलक मही नह खोड़ ।—बां दा

उ०—३ मिलै न पळ-पुळ तन मनख, घनख धरण चित धार ।  
पात रुहै तरवर पहुव, चढै न फेर विचार ।—र ज प्र

मनखामनमोहिणीमहा—सं० स्त्री० [सं० मनुष्य+मन+मोहिनी] पृथ्वी,  
धरती । (ह ना मा)

मनखा—देखो 'मनीसा' (रू भे) (ना मा)

मनखाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू भे)

मनखाजनम—स० पु० [म० मनुष्य+जन्म] मनुष्य जन्म, मनुष्य जीवन,  
मनुष्य योनि ।

उ०—केसव भजतो हरख कर, मत कर आळस मूढ । जिण दीघो  
मनखाजनम, गरम कोल कर गूढ ।—र ज प्र

रू० भे०—मिनखाजनम ।

मनखाधरम, मनखाध्रम—देखो 'मनुष्यधरम' (रू भे)

(अ मा, ना मा)

रू० भे०—मिनखाधरम ।

मनखिचाव—स० पु०—१ मन के अन्दर, दुराव, अप्रसन्नता, मन-मुटाव  
आदि का भाव ।

२ वैर, वैमनस्य ।

मनख्यो—देखो 'मनुष्य' (अल्पा, रू भे)

उ०—मनख्या मत विललाय, गाय प्रभूजी पख सू टल । रामण  
हणियो राम, गूह खाघो तारक खल ।—र ज प्र

मनगढ़त—वि०—कपोल कल्पित, अव्यावहारिक ।

मनगमणी, मनगमवो—कि० अ० [स० मन+गम्य] मन को भाना, रुचि-  
कर लगना ।

मनगमती—वि० [स० मन+गम्य] मन को भाने वाला, रुचिकर लगने  
वाला, इच्छित ।

उ०—देस विरगठ ढोलणा, दुखी हुया इहा आइ । मनगमता  
पाम्या नही, ऊटकटाळा खाइ ।—ढो मा

मनगराई—स० स्त्री०—जोश, आवेश, उत्साह ।

उ०—१ सो इसा पक्का हठ सू और पूरी मनगराई सू तथा पूरे  
ही माटीपरण रै कार सू मोठा प्रभू फतह दीवी ।—नी प्र

उ०—२ हजरत मुरत लडाई मे जठे भारी ठोर होती तिण नू  
मारता घणी मनगराई सू लडाई मे पेसता आपरो जतन नही  
राखता ।—नी प्र

मनगरी—वि०—१ जोशीला, साहसी ।

उ०—जिको बादसाहा मे सूरु मनगरी होय घणी भीड पडिया  
पगा सपगो रहै तिको प्रथ्वी वेगी जीतै ।—नी प्र

२ उत्साहित ।

उ०—धर निवळाई, डर, सुस्ती मन भगाई वरी नू आपरै ऊपर  
मनगरी करे छै ।—नी प्र



३ मुद्ध के लिये उद्यत, तत्पर, कटिबद्ध ।

उ०—बादसाहू आप् मनगरी होय जणा ही फौज री मन बवै ।

—नी प्र

४ खुश, प्रसन्न ।

उ०—विसेस बादसाहू उमराव जो आपरा चाकरा सू मजाक करै तो मनगरा होवै ।—नी प्र

५ आन-वान वाला स्वामिनी ।

उ०—दलेलखा भलो मनगरी सिपाही थो, महाबलवान थो ।

—महाराज पदमसिंह री बात

६ उदार ।

उ०—सूरी खीबो वीर अति, सोभाळो दातार । हीमत धारी मनगरा, हुवा न होरोहार ।—सूरे खीबै काधळोत री बात

७ मन्त, उन्मत्त ।

उ०—सूड सू पांच हाथ लाबी तरवार बाध तीनू फौज साम्ही करै सो हाथी इसी जे मनगरी होय फौज माही बड जावै ।

—ठाकुर जैतसी री वारता

८ अनुकूल ।

उ०—काई हुथो खेटो साम्हा अव्वल आयो, तिण सू लोग सारी मनगरी रहियो अर काठ लिया सारी सका राखण लागिथो ।

—भाटी सुदरदास बीकपुरी री वारता

मनगुप्ति—स० स्त्री०—चित्त की एकाग्रता ।

रू० भे०—मनोगुप्ति ।

मनडउ, मनडो—देखो 'मन' (अल्पा, रू भे )

उ०—१ मनडउ ते मोहघउ मुनिवर माहरू रे, कहइ डम कोस्या ते नारि रे ।—स कु-

उ०—२ पीताबर कट काछनी काछै, रतन जटित माथै मुकट कस्यो । मीरा के प्रभु गिरधर नागर, निराव बदन म्हारो मनडो फम्यो ।—मीरा

उ०—३ हे गोरी तें ए स्यु कीधो, मनडो लीधो खच । ताहरे सरिखी अतेउर विच, मुझ न लागै अच ।—वि कु

उ०—४ राज बहुत विधसू समझायो । यो मनडो नहि मानै ।

—रमीलराज री गीत

मनचली—वि० (स्त्री० मनचली) १ साहसी, हिम्मतवान् ।

२ रसिक ।

मनचायो, मनचाह्यो—वि०—इच्छित, अभिलाषित ।

उ०—१ जे कोई ध्रुजी ने दुपारै री गावै, दुपारै री गावै मनचायो फल पावै ।—लो गो

उ०—२ अर लूमडी खुसामद रै पांण आपरी मनचाहो करलो ।

—फुलवाडी

मनचीतउ, मनचीतिउ, मनचीतिथो, मनचीतो, मनचीतो—वि० [स० मनस् + चिन्तित] इच्छित, मनचाहा, मन पसन्द ।

उ०—१ राधावेधु सु अरजुनि साधिउ, मनचीतिउ वर लाडीय लाघउ ।—प प च

उ०—२ पहलो मुकाबलो डाढाळै री बागवान सू हुथो, सो भगवान री दया सू डाढाळै री जीत हुई । बागवान मरियो । मनचीतिथो मनोरथ हुथा । चील्हरा नेन्हा नू लडणै री दाव दिखाय सिखायो ।—डाढाळा सूर री बात ।

उ०—३ वध बाध्या छुडवाय, कारज मनचीता करै । कहो चीज है काय, रुपिया सरसी राजिया ।—किरपाराम

मनछा—देखो 'मसा' (रू भे.)

उ०—चढिया रथे जोवता चिहु दिमि, ग्रह छाडै वन रा वचन । पल माहै जितरी रथ पहचइ, मनछा तितरी घरइ मन ।

—महादेव पारवती री वेलि

मनछाफल—स० पु०—मन का अभिष्ट फल ।

उ०—ओपि वनै फल पुहप, थिया मनछाफल प्राप्त । सत्रा सापति थियो, नाक विग्रह आइ सपत ।—गु रू व

मनजाणियो, मनजाणी—वि०—जो मन को अभिष्ट हो, इच्छित ।

उ०—१ आज री इण खुसो वास्तै म्हेँ थारी मनजाणी मुराद पूरी कर सकू ।—फुलवाडी

उ०—२ राणी री तो मनजाणी न्ही । राजा रें खराया पछै वा क्यू आगै बात नै खांचै ।—फुलवाडी

मनजात—स० पु० [स०] कामदेव, मनोज, मदन । (हिं को, ह ना मा) वि० [स०] मन से उत्पन्न ।

मनजीत—वि०—मन को वश मे रखने वाला, सयमी ।

उ०—माताजीत मनजीत सेवगी री पख साचो । सुणै हाक सात्रवा 'पाल' न देवै पग पाछो ।—पा प्र

मनडु, मनडो—देखो 'मन' (अल्पा, रू भे )

उ०—१ मनडु अस्तापद मोहघु माहरू रे, हू नाम जपू निस दीस रे । चत्तारि अठ दस दोय नमु रे, चिहु दिसि जिन चउवीस रे ।

—स कु

उ०—२ चेतरे अजू मनडा चतुर, रट-रट स्त्रीसीता रमण । करुणा निधान सू गहजकर, गर्म सहज आवागमण ।—र रू

उ०—३ वनछा बाबोजी छोडघा ए न जाय, दादी मे म्हारो मनडो वसै ।—लो गो

मनण—देखो 'मनन' (रू भे )

उ०—मनण करै जब मनवा कहिये, चितवन कर चितवाजी । बोध करै जब बुद्धि कहिये, आपा कर अहताजी ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

मनगो, मनवो—क्रि० अ० [स० मन्] १ राजी होना, खुश होना, प्रसन्न होना, नाराजगी मिटना ।

उ०—मावीता ही ना मनै दुख छै ददोली । गरठे न सरै का गरज नाणै विण नोली ।—घ व ग्र.

२ सम्मान पाना, मान्यता पाना ।

उ०—चितोड माथै रावत भीमसिंघजी जद आ आगँ समीचा खेडा रा सध्यागिरिजी मनीजता ।—वा दा ख्यात

१ सहमत होना, सतुष्ट होना ।

उ०—बना विहार तें वहै, मना कियै नही मनै । इसा महा भ्रमग जग, नित रडनी जनै ।—ऊ का

४ देखो 'मानणी, मानबी' (रू भे)

उ०—साच कहा तो ना मनी, सनेसी पावत । मो नायण रो वालही, घोडै चढ आवत ।—राव रिणमल राठीड खावडियै री वात मनणहार, हारो (हारी), मनणियो—वि० ।

मनिप्रोडो, मनिथोडो, मन्योडो—भू० का० कु० ।

मनीजणो, मनीजरी—भाव वा० ।

मन्नणो, मन्नबी—रू० भे० ।

मनदेवता—स० पु०—१ विवेक ।

२ अन्तरात्मा ।

मनद्रोह—स० पु०—कपट, छल । (ह ना मा)

मनन—स० पु० [स० मननम्] १ किसी विषय को ठीक तरह समझने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न, चिन्तन, विचार ।

२ किसी बात का तर्क एवं प्रश्नोत्तर द्वारा निकाला जाने वाला परिणाम ।

३ अध्ययन ।

४ कल्पना ।

रू० भे०—मनण ।

मननशील—वि० यो० [स० मननशील] १ जो विचार या चिन्तन करने योग्य हो, विचारणीय, चिन्तनीय ।

२ जो स्वभावतः विचारशील हो, मनन करने वाला ।

मननिग्रह—देखो 'मनोनिग्रह' (रू भे)

मननिध—स० पु० यो० [स० मनोनिधि] कवि, पंडित । (अ मा)

मनपरवर्ग्यानी—वि० यो० [स० मन परवर्जानी] अदी द्वीप में रहे हुए सज्जी के मनोभाव को जानने वाला । (जैन)

मनपुण्य, मनपुण्य—वि० यो० [स० मन + पुण्य] शुद्ध विचारो वाला, परहित चिन्तक । (जैन)

मनवद्धत, मनवाद्धित—देखो 'मनवाद्धित' (रू भे)

उ०—१ वरं रभ मनवद्धत वसै मुर थान वच, एळा सर सुजस दध कडा अडियो—भाटी माहसिंह मोही रौ गीत

उ०—२ उठै महादेव री देहरी दीठी मनवाद्धित दाता च्यार जक्ष द्वारे बंठा ।—पचदही री वारता

मनभग, मनभगी—वि० (स्त्री० मनभगी) १ निराशा, हतोत्साह, उदाम ।

उ०—१ जिकै सिरदार सारां सू मिळियो मन मन सुद्ध आपरा रजपूत तालक दारा सू रहै प्रयोजन । सरदार री मनभग देख आपरा तालकदार तथा असेंथा ही लेण री इच्छा तो स्वारथ

वाळा रौ काम है ।—वी स. टी

उ०—२ इसी कह नका पढी नै जलाल मनभग थकियो पोहरण गयो ।—जलाल बूवना री वात

२ कायर, डरपोक ।

उ०—१ माटी पणू सू सारो ससार ले सकीजै छै, मनभगा सू काई ही नहीं होय सके छै ।—नी प्र

उ०—२ मनभगा मरदा री भरोसी लड़ाई सू भागण ऊपर छै ।  
—नी प्र

मनभरियो—स० पु० यो०—जिसके देखने से मन प्रफुल्लित हो जाय, प्रियतम, पति ।

उ०—जाय मनभरिये ने यू कहै—थारै कवर हुयो वर अ य सोदा-गर महदी राचणी ।—लो गो

मनभामण, मनभाणी, मनभाइण, मनभायो—देखो 'मनभावण' (रू भे)

उ०—१ ते वलो पीला वरण, नीला नारिगा, रगि दीसता सुरगा, नीकोली रायण, ते प्रीसी मनभाइण, दाडिमनी कुली ।—व म

उ०—२ 'माहेगीत' 'हरी' मनभाणी, खेडपती साथै खूमाणी । मुखि हरनाथ खीचिया माहै, साथै सामि घरम छळ साहै ।—रा रू

उ०—३ मखिया राणी सू कहड, मारू मनभाणी । माल्हकूमर पासइ विना, पदमिणि कुमलाणी ।—डो मा

उ०—४ महाराजा अजमाल रै, नगर वधाई आज । नरपति मन-भायो थयो, जायो पुत्र मकाज ।—रा रू

(स्त्री० मनभाणी)

मनभाव—देखो 'मनोभाव' (रू भे)

मनभावण मनभावणी, मनभावन, मनभावतो—वि० यो० (स्त्री० मन-भावणी) मन को प्रच्छा लगने वाला, प्रिय, प्यारा ।

उ०—भगत बछळ गोकळ मनभावन पावन मूरति जगतपति ।

—ह ना मा

रू० भे०—मनभामण, मनभाणी, मनभाइण, मनभायो ।

मनभू—देखो 'मनोभव' (रू भे)

मनमध—वि० यो०—वश में करने वाला, वशीकरण ।

उ०—के नाडे के कचुए, वाध्या वेणी वध । कामण रा राखै कने, मादळिया मनमध ।—वा दा

मनमट्टो, मनमटो—वि० यो० (स्त्री० मनमटो) १ कुपण, कज्जम ।

उ०—की मनमट्टा बळ करै, भुयण समट्टा भूप । 'पती' गज घटा पाडणी, सक्रिया भीम सरूप ।—किसोरदान वारहू

२ निश्चेष्ट, उदास ।

उ०—सुत 'वीरम' समगथ, मारू दीठी मनमटो । हेरू पटके हाथ, दीण वायक दाखिया ।—गो रू

मनमत—देखो 'मनमत' (रू भे)

मनमति—वि० [स० मन + मति] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी ।

मनमत्त, मनमत्त—क्रि० वि० [स० मन+मत] १ स्वत ही, स्वेच्छा से, अपने आप ।

उ०—१ कणी न ई श्री वे'म नी ही के भगती आपरै मनमत्त राजमै'ल रो आसरो छोड देवैला ।—फुलवाही

२ स्वतन्त्रता से ।

उ०—जिण थी स्वतंत्र सभब मे एक आपरा आलय हू काढ़ि देण रो उपकार करि जिकण रा सीलणा मे सहियो न जाय इसडा अनेक अनरथ कुमाइ मनमत्त वहे तिकण रो अत तो इसडी ही खटावै ।—व. भा

मनमत्त, मनमत्त—स० पु० [सं० मनमथन] कामदेव, मदन ।

(अ भा, ह ना मा.)

उ०—१ घरि पूठी घर सामहा, सह जुवाणा मत्त । मन रत्त मनमत्त सू, मन चाहै मनरत्त ।—गु रू व

उ०—२ समर मनोज अनग पचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार ।  
—वेनि

उ०—३ गायणी भत्त संगीत, रग करत उरवस रीत । करि हाव भाव अनेक, कट्टाच्छ मनमथ केक ।—सू प्र

उ०—४ इसडी आखडियांह किया अग वारणै । सर मनमथ गा हारि क अजण सारणै ।—वा. दा

रू० भे०—मनमथ ।

मनमथहरण—स० पु० यो० [स० मनमथ+हरण] शिव, महादेव ।

(डि. को)

मनमानियो—वि० यो०—इच्छित, अभिष्ट, मन वाञ्छित ।

उ०—जिण नू कठै ही मिळै नही सो उण वखत भुजाई मे जलाल रो रहवास आवै सो मनमानियो भोजन जीमै ।

—जलाल बुबना रो बात

रू भे —मनमाथी, मनमानो

मनमानी—सं स्त्री०—१ उचित-अनुचित का ख्याल किये बिना, मनमानी करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ मन माने ढग से किया जाने वाला कार्य ।

वि० स्त्री०—जो मन को अच्छी लगे, इच्छित, अभिष्ट ।

उ०—प्रीति करै तीरथ रै ऊपर, मोज दिये मनमानी । तवयो न मन हर पग जिह ताई, पार न उतरै प्रानी ।—र रू

मनमानो—देखो 'मनमानियो' (रू भे)

मनमुखी—वि०—गुरु रहित ।

उ०—१ हरिया सामी मनमुखी माया मांही हेत । क्यूइक गाढे रेत मे, श्रीर वीयाजू देत ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ माळा फेरै मनमुखी, चित्त न एको ठोर । भेटे मारग मुगति का, हरिया दूजी दोर ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मनमुटाव—स० पु०—मन के अन्दर द्वेष, वैमनस्य या दुराव आदि का

होने वाला भाव ।

मनमेळग, मनमेळू—स० पु०—१ पति, खाविद, प्रियतम ।

उ०—१ मिळिया मनमेळू माती मुसकाती, दुसका भरतोडी आती दुसकाती ।—ऊ. का

उ०—२ सूता सपनै आइ, मनमेळू नित की मिळै । जागू ता उठि जाइ, जतन किये न रहै 'जमा' ।—जसराज

२ मित्र, दोस्त । (ह ना मा)

३ प्रेमी, स्नेही ।

उ०—कवर वीरमदे गैला का साथ्या नै अमल हाथ सु देवै छै । घणा मनमेळू छै ज्या की पण मनवारघां हुवै छै ।

—पना

मनमेली, मनमेली—वि० (स्त्री० मनमेली) जिसका मन साफ न हो, नीच, कपटी, धूर्त ।

मनमोट—वि०—उदारचित्त, दातार, विशाल हृदय, दानवीर ।

(ह ना मा)

उ०—१ कटि तूण चाप कराग, खळ भज रावण खाग । पह सिद्ध वधण पाज, मनमोट लोमहाराज ।—र ज प्र

उ०—२ एक एक सू आगळा, रांणा ऊमरकोट । प्रगट हुवा परमार वं, माणीगर मनमोट ।—वा दा

उ०—३ मही छतीसा दूहडा, है वरणण हमरोट । आ हमरोट छतीसिका, मिनख सुणी मनमोट ।—वा दा

उ०—४ मांगलिया मनमोट, 'दळपति' नै 'खानो' दुवै । विहदे खगधारा विचित्र, कळहि दुवाहा कोट ।—वचनिका

रू० भे०—मनमोट, मन्मोट ।

मनमोद—स० पु०—१ ढिगल के बेलिया साणोर (छोटो सांणोर) छन्द का, एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ६ लघु, २६ गुरु, कुल चौसठ मात्राएं तथा इसी क्रम से शेष द्वालो मे ६ लघु, २८ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं । (पिंगल प्रकाश)

२ 'दोहा' छंद के साथ 'कडखा' छन्द मिलाकर बनाया जाने वाला गीत । १ मन की खुशी ।

रू० भे०—मनमोह ।

मनमोदक—सं० पु०—मन का लड्डू, खयाली पुलाव ।

मनमोह—देखो 'मनमोद' (रू भे)

उ०—कह दूही पहला सुकव, कडखा ता पर कथ । पथ प्रगट कडखी दुही, सो मनमोह समथ ।—र ज प्र

मनमोहण—देखो 'मनमोहन' (रू भे)

उ०—सत आचार अथग रा सहजा, खग रा खळा खवांना । मनमोहण थिर चर खग अग रा, जग रा मुकट 'जवाना' ।

—महाराणा जवानसिंह रो गीत

(स्त्री० मनमोहणी)

मनमोहनहारी-वि० [स० मन मोहन+रा० हारी] (स्त्री० मनमोहन-  
हारणी) मन को लुभायमान करने में समर्थ, वश में करने वाला ।

उ०—प्रियतम परम प्रेम मय प्यारी, सकल स्रष्टि मनमोहनहारी ।  
—गी रा

मनमोहन-स० पु० [स०] १ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

२ एक मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्राएँ होती  
हैं तथा अन्तिम तीन मात्राओं का लघु होना आवश्यक है ।

वि० (स्त्री० मनमोहनी) १ मन को मोहित करने वाला, चित्ता-  
कर्षक । २ प्रेमी, प्रियतम, प्यारा ।

उ०—घट में रही न घाट में, घर में रही न बहार । वन-वन तन  
भटक्यो फिर, मनमोहन की लार ।—अज्ञात

रू० भे०—मनमोहन, महमोहन ।

मनमोजी-वि० [हि० मन+मोज] अपने मन में उठी तरंग के अनुसार  
काम करने वाला ।

२ अपनी प्रसन्नता के उद्देश्य से कोई विशेष आचरण करने वाला ।  
(स्त्री० मनमोजी)

उ०—वेटी मनमोजी है, पण करम रौ पोचो है ।—वसगांठ

गनमोट—देखो 'मनमोट' (रू भे)

उ०—अवतार 'लवण्यती' एव ही, जम ग्राहग, 'जैहळ' जेव ही ।

मनमोट निरेहण मडळी, इळ माहि खत्रीवट ऊजळी ।—ल पि

मनयष्ट-स० पु० [स० मन-ईष्ट] पति, खाविद । (अ मा)

मनयोग-स० पु०—मन के शुभाशुभ विचारों का मनन ।

मनरगी-वि० [स० मन+रग] मनमोजी, रसिक, मस्त ।

मनरजन, मनरजन-स० पु० [म० मन+रजन] १ आख ।

(ना हि को)

२ धन, द्रव्य । (नां मा, ह नां मा)

वि०—१ मन को खुश करने वाला, मनोरजन करने वाला ।

२ देखो मनोरजन' (रू भे)

मनरख, मनरखमाण-स० पु०—१ याचक, मांगने वाला ।

(अ मा, ह नां मा)

२ खुशामदखोर ।

मनरखी-स० पु० (स्त्री० मनरखी) मन रखने वाला, दास, सेवक ।

उ०—सुख लार्ध केलि स्याम स्यामा सगि । सखिए मनरखिए  
सघट । चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियो कहकहाहट ।

—वेलि

मनरत्य, मनरथ—देखो 'मनोरथ' (रू भे)

उ०—घरि पूठी घर सामहा, सहू जुवाणा सत्य । मनरत मनमत्य  
सु, मन चाहै मनरत्य ।—गु रू व

मनरळि, मनरळी, मनरली-स० स्त्री०—मन की मुराद, इच्छा, चाहना,  
कामना ।

उ०—१ श्रीजी सुत जायो तिए वलि, मात तात पुहती मनरली ।

—कवि गुण विजय

उ०—२ कलम । हम वीर जिएवर तणा मुख थी अरथ गणघर  
साभली । कहै सुत्रवाणी मन सुहाणी सुणी भवियण मनरली ।

—वृ स्ती

वि० स्त्री०—मुदित-मना, मुदित, हर्षित ।

उ०—सोले ही मिएगार कुमरी वणाया हो सुदर मनरली । आवी  
चवरी माहि, बादल माहें हो जाणें चमकी वोजली ।—स्त्रीपाल रास  
मनरसि-स० पु०—मन के भाव ।

उ०—मनरसि दिवसि पचावनि, पावनि वलि आलोकु । जिनपति  
हुउ स केवली, ते वली आवइ लोक ।—जयमेखर सूरि

मनरु गी-वि०—१ अपनी धुन का पक्का ।

उ०—सुगी ढीग राग समाज सुरावट, मनरु गी गो काज मरें ।  
मुंगी हेक गीणें नह मारु, पुगीराग अवाज परें ।

—चीमनदान घघवाढियो

२ चिहचिहे स्वभाव का सिद्धी स्वभाव का ।

मनलाहू—देखो 'मनमोदक' ।

मनलाणी, मनलावी—क्रि० स०—१ विचारना, मोचना, मन में कोई  
वात लाना ।

२ किसी बात या विषय पर ध्यान देना, ध्यान लगाना ।

उ०—सोलवती नै हो एहिज जोगता, घरम पणें द्रव थाय । वलि  
विसेसे हो जेह वियोगिणी, घरम करइ मनलाय ।—वि कु

मनलायोडी-भू० का० कृ०—१ मन में कोई वात लाया हुआ, सोचा  
हुआ, विचारा हुआ २ ध्यान लगाया हुआ, ध्यान दिया हुआ  
(स्त्री० मनलायोडी)

मनव—देखो 'मन' (रू भे)

मनवद्यत, मनवद्यित, मनवद्यितु—देखो 'मनवाद्यित, (रू भे)

उ०—१ चौर हीर चांमीर, अग परमळ भोपावें । रस तबोल कपूर,  
अन्न मनवद्यत त्वावें ।—जगो खिडियो

उ०—२ जहां पहुँची आय वास कियो वकूठ में । रही न ऊणारत  
काय, मनवद्यत कारज मिळी ।—गज-उद्धार

उ०—३ नाना प्रकार का जु वनसपती फल दिये छे, जैसे कामधेन  
मनवद्यित अरथ देइ ।—वेलि टी

उ०—४ स्वामि कल्पतरू सारिखी मखी, बीजा बाबल बोर ।  
मनवद्यित दायक मिल्यो सखी, न करू अवर निहोर रे ।—घ व अ.

उ०—५ मेलही चांवर वडसगड, मनवद्यित भोजन घर चौर ।  
—वी दे

उ०—६ ऊजेणी नठ जीपी राजा लेई मरवस राज । इण परि धाप  
तणां हु सारिसु मनवद्यित सवि काज ।—हीराणंद सूरि

मनवद्यथा—१ देखो 'मनवाद्या' (रू. भे.)

२ देखो 'मनवाद्यित' (रू. भे.)

उ०—सो तो मनसब रीक इनाम मनवद्यथा पावै ।—रा. रू.

मनव—१ देखो 'मानव' (रू. भे.)

उ०—समर मे दसकठ जिण सजै, पह घडा हर चाप दळ पजै ।

मनव ते धन जाण सुध मता, रघुपति जस जेस नित रता ।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'मन' (रू. भे.)

मनवाद्यतो—देखो 'मनवाद्यित' (रू. भे.)

मनवाद्या—स० स्त्री० [स० मन+वाद्या] मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा ।

रू० भे०—मनवद्यथा, मनोवाद्या ।

मनवाद्यित—वि० [स० मन+वाद्यित] १ मन मे जिसकी चाह की गई हो, इच्छित, अभिष्ट ।

उ०—महाराज ! एक रत्न थी इच्छा भोजन, बीजा थी मनवाद्यित लक्ष्मी, तीजा थी मनवाद्यित सेना, चौथा रत्न थी सकल कामना पूरी होय ।—सिधामण वत्तीसी

२ मन को अच्छा लगने वाला, मन को सतुष्टि प्रदान करने वाला, उपयुक्त ।

रू० भे०—मनवद्यत, मनवाद्यित, मनवद्यत, मनवाद्यित, मनवद्यितु, मनवद्यथा, मनवाद्यतो ।

मनवायो, मनवायो—क्रि० स०—१ मानने के लिये प्रेरित करना ।

२ कबूल कराना ।

मनवाणहार, हारो (हागी), मनवाणियो—वि० ।

मनवायोडो—भू० का० कृ० ।

मनवाईजणो, मनवाईजवो—कर्म वा० ।

मनवायोडो—भू० का० कृ०—१ मानने के लिये प्रेरित किया हुआ २ कबूल कराया हुआ ।

(स्त्री० मनवायोडी)

मनवार, मनवारी—स० स्त्री० [स० मान+हरण] १ भोजन, पान आदि के लिये किया जाने वाला निहोरा, खातरी, आह्वान, निमन्त्रण, (ओफर) ।

उ०—१ चतरु सीरावण री अरज करी मूढा भागं तासक घरी ।  
कवर री मनवारयां हुवं है, हात हों परसपर अघर खुवं है ।

—र. हमीर

उ०—२ कर्न न बँठी कोय मन करदो मनवारा । मनवारा रं माहि, मन होमी मनवारा ।  
मिनख न लो मनवार, महा भूडी मनवारा ।  
मार दिया मनवार, मान लिखि लिखि मनवारी । मनवारा करी उण दिन मरद, मिळै घडी मनवार री ।  
मनवार वणासी नामरद मोज इसी मनवार री ।—ऊ. का

उ०—३ गाळ लुगायां गावही, नर मुख उच्चत न गाळ । अमल गाळ मनवार कर, का सुभ वधन उगाळ ।—वा. दा

२ आदर, सत्कार, खातिर-तथज्जा ।

उ०—१ रावतजी नु आवणो छै तो वेगा कीजं असवारी । भलो भांत मनवार करस्या ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री बात

उ०—२ सगळी सरवरा रो मठ मार दियो । अवं काई मनवार करे । काठो हार थाक्यो ।—फुलवाडी

३ किसी व्यक्ति को किसी बात या कार्य के लिये सहमत करने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न ।

उ०—इस्तूखा फेर धक कैवण लागो—अवं तो म्हारं ना दिया पं'लो ई आप ध्यान कर लियो व्हेला के ओ निजराणो तो म्हुँ किणी विध कबूल नो करुला । पछे थोथी मनवारियां मे काई धरियो ।

—फुलवाडी

४ किसी ठूठे हुए व्यक्ति या बालक को मनाने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न ।

५ खुशामद, चापलूसी ।

६ तृप्ति, तुष्टि ।

रू० भे०—मणुहार, मनहार, मनहारि, मनुवार, मनुहार, मनुहारि, मनुहागी ।

मनवा—स० स्त्री० [स० मन+वा] १ मन की इच्छा ।

उ०—सळमळिया आयो सहज, तन नींद मोटाण । मन में मनवा रुपनी, मढण मढाण ।—गजउद्धार

२ मन की तरंग, उमग ।

मनवाह—स० पु०—गरुड । (अ. मा.)

मनवो—देखो 'मन' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—दाद राम कहै सब रहत है, लाहा मूळ सहेत । राम कहै विन जात है, मूरख मनवा चेत ।—दादूवाणी

मनसख—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—खीगेदक पदासुक चीनासुक खाडकी तनमुख मनसख कमखा चलाखा मलाखा देवदूस्य बधालग कौठालग कलगइ कोकची पचवर्ण यज, ।—व. स

मनसज—देखो 'मनसिज' (रू. भे.)

मनसता—देखो 'मनुस्यता' (रू. भे.)

मनसप, मनसप्प, मनसफ—देखो 'मनसव' (रू. भे.)

उ०—१ मडोवर नर-समद, सीख मनसप वधवारै । दे नगारा तोग, तुरी माकति सिगारै ।—गु. रू. ब

उ०—२ ब्रवि सिरपाव तुरी गज ब्रविषा, खग जमदाड जडित नग खजर । मनसप पचहजारी समर्प, परठै कुरब राह दो ऊपर ।

—सू. प्र

उ०—३ पहली टीकै बंसता तीन हजारी जात दोय हजार असवार मनसप हुप्रो, तिण माहे जागीर पाई ।—नं. एसी

उ०—४ दरगाह मनसप माहै लिखाणी नही ।—नैणसी

उ०—५ मोहकमसिंह कल्याण तण, मेडतियो पणवध । तज मनसफ सुरताण रो, मिलियो फोज कमध ।—रा रु

मनसफदार—देखो 'मनसबदार' (रु भे )

उ०—साह कुलीखान, बीजो अलहदी सु विहांणकुली सारिखा नइ खजरी सारिखा घणा माणम पच-मइया मनसफदार, राजा जगतमणि सारिखा घणा माणस माथि दिया ।—द वि

मनसब—स० पु० [अ० मनसब] १ राज्य या शासन (मुगल काल) में सैन्य का एक उच्च पद या औहदा जिसके साथ कुछ विशेषाधिकार होते थे ।

उ०—१ साह अवरग के पाम या समै आवै । सो तो मनसब रीभ इनाम मनवछ्या पावै ।—रा रु

उ०—२ स्त्रीपातसाहजी महाराज नू छाती सू लगाय दिलासा दिवी । सिरपाव मोतिया री माळा दे सदामद री मनसब दे देस री सीख दिवी ।—वा दा ख्यात

उ०—३ राणा सू वात हुई तद मेवाड ऊपर पाच हजारी जात, पाच हजार असवार री मनसब दीयो छी, तिण री जागीर मे इतरी ठोड दीवी छी ।—नैणसी

वि० वि०—इस पद के साथ सैन्य का एक विभाग रहता था । आइने अकबरी के अनुसार बादशाह अकबर ने छोटे बड़े ६६ मनसब बनाये थे । सबसे बड़ा मनसब दश हजारी था, अर्थात् दश हजार सैनिकों का संगठन (बाद में कुछ बड़ा भी) तथा सबसे छोटे मनसब की सख्या दश थी । बादशाह की मर्जी के अनुसार ये मनसब शाहजादे, अमीर-उमराव, राजे-महाराजे या अच्छे व्यक्तिव वाले व्यक्तियों को प्रदान किये जाते थे । प्रायः पांच हजार से ऊपर के मनसब शाहजादों को दिये जाते थे । मनसबों का जब निर्माण किया गया तब ऊट, हाथी, खच्चर गाड़ियों आदि की सख्याएँ निर्धारित कर दी गई थी । छोड़े व हाथियों और उटों की सख्या उनकी जातियों के अनुसार रहती थी । (देखो आईने अकबरी) उक्त निर्धारित सख्या एवं संगठन के अनुसार ही मनसब का वेतन या खर्चा तय किया जाता था । मनसबदार को अपने मनसब में यथा निर्धारित व्यवस्था रखनी पड़ती थी । गजाओ या जागीरदारों को मनसब के साथ वेतन या जागीरें दी जाती थी । पांच हजारी मनसब व उनसे नीचे वाले मनसबों की तीन श्रेणियाँ बनाई गई थी—१ जिन मनसबों में निर्धारित सख्या के अनुसार व्यवस्था या सैनिक संगठन होता था वे प्रथम श्रेणी के मनसब माने जाते थे । २ जिन मनसबों में सवारों की सख्या निर्धारित सख्या से आधी या उससे अधिक होती थी वे द्वितीय श्रेणी के मनसब माने जाते थे । ३ तृतीय श्रेणी में वे मनसब आते थे जिनके सैनिकों की सख्या निर्धारित सख्या से भी कम होती थी । ये मनसब जाती, अर्थात् व्यक्तिगत सवार वाले होते थे । इसके अति-

रिक्त अन्य सवार भी होते थे । अतिरिक्त सवारों की सख्या जाति सवारों से कम ही रहती थी । जैसे—हजारी जात=७०० सवार, तीन हजारी जात=२००० इत्यादि ।

२ काम, कर्तव्य ।

३ अधिकार, हक ।

४ वृत्ति ।

५ इरादा, इच्छा ।

रु० भे०—मसब, मनसप, मनसप्प, मनसफ ।

मनसबदार—स० पु० [अ० मनसब+फा० दार] उच्च पदस्थ अधिकारी ।

उ०—१ एक पहोर भीक बागी । मिया रं साथ मनसबदार

हाथिया रा सवार हुता जिकै इता काम आया ।—वा दा ख्यात

उ०—२ बीठलदास नू बावन हजारी मनसबदार किया पातमाहजी साहिजानजी—द दा

रु० भे०—मनसफदार ।

मनसमी, मनसम्मी—देखो 'मनस्विनी' (रु भे ) (अ मा)

उ०—१ हथमेळा रं हाथ, धरं नाळेर हमती । मलम मदा मनसमी, वलभ धर तणी वसती ।—अरजुणजी बारहूठ

उ०—२ आपै खंग अलल्ल, स्त्रिया आपै मनसम्मी । आपै द्रव आभरण, जूथ आपै वह जम्मी ।—ज खि

मनसा—स० स्त्री० [स०] १ कश्यप ऋषि की कन्या जो सर्पराज अनन्त की वहन व जरतारु की पत्नी थी, मनसादेवी ।

वि० वि०—इसके पुत्र का नाम आस्तिक था, शिव कृपा से इसे विष बाधा दूर करने का सामर्थ्य प्राप्त था । सर्पादि विपैली जातियाँ इसकी उपासना करती थी । इसके उपासकों में इन्द्र का नाम भी आता है । यह सर्पों के विष को सहज में ही उतार देती थी जिसे स्वयं घनवन्तरि भी नहीं उतार सकते थे ।

२ सिन्धु दंत्य की कन्या ।

३ इरादा, विचार ।

उ०—हरिया भोजन जीमिये, अँसा आवै स्वाद । इन तन का सारा नही, मनसा इसी मुराद ।—सोहरिरामदासजी महाराज

वि०—१ मन से सम्बन्धित, मन से उत्पन्न ।

२ मन को अच्छा लगने वाला, इच्छित ।

उ०—आखँ आय क्षुधत निज आरत । मनसा भोजन दियै महामत ।

—सू. प्र

३ देखो 'मसा' (रु भे )

उ०—मनसा वाचा क्रमणा मांही । नरहर तो विण राखिम नांही—ह र

उ०—२ दादू मनसा वाचा करमणा, साहिब का विस्वास । सेवक सिरजनहार का, करै कौन की आस ।—दादूवाणी

उ०—३ फेर मुलतान रा पीरा री जारत ऊपर मनसा कीधी सो मारग चलियो आवै सो परसनेउ प्रायो ।

—सूरे खीवं कांघलोत री वात



८० भे०—मनसादेवी, मनस्या ।

अत्पा०—मनसूखी ।

मनसादेवी—देवी 'मनसा' (स० स्त्री)

उ०—तदा मा माहि एच्छा ऊनी नु रसिउ उभारजिगु मदा  
मनसादेवी माया ते ऊनी ।—ए वि

मनसापचमी, मनसापाचम—स० स्त्री०—माताद माग के जमान गम की  
पचमी । इस दिन मनसादेवी की की पूजा की जाती है ।

मनसाछू—स० स्त्री० [स० मन + छत्स] मानमिष फट, मा में होने  
वाली दाह ।

उ०—तठ संम्य छाटी रथ बांम गेहिउ । गोविंद बासी मनसास  
फेटिउ । तठ वाउवेमि कुरराउ रूपउ, यगयित मभोतिमि जेम  
पीघउ ।—सातिसूरि

मनसिज—स० पु० [स० मनसिज] २ गामदेव, मदा । (ह गां मा)  
२ प्रेम ।

८० भे०—मनसज ।

मनसूख—वि० [म मनसूख] १ त्यागा हुआ, छोटा हुआ, परिस्वक्त ।

२ निरस्त या रह किया हुआ ।

३ टाला हुआ ।

मनसूखी—स० स्त्री० [म० मनसूखी] १ मनसूख होने की अवस्था या भाव ।  
२ त्यागना, छोड़ना, रह करना आदि किया ।

मनसूखी—दयो 'मसा' (अल्पा, ८ भे)

मनसूखी, मनसोखी, मनसूखी, मनसोखी—देवी 'मसूखी' (८ भे)

उ०—१ तद पाछे कईक स्थाणा ममभणा आदमी मनसूखी बियो ।  
—ठाकुर जेतयो री वारता

उ०—२ कोई दाव माफ़ कोई भी न माया । रावामन राजा एक  
मनसूखा उपाया ।—वि य

उ०—३ जोर नू फुफकारतो फुण करने एकल मागै ई मगला  
बिचियो नै स्वावण री मनसोखी करियो के नेवळो भय देगी उल्लरी  
घांटी पकडली ।—कुलवाही

उ०—४ पीछे या जैमजो नू ममचार गया तद सहाई री  
मनसोखी थापियो नै दूर्ज दिन मालदेजी फोज मभ जैमस ऊपर  
आया ।—द दा

मनस्तमिनी—स० स्त्री० [स०] एक महाविद्या ।

उ०—आकास तामिनी सोदांमिनी कामगामिनी कामगामिनी ।  
भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनस्तमिनी जलस्तमिनी । आग्नेयी  
वायवी वरसणी कीमारी ।—य म

मनस्या—देवी 'मनसा' (८ भे)

उ०—बेटे रै बाप मोटा मोटा मेल दिवाह्या । आगो मोटी मनस्या  
नै साठतो थकी हो ।—दसदोख

मनस्विनी—स० स्त्री० [स०] १ पतिव्रता व सती स्त्री । (अ मा)

२ उदारमन वाली अस्मिमानिनी स्त्री ।

३ दुर्गा का एक नाम ।

४ मूकदुःखिनी की वाणी ।

५ दम प्रतापिनी की बाया जो गम की दुःखिनी ।

६ उलाहान राजा की मृत्पा नामक पत्नी व उदास वंश ।

७ पुद्गलीय मसाले समितार राजा की पत्नी ।

८० भे०—माममी, मागमी ।

मनसी—वि० [म० मनसिज] १ मनसा, उदास विषय बाण ।

२ पुष्टिमा, धन, प्रियमा, मी ।

३ पुष्ट मा बाण ।

मनहस—स० पु०—एक तल्लिख ह्वा विपरीत प्रत्येक मन्त्र में अमल, एक  
ममल, दो अमल अमल दोर सग में ममल होना है ।

मनहर—स० पु० [म० मन + हर] १ कृप धार ।

[म० मन + हर] २ माता ।

३ बागव । (ह. गां. मा)

४ एक ३१ वमी का मणिक मन्त्र ।

५ देवा मनहर' (८ भे) (अ मा)

मनहरण—वि० [म० मन + हर] (स्त्री० मनहरणी) मन को हरने वाला,  
विनाशक ।

उ०—१ दुग पीयारण मनहरण जउ ई पाद न हूँ । विषयउ  
रता-तलाय उगउ, पूरी नर दिमि जमि ।—गो मा

उ०—२ मद बदा मममोचनी मिय कटी मज मन । एगो ऊमा  
मागमी मागमी (अ) कथिण ।—सगल

मनहरणी—स० स्त्री० [म० मन + हरणी] पुरणी । (अ मा)

मनहर—दयो 'मनहर' (८ भे)

मनहार माहारि—दयो 'मावार' (८ भे)

उ०—१ गो मागमा नू मगी मली मरहू तू रागिया । सुंदरदाय  
जावतो मागयो । मारा नू निरोदाय दिया । ऊट एक देव विरा  
बिया । मगी माहारा हूँ ।—भाटी सुंदरदाय चौकपुरी री वारता

उ०—२ तठा जराति करि राजान भित्तोमति पनरह दिन ताई  
जान रागि मनहारि करि भातिगारी भगति मणिमानी करि मारह  
भ्रम भोजा ग यमाय कोजै छे ।—रा सा स

मनहस—स० पु० [म० मन + हस] मा का मिया, दोस्त, प्रेमी ।

(अ मा)

मनहस—देवी 'मानी' (८ भे)

उ०—१ देखित भ्रमन उरन के सबर । तप गुन मनहस श्रत  
रातवर ।—गे. म

उ०—२ हूपरा उरह भड रूप हूँ, पारव कीया दळ मनह पाप ।  
अबाळ धीह पाजत तार, कत मेह उमर मिला मदकार ।

—रामदास साळम

मनहस—वि० [म० मनहस] १ अमुभ, बुरा ।

२ सुस्त, मालमी, निकम्मा ।

३ उदाम, मद, नीरस ।



४. बदकिस्मत, अभागा ।

मनां—१ देखो 'मन' (रु भे)

उ०—जैसी एम बोल्यो थे मना धीर राखो । रोटी जीमि पाछे ई मुदा की बात भाखी ।—शि व

२ देखो 'मानी' (रु भे)

उ०—मिळी पीठि छत्री मना केक मोहे । सिरै जाणि प्रासाद रै गोख सोहे ।—वं भा

३ देखो 'मना' (रु भे)

मनाग्यानां—अव्य०—मन और ज्ञान विवेक से ।

उ०—१ बामण मनाग्याना विचार करियो—इण जीवणा विचै सो मरणो सावळ ।—फुलवाडी

उ०—२ चारु वेदा रै जाणकार पिढतजी री निजर चरु माथे ही वं मनाग्याना हिसाब करण लागा के घरु मे कित्ती काई माल व्हे सकै ।—फुलवाडी

रु० भे०—मनग्यान, मनगन ।

मना-वि० [अ०] १ जिसके लिये निषेध कर दिया गया हो, निषिद्ध वर्जित ।

उ०—वना विहार तें व्हे मना कियै तही मनै । इसा महा अभग नित रहनी जनै ।—ऊ का

२ जिसपर कोई रोक लगा दी गई हो ।

३ जिसको करने में इनकार हो ।

रु० भे०—मना, मन्तै, मन्हा, मन्हे ।

४ देखो 'मन' (रु भे)

उ०—महाराजधिराज सुग्रीव मनां रा सारा कारज सारै । कीधो भूप पुरी केकधा, दोयण दूर विदारै ।—र ज प्र

मनाई—देखो 'मनाही' (रु भे)

उ०—वानं तो फगत आपरै राज री सीव लाघणी ही । इण सीव मे तो वानं खावण-पीवण री ई मनाई ही ।—फुलवाडी

मनाणो, मनावो—क्रि० स० [स० मान, मनाणो] क्रि० का प्रे० रु०] (मानयति) १ किसी को मानने के लिये उद्यत करना, तैयार करना, सहमत करना ।

उ०—वारो मन तो इक्कीस आना जागसो हो के इस्तूखा नै वं मनाय लेवला, पण कदास वो नी मानं तो पैला चरचा करणी आछी कोनी ।—फुलवाडी

२ किसी रुठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना, सुलह करना, सधि करना ।

उ०—तरै पवार रात पडिया आपरो साथ खजानो ले नै रिसाय नै निकळियो । किण ही मनायो नही ।—राव रिणमल री बात

३ देवता, पीर आदि की प्रार्थना करना, अभ्यर्थना करना, स्तुति करना ।

उ०—१ देवी मनाई विज्जैदास, चतुरंग दळां चढ़ियो भरणि । कह

ताज मेर माझी 'कमी', गयो भाजि मेरा सरणि ।—गु रु व  
उ०—२ धुर घण घटा जिही मग छायो, ओरग वळै भजैगढ आयो । चाढ़े देग नेग चढ्ढाया, मीरां खवाजा पूज मनाया ।

—रा. रु

उ०—३ दउरउ सखि पियु पाय परउ तुम, मोहनलाल मनाई ।

समयसुदर प्रभु प्रेम उदक करि, अतर ताप बुझाई ।—स कु

उ०—४ घणा ई खट-करम करिया, जिग करिया, धांन पूजिया, देवी देवता मनाया, मतर-जाप करिया, पण राणी रै आसा नी मडी ।—फुलवाडी

४ दूसरे के मानने योग्य कार्य करना ।

५ मानने के लिये मजबूर करना ।

उ०—भग कीया प्रगट जिग महा हुती भड, वेढीमणा कुदरथी वीर । आठै गण पाछा अउहटिया, एकण घाय मनाई हीर ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ किसी विशेष कार्य का आयोजन करना । किसी विशेष दिन को परम्पराओं और प्रथाओं के अनुसार कार्य क्रम करना ।

उ०—१ उणी दिन सिध्या रा चिडी आठ घोळा-घोळा मोत्यां रै उनमान फूठरा ईंढा दिया । राणी सगळा नगर मे हरख अर उच्छव मनायो ।—फुलवाडी

उ०—२ लाली री दिन है, लाली री दिन है, करता म्हारो कान खायग्या । अवं म्हारो दिन ई भेलो मनायलो ।—फुलवाडी

७ स्वागत करना, सत्कार करना ।

उ०—मिळ सुळताण 'अजीत' मनायो, प्रगट कुरव सव ऊपर पायो ।

—रा रु

मनाणहार, हारो (हारी), मनाणियो—वि० ।

मनायोडी—भू० का० कृ० ।

मनाईजणो, मनाईजवो—कर्म वा० ।

मउनावणो, मउनाववो, मनावणो, मनाववो—रु० भे० ।

मनायोडी—भू० का० कृ०—१ मानने के लिए उद्यत किया हुआ, तैयार किया हुआ, सहमत किया हुआ २ (रुठे हुए को) प्रसन्न किया हुआ, राजी किया हुआ, सुलह या सधि किया हुआ ३ (देवता आदि को) प्रार्थना किया हुआ, अभ्यर्थना किया हुआ, स्तुति किया हुआ ४ मानने योग्य कार्य किया हुआ ५ मानने के लिये मजबूर किया हुआ ६ किसी विशेष कार्य का आयोजन किया हुआ, किसी विशेष दिन को परम्पराओं और प्रथाओं के अनुसार कार्यक्रम किया हुआ ७ स्वागत किया हुआ (स्त्री० मनायोडी)

मनावणो—स० पु० [स० मानयति] किसी को मानने की क्रिया या भाव ।

उ०—ऊमादे रावजी रोसणें हुवो तद बीच रोज माहै भला-भला आदमी हुता सू मनावणा नू फिरिया ।—ऊमादे भटियांणी री बात

मनावणो, मनाववो—देखो 'मनाणो, मनावो' (रु भे) (उ र)

उ०—१ नमो सिसुपाल मनावण सक । जरासघ जीपण सेन उजक ।

—ह र

उ०—२ नाग देव नर तोहि मनावत, पडि पडि सुयरा पार नहि पावत ।—भे म

उ०—३ विणजारी अर विणजारी अणू तो हरख मनावता इस्दुवां र गाव पूगा ।—फुलवाडी

उ०—४ पूति भतारिहि देवी अतिघणु मनावी । पूतु समोपीउ सय आपणि नवि आवी ।—सानिभद्र सूरि

रू० भे०—मउनावणी, मउनाववी ।

मनावियोडो—देखो 'मनावोडो' (रू भे )

(स्त्री० मनावियोडी)

मनावी—स० स्त्री० [स०] मनु की स्त्री का नाम ।

मनावी—स० स्त्री० [ध०] १ रोक, निषेध, वर्जन, मुमानियत ।

२ न करने की आज्ञा ।

रू० भे०—मनाई ।

मनि—१ देखो 'मन' (रू भे )

उ०—१ मन के वनि सब जीव है, मनि वसि करै स कोय । जन हरिदास मन राज है, तहां राज विराजी होय ।—ह पु वा

उ०—२ देवल कावा मनि डरै, वोडा भइ बालीत । सगळा आवै सामहा, मिलिया देखै मोत ।—गु रू व

२ देखो 'मानो' (रू भे )

उ०—अस्व दुरद जेव अनेक, अनि छात भइ अनेक । मुभ तांन नीवत सह, मनि हरत गध्रव मह ।—रा. ह

३ देखो 'मनी' (रू भे )

मनिख—देखो 'मनुस्य' (रू. भे )

उ०—१ नीमी नवै सवारिए अनठ न मोहै अग । मन फेरघा तन फिरत है, मनिख जन्म का भग ।—ह पु वा

उ०—२ पचकळा पकडि लीयो । अर ख्याल करता देखै तो राखडो छै । राखडो छोडै तो मनिख हूवो । राति मनिख करै । दिन सूवडो करै ।—चौबोली

मनियावट—प्रणसा ।

उ०—तू घन्य तू कृत पुण्य मोटो जती, जीवित जन्म प्रमाणोजी । क्खण नी मनियावट देखि करी, भद्रक नइ थयी भावी जी ।

—स कु

मनियोडो—भू० का० कृ०—१ राजी हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ २ सम्मान प्राप्त, मान्यता प्राप्त ३ सहमत हुवा हुआ, संतुष्ट हुवा हुआ.

(स्त्री० मनियोडी)

मनियो—१ देखो 'मिनियो' (रू भे )

२ देखो 'मन' (अल्पा, रू भे )

मनिसउ [स० मनीपा] विचार ।

उ०—न जाणियइ पाडव कीह नाठा, तेरमउ वरिस गिउ तु घाटा ।

इगिउ विमामी मनिसउ पयठउ, नगैर दुयौघन मनि बयठउ ।

—साविगुनि

रू० भे०—मनीगा ।

मनिसि—देखो 'मनीगि' (रू भे )

मनी—स० रघी०—१ अहंकार, गर्व । (अ मा )

उ०—१ दाहू मना मनी गव ले रहे, मनी न मेटी जाउ । मनामनी जग मिट गई, तब ही मिले गुदाह ।—दाहूवांगी

उ०—२ अपनी मनी के आगे और की खातर न आखे ।—मू प्र २ धीर्य । ३ मणि ।

रू० भे०—मन, मनि ।

मनीखा—देखो 'मनीमा' (रू भे ) (ह ना गा )

मनीखी—देखो 'मनीसि' (रू. भे ) (अ मा, ह ना मा )

मनीवंग—स० पु० [अ०] चमड़े या प्लास्टिक आदि का बना एक प्रकार का बटुवा अथवा छोटा थैला, जिसमें रुपये पैसे रखे जाते हैं ।

मनीसा—स० स्त्री० [स० मनीपा] १ मानसिक शक्ति, बुद्धि, अवन, समझ । २ अभिलाषा, इच्छा, कामना ।

३ प्रतिभा । ४ प्रशंसा, तारीफ ।

५ विचार, खयाल । ६ स्तुति, प्रार्थना ।

रू० भे०—मनखा, मनिमउ, मनीगा ।

मनीसि—वि० [स० मनीपिन्] १ पण्डित, विद्वान्, प्रतिभाशाली ।

उ०—मनीसि गोन मान है न होनहार हान की । जहा न कोन जान हैं, कृपा कृपा निधान की ।—ऊ का.

२ बुद्धिमान, चतुर, विवेकी, विचारवान ।

स० पु०—१ श्रद्धा, मुनि ।

२ बुद्धिमान व्यक्ति ।

रू० भे०—मनिमि ।

मनु—१ देखो 'मानो' (रू भे )

उ०—उडी भर सोर बियोरत बाय, लगी मनुं शीखम की रिनु लाय । तलतलि तीय तर्त मनु तेल, लगै दुहु ओर नित यह खेल ।

—ला रा.

२ देखो 'मन' (रू. भे )

३ देखो 'मनु' (रू भे )

मनुतर—देखो 'मन्वतर' (रू भे ) (ना मा )

मनु—स० पु० [स०] १ ब्रह्मा का पुत्र जो, मानव सृष्टि का प्रवर्तक आदि पुरुष एवं समस्त मानव जाति का पिता माना जाता है ।

वि० वि०—यह यज्ञ प्रथा का आरम्भकर्ता माना जाता है । ऋग्वेद के अनुसार विद्व मे अग्नि प्रज्वलित करने के बाद सात पुरोहितों के साथ इसने ही सर्वप्रथम देवों को हवि समर्पित की थी । मनु ने सभी लोगों के प्रकाश हेतु अग्नि की स्थापना की थी । मनु का यज्ञ वर्तमान यज्ञ का ही आरम्भक है क्योंकि इसके बाद जो भी यज्ञ किये गये उनमें इसके द्वारा दिये गये विधानों को ही आधार मान-

कर देवो को हवि समर्पित की गयी। अन्य विधान भी इसी के अनुसार किये जाते हैं। कई विद्वानों ने इसे तथा 'मनु वैवस्वत' को एक ही माना है, परन्तु इसमें काफी मतभेद है। (च को)

२ चौदह मन्वतरों के अधिपति।

वि० वि०—पुराणानुसार ब्रह्मा के एक दिन और रात को कल्प कहते हैं। इनमें से ब्रह्मा के एक दिन के चौदह भाग माने गये हैं। प्रत्येक भाग को एक मन्वतर कहते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के काल में सृष्टि का नियंत्रण करने वाला मनु अलग होता है और इसी के नाम से मन्वन्तर का नाम-करण किया गया है। अतः ये चौदह मन्वन्तर एव मनुओं के नाम इस प्रकार हैं—१ स्वायम्भुव । २ स्वरोचिष । ३ श्रोतम । ४ तामस । ५ रैवत । ६ चक्षुष । ७ वैवस्वत । ८ सार्वणि (अकंसार्वणि) । ९ दक्षसार्वणि । १० ब्रह्मसार्वणि । ११ धर्मसार्वणि । १२ रुद्रसार्वणि । १३ रौच्य । १४ भौत्य । उपर्युक्त प्रत्येक मन्वन्तर की काल मर्यादा चतुर्युगों के इकहत्तर भ्रमण माने गये हैं। चतुर्युगों की काल मर्यादा ४३,२०,००० मानुषी वर्ष माने गये हैं। इस प्रकार प्रत्येक मन्वन्तर की काल मर्यादा ४३,२०,००० × ७१ मानुषी वर्ष होती है। मनु प्रत्येक का राजा होता है जिसकी सहायतार्थ सप्तपि, देवतागण, इन्द्र, अवतार एव मनुष्य रहते हैं। (च को)

३ ब्रह्मा ।

४ विष्णु । ५ अग्नि । ६ मय ।

७ एक रुद्र का नाम । ८ यज्ञ । (अ मा)

९ अन्त करण । १० जैनो के जिनदेव ।

११ एक राजा, जिसके राज्यकाल में प्रलय हुआ तथा विष्णु ने मत्स्यावतार लिया था ।

१२ 'मनुस्मृति' नामक ग्रन्थ के रचयिता ।

१३ एक अर्थशास्त्रकार ।

१४ एक अग्नि विशेष जो तप नाम धारण करने वाले पांचजन्य नामक अग्नि का पुत्र था ।

१५ एक ऋषि जो कृशाश्व ऋषि का पुत्र था । इसकी माता का नाम विषणा था ।

१६ एक यादव राजा, जो वायु पुराण के अनुमार मधु राजा का पुत्र था ।

१७ एक यादव राजा, जो मत्स्य पुराण के अनुसार लोमपाद राजा का पुत्र था । इसके पुत्र का नाम ज्ञाति था ।

१८ एक इक्ष्वाकु वंशीय राजा, जो शीघ्र राजा का पुत्र था ।

१९ धर्मसार्वणि मनु के पुत्रों में से एक ।

२० अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२१ चौदह की सख्या । \* (हि को)

स० स्त्री० [स० मनु] २२ मनु की स्त्री मनावी ।

२३ एक अप्सरा जो कश्यप एव प्राधा की कन्या थी ।

२४ वन मेधी ।

रू० भे०—मणु, मनु, मनु, मनु ।

२५ देखो 'मन' (रू. भे)

उ०—१ गिउ कौरवाधिपति सैन्य समस्त हारी । गिउ पारथ उत्तर सहिउ मनु हरस भारी ।—सालिसूरि

उ०—२ पखेरू परदेसिया रे, नवि सरजयउ नित वास । तनु छद साथी माहरइ रे, मनु छद तोरइ पास ।—स कु

२६ देखो 'मानो' (रू. भे)

मनुओ—देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मडारी माडण नद भगति धणी, साह जावउ ने धणा भाव । साह मनुआ ने साह सहजीया, भडारी अमीउ अधिक उछाह रे ।

—कवि कुसललाम

मनुख—देखो 'मनुस्य' (रू. भे) (अ मा)

उ०—१ दीवाण तरणउ चोज देखता, किआ मनुख वाखाण करइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ चाली देखि विचारि सहज धरि साचा सोदा लेहु वै ।

कर मनुख जन्म हीरा चढया, कोढी सटै न देहु वै ।—ह पु वा

उ०—३ तद कृवर कही म्हे जद हीज लेसा तद परमेश्वर देसी अर जिक्क मनुखां धोरजवत है तिकां रा कारज परमेश्वरजी करसी ।

—चौबोली

मनुज—स० पु० [स० मनुज] १ मनुष्य, मानव । (अ. मा, ह नां मा)

उ०—परतक्ष ठगोरी पेरियो, मनुज ग्रहै ठग मढळी । पेरिया मत्र सिधुर सगह, आवै दरगह अगळी ।—रा रू

२ मानव जाति ।

३ दस विश्व देवो में से एक ।

रू० भे०—मणुअ, मणुय, मणू, मणू, मणूअ, मणूय ।

मनुजात—वि० [स०] मनु से उत्पन्न, मनु का ।

स० पु०—मनुष्य, मानव ।

मनुजाधिप—स० पु० [स० मनुज + अधिपति] राजा, नरेश ।

मनुजुग—स० पु० [स० मनु + युग] प्रत्येक मनु का समय, युग, काल, मन्वन्तर ।

मनुवार—देखो 'मनवार' (रू. भे)

उ०—अमला खोबां बाजियां, मचै भडा मनुवार । जांगडिया दूहा दियै, सिधू राग मभार ।—वा दा.

मनुस्मृति—स० स्त्री० [स० मनुस्मृति] मनु द्वारा रचित धर्म शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

मनुस्य—स० पु० [स० मनुष्य] एक स्थनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क एव बुद्धि की तीव्रता के कारण जरायुज जाति के समस्त प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है, नर, आदमी, मानव । (उ र)

उ०—पिण थानै इसीज दोसै है । आप री आख में पीळियो हुवै जद मनुस्य पीळा पीळा निजर आवै ।—भि द्र

रू० भे०—मणु, मणुध, मनक, मनख, मनिख, मनुख, मिनक, मिनख, मौनुख ।

अल्पा०—मनख्यो ।

मनुस्यता—स० स्त्री० [स० मनुष्यता] १ मनुष्य होने का भाव या अवस्था, इन्सानियत, मानवता ।

२ मानवी गुण ।

रू० भे०—मनसता ।

मनुस्यधरम—स० पु० [स० मनुष्यधर्मन्] १ मनुष्य का धर्म ।

२ कुबेर ।

रू० भे०—मनखाधरम, मनखाध्रम ।

मनुस्यलोक—स० पु० [स० मनुष्यलोक] भू-लोक, मृत्यु-लोक ।

मनुस्तेष्ठ—स० पु० [स० मनुश्रेष्ठ] विष्णु ।

मनुहरि—देखो 'मनोहर' (रू भे)

उ०—बाहै सुदरि बहरखा, चासू चूड़ सवचार । मनुहरि कटि थल मेखला, पग भाभर भरणकार ।—ढो मा

मनुहार—देखो 'मनवार' (रू भे)

उ०—१ मिळै दहू महिपती, हेत मनुहार हुलासां । चढ़ै मेघ-द्वरा, प्रगट उच्छाह प्रकासा ।—सू प्र

उ०—२ हाथी एक वाकेराव, घोडा दोय तुर रा च्यार दिया, घणी घणी मनुहारा करी ।—सू प्र

उ०—३ राजूखा मनुहारा घणी करणै लागिगो ।

—सूरे खीवे काधळोत री बात

उ०—४ सूरे नू हाथ भाल गादी ऊपर बैठायो । खीवे सू, घणी मनुहार किवी पण उवी गादी ऊपर नही बैठियो ।

—सूरे खीवे काधळोत री बात

उ०—५ मनुहारिया कर कर दूणां दोढा अमल करावै छै ।

—प्रतापसिध म्होकमसिध री बात

उ०—६ अमला री रह-छह मधी छै । भूरी, मेवती, काळी, किस-नागर, आगराई, मरोडी, मुहर तोली, लाभै तिए भात री केसरियो, पोता घोळियो मनुहारा हुधै छै ।—डाढाळा सूर री बात

मनुहारीणो, मनुहारयो—क्रि० स० [स० मान+हरणम्] १ आतिथ्य सत्कार करना, आदर करना, स्वागत करना ।

उ०—आर पार हुय जाय, सेल तरवार कटारी । गळवांहा, गूथणी जाण मित्रां मनुहारी ।—रा रू

२ किसी का मान छुडाने, क्रोध शान्त करने का प्रयत्न करना ।

३ किमी कार्य या बात के लिये सहमत करना ।

४ किसी वस्तु को लेने, स्वीकार करने के लिये आग्रह करना ।

मनुहारणहार, हारो (हारी), मनुहारणयो—वि० ।

मनुहारिओडो, मनुहारियोडो, मनुहार्योडो—भू० का० कृ० ।

मनुहारीजणो, मनुहारीजयो—कर्म वा० ।

मनुहारि—देखो 'मनवार' (रू भे)

उ०—ऊगर सालह उतारियउ, मन छोटइ मनुहारि । पग मू पग कूटियउ, मुहरी भापी नारि ।—ढो मा

मनुहारियोडो—भू० का० कृ०—१ आतिथ्य सत्कार किया हुआ पादर किया हुआ, स्वागत किया हुआ २ मान छुडाने या क्रोध शान्त करने का प्रयत्न किया हुआ ३ सहमत किया हुआ ४ आग्रह किया हुआ

(स्त्री० मनुहारियोडो)

मनुहारी—देखो 'मनवार' (रू भे)

मनू मनू—१ देखो 'मानो' (रू भे)

उ०—इण विध आभरणाह, मनू मुखता मिली । छक तरणाई छोळ पयोनिघ ज्यू छिनी ।—वां दा

२ देखो 'मनु' ।

मनेत्र—एक तरह का वस्त्र ।

उ०—जादर पोती पारेवउ पट साउल मेघाडवर मभारायउ रावेउउ कणवीर सोवन्नच्छनेउ मनेत्र नीलउ नेत्र रातरुडाहुउ वडगणीउ कन्हो गरुडसन्ताह ।—व स

मनै—१ देखो 'मना' (रू भे)

उ०—मे तो हजरत सू पैंली अरज की थी तरै वां तीरदाजां नू मनै किया ।—नंणुमी

२ देखो 'मानो' (रू भे)

उ०—गावै करि मगळ चढ़ि चढ़ि गोखै, मनै सूर सिसुपाल मुख । पदमिणि अनि फूनें परि पदमिणि, रुखमणि कमोदणी रुख ।—बेलि

मनैगनै, मनैग्याने—देखो 'मनांग्याना' (रू भे)

उ०—१ सु 'तेजमीजी' नै गठोड प्रिथीराज जैतावत रै घणी सुख थो । कितरेक दिने चाट सू पवारा नू भूवरणी विचार मनैगनै कीयो ।

—राध मालदे री बात

उ०—२ घगतर, भिलम, जिरह सूथण, जिरै जूता, घोडा री पाखरां काढजै छै, सुवारजै छै । मनैग्यानें सारी तेवढ कर रह्यो छै । सखरा रजपूत तयार कीजै छै ।—कुवरसी सांखला री वारता

मनोकांमना—स० स्त्री०—मन की इच्छा, अभिलाषा ।

उ०—ढील न कीजै कवरजी, बोलाया सनमघ । मन का चित्या हरि किया, मनोकांमना सिध ।—कुवरसी सांखला री वारता

रू० भे०—मनकामना ।

मनोगत, मनोगति—वि०—मन में आया हुआ, दिली ।

उ०—म्हारी कही मनोगत बात ए । तदि समझ्यो स्वामी नाथ ए ।

—जयवाणी

स० स्त्री०—मन की गति, इच्छा ।

मनोगिन—देखो 'मनोगय' (रू भे) (ह नां मा)

मनोगुप्ति—देखो 'मनगुप्ति' (रू भे)

उ०—मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति प्रधान ।—व स-

मनोगय—वि० [स० मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर ।

उ०—मम इस्ट मिस्ट आदर अभिस्ट । महिमां मनोगय जप जपन जोग्य ।—ऊ का

रू० भे०—मनोगिन ।

मनोगया—स० स्त्री० [स० मनोज्ञता] सुन्दरता, मनोहरता ।

मनोज्ञ—सं० पु० [स० मनस् + ज या जन्मन्] कामदेव, मदन ।

(अ मा, ह नां मा)

उ०—१ लालचिया सतोस ज्यू, मन हीजहा मनोज । ऊमर में नह ऊपजे, हम मावडिया मोज ।—वा दा.

उ०—२ रूप री मनोज राजा महाराजा 'रेण' ।

—हुकमीचद खिडियो

वि०—मन से उत्पन्न ।

मनोजघेनु—स० स्त्री०—कामधेनु ।

उ०—गिरवाणा सहाई मनोजघेनु ग्यान गोभा । नाराज धरीस सोमा इसी प्रथीनाथ ।—र रू

मनोजव—सं० पु० [स०] १ छठे मन्वन्तर (चाक्षुष) के इन्द्र का नाम ।

२ रुद्र के एक पुत्र का नाम ।

३ अनिल नामक वसु का जेष्ठ पुत्र इसकी माता का नाम शिवा था ।

४ घम सावर्णि मन्वन्तर का एक देव ।

५ एक सोमवशीय राजा, जिसका उद्धार मगल तीर्थ नामक तीर्थ स्थान में स्नान करने के कारण हुआ था ।

६ एक प्राचीन तीर्थ ।

वि०—१ मन के समान वेगवान ।

२ कोई बात समझने व करने में फुटिला ।

३ बाप का, पैतृक ।

४ पिता तुल्य, बड़ो के समान ।

रू० भे०—मनोजवी ।

मनोजवा—सं० स्त्री० [स०] १ अग्नि की एक जिह्वा । (मार्कण्डेय पुराण)

२ फ्रॉच द्वीप की एक नदी ।

३ स्कंद की एक अनुचरी मातका ।

मनोजवी—देखो 'मनोजव' (रू भे) (वि०)

मनोती—देखो 'मनोती' (रू भे),

उ०—कुणबी गुजरात मे हाड माडे मनोती करै करसण करै सालवी पणी करै, छेसाई पणी करै ।—वां दा ख्यात

मनोदब—सं० पु० [स० मनस् = मन + दूह = पुत्र] कामदेव, मदन ।

(ह ना मा)

मनोघ्यान—सं० पु० [स० मनोघ्यान] मम्पूर्ण जाति का एक राग ।

(सगीत)

मनोनिग्रह—सं० पु० [स० मन + निग्रह] अपने मन को विषय वासना या दुराचारो की ओर प्रवृत्त होने से रोकने की क्रिया या भाव, समय ।  
रू० भे०—मननिग्रह ।

मनोनीत—वि० [स०] १ मन के अनुकूल ।

२ पसद । ३ चुना हुआ ।

४ नियुक्त या पदासीन किया हुआ ।

मनोभव—सं० पु० [स० मनोभव, मनोभू] १ कामदेव, मदन । (अ मा.)

उ०—१ वेल कियो विसतार, मनोभव बागवां । इखै नाभि निवाण, उपाई अनुभवा ।—वा दा

उ०—२ मनोभव लगाई बाण मोहण मदन । सहस वाता सजन आण सदनी ।—वां दा

२ चन्द्रमा । ३ प्रेम, स्नेह ।

४ कामवृत्ति ।

रू० भे०—मनभू ।

मनोभाव—सं० पु० [स० मन + भाव] मन की इच्छा, कल्पना ।

रू० भे०—मनभाव ।

मनोभू—देखो 'मनोभव' (रू भे)

मनोन्य—एक फल विशेष ।

उ०—सुवरण स्थालि, मोटइ भूमालि, आबी ऊजमालि, परीसई फलहुलि । किसी किसी ते फलहुलि, अखोड खड मनोन्य वाइमी, वारु चारउली ।—व स

मनोमयन—सं० पु० [सं० मनस् + मयन] कामदेव ।

मनोमय—वि० [स०] १ मन से युक्त, मानसिक ।

२ आध्यात्मिक ।

मनोमयकोश—सं० पु० [स० मनोमयकोश] वेदान्त के अनुसार पाच कोशो मे तीसरा कोश जिसमे मन, अहकार व कर्मन्द्रिया रहती हैं ।

मनोयोग—सं० पु० [स० मनस् + योग] मन की एकाग्रता ।

मनोरजक—वि० [स० मनस् + रजक] १ मन का रज मिटाने वाला, मन को प्रसन्न करने वाला, दिल बहलाने वाला ।

२ हास्यास्पद ।

मनोरजन, मनोरजन—सं० पु० [स० मनस् + रञ्जनम्] १ दिल बहलाव, मनो-विनोद ।

२ ऐसा कार्य या बात जिससे मन को प्रसन्नता हो, मन का रंज मिटाने वाली बात या कार्य ।

रू० भे०—मनरजण, मनरजन ।

मनोरथ—सं० पु० [स०] १ अभिलाषा, इच्छा, कामना ।

उ०—१ जिण थी दो ही वार लडाई मे पराजय पाइ भाग प्रसाद रै अधीन भाग हीण जवना रै अधिराज नासकहीना अपरनाम मह-मूद तीजी वार साम्है चलाइ रण री रस चाखण री मनोरथ भी न जाणियो ।—व सा

उ०—२ राजा कागळ लिखै कुम्हार तेई निय कन्हलि । मिळण मनोरथ करै, साह जाहगीर तर्ण छलि ।—गु रू ब

उ०—३ माता हे मनरा मनोरथ पूरण म्हारा कीजी हे । जग जननी हे माय ।—गो. रां  
२ सकल्प ।

उ०—१ सारा गोढ भेळा ह्वै मनोरथ बाध लीना । थांनकी मारोट रागमल का व्याव दीनां ।—शि व

उ०—२ भासण उपमा और मनोरथ भेलिया । मऊ आटी मखतूल क मोती भेलिया ।—वा दा.

रू० भे०—मणोरथ, मणोरथ, मणोरह, मणोरहु, मनरत्थ, मनरथ ।

मनोरथ-द्वादशी—स० स्त्री० यो० [स०] १ चैत्र शुक्ला द्वादशी की तिथि ।  
२ उक्त तिथि को किया जाने वाला व्रत ।

मनोरम-वि० [स० मनस्+रम] (स्त्री० मनोरमा) जिसमे मन रम जाये, मनोज्ञ, सुन्दर । (ह नां मा )

मनोरमा-स० स्त्री० [स० मनस्+रमा] १ सुन्दर स्त्री ।

२ सात सरस्वतियो मे से चौथी ।

३ गीतम बुद्ध की एक शक्ति ।

४ एक अस्त्र जो कश्यप एव प्राधा की कन्याओं मे से एक थी ।

५ ध्रुवसधि राजा की पत्नी, जिसके पुत्र का नाम सुदशन था ।

६ विद्याराधिप ईदीवराक्ष नामक गधर्व की कन्या ।

७ महाकवि चन्द्रशेखर के अनुसार आर्या के ५७ भेदो मे से एक जिसमे १२ गुरु और २२ लघु वर्ण होते हैं ।

८ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे दस दस वर्ण होते हैं तथा प्रत्येक चरण का पहला, दूसरा, तीसरा, सातवा और नौवां वर्ण लघु होता है ।

९ दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण, जगण और अत मे गुरु होता है ।

१० केशव के मतानुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण और अत मे दो लघु होते हैं ।

११ केशव के अनुसार दोषक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ४ भगण और दो गुरु होते हैं ।

१२ सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन तगण और एक गुरु होता है ।

१३ गोरोचन ।

मनोराज, मनोराज्य—स० पु० [स० मनोराज्य] मानसिक कल्पना ।

मनोरी—स० स्त्री०—मन की भावना ।

उ०—बादसाह सलामत इतरी कहिता मनोरी फुरी जो दस हजार सिपाही म्हारी किडी मे घर पण म्हारी सबळी बादमाही लयस्या ।

—जंतसी री वारता

रू० भे०—मनोहरी ।

मनोवरी—देखो 'मनोहर' (रू. भे )

उ०—कोई किमी एक पावू री सूरत मनोवरी ।

—पावूजी री पवाडो

मनोवांछा—देखो 'मनवाछा' (रू. भे )

मनोविकार—स० पु० [स० मनस्+विकार] १ योग के अनुसार चित्त की वृत्ति या अवस्था ।

२ मन की वह अवस्था जब उसमे किमी प्रकार के सुखद या दुःखद भाव उत्पन्न होते हो ।

मनोविद्यान—ग० पु० [मनोविज्ञान] वह विज्ञान-शास्त्र, जिसमें मनुष्य के मन के भावों या अवस्थाओं का विवेचन किया गया है ।

मनोवेग—स० पु० [स०] मन का आवेग, जोश ।

मनोवृत्ति—स० स्त्री० [स० मनस्+वृत्ति] वह मानसिक शक्ति जिसका प्रभाव मनुष्य के आचरण पर पड़ता है ।

मनोहर—स० पु० [स०] १ परमेश्वर, ईश्वर । (नां मा, ह नां मा )  
२ श्रोकृष्ण । (अ मा )

३ एक प्रकार का सकर राग । (सगीत)

४ छप्पय छन्द का ६० वां भेद जिसमे ११ गुरु और १३० लघु मे एक मी इयतालीस वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं ।

५ छप्पय छन्द का एक भेद जिसमे १३ गुरु, १२६ लघु से १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं ।

वि० वि०—मतान्तर मे इसमे १३ गुरु, १२२ लघु से १३५ वर्ण और १४८ मात्राएँ भी मानी जाती हैं ।

वि०—१ मन को हरण करने वाला, चित्ताकर्षण करने वाला, मनोज्ञ, सुन्दर । (ह ना मा )

उ०—१ दुति वही मरू रूप मे डमर । मदन फोज नीमांण मनोहर ।

—सू प्र

उ०—२ सखी अमीणी साहिवी, मदन मनोहर गात । महाकाळ मूरत वर्ण, करण गयदा घात ।—वां दा

उ०—३ महि नयर घर प्रति दीप मडित माळ जोत मनोहर । किर व्योम नाखय परखि कमळा, सोभ घारत सुदर ।—रा रू

२ देखो 'मनहर' (रू. भे )

रू० भे०—मणहर, मणहारी, मणुष, मणोरह, मणोरहु, मणोहर, मणोहार, मनहरू, मनुहरि, मनोवरी, मनोहार ।

मनोहरता, मनोहरताई—स० स्त्री०—सुन्दरता ।

मनोहरा—स० स्त्री०—वह गाथा छंद जिसमे अनुस्वारों की बाहुल्यता हो । (र ज प्र )

मनोहरी—देखो 'मनोरी' (रू. भे )

उ०—पीछे फोज एक मजल सू पाछी बुलाइ । पातमाहजी री मनोहरी स्त्रीकरनीजी फोर दीवी ।—द दा

मनोहारू—देखो 'मनोहर' (रू. भे )

उ०—इहां एक सुयवखव वारू, त्रिण्ह वग वली मनोहारू हो ।

उद्देसा त्रिण्ह सनूरा, सख्यात सहस पद पूरा हो ।—वि कु



मनो—देखो 'मानो' (रू भे)

उ०—तल्लोटा खुरा थम पावां तराजै, सकी पिढ प्रासाद भाधार साजै । जडै वज्र नाळा भडै फूल ज्वाळा, मनो मेघ सद्योत खद्योत माळा ।—व भा

मनोती—स० स्त्री०—१ किसी देवी-देवता की विशेष रूप से पूजा करने के लिये किया जाने वाला सकल्प, मानता, मन्त्र ।

२ असतुष्ट को सतुष्ट करना, मनुहार ।

रू० भे०—मनोती ।

मन्न—देखो 'मन' (रू भे)

उ०—१ अहर रग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि ब्रह्म । जाण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ठूकउ मन्न ।—अज्ञात

उ०—२ काटळ आवध मूक कर, मन मदाइए ब्रह्म । आवध राखै ऊजला, मैला ज्योरा मन्न ।—वा दा

उ०—३ अकबर अगम अगाध गह, ते रहिया अजतन्न । वाचै त्यही विचारियो, कमवै साचै मन्न ।—रा रू

मन्नछा—देखो 'मसा' (रू भे)

उ०—देवी मन्नछा माइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवीद सभु विधाता ।—देवि

मन्नणो, मन्नबो—देखो 'मनणो, मनबो' (रू भे)

उ०—खाळिक खूरम न मनही, नह मन्नै पीराह । ऊमी खांडे ऊमियो, आढो हम्मोराह ।—गु रू व

मन्नणहार, हारो (हारी), मन्नणियो—वि० ।

मन्नियोडो, मन्नियोडो, मन्नियोडो—भू० का० कृ० ।

मन्नीजणो, मन्नीजबो—भाव वा० ।

मन्नमोट—देखो 'मनमोट' (रू भे)

उ०—नरसिधदास सूरत समूह, जगमाल सुत गोडवै जूह । 'कांतो' भिहत चालतो कोट, 'माघव' समोत्रम मन्नमोट ।—गु रू व

मन्नि—देखो 'मन' (रू भे)

उ०—१ ऐ थोडु कहिता भलू, मारत जाणै मन्नि । माघवनइ । ल्याविसि नही, तुम्ह नही राखु तन्नि ।—मा कां प्र

उ०—२ माटी पणै घणै मन्नि, विकसीया बीर तन्नि । साम नू निरोहा सार, जु आण करै जुहार ।—गु रू व

मन्नियोडो—देखो 'मन्नियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मन्नियोडो)

मन्मथ—देखो 'मनमथ' (रू भे)

उ०—हेमागिरि थी हाथिणो, आवइ पवन पराणि । ऊमाडो ऊपरि चढ़ी, मारइ मन्मथ वांण ।—मा का प्र

मन्मथलेख—सं० पु०—प्रेम पत्र ।

मन्मथी—वि० [स० मन्मथिन्] कामुक, कामी ।

मन्यु, मन्यु—सं० पु० [स० मन्यु] १ यज्ञ, हवन । (ह ना मा)

२ क्रोध, गुस्सा । (अ मा)

३ अभिमान, गर्व ।

४ दुख, शोक ।

५ दीनता । ६ कर्म । ७ स्तोत्र ।

८ अग्नि । ९ शिव, महादेव ।

१० वितथ राजा के पुत्र का नाम ।

मन्वतर—सं० पु० [स० मनु+अन्तर] १ इकहत्तर, चतुर्युगी काल या समय जो ४१,२०,००० × ७१ मानवी वर्ष का होता है । ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवां भाग ।

वि० वि०—देखो 'मनु' (२)

२ पुराणानुसार प्रत्येक मनु का शासन काल या अवधि ।

३ चौबीस अवतारों में से एक ।

४ अकाल, दुर्भिक्ष ।

रू० भे०—मन्तर ।

मन्हा—देखो 'मना' (रू भे)

उ०—१ उहां इण नू मारणै नू छळ कियो छै तिए सू थां बुलाय मन्हा करो, उठै गयो तो मारियो जासी ।—कुंवरसी सांखलै री वारता

उ०—२ तद गळ वांखडी घाल दाहू रो दाव मार्क से दियो । दळ-करण नू रजपूता निराठ मन्हा कियो ।

—सुंदरदास भाटी बीकपुरी री वारता

मन्है—सर्व०—१ मुझको ।

उ०—१ ताहरा देवीदास अरज कीबी—जो आप पलक दरियाव कहावो छो तो म्हेन पलक दरियाव री तमासी दिखावो ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ भूठ तो मता जाणो ओर होढ़ी मन्है बुलायो थो सी आ फुरमायो छै—भूठ तो मता जाणो, पण दूजा री काम नही, यू अरज करै छै ।—पलक दरियाव री बात

२ देखो 'मना' (रू भे)

उ०—१ मेलि परवान मान महाराज कीघा मन्है लोपीयो हुकम करतूत लहसी । हुइ सहुको कहै हाकम हाकमी, रंत वर वंत दुस्ट दूर करसी ।—घ व अ

उ०—२ तद विट्ठलदास मन्है करणै लाग्यो तो वादसाह सलामत फरमाई मन्है मता करो सच काहेना है ।

—गौड गोपाळदास री वारता

मपणो, मपबो—क्रि० अ०—मापा जाना, परिमाण निकाला जाना ।

मपणहार, हारो (हारी), मपणियो—वि० ।

मपियोडो, मपियोडो, मपियोडो—भू० का० कृ० ।

मपोजणो, मपोजबो—भाव वा० ।

मापणो, मापबो—सक रू० ।

मपधुनि—सं० स्त्री०—ढोल की आवाज ।

उ०—मपधुनि मपधुनि भुक्कण वीण, निनि खुणि जेखणि आउज लीण ।—हीराणंद सूरि



मपारी-स० स्त्री०—एक जाति विशेष ।

उ०—सोनी पारवि जवरीह गाधी दोसी नेस्ती कणसरा मपारी मणीवार सोनार कुभार ठठार लोहार तलाल पटोलीया पटसूत्रीया मोली तबोली ।—व स

मपियोडी-भू० का० कृ०—मपा हुमा, परिमाण निकला हुमा ।  
(स्त्री० मपियोडी)

मपुराण—देखो 'महापुराण' (रू. भे.)

मफरा-स० स्त्री०—नशीली वस्तु ।

उ०—मगरपचीसी माणतो करे कांम कल्लोली । गाहड मे घुमं घणु, गिलि मफरा गोली ।—घ व प्र

मफो—देखो 'माफो' (रू. भे.)

उ०—भल हल माजा गज भिडज, मफा इका सुखपाळ । घोड-यहल खासा घणा, दरगह मुहर दुभाळ ।—सू प्र

ममकार—देखो 'मकार' (रू. भे.)

उ०—भादि एक ररकार कु, सिवरथा सिध न होय । जन हरिया ममकार मिळ, यु पची पर होय ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

मम-सर्व० [स०] मेरा, मेरे, मेरी ।

उ०—१ दुरवेम विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरो । मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मडोवरी ।—रा रू

उ०—२ कुळ न्यात हीण फीटा कुटल, जिके विगाडू जात रा ।

मम सेण वात सुणज्यो मती, रहण न दीज्यो रात रा ।—ऊ का

उ०—३ फ्रम चौथी भारत कवर, नटता रुकियो नीठि । मुणियो

भारत नांम मम, दीघी किए गुण दीठि ।—व भा

अध्य० [स० म+म] निषेध सूचक शब्द, नहीं, मत ।

उ०—१ दोम तू मम देयमि वाई । ताहरउ भस्म होसि भाई ।

—सालिसूरि

उ०—२ तास पटक मेने दसरथ तणा, लोपि समद लीघो गड

संक । मम करि डोल म करि मन माया । समरि समरि स्त्रीराम

निकफ ।—ह ना मा

रू० भे०—मम्म ।

ममकार—देखो 'मकार' (रू. भे.)

उ०—जन हरिया ममकार की, मुख सिवरन की वांनि । रोम रोम

ररकार की, जोग न आयो जानि ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

ममत—देखो 'ममत्व' (रू. भे.)

उ०—अर भीवराजजी रे वजीर सू वडो ममत वधी ही सू उण नू

कंय वीरमदेजी नू पातसाहजी रे पावा लगाया ।—द दा

ममतमत्त-स० पु०—ममता का मेल । (जैन)

ममता-स० स्त्री० [म०] १ प्रपना होने का भाव, प्रपनत्व, स्नेह, प्रेम,

यात्मन्य ।

उ०—१ नू ममता गी मूगती है । तू जिवडा रो हे जोत ।—गी रा

उ०—२ धर्म हरम सू कागली दंडा देवनी । घणी ममता मू ईडा

नै सेवती ।—कुलवाडी

२ कृपा, दया, सहृदयता ।

उ०—१ थोडी घणी ममता विचारो अर आनै मारण रो हुकम मत

दिरावो फगत देस निकाळो देयनै ई मोटी विचारो ।—कुलवाडी

उ०—२ जे चिडा नै आसरी देय देती तो राजा भवस मन मे

म्हारी सरा करतो के राणी ममता वाळी है ।—कुलवाडी

३ लोभ, लालच ।

उ०—१ आतम ध्यान विचारतो जी, मूकी ममता देह । जड

चेतन भिन्न भिन्न करेजी, लागी सिव सू नेह ।—जयवाणी

उ०—२ क्रसन राखि हिव हू तू करतो, घरणीघर ममता मन

घरतो । तूभ विखै मत दै धू-तारण, कूप समार काढ सव-कारण ।

—ह र

४ अहंकार, गर्व ।

उ०—१ सेवती पाप अठार, ममता मोह विकार । मरयादा

लोपतो ए, अघरम मे ओपतो ए ।—जयवाणी

५ उच्यथ आगिरस नामक ऋषि की पत्नी एव दीर्घ मापतेय

ऋषि की माता ।

रू० भे०—ममता ।

ममत्व-स० पु० [स०] १ ममता, प्रेम, स्नेह, वात्मन्य ।

२ दया, कृपा ।

३ लोभ, लालच ।

४ अहंकार, गर्व ।

रू० भे०—ममत ।

ममद—देखो 'मैमद' (रू. भे.)

ममरणी, ममरवी-फ्रि० स०—चवाना ।

उ०—ललित गरभेसर, द्रव्य अविनस्वर सालिभद्रावतार मदन

मुद्रावतार, अस्त्रान तबोल ममरइ, पच प्रकारि विसय सुख प्र माणइ

उगिउ आथमिउ काइ न जाणइ जाइ ।—व स

ममरियोडी-भू० का० कृ०—चवाया हुआ

(स्त्री० ममरियोडी)

ममाई-स० स्त्री०—१ कस्तूरी ।

उ०—कहा होत है रूप ते, गुण ते होत निधान । ऊजळ सोमल ते

मरत है, रखत ममाई प्राण ।—जैतदान वारहठ

रू० भे०—मम्माई ।

ममारक, ममारख, ममारखी-स० स्त्री० [फा० मुवारक] १ शुभ-

कामना, मंगल-कामना, वधाई ।

उ०—१ विभाडे जादवा कोट घर कीध वस, सबळ व्रद खाटिया

भवां मारु । तप वळी अभनमा, 'माल' 'गगेव' तो, ममारक पोका-

रण राव मारु ।—महाराजा जसवतसिंह गी गीत

उ०—२ मिळण मीर उमराव, सब राजा मव भावें । कोड ममा-

रख कहे उवरि, वड मुख उपजावें ।—रा रू

रु० भे०—मामारखी ।

ममीरो—स० पु० [अ० ममीरान] हलदी की जाति के एक पोथे की जड़ जिसकी कई जातिया होती हैं ।

ममु—स० पु०—'म' वर्ण ।

उ०—ररो ममु जुगम ऐं अक बाकी रह्या, प्रसिध तिए सू करै लिया प्यारा । जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमै, सुर अमुर नाग नर नमै सारा ।—र रु

ममे—स० स्त्री०—अह की भावना, मैं ।

उ०—लीला तउ महेस्वर तणी, सस्टि अह्या तणी, प्रतिग्या लीराम तणी, पवनवेग कला हनुमत तणी, ममे दुरयोवन तणी, सूरय तणउ तेज ।—व स

ममी—स० पु०—'म' अक्षर ।

उ०—पोथी पुस्तग टीपणी, विद्या दूरि वहाय । हरिया सब ही छाडि कै, ररै ममै चित लाय ।—स्त्री हरिगमदासजी महाराज

ममोई—स० स्त्री०—वम्बई नगर ।

उ०—ममोई दरवाजी, वरियारी दरवाजो इत्यादिक चवदै दरवाजा सूरत रा है ।—वां. दा ह्यात

ममोलियो—देखो 'ममोलो' (अल्पा, रु भे.)

उ०—पछिया रो मीठी बोलणी, मीठका रो गावणी, कुदरत रो लीलो वणाव, ममोलिया रो सुरगो रग—कोई इण विरखा ने समझ सू देखलै तो वो सपना मे ई सुरग रै आणद री बात नी करै ।—फुलवाडी

ममोलो—स० पु०—एक वरसातो कीड़ा जिसको वीरवधूटी कहते हैं ।

उ०—मीध चात्रिग वीरघटा दादुर वोलै । मुगळ लाल ममोला सा निजर आवै ।—वचनिका

रु० भे०—ममोलो, मामोलो ।

अल्पा०—ममोलियो, ममोल्यो, मामलियो, मामूल्यो, मामोलियो, मामोल्यो ।

ममोल्यो—देखो 'ममोलो' (अल्पा, रु भे.)

उ०—नाभि जाणै गुलाब रो फूल । पासा जाणै माखण री लोथ । नितव कटोरा सा । नख लाल ममोल्या हीरा दमकमता । नवी राणी तो जाणै आभै री बीज—फुलवाडी

ममोलो—देखो 'ममोलो' (रु भे.)

उ०—मेहको ममोलो, दादळा की बीज, होली की भाळ, सामण की बीज ।—मयाराम दरजी री बात

मम्म—१ देखो 'मरम' (रु भे.)

२ देखो 'मम' (रु भे.)

मम्माणी—वि०—मकराने की, मकराने सम्बन्धी ।

उ०—मम्माणी पाखाण नी, प्रतिमा सुदर रूपी जी । स्त्रीशेजुज नउ सघ करि, थापी सकल सखी जी ।—स. कु

मम्माई—देखो 'ममाई' (रु भे.)

मयक—स० पु० [स० मृग + अङ्क] १ चन्द्रमा ।

(अ. मा, ना मा, ना डि को, ह ना मा)

उ०—१ छटा देख अपछरा छिपै, सची छिपै कर सग । छतीया अघारा छिपै, मुख सौं छिपै मयक ।—पता

उ०—२ पडगरियो सोहड खेड पत्त, निस मयक जाण माळा नखत्त । घाघरड धूस घण थाट घेर, मिळिया सुभट्ट मेखळा मेर ।

—गु रु व

उ०—३ साखा वियो मयक पह सुभ्रम, मन अण वळत तूभ मण । कलम कुराण पाण तज कृभा, वांचण लागा हर वयण ।

—महाराणा कृभा री गीत

२ पवन । ३ कपूर ।

रु० भे०—मयकर, मयख ।

मयकर—देखो 'मयक' (रु भे.)

उ०—तिए नाद थकत हुई रथ मयकर, धगू सुसव जोवता घणी । काढा कोर वडइ कारीगर, चाहड चरण जडाव तणी ।

—महादेव पारवती री वेलि

मयख—देखो 'महिस' (रु भे.)

उ०—हीगोल राय अठ दस हथी, अखलै मयख भुवनेसरी । कवि जोड पाण 'ईमर' कहै, उदो उदो आसापुरी ।—देवि.

२ देखो 'मयक' (रु भे.)

मयग—देखो 'मतग' (रु भे.)

मयगळ—देखो 'मदकळ' (रु भे.)

उ०—मद भरता इतरा मयगळ, पाएलै चालस्यइ पलड ।

—महादेव पारवती री वेलि

मयद—स० पु० [स० मृगेन्द्र] (स्त्री० मयदण, मयदणी) १ सिंह ।

(अ. मा, ना डि को)

उ०—१ झालै क्यु साहिब झाला ऐ, मयद ऊठियो त्रिभै मणो । मूह झालियो न जाऐ मिळऐ । त्रिणी घणै ही मगळ तणी ।

—नैणसी

उ०—२ उवकत घाव रगत्र उलाळ, काळी भर पत्र पिवत कराळ । हिचै जुघ 'लाल' तणी हरियद, मिळै गज धूमर जाणिए मयद ।—सू प्र

उ०—३ मडळ मांह वमाय अग, थयी कळकी चद । पायो सीह मयद पद, हण हायळ अग व्रद ।—वां दा

उ०—४ मारू घूषटि दिट्टु मड, एता सहित पुणिए । कीर, ममर, कोकिल, कमळ, चद मयद गयद ।—डो मा.

[मद + इन्द्र] २ हाथी, गज ।

उ०—भुक्ती कुळ दावानळ झालै, च्यार हजार पायदळ चालै । कवि अगि सिलह जोम ऊकणिया, वीस मयद आरोहक वणिया ।

—सू प्र

१ ऊट । (डि को)

उ०—हुआ नगारी दूसरी, भेर भणकै सद् । सब आतुर जण दळ सकळ, करण मयदा लद् ।—रा रु

[स०] ४ राम की सेना का एक वानर ।

उ०—जांमवत क्रुध भळ जळहळी, सुखेण मयदह सतबळी ।

—सू प्र

५ चन्द्रमा ।

६ काव्य छन्द का एक भेद विशेष ।

७ प्रथम लघु फिर एक दीर्घ फिर एक लघु वर्ण का छंद विशेष ।

८ ढिगल गीतों (छंदों) में सिंहचले गीत का एक भेद ।

रु० भे०—मद्द, मयदी ।

मयदगति—स० स्त्री० [स० मृगेन्द्र + गति] सिंह की चाल ।

उ०—‘सूराउत’ डावि छतीस सार । मलपियो मयदगति गयद मार ।

—गु रु व.

मयदी—देखो ‘मयद’ (रु भे)

उ०—मयदी वणै ‘कांह’ रै थाप मारी, तरी साह तोफान रै माह तारी ।—मे म.

मयवर—देखो ‘मैवर’ (रु भे.)

उ०—मयवर नाम ले कहू नहीं मुनासब । लियाकत स्याम ध्रम रखे लीघी ।—जुगतीदान देथा

मयमत—देखो ‘मैमत’ (रु भे.)

मयमिरा—स० स्त्री०—मदिरा, शराब । (अ मा)

मय—स० पु० [स०] १ प्रसिद्ध शिल्पी दानव जिमने पांडवों का सभा भवन बनाया था ।

२ ऊट । ३ घोड़ा । ४ हाथी ।

उ०—सूहा-डह प्रचढी, मूसा आरुढ मेक मय दती ।—गु. रु व

५ खच्चर । ६ आराम, सुख ।

७ तद्धित का एक प्रत्यय जो प्राचुर्य अर्थ में शब्दों के आगे लगाया जाता है, युक्त ।

उ०—१ भाळ विसाल सिंदूर सूसोभित, हाल मराळ हसती । रूप अनूप तेज नय राजत, मिळत पलक मदमती ।—मे म.

उ०—२ कोई कुकवी जीभ सु, बाछै रस मय वाण । कचन बांछै काढणो, सो लोहारी खाण ।—वां दा

रु० भे०—मद् मद्, मई, मयै, मै ।

८ एक देश का नाम । (प्राचीन)

९ आधार या आश्रय रूप । ज्यू०—अन्तमय प्राणमय ।

१० देखो ‘मद’ (रु भे)

११ देखो ‘मै’ (रु भे)

मयड—एक प्रकार का कपड़ा विशेष ।

उ०—वीणउमीउ चीणउसीउ मलउमीउ आउचीउ मूगनउ मयउ

मगलिक मेदियउ सीलउर मिहलउरउ वइरागरउ हीरागरउ ।

—व म,

मयकामा—स० स्त्री०—मदिरा, शराब । (अ मा)

मयगळ, मयगल, मयगळि, मयगलि—देखो ‘मदकळ’ (रु. भे)

उ०—१ नाभि सकोमळ मुख कमळ, डोल सु सीतळ गात । तिणु का दव खुध्या रहै, मन मयगळ मयमत ।—ढो मा

उ०—२ हसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कामिनी गरव भाजती, चद्रकला जिम गुणहि वाघती, कचुक ताढती नयन-वाणि जणमण वीघती ।—व स.

उ०—३ ए मयगल मन माहरू, अकुस माघव-हाथि । कुमस्थल ऊपरि चढी, हुं पणि वईठी साथि ।—मा का प्र

उ०—४ पुण्यड मयगल वाभूद वारि, पुण्यवत भुज नावड हारि । पुण्यड हुइ नित नवला रग, पुण्यड सुणीइ वेणि अदग ।

—का दे प्र

उ०—५ मयगल जिम रेवा सु मोह्या, हम मानस सु सदोरा रे । मीन मोह्या जिम जलनिधि माहै, चद सु जेम चकोरा रे ।—स कु

उ०—६ अवाडी ऊपरि घरी, मयगलि मुखि चित्राम । घमकई सोवनि-घूघरी, मनि गमता मन काम ।—मा का प्र

मयडी—देखो ‘मैडी’ (रु भे)

उ०—आज अवेळी उनम्प्यो, मयडी ऊपरि मेह । जाऊ तो भीज कचुवी, रहू त तूटै नेह ।—जमराज

मयण—स० पु०—१ हाथी ।

उ०—अष्टपवत्ति करण करि हू चलयउ, करम ग्रथि थकी पाछउ वलयउ । मयण निम्मिय दत करी घणा, किम चवायड लोह तणा चणा ।—स कु

२ देखो ‘मदन’ (रु भे) (अ मा) (उ र)

उ०—१ कश्रर कमला रति-रमण, मयण महाभड नाम । पकजि पूजिय पय-कमल, प्रथम जि करू प्रणाम ।—मा का प्र

उ०—२ खग नीर, धीर अतर खरा, मद कूजर वपु जिम मयण । मन वसै तेम तू माहरै, मो मन वसियो महमहण ।—ह र

उ०—३ मत्री तहां मयण वसत महीपति, सिळा सिंघासण घर सघर । माथै भव छत्र मडांणा, चलि वाइ मजरि ढलि चमर ।

—वेलि

३ देखो ‘मेण’ (रु भे)

उ०—हेम की कूपी मयण की मुघ । साघन समरई जीम मात-गयग ।—वी दे

४ देखो ‘मणि’ (रु भे)

उ०—चूढामणि बोलड सुणि ब्राह्मण, आदि विस्तु अहिनांण । पाई पदम उर लीवछ लछन, कोटड कोस्तुभ मयण ।

—दकगणी मगळ

मयणरेहा—देखो ‘मदनरेखा’ (रु भे)

उ०—मयणरेहा गई नासि होजी, जायउ पुत्र उजाडिमइ ।—स कु.  
मयणहल—सं० पु० [स० मदन-फलक या मदन-फलम्] ग्राम विशेष ।  
(उ र)

मयणा—१ देखो 'मैना' (रु भे)

उ०—भील कोली मयणा भीर तणा । मारग में भय अत्यत घणा ।  
—स कु

२ देखो 'मेना' (रु भे)

उ०—मलपती आवइ रे, जिम वन हाथणी रे । मयणा वयण  
सुविसाल ।—स कु.

३ देखो 'मैना' (रु भे)

मयणातुर—देखो 'मदनातुर' (रु भे)

उ०—राखस हिठव तणी हू धूय, तइ शीठइ मयणातुर हूय । बइ-  
ठठ ताठ अछइ नीय ठाणि, वाइ भावी मांगुसहांणि ।—प प च  
मयणि—देखो 'मदन' (रु भे)

उ०—अनु कठि कुसुमह माल किरि सु मयणि आपणि आवीइ ।  
कोइ इदु चदु नरिदु सइवरि पुहुत इम सभावीयइ ।—प प च

मयत—देखो 'मइत' (रु भे)

मयधुनीप्रजा—देखो 'मैयुनीप्रजा' (रु भे)

मयदानव—देखो 'मय' (१) ।

मयन—स० पु०—१ पवारो की एक शाखा ।

२ देखो 'मदन' (रु भे)

मयनक—स० पु०—१ जलघरनाथ के गुरु का नाम ।

उ०—मारग बाग तणी मति मेटे, भगत निरंतर उर घर भाव ।  
तूठ सुतन 'महेस' तूठिया, सिस मयनक 'गुमनेस' सुजाव ।—बां दा  
२ देखो 'मैनाक' (रु भे)

मयना—१ देखो 'मेना' (रु भे)

२ देखो 'मैना' (रु भे)

मयनाक—देखो 'मैनाक' (रु भे)

उ०—बडे गजराजनि रग चढ़ाय, करे उन्मत्त धनू मद पाय । चढे  
छलते हुजदार कजाक, मनी हनमत चढ्धो मयनाक ।—ला रा

मयमत—देखो 'मैमत' (रु भे)

उ०—१ पय ठव सूका पांनडा, मा बजाड मयमत । खबरदार कै  
वे-खबर, वन इण सीह वसंत ।—बां दा

उ०—२ गुडे मयमत सेना मुहर गंमरां, प्रकटिया मारका थाट  
जोधापुरा । घूसिये हैय पुरा पाय अरवद, पसरिये सिध परवत थया  
पाधरा ।—द बा

उ०—३ दोउ मयमत सुजाण सेज दिसि बाहुइइ । जांणै घरती-  
काज, असप्यति आहुइइ ।—ढो मा

मयमतौ—देखो 'मैमत' (अल्पा, रु भे) (ना डि को)

उ०—मयमतौ भादू मलो, सेहरे चमकै धीज । पिय प्यारी सेभार  
रमै, आज काजली तीज ।—कुवरसी साखला री वारता

मयमत, मयमत—देखो 'मैमत' (रु भे)

उ०—१ जैरो वारह आगळ खग लीडीकट छै, कांधी-पूठ एक  
सारखी छै । गुळवाड गोहू, जब चिणा रो, जुवार रो चरणहार छै,  
मयमत छै । सू चर चर आया छै ।—रा सा स.

उ०—२ मन मयगळ मयमत ।—ढो मा

मयमतौ—देखो 'मैमत' (अल्पा, रु भे.)

उ०—मयमत्ता मेगळ, मणिघरि केहरि मल्ल । सगला दमता  
सोहिला, मन दमणो मुसकल्ल ।—घ व. प्र

मयरहरो—सं० पु०—समुद्र, सागर ।

उ०—ता (उ) तू गो मेरु गिरी, मयरहरो (सायरो) ताव होइ  
दुत्तारो । ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जति ।

—कविघर सार

मयराळ, मयराळ—देखो 'मराळ, मराळ' (रु भे)

उ०—१ मान सरोवर-मन-महि, माधव तू मयराळ । चाहसि चव  
चवूकडा, चिणतु बाल प्रवाल ।—मा का प्र

उ०—२ मधुकरनी परि मणकतु, मडि रहिउ मयराळ । सुदरि  
ताहरी सीखवा, चाल्यानी चकचाल ।—मा का प्र.

मयलू—देखो 'मैलो' (रु भे)

उ०—ऊचपणउ आपइ गणइ, कठिन तु कहिया न जाय । मिलतां  
मुख मयलू गणी, मेहेल्या माधव राय ।—मा का प्र

मयसुता—स० स्त्री० [स०] मय दानव की कन्या एव रावण की  
स्त्री मदीदरी ।

मयानगर—स० स्त्री०—तलवार का म्यान बनाने वाली एक जाति ।  
(मा. म)

मयानो—देखो 'म्यानी' (रु भे)

उ०—जिसकी तारीफ सुणि सुरलोक के बीच सुरियद लाजै ।  
जिसका मयाना इस नश्यद नै अनेक गज कविराजों को दिया ।

—सू प्र

मया—स० स्त्री० [स० माया, ममता] १ कृपा, दया, अनुग्रह, अनुकम्पा ।  
(अ. मा, ह ना मा)

उ०—१ आय गोकळ मही लेर सुर अनोखां, मया कर सुणावी  
फेर मुरळी ।—बां दा.

उ०—२ राजा जसवतसिध पण घणी मया कीवी ।—नैगसी

उ०—३ लाख करोड माल खज्जीना, है गै मुलक मया करि दीना ।

—गु रु व

२ प्रेम, ममता, स्नेह ।

उ०—१ ठाकरसा रा गुण तो आप सू वत्ता कुण जाणै । आपरै  
माथं तो वारी विसैस मया ही ।—फुलवाडी

उ०—२ मात हूत अधिकी मया, करै चुगल विध केंण । मल वा  
करसू भेटही, श्री रसणा अनेण ।—बा दा

उ०—१ ढाकें पर घर डारि डर, कूकरम करै कठोर । मन मे नाहि दया मया, चाहें पर घन चोर ।—घ व अ  
[स० मत] ३ इजाजत, अनुमति, स्वीकृति ।

उ०—१ भूत मन में जाण्यो के पाछो वसूत बमियां तो ठावकी काम वणला । वो उणनं पीवर जावण री मया दे दी ।—फुलवाडी

उ०—२ राजकवर री बात सुणनं मोनल लाज सू माथो नीची कर लियो । होळें सू बोली—म्हारा इण मतीजा बिना म्हें खुद नी जीव सकू जे आप इणनं हरदम म्हारें साथै रै'वण री मया देवी तो म्हें आप री बात कबूल कर सकू ।—फुलवाडी

४ डूट ।

उ०—ठाकरसा मन मे सोच्यो के हजार मोहरां तो घणी बात फगत कोई दस मोहरा निजर करै तो म्हें गधा नें सोनी पंरण री मया दे सकू ।—फुलवाडी

[स० मा, मात्] ५ माता ।

उ०—तू आद मगत हिगळाज माय । मया तू आबड महमाय ।

—रामदांन लाळस

वि०—कृपालु, दयालु, महरवान, तुष्टमान ।

उ०—वेला घुरी रा सीरी छै । जितरें म्हाराज मया छै इतरें थे सरव म्हारा छी । अर जद म्हाराज उपान हुई तद ए तीन्हे म्हारा छै ।—चोवोली

रु० भे०—माया ।

मयाचळ—देखो 'मलयाचळ' (रु भे )

उ०—काया केसगी किसनागरि, जवाघि में जळहरि । अग्रि नाभ मलैतरि, मयाचळ ।—गु रु. व

मयाद—स० स्त्री० [अ० मीआद] १ वक्त, समय, काल ।

२ एक निश्चित अवधि, मुद्दत ।

३ वादा, वचन, करार ।

रु० भे०—मिआद, मियाद, मीयाद ।

मयादी—वि० [अ० मीआदी] १ जिमके लिए कोई अवधि निर्धारित की गई हो ।

२ जिमका प्रभाव एक निश्चित अवधि तक रहता हो ।

रु० भे०—मिआदी, मियादी, मीयादी ।

मयादी-बुखार—स० पु० यो०—एक प्रकार का ज्वर विशेष, आंत्रिक ज्वर ।

रु० भे०—मिआदीबुखार, मियादीबुखार ।

मयाळ, मयाळू—वि० [राज० मया+प्र० ळ] दयालु, कृपालु ।

उ०—मेघ अवैषत पांण चम्पा तू नीर उभाळें । देख पराई-पीड मयाळ दिया पिघाळें ।—मेघ

मयावत—वि० [राज० मया+म० वत्] १ दयावान, कृपालु ।

२ कृपापात्र ।

उ०—मानमिध पट्टे नावमिध टीकी पायो, वडो महाराजा हुवो, रांणी गोइंगे जेटी, जहागीर पातमाह री वार माह वडो मयावत

चाकर हुवो ।—नैणसी

मयू—स० पु० [स० मयू] १ किल्लर । (डि. को )

२ मृग, हिरण ।

मयूर—देखो 'मयूर' (रु भे )

मयुराज—स० पु० [स० मयू+राज] किल्लरराज कुजेर ।

मयूक, मयूख—स० स्त्री० [स० मयूख] १ किरण, रश्मि ।

(अ. मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—अर रज धूम रा वितान मे मारतड रा मयूख अतरधान विद्या री अभ्यास घरण लागा ।—व भा

२ दीप्ति, आभा ।

३ अग्रा । ४ सौन्दर्य ।

रु० भे०—मियूख ।

मयूर—स० पु० [स०] १ मोर । (ना मा, ह ना मा)

२ एक पुष्प विशेष ।

३ मयूर-शिखा नामक क्षुप ।

४ सूर्य शतक का रचयिता कवि ।

५ एक सुविख्यात असुर जो विश्व नामक राजा के रूप में उत्पन्न हुआ था ।

६ सुमेरु पर्वत के अन्तर्गत एक पर्वत ।

७ काव्य छन्द का एक भेद विशेष । (पि प्र )

८ डिगल के वेलिया 'साणोर' छंद का एक भेद जिसके प्रथम द्वाले में १८ लघु व २३ गुरु से ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालो में १८ लघु तथा २२ गुरु से ६२ मात्राएं होती हैं । (पि प्र )

९ एक रंग विशेष का घोड़ा ।

रु० भे०—मयूर, मयोर, मोर ।

मयूरणी—स० पु०—एक छन्द विशेष, जिममे एक रगण, एक जगण फिर एक रगण और अन्त में गुरु होता है ।

मयूरनृत्य—स० पु० [स० मयूरनृत्य] एक प्रकार का नृत्य जिसमे थिरकन अधिक होती है ।

मयूरासन—स० पु० [स०] योग के चौरामी आसनो में से एक ।

वि० वि०—इसमें दोनों हाथों की ठेउनी को नाभि से लगाकर शरीर को मयूर की तरह हाथों पर ऊंचा उठाकर रखा जाता है ।

इससे आलस्य का नाश होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है ।

मयूरिय—स० स्त्री०—घोड़ी ।

उ०—मन माहम सूर मनूर मढें । छत्रपत मयूग्य सोम चढें ।

—पा प्र

मयूरीवीणा—स० पु०—एक प्रकार की वीणा विशेष ।

मयूरेस—स० पु० [स० मयूर+ईश] स्वामी कार्तिकेय ।

मयेळी—स० स्त्री०—१ आकाश में उड़ने वाले पक्षियों की पक्ति ।

२ उक्त पक्ति में उड़ने की क्रिया ।

मयेस्वर—स० पु० [स० मयेस्वर] मय नामक दैत्य का नामान्तर ।

मयै—देखो 'मय' (७) ।

उ०—जद वरसळपुर रा राव करणसिधजी मयै जमीयत के चाकरी में मौजूद थे ।—द. दा

मयोमय—स० पु० [स० महा-महिमन्] शिव, महादेव ।

मयोर—देखो मयूर' (रू भे)

उ०—१ वरसात भर घर परम सुख, वणि उमडि जळवर घावही ।

घण घोर सोर मयोर रस, घण घटा घण घहरावही ।—रा. रू.

उ०—२ घर सोर मयोर किंगोर घरी, कर अग्र कतार बलाह करी ।—पा. प्र

मयो-वि०—१ महीन, दारीक ।

२ देखो 'मईयो' (रू. भे)

रू० भे०—महियो ।

मय्यसामद—स० पु०—श्रीकृष्ण का एक नामान्तर । (अ म)

मरद, मरवक—स० पु० [स०] फूलो का रस, पराग ।

मर—स० पु० [स० मृ] १ मरणा क्रिया, मृत्यु, मोत ।

२ नाश, विनाश ।

३ मृत्युलोक, ससार जगत ।

४ पृथ्वी । ५ ईश्वर ।

उ०—दाद मरणा खूब है, मर माही मिळ जाइ । साहिब का सग छाडि कर, कोन सहे दुख धाइ ।—दादूवाणी

६ देखो 'मुर' (रू भे)

उ०—प्रथम पुवाढई पूतनां सोखी, मर दळीयो मुसाळ । ए हरि (नइ) भागइ दावानळ, दाणव नइ कुळि काळ ।—रुकमणी मगळ

मरक—स० पु० [स० मर्क, मक्] १ शरीर देह । २ प्राण ।

३ बन्दर ।

[स० मृ + अर्प + कन्] ४ एक सक्रामक रोग (एपिडेमिक) ।

५ भेद, रहस्य ।

६ आकर्षण खिचाव ।

७ मन में दबा रहने वाला द्वेष ।

८ मन की उमंग ।

मरकट—स० पु० [स० मर्कट] (स्त्री० मर्कटी) १ वानर, बदर ।

(अ मा, ह ना मा)

उ०—१ अग मरकट मन मीन, नाव नागरी नयण नट । देख हुवे ऐ दीन, अस 'जेहल' वगसै इसा ।—बा दा

उ०—२ पछट वज्र घट कुघट ऊपर । रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट ।

—सू प्र

उ०—३ सूय सिद्धांत वखांणतां जी, सुणता करम विपाक । खिण

इक मन माहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग ।—स कु

२ तावा । (अ मा, ह ना मा)

३ मकड़ी । ४ सारस ।

५ एक प्रकार का विष विशेष ।

रू० भे०—मकड, मकड, मकड, माकड, माकर, मांकुण, माकड, मारकट । अल्पा०—माकडियो, माकडी ।

६ स्त्री समोग का एक आसन ।

७ दोहा छद का एक भेद जिसमें १७ गुरु तथा १४ लघु होते हैं ।

(र ज प्र)

८ छप्पय छन्द का आठवा भेद जिसमें ६३ गुरु, २६ लघु के अनुसार ८६ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं । इसमें ६३ गुरु, २२ लघु के अनुसार ८५ वर्ण व १४८ मात्राएं भी होती हैं ।

९ देखो 'मरकट' ।

मरकटक—स० पु० [स० मर्कटक] १ एक मछली विशेष ।

२ एक अनाज विशेष ।

३ एक दैत्य का नाम ।

४ देखो 'मरकट' (रू भे)

मरकटपाळ—स० पु० [स० मर्कट+पाल] बन्दरो का राजा सुग्रीव ।

मरकटी—स० स्त्री० [स० मर्कटी] १ मादा वानर, वानरी, बदरी ।

२ मकड़ी । (अ मा)

३ छन्द शास्त्र के ६ प्रत्ययो में से अंतिम प्रत्यय । इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छन्द के लघु गुरु कला तथा वर्णों की संख्या का परिज्ञान होता है ।

मरकत—स० पु० [स०] पन्ना । (डि को)

उ०—१ मरकत माणिक्य मुक्ताफल मेघाढबरि मयूर तण्डुल मडाण छत्रदड, अलव ।—व स

उ०—२ को साधू राखै राम धन, गुरु वाइक वचन विचार । गहिला दाद कयो रहै, मरकत हाथ गवार ।—दादूवाणी

रू० भे०—मरगय ।

मरकतमणि, मरकतमिणि, मरकति, मरकतिमणि, मरकतिमिण—स०

स्त्री०—१ पन्ना नामक रत्न । (व स)

२ नग, नगीना । (अ मा)

३ नीलम नामक रत्न । (डि. को)

उ०—किहां किहां मोती ना चठक पूरिया छइ, मरकतमणि मय भाजन, फूलना पगर, दिस दिसइ बहकईं कस्तूनागर इसिउ विमान ।

—व स

मरकव—स० पु० [अ० मकव] १ एक प्रकार का वाहन, सवारी ।

उ०—मरकव यवन देसा वाहण हुवे सो नित सो कोस जावै ।

घोडा सू ही मजवूत हुवै ।—वां दा ख्यात

२ घोडा, अश्व ।

मरकलडइ—मुख मुद्रा बनाना ।

उ०—मानिनी मरकलडइ हसइ, मुख मरिउ तबोलि । तिणइ त्रितय भूयणपति, जाणइ चिणोठी चोल ।—मा का प्र

मरकी—देखो 'मुरकी' (रू भे)



उ०—तदनतर सुस मुसती मरकी सिसि विसद सुहाली, चद्रकिर-  
गोजवल गुणा, फगफगा फीणा, दुग्धवरण दहीयरी, द्रतवरण  
घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसरणहारि नही  
आकुली ।—व स

मरखण—स० पु० [सं० मर्षण] राजा मर्षण जो पुराणो के अनुसार  
मरु का प्रपौत्र था ।

उ०—जे सुत हुवो सधि हत दूजण । मरखण सधि सुतण कुळ  
महण । मरखण सुत सिहसान भूप मणि । भूप विस्वासा द्वे ते सुत  
मणि ।—सू प्र

मरग—देखो 'म्रिग' (रू भे)

उ०—वड वाहा देतो 'मुकनावत', श्री दोहु मरग न खेलं घाळ ।  
चांमरीयाळ घास मुख चीनो, मरगण डाळ न लाभै माळ ।

—रूपी मुतो

मरगड—स० पु० (स्त्री० मरगडी) १ बिना सिर का घड, कवध ।

उ०—करमाळा कड कड पडि सिर दड दड, भाजें मरगड कड  
मडां । खंगरजें खंगड लागें लोहड, घाड उजड पड घूम घडा ।

—गु रू व

२ मृग, हरिण ।

उ०—चढी मरगडी रीछडी, तास-तणा मुख मेलि । माधव ल्यावै  
मुह्मड, करिसि कुतूहल-केलि ।—मा का प्र

रू० भे०—मरगड ।

मरगचो—स० पु०—एक प्रकार का मर्दन ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजानं सिलांमति जिर्कें छोगाळा छवीला  
जुमान हूसनांक फूलां रा छोगा नाखीआं थका फूलां रा  
चोसर पेहरीआ थका अरगचें मरगचें केसरिए कचमैलै वागें कीऐं  
बणें चोऐ अतर फूलेल गला माहि भीना थका घणें अबीर नै गुलाल  
माहै गरकाव हुआ थका भोळी भरिआ थका दिसि दिसि छूटि रही  
छे ।—रा सा सं

मरगछाळा—देखो 'म्रिगछाळा' (रू भे.)

मरगव—स० पु०—हरा रग का वस्त्र विशेष ।

उ०—गरुडसन्नाह उभयखरम मरगव गुच्छ पटउलउ सावपट्ट पट्टहीर  
सूहवी ।—व स

मरगधर—देखो 'म्रिगधर' (रू भे)

मरगय—देखो 'मरकत' (रू भे)

मरगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू भे)

मरगलो, मरगलियो—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू भे)

मरगावू—स० पु०—मुर्गे की जाति का एक पक्षी विशेष, मुर्गावी ।

उ०—नहरू परू चूच जडे चरज बटेर मरगावू कू धर आवतैं हैं ।

—सू प्र

मरगी—देखो 'मिरगी' (रू भे.)

उ०—मरगी नह मदवाडि, गया गुजरात थी नीसरि । गयउ सोग

संताप, घणो हरख हुयउ धरिधरि ।—स. कु

मरगोजो—स० पु०—वसत ऋतु में होने वाला एक प्रकार का उद्भिज  
पदार्थ ।

मरगड—देखो 'मरगड' (रू भे)

उ०—भडीयड भाजि मरगड मूड, रडवड रैण करडक रुड ।

—गु रू. वं.

मरघट—स० पु० [स० मरघट्ट] मुर्दों को जलाने का स्थान, क्षमस्थान भूमि ।

रू० भे०—मड़हट, मडहठ, मरहट, मरहट्ट, मरहट्टय, मरहट्ट,  
मरहठ ।

मरघलो, मरघलियो—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे)

उ०—निरखी निरमल चदलु, ऊगळि अवर-रेसि । मरु चारसि  
मरघला, म म आधू चालेसि ।—मा का प्र

मरड—देखो 'मरोड' (रू. भे)

मरडकणो, मरडकवो—क्रि० सं०—१ मारना, सहार करना ।

उ०—माइया बिहु भुज भार सा हुए मळा । माडा तरुं घाय  
मरडकें मंगळां ।—करममिह व खंगार सगतावत रो गीत

क्रि० अ०—२ तूटना, फटना ।

उ०—विहड खंग ठरडकें मिळें करडकें कवांणा, कगळ गात भर-  
डकें, पार खरडकें सरांणा । रुक धार बरडकें, धाव फरडकें,  
अफारा, खजर बाथ खरडकें, हाड मरडकें हजार ।

—वखतो खिडियो

मरडको—स० पु०—ऐंठन, मरोड ।

२ गुस्सा ।

मरडूसी—स० स्त्री०—एक जगली पोधा ।

रू० भे०—मरडूसी ।

मरच—देखो 'मिरच' (रू. भे)

उ०—त्यानं पकडनं कह्यो—माल बतावो । मरचां री घुईं दीघी ।

—मि. ३

मरछा—देखो 'मुरछा' (रू भे)

मरछागत—देखो 'मुरछागत' (रू भे)

उ०—प्रोहित रै हाथ सिरपाव बीडी दैण लागी । इसै समै पवन  
सू सारी परेच उड गई । ताहरा पुरोहित री खवास री निजर  
मारवणी आई । मारवणी री सीबी देखनं दोनु मुरछागत घाय,  
हेटा पडिया ।—ढो. मा

मरज—स० पु० [अ० मर्ज] १ रोग, बीमारी ।

उ०—चरम रोग चट हरै, हटावै दाद दुखणिमा । खावै खुजली  
मरज, मिटावै खेद थकाणिमा ।—दसदेव

२ बुरी आदत, कुटेव, ऐब, व्यसन ।

मुहा०—मरज पाळणो—कोई व्यसन पकडना, बुरी आदत पड़ना ।

मरजदार—वि० [अ० मर्ज + दार] १ बीमार, रोगी, रुग्ण ।



उ० सूलीदार सुभाव त्रिसूलीदार तैयारी । मरजदार होय मांग,  
आणी कहु दार उधारी ।—ऊ का  
२ बुरी आदत वाला, ऐवी ।

मरजाद, मरजादा—स० स्त्री० [स० मर्यादा] १ गौरव, मान, प्रतिष्ठा,  
इज्जत ।

उ०—१ तीई पाट सलख कुळ तारंग । महि मरजाद खनि-ध्रम  
मारंग ।—रा रू

उ०—२ वेटी मोटधार काटी है, हथणी व्हे जँडी बीदणी है अर  
म्हारा मोटधार सू म्वाडी री मरजादा वणी रै'बैला ।—फुलवाडी

उ०—३ 'सुदर' सुनन सात्रवा सल्ल । मरजाद महा नेठाह-मल्ल ।

—गु. रू व

२ नियम, विधान, विधि, रीति, रम्भ, परम्परा ।

उ०—१ वरणात्म ध्रम मरजाद वेद, भाखा खट नवरम अरथ  
भेद ।—वि स

उ०—२ सावास छै, वडी रजपूती राखी । जमा पुरसां रा थे  
लडका था विमी ही कीवी । जनानी मरजाद मता भांजी ।

—सूरे खीवे काघळोत री वात

उ०—३ वाघ ब्रखम एकठा वहुता, करइ नही मन सका काइ । मेट  
सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ स्याळियो मरजादा सू कै'वण लागी—अवै धने दो वार  
वदगी करणी पडमी अर दो वार आरती करणी पडमी ।

—फुलवाडी

३ हस्ती, हैसियत, भोकात ।

उ०—दुनिया रा सगळा राव-उमराव, राजा-महाराजा अर नवाव-  
पातसाह इणै आगै सात वार पाणी भरै । वारी काई मरजादा  
के वै इम्दुखां री होड कर सकै ।—फुलवाडी

४ मीमा, हद ।

उ०—१ गरजति भीम नाद पूरण, चदाइ पेखि उफणिए । धन  
समद धीर नहु लघत लाज मरजाद ।—गु. रू व

उ०—२ सायर मरजादा जो लोपै, क्षमावत मुनिवर जो कोपै ।

—स्त्रीपाळ रास

उ०—३ सागर मरजादा तजै, अर पच्छिम मे जाय ऊगै जे भाण ।  
जो घरणी-घर घरणी तजै, तो ही राम न लोपे वापरी वाण ।

—गी रा

उ०—४ जब देहळी भीतर, रुखमणीजी आया । तब देहळी साघता  
पग आघो दीयो । तठे जेहडि पग की स्त्रीकस्णजी की नजरि पडी ।  
जे हरि देखतां जु कोई आणुद उपज्यो । तिहि की मरजादा नही ।  
इतरी आणुद अधिक उपज्यो ।—वेलि टी

उ०—५ मरजाद छिली मेटै महण, चवै चौथ मह पुड चलै ।  
सेवगां तणा मेहासद्, साद न करनी समळै ।—चौथ बीडू

५ लाज, शरम ।

६ शान-शोकत ।

उ०—इस्दुखा कह्यो—भूठी आट अर कूडी मरजादा रा नसा मे  
मिनख इण सू ईं घणी इदकी वातां कर सकै ।—फुलवाडी

७ शोभा ।

उ०—कनक-कोट कगुरे कनक, कनक तणा परसाद । रतन-दह  
राजत घजा, निजपुर की मरजाद ।—गजउद्धार

८ महत्व ।

उ०—जे धन-सपत्त में ईं गुण अर मरजादा व्हेती तो अरवा-  
खरबां रा हीरा-मोती अर अणगिण माया ढोवण वाली म्हारी  
वाळद दुनियां मे सबसू सुखी अर मरजादा वाली व्हेती ।

—फुलवाडी

रू० भे०—मरज्यादा, मरयाद, मरयादा, मरियाद, मरियादा, मुर-  
जाद, मुरजादा, अजा, अजाद, अजादा, अजादा, अयाद, अयादा ।

मह०—मरजादो ।

मरजादो—देखो 'मरजादा' (मह, रू भे)

उ०—ऊघो-मुख दस भास गरम मे, असुचि तणी पिंड बाघो रे ।  
नीसरियो जब दुख विसरियो, मूक दीनी मरजादो रे ।

—जयवांगी

मरजियो—वि०—१ मरकर जीने वाला ।

२ जो प्राण छोडने की दशा मे हो, मरणामन्न ।

३ अवमरा ।

म० पु०—ममुद्र से मोती निकालने वाला, गोताखोर ।

उ०—हरीया सरवर तीर, माणिक मोती अति घणा । क्या जांणी  
मुधि कीर, मरजीया सो जाणिसी ।—स्त्रीहरिरामदामजी महाराज

रू० भे०—मरजीयो, मरजीवउ, मरजीवो ।

मरजी—स० स्त्री० [अ० मर्जी] १ इच्छा, चाह, कामना, स्वाहिश ।

उ०—१ इण भांत आपरै समझ समझाया पछे इस्दुखा तो आपरी  
मरजी सू वातां करती रह्यो अर लोग आपरी मरजी सू उण री  
सिखरा करता कोगता अर खमडोळा करता ।—फुलवाडी

उ०—२ राणी चिडी नै कह्यो—नैनी चिडकल आज सू थू म्हारी  
घरम वैन है । म्हारा कमरा में थारी मरजी व्हे जठे ईंडा दे ।

—फुलवाडी

२ खुशी ।

उ०—१ साचो गिणी चाहै कूडो गिणी, म्हारं तो मन मे एक इज  
है । अर म्है उण मन मे जाणू जकी वात ईं दरसावू । थै कूडो  
करने गिणी तो थारी मरजी ।—फुलवाडी

उ०—२ जाट वोत्यो—आज राजी नी व्हेला तो फेर कद व्हेला ।  
पूरा सो रिपिया री खातो वाळियो हू । अवे थारी मोठी मूडो नी  
करावे तो सेठा री मरजी—फुलवाडी

३ स्वीकृति, अनुमति ।

उ०—हमें कबर देस में जावण री मरजी लीवी । तद रतनां इमी  
अरजी कीवी ।—र हमीर

४ आजा, आदेश ।

५ रजामदी ।

मरजीदांन—वि० [अ० मर्जी+स० दान] १ कृपापात्र ।

उ०—दरबार में अवै फगत राजा, राणी, मंत्री, आठ काळा घोडा,  
नै काळो भेख धारिया आठ राजकवर अर रांणी री मरजीदान  
हावडी मरदानो भेख धारिया आपरै घोडा समेत ऊमी ही ।

—फुलवाडी

२ मुखिया, प्रधान, प्रमुख, खाम ।

उ०—इण भात म्होकमसिध देग हसनै चलयो गयो । मूढा सू तो  
कोई बात न कही । पण मरजीदान था जिका मन री नही ।  
म्होकमसिध गढ देखता ही उड पडमी ।

—प्रतापसिध म्होकमसिध री बात

३ विद्वासपात्र ।

मरजीपात्र—देखो 'मरजीदान' ।

मरजीयो, मरजीवड, मरजीवी—देखो 'मरजीयो' (रू भे)

उ०—१ मरजीवड पाणी तणउ, माल्ह उषटनइ खाइ । दुख  
सहणा पुहरा दियण, कत दिसाउरि जाइ ।—ढो मा.

उ०—२ सून्य सरोवर सहज का, तह मरजीवा मन । दादू चुणि  
चुणि लेयगा, भीतर राम रतन ।—दादूवांणी

मरज्यादा—देखो 'मरजादा' (रू भे)

उ०—लोक लाज कुळ रा मरज्यादा, जगमा एकगुं राख्यारी ।

—मीरा

मरट, मरट्ट—स० पु०—१ गर्व, घमंड, अभिमान ।

उ०—१ त्रिहु पवख ऊजळी, कमळि निकळक कळा निधि । मांण  
महातम मरट, अडग सूरतन अवधि ।—गु रू व

उ०—२ प्रसन्न मुखकमळ, उषट स्कध, मासल विपुल वक्षस्थल,  
सरल भुजदड, मदन मुद्रावतार, तरुण तरट्ट, फिरि कदरप तणउ  
मरट्ट नवयोवन विलास, मदन तणउ लघु बांधव, एध विध पुत्र ।

—व स

उ०—३ मन में धरता मरट घरट जिम भूखे घूमै, मेले घर गया  
मऊ भटकि मूआ पर भूमै ।—घ व अ

उ०—४ हसगतइ चालती, गजगतइ माहलती, कामकामनी पालती,  
आखिनइ मटकारती मदन नी वायुरा घालती कस्तूरी अलश्रत भाल  
पट्ट, तरुण तणा भाजइ मरट्ट पूरण चद्र समान वदन ।

—व स

२ गौरव, मर्यादा ।

उ०—१ हलं थाट दखणाद लग टळ तोपा हसत, खसत मद मीढ  
रा नरा खागां । मरट तिणवार राखी विकट मोसरां, सुपेती

चोगरा तण्णी 'मागा' ।—रायत सग्राममिह गगतावन री गीत

उ०—२ अमी समा आछटे, छोह उपटे छछोहा । मिटे घटे नह  
मरट, तहै चहै गळ लोहा ।—प्रतापसिध म्होकमसिध री बात

उ०—३ मनि मेळिय मरट माण, अरिअणु मानट आण । करइ  
तुभ वयाण तुपरिकरी, कवि कहइ ।—व म

१ ऐंठन, गरोड, घुमाव ।

उ०—तिमा ही वागा रा वणाव, तिमाही मूछा रा मरट, तिमा  
ही भुजां रा आमला, तिमा ही पोरमग गाड़, तिमा ही कामवट रा  
अग ' ' ।—रा मा स

४ मगूह, फोज ।

५ फोध में घाग ववला ।

उ०—गो आ रावर अमरनिहजी नू गर्ड, गो सुगत मुवां काळो  
मुरट हुय गयो । हाय पटक दांता मू हथेली नू चटका भरै, कटारी  
सू तकियो फाड नागियो ।—अमरनिह गजमिहोत री बात

रू० भे०—मरट, मुरट ।

मरट—स० पु०—१ काव्य छन्द का एक भेद विशेष । (वि प्र)

२ देखो 'मरट' (रू० भे)

मरट—देखो 'मरोट' (रू० भे)

उ०—१ के जल धन डव करै, उणा थी पूर्ण प्राणा । मरट फरट  
केड गरजि, नेटि उडिजाइ निरामा ।—घ व अ

उ०—२ वयण कमल जीह लागती, मूछि मरट अपार । निरखी  
निरमल नासिका, तेल तण्णी ते घार ।—मा का प्र

मरट्टमी—देखो 'मरट्टमी' (रू० भे)

मरट्टणी, मरट्टवी—देखो 'मरोटणी, मरोटवी' (रू० भे)

उ०—आलस छडी उठीउ, मुछि मरट्टी वेह । चउद लोक कीपा  
जिणइ, चिता करम्यइ तेह ।—मा का प्र.

मरट्टियोडी—देखो 'मरोटियोडी' (रू० भे)

(स्त्री० मरट्टियोडी)

मरण—सं० पु० [स० मरण] १ मरने की क्रिया, भाव या अवस्था,  
मौत, मृत्यु ।

उ०—१ आया दूत मुम्याली आई । साह मरण ची विगत सुराई ।  
—रा. रू.

उ०—२ जनम मरण रांमण राम सधीर ।—ह ना मा

उ०—३ सहू भीम रा भीच आखाड-सिध्व । मरण प्रव्व सपेव  
मगळीक किद्ध ।—गु रू व

उ०—४ छूटा जांमण मरण सू, भव सागर तिरियाह —वा. दा  
२ एक विष विशेष ।

१ माहित्य में एक अनुभाव जो विरही की मरणासन्न अवस्था को  
स्पष्ट करता है ।

रू० भे०—मरण, मरणू मरणो, मरण ।

मरणदिन—स० पु०—किसी के मरने का दिन, वह दिन जिस दिन किसी की मृत्यु हुई हो।

उ०—चदाणणि चीर चमीर न चचळ, कुवर भडार न चित करिया। माहव सभा 'खगार' मरणदिन, सोयण सुणि जी समरिया।—सोढा खगार री गीत

मरणात—स० पु०—मरण पर्यन्त मृत्यु पर्यन्त।

उ०—याकूव लेस प्रथम हाल मे मरणांत भय खैचती, आराम न करती मसक्कत सू एक दम टळती नहीं।—नी प्र

मरणी—स० स्त्री०—मौत, मृत्यु।

उ०—जै जै मरणी जुग मरै, सो मरणी आसांन। हरीया विन मरणी मरै, सो तो कठण जान।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

मरणीक—वि०—जो मरने मारने के लिये उतारू हो, मरने को तैयार।

उ०—१ नै राबळ कने रजपूत मरणीक हुय रह्या छै।—नैणसी

उ०—२ जिकी सुणता ही वळभद्र नू ऊढा उभय रै साथ आगै घलाई कवर दूदा पाछै रहि मरणीक थियो।—व भा

उ०—१ आगै रजपूत कोई फोज माथै मरणीक व्हे जाता तद बीद वणता आगै अपछरा परणीजसां तरै मोडने ऐ कपडा उठै नहीं मो भठा सू पहरने फोज ऊपरै जावता।—वी स टी

उ०—४ अर जीवण री आस व्हे तो मरणीक हुवा सत्य सध अग्रज रै साथ जावण रो न धारो।—व भा

मरण, मरण, मरणो—वि० [स० मृ] १ जो मरने-मारने को उद्यत हो, वीर, बहादुर।

उ०—ढोल सुणता मगळी, मूछा भूह चढत। चवरी ही पहचाणियो, कवरी मरणो कत।—वी स

२ देखो 'मरण' (रू भे)

उ०—१ तीछे हूफी ऊठई करणु अरजुनु पामइ मू करि मरण।

—प प च

उ०—२ आ वात म्हारै सोचण री नी है, मछलिया रै सोचण री है। वाने मरणो आहजी लागे तो वं आपरो जान्ती करै।

—फुलवाडी

उ०—३ मरणो लाभति भागै, दखै खुमाण राण दस सहमी।

असपति उभं जद्ध ए, एह ओसर वदं प्रामेस।—गु रू व

मरणो, मरयो—क्रि० अ० [स० मरण, अग्रियते] १ जीव-जन्तुओ या प्राणियों के शरीर से प्राण शक्ति का निकल जाना आयु की समाप्ति के कारण जीवन का अन्त हो जाना, मृत्यु होना, मरना।

(उ र)

उ०—१ भव दरियाव भयद, लहरा उठै लोभ री। माहै ज्यां मतमद, मनख घणा हूवै मरै।—वा दा

उ०—२ हस मांयला मूढ़ रे, कर हर सर विसराम। मर-मर घर-घर नह फिरे, उर घर गिरघर नाम।—ह र

उ०—३ दाह मरणा खूब है, मर मांही मिळ जाइ। साहिब का

सग छाड कर, कोन सहै दुख आइ।—दादूवाणी

उ०—४ गायत्री य अनु नायक रूघड, जो मरइ सुहड मानसि सूघइ।—सालिसूरि

२ युद्ध में लडकर मरना, वीरगति प्राप्त होना, भूभक्ता। (उ र)

३ भूख या प्यास से व्याकुल होना, त्रस्त होना।

उ०—१ मुड मुड पढतोडी आखडियां मीचै, भूखा मरतोडी मूठ-डिया मीचै।—ऊ का

उ०—२ गोह किरावती बोली—तिरसा मरतोडी री म्हारो तो जीव जावै, थाने आरती री पडी।—फुलवाडी

४ किसी द्वारा मारा जाना, हत्या, कत्ल या सहार किया जाना, नष्ट होना, मिटना।

उ०—१ करइ दाहु विदाहु हियइ घरइ, कहू कीचक हुइ मरत मरइ।—सालिसूरि

५ न्योछावर होना, उत्तमंग होना, वारी जाना।

उ०—केहरि मरू कळाइयां, रहिरज रत्तडियाह। हेकणि हायळ गै हरौ, दत दुहत्या ज्याह।—हा भा

६ किसी के प्रेम या रूप पर आसक्त होना, विकल या विवहल होना।

उ०—कमल ने दलि माथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आकरिउ।—सालिसूरि

७ कुम्हला जाना, मुरझा जाना, सूख जाना। (वनस्पति आदि)

८ अत्यधिक कष्ट, दुख या विपत्ति के कारण मृतक ममान होना।

(उ र)

९ मरणासन्न होना, मृत प्राय होना, मृतक की सी दशा में होना।

उ०—म्है तो सगळा मरिया समान हा। मरियोडी लास नै किणी वात री अनुभव व्हे तो म्हाने व्हे।—फुलवाडी

१० बोझ या भार सहन किया जाना।

उ०—सोनो-रूपो पहरती, मोत्या मरती भार। सो कासी रै चौवटे हरचद वेची नार।—अज्ञात

११ किसी बात या कार्य के प्रति अत्यन्त चिंतित होना, अत्यधिक चिन्ता करना।

१२ किसी काय को पूरा करने में अत्यधिक श्रम करना, पचना।

१३ किसी वस्तु के गुण समाप्त होना, अप्रयोज्य होना।

१४ इच्छा, उत्साह, वेग आदि का दबना, मद होना।

ज्यू—भूख मरणी, मन मरणी।

१५ खेल के अन्दर किसी गोटी या खिलाडी का पराजित होकर बाहर होना, पराजित होना, परास्त होना।

१६ डाह या जलन होना।

१७ पेठना, समाना, विलीन होना।

ज्यू—भीत में पाणी मरै।

मरणहार, हारो (हारी), मरणियो—वि०।

मरवाडणो, मरवाडवो, मरवाणो, मरवावो, मरवावणो, मरवाववो,  
मराडणो, मराडवो, मराणो, मरावो, मरावणो, मराववो

—प्रे० रू० ।

मरिओडो, मरियोडो, मरचोडो—भू० का० कृ० ।

मरीजणो, मरीजवो—भाव वा० ।

मारणो, मारवो—सक रू० ।

मरण—देखो 'मरण' (रू भे )

उ०—तिम माघव नइ मानिनी, मन सुधो माराइ मरण । आई  
अम्हणइ आविज्यो, चीति तुम्हारा चरण ।—मा का प्र

मरतग—स० पु०—मरण, गमी ।

रू० भे०—मरतक ।

मरत—स० पु० [स० मर्त ] १ मानव, मनुष्य, आदमी ।

२ पृथ्वी । ३ मृत्यु-लोक ।

४ देखो 'मृत्यु' (रू भे )

५ देखो 'मरत्य' (रू भे )

मरतक—देखो 'मरतग' (रू भे )

मरतकाळ, मरतगाळ—स० पु० यो० [स० मृत्यु+काल] मृत्यु का समय,  
अन्तिम समय ।

मरतव—स० पु० [अ० मर्तव ] १ पद, दर्जा, श्रेणी ।

२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान । ३ वर्ग ।

रू० भे०—मुरतव ।

अल्पा०—मरतवो, मुरतवो ।

मरतवान—स० पु०—१ रोगनी वर्तन जिसमें आचार, मुरब्बा आदि  
रखा जाता है ।

२ अमृतवान ।

मरतवा—स० पु० [अ० मर्तव ] वार, दफा, पारी ।

मरतवो—देखो 'मरतव' (अल्पा, रू भे )

उ०—१ याकूब दीलत री चाह सू इसी खम करी ती किसं मर-  
तवै पहीचियो ।—नी प्र.

उ०—२ म्हारो हठ महनत इण में छै, जे आप नू इसं मरतवै  
पहुचाऊ जिण कोई म्हारै सरीक न होय ।—नी प्र

उ०—३ मन नू दुख घावां नू खँचणै वास्ते मोटी ठोर मरतवा रै  
पहोच करावे ।—नी प्र

मरतलोक—देखो 'अत्युलोक' (रू भे )

उ०—अन्नादिक सु पितर छै तिगि को मरतलोक प्री लागे ।

—वेलि टी

मरतुजय—देखो 'अत्युजय' (रू भे )

मरतु—देखो 'अत्यु' (रू भे )

मरतुजाअली—स० स्त्री०—हजरत अली की एक उपाधि ।

उ०—तिस बखत परवरदिगार कू सिजदा करि महमद मरतुजाअली

को याद करि दाहिणै दसत सेती समसेर तोल हुकम फुरमाया ।

—सू. प्र

मरद—स० पु० [स० मर्त्य] शरीर, बदन ।

वि० [स० मर्त्य] मरणशील, मरणासन्न ।

मरत्यलोक—देखो 'अत्युलोक' (रू भे )

मरदग—देखो 'मरिदग' (रू भे )

उ०—पाय गयद तूटा घण पावै । जेणि करं मरदग वजावै ।

—सू. प्र.

मरद—स० पु० [फा० मर्द] १ पुरुष, नर ।

उ०—१ माया माणजो रे मत चूकजो मरदां, जो वो हलियो  
जाय जहां । राखो घर ऊडी मत राजा दान करी आखैं सिवदान ।

—महाराज सिवदानसिंह (बागीर)

उ०—२ मरद रा भेख मे आ नवी राणी री खास डावडी ही ।

—फुलवाडी

२ पति, खाविद ।

३ मंत्री । (हि नां. मा )

४ वीर पुरुष ।

उ०—पांच गोळा'र दोय सेल लागं पछै, 'सदा' री सेर मरद,  
'अचळ' हर पाघरी 'कुसळ' आयी ।—पहाडखा आढो

५ मनुष्य जाति या वर्ग ।

उ०—१ था मरदा री जात ही निकामी है ।—फुलवाडी

उ०—२ मरद तजग सू सोगुणो दुरग तजण रोग दोख । मरद  
दुरग जाता मरै, मिळै जिकां नू मोख ।—बा दा

२ साहसी, हिम्मतवर ।

३ पुरुष का, पुरुष सबधी ।

उ०—मरद पवसाख भूषण कडा मूदडी, कठ डोरो मुरति लवंग  
कांता ।—मे म

वि०—१ बल पीरुष वाला, शूर वीर ।

[स० मर्द] ४ कुचलने वाला नष्ट करने वाला ।

५ पीसने वाला, घोटने वाला ।

रू० भे०—मरद, मरुद ।

मरदक—वि० [स० मर्दक] १ मर्दन करने वाला । २ चवाने वाला ।

रू० भे०—मरदक ।

मरदगी—देखो 'मरदानगी' (रू. भे )

उ०—अरजन मरतं-मरतं मरदगी करी, आखी वातां कह नाखी  
खरी खरी । थाणंदार संना-मैनी सू वियान लिया, चाढ्या ।

—दसदोख

मरदण—देखो 'मरदन' (रू भे )

उ०—काम पड्या पावै कसठ, से अबळा रे सग । सुज मरदण  
खडण सहे, ऐ मुक्त वाळा अंग ।—र हमीर

मरदणो, मरदवो—क्रि० स० [स० मदन] १ किसी वस्तु या शरीर के  
किसी अंग को हाथो या किसी अंग द्वारा मसलना, रगड़ना ।

२ मालिश करना, लेपन करना, मलना ।

३ दबाव डालना, दबाना ।

४ सन्तापित करना, पीड़ित करना ।

५ पीसना, घोंटना ।

६ नाश करना, उजाड़ना, कुचलना, रौंदना ।

मरदनहार, हारो (हारी), मरदणियो—वि० ।

मरदिओडो, मरदियोडो, मरद्योडो—भू० का० कृ० ।

मरदीजणो, मरदीजवो—कर्म वा० ।

मरदन-स० पु० [स० मर्दन] १ मसलने या रगड़ने की क्रिया या भाव ।

२ मालिश, लेपन, उबटन ।

उ०—१ बागां माही सैलां करै । गुलावजळ री तूगां सू सापडै । छिहकाव गुलाव री हुवै । केसर-कस्तुरी, भीमसेनो कपूर री मरदन हुवै-तिण री कीच मचियो रहै ।—जलाल वूवना री बात

उ०—२ कीयो मरदन घण सघळइ अग । पचजटा छइ सीरइ भूयग ।—वी दे

उ०—३ वहारण वैठी पगा हाथ दीयो । घडी दिन च्यार चढता जागीयो । सपाहें री पाण्णी, मरदन री तेल हाजर कीयो ।

—कुबरसी सांखला री वारता

३ सन्तापन, उत्पीडन ।

४ दबाव । ५ विनाश, उजाड़ ।

वि०—कुचलने वाला, पीसने वाला नाश करने वाला ।

रू० भे०—मरदण, मरदण, मरदन ।

मरदन काळी-स० पु० यो० [स० मर्दन+कलिय] १ ईश्वर ।

२ श्रीकृष्ण ।

रू० भे०—मरदन-काळी ।

मरदनमेघ-स० पु० यो०—श्रीकृष्ण । (अ मा)

मरदनी [फा० मुर्दनी] कमजोर, उदासी, श्रीहीनता ।

उ०—समझाया—जे आ किही नू जाहर मता करज्यो नहीं तो लोग आपणी मरदनी नहीं बखाणसै ।—नापै सांखलै री वारता

मरदनीयो-वि०—मर्दन करने वाला, मालिश करने वाला ।

स० पु०—१ मालिश करने वाली जाति या वर्ग का व्यक्ति ।

उ०—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सुद्र चिह्न वरण सभाली । कदोई कुमार कठी, मरदनीया माली ।—घ व अ

मरदमसुमारी—देखो 'मरदुमसुमारी' (रू भे)

मरदमी-स० स्त्री० [फा० मर्दमी] १ बल, पौरुष, वीरता, साहस ।

उ०—१ पछै बखत पाय अर खुरम निकळियो सू गोडां री मरदमी सू कछवा सडा खन आया गोरखर चढ़िया आया ।—द दा

उ०—२ अफरासीयान तूरान री बडो बादसाह सी आपरा उमरावां नू कही रूप, सरीर, मरदमी, साज, सांमान इण रे ऊपर भूली मतां ।—नी प्र

२ पुरुषत्व के गुण, पुसत्व, काम-शक्ति ।

उ०—जद वैद्य नाडो देखनै कही, दूजो ती इलाज थाहर कोई लागे नहीं । अर मच्छो री उदक काढ़े फाड़ै देसू । जणीं सू थाहर मरदमी आवसी ।—साहूकार री बात

३ मानवता, इन्सानियत ।

४ सुशीलता, शालीनता ।

वि०—बलशाली, पुरुषार्थी, साहसी ।

उ०—जगत इण आणद, आच्छादित, वधे फळीजे नीम ज्यू । सम-जीवी मतवाळा वणै, माण मरदमी भीम ज्यू ।—दसदेव

रू० भे०—मरदुमी ।

मरदल-स० पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपटह अदग करहि मरदल वेणु तलिमताल कसाल भल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि मरहमभ हडुक्क डक्क बुक्क प्रवक काहल काहली बरगा प्रभ्रति वादित्र ।—व स

मरदानगी-स० स्त्री० [फा० मर्दानगी] १ शूरता, वीरता, बहादुरी ।

उ०—जो धीरज मे पूरा छै तो उणा नू मरदानगी मे पूरी भरोसी करो ।—नी प्र

रू० भे०—मरदानी ।

उ०—ताहरा राजा री कुवरी महळ में गई । जाइ आगला कपडा उतारि मरदानगी कपडा पहिर मुहरा सु तोसदान भर छोकरी एक लेनै पाइगह गई ।—चोबोली

रू० भे०—मरदगी, मरदाई ।

मरदानी—देखो 'मरदानगी' (रू भे)

मरदानी-डोडी मरदानीडोडी-स० स्त्री० यो०—राज्य प्रासादो मे पुरुषो के लिए प्रवेश द्वार ।

उ०—मरदानी डोडी कनै सामी जनांनी डोडी री पोळ थी । हमार चक्रसेवारी डोडी बाजै ।—मारवाड री रूपात

रू० भे०—मरदानीडोडी ।

मरदानू, मरदानी-वि० [फा० मर्दान] (स्त्री० मरदानी) १ मर्दों का, मर्दों सम्बन्धी, मर्दों जैसा, मर्दों की तरह ।

उ०—१ ताहरां जिको सुपियारदे री कागळ ल्यायो हुतो, तै साथे मरदानी पोसाख मेलही सुपियारदे नू ।—नैणसी

उ०—२ सोई खुद आज दिन सांप्रत, स्त्रीदुरगा सकळाई । मूरत अदुल भेल मरदानू, सूरत हृदय समाई ।—मे म

उ०—३ कवरां रै देखा-देखी चिहो अर चिहो ई चुगो पाणी नी करियो । मरदानो भेल करिया अकेली डावडी पडूदी रा लाहू गटकावती ही अर दीवडी मे भरियोडो ठाडो पाणी पीवती ही ।

—फुलवाडी

२ बल-पौरुष वाला, शूर-वीर, साहसी ।

उ०—१ तद सागंजी कयो जी इण नू खाटरी मत देखो । म्हा भेळा घणा रोळा किया है, सू आदमी बडो मरदानो है ।—द दा

उ०—२ लालचद कहै साहि अलावदी रे, बोलाया बड वीर । सक  
हुई सिंहलद्वीप न ते, जे मरदाना वीर ।—प च. चौ  
स० पु०—वीरता, साहस ।

उ०—साहि कहै सुमटा भणी, होज्यो हिवै हुसीयारी रे । मरदानो  
मरदा तणी, देखेंगे इण वारी रे ।—प च चौ

मरदा-मरद-वि०—१ मर्दों मे मर्द, नर मे श्रेष्ठ ।

उ०—ऊभो दिली सीस उसासै, 'जगा' तणी कसीया जरद । महलां  
तणा मरद अन महपत, मेवाडी मरदा-मरद ।—जोगीदास कवारियो  
२ अद्वितीय थोडा, वीरो मे वीर, श्रेष्ठ वीर ।

उ०—माण हीण सुपह भरें थत मामलत, पाण कुण करे महाराण  
पाजा । मोसरां ताण महाराज मरदांमरद, रचें घमसाण जमराज  
राजा ।—जवानजी आढो

३ वीर, बहादुर, थोडा ।

उ०—मलफ चढे मरदा-मरद, विकट जगां लग वग । पग पग जय  
कीधी 'पतें', एलिम जनरल अग ।—जुगतीदान देवी

स० पु०—अर्जुन का एक नामान्तर । (ह नां. मा )

क्रि० वि०—जवरदस्ती, बलात्, येन-केन प्रकारेण ।

रू० भे०—मरदा-मरद ।

मरदांमरदो, मरदा-मरदो-स० स्त्री०—मरदा-मरद होने की दशा,  
अवस्था या भाव ।

मरदाई—देखो 'मरदानो' ।

उ०—सिंघ रे साभी पाणी पीयने कोरा निकळ जावे तो मरदाई है ।

—फुलवाडी

मरदियोडो-भू० का० कृ०—१ मसला हुआ, रगडा हुआ (शरीर या  
अंग) । २ मालिश किया हुआ, लेपन किया हुआ, मला हुआ  
३ दबाव डाला हुआ, दबाया हुआ । ४ सन्तापित या पीडित किया  
हुआ ५ पीसा हुआ, घोटा हुआ ६ नष्ट किया हुआ, उजाडा  
हुआ, कुचला हुआ, रौंदा हुआ  
(स्त्री० मरदियोडी)

मरदुम-सं० पु० [फा० मर्दुम] मनुष्य, इंसान ।

मरदुम-सुमारी-स० स्त्री० यो० [फा०] जनगणना ।

रू० भे०—मरदमसुमारी ।

मरदुमो—देखो मरदमो' (रू भे )

मरदूद-वि० [फा० मर्दूद] तिरस्कृत, बहिष्कृत, नीच ।

मरदू—देखो 'मरद' (रू भे )

उ०—१ दाढ गरदा भारिया, अग जरदा दूण । रूप मरदां मीर  
सव, लक करदां तूण ।—रा रू

उ०—२ मरोडै गजा कथ थोडै मरद । रहचै जिसा सिंघ मुक्की  
रवद ।—वचनिका

उ०—३ सुरत तु हीज तु हीज सबद, मरदां मादा बीच मरद ।

—ह र

उ०—४ सेलाळ जरद मरद सकाज । वेधै वज्र माखर पागुर बाज ।

—सू. प्र

मरदूक—देखो 'मरदक' (रू भे )

मरदूण, मरदून—देखो 'मरदन' (रू भे )

उ०—नमो मुर-मेघ मरदूण मल्ल । कसामुर फाळ सगामुर मल्ल ।

—ह र

मरदूनकाळी—देखो 'मरदन-काळी' (रू भे ) (ना मा )

मरदूल-स० पु०—एक वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपटह अदग करडि मरदूल वेणु तलमताल कसाल मल्लरि  
भेरि मदन भेरि जय भेरि भरहभम हहुक्क ठक्क चुक्क त्रक्क काहल  
काहली वरगां प्रभ्रति वादित्र ।—व स

मरदा-मरदू—देखो 'मरदामरद' (रू भे )

उ०—जोधां राकसे जरद मूगळा उतारै मद्, बाहाळी खाटै विरद  
मरदा-मरद ।—ल पि

मरदित-वि०—१ ममला हुआ ।

२ नष्ट किया हुआ । ३ पीसा हुआ ।

मरपूरी-यि० मरकर के भी कार्य को पूरा करना ।

उ०—वीर धत्री कहै है कै तो मार दुममणा नैं और गऊंवा ले  
आवां मो लुगायीया दही रा माट विनोवसी कै मरपूरा देमा नी  
गऊवां ऊपरा सू देदे पग और घट सरीर नदती जामी ।—बी स टी

मरम-स० पु० [स० मर्म] १ सार तत्त्व, यथार्थ, सत्य ।

उ०—भुज भिडज रूप सपताम भाति, कवि तेण लखण गुण वरण  
क्राति । सत उकति जेण पडित प्रमाण, जुधि जंत मरम कम प्रथम  
जाण ।—रा रू

२ आशय, अर्थ, भाव ।

उ०—मासा संस्कृत प्राकृत भणता, मूक भारती ए मरम । रस  
दायिनी सुदरी रमता, सेज अतरिख भूमि सम ।—वेलि  
३ रहस्य, भेद ।

उ०—१ मत्री सू आलोचें वडठा, मूळ मरम सह जाणो । हखमईयो  
राजा ऊवेखई, तुरी अमोलिक आणो ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ म्है घणा दिना तक इण मरम नैं मन में छिपायां  
राखियो ।—फुलवाडी

४ कपट, छल । (प्र मा )

५ शरीर का स्थान या नाजुक भाग, जहां चोट लगने से अत्यन्त  
वेदना होती है ।

उ०—आवतो आवतो रांणा री वैहल नजीक आयो, खुरी घोडी  
करने जेमल रैं रतन सांखलै वरछी दोय २ छाती माहै लगाई, मरम  
री लागी राणो मुबो ।—नैणसी

६ सधि स्थान । ७ हृदय ।

८ युद्ध का एक वाद्य विशेष ।



उ०—हक्का १, इक्का २, मरम ३, काहल ४, पुप्फभेर भांगुग ५, पडहो ६, जुग ७, सख ८, करड ९, पागय १०, मुदल ११, कसाल १२, रणनदी १३, इति रणनदी ।—व स

वि०—छुपा हुआ, गुप्त, रहस्यमय ।

उ०—सेस कूरम जितै समरम, इळा सुर घम निगम आगम । सुखि तपो अण भरम प्रम सम, मरम निघ जिम 'माल' ।—रा रू

रू० भे०—मम्म, मरमु, मरमो, मरम्म ।

मरमक—एक प्रकार का आभूषण । (व स)

मरमग, मरमग्य—वि० [स मर्मज्ञ] १ वह जो किसी बात का गूढ़ रहस्य जानता हो, तत्त्वज्ञ ।

२ रहस्य या भेद जानने वाला ।

स० पु०—१ प्रकाण्ड-पण्डित । २ विद्वान ।

मरमचर—स० पु० [स० मर्म+चर] हृदय । (डि को)

मरमत—स० पु०—१ गर्व, अभिमान ।

उ०—लड खडती पडती लालरती, मेल माण सिर सवर मरती । गी 'अममल' अगै पड गळिया, मरमत मूक मरदा मिलिया ।

—द्वारकादास दधवाडियो

२ बल, पौरुष, शक्ति ।

मरमत—देखो 'मरम्मत' (रू भे)

उ०—वगत,र, झिलम, जिरह-सूथण, जिरै जूता, घोडा री पाखरा काढजै छै सुवारजै छै । मनग्यानि मारी तेदड कर रह्यो छै । सखरा रजपूत तयार कीजै छै । चिलकता रा तह सभाळजै छै मरमत हुवै छै ।—कुवर्गसी साखला री वारता

मरमपीडा—स० स्त्री०—१ आन्तरिक पीडा ।

२ मानसिक क्लेश ।

मरमप्रहार—स० पु०—शरीर के मर्मस्थल पर किया जाने वाला प्रहार, गहरी चोट ।

मरममोख—स० पु०—चोर । (ह ना मा)

मरमर—स० स्त्री० [स० मर्मर] १ पत्ती की हल्की खडकन ।

२ वस्तुओं की परस्पर होने वाली हल्की रगडन ।

३ उक्त रगडन या खडकन में होने वाली ध्वनि । (उ र)

[फा० मर्मर] ४ एक प्रकार का सफेग पत्थर ।

मरमराणो, मरमरावो—क्रि० अ०—१ परस्पर रगडन का शब्द होना,

२ बौद्ध या दवाव के कारण वृक्ष की टहली का मरमर शब्द करते हुए झुकना ।

मरमरी—स० स्त्री०—१ वेसन की पकोडी या सेव । (मेवाड)

२ मरने की इच्छा ।

ज्यू—तनै काई मरमरी आ री' है ।

१ दूध या छाछ की ऊपरी सतह पर घी का छोटी छोटी गांठों के रूप में तैर आना ।

रू० भे०—मिरमरी ।

मरमस्थल, मरमस्थान—स० पु० [स० मर्मस्थल, मर्मस्थान] शरीर का वह नाजुक स्थान या संधिस्थल जहां चोट लगने से अत्यन्त दर्द होता है ।

मरमी—वि०—१ मर्म का, मर्म सम्बन्धी ।

२ मर्म जानने वाला ।

मरमीक—देखो 'मरमग्य' ।

उ०—पारवती अवतार प्रगटसी कहियउ तरड ब्रह्म मरमीक ।

—महादेव पारवती री वेलि

मरमु, मरमो, मरम्म—देखो 'मरम' (रू भे)

उ०—१ केवि दिखाडइ खाढा सरमु, केवि तुरगम जाणइ मरमु । चक्र छुरी किवि सावल भालइ, किवि हथियार पडता झालइ ।

—प प च

उ०—२ दुरगति पडता प्राणिया के, राखइ स्त्रीजिन घरम । कुटव सहू को कारियु रे, मति भूलउ भव मरमो रे ।—म कु

मरम्मत—स० स्त्री० [फा०] १ टूटी हुई या क्षत विक्षत वस्तु को सुधारने व अच्छी स्थिति में लाने का कार्य, जीर्णोद्धार । (रिपेयर्स)

२ मारपीट, दण्ड ।

रू० भे०—मरमत ।

मरयाद, मरयादा—देखो 'मरजाद' (रू भे)

उ०—१ मेरु-गिरि मरयादा छे छती रे, सक दक्षिण दिस अघिपती ।—जयवाणी

उ०—२ न करीजै जो नीक, लोक नहु सायर लघै । मरयादा भेटता सदा टालीजै सघै ।—घ व ग्र

उ०—३ वे मरयादा मित नही ऐसे किये अपार । मैं अपराधी वापजी, मेरे तुमहि एक आघार ।—दादूबाणी

उ०—४ सूरिज ऊगै पच्छिमे, मूकै समुद मरयाद रावत । ध्रुव चलै पिण न चलइ, सापुरिसा रा साद रावत ।—प च ची

मरवट—देखो 'मरोट, मरोठ' (रू भे)

उ०—खड पूगळ खळ भळै, कोट मरवटा टळवकै । देरावर डिगमगै, लसेवरि हा ही सकै ।—नैणसी

मरवण—स० स्त्री०—अर्धांगिनी, पत्नी के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द ।

उ०—१ आप चालिया चाकरी (जी) ढोला, मरवण ने लीजी माथ, जवाइया री एळची ।—लो गी

उ०—२ ऐ ती देराण्या-जेठाण्या जाया हालरा । मरवण थे कांई जायो है धीव ।—लो गी

२ एक राजस्थानी लोक गीत ।

३ देखो 'मारवणी' (रू भे)

मरवो—स० पु० [स० मरवक] १ वन तुलसी या ववरी जाति का एक पौधा, जो श्रीपथि के काम आता है । इसे वागो में भी लगाया जाता है ।



उ०—१ कागण फोगा महक केवडां मरवा वाली । वरसाळी  
वगाळ सस्य स्यामळ हरियाळी ।—दसदेव

उ०—२ चपा, मरवा, मोगरा, जुही जाये केतकी छै ।  
—बगसीराम प्रोहित री बात

२ एक राजस्थानी लोक गीत ।

३ दोहे छन्द का एक भेद जिसमे ७ गुरु व ३४ लघु होते हैं ।

(ल. पि )

रू० भे०—मरुघो, मरुवठ, मरुवो, मरुघठ, मरुवो ।

मरसियो—स० पु० [अ० मसिय ] किसी मृत व्यक्ति के शोक में बनाया  
हुआ पद्य ।

मरहट—देखो 'मरघट' (रू भे )

उ०—तात मात वनिता सुत वधु, जतन जीवतां करही रे । सूवां  
जाळि वालि घरि आवै, ता मरहट तें डरही रे ।—ह पु वा  
२ देखो 'मरहठ' (रू भे )

मरहटी—देखो 'मरहठी' (रू भे )

मरहटी—स० पु०—१ उनतीम मात्राओं का एक छन्द विशेष जिसमे १०,  
आठ और ११ पर विश्राम होता है तथा अत मे एक गुरु व एक  
लघु होता है ।

रू० भे०—मरहट्टी मरहट्टी ।

२ देखो 'मरहठी' (रू भे )

मरहट्ट, मरहट्टय—१ देखो 'मरहठ' (रू भे )

उ०—१ ले लच्छी मरहट्ट री, गूजर खड अघीस । आया महालच्छी  
चरण, सीग नमायी सीस ।—वां दा

उ०—२ जोगण चीण हूण मरहट्टय कोकय डुविलय कुलखय खर-  
मुख तुरगमुख मिठमुख हयकरण गजकरण प्रभ्रति अनारय देस  
मनुस्य ।—व स

२ देखो 'मरहठी' (मह, रू भे )

उ०—तद तीठी 'अभपति' विकट तीर, दळ दिखण भाग मरहट्ट  
दीर । दीन हो आसरीवाद दीघ, ककर तव वाजीराव कीघ ।

—वि स

३ देखो मरघट' (रू भे )

मरहट्टी—देखो 'मरहठी' (रू भे )

मरहट्टी—१ देखो 'मरहठी' (रू भे )

उ०—पद प्रतमत गुणसीस पडि, अत गुरु लघु होय । राघव जस  
जिण भक्त रटां, कहै मरहट्टा सोय —र ज. प्र

२ देखो 'मरहठी' (रू भे )

मरहट्ट—१ देखो 'मरहठ' (रू भे )

२ देखो 'मरघट' (रू भे )

मरहट्टी—देखो 'मरहठी' (रू भे )

उ०—मरहट्टी गादहि किसिउ कुकुणउ वामइ, मालवी घाछ

किसिउ मारुयं मासइ, गोबर कीडउ किसिउ भ्रमर जिम रणभ-  
णइ ।—व स

मरहट्टी—१ देखो 'मरहठी' (रू भे )

२ देखो 'मरहठी' (रू भे )

मरहठ—स० पु० [प्रा० मरहट्ट, स० महाराष्ट्र] १ दक्षिण भारत का एक  
प्रदेश, महाराष्ट्र । (उ. र )

उ०—कुकण कनवज नइ कलहटी, मरहठ नइ मुलवारी । स्यधळ  
सेतवध नो राजा, ते सवि लीया हकारी ।—रुकमणी मगळ

रू० भे०—मरहट, मरहट्ट, मरहट्टय, मरहट्ट, मारहट, मारहट्ट ।

२ देखो 'मरघट' (रू भे )

मरहठी—वि०—महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र सम्बन्धी ।

स० स्त्री०—महाराष्ट्र की भाषा, मराठी ।

रू० भे०—मरहटी, मरहट्टी, मरहट्टी मराठी, मराठी, मारहटी,  
मारहट्टी, मारहठी ।

मरहठी—स० पु०—महाराष्ट्र प्रदेश का निवासी, मराठा ।

रू० भे०—मडहट, मडेठी, मरहटी, मरहट्टी मरहट्टी, मराठी, मरेटी,  
मरेठी, मारहटी, मारहट्टी, मारहठी ।

मह०—मरहट्ट, मरहट्टय, मारहट, मारहट्ट ।

मरहम—देखो 'मलम' (रू भे )

मराडणो, मराडवो—देखो 'मराणी, मरावो' (रू. भे )

उ०—१ ताहरा राखायत रजपूता नू कहै—हू पूछू अर मामोजी  
मो ऊपर रीस कर मोनू मराडें तो कुण छोडावै ?—नैणसी

उ०—२ मुसा दादरा हूत नागा मराडें । खुरां कीडिया हूत हाथो  
खुदाडे ।—सू प्र

उ०—३ लोक आघा पाछ्या होइ गया । आपरा हीज घोडा रजपूत  
मराडि गया ।—द वि

मराडणहार, हारो (हारी), मराडणियो—वि० ।

मराडिओडो मराडिओडो, मराडघोडो—भू० का० क० ।

मराडोजणो, मराडोजवो—कर्म वा० ।

मराडिओडो—देखो 'मरायोडो' (रू भे )

(स्त्री० मराडिओडो)

म'राज—देखो 'महाराज' (रू भे )

मराट—वि०—१ मारने वाला, मर्दन करने वाला, नष्ट व विध्वंस करने  
वाला ।

उ०—१ माभी मोह मराट, 'पातल' गण प्रवाड-मल । दुजडां  
किय द्रहवाट, दळ मंगळ दाणव तणा ।—सूरायच टापरियो

२ जबरदस्त, जोरदार ।

३ शक्तिशाली, बलवान ।

४ सस्त, हट, मजबूत ।

५ अधिक, बहुत ।

मराठी, मराठी—देखो मरहठी' (रू भे)

मराठी—देखो 'मरहठी' (रू भे)

मराणी, मराबी—क्रि० स० [“मरणो” क्रिया का प्रे० रू०] १ किसी मनुष्य, जीव या प्राणी को मारने के लिए प्रेरित करना, मरवाना, हत्या करना, बघ करना ।

२ युद्ध में झुकने या वीर गति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना, उकसाना ।

३ भूख या प्यास से पीड़ित करवाना, आस दिलाना ।

४ पिटवाना कष्ट, पीछा या दुख दिलवाना ।

५ पराजित या परास्त कराना ।

६ गुदा मैथुन या सभोग करवाना । (बाजारू)

मराणहार, हारी (हारी), मराणियो—वि० ।

मरायोडो—भू० का० कृ० ।

मराईजणो, मराईजवो—कर्म वा० ।

मराडणो, मराडवो, मरावणो, मराववो—रू० भे० ।

मरातव, मरातिव—स० पु० [अ० मरतव] १ अधिकार युक्त पद ।

उ०—१ मलिक तरा जूझ्या मरातव, माहि भला झुझार । दळ जोयता दीस आयम्यउ, तुहि न आवइ पार ।—का दे प्र

उ०—२ पाणी घान चलावउ साथइ, सोवति वाहु अपार । आप आपणा मरातव लेज्यो, माहि भला झुझार ।—का दे प्र  
२ दर्जा, श्रेणी ।

३ क्रमश आने वाली अवस्थाए ।

४ तह पृष्ठ । ५ मकान । ६ मजिल ।

७ ध्वजा, पताका झंडा ।

८ प्रतिष्ठा, इज्जत ।

यो०—माहि-मरातव ।

मरायोडो—भू० का० कृ०—१ मारने के लिए प्रेरित किया हुआ, हत्या या बघ कराया हुआ, मरवाया हुआ । २ युद्ध में झुकने या वीर गति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ । ३ भूख या प्यास से पीड़ित करवाया हुआ, आस दिलाया हुआ । ४ पिटवाया हुआ, कष्ट, पीछा या दुख दिलाया हुआ । ५ परास्त या पराजित करवाया हुआ । ६ गुदा मैथुन कराया हुआ (बाजारू) (स्त्री० मरायोडी)

मराळ, मराल—स० पु० [स० मराल] (स्त्री० मरालि, मराली) १ हम ।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—१ कीर कवळ भर कोकिला, अहि गज सिंह मराळ । उदै-राज देख्या इता, लूवत एकहि डाळ ।—उदयराज

उ०—२ देख हवाल भाल देखी, चाल मराळ चलाई । मोखमपुरे 'बिसन' हुय मादो, पूरण अडचल पाई ।—मे म

उ०—३ डोभूलक मराळि गय, पिक सर एहि वाणि । डोला एही मारई, जेहा हक निर्वाणि ।—डो मा

२ वतख की जाति का एक जलचर पक्षी, कारण्डव ।

३ घोड़ा, अश्व ।

४ हाथी । ५ बादल, मेघ ।

६ अजन, सुरमा ।

७ अन्तर के वृक्षों का कुंज या वाग ।

८ दोहा छंद का ६ वां भेद जिसमें १४ गुरु व २० लघु के अनुसार अठतालीस मात्राए होती हैं ।

वि०—१ कोमल, चिकना ।

२ छली, कपटी, बदमाश ।

रू० भे०—मयराळ, मयराळ ।

मरावणो, मराववो—देखो मराणो, मराबो' (रू भे) (उ र)

मरावणहार, हारी (हारी), मरावणियो—वि० ।

मराविओडो, मरावियोडो, मराव्योडो—भू० का० कृ० ।

मरावीजणो, मरावीजवो—कर्म वा० ।

मरावियोडो—देखो 'मरायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मरावियोडी)

मरिच—१ देखो 'मरीचि' (रू भे)

२ देखो 'मिरच' (रू भे)

उ०—१ तदनतर वडा आव्या, घणइ तेलइ सीता, घोलि भीना, ऊपरि घागलु वादु, जांणीइ किरि अन्नतनउ वादु मरिचना चमत्कार, अत्यन्त सुकमार, हस्तिपद प्रमाण, प्रीणता घ्राण ।—व स

उ०—२ दुग्ध गोष्ठम चूरण घृत गुड सहित नालिकेरस्य खड । द्राक्षा खरजूर सुठी तज मरिच युत पेसलं देव पुस्पम् ।—व स

३ देखो 'मरीच' (रू भे)

मरियम—स० स्त्री० [अ० मर्यम] ईसा मसीह की माता का नाम, जिसके कीमार्गविस्था में ही ईसा का जन्म हुआ था ।

मरियाद, मरियादा—देखो 'मरजाद' (रू भे)

उ०—मरियाद मित्र पावन पवित्र, घन्यास्ति घन्य, गुरु अग्रगण्य ।

—ऊ का

मरियोडो—भू० का० कृ०—१ प्राणहीन, मृतक, मरा हुआ । २ वीर गति पाया हुआ, झुका हुआ । ३ भूख प्यास से व्याकुल, त्रस्त । ४ हत्या या कत्ल किया गया हुआ, नष्ट या मिटा हुआ । ५ न्यो-छावर, उत्सर्ग हुआ हुआ । ६ प्रेम में आसक्त, विवहल या विकल हुआ हुआ । ७ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ, सूखा हुआ । ८ मरणासन्न या मृत प्राय हुआ हुआ । ९ अत्यन्त चिन्तित हुआ हुआ । १० कष्ट या विपत्ति का मारा हुआ । ११ चोक्त या भार से दबा हुआ । १२ गुण समाप्त हुआ हुआ, अप्रयोज्य हुआ हुआ । १३ इच्छा, उत्साह, वेग आदि मद हुआ हुआ, दबा हुआ । १४ पराजित या परास्त होकर बाहर हुआ हुआ, आउट (प्लेयर) । १५ पेठा हुआ, समाया हुआ । (स्त्री० मरियोडी)

मरी-स० स्त्री०—१ जनपद व्यापी एक भयकर संक्रामक रोग जिससे तुल्य मृत्यु होती है, महामारी।

उ०—१ वरम तीसरै मेह न बूठै, ईत मरी दुरभल भय ऊठै।

—सू प्र

२ मृत्यु, मौत।

रू० भे०—मारी।

मरीच-स० पु० [स०] १ एक रघुवंशीय राजा। (रामरासी)

२ काली मिरच।

३ काली मिरच का पौधा।

रू० भे०—मरिच।

४ देखो 'मारीच' (रू भे)

उ०—रावण जहाँ नानी रहै, मात सुबाह मरीच।—रामरासी

५ देखो 'मरीचि' (रू भे) (हं ना मा.)

मरीचि-स० पु० [स०] १ इक्कीस प्रजापतियों में से एक जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुआ था। यह ब्रह्मा का प्रथम पुत्र था।

२ एक ऋषि जो भृगु के पुत्र एवं कश्यप के पिता थे।

३ एक स्मृतिकार ऋषि।

४ एक ज्योतिष शास्त्रज्ञ।

५ एक मरुत का नाम।

६ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

७ एक राजा जो वृषभदेव के वंश में उत्पन्न सम्राज नामक राजा का पुत्र था।

८ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ९ कज्जूस।

१० प्रकाश का अणु। ११ सूर्य।

स० स्त्री०—१२ किरण, मयूख, रश्मि। (हि को)

उ०—परै मरीचि मांह पं न छाह आतपत्र की। क्रमै न वायु अत्र ताल पत्र तै कलत्र की।—ऊ का

१३ मृग-तृष्णा।

रू० भे०—मरिच, मरीच, मरीची।

मरीचिका-स० स्त्री० [स०] १ किरण, रश्मि। (अ. मा)

२ मृग-तृष्णा।

मरीची—देखो 'मरीचि' (रू भे) (अ. मा)

मरीज-वि० [अ०] रोगी, बीमार।

मरीयत-स० स्त्री० [स० म्रिड्] महामारी।

उ०—मो पुर प्रज मो देस मभारै। मरीयत दुरभल नह मारै।

—सू प्र

मरु-स० पु० [स० मृ+उ] १ वह भूभाग या प्रदेश जहाँ पानी न हो, केवल रेत के सूखे मैदान या टीले हों, रेगिस्तान, मरु-भूमि।

२ मारवाड़ व उसके आस पास का भू-भाग।

३ वह पर्वत जो जल रहित हो।

४ सूर्यवंशी राजा शीघ्र का उत्तराधिकारी एक राजा।

उ०—मरु जिए सुतए तपोबल मडै। खित गलिका परगट नव खडै।—सू प्र

५ विदेह देश का एक निमिवंशीय राजा, जो ह्यंश्व जनक नामक राजा का पुत्र था।

६ एक दैत्य जो नरकासुर का प्रमुख महायक था।

रू० भे०—मरु।

मरुआडि, मरुआडि—देखो 'मारवाड़' (रू भे)

उ०—किलवां सगामि विवनउ करन। थरहरिय सवे मरुआडि थन।—रा ज. सी

मरुओ—देखो 'मरवो' (रू भे)

मरुक-स० पु० [स०] १ मोर, मयूर।

२ एक लोक समूह। (महाभारत)

मरुकांतार—रेगिस्तान, मरु-भूमि।

मरुग-स० पु०—मरु प्रदेश, मारवाड़।

उ०—सगवण गज्जण सवर बरवरकाय चिलाय तुरड गुड उडकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल अज्जल विल्लल पारस खस लउस हारोसमोसहिम रोम मरुग पल्लव मालव बहलिय सउलिय जोणग चीण हूण मरुहट्टय कोकय डुधिलप कुलखय खरमुख तुरगमुख मिढमुख ह्यकरण गजकरण प्रभ्रति अनारयदेस मनुस्य।

—व स

मरुत-स० पु० [स० मरुत्, मरुत] १ वायु, पवन। (अ. मा)

२ वायु का अघिष्ठाता देव।

३ इन्द्र। (हं ना मा)

४ देवता। (हि को)

५ एक देवगण, इनकी संख्या उनच्चास मानी गई है। ये कश्यप और दिति के पुत्र थे।

वि० वि०—कश्यप ने उत्पन्न दिति के सभी पुत्र विष्णु द्वारा मारे गये तो दिति ने कश्यप से वर मांगा कि 'इन्द्र को मारने वाला एक अमर पुत्र मुझे प्राप्त हो। कश्यप ने दिति को यह वर दे दिया। इन्द्र को जब यह पता चला कि दिति अपने गर्भ में उसका काल पाल रही है तो वह साधु वेप में दिति के पास रहने लगा। एक बार मौका पाकर योगबल से उसने दिति के गर्भ में प्रवेश किया और उसके गर्भ को नष्ट करने के लिये उसके सात टुकड़े कर डाले। परन्तु जब वे नहीं मरे तो उन सातों के सात सात टुकड़े और कर डाले। (इस प्रकार ये उनच्चास हो गये) इस पर भी जब वे नहीं मरे तो इन्द्र ने समझ लिया कि वे किसी देवता के अंश हैं। अतः उसने इन्हें अपने भाई मान लिये। कालान्तर में दिति के जब उनच्चास पुत्र उत्पन्न हुए तो वह आश्चर्य चकित हो गयी और इन्द्र से इसका कारण पूछा। इस पर इन्द्र ने अपना रहस्य दिति को बताया और

उसके सभी पुत्रों को स्वर्ग में ले गया। वहाँ उन्हें यज्ञ के हविर्भाग का अधिकारी बना कर भाई की भाँति रक्खा।

६ मनुष्य। (ह ना. मा)

७ पहाड़, पर्वत। (अ मा, ह, ना. मा)

८ मरुवक नामक एक पौधा।

९ एक महर्षि, जिसने शान्ति दूत बन कर जाने वाले श्रीकृष्ण की परिक्रमा की थी।

रु० भे०—मरुत, मरुत।

मरुतचक्र—स० पु० [स० मरुत=हवा+चक्र] वातचक्र।

उ०—आगणि जल तिरप उरप अलि पिअति, मरुतचक्र किरि लियत मरु। रामसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा 'चद' धरु।

—वेलि

मरुतजण—स० पु०—राक्षस, असुर।

उ०—कत कमळा कलह रटक पांणा करे, धाव वाणा करे कटक धाया। मरुतजण मोहू सू—र रु

मरुतवान—स० पु० [स० मरुत्व] इन्द्र। (ह नां मा)

मरुतसखा—स० पु० [स० मरु+सख] १ इन्द्र। (ह ना मा)

२ पवन।

मरुतसुत, मरुतसुति—स० पु० [स० मरु+सुत] १ हनुमान, वज्रराज।

२ भीम।

रु० भे०—मरुतसुत।

मरुत—स० पु० [स०] १ तुवंसुवशीय एक राजा, जो महाराज करधम का पौत्र और आवीक्षित का पुत्र था।

वि० वि०—इसके यज्ञ में देवता आकर काम करते थे। यह वैशाली का सुविख्यात सम्राट हुआ।

२ एक यादव राजा।

३ देखो 'मरुत' (रु भे)

मरुतपति—स० पु० [स०] देवराज इन्द्र।

मरुतपय—स० पु० [स०] आकाश, अन्तरिक्ष। (हि को)

मरुतसुत—देखो 'मरुतसुत' (रु भे)

मरुतल—देखो 'मरुतल' (रु भे)

मरुतवत—स० पु० [स०] १ बादल, मेघ।

२ इन्द्र। ३ हनुमान।

मरुद—देखो 'मरुद' (रु भे.)

मरुदेव—स० पु० [स०] १ इक्ष्वाकु वंशीय एक राजा जो राजा सुप्रतीक का पुत्र था।

उ०—प्रतीकास जिण सुत बोह पोरस, जेण सुतण सुप्रतीक उज्जल जस। सुत जे चप मरुदेव वयण सति, पुत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि पति।—सू प्र

२ एक देव विशेष।

उ०—देव अनायनाय जगन्नाथ त्रिभुवनम्बामि, विमलवाहन-चक्षु-स्मृत- यसस्वी अभिचन्द्र-प्रसेनजित् मरुदेव नइ अन्वयि नाभिरेस्वर-

कुलनभस्थल-मयूसमाली, मरुदेवा-कुक्षिकदरा-कैसरिकिमोरक, समी-हितारथकारी, सरवातिसयरवस्वधारी।—व स.

रु० भे०—मरुदेव।

मरुदेवी—स० स्त्री०—भगवान् ऋषभदेव की माता का नाम।

उ०—नाभिराय मरुदेवी नदन, यगलाधरम निवारणहार।—स कु

रु० भे०—मरुदेवा, मरुदेवी।

मरुद्वय—स० पु०—घोडा।

मरुद्विप—स० पु०—१ हाथी। २ ऊट।

मरुदेस—स० पु०—मारवाड।

उ०—जिसा मरुदेसि कूपजल, जिसी सिला उच्च सरल।—व स

मरुधन्वा—स० पु० [स० मरु+धन्वन्] मरुस्थल, मारवाड।

रु० भे०—मरु धन्वा।

मरुधर—स० पु०—मारवाड का एक नाम।

उ०—१ मरुधर देश वखाणिए।—घरम-पत्र

उ०—२ मरुधर गूजर सोरठ मालव पूरव सिध सपूरि।

—मुनि जयसोम

रु० भे०—मरुधर, मरुधर।

मरुधरा—स० स्त्री०—१ मारवाड का एक नामान्तर।

२ निर्जल भूमि।

रु० भे०—मरुभूमि, मारवधरा।

मरुधरियो—स० पु०—१ मारवाड का निवासी, मारवाडी।

वि०—२ मारवाड सबधी, मारवाड का।

मरुधर—देखो 'मरुधर' (रु भे)

मरुभूमि—देखो 'मरुधरा'।

मरुयउ—देखो 'मरवी' (रु भे)

उ०—सघ मल्यउ करइ काम उलट पट, कनक पीतल रूप तरुयउ रे। समयसुदर कहइ स्त्रीसघ सोहइ, वाढी माहे जिम मरुयउ रे।

—स. कु

मरुवण—देखो 'मारवण' (रु भे)

मरुवी—देखो 'मरवी' (रु भे)

उ०—जिहा किरण कमल अपार रे र०, चांपी मरुवी वे दमणी मालती रे। वउलसिरी सुखकार रे र०, जाई जूई रे दुखडा पालती रे।—वि कु

मरुस्थल, मरुस्थलि—स० पु० [स० मरु+स्थल] निर्जल प्रदेश, रेगिस्तान।

उ०—१ दिस मरुस्थल पति देस, व्रत अलख चख पडवेम।

—रा. रु

उ०—२ उसरक्षेत्रि इक्षुलता, मरुस्थलि गगा तरग, गिरिसिखरि पधनी, धूलिमाहि रत्न।—व स

रु० भे०—मरुस्थल।

मरु डीयो—१ एक जाति विशेष।

उ०—आवइ ऊठ तलावीया, विणजारा बिलवाल । हृदलीया  
हीडइ घणा, मरु डीया गलि माल ।—मा का प्र.

२ देखो 'मूड' (मल्पा, रु भे)

मरु-स० पु०—१ मुखी, गश ।

उ०—आगणि जळ तिरय उरप अलि पिपति, मरुतचक्र किरि  
लियत मरु । रामसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चद घर ।

—वेलि

२ देखो 'मरु' (रु भे)

उ०—सुरायण पूर किया रिणसाज, विडं देविचद अनं वछराज ।  
सदा तड वकिय वाकिम सूर, मरु मुहयोत मत्रि मगर ।—सू. प्र.

मरुअउ—देखो 'मरवी' (रु. भे) (उ र)

मरुआडि—देखो 'मारवाड' (रु भे)

मरुड—स० पु०—मुकुल ।

उ०—दव जिम दीठइ करणए करणइ ए हियु निकामु । मरुड  
वरुड दमनकि मन किहि नहीं य विसामु ।—जयशेखर सूरि

मरुक—स० पु० [स०] १ मोर, मयूर ।

२ एक प्रकार का मृग ।

मरुत—देखो 'मरुत' (रु भे)

मरुतयान—स० पु० [स० मरुत-यान] गरुड । (ना डि. को.)

मरुदेव—देखो 'मरुदेव' (रु भे)

मरुदेवा, मरुदेवी—देखो 'मरुदेवी' (रु भे)

उ०—वीनति सुणो रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरुदेवा रांणो ना  
लासा ।—वि कु

मरुधन्वा—मारवाड का एक नाम ।

रु० भे०—मरुधन्वा ।

मरुधर—देखो 'मरुधर' (रु भे)

उ०—इम अचढा अणपाळ, कवरागुर दिन दिन करे । मरुधर  
'अभमाल' अति छक धारे 'अजण' उत ।—सू प्र

मरुधरो—देखो 'मरुधर' (मल्पा, रु भे)

उ०—मरुधर देस महाराज मोटी मरुद, कदै नही परज न चित  
काइ ।—घ व प्र

मरुमडल—स० पु०—मारवाड ।

मरुवी—देखो 'मरवी' (रु भे)

उ०—तिलक केसर कोरट बकुल, पाडल वली रे । दमणी मरुवी  
कुसुमकली बहुविध मिली रे ।—वि कु.

मरेटी—देखो 'मरहठी' (रु भे)

उ०—मरेटा दिने उ भूख करती जनेवा मूढ, एक घाव रोई टक  
जनेऊ उतार ।—वद्रीदांन खिडियो

मरेठी—देखो 'मुलेठी' (रु भे)

मरेठी—देखो 'मरहठी' (रु भे)

मरोड—स० स्त्री० [स० मुर] १ मोड़ने, घुमाने या ऐठन डालने की  
क्रिया या भाव ।

२ ऐठन, घल ।

उ०—राजाजी मूछ्या री मरोड विखेरता फँवण लागा—म्हँ केवू  
तो ई थू म्हुनं श्रेकलो छोडनं मत जाजं ।—कुलवाडी

१ वात विकार के कारण पेट में होने वाली ऐठन, दर्द, पीडा ।

४ विरोध, शत्रुता ।

उ०—चेटक पमग न दं चीतोड़ी, कन्या न आपे गरप करोड ।  
चगता रहे चतरगड चढता, रह अकवर 'परताप' मरोड ।

—राणा प्रताप री गीत

१ गोरव, मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, श्रान ।

उ०—१ नोरा ले ले पीव सू साभरिया तणी कहै नारी, मेल आया  
सारी छत्री पणा री मरोड ।—दलजी महझ

उ०—२ गरज इणा री छिपावण शीगुण नं कमी आपरी मरोड  
मे जाणी ।—नी प्र

७ धीरता, पराक्रम ।

उ०—रहै न तन घन राखियां, कीधा जतन किरौड । मान लहै  
मरदा भलां, महि सुण वात मरोड ।

—प्रतापसिंघ म्होकर्मसिंघ री वात

८ गर्व, अभिमान, घमंड ।

उ०—१ रण बकी राठोड त्राह सुणै देवल तणी । मिरजा खान  
मरोड गह लायो गढ़ गूजवै ।—पा. प्र

उ०—२ धोर कुल्या माहि ऊपनी, तोने खाय मूढा धी थूक्यो रे ।  
हीये मरोड राखै घणी, तू जाय छै अवर चुक्यो रे ।—जयवाणी

उ०—१ बरसो दुलही दिव बहु, मन जिण आणि मरोड । बर  
ककण वर वधियो, मायै घरियो मोड ।—व भा.

६ नायिका द्वारा नायक के सम्मुख किया जाने वाला अभिमान ।

उ०—ढोल्यो तो डगमग करे जी वना म्हांरा, तकियो करे किलोळ ।  
वनडी तो न्होरा करे जी वना म्हांरा, वनडी करे मरोड ।

—लो गो.

रु० भे०—मडोड, मरड, मरड मुरड ।

मरोडणी, मरोडबी—क्रि० स० [स० मुरम्] १ किसी वस्तु या शरीर के  
किसी अंग को एक ओर से दूसरी ओर घुमाना, फेरना, ऐठन या  
बल डालना, तनाव देना ।

उ०—१ सु राव लाडक नू गाबड़ सू भालनं नीचं दियो । नीचं दे  
हाथ मरोड तरवार ले राव भटकारी दी ।—नैणसी

उ०—२ सुतो बनडो सुख भर नीद, बाबोजी हैतो मारियोजी म्हांरा  
राज । ऊठ्यो वनडो अंग मरोड जी कोई कुळ मे सूरज ऊगियोजी  
म्हांरा राज ।—लो गो

उ०—१ कर गहि मूछ मरोड मच्छर मनि भावतां । नांना विघ  
रस राग रजा में गावता ।—ह पु वां

२ नष्ट करना, समाप्त करना मारना, उन्मूलन करना ।

उ०—१ भांगिसुर वासु रहि जुडण रिणवड हि जोडै । फतैखान सारिखा म्लेच्छ भूष-डड मरोडै ।—रावमालदे री वात

उ०—२ मेल दळा पर दळा मरोडण, छव वरणा बाधार छतो । अकल निधान 'भीम' सुत ऊभा, हीदवसधान नचीत हुतो ।

—बुधजी आसियो

३ कष्ट या पीडा देना ।

४ तोटना ।

उ०—तिण जेम लगरी वध तोड । मदभरि कध नाखै मरोड ।  
—वि स

५ रुटना ।

उ०—करमचद भांनीदासोत, मदनै कन्हा मरोडाइ अर पाछो धिरियो । मदनै नू कहियो म्हे तो थारा चाकर नही छा ।—द वि मरोडणहार, हारो (हारी), मरोडणियो—वि० ।

मरोडिओडो, मरोडियोडो, मरोडघोडो—भू० का० कृ० ।

मरोडोजणो, मरोडोजवो—कर्म वा० ।

मरहुणो, मरहुवो—रू० भे० ।

मरोडफळी, मरोडाफळी—स० स्त्री०—ओपधी मे काम आने वाली एक फली विशेष, आवर्तनी ।

वि० वि०—यह ऐंठन खाई हुई होती है । पेट मे वात विकार के लिये गुणकारी होती है ।

मरोडियोडी—भू० का० कृ०—१ एक ओर से दूसरी ओर घुमाया हुआ, फिराया हुआ, ऐंठन या बल डाला हुआ, तनाव दिया हुआ २ नष्ट या समाप्त किया हुआ, उन्मूलन किया हुआ, सहार किया हुआ ३ कष्ट या पीडा दिया हुआ ४ तोड़ा हुआ ५ रुटा हुआ (स्त्री० मरोडियोडी)

मरोडो—स० स्त्री०—१ लोह की बनी छोटी पेचदार कटिया ।

२ देखो 'मरोडो' (अल्पा, रू भे)

रू० भे०—मरोडी ।

मरोडो—स० पु०—१ वात विकार के कारण पेट मे होने वाला दर्द, पीडा ।

उ०—म्हारै तो पेट मे मरोडो चालखु लागगो, नीतर म्हे खुद दो हाथ बतावतो ।—फुलवाडी

२ रक्तातिसार का रोग ।

३ गर्व, अभिमान ।

४ ऐंठन, बल । ५ घुमाव ।

६ तेज गर्मी के कारण होने वाली उमस । (शेखावाटी)

७ देखो 'मरोडी' (अल्पा, रू भे)

मरोट, मरोठ—देखो 'मारोट, मारोठ' (रू० भे)

उ०—सोलइसइ सतसठि समइ हो, नगर मरोट मभार ।—स कु

मरोडो—स० पु०—एक जाति विशेष का अफीम ।

उ०—अमला री रह छह मडी छै । भूरी, भेवती, काळी, किसनागर मरोडो, मुहरतोली लाभै तिण भांत री केसरियो, पोता घोळियो, मनुहारा हुवै छै ।—डाढाळा सूर री वात

मरो—स० पु०—मृत्यु, मौत ।

उ०—अग लछन सेति ध्यान रह्या, स्त्री साति जिनेस्वर मुगति गया । पछै भेट दियो सब जन्म मरो स्त्री साति जिनेस्वर साति करो ।

—जयवांछी

मलग—स० पु० [फा०] १ मदारशाह के अनुयायी मुसलमान साधु ।

२ मुसलमान सूफियो मे मदारी शाखा के वे फकीर जो अविवाहित रहते हैं ।

३ मस्त फकीर ।

४ एक प्रकार का बड़ा वगुला, जिसकी चोच पीली होती है ।

५ छलांग, झप ।

उ०—१ मभि खगा भाट खेल्है मलग । आफळै अणी पर धार अग ।—सू प्र

उ०—२ सूरु जमदाइ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग ।  
—मे म.

उ०—३ लुरग नू लोह छकियो देखि पाळी ही कन्ह चहुवाण रीस रै साथै तरवारि छोडि नट रै माफिक मलग भर पल्हण प्रतिहार रै जमदाइ जाय जड़ी ।—व भा

उ०—४ असमान भ्रमत मानहु अर्चान, लखि भुव वटेर तुट्यो सिवान । अग हेरि मनहु चीता मलग, झप्योक वाज चप्यो कुलग ।

—ला रा.

६ छलांग लगाते हुए चलने की क्रिया ।

उ०—करि साकणि डाकणि सग कई, लगडा मग जग मलग लई ।  
—मे. म.

वि०—१ छलांग लगाने वाला ।

२ मस्त, वेफिक्र, निश्चित ।

३ पुष्ट मोटा ।

४ लापरवाह ।

रू० भे०—मगो ।

मलगणो, मलगवो—क्रि० प्र०—१ छलांग लगाना, कूदना ।

उ०—खगा जीतणां घाव में दाव खेल्है, मलग तडा माकडां पीठ मेल्है ।—व भा

२ कूद-कूद कर चलना ।

मलगणहार, हारो (हारी), मलगणियो—वि० ।

मलगिओडो, मलगियोडो, मलगयोडो—भू० का० कृ० ।

मलगोजणो, मलगोजवो—भाव वा० ।

मलगियोडी—भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, कूदा हुआ ।

२ कूद कूद कर चला हुआ ।

(स्त्री० मलगियोडी)



मलगी—देखो 'मलग' (रू भे)

मल, मल-स० पु० [स० मल] १ शरीर से निकलने वाला मल-मूत्र, विष्टा, गुह ।

उ०—१ पेट घरं जायो पछे, धवरायो मल घोय । जिए कारण जगदीस सू, जगणी गरवी जोय ।—बां दा

उ०—२ चुगली करता चुगलरा, जुग होटड़ा जुड़त । मल नाखण जाणं मिळै, दोय ठीकरा दत ।—बां दा

२ शरीर की चमड़ी या कपड़ो आदि पर लगने वाली गदगी, मैल ।

उ०—सहु पातक मल सावू, भल भल देवल जोज्यो । देवल जोज्यो हरखित होज्यो, घुरि पातक मल घोज्यो ।—घ व अ

१ मनुस्मृति के अनुसार शरीर के बारह मल—बसा, शुक्र, रक्त, मज्जा, मूत्र, विष्टा, कान का मैल, नख, श्लेष्मा या कफ, आंसू, शरीर के ऊपर जमने वाला मैल, पसीना ।

४ पाप, दोष, दुष्कर्म ।

उ०—१ अकरण करण समरण अघ अणघट, सक रघुवर असरण सरण । लछवर सघर अमर नर रख लज, महपत समरत हरत मल ।

—र ज प्र.

उ०—२ फूट भाडे नीर गरक गाफिल नर सोवै । भजै नही भगवत बहोडि मल सू मल घोवै ।—ह पु बां

५ मनो विकार, दूषित भावना ।

उ०—आखइ ताइ अरज करै ईसर नू, सांम तू हीज अपराध सहइ । मल घारी मानवी न भूझइ, कहइ ज अह्मा विसन कहइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ कपूर । ७ समुद्र फेन । ८ घातु का मैल ।

९ मिलावटी घातु विशेष ।

१० मादा पशुओं के गर्भावस्था या प्रसव के कुछ समय बाद तक योनि मार्ग से गिरने वाला गदा पदार्थ ।

११ कमाया हुआ चमड़ा व इसका वस्त्र ।

१२ देखो 'मलमास' ।

१३ देखो 'मल्ल' (रू भे)

उ०—रक रतदा मार कर, कोइ मल कहावै ।—केसी दास गाढण

मलउसीउ—स० पु०—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—वीणउसीउ चीणउसीउ मलउसीउ आउचीउ मूगनउ ।

—व स

मलकछ, मलकछो—स० पु०—एक शुभ घोड़ा, जिसके मस्तक पर चन्द्रमा के आकार का सफेद तिलक होता है तथा शरीर जामुनी रंग का व चारो पैर सफेद होते हैं । (शा हो)

मलका—देखो 'मलिका' (रू भे)

उ०—लख जुघ ललकाराह, प्यारा तुकमा तो 'पता' । मिळिया मलका राह, हलकारा जस रा हमै ।—जुगतीदांन दथो

२ एक गुरु व एक लघु के क्रम से आठ धरण का एक छंद विशेष ।

रू० भे०—मलवका ।

मलकाहली—स० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—सगुड हाथीया लूढइ, रयावली ऊथलावइ, मउडया मांकइ जिम खेलावइ, पाखरिया घाट हणइ, महायोध समुग मणइ, दल वइ भाजि, जलसमुदाय गाजि, एतलइ समइ मलकाहली वाजइ ।

—व स.

मलवका—१ मांसाहारी पक्षी विशेष ।

उ०—जरख रीछ बड़ाख, सिवा सत लस्म मलवका । साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळवका ।—गु रू व.

२ देखो 'मलका' (रू भे)

मलखभ, मलखम—स० पु० [स० मल्ल+खम्भ] १ लकड़ी का एक स्थम्भ जो कसरत के काम आता है ।

२ इस धम्भे के साथ की जाने वाली कसरत ।

रू० भे०—मल्लखम, मालखम ।

मलजुघ—देखो 'मल्लजुघ' (रू भे)

उ०—मलजुघ कीया विना रहवा री आखडी ।—रा सा स

मलज्वर—स० पु० [स० मल+ज्वर] मल के रुकने के कारण होने वाला एक ज्वर ।

मलण—स० पु०—मालिश, रबटन ।

उ०—मह मह सुगध चिक्कस मलण, जीतण तप अहमद जुई । जह मह बिवाह लाडां जुडण, हाडां घर गहमह हुई ।—व भा

मलणी, मलवो—कि०स० [स० मलन] १ मालिश करना, रबटन करना ।

उ०—सूती पढी रणेहि, जोयइ दिसि जाता-तणी । जोगी हाथ मळेहि, विलसी हुई वल्लहा ।—ढो मा

२ लेपन करना, पोतना ।

३ दवाना, अधिकार में करना ।

१ किन्ही दो वस्तुओं अथवा अंगों को परस्पर रगड़ना, मसलना ।

उ०—१ बळोवळ मैंगळ वाह दुवाह, प्रळै लखि हाथ मळै पतिसाह ।

—मे म.

उ०—२ जोडी जिसकी वीछडै, हाथ मळेसी जांह । वीच पडेसी अन्तरी, हरिया हरि सु तांह ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

४ हाथ फेरना ।

५ मिटाना, नष्ट करना ।

उ०—'अभौ' छमा ईखियो, ज्यास लेखियो जणोजण । काण मळण केविया, जाण ध्रम काम अरज्जण ।—रा. रू

उ०—२ चवकल पिहल मासल स्तन युगल, गभीर नाभीकूप, अन्नत मय रूप, नारंग छालि जिम युवान लाला मेलहावती, मुनि तरणा मन मूलहइ हलावती, अप्सरायण रूप मरट्ट मलती — व स

उ०—३ महि लियण सतरि अरि मलण मांण । सज्जै पयाण गज्जै निसांण ।—रा रू

६ कुचलना । ७ मरोडना, ऐठना । ८ पीसना ।



६ देखो मल्लणी, मल्लवो' (रू भे)

उ०—पाय सिध गल ग्रह चक्र भल्लहल्ले चउदह । मल्ले क्रोड तेतोस, उदी सुरियद अणदह ।—देवि

उ०—२ जोइ गय टोळी मल्लो नाग जादी, वढे सापने सामळो सूर बादी ।—ना द.

उ०—१ डमरां घुळता बास मल्लेगो अदोत दीहां । चमरा कुळता गोत मल्लेगो चहुआण ।—दुरगादत्त वारहठ

उ०—४ भटकै करकर भेक, घर घर अलख जगावता, दुनिया रा ठग देख, मल्लसी पनिआ मोतिया —रायसिंह सादू

उ०—५ अपछर देख मल्ले आखाडे, विघन तणी रचियो वीमाह । रिणवट उरा बाधियो 'रतने' परा फोज आवी पतसाह ।—दूदो मल्लणहार, हारी (हारी), मल्लणियो—वि० ।

मल्लिओडो, मल्लियोडो, मल्ल्योडो—भू० का० कृ० ।

मल्लोजणी, मल्लोजवो—कर्म वा० ।

मल्लणी, मल्लवो—रू० भे० ।

मलतान—देखो 'मुलतान' (रू भे)

उ०—सधु सवालक्ष कच मलतान हीदूस्थान, देवकू पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट सखोद्वार ।—क स

मलद्वार—स० पु० [स० मल + द्वार] १ शरीर की मल निकलने वाली इंद्रिया । २ गुदा ।

मलधारी—वि०—मन को धारन करने वाला ।

मलप—देखो 'मलफ' (रू भे)

उ०—१ या सुणता ही लोह छक होय पडिये थकै ही मलप लेर चालुवराज हमीर कैमास री काख मे चपिया आपरा स्वांमी नू भाटकियो ।—व भा

उ०—२ आगळा कध पडछी अलप, मलप गुलाली मूठियां ।

—मे म

मलपणी, मलपवो—देखो 'मलफणी, मलफवो' (रू भे)

उ०—१ इण विध मेळ अमेळ, करै साहा कळिनारी । सीख करै माहसू, अडर मलपियो 'अजा' री ।—सू प्र

उ०—२ मारगि चालइ मलपता, जांणै परवत-माळ । काळा जिम कज्जळ-तणा, काळ-तणा पण काळ ।—मा का प्र

उ०—३ मलपति मदोमत्त मैगळय । बरखा रित जाणक वडळय । —गु रू व

उ०—४ सेना चालि, सेस हालि, माहाळ मही महीपति मलपता । नारि वरसू प्रीति करसू, मोद घरसू जलपता ।—नळारूपान

उ०—५ जांणै हस मलपियो सर मान मझारा । हाथी जांण क हालियो, मद पीध वजारा ।—मयाराम दरजी री वात

उ०—६ मिगसर मे बलि मलपिया, गज ज्यू स्त्री गुरराज । आर्वे 'आवू' अरचिया, जगनायक जिनराज ।

—जिनलाभ सूरि

मलपणहार, हारी (हारी), मलपणियो—वि० ।

मलपिओडो, मलपियोडो, मलप्योडो—भू० का० कृ० ।

मलपीजणी, मलपीजवो—कर्म वा० ।

मलपियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मलपियोडो)

मलपणी, मलपवो—देखो 'मलफणी, मलफवो' (रू भे)

उ०—१ परवत-माळ क चलै पाए, घजा पताखा अवर छाए । फोजां मुहरि मलपै मैगळ, पेरे जाणि पवन्न वादळ ।—गु रू वं

उ०—२ भूल पाटवर, लोहमै लगर । अक्कुटै चम्मर, मलपै कुजर ।—गु रू व

मलपणहार, हारी (हारी), मलपणियो—वि० ।

मलपिओडो, मलपियोडो, मलप्योडो—भू० का० कृ० ।

मलपीजणी, मलपीजवो—कर्म वा० ।

मलपियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मलपियोडो)

मलफ—स० पु०—१ छलाग, कुदान ।

उ०—१ रेसमी गलफां लोच टुकेक परीती लीघा, बोल दीघा भरै चीती मलफा वाजद ।—महाराणा सरूपसिध री गीत

उ०—२ उद्म आगम आखडी, ताप निडरता तत । गाज मलफ एता गुणां, सीहा काज सरत ।—बा दा

२ उडान । ३ भूमना क्रिया, मस्ती ।

४ प्रयाण ।

रू० भे०—मलप ।

मलफणी, मलफवो—क्रि० स०—१ छलाग लगाना, उडलना, कूदना, फांदना ।

उ०—१ तै जेहा दीघा तुरी, अग जीपण मलफत । चढे जिकां अन पड चढे, तोरण वारण तत ।—बा दा

उ०—२ तास वरणागिये दीठि मनहतणी मलफियो सामही कळह वेढीमणी ।—हा भा.

उ०—३ अग पसम सुलफ आघो कियां ऊठियो, चख कुलफ खूटिया मलफे चीती ।—महादान महडू

२ तेजी से आगे को बढ़ना ।

उ०—साह री जोध जोतां समद । कठहू चढण मलफे कमद ।

—वि स.

३ भूमते हुए चलना, भूमना ।

४ मद गति से मस्त चाल चलना ।

५ उडान भरना, उडना ।

६ प्रयाण करना, चलना ।

७ फदे में फटना ।

८ दीडना, भागना ।

मलफणहार, हारी (हारी), मलफणियो—वि० ।

मलफियोडो, मलफियोडो, मलपयोडो—भू० का० कृ० ।

मलफोजणो, मलफोजयो—कर्म वा० ।

मलपणो, मलपवो, मलप्पणो, मलप्पवो, मलपफणो, मलपफवो, मलहपणो, मलहपवो, मलहप्पणो, मलहप्पवो—रू० भे० ।

मलफियोडो—भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, उछला हुआ, कूदा हुआ, फादा हुआ २ तेजी से आगे बढ़ा हुआ ३ झूमते हुए चला हुआ, झूमा हुआ ४ मद गति से मस्त चाल चला हुआ ५ उठान भरा हुआ, उठा हुआ ६ प्रयाण किया हुआ, चला हुआ ७ फदे में डाला हुआ, फसाया हुआ ८ दोड़ा हुआ, भागा हुआ

(स्त्री० मलफियोडो)

मलपफणो, मलपफवो—देखो 'मलफणो, मलफवो' (रू भे)

उ०—उठै नभ रागनि लग छछोह, मलपफत पच वरच्छनि बोह ।  
सजै तिनपै असवार कजाक, छकै उन्मत दुवारनि द्याक ।—ला. रा

मलपफियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मलपफियोडो)

मलवाथ—स० स्त्री० [स० मल्ल+राज० वाथ] १ मल्ल युद्ध में हाथों को पकड़कर छाती से भिड़ाने की क्रिया ।

२ कुस्ती लड़ने का एक दाव, पेच ।

मलवारी—स० स्त्री०—१ एक फल विशेष जिसकी चटनी बनती है ।

उ०—तदनतर प्रधान पीपलि, आखी आबी, नलोडांनी कयरी, आबूआ आवां, मलवारी मिरिमजगि, छूहारा लीवूआं, गिरनारी गिरमर, मारुयाडा मुगीया कयर, परवती राई प्रमुख साक पीरी-स्यां ।—व स

२ एक प्रकार का कपड़ा ।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ पीतबिर चादर रक्तावर नेत्रावर खासरी सालूर चोलहिरा नीलुहुरा जरजरी मलवारी लाछरी अघोतरी ।—व स

मळयो—स० पु०—१ कूड़ा, कर्कट, फूस आदि का ढेर ।

२ गिरे हुए मकान या इमारत के पत्थर, धूल आदि का ढेर ।

३ निरर्थक वस्तुओं का ढेर, किसी वस्तु के टूटे हुए भागों का ढेर ।

४ दोरे पर आने वाले हाकिमों व अन्य गावाळ खर्च के लिये गाव के भूमिदारी लोगों से वसूल की जाने वाली रकम ।

उ०—मूढ मुढायां तीन गुण गई माथा री खाज । मळयो छोडयो चौघरथा, हासल छोड्यो राज ।—अज्ञात

मळमजण—स० पु०—पानी, जल । (ह. नां मा)

मलम—स० पु० [फा० महंम] घाव पर लगाने की औपधि ।

उ०—१ मरणा री मार दुनिया में सब सू तीखी अर खारी लागै, पण दिना री मलम वगत लाग्यां उण मार री घाव ई मिळाय दे ।

—कुलवाडी

उ०—२ गाव अर घरवाळा वास्तै हळदी ती ही दूवणिया रै मार्यै मलम ज्यू ।—कुलवाडी

रू० भे०—मरहम, मल्लम, मल्लम, मल्लम ।

मलमपट्टी—सं० पु०—घाव या अण पर मलम लगाकर पट्टी बांधने की क्रिया, प्राथमिक चिकित्सा ।

क्रि० प्र०—करणी, कराणी, होणी ।

मलमल—स० स्त्री०—सूत के अत्यन्त बारीक डोरो का बना एक प्रकार का महीन कपड़ा ।

रू० भे०—मुलमुल ।

मलमलसाही—स० पु०—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—रेममी भइख, लाहि मही मुदीमाही मलमलसाही प्रमुख नानाविध भातिनां नानाविध देसना वस्त्र आणी समस्त परिवार, नगर लोक पहिरावी नामस्थापना कीधी ।—व स.

मळमळाणो, मळमळावो—देखो 'मुळमुळाणो, मुळमुळावो' (रू भे)

मळमळायोडो—देखो 'मुळमुळायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० मळमळायोडो)

मळमास—स० पु० [स० मल+मास] १ मलिनमास ।

[स० मलमास] १ वह चाद्रमास जिसमें दो अभावस्या हो तथा सूर्य सक्रान्ति का अभाव हो ।

वि० वि०—मलमास दो प्रकार के होते हैं, एक अघिमास जो सूर्य सक्रान्ति रहित होता है तथा दूसरा जिसमें दो सूर्य सक्रान्ति होती है, उसे क्षयमास भी कहते हैं । मलमास में मागलिक कार्य नहीं किये जाते हैं ।

मलमुलच—स० पु० [स० मलमुलच] चोर । (अ मा)

रू० भे०—मलीमलुच, मुळमुच ।

मळय—स० पु० [स० मलय] १ दक्षिण भारत की एक पर्वत माला जहा चदन के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं ।

२ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश, मालावार प्रान्त ।

३ उक्त प्रदेश का निवासी ।

४ उक्त प्रदेश में होने वाला सफेद चदन ।

उ०—तोय भरणि छटि ऊषसत मळय तरि, अति पराग रज घूसर अग । मधु मद खवति मद गति मलहपति, मदोनमत्त मारुत मातग ।—वेलि

रू० भे०—मल्ल, मल्लय ।

६ एक उप-द्वीप ।

७ इन्द्र का नन्दन वन । ८ बाग ।

९ गरुड का एक पुत्र ।

१० एक राजा जो प्रियव्रत वंशीय ऋषभदेव राजा का पुत्र था ।

११ छप्पय छद का एक भेद जिसमें २५ गुरु, १०२ लघु के अनुसार १२७ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं या २५ गुरु, ६८ लघु के अनुसार १२३ वर्ण या १४८ मात्राएं होती हैं ।

मलयगिरि-स० पु० [स०] १ दक्षिण भारत का मलय नामक पर्वत ।

२ उक्त पर्वत में होने वाला चदन ।

३ एक देश का नाम । (प्राचीन)

उ०—तत्र देसे गोमुख नरा, महाभोट ३ कोडि अस्व मुख नरा, कान्हड १२ लक्ष, चौड सारद्ध ३ लक्ष, मलयगिरि ७ लक्ष, पाडीउ १७ लक्ष, सिघलद्वीप १ कोडि, चीण महाचीण २ कोडि, त्रवावती एक कोडि, इति देसा ।—व स

रू० भे०—मळयागिरि, मळागरी, मळागिरी, मळियागर, मळियागरि, मळियागरी, मळियागिर, मळियागिरि, मळियागिरी, मळी-आगिरि, मळीयागर, मळैगिर, मळैगिरि, महियागिर ।

मलयज-स० पु० [स० मलयज] १ चन्दन ।

उ०—धूप दीप नैवेद पुस्य फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ ।

—मे म

२ राहु नामक ग्रह ।

वि०—१ मलय पर्वत में उत्पन्न होने वाला ।

२ शीतल । ५ (डि को)

रू० भे०—मलयुज ।

मळयद्रुम-स० पु० [स०] चदन का वृक्ष ।

मळयवासिनी-स० स्त्री० [स०] दुर्गा देवी ।

मळयवासी-वि०—मलय देश का रहने वाला या निवासी ।

मळयागिरि-स० पु०—१ एक रंग विशेष ।

२ देखो 'मळयगिरि' (रू भे)

रू० भे०—मलागरी, मलागिर ।

मळयाचळ, मळयाचल-स० पु० [स० मलय+अचल] मलय पर्वत ।

उ०—१ सबळ जळ समिन्न सुगंध भेट सजि, डिग मिग पाउ वाउ शोध डर । हालियो मळयाचळ हूत हिमाचळ । कामदूत हर प्रसन कर ।—वेलि

उ०—२ समुद्र रहइ लवण मूठि भेट, रोहणा चलनइ रत्न भेट, गंगा रहइ कनकफल भेट, मळयाचल नइ चदन भेट, मेरुगिरि नइ सुवरण भेट, कल्पवृक्ष नइ काइ फल भेट ।—व स

रू० भे०—मयाचळ, मळियाचळ ।

मळयातर-देखो 'मलैतर' (रू भे) (ना मा)

मळयानिळ-स० पु० [स० मलय+अनिळ] मलय पर्वत की ओर से आने वाली मद सुगंध व शीतल वायु, मलयवयार ।

उ०—ऐसे त्रिगुण कहता, सीत मद सुगंध मळयानिळ लागी सोई ।

त्याही वसत नै जनमत ही भूख तिस लागी छै ।—वेलि टी

रू० भे०—मिळीमानील, मिळीयानिल ।

मळयालम-स० पु०—१ भारत के पश्चिमी घाट के किनारे दक्षिण की

ओर का एक पहाडी प्रदेश, वर्तमान केरल प्रान्त ।

स० स्त्री०—२ उक्त प्रदेश या प्रान्त की भाषा ।

मळयाळी-स० पु०—मलयालम में बसने वाली एक पहाडी जाति का नाम ।

मलयुज-देखो 'मलयज' (रू भे) (ना मा)

मलयुद्ध-देखो 'मल्लयुद्ध' (रू भे)

मलयेचा-स० पु०—चोहान वंश की एक शाखा ।

मलयेचो-स० पु०—चोहान वंश की 'मलयेचा' शाखा का व्यक्ति ।

मळरोधक-वि०—जो मल को रोकता है, कब्ज करने वाला ।

मलवरक-स० पु०—एक प्रकार का राजकीय कर या टेक्स विशेष ।

उ०—दाण पूछी हन भोभ भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक वल चचा चारिका गढ वाटी छत्र आलहण थोटक कुमारादिसुखडी इति क्रमेणास्टादसा करा जाता ।—व स

मलविद्या-देखो 'मल्लविद्या' (रू भे)

उ०—किता श्रोखवि वंद विद्या प्रकासै । किता मलविद्या अखाडे कलासे ।—अज्ञात

मळसारो, मळसाबो-क्रि० स०—झुलाना, चिठना ।

उ०—ढाल एक ऊगै उरी लोधी छै । तदि कैवाटजी मळसाय नै कह्यो, भारोज, एकै हाथ ताळी बजावो छो ।

—कहवाट सरवहिये री बात

मळसायोडी-भू० का० क०—झुलाना हुआ, चिठा हुआ (स्त्री० मलसायोडी)

मळसिया-स० पु०—इडा पडिहार वंश की एक शाखा ।

मलांण-स० पु०—१ वाहन, सवारी ।

उ०—सीतापति सबजाण, काई अत वीनां करो । मह सीतळा मलाण, रासभ दीनो राजिया ।—किरपाराम  
२ देखो 'म्लान' (रू भे)

मनांणि, मलाणी-देखो 'मालाणि' (रू भे)

मळाई-स० स्त्री०—१ दूध को गर्म करने पर उस पर आने वाली धी व गाढे पदार्थ की झिल्ली, परत, दूध की साढ़ी । दुग्ध व दही पर आने वाली धी और कैसीन की परत ।

उ०—नानांण जावण दै, दूध मळाइ पीवण दै, धी अर बटिया खावण दै ।—कुलवाडी

२ सार तत्व, मुख्य तत्व ।

३ मलने की क्रिया या भाव ।

४ उक्त कार्य की मजदूरी ।

५ देखो 'मिलाई' (रू भे)

मलाकरसी-स० पु० [स० मलाकपिन्] १ भगी, महत्तर, हरिजन ।

२ कूड़ा कचरा साफ करने वाला ।

मलाका-स० स्त्री० [स०] १ कामातुर स्त्री ।

२ दूती । ३ वेदया, रदी ।

४ मादा हस्ती, हथिनी ।

मलाखा—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—मनसख कमखा चलाखा, मलाखा देवदूत बघालग कौठालग  
कलगद्द फोकची पचवरण न यज ।—ब स

मलाखी—वि०—अज्ञानी ।

उ०—मलाखी पोपट जेहवा, देखीता रूपवत । सास्त्रस्लोक न आव-  
डइ, तस परि जाणै चीति ।—नळदवदती रास

मलागरी, मलागिरी—१ देखो 'मळयागिरि' (रू भे )

२ देखो 'मळयागिरि' (रू भे )

मलाजमत—देखो 'मुलाजमत' (रू भे.)

उ०—स्त्री अजीम साहजादा री मारफत सबत् १७६७ बैसाख माहे  
पातसाह री मलाजमत कीनी ने महाराजा रो मनसब ठहरीयो ।  
—रा व वि.

मलाणो, मलावो—देखो 'मल्हाणो, मल्हावो' (रू भे )

मलापणो, मलापवो—देखो 'मलाफणो, मलाफवो' (रू भे )

उ०—१ दैतराज मलापनै राजकवरी रै पाखती गियो ।

—फुलवाडी

उ०—२ पाज माथै आय नै वो दो दो पगोतिया मलापती राज-  
कवरी नै झालण री पुरी मती करियो ई हो के वा तो पाणी मे  
पग धरता ई अदीठ लैगो ।—फुलवाडी

उ०—३ मारग मे मलापता सिध खिरगोसिया नै फेर पूछयो—  
कित्तोक अळगो उण रो है किलो परकोटी ।—फुलवाडी

उ०—४ सिध जोर सू दहाहनै उण माथै मलापियो ।—फुलवाडी  
मलापणहार, हारी (हारी), मलापणियो—वि० ।

मलापिओडो, मलापियोडो, मलाप्योडो—भू० का० कृ० ।

मलापीजणो, मलापीजवो—कर्म वा० ।

मलापियोडी—देखो 'मलाफियोडी' (रू भे )

(स्त्री० मलापियोडी)

मळाफ—देखो 'मलफ' (रू भे )

मलाफणो, मलाफवो—क्रि० स०—१ छलाग लगाना, उछलना, कूदना,  
फांदना ।

२ भूमते हुए चलना, भूमना ।

३ मद गति से मस्त चाल से चलना ।

४ उडान भरना, उडना ।

५ प्रयाण करना, चलना ।

६ दीडना, भागना ।

मलाफणहार, हारी (हारी), मलाफणियो—वि० ।

मलाफिओडो, मलाफियोडो, मलाप्योडो—भू० का० कृ० ।

मलाफीजणो, मलाफीजवो—कर्म वा० ।

मलापणो, मलापवो—रू० भे० ।

मलाफियोडी—भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, उछला हुआ,

फूदा हुआ, फादा हुआ २ भूमते हुए चला हुआ ३ मद गति  
से मस्त चाल से चला हुआ, ४ उडा हुआ, उडान भरा हुआ.  
५ प्रयाण किया हुआ, चला हुआ ६ दीडा हुआ, भागा हुआ.

(स्त्री० मलाफियोडी)

मलावार—स० पु०—भारत के पश्चिम घाट के समुद्र तट पर स्थित  
प्रदेश, वर्तमान केरल प्रान्त का एक प्रदेश ।

मलामली—देखो 'मलोमली' (रू भे.)

मलायोडी—देखो 'मल्हायोडी' (रू भे )

(स्त्री० मलायोडी)

मलार—स० स्त्री०—वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला एक राग । (संगीत)

उ०—१ रजै मलार सारग, रितग रग मारग । रसाल ताल  
सोरठी, सर्गान तान सामठी ।—रा रू

उ०—२ काछि काछि वन कीधी काया, उलसी अरव उग्रह घर  
आया । रित तिण साहब पावम राया, सुकवि चलावि मलार  
सुहाया ।—आसो वारहठ

रू० भे०—मल्लार, मल्हार ।

मलारी—स० स्त्री०—वसंत ऋतु की एक रागिनी । (संगीत)

वि०—मलार का, मलार सम्बन्धी ।

मलाल—स० पु० [प्र०] १ दुख, रज ।

२ पश्चाताप, अफसोस, उदामी ।

३ कष्ट, तकलीफ ।

४ एक खास रग का घोडा ।

उ०—चमराळ लखी फुलमाळ चकवीयै, केहर लाल प्रवाळ कीसै ।  
अकडाळ चगी बोहोराळ अजवीयै, जेजव वाज हीराळ जीसै, वस  
नाग सीगाळटी ताजीवै वैगड, मांणक रूप मलाल कीयै ।

—किसनजी घघवाडियो

मलावण—देखो 'मळेवण' (रू भे )

मालवधसी—वि०—१ मल को दूर करने वाला । (जैन)

२ कर्म रूप मल को दूर करने वाला । (जैन)

मलासय—स० पु०—मल का स्थान, मलाशय ।

मलि—देखो 'मैल' (रू भे )

उ०—निय नांम सीत जाळें वण नीला, जाळें नळणी पकी जळि ।  
पातिग तिण द्वारिका न पैसै, मांजियै विशु मन तणै मलि ।

—वेलि

मलिक—स० पु० [प्र०] (स्त्री० मलिका) १ बादशाह, सम्राट ।

उ०—कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्त्री अहिमद, दलइ दजण मद  
सुहृदवरो ।—ब स

२ शासक, अधीश्वर नवाब ।

उ०—पणि कथ्या एक पातसा स्त्री अकबर । जवू द्वीप माहइ

प्रवरत्तु छद्, ग्रन्थ पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहाभड  
खान, खोजा सर खिल साहणा, ते सधला करइ सेवा ... ।

—व स

३ बादशाही दरबार मे होने वाली एक उपाधि ।

उ०—किसा एक जे छद् राजाधिराज श्रीमहिमूद पातसाह । खान  
खोजा मलिक मीरुवरा मलाणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवाय-  
मान ।—व स

रु० भे०—मलिक ।

मलिका—स० स्त्री० [अ० मलिक] १ बादशाह की वेगम, साम्राज्ञी ।

२ किसी राजा की रानी, महारानी ।

३ देखो 'मलिका' (रु भे)

रु० भे०—मलका ।

मलिच्छ—देखो 'मलेच्छ, मलेछ' (रु भे)

मलिन—स० पु० [स०] १ अपराध, पाप, दोष ।

२ रत्नों का एक दोष जिसके कारण वे धुंधले पड़ जाते हैं ।

३ मट्टा, तक्र । ४ सोहागा ।

५ चन्दन, अगर । ६ गौ का ताजा दूध ।

७ हस । ८ दस्ता, मूठ, हत्था ।

९ नखरा ।

वि०—१ जो मल से युक्त हो । २ अपवित्र, गदा, मैला ।

३ जो दिल का काला हो, पापात्मा, पापी ।

४ दुष्कर्मी, नीच, बुरा ।

५ कान्ति हीन, प्रकाशहीन, मद ।

६ मेघाच्छन्न, अन्धकारमय, धुंधला ।

७ उदास म्लान । ८ दोष युक्त दोषी ।

रु० भे०—मलीण, मलीन ।

मलिनता मलिनाई—स० स्त्री०—१ मलिन होने की दशा, अवस्था या  
भाव । २ अपवित्रता, गदगी, मैल ।

३ उदासी । ४ फीकापन ।

५ क लापन ।

६ धोष, खराबी । ६ पाप ।

रु० भे०—मलीनता ।

मळियागर, मळियागरि, मळियागरी, मळियागिर, मळियागिरि, मळिया-  
गिरी—देखो 'मळयगिरि' (रु भे) (अ मा)

उ०—१ साग साळ मळियागरी, वळि नाळेर विदाम । सोपारी  
खिरणी सरस, हेम हवा तिहि ठाम ।—गजउद्धार

उ०—२ श्रीखंडू का डबग समीर सैं भोला खावैं । मळियागिर के  
भोळैं भूलि पखेसर मिंगधर भुजग भावैं ।—सू प्र

उ०—३ मळियागिरी मभार, हर को तर चदण हुवैं । सगत लिये  
सुधार, रुखां ई ने राजिया ।—किरपारांम

मळियाचळ—देखो 'मळयाचळ' (रु भे)

उ०—विश्व सुवासित होय जिकै मुख बास ह । मळियाचळ महकत

वसत विलास ह ।—वा दा

मळियातर—देखो 'मलैतर' (रु. भे.) (ह नां मा)

मलियेच—देखो 'मळेच्छ' (रु. भे.)

उ०—मलियेच सुणी यम सूर मर्तों । तिण धूपर नाळ दियों  
त्रवर्तों ।—पा प्र

मळियोडो—भू० का० कृ०—१ मालिश किया हुआ, उबटन किया हुआ.

२ लेपन किया हुआ, पोता हुआ ३ किन्ही दो वस्तुओं अथवा

अगों को परस्पर रगड़ा हुआ, मसला हुआ ४ हाथ फेरा हुआ.

५ मर्दन किया हुआ, हनन किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ कुचला

हुआ, नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ ८ मरोड़ा हुआ,

ऐंठा हुआ ८ पीसा हुआ ९ देखो 'मळियोडो' (रु भे)

(स्त्री० मळियोडो)

मलियो—स० पु०—१ वदर । (उदयपुर)

२ देखो 'मल्ली' (अल्पा, रु भे)

मलींदो—देखो 'मलींदो' (रु भे)

मळी—स० स्त्री०—१ जस्ते का फूला जो गुलाब जल में घोट कर आखों  
में डालते हैं आखों की दवा विशेष ।

२ आफत, बला । (जेसलमेर)

मली—स० स्त्री०—१ ऊन भरने की बड़ी बोरी ।

२ देखो 'मैल' (रु भे)

मलीआगिरि—देखो 'मळयगिरि' (रु भे)

उ०—ए चदनकाठ किहा नीपनु मलीआगिरि परवति, माहा  
मसवाडि ।—व स

मलीच—देखो 'मलेच्छ' (रु भे)

उ०—पण उण मलीच जीव सू वत्ता च्यार रिपिया देवणी नी  
भावैं । वो यू ईं उपरवाडी कांम सारणी चांवती हो ।—फुलवाडी

उ०—२ पण वा तो मलीच सुभाव री इण फूटोडा लोटा सू ईं  
धकावणी चावैं ।—फुलवाडी

उ०—३ कूजडी री पंगवास देखनै सेठाणी मन मे सोच्यो के वा  
मूजी घणी है । इत्तो नफी व्है तो ईं यू मलीच री गळाई रेंवैं ।

—फुलवाडी

मळीचो—स० पु०—एक प्रकार का घास, जिसके बीजों का व्रत, उपवास  
के दिन शाकाहार के रूप में हलवा बनाकर खाते हैं ।

रु० भे०—मणचो, मणछो, मणीचो ।

मळीजी—स० स्त्री०—बलाय, आफत ।

मलीण—देखो 'मलिन' (रु भे)

उ०—१ मन्त्री मूढ़ मलीण, चाकर चोर सभीत चित । हलकारा

सुध हीण, पैलां घर वाछे पिसण ।—वां दा

उ०—२ सैदां उच्छव सांपना, मुगला वदन मलीण । दिल्ली अति  
चाळी दरस, पुर सोचियो प्रवीण ।—रा रु

२०—३ नर मुव दे नाराय कट, कमर चलै नुर भीर । माव-  
हिपो महिना नगी, मारै रोज मलीन ।—रा. दा

मनीषा—म० पु०—नद्रपा । (ना मा)

मनीषा—न० पु० [पा० मनीष] १ चूरमा नामक साय पदार्थ ।

२ उत्तम प्रकार के साय पदार्थ एवं मिष्टानादि के लिये प्रयुक्त शब्द ।

उ०—ऊर्चा हापी घोडा नी जातो रे, घणा मेवा मलीदा खातो रे ।  
—जयवाणी

र० भे०—मलीदी ।

मलीन—देगो 'मनिन' (र० भे)

उ०—१ विमयार्नद मलीन विकारा, यह मान्या सो जुग जुग  
हारा ।—सी मुखरामजी महागज

उ०—२ मूमण पृथ्थे मूम मू, काहे मुख्य मलीन । का गांठी सें गिर  
पटपा, पा काहू को दीन ।—धजात

मनीषता—देगो 'मनिनता' (र० भे)

मनीषमुग—वि०—जिमया वेहरा उदाम हो, विप्र चित्त ।

मनीषा—देगो 'मनिता' (र० भे)

मनीषमुच—देगो 'मनिमुच' (र० भे) (ह नां मा)

मनीषम—म० पु०—१ लोहा ।

२ पाप । ३ मनिन, मिला । ४ पापी ।

मनीषागर—देगो 'मनिषगिर' (र० भे)

उ०—सग रो मुगय इनी लयावैं छै जाणैं मलीषागर नैं भेट हर  
पवन पावैं छै ।—पना

मनीषा—म० पु०—विधियों में, घर को छोड़ा जाने वाला एक छपा  
रूपा गस्त्र विशेष, जो गंगाई का प्रतीक होता है ।

मनीषा—म० पु० [म० गुडू] १ मुषक ।

उ०—तरैं शोकरो पण्यो—घठें तळाय माहे नीवो मोमाळोत कवर  
पण मो चापीस सारीया मलूक लिया भूजैं छै । तिणु रो सुवास  
छै ।—पंगनी

२ बादशाह, राजा ।—रेग ।

३ छोटा, घट्टा ।

उ०—पाय घटी जाजन पण, जिकें महज मळ जाय । कमि मलूक  
गदरा लिया, दसटा हादर घाय ।—मू प्र.

४ बंदर । ५ पुत्र, पुन ।

उ०—विषह बरप्र पणटा, विषह बरप्र पाण । कजर हुपदी  
पुषिया, जाण मलूकी पाण ।—गु र व

६ तब प्रकार का पपी विशेष ।

७ तब प्रकार का बीटा ।

८ छतर, पैटा ।

९ तब कल्ल बढी मंग्या । (बीड शास्त्र)

वि०—१ काल, मुकुमार, ताड ।

उ०—१ पण हाथ मलूक ज पकजय । गुणि छत्तिय गात विन्दै  
गजय ।—वचनिका

उ०—२ इसी इसी खोडस बरसां री मुगघा मघ्या प्रोडा रूप री  
निधान । जाका मलूक हाथ-पांव । जघा कदळी की ग्रम । बांह  
चंपा री डाळ । सिध सी कमर । कुच नारगी ।—रा. सा. सं

२ सुन्दर, मनोहर, मनोरम ।

३ मुलायम, नरम ।

र० भे०—मलूक ।

मलूक—मलूकी ।

मलूकजादी—म० पु०—शाहजादा, राजकुमार ।

उ०—उवैं कामणी घणैं किसनागर कस्तूरी श्रबर अतर सांधे सू  
गरकाव हुई थकी उवा राजा रा मलूकजादा रा मन राखती थकी  
लोटा पोटा हुई रही छै ।—रा. सा. सं

मलूकी—म० पु०—१ नरसिंह चौदस के रोज हरिणकश्यप का वेप  
करने वाले का सम्बोधन ।

२ देखो 'मलूक, मलूक' (अल्पा, र० भे)

मलेच्छ, मलेछ—म० पु० [म० मलेच्छ] (स्त्री० मलेच्छणी, मलेछणी)

१ आर्य सस्कृति के अनुसार मनुष्य की वे जातिया या वर्ग जिनमें  
वर्णाश्रम धर्म न हो, शूद्र ।

उ०—१ जिसो अग्नि माहि उचिस्ट होम करै छै । कि जिसो  
सालिग्राम सूद का ग्रह कै विखै । कि जिसो मलेछ के मुखि वेदमय ।  
—वेलि टी.

उ०—२ आगे कोई गुजराती लोक भील मलेछ रहैता सु सारा  
दूर कीया ।—नैणसी

२ यवन, मुसलमान ।

उ०—१ पढावो कुराण छाछा बणावो मलेछ पाता । समापा  
जागरी लाख लाख सख रो सामान ।

—गोकुलदास सत्तावत री गीत

उ०—२ वो दातार है, सूरवीर है, दोनू पख ऊजळा है, मनें  
मलेछ मुसलमाना रो चाकर नहीं । मुसलमानां सू सगारय नहीं ।

—वी स टी

३ अनार्य । ४ जाति बहिष्कृत । ५ ताया ।

६ मल्लपट्ट या जगलियों की तरह बोलने की क्रिया ।

वि०—१ निग्रह, नीच, हीन, हेय ।

उ०—अमृदा मलेछा बली मय लोटा, जियां चक्खु चुंत्ता तुल्पा  
गान गोटा ।—घ व य

२ गदा, मंदा ।

३ मल्लपट्ट या जगलियों की तरह बोलने वाला ।

र० भे०—मलेच्छ, मल्लिच्छ, मलीच ।

मलेछणी—वि०—१ मुसलमान की, मुसलमानी, यवनो की ।



उ०—कमध स्याम कामय जुटै अरद्ध जामय । मुहै घडा मलेछणी,  
विचार धार भज्जणी ।—रा रू  
२ मलेछ की, मलेछ सम्बन्धी ।  
३ देखो 'मलेछ' (स्त्री०)

मलेछमुख—स० पु० [स० मलेछ+मुख] तावा नामक प्रसिद्ध घातु ।  
(अ मा, ह ना मा)

मलेरिया—स० पु० [अ०] एक प्रकार का ज्वर जो वर्षा ऋतु के मच्छरों  
के काटने पर फैलता है ।

मलेवण—देखो 'मेलण' (रू भे.)

मलै—देखो 'मलय' (रू भे)

उ०—मलयाचल सुतनु मलै मन मोरै, कळी कि काम अकूर कुच ।  
तणो दखिणदिसि दखिण त्रिगुणमै, ऊरध सास समीर उच ।

—वेलि

मलैअद्र—देखो 'मलयगिरि' ।

उ०—अटा टोप वना री चनणा कीधा मलैअद्र, सभु नळै ऊजळै  
वचाळै राणा सैण । दीपै मानताळ हसा मडळी नवास दीधा,  
कवदां मडळी लोदा दुसरा 'कूभेण' ।—कविराजा वांकीदास

मलैगिरि, मलैगिरि—देखो 'मलयगिरि' (रू भे)

उ०—१ राजा दूजो मूळराज, दिखणाता दळ लोप । अडर मलैगिरि  
कावियो, सुरपत जेम सकोप ।—वा दा.

उ०—२ ओपम दुती मलैगिरि आणें । जळ अपियो हणु कपि  
जाणें ।—सू प्र.

मलैतर, मलैतरि, मलैतर—स० पु० [स० मलय-तर] चंदन का वृक्ष व  
इस वृक्ष की लकड़ी ।

उ०—१ जेथ मलैतर मेखचा, गडै मलैतर मेख । जळै मलैतर  
ईंधणा, दळचाळक रो देख ।—वा दा

उ०—२ दिसि निहग वूग उहुँ दवग, अगन बाण उहुँ बहत ।  
आवत मलैतर उड्डिया, अहिक पख मिएण सजुगत ।—गु रू व

उ०—३ ऊकडा मिडि दुहु कडा आणि । जडकिया मलैतर नाग  
जाणि ।—सू प्र

रू० भे०—मलयातर, मलियातर ।

मलैयद्र—देखो 'मलय' (रू भे)

उ०—ऊमा तात अदु हेम पवै मलैयद्र ईस, देवताळ वध दाणु  
छुटीया दताळ । काम ब्रह्म जात सो कहांणां वीच च्यार कूटां, प्रत-  
पे छ भना पाळ राणा छटी पाळ ।—कविराजा वांकीदास

मलोमलो—क्रि० वि०—जवरदस्ती से, बलात् ।

उ०—तठै पातसाहजी री हुकम हुवी के अमरसिध जाणें नहीं पावै  
अरु अमरसिधजी मलोमली नीसर गया ।—द दा

रू० भे०—मलामली ।

मलो—स० पु०—जगल की कटीली झाड़ी ।

मलिकयत—देखो 'मिलिकयत' (रू भे)

उ०—सो ऊ पकडियो आयो थो सो छोड दियो उण री माल  
मलिकयत बहाल राखी ।—नी प्र

मल्ल—स० पु० [स०] १ एक प्राचीन जाति ।

वि० वि०—इस जाति के लोग द्वन्द्व युद्ध में निपुण होते थे ।

२ द्वन्द्व युद्ध करने वाला योद्धा ।

उ०—सेल घमेडा सल्ल पडै मल्ला प्रति मल्ला । मल्ला मल्ला  
भणै ऊगता भडा अमल्ला ।—ऊ का.

३ योद्धा, वीर, बहादुर ।

उ०—१ नमो मुर-मेघ-मरद्दण मल्ल । कसासुर काळ सखासुर सल्ल ।  
—ह र

उ०—२ कवि पंडित गायक कथक, मंत्री गज भड मल्ल । तो  
दरवार जिता तिता, जग चावा जेहल्ल ।—वा. दा

उ०—३ माम्ही मीर बलवकी मल्ल, मीर सैद पट्टाण मुगल्ल ।

—रा रू

४ एक प्रकार का युद्ध, द्वन्द्व ।

५ पहलवान ।

उ०—१ दोनू जणा राईकाणी री बात मानग्या । डोकरी माथा  
माथै ओढी उखणियां हालती री अर मल्ल मलापनै ढकणी रा  
टुककणा माथै चढ़ग्या । चढता ईं वूकिया ठोर नै भिडग्या ।

—फुलवाही

उ०—२ पंडित साला लेख साला भडारी कोठारी माडवीया मल्ल  
हस्ति तुरग रथ पायक टकसाली व्यायामकारक \*\* ।—व स.

६ एक सकर जाति ।

७ एक प्राचीन जनपद ।

८ मजबूत या ताकतवर व्यक्ति ।

९ प्याला, कटोरा ।

१० कपोल, कनपटी । ११ नैवेद्य ।

१२ अयोध्यापति राम के मंत्री सूज का पुत्र ।

१३ धर्म के सात पुत्रों में से एक ।

१४ मल्ल देश के रहने वाले का सम्बोधन ।

१५ एक राक्षस ।

वि०—१ बलवान, ताकतवर ।

२ मजबूत, दृढ़ । ३ कसरती ।

४ रीबीला । ५ अच्छा, उत्तम ।

रू० भे०—मल । मह०—माल ।

मल्लक—एक व्यवसायिक जाति ।

उ०—कणकार वेस्याकार, चरमकार मल्लक खलक धान्यखलक  
वाटक बाटिका बापी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर ।—व स

मल्लखभ—देखो 'मलखभ' (रू भे)

मल्लजुध, मल्लजुध—देखो 'मल्लयुद्ध' (रू भे)

उ०—जुडित एक जोरदार, थोर भुज्ज डड ए । जेठी प्रचड ग्रीठ  
पिड मल्लजुध मड ए ।—गु रू व.



मल्लणी, मल्लबी—१ देखो 'मलणी, मलबी' (रू. भे.)

२ देखो 'मिलणी, मिलबी' (रू. भे.)

मल्लताळ—स० स्त्री०—संगीत में एक ताल ।

मल्लभूमि—स० स्त्री० [स०] १ मल्ल युद्ध का स्थान, युद्ध-भूमि ।

२ कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा ।

मल्लम—देखो 'मलम' (रू. भे.)

मल्लयुद्ध—स० पु० [स०] १ बिना किसी अस्त्र शस्त्र के दो योद्धाओं के बीच होने वाला युद्ध, द्बन्द युद्ध ।

२ कुश्ती ।

रू० भे०—मल्लजुघ, मल्लयुद्ध, मल्लजुघ, मल्लजुघ ।

मल्लयोद्ध—स० पु०—मल्ल युद्ध करने वाला योद्धा ।

उ०—चित्रक देसालिक मसूरिक अककार फलिहकार मल्लयोद्ध  
सह्यपाल बालवध अग्ररक्ष घोरमहर घनुरदर खड्गधर ... ।

य स

मल्लविद्या—स० स्त्री० [स०] कुश्ती लड़ने की विद्या ।

रू० भे०—मल्लविद्या ।

मल्लसाळा—स० स्त्री० [स० मल्लशाला] १ मल्लयुद्ध करने का स्थान ।

२ कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा ।

मल्ला—देखो 'माळा' (रू. भे.)

मल्लाखाडी—स० पु०—पहलवानों का अखाड़ा ।

उ०—रतनसेन राजा कहै रे, हु जीवू निरघार । मल्लाखाडे रण  
मुखें रे, रामति कउण प्रकार रे ।—प च चौ

मल्लार—देखो 'मलार' (रू. भे.)

मल्लारि—स० पु० [स० मल्ल + अरि] मल्ल नामक राक्षस के शत्रु कृष्ण,  
शिव ।

मल्लारी—स० स्त्री०—वसंत ऋतु की एक रागनी । (संगीत)

मल्लाह—स० पु० [अ०] नाव चलाकर आजीविका चलाने वाला, धीवर,  
माझी, केवट, नाविक ।

मल्लि—स० पु०—जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर ।

उ०—मल्लि जिनेसर तु माहामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल ।

पिता तणी पिण चित्ता पल्ल, सगला दूज किया अरि सल्ल ।

—घ व ग्र

मल्लिक—स० पु० [स०] एक प्रकार का हंस जिसके पाव व चोच कुछ  
भेले या घूमिल होते हैं । (वसंतराज)

मल्लिका—स० पु०—१ प्रत्येक चरण में एक रगण एक जगण अन्त में  
गुरु लघु सहित आठ वर्णों का वर्णिक छंद ।

२ चमेली ।

३ एक प्रकार का वेल, जिसे मोतिया भी कहते हैं ।

रू० भे०—मल्लिका, मल्ली ।

मल्लिकाक्ष—स० पु० [स० मल्लिका अक्षि] १ एक प्रकार का घोड़ा  
जिसके आँख पर सफेद धब्बे होते हैं ।

२ उक्त प्रकार के मण्डे धब्बे ।

३ एक प्रकार का हंस जिसके चरण व चोच भेले हो ।

मल्लिकामोद—स० पु०—ताल का एक मुख्य भेद जिसमें चार विभाग  
होते हैं । (संगीत)

मल्लिकारजुन—स० पु० [स० मल्लिकार्जुन] १ एक शिव विग जो श्री  
शैल पर प्रतिष्ठित है ।

२ एक राजा का नाम ।

उ०—राय पितामह अप्रतिगन्ध मल्लिकारजुन नरेश्वर गिर मरोड  
पूजा प्रसिद्ध प्रभातु ... ।—य ग

मल्लिजन, मल्लिनाथ—स० पु०—जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर ।

उ०—१ मल्लिजन मल्लिज री मुगति दातार ।—ग भु.

उ०—२ मल्लिनाथ उगणीगम साहू सहम चाचीम ।—घ य ग्र

मल्लिनाथ—स० पु० [स०] एक प्रसिद्ध मयूत टीकाकार जो १४ वीं  
शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुए थे ।

रू० भे०—मन्नीनाथ ।

मल्लियाल—स० पु०—एक देश का नाम । (प्राचीन)

उ०—अथध्या वणारमी चदेरी मल्लिवान महवर महोव हरियाणउ  
भयाणउ रतनपुर कामरु ओहियाण जाळधर ।—घ स

मल्ली—देखो 'मल्लिका' (रू. भे.)

मल्लीत—देखो 'ममलति' (रू. भे.)

उ०—सकै एम मल्लीत, प्रकट छम निर्य पठाणा । अम्हा उतन  
कर दियो, सोन गिरि वर सुरतांगा ।—सू प्र

मल्लूक—देखो 'मल्लूक' (रू. भे.)

उ०—मल्लूक पसम मुखमल कुमाच ।—सू प्र

मल्ली—स० पु०—१ व्यायाम हेतु उठाने का एक बड़ा पत्थर जिसमें  
खुदाई करके पकड़ने का हथ्था बनाया हुआ होता है ।

२ उक्त पत्थर को उठाने की क्रिया ।

वि०—मस्त, मतवाला ।

रू० भे०—माली ।

अल्पा०—मलियो ।

मल्लुडो—स० पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा । (कां. दे. प्र.)

मल्लणी, मल्लबी—देखो 'मल्लणी' मल्लबी (रू. भे.)

उ०—सावण री तीज पावामर रै हस ज्यू मल्लती यकी सुख भीन  
गात रग भप करती आई ।—कुवरसी साखला री वारता

मल्लणहार, हारी (हारी), मल्लण्यौ—वि० ।

मल्लिओडो, मल्लियोडो, मल्लोडो—भू० का० कू० ।

मल्लोजणी, मल्लोजबी—भाव वा० ।

मल्लपणी, मल्लपबी—देखो 'मलपणी, मलपबी' (रू. भे.)

उ०—१ मसतकि बाघें मोड, धारें भुज हिंदू घरम । मेछ घडा  
दिसि मल्लपिओ, 'रतनागिर' राठोड ।—वचनिका

उ०—२ तोय भरणि छटि ऊधमत मळयतरि, अति पराग रज घूसर अग । मधू मद स्रवति मद गति मल्हपति, मदीनमत्त मास्त मातग ।—वेलि

उ०—३ मारू-लक दुइ अगुळा, वर नितव उर मस । मल्हपद्द माऊ सहेलिया, मान सगेवर हस ।—ढो मा

उ०—४ मारवणी सिणगार करि, मदिर कू मल्हपति । सखी सुरगी साथ करि, गयगयणी गय गति ।—ढो मा

उ०—५ मल्हपियो रूप अघियामण, वहसतो ववाढतो । उरडती सुजड जडतो असुर, पांच हजारी पाढतो ।—सू प्र मल्हपणहार, हारी (हारी), मल्हपणियो—वि० ।

मल्हपियोडो मल्हपियोडो, मल्हप्योडो—भू० का० कृ० ।

मल्हपीजणो, मल्हपीजवो—कर्म वा० ।

मल्हपियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मल्हपियोडो)

मल्हपणो, मल्हपवो—देखो 'मलफणो, मलफवो' (रू भे)

मल्हपियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मल्हपियोडो)

मल्हम—देखो 'मलम' (रू भे)

मल्हाण—स० पु०—पडाव ।

उ०—१ दोयज छळि वळ दखण, खीटावण खुरसाण । दीनो आवं दखणिऐ, कटक कोस मल्हाण ।—गु रू व

मल्हाणो, मल्हावो—स० पु०—१ मस्ती मे भूमना, भूमते हुए चलना ।

२ विध्वंस करना, नाश करना, अस्त-व्यस्त करना ।

उ०—पिलगि महारिण पोढियो, काळो भला कहाय । जस जोवण साजै 'जसो', मणिमय फोज मल्हाय ।—हा भा.

३ मलार राग गाना, अलापना ।

उ०—कवण देसतइ आवियां, किहां तुम्हारउ वास । कुण डोलउ कृण मारवी, राति मल्हाया जाम ।—ढो मा

मल्हाणहार, हारी (हारी), मल्हाणियो—वि० ।

मल्हायोडो—भू० का० कृ० ।

मल्हाईजणो, मल्हाईजवो—कर्म वा० ।

मलाणो, मलावो—रू० भे० ।

मल्हायोडो—भू० का० कृ०—१ मस्ती मे भूमा हुआ, भूमते हुए चला हुआ २ विध्वंस, नाश या अस्त व्यस्त किया हुआ ३ मलार राग गाया हुआ, अलापा हुआ (स्त्री० मल्हायोडो)

मल्हार—वि०—१ प्यारा, प्रिय ।

उ०—अवम लाछन सुखकार रे, स्त्रीस्त्रीयास मल्हार रे । सत्यकी उरि अवतार रे, रुकमणि नउ भरतार रे ।—स कु

२ देखो 'मलार' (रू भे)

उ०—१ ढाढी गाया निसह भरि, राग मल्हार निवाज । च्यार पहर ऋढ माडियउ, घण गुहिरइ सुरगाज ।—ढो मा

उ०—२ कह्यो—मल्हार आलापी, ताहरा मल्हार आलापतां मेह आयो ।—सयणी री वात

उ०—३ मोरा विन डूगर किसान, मेह विन किसान मल्हार । तिरिया तिरिया विन तीजा किसी, पिव विन किसान सिंगार ।—अज्ञात

मल्हारणो, मल्हारवो—क्रि० स०—१ मल्हार राग गाना, अलापना ।

२ सुमिरन करना, भक्ति करना ।

उ०—नामिराय कुल सिर तिलो, मरुदेवी मात मल्हारी रे । लछन ब्रखभ सोहामणो, युगला घरम निवारी रे ।—स कु

मल्हारणहार, हारी (हारी), मल्हारणियो—वि० ।

मल्हारियोडो, मल्हारियोडो, मल्हारयोडो—भू० का० कृ० ।

मल्हारीजणो, मल्हारीजवो—कर्म वा० ।

मल्हारियोडो—भू० का० कृ०—१ मल्हार राग गाया हुआ अलापा हुआ २ सुमिरन किया हुआ, भक्ति किया हुआ

(स्त्री० मल्हारियोडो)

मल्हावियो—स० पु०—एक प्रकार का घोडा ।

उ०—तुरगी ऊधसीया नीधसीया डाटकीया, डोटकीया, खेलविया, मल्हाविया लडाविया पुलाविया मरला तरला छोटकरणा एकरणा ।

—व स.

मल्हिम—देखो 'मलम' (रू भे)

मल्हियोडो—देखो 'मल्हियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मल्हियोडो)

मवड—स० स्त्री०—मनोती । (उ र)

मवक्किल—स० पु० [अ० मुवक्किल] १ वह व्यक्ति जो अपना मुकद्मा किसी वकील को सौंपता है, वकील का आसामी ।

२ देवता, फरिश्ता ।

३ अपना कार्य किसी को सौंपने वाला व्यक्ति ।

मवक्ष—स० पु०—पाडल नामक वृक्ष । (अ मा.)

वि० वि०—देखो 'पाडल' ।

मवड—देखो 'मोर' (रू भे)

उ०—सावणिये री तुळछां पान-दो-पान, भादूडे च्यार पान हो राम । आसोजा में तुळछा मवड ज काडया, काती व्याव रचावो हो राम ।—लो गी

२ देखो 'मोड' (रू भे)

उ०—मवड ज वाघी मारवी, आइ अवतरी पेट । पूरे मामे पदमणी, जनमी रतन ज पेट ।—ढो मा

३ देखो 'माता' (मह, रू भे.)

मवडो—देखो 'मोडो' (रू भे)

उ०—रामलै वूटी-रै नसै मे, एक सोट जमाय दियो अर गुदहो पकड'र घीसतै-धीमतै घोरी मवडै सू वारै काड दी ।—वरमगाठ

मवजूद—देखो 'मोजूद' (रू. भे)

उ०—तपावो राख ज्यू पूठ री कारी करा। जिसड़े तपाइ अर  
मवजूद दियण न हुया तिसडै सीपो मुहत्तो बोलियो।—द वि.

मवताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे)

उ०—१ सिरी घटियाळ अरोहित सेर, सस्यां मवताहळ माळ  
सुमेर।—मे म

उ०—२ हाथ्यां मवताहळ गग हिलोळ, छिल्ल रप्रघार सरस्वति  
छोळ।—मे म

मवर—देखो 'मौर' (रू. भे)

उ०—दीजै तिहा डक न दड न दीजै, ग्रहणि मवरि तर गानगर।  
करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गध मकरद कर।—वेलि

मवरणो, मवरवो—देखो 'मोरणो, मोरवो' (रू. भे)

उ०—सीत काळ उत्तरै, अथ मवरै रित प्रागम, रस प्रायो तरवरै,  
अयो मवरै सुर सगम।—रा रू

मवरणहार, हारो (हारी), मवरणियो—वि०।

मवरिओडो, मवरियोडो मवरघोडो—भू० का० कृ०।

मवरीजणो, मवरीजयो—भाव वा०।

मवरात—स० स्त्री०—पुण्य।

उ०—खैरात मवरात सो पुण्य पवित्र पुण्य दान री राह करणो  
बादसाहा दोलतमदा रै सिर भार छै।—नी प्र

मवरित—देखो 'मोरियोडो' (रू. भे)

उ०—मवरित रूख छै। एही तो लेखागर हुमा अर भमर छै  
एही उगाहा हुमा।—वेलि टी.

मवरियोडो—देखो 'मोरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० मवरियोडो)

मवसर—देखो 'मोसर' (रू. भे)

उ०—द्रुम समूह सम सोभा सुंदर, मुरघर-पत दीठो मडोवर। मव-  
सर तिकां कुसम फळ मजर, साख प्रसाख सरूप सुरतर।—रा रू.

मवसी—१ देखो 'मोसी' (रू. भे)

२ देखो 'मवेसी' (रू. भे)

मवाव—स० पु० [अ०] १ घाव से निकलने वाला पीव।

२ सामग्री, सामान।

१ मसाला। ४ प्रमाण।

मवेसी—स० पु० [अ० मवेशी] गाय, बैल, भैंस आदि चौपाये जानवर,  
पशु घन।

उ०—दरवार री फतै हुई। अरु नदी सतलज ताई मासूल साभी।  
वा पानचराई मवेसी री वा दाळ बछेरघारी जोइया खनै सू उदे  
भांणजी लेता रया।—द दा

रू० भे०—मवसी।

मवेशीखानी—स० पु०—१ मवेशियों को रखने का बाड़ा, वह स्थान  
जहां पर मवेशी रखे जाते हैं।

२ कसल या सामाजिक सम्पत्तिकी हानि पहुचाने वाले, घाजाद छोटे  
हुए मवेशियों को पकड़कर रखने का सरकारी बाड़ा या मकान।

वि० वि०—देखो 'काटक' (३-४)

मवोड़—१ देखो 'मोड़' (रू. भे)

२ देखो 'मसोड़' (रू. भे)

मसजर—सं० पु०—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

उ०—१ पाटवर पहरत, मूफजर बाफ मसजर। जम दाटा नमि  
जहित, कटा जडिया जर कवर।—गु रू वं

उ०—२ रतनकायल, चीर, सोनडरी पामरी गोरोदक गासा अघो-  
तरी नरमानो मुसमुल मसजर चीणी बिलीदी जरबाक।—

—व स

मसत—देखो 'मस्त' (रू. भे)

उ०—मदगळत जूह मंगल मसत, मिंगगार सटा किय सदोमस्त।  
वरियांम विडोवा वट वडत, जमदूत जोष सिलहा जटत।

—गु रू. व.

मसद—स० पु०—१ मामत।

उ०—माथो मूछ मुडाय मसदा पोही पतिमाह मित्या ले पेय।  
फळक अकेक सबै गुळ लागी, निबळक 'अरजन' हरी नरेग।

—राव भोज हाटा री गीत

२ राजा।

उ०—१ नेत उघो नागद्रही, मेयाडो मसद जी। आहाडो रूमाणो  
ओपे, निहुर नरिदजी।—गु रू व

उ०—२ मछरियो राउ मारु मसद। रामण सीस जिम रामचद।  
गरजियो विडण दूजो 'गमैव', मारिवा त्रिपुर किरि महादेव।

—गु रू. व.

उ०—३ अतुळीयळ षटु मेल्हिया आहचद, महरत गिर साभिया  
मसद। प्रभु तिण घमड किया पइसारइ, दळ मेळे आबिया नरद।

—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'मसनद, ममनद' (रू. भे)

उ०—१ चटि मसद वैसि इम कहै चीज, फुण देस नगर पूरव  
कनौज। निज घणो कमण जयचद नरेस, दे भेजै कुछ फुरमाण  
देस।—सू प्र

उ०—२ तिसीहीज विद्यायत ऊपर रा गाव-सकिया, बगल-तकिया,  
गोदवा वादला पास्वा मसद ऊपर पडिया छै।

—जगदेव पंवार री बात

मसदी—वि०—सामन्तो की।

उ०—साह बइण सोहिया, सभा मसदी सज। चद दिपधा वेखिया,  
जाण नखत्रा मज्झ।—गु रू. व.

२ देखो 'मसनदी' (रू. भे)

मसघ—स० पु०—सीमा, हद्द।

उ०—ऊगमणी मसघ बारै घरती कोस सो-तीन ताई प्राण बरतै।

—कहवाट सरवहिये री बात



मवजूद—देखो 'मोजूद' (रू. भे)

उ०—तपावी राछ ज्यू पूठ री कारी करा । जिसहै तपाइ अर मवजूद दियण नृ हुया तिसहै सीपो मुहती बोलियो ।—द वि.

मवताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे)

उ०—१ सिरी घटियाळ अरोहित सेर, सख्या मवताहळ माळ सुमेर ।—मे म.

उ०—२ होध्या मवताहळ गग हिलोळ, छिल्लै रत्नधार सरस्वति छोळ ।—मे म

मवर—देखो 'मोर' (रू. भे)

उ०—दीर्ज तिहा डक न दड न दीर्ज, ग्रहणि मवरि तर गानगर । करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गध मकरद कर ।—वेलि

मवरणो, मवरवी—देखो 'मोरणो, मोरवो' (रू. भे)

उ०—सीत काळ उत्तरै, अब मवरै रित आगम, रस आयो तरवरै, भयो भमरै सुर सगम ।—रा रू

मवरणहार, हारो (हारो), मवरणियो—वि० ।

मवरिओडो, मवरियोडो मवरघोडो—भू० का० कृ० ।

मवरोजणो, मवरोजवो—भाव वा० ।

मवरात—स० स्त्री०—पुण्य ।

उ०—खैरात मवरात सो पुण्य पवित्र पुण्य दान री राह करणो वादसाहा दीलतमदां रै सिर भार छ ।—नी प्र.

मवरित—देखो 'मोरियोडो' (रू. भे)

उ०—मवरित रूळ छै । एही तो लेखागर हुमा अर भमर छै एही उगाहा हुमा ।—वेलि टी

मवरियोडो—देखो 'मोरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० मवरियोडो)

मवसर—देखो 'मोसर' (रू. भे)

उ०—द्रुम समूह सम सोभा सुंदर, मुरधर-पत दीछो मडोवर । मवसर तिका कुसम फळ मजर, साख प्रसन्न सरूप सुरतर ।—रा. रू.

मवसी—१ देखो 'मोसी' (रू. भे)

२ देखो 'मवेसी' (रू. भे)

मवाद—स० पु० [अ०] १ घाव से निकलने वाला पीव ।

२ सामग्री, सामान ।

१ मसाला । ४ प्रमाण ।

मवेसी—स० पु० [अ० मवेसी] गाय, बैल, भैंस आदि चोपाये जानवर, पशु धन ।

उ०—दरवार री फतै हुई । अर नदी सतलज ताई मासूल साभी । वा पानचराई मवेसी री वा दाळ वछेरधारी जोइयां खनै सू उदै भाणजी लेता रया ।—द दा.

रू० भे०—मवसी ।

मवेसीखानी—स० पु०—१ मवेशियो को रखने का बाड़ा, वह स्थान जहा पर मवेशी रमे जाते हैं ।

२ फसल या सामाजिक सम्पत्तिको हानि पहुचाने वाले, आजाद छोड़े हुए मवेशियो को पकड़कर रखने का सरकारी बाड़ा या मकान ।

वि० वि०—देखो 'फाटक' (३-४)

मवोड—१ देखो 'मोड' (रू. भे)

२ देखो 'मसोड' (रू. भे.)

मसजर—सं० पु०—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष ।

उ०—१ पाटवर पहरत, सूफजर बाफ मसजर । जम दाहां नमि जडित, कडा जडिया जर कवर ।—गु. रू. व

उ०—२ रतनकांवल, चीर, सोनइरी पामरी खोरोदक खासा अघो-तरी नरमानी मुलमुल मसजर चीणी विलीदी जरबाफ "....." ।

—व स

मसत—देखो 'मस्त' (रू. भे)

उ०—मदगलत जूह मैंगल मसत, मिलागार खडा किय सदोमत । वरियाम विडोवा वड वडत, जमदूत जोध सिलहां जडत ।

—गु रू. व.

मसद—स० पु०—१ सामत ।

उ०—माथो मूछ मुडाय मसदा पोहो पतिसांह मिल्या ले पेस । फळक अकेक सबै फुळ लागो, निकळक 'अरजन' हरी नरेम ।

—राव भोज हाहा री गीत

२ राजा ।

उ०—१ नेत-वघी नागद्रही, मेवाडो मसद जो । आहाडो खूमांणो ओपै, निहुर नरिंदजी ।—गु रू. व.

उ०—२ मछरियो राठ मारु मसद । रामण सीस जिम रामचद । गरजियो विदण दूजो 'गर्गव', मारिवा त्रिपुर फिरि महादेव ।

—गु रू. व.

उ०—३ अतुलीवळ थट्ट मेल्हिया आहचइ, महरत गिर साकिवा मसद । प्रभु तिए घमठ किया पइसारइ, दळ मेळें आधिया नरद ।

—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'मसनद, मसनद' (रू. भे)

उ०—१ चडि मसद बैसि इम कहै चीज, कुण देस नगर पूरव कनोज । निज धणो कमण जयचद नरेस, दे भेजें कुछ फुरमाण देस ।—सू प्र

उ०—२ तिसीहीज बिछायत ऊपरा गाव-तकिया, बगल-तकिया, गीदवा वादला पास्वा मसद ऊपरै पडिया छै ।

—जगदेव पवार री बात

मसदी—वि०—सामन्तो की ।

उ०—साह वइण सोहिवा, सभा मसदी सज्ज । चद दिपंदा वेखिया, जाण नखत्रा मज्ज ।—गु. रू. व.

२ देखो 'मसनदी' (रू. भे)

मसध—स० पु०—सीमा, हद्द ।

उ०—ऊगमणी मसध वारै घरती कोम सो-सीन ताई प्राण बरतै । —कहवाट सरवहिये री बात

मस-स० पु० [स० मश] १ मच्छर, डास ।

२ गुजार, गुनगुनाहट । ३ क्रोध ।

[स० मस] ४ एक तौल विशेष, मासा ।

[स० मशक] ५ शरीर पर होने वाला छोटा काला चिन्ह ।

वि० वि०—कभी कभी यह ऊभर कर बड़ा भी हो जाता है ।

६ घोड़ा या बैल आदि का एक रोग ।

उ०—खुरफाड़ी फाटे, एक खुरी आगं बघ भावै, एही में मस, मुरचा कमजोर ।—फुलवाडी

७ देखो 'मस्ती' (रू भे)

[स० श्मश्रु] ८ मूख निकलने के स्थान की रोमावली ।

९ देखो 'मसि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ रैणू बिना खल्ला अरवदराव, घरा ताव कज भक घरै ।

ब्रन मस भेट करै कुकु ब्रन, कुकु ब्रन मस बरन करै ।

—भीमजी आसियो

उ०—२ कागळ नही क मस नही, नही क लेखणहार । सदेसा ही नाविया, जीवु किसइ आधार ।—डो मा

१० देखो 'मिस' (रू भे)

रू० भे०—मस्स ।

मसउ, मसक-स० पु० [स० मशक] १ मच्छर, डास । (उ र)

उ०—१ मसक समान 'कान्ह' कू मारथो, उदनवान जलजान उबारथो ।—मे म

२ एक विशेष प्रकार का चमड़े का थैला जो भित्तियों द्वारा पानी होने के काम आता है ।

उ०—दूध दही ए दोग मसक दुल्लामोजी अलवेल्यां री भागडली सिचावो जी ।—लो गो

रू० भे०—मसग, मसक ।

सं० स्त्री०—३ कलाई ।

उ०—माहें जगदेव आपरा कछणा सू भेरु नें अपूठी मसकां बाधियो नें थिरमा माहें गाठही बांधि काधो करि नें आपरें डेरें त्याया ।

—जगदेव पवार री बात

४ दोनो हाथों को पीठ पीछे लेकर कलाईयो को मजबूत बांधने की क्रिया ।

५ मसकने की क्रिया या भाव ।

६ किसी को मजबूती से बांधने की क्रिया या भाव ।

उ० घड़ी चार दिन चढ़तां सूअर सिकार खेल ऊटा ऊपर मसकां बांध पाछा घरा नू हालिया ।—कुवरसी साखला री वारता

मसकणो, मसकवो—क्रि० अ० [स०] सरकना, पसरना, फैलना ।

उ०—कसतूरी कडि केवडो, मसकत जाय महक्क । मारू दाडम फूल जिम, दिन दिन वनी डहक्क ।—डो मा

मसकणहार, हारो (हारी), मसकणियो—वि० ।

मसकियोडी, मसकियोडी, मसकयोडी—भू० का० कृ० ।

मसकीजणो, मसकीजवो—भाव वा० ।

मसकत-स० स्त्री० [अ० मशकत] १ मेहनत, मजदूरी, परिश्रम, परिश्रम से किया जाने वाला कार्य ।

उ०—जु घडसी आप चतुर थो, सु उठै किणहिका सिरदारां उमरावा रा वागा डेरें वैठो सीवतो । वागै एक मसकत री लेतो ।

—नैणसी

२ सेवा, चाकरी, नोकरी ।

उ०—हाल दोग सू बाहिर नही छै जे दोरा हुवा अरण सुघरे तो भली बात छै ने कदाचित ढील होय तो कोई आकल उण नू आलसी नहीं कहै ने उण री आंगमण मसकत सारां ऊपर जाहिर होय ।—नी प्र

३ योग्यता ।

रू० भे०—मसकित, मसकत ।

मसकर-स० पु० [स० मस्कर] १ वांस । (ना मा., ह ना. मा)

२ ज्ञान ।

स० स्त्री०—३ वासुरी, वशी । (अ मा)

४ गति चाल ।

५ पोली या थोथी लकड़ी ।

मसकली-स० पु०—छुरी, चाकू आदि शस्त्रों पर धार देने का पत्थर ।

उ०—जन हरीया सतगुर इसा, जिसा कमागर होय । सबद मसकला फेर करि, दाग न रखै कोय ।—हरिरामदासजी महाराज

मसकरि, मसकरी—देखो 'मसखरी' (रू भे)

उ०—१ पूठै कछवाहा मसकरी करणें लागिया—जे इण रं भरोसे इतरा दिन निकम्मा रह्या ।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

उ०—२ रजपूता निराठ मन्हा कियो । जे बडा सरदार असी कोई कहै नहीं छै । कूडी सू तो रामत मसकरी सांची सू गाळ छै ।

—भाटी सुंदरदास धीकूपुरी री वारता

मसकरी—देखो 'मसखरी' (रू भे)

उ०—१ सीस अमोलक अजबया, दीन्हा सोहबी ठोर । जन हरिदास मन मसकरा, मन की उल्टी दोर ।—ह पु वा

उ०—२ टेर-समझ सठ आतम ग्यान अग्यानी । माया वादी गूढ मसकरा मूढ़ महा अभिमानो ।—ऊ का

मसकित—देखो 'मसकत' (रू भे)

उ०—खिजमत करि कर जोडि खिजमत, आपन रीकें ओजाह ।

मोल दियै पिण मसकित माफक, मोटा री नही मौजाह ।—घ व. प्र.

मसकियोडी—भू० का० कृ०—सरका हुआ, पसरा हुआ, फैला हुआ ।

(स्त्री मसकियोडी)

मसकी-स० स्त्री० [स०] गूलर ।

वि०—मशक से पानी भरने वाला ।

मसकीन-वि० [अ० मस्की] १ प्रार्थी, विनोत, विनम्र ।

उ०—केतै खडे नवाज कू मसकीन गदाई ।—केमोदाम गाइण

२ दीन, असहाय, दरिद्र, गरीब ।

उ०—मसकीन लोक पामइ नहीं लेता धान लागइ धक्का । समय-सुंदर कहइ सत्यासीया, तइ कुमति दीधी तिका ।—स. कु.

३ सरल, सीधा-सादा ।

४ भिखारी । ५ त्यागी, विरक्त ।

रु० भे०—मिसकीन, मिस्कीन ।

मसक्कत—देखो 'मसक' (रु भे.)

उ०—मसक्कत सू कदे नहीं थाकै उण नू ही प्रथवी री चोकी री हिम्मत छै ।—नी प्र

उ०—२ याकूब लेस प्रथम हाल मे मरणांत भय खैचतो अराम न करतो मसक्कत सू एक दम टलतो नहीं ।—नी प्र

मसक्की—सं० पु०—रग विशेष का एक प्रकार का घोड़ा ।

उ०—डूंगरी मसक्की वेसि दीय, अइराक ततारी आरबीय । मुरमाणी मकुराणी खतंग, पतिमाह तणा छूटइ पवग ।

—रा ज सी.

मसखरी—सं० स्थी० [अ० मसखर + रा० प्र० इ] १ हमी मजाक दिलगी, ठठेली ।

उ०—चौधरी पगा पढतो कह्यो-म्हारा घणी । ओ मसखरी री मौकी नी है । आपने थार चढणी ई पढसी ।—फुलवाडी

२ किसी की अवहेलना या बेइज्जती के लिये की जाने वाली बात ।

उ०—१ कूजड़ी हसन बोली-सेठाणीजी थें काई म्हारी मसखरी करो हो । दो जणा विचें ई खावण रा पूरा बरतन कोनी ।

—फुलवाडी

उ०—२ काणिया काचर री वाता री की गिनरत करी नी ।

उणरी मसखरी करता बोल्या—थारो नांव काणियो काचर है तो ओ ई टगा री गुडो है ।—फुलवाडी

रु० भे०—मसकरि, मसकरी, मिसकरी, मिसखरी ।

मसखरी—वि० [अ० मसखर] हसी, दिलगी या मजाक करने वाला ।

सं० पु०—१ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला व्यक्ति ।

२ हास्य अभिनेता ।

३ विदूषक ।

रु० भे०—मसकरो, मिसकरो, मिसखरी ।

मसग—देखो 'मसक' (रु भे.)

मसगूल-वि० [अ० मसगूल] १ लीन, व्यस्त ।

२ किसी कार्य में लगा हुआ, प्रयत्नशील ।

उ०—जाहिरा म्हारें माहे काई रोब देखें छै सो कहज्यो उण रें मिटावणे मसगूल होऊ ।—नी प्र

मसजिद—सं० स्थी० [अ० मस्जिद] वह स्थान या भवन जहां मुसलमान लोग एकत्र होकर ईश्वर वदना करते हैं, नमाज पढ़ते हैं ।

रु० भे०—मजीत, मजीद, मसीत, मसीति, मसीद, मस्जिद, महजित, महजिद, महजीत, महजीद, महजीत महजीद, महजीत ।

मसज्जर—सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण, देवदुस्य वस्त्र, रत्नकवल पामही खीरोदक मसज्जर चीणी बुलबुल चसमा अत-लस .. ।—व स.

मसट, मसट्ट-वि० [सं० मष्ट] १ चुप, मोन ।

उ०—मिल्या धनतर नह मरै, रोम हूत रोगीह । गुरइ मसट रह तज गरम, भव गळ गो भीगीह ।—रेवतसिंह भाटी

२ सस्कार शून्य ।

३ भूला हुआ ।

४ ध्वंस होने की क्रिया या भाव, चूर्ण, नाश ।

उ०—जइ ऊबइ म्रिक्ख पडत जुभा, हैं पाए पहाइ मसट्ट हुआ । पति-साह पयाण पुर' किय असमानक अससणि ऊलटिय ।—गु. रु व

मसत—देखो 'मस्त' (रु भे.)

उ०—१ इण सोभा वपु तेज उफाणें, जीवन मसत कठीरव जाणें ।

—सू प्र.

उ०—२ मसत हसत बहु मोल द्वार धूमै खळदाहण । बाला हीसैं बाज वणें जाणें रविवाहण ।—बां दा.

उ०—३ मउरीया ब्रख मसत वसत मांणवा, चचळ वांण धनख सिर चाढ । रित रइ हाथ मालियइ रमतउ, आया खई वडइ अथ-गाढ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ मसत महीनो आवियो रे जला अब तो खबर म्हारी लेय ।—लो गो

उ०—५ हडहड हसत, मसत मदिरा मद, घड हड सेर घुवाई । चड चड चाव जोगण्या चोसट, घडघड भूमि घुजाई ।—मे म

मसतक, मसतक्क, मसतग—देखो 'मस्तक' (रु भे.) (अ मा)

उ०—१ तूं गैहली 'ऊदा' तणी, बोल न जाणें बोल । धुर लीना कोळू घणी, म्हारा मसतक मोल ।—पा प्र

उ०—२ अडियो जाय मसतक्क उरसि धूपर दिठ धारें । प्रचड नमाए लक प्रीळ आए उपरारें ।—सू प्र

उ०—३ मसतग पवित्र करिस मधुसूदन । वदै तूभ चरण जुग वदन ।—ह र

मसतपी, मसतफा—सं० पु० [अ० मुस्तफा] मोहम्मद साहब की एक उपाधि ।

वि०—१ पवित्र आत्मा, सत्पुरुष ।

उ०—महमद जेसा मसतपी, निवाज नमंदें ।—केसीदास गाडण २ शुद्ध, पवित्र, निर्मल ।

३ दुर्गुण रहित ।

मसताक—वि० [अ० मुस्ताक] उत्कृष्ट, उत्सुक ।

उ०—छक मसताक रूप अति छाजै । लख दुति सची उरबसी लाजै ।

—सू प्र

मसतानि—१ देखो 'मसतानी' (मह., रु भे.)



उ०—महमाय पूजा मान, महरग गज मसतान । कटि घट घोर  
किलाव, वणि चमर वध वणाव ।—सू प्र  
२ देखो 'मस्त' (मह, रु भे)  
उ०—महै कट तेग हुवै मसतान, खडै अगरेज रु नाहर खान ।

—सू प्र

मसताक—देखो 'मुस्ताक' (रु भे)

उ०—घाक पडै जिण अगि घरा, डाक वजै जिण दिन । छाक चडै  
जिण छत्रवट, नै मसताक सु मन ।

—प्रतापसिंघ म्होकर्मसिंघ री बात

मसती—देखो 'मस्ती' (रु भे)

उ०—मुकनी दुरद मलार, गळ डाग भरतै गयो । गाडर छोडि  
गलार, मसती फेरि न मडियो ।—शि व

मसनद, मसनद—स० पु० [अ० मसनद] १ विद्यायत, गद्दी, तकिया आदि ।

२ विद्यायत मे लगने वाला बडा तकिया ।

३ तकिया लगाने का स्थान ।

रु० भे०—मसद, मिसद ।

मसनदनसीन—वि० [अ० मसनद + फा० नसीन] १ मसनद पर बैठने  
वाला । २ अमीर, बडा आदमी ।

मसनदी—वि०—मसनद से युक्त ।

रु० भे०—मसदी ।

मसपूरज—स० स्त्री०—अस्थि, हड्डी ।

उ०—नदी सहस नाडियां प्रगट परवत मसपूरज स्तुत दिस पवन  
उसास, सकल लोयण ससि सूरज ।—रु

मसर-मसर—क्रि० वि०—मद गति से, धीरे धीरे ।

उ०—मसर-मसर ठोला दुखै छे पेट हाथ पगा मे फूटणीजी राज ।

—लो. गी

मसरी—देखो 'मिसरी' (रु भे) (डि को)

मसर, मसर—स० पु० [अ० मशहूर] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र  
विशेष ।

उ०—जरजरी मलबारी लाछरी अघोतरी अमरी गगापारी मोती-  
चूरि टमरु मसरु रत्नकबल छाइल मकबल अगल साउला उरसाला  
वाला पटुला वाकला ।—व. स

२ रेशम और सूत से बुना एक प्रकार का धारीदार वस्त्र ।

मसल—स० स्त्री० [अ०] १ कहावत, लोकोक्ति ।

२ समान, तुल्य ।

३ विषय, प्रसंग ।

[अ० सलहत] ४ सलाह, परामर्श ।

उ०—जटै कर मसल अगरेज आया जवर, दाटवां भहारां देर  
डुबी ।—सूरजमल आसियो

रु० भे०—मसलि, मसल्ल, मसल ।

५ देखो 'मिसल' (रु भे)

उ०—'अजै' विदा कीधो 'अमी', परखि कळा अणुपार । आठ मसल  
वळ आगळा, सकि दळ हुवा तयार ।—रा. रु

६ देखो 'मिसल' (रु भे)

मसळणी, मसळवी—क्रि० स०—१ दोनो हाथो को परस्पर रगडना  
मलना ।

उ०—१ जाई जोवन घन मसळै हाथ । जोवन जवि गिएइ दीह  
ने राति ।—बी दे

उ०—२ अबै वो पाणी में लारी करै तो कीकर करै । हाथ मस-  
ळतौ, मन मे कळपतौ वो निरीताळ उठै ई ऊभो रह्यो ।

—फुलवाडी

२ हाथ मे दबाते हुए रगडना, दवाकर रगडना ।

उ०—१ आख्या मसळतौ मसळतौ दैत ई वोत्यो—म्हारी ग्यान  
भोछो है, म्हारा सू घणी बोलणी नी आबै ।—फुलवाडी

उ०—२ खवासजी घडी घडी आख्यां मसळनै अर घडी घडी ठाडा  
पाणी सू आख्यां छाटनै टोळा सांमी देखता—काईं ओ सपनी तो  
नी है ।—फुलवाडी

उ०—३ मालवांनी भूमि, तिहाना नोंपना गोधूम, हाथस्यु मसल्या,  
घोइनइ दल्या ।—व स

३ जोर से दवाना, गूदना ।

उ०—पड पकवान प्रवाडा प्रमरथ, साहां सेन करै वोह सग । मैदा  
कटक महारस मसळै, जीम्हण रांण कियो रणजंग ।

—राणा खेता री गीत

४ रगडकर मारना, सहार करना, नष्ट करना, हनन करना ।

उ०—१ मरै नही भकमार तिकै जीवण नै ताता । मारै जूवा  
मसल रहै रगिया नख राता ।—ऊ का

उ०—२ जदी पचमार कहै मा'राज ईतरा दिन कौं डील कीधो ।  
पेली ही केता तो गोला है मसल नाखता ।—पचमार री बात

उ०—३ पाच गोळा'र दोय सेल लाग पछै, 'सदा' री 'सेर'  
पीरस सवायो । मसळतौ हाथिया धमल भरतौ मरद, 'अचळ' हर  
हर पाधरो 'कुमळ' आयो ।—पहाडखा आढो

५ मर्दन करना ।

उ०—केतकी मीर मसळै तुरी केवड़ा, रग बहै घरा मिरि रुधिर  
रातो ।—तेजसिंह मेखावत री गीत

मसळणहार, हारी (हारी) मसळणियो—वि० ।

मसळिओडी, मसळियोडी, मसळ्योडी—भू० का० कृ० ।

मसळीजणी, मसळीजवी—कर्म वा० ।

मिसळणी, मिसळवी—रु० भे० ।

उ०—हरिया वसं मसानं विच, किनी न वृभी वात । राम लिया वतलाय कं, ज्यु बाळक कु मात ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज मसारागल—म० पु०—एक प्रकार का रत्न विशेष ।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुष्पराग यच्च वैहृद्य सूरधकांत चक्रकांत नील महानील ईंद्रलील सवकर विभकर ज्वरहर रोग हर सुलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारागल हसगरवम पुलक अक अजन अरिस्ट चिंतामणि \*\* ।—व स  
रू० भे०—मसारी ।

मसारी—देखो 'मसारागल' ।

मसाल, मसाल—स० स्त्री० [अ० मसाल] १ पुराने समय का एक बड़ा चिराग, वत्ती ।

उ०—१ इतरे रात पड़ी, सारे बड़े ठाकुर कछो—ढेरी करो, मवारं गाढां रो घस लेस्यां, वासं जास्या जैमल घणो कस मांहे, कहै मलालां घणो करो, ममालां हाथियां ऊपर भालनं चढी, वासं गाढा रं खढी ।—नैगमी

उ०—२ यु बातां करतां थका पील मोत मगाई मसाल बोहडाई ।  
—जयसिंह धामेर रे घणो री वारता

उ०—३ अबक धुन अदग विकराळ रज घोम तम, ज्वाळ घस मसालां तोप ज्वाळा ।—महाराजा बहादुरसिंह री गीत  
वि० वि०—इसमें लकड़ी के डहे के सिरे पर लोहे की एक छड़ लगी रहती है । उस छड़ के सिरे पर कपड़ा लपेटकर गेंदनुमा बना दिया जाता है । उस पर तेल डालकर जला दिया जाता है । डहे का दूसरा सिरा हाथ में पकड़ने के काम आता है ।  
रू० भे०—मुसाल ।

मसालची—स० पु०—१ मसाल जलाने वाला व हाथ में लेकर प्रकाश दिखाते हुए चलने वाला व्यक्ति ।

उ०—गनीम सोचियो—जठं इत्ता मसालची है वठं फोज तो कुण जाणै किन्तीक हुवंला ।—वरसगांठ

२ राजघराने या घनी पुरुषों के घर दीपक जलाने का कार्य करने वाला सेवक, नोकर ।

उ०—१ तद लोक सरब ऊठि ऊभा हुवा । मसालची पीळ चोसा नं गया ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ तठा उपरायत ममालां हुई छै । दुसाखा हुवा छै । मसाल-चियां आण मुजरी कियो छै ।—रा. सा. स.

३ रसोई घर में मसाले पीसने का कार्य करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—मुसालची ।

मसाली, मसालेदार—वि०—जिसमें मसाले हों, मसालों से युक्त ।

स० पु०—अच्छे मसालों से युक्त स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन ।

मसाली—स० पु० [फा० मसालह] १ शाक-सब्जी या दाल में डाली जाने वाली नमक, मिरच, धनिया, हल्दी आदि वस्तुएं ।

२ मेवा, मिश्री तथा खट्टी-मीठी व सुगंधित वस्तुओं का मामूहिक रूप, जो पेय या खाद्य पदार्थों में मिलाया जाता है ।

उ०—होळै-होळै यो माग री पुट वत्ती भर केसर बिदागां री मसालो कम करतो गयो भर वानं ठडाई पावतो रत्तो ।—फुलवाड़ी

३ कई प्रकार की औषधियों या रसायनिक पदार्थों का मिश्रित रूप ।

उ०—चार जणा एकण मागं बोवाळ करनं रोवण लागा—म्हारी आम्हां फुटगी रे—भीटिया मसालो तेज घणो ।—फुलवाड़ी

४ वे वस्तुएं जिनके मिश्रण से कोई वस्तु तैयार होती है ।

५ किसी कार्य के लिये वांछित साधन, सामग्री ।

उ०—वि हजार तोप कठठी बडी, गोळमदाज फिरगरा । करि अजर फोघ कीया किलम, जबर ममाला जगरा ।—सू. प्र.

६ किसी विषय या लेख से सम्बन्धित आवश्यक घातें, सूचनाएं ।

रू० भे०—मुसाली ।

मसाहणी—स० पु० [स० महासाधनिक] १ राज्य के छुट्टाला का अधिकारी (प्राचीन) । (उ. र.)

उ०—१ सेना सह पूठइ-थिकी, सिग्गि सल्लहस्य प्रधान । भटारी वारी वत्तू, मसाहणी बहू मान ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ नायक दडनायक अगलेयक भाडागारिक सधिविग्रही साहणी मसाहणी पडसाहणी तलदग्गी दडाधिपति प्रतिहार आरक्षक कट्टवहक ।—व. स.

उ०—१ सूयार सूडकर मसाहणी मोठा वोना सरमतगुणा इसी सभा अनइ एतला देस तणउ अधिपति ।—व. म.

२ घोड़ों को शिक्षित करने वाला ।

रू० भे०—मसाली, महामसाली, महासाली ।

वि० [सं० दमशान—रा० प्र० ई] दमशान में जाकर तांत्रिक साधना करने वाला । (उ. र.)

मसि—स० स्त्री० [स० मसि, मपी] १ काली स्याही ।

उ०—१ धूलि नइ तिमरि अवर रोलिउ, सूरध विव मसि माहि कि धोलिउ । अस्वयार फिरतां नहु सूझइ, ए रणागणि किसि परि भूझइ ।—सालिसूरि

उ०—२ अहर रग रत्तउ हुवइ, मुख काजल मसि अन्न । जाण्यउ गुजाहळ अछइ, तेण न बूकउ मन्न ।—ढो. मा.

२ स्याही, इक ।

उ०—१ जन हरिदास मसकरि लागी, बहोडि मसी सू मसि घोवं । कालरि बाहे खेत, साह की पूजी खोवं ।—ह. पु. वा.

उ०—२ कागळ नही क मसि नही, लिखता आळस थाइ । कइ उण देस सदेसठा, मोलइ वडइ विकाइ ।—ढो. मा.

३ कालिख, कालिमा ।

उ०—वरिसइ मेघ अनइ राति अघारी, कुहीराव अनइ माहि कसारी, जवनी रोटी अनइ कागिड बोटी, कालि नइ मसि लाई ।

—व. स.

स० पु०—५ काजल ।

६ अघेरा । ७ निर्गुंठी का फल ।

न कृष्ण वरुं, काला, श्याम । \* (दि. को.)

रु० भे०—मस, मसी, मस्ती, मिस, मिसि ।

६ देखो 'मिस' (रु भे)

१० देखो 'मिस्ती' (रु भे)

मसिबिदु—स० पु०—काजल का छोटा टीका, जो बच्चों के नजर आदि से बचाव के लिये लगाया जाता है ।

मसिलत—देखो 'मसलत' (रु भे)

उ०—करि मसिलत प्रणाम करि, किरवर तोल करम्ग ।

—मा वचनिका

मसी—स० स्त्री०—ऊट, हाथी आदि पशुओं के झरने वाला मद ।

उ०—बिन्ह बिन्ह लाजा वध, कमळा दीरघ कथ । मसी भरै मदो-  
मत्त, वही कोसा विरत ।—गु रु व

२ देखो 'मसि' (रु भे)

उ०—जन हरिदास मसकरि लगी वहीडि मसी सू मसि घोंव ।

कालरि बाहे खेत साह की पूजी खोंव ।—ह पु वां

३ देखो 'मिस्ती' (रु भे)

उ०—अजन न घालै धाँख । मसी न लगावै दात ।—जयवाणी

रु० भे०—मस ।

मसीजणो—सं० पु०—मसिपात्र, दवात ।

उ०—पांच दोरा रे लेखणि पांच मसीजणा । वास कूपी रे काशी  
वारु वरतणा ।—स कु

मसीत, मसीति मसीद—देखो 'मसजिद' (रु भे)

उ०—१ मिदर, मसीता रा ऐ पथ ती अफडा है । ऐ घरम रा नी'  
अकरम भर अघरम रा परकोटा है ।—फुलवाडी

उ०—२ दादू यह मसीत यह देहुरा, सदगुरु दिया दिखाइ । भीतर  
सेवा बदगी, बाहर काहै जाई ।—दादूवाणी

उ०—३ वही मसीत ईदगाह वाली । रत सूवरां तणै रहुराळी ।

—रा रु

उ०—४ हिंदू थापै देहुरा, मुमलमान मसीति । पखा पखी जग  
पचत है, यही दुहु की रीति ।—ह पु वां

मसीन—स० स्त्री० [अ०] यत्र, कल ।

मसीह, मसीहा—स० पु० [अ०] ईसाइयों के धर्म गुरु महात्मा ईसा का  
एक नाम ।

मसु—स० पु० [स० मशक, प्रा० मसअ] मच्छर ।

उ०—अतर दीसइ एवह, किहां गरुड किहां मसु रे । अंतर दीसइ  
एवह, किहा गजनइ किहा ससउ रे ।—नलदवदती रास

मसुरी—देखो 'मसनद' ।

उ०—सुवारनी सोह भराय गाल मसुरा गादी गीठवा डोलणी ने  
चोवारे चढ़ाय डोली मारुणी दोन्यु पोढ़स्यां ।—सो गी

मसूही, मसूह—स० पु० [स० मसशु] दांतों की जड़ों पर जमा हुआ, मुह

के अन्दर का मांसल अंग, मसुहा । इससे दात मजबूती से जमे  
रहते हैं ।

उ०—१ विलाई रै कूटिया जिसा दात, मगर मच्छ री गळाई  
खुरदरा अर काठा मसूहा, जरख जैडी लपरका करती जीम\*\*\* ।

—फुलवाडी

उ०—२ की कस करैडै कूकरी, मुख नी भरते मास मसूह कि ।  
ममन हुवै ते स्वाद में, माहिली हानि न जाणै मूढ कि ।

—घ वं प्र.

रु० भे०—मसोही ।

मसूदी—देखो 'मसविदी' (रु भे)

मसूर—स० पु० [स० मसुर, मसूर] १ एक प्रकार का बिल्व अन्न,  
जिसका दाना चिपटा हुआ होता है तथा जिसकी दाल बनती है ।

उ०—मूग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर ।

—प च. चौ.

२ देखो 'मसूर' (रु भे)

रु० भे०—मसूरि ।

मसूरति—स० स्त्री०—सलाह, विचार, परामर्श ।

उ०—करी मसूरति देई सीखामण, नामजाद ल्यउ साथि । मारु-  
आडि ऊपरि सुरताणइ, बीडउ आप्यउ हाथि ।—का दे. प्र.

मसूरयो—स० पु० [स० मसूर+कन्] गोल तकिया ।

उ०—लाख दस लहै पलिंग सोडि तीस लख सुणीजै । गाल  
मसूरया सहस सहस दीय गिदूआ भणीजै ।—प च चौ

मसूरि—देखो 'मसूर' (रु भे)

उ०—महोरा मग, करहुआ मग, नीलूआ मग, तेहनी दालि,  
कान्हमी तूअरि मसूरि तेह तणी दालि ।—व स

मसूरिक—कर्मचारी विशेष ।

उ०—उपानहधर भ्र गारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक  
अककार फलिहार मत्सयोद्ध सस्या पाल ।—व स

मसूरिका—स० स्त्री० [स०] १ मसूर के दाने के बराबर की चेचक,  
छोटी माता ।

२ दूती ।

मसूरिया, मसूरीया—तकिया रख कर चलने वाला ।

उ०—१ आरक्षक कहुवहुक राज द्वारिक लेखक कथक वातगर  
कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय बह्कार—व स

उ०—१ अमात्य महामात्य सुहासोला उचित बोला दास दीकोला  
गादीया मसूरिया पुड पुडीया कांढडीया दीवारिक तलार " ।

—व स.

मसूरियो—स० पु०—१ जोधपुर के दक्षिण-पश्चिम की एक छोटी  
पहाड़ी जहाँ पर बाबा रामदेव का प्रसिद्ध मन्दिर है ।

उ०—महि मालम धान मसूरियो भोथ हूत सू । वेगडा पाल गउ  
वाहरु दम इक जेज म सू ।—पा प्र

२ स्थियो के पांव का एक आभूषण विशेष ।

मस्त-स० स्त्री०—१ मन को मसोसने की क्रिया या भाव, मन के भावों को बसाव् दवाने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'महमूस' (रू भे)

मसोड़, मसोड़ि—स० स्त्री०—सर्दी के बचाव के लिये, रजाई में अन्दर चादर डालकर अथवा दो चादरों को एक परत में करके, ओढ़ने के लिये तैयार किया गया विस्तर ।

उ०—१ थू मसोड़ कारी लेवै ऐ ? के काँचली री । थू घाँस कीकर ऐ ? के खू खू ।—फुलवाडी

उ०—२ तस ऊपरि मसोड़ि मोल दह लखै नीधी । अगर कुमम पटकल सेभ ककम पुट दीधी ।—प च चो

रू० भे०—मवोड़ ।

मसोड़ी—देखो 'मसूड़ी' (रू भे)

उ०—दात लांवा, जडियाँ उघडियोडा । काळा मसोडा । मसोडा रै पाखती दात ई काळा ।—फुलवाडी

मसोती—स० पु०—१ पाकशाला या रसोईघर का वह छोटा वस्त्र जो झाड़ने, पोछने या गर्म पात्र उठाते समय हाथ में रखने के काम आता है ।

उ०—विणियाणी मसोती में पकड़नै कांदा रै साग री घेगची लाई ।  
—फुलवाडी

२ लकड़ी का एक डहा जिसके एक सिरे पर छोटा मोगरा बना होता है । यह गन्ने के रस का मूल हटाने के काम आता है ।

रू० भे०—मसोती, मसोदी, मसोदी ।

मसोदी—१ देखो 'मसोती' (रू भे)

२ देखो 'मसविदी' (रू भे)

मसोसणी, मसोसवी—क्रि० स०—१ मारना, समाप्त करना, साम रोककर मारना ।

उ०—जद खिडकी खोल भीतर लिवाय गई चट वकरे नू मसोस राणै नू कही जे इण में प्रवेस कर बतावो ।

—नार्प सांखले री वारता

२ मन के आवेश, जोश, इच्छा या भाव को दवाना, रोकना ।

उ०—निद्रा मांही थकी मसोसे वादि चढी सिर ऊपर खेलै ।

—ह पु. वा

३ मन ही मन कुटना, रज करना ।

४ ँठना, मरोड़ना ।

५ तग करना, परेशान करना । ६ निचोड़ना ।

मसोसणहार, हारी (हारी), मसोसणियो—वि० ।

मसोसिओड़ी, मसोसियोड़ी, मसोस्योड़ी—भू० का० कृ० ।

मसोसोजणी, मसोसोजवी—कर्म वा० ।

मसोसियोड़ी—भू० का० कृ०—१ सास रोककर मारा हुआ, समाप्त किया हुआ २ मन के आवेश, जोश या भाव को दवाया हुआ, रोक

हुआ. ३ मन ही मन कुड़ा हुआ, रज किया हुआ ४ ँठा हुआ, मरोड़ा हुआ ५ तग किया हुआ, परेशान किया हुआ ६ निचोड़ा हुआ

(स्त्री० मसोसियोटी)

मसो—स० पु० [स० मशक, प्रा० मसग्र] १ मच्छर ।

उ०—१ जाणै फिरिया सीह रहइ सीयाल । मातग नइ जेम मस्त कमाल । चिट्ट पयै अरजन वाण छुटइ, सप्ताह माहिइ सर सीघ्र फूटइ ।—सालिसूरि

२ देखो 'मस्तो' (रू भे)

मसोदी—१ देखो 'मसविदी' (रू भे)

२ देखो 'मसोती' (रू भे)

मसोदेवाज—वि०—१ अच्छी युक्ति सोचने वाला ।

२ मसविदा बनाने वाला ।

३ धूर्त, चालाक ।

मस्कोरणी, मस्कोरवी—क्रि० स०—विगडना विवृत करना (मुग्ध) ।

उ०—१ नाई मूढो मस्कोरतो वोल्थो—इण सू काई मांवा लागै ? थारै कोल मुगव म्हनै पूरो राजी करो ।—फुलवाडी

उ०—२ रांणी राजा नै होळै सँ मूढो मस्कोर नै कही—भारै पगा सामी देखनै आप आ रै मन री बात नी जाण मको ?

—फुलवाडी

मस्कोरियोड़ी—भू० का० कृ०—विगाडा हुआ, विवृत किया हुआ (मुग्ध) (स्त्री० मस्कोरियोड़ी)

मस्जिद—देखो 'मसजिद' (रू भे)

मस्तगी—सं० पु०—१ एक प्रकार का गोद ।

२ मस्ती ।

मस्त—वि० [स० मत्त, फा० मस्त] १ मतवाला, उन्मत्त ।

२ मदोन्मत्त, नशे में चूर ।

उ०—ठाकर इत्ती ताल नीठ चुप रह्या । वै दाह लेवण में मस्त हा । आधी वार्ता सुणी अर आधी सुणी ई कोनी ।—फुलवाडी

३ मोज या मस्ती से परिपूर्ण ।

४ किसी बात को परवाह न करने वाला, बेपरवाह, निश्चित ।

५ सदा प्रसन्न रहने वाला, खुश मिजाज ।

६ किसी प्रकार की अनुभूति से प्रसन्न ।

उ०—मकोडी डोल गळा में टेरनै यहीर हुवो खुमी में मस्त विहयोडी—फुलवाडी

७ जो अपने आप में लीन हो, इधर उधर की न सोचने वाला ।

उ०—अर इह्दवा मन में बहवडावती आपरा हाल में मस्त हो ।

—फुलवाडी

८ किसी कार्य या विषय में लीन, संलग्न, रमा हुआ ।

उ०—गधी तो आपरा गाणां में पूरो मस्त हो के अणुचीत्यो करक मार्य लोहीड पडियो ।—फुलवाडी

६ किसी पर मोहित, अनुरक्त, रीझा हुआ ।

१० यौवन से परिपूर्ण ।

११ अभिमानी, घमडी । १२ भयकर ।

१३ खिलाडी, रसिक । १४ पागल ।

रू० भे०—मसत, मसत, मस्तज, मस्थ ।

मह०—मसतान, मस्तान ।

मस्तक—स० पु० [स०] १ सिर, माथा, मुण्ड । (ह ना मा) (उ र)

उ०—१ जननी तूझ हस्त मस्तक जिह । त्रिदक्षालय सुख वसत  
निलय तिह ।—मे म

उ०—२ भारथ वरग हुवो धण भिडता, सत्र साभता बाहतां  
सार । हर महराण तणो मस्तक हृद, जडिया गति मेळें जटघार ।

—जोगीराम हाडा री गीत

उ०—३ धरणीधर सकर देव धियावउ, जोति प्रकास अलोप जग ।

मस्तक मुगट प्रकास माडियउ, अनत कोट ब्रह्मड लग ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ भाग्य, तकदीर ।

उ०—सो वरी कटवण मिळें, मस्तक लिख्या सो होय । लेख  
लिख्या कू बाळका, मेत न सकई कोय ।—अज्ञात

३ शिखर, चोटी ।

रू० भे०—मसतक, मसतक, मसतग, मस्तकु, मस्तक, मस्तग,  
मस्तगि, मस्तगी, मस्तिक ।

मस्तकु, मस्तक—देखो 'मस्तक' (रू भे)

उ०—१ कुडउ वोळइ धरमपूत, हथीयार छडावइ । छेदिउ मस्तकु  
द्रष्टुमनि क्रमु सिउ न करावइ ।—प प च

उ०—२ सीसोद सीस स्त्रीणी निवेस, मस्तक जाण गगा महेस ।

—गु रू व

मस्तग, मस्तगि—देखो 'मस्तक' (रू भे)

उ०—१ यहू बिसवास आमआस निज अतरि, अवला चोवारे  
खरी । मस्तग, दे दे हाथ, पथ हेरु हरी ।—ह पु वा

उ०—२ सोहड सीधउ चढे छत्र मस्तगि धर । निज नाव परतीति  
हरि निकटि नाही ।—ह पु वा

मस्तगी—स० पु०—१ एक प्रकार का बढ़िया गूद ।

वि० वि०—इसका रंग पीला होता है तथा यह भूमध्य सागर  
के आस-पास के प्रदेश में पाई जाने वाली एक आडी विशेष से  
निकाला जाता है ।

२ देखो 'मस्तक' (रू भे)

मस्तान—१ देखो 'मस्त' (मह, रू भे)

२ देखो 'मस्तानी' (मह, रू भे)

मस्तानि, मस्तानी—१ देखो 'मस्ती' ।

उ०—दास कवीर जम लोकि जावै नहीं । अलख रम पीवै मस्तानि  
मातो ।—ह पु वां

२ देखो 'मस्तानी' (स्त्री०) ।

मस्तानी—वि० [फा० मस्तान] (स्त्री० मस्तानी) १ मस्ती की तरह का ।

२ उन्मत्त, मस्त ।

३ मोटा ताजा, तगडा ।

४ पागल ।

मह०—मसतान, मस्तान ।

मस्ताई—देखो 'मस्ती' (रू भे)

उ०—१ हीरा, मोती जडिया सोना रा वधणा सू हीडो वधियोडो  
हो । माथे अपछरावा री रूपाळी राजकवरी वैठी मस्ताई सुं  
हीडती ही ।—फुलवाडी

उ०—२ इक्कीस माणुगर हाथिया री टोळी मस्ताई सू इम्दखां  
रं गाव री सोय मे चालण लागो उखु वगत वो फाटोडा लिंगतरा  
सू लिप्तर लिप्तर करतो आपरें गांव सामी चालतो हो ।

—फुलवाडी

उ०—३ पछे मस्ताई सू आपरें मारग वहीर विह्यो । बडवडाता  
करतो बोह्यो—पांणी री तिस तो पांणी सू ईं बुर्क । इत्ती तेल  
पीयो तो ईं हाल कठ सूखणा बद नी विह्या ।—फुलवाडी

मस्ताणी, मस्ताबी—क्रि० अ०—१ मस्त होना, उन्मत्त होना ।

२ पागल होना । ३ मुग्व होना ।

४ मोटा ताजा होना ।

क्रि० स०—५ मस्ती में झूमना ।

६ मस्त करना, मस्ती में लाना ।

७ मोहित करना, मुग्व करना ।

मस्तायोडी—भू० का० कृ०—१ मस्त हुआ हुआ, उन्मत्त हुआ हुआ ।

२ पागल हुआ हुआ ३ मुग्व हुआ हुआ ४ मोटा ताजा हुआ  
हुआ ५ मस्ती में झूमा हुआ, ६ मस्त किया हुआ, मस्ती में  
लाया हुआ ७ मोहित किया हुआ, मुग्व किया हुआ,  
(स्त्री० मस्तायोडी)

मस्तिकि—देखो 'मस्तक' (रू भे)

उ०—हरि एरावण मातलि दामिटी हरिगोगमेखी सरवागि सन्नाह  
पहिरि, टुड कसा वधि, धनुखि गुण चडावी रह्या ग्रीवा भरण  
विभूख्यु, मस्तिकि नेत्रादि वस्त्रम (य) अथवा सुवरणमय टोप  
धरतां, ।—व. स

मस्ती—स० स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ उन्मत्तावस्था, मतवालापन, उन्माद ।

३ खुशी, आनन्द ।

उ०—१ सगळी साथणियां सूरज री उगाळी आप आपरा घर सू  
निकळ जावती । माथा माथें सुरगी पारिया लिया वें मस्ती सू गीत  
गावती सगळें मारग चालती रेंवती ।—फुलवाडी

उ०—२ कोयल कुहू कुहू री मस्ती में मोठा गीत गावती के एक  
मोरियो उडती उण आव रा रुख माथें आयी ।—फुलवाडी

४ नशा । ५ सभोग की प्रबल इच्छा, काम वेग ।

उ०—माल ऊढावे धावे मस्ती, तन पर लावे तयारधा । जद बेरा सू हेत जणावे, सेजा रमि मिकारधा ।—ऊ का ।

६ शैतानी, बदमाशी ।

७ लापरवाही, निर्दिष्टता ।

क्रि० प्र०—आणी, उतरणी, ऊठणी, चढ़णी, झड़णी, झरणी, झाड़णी, निकाळणी ।

मुहा०—१ मस्ती आणी = उन्माद चढ़ना, नशा चढ़ना, आवेग या जोश आना, कामेच्छा होना, अहंकार होना । २ मस्ती उतरणी = उन्माद, नशा, जोश, आवेग आदि का शान्त होना, उदामी छाना, पीटा जाना । ३ मस्ती झड़णी = कामेच्छा शान्त होना, मस्ती उतरना । ४ मस्ती झाड़णी, मस्ती निकाळणी = सभोग क्रिया करना, किमी की पिटाई करके बदमाशी या शैतानी मिटाना, गवं हनन करना, उन्माद या नशा उतारना ।

८ पशुओं के होने वाला मद खाव ।

९ वृक्षों या पत्थरों का रम स्त्राव ।

क्रि० प्र०—चूणी, झरणी ।

१० ईश्वरोपामना में लीन होने की अवस्था ।

११ मुग्धावस्था ।

रू० भे०—मस्तो, मस्ताई ।

मस्तु-स० पु० [स० मस्+तुत्] १ दही का पानी ।

२ फटे हुए दूध का पानी ।

मस्तूल-स० पु० [पूर्व०] वही नाव के बीच का वह बड़ा खम्भा, जिसके पाल बाधा जाता है ।

मस्थ—देखो 'मस्त' (रू भे )

उ०—प्रबल प्रमाथी सौप्रताप मस्थ हाथी जेम, नाथ राव ही के नाथी साथ भयो मुच्चों को ।—ऊ का

मस्त—देखो 'मसल' (रू भे )

उ०—उमराव मुतळक उण मस्त मे बात न काट्टी हल चल उण मे जाहिर नही हुई ।—नी प्र

मस्त—१ देखो 'मम' (रू भे.)

२ देखो 'मस्ती' (रू भे )

मस्तां—देखो 'मसा' (रू भे )

उ०—कमारव जक मे सू ऊपर री ऊपर हो जावे । हजार री साल गावे, लार पाचसो मस्तां उबार ।—दमदोख

मस्ती—१ देखो 'ममि' (रू भे )

उ०—मद्योमत्त यम मरोड, जूह वहति गंतूळ जोड । मस्ती वरन मद् मसल, पाखा उट्टिया परवत्त ।—गु रू व

२ देखो 'मम्सी' (रू भे )

मम्सी-स० पु०—१ अश रोग ।

उ०—रातिदा बाळा नै, निकाळा गाळा नै, आचा सीसी री माथी

दूखण बाळा नै मम्सा री तकलीक बाळा नै अर मरणा चालती व्है जका नै इत्याद मांदगिया वास्तै यो नीतू रे रस गी दयाई बतावती ।—कुलवाडी

२ देखो 'मम' (अल्पा., रू 'भे.) (वरदा)

उ०—मूछा माथे पाच तातेक इदकाई मे मम्सा में घोळा भंगतां री तुगिया ऊगोही ।—कुलवाडी

रू० भे०—मम, ममी, मम्म, मह ।

मह—देखो 'महा' (रू भे )

महक—देखो 'महक' (रू भे )

महकणी, महकणी—देखो 'महकणी, महकणी' (रू भे )

महकणहार, हारी (हारी), महकणियो—वि० ।

महकियोड़ी, महकियोटी, महकियोड़ी—नू० वा० कृ० ।

महकीजणी, महकीजवी—माच वा० ।

महाई—देखो 'मूगाई' (रू भे )

महो—देखो 'मू गो' (रू भे )

उ०—कोई वट्टे मोपो, कोई वट्टे महो, (में तो) नियो है हीरां सू तोल ।—मोरां

महत-स० पु० [म०] १ किमी नप्रदाय या गठ का अधिष्ठाता, आचार्य, प्रधान माधु ।

उ०—१ एके जय जोह लहे कुण अत पारो नह प्राभ मेम पुणत । मुनेमर ध्यान घरत महत, मय जुग देगी हो नाम अनत ।—ह र

उ०—२ महत जी वीं ऊया सुणता हा । जोर सू योनन पूछघो कुण चालती रणो ?—कुलवाडी

२ शिष्य परंपरा के अनुसार किसी गुरु गादी का अधिकारी, गद्दीधारी ।

३ ब्राह्मण, पंडित ।

वि०—प्रधान, मुखिया ।

रू० भे०—मय, महति, महनी ।

महतमोह-स० पु०—महामोह ।

महतर—देखो 'महत्तर' (रू भे )

महताई-स० स्त्री०—१ महत होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ महत का पद या गद्दी ।

३ महत कार्य या प्रतिष्ठा ।

रू० भे०—महति, महती ।

महति, महती - १ देखो 'महत' (रू भे )

उ०—सगि सति समीजण गुणजण स्यामा, मनसि विचारि ए कही महति । कुममयळी हूता कुदणपुरि, विसन पवार्या लोक कहति ।

—बेलि

२ देखो 'महताई' (रू भे )

महदी—देखो 'मैदी' (रू भे )

उ०—१ रसरज नथनी महदी चमक । लोक लग्न मन लाजै राज ।

—रसीलैराज री गीत



उ०—२ महवी ऊगी ऊगी पान दो पान । पेम रस महदी राचणी  
जी राज ।—लो गो

महमाई, महमाय—देखो 'महामाया' (रू भे )

उ०—१ विरच अनूप बणै थल बका, सैजळ कूप सवाई । 'मालरा'  
बस दिये उजियागर, माल्हणदे महमाई ।—जसकरण लाळस

उ०—२ महमाय तू ही तुही जोग माया । प्रकृती सकृती तुही नाम  
पाया ।—मे म

मह-स० पु० [स० मह] १ उत्सव, जुलूम

उ०—१ मह मह सुगध चिक्कस मळण, जीतण तप ग्रहमह जुई ।  
जह मह विवाह लाडा जुडण, हाडां घर गह मह हुई ।—व भा  
२ उत्साह, खुशी ।

उ०—बिरचै एम बचावणों, आणि कवर अति आघ । मीणा  
कहियो अतुल मह, बचिया तो बळ बाध ।—व भा

३ नैवेद्य, भेंट । ४ यज्ञ, हवन ।

५ वलिदान, उत्सर्ग । ६ भैसा ।

स० स्त्री०—७ आभा, दीप्ति, चमक ।

वि०—१ मधुर, मीठा ।

उ०—मह-मह सुगध चिक्कस मळण, जीतण तप ग्रहमह जुई ।  
जह मह विवाह लाडा जुडण, हाडां घर गहमह हुई ।—व भा  
सर्व०—२ मेरा ।

उ०—दुजोहण वयणु सुणि एक वार मह भणित किज्जई । निय  
अवधि आबीया पडवाह नहु मानु दिज्जई ।—प प च  
[सं० ग्रहम] में ।

उ०—मह मह सुगध चिक्कस मळण, जीतण तप ग्रह मह जुई ।  
जह मह विवाह लाडा जुडण, हाडां घर गह मह हुई ।—व भा  
२ देखो 'मही' (रू भे )

उ०—१ गिर पुर देस गमाड, भमिया पग पग भाखरा । मह अजसं  
मेवाड सह अजसं सीसोदिया ।—महाराजा मानसिंह

उ०—२ हर रथ माठी होय, सकत रथ होय सयाणा । सित रथ  
देवें पूठ, घटै उतराघ पयाणां । हस हाल परहरै, वचन पलटै दुर-  
वासा । मह मोरा भड मडै, इद नहि पूरै आसा । प्रह्लाद भगति  
छोडै परी, कळजुग सतजुग नै कळै । सेवगां तणा मेहा सद् साद  
न करणी समळे ।—चौबबीरू

उ०—३ पुणै कमण तर पत्र ग्रहम माया कुण भक्खै । मह उत्तर  
पय माय, आप लहरां कुण भक्खै ।—र ज प्र

उ०—४ गह भरियो गजराज, मह पर वहै आपह मतै । कूकरिया  
वेकाज, रुगड भुसै किम राजिया ।—किरपारांम  
देखो 'महा' (रू भे )

उ०—१ बिस गजर दो जगां सीस भेनी विहद, सरब पाखांण  
चूनै गरक सार । 'मान'हर कियो भुरजाळ सुज बणै मह, भलख

रा पीजरा तणा आकार ।—उमेदजी सादू

उ०—२ मह कहर आवह माचियो, छुदाळ खिस रबि खांचियो ।  
छिव भरस विबुध विमाण छायो, इद्र आद भसेस ।—र. रू.

देखो 'मे' (रू भे )

उ०—१ मह जाय पेलै छाह निरमळ, प्रघण हिम पाणी । सित  
समय परभा त्रिया तिणनू वदे मुख बाणी ।—र. रू.

उ०—२ मत्त सतावन सब गाथा मह, कळा तीस पूरवा अरध कह ।  
—र ज प्र.

महकध-स० स्त्री०—खुशदू, सुगध, सोरभ ।

वि०—बड़े बड़े कधो वाला ।

महक-स० स्त्री० [स० महक] १ सुगध, सुवास, खुशदू, सोरभ ।

उ०—१ सोन जुह रियावेल चवेल चवेले की फुलवाद मोगरै की  
महक गुलाब फूलकी सुगध जवाद ।—सू प्र

उ०—२ महक सहु वारणे धूप घाणा सही ।—वृ स्त  
२ गध, वास ।

रू० भे०—महक, महिक ।

महकणी, महकबी—क्रि० अ०—१ सुगधित होना, सुवासित होना, खुशदू  
फैलना, महकना ।

उ०—१ लोयण चचळ स्रवण लग, लांबा वेणी डड । महकै सहज  
सुवास वप किर लायी स्त्रीखड ।—बां दा

उ०—२ विस्व सुवासित होय जिके मुख वास हू । मळियाचळ  
महकत वसत बिलास हू ।—बां दा

उ०—३ थळ भूरा वन भवरा, नही सु चपड जाइ । गुणै सुगधी  
मारवी महकी सहु बणराइ ।—ढो मा  
२ गव देना, वास देना, वृ देना ।

३ बोलना, कुहकना ।

उ०—वरमायत आवण की घारी छै, आपकै जावण की त्यारी  
छै । जमी नीला सिणगार घारसी, जसा सिणगार उतारसी ।  
मोरीया महकसी डेडरा डहकसी, फिलीगण भणकसी भमरा भणक-  
सी ।—मयाराम दरजी री बात

महकणहार, हारो (हारी), महकणियो—वि० ।

महकिघोड़ी, महकियोड़ी, महकयोड़ी—भू० का० कृ० ।

महकीजणी, महकीजबी—भाव वा० ।

महकणी, महकबी, महकणी, महकबी—रू० भे० ।

महकदार-वि०—१ जिममे महक हो, सुगध हो ।

२ जिसमे गध हो ।

महकम-वि० [अ० महकूम] अधीन ।

उ०—करता अकरता कीयो होय सु भेटै मव ही बातों सामरय ।  
क्रणजी जु हाथ साळा नै महकम करि लगाया था सोई हाथ माथा  
ऊपरि दिया । थाप्यो निवाजि चाल्यो ।—वेलि टी

महकमो-स० पु० [अ० महकम] १ अदालत, न्यायालय ।



२ विभाग, कार्यालय (मरकारी) ।

महकाणो, महकावो—क्रि० स० [महकाणी] क्रि० का प्रे० रु०] १ सुगन्धित करना, सुवासित करना, खुशबू फैलाना, महकाना ।

उ०—प्रतिदूधो मदहर सुत पिण थप सगति पाइ । मनयाचल सगै तर बीजा पिण महकाय ।—घ व ग्र

२ दुर्गंध लाना, बू फैलाना ।

महकाणहार, हारो (हारो), महकाणियो—वि० ।

महकायोडो—भू० का० कृ० ।

महकाईजणो, महकाईजवो—कर्म वा० ।

महकायोडो—भू० का० कृ०—१ सुगन्धित या सुवासित किया हुआ, खुशबू फैलाया हुआ, महकाया हुआ २ दुर्गंध फैलाया हुआ, बू फैलाया हुआ (स्त्री० महकायोडो)

महकाली—देखो 'महाकाली' (रु भे) (डि को)

महकामुर—देखो 'मह्वामुर' (रु भे)

उ०—लकापति रावण कहाँ, कुम करण कहाँ वस । हिरणाकुम हिरणावि कहाँ, महकामुर कहाँ कम ।—ह पु वां

महकियोडो—भू० का० कृ०—१ सुगन्धित या सुवासित हुआ हुआ, महका हुआ २ गंध, वास या बू दिया हुआ ३ बोला हुआ, कूका हुआ (स्त्री० महकियोडो)

महकी—देखो 'महिमी' (रु भे)

उ०—त्योंकी के सुत जागि, मिघ वन माहि मारया । महकी करे मवार, ससँ फिर स्वान सगारया । विमा सवारें सेज, बसँ चीटी निरदावे । महकी करे सिगार, खेत खर खाण न पावे ।—ह पु वां

महकीलो—वि०—मुसद्दार, सुगंध देने वाला ।

महकणी, महकवो—देखो 'महकाणी महकवो' (रु भे)

उ०—१ रवि भैरव जीवणी घणै आणुद चहकी । सग वेळ मूग्मा, वास अगरेन महकवी ।—रा रु

उ०—२ विधु परड गठ जोअणे, विधिया बीजुळियाह । मुरहउ लोद महकियां, भीनी ठोवडियाह ।—ढो मा

महकणहार, हारो (हारो), महकणियो—वि० ।

महकिकयोडो, महकिकयोडो, महकिकयोडो—भू० का० कृ० ।

महकिकोजणो, महकिकोजवो—कर्म वा० ।

महकिकयोडो—देखो 'महकिकयोडो' (रु भे)

(स्त्री० महकिकयोडो)

महकल—देखो 'महाकल, महाकल' (रु भे)

महकल—देखो 'महिस' (रु भे)

उ०—चक्र चालण भटक भालण ग्रम गाळण गाजणी । विडदाव पाणु महक मारण दुख दळिद्र भाजणी ।—मा वचनिका

महणी—देखो 'महिमी' (रु भे)

उ०—पोढे तेण वखत थप पावे । महखी दूध सवांमण मावे ।

—सू प्र

महखी—देखो 'महिस' (रु भे)

महगल—देखो 'मदकळ' (रु भे)

उ०—तुरीय सहइस पचास, दोय सद महगल मता । राजकुली छत्तीस, सोहड भड सेव करता ।—घ व ग्र

महगाई—देखो 'मूगाई' (रु भे)

महगध—वि० [स० महाध्वं] मूल्यवान, कीमती ।

उ०—ग्रहु दिकपालन सम असक, निरखिये ग्रहु मिसलन निसक ।

ईमाग्यावरती अचळ अगध, मारवाराव मुरघर महगध ।—ऊ का

महडोसिया—स० पु०—राठीड वंश की एक उप-शाखा । (वा दा ख्यात)

महचक्र—स० पु० [म० महस्+चक्र] १ प्रकाश का गोला, सूर्य ।

(डि. को)

२ चंद्रमा ।

महज—वि० [अ०] १ केवल, सिर्फ, मात्र ।

२ निर्मल, खालिश, शुद्ध ।

३ निरा, अत्यल्प ।

महजरनांमो—देखो 'भेजरनांमो' (रु भे)

महजित, महजिद महजीत, महजीद—देखो 'मसजिद' (रु भे)

उ०—१ सक खग खान संमाय, मैके हाल छामे मुलक । महजिदा चै माय, वीरम सूर विधोडिया ।—गो रु

उ०—२ महजीदां डाहजें आवाड जोडजें आरोडा थड देख थर हरे । डड सम है किरोडा ।—अरजुनजी वारहठ

उ०—३ सुर झालर घटा सरसाया, महजीता सुरवाग मिटाया । मिव हरि सकत नेव सरसाई, मीर पीर त्या पूज मिटाई ।—रा रु

उ०—४ पीछे हिंदवा रे तीरथां में देव-मूरतों । खडण करायो । तथा काशी में बिस्वमरजी री लिंग ग्यान बापी में दाखल हुई । अरु मंदिर रे लारें लारें महजीद कराई ।—द दा

महजुई—स० पु० [म० महाद्युति] अत्यन्त तीव्र प्रकाश, आभा कान्ती ।

(जैन)

महडो—१ देखो 'माडो' (रु भे)

२ देखो 'मुडो' (रु भे)

महण—स० पु० [स० महार्णव] १ महामागर, समुद्र ।

(घ मा, ना डि को, ह नां मा)

उ०—१ मोज महण मूरत मयण, लोयण लाज अपार । 'जेहल' राजकुवार जिम, कुण अत राजकुंवार ।—वां दा

उ०—२ महामत महण जसगाय मुनि वालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधो ।—र रु

उ०—३ वहरहि हिले वहीर, पाइक ओठक पडतळा । मिळवा फिर चाली महण, नवसँ नदि ले नीर ।—वचनिका

उ०—४ धोदा नाडा बार, पीधा विन ही खूटे परी । सो जळ पोयै ससार, महण घटे नह मोतीया ।—रायसिंह सांदू  
२ ईश्वर ।

उ०—सोय दूजो ससार, माटी सूं घडियो महण । तो घडियो किरतार, काया हूता करमसी ।—द दा

४ डिगळ का वेलिया साणोर नामक छद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले मे २ लघु व ३१ गुरु कुल ६४ मात्राए होती हैं तथा शेष द्वालो २ लघु व ३० गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं ।

रु० भे०—महण, महणि, महणी ।

महणमत्य, महणमय—स० पु०—१ समुद्र का मंथन करने वाला, विष्णु ।

उ०—रात दिवस हरि हृदं रहाविस, आठू पहर अनत उल्लाविस । मांडे पूजा तूभ महणमय, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ ।

—ह र

वि०—महाशक्तिशाली ।

उ०—‘मघकर’ हर ‘हिम्मत’ महण मत्य मेळतें रूप हिम्मत समत्य । एताळ आद दूहा अथाह । नव कोटा आगळ नरा नाह ।—रा रु,  
रु० भे०—महणामय ।

महणमह—स० पु०—ईश्वर, परमेश्वर । (ह ना मा)

महणामय—देखो ‘महणामय’ (रु भे)

महणारम—देखो ‘महारणव’ (रु भे)

महणारथ—स० पु०—समुद्र ।

उ०—पवन चक्र बळ पाइ लाय पावक ऊलट्टे । कना सीम ढव चूक फूक महणारथ फट्टे ।—रा रु

महणि महणी—१ देखो ‘महण’ (रु भे)

उ०—आवतां लखे नर नार इम भार कतार भगेनिया । मिलि जाय महणि पावस समे, जाणु नदीरस जेळिया ।—रा रु.

२ देखो ‘मैणी’ (अल्पा, रु भे)

उ०—माने लागे महणी कुल लाजे पत जाय । कोही वाइ किउ कीजोयै भूपाला से वात ।—पनावीरमदे री वात

महणी—देखो ‘मैणी’ (रु भे)

उ०—१ ‘गागावत’ जिम मांम गमाडै, करन समोभ्रम जाय किम । भाजण तणा ज महणा अणभग, जेत न सहियो माल जिम ।

—द दा

उ०—२ काल्ह पग पसार थे—म्हे मरीस तो अगत जायसै, मोनू अगत होयसी, थानू वडो महणी होमी ।—डाढाळा सूर री वात

महणव—देखो ‘महारणव’ (रु भे)

महत—वि० [स० महत्] १ महान, श्रेष्ठ ।

उ०—लाव वरीस महत् तू ‘लाखा’, तायक समवड कीजै ताय । इळ अणवूठे कसी अवहर, अगड अदठने उहवै आय ।

—महाराणा लाखा री गीत

२ विशाल, भीमकाय, बडा, मोटा ।

उ०—पीठ वडवडात कूरम छटा प्रलै री, मही खडखडात हेजम मचोळा । मुनि हडहडात घडडात तोपा महत्, गयण गडडात पड भाट गोळा ।—कविराजा वाकीदास

३ लम्बा-चोडा, विस्तृत, फैला हुआ ।

उ०—है नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम । महत् सुजस वसतार न मावै, भरतखड मभ राणा भीम ।

—महाराजा मानसिंह

४ विपुल, पर्याप्त, बहुत, अत्यधिक ।

उ०—मिल अछर हरखत चित महत्, पख निरख धीरत वरत पत । खग गिलत गूदा तत अखत, वण असत परवत मेर वत । सह त्रिपत विहग विसैस ।—र रु

५ मजबूत, दृढ़ । ६ ताकतवर, बलवान ।

७ उग्र, प्रचंड, तेज । ८ गाढा, घना ।

९ आवश्यक, महत्वपूर्ण । १० प्रसिद्ध, प्रख्यात ।

११ उच्च, ऊचा, कुलीन ।

स० पु० [स० महत्त्व] १ मान, सम्मान, आदर ।

उ०—दोय हजार गाव दीधा, घोडा हजार दोय हाथिया री हलकी पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया ।

घणी महत् वधारियो नै सीख दीधी ।—जगदेव पवार री वात

२ बढप्पन, बडाई ।

३ अनन्तता, अखण्डता, असंख्यता ।

४ राज्य, सलतनत । ५ प्रकृति का मूल तत्त्व ।

६ ब्रह्म । ७ शिव । ८ जल, पानी ।

९ पवित्र ज्ञान । १० ऊट ।

११ देखो ‘महत्त्व’ (रु भे)

महतउ—देखो ‘महत्त्व’ (रु भे)

२ देखो ‘महता’ (रु भे) (उ र)

उ०—वेस्या जांणी पडिउ कोइ ओलखीउ ‘ए महतउ होइ’ । घरि आणी जाणी सकेत मणिजल पाई कीउ सचेत ।—हीराणंद सूरि

महतकळापरण, महकिलाण—स० स्त्री०—१ बादल, मेघ ।

(नां मा, ह नां म्)

२ घन-घोर घटा ।

महतगुणा—स० पु० [स० महा-गुण] हस । (अ मा)

महतर—देखो ‘महत्तर’ (रु भे)

महतत्व—देखो ‘महत्त्व’ (रु भे)

उ०—जाहुरा परमात्मा माया दिसि देख्या तिया धी महत्त्व नीपना । महत्त्व थकी अहकार नीपनी ।—द वि

महता—स० पु० [स० महत्तर] १ राजा या किसी रईस के राज्य या जागीर का प्रबन्धक ।

२ मुख्य व्यक्ति, प्रधान व्यक्ति ।



महदी-स० पु० [अ०] १ ठीक रास्ते पर चलने वाला ।

२ शीया मुमलमानो का धर्म गुरु ।

३ शीया सम्प्रदाय के १२ वें इमाम ।

उ०—महदी मारिया गया, लाखा रुपिया री दोलत लुटाणी ।

—वां दा ख्यात

वि०—जिसको दीक्षित किया हो, दीक्षा प्राप्त ।

२ देखो 'मैंदी' (रू भे)

३ देखो 'मैंदी' (रू भे)

उ०—जो जाणु पीव जावसी, उल्लग विचारै नाह । हाथै महदी न

दीया, न काजळ सागह —राव रिएमल राठौड खावडियै री बात

महदीप—देखो 'महाद्वीप' (रू भे)

उ०—महदीप छद तेरहै दस मत पय जाणो । इण जोड सुजस

राम व्रपत उर मझम आणो ।—र ज प्र

महदेव—देखो 'महादेव' (रू भे)

महनत—देखो 'मैनत' (रू भे)

उ०—कूडै ऊतारे मुकवि, गाढी महनत गीत । खाल उतारै खात

सू, इसढी कुकव अनीत ।—वा दा

महनो—देखो 'महीनी' (रू भे)

उ०—१ रांणी कही महनै एक इठै विराजो । म्हे बाई नू बुलावा

दिन घणा हुवा मिळस्या ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ नारणोत हठौसिह केमरीसिहोत सू इतरै धाय भाई पण

सामिल हुवो महनो एक लडियो पछै नीमरियो ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

महन्नत—देखो 'मैनत' (रू भे)

महपत, महपति, महपती, महपत्ति महपत्ती—देखो 'महीपति' (रू भे)

उ०—१ विस्वामित्र तणा सुण बैणां आनद अग उमगै । महपत

वदै पाँव मुनी रा, सार दिया मुत सगै ।—र रू

उ०—२ महर्प देखि गयद हू महपति । गज पर गिरद कठीर

तणी गति ।—सू प्र.

उ०—३ सजि दमकतां सुरताण, महपती दिस फुरमाण । दाखियो

जिम लिख दीघ, कूरमा ऊपर कीघ ।—सू प्र

उ०—४ अवे इतरी काड देखीजै, कवरजी राज जमा खात्तर

राखीजै, म्हा ऊभा महपत्ति कीमो सोच दाखीजै ।—पना

उ०—५ महाराज अममाल' पूछ घावड महपत्ती । एक रग अण

भग बोल करि अगुट विरत्ती ।—सू प्र

उ०—६ महपत्ती कमधणज, मसदा' मोडणा, त्रिजडा मुहि तुर-

काण तणी जड तोडणा ।—महाराजा करणमिह री गीत

महपसमी—स० पु० [स० महत्+फा० पशमी] बडिया ऊन का वना एक

वस्त्र विशेष ।

उ०—मुहगा घणा मोल रा, पडै पगमडा अपारा । महपसमी

मुखमली, तास अतलस जरतारा ।—सू प्र

महपाळ—देखो 'महीपाल' (रू भे)

उ०—रांणी सुवयण मरीत रे, अप इसी उपजी नीतरे । तन भय्य

सू कर प्रीत रे, महपाळ करमी मीतरे ।—र रू

महपिता—देखो 'पितामह' (रू भे)

उ०—धूहड दुहू जोषाण सुमेर सुरेस सौ । सुपह महपिता साथ

रिमा उर रेसमौ ।—किमोरदान वागहूठ

महपुर—स० पु० [स० महिपुर] भूलोक, पृथ्वी लोक ।

उ०—अहपुर महपुर इद्रपुर, स्यो अहमा लो जाँय । जन हरिदाम

दुभर दुनी, सुभर भरघा न कोय ।—ह पु वा

महफिल—स० स्त्री० [अ०] १ मजलिस, सभा, गोष्ठी ।

महवदी—स० स्त्री०—प्रेयसी, प्रेमिका, महवूवा ।

महवर—स० पु०—एक प्राचीन देश ।

उ०—अवध्या वणारसी चदेरी मल्लिवाल महवर महोव हरियाणउ

भयाणउ रत्नपुर कामरू ।—व. स

महवळी—देखो 'महावळी' (रू भे)

उ०—गज दत तोड अरि थाट गाह । महवळी लोह पड खेत माह ।

—शि रू

महवूव, महवूव—स० पु० [स० महवूव] (स्त्री महवूवा) १ अत्यधिक

प्यारा, प्रिय, आशिक, अजीज, प्रेमी ।

उ०—१ कुवर कनै ऊ कागद आयो, जाणै चात्रग स्वाति वूद

पायो । महवूव का दमकत छाती लगाय लीना ।—पना

उ०—२ सब लालो सिर लाल है, सब खूबो सिर खूब । सब पाका

सिर पाक है, दादू का महवूव ।—दादूवांणी

उ०—३ नजर निजारे दी यार, मन वस गईया वे । रसीलाराज

महवूवां दी नजरा, फूट कलेज पार ।—रसीलाराज रा गीत

२ वह जिससे प्रेम किया जाय, इश्क या मुहब्बत करने योग्य ।

उ०—हसि कै साहि कहै इसी, वयू वे खोजा खूब । हम महलें मव

सखणी, नहि पदमणि महवूव ।—प च चौ

३ रसिक, शोकीन, इश्क मिजाज, खुश मिजाज ।

उ०—मेछां हदा मुलक में, जो मावडियो जाय । महवूवां री मिमल

में, किल सिरदार कहाय ।—वां दा

रू० भे०—महिवूव ।

महवळ—देखो 'महावळ' (रू भे)

महवूय—देखो 'महाभूत' (रू भे)

महमडळ—देखो 'महिमडळ' (रू भे)

महमत—देखो 'मैमत' (रू भे)

उ०—१ मोळें बरसा कामणी, मगरपचीसा कत । ए दिन फेर न

आवसी, जोवन रा महमत ।—अज्ञात

उ०—२ सावण आयो साहिवा, मोर हुभा महमत । इण रिन

पीयर मोकळें, कठण हिया रा कत ।—अज्ञात

महमती—१ देखो 'मैमती' (रू भे) (ना डि को)

२ विभाग, कार्यलय (सरकारी) ।

महाकाव्य, महाकाव्य-वि० स० [महाकाव्य] कि० का प्रे० स०] १ सुग-  
न्या करना, सुवासित करना, सुगन्ध फैलाना, महाना ।

उ०—प्रतिपक्षी महान् सुत पिण्ण भप सगनि पाइ । मलयाचल सगै  
तत्त वीरा पिण्ण महाम ।—घ व प्र

२ दुर्गंध लाना, वृ फैलाना ।

महाकाव्यहार, हारी (हारी), महाकाव्यी—वि० ।

महाकाव्योद्गी—नू० का० वृ० ।

महाकाव्यजनी, महाकाव्यजनी—कर्म वा० ।

महाकाव्योद्गी—नू० का० वृ०—१ सुगन्धित या सुवासित किया हुआ, सुगन्ध  
फैलाया हुआ, महाकाव्य हुआ २ दुर्गंध फैलाया हुआ, वृ  
फैलाया हुआ  
(स्त्री० महाकाव्योद्गी)

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे) (हि को)

महाकाव्युर—देखो 'महाकाव्युर' (रु भे)

उ०—लकापति रावण कहा, कुभ करण कहा वस । हिरणाकुस  
हिरणापि कहा, महाकाव्युर कहा कस ।—ह. पु वा

महाकाव्योद्गी—नू० का० वृ०—१ सुगन्धित या सुवासित हुआ हुआ, महाका  
व्य हुआ २ गंध, वास या वृ दिया हुआ ३ बोला हुआ, कृता हुआ  
(स्त्री० महाकाव्योद्गी)

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

उ०—तपोवी मे सुत जागि, पिघ बन मांही मारधा । महाका करे  
मवार, गये फिर स्थान सगारधा । पिमा सवारं सेज, बसे चीटी  
हिरदावे । महाका करे निगार, गेत सार गीण न पाये ।—ह. पु वा

महाकाव्यी—वि०—गुणवृद्धार, सुगन्ध देना वाला ।

महाकाव्यी, महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी महाकाव्यी' (रु भे)

उ०—१ रवि भैरव जावणी घणं घाण्ड घहाकी । सग वेळ  
मुरमा, बास सगरेन महाकाव्यी ।—रा रु

उ०—२ विष्णु परद मउ जाग्रणे, विविधा वीजुळियाह । गुरहउ  
वीज महाकाव्यी, भीति ठावडियाह ।—रो मा

महाकाव्यहार हारी (हारी), महाकाव्यजनी—वि० ।

महाकाव्योद्गी, महाकाव्योद्गी, महाकाव्योद्गी—नू० का० वृ० ।

महाकाव्यजनी, महाकाव्यजनी—कर्म वा० ।

महाकाव्योद्गी—देखो 'महाकाव्यो' (रु भे)

(स्त्री० महाकाव्योद्गी)

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी, महाकाव्यी' (रु भे)

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

उ०—भर नाग नरक भावण प्रम गाळण गांजली । विष्टदाव  
पारण महण भावण दुम दाउड भावणी ।—मा वचनिका  
जनी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

उ०—पोटें तेण वखत भप पावें । महाका दूव सवामण पावें ।

—सू प्र

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

उ०—तुरीय सहस्र पचास, दोय सह महणल मता । राजकुली  
छत्तीस, सोहड भड सेव करता ।—घ व प्र

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

महाकाव्यी—वि० [स० महाकाव्य] मूल्यवान, कीमती ।

उ०—प्रदुर्ग दिकपालन सम असक, निरखिये प्रदुर्ग मिसलन निसक ।

ईसाग्यावरती अचळ प्रघ, मारवाराव गुरधर महण ।—ऊ का.

महाकाव्यी—स० पु०—राठीड वश की एक उप-शाखा । (बा दा स्यात)  
महाकाव्यी—स० पु० [स० महाकाव्य+चक्र] १ प्रकाश का गोला, सूर्य ।

(हि. को)

२ चंद्रमा ।

महाकाव्यी—वि० [प्र०] १ केवल, सिर्फ, मात्र ।

२ निर्मल, खालिशा, शुद्ध ।

३ निरा, अत्यल्प ।

महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

महाकाव्यी, महाकाव्यी महाकाव्यी, महाकाव्यी—देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

उ०—१ सक खग खान सभाय, मैके हाल छामे मुलक । महाकाव्यी  
चं माय, वीरम सूर विघोडिया ।—गो रु

उ०—२ महाकाव्यी ठाहजे भावड जोडजे झरोडा थड देख धर हरे ।  
ठड सस है किरोडा ।—अरजुनजी वारहठ

उ०—३ सुर भालर घटा सरसाया, महाकाव्यी सुरवाग मिटाया ।  
सिव हरि सवत सेव सरसाई, मीर वीर त्या पूज मिटाई ।—रा रु

उ०—४ पोछे हिंदवा रे तीरथां म देव-भूरता राडण करायी ।  
तथा काशी मे विस्वेसरजी रे लिंग ग्यान वापी मे दाखल हुई । अरु  
मिंदर रे लारे लारे महाकाव्यी करायी ।—द दा

महाकाव्यी—स० पु० [स० महाकाव्य] अत्यन्त तीव्र प्रकाश, प्रभावा फान्ती ।  
(जैन)

महाकाव्यी—१ देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

२ देखो 'महाकाव्यी' (रु भे)

महाकाव्यी—स० पु० [स० महाकाव्य] १ महाकाव्य, समुद्र ।

(प्र मा, ना हि को, ह ना मा)

उ०—१ मोज महण मूरत मयण, लोपण लाज भवार । 'जिहल'  
राजकुमार जिम, कुण भन राजकुमार ।—वा दा

उ०—२ महाकाव्य महण जसगाय मुनि वालमिक, कोट सत चिरत  
रघुनाथ कीयो ।—र रु

उ०—३ बहरहि हिले बहीर, पादक ओठक पड़तळा । मिळवा  
निर चानी महण, तयसें तदि ले नीर ।—वचनिका

उ०—४ वोदा नाडा बार, पीघा विन ही खूटे परो । सो जळ पीर्य ससार, महण घटे नह मोतीया ।—रायसिंह सांदू  
२ ईश्वर ।

उ०—सोय दूजो ससार, माटी सू घडियो महण । तो घडियो किरतार, काया हुता करमसी ।—द दा

४ डिगळ का वेलिया साणोर नामक छद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले मे २ लघु व ३१ गुरु कुल ६४ मात्राए होती हैं तथा शेप द्वालों २ लघु व ३० गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं ।

रू० भे०—महण, महणि, महणी ।

महणमत्य, महणमय—स० पु०—१ समुद्र का मथन करने वाला, विष्णु ।

उ०—रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठू पहर अनत उल्लाविस । मांडे पूजा तूक महणमय, सकळ मरीर करिस इम सुक्रियथ ।

—ह र

वि०—महाशक्तिशाली ।

उ०—‘मघकर’ हर ‘हिम्मत’ महण मत्य मेडते रूप हिम्मत समत्य । एताल आद दूहा अथाह । नव कोटा आगळ नरा नाह ।—रा रू,

रू० भे०—महणामय ।

महणमह—स० पु०—ईश्वर, परमेश्वर । (ह ना मा )

महणामय—देखो ‘महणमय’ (रू भे )

महणारभ—देखो ‘महारणव’ (रू भे )

महणारथ—स० पु०—समुद्र ।

उ०—पवन चक्र वळ पाइ लाय पावक ऊलट्ट । कना सीम ढव चूक फूक महणारथ फट्टे ।—रा रू

महणि महणी—१ देखो ‘महण’ (रू भे )

उ०—आवतां लखे नर नार इम भार कतार भंगेलिया । मिलि जाय महणि पावस समे, जाण नदीरस जेळिया ।—रा रू

२ देखो ‘मैणी’ (अल्पा, रू भे-)

उ०—माने लागे महणी कुल लाजे पत जाय । कोही वाइ किउ कीजीर्ये, भूपाला सै वात ।—पतावीरमदे री वात

महणी—देखो ‘मैणी’ (रू भे )

उ०—१ ‘गागावत’ जिम मांम गमाडे, करन-समोभ्रम जाय किम । भाजण तणा ज महणा अणुभग, जैत न सहियो माल जिम ।

—द दा

उ०—२ काल्ह पग पसार ये—म्हे मरीस तो अगत जायसै, मोनू अगत होयमी, थानू वडो महणी होसी ।—डाढाळा सूर री बात

महणव—देखो ‘महारणव’ (रू भे )

महत—वि० [स० महत्] १ महान, श्रेष्ठ ।

उ०—लाव वरीस महत तू ‘लाखा’, तायक समवड कीजे ताय । इळ अणवूठे कसो अवहर, अगड अदठनें उहवे आय ।

—महाराणा लाखा री गीत

२ विशाल, भीमकाय, बडा, मोटा ।

उ०—पीठ वडवडात कूरम छटा प्रलै री, मही खडखडात हैजम मचोळां । मुनि हडहडात घडडात तोपा महत, गयण गडडात पड झाट गोळा ।—कविराजा बाकीदास

३ लम्बा-चोडा, विस्तृत, फैला हुआ ।

उ०—है नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम । महत सुजस वसतार न मावै, भरतखड मफ राणा भीम ।

—महाराजा मानसिध

४ विपुल, पर्याप्त, बहुत, अत्यधिक ।

उ०—मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत । खग गिलत गूदा तत अखत, वण असत परवत मेर वत । सह त्रिपत विहग विसैस ।—र रू

५ मजबूत, दृढ । ६ ताकतवर, बलवान ।

७ उग्र, प्रचंड, तेज । ८ गाढा, घना ।

९ आवश्यक, महत्वपूर्ण । १० प्रसिद्ध, प्रख्यात ।

११ उच्च, ऊचा, कुलीन ।

स० पु० [स० महत्त्व] १ मान, सम्मान, आदर ।

उ०—दोय हजार गाव दीघा, घोडा हजार दोय हाथिया री हलकी पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया । घणो महत वधारियो नै मीख दीघी ।—जगदेव पवार री वात  
२ बडप्पन, बडाई ।

३ अनन्तता, अखण्डता, असंख्यता ।

४ राज्य, सलतनत । ५ प्रकृति का मूल तत्व ।

६ ब्रह्म । ७ शिव । ८ जल, पानी ।

९ पवित्र ज्ञान । १० ऊट ।

११ देखो ‘महत्त्व’ (रू भे )

महतउ—देखो ‘महत्त्व’ (रू भे )

२ देखो ‘महता’ (रू भे ) (उ र )

उ०—वेस्या जाणी पडिउ कोइ ओलखीउ ‘ए महतउ होइ’ । घरि आणी जाणी सकेत मण्णजल पाई कीउ सचेत ।—हीराणद सूरि

महतकळायण, महक्किलाण—स० स्त्री०—१ वादल, मेघ ।

(ना मा, ह नां झ )

२ घन-घोर घटा ।

महतगुणा—स० पु० [स० महा-गुण] हस । (अ मा )

महतर—देखो ‘महत्तर’ (रू भे )

महतत्व—देखो ‘महत्त्व’ (रू भे )

उ०—जाहरां परमात्मा माया दिसि देख्या तिया थी महतत्व नीपना । महतत्व थकी अहकार नीपनी ।—द वि

महता—सं० पु० [स० महत्तर] १ राजा या किसी रईस के राज्य या जागीर का प्रबन्धक ।

२ मुख्य व्यक्ति, प्रधान व्यक्ति ।

रु० भे०—महतउ, मू'ता, मू'या, म'ता, मोहता ।

३ देखो 'महता' (रु भे)

महताप, महताय—स० पु० [फा०] १ चन्द्रमा ।

उ०—मुगड़ा सोह रखा महताय वे । रसराज प्राकनाफ जरी जेवर चमके ।—रघोलेराज रो गीत

स० स्त्री०—२ चन्द्रमा की चादनी, चन्द्रिका, ज्योत्स्ना ।

१ घनि ।

उ०—मजा महाराज रा ताप माहे भ्रमुर, पतग महताप रा तेम प्रजळे ।—मजोतसिंह राठोड रो गीत

४ रोचनी, चिराग, मोमबत्ती ।

उ०—१ महतायां रो चांदणो हुवै, सूर महतायां पचास सव सावठी ही लागी छै । जाणै जेठ रो दो पहरो खुलियो छै । इण भात रं चादणै म जोमण रो होंस माणजै छै ।—रा सा स

उ०—२ साव दान के जलूम प्रस्टपदीका भाष । प्रस्मू की भाव जे महताय का ताव ।—नू प्र

५ एव प्रकार की प्रातिश-बाजी जिसकी रोशनी बहुत तेज होती है ।

६ जहाज पर, रात में, सवत के लिय लगाने जाने वाली एव प्रकार की रोशनी ।

६० भे०—महिताय ।

महतायो—वि० [फा०] १ महताय का, महताय सम्बन्धी ।

२ महताय के समान चमकने वाला ।

स० पु०—१ सोन चांदी के तारों से बना हुआ एक वस्त्र विशेष, जरबपन ।

उ०—तन पवसाय जरी महतायो, फबि चीरा किलगो सिर फाबी ।  
सू प्र.

२ एव प्रकार की प्रातिशबाजी जिसे छोटने से चादनी सी छिटक जाती है । यह मोमबत्ती के आकार की होती है ।

महतायो—स० स्त्री० [स० माता] माता, जननी, मा ।

उ०—निज पितु छोड़ें नोच तुरत छोटे महतायो । निज धर्म छोटे निसत्र छोड़ें निय नारी ।—ऊ का

महतायगुर—सं० पु० [म० महतायगुर] स्वामी, पातिभेय । (नां मा)

महता—स० स्त्री० [स०] १ किसी मन्त्री या प्रमात्य या महामात्य की स्त्री ।

उ०—चहीउ मघसउ ते भवदास महतो हरली निसुणी मात । मगोम पहीउ योनवीउ नरिद निगुणी राय हुउ प्राणद ।

—हीराणद मूरि

२ किसी थोपरी, पटल, प्रधानमात्य या मुखिया की स्त्री ।

उ०—'प्रभपत' हरी 'प्रगार' प्रमनवी, बिजटा रोट बजाटे । महता हू प्र पुराये महतो, पीव बिछाटा पाटे ।—दबविष खगारोत

१ तारद की बागु का नाम ।

उ०—शानि पबनि इगद रगमगिय, मगिय भरण ममाहित भाव ।

लचि घालुक तालुक भर लगिय, चढी चित्तहु जगिय चाव ।

नच्चहि कल्हबिसारद नारद महतो तयिन कोन मिळाई । लखहि प्रेत टाकिनी वेताल रु जोगिनी घोर जानु गन जाई ।—व. भा.

वि० स्त्री०—बड़ी, विशाल, दीर्घाकार ।

उ०—फटकार हलाहल तें फिरगो, घन प्रानद प्रमत्त घां घिरगो । मुमला पर डार सिला महतो, गुह कारज प्रारज बस गतो ।

—ऊ का

महतीद्वादसी—स० स्त्री० यो० [स०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में पड़ती है ।

महत्तत्व—स० पु० [स०] १ प्रकृति का विकार, मूल तत्व ।

२ पञ्चीस तत्वों में से तीसरा तत्व ।

रु० भे०—महत्तत्व, महातत महातत्व ।

महत्तम—वि० [स०] १ सबसे बड़ा ।

२ सबसे ऊँचा, सर्वोच्च श्रेष्ठ ।

३ सबसे अधिक ।

महत्तर—स० पु० [स०] १ सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति ।

२ मुख्य, प्रधान या सबसे बड़ा आदमी ।

३ गांव का मुखिया या बड़ा बूढ़ा ।

४ राजा या किसी रईस के राज्य या घर का प्रबन्धकर्ता ।

५ भगी, हरिजन ।

रु० भे०—महतर, महतर, मिहतर, मै'तर ।

महत्तरिया—देखो 'मावलिया' ।

महत्ता—स० स्त्री०—१ बढाई, विशेषता, महत्व ।

उ०—केवल ही मरण मढिया बसुधा र बढाई दो ही डयरथ जावसी । घर घोर लीधा मत्र रो महत्ता रं साथ सीमा म सारोही फील खटावसी ।—व. भा.

२ सम्मान, आदर ।

रु० भे०—महता, महया ।

महत्पुरुष—स० पु० [स० महत्पुरुष] १ पुरुषोत्तम ।

२ महापुरुष, बड़ा आदमी ।

महत्व—स० पु०—१ महान होने की अवस्था या भाव ।

२ विशेषता, खासियत ।

३ विशालता, गुरुता ।

रु० भे०—महत, महतउ, महुत, महुत्त ।

महद—वि०—१ उत्तमवर्धक, उत्साहवर्धक ।

उ०—प्रास्चरय रघुनाथ भूप महद त्व नाम मुक्चारणम् । जर्मं सचिद पार घोर बळुर्म, नास तमेक-छिनम् ।—र. ज प्र

२ महान, बड़ा । ३ विशाल ।

महदालय—सं० पु०—आवाश, आसमान, नग ।

उ०—प्रोदण महदालय प्रोदण धण प्रोदे, प्रमुदा प्रालयबिण प्रमदालय पोदे । नूर नूर कुरजांमी उरजा मुक भद्रकं, सीखा नेतर रो छेतर म तटकं ।—ऊ का



महवी-स० पु० [अ०] १ ठीक रास्ते पर चलने वाला ।

२ शीया मुमलमानो का धर्म गुरु ।

३ शीया सम्प्रदाय के १२ वें इमाम ।

उ०—महवी मारिया गया, लाखा रुपिया री दोलत लुटाणी ।

—वा दा रुयात

वि०—जिसको दीक्षित किया हो, दीक्षा प्राप्त ।

२ देखो 'मैंदी' (रु भे)

३ देखो 'मैंदी' (रु भे)

उ०—जो जाणु पीव जावसी, उल्लग विचारें नाह । हायै महवी न दीया, न काजळ साराह —राव रिणमल राठौड खावडियै री वात

महवीप—देखो 'महावीप' (रु भे)

उ०—महवीप छद तेरहै दस मत पय जाणी । इण जोड सुजस रांम अपत उर मझ्म आणी ।—र ज प्र

महवेव—देखो 'महादेव' (रु भे)

महनत—देखो 'मैनत' (रु भे)

उ०—कूडे ऊतारै सुकवि, गाढी महनत गीत । खाल उतारै खात सू, इसड़ी कुकव अनीत ।—वा दा

महनो—देखो 'महीनो' (रु भे)

उ०—१ राणी कही महनै एक इठै विराजो । म्हे वाई नू बुलावा दिन घणां हुवा मिळस्या ।—कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ नारणोत हठीसिंह केमरीसिंहोत सू इतरै घाय भाई पण सामिल हुवो महनो एक लडियो पछै नीसरियो ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

महनत—देखो 'मैनत' (रु भे)

महपत, महपति, महपती, महपत्ति, महपत्ती—देखो 'महीपति' (रु भे)

उ०—१ विस्वामित्र तणां सुण बैणा आनद अग उमगै । महपत वदै पाव मुनी रा, सार दिया सुत सगै ।—र रु

उ०—२ मल्हप देखि गयद हू महपति । गज पर गिरद कठीर तणी गति ।—सू प्र.

उ०—३ सजि दसकता मुरताण, महपती दिस फुरमाण । दाखियो जिम लिख दोघ, कूरमा ऊपर कोघ ।—सू प्र

उ०—४ अरवै इतरो काड देखीजै, कवरजी राज जमा खात्तर राखीजै, म्हा ऊभा महपत्ति कीसो मोच दाखीजै ।—पना

उ०—५ महाराज अममाल' पूछ घावड महपत्ती । एक रग अण भग बोल करि भ्रगुट विरती ।—सू प्र

उ०—६ महपत्ती कमघणज, मसदा' मोडणा, त्रिजडा मुहि तुर-काण तणी जड तोडणा ।—महागजा करणसिंह रौ गीत

महपसमी—स० पु० [स० महत्+फा० पश्मी] बढिया उन का बना एक वस्त्र विशेष ।

उ०—मुहगा घणा मोल रा, पडे पगमडा अपारा । महपसमी मुखमला, तास अतलस जरतारा ।—सू प्र

महपाळ—देखो 'महीपाल' (रु भे)

उ०—राणी सुवयण सरीत रे, व्रप इमी उपजी नीतरे । तन भरथ सू कर प्रीत रे, महपाळ करसी नीतरे ।—र रु

महपिता—देखो 'पितामह' (रु भे.)

उ०—घूहड दुहू जोषाण सुमेर सुरेस सी । सुपह महपिता साथ रिमा उर रेमसी ।—किसोरदान वारहू

महपुर—स० पु० [स० महिपुर] भूलोक, पृथ्वी लोक ।

उ०—महपुर महपुर इद्रपुर, स्यौ ब्रह्मा लो जौय । जन हरिदाम दुभर दुनी, सुभर भरथा न कोय ।—ह पु वा

महफिल—स० स्त्री० [अ०] १ मजलिस, सभा, गोष्ठी ।

महवदी—स० स्त्री०—प्रेयसी, प्रेमिका, महवूवा ।

महवर—स० पु०—एक प्राचीन देश ।

उ०—अवध्या वणारसी चदेरी मल्लिवाल महवर महोव हरियाणु उ भयाणु उ रत्नपुर कामरू ।—व स

महवळी—देखो 'महावळी' (रु भे)

उ०—गज दत तोड अरि थाट गाह । महवळी लोह पड खेत माह ।—शि रु

महवूव, महवूव—स० पु० [स० महवूव] (स्त्री महवूवा) १ अत्यधिक प्यारा, प्रिय, आशिक, अजीज, प्रेमी ।

उ०—१ कुवर कनै ऊ कागद आयो, जाणै चायग स्वाति वूद पायो । महवूव का दमकत छाती लगाय लीना ।—पना

उ०—२ सब लालो सिर लाल है, सब खूबो सिर खूब । सब पाका सिर पाक है, दादू का महवूव ।—दादूवाणी

उ०—३ नजर निजारे दी यार, मन वस गईयां वे । रसीलाराज महवूवा दी नजरा, फूट कलेज पार ।—रसीलाराज रा गीत

२ वह जिससे प्रेम किया जाय, इश्क या मुहब्बत करने योग्य ।

उ०—हसि कै साहि कहै इसी, क्यू वे खोजा खूब । हम महलें सब सखणी, नहि पदमणि महवूव ।—प च चौ

३ रसिक, शोकीन, इश्क मिजाज, खुश मिजाज ।

उ०—मेछा हदा मुलक मे, जो मावडियो जाय । महवूवा री मिमल मे, किल सिरदार कहाय ।—बां दा

रु० भे०—महिवूव ।

महवूळ—देखो 'महावळ' (रु० भे)

महवूभूय—देखो 'महाभूत' (रु० भे)

महमडळ—देखो 'महिमडळ' (रु० भे)

महमत—देखो 'मैमत' (रु० भे)

उ०—१ मोळै वरसा कामणी, मगरपचीमा कत । ए दिन केर न आवसी, जोवन रा महमत ।—अज्ञात

उ०—२ सांवण आयो साहिवा, मोर हुप्रा महमत । इण रित पीयर मोकळै, कठण हिया रा कत ।—अज्ञात

महमती—१ देखो 'मैमती' (रु० भे) (ना डि को)

२ देखो 'मैमत' (रू. भे.)

महमद—१ देखो 'मैमत' (रू. भे.)

उ०—साझी समय घण कीयो सीणगार । सीरह महमद गलि मोतीहार ।—वी दे

२ देखो 'मैमत' (रू. भे.)

३ देखो 'महमूद' (रू. भे.)

४ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

महम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—वेगही महमूद गुजरात पातिसाही करे । सू पताई रावळ ऊपर महम कीवी । पावैगढ नू वरस वारह ताई धेरियो ।

—पताई रावळ री वात

महमद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

२ देखो 'मैमत' (रू. भे.)

उ०—बीरा, म्हारै माथा नै महमद लाज्यो । म्हारी रखडी वैंढ घडाज्यो ।—लो. गी.

३ देखो 'महमूद' (रू. भे.)

महमदी—देखो 'मुहम्मदी' (रू. भे.)

महमह—क्रि० वि०—खुशवू के साथ ।

महमहद—देखो 'माहोमाहि' (रू. भे.)

महमहण—स० पु०—१ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर । (अ. मा.)

उ०—मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख । केळा छोट विसेख, जाय बिदुर घर जोम्हिया ।—र. ज. प्र

२ ईदवर, परमेदवर ।

उ०—१ सत सगत समरण सदा इता थोक वछै अदै । मागियो मूक धो महमहण, दइव सीळ सतोक दै ।—जगी खिडियो

उ०—२ खग नीर धीर अतर खरा, मद कुजर वपु जिम मयण । मन वसै तेम तू मांहरै, मो मन बसियो महमहण ।—ह. र

३ विष्णु ।

उ०—मच्छ कच्छ वाराह महमहण, नारसिंह वामन नारायण । दुज्ज-राम रघु-राम दमोदर, कसन बुद्ध कलकी कल्याणकर ।—ह. र

[स० महार्णव] ४ समुद्र, सागर ।

उ०—ग्रहमड लगै भुजड वधि, महमहण मथण किरि महोदधि । —गु. रू. व.

रू० भे०—महमाहण, महमेहण, महामहण ।

महमहणी, महमहवी—क्रि० अ० [प्रा० महमहद] १ महकना, खुशवू देना । (उ. र.)

उ०—१ महासर आगै आइयो, चदन रा तर पाल । पकज परमळ महमहे महा सुगधी साल ।—पचदही री वारता

उ०—२ वडल वेडल चपक मालती । महमहद कलि फूलि वन-स्पति ।—जयशेखर सूरि

२ गध देना ।

महमहियोडो—भू० का० कृ०—१ महका हुमा, खुशवू दिया हुमा.

२ गध दिया हुमा

(स्त्री० महमहियोडो)

महमां—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—चारण वरण चितार, कारण लख महमां करी । धारण कीजै धार, परम उदार प्रतापसी ।—दुरसी आढ़ो

महमाण, महमान—देखो 'मैमान' (रू. भे.)

उ०—१ दुनिया सब कीय पाच दिन आया महमाणां ।

—केसोदास गाढण

उ०—२ सगत केम सत्ता करी रे, काय पचारी पाण । थोडा ही होवै घणा रे, लीज्ये भेलि महमान रे ।—प. च. ची

महमानी—देखो 'मैमानी' (रू. भे.)

उ०—रतन मजरी राजा विक्रमादित्य नू परणा ई गयी घणी महमानी हुई ।—पचदही री वारता

महमा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—१ तद करणसिधजी वगेरै साराई राजावा इण री महमा करी ।—द. दा

उ०—२ कारण कवण वयण लघु काया । महमा प्रबळ ईस्वरी माया ।—सू. प्र

महमाई, महमाय, महमाया—देखो 'महामाया' (रू. भे.)

(ना. मा, ह. नां मा)

उ०—१ सुभ निसुभ चढ मुडासुर, दुमह सुरा दुखदाई । दानव महिख रकत बीजादिक, मार लिया महमाई ।—मे. म

उ०—२ काकळ सम कुवेलिया, म दे सग महमाय । निजरां आगै निमस मै, हारमोर व्है जाय ।—वा. दा

उ०—३ किनिया पच वरस घरि काया । मिळै आण सनमुख महमाया—सू. प्र

महमाहण—देखो 'महमहण' (रू. भे.)

उ०—मुख हूता भाख 'किसन' महमाहण, प्रभु नित भीड साच पखा रे ।—र. ज. प्र

महमुद, महमुद—१ देखो 'महमूद' (रू. भे.)

२ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

महमुदी, महमूदी—स० पु० [अ० मुहम्दी] १ एक प्रकार का बढिया कपडा या वस्त्र ।

उ०—१ मन जाणै पहलू महमुदी, फाटा घाबळ लियां फिर । कासू हुवै मिनखा कीघो, करे जिको करतार करे ।—मोपी आढ़ो

उ०—२ पछे अकवर पातसाह जामनू तुरक कियो । हमें तुरक छै । बडा दातार छै । चारण आयेरी खवर दै तिणनू ५ महमूदी दीजै —नंगुसी

२ देखो 'मुहम्मदी' ।

रु० भे०—महमूदी, महिमुदी, महिमुदी, माहमुदी ।

महमूद-वि० [प्र०] १ श्रेष्ठ, उत्तम ।

१ शुभ, अच्छा ।

१ प्रशसनीय, प्रशसित । ४ इष्ट ।

स० पु०—१ एक प्रसिद्ध मुस्लिम वादशाह ।

रु० भे०—महमद, महमद, महमुद, महमुद, महिमुद, महिमुद ।

महमूदी—१ देखो 'मुहम्मदी' (रु भे )

२ देखो महमूदी' (रु भे )

महमूहण—देखो 'महमूहण' (रु भे.)

महमूहण—देखो 'मनमोहन' (रु भे )

उ०—मिणघर मेछ कमळ महमूहण, चाच वसोघर दे चलण ।

मूणस वट तो तण माडेचा, मनखत माणी त्रिम मण ।—नैणसी

महम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रु भे )

महम्मद-वि०—सब से बड़ा, सर्वश्रेष्ठ, महान ।

महम्मा—देखो 'महिमा' (रु भे )

उ०—महम्मा जाणै ब्रह्म महेश । पगा रिख लाग करै नति पेश ।  
—ह र

महया—देखो 'महत्ता' (रु भे ) (जैन)

महरभ, महरम-स० पु०—१ परमात्मा ईश्वर ब्रह्म ।

उ०—१ नमो महरभ नमो न्यारा, नमो पद परमेस्वरम् ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ निरभं राज भया पतिनीका, अघर अमर वर कीन्हा ।  
जन हरिराम मिले महरम सू, अरस परस लिव लीन्हा ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ ज्ञान, बोध ।

उ०—गळै जनेउ घालि करि, अपनो करै गुमान । तन मन की  
महरम नही, करि करि मूवो गिलान ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

३ आत्मा ।

उ०—ऐसा रे कोई दरद दिवाना । आपा मन महरम कु जाना ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

वि०—१ भेदी, जानकार ।

उ०—१ देही भीतरि देव हमारे, चेतन चौथे धामका । वार्क  
आसि पासि रहु लागा, महरम ताहि मुकाम का ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ ज्ञानी, विवेकी, तत्त्वज्ञ ।

उ०—१ पांच पचीस गलीम कूं सभिल्लै, मन कूं जोत महरम होई ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ बिना बाती जोति भिल्लिल, अखड दीया लोय । देह विन

वदेह पुरखा, लहै महरम सोय ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज  
३ पवित्र, शुद्ध ।

उ०—वेद कतेव ले पाठ दोउं पढै, देहाथि छापा करि द्वारिकाजी ।  
तन तीरथ फिर नाहि आया घरे, मन महरम बिनळ न राजी ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

रु० भे०—महारम ।

महर-स० स्त्री० [का० मेह] १ दया, कृपा, अनुग्रह । (अ मा )

उ०—१ मिळियौ माहव महर सू, नर तन तुनै निपाप । पेख हुवो  
सो पकरै, अगमद हूत मिलाप ।—वां. दा

उ०—२ मास असाढ़ सुकळ पख माही, तिथि नोमी वरताई ।  
स्वांत नखत्र समय सध्या री, महर करी महमाई ।—मे म.

उ०—३ दादू काढै काळ मुख, महर दया कर आइ । दादू ऐसा  
गुरु मिल्या, महिमा कही न जाइ ।—दादूवाणी

उ०—४ भभीखण सरण थाय भूघर, महर कर मन कोट । धुर-  
घमळ ववियौ घनख धारण, कनक वाळो कोट ।—र ज प्र

उ०—५ दादू मुईमार मानुख घणै, ते प्रत्यक्ष जम काळ । महर  
दया नहि सिध दिल, कूकर काग सियाळ ।—दादूवाणी

२ सहानुभूति, हमदर्दी ।

उ०—सु करन रे वर दुहागण हुती, तिण सू गरीबनाथ महर  
करता ।—नैणसी

३ ममता, प्यार । ४ करुणा ।

रु० भे०—मिहर, मै'र, मैहर ।

५ देखो 'महिर' । (अ मा, ना डि को )

उ०—महर थभै गयण मागा तुरी वागां ताण ।—र रु.

६ सूर्य सूरज । (अ मा, ना डि को )

७ मुसलमानो मे वर की ओर से कन्या को दिया जाने वाला घन ।  
(स्त्री० महियारी) ८ गूजर, खाला, अहीर ।

उ०—लारोवरि अस चित्राम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर ।  
मांखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर ।—वेलि

रु० भे०—महरि, महर, महिर, महिरि ।

९ देखो 'मुहर' (रु भे )

उ०—पाच महर लीफळ घप अर्प । जडसी घणौ आव मढ़ि जप्यै ।  
सू प्र

महरघ-वि० [स० महार्घ] १ बहुमूल्य ।

उ०—अह अद्वितीय पद पूजनीय । उत्साह अरघ मिलनी महरघ ।

—ऊ का

२ महंगा, दुर्लभ्य ।

महरघता-स० स्त्री० [स० महार्घ्य] महंगा होने की अवस्था या भाव ।  
महरवान—१ देखो 'मै'रवान' (रु भे )

उ०—१ बदगी करेंगे महर्चान, जिदगी वकस किवले-जिहान ।

—ऊ का

उ०—२ पछे वीरमदेजी नू ऊ पातसाहू री हजूर ले गयो । पात-  
साहू सू मिळायो । पछे वीरमदेजी सौ पातसाहूजी महर्चान हुवा ।

—नैणसी

महर्चानगी, महर्चानी—देखो 'मै'रचानी' (रू भे)

उ०—१ आज तो किही वडे सगै महर्चानगी करी सो अळगी  
भुयरी नारेळ म्हांतू अठै साम्हो आयो ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ खाफरी राजा-री मुजरी हमेस करै । राजा री वडी  
महर्चानगी है । हेक दिन राजा फुरमायो—खाफरा ! चोरी करणी  
सीखाय ।—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

उ०—३ बिणुजारा री वाजिब सोख री श्री नतीजी धियो के  
राजकवर उण रै मूडे मूड ई कह्यो-आपरी घणी महर्चानी के  
म्हने मरण सू वचण री सीख दीवो ।—फुलवाडी

महर्चानगी-स० पु० [अ०] १ रहस्य या भेद, मर्म ।

उ०—प्यारा महर्चान दिल की जाणै, धीर न जाणै कोई वात नै ।

मीरा दरमन कारण भूरै, ज्यू बालक भूरै मात नै ।—मीरा

२ जो जनान खाने मे जा सकता हो ।

३ दोस्त, अंतरंग मित्र । ४ भीतरी रहस्य से परिचित ।

५ कन्या की दृष्टि से वह सम्बन्धी या व्यक्ति जिससे उस कन्या का  
विवाह जायज न हो । (मुसलमान)

६ जानकारी ।

उ०—हरिया निज निरकार की, महर्चान बिन गम नाहि । एक  
अवडो होत धुनि, सुनि सिखर कै माहि ।

—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

रू० भे०—माहर्चान ।

महर्चानगी-स० पु० [स० महर्चान] सात उर्व्वं लोको मे से चौथा लोक,  
महर्चान । (पोराणिक)

रू० भे०—महालोक ।

महर्चानगी-वि० (स्त्री० महर्चानी) भीतर का, अन्दर का ।

उ०—महर्चान मोरचा वधिया देख आपस मे कहणै लागिआ  
जायगा दूटणी रामजी रे सारे थी ।

—भाटी सुंदरदास वीकुपुरी री वारता

महर्चानगी—देखो 'मै'रचान' (रू भे)

उ०—१ डाढ़ू बदीवान है तू वदि छोड दीवान । अर जनि राखी  
वदि में, मीरा महर्चान ।—दाढ़ूवाणी

उ०—२ तद इण अरज कीवो, 'जो महर्चान, मनै तो इण जीव  
सु काम छै । बीजा जीव मे किया कारण छै ! म्हादै तो आसरी  
इण जीव री छै ।—कुवर्मी साखला री वारता

महर्चानगी, महर्चानी—देखो 'मै'रचानी' (रू भे)

उ०—हमें सिवो पातसाहूजी री चाकरी करै । पातसाहूजी सिवै  
ऊपर घणी महर्चानगी करै ।—नैणसी

महर्चान, महर्चानी-स० पु० [स० महर्चान] महर्चान, महर्चान अर्चान ।

रू० भे०—महर्चान, महर्चान, महर्चान, महर्चान, महर्चान, महर्चान,  
महर्चान ।

महर्चान, महर्चानी—देखो 'महर्चान' (रू भे)

(अ मा., ना. डि. को, ह नां. मा)

उ०—१ मथै तै वार किता महर्चान । सुरां ले दीध अन्नत सुजाण ।

—ह र.

उ०—२ बल करै मार घड मेगळा, जळ पीवै महर्चान हू । पेहळाद  
चाड पथर विहर, तिको सिध रायसिध तू ।—द दा

उ०—३ ओपमा देण कारण उठै, करि विचार चारण कहै ।

महर्चान नीर अदर मनहु, वीर रीछ वदर वहै ।—मे म

२ देखो 'महर्चान' (रू भे)

३ महाराजा, राजा, नृप ।

उ०—मोहरे महर्चान रै दळा रा महाबळ, भुजा बळ वन पती कीध  
भंरी ।—नगराज खीची री गीत

महर्चानगी—देखो 'महर्चान' (रू भे.)

महर्चान-स० स्त्री०—पानी भरने व डोली उठाने का कार्य करने वाली  
एक जाति विशेष, कहार । (मा म)

रू० भे०—मै'रा ।

महर्चान-स० स्त्री०—अहीर होने का भाव ।

उ०—चत्रमुख ईस प्रारथै चत्रभुज, कीतूहल गोकळ सुख काज ।  
देव अमा छाडी देवाई, महर्चान पावा महाराज ।—स्त्रीकृष्ण री गीत

महर्चान, महर्चानी—देखो 'महर्चान' (रू भे)

महर्चानदार—देखो 'महर्चानदार' (रू भे)

उ०—वी मंदिर मांही सुंदर भीत सुवरणमई अर खभा रतनजटित,  
तोरण, दरीखानी, दरवाजा, महर्चानदार महल कीटडी ।

—सिधासण बत्तीसी

महर्चान—देखो 'महर्चान' (रू भे)

महर्चानगी—देखो 'महर्चान' (रू भे)

उ०—हत्थो महर्चान तेणि हकारि । वधो महर्चानसुर धीर  
वकारि ।—मे म

महर्चान—देखो 'महर्चान' (रू भे)

उ०—१ सावत्री मरसती गवरि गंगा गोमती । मिळ सतियां धरि  
महर्चान करै इण पर कीरती ।—रा रू

उ०—२ अस्त भवन की प्रीतडी नव मे ताणु तांणि । जल बिन  
महर्चान किड रहइ, कछु महर्चान हमारी आंणि ।—स कु.

महर्चान, महर्चानगी—देखो 'महर्चान' (रू भे)

महर्चान—देखो 'महर्चान' (रू भे)

महलूम—वि० [अ० महलूम] १ निराशा, नाउम्मेद, वचित ।

२ वदकिस्मत, अभाग ।

३ असफल, नाकामयाव ।

महल—देखो 'महिला' (रू भे)

उ०—१ सु तैरो वेटी परणीजण नू कठैक गयो हुतो सु हलाणो लियाआवतो । सु बीच आवता महल रौ डोल वैचाक हुग्री ।

—नैणसी

उ०—२ जनानै सारै ही मे घोरज दीवी । कुवर री मा भर महल धोनू ही हठ झालियो—कुवर री मुहडी देखा ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—३ महला पूनम चदमुख, आठम चद ललाट । केहर कड जू खीण कड, भू भमरावळ घाट ।—वां दा.

उ०—४ क्रम क्रम डोला पथ कर, ढाण म चूकै ढाळ । आ मारू बीजी महल, आखई झूठ एवाळ ।—डो मा.

उ०—५ मुदै एह खट महल, सहल अत गिणै सुपावन । पढदायत हित प्रिया अघट, सती मिली अठावन ।—रा रू

महल—स० पु० [अ० महल (ल)] १ मकान, घर ।

उ०—१ तूटै घर साधो लगै, सूनै महल चिराग । रुठा राजद रिळमिळै, आइयो मित ऐराक ।—फुलवाडी

उ०—२ हठ नाळ पेट चाजार हाठ । प्राजळै महल चदण कपाट ।

—वि स

२ किसी राजा, रईस या धनी का भवन, हवेली, राजप्रासाद ।

उ०—१ दाटक अनड दड नह दीघो, दोयण घड सिर दाव दियो । मेळ न कियो जाय विच महला, कैलपुरे खग मेळ कियो ।

—दुरसी आढी

उ०—२ परभात सखरो महरत देख महलां मे देवसरमा नू बुला-इयो अर उण सू स्त्री हरिवस पुराण कथा आरम कराई ।

—साई री पलक में खलक री बात

१ देवल, देवालय ।

उ०—महल अतीव उच्च नभ मापत पती प्रसन्न सपती प्रापत । व्यापत नाहि कदापि बिपत्ती, स्त्री करनी जय जयति सकती ।

—मे म

४ रनिवास, जनान-खाना ।

उ०—महला सू थिरमो एक एक, रुपया पचास पचास दिया ।

—कुवरसी साखला री वारता

१ स्थान, जगह ।

६ अवसर, मौका ।

७ देखो 'महिला' (रू भे)

उ०—मुदै एह खट महल, सहल अत गिणै सुपावन । पढदायत हित प्रिया अघट सती मिली अठावन ।—रा रू

रू० भे०—महल, महला, महल्ल, महिल, महिला, महिल्ल, महल्ल,

महेल, महोल, माहिल, मिहल, मुहल, मोहल, मोहल ।

महलकाढ—स० पु० [स० काष्ठ+का० महल] चिता ।

उ०—आतुर चित आगळी, घाम विसराम सुघारे । वन चदन वावना, अगार घणसार अपारे महलकाढ चुणि विमळ, महल रूई घत पूरित । ओप सदल ओछाड, अमल परिमळ आंकूरित । उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण उत्तरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।—रा रू (मि० कठमदिर)

महलगोता—स० स्त्री०—सोलकी वश की एक शाखा व इस शाखा का राजपूत ।

महला—देखो 'महिला' (रू भे.)

महला—देखो 'महल' (रू भे)

महलायत—स० पु० (व व) [का० महल+रा० प्र० यन] राज्य प्रासाद, भवन ।

उ०—१ कोट री सफील ऊची गज १६ ओसार गढ़ री महलायत हेठै गज २० ओर गज १० कोट अर पडकोटै रै बीच छै ।

—द दा

उ०—२ एहडी महलायता माहे काम गी भीनी, रजिओ भमर, जुआन वानंत घणा अतर सूधे माह वैराजमान हुग्री छै ।

—कल्याणसिंह वाडेल नगराजोत री बात

उ०—३ राजा इण भांत नगरी देखती फिरै छै राजा रै महलायत आयो छै ।—पचदडी री वारता

रू० भे०—महिलायत, महिलायत ।

महलार—देखो 'मलार' (रू भे)

महलि, महली—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—स्वामीजी कौण अटक अरि उरतैं डारैं मुक्ते महलि विराजै । गोरख भवण गवण करि जीवै, सुख मे सीगी बाजै ।—ह पु वा २ देखो 'महिला' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ कहियो फरजद न मानै काई छक तरणाई मछर छिळै । महली नू तो मिळै कमाई, माइता नू भूड मिळै ।

—हिगळाजदान कवियो

उ०—२ देहली लग महली पिण दीडी, फळसा लग मा वहन फिरी । मडहूत लगी कुटव ची मेळी । किणियन सुख दुख बात करी ।—प्रध्वीराज राठीड

उ०—३ हाड सगी न होय, सगी नेह मोही सगी । जुग च्यार द्रग जोय, जोवत मा महली जळै ।—र हमीर

महलोटी—देखो 'मुलेठी' (रू भे)

महलो—देखो 'महल्लो' (रू भे)

उ०—राजाजी पातिसाही बकसी नू महलो दियण लागा ।

—द वि

महल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ महसू गोव मोम मान कुदनी कलस्स ए । पणुत काच नीन यन्न, आरिमं अरस्स ए ।—गु रु व.

उ०—२ जादम जाठा यज्जिया, रांभी नै ऊदल्ल । विव सुरपुरां वगान्धिया अद्यग तणा महसू ।—रा. रु

२ देगो 'महिळा' (रु. भे.)

महसू-ग० पु०—राज्य कर्मचारी ।

उ०—चामरधारिणी वार विलासनी महसूक महल्लिका उपाध्याय गायन वझ्कार आलवणिकार वीणकार ।—व स

महसू-मि० ग० म्त्री०—राज्य कर्मचारिणी विशेष ।

उ०—वदिराज मन्थ सभापति लाक्षणिक साहित्यक ताकिकच्छा-दमिक अलकारिक श्लोतिमिक चामर धारिणी वार विलासनी महसूकिका उपाध्याय गायन वझ्कार ।—व स

महसू-ग० पु०—राज्य कर्मचारी विशेष ।

उ०—अनकारिक योतिमिक चामर धारिणी वारविलासनी महसूक उपाध्याय गायन वझ्कार ।—व स

महसू-ग० पु० [अ० महसू] किमी नगर, शहर या गाव का कोई भाग, मश, मुहल्ला, वाम । कई मकानों या घरों का एक सामूहिक रूप ।

उ०—चने लोक चलने ममीतां महसूने । करोखी मझायी, उठी साह माथी ।—रा रु.

रु० भे०—महली, महोली ।

महसू-ग० म्त्री० [स० महोवर] अग्नि । (नां मा)

महसू-देगो 'महावीर' (रु. भे.)

उ०—एक पोहर रच जुम्भम अरोह, महवीर दीध रण अमर मोर ।—दि रु

महसूच, महसूचा, महसूचा-ग० पु०—गठोठों की एक उप शाखा ।

महसूची-ग० पु०—गठोठों की 'महसूचा' उप शाखा का राजपूत ।

महसू—देगो 'महसू' (रु. भे.)

महसूय—देगो 'महायत' (रु. भे.)

महसूद-ग० पु०—ग्रन्थ । (ना मा)

महसूत-ग० पु०—गलाहकार ।

उ०—गाहरां कुर री भोपतजी कहियो भाभा में वोहते गजाजी रे महसूता ह कहियो नहीं ।—द. वि

महसूत—देगो 'ममांग' (रु. भे.)

उ०—नीन भवत महसांग मय योगिनी घाराभी । कहो नद देव रुन वात्र, सात्र ए निशा माथी ।—प स चो

महसा महसागुर—देगो 'महिमागुर' (रु. भे.)

उ०—गिन निमंभ मंघारिया, महसागुर मारे । चढ मुट मानरिया, पं चगुर घाते ।—गज उदार

महसो—देगो 'महिनी' (रु. भे.)

महसूत-ग० पु०—१ गज, मगा, चुगी ।

२ किराया, भाड़ा ।

रु० भे०—मामूल ।

महसूत-वि० [अ०] अनुभव करने योग्य, जिसका ज्ञानेन्द्रियो द्वारा आभास हो ।

रु० भे०—मसूम, मैसूम ।

महसेन—एक राजा का नाम ।

उ०—अग्रसेन प्रमुख सोल महसू सुकुटवद्ध राजा, महसेन प्रमुख छपन्न सहस बलवत ।—व स.

महा—१ हम ।

उ०—नद कुरसी कह्यो, 'आ तो कृपा परमेस्वरजी महं ऊपर करी । इतरा थोक परमेस्वरजी थाने वकसीया, तो फेर इतरी अंब वयु राखी ? वयु तो थै मांगी ।—कूरसी साखळा री वारता २ देवो मांय' (रु. भे.)

उ०—पुरख सवण प्याली भरै, चुगली कांजी चाड़ । मन पय हिय प्याला महं देगो दिए विगाड ।—वा दा

रु० भे०—महा ।

महाण—१ देखो 'महारणव' (रु. भे.)

उ०—हाकां हू फाटै हियो, जुघ रूप जणांण । जळह उछाळं जोर सूं, मन डरै महाण ।—गज-उदार

२ देवो 'महान' (रु. भे.)

महान-वि०—१ जो गुणों की दृष्टि ने उच्च या श्रेष्ठ हो, सर्वश्रेष्ठ उत्तम ।

उ०—लघुतै दीरघ पुन पुलित, या मात्रा इधकाय । त्या छोटन वढ फिय पता, वढे महान वढाय ।—जैतदान वारहठ

२ बहुत बड़ा, विशाल ।

३ अत्यन्त, अत्यधिक, बहुत ।

उ०—निनाद वध अघ के दुक्क थोटते नदें । महान लठ सठ के कुकठ घोटते मदें ।—ऊ का

रु० भे०—महाण ।

महानता-स० स्त्री०—१ महान होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ बढप्पन ।

३ गौरव ।

महा-वि० [स०] १ अत्यन्त, अति, बहुत, अधिक ।

उ०—१ महा दिय मान करी गुह मीत । तारे सह कीर कुटुब सहीत ।—ह र

उ०—२ कसै व्याळ हू नीव पाताळ कानें, महा उच्चता भाखरां तुच्छ मानें ।—मे म.

२ सर्वोच्च, उच्चतम ।

३ सर्वोत्तम, उत्तमोत्तम ।

उ०—सदा तू रमै राम नो कोड़ माथें, महा मोड तू कोड़ तेतीस माथें ।—मे. म

४ भयकर, घोर ।



उ०—नग्री सोनमेनी पछै गामि नाही । महा कासटा घोर ऊजाड  
माही ।—मे म  
५ बड़ा, महान ।  
उ०—महा मही बसत पचमी, फागां सब गावै हो । फागुण फागा  
खेल हैं, वणराइ जरावै हो ।—मीरां  
६ योद्धा, वीर, बहादुर । (डि ना मा)  
रू० भे०—मह, मह, महि, मा, माह, माहा ।  
स० स्त्री० [स० मातृ] १ गाय । (अ मा)  
२ देखो 'महा' (रू भे)  
उ०—त्रिकाल-दरस्सी जोइसी, कहै एम आगम कहा । असमान  
उपद्रह याइसैं, उठी आग पाणी महा ।—गु रू व  
महाभ्रग-स० पु० [स०] ऊट । (डि को.)  
महाभ्रहि-स० पु०—शेषनाग ।  
रू० भे०—माहभ्रहि ।  
महाउखद—देखो 'महाश्रीखद' (रू भे)  
महाउत—देखो 'महावत' (रू भे)  
महाउर—देखो 'महावर' (रू भे)  
उ०—अरुनाई महाउर की दरसैं । तरवे मनु पावक से परसैं ।  
—ला रा  
महाऊखधी, महाश्रीखद-स० स्त्री० [स०महोपधि] १ सर्वरोगहरण दवा ।  
२ सोठ । (अ मा)  
३ लहसुन । ४ वन्सनाभ ।  
[स० महा+श्रीपधि] १ बड़ी गुणकारी दवाई ।  
२ दूब, घास ।  
रू० भे०—महाउखद ।  
महाकवु-स० पु० [स० महाकम्बु] शिव, महादेव ।  
रू० भे०—माहकवु ।  
महाकच्छ-स० पु० [स० महाकच्छ] १ समुद्र ।  
२ वरुण । ३ पर्वत ।  
४ भारत के पश्चिम में काठियावाड़ के पास की कच्छ की खाड़ी ।  
महाकल्प-स० पु० [स०] ब्रह्म की पूर्ण आयु के बराबर का समय ।  
रू० भे०—मा'कल्प ।  
महाकवि-स० पु० [स०] शुक्राचार्य का नामान्तर ।  
वि०—कोई बड़ा कवि, लब्ध प्रतिष्ठित कवि ।  
उ०—हुवो महाकवि मगणी, दातारा सिर भाग । दाता मगण  
भाव वै, 'जेहा' जस छल भाग ।—बां दा  
महाफस्ट-स० पु०—भयकर विपत्ति, अत्यन्त दुख ।  
उ०—दिवें भेय राधेय सरवस्व दांनी । महाफस्ट 'भीमांगवै' भूप  
मांनी ।—व भा  
महाफात-स० पु० [स० महाफान्त] शिव, महादेव ।  
महाफाता-स० स्त्री० [स० महाफान्ता] पृथ्वी, भूमि ।

महाकाय-स० पु० [स०] १ हाथी, गज ।

२ विष्णु । ३ शिव ।

४ शिव का एक गण, नन्दी ।

रू० भे०—माहकाय ।

महाकारत्तिकी-स० स्त्री० [स० महाकारत्तिकी] रोहिणी नक्षत्र में आने  
वाली कार्त्तिक मास की पूर्णिमा ।

रू० भे०—माहकारत्तिकी ।

महाकाळ-स० पु० [स० महाकाल] १ शिव ।

२ शिव का एक गण ।

३ शिव की एक प्रलय कारिणी प्रतिमा या रूप । इस नाम की  
प्रतिमा उज्जैन में है ।

उ०—१ सखी अमीणी साहिबी, मदन मनोहर गात । महाकाळ  
मूरत वणै, करण गयदा घात ।—बां दा.

उ०—२ इम ऊजेणी आविउ, प्रगट पूरणा-तीरि । महाकाल माहिं  
गयु, मज्जन करी सरोरि ।—मा का प्र

४ विष्णु । ५ भयकर दुर्भिक्ष, अकाल ।

६ कठिन समय ।

७ एक नदी जो नन्ददेवी पहाड़ियों से निकल कर अवध में से होती  
हुई घाघरा नदी में गिरती है ।

रू० भे०—मा'काळ, माहकाळ ।

महाकाळी-स० स्त्री० [स० महाकाली] १ महाकाल स्वरूप शिव की  
पत्नी, जिसके पांच मुख व आठ भुजाएँ थी ।

२ दुर्गा, शक्ति, पार्वती ।

उ०—देवी सरसती लख्खमी महाकाळी । देवी कन्न विस्णु अहम्मा  
कमाळी ।—देवि

३ शक्ति की एक अनुचरी ।

४ जैनियों के सोलह देवियों में से एक जो अवसरिणी के पाँचवें  
अर्हत की देवी है ।

रू० भे०—महाकाळी, माहकाळी ।

महाकाव्य-स० पु० [स०] १ वह ग्रंथ जिसमें आठ सर्गों से अधिक  
सर्ग हो ।

वि० वि०—वह प्रबन्ध काव्य जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन का  
आद्योपान्त विवरण होता है । इसका कथानक सर्गबद्ध होता है  
जिसमें आठ या उससे अधिक सर्ग होते हैं । इसका नायक देवता,  
राजा या धीरोदात्त क्षत्रिय होता है । इसमें श गार, वीर या शान्त  
रसों में से किसी एक की प्रधानता होनी आवश्यक है । बीच बीच  
में प्रसंगवश अन्य रसों का समावेश भी होना आवश्यक है तथा  
सूर्य, चन्द्रमा, नदी पर्वत आदि सभी प्राकृतिक तत्वों का यथास्थान  
वर्णन होना भी आवश्यक है । देश काल के अनुसार सामाजिक  
जीवन पर भी पूरा प्रकाश डाला जाना आवश्यक है । आजकल  
उस काव्य को, जो कवित्व की दृष्टि से उच्चकोटि का हो तथा



जिममे विभिन्न विषयो का सुन्दर रूप से वर्णन हो, महाकाव्य मान लिया जाता है।

२ बड़ा काव्य।

रू० भे०—माहाकाव्य।

महाकुमार-स० पु० [स०] किंगी राजा का बड़ा पुत्र, युवराज।

रू० भे०—माहाकुमार।

महाकुस्ट-स० पु० [स० महाकुष्ट] कोढ़ रोग के प्रसारक भेद में से वह भेद जिसमें हाथ पैर की अंगुलिया गल कर गिर जाती हैं, गलित कुष्ठ।

रू० भे०—माहाकुस्ट।

महाकोट-स० पु०—एक तीर्थ का नाम।

उ०—सिद्धकरण गोकर्ण पर्व, रुद्रकोट महाकोट। गुरजेस्वर जहाँ गरजना, महिमा केरी मोट।—मा का प्र

महाक्षेत्र-स० पु० [स०] कालिका पुराण के अनुसार एक तीर्थ।

रू० भे०—महाक्षेत्र, महाक्षेत्र।

महाकृत, महाप्रित-स० पु० [स० महाकृत्य] दान, पुण्य आदि अच्छे कार्य।

उ०—करि अग पान मितान महाप्रित। बढ तीरथ मधि दीध विप्रं वित।—वचनिका

महाखरब-स० पु० [स० महाखर्व] सौ खरब के बराबर की एक बड़ी सख्या।

रू० भे०—माहाखर्व।

महाखाड—देखो 'ब्रह्माखाड'।

महाखेत—देखो 'महाक्षेत्र' (रू भे)

महागणपति-स० पु०—गणेश, गजानन।

रू० भे०—माहागणपति।

महागरिष्ठ-वि०—अत्यधिक ठोस, दृढ।

२ अत्यधिक वजनी, भारी।

३ जो पचने में भारी हो, भ्रामाणी से हजम न होने वाला। (भोजन)

महागवरी—देखो 'महागोरी' (रू भे)

महागिड-स० पु०—बराहावतार का एक नाम।

उ०—करेवा देव तणा कोइ काम। रहचै माहि महाजल रांम।

महागिड पैस महाजल मज्झ, किया तै जुद्ध प्रथमी कज्ज।—ह र

२ बड़ा बराह, बड़ा सूअर।

रू० भे०—महागिड।

महागिरी-स० पु०—१ हिमालय, सुमेरु आदि बड़े पर्वत।

२ कुत्रे के आठ पुत्रों में से एक।

रू० भे०—माहागिरी।

महागीड—देखो 'महागिड' (रू भे)

महागोरी-स० स्त्री०—१ दुर्गा।

२ पार्वती, अम्बा।

३ विन्ध्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

४ आठ विशिष्ट देवियों में से एक।

रू० भे०—महागोरी, माहागोरी।

महाग्यानी-स० पु० [म० महाग्यानि] १ निय।

२ बहुत बड़ा विद्वान।

रू० भे०—माहाग्यानी।

महाग्रह-स० पु० [म० महाग्रह] १ ग्रह। (नं दि की)

२ गृह।

उ०—द्वारिषाजी माहि लोगा ने परा का मारज नृनिषा पर पर कं विर महाग्रह मो पक्यो छै। जोई प्रावै छै। त्याने पृथिज छै। महाचितावत हृषा छै।—प्रेमि टी

महाग्रीव-स० पु० [स० महाग्रीव] १ निय। २ ऊट।

रू० भे०—माहाग्रीव।

महाघण-स० पु०—प्रलयपालीन मेघ।

उ०—ऊचै मिर हारटा, पाहटी रग-नुघ्य। विग्रह महाघण ठम-टवड, धाह निहाट्ट मुघ्य।—टो मा

महाघणरूप-स० पु० [स० महा+घन्+रूप] विष्णु ईश्वर।

उ०—निरजण नाथ परम्म-घवाण। विमल महाघणरूप कल्याण।—ह र.

महाघोस-स० पु० [स० महाघोष] भारी दहदह भयानक नाद।

रू० भे०—माहाघोष, माहाघोष।

महाघ्नत-स० पु० [स० महाघ्नत] एक गो ग्याह वर्ष पुराना घो। (बंदक)

रू० भे०—माहाघ्नत।

महाचड-वि० [म०] भयानक, जबरदस्त।

रू० भे०—माहाचड।

महाचटी-स० स्त्री० [स०] दुर्गा।

रू० भे०—माहाचटी।

महाचक्रवरती, महाचक्रवरती-स० पु०—सम्राट।

महाचक्री-स० पु०—विष्णु।

रू० भे०—माहाचक्री।

महाचतुर-स० पु० [स०] १ पंडित। (ह ना मा)

२ होशियार, चतुर, सतर्क, दक्ष।

उ०—घड़ी च्यार-पांच रं भांकरकें आदमी च्यार पांच बारणें प्राय खडा रह्या। तद भरमल तो महाचतुर सो पग री खडको सुणीयो। तद जाग होळें सैं कुवरसी नैं जगायो—'जो हरामखोर बाहर खडा छै। उठो, सावधान हुयो।'—कुवरसी सांगला री वारता

महाचपला-स० स्त्री० [स० महाचपला] वह प्रार्थी छंद जिसके दोनों हाथों में चपला छंद के लक्षण हो।

रू० भे०—माहाचपला।

महाचार्ड-वि०—महात्यागी। (जैन)

महाचीण-स० पु०—एक देश का नाम। (व स)

रू० भे०—माहाचीण।

महाछत-स० पु० [स० महा+राज० छत] बडा क्षत्रिय, दूरवीर ।

उ०—'भजवसाह' सिवदान, 'अखी' 'भगवान' असकत । 'सामतसी' 'जुमार', 'मुकन' 'तेजसी' महाछत ।—रा रू.

महाजग-स० पु० [स० महा+फा० जग] भयकर युद्ध ।

उ०—काळा सौर उछळै कराळ भाळ दहू कांनी । जोघपुरा आमेरा महाणी महाजग ।—बखतसिंघ री गीत

महाजग्य—देखो 'महायग्य' (रू भे)

महाजटियळ, महाजटीयाळ-स० पु० [स० महाजट+रा० प्र० इयळ, ईयाळ] महादेव, शिव ।

उ०—महाजटीयाळ भ्रुगट भेक वक्रत मयक । अलकत सेस मेचख ऊयाळी । करण तप प्रभा परभात रा समोकर, तेज पुज 'नाथ' रा तणी ताळी ।—कवर भीमसिंघ री गीत

महाजत-स० पु०—सयमी या महायती होने की अवस्था या भाव ।

उ०—सुप्रवीत महाजत सूर सरी । कमधैस पढै अप्रवीत करो ।

—पा प्र

महाजन-स० पु० [स०] १ घनी व्यक्ति ।

उ०—अकुलीन पसाठ निखेधवउ, नीच जाइ ससरग वरजेवउ, महाजन समानेवउ, मडलीक प्रति उचित्य वरत्तवउ, सीमाला सर्व ऊससता राखेवा ।—व स

२ बनिया, व्यापारी । ३ व्यापारी वर्ग ।

उ०—तरं री लोग महाजन, छोकरी, हीडागर, घाची मोची सिकी महेसजी री गिली करै ।—राव चद्रसेन री वात

४ व्यापारी वर्ग का मुखिया । ५ बडा या श्रेष्ठ पुरुष ।

उ०—१ अथ मन्त्रि समस्त महाजन-प्रधान दाक्षिण्य करणैक वत्सल नीति मारग प्रकास ने कदक्ष प्रियेवत्ता दृढप्रतिज्ञ करुणा रस समुद्र प्रसिद्ध पदवीं प्रभु ।—व स

६ साधु पुरुष । ७ जन समुदाय ।

उ०—सध आधी रे विक्रमपुर नो उमही । गुरु वद्या रे महाजन मजलई गहगही ।—जिनचंद्र सूरि

रू० भे०—महाजन्त, मा'जन, माहजन ।

महाजनिक-स० पु०—जन समुदाय ।

उ०—प्रतिहार चतुद्धरिक कास्टिक राजद्वारिक सधिविग्रहिक भाठपति स्नेस्टि महाजनिक दूत दालिउद् कटुक ।—व स

महाजनो-स० स्त्री०—१ व्यापारिक गणित एक प्रकार की अक गणित ।

२ वही खातो मे लिखी जाने वाली लिपि ।

३ रुपयो के लेन देन का व्यवसाय । ४ सज्जनता ।

वि०—महाजन का, महाजन सम्बन्धी ।

रू० भे०—मा'जनी माहजनी ।

महाजन्—देखो 'महाजन' (रू भे)

उ०—लाठणू वसै महाजन् लोक, चौपडा पडै वाजार चौक ।

—पे रू

महाजळ-स० पु०—समुद्र सागर ।

उ०—करेवा देव तरा कोइ काम । रहचै माहिजळ राम । महा-गिड पैस महाजळ मज्झ, किया तै जुद्ध प्रथम्मी कज्ज ।—ह र.

महाजुग—देखो 'महायुग' (रू भे)

महाजुघ—देखो 'महायुघ' (रू भे)

उ०—धीबिया छडाळां किता लोटै घरा, प्रगट रजपूत बट दाख पुरै । 'माल' दूजै वचै महाजुघ मेलियो, खाग अणिरा तणै प्रगट खुरै ।—गु रू व

महाजोगी—देखो 'महायोगी' (रू भे)

उ०—तिण ठाम सथा दान रै समय गुरु छात्र रै अतर एक गज-राज अचाराक कड़ियो जिण कारण महाजोगी उपाध्याय माळव रै महीप व्याकरण रा अध्यापन मे एक भव्द री अनध्याय मानि पाणिनीय री प्रतिनिधि भट्टि नामक काव्य बणाय पढायो ।

—व भा

महाजोगेसर, महाजोगेस्वर—देखो 'महायोगेस्वर' (रू भे)

महाजोघा, महाजोघार—स० पु०—वीरो मे अग्रणी ।

उ०—१ गात मेर गज भीम, महाजोघा ऊतळी बळ । भुजा-दड परचड, जेम गगाजळ ऊजळ ।—गु रू व

उ०—२ धकचाळा करि कामणी भेटा । क्रीति उवारा । आगला जाळघर महाजोघार सारिखां रा वर कळिया काढां । असमासुर रा धिरोघ माहै इद्रादिक देवता वाढा ।—मा. वचनिका

महाज्वाळ, महाज्वाळा—स० स्त्री० [स० महा-ज्वाला] १ यज्ञ की अग्नि ।

स० पु०—२ एक नरक का नाम । ३ महादेव ।

रू० भे०—माहज्वाळ, माहज्वाळा ।

महाडोल, महाडोल—स० स्त्री०—राजा-महाराजा या रईसो के बैठने की डोली या पालकी जिसको मनुष्य अपने कंधो पर उठाकर चलते हैं ।

उ०—तिका महाडोल माही वैठाण सखी सहेलिया, दासियां रै घणा जलूस सू विदा किया ।—जलाल बूबना री वात

रू० भे०—माहाडोल, माहाडोल ।

महातक-स० पु० [स० महा-आतंक] १ भयकर आतक, डर, भय ।

[स० महा+आतक] २ भयकर रोग ।

उ०—जिण समय दिल्लीस साहजिहान रै मूयक्रच्छू नामक महातक री प्रकोप थियो ।—व भा

३ मृत्यु, मौत ।

वि०—अत्यन्त भयकर ।

महातत्, महातत्त्व—देखो 'महत्तत्त्व' (रू भे)

उ०—महातत् तुम्ह न जाणै माह, कियो तुम्ह केण आयी तू काह ।

—ह र

महातप, महातपि—स० पु० [स० महातपस्] १ बडा तप, साधना ।

उ०—सोसइ सदर महातपि आतपि रहइ गभीर । मोह तणा जग-बधव बध बछोइ धीर ।—जयसेखर सूरि

२ विष्णु । ३ बड़ा तपस्वी ।

महातम-स० पु० [स० माहात्म्य] १ महिमा, गौरव, बड़ाई, महत्त्व ।

उ०—१ सरस्वती नदी प्रभासखेत्र छै, तिणु रो महातम कछो छै ।  
—नैणमी

उ०—२ नाम महातम वरण कर, हम कू किये निहाल । सुणियो  
गुरु हरनाथ सू, दादू दीनदयाळ ।—भगतमाल

उ०—३ थक मन वाणिय स्वातम थान । महागुरु मत्र महातम  
मान ।—ऊ का ।

२ आदर, मान, सम्मान ।

रू० भे०—मातम, माहूतम, माहातम, माहात्म्य ।

३ देखो 'महात्मा' (मह, रू भे)

महातमा—देखो 'महात्मा' (रू. भे) (प्र मा)

महातल-स० पु० [स० महातलम्] अथ लोको मे से पांचवां लोक ।

(पौराणिक)

रू० भे०—माहूतल ।

महातलाय-स० पु०—बड़ा तालाव ।

महातपोधन-स० पु० [स० महातपोधन] १ बड़ा तपस्वी ।

२ बड़ा तपोधन ।

महाताप-स० पु० [स० महाताप] सिंह, शेर । (ना. डि को)

महातिषल-वि० [स० महातीक्ष्ण] अत्यन्त तीक्ष्ण ।

उ०—डगं फाडि डाचो बड वज्ज मुड, महातिषल नक्ख ररुं रोस  
चड ।—घ व अ

महातेज, महातेजस, महातेजसुर-स० पु० [स० महातेजस्] १ स्वामी  
कार्तिकेय । २ शिव ।

३ अग्नि । ४ पारा, पारद ।

५ धूर्वीर, बहादुर ।

रू० भे०—माहूतेज, माहातेज ।

महात्मन, महात्मा-स० पु० [स० महात्मन्] १ परमब्रह्म ईश्वर ।

२ शिव । ३ बड़ा साधु या मन्यासी ।

उ०—महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा हिल मिलें । मिलें जीवो-  
क्षयोती भूगमगत ज्योती मिलें ।—ऊ का

४ वह पुरुष जिसके विचार व आचार व्यवहार अत्यन्त उच्च हो,  
महापुरुष ।

५ दानी, दातार । ६ धूर्त, चालाक । (व्यग)

रू० भे०—महातमा, मातमा, माहूतमा, माहातमा ।

मह०—महातम ।

महात्रिफला-स० पु० [स० महात्रिपल] हड, वेहड आंवली का समूह  
(ओषधि)

रू० भे०—माहूतिरफला, माहूत्रिफला ।

महायम-स० पु० [स० महास्तम] १ बड़ा या भीमकाय स्थम ।

२ बड़े व मोटे तने वाला वृक्ष ।

उ०—अनेक फळे भारिया प्रकय ओपे । लिये चाहि सेवा न को  
जाय लोपे । सुगधाकर सुदर फूल सोहे । महायम मोरम सिभू  
विमोहे ।—रा. ॥

वि०—बड़े तने वाला, दीर्घाकार ।

महादड-स० पु० [स०] १ बड़ी भारी मजा ।

२ यम का दड । ३ बड़ा भारी डंडा ।

४ बड़ी बाह, या भुजा ।

रू० भे०—माहूदड ।

महादडधारी-स० पु० [स० महादण्डधारिन्] यमराज ।

रू० भे०—माहादडधारी ।

महादत्त, महादत्त-स० पु० [स० महा-दत्त] बड़ा भारी दान ।

उ०—कुळ करसण करै वरीमण कोडी । डोक फनक मळ ढाल-  
डिया । 'अडसी' सभ्रम ठोड सिचै इम, हम्म महादत्त हालडिया ।

—महाराणा हम्मोरमिह रो गीत

वि०—बड़ा दानी, दातार ।

महादल-स० पु० [स० महादल] महासेना, बड़ी फौज ।

उ०—ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिळै महादल मच्छर मांण ।  
ताणै वतळायो 'तीडावत, ठाणिया ताय डीलवियै' ढाण ।

—राव सलखा रो गीत

महादेव-स० स्त्री०—१ प्रचंड दावानल ।

उ०—पथी एक सदेसडउ, लग डोलउ पोह्चाइ । विरह महादेव  
जागियउ, अगिन दुभावउ भाइ ।—ढो मा

२ देखो महादेव' (रू भे)

महादसा-स० स्त्री०—गणित ज्योतिष के अन्तर्गत चालु मुख्य ग्रह  
की दशा ।

वि० वि०—बृहत्पाराशर होरा शास्त्र मे सर्वमाधारण के लिये  
विशोत्तरी दशा को मुख्य महादशा मानी है और विशेष रूप से  
किसी आचार्य ने ऋषोत्तरी, किसी ने पौडशोत्तरी, द्वादशोत्तरी,  
पञ्चोत्तरी, शताब्दिका, चतुरशीतिसमा, द्विसप्ततिसमा, षष्टिहायनी  
एव षट्त्रिंशत्समा दशाए जन्मनक्षत्र के आधार वाली मानी गई हैं ।  
इनके अतिरिक्त कालदशा, चक्रदशा, कालचक्रदशा, चरदशा, स्थिर-  
दशा, केन्द्रदशा, कारकदशा, ग्रहग्रहदशा, मण्डूकदशा, शूलदशा,  
योगार्धदशा, दृग्दशा, त्रिकोणदशा, राशिदशा, पञ्चस्वरादशा, योगि-  
नीदशा, पिण्डदशा, नैमिकदशा, ऋष्यगंदशा, मन्ध्यादशा, पाचक-  
दशा, तारादशा आदि दशा के विविध भेद हैं किन्तु ये दशाए सर्व-  
सम्मत नहीं हैं और इस शास्त्र मे विशोत्तरी महादशा को ही मुख्य  
माना गया है ।

महादान-स० पु० [स० महादान] १ ग्रहण के समय भंगी, चमार, दूध  
आदि जातियों को दिया जाने वाला दान ।

२ स्वर्ग प्राप्ति हेतु दिया जाने वाला दान ।

उ०—महादान आछइ घडइ, दूव माहि साकर पडइ सोनउ नइ  
सु-वास, एक 'अचळ' कथइ सिवदास ।—अ वचनिका  
रु० भे०—माहदान ।

महादानी—स० पु० [स० महादान + रा० प्र० ई] बडा दातार, दानवीर ।

उ०—हिरणाकुस हिरणाक्ष मुचकद, करण महादानी भया । कही  
छळ बळ कहा माया, अति सब खाली गया ।—ह पु० वा.

महादीन—वि० [स० महा + फा० दीन] अत्यन्त निर्धन, गरीब ।

उ०—कुळको वह स्वधीन और ठग के अधीन । ऊमरदान महादीन  
लालस लुट जाता ।—ऊ का

महादीप—देखो 'महाद्वीप' (रु भे) (र ज प्र)

महादीव—देखो 'महाद्वीप' (रु भे)

महादुकाळ, महादुकाल—स० पु०—भयंकर दुष्काल, भारी अकाल ।

उ०—दुरभिक्ष महादुकाळ, वरस सत्यासीयउ वूरो । दीठा घणा  
दुकाळ, पणि एडवउ को न हवो ।—स कु

महादुस्त, महादुस्टी—स० पु०—महादुष्टता करने वाला, महान्  
अन्याचारी ।

उ०—तव ते वोल्यो—पासी काढे ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनो  
जाणहार, देवलीक में जाणहार, दयावत । घणा गुण कीधा । नही  
काढे जिकी महापापी, महादुस्टी, नरक रो जावणहार ।—भि द्र.

महादे, महादेव—स० पु० [स० महादेव] शिव, शकर ।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—पागळा खडै जमदूत फीटा पडै, जोखमी ऊघडै नयण जूटी ।  
दिया वरदान मंतर महादेव रा, बलूती घनतर तरणी वूटी ।

—मे म

रु० भे०—महदेव, महादेव, मादेव, माहदेव, माहदेव, माहेव ।

महादेवी—स० स्त्री० [स०] दुर्गा, पार्वती, शक्ति ।

महाद्रह—स० पु० [स० महा + ह्रद] बहुत बडा गर्त ।

उ०—सुडादइ आच्छोडतउ गिरिनदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ  
साहस्सिक तणा मन खोहतउ, तुरगम त्रासवतउ, पवन जिम  
चालतउ — ।—व स

महाद्रुम—स० पु० [स० महाद्रुम] १ अश्वत्थ, पीपल ।

२ बट वृक्ष । ३ ताड वृक्ष ।

रु० भे०—माद्रुम, माहद्रुम ।

महाद्वीप—स० पु० [स०] १ पृथ्वी का बडा भाग जो चारों ओर से  
नैसर्गिक सीमाओं (यथा समुद्र, जल आदि) से घिरा हुआ हो तथा  
जिसमें कई देश हो ।

२ तेरह, बारह पर यति का एक मासिक छंद ।

रु० भे०—महदीप, महादीप, महादीव, मा'दीप, माहदीप ।

महाघन—वि० [स०] १ बडा घनवान ।

२ बडा खर्चीला ।

स० पु० [स० महघन] १ सोना, स्वर्ण ।

२ बहुमूल्य पोशाक ।

महाघनुस—स० पु० [स० महाघनुस्] शिवजी का एक नामान्तर ।

महाघातु—स० पु० [स० महाघातु] १ सुवर्ण सोना ।

२ महादेव, शिव । ३ मुमेरुपर्वत ।

महाधिराज, महाधीराज—देखो 'महाराजाधिराज' (रु भे.)

उ०—समाधियोग सावधी परावधी पिछाणलो । महैसराज राजतै  
महाधिराज मानलो ।—ऊ का

महाधू—वि० [स० मह + धी] १ बुद्धिमान, ज्ञानी ।

उ०—रहै विलवै रामरस, अनरस गिरै अलप्प । एह महाधू  
आतमा, ऐ तीरथ ऐ तप्प ।—ह र.

२ सर्वोच्च, शिरोमणि ।

उ०—कळप तर ऊखळि पडै 'जसी' महाधू जाम । माळा गाळा  
ठाम महि, तिकी न सूकै ताम ।—हा भा

[स० महा + ध्रुव] ३ अटल, निश्चय ।

महानदी—स० स्त्री० [स०] शराव, मदिरा ।

मयानट—स० पु० [स०] १ शिव ।

उ०—१ अर सिंहदेव साथ ही हेठै आय खडग खेल्ह मल्लाय महा-  
प्रलय रा समय रा महानट री आभा घरी ।—व भा

उ०—२ महानट हाथ हकाळत मुड । रोळा मझ धुम्मर घालत  
रुड ।—मे म

२ श्री कृष्ण ।

महानद—स० पु०—१ एक बडी नदी । (पोराणिक)

२ एक प्राचीन तीर्थ ।

रु० भे०—माहनद ।

महानदी—स० स्त्री० [स०] १ गंगा, यमुना, कृष्णा, सिंधु, ब्रह्मपुत्रादि  
बडी नदियों में से कोई एक नदी ।

२ एक नदी का नाम जो बगाल की खाडी में गिरती है ।

महानरक—स० पु० [स० महानरक] इक्कीस बडे २ नरको में से  
एक नरक ।

महानवमी—स० स्त्री०—आश्विन शुक्ला नवमी ।

महानस—स० पु० [स०] रसोईघर, रसोवडा ।

उ०—देस माहि आथता ही ओठी नू सीख दे'र विपत्ती रा महा-  
रणव मे मग्न मागळियांणी पुत्र सहित वेस रो विपरधास करि  
कैराल ग्राम रा ठाकुर रोहडिया वारहूठ आल्हा रें वास जाइ रही  
अर थोडा दिना में बडा बिस्वास रें साथ महानस री मालिक होइ  
चारण री चाकरी में चित्त लगाइ चातुराई री रीक चही ।

—व भा

महानाव—स० पु० [स० महानाव] १ बादल की गरज ।

२ तेज आवाज, कोलाहल ।

३ बडा ढोल, नगाडा ।

४ सिंह, घेर । (अ मा, ह ना, मा)

५ हाथी । ६ ऊट । ७ शिव, महादेव ।

८ कान । ९ शख ।

[स० महानादम्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।

रु० भे०—माहानाद ।

महानारायण—स० पु० [स०] विष्णु ।

महानाव—स० स्त्री० [स०] बड़ी नौका, जहाज, वेडा ।

रु० भे०—महानाव ।

महानास—स० पु० [स०] प्रलयकालीन रुद्र, रुद्र ।

महानिद्रा—स० स्त्री० [स० महानिद्रा] मृत्यु, मीत ।

महानिघान—स० पु० [स० महानिघान] १ घातु भेदी पारा ।

२ बुभुक्षित ।

महानिशा, महानिसि—स० स्त्री० [स० महानिशा] १ रात का मध्य भाग, अर्ध रात्रि ।

२ कल्पात या प्रलय की रात, काल रात्रि ।

३ रात का दूसरा या तीसरा भाग ।

४ निशाकाल, रात्रि का समय ।

उ०—राता तत चितारत चितारत, गिरी कदरि घरि बिस्ते गए ।

निद्रावम जग एहु महानिसि, जामिए कांमिए जागरण ।—वेलि

रु० भे०—माहानिशा ।

महानील—स० पु०—बड़ा नील, विजोरी नील ।

महानील—म० पु० [स० महानील] एक प्रकार का नीलम नामक रत्न जो सिंहलद्वीप में होता है ।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्वराग वज्र वैडूर्य सुरभकांत चद्रकांत नील महानील इद्रलील ।—व स.

रु० भे०—माहनील ।

महानुभाव—स० पु० [स०] १ सज्जन पुरुष, सम्य व्यक्ति ।

२ आदरणीय पुरुष, उच्च विचारों वाला व्यक्ति ।

३ सत्यनिष्ठ पुरुष ।

महानुभावता—स० स्त्री० [स०] १ महानुभाव होने की अवस्था या भाव ।

२ महानता ।

रु० भे०—माहनुभावता ।

महानेत्र, महानेत्र—स० पु०—शिव, महादेव ।

महानृत्य—म० पु० [स० महानृत्य] शिव, महादेव ।

महाप्रप—म० पु०—देवराज इन्द्र (अ मा, नां मा)

रु० भे०—माहप्रप ।

महापचमूल—स० पु० [म० महा पचमूल] वेल, अरनी, सोना पाठ, काश्यपी और पाटला इन पांच वृक्षों की जड़ों का समूह ।

(वैद्यक)

रु० भे०—माहपचमूल ।

महापचविस—म० पु० [म० महा पच विप] शू गी, कालकूट, मुस्तक,

वछनाग और शखकर्णी इन पांच विषों का समूह ।

रु० भे०—माहपचविस ।

महापडित—स० पु० [स०] बहुत बड़ा पडित, लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् ।

उ०—ज्योतिसी वैद्य महावैद्य अस्ववैद्य गजवैद्य मायिकादि पंडित

महापडित इति राज वरणन ।—व स

महापइण—वि० [म० महप्रतिज्ञ] वृद्ध प्रतिज्ञ । (जैन)

महापक्ष—सं० पु० [स०] १ गरुड ।

२ एक प्रकार की वस्तु ।

रु० भे०—मापक्ष, माहपक्ष, माहपक्ष ।

महापक्षी—स० पु० [स०] १ उल्लू ।

२ पेचक । ३ कोई बड़ा पक्षी ।

महापचखाण—स० पु० [म० महाप्रत्याखान] १ जैनियों का पयन्ता नामक ग्रंथ जिसमें अनशन करने की विधि का विवेचन है ।

उ०—तीजो महापचखाण कहीस, गाथा इकसी नद चौथीस ।

—घ व प्र

२ अनशन ।

महापय—स० पु० [स०] १ हिमालय के अन्तर्गत एक तीर्थ ।

२ इक्षीस नरको में से १६ वां नरक । (याज्ञवल्क्य स्मृति)

३ परलोक का मार्ग मृत्यु और मीत ।

४ शिव, महादेव ।

५ बहुत लम्बा व चौड़ा रास्ता, राजपथ ।

६ कई ऊँचे शिखरों के नाम ।

वि० वि०—ऐसा माना जाता है कि इन शिखरों पर चढ़ कर लोग इसलिए कूदते हैं कि वे सीधे स्वर्ग पहुँच जाय ।

रु० भे०—माहपह माहपय ।

महापथिक—म० पु०—मरने के उद्देश्य से हिमालय पर जाने वाला

रु० भे०—माहपथिक ।

महापदम, महापद्म—म० पु० [स० महापद्म] १ कुवेर की तीनों निवियों में से एक । (ह नां मा)

२ आठ दिग्गजों में से एक । ३ हाथियों की एक जाति ।

४ नागों के तीनों वशों में से एक व इस वश का नाग ।

५ सफेद कमल । ६ तीनों पद्मों की एक सख्या ।

७ एक नगर का नाम । ८ नारद का एक नामान्तर्ग ।

९ कुवेर का एक अनुचर ।

रु० भे०—मा'पदम, माहपदम ।

महापव, महापव्व—देखो 'महापरव' (रु भे)

महापरलै—देखो 'महाप्रलय' (रु भे)

उ०—मन जवुक मन ब्रह्म, कोवा का रूप बणावै । मन सुकर मन स्वान, महापरलै वह जावै ।—ह पु वा

महापरव—स० पु० [यो० स० महापवन्] १ उत्सव, पुण्यकाल ।

२ अवसर, सुअवसर, मौका ।

१ यज्ञादि के समय होने वाला महोत्सव ।

४ त्योंहार ।

रु० भे०—महापव, महापव्व, महाप्रव्व ।

महापरसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रु भे )

महापवितर, महापवित्र—स० पु० [स० महा पवित्र] विष्णु ।

रु० भे०—माहपवितर ।

महापसाव—स० पु० [स० महाप्रसाद] एक प्रकार का बड़ा इनाम या दान ।

उ०—पछै भली दिन जोय, दीवाण वणाय सारा उमराव तेहने सावळसुघ कवि नू डेराथी तेढायनै आपरै तखत वंसाण नै आळठ-लाख सांमई रो महापसाव करने आप गाढी जोत राय समंद रै बँट कराई गयी ।—नैणसी

महापह—देखो 'महापथ' (रु भे ) (जैन)

महापाण—स० पु० [स० महा-पाणि] अजानवाहु ।

उ०—महाजोघ जोघवसी, महापाण पाण । आंगमणी भगद सा हणू सा अवसाण ।—रा रु

महापातक—सं० पु० [स०] १ ब्रह्म हत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु पत्नी के साथ सभोग आदि पापकर्म । (मनु)

२ अत्यन्त हेय कर्म ।

उ०—जिकण महापातक माथै लेर आधी पातसाही रो लोभ दे प्रतीची रा पति आपरा अनुज मुरादसाह नू मिळाई पाउसरी काद-विनी रो अनुकार आपरी अनीक तणियो ।—व. भा

१ देखो 'महापातकी' (रु भे )

रु० भे०—मा'पातक, मा'पातकी, माहपातक ।

महापातकी—स० पु० [स० महापातकिन्] १ महापातक पाप करने वाला पापी, महापापी ।

२ बहुत बड़ा पापी ।

रु० भे०—महापातक मा'पातक, मापातकी, माहपातकी ।

महापातयोग—स० पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग ।

वि० वि०—यह सूर्य व चंद्र की क्रान्ति साम्य से होने वाला गणित गम्य एक योग विशेष है जो पचास के १७ वें व्यक्तिपात और २७ वें वैधृति योगो से भिन्न है । इसके महाव्यक्तिपात और महावैधृति नामक दो भेद हैं ।

महापाप—स० पु०—१ बड़ा पाप ।

उ०—इतरी कही मरमल बोली, 'जो रै पापी थे आया, सी बुरी करी । जुवाई कर मारणी न थो । इण में कासु सिध करस्यो । थानु महापाप सराप लागसी ।—कुवरसी सांखळा रो वारता

२ दुष्कर्म, हेय कर्म ।

उ०—जिण समय राठीह चद्रहास चलावण मे कुमी न कीधी परतु महापापां रा करणहार तो स्त्री परमेस्वर रा प्रपच में जीती हू न जावें ।—व भा

महापापी—स० पु०—बहुत बड़ा पाप करने वाला, महापातकी ।

उ०—तब ते बोल्यो—पासी काढे ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनो जाणहार, देवलोक मे जाणहार, दयावत । घणा गुण कीघा । नही काढे जिकी महापापी, महादुस्ती, नरक रो जावणहार ।—भि द्र

महापास—स० पु० [स० महा पास] १ एक यमदूत । (पौराणिक)

२ यमपाश । ३ बहुत बड़ा वधन ।

रु० भे०—मा'पास, माहपास ।

महापोठ—स० पु० [स०] १ कोई बड़ा पुण्य स्थान ।

२ वह स्थान जहाँ किसी देवी-देवता की प्रतिमा स्थापित हो ।

३ वह स्थान जहाँ दत्त पुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु-चक्र से कट कर गिरा हो । (पौराणिक)

४ शकर मठ । ५ कोई बड़ा स्थान या केन्द्र ।

महापुट—स० पु० [स०] वैद्यक मे भस्म, आदि तैयार करने की एक विधि ।

रु० भे०—माहपुट ।

महापुरस—देखो 'महापुरुष' (रु भे )

महापुराण—स० पु० [स० महा पुराण] अठारह पुराणों मे से एक जिसके रचयिता व्यास थे ।

उ०—जिसकी साखि स्त्री भागवत महापुराण मे गाए ।—सू प्र

रु० भे०—मपुराण, माहपुराण ।

महापुरी—सं० स्त्री० [स०] १ राजधानी ।

२ कोई बड़ा नगर ।

महापुरुष—स० पु० [स० महापुरुष] १ नारायण, परमात्मा, ईश्वर ।

२ विष्णु का एक नामान्तर । ३ उच्च विचारो वाला व्यक्ति ।

४ दस नामी सन्यासियों का एक नाम । (मा म )

५ दुष्ट, पापी, मूर्ख । (व्यग्य)

रु० भे०—महापुरस, मा'पुरस, मा'पुरुष, माहपुरस ।

महापूजा—सं० स्त्री०—आश्विन के नवरात्रो मे की जाने वाली दुर्गा की पूजा ।

रु० भे०—माहपूजा ।

महापूठ—स० पु० यो० [स० महापूठ] कट ।

महापूर—वि० [महान्+पूर्ण] बड़ो मे भी बड़ा, बहुत बड़ा ।

उ०—सोनग के भाईवध भतीजे दळ आगळ । सूर तैं सूर महापूरा से भदळ ।—रा रु

महाप्रतिभट—वि०—१ बलवान, शक्तिशाली, महावीर ।

२ भोद्धा ।

उ०—जिण राजा रै अनेक मशी वाणी रा जुद्ध में प्रहाप्रतिभट जिका राजा रो कीधी कारिका अनेक अपूरव व्याख्यानकरि वसुधा में विदित करी ।—व भा

महाप्रव्व—देखो 'महापरव' (रु भे )

उ०—सामत सुहृद दीप सरव्व । जीपत जिकें जुघ महाप्रव्व ।

—गु. रु वं



२ कोई बड़ा पर्व ।

महाप्रभु-स० पु० [स०] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ विष्णु । ३ शिव, महादेव ।

४ इन्द्र । ५ राजा । ६ प्रधान या मुखिया ।

७ वल्लभाचार्य की एक पदवी । ८ चैतन्य ।

९ सन्यासी । १० बड़ा स्वामी या उच्च कोटि का साधु ।

उ०—सुनू हरिराम गुनू किय साफ । महाप्रभु मागत आगन माफ ।

—ऊ का

रू० भे०—मा'प्रभु माहपरभु माहप्रभु ।

महाप्रलय, महाप्रलं-स० पु० [स० महाप्रलय] १ जब समस्त सृष्टि का सर्वनाश होकर सर्वत्र जलाकार ही जलाकार हो जाता है, कल्परूप ।

उ०—अर सिंहदेव भी साथ ही हैठे आय खडग खेवह मचाय महाप्रलय रा समय रा महानट री आमा घरी ।—व. भा

वि० वि०—पुराणानुसार ब्रह्मा के अन्तिम दिन ऐसा प्रलय होता है ।

२ महाविनाश का दृश्य या वातावरण अथवा भयकर विनाशकारी स्थिति ।

उ०—दिल्ली रा दल मैं दरोळ देखता ही साहजादा री सेना बड़े जोर बघी थकी आग आइ उछाह रें उफाण महाप्रलं मचायो ।

—व भा

रू० भे०—महापरलं, मा'प्रलं ।

महाप्रसाद-स० पु० [स०] १ श्री जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ प्रसाद, नेवैद्य ।

२ किसी देवता को चढ़ाया हुआ नेवैद्य ।

३ किसी महापुरुष या महात्मा के भोजन का उच्छिष्ट अंश ।

४ कोई बड़ा अनुग्रह ।

५ मांस, आम्रपिप । ६ भोजन ।

रू० भे०—महापरमाद, मा'प्रसाद, माहपरसाद, माहप्रसाद ।

महाप्रस्थान-स० पु० [स० महाप्रस्थान] १ मारने के उद्देश्य से की जाने वाली हिमालय की यात्रा ।

२ मृत्यु, देहान्त ।

उ०—आपरा अग्रज री चरचा इण रीति सुणि वगराज गौड हरि-स्वद री रांणी पण पति रा महाप्रस्थान रें अनतर निज पुत्र गोपी-चद रें यो ही बीतराग जोग री उपदेस लगायो ।—व भा

रू० भे०—मा'प्रस्थान, मा'प्रस्थान, माहप्रस्थान ।

महाप्राण-स० पु० [स० महाप्राण] वे वर्ण जिनके उच्चारण में प्राण वायु का अधिक प्रयोग होता है । यथा—ख, घ, छ, झ, ठ, ड । थ, ध, फ, भ, स, ह आदि । (व्याकरण)

वि०—अल्पप्राण ।

रू० भे०—मा'प्राण, माहपराण, माहप्राण ।

महाप्राणध्यान-सं० पु० यी० [स० महाप्राणध्यान] प्राण (जीव शक्ति)

को बड़े स्तर पर संयुक्त करने का ध्यान, धर्म ध्यान जो तीमरा ध्यान है ।

उ०—प्रतिबोध जवूस्वामि तणउ, तप तउ दृढ प्रहार तणउ, महा-प्राणध्यान भद्रवाहुस्वामि तणउ ।—व. स.

महावराह-स० पु० [स० महा-वराह] १ वाराहावतार का नामान्तर ।

२ बड़ा सूअर ।

उ०—हिरण्यध रा अग ज्यों महावराह दत तुडाघात सोभित केही बन, पवत, घिराय केही सूकर सिंहा रा प्राणा री सघात भगायो ।

—व भा.

महाबल-स० पु० [स० महाबल] १ वायु, पवन । (ह नां मा)

२ शिव का एक पार्षद ।

३ विष्णु का एक पार्षद ।

४ वैवस्वत मन्वन्तर का इन्द्र ।

५ स्कन्द का एक सैनिक ।

६ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से था ।

७ एक पुरुवंशीय राजा, जो वायु पुराण के अनुसार बृहदिष्णु राजा का पुत्र था ।

८ गुहावासिन् नामक शिवावतार का शिष्य ।

९ पितरों में से एक ।

१० हनुमान । (ना मा)

[स० महाबल] ११ मोसा, रागा ।

वि०—अत्यन्त बलवान्, सर्वशक्तिमान्, वीर शिरोमणि ।

उ०—१ मुनीस महेस कोयभल मज । प्रसिद्ध महाबल तेजस-पुज ।

—ह र

उ०—२ घर करोत भवधूत, बहुत मजबूत महाबल । अजब गजब आवाज, गाज मादल आमागल ।—मे म

उ०—३ अवधि राज करि इधक, महल सुख कीध महाबल । सक्क त्याग अमभेध दइव जीता वोह अणदल ।—सू प्र

रू० भे०—महबल, माहाबल ।

महाबला-स० स्त्री० [स० महाबला] १ स्कन्ध की एक अनुचरी ।

२ सहदेवी नाम की जड़ी, पीली सहदेइया । ३ पीतल ।

४ धो का पेड़ । ५ नील का पीछा ।

६ कार्तिकेय की एक मातृका । ७ एक बड़ी सख्या की संज्ञा ।

महाबलि, महाबली-वि० [स० महा बलिन्] शूरवीर, पराक्रमी, बड़ा योद्धा ।

उ०—१ जडि ठाम थांणा जवर, बंठा मुगल महाबली ।—सू प्र

उ०—२ औरंग साह महाबली, विसव तरां बड़वाग । रीस तरस्सी पूत सिर, सोर परस्सी आग ।—रा रू

स० पु०—१ आकाश, आसमान ।

२ मन ।

रू० भे०—महबली, माहबली, माहबलीय ।



महाबवाळ-स० स्त्री०—१ बड़ी बलाय, बडा सकट ।

२ भगड़ा, दगा, फमाद ।

रू० भे०—माहबलाल ।

महाबाह, महाबाहु-वि० [स० महा बाहू] १ लम्बी भुजाओं वाला, भ्राजानबाहु ।

उ०—जती बोलियो वालि नू रांम जारें, महाबाहू हैको वहै बाण मारै ।—सू प्र

२ धूरवीर, बलवान ।

उ०—१ सुत 'राम' 'रूप' निज दळ सनाह । 'गोरघन' तणो 'नाहर' दुगाह । मुख एता ऊदा महाबाहू, साधिया वेध सू पातसाह ।

—रा रू

उ०—२ आठूई मिसल के कमध महाबाहू । जाकी सुण मानी वांती विखै की सलाह ।—रा रू

स० पु०—१ विष्णु का नामान्तर ।

२ एक राक्षस जो कश्यप एव धनु के पुत्रो मे से था ।

३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

४ मगध का एक राजा जो श्रुतजय राजा का पुत्र था ।

रू० भे०—माहबाह ।

महाबिख, महाबिस—देखो 'महाबिस' (रू भे)

उ०—महाबिख नाग उतारण मद ।—ह र.

महाबीर—देखो 'महाबीर' (रू भे)

उ०—अर और भी दो ही तरफ रा प्रबीर जुदा जुदा जुद्ध करता या दो ही महाबीरों रें पाछें रहिया आबें ।—व भा

महाबिल—स० पु० [स० महाबिल] १ आकाश २ हृदय ३ सुराख ।

महावेग—देखो 'महावेग' (रू भे)

महावेध—देखो 'महावेध' (रू भे)

महान्राहण—स० पु० [स० महत् + ब्राह्मण] १ वह ब्राह्मण जो मृतक का दान लेता हो, निकृष्ट ब्राह्मण ।

महामडारी—स० पु० [स०] बडा कोपाध्यक्ष ।

उ०—कवि समाल गारहार, समस्यासत्रागार, प्राकृत परमाञ्जत-प्रवाह, सस्कृतसमुद्र विहितावगाह, वसुधावाचस्पति, अप्रतिममति, सरव सास्त्र पारगम, लक्ष्मी सरस्वती वेणी सगम, सरव जनोपकारी, महामडारी कुठडि ।—व स

महाभगत—स० पु०—भक्त शिरोमणि ।

महामड, महामडि, महामड, महामडि-वि० [स० महा-भट] 'महान योद्धा, जबरदस्त वीर ।

उ०—१ 'अमर' 'किसोर' तणो अतुळीबळ । अगन सोर पर जोर अग्रबळ । 'भाण' तणो हरनाथ महामड । भाया परव उबारण अचचड ।—रा रू

उ०—२ मतवाळा जेम धुमत महामड लोह तणो छक लालुरता । जमदूठ उठत खै जमदाडा, वाहे भावध वीवरता ।—गु रू व

उ०—१ तू उपजइ न खपइ नहु आइस, कुळ न कहइ कहियइ उकळीए । भीनउ नादि विनीद महामडि, ब्रह्म चढइ तइ वावइ वीए ।—महादेव पारवती री वेलि

स० पु०—कामदेव, मदन ।

उ०—कुअर-कमला रति-रमण, मयण महामड नाम । पकजि पय कमल, प्रथम जि करू प्रणाम ।—मा का प्र

महामद्र—स० पु० [स०] १ पुराणानुसार एक पर्वत ।

२ देखो 'महामद्रजिन' ।

उ०—वहरसेन वडूजिन सतरमो, स्त्री महामद्र अठारम नित नमो । देवजसा उगणीसमो देव ए, जसोरिद्धि वीसम जिन सेव ए ।

—घ व प्र.

१ एक व्रत विशेष ।

उ०—१ कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंह विक्रीडित महासिंह विक्रीडित गुण रत्न सवत्सर मद्र महामद्र भद्रोत्तर सर्वतोमद्र \*\* ।

—व स.

उ०—२ ज्ञानपचमी, मुकुटसप्तमी, माणिक्य प्रस्तारिका, निर्र-मणतप वरदमानतप इन्द्रियजय कसायजय जोगसिद्ध भद्र महामद्र, भद्रोत्तर, सरवतोमद्र ।—व स

महामद्रजाति, महामद्रजाती—स० पु०—सफेद रंग का हाथी ।

उ०—जपे नाग पुत्री खत्रि रूप जोती, महामद्रजाती तणो कांन मोती ।—ना द

महामद्रजिन—स० पु०—जैनियो के अठारवें विहरमान । (स कु)

महामद्रा—स० स्त्री०—गगानदी ।

रू० भे०—मा'मद्रा ।

महामर—वर्षा की तेज बौछार ।

उ०—वह छूटै कँवर सोक नलीसर, सीधणि सधर साजविध । धुवि जाण घराहर सालुलि सेहर, मेघ महामर माचविध ।—गु रू व

महाभांडारिक—स० पु०—भण्डार का मालिक, खजाने का मालिक, खजाची ।

उ०—अस्ववाहक प्रतीकारआरिक भांडागारिक महामांडारिक, माणिक्य भांडारिक करण्य भांडारिक । \*\* ।—व. स

महामागवत—स० स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार प्रसिद्ध बारह भक्त—मनु, सनकादि, नारद, कपिल, जनक, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शत्रु ।

२ परम वैष्णव । ३ श्रीमद्भागवत पुराण ।

४ एक प्रकार का छद्म ।

महाभारत, महाभारत—स० पु० [स० महाभारत] १ वेद व्यास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध पौराणिक महाकाव्य जिसके अठारह पर्व हैं और जिसमें कौरवो और पांडवो के युद्ध का वर्णन है ।

२ वह भयंकर युद्ध जो कौरवो और पांडवो के बीच हुआ था और जिसमें विश्व के सभी राजाओं ने भाग लिया था ।

८०—जग वरण महाभारथ ज्युही, 'करण' नाम माची करू ।

—मू प्र

१ भयकर युद्ध, घमासान लढाई ।

८०—माढे सात मण माहजानी पक्के तोल रो लोह डाढाळें रे  
टोल मांही रहियो । महाभारत जीत सुअर खडो रहियो ।

—डाढाळा सूर गी बात

८० भे०—मा'भारत, माहभारत ।

महाभाष्य-म० पु० [स० महाभाष्य] १ पाणिनी के व्याकरण पर  
पतञ्जलि द्वारा लिखा गया प्रसिद्ध भाष्य, टीका ।

२ बड़ी टीका ।

८० भे०—मा'भाष्य, माहभाष्य ।

महाभुजग-स० पु०—धोप नाग । (ह. ना मा)

महाभुज-वि० [स० महत्+भुज] बड़ी भुजाओं वाला, भ्राजान वाहु ।

८०—छत्रपत जोधा छात रे, जोध महाभुज जांण । करण सबोवां  
सांम बज, खग जोवां वाव्माण ।—रा रु

महाभूत-म० पु० [स०] प्रकृति के पांच मुख्य तत्व—पृथ्वी, जल,  
अग्नि, वायु और आकाश ।

८०—तामम अहरार तै पांच महाभूत पांच मूखम भूत नीपना ।  
एव चौवीम तत्व भेळा हुया ।—द वि

८० भे०—महद्वय, माहभूत ।

महाभैरव-स० पु० [म०] शिव ।

८० भे०—महभैरव ।

महाभैरवो-ग० स्त्री० [ग०] १ तांत्रिकों की एक विद्या ।

२ पावती, शक्ति, दुर्गा ।

महाभोग—देखो 'महाप्रसाद' ।

८० भे०—माहभोग ।

महाभोगा-म० स्त्री० [स०] दुर्गा देवी ।

महाभोगो-वि०—महान श्रवण ।

म० पु०—बड़े कण वाला मर्प ।

महामण्डा-म० स्त्री०—१ पृथ्वी, घरा, भूमि ।

८०—महामण्डा मे हूती जोग माया । छळी सीत राणै अली रूप  
छाया ।—मू प्र

२ अग्नि ।

महामण्ड-म० पु०—१ कोई बहुत बड़ा मण्डल या वृत्त ।

२ वह बड़ा मण्डल जिसके अंदर छोटे छोटे अन्य मण्डल हों ।

महामण्डलेश्वर-म० पु०—कई मंडलेश्वरों का अधिपति या नेता ।

८०—राजा जुयगजबुमार राजेश्वर महामण्डलेश्वर सांमत लघु-  
सांमत तमवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति ।—व स

महामन—देखो 'महामत्त' (८० भे)

८०—निरमल नीर निहारती, महामत गजराज । आघो आघो  
हातियो, पाणो पीया राज ।—गजवदार

महामन्त्र-म० पु० [स०] १ कोई वेद मन्त्र ।

२ ऐसा कोई मन्त्र जिसको विधिवत साधने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

८०—कोई कोई ग्रथ में इसो पण लेख जांणियो सो विक्रमादित्य  
नै कोई सिद्ध री सगति सह महामन्त्र री साधन करि अग्नि १  
कोकिल २ नाम दोय २ वीर वसीभूत किया ।—व भा

१ ईश्वर या किसी देवता का मन्त्र जिसको जपने से बाधाएं व  
सकट दूर होते हैं ।

८०—यियो सदय सुण निज धुई, टीटम हूत कसांन । उणरा बाळ  
उवारिया, महामन्त्र जम मांन ।—वा. दा

४ ऐसा मन्त्र जो अपना असर तुरन्त ही बता देता है ।

५ अच्छी सलाह या मन्त्रणा ।

८० भे०—माहमन्त्र ।

महामन्त्रि, महामन्त्री-स० पु०—किसी राजा या राज्य का प्रधान मन्त्री,  
महामात्य ।

८०—राजा जुवराजकुमार राजेश्वर महामण्डलेश्वर सांमत लघु-  
सांमत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मन्त्रि महामन्त्रि  
ग्रहवाहक ।—व स

८० भे०—माहमन्त्री, माहमन्त्री ।

महामणिमत्य-स० पु०—मद से पूर हाथी, मस्त हाथी ।

८०—पायै अवर सुरा नै पाड्या, मदन महामणिमत्यजी । तिए नै  
पिए जिण विण में जीत्या, सह मे ए समरत्यजी ।—व. व प्र

महामणि-स० स्त्री०—१ स्त्रियों का सौभाग्य सूचक चिन्ह ।

८०—फूली भूली भामिनी, कान कहती बात । पीयल-उपणि पांनडी,  
महि महामणि सात ।—मा कां प्र

२ हीरा ।

महामत महामति, महामत्त-वि० [म० महामति] १ महान बुद्धिमान,  
विद्वान, पंडित ।

८०—महामत महण जसगाथ मुनि वालमिक, कोट सत चिरत  
रघुनाथ कीधी ।—र रु

२ मदोन्मत, मस्त ।

३ बुद्धिमानी, ज्ञानी, पंडित ।

८०—पिप्लराज इणकुळ खिचोपति, महित हुबो हरिभक्त  
महामति ।—व भा

स० पु० [स०] १ गणेश ।

२ एक बोधिसत्व ।

८० भे०—महामत ।

महामद-म० पु० [स० महामद,] १ मस्त हाथी । (ना हि को)

२ अत्यधिक गर्व ।

८० भे०—माहामद ।

महामन-वि० [स० महा+मनस्] १ जिसका मन उदार हो, उदार  
हृदय । २ दानी, दातार । (ह. ना मा)

३ अभिमानी ।

महामल्ल-वि० [स०] बड़ा योद्धा, श्रेष्ठ वीर ।

उ०—मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल । पिता तणी पिण चिता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल ।—घ व प्र

महामसाणी—देखो 'मसाहणी' (रू भे)

उ०—इग्यार सामत वार महामडलेस्वर, तेर पसाइता, चऊद चडियात, पनर पउतार, सोल महामसाणी सतर आडणीया, अडार भूमार .. ।—व स

महामह-स० पु० [सं०] १ महोत्सव ।

उ०—अर पाछैं सू आपरो साथ आइ मिळिया पछैं कवर भी आगला साथ में आइ मेढतिया नू अभय री महामह मनाइ अरक रै उपमान ऊगो ।—व भा.

२ समुद्र, सागर ।

उ०—मथ काढी जाणी महामह प्यारम । माढी तिण रूप री अजाद ।—महादेव पारवती री वेलि

महामहण—देखो 'महमहण' (रू भे)

महामहिमक, महामहीमक-स० पु०—वह घोड़ा जिसका मूह काले रंग का तथा शेष शरीर अन्य रंग का होता है । (अशुभ) (शा हो)

महामहोच्छव, महामहोत्सव-स० पु० [स० महामहोत्सव] विशाल उत्सव, विशाल समारोह, महामहोत्सव ।

उ०—महामहोच्छव करि नै पैसारी कियो छै । राव कल्याणमल अर सरव राजलोक दूह-दुलहण देखि दूणा रलियाइत हुआ ।

—द वि

महामहोपाध्याय-स० पु० [स०] १ गुरुओं का गुरु, आचार्य ।

२ पंडितों, विद्वानों आदि को मिलने वाली एक प्रकार की बड़ी उपाधि ।

महामाणक-स० पु०—एक रत्न विशेष, महामानिक ।

उ०—मावरि भावरि भूप रौ, नरपति वदन निहार । रजत महा माणक रतन, भावै सीस उवारि ।—रा रू

महामाई, महामाई—देखो 'महामाया' (रू भे) (वरदा)

उ०—१ महामाई माहालइ धणी, भरिया भूत पिसाच । धण पथी पिउ धावर, वयण न सूऊइ वाच ।—मा का प्र

उ०—२ कना रांम कहतै, रसा रांमण सिर छाई । सम सेन सालुळै कना मायै महामाई ।—रा रू

महामात्य—देखो 'महामंत्री' ।

उ०—सामत महासामत लघु सामत स्त्रीगरणा वयगरणा घरम्मा-घिगरणा अमात्य महामात्य मुहासीला ।—व स

महामाय, महामाया-स० स्त्री० [स० महामाया] १ माता, जननी ।

उ०—उठै वाग आसोक रुखा अयाहै । महामाय सीता वसै जैण माहै ।—सू प्र.

२ प्रकृति ।

३ देवी, दुर्गा ।

उ०—जिस बखत स्त्रीमहाराज महामाया का आराध करि ऊव पोसाक धरि वीर आवध धरि पौरससँ पूर अदर सँ बाहिर पधारै ।

—सू प्र.

४ पावती । ५ सीता ।

६ अष्ट सिद्धियों में से एक । ७ गंगा ।

८ बुद्ध की माता का नाम ।

९ आर्या छन्द का तेरहवा भेद जिसमें १५ गुरु और २७ लघु वर्ण होते हैं । (पि सि)

१० देखो 'मावलिया' ।

रू० भे०—महमाय, महमाई, महमाय, महमाई, महमाय, महमाया, महमाइ, महमाई, महमाय, माहमाई, माहमाया ।

महामारी-स० स्त्री० [स०] हेजा, प्लेग आदि भीषण सक्रामक रोग जिसमें बहुत से लोगों की मृत्यु होती है ।

उ०—जिण्ड समै महामारी रे मढाण नरा री नास देखि कोईक कच्चा मत्र रा देणहार आहव रा अमेघ सामतर सूचिया घोडै चढ़ण री हूस आरि दारासाह हाथीरूप तखत हू हेठी उत्तरियो ।—व भा

रू० भे०—मा'मारी, माहमारी ।

महामुद्रा-स० स्त्री० [स० महामुद्रा] योग साधन की एक मुद्रा विशेष ।

महामुनि, महामुनी-स० पु० [स० महामुनि] १ मुनियों में श्रेष्ठ, अगस्त्य, व्यास आदि ऋषियों का आदर सूचक सम्बोधन ।

२ कपटी व्यक्ति, ठग । (व्यग)

महामुरातव—देखो 'माहिमरातव' (रू भे)

महामुह—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

महामूढ-वि०—अत्यन्त मूर्ख ।

उ०—तो भी महामूढ बाणणी रै बनीभूत अनेक उपद्रव मचाइ ऊवट ही बहियो ।—व भा

महामेव-स० पु०—अष्टगुण वर्ग में से एक ।

महाभृत्यजय-स० पु० [स० महामृत्युजय] १ शिव का एक मंत्र ।

२ एक औपनिषद विशेष ।

महायज्ञ-स० पु० [स० महायज्ञ] १ बड़ा यज्ञ ।

२ आर्य सस्कृति के अनुसार नित्य किये जाने वाले पांच प्रकार के यज्ञ—ब्रह्मयज्ञ (सव्योपासना), देवयज्ञ (हवन), पितृ यज्ञ (तर्पण), भूत यज्ञ (बलि) और नृयज्ञ (अतिथि-सत्कार) ।

रू० भे०—महाजय ।

महायान-स० पु० [स० महायान] १ बौद्धों के तीन मुख्य सम्प्रदायों में से एक ।

२ उत्तम, प्रशस्त और श्रेष्ठ मार्ग ।

महायाम-स० पु० [सं० महा-याम्य] विष्णु ।

महायुग-स० पु० [स०] देवताओं का एक युग जो मनुष्यों के चारों युगों का समूह होता है ।

रू० भे०—महाजुग ।

महायुध—स० पु० [स० महा आयुध] १ शिव, महादेव ।

२ महान् युद्ध, महाभारत ।

रू० भे०—महाजुघ ।

महायोगनाथ—स० पु० [स०] योगियों के भेद विभेद ।

उ०—सास्त्र रत्न सागर कूरचाल सरस्वती, महायोगनाथ मित्र,  
प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वांस ।—व स

महायोगी—स० पु० [स० महायोगिन्] १ शिव, महादेव ।

२ विष्णु । ३ मुर्गा ।

४ महान् योगी, बड़ा योगी ।

रू० भे०—महाजोगी, माहजोगी, माहयोगी ।

महायोगेस्वर—स० पु० [स०] बहुत बड़े योगी या ऋषि यथा-पितामह,  
पुलस्त्य, वसिष्ठ, अंगिरा, ऋतु, कश्यप आदि ।

रू० भे०—महाजोगेसर, महाजोगेस्वर ।

महारभ—स० पु० [स० महारम्भ] १ किसी कार्य की शुरुआत जो बड़े  
यत्न पूर्वक की गई हो ।

उ०—सीता रमा सोय, कीजें सम कोय । भाखी परीभ्रम, राघो  
महारभ ।—र ज. प्र

२ देखो 'महरभ' (रू भे )

महारजत—स० पु० [स० महारजत] १ स्वर्ण, कनक । (ह ना. मा )

२ घटूरा । ३ कुसुम पुष्प ।

रू० भे०—माहारजत ।

महारठ—देखो 'महाराष्ट्र' (रू भे )

महारठी—देखो 'महाराष्ट्री' (रू भे )

महारणव—स० पु० [स० महारणव] समुद्र, सागर ।

उ०—देस मांहि आवतां ही ओठी नू सीख देर विपत्ति रा महारणव  
मे मग्न मागळियांणी पुत्र सहित वेसरो विपरयासकरि कैराळ  
ग्राम रा ठाकर रोहडिया वारहठ आल्हा रें वास जाइ रही ।

—व भा

रू० भे०—महणारभ, महणणव, महराण, महराण, महाराण, महा-  
राणव, महिणाराम, महिराण, महिराणवर, महिरांमण, महिरा-  
उण, महिराठण, महिरावण, महिरिवांण, महेराण, माहेण ।

महारथ—स० पु० [स०] १ बड़ा रथ ।

२ बड़ा योद्धा या भट ।

महारथी—स० पु० [स०] १ वह बड़ा योद्धा जो अकेला दस हजार  
योद्धाओं से युद्ध करने में समर्थ हो ।

उ०—सताग वांग वाग स्वांग सारथी भजै नहीं । महारथी न उत्त-  
मांग भारथी भजै नहीं ।—ऊ का.

२ नेता, अग्रणी, अग्रगण्य ।

रू० भे०—मा'रथी ।

महारस—स० पु० [स० महारस] १ परमानन्द, खुशी ।

(अ मा., ह ना )

उ०—१ उदह वेळा वडिम महारस दानेत, जोति जळ अचळ  
मीतळ प्रवळ जाण । कोक जळवर निजर दमगच पाळ फव, मीत  
मागर गिरद चढ 'बुमाण' ।

—महाराणा जगत्सिंह निसोदिया री गीत

उ०—२ भूप महारस भोगवै, सुरपति रीत सुप्रीत । जोधपुरे की  
जोधपुर, वरणा सरद वितीत ।—रा रू.

२ लोह, रक्त ।

उ०—पढ पकवान प्रवाढा प्रमरथ, साहा सेन करे बोह सग । मंदा  
कटक महारस ममळे, जोम्हण राणु कियो रणजग ।

—महाराणा खेता री गीत

१ रसास्वादन ।

उ०—गोपि अजर गहन मुख गोविंद । पौर्य महारस परसपर ।

—ह ना मा

४ स्वादिष्ट पेय पदार्थ जिमको पीने से तृप्ति हो जाती है ।

उ०—महारस मीठा पीजिये, अविगत अलख अनत । दादू निरमळ  
देखियै, महजै सदा भरत ।—दादूवाणी

५ वीर्य, धुक ।

उ०—मदन महारस देह का राखत ही छीजै । मन हसती आकुम  
विना, कैसे वस्य कीजै ।—छो हरिरामदामजी महाराज

६ ऊख । ७ खजूर । ८ जामुन ।

९ पारा । १० अभ्रक ।

११ ईशुर । १२ कातिमार लोहा ।

१३ सोना मक्खी । १४ रूपा मक्खी ।

१५ कांजी । १६ कसेर ।

१७ नशा, मादकता ।

उ०—माह महारस मयण सब, अति ऊनहइ अनग । मो मन लागी  
मारवण, देखण पूगळ द्रग ।—ढो मा

रू० भे०—माहारस ।

महारसायण—स० पु० [स० महारस-अयन] १ वैद्यक के अनुसार वह  
अपघि जो जरा और व्याधि का नाश करती है ।

उ०—एक दिन राजा रें अरथ कोई तपस्वीन महारसायण री  
निदान एक अपूर्व स्वादु फल दीधो ।—व भा

महाराण—१ देखो 'महारणव' (रू भे )

उ०—गिरद गजां घमसाण, नहवै घर माई नहीं । मावै किम  
महाराण, गज दो सी रें गिरद मे ।—कैसरीसिंह वारहठ

२ देखो 'महाराणी' (रू भे.)

महाराणी—स० पु० (स्त्री० महाराणी) १ राजा, नरेश ।

उ०—ठीक मढीवर परम ठिकाण, जळी महाराणी जग जाण ।

—रा. रू.

२ मेवाड या उदयपुर के राजा की उपाधि ।

मह०—महाराण, महिराण ।

महाराज—देखो 'महारावण' (रु भे.)

महाराज—देखो 'महारावण' (अल्पा, रु भे.)

उ०—महाराज सुभ निसुभ मारघा, बळी चंड मुडादि तू ही विदारघा ।—मे म

महारा—१ देखो 'मैरा' (रु भे.)

२ देखो 'मेरा' (रु भे.)

महाराई—देखो 'महाराज' (रु भे.)

उ०—विद्रावन माहि ही, महाराई धेनु चारी । रुखमणि रथ बड्ढी ही, महाराज एक सरी ।—रुखमणि मगळ

महाराज—स० पु० [स० महा+राज] (स्त्री० महारानी) १ राजाओ में श्रेष्ठ राजा, बड़ा राजा ।

उ०—तदवार अस पुरसा तणी, आय वणी जग ऊपरां । महाराज तणै छळ मारवा, धारी लाज मुरदरा ।—रा रु  
२ ब्राह्मण, गुरु, साधु, सन्यासी या प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए आदर सूचक सम्बोधन ।

उ०—१ हियँ वसाई हरख सू, मधूसूदन महाराज । नर जिण सू ललचै नहीं, सो त्रिभुअण सिरताज ।—वां वा

उ०—२ नाथजी द्वारा मे नैणसिंहजी रो जमाई उदैपुर सू आयी । नैणसिंहजी कह्यो—महाराज या नै समझावो । जद स्वामीजी समझावण लागा ।—भि. द्र

३ ब्राह्मण ।

४ जोधपुर, बीकानेर आदि के महाराजाओ के छोटे भाई या उसके वंश के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

रु० भे०—म'राज, महाराज, महाराई, महाराय, माराज, मा'राज, माहाराज, माहाराज ।

महाराजा—स० पु० [स० महा+राज] (स्त्री० महारानी) १ राजाओ में श्रेष्ठ राजा, बड़ा राजा ।

उ०—सुर घर छत्र 'जसो' महाराजा । सुर पुर गयो लिवा ब्रद साजा ।—रा रु

२ राजाओ में श्रेष्ठ राजा या बड़े राजा के लिए आदर सूचक शब्द ।

रु० भे०—महाराजा, माराजा, मा'राजा, माहाराजा ।

महाराजाधिराज—सं० पु०—१ अनेक राजाओ में श्रेष्ठ राजा ।

उ०—कुवरपदै थका महाराजाधिराज महाराजा स्त्री रायसिंघजी ने साथै लै पधारिया ।—द वि

२ ब्रिटिश सरकार द्वारा राजाओ को दी जाने वाली उपाधि ।

रु० भे०—महाधिराज, महाधीराज, माहाराजाधिराज ।

महाराणव—देखो 'महाराणव' (रु भे.)

महारात, महारात्रि—सं० स्त्री० [स० महारात्रि] १ महाप्रलय की रात्रि ।

२ कालरात्रि ।

३ आधी रात बीतने पर दो महुत्त का समय । (तांत्रिक)

महाराय—देखो 'महाराजा' (रु. भे.)

उ०—कहै मोनै तो खबर न काय, फुरमायो महाराय सुकोमल साथ । खाल उतारी देहनी ए ।—जयवाणी

महाराव—स० पु० [सं० महाराट्] बूही, कोटा, सिरौही के राजाओ की उपाधि विशेष ।

उ०—ईम कहि गढ़ वारणै, सचरीयो महाराव । खुरसाणी खोटे मनै देखै दाव उपाव ।—प च चौ

महारावण—स० पु०—एक हजार मुख व दो हजार हाथो वाला रावण ।

रु० भे०—महरामण, महारावण, महारामण । (परीक्षणिक)

अल्पा०—महारांमणी ।

महारावत—स० पु० [स० महाराज+पुत्र] महा योद्धा ।

उ०—सक्ति हीदा जग सजै, महारावता मदगळ । हुकम हुता हाजरां मसत आणिया महावल ।—सू प्र

महारावळ—स० पु०—जैसलमेर, डूंगरपुर, वासवाडा आदि राज्यों के राजाओ की उपाधि ।

महारास्टर, महारास्टर—स० पु० [स० महाराष्ट्र] १ भारत का एक प्रान्त जो दक्षिण की ओर है तथा जिसकी राजधानी बम्बई है ।

महाराष्ट्र । (मा म)

२ बहुत बड़ा राष्ट्र या देश ।

रु० भे०—महारठ ।

महाराष्ट्री—वि० [स० महा-राष्ट्री] १ महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र सम्बन्धी । २ महाराष्ट्र का निवासी ।

सं० स्त्री०—१ महाराष्ट्र की भाषा, मराठी ।

रु० भे०—महारठी ।

महारिख—देखो 'महरसि' (रु भे.)

उ०—हीदां मक्ति लोह, करै करि हाक । महारिख देखि, हुवै मुसताक ।—सू प्र

महारिण—स० पु० [सं० महा+रण] बड़ा भारी युद्ध, सग्राम, समर, महाभारत ।

उ०—१ दुगम जवन घडि कांमणि दोळी, हुय खेलू गेहरियां होली । खग भट वसत महारिण खेलू, भट खग सुजळ अनिरता फेलू ।

—सू प्र.

उ०—२ जाणि प्रेत जागिया, महारिण काळ मसांणी ।—सू प्र

महारिस, महारिसि, महारीसी—देखो 'महरसि' (रु भे.)

उ०—पच पडवि वनतरि विमासिउ, तेरि मू वरस केमि गमेसिउं । बुद्धि नारद महारिसि आपी, मध्यदेस रहियो तुम्हि व्यापी ।

—सालिसूरि

महारी—देखो 'महारी' (रु. भे.)

उ०—राय पसेणी हो ग्याता भगवती, जीवाभिगम नइ माऊ । ए सूत्र मानइ ही प्रतिमा मानै नही, महारी मां नइ वांऊ ।—स कु

महाभद्र, महाभद्र-सं पु० [सं०] महादेव ।

उ०—१ कर पाव केक, उडै घू अनेक । करै ले कराळा, महाभद्र माळा ।—सू प्र

उ०—२ गोड राजा अरजुनसिध वैरियां रा थाट विरोळि वैडा गजां र चाचर चद्रहास चलाइ सैकडा सूरानू साथी करि महाभद्र री माळा में आपरा मुड री मेरु चढाइ रुड थकी मी घारा मे तिल-तिल पळवरां री पांती पुद्गळन राखि इस्टलोक पूगियो ।—व भा

महारूप-सं पु० [सं०] शिवजी का एक नामान्तर ।

२ महा सौन्दर्य, महान सुदरता ।

उ०—करै काकणा गळवके चूड, कूडळ भळवके काने । महारूप दीपे कठ मोताहळा माळ । हसती खेलती देवी भूलती चिसूळ हाथ हाथे भलो भलो भलो भलो लोल में भुवाळ ।—मा वचनिका

महारोग-सं पु०—असाध्य रोग, भयकर रोग ।

उ०—दान सरीखी दूसरी, श्रोखद नह भदभूत । हेक थकी सारा हरे, महारोग मजबूत ।—वां दा

महारोगी-वि०—असाध्य रोग का रोगी, जिसके महारोग हो ।

महारोरव, महारोरव-सं पु० [म० महारोरव] दक्षीम प्रधान नरकी मे मे एक का नाम ।

२ भयकर दरिद्रता, आपात्कालीन अवस्था ।

उ०—केहीज लोभ राखिया तणा पातसाह उहकाळ । केहीज रक राखिया, महारोरवे दुकाळ ।—नैणसी

महारी—देखो 'महारी' (रु भे )

उ०—तद इण कही हमारु महारी वाम सूरजगढ हू आयी है ।

—र हमीर

(स्त्री० महारी)

महालक्ष्मी, महालक्ष्मी-सं स्त्री० [सं० महा-लक्ष्मी] १ विष्णु की अर्द्धांगिनी लक्ष्मी, देवी ।

२ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति जिसकी दीपावली को पूजा की जाती है । ३ धन की अधिष्ठात्री देवी ।

४ नारायण की एक शक्ति । (पौगणिक)

५ तीन रंगण का एक वर्ण वृत्त ।

रु० भे०—महालक्ष्मी, महालक्ष्मी, महालक्ष्मी, महालक्ष्मी, महा-लक्ष्मी ।

मह०—महालक्ष्, मा'लक्ष्मी, मा'लक्ष्मी, मा'लक्ष्मी ।

महालक्ष्मीव्रत-सं पु०—आश्विन कृष्ण अष्टमी को किया जाने वाला एक व्रत । (श्रीमाली ब्राह्मण)

महालक्ष्मी, महालक्ष्मी—देखो 'महालक्ष्मी' (रु भे )

उ०—मे लक्ष्मी मरहट्ट री, गूजर खड भवीस । आय महालक्ष्मी चरण, गीग नमायो सीम ।—वा दा

महालक्ष्—देखो 'महालक्ष्मी' (मह०, रु भे )

उ०—ले वनवाम हराय महालक्ष् कप हेंजम अण पार कस । काटां हिव भालै किरमाळा, दस सिरवाळां सीसदस ।—र रु

महालक्ष्मी, महालक्ष्मी—देखो 'महालक्ष्मी' (रु भे )

उ०—महालक्ष्मी रूपक मरम, तवै रणण पय तीन । विघन विदा-रण वर नवै अनत्तम तगत आघोन ।—पि प्र

महालिंग-सं पु० [सं० महा-लिंग] १ शिव, महादेव ।

२ शिवलिंग की प्रतिमा ।

महालक्ष्मी—देखो 'महालक्ष्मी' (रु भे )

उ०—महालक्ष्मी पद महीं, तीन रणण दरसत । दुजवर करणह सगण दखि, सारगिका लसत ।—र ज प्र.

महालोक—देखो 'महुरलोक' (रु भे )

महावड-सं पु० [सं० महावट] विशाल वट वृक्ष, बरगद का बड़ा पेड़ ।

महावत-सं पु० [सं० महा-मात्र] हाथी को चलाने वाला, फीलवान ।

उ०—१ हस्ती छूटा मन फिरै, कयो ही बव्या न जाइ । बहुत महावत पच गयै, दादू कछू न बसाइ ।—दादूबाणी

उ०—२ अमर मत्र उर घरै, विरुद ऊघरै महावत । सक साह सपरौ, वयण न भणौ असुहावत ।—रा. रु

रु० भे०—महावत, मावत, मावथ, माहवत, माहावत, माहुत माहुति ।

महाघन-सं पु० [सं०] १ बड़ा जंगल, सघन वन ।

उ०—मीना दध सिखा मेघ भुवगा सोरभमूळ, वारण नू वरतण पित महावन ।—आसो वारहठ

सं० स्त्री० [सं० महा-भवन] २ गाय ।

महावर-सं पु० [सं० महा-वरण] सौभाग्यवती स्त्रियों के पंरो मे लगाने का लाख से बनाया जाने वाला एक प्रकार का लाल रंग ।

उ०—मद अगमद तावूल महावर, वन धनसार घिरत बैसनिर । कूरत चमर उतरत आरत्ती, स्त्रीकरनी जय जयति मकत्ती ।—मे म

रु० भे०—महावर, मावर, मा'वर ।

महावरेदार—देखो 'मुहावरेदार' (रु भे )

महावरो-सं पु०—१ अभ्यास ।

२ आदत । ३ व्यसन, लत ।

महावाक्य-सं पु० [सं०] १ सोऽह शब्द ।

२ कोई बड़ा या महत्वपूर्ण वाक्य या मंत्र ।

३ दान देते समय कहा जाने वाला शब्द ।

महावायुदोष-सं पु० [सं० महा-वायुदोष] एक वात-व्याधि विशेष ।

उ०—ज्वर, सतिपात प्रमेह आभवात वायु महावायुदोष खाधा-विकार, फोडि, गुल्मक्षण ।—व स

महावारणी-सं पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक योग जो चंद्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र व शनिवार होने पर, पड़ता है ।

वि० वि०—इस योग मे गंगा स्नान का बड़ा महत्व है ।

रु० भे०—मा'वारणी, माहवारणी ।



महाविकळ-वि० [स० महा-विकळ] १ अत्यन्त दुखी, प्रस्त ।

२ सूखं, मूढ । (ह ना मा)

महाविक्रम-स० पु० [स०] सिंह, शेर ।

महाविख-देखो महाविस' (रु भे)

महाविगन्यानि-वि०—घूबरुओ से ।

उ०—कठि कनक मय पदकडी, महाविगन्यानि जडी, नाग पोलरी  
अनि निगोवरी, प्रमुख खीटली सहित घूबरी ।—व स

महाविदे, महाविदेह-स० पु०—भारत वर्ष के समान ही एक खण्ड जो

सुमेरुपर्वत के पूर्व और पश्चिम के आस पास स्थित है । (जैन)

उ०—घन क्रतारथ ते नरनारि, जे वरतइ जिण घरम मभारि ।

समोसरणि प्रभ करइ वखाण, तीहणी प्रससा महाविदे जाण ।

—वास्तिक

वि०—१ विरक्त, निलस ।

उ०—जासी स्वारथ सिद्ध विमाणो, चवि महाविदेह वखाणोजी ।

मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणी, दङ्गपङ्गणा नो परिमाणो जी ।

—जयवाणी

रु० भे०—माहविदेह ।

महाविद्या-स० स्त्री० [स०] १ तन्त्र शास्त्रानुसार दस देवियाँ—काली,

तारा, पोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला-  
मुखी, मातंगी और कमलात्मिका । ये सब व इनमे से प्रत्येक ।

२ दुर्गा । ३ गंगा ।

महाविस-स० पु० [स० महा+विप] १ महाविषला सर्प जिसके खाते  
ही प्राणी मर जाता है ।

२ प्राण घातक विप ।

रु० भे०—महाविख, महाविस, महाविख, महाविस ।

महाविसुव-स० पु० [स० महा-विपुव] वह दिन या समय जब सूर्य  
मीन मे भेष राशि में जाता है, और रात-दिन बराबर होते हैं । भेष  
सक्रान्ति या चैत्र की सक्रान्ति ।

महावीही महावीथी-स० स्त्री० [स० महा-वीथी] बड़ा मार्ग, बड़ी गली ।

महावीर-स० पु० [स०] १ हनुमान, वजरग ।

उ०—हाजी रामजी मग मे मिळ्या महावीर, सजन सुगरीवराजी  
म्हारा राम ।—गी रा

२ विष्णु । ३ गरुड ।

४ बाज पक्षी । ५ सिंह शेर ।

६ सफेद रंग का घोड़ा ।

७ इन्द्र का वज्र ।

८ योद्धा, वीर, भट्ट ।

उ०—महावीर महासूर, तेज सरसावै । मडण ज्यां जोस, वस  
मडण कहावै ।—रा रु

९ जैनियों के २४ वें तीर्थंकर ।

उ०—आमलकप्पा नगरिये सम वसरया महावीर । सूरयाम देव

तिहा आवियो, नाटक करवा तीर ।—जयवाणी

वि०—१ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—मडोवर के बीच निवास । जहा श्रीमहाराज के खडग जैत-  
कारी काळी गोरे महावीरू भैरू का वास ।—सू प्र

२ माहसी, बडा बहादुर ।

रु० भे०—महवीर, महावीर, माहवीर ।

महावीरजयती-स० स्त्री०—जैनियों द्वारा, चैत्रशुक्ला त्रयोदशी को  
मनाया जाने वाला उत्सव ।

महावेग-स० पु० [स०] १ गरुड ।

२ वानर । ३ महादेव ।

४ बड़ी तेज चाल । ५ वज्र ।

रु० भे०—महावेग, महावेग ।

महावेध, महावेधक-स० पु०—बडा जग, युद्ध, संग्राम ।

उ०—१ कीघी हृद विखी घरा रं कारण, महावेध मडाणी । देमा  
चावी कियो देवडा, भूरा बाध 'भटाणी' ।—नाथूसिंह देवडा री गीत

उ०—२ बाजिया वेढक महावेधक, सार सावळ सोहडा ।—रा रु

रु० भे०—माहवेध ।

महावेल-स० पु० [स० महाविल] बहुत बडा, विशाल, दीर्घाकार ।

उ०—तठे ऐक महावेल खाडी । तकरण री पाखती सेखावनर असं  
नाम नगर रं वखै आय नोसरियो । तठे महावेल खाडी रं कनारै  
जळ री होलोलियो, सदरं लेख महावीर मोटो मछ आय पडियो ।

—कल्याणसिंह वाडेल नगराजोत री वात

महावैद्य-स० पु०—बडा वैद्य ।

उ०—पास्चात्य पक्षे तार्किक ज्योतिषी वैद्य महावैद्य अस्ववैद्य  
गजवैद्य मात्रिकादि पंडित महापंडित ।—व स.

महावैध्रति-स० पु०—महापात योग का एक भेद विशेष ।

महावैध्रतियोग—विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगो मे से एक अन्तिम  
अर्थात् सत्ताईसवा योग विशेष ।

महाव्यतिपात, महाव्यतीपात-स० पु०—महापात योग का एक भेद  
विशेष ।

वि० वि०—महोत्पात, अपयान, विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगो  
मे से एक सत्रहवां योग विशेष । श्रवण, अश्विनी, घनिष्ठा, आर्द्रा,  
नाग देवत, मस्तक नक्षत्रयुक्त रविवार को यदि अमावस्या तिथि  
हो तो वह व्यतीपात योग माना गया है ।

महाव्याधि, महाव्याधी-स० स्त्री०—१ दुर्माध्य रोग, भयकर बीमारी ।

२ कठिन सकट ।

रु० भे०—माहव्याधि, माहव्याधी ।

महाव्रत-स० पु० [स०] १ कठिन या दुसाध्यव्रत, भारी सकल्प ।

उ०—सब्रत जळी भळहळ थप सर्ग, अस्ट निकट गायण उछरग ।

असह खबर जोघाणो आयो, सती महाव्रत लिया सुणांयो ।—रा. रु

२ आश्विन की दुर्गा पूजा या नवरात्र ।



३ वह व्रत जो बारह वर्ष तक जारी रहे ।

४ अहिमा, सत्य, दत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पांच व्रतों का पूर्ण रूप में पालन करने को महाव्रत कहते हैं । (जैन)

५ मतान्तर से उपर्युक्त पांच व्रत में से कोई एक भी महाव्रत कहा जाता है । (जैन)

उ०—१ किणु ही पूछ्यो भीखणुजो थे यू कहो एक महाव्रत भागा पाचूई भागै सो यू माथै पांचू किम भागै ? जद स्वामीजो बोल्यो—पापरो उदै हुवै जब ससार मे इ जीव दुख भोगवै । जिम एक भिक्षाचर नैं शहर में फिरता पाच रोटी रो आटी मिल्यो । रोटी करणै लागै । एक तो रोटी उत्तारनै चूला लारे मेली । एक रोटी तवै सिकै । एक रोटी खीरा सिकै । एक रोटी रो लोयो हाथ मे अनै एक रोटी रो आटी कठोती मे । एक कुत्ता आयो सो कठोती मे एक रोटी रो आटी तो ले गयो । तिण कुत्ता रै लारै भिख्यारी न्हाठी । हैठ पडियो सो हाथ माहलो लोयो धूळ मे मिल गयो । पाछो भाय देतै तो चूला लारै रोटी पडी हुती ते मिनकी ले गइ । तवेरी तवे बल गइ । खीरा रो खीरा बल गइ । इण रीते एक महाव्रत भागा पांचु भाग जावै ।—भि द्र

उ०—२ ज्यू लेवा रो वेळा तो पांच महाव्रत आदरथा अनै पालवा रो वेळा पूरा पाळै नहीं तिण रो पिण इह लोक परलोक विगडै ।

—भि द्र

उ०—३ पंच महाव्रत त्याई प्रभु पासै, छैं त्रिपदी जिनवर मनरग । स्त्रीगोतम गणघर तिहा गूथ्या, पूर व चउद दुवालम अग ।—स कु ६ देश विरति (आशिक रूप से प्राणाति पातादि पांचो पापो से हटना) थावक की अपेक्षा महान गुणवान साधु मुनिराज के सर्व विरति (पूर्ण रूप से प्राणाति पातादि पांचो पापो से हटना) रूप-व्रत को महाव्रत कहते हैं । (जैन)

महाव्रतधारी—वि०—कठिन व्रत करने वाला, बड़ी प्रतिष्ठा करने वाला ।

उ०—मागळियो मुदर मिणधारी, धुर भगवान महाव्रतधारी ।

—रा रु

महाव्रती—म० पु० [म० महा+व्रतिन्] १ शिव, महादेव ।

२ सन्यासी । ३ भक्त ।

४ वह जिमने महाव्रत लिया हो ।

रू० भे०—माहव्रती ।

महासकट—म० पु०—घोर विपत्ती, अत्यधिक दुख ।

उ०—भव आपरै ऊपर महासकट मानि एक दीघी तो परमेस्वर द्जो भी देमो हो परतु आपदा में दिल्लीस भी इसी व्याकुल बियो ।

—व. भा

महासल—म० पु० [सं० महासल] १ कुत्ते की नौ निबियों में से एक ।

२ बहुत बड़ा दाख । ३ ललाट ।

४ कनपटी की हड्डी । ५ मनुष्य की ठठरी ।

६ एक प्रकार का मर्प ।

७ सी शम्भ की एक बड़ी सख्या ।

वि०—मूर्ख ।

उ०—महासख री मित्र, सेज नहीं सोवा जाऊ । पोरीसी मुख पेव, धणी दोरी धवराऊ ।—ऊ. का

रू० भे०—माहसख ।

महासईय—देखो 'महासती' (रू भे)

उ०—पूछइ राजा कहि ससि वयणि, इणि वणि वमीइ कारणि कमणि । बोलइ गग महासईय ।—सालि भद्रभूरि

महासक्ति, महसगत, महासगति, महासगती—स० स्त्री० [स० महा+शक्ति]

१ सृष्टि की रचना करने वाली मूल शक्ति ।

२ प्रकृति । ३ दुर्गा ।

उ०—वेदै-रै बडी द्रव्य । सयणी वेटी । महासक्ति योग माया । तिका सिकार रमै । झग मारै ।—सयणी चारणी री बात

४ कोई बड़ी हस्ती । ५ शृगाली ।

६ 'भैरवी' नामक पक्षी जिसके शकुन लिए जाते हैं, 'रूपारेल' नामक पक्षी जिसके भी शकुन लिए जाते हैं ।

स० पु०—७ शिव । ८ स्वामी कार्तिकेय ।

रू० भे०—महासक्ति, मा'सक्ति, मा'सक्ति, मा'मगति, माहसक्ति, माहसगति ।

महासतक—स० पु०—एक नरवर ।

उ०—महासतक नी नारि रेवती, नरक गई निरधार ।—घ व प्र महासति—देखो 'महासती' (रू भे)

महासतियां—स० स्त्री० (व व) राजाओं व जागीरदारों की वमशान भूमि । (मेवाड़)

महासती—स० स्त्री० [स०] पतिव्रता स्त्री, साध्वी स्त्री ।

उ०—महासती सू एह अकारज, उत्तम नै नही छाजै । जो प्रति मीठी तो पिण मुनिवर, भ्रमज कहौ किम खाजै ।—जयवाणी

रू० भे०—महासईय, महासति, महासक्ति, माहासती ।

महासति—१ देखो 'महासक्ति' (रू भे)

उ०—डावी महासति फं करइ, डावा सारस स्थध सियाळ ।

—बी दे

२ देखो 'महासती' (रू भे)

महासत्य—स० पु० [स०] यमराज ।

महासद, महासद्—वि०—१ ताजा मांस, तुरन्त कटा हुआ मांस ।

उ०—तन ग्रीव महासद मन त्रपत्त, पूरिया रहै निज सगत पत्र । जवना समेल दळ तुरग जुग । तिण बार मिले नह टळे तुग ।

—रा रु

२ तुमुल नाद ।

उ०—बंताल वीर मिळिया विहद, सीकौतरि साकणि महासद् । मिल समळ ग्रीघ भामख भवख, जवक रीछ वड्डाक जवख ।

—गु रु व

महासम्य-स० पु०—राज्य सभा की एक उपाधि विशेष ।

उ०—सामंत लघुसामंत अमात्य सम्य महासम्य प्रधान प्रमाणीक ।—व स

महासय्या-स० स्त्री० [स० महा शय्या] १ राज सिंहासन ।

२ राजाभो की शय्या ।

रू० भे०—माहसया ।

महासर-स० पु०—१ बड़ा तालाब ।

२ समुद्र, सागर । (ह ना मा)

महासरग-स० पु० [सं० महा सर्ग] महाप्रलय के उपरान्त, सृष्टि की पुन होने वाली रचना ।

रू० भे०—माहसरग ।

महासरवर-स० पु० [स०] बड़ा तालाब ।

उ०—इण्णि भाति सु च्यारि राणी त्रिण्हि खवासि द्रव्व नाळेर उछाळि वळण चाली । चचळा चडि महासरवर री पाळि आइ ऊभी रही ।—वचनिका

महासाणी—देखो 'महाहणी' (रू भे)

महासातपन-स० पु० [स०] एक व्रत विशेष जिसमें पांच दिन तक क्रमशः पंचगव्य, छठे दिन कुशक जल पीकर सातवें दिन उपवास किया जाता है ।

रू० भे०—माहसातपन ।

महासामंत-स० पु० [स० महासामन्त] राज्य सभा की एक उपाधि ।

उ०—राय राणा मडलिक आखडलीक सामंत महासामंत लघु सामंत, स्त्रीगरणा ।—व स.

महासागर-स० पु०—१ कोई बहुत बड़ा समुद्र ।

२ सागर, भव ।

महासास—देखो 'महास्वास' (रू भे)

महासिग, महासिध—देखो 'महासिंह' (रू भे)

महासिधु-स० पु०—महासागर ।

रू० भे०—माहासध ।

महासिंह-स० पु० [स०] दुर्गा का वाहन, सिंह ।

रू० भे०—महासिग, महासिध, माहसिध ।

महासिंहविक्रीडित-स० पु० यो०—एक प्रकार का व्रत ।

उ०—कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित, महासिंहविक्रीडित गुण रत्न सबत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतीभद्र ।

—व स

महासिर्णण—देखो 'महास्नान' (रू भे)

महासिव-स० पु० [स० महा-शिव] शिव, महादेव ।

रू० भे०—माहसिव ।

महासिवरात, महासिवरात्रि-स० स्त्री० [स० महाशिवरात्रि] फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी की रात ।

महामुक्क, महामुक्क-स० पु०—१ दिगंबर (जैन) मतानुसार दसवें स्वर्ग का नाम ।

२ श्वेताम्बर जैन मतानुसार सातवें स्वर्ग का नाम ।

महासूर-स० पु० [स० महासूर] १ हनुमान, महावीर ।

२ अर्जुन । (भा मा)

रू० भे०—माहसूर ।

३ महान् योद्धा, वीर, पराक्रमी, बहादुर ।

उ०—१ सज महासूर, समहर सकाज । लग घणै भिड, भुजा साम लाज ।—शि रू

उ०—२ सुणी ठाकुरा सिरदारा, आय वणी महासूरा की वारां ।  
—रा रू.

महासेत-स० स्त्री० [स० महाश्वेता] १ सरस्वती, शारदा ।

२ दुर्गा, भवानी ।

रू० भे०—महसेत ।

महासेन-स० पु० [स० महासेन] १ स्वामी कार्तिकेय ।

(ना मा, डि को)

२ ऐरावत क्षेत्र के एक भावी जिन देव ।

३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिस ने भगवान महावीर के पास दीक्षा ली थी ।

४ एक यादव ।

रू० भे०—माहसेन ।

महास्नान-स० पु० [स० महास्नान] दुष्कर्म निवारणार्थ आत्म शुद्धि के लिए किया जाने वाला आध्यात्मिक स्नान । (जैन)

रू० भे०—महासिर्णण ।

महास्त्रमी-वि०—गृहस्थी ।

उ०—विसाल चट्टासाल बीच, वेदकी धुनी नहीं । महास्त्रमी गिरहा-स्त्रमी, गिरास्त्रमी गुनी नहीं ।—ऊ का

महास्वास-स० पु० [स० महास्वास] १ दमे का रोग ।

२ मृत्यु के कुछ पहले चलने वाला श्वास ।

रू० भे०—महासास, माहसास ।

महाहवि, महाहव्य-स० पु० [स० महाहव] युद्ध, संग्राम ।

(अ मा, ह ना मा)

उ०—रथग जास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ । फुरसराम महाहवि निरजणइ, इसिउ भीस्म पितामह मइ धुणइ ।—सालि सूरि

महि—देखो 'मही' (रू भे) (डि ना मा, ह ना मा)

उ०—१ मेघ विना महि तणा अग कुण सरव उजाळै । विण गगा नय वार कमण वाधै ऊनाळै ।—रा रू

उ०—२ महि भरै डड वूदी मऊ, दळ तप तेज दुभाळरै । सामण पसाव कीघा सतरि, रावजोव रिणमाल रै ।—रा रू

२ देखो 'मद' (रू भे)

३ देखो 'महा' (रू भे)

महिषल—देखो 'महीतल' (रू भे)

उ०—मपत दीप नवखड सपत दधि, जळ थळ महिअळ । एक भाग  
हजरत मारि लीयो महि मडळ ।—गु रु व

महिआ—म० स्त्री० [म० महिका] कोहरा, पाला ।  
महिआर—१ देखो 'महियारा' (रु भे )  
२ देखो 'महियारा' (मह, रु भे.)

महिआरा—स० स्त्री०—दूय दही वेचने का व्यवसाय करने वाली जाति  
विशेष ।  
रु० भे०—महियार, महीयार ।

महिआरी—स० पु० (स्त्री० महियारी) दही या छाछ वेचने वाला, खाला ।  
उ०—१ मारग माहि मिला महियारा, तिए गोरस विहरायउ रे ।  
—स कु

उ०—२ रमता करता रास सांभ परभात सदाई । माहि महियारिया  
दाण मागता दिनाई ।—पि प्र

रु० भे०—महियारी, महीयारी, महीयारी ।  
अन्या०—महियारछो ।  
मह०—महियार ।

महिक—देखो 'महक' (रु भे )  
उ०—कसतूरी छपट्ट महिक मोरभ मळंतर । कगकम्पौ कपूर अनै  
केसर किमनागर ।—गु रु व

महिय—देखो 'महिस' (रु भे )  
उ०—१ मुम निसुभ चड मुढामुर, दुसह मुग दुखदाई । दानव  
महिय रक्त बीजादिक, मार लिया महमाई ।—मे म

उ०—२ आरुण करणि रूप अघिकारी, चर महिख गूद गिरि  
चारी । मैदा द्रत मेवा मिमरीरा, सो महिखियां भवे नित सीरा ।  
—सू प्र

उ०—३ महाराजा दळ मेळ पीळ जोषाण पधारै, महिख पच  
मैमत्त मगत पोखी खग धारै ।—रा रु

महियघन्याटो—म० पु० यो०—एक प्रकार की तलवार विशेष ।  
महियजोह—स० स्त्री० [स० महिप+जिह्वा] कटार ।  
महियधुज—देखो 'महिसधुज' (रु भे ) (डि को )  
महियाक—स० पु० [म० महिपाक्ष] गुग्गुल नामक पदार्थ ।  
महियामुर—देखो 'महिसामुर' (रु भे )

उ०—हयो महारावण तेण हकारि, वयो महिसामुर बीर  
वकाणि ।—मे म

रु० भे०—महिसामुर ।

महिमी—देखो 'महिमी' (रु भे )  
उ०—डोढा कयलोटा जूटण नै घुमई । महिमी महिमी ज्यू डावर  
मै रमई —ळ वा

महिमु—देखो 'महिम' (रु भे ) (उ र )  
महिय महिय—देखो 'महिम' (रु भे )

उ०—१ बलिस्ट धूम्र भक्ष की तुही विपक्षनी । भई तुही महिख  
रक्तबीज भक्षनी ।—मे. म.

उ०—२ यतं हनुमत कहि यह वत्त, भवै धन मेच्छ भयै उन्मत्त ।  
गह्यो कर वान उदमनि हत्य, महिख समान उन्त्यहि नत्य ।

—ला रा.

महिजा—देखो 'महीजा' (रु भे ) (अ. मा )

महिजोत, महिजोद—देखो 'मसजिद' (रु भे )

उ०—लोक सगला कन्है जीजीया लीजियै, देहरा ठाम महिजोद  
दीसै ।—घ व प्र.

महिद्धि—स० स्त्री०—महद्धि, महाद्धि । (जैन)

महियारभ—देखो 'महारणव' (रु भे )

उ०—इळ कारण आरभ कियो, पूरी कियो पारभ । दक्खणियां  
दळ से मिळै, मल्यण महियारभ ।—गु. रु व

महिणी—देखो 'महिनी' (रु भे )

महित—वि० [स०] प्रतिष्ठावान, कीर्तिवान ।

उ०—पिप्पराज इण कुळ खिच्यो पति, महित हुवो हरि भक्त  
महामति ।—व. भा

स० पु० [स०] शिवजी का त्रिशूल ।

महितळ—देखो 'महीतळ' (रु भे )

उ०—महितळ मगजाई, मेलै थळ मेली । लेली महिमामत महिला  
दळ लेली ।—ळ. का.

महिताव—देखो 'महिताव' (रु भे )

उ०—फेर हुकम हुवै छै । महितावा रो चादणी हुवै । सू महितावां  
पचास सब सांवठी ही लागी छै ।—रा सा स

महियळ—देखो 'महीतळ' (रु. भे.)

उ०—पतियारी आवै प्रसघ, राड रहे मो राज । सोढो धांने साधसी,  
महियळ अवर समाज ।—पा. प्र

महिदउरउ—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटा सारनाला खासटां अगिहिल कबीच सजरांमा मदवी  
फलपगरीय सारीपी तिलवास गरवभसूयू राजिउ वयराजिउ महिद-  
उरउ तीतत्रागिउ \*\* ।—व. स

महिदेव—देखो 'महीदेव' (रु भे )

महिधर—देखो 'महीधर' (रु भे )

महिनाथ—देखो 'महीनाथ' (रु भे )

उ०—अनिवध चमू वणि चतुर अग । महिनाथ हुकम खुल्लिय  
मतग । गज स्रवत दाण मद जळद गाज, सोभति चमक नग कनक  
साज ।—रा रु

महिनी—देखो 'महीनी' (रु भे )

उ०—सखी री अत्र मिगमर महिनी आयो । सब ही की नेह  
सवायो ।—घ व प्र

रु० भे०—मि'नी ।

महिप—देखो 'महीप' (रू भे) (हिं को.)

महिपड—देखो 'महिपुड' (रू. भे)

महिपत, महिपति, महिपती, महिपत्ति, महिपत्ती—देखो 'महीपति'

(रू. भे)

उ०—१ जोड़ पाण महिपत जपे, को रिख आग्या कीजै । आग्या एक सुणी घप आगम, सग उम सुत दीजै ।—रू

उ०—२ घारे अणी सरीर करे घित । महिपति अभिमुनि हाथळ हे घित ।—सू प्र

उ०—३ रहियो हेकण रूप, भव पैला ने भाखरा । भडा भडजां भूप, महिपती कहिए 'मोतिया' ।—रायसिंह सादू

उ०—४ आणदपुर अरि करण अकाजा, मिळियो साह सरस महा- राजा । नमि कागुण उज्जळ नरपत्ती, मेछा पति दीठो महिपत्ती ।

—रा. रू.

महिपाळ—देखो 'महीपाळ' (रू. भे)

महिपुड, महिपुडि—पृथ्वी, भूमि ।

उ०—१ माया रहै न मझ, कर भेळी वांटी करो । कहियो भोज करम, महिपुड सारे मोतिया ।—रायसिंह सादू

उ०—२ जग छयदळा विधूसै चद जुडि । महिपुडि भार गया अहि फुण मुडि ।—सू प्र

रू० भे०—महिपड ।

महिपत्ति—देखो 'महीपति' (रू. भे)

महिवूव—देखो 'महवूव' (रू. भे)

उ०—सरसी सेजां अर सिरा सुघर सरेहली खूब । आसमान चद्रा- वली अनग घजा महिवूव ।—अज्ञात

महिमडळ, महिमडळी—सं० पु० यो० [स० मही+मडळ] भूमण्डल, पृथ्वी ।

उ०—उण पुळ अमरापुर कापुर उर आयो । मुरधर मडळ तळ महिमडळ भायो ।—ऊ का

रू० भे०—महमडळ ।

महिम—१ देखो 'महिमा' (रू. भे)

उ०—आगरइ सहरि नागौर अरु मेइतइ । महिम लाहोर गुजरात माहइ ।—स कु

२ देखो 'मुहिम' (रू. भे)

महिमट्ट—सं० पु०—गर्व, अभिमान ।

उ०—गज गुढीय पाखर वेगि वाहउ, मिळो मोगर थट्ट । ए सीस मणि ऊतरिस्सइ, किम मेलहस्या महिमट्ट ।—रखमणी मगळ

महिमद—देखो 'मैमद' (रू. भे)

उ०—म्हारै माथा नै महिमद ल्याव, म्हारा हजा याही रेवीजी ।

—लो गी

महिमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे)

महिमानी—देखो 'मैमानी' (रू. भे)

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति पनरह दिन ताई जान राखि घणी मनहारि करि भातिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रल भोजन रा वणाव कीजै छै ।

—रा सा स.

उ०—२ पाहुणउ तू हम आज, कहू ते महिमानी करांजी । सगली तुम्ह नइ लाज, वादळ राज हमा तणी जो ।—प. च चौ

महिमा—सं० स्त्री० [स० महिमन्] १ महत्वपूर्ण या विशेष होने की अवस्था या भाव ।

२ महत्त्व, माहात्म्य, बड़ाई, गौरव ।

उ०—१ तो चरणा लागै तिकौ, चाळक करन सुजाव । नर गरिमा महिमा लहे, साची तू सिधराव ।—वा दा

उ०—२ उत्तम घांम दुवारिका, महिमा सुहित सभारि । लियो महासुख एक पख, घप परसियो मुरारि ।—रा रू

३ प्रभाव, प्रताप, रौब ।

उ०—महिमा परमातम आतम नहि मालम । बाल्ही घण नै तजि विलखाणी बालम ।—ऊ का

४ कीर्ति, प्रशंसा ।

उ०—आप आपरी उगत सू, तीख रचै तवनाह । मात तणी महिमा कही, जैन वेद जवनाह ।—वा दा

५ आदर, सत्कार, मान ।

उ०—अभिमान इसो मन आणै, प्रभु आया पुण्य प्रमाणै । महिमा करू सबल मढाणै, वाह वाह मकोई वखाणै ।—घ व अ

६ सुन्दरता, शोभा ।

उ०—अग अग महिमा अधिकारै । सैज अनत तेज वरसारै । नार सभारै जतन निहारै, ऊपर राई लूण उतारै ।—रा रू

७ अणिमा आदि आठ सिद्धियो मे से पांचवी सिद्धि ।

रू० भे०—महमा महमा, महम्मा, महिम ।

महिमाय—१ देखो 'महामाया' (रू. भे)

उ०—विद्या घर वड वखतावर महियळ में हो महिमा महिमाय । राउ राणा मोटा राजिया, पुहुवीपति लागै जसु पाय ।—घ व अ

महिमावत—वि० [स० महिमन्+वत्] १ जिमकी प्रतिष्ठा, प्रशंसा या कीर्ति हो महिमा वाला ।

उ०—भव भय दुख भजन, चद्रबाहु भगवत । रेणुका राणी सुत, महियल महिमावत ।—स कु

महिमाह—देखो 'माहोमाहि' (रू. भे)

उ०—जो एक भोम्या रै गाव आया । जठै भोम्या रै महिमाहै कजीयो लागी । जै अण्णा रै राजपूती री घणी चाव ।

—पचमार री वात

महिमुदी—१ देखो 'महमूदी' (रू. भे)

उ०—अघोतरी महिमुदी दुदामी भयरव टसरीया मुगटा मिणीया कसबी जरवाप मुखमल ।—व स

२ देखो 'मुहम्मदी' (रु भे)  
 महिमुदी-घटी-म० स्त्री०—१ दूहै-दुल्हन के प्रणय वधन का वस्त्र विशेष । (व. म)  
 २ देखो 'महमुदी' ।  
 महिमुद—देखो 'मुहम्मद' ।  
 उ०—इमिउ एक राजाविराज स्त्री महिमुद पातमाह वरणवीतउ ।  
 —व स  
 रु० भे०—महमूद ।  
 महिमुदी—देखो 'महमूदी' (रु भे)  
 उ०—घटी, घटी कया प्रकार नु वस्त्र छै तेनी माहिनी नथी, परतु तेनी एक प्रकार महिमुदी छै । तँ लाल रग नु वस्त्र हतु एम 'ढट्टी लाल' जेवा प्रयोगथी लागे छै ।—व स.  
 महिमुद—देखो 'मुहम्मद' (रु भे)  
 उ०—सांभलि, राजाविराज स्त्री महिमुद पातमाह वरणवउ ।  
 —व म.  
 रु० भे०—महमूद ।  
 महिम्न—स० पु० [स०] पुण्यवताचार्य द्वारा रचित शिव का एक प्रधान स्तोत्र ।  
 वि० वि०—यह शिखरगुणी वृत्त में है ।  
 रु० भे०—मईमन, महिमन, महीमन ।  
 महिय—म० पु० [स० मयित] दधि, दही ।  
 उ०—१ लिय कुकुम चदन तदुलय महिय । मुख गावत मगळ प्रमलय महिय ।—गु रु व  
 उ०—२ देवलोकि छड घणी परि देव, एक ठाकुर बीजा करइ मेव । न लहड ममवाउउ न लहइ प्रास, महियो मोदिक तोह ना दास ।—वस्तिग  
 महियद—म० पु० [म० महि-इन्द्र] राजा, नृप ।  
 महियळ, महियल, महियलि—देखो 'महीतळ' (रु भे)  
 उ०—१ जीव चा सबद सुगु जीवटा, महियळ जळ थळ मभळी । आनेय पुरुस अपगम परम, जळहर सद्द मु सभळी ।—ह र.  
 उ०—२ वट वाटे घाट ओघटे रण वन, जळ थळ महियळ अजर जर ।—दोली  
 उ०—३ एह चरित मुणतां मदा रे, वावे महियळ माम । मुख सपति वड पामिये रे, अनुक्रमि मन विस्राम ।—वि कु.  
 उ०—४ हो रोई रोई मुंड हू रान मइ, रान रे, हो महियलि पडी हू मूरथि ।—म कु  
 उ०—५ आम् कालिक कहा माम भादवे मांमणि । माह पोह मग-सो, चेत वंसावा फागणि । माले जेठ असाठ दानि लख कोइ वरीमण । कळिजुगो वलि करण, ल्हास वरडां वगसावण । वारह मास चौईस पय, बडहय वेवि न विसर । महियळ मास पातां मिले, सहू रत रावळ सभर ।—ईमरदास वारहूठ

उ०—६ 'गाजीसाह' अभनमों 'गागी', महियळ 'मूर' सुभ्रमकुळ-मोड । बहता हसता कूदता राजद्र, रहता करे वडा गठीउ ।  
 —किसानी आठो  
 महियव—स० पु०—गठीडो की एक शाखा, महेवा राठीउ ।  
 उ०—आहव सूरों आगळा मुरताणी हटमल । महियव रीत उजाळणा, अमर तणां पीयल्ल ।—रा रु  
 महियागिर—देखो 'मलयगिरि' (रु भे)  
 महियार—देखो 'महियार' (रु भे)  
 उ०—भले महियार जसोदा भाग, नमो नद नदण नाघण नाग ।  
 —गुण नारायण नेह  
 महियारडो—देखो 'महियारी' (अल्पा, रु भे)  
 उ०—वीर कहइ रिखि सांभलउजी, गोरस वहेरघउ रे जेह । मारग मिली महियारडो जी, पूरव जनम नी माय तेह ।—स कु  
 (स्त्री० महियारडो)  
 महियारी—देखो 'महियारी' (रु भे)  
 उ०—तद भरमल ऊचें माद सू महियारा नू कही भैंसां दुही सोतो दुही नही सो कटो तो साम्ही छोट देवो ।  
 —कुवरमी सांखला री वारता  
 (स्त्री० महियारी)  
 महियासधू—देखो 'महासधु' (रु भे)  
 महियो—१ देखो 'मयो' (रु भे)  
 २ देखो 'मईयो' (रु भे)  
 उ०—लाल चीमणी मामा मोचा, लाल कनारी जोडी । लाल पाषडी रातो बागो, रातें महिये चोडी ।  
 —डूगजी जवारजी री छाबली  
 महिर—म० पु० [म०] १ नृप, राजा ।  
 २ थोडा ।  
 ३ देखो 'महर' (रु भे)  
 उ०—मिठडा राजिद भिल रही, इक मानो मोरी वात । महिर करो मो ऊपरें, जिम न हुवे उतपात ।—वि कु  
 ४ देखो 'मिहिर' (रु भे)  
 महिरवान, महिरवान—देखो 'मैरवान' (रु भे)  
 उ०—एक दिन रिखीस्वर महिरवान हूवा छै । राजा नु सनुम्द हूइ नै पांणी मत्र दीयो छै ।—चौवोली  
 महिरवानी—देखो 'मैरवानी' (रु भे)  
 उ०—तद घोडी एकलें ही उठाय प्रोहित कन्है आय कहण लागी—जो आज तो कही वडै सगै महिरवानी करी, सो अळगी भूह रो नाळेर मोनें भठै साम्ही आयो 'वडी कीरपा कीवो ।'  
 —कुवरमी सांखला री वारता  
 महिराण—१ देखो 'महारणव' (रु भे)  
 उ०—१ देवगिरि अन्नं जोगणिपुरां, सबळी भारथ सूत्रियो । महिराण महिक्कर मत्तता, च्यार मास विग्रह कियो—गु रु. ब

उ०—२ जळ चादरु की घरहर मानू छिल्लै महिराण । स्त्रीखडू  
का डबर समीर से भौला छावै ।—सू प्र  
उ०—३ ओपीयो प्रथमादि ऊपरि, जव जे वावाण । फोज रो  
विणगार फावै, मोज रो महिराण ।—ल रि  
२ देखो 'महाराणो' (रु भे)  
उ०—१ जग जोत जाण, ऊगो क भांण । मुख चे प्रमाण, महि-  
राण मान ।—घ वचनिका  
उ०—२ सीख लाख दे निसक सू, वाता घणी वणाय । मन लागो  
महिराण सू, जीवन रखौ न जाय ।—पनावीरमदे री वात  
उ०—३ राय साधार वदिछोडि मोटा विरूद, साह पतिसाह सम  
फोज महिराण ।—वि कु  
३ देखो 'महाराण' (रु भे)  
उ०—राजि रा पाठ पाताळ तणी रुख, मसतक सरगा जिसो  
महाण । राज ग छूमण दिसै रुघराजा, मन समिहर कूखा  
महिराण ।—पी ग्र.  
महिराणवर—स० पु०—१ राजा, नृप । (डि ना मा)  
२ देखो 'महाराणव' (रु भे)  
महिरामण—१ देखो 'महिरावण' (रु भे)  
उ०—रामण ने महिरामण रेषण दइता तणी मरण सी डोर ।  
—पीरदान लाळम  
२ देखो 'महाराणव' (रु भे)  
महिराउण, महिराउणि—१ देखो 'महिरावण' (रु भे)  
२ देखो 'महाराणव' (रु भे)  
महिरावण—स० पु०—एक राक्षस जो रावण का पुत्र व पाताल का  
राजा था ।  
उ०—जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण वध्यउ तिखिण ।  
—प च चौ  
रु० भे०—महिरामण, महिराउण ।  
२ देखो 'महाराणव' (रु भे)  
महिरिवाण—१ देखो 'मेहरवान' (रु भे)  
उ०—ग्रहि भ्रमर रुखेसर नर असुर, पहचि तुभ दाखै प्रघळ । हु  
महिरिवाण माया हिमं, वइण मुभ दीजै विमळ ।—पी ग्र  
२ देखो 'महाराणव' (रु भे)  
महिरी—देखो 'महर' (रु भे) (ह ना मा)  
महिरेळण—स० पु०—पृथ्वी पर पानी फैलाने वाला, इन्द्र ।  
वि०—विश्व मे अपना यश या कीर्ति फैलाने वाला, यशस्वी ।  
स० पु०—राठोड राव रायपाल का विरुद ।  
उ०—गांव राठद्रह रो दुगहदो महिरेळण रायपाळ घूहडिया रो  
दत्त चद पायो ।—वा दा रुपात  
महिळ—देखो 'महिळा' (रु भे)  
उ०—त्या रावत रे महिळ सोनगरी । सो रावजी रे नानांणै

दिसासो साख हुती, सु रावजी जुहार कहायो ।—नैणमी  
महिल—देखो 'महल' (रु भे)  
महिलाण—स० पु०—पडाव, टेरा, ठहराव, विश्राम ।  
उ०—इसी भांति जळस करि बीजारो तो क्यू कहणी नही, अम-  
वार हजार २ सू चिह्या, तिका चालता-चालता टोडै टूक महिलाण  
हुवा ।—जगदेव पवार री वात  
महिळा—स० स्त्री० [स०] १ स्त्री, औरत, रमणी । (ह ना मा)  
उ०—१ प्राचीन करम सुठम ए, पुरखा पाइता उत्तमा महिळा ।  
कुळ दीप पुत्र जिणयै, कुळ घू बिने रूप सजुगता ।—गु. रु व  
उ०—२ पसू पणो पखी पणू, सुतर मुरग रे सग । मरद पणो  
महिळापणो, मावडिया रे अग ।—वा दा  
२ पत्नी, प्रिया, प्रियतमा ।  
उ०—माघव महिळा थी ठरइ, महिळा माघव दीठ । अन्योन्यइ  
स्या थयां, चटकु चोल-मजीठ ।—मा का प्र  
३ स्त्रियो के लिये आदर सूचक सम्बोधन ।  
४ नवो मे मस्त महिला, मस्तानी औरत ।  
रु० भे०—महळ, महल, महळा, महल्ल, महिळ, महिल्ल, महुळ,  
महेळ, महोळ, मुहळ, मोहळ, मोहळ ।  
अल्पा०—महळि, महळी, महळि, महळी, महिल्ला, महेळि, महेळी,  
महेळीय, मिहल, मिहली, मेहडली, मोहळ ।  
५ प्रियगु लता ।  
६ रेणुका नामक पीघा ।  
महिलाइत, महिलायत—देखो 'महलायत' (रु भे)  
उ०—वैकुण्ठाथ विसक्रमा कू हुकम हुआ, वैकुंठ री रीस आतलोक  
माहे सोप्रनम महिलाइत पंदास करो ।—वचनिका  
महिलाव—वि०—स्त्रियो का, स्त्रियो सम्बन्धी ।  
उ०—कवि आखर ज्यू करण तण, मरहट्टी महिलाव । कुच आघा  
ढकिया निरखि, रीघो चाळक राव ।—वा दा  
महिळि, महिली—१ देखो 'महिळा' (अल्पा, रु. भे)  
उ०—इक्क महिली पच जण तीह मिलिउ तु पखि । ए उग्रहा-  
णउ सच्चु किउ कूडउ कूडा सखि ।—प प. च  
२ देखो 'महल' (रु. भे)  
महिल्ल—१ देखो 'महल' (रु भे)  
उ०—जुग सकळ माहि देखे 'जगा', लाभ घरम समरण लिया ।  
जोती सरूप जगारजन, दिल महिल्ल दीयग दिया ।—जगो खिडियो  
२ देखो 'महिळा' (रु भे)  
महिल्ला—देखो 'महिळा' (रु. भे)  
उ०—कवर विदा पहला कियो, सरव महिल्ला साथ । अण सका  
आगं हुवा, भड वका भाराथ ।—रा रु  
महिस—स० पु० [स० महिप] १ भैंस । २ महिपासुर ।  
वि०—वहुत मोटा और सुस्त ।



८० भे०—मयव, महव, महवी, महिग, महिनु महिन्व,  
महिग, महीव ।

महिमधुज—म० पु० [महिपध्वज] यमराज ।

८० भे०—महिषधुज, महीधुज ।

महिमघ्नी—म० स्त्री० [म० महिप-घ्नी] दुर्गा देवी ।

महिमरवणी, महिसमरदिणी—स० स्त्री० [म० महिप-मर्दनी] दुर्गा देवी ।

महिमवाहण—म० पु० [म० महिप-वाहन] यमराज ।

महिमासुर—म० पु० [म० महिप-असुर] एक असुर जो मयासुर एव  
रसा का पुत्र था ।

उ०—महिमासुर हू माइ, मर जइ महिमासुर मरइ । सुर छूटइ  
गुर राट, बार तुहारी बीम-दृषि ।—अ वचनिका

८० भे०—महमासुर, महिमासुर ।

महिमि, महिमी—स० स्त्री० [म० महिपी] १ पटरानी, रानी, साम्राज्ञी ।  
२ भेय । ३ बाला, कुण्ड । ४ (हि. को)

८० भे०—महकी, महवी, महमी, महिबी, महीबी, महमी ।

महिमुत—देखो 'महीमुत' (रु भे) (अ मा)

महिमुर—देखो 'महीमुर' (रु भे)

महिमूफ—म० पु०—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

उ०—दहीवर्ग, तिनमाकली, फाफडा पूरी गृक्षां गुदवडा परीमोहा  
घृषगी शुजपापटी गुदपाक महिमूफ वृत्तिर मुगनु उमड ।

—व म

मही—देखो 'महीन' (रु भे)

उ०—बानगुवाली छैन छवीली, वैठी पोढी ढाल । महीं महीं वा  
पूणी काने, नवो फाटें तार । चाल रै चरमला ।—नो गी

२ दगो 'मे' (रु भे)

उ०—बैर महीं तोटी बर्म, बर्म नफी नह 'बंक' । सिया विरह  
राधय सायो, रावण पलटी लक ।—वा दा

३ देगो 'मही' (रु भे)

मही—म० स्त्री० [म०] १ पृथ्वी, धरती, धरा, भू ।

(अ मा, ना हि को., हि को)

उ०—१ जावै नहि जाचक घरा, सत महता सत्य । मगल री  
जगुगी मही, अदतारी री अत्य ।—वा दा

उ०—२ जु रति पस्विम ऊगमइ, मेक चलइ मही माहि । विहि  
तणु पणि जे सत्या, चतुर न चूकइ क्याहि ।—मा का. प्र

० नृ-ममति, रिगामत, जागीर ।

६ राज्य, रण । ४ मिट्टी ।

५ नृप । ६ सीता, पीता ।

७ गान्धी म्याग, अयकाग ।

८ गाय, गी ।

उ०—महिषी नगवै वगी दजाने, उई नई रमय वतार ।

—अज्ञात

६ छाछ, मट्ठा । (ह ना मा)

१० दहि, दधि ।

उ०—१ पधिक जाय मधुरा कहै जादवा पत्तीनू, आपरा मिलण  
कू वात उगळी । आय गोकळ मही लेर सुर अनोवा, मया कर  
सुणावो फेर मुरळी ।—वां दा

उ०—२ घणा रोद्र घेरें, फिरें चक्र फेरें । मयाणें मटल्लें, मही  
जाण हल्लें ।—रा रु

११ एक नदी का नाम ।

१२ एक लघु एक गुरु के क्रम से २०० वर्षों का एक छन्द ।

(र ज प्र)

१३ त्रिकोण । ४ (हि को)

१४ एक की मर्या । ५ (हि को)

८० भे०—मइ, मई, मह, महि, मही, मिहि, मिही ।

अल्पा०—महीढो ।

महीश्वर—देखो 'महीश्वर' (रु भे)

उ०—मात तात न सभरइ, महीश्वर तू माहाराज । पाली नइ पोडउ  
करी, काड कवेखइ आज ।—मा का. प्र

महीश्वरी—स० स्त्री०—मामी ।

उ०—महीश्वरियां नइ मांनोइ, भलीपरि भांणोज । आसा पूगइ  
बहिनिनी, हरखि आणुड हेज ।—मा कां प्र.

महीश्रळ, महीश्रळि—देखो 'महीतळ' (रु भे)

उ०—१ अधिकु बहु आसाड सू, माठउ महीश्रळ मद्धि । पगदढा  
पथी तणु, तइ भज्या भवमिद्धि ।—मा का प्र

उ०—२ अतिहि मोहामणु ए महीश्रळि ऊपरि चरीइ ए । जे  
भणइ जे सुणइ ए तीह धरि अचल वधामणु ए ।—हीराणुद सूरि

महीश्वारी—देखो 'महिश्वारी' (रु भे)

उ०—वन मांहि वजाडी वामळी, महीश्वारें तु मा मिळें । आजरें  
घणें हुइ ऊलटें, अम मूरति सामें वळें ।—पी. प्र

(स्त्री० महीश्वारी)

महीश्वर—म० पु० [स० महेन्द्र] १ देवराज इन्द्र, महेन्द्र ।

२ नेता, मुखिया, प्रधान ।

३ राजा, नृप ।

महीकाळवासर—स० पु०—प्रलय दिवस ।

उ०—प्रलय मिधु सम खिजि असुर, यहि विधि चले उमगि ।  
महीकाळवासर गमय, यहि विधि चले उमगि ।—ला रा

महील—म० पु०—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

२ देखो 'महिष' (रु भे)

उ०—महोष चक्र चाडि मात, सोण चड सो पियो । 'अजो'  
नरिद जेण बार, इद्र जेम ओपियो ।—सू प्र.

महीलघुज—देखो 'महिमधुज' (रु भे)



महीनासुरमरदणी—देखो 'महिसमरदणी' ।

महीखी—देखो 'महिंसी' (रू भे )

महीडो—देखो 'मही' (६-१०) (अल्पा , रू भे )

उ०—कोई तो बोली महीडो मेरी लूटे । छोड़ कनैया ईंटाणी  
हमारी मही की काना मेरी फूटे ।—मीरां

महीज—स० पु० [स० मही+ज] १ मगल ग्रह ।

२ वृष, पेड़ । ३ अदरक ।

महीजा—स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी ।

रू० भे०—महिजा ।

महीजीत—देखो 'मसजिद' (रू भे )

महीडा—स० पु०—सोलकी वंश की एक शाखा तथा इस शाखा  
का व्यक्ति ।

महीणो—देखो 'महीनो' (रू भे )

उ०—रातरी घूई मे दिनूँ रो पून, वासते मे लाल-लाल खीरा  
जिया उछाळ, बिया ही लालजी रं घर रो कूडी सोग महीणूँ सू  
पैत्या ही उघड ज्यावै है ।—दस दोख

महीतळ, महीतळि, महीयळ—स० पु० [स० मही+तळ] १ पृथ्वी का  
घरातल, सतह, भूमि ।

उ०—राइ कहाविउ ते कहिउ, सेवकि सूपी सार । महीतळि  
पडियु माघवु, तनु घूजी तिणु वारि ।—मा का. प्र  
२ ससार, भव ।

रू० भे०—मईयळ, मईयळ, महिआळ, महितळ महियळ, महियळ,  
महिपल, महियलि, महीअळ महीअळि, महीयळि, महीयळी, मही-  
यळ, महीयळि ।

महीयळि, महीयळी—१ देखो 'मैथिली' (रू. भे.)

२ देखो 'महीतळ' (रू भे )

महीदेव—स० पु० [स०] ब्राह्मण, विप्र ।

रू० भे०—महिदेव ।

महीघर—स० पु० [स] १ विष्णु ।

२ पर्वत । (हि नां मा) ३ शेषनाग ।

४ एक वर्ण वृत्त जिसमे क्रमश चौदह बार लघु व गुरु आते है ।

रू० भे०—महिघर, महीघर ।

महीन—वि० [अ०] १ अत्यन्त लघु, जिसका अस्तित्व सहसा दिखाई न  
पडे । २ स्थूल या मोटे का विपर्याय, सूक्ष्म ।

३ तुच्छ । ४ जीरां-शीरां ।

५ कमजोर, क्षीण । ६ अत्यन्त पतला, भोना ।

७ कोमल, मद, धीमा । (स्वर)

रू० भे०—मई, मई, मईन, मही, महीण, मियूं, मियो, मिही,  
मींयो, मीह, मिहीन ।

महीनदार—स० पु० [अ० महीन+दार] मासिक वेतन पर कार्य करने  
वाले कर्मचारी ।

उ०—घोडा रो रातव दाणो, महीनदारा रो महीनो, मोदीखाने रो  
जिनस ओर ही सारा लोगा रो सरजाम सरतत कर घोडा नु खुद  
रै खेत भीळाय हाथिया नू गुळ वाड रो वाड भोळाय जाय गैर  
महिलां रहियो ।—ढाढ़ाळा सूर रो वात

महीनाथ—स० पु०—राजा, नृप ।

रू० भे०—महिनाथ ।

महीनो—स० पु० [अ० महीन] १ वर्ष के बारहवें अश के बराबर का  
समय जो प्राय तीस दिन का माना जाता है, मास, माह ।

उ०—१ जेठ नांम जेठ ओर महीनो वाढी जेठ महीनो दीठां सूक  
जावै है जिणतरै जेठ नें देख दुसमणा रो वाढी सूक जावसी ।

—बी स. टी

उ०—२ अवे पाछा वारं महीना सू उठै भेळा व्हेला ।—फुलवाडी  
२ मासिक वेतन ।

रू० भे०—मईनी, महणी, महनी, महिणी, महिनी, महीणी,  
माहीनी, मीणी, मी'णी ।

महीनो'क—वि०—करीब एक मास, एक मास के लग भग ।

उ०—अरु रावत कांघळजी रं बढी वेटी तो वाघोजी हा जिके तो  
कांघळ जी सू महीनो'क पछे भगई में कांम आया ।—द दा

महीप—स० पु० [स०] १ इन्द्र । (ना हि को)

उ०—मिळि पघराय सवाय हित, डेरा दिया समीप । छत्रपति छाजै  
ऊपरै, राजे जोड महीप ।—रा रू

२ राजा, नृप ।

उ०—१ करणी सो अरु ही कियो, मरणी वेस महीप । दिल्ली  
मग मोनू दहे, दीजै पग कुळदीप ।—व भा

उ०—२ सोभा रूप गान व्रत सोहे, महीप किंनू इद्र मन मोहे ।

—सू प्र.

रू० भे०—मईप, महिप, माहीप ।

महीपत—देखो 'महीपति' (रू. भे )

उ०—वेड़ तो पेख पतसाह वाकारियो, टाळ अन करै मन जही  
टाळियो । महीपत 'करन' सालीयां दूणें मगज, वाग मह लीध वा  
खुद वळियो ।—द दा

महीपति, महीपती, महीपत्ति—स० पु० [स० महीपति] राजा, नृप ।

(ह ना मा)

उ०—१ मत्री तहा मयण वसत महीपति, सिळा सिधासण घर  
सघर —वेलि

उ०—२ वळै हुई तिणवार महीपति हू कय माळिम । जुध करि  
ग्रहियो जवन खान अरुदुळ खूदाळिम ।—सू प्र.

रू० भे०—महपत, महपति, महपती, महपत्ति, महपत्ती, महिपत,  
महिपति, महिपती, महिपत्ति, महिपत्ती, महिप्पति, महीपत, माहिपत,  
माहिपति ।

महीपाळ, महीपाल—स० पु० [स० महीपाल] १ राजा, नृप ।

उ०—पुळियो जिम सुत हू पिता, महीपाळ तजि माळ ।—वं भा

२ मेघ ।

रु० भे०—महपाळ, महिपाळ ।

महीपुत्र—स० पु० [स०] मगल गृह ।

महीभरत—देखो 'महीभरत' (रु भे)

महीभुजग—स० पु० [स०] १ राजा, नृप ।

उ०—इण कुळही देवट अभिधानी, महीभुजग हुवो रणमानी । कुळ जिणरो देवडा कहावै, दान-समर अनुपम दरसावै ।—व. भा  
२ गणिका का पति ।

महीभरत—स० पु० [स० महीभरत] १ राजा, नृप ।

२ पर्वत, पहाड ।

रु० भे०—महीभरत ।

महीमडण—स० पु० [स० मही+मडण] इन्द्र ।

उ०—माघव तू महीमडणउ, जिहां जाएमो तिहो जांणि । चिहिर करी चलावीड, ए अम्ह अधिकी हाणि ।—मा का प्र

महीमडळ—स० पु०—भूमडळ, पृथ्वी ।

महीमन—देखो 'महिम्न' (रु. भे)

महीमुदीसाही—स० पु० यो०—एक प्रकार का वडिया वस्त्र विशेष ।

उ०—कतास धतलस खासु कमसू भडरव, मिसु भडरव, रेसमी भडरव, लाहि महीमुदीसाही मलमलसाही प्रमुख नानाविध भातिना, नानाविध देसना वस्त्र आणी समस्त परिवार, नगरलोक पहिरावो ।  
—व स

महीमुरतव, महीमुरतव, महीमुरातव, महीमुरातिव—देखो 'महीमुरा-तव' (रु भे.)

उ०—१ गजमिका तराजू अदल गहि, तोग महीमुरतव तुरग । पतिसाह हुवो अजमाल पह दिली जेम तारा दुरग ।—सू प्र.

उ०—२ धज फरर नेजा धार, सकि तोग घर असवार । वणी महीमुरतव वाग, नोवति धारक नाग ।—सू प्र

उ०—३ के सकत पूज नोवत कसै, आरौहक के आरवा । घर फरर चढे नोसाण घर, तोगा महीमुरातवां ।—सू प्र

महीयळ, महीयळि—देखो 'महीतळ' (रु भे)

उ०—१ भादवउ वरसइ छइ मगैहर गभीर, जळ थळ महीयळ सह भरघा नीर ।—चो दे

उ०—२ किहा मुत्ताहळ गुज किहा, किहा सरसव किहा मेर । माघव जोतां मानिनी, महीयळि एतु केर ।—मा कां प्र.

महीयां—वि०—मूढ, अज्ञानी ।

उ०—हू माघव वछू वली, ते माघव तू होय । पीडइ कां मुक्त पापीया, महीया मांम न खोय ।—मा का प्र.

महीयारी—देखो 'महिभारी' (रु भे)

(एथो० महीयारी)

महीरजण—स० पु०—मेघ, बादल । (ना डि को)

महीर—वि०—१ महान, बडा ।

स० पु०—२ पृथ्वी, भूमि ।

३ देखो 'मिहिर' (रु भे)

उ०—पघारवा वेदाई पय हेमाळें गळेंग पड, गौरी पातमाह राज गभायी गहीर । पच तुंड पीठ धू पीरोज विराजें पान, मही दुनी भरें साव चद्रगा महीर—पद्मारांम मोतीसर

महीरानाथ—स० पु०—राजा, नृप । (डि को)

महीरूह—स० पु० [स०] वृक्ष, पेठ । (ह ना मा)

महीयर—स० पु० [स० मही+राज० वर=पति] राजा, नृप । (डि को)

महीस—स० पु० [स० महीस] राजा, नृप ।

उ०—मद्र देस मे आपरो अमल जमाय महीस हुयो जिणरी सतति समस्त माद्रेवा चट्टवाण कहीजै ।—न गा.

रु० भे०—मईम ।

महीसुत—स० पु० [स०] १ मगल गृह ।

२ वृक्ष, पेठ । (ना मा)

रु० भे०—महिसुत ।

महीसुर—स० पु० [स०] ब्राह्मण, विप्र ।

रु० भे०—महिसुर ।

महीसूर—स० पु० [स० मही+सूर] अर्जुन । (ह नां मा)

महूर—देखो 'मोहर' (रु भे)

उ०—पिण दांगव ची प्रीळि, फूक तिम करळी कीधी । मिळिया सुणि तिए महूर सम निहसम स बीधी ।—मा वचनिका

महु—देखो 'मधु' (रु भे)

उ०—१ प्रकट बटो सग्राम सिंह पट्ट, मतिधर सुकवि मिसिद कज महु ।—व भा.

उ०—२ जोमे लागो खाय नै खरचै, राक मनै लछि राखी । घाटो मिलीया हाथ घसेली, महु घुटे जिम मारी ।—घ व ग्र

महुअडो, महुअडो—स० पु०—देखो 'महुअ' (अल्पा, रु भे)

महुआल—स० पु० [स० मधुजल] मधुजाल । (उ र)

महुक—स० पु०—देखो 'महुअ' (रु भे)

महुअ—स० पु० [स० मधुक, मधुक+प्रा० महुअ] १ भारत के सभी भागो मे होने वाला एक वृक्ष, महुए का वृक्ष

वि० वि०—यह पहाड़ो पर प्राय तीन हजार फुट की ऊंचाई पर पाया जाता है । इसके फल, फूल, लकड़ी, बीज सभी वस्तुएँ उप-योगी होती हैं ।

२ एक प्रकार का घोडा विशेष ।

उ०—पांडवा जही किता पळ खडिया विहरै हाड विजुजळ वाह । सहस्रां सिर महुअ सूरजमल, मेल्यो मेछ तणें दळ मांह ।

—महाराजा सूरसिंह री गीत

३ मधुर । (डि को)

रु० भे०—मउ, महवो, महुक, महुचो, महु, महुअउ, महु ।

अल्पा०—मउडो, मऊडो महुअडो, महुअडो, महुडो, महुअडो, महुडो, महुअडो, महुडो, महुअडो, महुडो ।

महुकम—वि०—समय ।

उ०—दधि परगुनइ पासइ रहइ छइ, अति ते गुणवत । पण डोलिइ स्वामी कूबडउ, महा महुकम बलवत ।—नळदवदतीरास

महुकर—देखो 'मघुकर' (रु. भे.)

महुडो—देखो 'महुडो' (अल्पा, रु. भे.)

महुच्छव, महुछव—देखो 'महोत्सव' (रु. भे.)

उ०—१ जमु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महुच्छव किय ।

—स कु

उ०—२ उदय प्रभ सूरि प्रमुख ना ए, पदठवणां एकवीम । महुछव सेती करावीया, जाचका पूरी जगोस ।—स कु

महुडो—देखो 'महुडो' (अल्पा० रु. भे.)

उ०—द्राक्षा तणि काक्षा किसिउ महुडै फेटइ, सरकरा'नी लढा कि गुलि पूजइ ।—व स

महुत, महुत—१ देखो 'महुरत' (रु. भे.)

उ०—समया वळिय महुत दीह पख मास नें साल ।—वृ स्त

२ देखो 'महत्व' (रु. भे.)

उ०—आणइ नगरिइ जोडवू रे पुहुतु सभा मझारि । उलखीउ रूतुपरण राजाइ, दीघउ महुत अतिसार ।—नलदवदतीरास

महुयर, महुयरि—स० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष जिसे राज-स्थानी मे 'पूगी' भी कहते हैं ।

उ०—१ मघुर स्वरि महुयरि वाइ, वानि काळा, मुहि विकराळा ।

—व स

उ०—२ वीणां डफ महुयरि वस वजाए, रोरो करि मुख पचम राग ।—वेलि

रु० भे०—महुवरि, महुवरी ।

महुवरी—देखो 'मघुकर' (रु. भे.)

उ०—जिण चद पय अरविद सुदर, सार सेवा महुवरी । गणि सकलचद सुभीम जगइ समय सुदर सुहकरी ।—स कु

महुर, महुर—१ देखो 'मघुर' (रु. भे.) (उ र.)

उ०—वा घां घपमु महुर अदग चवपट चवपट तालु सुरग । कघु-गनि घोगनि घुगा नादि, गाइ नागड दो दो सादि ।—हीराणद सूरि २ देखो 'मोहर' (रु. भे.)

उ०—ईये भात छोकरी महुर १ रोज ले आवैं नें वाणीयै नु ले जाइ देवै ।—स्यामसुदर री वात

महुरत, महुरति—स० पु० [स० मुहूर्त] १ काल या समय का एक मान जो ४८ मिनट का होता है, रात व दिवस का तीसवा भाग ।

उ०—किण महुरत कहियांह, वरिषा कदि बीजाणुदै । वाता विच रहियाह सिरै न चढिया सूरउत ।

—सयणी चारणी री वात

२ फलित ज्योतिष के अनुसार गणनाक्रम से, किसी शुभ कार्य या प्रस्थान के लिए निकाला हुआ कोई समय ।

उ०—सुभ दिवस महुरत सार, 'अजमाल' हुय असवार । रग सुरग वण गजराज, किति अन्नत होत अकाज ।—रा रु

३ निर्दिष्ट क्षण, काल या समय ।

उ०—निज गउखैं चढि चढि वाट निहाळइ, महुरत पिण आयो तिल मात ।—महादेव पारवती री वेलि

४ शुभ घडी, शुभ समय, शुभ अवसर ।

उ०—१ तपवत हुवै 'अजमाल' सुतस, घनि वेळा महुरत वार घस ।—सू प्र

उ०—२ 'दमयंती' स्वयवर माडघु, महुरत छि ते कालि । जु जवाइ तु तिहा जईइ, अस्व अनोपम चालि ।—नळाख्यान

५ श्री गणेश, प्रारम्भ ।

कि० प्र०—आणो, जाणो, टळणो, टाळणो, दिखाणो, देखणो, निकळणो, निकाळणो, सजणो, साजणो ।

रु० भे०—महुत, महुता, महुरत, महुरति, महोरत, महोरथ ।

महुरी—देखो 'मोरी' (रु. भे.)

उ०—जरवाफ तणा ताह पाटा जोडिया, रसम री महुरी वहरग ।

—महादेव पारवती री वेलि

महुळ—देखो 'महिला' (रु. भे.)

महुल—देखो 'महल' (रु. भे.)

उ०—नाळेर लियउ प्रभु बात परीछी, जाणणहार सुजाण जगि ।

आया महुल करै ताह आइत, प्रिथी प्रमाणइ घरण पगि ।

—महादेव पारवती री वेलि

महुलेठी—स० पु० [स० मघुयष्टि] गन्ना ईल । (उ र.)

महुवरि, महुवरी—देखो 'महुवरी' (रु. भे.)

महुवी—देखो 'महुवी' (रु. भे.)

उ०—सुर काज पीरोजियै कैहरडा सज, चप हरी महुवा चकरी ।

सदली भरडाज भसमीयै चीत्रस, नील पीळा गुग्गु नु करी ।

—किसनजी घघवाडियो

महू—१ देखो 'महुवी' (रु. भे.)

२ देखो 'मघु' (रु. भे.)

उ०—जइ अन्नपपान पीजइ तु काजीइ किसिउ कीजइ, जउ द्राक्षा-फन दोसइ तउ महू कवण नउ वीस (र) इ ।—व स

महुअउ—देखो 'महुअो' (रु. भे.) (उ र.)

महुअडो—देखो 'महुअो' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—उराहा सेराहा केकाण सूनडा सिरखडा महुअडा दक्षिण पथा पाणीपथा माकडा नीलडा ।—व स

महुअर—देखो 'मघुकर' (रु. भे.)

उ०—मेवइ जमु पय साध अहै, पकय महुअर रुण उणइ ए । घन घनु जे नरनारि अहै, नितनितु प्रभु गुण गण धुणइ ए ।

—भावप्रभ सूरि री गीत



उ०—२ राघव रयणायर रसा, सेम महेस्वर वंण । सुणं बघायो  
गिरि सुता, सो व्हो मो सुख दैण ।—वां दा  
२ ईश्वर ।

उ०—अनादि ऐस्वरय त्रतति वर वरय्य त्रति बुधा । महेस्वरय्या  
भागी कवन बल त्यागी सुति मुघा ।—ऊ का.

रू० भे०—महेसर, महेसवर, माहेसुर, माहेस्वर ।

महैराण—देखो 'महारणव' (रू भे )

उ०—लहैरी महैराण भूपाळ 'लच्छो', 'अखो' दूसरो रीक खीजाळ  
अच्छो ।—मे म

महोख—वि० [स० महोख] वही आंख वाला ।

स० पु०—एक पक्षी विशेष जो बाग बगीचे में प्रायः सवेरा होने  
के पूर्व चोलता है ।

महोच्छव, महोछव, महोछव, महोछिध, महोछिव—देखो 'महोत्सव'  
(रू भे )

उ०—१ नवी नवी सोमा सहित प्रथी के विखै नवा नवा महोच्छव ।  
आणदमई हई छै ।—वेलि टी

उ०—२ जेठ पढम पखि अस्टमी, जायउ स्त्री जिनराय । जनम  
महोच्छव सुर करइ, त्रिभुवन हरख न माय ।—स. कु

उ०—३ छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मडिये जिणि आणद  
मई ।—वेलि

उ०—४ गुरु जिणचद सूरि, आप हाथ पाट दीनो । कीनो है  
महोछव, पुर सूरत सनूर जू ।—घ व. अ

उ०—५ माड घर बीच में महोछिव मडाणा, दान सू अदेवा हिया  
दहता । चूडहर अनठ जैसाण चवरी घटै, बीदगा चढाया गजा  
वहता ।—द दा

महोत्पळ, महोत्पल—स० पु० [स० महोत्पल] पुढरीक, कमल ।

(अ मा, ह ना मा )

महोत्सव—स० पु० [स०] १ किमी के स्वागत में या किसी प्रकार की  
खुशी के अवसर पर मनाया जाने वाला बड़ा उत्सव ।

उ०—तहा थी राजा उज्जेण आइयो, घणां महोत्सव हुवै ।

—पचदही री वारता

२ कामदेव ।

रू० भे०—महुच्छव, महुछव, महोच्छव, महोछव, महोछव, महो-  
छिव, महोछिव ।

महोव, महोवध, महोवधि, महोवधी, महोवधि—स० पु० [स०-उदधि]

१ महासागर, महा समुद्र ।

उ०—१ साव उखेळ करण साह वंठा सबळ, हुवो पातसाह घर  
लयण होवै । उळटियो महोवध पाज कुण उडजै, आभ ढीगियै खवा  
तूं होज ओढै ।—द दा

उ०—२ पीडिया तणी ओपमा पुणता, अतिनाळी जोवता अनूप ।  
मछि साह महे महोवधि माहै, रहिया थरक थायकवा रूप ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ दुख महोवधि पाज, भव जळ तारण जहाज । आज हो  
रगइ रे रळियाळउ साहिव सेवियइ जी ।—वि कु

उ०—४ ब्रह्मड लगै भुजडड वधि, महमहण मथण किरि महो-  
वधि ।—गु रू व

२ इन्द्र ।

उ०—अखाडा महोदव डोहतो एकटा, पेख तन सुपह वमुहा पघारै  
'भीम' सरखो कहर 'माल' हर भीयकर, जहर 'गाजी' सकर तुईज  
जारै ।—चतरो मोतीसर

रू० भे०—महोदध, महोदधि ।

महोदय—स० पु० [स० महत्-उदधि] (स्त्री० महोदया) १ अधिपति,  
स्वामी ।

२ बडो के लिये सम्मान सूचक सम्बोधन ।

३ महानुभाव, महाशय । ४ स्वर्ग ।

५ कान्य कुब्ज प्रदेश का नाम ।

६ देखो 'महोदव' (रू भे )

रू० भे०—महोदया ।

महोदया—स० स्त्री०—१ नाग बला, गुल शकरी, गगेरन ।

२ देखो 'महोदय' (स्त्री०)

महोदर—स० पु० [स०] १ एक नाग, जो कश्यप एव कद्रू के पुत्रों में  
से एक था ।

२ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ३ घटोत्कच का मित्र एक राक्षस ।

४ रावण का एक पुत्र । ५ रावण का एक प्रधान राक्षस ।

उ०—महोदर वजर मुसटडु दाहैं मसत, दुरीमुख घूमनगर घूम  
वामी दसत । तुग तन अकपन देख वडतोलरा, दस वदन मुसाहिव  
किया चदोलरा ।—र रू

६ रावण का एक भाई । ७ एक ऋषि ।

८ एक प्रातः स्मरणीय राजा । ९ एक रोग विशेष ।

उ०—फरण कुम्हू खसकुम्हू महोदर जलोदर कठोदर वातोदर भग-  
दर अतिसार ।—व स

१० समुद्र । (ह ना मा )

वि०—जिसका उदर बड़ा हो, बड़े पेट वाला ।

महोदरमन्त्रवाळा—स० पु० यो०—युरोप का निवासी, युरोपियन ।

उ०—वीगडै न महोदरमन्त्रवाळा, चढ करै नवी जम लहर चाळा ।  
चढ करसी । 'स्त्री जम ल'हर, चाळा, वीगडमी महोदरमन्त्रवाळा ।

—महाराजा मानसिंहजी री गीत

महोदव—स० पु० [स० महत्-उदधि] समुद्र, सागर ।

उ०—आपसी, एक सांसण अवल, दुनी सरव कहसी दियो । नर  
अवर कूप जाचु नही, भूप महोदव भेटियो ।—साहिबी सुरताणियो  
रू० भे०—महोदय ।

महोव, महोधी—स० पु०—बुदेलखण्ड का एक प्राचीन नगर ।

(ऐतिहासिक)

उ०—अवध्या वणागसी चदेगी मल्लिवाल महवर महोच हरिया-  
णउ भयाणउ ।—व स

महोर—देखो 'मोहर' (रु भे)

उ०—विन राम भजन खोव वखत, उलभ अमल होवा अठे । उफ  
माम अतपुळ मे अहह, कोडि महोर मिलगू षठे ।—क वा.

महोरत, महोरथ—देखो 'महोरत' (रु भे)

उ०—१ सदगुरु जिन चद सूरिजी, मगळे गुण देवि सुघाट रे  
लाल । सुभ महोरत सत्यात्तर, पाटण मे दीघो पाट रे लाल ।

—वि कु

महोरह—क्र० वि०—आगे की, पूव की ।

उ०—मरि पेटिय मोर महोरह की, मछ सूकर बाघ सुखी मलकी ।  
मग दीरघ तोप किती मचले, उम्मत करीगन लागि टळे ।—ला रा

महोळ, महोल—१ देखो 'महळ' (रु भे)

उ०—सोभत था कोस न मगर लेगत भायरा था कोम ५ आगी  
हूलोजण गी वडी ठुकराई हुई, वडी ठोट सेहर सूनी ठुकराई छे ।  
गारी पातमा रा कराया महोळ छे ।—नैणमी  
२ देखो 'महोळा' (रु भे)

महोलो—स० पु०—१ भुक्त कर किया जाने वाला मलाम ।

उ०—१ इण्णि भांति सू राजा रतन नू वकुठनाथ समीप वेसाणि  
दीवाण किया । अवर ही छत्रीम वस ठिहू मरजोत वरि महोला  
लिखा ।—वचनिका

उ०—२ महोलो म्हारी तीज री आलीजाजी हो । लीजी म्हारा  
पना माळ घणां नै मनेह सू ।—रसीले राज री गीत  
२ मुजरा, अभिवादन ।

उ०—दळ वादळ लागि नै रहिया छे । रजपूतां रा घाट मोगर  
मिळे छे । महोला लीज छे ।—रा मा स  
१ राजा महाराजा या किसी बड़े आदमी के स्वागत में गाया जाने  
वाला गायन ।

उ०—१ इण तरं मु खमायची रा दूहा रा महोला लेता आवळे  
वीम पाव देता, म्हैला सु नोजीक आया ।—पनां

उ०—२ उसी वखत दरवान नै अरजी गुदराई दीदार की उमेद-  
वार चार काजरीयां आई । सुनते ही बुलाकर महोला लिया वोहत  
मी तारीफ कर मात टका इनाम का दिया ।—दुरगादत्त वारहठ  
४ उत्सव, समारोह ।

उ०—सावण घणो मिरावियो, रसीयो वगसीराम । निरमै गढ  
बूदी नगर, तीज महोला ताम ।—वगसीराम प्रोहित री बात  
५ स्वागत । ६ निवास स्थान, डेरा ।

उ०—सब कू बुलाय बैण अकवर साह बोलै । मेरी निसां खातरी  
है तुमारै महोलै ।—रा रु.

● सेना का पड़ाव ।

उ०—मेन के प्रमाण कोन कहा गाह बोलै । सेनापत कोन मोर  
देगन महोलै ।—रा रु

न काव्य रग, रस स्वाद ।

६ देखो 'महलो' (रु भे)

महोखधि—देखो 'महोसधि' (रु भे.)

महोदध, महोदधि—देखो 'महोदधि' (रु. भे.)

उ०—नाचै तिम नट्ट यई जिम नांच, महोदधि मज्ज कूद सुज मांछ ।

—मा. वचनिका

महोवत—देखो 'मुहवत' (रु भे)

उ०—विरहा घूम मचाई मोरे राम, रमराज त्याय महोवत यू हो ।

—रसीले राज री गीत

महोर महोरि—देखो 'मोहर' (रु भे)

उ०—फवि विम सहम गयद घज फहर । घरै महोरि वि नहम  
वाजिध घर ।—सू प्र

महोसधि—स० स्त्री० [स० मह+श्रीपधि] कुछ विदिष्ट श्रीपधियों का  
समूह जिनका चूर्ण महास्नान या अभिषेकादि के जन में मिलाया  
जाता है ।

रु० भे०—महोखधि ।

महूसाळ—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—उरमाला वाला पटुला वाकला घनवेलि कमलवेलि कपूरवेलि  
मेलापटुली खमरतली भमरतली खेउली महूसाळ चारसा खरबास  
खेम ।—व स.

महवो—देखो 'महुवो' (रु भे)

मा—देखो 'मा' (रु भे)

उ०—१ चूडली खीरासं घण री सायवो रे लजा ओठी हे लो ।  
ओटणिया ओढामी मां जायो वीर वाला जी ओ ।—लो गो.

उ०—२ राय पसेखी हो ज्ञाता भगवती, जीवामिगम नइ मांभ ।  
ए गूत्र मानं हो प्रतिमा, मानं नही महारी मां नइ बांभ ।—स कु

उ०—३ म्हारी वाई, म्हारी मां री मोख चागी समझ मे सावळ  
बैठी कोनी ।—फुलवाडी

उ०—४ जे दुमात मावका वेटा नै सगा वेटा री ठोड़ नी मानं ती  
सावका वेटा किसा दुमात नै मां री ठोड़ मानं ।—फुलवाडी

उ०—५ राजकवर मुळकती थकी कंवण लागो-मा, मन में थोड़ी  
घणी ती निरांत राखो । म्ह अवारू थां सगळा री बातडी ठांणे  
बिठाय देवूला ।—फुलवाडी

मर्व०—हम ।

उ०—इमा में बाता करता सेला मिकारां फिरतां दिन नीसर गया ।  
सावण आयो, तद बहुवां सारघा अरज कीवी, जो कूबरसी मां-सु  
क्रपा कर गोठा माहरी जीमो ।—कूबरसी सांखला री वारता

अव्य०—१ मत, नहीं, ना ।



उ०—१ उठै जाय हाथ-पग घोय नै आपरी तरवार काढ नै कवल पूजा रै वास्तै गळा ऊपर भेली । तरै देवीजी कह्यौ—मा ! मा !

—नैएसी

उ०—२ पय ठव सूका पांनडा, मा बजाह मयमत । खबरदार के वेखबर, वन इण सीह वसत ।—बां दा

उ०—३ राघव जपतौ प्राणी, मूढ आळस मां करै ।—र ज प्र २ देखो 'माय' (रु भे)

उ०—१ साहिब जी के नाम मां, विरहा पीढ पुकार । ताळा वेळी रोवणा, दाहू है दीदार ।—दाहूवाणी

उ०—२ हा हा करू हिवे कासू रे, माहरो हिवडो फटै मा सू ।

—जयवाणी

उ०—३ दिन जास्यं हिव दोहिला, किम रहिसै मुभ प्राण । सतावै मुभ नै सदा, घटै मां पाचै बाण ।—वि कु

उ०—४ माया कारण देस देमातरै, अटवी वन मा जावै रे । प्रव-हण बडसी घोर द्विपातर सायर भाभ पावै रे ।—स कु

उ०—५ ताही पथ कोई कूरमा के बस जायो, मारुदेस मां' सू जो कबीला लेर आयौ ।—सि व

मांगडो—देखो 'मूढो' (रु भे) (जैसलमेर)

सवं—मेरा ।

मांइ—देखो 'माता' (रु भे)

२ देखो 'माय' (रु भे)

उ०—साहिब, तुझ सनेहहड, प्रीति तणी पति जाइ । जळ खिण ही जाणइ नही, मच्छ मरइ खिण माइ ।—ढो मा

मांई—१ देखो 'मांईमा' ।

उ०—१ ईहा आपस मांहे विचारी, आपांनां मांई घर माहे कढाया तो आपां अठै रहा नही ।—हसराज बछराज री बात

उ०—२ तिरणसू माजी नै गाव १ आप दोघो छे । तिरण री हासल माफक हीज आवै छे । नै मांई जी रे (सोतेली मा के) हाथ राज री काम छे ।—जगदेव पवार री बात

२ देखो 'माता' (रु भे)

उ०—मांई ! सुराघाम सरसावो । मेछ घरम दुर करम मिटावो ।

—रा रु

१ देखो 'वाई' (रु भे) (घरदा) (शोखावटी)

४ देखो 'माय' (रु भे)

उ०—१ महुडा मिळयागिरी मिरी, मोढल नइ मदार । मांई मजीठ मरि हठी, मरहासींगे मार ।—मां का प्र

उ०—२ समभाऊ सो वार, सभळ री घाटो साई । जगत कमावण जाय, मुरड बेठो घर मांई ।—ऊ का

मांईजायो—स० पु० [स० मा+जात] १ विमाता का पुत्र, सोतेला भाई ।

मांईमां—स० स्त्री० [स० मूर्त+माता] सोतेली मां, विमाता ।

मांऊं—क्रि० वि०—ग्रन्थ से, मोतर से ।

माक—सं० पु० [स० मकि=मडने=मक=रा=माक] अर्जुन का एक नामान्तर । (अ मा)

माकड—स० पु० [स० मकंट] (स्त्री० माकडो) १ एक जाति विशेष का घोडा ।

उ०—दक्षिणपथा पाणीपथा मांकडा नीलडा क्याहडा गगाजला सिधुआ पारकरा कबोजा ।—व स

२ देखो 'मरकट' (रु भे)

उ०—१ श्रीर चढै गढ़ ऊपरा, नीसरणी बळ नीठ । अजको घव पूगो उठै, माकड मेल्ले पीठ ।—वी स

उ०—२ राजा लोह सपूरण सन्नद हूउ युद्ध करइ, सुहृद चूरइ, रयावली ऊधळावइ, मुहुउवा माकड जिम नचावइ ।—व स

उ०—३ एक घण माकडी अनइ पाए बाघी काकडी ।—व स. ३ देखो 'मत्कुण' (रु भे.)

उ०—माकड हाड मिलइ नही, मीनी-ससली-सिंग । परिपरि पूजइ पदमिनी, स्वान-विलगां लिंग ।—मा का प्र.

माकडा—देखो 'माकडा' (रु भे)

माकडियो—१ देखो 'मत्कुण' (अल्पा रु भे)

उ०—तीडा मांखी डांस मछर कसारी धार, कवउ डोला माकडिय पतग इत्यादिक भेद ।—व स.

२ देखो 'मरकट' (रु भे)

मांकडी—देखो 'माकडी' (रु भे)

माकण—स० पु०—१ कीट जाति का कोई जीव ।

२ देखो 'मत्कुण' (रु भे)

उ०—वाला बढान्या टाकता, माकण खाटला कूटि । विरेच लेई क्रमि पाडिया, गलणी गयउ छूटि ।—स कु

३ देखो 'माखण' (रु भे)

माकणो, मांकवो—क्रि० सं०—१ मागना ।

उ०—पाडउ मांकइ खीरा प्राणि, वच्छ मांकइ दूध प्राणि, घनवत मांकइ घनप्राणि, राजा मांकइ देस प्राणि, राजपुत्र मांकइ सूर प्राणि, चोर मांकइ भावा प्राणि, पायक मांकइ नायक प्राणि, वधू मांकइ पीहर प्राणि ।—व स

२ शोषण करना, खून चूसना ।

माकणहार, हारो (हारी), माकणियो—वि० ।

माकिओडो, मांफियोडो, मांफयोडो—भू० का० कृ० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।

मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा० ।



मांकियोडो—भू० का० कृ०—१ मागा हुवा. २ शोषण किया हुआ,  
खून चूसा हुआ  
(स्त्री० मांकियोडो)

माकुण—१ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—खर उखरलु, माकुण माचा भिरिया, जू भरिया गोदहा  
कान मिलि भरिया, रालडां फुहडा, पग भरिउ साढळउ ।—व. स.  
२ देखो 'मागण' (रू. भे.)  
३ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मांलण—देखो 'माखण' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ कळ चाळण चद्रसेन कळोघर, कळहिये वहे कस । काळा  
तें दळ मयें काढियो, जुग माखण ऊजळो जस ।

—दूदा नगराजीत रो गीत

माखी—देखो 'माखी' (रू. भे.)

उ०—१ लालच रस रें लाग, माखी लपटांणी मधू । उडणी  
वळियो आग, जिगरें मुमकळ जीवणो ।—वां. दा.  
उ०—२ तितरें घरसू भातो आयो, तरें भातो पत्तर माहे पुरम नें  
आप माखी रागण लागो ।—नैणसी

माग—म० स्त्री० [म० मार्गण] १ बाजार में खरीददारों द्वारा किसी  
वस्तु की निश्चित मूल्य में खरीदने के लिये की जानेवाली इच्छा  
या चाह ।

२ किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा में बटाई जाने वाली  
आवश्यकता ।

३ किसी प्रकार की इच्छा ।

४ अपने अधिकारों या हकों के प्रति सामूहिक रूप से उठाई जाने  
वाली आवाज ।

५ वह कन्या जिसका प्रणय सम्बन्ध किसी के साथ निश्चित  
हो चुका हो ।

उ०—अर तिकी ही माग पिता नू परगाड तटस्थ भाव धारि अपूर  
रज जम लीयो ।—य. भा

उ०—२ तरें पिउसघी कह्यो, तें मोनं छळी, पिग हू तूरकणी  
छू नें आंटा भोलने माग छू । इण रो जाव फासू छै । तरें भीवें  
कह्यो, में मरव कट्यो ।—जखटा मुखडा माटी रो बात  
६ मिर ते जालो गो दोनो ओर विभक्त करके बटाई जाने वाली  
वैषा, स्त्रियों का गोभाग्य चिन्ह ।

उ०—१ पटिया पारु ग्यान की मन माग सवारू हो । पिया तोरे  
कारणें घन जीवन धारू हो ।—मीरां

उ०—२ मांग जडया गज मोतियां, कह्या रळता केम । ताळी हस  
नेंती जणी, बाळी वामण वेग ।—पनां

७ देखो 'मागण' (रू. भे.) (अ. मा.)

रू० भे०—मग, मागु ।

मागटीको—स० पु०—स्त्रियों की मांग पर धारण किया जाने वाला  
गहना, सोभाग्य चिन्ह ।

मागण—स० पु० [सं० मार्गण] १ मांगने की क्रिया या भाव, याचना ।  
उ०—१ बावो वामणी नें ई वैंडो सवाल करियो—बाला, यू तो  
भला घर रो दीखें, श्री मांगण रो निकूच कांम क्यू करै ।

—फुलवाडी

२ पथ प्रदर्शक ।

३ याचक, भिखारी । (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ जैतो साळोडी पीपळ वडसायें परणीजण आयो हुतो सु  
किणही सूळ व्याह तो न हुवो, नें मांगण घणा भेळा हुवा ।

—नैणसी

उ०—२ दीनानाथ अमं पद दानख, मानव अतक समर भर ।  
मानख जनम सफल कर मांगण, धानखधर पद सीसधर ।

—र. ज. प्र.

उ०—३ कपण कहै ब्रह्मा किया, मागण वडी बलाय ।—वा. दा.  
४ वदीजण, भाट, चारण ।

५ विप्र, ब्राह्मण । ६ जोशी, उद्योतिपी ।

७ पंडित, कवि ।

वि०—मांगने वाला, याचना करने वाला ।

रू० भे०—मगजण, मगण, मगन, मगिण, माग, मागज, मागण,  
मागिण ।

मागणहार, मागणयार, मांगणहार—स० पु० [सं० मार्गण] १ याचक ।

उ०—१ राणी राजा नू कहड, मेलहुड मांगणहार । मांगणगारा  
रीभूवड, ल्यावड साल्हकुमार ।—ढो. मा

उ०—२ पछें ढोलोजी दारु अमल पीवण लागु । तद मोमर देखने  
मांगणहार कहै ।—ढो. मा

२ ढाढियों की एक शाखा । (सिध.) (मा. म.)

३ भिखारी, भिक्षुक ।

रू० भे०—मांगणियार, मागणहार, मांगणहार, मागणहार,  
मागणियार, मागणहार मागीणहार, मागिणहार ।

मांगणि—देखो 'मागणी' (रू. भे.)

मांगणियार, मांगणहार—देखो 'मागणगार' (रू. भे.)

उ०—१ श्री गड कहै दुनी आडवियो, अण गड राण थमी अद  
तार । खीजें गयो खजानो खोयो महमद सरखी मांगणियार ।

—महाराणा रो गीत

उ०—२ घडच्छत फील खगा सिरधार । रचें मुकतागळ मागणि-  
हार ।—सू. प्र.

उ०—३ तितरें रायसिध रो मागणहार गांव जाडें साहिब रो  
मासरो थो, तडें श्री पण परणियो थो, सु सासरे गयो थो, सु  
साहिब रायसिध ऊपर आयो सुणनं श्री ही रायसिध तीरें आयो ।

—नैणसी

मांगणी-स० स्त्री०—याचना ।

उ०—तिण रो वेटी नागारजन तिको अहमदावाद पातसाह मह-  
मद वेगडा कने मांगणी गयो हुतो ।—नैरासी  
रू० भे०—मांगणि ।

मांगणी-स० पु०—भिक्षा ।

उ०—१ साध न मांगे मांगणी, मांगे मांगिणहार । हरीया उर  
इक तार घरि, हरि है पूरणहार ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज  
उ०—२ भूख भूडी हुवे, पेट में आळा जमाया । छेकड नारळी  
हाथ मांगणी पड्यो ।—दसदोस

मांगणी, मांगवी—क्रि० स० [सं० मांगण] १ कुछ पाने के लिए किसी  
के आगे याचना करना, हाथ फैलाना, प्रार्थना करना ।

उ०—१ सत्रूपा नार स्वयंभू भूप, रहिस्स विचार न दीठी रूप ।  
मांगे वर पुत्र हुतो हरि मोज, हुतो ज हुतो ज हुतो ज हुतो ज ।  
—ह र

उ०—२ हेमाचळ केइलास विचड हिक, घ्यान रह्या तिण सहारि  
घरि । प्रसन हुमी इण खात सही प्रभु, किरि मांगड फळ सेव  
करि ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ पायो किण घनवस पद, दामै डावडियाह । कवियण किन  
पायो कुरव, मांगे मावडियाह ।—बा दा

२ इच्छा या आकांक्षा-पूर्ति के लिये किसी से निवेदन करना, कहना ।

उ०—सु प्रसन हुया तियइ तप सकर, रे मानवी वछइ सोइ मांग ।  
—महादेव पारवती री वेलि

३ भिक्षा वृत्ति करना ।

उ०—म्हें तो थें कै'वो के खुदा न नी मानू जिण कारण फोडा  
भुगतू पण इण रो म्यानी तो म्हर्न दो के आठ पो'र भगवान री  
माळा फेरण वाळा भीख मांगता क्यू फिर ।—फुलवाडी

४ किसी को कोई वस्तु देने के लिये कहना, कोई चीज मागना ।

उ०—१ उणां री राव मडळीक तारीफ सुणी, तरं चारण कने  
घोडा मांगिया । चारण न दिया । राव मडळीक घोडा मागण इणा  
रें घरे आयो । इण उजर कियो तरं परी गयो ।—नैरासी

५ ऋण के रूप में किसी को कुछ देने के लिये कहना, माग करना ।  
प्रस्ताव करना ।

उ०—अक वो वाणियो विणज करण सारू वामण कना सू पाच  
हजार मोहरा मागो ।—फुलवाडी

६ किसी वस्तु को लौटाने के लिये किसी से कहना ।

उ०—म्हें तो मागने पाणी ई नी पीयो । सेठा कने ई दीयोडो  
मागण न आई ह ।—फुलवाडी

७ लौटाने के लिये किसी पर कुछ वाकी रहना ।

ज्यू—वो म्हारा मे पचा रुपया मांगे है ।

८ विक्री योग्य वस्तु के दाम बताना, मूल्य कहना, कीमत मागना ।

उ०—म्हें थनें पूछ्यो के बाबा गाडी रो काई मोल करै । तो थू  
पाच रिपिया मागिया अर म्हें थनें पाच सू कम दिया वू तो बता ।

—फुलवाडी

९ प्रस्थान या किसी कार्य को करने लिये सहमति, अनुमति या  
इजाजत लेना, पूछना ।

उ०—१ पहतउ किलास तणइ जाइ परवत, माता कन्हा आगिया  
माग ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जद साह आपरी व्हू तीरे सीख मागया गयो । ने कही देख  
तू मला घर री छोरु है । ने हू दखण जाउ छू । जणी थो तू पाग  
री सरम राखजै ।—बधी दुहारी री वात

१० किसी गल्ती या भूल के लिये अफसोस जाहिर करना, खेद  
प्रगट करना, क्षमा याचना करना ।

उ०—वेटी । माफी मागण वास्ते थारा इण विध हाथ उकळै तो  
पछै उण रात थारे हाथा रें काई वळियो हो ।—फुलवाडी

११ लडके या लडकी के सम्बन्ध के लिये प्रस्ताव करना, सम्बन्ध  
करने के लिये कहना ।

मागणहार, हारो (हारी), मागणियो—वि० ।

मांगिओडो, मागियोडो, माग्योडो—भू० का० कु० ।

मागीजणो, मागीजवो—कर्म वा० ।

मगणो, मगवो, मागणो, मागवो—रू० भे० ।

मागत-स० स्त्री० [राज० मागणी] १ हिस्सा, अंश, हक ।

उ०—१ पिडतजी पुत्र रो मार्ग सो मला आया । पण ओ जाट  
काई मागत मार्ग ? थू भेलो थुडियो हो काई ?—फुलवाडी

उ०—२ राजपूत रें पाखती आयने कडकती बोल्यो—किणी रा  
घणी हो तो आपरें घरें व्होला । अठै काई मागत मागो ? घणी  
व्है जको तो सामी जावती करै के चोरथा करं ।—फुलवाडी

२ कर्जा, ऋण ।

उ०—जे वा व्याव पछै मरती तो इण सू दूणा रिपिया खरच व्हैता  
के नी । लाली आपरी मागत मार्ग जको तो चठै वंठी ई वसूल करैला ।  
—फुलवाडी

क्रि० प्र०—मागणी ।

मुहा०—मागत मागणी=हक मागना, कर्जा वसूल करना ।

रू० भे०—मगत ।

मागफूव-स० पु०—माग पर धारण करने का स्त्रियो का एक आभूषण ।

उ०—मागफूल सिरफूल, जडाऊ मडिया । खिण खिण निरखें नाह,  
हिए दुख खडिया ।—बा दा

मागरिया-स० पु० [दे०] भाटी वंश की एक शाखा ।

मागळगीत-स० पु० [स० मागल्यगीत] शुभ अक्षरों या मांगलिक अक्ष-  
रों पर गाया जाने वाला लोक गीत, गीत ।

रू० भे०—मगळगीत ।

मागळिआ—देखो 'मागळिया' (रू भे )

उ०—कहै चुहुआण रा हीज सगा हुआ छी । एहदा तोफादार हुता  
तका कहीज घाट रजपूत तो मांगलिया पण नही, तको राज स्थान  
परणिमा पछै मुहो ही न देखाछिओ ।

—कल्याणसिध नगराजोत बाढेल री बात

मांगलिक, मांगलिक—वि० [स०मगल+इक] १ शुभ माना जाने वाला ।

उ०—अहिवु स्त्री पाँहइ गूहली देवराबु, ऊपरि मोती तणु चुक  
पूराबु, अह वर राजेंद्र आव यिका हुता इस्या मांगलिक वरताबु ।

—व स.

२ शुभ या मगल करने वाला ।

३ शुभ अवसरो पर गाया जाने वाला । (गीत)

स० पु०—गुड ।

रू० भे०—मगलिक, मगळी, मगळीक, मागळी, मागळीक ।

मांगलिया—स० पु०—१ भाटी वश की एक शाखा जो वाद मे मुसल-  
मान हो गई ।

२ गहलोत वश की एक शाखा ।

रू० भे०—मांगलिया, मांगल्या ।

मांगलियावटी—स० स्त्री०—मारवाड राज्यान्तर्गत वह प्रदेश जहा पर  
'मांगलिया' (गहलोत) वश के राजपूतों का आधिपत्य था ।

मांगलियो—स० पु०—१ गहलोत वश की 'मांगलिया' शाखा का व्यक्ति ।  
(बां दा र्यात)

२ भाटी वश की 'मांगलिया' शाखा का व्यक्ति ।

३ देखो 'मगलियो' (रू भे.) (वरदा)

मांगली—स० स्त्री०—१ जल पात्र ।

उ०—मिर पर लेस्या जळ री मांगली । इस विष निरखण जास्यां  
जो । सुहागदार विहलो ।—लो गो

२ देखो 'मगळा' (रू भे )

३ देखो 'मांगलिक' (रू भे )

रू० भे०—मांगल्या ।

मांगलीक—देखो 'मांगलिक' (रू भे )

उ०—महाराय स्त्री कत्याणमलजी जन्म महोच्छव मांगलीक वधा-  
वणा कराया ।—द वि

उ०—२ गुवाह-गुवाह, घर-घर ऊपर लुगाया बघाई रा वधाव  
मांगलीक गावै छै ।—पलक दरियाव री बात

मांगलुरी—स० स्त्री०—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—पच वरण यज, दुरगी यज, मांगलुरी यज, गढ गजी, सवा-  
गजी चुगजी पटणी पटपाद्द, पचवरण छोट ।—व. स

मांगल्य—वि० [स०] मगलकारक, शुभ ।

स० पु०—शुभ, मगल या हर्षप्रद होने की अवस्था या भाव ।

मांगल्या—१ देखो 'मांगलिया' (रू भे )

२ देखो 'मांगली' ।

मांगसर, मांगसुर—देखो 'मिगसर' (रू भे )

उ०—दत्त राजा स्त्री सूरजमिधजी री बाहारैट लाखा नादगुत रोह-  
डीया नु समत १६७२ मांगसुर सुद ७ गाव ३ रं भेळी छै ।

—नैणुमी

मागातागी—स० स्त्री०—१ मांगने की क्रिया ।

उ०—केणा मै तो ठाकर री वाटो चौथो हो, पण रोजीना री  
मांगी तांगी मे के आज फलाणजी रं मिरवा भेजणी, आज ढीक-  
डजी रं अर आज पूछडजी रं, यू करने सगळी वांटो भाषा सू ई  
करडी पडियो ।—कुलवाडी

२ ऋण कर्ज ।

रू० भे०—मागातागी ।

मागातागी—देखो 'मागातागी' ।

मागिण—देखो 'मागण' (रू भे )

उ०—आपे ही जाणावमी, मलो ज होसी वगि । के मागिण दर-  
माविया, के ऊछजिया रगि ।—हा भा

मागिणहार—देखो 'मागणहार' (रू भे )

उ०—साच न मागे मागणी, मागे मागिणहार । हरीया उर इक  
तार घरि, हरि है पूरणहार ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मागियोडो—भू० का० रू०—१ कुछ पाने की आशा से किसी के आगे  
याचना किया हुआ, हाथ फंलाया हुआ, प्रार्थना किया हुआ.

२ इच्छा या आकांक्षा की पूर्ति के लिये निवेदन किया हुआ, कहा  
हुआ. ३ भिक्षा वृत्ति किया हुआ ४ किसी को कोई चीज देने

के लिये कहा हुआ, मांगा हुआ ५ ऋण के रूप में किसी को  
कुछ देने के लिये कहा हुआ, मांग या प्रस्ताव किया हुआ ६ कोई

वस्तु लौटाने के लिए कहा हुआ ७ भुगतान योग्य कुछ वाकी  
रहा हुआ. ८ कीमत मांगा हुआ, मूल्य कहा हुआ ९ प्रस्थान

या किसी कार्य के लिए महमति, अनुमति या स्वीकृति लिया हुआ,  
पूछा हुआ १० अफसोस जाहिर किया हुआ ११ सम्बन्ध या

रिश्ते के लिए प्रस्ताव किया हुआ  
(स्त्री० मांगियोडी)

मागेडी, मागेरणी—देखो 'मगेडी' (रू भे.)

मागी—स० पु०—१ सढके या लडकी के रिश्ते के सम्बन्ध में किया जाने  
वाला प्रस्ताव ।

२ मांगने की क्रिया या भाव ।

३ जलपात्र के ऊपर रखा जाने वाला अतिरिक्त जल-पात्र । (ढूढाढ)

माच—स० स्त्री०—१ आरे के चारो ओर लगने वाला लकड़ी का  
चौखटा । २ ईंटे बनाने के लिए गीली मिट्टी ढोने का एक उपकरण ।

३ रथ या वैलगाडी की मचान ।

४ खाट के बीच बनी हुई झोली ।

माचइ, माचउ—१ देखो 'मच, मचक' (रू भे ) (उ र )

२ देखो 'माचो' (रू भे )

माचकरोत—स० पु०—वह आरा जिसके चारो ओर लकड़ी के हथे  
लगे हो ।

माचणी, माचवी—देखो 'मचणी, मचवी' (रु भे)

उ०—१ तुरगम पाखरघा, सूरु सामह्या, लागि वाजइ, हस्ति माचइ, कदध नाचई ।—व स.

उ०—२ खमा भणि-जोगणि, खाचत-खून, सुरा कर माचत मेह प्रसून ।—मे-म.

माचणहार, हारी (हारी), माचणियो—वि० ।

माचिओडो, माचियोडो, माच्योडो—भू० का० कृ० ।

माचोजणी, माचोजवी—भाव वा० ।

माचियोडो—देखो 'मचियोडो' (रु भे)

(स्त्री० माचियोडो)

माचो—१ देखो 'माचो' (भल्पा, रु भे.) (उ ३)

२ देखो मच' (भल्पा, रु भे)

३ देखो 'मचिका' (रु भे)

माचो—स० पु० [स० मच] चारपाई, खाट ।

उ०—१ नहीं गया माच मुवा, रवि मडल रै राह । जूक मुवा रण मैजिकै, गत पचमी गयाह ।—वां दा

उ०—२ वा हळफळाई माचा सू ऊमी व्ही । उणरा हाय सू दीवो छूट नै हैटे पडग्यो—फुलवाडी

रु० भे०—माचइ, माचउ, माचो ।

माछ—देखो 'मत्स्य' (रु भे)

उ०—पहँ घड कलस दीस प्रगट्ट, धहै किर खेत' सिरा चा थट्ट । नाचँ तिम नट्ट थई जिम नाच, महोदधि मज्ज कूटै सुज माछ ।

—मा वचनिका

माछली, माछली—देखो 'मच्छी' (भल्पा, रु भे)

उ०—पपैया नै मेघ प्यारो, माछली मघ नीर । म्हानै तो गिरधर हि प्यारो, छाँहयो जगत सू सीर ।—मीरा

माछली, माछो—१ देखो 'मत्स्य' (भल्पा., रु भे)

उ०—उलटै जिम इद भरीहर आयै, करिवा भत कथा आकाहि । वहतै जळ धारा वीरमदे, माछा जही चढियो जळ माहि ।

—वीरमदे गोड री गीत

२ देखो 'माछली' (रु भे)

माज—श्रद्धा और भक्ति के साथ किसी को धन देने की क्रिया या भाव ।

देखो 'मध्य' (रु भे)

देखो 'मीज' (रु भे)

माजण—स० स्त्री [सं० मार्जन] १ माजणै, सफाई करने की क्रिया या भाव ।

२ स्नान, मज्जन, परिमार्जन ।

उ०—करू कठी-माजण-रायकूवरी, सु पहिरण लागी सिरणार ।

—महादेव पारवती री वेलि

रु० भे०—माजणउ, माजिण, माजिणउ ।

वि०—सफाई करने वाला, 'माजने' वाला ।

स० पु०—देखो 'मारजन' (रु भे)

माजणउ—देखो 'माजण' (रु भे)

उ०—१ चद्रमा घडी घडी अमृत भरइ, यम पाणी वहइ, सात समुद्र माजणउ करावइ, मातर आरती उत्तारइ ।—व म.

उ०—२ पहिरण वसत आभरण पहिरण । राय कुवार माजणउ करइ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—लागउ तेथ करण माजणउ लाडउ, इद्र सुर कहइ धनउ दिन भाज ।—महादेव पारवती री वेलि

माजणियो, माजणो—वि० [स० मार्जक] १ माजने वाला, साफ करने वाला ।

२ सफाई करने वाला ।

३ स्वागत करने वाला, आदर तत्कार करने वाला ।

रु० भे०—माजिणी ।

माजणी, माजवी—क्रि० सं० [स० मार्जन] १ वर्तन या किसी वस्तु पर घुल या कोई पदार्थ विशेष रंग ड कर उसका मेल छुडाना, साफ करना, उजला व स्वच्छ करना ।

उ०—१ अमि धावक आविया, मस्र माजिया सतावी । साणा चढिया सुक फूल भडिया हद फावी ।—मे. म.

उ०—२ वो खोला टाक नै ठूकी जकी सगळी हवैली रो फूस-वाईदो काढ दियो । बरतन-वासन सगळा मांज न्हाकिया ।

—फुलवाडी

उ०—३ नाक रै हाथ लगाय नै कह्यो-आ तो झारा री नळकी अर भो माजियोडो झारा री पीदो पळ पळाट करै ।—फुलवाडी

२ स्नान करना, नहाना ।

३ सफाई करना, झाडना, पोछना, पोछकर साफ करना ।

उ०—१ सावळ जमनै वंढ्यो जित्तै जडाव मासी सगळी खीर सबो-डली । तवरा नै आंगळिया सू पूरो चाटनै माज्यो ।—फुलवाडी

उ०—२ कमळ पहिया पछै मारि अरी म्यान कीघी । माहिळ पळे तळवारि माजै ।—कुवर नरपाळ देवळ लोहियाणा री गीत

४ घोडा कट आदि पशुओं के शरीर की धूली आदि साफ करना, दूर करना ।

उ०—कीषा असि चाकरा, तुरत साकुरां तपारी । खुररा मानी खेह, घजा तुररा सिरधारी ।—मे म

५ अभ्यास करना । ६ रगडना ।

७ मिटाना, दूर करना । ८ नष्ट करना ।

माजण हार, हारी (हारी), माजणियो—वि० ।

माजियोडो, माजियोडो, माज्योडो—भू० का० कृ० ।

माजोजणी, माजोजवी—कर्म वा० ।

मजणी, माजणी, माजवी, माजणी, माजवी—रु० भे० ।

माजरी—देखो 'मांजरी' (रु भे)

उ०—गध हस्ति तण्ड कुण माथइ मोतो उकिरइ, नागराज नइ  
माथइ चूडामणि कवरण करइ, मयूर माथइ माजरि कवरण करई ।  
—व म

२ देखो 'मजरी' (रू भे )

उ०—मारग मइ आवठ मित्यउ म्हाकी सहियर माजरि रहो  
महवाय हे ।—स कु.

माजरियो—देखो 'माजरी' (घल्पा, रू भे )

उ०—मो मे फूल सैंस मे काणो । सब से ऊचो एचाताणो । एचा-  
ताणो करघो विचार । माजरियो सब को मिरदार ।—अज्ञात

माजरी—म० म्त्री०—१ विल्ली जैमी या भूरी आव । २ किलगी ।

रू० भे०—माजरि, माजरि

३ देखो 'मजरी' (रू भे )

उ०—कोयल करे टहकडा म्हाकी सहियर, सुदर फल फूल पान हे ।  
राजा एक माजरी ग्रही म्हाकी सहियर, तिम मत्री परधान हे ।  
—म कु

४ देखो 'माजरी' (पु०)

मांजरी—वि० [स० मांजर] (स्त्री० मांजरी) १ विल्ली के समान आंखो  
वाला । (वरदा)

उ०—मन मैला चख माजरी, भाळें जे चख भांज । गोला भवगुण  
नू ग्रहे, गुण भलपण रा गांज ।—वा दा

२ भूरी आंखो वाला ।

स० पु०—१ भूरी अथवा विल्ली के समान आंखो वाला व्यक्ति ।  
२ बिलाव ।

३ छोटी वस्ती या गाव ।

उ०—दस जाजीवाळ ते मे २ भूनी मांजरं छें ।—नैगुसी

घल्पा०—मांजरियो ।

४ देखो 'माजरी' (रू भे )

मांजा—स० पु० (व० व०) गाढी के अग्र भाग मे लगी हुई (दो) लक-  
डिया विशेष ।

मांजाणो, माजावो—देखो 'मजाणो, मजावो' (रू भे )

माजाणहार, हारो (हारी), मांजाणियो—वि० ।

मांजायोडो—भू० का० क० ।

माजाईजणो, माजाईजवो—कर्म वा० ।

मांजायो—देखो 'माजायो' ।

(स्त्री० माजाई, माजायो)

माजायोडो—देखो 'मजायोडो' (रू. भे )

(स्त्री० माजायोडो)

माजिण, माजिणउ—स० पु० [स० मजन] स्नान ।

उ०—साविण ऊगट माजिणउ खिजमति करइ अनत । मारु-तन  
मडप रच्यउ, मिनण सुहावा कत ।—ढो मा.

मांजिणो—देखो 'माजणो' (रू भे )

माजिणो, मांजियो—देखो 'मांजणो, मांजवो' (रू भे )

उ०—सखी भणइ सामिणि हिब मुणउ एह दोस नवि कुणइ  
दैविहि कीघा छइ जे काम तेह मांजिवा घरइ गुण हांम ।

—हीगणद सूरि

माजिणहार, हारो (हारी), माजिणियो—वि० ।

माजिओडो, मांजियोडो, मांज्योडो—भू० वा० क० ।

मांजीजणो, मांजीजवो—रम वा० ।

मांजियोडो—भू० वा० क०—१ घूल आदि मे रगट कर माफ किया  
हुआ, उजला किया हुआ, स्वच्छ ।

२ स्नान किया हुआ ।

३ झाड़ा हुआ, पोछा हुआ, पोछ कर माफ किया हुआ ।

४ अश्याम किया हुआ । ५ रगड़ा हुआ ।

६ मिटाया हुआ, दूर किया हुआ । ७ नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री० मांजियोडी)

माजिस्टो—देखो 'मजीठो' (रू भे )

उ०—इसो दाल परोमी मद्यस्तापितु परमास्रत ध्रितु, सद्य ताविउ,  
घाड नाभिउ, माजिस्टा वरणण, भव धारइ करणण, सरहरी, धार,  
प्रीणइ जिमणहार, मोभाग्य अजेय, नामापटु पेउ, साधान् अग्रत  
एव विध घत ।—व स.

मांजी—देखो 'मांझी' (रू भे )

उ०—भोल गुहो वन मिले भाव सू, [परम भगत पोरम भरपूर ।

मोडगनागो आप दिग माजी जिणु नू कही हकीगत जानी ।—र रू

२ देखो 'माजी' (रू भे.)

मांजूफळ—देखो 'माजूफळ' (रू भे )

माजोट—म० पु०—बेल गाढ़ी का एक उपकरण ।

मांजी—स० पु०—१ ताने क मध्य का भाग ।

२ खेत का वह टुकड़ा जो वचत होने पर वाद मे जोता जाता है ।

३ हल चलाते समय हल की दो रेखाओं के बीच की छूटी हुई भूमि ।

४ विभिन्न प्रकार के पदार्थों के लेपन से मजबूत की हुई पतंग  
की डोर ।

५ देखो 'मांहुजो' (रू भे )

(स्त्री० मांजी)

उ०—सायलडो मपीठी पींढी पातली, मांजी माडेचो भूमल हाले  
नी रं आलीजं रं देश ।—लो गो

रू० भे०—मांझी ।

मांझ—देखो 'मध्य' (रू भे )

उ०—१ आखें सी जागां देख अऊर, नहीं जिण मांझ तुहाळो  
नूर ।—ह र

२ बीचण मत चौबीस होय जिण रोळा आखत । भल कवि  
जोडग छद मांझ, राघो जस भाखत ।—र ज प्र

उ०—३ राय पसेली हो ग्याता भगवती, जीवामि गम नई मांझ ।

—स कु.

मांझर, मांझर—कि० वि०—१ बीच में, मध्य में ।

उ०—१ तै गज गुडियो स्त्री कळस, विच दळ करू वखाण । गिर

कुळ रूप सपख गिर, जळ निचि मांझर जाण ।—वा दा

उ०—२ मारग 'वीरम' हर कुळ मडण, मुडिया तो सू वरम मण ।  
मुडियां तणी हमै जळ मांझर, परियां वह जाणै प्रसण ।

—गु रू व

२ अन्दर, में, भीतर ।

उ०—१ गाजै ग्रह मांझर वंठी गुजळ, पुजारा पच चढावै पुज ।

—ह र

उ०—२ वणि ससिवेम रमे मांझर वन । ते वळहवी वेल सोग्रन  
तन ।—सू प्र

उ०—३ भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै । भीण वदल मांझर  
रवि भळकै ।—सू प्र

उ०—४ दुजजळ मांझर सापडै, अरुण उदै री वार । गावै कै  
दातार गुण, कै गावै किरतार ।—वा दा

३ मध्य बीच, अर्द्ध ।

उ०—हलकार पुतार जुवाण वीरा हक, मारि अगार धुखै सरिसा ।  
मच घोर अघार गिरा सिर मांझर, आतस काळ अफाळ इसा ।

—मा वचनिका

रु० भे०—मांझरि, मांझरी, मांझिम, मांझिल, मांझळ, मांझलि,  
मांझली, मांझिम, मांझिळ ।

मांझरनिस, मांझररात—स० म्त्री० [स० मध्य निशा, मध्य रात्रि] मध्य  
रात्रि, अर्द्ध रात्रि ।

उ०—उडी कुरजा ढळती मांझर रात । दिनढी उगायो मारुजी रे  
देस में जी म्हारा राज ।—लो गी

रु० भे०—मांझररात, मांझिररात ।

मांझरि, मांझरी—देखो 'मांझर' (रू भे )

उ०—१ सयदाण कमघ सकाज मिळ, थाट सकि महाराज । अच  
खास मांझरि घाय, अमपत्ति लीय उठाय ।—सू प्र

उ०—२ मावडिया मन मांझरी सो गाढा भर मीत । की उचो  
माथी, करै, पडिया रहै पलीत ।—वा दा

मांझरन—स० पु०—रघ, स्यदन । (डि ना मा )

मांझि—१ देखो 'मांझी' (रू भे )

२ देखो 'मध्य' (रू भे )

उ०—१ जिण मांझि लिखो उमराव जेम । तिण सुणै खिजै सुर-  
ताण तेम ।—सू प्र

उ०—२ पत राखि पांडवा, अव कर मांझि उपाये । गजपत पत  
राहवै, अनत खगपत चढ आए ।—जगी खिडियो

मांझिम—देखो 'मांझर' (रू भे )

उ०—मांझि समदा वीट घर, जळसू जामोपत्त । किणही अवगुण  
कूझडी, कुरळी मांझिम रत्त ।—ढो मा.

मांझिमरत्त, मांझिमरात—देखो 'मांझररात' ।

उ०—मांझि समदा वीट घर, जळसू जामो पत्त । किण ही अव-  
गुण कूझडी, कुरळी मांझिमरत्त ।—ढो मा

मांझियाण—देखो 'मांझी' (मह, रू भे )

मांझियामांझी—स० पु०—सरदारो का सरदार, बडा सरदार ।

मांझिळ—देखो 'मांझर' (रू भे )

उ०—जग मांझिळ यारी जिते, पाणी गग प्रवीत । अमरां मुख  
पाणी इते गावै सह ऐ गीत ।—वा दा

मांझी—स० पु० [स० मध्य] १ प्रधान, नेता, मुखिया, अगुवा, नायक ।

उ०—१ मांझी मोह मराट, 'पातल' राण प्रवाड मल्ल । दुजडा  
किय द्रहवाट, दळ मैगळ दाणव तणा ।—सूरायची टापरिया

उ०—२ मांझी मोगर थटा मोडो, घातै लखा दळा विच घोडो ।

देसा देसा ऊपरें दोडो, चडियो कळि चालण चीतोडो ।—गु रू व

उ०—३ मांझी नोहत्या रूप होफरा किला मे मारै । मावडी  
पुकारै बीवी अल्ला नू मलाम ।—मकरदान मामौर

उ०—४ पडियो मुरझाय नेम डळ ऊपर, सकत राण सुत सांझी ।

थरकै भाल वलचरा थाणा, मुख कुमलाणा मांझी ।—रू

२ वलवान वीर, योद्धा ।

उ०—घाड भाजै घडा खाग आह्यै घणो । मेर मांझी 'जसो' हेक  
रिण मालहणो ।—हा का

३ मुख्य, खाम ।

उ०—मांझी मेर अभाग मड, मारु अमली-भाण । गिळण गढा  
भूखाळुघो, घो वासै जमराण ।—गु रू व

४ स्वामी, अधिष्ठाता ।

उ०—आया साह अलाबदी, विड कटकासू वीर । मांझी रिणथमर  
मुझो, हठ निरवाह हमीर ।—वा दा

५ मेणा जाति के व्यक्तियों की एक उपाधि । (सम्मान)

६ नाविक, मल्लाह, खेवट ।

रु० भे०—माजी, माजी, मांझि, मांझि, मांझी ।

अल्पा०—माजियो, मांझियो, मांझी ।

मह०—मांझियाण ।

मांझीपणी, मांझीपो—स० पु०—१ 'मांझी' होने की अवस्था या भाव ।

२ 'मांझी' होने पर मिलने वाला अश या हिंसा ।

रु० भे०—मांझीपी ।

मांझू—१ देखो 'मझ' (रू भे )

२ देखो 'मांझी' (रू भे )

मांझी—स० पु०—१ सुनहरी या रूपहरी जरी का एक वस्त्र जो मेवाड  
के उन सरदारों की पगडियों पर बाधा जाता था जिनको महाराणा  
की इजाजत होती थी ।

उ०—जाहर छडी जळेव, छाप कागळ वड छापण । मांझी पाघ  
मझार, थरु वीडो जस थापण ।—वीर विनोद



रु० भे०—माफ़ ।

२ देखो 'माजी' (रु भे)

उ०—हालीडे री गवरादे जावे रे बलाय । राय हालीडे रा बाया  
माझे मोती नीपजै ।—लो गो

मांठ—देखो मांठ' (रु भे)

उ०—१ शोण भू मे खळाकं वसुवा मांठ फूटा मा-रु, उठे सूरग  
गंदता विलम्भ केक आण ।—जमी आढो

उ०—२ दूव दही की कमागी फोरी (मयनिया फोरी) मांठ फोगवो  
गह छीको ।—मीरां

मांठो—म० पु० (स्त्री० मांठण) १ पति, स्वाविद, भर्तार, कत ।

उ०—१ तरै उण कह्यो—आज म्हारे माटी घरे आयो, तिण ह  
आज मोडैरी आई, तरै जिंदे कह्यो—तानू माटी रो अतरौ प्यार  
छै तो तू घरे जाय, थारा पेम थारा माटी मू कर ।—नैणसी

उ०—२ तठे ठग री बेटी नु पिण दया आई । तद ईयै रजपूत नू  
माचै सु छोडीयो घर कह्यो—आगली तो कीबी सो मोनू माफ । हिने  
थे म्हारा माटी अर ह थारी बाहर । तठे ईयां वळे भोग कर बोल  
चाल नै सुई रह्या ।—बूढी ठगराजा री बात

उ०—३ माटी मुकी वडर, सुवया वडरै पणि माटी । बेटे मुवया  
बाप, चतुर देता जे चाटी ।—म कु

२ मालिक, स्वामी ।

३ पुरुष, मर्द, मनुष्य ।

उ०—१ तरै सोभन पाछी आय भागरी हेठे उभी रही । आगै देखै  
तो माटी १ ऊभो छै । तरै इण बुलायो, कस्यो—तू कुण छै ? तरै  
इण कह्यो—ह बावरो हुल ठू ।—नैणसी

उ०—२ ताहरा भी भोकाई बोलियो—थे इण माटी सु ठगरियो  
नहीं ।—कावळो जोईयो ने तोडी खरळ री बात

उ०—३ तिणि अचमर नाटक तिहा राजा, आगला पडड राति  
रे । मिली खलक लोगाई, वयरी माटी बहुभांति रे ।—स कु

४ दोस्त, मित्र, साथी ।

उ०—१ लोग हमता दबिया तो बी लोगा नै कह्यो—माटियां,  
अब तो आप सगळा नै म्हारी बात री साच आयग्यो ।—फुलवाडो

उ०—२ बाकी सगळा मिरदार बात सुणता ईं हांमळ भरी हां,  
हां, आ बात तो माटी पूरी ठेन बद करी है ।—फुलवाडो

५ वीर, बलवान, जवरदस्त, जोरदार ।

उ०—मुडीयो तो हिव जासी माम, माटी छै तो करि सग्राम । कहै  
आलिम क्या करे खुदाय, तें तो हम सु खेदयो दाय ।—प. च. घो.

रु० भे०—माटी ।

अल्पा०—माटीडो, माटीलो ।

मांठोडो—देखो 'मांठो' (अल्पा, रु भे)

मांठोपण, मांठोपणी—स० पु० [स० मठ + रा० प्र० पणी] १ क्षत्रित्व ।

उ०—१ वीर बडो गोपालसिंह गोट वम रै मांठि मांठोपण री  
आक यह, अहटो दीरी नाहि ।—गोट गोपालदास री वाग्ता

उ०—२ मांठोपण घग्गे मांठि, विकसीया वीर तम्रि । माम नू  
निरोहा सार, जु आंग तरै गुहार ।—गु रु व.

२ मर्दानगी, पुरुषत्व ।

उ०—मांठोपणो मोवादार सतारानाय नू आग्यै । हिंदुगं मे मांठो-  
पणो 'राजा'न रो हेक ।—महाराजा वहादरमिष री गीत

३ वहादुरी, वीरता ।

उ०—१ ताहगं मूळवं नू खबर हुई, जु रजपूत राजा मी वहा—  
करां कांमू ? मूळवी मांठोपण न गयो घोटे रै बळ गयो ।

—मूळवं नागावत री बात

उ०—२ जीगू मरगो री उर नहीं मो मांठोपणे मे बडी होवे छै ।

—नी प्र

४ माहम ।

उ०—१ आद इता भड आठमो, गद आया गहवत । माप ७ बी  
मांठोपण, उर ज्या ताप न अत ।—रा रु

उ०—२ मो मरगो रै समय पछतावे गू घानू नाने धो अर कहै  
धो कि इतरी लडाइया मे मांठोपणो कियो कितरा बाव सहिया  
पण हमार तो माथरै ऊपर तूही रांड दाई मरू ठू ।—नी प्र

५ स्वामीत्व, स्वामीपन मानिताना ।

उ०—प्रसध नाम इधकार जगजारे मांठोपणो । अतुळ दानार कीरत  
उजाळा ।—र रु

मांठोली—देखो 'मांठो' (अल्पा, रु भे)

उ०—हेजमां हीलोळ इता तेंगां उ मांठोली हलै, साथ वीर चनै  
चडी चाटीली समद । वेद बकी जगा मंळे वारगां मांठोली बौद ।  
कैवांणा कोमकी वागो आंठोनी कमद ।—हुक्मीचद सिडियो

मांठ—१ देखो 'मांठ' (रु भे)

२ देखो 'मांठ' (रु भे)

मांठफळी—देखो 'मांठफळी' (रु भे)

मांठोडो—स० स्त्री०—मांठ की बडी ।

मांठ—स० स्त्री० [म० मण्ड] १ कपडो मे लगाने की कलक जो प्राय  
मेदे की बनती है । (उ र)

२ रचना, बनावट, सृष्टि ।

उ०—१ तरै पजु अरज की साहिव री बडी मांठ छै, किण ही  
बात री परमेस्वर रे घरे कमी न छै ।—नैणसी

उ०—२ निरगुण मेती सरगुण बणिया, तीनू देव थपाया ।  
सावित्री गायत्री लछमी पारवती, यू मिल मांठ मढाया ।

—हरिरामजी महाराज

३ चैमव, विस्तार ।

उ०—मामासा री मांठ, कर दोऊ ताळी करै । महि उपर रिण  
मांठ, एक वजावे ऊकडो ।—सरवहिया केहवाट री बात



४ पानी पीने या भरने के लिये किसी कूप या तालाब पर जाने या जाकर एकत्र होने की क्रिया या भाव ।

उ०—सहर माँहै भरहट २, एक तो पावटी अलुट पाणी । सारा सहर री मांड पावटा ऊपर ।—नैणसी

५ कन्या पक्ष । (विवाह)

उ०—निमत्रीहार अमार निसासहि, द्विहगसि डोला रवद दुवाड । विसकन्या देख वजवाया, मुणियउ माड अनड मेवाड ।—दूदी

ज्यू—मांड री आदमी ।

६ दवाव ।

उ०—मूए न लाभइ किरि खीर खाड । किसिउ मूआ हुइ बलवड माड ।—सालिसूरि

७ एक रागिनी विशेष ।

८ जैमलमेर राज्य का वह स्थान जहा सबसे पहले 'मांड' राग गाई जाती थी ।

रू० भे०—मड, माडह, माडी, माड, माड, माड ।

९ देखो 'मोड' (रू भे)

उ०—तिण डजर घणी ही कीयो पिण वेगम पातसाह री मां छेह्हा मांड बांध जात कीया छै ।—नैणसी

१० देखो 'माडी' (मह, रू भे)

मांडण—स० स्त्री० [स० मण्ड, मण्डनिक] १ रचने या बनाने की क्रिया या भाव ।

२ बनाव, श्रृ गार, सजावट ।

उ०—१ एक वार मोरी वीनतही सुणि सुंदर लाडण रे । लाडण नइ मांडण नारिनइ नाहलु ए ।—नळदवदती रास

उ०—२ म्हारा नवल बना सिरदार मुखडा को मांडण नथ ल्या-ज्यो जी राज ।—लो गी

शोभा ।

उ०—राणा साड्या मोकल्या जी, पाछा ल्यावी मोड । कुल की मांडण इस्तरी जी, मुरइ चली रांठोड ।—मोरा

रू० भे०—मांडणी ।

मांडण—देखो 'मांडणी' (रू भे) (उ र)

मांडणी—स० स्त्री० [स० मण्डनिक] १ व्यवस्था, प्रवन्व ।

उ०—आगळती हिमाचळ आया, जान आय अंतरिया तठइ । माडिया जाण अचळ मांडणी, तीन भुवन तिण वार तठइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'मांडण' (रू भे)

उ०—१ आणइ अनुवर आकुळा चाकुळा चाउरि पाट । माडइ मडपि मांडणी, आडणी ऊपरि आट ।—जयमेखर सूरि

उ०—२ तुरक पायक सायक सु सरिया, सुहृद चरम ति फोडइ सुसरां । गज गजइ रथ स्यू रथ ना घणी, तुरग सिउ तुरगे रथ मांडणी ।—सालिसूरि

उ०—३ रुखमणि अबिका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी वर कामणी । देवीहइ सोहइ सयळ सिणमार, माय माया तणी मांडणी ।

—रुखमणि मगळ

मांडणी—सं० पु० [स० मण्डन] १ शुभ एव मागलिक अवसरो पर स्थित्यो द्वारा, घर की दीवारो अथवा आगण मे बनाया जाने वाला चित्र ।

उ०—१ कणा तो आखी गवाडी नीप-चोपनं घोळी, कणा सगळे चाद, सूरज, पगल्या, सारका अर मांडणा माड्या उणनं खुद ई इण बात री जाच कोनी ।—फुलवाडी

उ०—२ जीहो यादव नारी सावटी लाला, आवें गावे गीत । जीहो-चोक पुरावें मांडणा लाला, साचविये सुत्र रीत ।—जयवाणी

उ०—३ कस्तुरि केसर कुकमा, करि रोल भरीय कचोळ । मन रग माडें मांडणा, अधिक भाव इलोळ ।—घ व ग्र.

२ चिन्ह, निशान ।

उ०—लाठें हिरण रा लोम मे सिध हार्थ आयोडा खिरगोसिया नं ई गमायो । लचकांणी पढनं पूछ हिलावती वो उठा सू होळें होळें दुरग्यो । लालच रें पगलिया रा सेवट ऐ इज मांडणा व्हे ।

—फुलवाडी

३ चित्र ।

उ०—पण वेटी । ऐ वगत रा मांडणा तो वगत मार्य ई उघडें ।

—फुलवाडी

४ श्रृ गार, सजावट ।

उ०—चांद विना किणारी सगती जको रात रा अघारा ने उजाळें, सिणगारे, अर वादळा विना किणारी ठरको जको इत्ती लांठी घरती री तिरस बुझावें, उणारी काळजी ठारें । सूखी अर पागळी नदिया नं पगा हलावें । सूखा मे हरियाळी उगावें । फूला रा मांडणा माडें ।

—फुलवाडी

५ रगढग ।

उ०—नाई मन मे सोचण लागो के इण प्रीत रा सरू पोत ई ऐडा मांडणा उघडिया तो पछें अत मे राम जाणें कांई व्हेला ।

—फुलवाडी

६ नतीजा, परिणाम ।

उ०—वा ! आ वात तो आपनं उण दिन सोचणी ही के राजा ने वेटी दिया ऐ मांडणा तो एक दिन उघडला ई ।—फुलवाडी

रू० भे०—मांडणउ ।

मांडणी, मांडवी—क्रि० सं० [स० मण्डनम्] १ लिखना, लिखकर देना ।

उ०—१ दाब धरोहड माड खत, लटपट करके लाय । बडी बडाई वाणिआ, घन लेणी घी जाय ।—वा दा.

उ०—२ पण वेमाता री मांडियोडी ऐक लाठी खोड—के राणी री पेट नी मडियो ।—फुलवाडी

उ०—३ परगन मेडता री वमती समत १७२० रा काती माहै मु०  
नैणसी मांडी, तिण री विगत ।—नैणसी

उ०—४ तिकै जंतारण री फिरसत माहै अगै न छै नै हिमार  
मेग रा गांव मांडीया तरै मेरा रा ऐ गाव जंतारण दाखळ मांडीया  
छै ।—नैणसी

उ०—५ साह ताम दिम 'सूर' मांडि दीयो फुरमाणी । डम  
लिवियो घप आप, दुद मेटी दवियाणी ।—सू प्र

२ वर्णन करना, विस्तार से कहना ।

उ०—१ अठे आयां सारी वाता माडनै वीरमदेजी नु वही । वीर-  
मदेजी वात मुण राजी हुवा ।—नैणसी

उ०—२ विरतत मह कुमरे कही जिम थयी घुर थी मांडि । सा  
पुरुष भूट वहे नही नेह न नाखे छाडि ।—वि कु

उ०—३ पछे राजववर माडनै सगळी वात वताई । वेदतगज तो  
काळा भाटा री मूत रै उनमान उण री वाता सुगती रह्यो ।

—फुलवाडी

उ०—४ फुलाणी राजा री वेटी छु । इयै भात निमरीयो छु ।  
जेमा तरह नीसरीया सो वात माड हर कही ।—चौवोली

३ प्रारम्भ करना, शुरू करना ।

उ०—१ जंतमाल जैमलमेर रावळ मालदे री वेटी परणीयो हुतो ।  
वपूत सो ठाकुर हुतो । उण रै को परधान थो तिण महाजना नु  
घणो दुव देणो मांडीयो, घर लूटणा मांडिया ।—नैणसी

उ०—२ कहुवा री गुगाया भेली वैठ वधावा रा नीत गावण  
माटिया ।—फुलवाडी

उ०—३ नरसिंघ नान्ही छै नरसिंघ रा जतन करी । फोज लारै  
मता जावो । डम तयारी मांडी छै ।—राजा नरसिंघ री वात  
४ रचना करना, निर्माण करना, निमित्त करना, बनाना ।

उ०—१ आणइ अनुवर आकुळा चाकुळा चाउरि पाट । माडई  
महपि मांडणी माडणी ऊपरि आट ।—जयमेखर सूरि

उ०—२ दिन ऊगो, ताहरां रिणमलजो मीसोदियां रा माथा वाडि  
चवरी रचाय तिमारी चौक्यां कीवी । तिथा ऊपर वरछा री वेह  
मांडी ।—नैणसी

उ०—३ अधकार हवइ नइ सूर आयमइ, कळा इसी वरतै कैलास ।  
मांडियउ मृहल सातमइ ब्रह्मइ, रतना तणो देखिजै रास ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ अवे सोचू के इण प्रण मे की नी घरियो । खेत में भूपी  
माड धारै माथे भेली रै जावू तो पछे तीजो भगवान ई आय जावै  
तो उण री गरज कोनी ।—फुलवाडी

उ०—५ पिटत चवरी मांडी । तेल चढती वगत डीकरी रै ठळाक  
ठळाक आमू दळकण लाग्ना ।—फुलवाडी

५ स्थिर करना, स्थापित करना, ठिकाना ।

उ०—१ तरै सोभन कही—राजा री राज तोनु दीयो । माहारं  
नावे सहर री नाव सोभन देई । नै म्हागे थापना फलाणी ठोड  
माडजो ।—नैणसी

उ०—२ एकीकइ रोम ऊपरइ ईसर, माडिया कोट अनत ब्रह्मइ ।  
सायर मात दिपइ परिदक्षिणा, डवर चा अवर घजडइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ सजाना सुमज्जित करना, शोभित करना ।

उ०—३ घूघरमाळ चिहू दिसि घमकइ, घणू स थट्ट जीवता घणउ ।  
मुखमल रउ गउखउ नेर मांडियउ । जडियउ जाण जडाव तणउ ।

—महादेव पारवती री वेलि

७ चित्रित करना, चित्रांकित करना ।

उ०—१ जघस्थळ युगल केळिग्रभ जिसडा, गति जीवता जिसा गज  
खड । चितमाळी रचतइ चीतागइ, कुतण तणा माडिया कुभ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भूवा में हरियाळी उगावै । फूना रा मांडणा मांडे ।

—फुलवाडी

उ०—३ कस्तुरि केमर कुकमा, करि रोळ भरीय कचोळ । मन  
रग मांडे माडणा, अधिके भाव इलोळ ।—घ व प्र

उ०—४ वा भट नीप्योडा आगणा माथे माडणा मांड दिया ।

—फुलवाडी

८ शृंगार करना ।

उ०—एक मांड्यो चूड्यो आवो विनायक मरव सुहागण के सीस  
ज्यू ।—लो गो

९ चिह्नित करना, निशान बनाना, प्रकित करना ।

उ०—१ माडिया सरोज भयग चइ माथइ हरणाखी चित लावन  
हरि । अतिरगता विराजइ ऊपर, पगथळियां मीमलइ परि ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ गैणाग ऊद्याह भूल वारणा रा वार्ध गूधी । महामाण  
रत्ना खाग खुराटा मांडीस ।—करणीदान कावयो  
१० रोपना, दृढ करना ।

उ०—१ वारै आवरै रिण रोपण वका, वध सुग्रीव वकारे । उठे  
सुण धमजघड अधायो, धीग कोध उर धारै । हू हिव आवियो  
पग माड हकारे ।—र रु

उ०—२ चांपा-चणी मांडियो चावै, 'वीठळ' खळा सरिम खण  
वाहि । अडियो 'जसे' मेल्हियो ऊभो, पडियो रणि पायो पतिसाहि ।

—विठळदास चापावत री गीत

११ ठानना, निश्चय करना ।

उ०—१ जठे सलख रा सत्कार री अरथ पहली अजमेर सू केमास  
भेजियो जिण नागोर आय प्रामार सू कहियो केवल ही मरण  
मांडिया वसुधा'र वडाई दोही व्यर्थ जायसी ।—व भा.

उ०—२ सखी अमीणी साहिबो, जमसू मांडे जग । ओळें अग न राखही, रण रसिया दे रग ।—बा. दा

उ०—३ हु भव-भव भमती हारघो, बहु दिवसे तुम्ह सम्भारघो रे । तुम्ह सेवा करिवी मांडी ते किम जायइ कही छाडी रे ।—वि. कु.

उ०—४ घणा जसवत ग जोघ निहसे घणा । मांडिसी सही मति-वाळा वेढीमणा ।—हा. भा

उ०—५ मन उद्यान गुफा तरइ विचड, धूणी घाती सबळ घडइ । मिलिया प्रभु भगडउ मांडण री, घणी स वाता जीव घडइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

१२ कुछ करना ।

उ०—१ रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठू पहर अनत उल्ला-विस । मांडे पूजा तूम्ह महणमथ, मकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ ।

—ह. र

उ०—२ उपाय मांड्यउ राय एहवा, मन धीरज ना भेटणा । पुढरीक कामातुर थयउ घणु भल भला करइ भेटणा ।—स. कु. १३ फैलाना, पसारना (लेने के लिये) ।

उ०—१ ताहरा स्त्री भगवान फुरमायो—ऐ हाथ अयाची छे । म्हे किन्ही कन्है हाथ मांड्यो नही, सारा नै ही देऊ छू, लेण नै हाथ आगो न करू ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ एक ई खारक पतासा वास्ते हाथ नी मांडियो ।

—फुलवाडी

१४ विस्तार करना, फैलाना, छितराना, बिखेरना ।

उ०—घरणीघर सकर देव धियावउ, जोतिप्रकास अलोप जग । मस्तक मुगट प्रकास मांड्यउ, अनत कोट ब्रह्मड लग ।

—महादेव पारवती री वेलि

१५ सृष्टि करना, सृजन करना, रचना ।

उ०—१ दहगुइ कर दीघ प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगा ते कीघ विचार । ईमर तू जगदीस तणउ अम, सहु ब्रह्मे मांड्यउ ससार ।

—महादेव पारवती री वेलि

१६ कुछ उठाने, ग्रहण करने या वहन करने के लिये प्रस्तुत करना, तैयार करना ।

उ०—१ मांडिया उत्तवग जियइ द्रू माथइ नाम जपतां एक निमख । सकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गग तणा भट पख ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तेतीसं सुरा हिंदवा तुरकां, कोय न यू जन मांडे कध । आराधिया विना वह आयो, बीजी महादेव गजबव ।

—चतुरी मोतीसर

उ०—३ तयी गज भार भर 'अभा' राजा तणा, मांडिजे तो भुजा सेर मारू ।—सेरसिध भेडतिया री गीत

१७ जमाना, स्थिर करना ।

उ०—आसण मांड अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ।

—मीरां

१८ व्यापार करने के लिये किसी स्थान पर माल लेकर बैठना, उद्योग करना, व्यापार करना ।

उ०—१ कमाई कमाई मे कंड़ी फरक, एक कसाई री हाट घटे जको मांडलो—घणो ई नफो व्हेला ।—फुलवाडी

उ०—२ अवैं थे अपारा गाव मे ई एक छोटी मोटी हाट मांडली ।

—फुलवाडी

१९ प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना, आयोजन करना ।

उ०—नयण सलूणउ लडसडतु जउ तोरिहि भाविउ । माइ बापि वधवहि मांड वीवाह मनाविउ ।—राजसेखर सूरि

२० व्यक्त करना, जतलाना, दिखाना ।

उ०—मुख ऊपर अति मोठी बोले, मांडे छे बहुली प्रीत रे ।

—जयवाणी

२१ विचारना, सोचना ।

उ०—यु करतां माहे वरस १२ री हई । ताहरा सगाई री अटकळ मांडी ।—देवजी वगहावता री वात

२२ शुरू करना, आरंभ करना ।

उ०—१ इद्र वाई रमत राम अखाडे, मा आसोज चैत मे मांडत, खेल सुकल पखवाडे ।—मे. म

उ०—२ तठे राजा अग्रजोत बोलीयो । पछे हुजी रामत वळे मांडी ।—रीमालू री वारता

२३ घोडे या ऊट पर चारजामा कमना, बांधना ।

उ०—१ तिमडै आयनै वाहरवा कह्यो—राज ! पनोतैर वाहलै एक वडो वाराह आयो छै । यु हीज ऊठियो । घोडे पलाण मांडियो । तयार हुय तुरत भमवार चडियो ।—नैणसी

उ०—२ ताहरां कावळो ऊठ पलाण मांडि नै हालीयो ।

—कावळो जोड्यो नै तीडी खरळ री वात

२४ बायम करना ।

उ०—इतरै गोहिला पिण आलोच कियो—जो राठोड जोरावर । सिराणै आय राजस्थान मांडियो ।—नैणसी

२५ सम्बन्ध जोडना, मिलान करना, सलग्न करना, मेल करना ।

उ०—१ उण खखर सिकोतरी नै तद वो मंत्री री डीकरो पूछ्यो—थू मिघणी अर गिडक रो घर मांड सकै काई ।

—फुलवाडी

२६ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु को किसी के सहारे खडा करना, टिकाना, सटाना, सलग्न करना ।

२७ किसी यन्त्रादि के पुर्जों को व्यवस्थित करके कार्य करने की स्थिति में करना । २८ रखना ।

उ०—मुहरि मांडिजे काजि दिग-विजय मडोवरी । धुर धमळ सिरै परिगह घरीसे —गु. व.

२९ प्रहार के लिये शस्त्र उठाना, सधान करना, उद्यत करना ।

उ०—वीजं केरं बळं तरवार कांवे नूं मांडो तरं देवीजी मोहडे वोलिया—तू विजैराव कवळपूजा मत करं, म्हें तो थारी कवळपूजा मानो । इतरी कही श्रवोला रह्या । तरं इण वळं कांवे नूं तरवार माटो ।—नैणमी

२६ जवरदस्ती करना ।

उ०—१ तुफ साथइ कोई जोर न चालइ, तउ पिण ह्यो २ आडो माटिस्सु जी ।—वि कु

उ०—२ ब्रह्मादिक तणउ हुम्नो दइतां वर, अतिगति मांडो तिया अनत ।—महादेव पारवती री वेलि

३० देखो 'मडणो, मडवो' (रू भे)

उ०—अठछाडे लीव रिदइ रइ आगइ, आणुषउ तंइ आप रे आवास । मिलियइ नाळ उछाह माडिया, पळ एक तिया न छोइह पाम ।—महादेव पारवती री वेलि

माडणहार, हारो (हारी), माडणियो—वि० ।

मांडिओडो, मांडियोडो, मांड्योडो—भू० का० कृ० ।

मांडीजणो, मांडीजवो—कर्म वा० ।

मांडोणो, मांडोघो—रू० भे० ।

मांडविक, माटवीक—स० पु०—मण्डप के ऊपरी कार्य-कर्त्ता ।

उ०—एक मो चौथीस सहस्र कटक, ६० मूपकार, अन्धेपि छेष्टि सारथवाह मांडविक कीटविक ।—व. स

उ०—२ अनेक गणनायक दड नायक राजेस्वर तलवर मांडवीक कीटविक मन्त्रि महामन्त्रि गणुक' ।—व स

माडळ—स० पु०—चरस के मुख पर लगाया जाने वाला लोहे का गोलाकार कडा । (वग्दा)

माडलिक—देखो 'मडलीक' (रू भे)

मांडलीओ—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—टमरीआ पुरीआ अमरीआ सूहवीआ मूगीआ चलउलीआ चारुनीआ पारवानीआ माडलीआ खाजलीआ पिपलीआ '... ।

—व स

मांडळो—स० पु०—घोडों की जातियों में से एक जाति विशेष ।

उ०—अवळपी ऊजळा, मोनेरी सामळा । राहदारां रळा, माडुवां माडळा । पसमी प्रमळा कुमैतां काळळा । हरिया हांगळा, ब्रह्म छोटै वळा ।—मा वचनिका

मांडव—स० पु०—१ मालवे का एक नगर । (ऐतिहासिक)

उ०—महमद माडव री पातस्याह । महिपो पमार पहीरा हूगर सू नीमरियो सु मांडव रं पातमाह रं पूठ आयो । ताहरा रांणो कुंभो मांडव रं पातसाह ऊपर आयो ।—नैणमी

२ देखो 'मडप' (रू भे)

माडवड—देखो 'मडप' (रू भे)

उ०—माड्यउ उत्तग तोर मांडवड, तुरत नवउ घडमिवांनउ आग-एउ, ते तु नीन रतन तणउ, ।—व म.

मांडवगढ—स० पु०—एक नगर का नाम ।

उ०—१ माहि 'मलेम' उदार, करवा मुगुर दोदार । मांडवगढ गुह तेढ्या कुमति ना मद फेड्या ।—कवि गुणविजय

उ०—२ पछे रांणो कुंभो, रिणमलजी मांडवगढ ऊपर आया । ताहरा मोतरलां पण सांकी रावियो ।—नैणमी

उ०—३ भइअच मागल हुर जूनुगढ चांपांनेर माडवगढ अणहल-पर पाटण, राणपर बीमलनगर ।—व स

मांडवडो—१ देखो 'मांडो' (अल्पा., रू भे)

मांडवी—स० स्त्री० [स०] १ विदेहराज जनक के भाई कुण्डवज की पुत्री जो अयोध्यापति दशरथ के पुत्र भरत की स्त्री थी ।

२ वात्सी-मांडवीपुत्र नामक आचार्य की माता ।

रू० भे०—मडवी, मडावी ।

मांडवीओ, मांडवीयो—स० पु०—१ मण्डप का अविपत्ति, मण्डप का व्यवस्थापक ।

उ०—भहारी कोठारी मांडवीया मल्ल हस्ति तुरग रथ पामक टकसाली व्यायाम कारक ।—व स

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रतिवस्त्र वस्त्र आपइ, गुडीआं सण्णीआ कस्तूरीआ प्रतापीआ कुसभीआ मोलीआं मांडवीआं ।—व स

मांडव, मांडवो—देखो 'मांडो' (रू भे)

उ०—१ चपळ तुग तुरगम पाखरिया, गुड गुड्या अमवार ते साच-रिया । अण विराट निजागज पांडवे, सहि गयउ समरांगणि मांडवे ।

—सालि सूरि

उ०—२ जे तो बीमाह री वाट जोती जगह, रुक वळ ग्रानियो गयो राजा । मराडो जान घर आवियो मांडवै, तेल चढी रही अच्युर ताजा ।—नरहरदाम वारहूठ

उ०—३ घणी करै वाखांण सत्र करै अमगळ घमळ, सहोवर साथ अण वरस ओधा । मांडवै परगजै कमद गोपाळमन, जानीया साथ रडमाळ जोधा ।—दुरसी आढी

मांडव्य—स० पु० [स०] १ एक आचार्य, जो कीर्त्तन ऋषि का शिष्य था ।

(पोराणिक)

२ विदेहराज जनक का मित्र एक आचार्य ।

३ एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो धैर्यवान, सत्यनिष्ठ और तपस्वी था । इसको अणिमांडव्य या अणि मांडव्य भी कहा है ।

मांडह—१ देखो 'मांडो' (रू. भे)

उ०—सुभ छवि मांडह नयर सचेळी । सुर व्रत्ति मिलण थयो सांम्हेळी ।—रा रू

२ देखो 'मांड' (रू. भे)

मांडहडो—देखो 'मांडो' (अल्पा., रू. भे)

उ०—कव 'घोपा' लाडीले कीरत, भूपत वार भजाई । अण मांड-हडो आला आला, वळिया ढोल वजाई ।—घोपो आढो

मांडहिय—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे.)

मांडही—देखो 'माडी' (रू भे)

उ०—दलकार हठ दखणाघ रा, दिली फौजा निरबही। किरि  
जाण अपूठा बाहुड, जान बोलाए मांडही।—गु रू व

मांडही—१ देखो 'माडी' (रू भे)

२ देखो 'मडप' (रू भे)

माडा, माडाणी—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

उ०—१ उण हुकम दियो हीज थो ने जेठवै काठिया भेळा हुयनै  
कह्यो—ओ आपणी घरती माहै माडा आय पैठी।—नैणसी

उ०—२ पिण जाडेची कट्टे—ये म्हारी कुस्वारथ करो छो। पिण  
माडा राखी।—नैणसी

उ०—३ सेवट वानै माडाणी वहीर करिया। साथै कोई समाळ  
पाली नी कोई बीदही।—फुलवाडी

माडियो—१ देखो 'माडी' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'मांडी' (अल्पा, रू भे)

माडियोडी—भू० का० कृ०—१ लिख कर दिया हुआ, लिखा हुआ.

२ विस्तार से कहा हुआ, चर्चा किया हुआ ३ प्रारंभ किया हुआ,

शुरू किया हुआ ४ रचना किया हुआ, निर्मित, बनाया हुआ.

५ स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ, टिकाया हुआ

६ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ, शोभित किया हुआ

७ चित्रित या चित्रांकित किया हुआ ८ शृंगार किया हुआ

९ चिन्हित किया हुआ, निशान बनाया हुआ, अंकित किया हुआ

महित किया हुआ १० दृढ किया हुआ, रोपा हुआ ११ ठाना

हुआ, निश्चित किया हुआ १२ कुछ किया हुआ. १३ फैलाया

हुआ, पसारा हुआ (हाथ) १४ विस्तार किया हुआ, फैलाया

हुआ, छितराया हुआ १५ सृष्टि किया हुआ, सृजन किया हुआ,

रचा हुआ १६ कुछ उठाने, ग्रहण करने या वहन करने के लिये

तैयार या प्रस्तुत किया हुआ १७ जमाया हुआ, स्थिर किया

हुआ १८ व्यापार के लिये किसी स्थान पर माल लेकर बैठा

हुआ १९ प्रबन्ध, व्यवस्था या आयोजन किया हुआ २० व्यक्त

किया हुआ, जतलाया हुआ, दिखाया हुआ. २१ विचारा हुआ,

सोचा हुआ २२ जोड़ा हुआ, एकत्र किया हुआ, संगठित किया

हुआ २३ कसा हुआ, बाँधा हुआ (चार जामा) २४ कायम

किया हुआ २५ सम्बन्ध जोड़ा हुआ, मिलान कराया हुआ, सल-

ग्न कराया हुआ. २६ किसी के सहारे खड़ा किया हुआ, सटाय

हुआ, टिकाया हुआ २७ प्रसिद्ध किया हुआ, प्रतिष्ठित किया हुआ

२८ रखा हुआ. २९ कार्य करने की स्थिति में लाया हुआ (यत्र)

३० उठाया हुआ, सघान किया हुआ, उद्यत किया हुआ (शस्त्र)

३१ जबरदस्ती किया हुआ ३२ देखो 'माडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री० माडियोडी)

माडियो—स० पु०—१ विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति।

२ देखो 'मांडी' (अल्पा, रू भे)

रू० भे०—माडियो।

माडी—स० स्त्री० [स० मण्डिका] १ एक प्रकार की रोटी विशेष, वाटी।

उ०—१ परीसण हारि नही आकुली, अखड माडी सउतल्या  
सेवशा प्रभ्रति पक्वान्न परीस्या।—व स.

उ०—२ मूक्या नव नव परिसालणा, मूक्या सरहा घी अतिघणा।  
मूकी माडी मुरकी सेव, मूकी खोर खाड घ्रत सेव।

—हीराणद सूरि

२ दूध की मलाई। (उ. र)

स० पु०—१ विवाह में वधू पक्ष का व्यक्ति।

रू० भे०—माडही, माडी।

४ देखो मांड' (रू भे)

माहूक—स० पु० [स०] भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

माहूकायनि—स० पु० [स०] एक आचार्य जो माडव्य नामक ऋषि का  
शिष्य था। इसके शिष्य का नाम साजीवी पुत्र था।

माहूकायनीपुत्र—स० पु० [स०] एक आचार्य जो माहूकी पुत्र नामक  
ऋषि का पुत्र था।

माहूकि—स० पु० [स०] एक ऋग्वेदी ऋषि।

माहूकीपुत्र—स० पु० [स०] एक आचार्य, जो शांडिलीपुत्र नामक आचार्य  
का पुत्र था।

माहूकेय—स० पु० [स०] १ एक आचार्य समूह, जो ऋग्वेद पाठ की  
एक विशेष शाखा का प्रणयित्ता माना जाता है।

२ एक आचार्य, जो माहूक नामक माहूषि का पुत्र था।

माहूक्य—स० पु०—एक उपनिषद्।

माडे, माडेई—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे.)

उ०—जोगिया २ नू घणो हठ करने ले गया, ऐ कहै म्हे नहीं हाला  
पिण माडे लेगया।—नैणसी

मांडेतियो, मांडेती—स० पु०—विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति। (वरदा)

रू० भे०—मांडेती।

मांडे—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

मांडेती—देखो 'मांडेती' (रू भे)

मांडोणी—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

उ०—गळा मे अटवयोडा सोगरा रा दुकडा नै पांणी रा घूट साथै  
उतार नै माडोणी हसतो-हसतो चौधरी बोलेयो—दुनिया मे सब  
रोगा री दवा है पण वेम री ओखद कठेई कोयनी।—रातवासी

माडोणी, मांडोवो—देखो 'माडणी, माडवो' (रू भे)

उ०—देहरो देवी स्त्री खीवजजी रो, सिखरवध। महर सू कोस  
०॥ दिखण नू कदीम। सहर मांडोयो तरै छै।—नैणसी

मांडी—स० पु० [स० मण्डप] १ विवाह के लिए बनाया हुआ मण्डप।

२ विवाह में वधू का पक्ष।

३ विवाह के अवसर पर कन्या के नातेदारों आदि के ठहरने का स्थान जहाँ विवाह का मठ आदि रचाया जाता है ।

४ शिकार का मचान ।

५ कच्चे दूध की राखी ।

६ देगो 'मटकी' (रू. भे)

उ०—१ खाड माडा, पूरण नाडा, फुरकुरा मांडा, पयवेटीगा माटा, आवासीआ माटा, आद्या माटा, पाटउ चुरिमउ, गुलिउ चुरिमउ, प्रवान पनोली ।—३ म

उ०—२ जलेवी हेमवी, वारु पठमूधी तणा आद्या मांडा नगर नही खाडा ।—३ स

७ देखो 'मूडो' (रू. भे)

रू० भे०—मड, मडवी, मडही, माटवु माडवी, मा'टह, माटहो, माहूडो, माहूडो, माडूवो, माडो ।

अल्पा०—माडवडो, माटहडो, माडियो, मांडवडो, मांडहडो, माटहडो, माडियो ।

मह०—माट ।

वि०—१ मिम, उदास, मलीन ।

उ०—सो नीराठ मांडो आस्या माही आम् पटे, तो नापो दिलागा दिन्ही ।—नापे सापले री वारता

मांड—देखो 'माउ' (रू. भे)

माटवडो—देखो 'माडो' (अल्पा, रू. भे)

माडवी—देखो 'माडो' (रू. भे)

मांडहडो, माटहडो—देखो 'माडो' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ होय रग हवोळीय माटहडो, वळियो जववान हमे वनडो ।

—पा प्र

उ०—२ मिळ देखत ज्ञानिय माटहडो, अमवर मु केमर आवनडो ।

—पा प्र

मांडही—१ देखो 'माडो' (रू. भे)

उ०—पाटण 'मीह' अचळ परगिया, 'मूळा' तणो माडहे माल ।

भाटी तणो कमव घट भोजे, मत्र तणो अरघगो मान ।

—रावमीहा री गीत

माटा, माडांणी—देखो 'माडा माडाणी' (रू. भे)

माडियो—१ देखो 'माडियो' (रू. भे)

२ देखो 'मांडो' (अल्पा, रू. भे)

माडो—देखो 'माडो' (रू. भे)

माडो—देखो 'माडो' (रू. भे)

उ०—१ दूय हयकप कपे मन 'हाजन' उद्रक द्रमक चमक उर ।

मीर घडा कूमारी मांडे, अणपरणी लमीयो असुर ।—दूधो

उ०—२ वात मानसी लपे बांडा, नीत बिगाडी निलजां नादां ।

मिलगी जोडो जाना मांडा, देह कखो जू मूणियो डांडा ।—ऊ का.

माण—त० रवी०—१ गराव की नट्टी ।

उ०—मोरठ मांण प्रमाण, रम घाटीजे रागा तणा । मेट्टा गुटे प्रमाण, रम रम रचिय घणा ।—श्रीजामाठ री वा

२ रगो 'मां' (रू. भे) (घ मा, ह नां मा)

उ०—१ वगी नेह जे रागिया रेह मूदे मने टाण मया अगो मांण मूदे ।—३ भा

उ०—२ जिके मुर होना जरद, नवहरी आगण । मूदे खणी भूदो मिळ, मुहुणी रागी माण ।—था दा

उ०—३ शिर ते राजरजा, महि रम अत्र भोम मामरम । एक आण घगउ, मरग मांण प्राण नय मउ ।—रा र

उ०—४ आन्या तु मेदि घटत ताट आटे सात डयड रउ अरद्विज विचार । मांण इयड मन भग (तेर) मरिजद, मती लगउ वायव गमार ।—महादेव पारवती री वांन

माणक—देखो 'माणिक्य' (रू. भे)

उ०—१ गो ररे माहि मन माणिया आयाम छे, होया पन्ना मांणक जगिया छे ।—पारदो री वारता

उ०—२ मिए मांणक भाभूतगा पहिरं मरणा । रमळ गाइला घमळ घणा ।—गु र व

उ०—३ करे मन हित नत तरं दुज दीन निरनर । जिता चीर भजीर हीर मांणक जव्वाहर ।—ग र

उ०—४ चडिया फाज घमळ, वालि मूट वेगागळ । हरद किहाटा हीर, मांणके वीर हमीर ।—गु. र व

उ०—५ राधा तेरी मट्टी री मांणक रग ।—मीरा

२ श्रेष्ठ, निरोमणि ।

मांणकटउ—देखो 'माणिक्यदट' (रू. भे)

उ०—१ म मूट मे मूट, गुटे मज मांणक टट ह । अरणि बाण मारिग, बीज विरमा प्रह मउह ।—गु र व

उ०—२ परवत पय पचउए, महपति मांणकटउ म । मदमोग इह महागळी, मद रूप मेघक निपळी ।—गु र व

रू० भे०—मांणिक्यदटउ ।

माणकयभ—त० पु०—तेर घाणी का एग उपकरण जो करीव ४ दन का एक मोटा टडा होता है और पाट के ऊपर लगा रहता है ।

मांणकरूप—त० पु०—एक प्रकार का घोटा ।

मांणग—वि०—१ भोग विलास करने वाला, आनन्द तूटने वाला रसिक, प्रेमी ।

उ०—१ पोढ़ाटे नाद वेद परबोधे, निगि दिन बाग जिहार निनु । मांणग, मयण एण विधि माणै, कपमिए कत यस्त रिनु ।

—वेलि

२ उपभोग करने वाला ।

उ०—१ वडो ठाकुर हुषो । वडो दातार, वडो जूभार, वडो मांणग, जवादिजळहर । पातमाह अकवर कर्न घणां दिन चाकरी कीयो ।

—नेणसी



उ०—२ घनवतिया सुणी कहै 'गोरघन', माया माणस मोट मत्त ।  
वाट नही आपरें वारें, घारें आटे किसी घत्त ।—गोरघन खीची  
१ देखो 'माणिक्य' (रू भे )  
रू० भे०—माणिक्य ।

माणस—देखो 'माणिक्य' (रू भे )

माणस—वि०—शत्रुघ्नो का मान मर्दन करने वाला ।

माणस—स० स्त्री०—१ उपभोग करने की क्रिया या भाव ।

२ स्त्री, श्रोत ।

वि०—१ उपभोग करने वाला ।

उ०—कैलासी रो अस कमधज, खटवन रो आधार खरो । मड-

लीका सर माया माणस, हैयक खामद 'गजन' हरो ।—ओपो आढो

माणस, माणसी—स० स्त्री०—स्त्री रमणी । (अ मा, ह ना मा )

उ०—गाइति एक आप ग्रेह माणसीस मगळ ।—गु रू व

वि०—मान करने वाली, मानवती ।

उ०—के बाळा राइ-कुभरि, केय मुगधा कुळवती । के मध्या

माणसी, जिसी सूरज फायती ।—गु रू व

माणसी, माणसी—क्रि० स० [स० मण् या मड] १ भोगना, सभोग

करना ।

उ०—१ वादल काळा वरसिया, अत जळ माळा आण । काम

लगी चाळा करण, मतवाला रग मांण ।—वा दा

उ०—२ माणीरे मूमल ने राणें म्हुदरे, माजी जेसाणे रो मूमल ।

हाले नी रे अमराणें रे देस ।—लो गी

उ०—३ मिळी अघेरी रेंण सुहेली मोरा गावें मल्हार । राज गहेली

रें सग मांणो, मरस तीज रो रात ।—रसीलराज रा गीत

२ आनन्द लूटना, मोज करना, सुख प्राप्त करना ।

उ०—१ पोढाडै नाद वेद परबोधे, निंसि दिन वाग विहार नितु ।

माणस मयण एण विधि मांणें । रुखमिण कत वसत रिनु ।

—वेलि

उ०—२ दखिण दिमा मलयाचळ पहाड रो पवन वाजिओ छै सीत

मद मुगघ गति पवन मतवाळा मैगळ ज्या परिमल भोला खावती

वहे छै । अढार भार वनमपती मकरद फूलादि रा रस मांणतो थको

वहे छै ।—राजानराउत रो वात

३ ऐश्वर्य भोगना सुख भोगना ।

उ०—जोघाणो जिण वार, इळ मांणें राजा 'अजो' । आसीमे

अणपार, जस खट व्रत्त 'जसरज' उत ।—सू प्र

४ द्रव्य लुटाना, दान देना ।

१ माणी मता छता मही मडळ, मता न माणी जिता मुआ ।

—गोरघन खीची

उ०—२ दत्त देता घन माणता, जणि सुणता जसवास । वसुधा

इण पर बोळिया, नवकोटी खट मास ।—गु रू व

५ रखना ।

उ०—नारद ही देखे पग नमियो, गेम घणा भगतां रो गमियो ।

प्राणें माणें पाव महेसुर, पगां तणी दे सेव प्रमेसर ।—पी ग्र.

६ करना ।

उ०—माचैला हित्यारा भूठ वोलनं आत्र दिन ताई मौजा माणें हे ।

—फुलवाडी

७ देखो 'मानसी, मानवी' (रू भे )

उ०—सामता कहियो—जवनेस सू तोडि चहुवाण सू विगाड करण

में आपरो विचार नीतिरा लस बिना जाणियो तथापि साहसरें

साथ असूयारें अनुचर आपरो ही आदेस प्रबळ माणियो ।—व मां

माणसहार, हारो (हारी), माणियो—वि० ।

माणिओढो, माणियोढो, मांण्योढो—भू० का० कृ० ।

माणीजणो, माणीजवो—कर्म वा० ।

मांणतुवो—वि०—मानहीन, मान भग ।

उ०—भामी हथा तूफ वाह नु मे दासा हसी भूप, भडा की समत्या

मिटै काल कूट मांही । न राजी खगेस आर्म धूढवो ईसाण नाग,

मांणतुवो होय पैढो ववी कोट माह ।

—उम्मेदासह सिसोदिया रो गीत

मांणतुजोयण—वि०—दुर्योधन के समान मान या गर्व रखने वाला ।

माणनिसूरण—वि०—वैरियो का मान मर्दन करने वाला । (जैन)

मांणभग—वि०—अपमानित या तिरस्कृत ।

माणयड—देखो 'माणिक्य' (रू भे )

उ०—कर घुकळ घर कज्ज, सकत दाखवे सवाई । मघ माणयड

राडव्हि, करे छेहली लडाई ।—रा रू

माणव—देखो 'मानव' (रू भे )

उ०—कय दाणव माणव नरिद ।—स कु

माणस—स० पु० [स० मनुष्य] १ मनुष्य, आदमी, मानव ।

उ०—१ ताहरा विसोढे रें सायें राजा माणस दिया । विसोढो

मूळू रें गाम गयो । मूळूसू मिळियो ।—नैणसी

उ०—२ माणस हवा त मुख चवा, म्हे छा कूफडियाह । प्रिउ

सदेसउ पाठविसु लिखिदे पखडियाह ।—ढो मा

उ०—३ पूठें माणस गया, घणी ही कहियो पण रहियो नही ।

—अमरसिह राठोड रो वात

२ परिवार, कुटुम्ब ।

उ०—तिण समे किणहीक कहुी पातसाह नूं,—चारण वीर घवळ

लागडियो, ओ पातसाही मुलक मे रहै छै । इण सू जेसो घणी मया

करै छै । ओ वडो कवीसर छे । इणसू जेसो निपट कावो छै । सु

इण रा माणस वेटा वद करो ।—नैणसी

अल्पा०—माणसियो ।

३ स्त्री, श्रोत ।

उ०—१ मासण भला रहउ वन मांहे, कहउ नही तप करउ किम ।

पूछइ तरइ बांमण परमारथ, जाणणहार अजाण जिम ।

—महादेव पारवती रो वेलि



उ०—२ अरु भमरसिखजी रै लारै राखी मती हुई । बाकीरी  
मांणस वा पदमा तथा साथ चौकानेर आया ।—द. दा.

४ पत्नी, अर्द्धा गिनी ।

५ दामी, परिचायिका ।

उ०—१ तद माहै सु माणस तेउण ने आई । हाथ जोड़ केहण  
लागी—महला पवारोजे ।—कल्याणमिध बाहेम नगराजोत री बात

उ०—२ तद मांणस बोली—ये मोने सापरतक बाली थी सो तू  
ठाकुरां नै तेहे ले आध ।—राजा रा गुर रा बेटा री बात

६ पुत्र वधू । ७ जीवात्मा जीव, प्राणी ।

उ०—ग्राम-विमूहा मांणसां, हे घर भेजण हार । घरणी घर घर  
छडिया, अच्छे तू आघार ।—ह. र

८ देखो 'मानस' (रु. भे.)

माणसत्पाणी—वि० स्त्री०—नर भली, मनुष्य भक्षणी ।

उ०—तरै कफाली कह्यो, हू कोई मांणस त्पाणी न छू, भिच्छन छू  
दीधी लू छू ।—जगदव पवार री बात

मांणसर, मांणसरोवर—देखो 'मानसरोवर' (रु. भे.)

उ०—१ तिए सोण वदन कीयो तिनक, मुकरा सोण ववाळियो ।  
'धूमाण' तरणै रिए मांणसर, अछरि हंस वरमाळियो ।—गुरु व.

उ०—२ कडि लछण केहरी, जघ जाणै जाळघर । राइ प्राण  
गति क्रमति, हम किरि मांण-सरोवर ।—गुरु व

माणसाचार—देखो 'मिनसाचार' (रु. भे.)

माणसियो—स० पु०—१ आंघ की पुतली ।

उ०—दूजो दीवो जुपायनै सेठा री मूँहो जोयो वारी मागो फाटोही  
ही, आख्या रा मांणसिया पिरियोहा ह ।—फुलवाही

२ आंघ मे प्रतिबिंब स्वरूप किमी पुरुष की आकृति देखने वाला ।

३ देखो 'माणस' (अल्पा, रु. भे.)

माणसुधी—वि०—अप्रमानित मानहीन ।

माणिक—देखो 'माणिक्य' (रु. भे.)

उ०—'हरीया' जो कुछ वस्त्र में, पाट पिछोरी स्थार, वस्त्र  
विना न पाईयै, माणिक भरघा भडार ।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

माणिकमाळा—स० स्त्री [स०-माणिक्यमाळा] लाल नामक रत्नो की  
माला ।

माणिक, माणिक, मांणिक्य—स० पु० [स० माणिक्य] १ लाल रंग का  
एक रत्न, पदारग ।

उ०—१ पन्नास लाल माणिक अपार, प्रवि जाणै जवाहर मघण  
घार ।—सू. प्र

उ०—२ सरस्वती आगलि कुल पढीयइ, अन्नत करण कहीइ,  
माणिक करण थोकीइ, मोती करण छहीइ, निरगुण करण  
वदीइ ।—व. स

उ०—१ अति किमति हीर उदार, मांणिक्य लाल मजार । यमि  
मीप सोवति गिध, बट वार मुगत अविध ।—सू. प्र

उ०—४ मुगमपणपूरी एमी मन्तूरी, मनोहर मांणिक्य, माणिक्य  
रत्न, अनकि विदेगी वस्तु, इमिउ स्वपदार्थिया मणउ मयन ।

—व. म

२ माणिक्य रंग में मिलने जुलने रंग का पोटा ।

३ घोडे के घोटी के नीचे की भोंगी ।

४ इस भोंगि वाला पोटा । ५ एक प्रकार का वेला ।

वि०—मान ।

र० भे०—माणिक, मांणिक, माणिक, माणिक, मानिक ।

माणिकदंड—१ एक प्रकार का हाथी ।

उ०—१ अरु हस्ती, शिरमणित विपाटमणित भइजाती दक्षिण-  
दउउ माणिकदंड मूलचक्र बागप्र, तिमाता पाटिनागउ भइइ ।

—व. म

२ हाथी ।

र० भे०—माणिकदंड ।

माणिकप्रस्तारिका—सं० स्त्री०—एक प्रकार विशेष ।

उ०—१ गानपदमी, मुकुट मसमी, माणिकप्रस्तारिका, निशमणतप,  
वद्धमानतप, ।—व. म

उ०—२ माणिकदंड हस्ती, मुरगामिउ पोउउ, मुग्धनी नउ  
उट दहाहि नउ बलद ।—व. म

माणिक—१ देखो 'माणिक' (रु. भे.)

उ०—परि जिम घरणि चरै पोउतो विट तिम गिण पोउं मग  
पाणि । माटेचो जीवतो मांणिक, माणिक गयो बिट्टे कलि माण ।

—मुरताण मानावन रो गीत

२ देखो 'माणिक्य' (रु. भे.)

माणिकर—देखो 'माणिकर' (रु. भे.)

उ०—जैपर रजवाहा रा माणिकर हाथी मगळा मुनक मे पावा है ।  
—फुलवाही

माणिकोही—भू० का० उ०—१ समोग किया हुआ, भागा हुआ  
२ सुख प्राप्त किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ, मोज किया हुआ,  
३ द्रव्य लुटाया हुआ, दान दिया हुआ ४ ऐदवयं भोगा हुआ,  
सुख भोगा हुआ ५ रखा हुआ ।

६ देखो 'माणिकोही' (रु. भे.)

(स्त्री० माणिकोही)

माणिक—देखो 'माणिक' (रु. भे.)

उ०—ताहरां रजपूत बोलीया—राज सवा लाय रो मांणिक  
कहीजे । सवा लाख रो मांणिक कराइ नै जीम काटाहीजे ।

—साखा फूलांगी री बात

माणो—वि०—१ मान वाला ।

२ थोर ।

माणीगर-वि०—१ वैभव को भोगने वाला, उपभोग करने वाला ।

उ०—१ एक एक सू आगळा, राणा ऊमरकोट । प्रकट हुवा पर मारवै, माणीगर मन मोट ।—वा दा

उ०—काम जती सूर सोम, भूपतीस सुती काहा, विप्र रुद्र तती अन हयो जीप बार । माणीगर छरती ग्रामती जो सुपगी काहा, सोहियो कामती रायजादा रो सीगार ।—सनमानसिंह हाडा रो गीत  
२ सभोग करने वाला, भोगने वाला ।

उ०—लोरा सावण लूबियो, घोरा घण घरराय । माणीगर रग माण अर, प्याला भर मद पाय ।—अग्यात

३ आनन्द लूटने वाला, मोज करने वाला, रसिक ।

उ०—दिन दुलहां माणीगरा इण गढ़ रा घणियाह । आणी सीगल दीप सू, पेल पदमणियाह ।—वा दा.

४ दानी, उदारचित्त, दातार ।

उ०—१ बैठा कीकर सो बुधा कव उदम कराणा, माणीगर म्या-राम की घर वात घराणा ।—मयरामदरजी रो बात

उ०—२ माणीगर घन कुमी, कुमी मन रो घर माया ।

—अरजुणजी बारहठ

५ स्वामिमान वाला, मान वाला ।

उ०—तिण रे एक रामदत्त नाम वरस बीस रो वेटी, मोटियार सर्याणी माणीगर ।—साहरामदत्त रो वारता

स० पु०—हाथियो की जाति विशेष ।

रू० भे०—माणगर, माणगर, मानगरी ।

माणेतरण—देखो 'मानेतरण' (रू. भे.)

उ०—हे उठी माणेतरण खोली कोथळी । हे थारी सासू-नणद ने ओढाव, हे म्हर्नि धणी ए सुवावै जच्चा पीपळी ।—लो गो

माणेराव—देखो 'माणगर' ।

उ०—लूटो मामान भडारा वार पारा डाणेराव लागी, सोभा आणेराव लूटो खजाना सचूप । तणी वाघ साम घटा मोजा माणेराव लूटो, राणै राव रूपा धार लूटो यद्र रूप ।—महादान महह

माणी-स० पु० [देशज] १ अनाज आदि का एक तौल या परिमाण विशेष जो मन का आठवा भाग होता है ।

२ उक्त तौल के बराबर अनाज मापने का एक पात्र ।

३ गर्व, मान ।

उ०—धीर जो लज माणौ, अवसाण मै सिध अण भगी । पीरस पराक्रमो, सूराय सपत चिह्नानि ।—गु रू व.

सर्व०—मेरा, अपना ।

मांत—देखो 'मात' (रू. भे.)

उ०—राति विडियो इसी भाति नरवै रयण, सम-समी मार देतौ सवाही । तेण उदमादियो चद कमवा तिलक, मात मादो थियो सूर माही ।—गु रू व

मात्रिक-वि०—मन्त्र साधना करने वाला, जिसको मन्त्र मिद्धि प्राप्त हो चुकी हो ।

उ०—सूयकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य ब्रह्मवैद्य मात्रिक तत्रिक गाडरिक ।—ब स.

माद-स० स्त्री० [स० मान्द्य] १ मन्दा होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ अस्वस्थता, बीमारी, रुग्णता ।

उ०—१ भूख अर तिरस रै विताई घणा डर है । जगळी जिना-वर, साज माद अर बिच्छू-काटा रा केई घया है ।—फुलवाडी

उ०—२ मावडिया तन मंगुरा, मिटे कंद नह माद । मावडिया बूळा मरद, चूला हदा चाद ।—वा दा

३ पीडा, दर्द । (म मा, ह ता मा)

[फा०] ४ हिसक जानवरो के रहने का विवर, खोह, गुफा, शेर की माद ।

[स०] ५ रांव या चंद्र सम्बन्धी ग्रहों की नीचोच्च या मदोच्च गति ।

मांदउ—देखो 'मादो' (रू. भे.) (उ र.)

उ०—बलतउ पूछइ वात विवेक, लगन विचई थायइ दिन एक । पयइ वहता मादउ पढथउ, तिणि कारणि मोडठ आपड्यउ ।

—ढो मा

मादगी-स० स्त्री० [फा० मादगी=स० माद्य] १ बीमारी, रोग, अस्वस्थता ।

उ०—१ एक ती सेठाणी रो मादगी मे वो उरणग हीडा घणा करिया, दजी सेठा ने वो होणहार अणू ती लखायो ।—फुलवाडी

उ०—२ मिनख जनम ही पायने, आउखी ओछी थाय रे । रोग मांदगी लागी रहे, तव घरम कियो काई जाय रे ।—जयवाणी

क्रि० प्र०—आणी, लागणी ।

१ उदामी, सुस्ती । ३ थकावट ।

४ मदापन, फीकापन ।

रू० भे०—मदवाड, मदवाडि, मदवाडी, मदीवाड, मादवाड, मादीवाड । मह०—मदीवाडी, मादीवाडी ।

मादळ-स० स्त्री०—एक प्रकार अवनध वाद्य विशेष ।

उ०—जन-जन के उठ पीछे लागै, घर घर भरमत डोलै । ता थै दादू खाइ तमावै, मादळ दुहु मुख वोलै ।—दादूवाणी

२ देखो 'मादो' (मह, रू. भे.)

मादळियो—देखो 'मादळियो' (रू. भे.)

उ०—भाठा जितरा देव पूज्या, राखडी मादळिया ई कराया, गाव रा गुरामा खने इलाज ई करायो अर जोवपुर जाय'र डाक्टरा रो छाती मे रुपिया ई बाळिया पण गरज काई मजी कोयनी ।

—रातवासी

मादलियो—देखो 'मादो' (अल्पा, रू. भे.)

मादवाड, मादीवाड-ग० स्त्री० [स० मन्ध-वर्त्ति] १ बीमारी, अस्व-  
स्यता, रुग्णता । २ थकावट, उदासी ।  
रू० भे०—मदवाड, मदवाडी, मदीवाड, मांदगी ।

मांदीवाडी—देखो 'मांदगी' (रू भे )

मांदी-वि० [स० मान्द्य] (स्त्री० मादी) १ बीमार, रुग्ण, रोगी,  
अस्वस्थता ।

उ०—तद रायमिधजी दिली सागै पवारिया । तठं मानम हई कै  
करमचद मादी घणी छै ।—द दा

उ०—२ मुवा जीवै मांश सग्न, लहि आधा चख लहै । तुहे धाता  
तोभी सक्कट, तव नोभी किम महै ।—मे म

उ०—३ तादी घाया गच्छतति, मांदी काया मेल । चांदी खाया  
नह चडे, वांदी जाया वेल ।—ऊ का

उ०—४ आ हरख अर उच्छव रे दिना मे ई कुजोग री बात के  
चिटी मादी पडगी ।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—पडणी, होणी ।

२ थका हुआ ।

३ उदाम, सुस्त ।

उ०—रानि विडियो हमी भाति नरवै रयण, मम ममी मार देतो  
मवाही । तेण उदमादियो चद कमधा तिलक, मात मादी थियो  
मूर' माही ।—गु रू व

रू० भे०—मादउ ।

अल्पा०—मादळियो । मह०—मादन ।

माघाता—देखो 'मानघाता' (रू भे )

मान-स० पु० [म० मान] १ प्रतिष्ठा, इज्जत, सम्मान, गौरव ।

उ०—१ महा दिय मान करी गुह मीत, तारै सह कीर कुटुव  
सहीत ।—ह र

उ०—२ जेमलमेर रा रावळजी अर गगळा मिन्दार घणै मान सू  
पहो के आ गुदामा रा चावळा नै आप आदर सू कवूल करी ।

—फुलवाडी

क्रि० प्र०—करणी, खोणी, पाणी, मिळणी, होणी ।

२ आदर, सत्कार, स्वागत ।

उ०—बरी ही जउ हवड घरे आवड, आदर तिहा कीजड अग्यान ।  
घाप हुती बीहती न बोलइ, माता ही दीवड तुछ मान ।

—महादेव पारवती री वेलि

क्रि० प्र०—कण्णी, देणी, होणी ।

१ अहंमान, स्वामिमान ।

४ गर्व, अहंकार, मद ।

५ मित्रयो के टटने की क्रिया या भाव, क्रोध ।

६ आचार, आचरण, प्रमाण ।

उ०—जरै माह भी मनीम हजार मेना भेजी, जिकण रा समुद्र में  
मेहवा री मान वहि विधान वृत्तियो ।—व भा

७ सामर्थ्य, शक्ति ।

उ०—मिनखा घणो न मान, मान रहै हेकण मना । जीतो जुध  
जापान, रुम तरुं बल राजिया —कर्तकरण उज्जवल

८ किसी वस्तु का भार, तोल, मात्रा या परिमाण ।

९ किसी चीज को मापने का मापन, पैमाना ।

१० प्रमाण । ११ अपने व्यक्ति को भूल करते देख मन मे  
होने वाला विकार, गिला ।

१२ ढोल, तबले आदि साज पर किया जाने वाला वह आघात जो  
मम, अल्प विराम या पूर्ण विराम का द्योतक होता है । (मगीत)

१३ एक राठीड राजा ।

उ०—पुत्र लोपुज ३२, पुत्र मान राजा ३३, पुत्र नमुचि ।  
—रा व वि

१४ एक मय । १५ ग्रह ।

१६ उत्तर दिशा का एक देश । १७ मनुष्य आदमी ।

वि०—समान ।

रू० भे०—माण ।

अल्पा०—मानो ।

मानक—१ देखो 'माणिक्य' (रू. भे )

२ देखो 'मानुष' (रू भे )

मानकी—१ देखो 'मानखी' (रू भे )

२ देखो 'मानुस' (अल्पा, रू भे.)

मानल—देखो 'मानस' (रू. भे.)

उ०—तो सुरमरी तरंग, कूची मरग कपाट री । ऐय पवाळें अग,  
जग मे धिन मानल जिर्के ।—वा दा

अल्पा०—मानकी, मानखी ।

मानखाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू भे )

मानखी—देखो 'मानवी' ।

उ०—कारज सुरा कण किय झोला । लीला समंद मानखी लीला ।  
—सू प्र

मानखी-म० पु० (व व ) [स० मानप ] १ जनसमूह, जनसमुदाय ।

उ०—१ अठो नै राजा री ओ कै'णी विहयो अर उठीनै राज दर-  
वार रै सांभी अडवडती वेसुमार मानखी ओकण सागै जोर सू  
पुकार करी ।—फुलवाडी

उ०—२ राजा रै मोट लग मानखी ई मानखी निजर आवतो ।

—फुलवाडी

रू० भे०—मानकी ।

२ देखो 'मानुस' (अल्पा, रू भे )

उ०—१ इस्लाम री ओ हठ दखनै लक्वी विणजारा नै पक्की  
विस्वास दहीगी के इण गुदडिया मेख मे ओ कोई विरळो ई मानखी  
है ।—फुलवाडी

उ०—२ रोल वै डफोळ, हावाडोळ मे रह्यो । मानखी अमोल,  
गोल मोळ में रह्यो ।—ऊ का  
अल्पा०—मानख ।

मानगरी—देखो 'माण्णगर' (रु भे )

उ०—सो केसरीसिंहजी पण इसा दातार मानगरा हुवा । बडा-बडा  
परवाडा दखिण में किया ।—महाराज पदमसिंह री बात

मानग्रह-स० पु० [स० मान-ग्रह] स्त्रियो का कोप भवन ।

मानचित्र-स० पु० [स० मानचित्र] किसी स्थान का नक्शा, चित्र ।

मानण-स० स्त्री०—१ मानने या स्वीकार करने की क्रिया या भाव ।

उ०—पण वा बात किणी रे मानण मे आवै जैदी नी ही ।

—फुलवाडी

२ स्वीकृति ।

उ०—अर आपरी रजपुता उपेत पाहुणा नू तो मानण रो दूदुभी  
दिरायवाइ बडे वेग साम्हो चलायो ।—व भा

मानणो मानवो—क्रि० स० [स० मान] १ स्वीकार करना, मजूर करना ।

उ०—१ थियो सदैव मुण निज शुई, टीटभ हूत कसान । उण रा  
वाळ उधारिया, महामत्र जस मान ।—वां दा

उ०—२ जठं नरेस १ नवाब २ हू कहियो आपण आवता अकबर  
१७ । १ रो आदेस इसडो हुवो सो वूदी १ रे एवज और स्थान २

लेर घाकरी करणो न माने तो दूदा नै पकडि आणो ।—व भा

उ०—२ ईसुरी छाक ऐराक आरोगता, चोगता दया द्रग कुसळ  
चाता । प्रसन चित थाय पहराय माळा पुहप, मानली भूपरी विनय  
माता ।—मे म

उ०—४ सेठ बिणज मे ऐडो मन लगायो के पाचू वेटा वारे  
सामी हार मानग्या ।—फुलवाडी

२ ध्यान देना, गौर करना ।

उ०—१ राणी कंवण लागी—आप तो मानो नी ही, पण म्हनें  
काच मे दीसै ज्यूं साफ दीसै के कवरा नै मारण रो हुकम सुणतां  
ई सगळी नगरी मे लाय लाग जावैला ।—फुलवाडी

उ०—२ मत्र बसीकर मानजे, वाणी रस वरसत । सरसुति वीणां  
प्रगट सुर, कोयल लाज करत ।—वां दा

१ किसी के कहने या ममझाने पर ठीक मार्ग पर चलना, अनुकूल  
आचरण करना ।

उ०—१ अरज करी प्रभु सू इस अगद, छळवळ कर समझायो  
छाने । कटक न माने हेत किया सू, मोटी डड दिया सू माने ।

—र रु

उ०—२ पण ऊदरी किण री सीख माने उण नै ती बोछरडाया  
री साव लाघोडी ही ।—फुलवाडी

४ मन में किसी प्रकार की धारणा बनाना ।

उ०—१ करहे असवारी किया, सोना हरणी सग । उण डोला  
प्यु आपरी, डोली माने दग ।—वा दा

उ०—२ पण जे मिनख खुद खोटी अर कूडो ग्हियो तो वो आ  
पदारथा नै अमोलक, खरा अर साचा मानेला ।—फुलवाडी

५ किसी धर्म या ईश्वर को मानकर चलना, आस्था रखना, मानना,  
धारण करना ।

उ०—१ भगवान ने मानण वाळा सगळा ई किसा एक सरीखा  
है । भगवान नै मानण वाळो एक तो राजा वणियोडी है अर दूजे  
कानी उणो नै सिवरण वाळा भूवा मरता मरे ।—फुलवाडी

उ०—२ तिको सोम जिसा राजा चद्र उपासीक मुसलमान हुवो ।  
तिण रो केड मुसलमान चद्रमा नै माने छै ।—रा व वि

उ०—३ बोले वधव रूपसी, बोले मोकमदास । सज अवसाण  
विलास पद, को माने घम जास ।—रा रु

६ ग्रहण करना, प्रगीकार करना, स्वीकार करना ।

उ०—१ वैगी रा मीठा वचन, फळ मीठा किपाक । वे खाधा वे  
मानिया, हुवा कसात खुराक ।—वा दा

उ०—२ बढियो जदि रणमस्त बहु, मानि कवर सो वैण । बिण  
रण हाली दाम वणि अप्पण पावण ऐण ।—व भा

उ०—३ चिडो कह्यो—जद आप मँल छोडने जावो तो पछे म्हे  
किण रे भरोसे रे'वा । म्हे दोनू ईडा समेत आपरे साथे चालस्या ।  
राजकवर उगरी वीणती मानली ।—फुलवाडी

उ०—४ हवा रा तेज भोला सू नींबडा रा छिवरा हिलिया जाणे  
वो वारी कामना मानली है ।—फुलवाडी

७ खुश होना, राजी होना ।

८ पालन करना, धारण करना, शिरोधार्य मानना ।

उ०—१ मात तणी आग्या मही, सोइज पूत सपूत । मात वचन  
माने नही कहिए जको कपूत । मात वचन धू मानियो, सारा  
मिटिया सोक । सारा लोका सू सिरै, लाभो अवचळ लोक ।

—वा दा

उ०—२ बाप रो हुकम मानणा मे ई वेटा रे सरव सुख अर सरव  
आणद है ।—फुलवाडी

उ०—३ माईतां रो हुकम मानणो ई टावरा रे वाम्ते सरव सुख  
है । माईत सदा टावरां रो मलो ई चीत्या करे ।—फुलवाडी

६ समझना, समझा जाना, माना जाना, जानना ।

उ०—१ अब आपरे ऊपर महा सकट मानि एक दीधी ती परमेस्वर  
दूजी भी देसी ही परन्तु आपदा मे दिल्लीस भी इसी व्याकुल थियो ।

—व भा

उ०—२ जाहर जग जीवाडणो, माने दोयण मेह । किण सू राखे  
केहरी, सैणाचार सनेह ।—वा दा

उ०—३ आ काठा चढसी अवस, धरणीघर दे धोक । सठ मन  
माने सुघरसी, पातर सू परलोक ।—वा दा

उ०—४ दुनिया मे आप जैडी पराय मानणो । आपरे जीव रे  
समान ई दूजा रो जीव मानणो ।—फुलवाडी

उ०—५ करत नहीं राणा कुभकन, जो तू बलवत वाय जम ।  
मानव देव दई मन मानव कळह फटारी तणी क्रम ।

—महाराणा कुभा रो गीत

१० किमी विचार, बात या कार्य के लिये महत्त होता, एकमत  
होना, प्रस्ताव स्वीकार करना ।

उ०—१ पान न मन उपरात ई दगळा रो कंगो मानणो पड्यो ।

—फुलवाडी

उ०—२ म्हारो कंगो मानो तो एक गैस अपारं ई मोल ले ली ।

—फुलवाडी

११ हठ छोड़ना, आवेश छोड़ना, अनुचित हरकत करते रुकना ।

उ०—१ राजकवरी दोडने उगुरा हाथ खाचिया । खुद मरण रो  
घमकी दी तद वो मानियो ।—फुलवाडी

उ०—२ पिए नरवद जोर चढीयो सु माने नही ।—नैणसी

१२ विश्वास करना, भरोसा करना ।

उ०—१ मानो वचन माह मत मेरो । तुरत करा मव कारज  
तेरो ।—रा रु

उ०—२ चुका वयण मदार चादता, मुर नर माहो मान अपत ।  
भोळे भाव आवियो भूरो, भोळा सभु तणी भत्त ।—गु रु व

उ०—३ आपणपड घन घन मानतो जाए, मिरो मणि प्रिय  
देखती ।—हीराणुद सूरि

१३ कदर करना, महत्व देना, मान्यता देना ।

उ०—गम भणता रे ! लडा, कह केता गुण होय । ठाकुर माने  
जग नवे, पिसण न गजे कोय ।—ह. र

१४ किमी उक्ति या विचार घारा को मानकर चलना ।

ज्यू—मवर रो फळ मीठो मानोजे ।

१५ कल्पना करना ।

१६ अनुकूल पडना, माफिक पडना ।

उ०—पाळे दळद मेवणा पाणा, दुग प्रालटे 'खुरम ह्वे' । 'सूजा'  
हरो भमहता माने, हाले मन मानियो हुवे ।—नाथो माद

१७ सम्मान करना, आदर करना ।

१८ दक्ष, पारगत या निपुण समझना ।

१९ पूजा करना, अर्चना करना ।

२० प्रभावित होना, कायल होना ।

उ०—१ महतजी ई मानण्या के ऐढो, भगत तो वे आपरी ऊमर  
में ई देख्यो नी ।—फुलवाडी

उ०—२ इए ममक रे आगे म्हने हार मानणी पडे ।—फुलवाडी

२१ प्रतिज्ञा या सकल्प करना ।

२२ धैर्य रखना । २३ स्थिर रहना ।

मानणहार, हारो (हारी), मानणियो—वि० ।

मानिओढो, मानियोडो, मानियोडो—नू० का० कृ० ।

मानोजणी, मानोजवी—नमं वा० ।

मानणो, मनवी, माणणो, माणवी, मानिणो, मानिवी—रू० भे० ।

मानता—स० स्त्री० [स० मान्यता] १ मनोती, मन्त्रत ।

उ०—राज कवर घणी ई मानतावा बोली पण सुगन चिदी तो  
आपरी जगा छोटी ई नी ।—फुलवाडी

२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान्यता ।

उ०—१ कोटर मुहडे ठाकुरद्वारी तठे राखिया ऐ किल्ली रे घर  
माण न जाय । किल ही सू घणा बोले नहीं । इणा रो वही  
मानता हुई ।—नैणसी

उ०—२ भठी नै ठोकरा ठोकरी भजस नै मोद सू आपरा वेटा रे  
वारा मे वाता करता हा, घर भठीने ठिकाणा मे रचता तीडा रो  
मानता दिनी-दिन वधती गो ।—फुलवाडी

३ श्रद्धा, भक्ति ।

उ०—बूदी मीराजी जागतो पीर है । राव घणी मानता राखे ।

वा दा स्यात

रू० भे०—मानिता ।

मानताळ—स० पु०—मान मरोवर झील ।

उ०—भटाटोप बना रो चणणा कीधा मळे भद्र, सभु नळे ऊजळे  
वचाळे राणा मण । दीप मानताळ हसा मडळी नवास दीधा, कवदा  
मडळी लोदा दुमरा 'कुभेण' ।—कविराजा बाकीदास

मानतालकार—स० पु०—एक जाति या वर्ग विशेष ।

उ०—उपाध्याय गायन वदकार आलविणकार वीणकार वसकार  
उत्तिकार मानतालकार भटारजिय पखाउजिय पाटलिहिक प्रमुख  
राजलोक पोरलोक इति ।—व स

मानघाता—स० पु० [स० मानघात] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—सुत युवनाम मेमट खवेस । निज हुवो मानघाता नरेस ।

—सू प्र

रू० भे०—माघाता ।

मानध्वज—स० पु०—एक राठोड राजा (ऐतिहासिक)

उ०—अरूर राजा रो पुत्र, बुधसेन राजा, तिण वधनावर वसायो,  
रो जससेन ८०, रो मानध्वज ८१, रो अगनि भूति ८०, ।

—रा व वि

मानमदिर—स० पु० [स०] १ वह एकान्त कश्च जहा स्त्रियां रुठकर  
बैठती हैं—कोप भवन ।

२ देव शाला ।

मानराजा—स० पु०—एक राठोड वंशीय-राजा । (ऐतिहासिक)

उ०—स्री मजुराजा रो नमुची राजा, रो मानराजा ।

—रा व वि

मानव—स० पु० [स० मानव] १ मनुष्य जाति का एक प्राणी,  
आदमी, इंसान । (अ, मा., ह ना मा)

उ०—१ जळ जाल, माळ विसाल नम जुत उरड भड अणपार ए ।  
मिटि जळण, घरणि विनोद मानव भूरि मर-जळ भार ए ।

—रा रु

उ०—२ खुधा न भाजै पाणिग्या, द्रखा न भाजै अन्न । मुक्त नहीं  
हर नाव बिन, मानव साचै मन्न ।—ह र

उ०—३ कारण बिन जगसू करै, आठ पोहर उपगार । जाणीजै  
सुरतर जिकै, मानव लोक मभार ।—वा दा

उ०—४ 'सूर' तणो सुरसरी तणै सर, मानव विहडिया वजावै  
मार । रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिण-  
गार ।—गु रू व

पर्या०—आदम, आदमी, कायाघर, गुणनीत, गोघ, तनसार, देह-  
सती, घव, नर, ना, घ्री, पचजन, पचीकनी, पुमान, पुरख, मनुज,  
मनुस, मरद, मरत, मानस, मिनख, अतलोकी, सुरगानी ।

२ मनुष्य जाति, वर्ग व समाज ।

उ०—बलवत सेन अति सबळ, सितर पदम हुइ सचरै । बळिराव  
पयाणी सभळी, सुर मानव विसहर डरै ।—रा व वि.

१ चौदह मात्राओं का एक छन्द इसके ६१० भेद हैं ।

४ नाभानेदिष्ट एव शार्यात नामक आचार्यों का पैतृक नाम ।

५ एक पुराण वेत्ता एव धर्म शास्त्रकार ।

६ अगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

७ उत्तम मन्वतर का एक देव विशेष ।

वि० [म० मानव] १ मनु सम्बन्धी, मनु का, मनु से उत्पन्न ।

२ मनु के वंशधर ।

३ मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्य का ।

रू० भे०—मनव मनव, माणव, मानवा, मानवी ।

मानवती-स० स्त्री० [स० मानवती] १ नायक से मान करने वाली  
नायिका, गर्विता । २ अभिमानी स्त्री ।

मानवदेव-स० पु० यो०—राजा ।

मानवधर्मशास्त्र-स० पु० यो० [मानव-धर्मशास्त्र] मनुस्मृति ।

मानवपति-स० पु० यो० [स० मानव+पति] राजा, नरेश ।

मानवसासतर, मानवसास्त्र-स० पु० यो० [स० मानव-शास्त्र] वह  
शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का  
विवेचन है ।

मानवा, मानवी-वि० [स० मानव] १ मनुष्य की, मनुष्य सम्बन्धी,  
इन्मानी ।

उ०—१ ताहरो हरमाळा कळस ले तळाव गई । जायनै सरव  
तजबीज दीठी, देखनै पाछी आई, कह्यो—वाइजी छै तो मानवी  
बढी डेरी ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ कुमेर बोलियो—आगै ही लकापति रावण सीता री  
चोरी करी ले गयो । तरै आप चत्रुमुज मानवी देह धारनै विणा-  
सियो ।—मा बचनिका

उ०—३ म्है तो इण घरती री मानवा देह हू ।—फुलवाडी  
२ मनुष्योचित ।

स० स्त्री०—१ स्वयंभु मनु की कन्या का नाम ।

२ परशु एव इडा नामक वैदिक वाङ्मय में निर्दिष्ट स्त्रियों का  
पैतृक नाम ।

३ देखो 'मानव' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ मल्लघारी मानवी न मूकइ, कहइ न ब्रह्मा विसन कहइ ।  
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ मानविया मन बन मही, लागी लालच लाय । 'वांका'  
इण सतोस विण, बीजै केण बुभाय ।—वा दा

उ०—३ बीसलदे बाळीह, मत कोई कीजो मानवी । भेळी कर  
भाळीह, माणै न जाणी मोतिया ।—रायसिंह साहू

मानवीय-वि० [स० मानवीय] इन्मानी ।

मानवेंद्र-स० पु० [स० मानव-इन्द्र] राजा, नरेश ।

मानस-स० पु० [स० मानस] १ मन की आन्तरिक सत्ता जिसमें विचार,  
संवेदना या अनुभूति होती है, मन, चित्त, मस्तिष्क । (ह नां मा)

२ हृदय दिल ।

३ सकल्प, विकल्प । ४ कामदेव ।

५ विष्णु का एक रूप ।

६ ज्योतिर्भास नामक लोक में रहने वाले पितरों का मामूहिक नाम ।

७ एक यक्ष जो मणिवर एव देवजनी के पुत्रों में से एक था ।

८ वशवर्त्तिन देवों में से एक ।

९ वासुकी कुलोत्पन्न एक नाग ।

१० घृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजय के सर्पसत्र में  
दग्ध हुआ । ११ चर, दूत ।

१२ शालमली द्वीप का एक वर्ष, देश ।

१३ एक राग विशेष । (संगीत)

१४ मानसरोवर झील ।

१५ पुष्कर द्वीप का एक पर्वत ।

१६ एक लक्षण विशेष ।

१७ मनुष्य, आदमी ।

१८ दो मात्राओं का समूह 'ऽ' । \* (छन्द शास्त्र)

१९ देखो 'मानसर' ।

वि०—१ मन से उत्पन्न, मनोभव ।

२ मन से सम्बन्धित ।

३ मन से सोचा हुआ, विचारा हुआ ।

४ मानसरोवर पर रहने वाला ।

रू० भे०—माणस ।

मानसभोक-स० पु० यो० [स० मानस-भोकस्] १ हम । (हिं को)  
२ कामदेव ।

रू० भे०—मानसाक ।

मानसचारी-स० पु० [स० मानसचारिन्] मानसरोवर में रहने वाला, हम ।

मानसपुत्र मानसपुत्र-स० पु० [स० मानस पुत्र] इच्छा मात्र से उत्पन्न  
होने वाली सत्ता । (पौराणिक)



मानसमुद्र-स० पु०—मानसरोवर झील ।

मानसर, मानसरवर, मानसरोवर, मानसरोवरि-स० पु० [स० मानसर] हिमालय के उत्तर में स्थित एक बड़ी झील जो बड़ा पवित्र तीर्थ माना जाता है । यह कैलाश पर्वत के नीचे है ।

उ०—१ उडियाणी कभी मेखली ऊपरि, काख अचारी डह कर ।  
मछ दीमइ फावियउ विसभर, सिंहरी छायउ मानसर ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जो तू चाहै मुक्त फल, घूना मन धीरछ । तोख मानसर-  
वर तठै, मान हवै मा मच्छ ।—वां दा

उ०—३ ग्रक्ष माहि जिमि कलप तरोवर, मानसरोवर सार । जिम  
गिरि हेम प्रेमति प्रमादां, पर पदमनी विचार ।—रुक्मणी मगळ

उ०—४ जिम पारिजाति नदनवन मोभइ, भद्रजाति हस्ती विध्या-  
चळ, राजहम मानसरोवरि, चिंतामणि रोहणाचळि ।—व स  
२ जयमिह की माता मीलनदेवी का बंधाया हुआ एक तालाब जो  
वीरमगाव के पास है ।

उ०—मोताहळ मयद्यत्र मिर, मानसरोवर राय । देवी गूजर  
खहरी स्त्रीहिचरा महाय ।—वां दा

ॐ भे०—माणसर, माणसरोवर, मानससर ।

मानसघ्न-स० पु० [मानसघ्न] मन में पोलन किये जाने वाले घ्न-  
ग्रहिसा, मत्स्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि ।

मानससंन्यासी-स० पु०—दक्षनामी संन्यासियों की एक शाखा का  
संन्यासी ।

मानससर-स० पु०—देखो 'मानसरोवर' (रू भे )

मानसाफ—देखो 'मानसभोक' (रू भे )

मानसमासतर, मानसमास्त्र-स० पु० [स० मानस-शास्त्र] वह शास्त्र  
जिममें मन से उत्पन्न होने वाली वृत्तियों एवं मन के कार्यों का  
विवेचन किया गया है ।

मानमाचार—देखो 'मनमाचार' (रू भे )

मानसिक-वि० [स०] १ मन में सम्बन्धित, मन का ।

२ मन की कल्पना से उत्पन्न । ३ मन में होने वाला ।

ज्यू०—मानसिक सत्ताप ।

४ मन में सोचने विचारने लायक, मनन करने लायक ।

स० पु०—विष्णु का एक नामान्तर ।

मानसी-स० स्त्री० [म० मानसी] १ एक बिछा देवी का नाम ।

२ एक ऐतिहासिक नदी ।

उ०—साहूरा नगारी देनं उठा सो गोठ ठाकुर चढीया । तिकै  
मानसी नदी प्राय उत्तरीया ।—राजा नरसिंह री बात

३ देखो 'मानसीपूजा' ।

वि०—१ मन का, मन सम्बन्धी ।

२ मन में किया जाने वाला ।

३ मनुष्यों का, मनुष्यों सम्बन्धी, मानवी, इन्सानो ।

मानसीगंगा-स० स्त्री० [स० मानसी गंगा] गोवर्धन पर्वत के पास के  
एक सरोवर का नाम ।

मानसीपूजा-स० स्त्री०—मन ही मन की जाने वाली पूजा ।

उ०—ग्रह प्रथोराजजी बड़ा भक्त हा । सू मानसीपूजा करता । सू  
आगरै बैठा लक्ष्मीनाथजी री मूरत वीकानैर में वायर पधगई थी  
तिका वताय दीनी ।—द दा.

मानसूक-स० पु० [स० मानमोका] हम । (प्र मा )

मानसून-स० पु०—१ भारतीय महासागर एवं दक्षिणी एशिया में  
चलने वाली हवा जो छ मास दक्षिण-पश्चिम की ओर में तथा छ  
मास उत्तर-पूर्व की ओर से चलती है ।

२ उक्त हवा से बनने वाला मौसम, वातावरण ।

३ दक्षिण-पश्चिम की हवा के कारण बनने वाला वर्षा का  
मौसम, पावस ।

४ वादल ।

माना-स० स्त्री०—गाथा छन्द का एक भेद जिममें १२ गुरु व ३३ लघु  
होते हैं ।

मानाथ-स० पु० [स० मानाथ] लक्ष्मी के पति, विष्णु ।

मानिष्य—देखो 'मानुष' (रू भे )

उ०—जुडे राम लाखमणा काजि जेता । दुवै रूप मानिष्य ज  
आख देता ।—सू प्र

मानिटर-स० पु० [प्र०] १ स्कून की कक्षा में अनुशासन बनाये रखने  
वाला छात्र ।

२ उक्त छात्र हेतु प्रयोग किया जाने वाला सवोधन सूचक शब्द ।

मानिणी, मानिनी—देखो 'मानणी, मानवी' (रू भे )

उ०—'करण' जीविस्यै मानिस्यै गुण कवि, किते जगत चा सरिस्यै  
काज ।—ईसरदाम वारहठ

मानिता—देखो 'मानता' (रू भे )

उ०—ऊभी करो श्रोवदी आलो, धीर साच मन जेम परै । हणवत  
प्रसिध लखण ची हवडां । कवण मानिता लोक करै ।

—ईसरदाम वारहठ

मानितो—देखो 'मानिती' (रू भे )

मानिनी-स० स्त्री० [म० मानिनी] १ दक्षिण नरेश विदूरथ की कन्या  
जो बंधाली के राजा राज्यवर्धन की पत्नी थी ।

२ देखो 'मानि' (स्त्री०)

उ०—मानिनी मरकलहइ हसइ, मुख भरिउ तवोळि । तिणइ  
त्रितय भूयणपति, जाणइ चिणीठी चोळि ।—मां का प्र

मानियोडी-भू० वा० कृ०—१ स्वीकार कराया हुआ, मजूर कराया  
हुआ २ ध्यान दिया हुआ, गौर किया हुआ, समझा हुआ.  
३ अनुकूल आचरण किया हुआ, ठीक मार्ग पर चला हुआ  
४ मन में किसी प्रकार की भावना बनाया हुआ. ५ किसी धर्म  
या ईश्वर को माना हुआ, आस्था रखा हुआ ६ ग्रहण, प्रगीकार



या स्वीकार किया हुआ ७ खुश या राजी हुवा हुआ. ८ पालन किया हुआ, धारण किया हुआ, शिरोधार्य माना हुआ ९ माना हुआ, समझा हुआ, जाना हुआ १० प्रस्ताव स्वीकार किया हुआ, विचार या बात पर सहमति दिया हुआ ११ अनुचित हरकत करते हुआ हुआ, हठ या आवेश छोड़ा हुआ १२ विश्वास या भरोसा किया हुआ १३ मान्यता या महत्व दिया हुआ, कदर किया हुआ. १४ किसी विचार धारा या उक्ति को मान-कर चला हुआ १५ कल्पना किया हुआ १६ अनुकूल या माफिक पड़ा हुआ, १७ सम्मान या आदर किया हुआ १८ दक्ष, निपुण या पारंगत माना हुआ १९ पूजा या अर्चना किया हुआ २० प्रभावित या कायल हुआ हुआ २१ प्रतिज्ञा या सकल्प किया हुआ २२ धैर्य रक्खा हुआ २३ स्थिर रहा हुआ (स्त्री० मानियोडी)

मानिनी-वि० [स० मानिन्] (स्त्री० मानिनी) १ अपने मानापमान, गौरव या प्रतिष्ठा का ध्यान रखने वाला, स्वाभिमानी ।  
उ०—दिएं मेय राधेय सरस्व दांनि । महाकस्ट भी मागवै भूप मानिनी ।—व भा

२ माननीय, सम्माननीय, प्रतिष्ठित ।

३ अभिमानी घमडी, गविला । ४ जिसमें मान हो ।

स० पु० [अ० मानिनी] १ अभिप्राय, आशय, अर्थ, मतलब, भाव ।

२ रहस्य मूलक तत्व, भेद । ३ प्रयोजन, उद्देश्य ।

मानिनी-वि०—१ माना हुआ, प्रिय ।

उ०—झांके झूलर झोलता, पैंठो कुवर विचित्र । अजहू न आयो आपणो, मन मानिनीतो मित्र ।—पलक दरियाव री बात

२ विशेष रूप से विश्वास पात्र ।

३ मान, प्रतिष्ठा या गौरव प्राप्त ।

४ कृपा पात्र । ५ प्यारा, दुलारा ।

रू० भे०—मानिनी, मानेती ।

मानु—१ देखो 'मान' (रू भे)

उ०—मानु दीन्हउ मानु दिन्हउ गयेय ।—प प. च

२ देखो 'मानो' (रू भे)

मानुष, मानुष—देखो 'मानुस' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ मानव रूप फल मुख कमळ, इसा आइ अखं अई । मानुष अक्ष नवि नीपजै, कहो ब्रह्म कीधी कई ।—रा द. वि

उ०—२ हर जस गावण हार, धन मानुष तन धार ।—र ज प्र

उ०—३ लीलाधण ग्रह मानुषी लीला, जग वासग वसिया जगति । पित प्रदुमन जगदीम पितामह, पोती अनिरुध ऊखापति ।

—बेलि

(स्त्री० मानुषी)

मानुस-स० पु० [स० मानुष] (स्त्री० मानुसी) १ मनुष्य, आदमी, इन्सान, नर ।

२ मिथुन, कन्या, और तुला राशियों का नामान्तर ।

३ प्रमाण के तीन भेदों में से एक ।

[स० मानुष] ४ मनुष्यत्व, इंसानियत ।

५ पुरुषार्थ ।

वि० (स्त्री० मानुषी) १ मनुष्य सम्बन्धी, मानवी ।

२ अनुग्रहणीय, दयालु ।

रू० भे०—मानक, मानिक, मानुष, मानुष ।

अल्पा०—मानकी, मानकी ।

मानुसता-स० स्त्री० [स० मानुष] इंसानियत, आदमियत ।

मानू—देखो 'मानो' (रू भे)

मानेतेण-वि० स्त्री० [स० मानित] १ मानवती, मानिनी ।

२ कृपा पात्र, विशेष प्रिय ।

स० स्त्री०—वह स्त्री या नायिका जो अपने पति या प्रियतम को विशेष प्रिय हो ।

उ०—१ मानेतेण रागी तारा भडी चूदडी ओढ, चादा रं उणि-यारं इमरत वरसावती प्रीतम नै रीभावण साह नाचण लागी ।

—फुलवाडी

उ०—३ पछे वा मानेतेण ऊदरी सवा हाथ री लावी घूषटी काढने लाज सरम सू दोवडी व्हेती न्यात में गी ।—फुलवाडी

रू० भे०—सांसेतेण ।

मानेती—देखो 'मानेती' (रू भे)

मानो—अव्यय—१ यथा, जैसे, गोया, मानो ।

रू० भे०—मनहु मनहु, मना, मनि, मनु, मनु, मनू, मनू, मने, मनी, मानु मानू ।

२ देखो 'मान' (अल्पा, रू भे)

उ०—वचन रचन सुणज्यो हिवं, आणी भाव प्रधानी रं । देखी दान इसी परं, जेम लही तुम मानो रं ।—वि कु

मान्य-वि० [स० मान्य] १ जो मानने योग्य हो, जिसे मान्यता दी जा सके, मान्य ।

२ उचित, ठीक ।

३ मान, सम्मान या आदर योग्य ।

स० पु०—१ विष्णु ।

२ शिव । ३ मंत्रावरण ।

माम-स० पु० [स० माम=ममत्व] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा गौरव ।

उ०—गांवावत जिम माम गमाडे । 'करन' समोभ्रम जाय किम । भाजण तणां ज महसा अण भग । 'जैत' न सहियो 'माळ' जिम ।

—द दा

उ०—२ कूरमां जादमा महाडा कमधजां, चलावी चहू जुग वीच चावी । माम हिंदू धरम तणी मारी मिळै, 'अना' राजा खनै चाल भावी ।—आसियो भोपत

उ०—तिहि हिज मारणि पाछर चळइ, गीजें चित्ति हीयळ गळ-  
कळई । वळिनइ आव्यो आपणि गामि, देग विदेग गमाछी मांस ।

हो मा

उ०—४ मुज अगुरा सग्राम, किया नह पोहचां वरे । वाई न रागो  
ठकुरा, मुर भवण पति मांस ।—मा यवनिका

२ गम्मान, आदर । ३ जीत, विजय ।

उ०—जेवटठ अतर मेर सरमिय, जेवटठ अतर मांस अनट परि-  
भव, जेवटठ अतर लोह अनट पावन, जेवटठ अतर रोग आटें  
रावण ।—य ग

३ मर्यादा, हृद, सामा ।

उ०—१ ह माघव चळू वळी, ते माघव तू होय । पीटइ कां मुभ  
पापीया, महीया मांस म गोय ।—मा कां प्र

उ०—२ महाराण प्रमळ जिम लोप मांस ।—पा प्र

४ गर्व, महकार, घमट ।

उ०—१ सीवर सागणो जी, वेता निवळ सतां मांस । महपत  
मारणो जी, महजुव करम घरमां मांस ।—र ज प्र.

उ०—२ वनातो भूनां घातियां रहुकला घकां गटमनां जूता छे ।  
सू हातियां घकां घोटा रो मांस पाटें ।—गगय पीपी रो दो पट्टो  
५ दृढता ।

उ०—घुज घरम सर कोदड घारण, मेर ओपत मांस रा । आनू  
भुज परचड आहव, रूप रिवकुळ रोग ग ।—र ज प्र

६ पहाड, पर्वत । (म मा)

७ इच्छा, अभिलाषा, कामना ।

उ०—मीचि राव सग वधियो 'आसायत' 'जैराम' । करवा नव-  
कोटी कुसळ, मोटी घारें मांस ।—रा रु

८ युद्ध ।

९ शक्ति, बल ।

उ०—करममीहो खत्री करम का उजागर । मांस काम अवमांण  
मांस का रतनागर ।—रा रु

१० बदला ।

११ धन, दोलत, वैभव । (ह नां मा)

१२ कार्य, काम ।

उ०—सुत रिणछोट माण पण गाचें । उप धम मांस मांस जग  
वाचें ।—रा रु

वि०—१ लायक, योग्य ।

उ०—अजव वणें दळ मारवां, अजवावत व (व) लराम । रुके  
आटा रक्खणां, मोटा कांमा मांस ।—रा रु.

२ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—लखमीदाम 'पातन' का उज्जळ अरेह । साम घरम फाम  
कोट मांस का सा देह ।—रा रु

[स० मास] ३ मेरा, अपना ।

उ०—१ देगि सगद यही पोपदार, अति मांस मयारें । तद मंद  
बुद्धि पीर चय, अगणि घपारें ।—गू प्र

उ०—लागू हण वेता मांस पीम, कावो दिन मर मर टुना बीम ।  
—पा प्र.

४ 'मो' 'मां' (मह, रु ने)

उ०—मह रोग मरमरें मांस मारें ।—गू प्र

५ 'मो' 'मां' (रु ने)

मांस—देगो 'मां' (रु ने)

उ०—जाट मलित निमित्त गुण दिड, जाण मांस मलित  
निमित्त छोट ।—य ग

मांस—ग० पु०—पा गग वि०प ।

उ०—गाराय घातियां, गाराय घातियां मांसोता मेवमर मांस  
मर मरमरमां घातियां नट नट मांसा गोता ।—य ग

मांस—ग० पु०—१ घावट थकी ने पिता का नाम ।

उ०—मांस र मांसा, गोव साय, र मांस । घाट रो तयमार,  
हुवा कराल मांस ।—म म

२ देगो 'मां' (मह, रु ने)

मांस—मांस—ग० म०—मांस की बेटो घाट रोजी ।

उ०—१ जठे घायला मांसमाई पुजार्च । घाई पोव, गोव पले  
घाय ।—मे म

उ०—२ मांस मांसमाई गोदिया रह मेमांजी । जूट घनं वं-  
गाय, उभें मांसमांजी जाई ।—पा प्र

मांस—देगो 'हमांस' (रु, ने) (मेमांजी)

मांस—मांस, मांस, मांस—स० म० [म० मुमांस, मुमांस]

१ मारमरित्त घवहार ।

उ०—मांस होण मुगह मरें घा मांसमत, पांग पुण वरें महा-  
राण वाजा ।—जखीनजी घावो

२ विवादास्पद बात, मुरझा ।

३ कोई बात या विषय ।

४ घटना ।

मांस—मांस—वि०—मांसमां नाम वर देवे वाला ।

मांस—मांस—१ देगो 'मां' मपा, रु ने)

२ देगो 'मां' (रु ने)

मांस—स० पु० [म० मुमांस] १ मुठ, भगडा, तपार ।

उ०—१ मरणी लाजम मांसले, मार घणी पड घाप । पटणो  
सांखळ पीजरे, मिही वडो सराप ।—वा दा

उ०—२ तरें ममसादी यली—नांव तो ह जोणू नही नै मोसू  
मांसलो कियो तठे पाहरो वडा उमराया मुसलमाना माहे पणो  
साय रो घणी का न हुतो । वे तो अमवार दो हिडु हुता, तिणी  
मांसू मालियो ने वणें म्हाला माया रो टोप रविमा सया साय रो  
कीमत रो लियो छे ।—नंगुतो

उ०—३ पीछे झीजी दक्षिण रें सोवै आदणी पधारिया । उठे वार  
एक गनीमा सू मामलो हुवो । जठे माराज वडो भगडो कियो ।

—द दा

उ०—४ मीसण पहिया मामले 'सामो' अनै रतन । दिली खेत  
न छडियो, धारण चारण छिन्न —रा रु

२ आक्रमण, हमला ।

उ०—वरस १२ विग्रह नै हुवा छै । मामला घणाही हुवा पण गढ  
हाथ आवै नही ।—नैणसी

३ समस्या, उलझन ।

उ०—आपस मे मामलो नी निवडतो देखनै वाने नवो पच थापणो  
ई पड्यो ।—फुलवाडी

४ दुसाध्य कार्य, दुष्कर कार्य ।

उ०—तद नापै अरज कगी—दीवाण गलामत राठोडा रें वर रो  
मामलो खरो जोरावर छै । अर वल वर ही राव रिणमल रो ।

—नैणसी

५ कार्य या काम ।

उ०—१ कह्यो-जी बांभण आवै छै । मत क्यु ही कही । बाहर रो  
मामलो छै ।—नैणसी

उ०—२ जोसी गावड खुजावतो बोल्थो—जोखो तो ऐडो की खास  
नी । टावरा रें भाग रा साजा-सूरा आय जावैला । पण जोग  
अवळा है । थें हीमत राखो तो मामलो सुघर जावै ।—फुलवाडी

६ कोई विषय, बात ।

उ०—१ तरा सावणिया सांवण वेव्या नै कह्यो या सावणा सूरा-  
चद रो राजा तो हाथ चढे नै आपा माहे कुसल वरत नै वेढ रो  
मामलो छै, खित्री रो घरम छै पण सूराचद रो राजा तो मारियो ।

—जैतसी ऊदावत री बात

उ०—२ जे गूजरी री टोय नी लेग्यो तो राजाजी खीकैला । ऐडा  
मामला मे वाने रीस अणू तो वेगी आवै ।—फुलवाडी

उ०—३ बाता ह्दा मामला दरिया ह्दा फेर । नदिया वहे उता-  
वली देदे धूमर घेर ।—फुलवाडी

७ विवादास्पद विषय, मुकद्दमा ।

उ०—विरमाजी कह्यो—थू तो खुद बलद वालो ई रोबणी रोयो ।  
पण थारी ऊमर कोई ओढण वास्तै तयार रहे जावै तो म्है तुरत  
ओ मामलो सलठाय दू ।—फुलवाडी

८ घटना ।

उ०—तरै रिणमल दीठी—आही बात तो वणी नही । चद्रसेन रो  
तो इणा दोना ही मामला बिगडियो क्यु नही ।

—रावचद्रसेन री बात

९ वैभव, ठाट बाट ।

उ०—तद ए केसरीय साह रें घरे गया । आगै साह रो वडो  
मामलो । ईयै रें वडो वणज, केइ केरोडा री मताह, गाहणी कपडा

विसायत री वडो जलूस ।—ठाकुरै साह री बात

१० व्यापार, व्यवसाय ।

११ प्रभाव, रोव ।

उ०—पछे पताई रावळ रें माळो सइयो बाकलियो तिकेरो वडो  
मामलो, वडो इतवार गडो री कूची तै वसू ।—नैणसी

१२ स्थिति, हालत दशा ।

उ०—देत भिभकनै वैठो बिह्यो । वगनो वहे ज्यु अठो उठो देखनै  
बोल्थो—म्हने ऐडो लखायो के म्हारी माथो पगा मे आयग्यो अर  
म्हारा पग माथा री ठोड आयग्या । सगळी मामलो ई जाणै उलट  
गियो ।—फुलवाडी

१३ वृत्तान्त हाल ।

उ०—१ राणा प्रताप रा कबरा रा मामला विगत—अमरनिध  
पूरविया परमार मयारखला असोकमलोत रो दोहितो ।

—वा दा ख्यात

उ०—२ स० १६४३ चारण बांभण सू मामलो आउवै ।

—राजा उदैसिह री बात

१४ समझौता, परस्पर तय की जाने वाली बात ।

१५ कोई व्यवस्था या परम्परा जो सर्व सम्मति से निश्चित की  
जाती है ।

१६ प्रधान या मुख्य बात ।

१७ कील, वचन ।

१८ खिराज नामक एक प्रकार का कर जो सेना खर्च के लिये लिया  
जाता था । (जयपुर, सीकर)

मामस-स० स्त्री०—सासू के भाई की स्त्री, सासू की भोजाई, मामी  
सास । (शेखावटी)

मामसर-स० पु०—सासू का भाई, मामा इवसुर । (शेखावटी)

उ०—म्हारे मामाजी रें माही गणगीर, मामसरा घर मांड्यो रग  
भूमकडो ।—लो गी

मामाण, मामाणो-स० पु०—मामा का घर, ननिहाल ।

मामाई-स० पु०—मामा का वंशज ।

वि०—मामा का, मामा से सम्बन्धित ।

मांमात-स० स्त्री०—मामा की बेटी बहन ।

मामामुरकी-स० स्त्री०—कान का आभूषण विशेष । (वरदा)

मांमारखी—देखो 'ममारखी' (रु भे)

उ०—नै ठाकुर वडा राजी हुवा । अरु ठाकुरा वळजी गागंजी री  
माजी नू कहायो, जो थारा वेटा नू जोधपुर री मामारखी है । तद  
गागंजी री माजी ठाकुरा नू कहायो, जो जोधपुर म्हा पायो, नै ओ  
राज तो थारे ई सारे है सू ये देवो जिण नू आवै ।—द दा.

मामाल-स० पु०—१ ननिहाल, मातृ-गृह, मामा का घर ।

उ०—१ तात मात मामाल तक, सूरा साख समार । पलटे घर  
ऊभी पगा (म्हारी) लाजै पीहर लार ।—अगरावाई उदावत

उ०—२ बाघोडी कमरा ओ बुजी सा नही खोली । लाजें म्हारी लाडकियो मांमान ।—लो गी

मांमालूणी—स० स्त्री०—बरसात की मौसम मे होने वाला एक पीघा विशेष जिमका स्वाद खट्टा होता है । यह पीघा पृथ्वी पर छितराया हुआ रहता है ।

उ०—पयाळ-लोक रा नी नी व्हे जेडा अमरफळ छोडने वा बोर, दातू, कवेडा, केरुदा, खिरणिया, पीपिया, भडोलिया, गुट्टा, पीलू, गूदा, गूदिया, आमलिया, गेंगणिया, डाणिया, घीतोला, मोथिया, केहूला, योसा, मांमालूणी, काचरा, काकडिया, खरबूजा अर मतोरों वास्तें तटफा तोडती ।—फुलवाडी

मांमो—स० स्त्री०—मामा की स्त्री ।

उ०—धीणो फगत छोटीही मामी रें इज हो । भींटियो छोटीही मामी रें घरें ठेरियो ।—फुलवाडी

मांमोसासरी—स० पु०—सासू का पीहर, सासू के भाई का घर ।

मांमोसासू—स० स्त्री०—सासू की भोजाई ।

मांमोसुसरी, मांमोसूसरी—स० पु०—सासू का भाई, पति या पत्नी का मामा ।

मामू—देखो 'मांमो' (रू भे)

उ०—ताहरा उवा कहियो मामू धावण दिये नही ।—द वि

मांमूर—स० पु० [म० मामूर] १ बस्ती, आवादी ।

२ साधन, मामग्री ।

उ०—'मांमो' तिण समे निपट देखरच छै, सूल सामान मांमूर कू न छै गु उठै धारू री मा कस्टी रात री, तरें डेरी डाहो साथे मामूर ययू न छै ।—नैणसी

वि०—१ जिसे आदेश दिया गया हो ।

२ तैनात, मुकरें, नियुक्त ।

[म० मांमूर] ३ बसा हुआ, आवाद ।

४ भरा हुआ, परिपूर्ण ।

५ वद । ६ गचायच भरा हुआ ।

७ समृद्ध । ८ विलकुल ।

उ०—बूधी महर भाखर लागती बसं छै, रावळा घर भाखर रें आघोकरें छै । तिण मांहे पाणी मामूर नही । महर री आयो पीज ।

—नैणसी

मांमूली—वि० [म० मांमूली] १ साधारण, मामान्य ।

उ०—१ पुटियो टिब टिब करतां बोल्यो—पचायती ती साव मांमूली हो । लोग आ बात जाणण सारू एकठ विद्या के इण दुनिया में जीव भरें घणा के जीबें घणां ।—फुलवाडी

उ०—२ अक्की भाणुजी नरमाई मू जवाव दियो—म्हारी वूती ई फाई के पारें साथे विहयोडी मिमखरी नै म्है भेल सकू पण मासी । म्हारे साथे ई गोई मांमूनी मिमखरी तो नी व्ही ।—फुलवाडी

३ अत्यन्त, खोटासा, छोटासा ।

उ०—१ अघगावळो कुत्तो कह्यो—म्है इण मामूली वदळा री बात नी करी । मिनखा री कहियां तो भागैला ज्यू ई भागैला ।

अपारी अर वारी कहिया मे घणो फरक व्हे ।—फुलवाडी

उ०—२ राणी चिडा रें मन री बात लखगी । वा उणनै लाड सू कह्यो—वावळा, म्है देखू के आज कालें थारा मन मे घणा घणा गोटा उठै । थारा मांमूली मा आराम वास्तें, थू कठैई आ नी व्हे के वापडा विचिया नै हेमाळें मेल दै ।—फुलवाडी

उ०—३ बही गताधूम मे फमर्यो । कित्ता भवारा री मसा परगट करू । नवा भवारा वणण मे देर ई लागैला । अवारू तो साव मामूली मवारा है ।—फुलवाडी

३ महत्वहीन, निरर्थक ।

उ०—१ एक नाकुछ मांमूली सा काम सारू कित्ता कळाप विह्या ।—फुलवाडी

उ०—२ नाई रें मूडें राजाजी रें मन री बात सुणता ई डोकरी पॅला तो खूब हसी । पछें कह्यो—इण मामूली सी बात सारू थें कित्ता ओळावा लिया ।—फुलवाडी

४ आसान, सरल, सीधा-मादा ।

उ०—१ भाणुजी री आटी गूथतां मासी पूछ्यो—म्हें थनै एक साव मामूली सी बात पूछू, जिणारी जवाव दीजें वेटी के जद अपारी जलम ई सजोग मू व्हे तो पछें उण री नीव साथे चिण-योडी जीवण कीकर सजोग विना आपरी गुजागी कर सकैं ।

—फुलवाडी

उ०—२ नवा मानखा अर मन रा सपना नै जलम देवणी कोई मामूली बात नी हो ।—फुलवाडी

५ रोजमर्रा का ।

उ०—थू फालतू रा दपूचा मत लै । थू चार-पाच साल री अवूरू टावर कोनी जको ऐ मामूली वाता ई नी जाणै ।—फुलवाडी

६ प्राय होता रहने वाला ।

उ०—इरद्वयां मुळकतो-मुळकतो सामो आयो । अवै ऐ गजराणां री वाता उणरें वास्तें साव मामूली व्हेगी ही ।—फुलवाडी

७ परम्परागत, रस्मी ।

८ नियत या निश्चित ढंग से होने वाला ।

मामूल्यो—देखो 'ममोली' (अल्पा, रू भे)

स० पु०—मामा का पुत्र भाई ।

मामेरी—देखो 'मायरी' (रू भे)

मानोलियो—देखो 'ममोली' (अल्पा, रू भे)

मानोली—देखो 'ममोली' (रू भे)

मांमोल्या—देखो 'ममोली' (रू भे)

मांमो—स० पु० (स्त्री० मामी) १ माता का भाई, नाने का वेटा ।

उ०—१ मांमो पडियो 'मीर' री आठां सू अबदलल । अठी 'सिबी' मरसीध री, 'राजड' री पातलल ।—रा रू

उ०—२ थट सहित 'कुभो' थर हरै । साहाय मामो सुभरै ।

—सू प्र

उ०—३ ताहरा निजामसाह कह्यो—थो म्हारो मांमो छै । ताहरा मलकवर कह्यो—थारो मामो पण म्हारो वेटी छै ।—नैणसी  
२ भील जाति के व्यक्ति के लिए सम्मान सूचक शब्द (मेवाड)

रू० भे०—मामउ, मामू ।

अल्पा०—मामलियो ।

मह०—मांम, मांमड ।

मांमोजी—स० पु०—परोपकार के लिए लडकर वीर गति प्राप्त करने वाला वीर, योद्धा जो जनता द्वारा पूजा जाता है ।

माय—क्रि० वि० [सं० मध्य] १ भीतर, अन्दर, मे ।

उ०—१ मुकुद वसै मन ज्यारै माय, सदा सुख वासर रैण विहाय ।

—ह. र

उ०—२ परदार प्यार हुयगो प्रमत, विन सीगा रा वेलिया । भोगरै माय भवता भवर, गयो जनम सब गेलिया ।—ऊ का

उ०—३ आठम आज सहेलिया, श्री पख ऐळो जाय । हियै खटूकै साहिवो, काटो ऐडी मांय ।—अज्ञात

उ०—४ कवर आपरा घोडा नै थोडो लारै लेय दूजोडा साथिया नै कह्यो—यू डरग्या काई । इत्ती मांय लारो करनै आलोच मे पडग्या । रजपूतां नै तो जलम सूई पैला मा रा पेट मे मोत रो गुटकी मिळै ।

माय वडनै वूटो वूटो खूद न्हाको ।—फुलवाडी

उ०—५ डावडी मोसा रो डक मारती बोली—साटा अरोगण रो ऐडी ही भावड न्है तो माय पधारो ।—फुलवाडी

२ भोट मे, माड मे ।

उ०—मुकुद म पंस पडहा माय । ठावो में कीघो सरवह ठाय ।

—ह. र

३ दरम्यान, बीच ।

४ बहुतो के बीच मे, मध्य मे ।

उ०—१ डोलिया माथै सूती सूती पसवाडा पलटती रो पण उण रो नींद तो जाणै तारां रै मांय ई चापळगी ही ।—फुलवाडी

उ०—२ आं तीना मांय सू थारै जचै जकी सोगन समझ जाजै —फुलवाडी

रू० भे०—मह, महि, मही, महां, मां, माइ, माई, माह, माहां, माहा, माहि, मांहि, मांही, महि, माहे, माय, मायनै, मायै, माह, माहा, माहि, माहि, माही, माही, माहे, माहे ।

५ देखो 'माता' (रू भे )

मांयकर—ग्रन्थ०—अन्दर से होकर ।

उ०—खेत रै मायकर निकळतां म्हांराणी सू गाढ नी राखीजियो ।

—फुलवाडी

रू० भे०—माहकार, मांहाकर ।

मांयडी—देखो 'माता' (अल्पा, रू भे )

मांयनो—स० पु० [अ० मुआयन] १ किसी पर गौर करने या उसे ठीक से देखने की क्रिया या भाव ।

२ निरीक्षण, जांच-पड़ताल । ३ अर्थ, मतलब ।

मांयलडो—देखो 'मायलो' (अल्पा, रू. भे )

उ०—मायला मायलोडी नगरी जोय, विन जोया भटकत फिरै, थारो भलो काय सू होय ।—हरिरामजी महाराज (स्त्री० मायलोडी)

मायली—१ देखो 'माता' (अल्पा, रू भे )

२ देखो 'मांयलो' (स्त्री०)

मांयलोडो—देखो 'मांयलो' (अल्पा, रू. भे )

मायली—वि० [स० मध्य+रा० प्र० लो] (स्त्री० मायली) बाहरी का विपरीत, भीतरी, अन्दर का ।

उ०—१ हस मायला मूढ रे, कर हर सर विसराम । मर मर घर घर नह फिरै, उर घर गिरघर नाम ।—ह. र

उ०—२ थाळ मायला दीवा जगमगाट करता हा ।—फुलवाडी

उ०—३ दीवाणजी नै लखायो के रगा मांयलो लोई अबै ठस्यो अबै ठस्यो ।—फुलवाडी

उ०—४ दूजोडा वाग मे वगळो १ नवो नै मायली कानी जनाना रैवास रो जायगा कराई ।—नैणसी

२ किसी स्थान, क्षेत्र या परिधि मे रहने वाला ।

उ०—१ हमै गढ मायला नू पूरो जोर पोहती । तद राव सूर्जजी रो माजी हाडी जसमादेजी कहायो कं थारा भला आदमी मेलो ।

—द दा

उ०—२ पन्ना मारू आपनै सिधावो परदेस । वरजोने वागा रो हो मांयली कोयली म्हारा राज ।—लो गी

३ जो किसी के अन्दर स्थिर या स्थित हो ।

उ०—वा तो पछै भलो सोची नी कोई भूडी, खांचनै हाथ मायली सोटी वगाई —फुलवाडी

४ चारो ओर का ।

उ०—राजकवर गळा मायलो हार मछियारा नै झिलावतो कह्यो—म्है थनै लाखू रिपिया रो श्री हार देवू, थू मछलिया मारणी छोड दे तो ।—फुलवाडी

५ कईयो के बीच का ।

उ०—आंमलिया पाकी ने अब रत आई रे जला । जला रे राजां मायलो राज भलो राठोडी रै ।—लो गी

६ गुप्त, गोपनीय ।

सर्व०—मेरा ।

रू० भे०—मयलो, मइलो, मांहुलु, माहुलो, माहिलो, मांहीलो, माहेलो, माहुलो, माहिरलो, माहिलद, माहिलु, माहिलो, माहिल्यु ।

अल्पा०—मायलोडी ।

माया—१ सोतेली माताए ।

उ०—बीजी मायां सू मिलिया सारे निछरावळ कीधी ।

—कुवरसी साखला री वारता

२ देखो 'माया' (रु भे)

३ देखो 'माया' (रु भे)

मार—१ देखो 'मौर' (रु भे)

२ देखो 'मार' (रु भे)

माराई—देखो 'मुराई' (रु भे)

मा'री—देखो 'मेरी' (रु भे)

उ०—मा'री थारी कर माया मे, उलज्योडा उलजावै । कुळवै लगै

गुरारी कूची, खट ताळा खुल जावै ।—ऊ का

मांळ—देखो 'मोळ' (रु भे)

ज्यू—हमार चीणा री मांळ है ।

मालत—देखो 'मोहलत' (रु भे)

मावडी—देखो 'माता' (अल्पा, रु भे)

मावणी—स० स्त्री० [स० म्ना-अभ्यासि=ल्युट=म्नानी] पाठशाला मे छात्रों द्वारा मध्या मय बोली जाने वाली पहाडो की गिनती ।

मावसी—देखो 'मासी' (रु भे)

उ०—मरो मा, जीवो मावसी, घी घालसी, न गोडा चालसी — ।

—अज्ञात

मावीत—देखो 'माईत' (रु भे)

उ०—थाहरा मावीता री था नू मरम छै, कहड़ा हुवो छो ।

—ना-है वाघेल री वात

मास—म० पु० [स०] १ मनुष्य, पशु व पक्षियो आदि के शरीर का वह अश्र जो हड्डी के ऊपर तथा चमडी के नीचे रहता है तथा खून, नाडियो आदि से मिश्र होता है । यह चिकना एव मुलायम तथा लाल रंग का होता है गोश्त, आमिष ।

उ०—१ जस चाहे वाहे जिकी मांसा चूकी हड्ड । अखियाता वाता वचै, जरा काळ डर छड्ड ।—वा दा

उ०—२ तुगाया रै कूब री थैलिया अर हाचळा रै मास री म्हनै अगूती भावड है । मास रै हिमाव सू ऐ सामी भूडी चीजां है ।—फुलवाडी

पर्या०—आमिष, कासम, कीन कव्य, तरस, तेजभव, पळ, पलल, पिमित मेदकर, रक्तभव ।

२ बुद्ध विनिष्ट प्राणियो (पशु-पक्षियो) का गोश्त जो प्राय खाने मे काम आता है ।

३ फल का गुटा ।

४ मछली ।

५० भे०—मम, मामु मास ।

अल्पा०—मामढी ।

मासअहारी—देखो 'मामाहारी' (रु भे)

उ०—भूवा मामअहारी भावै, वनसै रंग ऊचारै वाणी । 'वांकी'

चालणू फोज विहडण, ओख विडग गयो 'अमराणी' ।

—सुखजा विडियो

मांसकर—स० पु०—१ मास वेचने वाला, कमाई ।

२ खटीक ।

मासकरण, मासकारि—स० पु० [स० मास-कारि] रक्त, रुधिर, खून ।

मासकेसी—स० पु० [स० माम-केशिन्] वह घोडा जिसके पैरो में मास के गुठले निकले हुए होते हैं ।

मासखोर—वि०—१ माम खाने वाला, मासाहारी ।

२ जिसे माम खाने की आदत हो ।

मासचर—देखो 'मासाचर' (रु भे)

उ०—सुरताण जतै घमसाण किया मथ, चोळ थई रण मासचर, छटका रुधर पहाडा छरगं, पखी पावस तणी पर ।

—दुरमो भाढ़ी

मासट्ट—स० पु०—मांस पिंड, मांस खंड ।

उ०—पूरपियै भर जोगणी, भर पश्र उलट्टै । मिळिया बेचर भूचरा, मोटै मांसट्टै ।—द दा

मांसती—देखो 'मामती' (रु भे)

मांसपिंड—स० पु० [स०] शरीर, देह ।

मांसपिंडी—स० पु०—शरीर के अन्दर मास की ग्रन्थी ।

मांसपेसी—स० स्त्री० [स० मासपेसी] शरीर के अन्दर होने वाली झिल्ली या रेशो के आकार का मास पिंड जिसका मुख्य कार्य गति उत्पन्न करना है । ये करीब ५०० या ५१६ होती हैं ।

मांसभक्षी, मांसभक्षी—वि० [स० मांस+भक्षिन्] मांस खाने वाला, मासाहारी ।

मांसमोजी—वि०—माम खाकर मस्त या तृप्त रहने वाला ।

मांसर—देखो 'मोसर' (रु भे)

मांसरोहिणी—स० स्त्री०—एक प्रकार का जंगली वृक्ष जिसके फल बहुत छोटे छोटे होते हैं ।

मांसल—वि० [स०] १ मांस मे भरा हुआ, परिपूर्ण ।

२ हृष्ट-पुष्ट । ३ स्थूल-काय ।

मांसलता—स० स्त्री०—'मांसल' होने की दशा, अवस्था या भाव ।

मासाचर, मांसाचारी—स० पु०—१ मास खाने वाले प्राणी ।

उ०—मासाचरा घपाई मामा, वासा करै अमावड वाड । मावै नही पहाडा भाहै । हाथ्यारा दांतूमळ हाथ ।

—महाराणा अमरसिंह री गीत

२ वह पक्षी, जानवर या प्राणी जिसका आहार मांस हो, शेर, गिद्ध ।

रु० भे०—मंसचर, मसचार, मसहार, ममाहार, ममाहारी, मांसचर ।

मासाढी—स० पु०—पशुओं के मुह मे होने वाला एक रोग ।

मांसारी—देखो 'मामाहारी' (रु भे)

मांसाल—स० पु०—मामा का घर, ननिहाल ।

मांसाहार—स० पु० [स० मांस-आहार] मांस भक्षण ।

रु० भे०—मसहार, मसाहार ।

मांसाहारी—वि० [स० मास-माहारी] मास खाने वाला, मास भक्षी ।

उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैन माही राज करें । तेथी जूवारी, मांसाहारी सुरापांनी, वेस्यारत, चोर, आखेटी, परदाररत री नाम नही ।—सिंघासण वत्तीसी

रु० भे०—मसहार, मसाहार, मसाहारी, मांसग्रहारी, मासारी, मांसिरी, मासैरी ।

मासु—देखो 'मास' (रु भे )

मांसुरीलोम—स० पु०—मूख ।

उ०—इण रीति प्रामारा रा सहाय काज सोभति रा खेत मे जय री दुहुमी घुराय प्रथ्वीराज रा वीरा भूहारै भेई मासुरीलोम आणिया ।—ब. भा

मांसिरी, मासैरी—देखो 'मासाहारी' (रु भे )

मांह—१ देखो 'माय' (रु भे )

उ०—१ भेटे गुरलोक पेठी जळ मांह । तठे इक अड निपायो ताह ।—ह र

उ०—२ आसाढाळ सूघ नभ, मगळ महला माह । 'मुहकम' चौ अत मेहत, सुणियो दक्खण माह ।—रा रु

उ०—३ मडळ माह वसाय अग, थयो वळकी चद । पायो सीह मयद पद, हण हाथळ अग वद ।

उ०—४ सवे कुळ जागा वंटी साह । मिनवखा देवा नागा माह ।

—ह र

२ देखो 'माह' (रु भे )

३ देखो 'मुख' (रु भे )

उ०—परै मरीचि मांहपै न छाह आत पत्र की । क्रमै न वापु अत्र ताल पत्र तै कलत्र की ।—ऊ का

४ देखो 'म्हा' (रु भे )

उ०—मूरख तो बामण है के वामण री सगत करै सो मूरख है । तद ठाकुर बोल्थो—थे तो माह नै मूरख कीघा ।

—गांव रा घणी री बात

माहकार—देखो 'मायकर' (रु भे )

उ०—तद नायण गुफा माहकर भीतर गई ।—चोबोली

माहगो—देखो 'मृ'गो' ।

(स्त्री० मांहगी)

माहजी—सर्व० (स्त्री० मांहजी) हमारा, मेरा ।

उ०—तिण ऊपर रावळ जोस कर बोलियो—अरु लाल नू डमी कही कै ताहचा राठोड मांहजी घरती में घोडी फेरै जितरी जमी आह्मण नू उदक कर दू ।—द दा

रु० भे०—मांजी ।

माहडो, माहडो—देखो 'मूडो' (रु भे )

उ०—खेडो माखर री खभ ढोसा मगरां रै माहडै श्री गांव ।

—नैणसी

२ देखो 'माहै' (रु भे )

३ देखो 'माही' (रु भे.)

मांहणी—देखो 'म्हाणी' (रु भे )

मांहणौ—देखो 'म्हांणौ' (रु भे )

मांहणौ, माहवौ—देखो 'मोहणी, मोहवौ' (रु भे )

माहवी—देखो 'भेदी' (रु भे.)

मांहमा—देखो 'माहोमाहि' (रु भे.)

उ०—अठ दीह कसर करै मड आया । माहमा सज मंत्रिया फुर-माया ।—सू प्र

मांहमुदी—देखो 'महमूदी' (रु भे )

उ०—अर एक केसरीया कराई । थान दोय वाफता रा, दोय माह-मुदी, पांच सेल्हा अवल त्याई । सो दरजी भरमल रै कारखाने वेंसाणीया ।—कुवरसी साखला री वारता

मांहरइ—देखो 'म्हारै' (रु भे )

उ०—सखि आवउ आवण मांस, पिउ नहीं माहरइ पासि । कत बिना हु करतार, कीधी किता भणी नार ।—स कु

मांहरी—देखो 'म्हारी' (रु भे )

उ०—१ भोगवि कितै भू किता भोगवसी, माहरी मांहरी करइ मरै । ऐंढी तजि पातला उपरि कुवर मिळि मिळि कळह करै ।

—घ व प्र.

उ०—२ घोडी लाप चाढ़ने राखसियं सोमै नू नागोर राव चडा कने बोलाळ मेलियो थो जु माहरी मदत करो ।—नैणसी

माहरे, मांहरै—देखो 'म्हारै' (रु भे )

उ०—१ खग नीर, घोर अतर खरा, मद कुजर वपु जिम मयण । मन वसै तेम तू मांहरे, मो मन बसियो महमहण ।—ह र

उ०—२ ताहरा राणगद कछी—माहरे राठोडा सू वीर, सु पर-णीजण कोई नी आवैं ।—नैणसी

माहरो—देखो 'म्हारी' (रु भे )

उ०—१ नायक माने चुगल नू, परगह करै पुकार । माहरो सिर रा मोड नू, कर बोळी करतार ।—वां दा

उ०—२ तीसू म्है काची वात की वास्तै तोडा भटनेर तो माहरो छै ।—ठाकुर जैतसी री वारता

उ०—आज पछै माहरो राठोड वस मै माता पखणो पूजसी राज माहरो वस मै पूजनीक गुरु होयस्यो ।—रा व वि

माहल—देखो 'महल' (रु भे )

माहलु—देखो 'मायली' (रु भे )

उ०—राहु नू सिर हरि छिदू, पुराणिक मिथ्या कहि । विरहणि नू छेदिक ते, मरम माहलु नधि लहि ।—नळाख्यान

माहली—देखो 'मायली' (रु भे )

उ०—१ तरै लूणगनू पातसाह कने ले गया । उठे पातसाह माहला मांडै तेहनै लूणग आगे कबाण नावी ।—नैणसी



उ०—२ आगें बहे तिरण वाहळें करनै गाव माहिली वावडिया पाणी रो सेमो छे ।—नैणसी  
(म्हो० माहिली)

माहा माहा—१ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ पातिमाह रें उटडू वाजाय माहा मिरजें रें लमकर सीधो लियो ।—द. वि

उ०—२ तद राजा मठ रो पेट चीरियो तै माहां उवा मोतीया की जोटी लाय रणीया की नोसरी ।—चीवोली

२ देखो 'म्हा' (रू भे.)

उ०—१ भा टावडी जाय तटे वासै हुयो जाय नै जिंका खबर होय, सु माहां नै देई ।—नैणसी

उ०—२ ताहरां रजपूताणी नू 'नरी' कहै- वोहत वुरी हुई । भीला माहा सो डरीयो नही ।—जेतमाल पवार रो बात

माहाकर—देखो 'मायकर' (रू भे)

माहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—पातमाहजी रो पाछो हुकम आयी—रा० बीरमदे नु ववळी दो सु भली काम कीयो, अवे रा० बीरमदे कू खरची देनै मताव माहारी हजूर भेजजी ।—नैणसी

माहारें, माहारें—देखो 'म्हारें' (रू भे)

उ०—जाट थका पुकारें छे, पुकारू आया छे, माहारें सदामद लेता सु लै छे ।—नैणसी

माहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—परधान आया, आ बात परधान की थी पण मलुखान वर-सिध सु लागती थी हीज कहै—एक तो माहरी सैमर मारी, तिरण रो माहारी म्ह वित मागा ।—नैणसी  
(म्हो० माहारी)

माहि, माहि—देखो 'माय' (रू भे.)

उ०—१ त्रिभुवन माहि न तोसू तोलै, सरण राख मो ईमर बोले ।—ह. र.

उ०—२ चित तालच वेळा चढे, चेला जिनस चढाहि । हेलां पर घर हाण दे, मेळां वेळां माहि ।—वां. दा

उ०—३ वळे तनमी तनमो इद्रवार्द, तुही सुन्य रें माहि चंतन्यताई । महमाय तुही तुही जोग माया, प्रकत्तो मकत्तो तुही नांम पाया ।

—मे. म

उ०—४ जु रवि पश्चिम ऋणमई, मेरू चलइ मही माहि । विहि-तणा पणि जे लहया, चतुर न चूकइ क्याहि ।—मा. का. प्र

उ०—५ अषकी तन आकाहि, सोण घरा पडिया सैहस । जागें जुध जुडनां जवन, मामी कटका माहि ।—मा. वचनिका

माहिजो—प्रश्न०—मेग, हमारा ।

माहिनी—देखो 'मायनी' (रू भे)

उ०—१ माहिली ठाकुर लाधो मांय । पुजावे आपी आप ही पांय ।—ह. र

उ०—२ अविनासी आया सुगू जव नोति घिपाळ हो । साहिव सू मन माहिली दुख टेरि सुणाऊ हो ।—मीरां

उ०—३ आगोत्तर मुख कारणें, छत्ती रिघ छीडो आवास । हाय छोटि कुण करे, पेट माहिली आस ।—जयवांणी  
(स्थो० माहिली)

माही—देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ पोख हित वेळ गावी चरित पेमरा, मुरळिका सुणावो घोप माही ।—वां. दा.

उ०—२ आप तक आवणें ही जे नही देयस्या, बीच ही माही जे झाल लेयस्या ।—मारवाड रा अमरावा रो वारता

उ०—३ नखी जाणि मूळा जरी तास नाहीं, मिळी तामसी व्रित्ति राजसी व्रित्ति माही ।—व. भा

उ०—४ तरफ दुआ 'दारा' तणी दुआ 'सूजा' तरफ, पिडु लिया खजांना पार पखें । खून जिता करे 'जसो' बळ खाग रें, रोद इता राह माही राखें ।—नरहरदास वारहठ

उ०—५ मुख ऊपर मिठियाम, घट माही खोटा घडें । इसडा सू डकलास, राखीजें नही राजिया ।—रा. सो

माहीनी—देखो 'महीनी' (रू भे)

उ०—लूणजी नाळेर हरख करनै झालीयो । साही माहीमा रो थापीयो ।—पीठवे चाणू रो बात

माहीमाही—देखो 'माहीमाहि' (रू भे)

माहीली—देखो 'मायली' (रू भे)

उ०—इतरी सुणी ओर माहीली लोग हा-हां करि दोडियो ।

—मूरे सीवे फावळोत रो बात

(स्थो० माहीनी)

माहे—देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ चुगल फिरगी अत चतुर, विद्यातणा वखाण । पाणी माहे पलक में, आग लगावें आण ।—वां. दा

उ०—२ घर आगण माहे घणा, आसै पडिया ताव । जुध आगण सोहै जिकै, वालम वाम वमाव ।—वा. दा.

उ०—३ एक जगण जिण माहे आवें, कुळवतीमो माहा कहावें ।  
—र. ज. प्र

उ०—४ तद राह माहे स्त्री कवरजी जाय पातसाहजी रें पावें लागा ।—नैणसी

माहेमाहे—देखो 'माहीमाहि' (रू भे)

उ०—तीनू मकुआणा माहे सू निसरिया, माहे-माहे मवघ हुवी छे ।  
—वां. दा. क्यात

माहिली—देखो 'मायली' (रू भे)

उ०—१ तो कहो माहिली भेद रे ।—घरम-पत्र

उ०—२ जे खाविद निराठ आबरू सू राखिया, पेट काठा घपाया,  
मारवाह रो रुहाह मिट गई, तिण सू इण माहेलौ कोई रहै नहीं ।

—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

(स्त्री० माँहैली)

माँहै—देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ सोवा आद जोधपुर सोजत, च्यारू तरफ रहै चक्राकित ।

सेख रहै भट मेछ सनाहै, नूर अली जंतारण माँहै ।—रा रू

उ०—२ तरै देवी नागही कह्यो—ये सवारा सूता ऊठी, तरै  
पाँहरी पाष माँहै सू चावळ रगिया नीसरै तो साच कर जाणीजो ।

—नैणसी

माँहोमा, माँहोमाह, माँहोमाँहि, माँहोमाही, माँहोमाहे—१ देखो 'माँहो-  
माही' (रू. भे.)

उ०—१ उठे गुलाल अबीर रे २० गीर छाटे रे माँहोमा सह रे ।

भीजै नवला चीर रे २०, प्रेम वणावै नर नारी बहु रे ।—वि कु

उ०—२ किताईक वरसाँ माँहोमाँह मती कियो—पचायती कियो  
नू घणाँ वरस हुवा सो हमै निहचो करो, पचायती करणी आपै  
भूला क न भूला ।—वा दा ख्यात ।

उ०—३ माँहोमाहि ते लसकर दे मिलिया, सनद बद्ध सकळीया ।

टकारव लागे नवि टळीया, मड सह कोई मिळीया रे ।—वि कु

उ०—४ सु हाहलियाँ नै वागडिया माँहोमाहि खिसण थी ।

—नैणसी

उ०—५ सवल निबल ने भखे जीवा, वैर माँहो-माँहि देख ।

—जयवाणी

उ०—६ सखी री भति सीत परतु है माँहै, सब सोवत माँहोमाहे ।

—घ व प्र

माँहोमाह—देखो 'माँहोमाहि' (रू भे)

उ०—पछै ऐ ठाकुर माँहोमाह कहण लागा म्हे मारसाँ ।

—नैणसी

मा-सं० स्त्री० [स० मातृ, मा] १ जन्म देने वाली माता, जननी,  
अमा । (ह ना मा)

उ०—इण अवसर स्त्रीकसणजी मा ने वदन काज । आवै प्रणमी  
घरण युगल, वेठा स्त्री महाराज ।—जयवाणी

पर्या०—अमा, अमा, भाई, कूखधारण, जणी, जननी, जनयती,  
माता, मादर, माय, रछकरण, सवती, सवयती ।

२ माता की स्थानापन्न या माता के स्थान पर होने वाली  
स्त्री, विमाता ।

३ वृद्ध या आदर करने योग्य स्त्री, पूजनीय स्त्री ।

४ उक्त प्रकार की स्त्री के लिए सम्बोधन ।

[स०] ५ लक्ष्मी । (अ मा)

६ सीता । (अ मा)

७ दुर्गा, देवि, शक्ति ।

उ०—१ देवी काळिका मा नमी भद्रकाळी । देवी दूरगा लाघव  
चारिताळी ।—देवि.

उ०—२ नवी जन्म नै कूड कडीर न्हावै, महा सुद्ध व्है युद्ध मा नू  
नमावै ।—मे म

८ गौरी, गिरिजा, पार्वती ।

९ पृथ्वी । १० गौ, गाय ।

रू० भे०—मा ।

११ गति ।

अव्य०—१ मत, नहीं, न ।

उ०—१ जो तू चाहै मुक्त-फल, धूना मन धीरच्छ । तोख मान  
सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ ।—वा दा.

उ०—२ आगा चल पीछा फिरै, ताका मुह मा दीठ । दादू देखै  
दोइ दळ, भाग देकर पीठ ।—दादूबाणी

२ अन्दर, भीतर, मे ।

अल्पा०—माँवडली, मावडी, मावडी ।

मह०—मावड ।

मा'—देखो 'महा' (रू भे.)

उ०—हा हा पापण मा' हत्यारी रे, नही आणी दया लिंगारी ।

देखो राणी री कमाई रे, जियजो स्वारथ नौ सगाई ।—जयवाणी

माइ—देखो 'माता' (रू भे) (उ र.)

उ०—१ माइ जनक आता मिळण अतरा अंतर अंत । अतिजघ  
तीजो आवियौ भूप कवर 'भगवत' ।—व मा

उ०—२ करमादान पनरे कह्याजी, प्रगट अठारेजी पाप । जे मइ  
सेव्या ते ह्वइजी, बगस-बगस माइ बाप ।—स कु.

माइडी—देखो 'माता' (अल्पा, रू भे)

उ०—तू मत वरजै माइडी, साधा दरसण जाती । राम नाम हिरदै  
बसै, माहिले मन माती ।—मोरा

माइत—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—१ थर हर कर्प नेडा थका रे, अळगा पावै चैन । ओरा री  
कृणसी चले रे, न माने माइता रा वैन ।—जयवाणी

उ०—२ अब माइताँ व्याव की होंस कीनी छे । रामेसुर ब्राह्मण  
नै आग्या दीनी छे ।—बगसीराम प्रोहित री बात

माइतपण, माइतपणी—देखो 'माईतपणी' (रू भे)

माइल्ल—देखो 'मायी' (रू भे)

माइवाहक-स० पु० [स० मातृ-वाहक] लकडी मे लगने वाला कीड़ा, घुण ।

माई—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—१ माई वेठउ बाप पणि, सगण माई न मित्र । राजसमा  
नवि धीरीइ, लिखी चितारइ चित्र ।—मा का प्र

उ०—२ माई एहा पूत जण, जेहा 'ऊनड' जाम । दीधी सातू निव  
इम, जिम दीजै इक गाम ।—वा दा

उ०—३ मुणी में जिना आदि अन्नादि माई । अवतार ले मामडा वाम आई ।—मे म

माईजायो—देखो 'माजायो' (रू भे)

उ०—रामजी झूठा थे झूठा ना बोल । सावण आसा जी, माईजाये नीर के ।—लो गो.

माईत-स० पु० [म० मातृ पितृ + प्रा० माइ विङ] १ माता-पिता, मा-पाप ।

उ०—१ तद कवर वीकंजी कयो, ठीक है, आप माईत हो, न आपरो वचन मायें ऊपर है फुरमाईजै ।—द दा

उ०—२ इन्द्रा आपरे डील रै आपें तो माईता रा घणा ई हीडा करतो, पण नाणां री गरज तो नाणां सू ई मरती हो ।—फुलवाडी २ पूर्वज, बड़े-बूढ़े, बड़ेरे ।

३ वह वजुर्ग या वृद्ध पुरुष जो माता-पिता के समान ही आदर करने योग्य हो ।

४ मरक्षक, अभिभावक ।

रू० भे०—मावीत, माइत मायत, मावत, मावित, मावित्र, मावीत, मावीत्र ।

माईतपण, माईतपणी—स० पु०—१ माता-पिता होने का भाव, वात्सल्य, प्रेम ।

२ अपने से छोटे पर दया करने का भाव, बड़प्पन ।

३ अभिभावकत्व ।

रू० भे०—माइतपण, माइतपणी, मायतपणी, मावीतपण, मावीतपणी ।

माईय—देखो 'माता' (रू भे) (उ र.)

माईया—१ देखो 'माया' (रू भे)

उ०—देवी मथुरा माईया मोक्ष दाता, देवी श्रवती अजोघ्या अघ हाता ।—देवि

२ देखो 'माता' (रू भे)

माईरीलाल—स० पु०—१ वह व्यक्ति जो किसी कार्य के लिये अपने स्वाध को त्याग कर भारी जोखिम उठाने को तैयार हो, कठिन कार्य करने वाला ।

ज्यू—कृष्ण माईरीलाल ऐडो है सो ओ वीडो उठाई ।

२ हितेपी, शुभेच्छु ।

उ०—कोई माईरीलाल फकारी भरती तो या तो पेंला पाघडी मागती अथवा लुगाई टावरा वाळा नें तो राखण नें तैयार हो पण म्हारे जिमा वांडा कुनका नें नहीं ।—रातवासी

माउ—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—१ उणी री माउ तो जोगण हूई श्री समाचार धीरम सुणनं वंराग आयो ।—कल्याणसिंह नागराजोत बाहेल री बात

उ०—२ सवागड़ भचूकी री माउ आय पूछै, तो कहै—वे तो कद-

काई गया । तद ऐण नू वंराग आयो । माउ री जीव रह्यो न गयो ।

—कल्याणसिंह नागराजोत बाहेल री बात

माउडी—देखो 'माता' (अल्पा., रू भे)

उ०—काई रे करे छै वीरा माउडी, काई रे गावा रा लोग ।

—लो. गो

माउजी—देखो 'माजी' (रू भे)

उ०—१ म्हारा माउजी लावे छकियार ।—लो गो

उ०—२ बना किण विघ्न ओढाजी क घर मे थारा माउजी घुरा । वनी महला मे ओढो है नीरखाला थारी घनमपुरी ।—लो गो.

माउलउ—देखो 'माउली' (रू भे) (उ र)

उ०—घनुय कला माउलउ पढावइ, जीव दया नियचिति रहावइ ।—मालिभद्र सूरि

माउलाहो—वि० [म० मातुलीय] मामा का, मामा सम्बन्धी । (उ र)

माउली—स० पु० [म० मातुल] माता का भाई, मामा ।

उ०—मात न तात न माउला, वहिनर वधु न कोय । जिहां जिहां सज्जन आपणउ, रानि बेलाउल होय ।—मा. कां प्र

रू० भे०—माउलउ, माऊली ।

माऊ—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—एक डोकरी नै गाव री वस्ती रा सैं माऊ रा नांव सू आदर ।

पाखती चीताळे रा सैधा लोग उणु नैं माऊ कयनं वतळावे । डोकरी री मिजाज आकामा चढग्यो ।—फुलवाडी

माऊजी—देखो 'माजी' (रू भे)

उ०—१ डाढाळी सू रूडो लागे थळवट हदो देम । माऊजी सू प्यारो लागे देमाणा री देस ।—अज्ञात

उ०—२ इतरो माऊजी री लाड छोड'र बाई सिध चाल्या ?

—लो गो.

माऊली—देखो 'माउली' (रू भे)

माकद—स० पु० [स०] ग्राम का वृक्ष ।

२ उक्त वृक्ष का फल ।

३ इन्द्र ।

उ०—वीज तणउ जिम बाघइ चद, तिम बाघइ 'घारलदे' नद । मात पिता उमहइ आणद, देवलोक नउ जिम माकद ।

—कविवर सार

माकदी—स० पु० [स०] महाभारत युद्ध से पूर्व युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधन से मांगे गये पाँच गांवों में से एक का नाम ।

माक—स० पु०—अर्जुन का एक नामान्तर । (ह ना मा)

माकड—१ देखो 'मरकट' (रू भे)

उ०—१ खगा जीतणा घाव में दाव सेल्लै, मलगें तडा माकड़ां पीठ सेल्लै ।—व. भा

उ०—२ वंठी वागडियां चालडिया चाटै, कामळ नैं चकिया चकियां सू काटै । माकड माकड सी मोळी मुख मोळै, घरणी हिरणी लख हिरणी चख घोळै ।—ऊ का

उ०—३ जुबारी घर रिद्ध कस, माकड कठै हार । गह्ला माधे वेवडो कुसल वे केत्ती वार ।—पचदडी री वारता

उ०—४ और जोधार तो सत्रुआ रा गढ ऊपर नीसरणी देनै नीठ नीठ चढे अने माहुरे पती है सो गढ पर घावो कर चढे उठै इतरो कूद ने ऊपर जावै है के माकड (लिंगूर) घणा कूदण वाला होवै है पण वाने ही मेलै पीठ-(लारै मेलै) अरथात लिंगूर ही लारै रहे छै ।  
—वी स टी

२ देखो 'मत्कुण' (रू भे)

माकडा-स० पु० (व व) १ गाडी के 'भोदणो' पर थाटे के कुछ आगै लगने वाले लकड़ी के दो चोकीर टुकड़े जिनके दोनो ओर बड़े बड़े छेद होते हैं ।

२ ऊट के पुट्टे ।

उ०—माकडा भाड आखाडमल चाढथा ममती चालिया । सिधराज जाण भाजम मसत, हिगळाज मग हालिया ।—मे म  
रू० भे०—माकडा ।

माकडी-स० स्त्री०—१ पीठ ।

उ०—छोटी मूतराँ, चौडी माकडी, खुला क्यारा री ।

—फुलवाडी

२ कान का एक आभूषण ।

३ कूपे खोदने का उपकरण कुआ खोदते समय जब जमीन में फस जाता है तो, उसे निकालने का एक उपकरण ।

४ देखो 'चाखडी' (१ से ५)

५ देखो 'मकडी' (रू भे)

रू० भे०—माकडी ।

माकडी-स० पु०—१ पशुओं के पुट्टे की हड्डियों का सघीस्थल ।

२ देखो 'मरकट' (अल्पा, रू भे)

उ०—घोडा नै असवार पाच पांच वरछीया रा ठेका देवै छै ।  
काछी माकडा ग्यू लाफा भरै छै ।—पना

माकण—१ देखो 'मत्कुण' (रू भे) (उ र)

उ०—माय बाहा क्रम पौरादिक वेदही होय । गोमी माकण जुआ कीडा कीडी दोय ।—वृ स्त

२ देखो 'मरकट' (रू भे)

माकरी-स० स्त्री०—माघ शुक्ला मसमी जो पर्व दिन माना जाता है ।

मा'कल्प—देखो 'महाकल्प' (रू. भे)

मा'काळ—देखो 'महाकाळ' (रू भे)

माकूल-वि० [अ० मा'कूल] १ उचित, मुनासिब, वाजिव ।

२ उत्तम, उम्दा, अच्छा, बढ़िया ।

उ०—खावण पीवण री सगळो माकूल इतजाम पैला सू विह्योडो हो ।—फुलवाडी

३ जैसा आवश्यक, अपेक्षित और वाछनीय हो, यथेष्ट ।

उ०—लक्खी आपरा घर में वामणी रै वास्ते सगळो माकूल इतजाम कर दियो ।—फुलवाडी

४ योग्य, लायक ।

५ सम्म्य, शिष्ट । ६ शुद्ध ।

माख-स० पु० [स० मक्ष] १ मक्खियों का भुण्ड या समूह ।

२ गर्व, अभिमान ।

उ०—माख मे वाता वणावै है कैवै है—भाईडा अरु कै तो दोलडी लुगाई ल्यावा तो चोखी वात हुवै ।—दसदोख

३ नशा, मद ।

४ नाराजगी, क्रोध ।

५ पश्चाताप, पछतावा ।

६ देखो 'माखी' (मह, रू भे)

७ देखो 'माखी' (मह, रू भे)

माखण-स० पु० [स० मक्षण] १ दही को मथकर निकाला जाने वाला सार तत्व, जो अत्यन्त स्निग्ध होता है और जिसको तपाकर घी निकाला जाता है, नवनीत, मक्खन । (ह ना मा)

उ०—१ एकर एक कागसा रै माखण मीसरी लाग्योडी एक रोटी हाथ आई ।—फुलवाडी

उ०—२ सुरगा वेस, दूध, दही, छाछ अरु माखण सूलथपथ व्हेगा ।—फुलवाडी

पर्या०—तक्रसार, दधसार, नवनीत, नवोन्नति, नैगवीन, परघ्नत, मधुर, मेळसरुज, सरज, सारज ।

२ सार तत्व ।

रू० भे०—मक्खन, मखण, मखन, माकण, माकुण, माखण, माखन ।

अल्पा०—मखनी, माखणियो ।

मह०—माखणडी ।

माखणडी—देखो 'माखण' (मह, रू भे)

उ०—नागजी माखणडो सो तै लियो रै, वैरी, रह गई खाटी छाछ रै ओ नागजी ।—लो गी

माखणियो-स० पु०—१ एक प्रकार का कपडा ।

२ एक प्रकार का घास ।

३ एक प्रकार का पत्थर ।

४ देखो 'माखण' (अल्पा, रू भे)

उ०—माखणिया की पाळ वधा द्यो मारुजी, नीमडली सीचा द्यो काचा द्य से जी म्हा रा राज ।—लो गी

माखन—देखो 'माखण' (रू भे)

उ०—साधु हमारे हम साधुन के, साधु हमारे जीव । साधुन मीरा जो मिल रही है, जिमि माखन मे धोव ।—मीरा

माखी-स० स्त्री० [स० मक्षिका] १ पतंगे की जाति का प्राय समस्त ससार में पाया जाने वाला जीव जो प्राय खाने पीने वाले पदार्थों पर बैठता है । यह गद पदार्थों पर बैठकर सक्रामक रोग फैलाता है, मक्षिका । (उ र)

उ०—१ बुरी चुगल मुख मे बसे, आँखी रो नह भग । माखी वैसे  
स्वान मुख, भूल न वैसे भग ।—वा. दा

उ०—२ डोलु गोलु करइ, जे खावु ते खावु, सेख माखी भिणहण-  
तउ . . । व स

२ मधु-मखी ।

उ०—१ तीर ग्वाचन पान गोहँ लियो हो के माखी फूला रो रम  
चूसती देख लियो ।—फुलवाही

उ०—२ रम सचै माखी जुही, कीडी ज्यू कण्ठगम । घरै भेस जिम  
जीर वँ, वँस दकानाँ वास ।—वा. दा

३ बन्दूक की नाल के अग्र भाग पर बना हुआ नुक्का, जो निशाना  
साधने में सहायक होता है ।

रू० भे०—मकी, मक्की, मक्की, मखी, माखी ।

मह०—माख ।

माखीना'र—स० पु०—मक्की से मिलते जुलते आकार प्रकार वाला एक  
जीव जो प्रायः आश्विन मास में उत्पन्न होता है और मक्खियों का  
धिकार करता है ।

माखीमद—स० पु० [स० मधु+मक्षिका] मधु-मक्खी का मधुयुक्त छत्ता ।

उ०—कपण करै घन कोय, कोही कोही का पुरुस । जावँ वाघो  
जोय, माखीमव ज्यू मोतिया ।—रायसिंह सांदू

माखीमार—स० पु०—१ वह छोटा जानवर जो मक्खियों को मार-मार  
कर खाता है ।

२ वह छड़ी जिसके आगे चमड़ा या कपड़ा लगा होता है जिसके  
द्वारा लोग प्रायः मक्खियाँ उड़ाया करते हैं ।

३ समाज का बहुत घृणित व्यक्ति जो कजूस हो, मक्खीचूस ।

वि०—वह वस्तु जिसके द्वारा मक्खियाँ मारी जाती हो ।

रू० भे०—मक्खीमार ।

माखीमाळ, माखीमाळी—स० पु०—मधु-मक्खियों का छत्ता ।

उ०—दूजोही कही—चूदही रो ठोड डाला रै माखीमाळ टिरि-  
योही हो ।—फुलवाही

माखी—स० पु०—१ बड़ी मक्खी ।

२ सोना मक्खी ।

३ बड़ा अफीमची ।

उ०—ताकत डोलै तीसरा, माथरवाडा सोद । पैला घर पटकी  
पड़े, माखी रै मनमोद ।—ऊ. का ।

मागण—देखो 'मागण' (रू. भे.)

माग—स० स्त्री०—१ घोड़े की एक चाल विशेष ।

रू० भे०—मागण ।

२ देखो 'मारग' (रू. भे.)

उ०—१ करै दान कुरखेत में, मजन करै प्रयाग । मरै चुगल कासी  
महीं, मिटै न दोजख माग ।—वा. दा

उ०—२ बहै जातरी रात रो दीह वारा, घकँ चादवो माग रो  
खाग घारा ।—मे. म

उ०—३ जलहरि जन सजल करिया, दिमि दिमि रूध्या माग । न  
लहइ ऊगिउ आथगिउ, मेवता पोछ-पाग ।—मा. कां. प्र

१ देखो 'माघ' (रू. भे.)

मागडी—देखो 'मारग' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—छूटै मूठ हातरी आगडै सूमा पड़े छाती, गळा अथागडै घुजा-  
गडै पाणँ राव । देणाँ बीरताड रे मागडै राजसीग दूजा, राइ तनै  
पागडै लगाया राणँ राव ।—राणाभीमसिंह रो गीत

मागज—देखो 'मागण' (रू. भे.)

उ०—मागज घराँ वधावण मोटा, मोटी पाघ ममार मई ।

—द. दा

मागडी—देखो 'मारग' (अल्पा, रू. भे.)

मागण—देखो 'मागण' (रू. भे.)

उ०—राजए नदिय तूर मागण जग कलिख करए । सीकरि ए  
तणइ कमलि नदि मडपु जण मणु हरए ।—कवि ग्यान कलम

मागणहार, मागणवार—देखो 'मागणहार' (रू. भे.)

उ०—भाऊ भाट तणी मनि वात डोला तणी बसी मनि घात ।  
मागणहार उ दूहउ कहियउ, तिणि डोलइ दूहइ चिति रह्यउ ।

—डो. मा

मागणो, मागयो—फि० म० [स० मागण, मागयतिम्, मृगणाम्, मागि-  
तम्] १ खोजना, तलाश करना, (उ. र.)

२ अनुसंधान करना, शोध करना ।

३ देखो 'मागणो, मागयो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ तसु घरि बइसी राउ सा वाली मागइ । वात स वेढी  
वाहा पुण चीति न लागइ ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ त्रिमिउ करालिउ मागइ नीर, तातउ करी ते पाई कथीर ।

—वस्तिग

उ०—३ त्रसणा माडी रही नइ हसी, हिव होकर मागइ लापसी ।

—वस्तिग

मागणहार, हारो (हारी), मागणियो—वि० ।

मागिघोडो, मागियोडो, माग्योडो—भू० का० कृ० ।

मागीजणो, मागीजयो—कर्म वा० ।

भागध—स० पु० [स०] १ एक प्राचीन वर्ण सकर जाति जो वैश्य पिता  
व क्षत्रिय-माता से उत्पन्न हुई । इसका कार्य वशावली पढ़ना है ।

उ०—वळै भाग मेवगा लाग घारी समसत्ता । भागध वदीजणाँ  
सूत भदभूत निरत्ता ।—रा. रू

२ उक्त जाति का सदस्य ।

३ वदीजन, भाट ।

४ मगध देश का राजा ।

५ जरासंध का एक नामान्तर ।

६ मगध देश का निवासी ।

७ मगध देश की भाषा । (अ. मा.)

८ जीरा । ९ पिप्पली मूल ।

वि०—१ मगध का, मगध सम्बन्धी ।

रू० भे०—माह्व ।

२ देखो 'मगध' (रू भे)

उ०—नेपाल, अग वग कलिग तलिग मागध लाट करण्णाट ढाहल कनउज पचाल गोरजर --- ।—व. स

मागधक—स० पु० [स० मगध+अक] १ मगध देश का निवासी ।

३ मागध भाट ।

मागधी—स० स्त्री० [स०] १ मगध देश की प्राचीन भाषा ।

२ मगध की राजकुमारी ।

३ जुही, यूथिका ।

४ छोटी इलायची ।

५ घीनी, शक्कर ।

६ बड़ी पीपल ।

मागधेय—स० पु०—चुगीकर महसूल ।

मागनिसार—स० पु० [स० मार्ग+निष्कासन] निकलने का मार्ग, रास्ता ।

मागरवाळ—स० पु०—याचक, भिक्षुक ।

उ०—स्रवण सदेसा साभलै ढाढी किया प्रयाण । मागरवाळ जु भाविया, देमे साल्ह सुजाण ।—ढो मा

मागसिर, मागसिरि—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—१ मागु तुम्हन्इ मागसिर, जउ मुम्ह आणि प्रेमि । हृदय-कमलि रामा रही, त्याह म पाहिसि हेम ।—मा का प्र

उ०—२ मोटउ कूडउ मागसिरि वली विचारि जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी काइ विगोइ ।—मा का प्र

मागि—देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—राति चालइ राउ मागि सुरगह कुणवि मउ । दिवइ पुरो-हितु दाउ लाख हरइ विमनर ठवइ ।—सालिमद्र सूरि

मागिणहार, मागिणिहार—देखो 'मांगणहार' (रू भे)

उ०—१ माऊ भाट नै मागिणहार, सीख मागि चाल्या असवार ।

आहेडा मिसि साल्हकुमार, पहुचावी आव्यो तिणि वार ।—ढो मा

उ०—२ साल्ह कुमारनइ करी जुहार, करइ वीनती मागिणिहार ।

बिहु मासनउ अम्हसु बोल, करी आवी तुम्ह पासै डोल ।—ढो मा

मागियोडी—भू० का० कृ०—१ खोजा हुआ, तलाश किया हुआ २ अनु-सधान किया हुआ, शोध किया हुआ । २ देखो 'मागियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मागियोडी)

मागु—१ देखो 'माग' (रू भे)

उ०—अरे कुरुल केस अगनयणि ए, मागु भरवि सिदुरा । अरे नयण कटखे आहणइ, मिलि सवि सामल घोर ।—समुघर

२ देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—सीधु सिखडी तणउ तामु छेडीउ छलु साधीउ । पाय पराभव नइ प्रवेमि, गति मागु विराधीउ ।—सालिमद्र सूरि

माघ—स० पु० [स०] १ शिशिर ऋतु का प्रथम मास जो पौष मास के बाद व फाल्गुन मास से पूर्व आता है । यह १०वाँ सौर मास तथा ११वाँ चद्र मास माना जाता है ।

उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हू धूजी घरणीइ ढळू दिइ हरगाखी बाह ।—मा कां प्र

रू० भे०—माह ।

२ संस्कृत भाषा के एक लब्ध प्रतिष्ठित महाकवि ।

उ०—१ माडै कायव माघ मघि, पडित माघ प्रमाण ।—सू प्र

उ०—२ जैन भक्ति कुमारपाल नी, नगरी वरणना लका नी, पुरुस वरणना विस्णु नी, काव्य वरणना माघ नी, कविता कालिदास नी ।—व स

वि० वि०—इनका समय ईसवी की १०वीं शती मे माना जाता है ।

३ उक्त महाकवि द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य, शिशुपाल वध ।

उ०—कठै साख इण विघ कही, सुणि इम कहै सुजाण । माडै कायव माघ मघि, पडित माघ प्रमाण ।—सू प्र

४ कूद का फल ।

रू० भे०—माग, माघि, माघी ।

माघजी—स० पु० [स० माघ] १ ज्योतिषी ।

२ देखो 'माघ' । (२)

३ देखो 'मघवा' ।

माघव—देखो 'मघवा' (रू भे)

उ०—भुजगेस महेस दुजेस रिसी, नित पैं रज चाहत माघव रैं ।

—र ज प्र

माघवई, माघवती—स० स्त्री०—१ सात नरको मे से एक । (जैन)

उ०—घम्मा वसा सेला भजण रिद्धा ग्यात । मघा माघवई नारण ए नांमै सात ।—वृ स्त

[स० माघवती] २ पूर्व दिशा ।

माघवन—वि० [स०] इन्द्र द्वारा शासित, इन्द्र का ।

माघवाण, माघवान—देखो 'मघवा' (रू भे)

उ०—१ सुम्बवर सुराणा गो दुजाणा माघवाणा सुख मिलै । मह जिग मडाणा थाण थाणा दैत थाणा ठूठ ।—र ज. प्र.

उ०—२ वेद मे विघाता हरी सत री चडेस वाच, माघवान छोल औप रिखीकेस नाम ।—भगताराम हाडा री गीत

माघि, माघी—स० स्त्री० [स० माघ] १ माघ मास की पूर्णिमा ।

वि०—१ माघ की, माघ सम्बन्धी ।

२ माघा नक्षत्र से युक्त ।

रू० भे०—माही ।

३ देखो 'माघ' (रू भे.)

उ०—लागै माघि लोक प्रति लागी, जळ दाहक सीतळ जळण ।

—वेनि

माघीपूनम—स० स्त्री० [स० माघ+पूणिमा] माघ मास की पूणिमा जो माघ कवि का जन्म दिन माना जाता है। कलियुग का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना जाता है।

माडेची—देखो 'माडेची' (रू. भे.)

उ०—माथलडी सपीठी पीठी पातळी मां'जी माडेची मूमन। हावे नी रे घालीजे रे देम —लो गो

माडो—वि० [स० मद] (स्त्री० माडी) १ अशुभ, खराब, खोटा।

उ०—१ अरतिये राजा रो मूडो देवणा सू उगने गुगन माटा व्हिया, वो मूडो केरने पाछो मुडणी, मूडा माय सू बूकियो।

—कुलवाडी

उ०—२ कोठ-कुसळ रे कामा मे हाथ लगवणी ही माडो मानता।—दमदोख

२ निम्न कोटि का, घृणित, हेय।

उ०—मिनख मारणिया सू लोग वात करणी ही माडो काम ममर्ने।—दसदोख

३ मद्दा, मदा।

उ०—पै'ली वे विहाल की बात नै डाढी चोयो वगुवे, जिका ही पछे बी बात रो माडो चुगली करण लाग ज्यावे।—दस दोख

४ नीच, घुरा।

उ०—ममार में वाणियां ही पैलांतर विगाडणियां वटा माडा माणस है।—दमदोख

५ अनुचित, खराब।

उ०—१ चोया वाम सिद्ध होणे मे घणी ताल लाग पण माडा काम तो तुरता-फुरत पूरा हुय ज्यावे।—दसदोख

उ०—२ जुगरी जाण कारी राखतो यकी आपरे गांवडे मे माडो रीतरीवाजा मिटावण नै नोजुवाना रो सगठण करे हे घर करडा विचार लिया आपरे घर सू ही तोडण रो सरुपोत मतो करे हे।

—दसदोख

६ शोचनीय चिन्ताजनक।

उ०—मिपायां मरद रो माडो हालत देखी जद आख्या सू च्यार-च्यार चोसरा वरमाया।—दसदोख

७ दुगला-पतला, कमजोर। ८ बीमार, रोगी।

९ उदाम, विघ्न। १० अरुचिकर।

११ हटके दर्जे का, न्यून।

माच—देखो 'मोच' (रू. भे.)

माचणी, माचवी—देखो 'मचणी, मचवी' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ निम्नित केतउ चालइ, सस्त्र स्रमरहित केतउ घाउ वचइ दूरवल केतउ माचइ —।—व. म

उ०—२ म्हूँ तो मोच मोच मे आघी व्हेगी, मलीई आदमण थोडो घणोमोच तो यूँ ई राख्या कर, यूँ तो दिनी दिन राम जाणुं कीकर मार्च है।—कुलवाडी

उ०—३ सही प्रथिवी रही गहगही, साचइ कादग माचइ, पार-गणी नाचइ, नीपजइ नातइ घान, दमता प्रधान, नाघइ दुवान, भाद्रवइ ठूठइ गुगल।—व. म.

उ०—४ नेम्य छावइ अत्रुमारी मांठई, कठ पूरइ, गट पूरइ, घाय रचइ, निहाय माचइ करदत ताचइ ।—य. म

उ०—५ माच यमघा मुगळां, यां जुढा यग आळ। अत्रक अणीवा अमल ज्यू, विग नीधा रगुताळ।—रा. म

उ०—६ सोण छोळां रा नीच माचि रखा छै। नागद रिखहमें छै। थोर नाच रखा छै —पना

उ०—७ गजग मियाया हे मगी, ऊभा आगण बीच। नैणां छूटा चोमरा, काजळ माच्यो बीच।—अज्ञान

उ०—८ आप लोणां रे जांणा सू तो सगळा राज में कळिपारी माच जावेला।—कुलवाडी

उ०—९ भीठ मे एकर फेर गळदळ माची।—कुलवाडी

उ०—१० कलगी गोव ते अनिहि नाचइ, सचराचर जीव लोक माचइ।—नळ दशदती राम

उ०—११ मत विमयारस माचज्यो, वाचेज्यो एहवा गुरवण कि। दूही नै हित दाखवे माचा, तेह वहीजे सँग कि।

—व. य. प्र.

माचणहार, हागे (हारी), माचणियो—वि०।

माचिओरी, माचियोडी, माच्योटी—भू० पा० क०।

माचोत्रणी, माचोत्रवी—भाव० वा०।

माचवणी, माचवी—देखो 'मचणी, मचवी' (रू. भे.)

उ०—गजसिधोत वमघ नर गाढिम, तसमिण माचवियो रणताळ दु वयण वाडियो दुप्रा सु, प्रिमण परां काढी प्रतमाळ।

—कैमोदाम गाडण

माचवियोडी—देखो 'मचियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री० माचवियोटी)

माचियोडी—देखो 'मचियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री० माचियोटी)

माचोव—वि०—माता के साथ समीप करने वाला।

स० पु०—एक गाली विशेष।

माछदर—देखो 'मछदर' (रू. भे.)

उ०—वानी अग वलेट मेसळी भुजपर मेसी। ले माछदर नांम साहू तन कथा सेली।—पा. प्र

माछदरसिख—स० पू० [राज० मछदर + स० शिष्य] मत्स्येन्द्रनाथ का शिष्य, गोरखनाथ।

माछदर—देखो 'मछदर' (रू. भे.)

उ०—१ जग ऊपर ऐ जाव, अण कथ रा रहसी अमर। सतमी बगस सताव, चवू काठ माछदर मिख।—पा. प्र.



उ०—२ देवी वेद रै रूप तू ब्रम्ह धारणी, देवी जोग रै रूप माछवर  
जाणी ।—देवि

माछ-स० पु० [स० मत्सर] १ गाढ ।

उ०—अपसरा आण ऊभी तठे प्रधमगे, तनर तरवारिया वहे तर-  
सू । राखजै माछ थोड़ी घणो राठवढ, वीर वर अवर हू किंसी  
वरसू ।—ठा सुरताणसिंह री गीत

२ देखो 'माछर' (रू भे)

उ०—गाजीजै नह चीतगढ, बीट दळा बलियाह । गाजीजै नह  
गध-गज, माछ घणां मिलियाह ।—बा दा

३ देखो 'मच्छ' (रू भे)

उ०—१ पायू माछ पनग गज पखी, किही न बीजै सेव करत ।  
राठळ समद मळैतर रेवा, मान-सरोवर मन मानत ।

—ईसरदास बारहट

उ०—२ सामळ चप 'मान' हिंदवा सुरज, बीदग आखै बीसबिसा ।  
जळ तज माछ किसे थळ जावै, ज्या जळ जीवन बीया 'जसा' ।

—साहबदान सुरताणियो

४ देखो 'मच्छी' (मह, रू भे)

उ०—चीला गणन तजै द्रुम चदण, माछा गण नह तजै महण ।  
मोटा घणो अर्ब तो 'माना', पर पाळै तो बहापण ।

—राजूराम महह

माछर-स० पु० [स० मत्सर] प्राय कीचड़ में जलपर उत्पन्न होने वाला  
पतंगा जिसकी मादा अपने ढक से दूसरे का रक्त चूसती है ।

उ०—१ दळ अक्कर तोपा दगै सूकै नीर निधारण । गोळा लागै  
चीतगढ, मेगळ माछर जाण ।—बा दा

उ०—२ म्है तो एकलो ई हौ अर वो ई नी जंडो । म्हनै तो  
माछर नै मसळै ज्यू मसळ न्हाकता ।—फुलवाडी

रू० भे०—मछर, मच्छ, मच्छड, मछर, मछरि, मछरी, गछर,  
मछरि, माछ ।

अल्पा०—मछरियो, माछरियो ।

माछल, माछलउ—देखो 'मच्छ' (रू भे) (उ र)

माछलडी माछली माछली—देखो 'मच्छी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ माता देवबी टलवलइ जो, माछलडी विनु नीर । नारी  
सगली पाय पही जो मत छडी साहस घोर ।—स कु

उ०—२ थारी तो घाली गोरी रा सायवा, जळ में माछलडी हो  
जास्या म्हारा राज ।—लो गी

उ०—३ प्रीऊजी हास्य वर छू तह्यो, हथडा प्राण छाड सू अह्यो ।  
प्रीति काहा गई पाछली । जल विण किम जीवि माछली ।

—नळाख्यान

उ०—४ जाळ रै माय एक लांठी माछली छटपटाट करती बारै  
छाई ।—फुलवाडी

प० [स० मत्स्य] १ उदय होते सूर्य के मास पास,

उत्तर की ओर मत्स्य के आकार का प्रकाश मण्डल जो वर्षा का  
सूचक माना जाता है ।

२ देखो 'मच्छ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ खाय पछडा मीर खग, कटिया कोपट्टे । जाण उळट्टे  
माछळा, जळ तोछा तट्टे ।—द दा

उ०—२ तिहा मच्छ नै अमिलास सवरै, धीवर सायर कूलै । तमु  
द्रग वधन थयो माछली, जल प्रायक विण सूलै ।—वि कु

३ देखो 'मच्छी' (मह, रू भे)

उ०—तुछ जल ज्याही माछळा तडफइ, मड तडफइ तिए विध  
भाराथ ।—महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—माछली ।

माछि—देखो 'मच्छी' (रू भे)

उ०—माछि तु मत तडफडइ, वनसी लागी दत । बीछडिया मेळी  
नही, तो सरवर मा कत ।—ढो मा

माछिणि, माछिळी, माछिली—देखो 'मच्छी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ नारी तरावती नावडी, माहि मुनिवर कोइ । माछिणि  
सिउ मनसिद्धि मिलिउ, सद्गति पांमिउ सोइ ।—मा का प्र

उ०—२ मधु कर नइ जिम मालती, इद्राणी जिम इद्र । प्रीति  
पाणी नइ माछिली, जिम कमलिनी दिणइ ।—नळदवदती रास

माछी-स० पु०—मछी पकडने वाला व्यक्ति, धीवर, मछुवा ।

उ०—नीजामा नइ नायता, माछी मिल्या गुआर । मीणा मोची

मोकला, मुकी गया दुआर ।—मा का प्र

२ देखो 'मच्छी' (रू भे)

माछु—नही, न ।

उ०—रग देऊ वा नरा काछु रा पूरा काठा । रग देऊ वा नरा  
माछु देवण हिय माठा ।—ऊ का

२ देखो 'मच्छ' (रू भे)

माछो—देखो 'मच्छ' (अल्पा, रू भे)

उ०—नइ माहि माछा हीडइ ।—उ र

माज-स० पु०—मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

उ०—इवही कणइ केम आवाज रे, तु सह देव्यां सिरताज रे ।

माहरी राखीजै माज रे, इतलो हिज दीजै राज रे ।—वि कु

माजणउ—देखो 'माजण' (रू भे) (उ र)

माजणी, माजवी—देखो 'माजणी, माजवी' (रू भे)

माजणहार, हारी (हारी), माजणियो—वि० ।

माजियोडी, माजियोडी, माजियोडी—भू० का० कृ० ।

माजोजणी, माजोजवी—कर्म वा० ।

मा'जन—देखो 'महाजन' (रू भे)

उ०—खिरगोसियो उण कनै जायर कह्यो—मा'जन बीरा, थारी  
बोपार फळै, थारै घर लिछमी वघै, थारी परदेसा जस फैलै म्हनै  
थोडी खाड दे ।—फुलवाडी

मा'जनी—देखो 'महाजनी' (रू भे)

माजनु—देखो 'माजनी' (रू भे)

उ०—उरड अकुलाय आधा पड़े आय अत । पडावे माजनु लाज नू खो अत ।—ऊ का

माजनी—स० पु०—१ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

उ०—१ ए मिळनाई ऐंड झड परमाद फिनावे । कुळ मे घाले कळह माजनी घूढ मिलावे ।—ऊ का

उ०—२ माजनी चौहे आयग्यो, मूळीरो हाथ पडग्यो ।—दसदोख

उ०—३ भूता रो मान रा तो टका व्हेगा । दो वेळा माजनी गमायो ।—फुलवाडी

मुद्दा०—१ माजनी गमणी=वेईज्जती होना । २ माजनी गमाणी=वेईज्जती करना/कराना, फटकारना, भला बुरा कहना । ३ माजनी घूढ म मिळणी=वेईज्जती की हद होना । ४ माजणी पाडणी=फटकारना, भला बुरा कहना, धिक्कारना ।

२ लक्ष्म, गुण । (व्यग्य)

उ०—१ राणी राजा नै तो आपरै पेटा रो बात नी दरसाई पण आपरै माजना रो एक डावडी नै सगली बात बतायनै कह्यो—जे धू म्हारो ओ काम कर दियो तो म्है थनै गळा रो ओ नवलखी हार बगसीम कब्ला ।—फुलवाडी

उ०—२ तरै लखै माद करनै कह्यो—म्हे थाहरो माजनी जांणता हीज था । नै म्है थाहरे बोले आवा, नै म्हे थाहरो दीयो गढ़ ल्या ? म्हां नु परमेस्वर देसी ।—राव लाखै रो बात

३ बुद्धि, अक्ल । (व्यग्य)

उ०—काणियो काचर बोल्यो—म्है थानै आतां ई कह्यो हो के म्हारो नाव काणियो काचर है, म्हारा गाडी बलद पाछा सूप दी, पण थानै तो कुमत सूज्योहो हो । थारै सुद रै माजनां सू इतरो बिगाड करायो ।—फुलवाडी

४ अस्तित्व, हस्ती ।

उ०—बोल्यो—दिन करै सो वरी नौ करै । मिनख रो के माजनी है ? ऐ बोल राम कुवावे, सगो नाक चणा नही चबावे है ।

—दमदोख

५ मान, आदर, सम्मान ।

६ बडाई, तारीफ ।

७ कृत्य, काम ।

रू० भे०—माजनु ।

माजम—स० स्त्री०—१ भग मिलाकर तैयार की गई वादाम की चक्री, स्वादिष्ट मादक पदार्थ ।

उ०—१ मेघुळो प्रोहित माजम वसुमा लें छें, पगहै नै फूलमद वा प्याला दे छें ।—बगसीराम प्रोहित रो बात

उ०—२ मानडा भाड आवाडमल, चाक्या मस्ती चालिया । सिव-राज जाण माजम ममत, हिगळाज मग हालिया ।—मे म

उ०—३ ऐ वाडां काइ''करी इनी दाहू धिनां ऐस कीसी । अवे माजम नै तो रेवणघो आज तो मवाद दाहू कीई ल्यो ।—पना  
रू० भे०—माजुम, माजून माक्रम ।

माजरि—देखो 'माजरी' (रू भे)

उ०—पीत वर्णणक, काकवत् स्वर, माजरि नेत्र, उस्ट्रवत् लवहोट मुखकवत् लघु कर्णण ।—व स

माजरी—स० पु० [अ० माजरा] १ घटना ।

२ किसी घटना का हाल, वृत्तान्त, विवरण ।

३ मामला ।

४ देखो 'माजरी' (रू भे)

माजा—स० स्त्री०—१ आज्ञा ।

उ०—हु गाम तणों छु राजा, कोण लोपे माहरी माजा ।

—धरमपत्र

२ मर्यादा, सीमा ।

उ०—सायजादा हुता सग्म कर सैफळ, मिटी राखी भुजा जाण माजा । साज मकिया नही खळां दळां साजता, रण अकळ जीवता-सभ राजा ।—नाथो सादू

माजाई, माजायो—स० स्त्री० [स० मातृ+जाता] बहिन, सहोदरा ।

माजायो—स० पु० [स० मा+जात] (स्त्री० माजाई) सहोदर, भाई ।

उ०—मिळि भायां कियो मतो माजाया, दळ बळ छळ आया दुरित ।—बदरीसिंध धनोपसिंध भाटी रो गीत

रू० भे०—मांजायो, माईजायो, मातजायो ।

माजियोडी—देखो 'माजियोडी' (रू भे)

(स्त्री० माजियोडी)

माजियो—१ देखो 'माभी' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'माजी' (अल्पा, रू भे)

माजी—स० स्त्री० [स० मा+जी] १ वृद्धा स्त्री, बुडिया ।

२ वृद्ध या विधवा स्त्री के लिये आदर सूचक सम्बोधन ।

३ माँ, माता ।

उ०—१ माजी रोवे माय, बापजी रोवे वारे । भाई रोवे भला, सुखे नही किण रै सारे ।—ऊ का

उ०—२ आब अमोलक ऊजळां, सभर गुणां नत सार । न्याय हसा नग नीपजै, माजी कूल मभार ।—वा दा

४ किसी ठाकुर या राजा की माता ।

उ०—पार परै राजा प्रजा, पाजी न करै पाप । साजी ताजी साहवी, माजी रै परताप ।—आ. दा

५ दुर्गा, देवी ।

उ०—छऊ भैन छोटी दहू ओड छाजै, बिचै पाट राजीव माजी विराजै ।—मे म.

रू० भे०—मऊजी, मांजी, माउजी, माऊजी ।

अल्पा०—माजियो ।

६ देखो 'माभी' (रु भे)

उ०—कित राँ ऐक माजिया नु मार लीदा, इण भात दात तोडि पाछा दीना ।—पना

माजुम—देखो 'माजुम' (रु भे)

उ०—काले लीधी रीज कणि माजुम गळा डळा, सोय रही विण सामट्या साळु भरघी सळा ।—पना

माजू-स० पु० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष, जिसका फल औषधि में काम आता है ।

माजूत-स० पु० [अ० मज्जून] १ औषधि में काम आने वाला मोठा, अवलेह ।

२ देखो 'माजम' (रु भे)

माजूफल-स० पु० [फा० माजू+स० फलम्, स० मायाफल] 'माजू' वृक्ष का फल जो औषधि या रंगाई में काम आता है ।

वि० वि०—यह वात नाशक, चरपरा, गरम व शिथिलता को दूर करने वाला है ।

रु० भे०—माजूफल ।

माजो-स० पु० [अ० मौजा] १ ग्राम गाव ।

२ स्थान, जगह ।

माभ-स० पु० [अ० मवाज] १ राज्य, देश ।

उ०—दवदती रायनइ कहइ, छूत न रमोइ देव रे । अतिघणउ सहू काई नही, माभ नइ कीजइ सेव रे ।—नळदवयती रास

२ रिआसत ।

उ०—घोडी पिरथी री रूप छै । इसी घोडी माभ माही नही ।

—सूरे खीच काँधलोत री बात

३ सीमा, हद्द ।

४ मर्यादा । ५ छेड़ ।

६ देखो 'मध्य' (रु भे) (उ र)

उ०—हिया माभ उठै घण हूका, च्यार वरण अण्णी मग चूकां । —ऊ का

माभम-स० स्त्री०—१ एक नदी जो डूंगरपुर के पास पहाड़ों से निकलकर ईडर राज्य में होती हुई आमलियारा ठिकाने के पास वाकश नदी में मिलती है ।

२ देखो 'माजम' (रु भे)

माभळ—देखो 'माभळ' (रु भे)

उ०—१ दीह घणा माभळ दुनी, रुळियो देखे रूप । माघव हमे प्रकास मो, सिव ताहरी सरूप ।—ह र.

उ०—२ गाज इतै ऊखेड गज, माभळ वन तर मूळ । जागै नह थह में जितै, सभ हाथळ सादूळ ।—बा दा

उ०—३ गुण में जण जण कठ गवीज, नरमळ जू निरभर में नीर । जग माभळ बसतार घणै जम, हुप्रौ अमावड दुपा हमीर ।

—महाराजा मानसिधजी

माभळरात—देखो 'माभळरात' (रु भे)

उ०—अव्वल सकडी कोठडी दूजी माभळरात । तीजा सकडी ढोलियो, मतवाळी को साथ ।—लो. गी.

माभळि, माभळी—देखो 'माभळ' (रु भे)

उ०—ज्यू 'दुरंग' 'अगजीत' मुरदर माभळी । आहव आहव धग वग्यायी भुजवळी ।—किसोरदान बारहठ

उ०—२ कळ-हळ करसी केकीया, वळ-वळ खवमी बीज । म्यारा अलवल माभळी, तण पूळ रमसा तीज ।—मयाराम दरजी री बात

माभि—१ देखो 'मध्य' (रु भे)

२ देखो 'माभी' (रु भे)

माभिम—देखो 'माभळ' (रु भे)

माभिमरात—देखो 'माभळरात' (रु भे)

उ०—माभिमराति मोर तु, म करमि मूआ पोकार । सूती जांणी सटक दे, 'मारि' करइ मुभ मारि ।—मा का प्र

माभियो—देखो 'माभी' (अल्पा, रु भे)

माभिल—देखो 'माभळ' (रु भे)

उ०—वीरति मुख सूरति विलकुळिय, कमधज तेज कमळ कळ-मळय । किसन वरण माभिल कठळिय, सूरज किरण जांण भळ हळिय ।—गु रु व

माभी—देखो 'माभी' (रु भे)

उ०—१ कम हीमत कुळवाट, माभी मरण मलीण मत । कुळ ऊछेर कुवाट, पं'ला घर वाछै पिसण ।—बा दा

उ०—२ एक उण कवळा मोटोडा सूर विना डार भाड भाड हो गई—तात्परथ सूर वडो माभी जोघार डार उण री कुळ भाला री भार दुसमणा रा भाला री भार भाड २ घर घर रा होय गया ।

—वी स टी

उ०—३ वयणै वाकारियो, ताम माभी गज केसरी । पवन पूर ऊफणै, जळण जाणै वन अतरि ।—गु रु व

उ०—४ अत अछडां करण माभियां मारण, कटका अटक केविया काळ । भागा तूभ तणै भणकारी, 'गोपाळा' न करै गोपाळ ।

—बा दा

माभीपो—देखो 'माभीपो' (रु भे)

उ०—घाडै घाडै धन मा माभीपो माए, 'वीरम' ना देवां वळै लखवैर लाए ।—वी मा

माभी-स० पु०—हिजाजत, जावना ।

उ०—कूबर बाहिर आया घोडा च्यार तुरंग च्यार इहा आंण मेलिया सो घणी गाड सू माभै से रखाया ।

—गोड गोपालदाम री वारता

माट-स० पु० [स० मूद्-भांड] १ दही मयने की रेई ।

उ०—१ फजरा हयणी मी दवि मयणीं फुरती । माटा घर घर में घणु हरसी घुरती ।—ऊ का

उ०—२ घरघर मे घीणा घणा, घर घर घूमै माट । राग रग रलियावणी, घर पुड माभळ घाट ।—वां दा

२ मटका, भाण्ड ।

उ०—माछा-मास घणुत मिलइ, भरघास-मदिरा माट । आवइ अति ओवागता, मद-तरण गलि घाट ।—मा का प्र

क्रि० प्र०—उतारणी, फूटणी, भरणी ।

मुहा०—माट मटकण उतारणा=छोटा मोटा काम करना ।

१ मिट्टी का बना बड़ा पात्र ।

४ मालिक स्वामी ।

उ०—गोकलि तगा भरवाटा भागा मदा हीका नाट । वहिन मोरि गया चोरि यादवा स्या माट ।—रुकमणि मगळ

४ मुख पर चमडा चढ़ा हुआ मिट्टी का वरतन । (वाद्य)

स० स्त्री०—५ सेत की मेढ ।

६ देखो 'माठ' (रू भे)

७ देखो 'माटी' (मह, रू भे)

रू० भे०—मट्ट ।

माटइ—देखो 'माट' (मह, रू भे)

उ०—ते माटइ करिनइ मया रे, आणी मन उपगार । आवी नइ

भुक्त थी मिलउ, दरमण छी इक्वार ।—वि कु

माटकी—देखो 'मटकी' (रू भे)

माटकी—देखो 'मटकी' (रू भे)

माटली—देखो 'मटकी' (अल्पा, रू भे)

माटवी—म० स्त्री०—चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

उ०—माटवी खूबटी बूटमात, सचीयाय तू ही वाकळ वीसक ।

—रामदान लाळस

माटि—१ देखो 'माट' (रू भे)

उ०—१ मुकिण माहरी मरवगी, सतापइ सा माटि । जमालि-थिकी जाई नही, परठी वईठी पाटि ।—मा का प्र

उ०—२ निद्रा वमि ते राय दीठु ग्रहि पंनि मन चलिक । अपूरव माटि भूपति नू मन पखी माहा भलिक ।—नळाख्यान

उ०—३ मि एक तापम मुनि पीछ्यु विना ते अपराध । साप तेणि मून्हि जी कु कीघा माटि बाध ।—नळाख्यान

२ देखो 'माटी' (रू भे)

उ०—दीलइ माहरइ दव वलई, पव पही लिड वाट । मीत मद मोग्म थई फकि म फोकट माटि ।—मा का प्र

माटी—म० स्त्री० [म० मृत्तिका] १ पृथ्वी के ऊपरी सतह पर प्राय सर्वत्र होने वाला, चारों ओर के रूप में एक भुर-भुरा एवं मुलायम तत्व, जिसमें उर्वरा शक्ति होती है और पृथ्वी पर के समस्त प्राणियों एवं पदार्थों में इसका अंश होता है, धूल, मिट्टी, रज, रेणु ।

(उ र)

उ०—१ कचन कृ माटी कर जाणै, तिरिया कू पाखाण बखाणै ।

—सौ सुखरामजी महाराज

उ०—२ अइ मत्तउ रिमी जे रम्यउ, जल माहँ हो बाघी माटी नी पाल । तिरती मूकी काछली, तइ तारघा हो तेहनइ तत्काल ।

—स कु

उ०—३ धान माटी सरिखी लागै जइ सथा री करणी बाकी आळखी थोडी जाणी ।—मि द्र

वि० वि०—अलग अलग स्थानों की मिट्टी में रंग भेद व गुण भेद होता है ।

२ किसी स्थान विशेष की मिट्टी, जिसके वर्तन आदि वनते हैं ।

उ०—कथरा नै तो माटी री पारी खातर ई वैम को उपजतौ नी ।

—फुलवाही

३ पाच तत्वों में से वह तत्व जिससे प्राणियों का शरीर बनता है, पृथ्वीतत्व ।

उ०—१ खाटी सो दाटी घर खोदैं, साथ न चाली एक सिळी । पवन ज जाय, पवन विच पंठी, माटी माटी माहि मिळी ।

—प्रथवीराज राठोड

उ०—२ मांड्पा सो ढहि जावसी, माटी तरणा महांण । जन-हरीया जमराय का, आवैगा करवाण ।

—सौ हरिरामदासजी महाराज

४ ताजा 'खोदी' हुई मिट्टी ।

५ शरीर, देह ।

उ०—कपडो माटी सेठी लपेट भर कळाई सूधो हाथ लपेटियो हेकरसी ।—द वि

६ मृत शरीर, शव, लाश ।

उ०—१ वो खाधिया नै यू ई अटपटा सवाल पूछतौ—म्हारै गळाई यें लास नै बाळो क्यू नी ? थारं दफणाया पछै जिनावर माटी री सान विगाडै ।—फुलवाही

उ०—२ राजा रा रगमै'न रैं ठोकर मार्गनै आपरा मादा घणी री सभाळ खातर घरमभाळ मे पूगी तो वो साप रैं खावणा सू आनै मरियोडो सूतौ । घणी री माटी नै है ज्यू छोड नै उठा सू न्हाटी तो मारग म चोर खोसली ।—फुलवाही

७ मांस, आमिष ।

उ०—१ माटी मगावी तुज्म नइ देव, तेहनउ तू कर आहार रुहा पखी ।—स कु

रू० भे०—मट्टिया, मट्टी, माठि, मिटी, मिट्टी ।

अल्पा०—मट्टिया, मट्टिया ।

मह०—माट ।

८ देखो 'माटी' (रू भे)

उ०—तद खटोली उढी जठें राज दरवार कियो वैठी छैं । अर नायण री माटी मोर छड करै छैं ।—चोबोली

माटुघो-सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।

उ०—अवलखी ऊजळा, सीनेरी सामळा । राहुदारा रळा, माटुघा माडळा ।—मा वचनिका

माटे, माटे-क्रि० वि०—१ लिये, वास्ते, निमित्त ।

उ०—ते माटे उतावळा, राज पघारी एथ । निजर-दोलत निज सामनी, पांमोजे कही केथ ।—ढो मा

अव्य० [स० मात्र] केवल सिर्फ भर ।

उ०—२ 'करन'हर तमासे हेल माटे कियो, मुरांपत वि मासे वेल सारु ।—महाराणा राजसिंह रो गीत

रु० भे०—मटि, माटई, माटि ।

माटी-सं० पु० [स० मातिक] (रत्री० माटी) १ मिट्टी का बड़ा मटका ।

२ अपने से छोटे ऐसे व्यक्ति के लिए एक सम्बोधन निममे कोई विशेषता, चतुराई बड़प्पन, साहम या आश्चर्यजनक बात हो ।

उ०—हाळी तो माटी जाळकी री ठाडी छीया मे गोडा मार्ये पग घरने नेगम सूती हो ।—फुलवाडी

३ विवाह के बाद वधु को विदाई के साथ ही वधु के पिता की ओर से एक नए मटके में भरकर भेजी जाने वाली, मगद, खाजा, बही-पापड आदि वस्तुएँ । (परम्परागत)

उ०—मिठाई मगद र माटा काठा दाटा दे दे'र वूमी मोळी सू बाध्या । आप ढागे गते री टोपी लगाई, बडे भाई केसरिया पाग भुकाई ।—दसदोख

रु० भे०—मट्टी ।

माठ-सं० स्त्री० [स० मष्ट, प्र० मष्ट] १ किसी चालु कार्य को रोकने, बंद करने, समाप्त करने या पूरा करने की क्रिया या भाव अतः, समाप्ति ।

उ०—१ अवे थू वा'णी देवणी माठ करने थोडी टोळा री साळ-समाळ कर ।—फुलवाडी

उ०—२ भगवान जाणे इण आडत री अवे कद माठ आवेला ।

—फुलवाडी

२ सीमा, हद, सरहद ।

उ०—१ उण रा जिम्मा री नी कोई माठ है अर नी कोई सीव ।

—फुलवाडी

उ०—२ म्हने ऐ राजा पातसाह घणा गरीव लखावे, वयू के आरी सालसावा री कोई माठ नी व्हे ।—फुलवाडी

३ सतोप, सन्न, घोरज ।

उ०—१ म्है निरभागी म्हारी जीवती आख्या सू सगळा नै विछ-हतां देख्या, पण वेटी इण निजोरी बात मार्ये किण री जोर चाले । रोय रोय नै माठ मेली ।—फुलवाडी

उ०—२ आगणा मार्ये साप री मोटी अर तिरछी लीगटी देखने वा तुरत समझी के माप डसग्यो । पण अवे समझ मे आया ई काई व्हे । करम ठोकने माठ मेली ।—फुलवाडी

उ०—३ म्है अळगी ऊभने सुगू ला, थू जित्ते माठ कर ।—फुलवाडी  
४ क्षान्ति, चुप्पी, मौन ।

उ०—भूवाजी भालियोडा हाथ नै जमेडता थका कैवण लागा—म्हारी माथी मत पचा । माठ कर । भगवान थने लुगाई री ठोड कागला री कुपाळी दी है ।—फुलवाडी

५ खेत की मेड ।

उ०—१ माठ माठ खेत रा घणी नै आवती लखियो के कागली हिरण नै इसारी कर दियो ।—फुलवाडी

उ०—२ इत्ता मे डोकरी री खेत आयग्यो । मा रे माठ मार्ये आवता ई वेटी तो हळ फिटो करियो ।—फुलवाडी

उ०—३ आ कैयने वो स्याळियो तो खेत री परली माठ मार्ये जायने ऊभो रंगी ।—फुलवाडी

६ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

७ स्वाभिमान ।

उ०—पण विधवा मू'ती पागडी वा'रो मरद, माठ हाळी लुगाई दटे नही । मील अर साहम रे सागे मरदानगी सू मजूरी करे, आपरी टापरी स्वाळी ।—दसदोख

७ देखो 'माठी' (मह, रु भे)

रु० भे०—माठ, माट, माठि माठी ।

माठणी माठघो-क्रि० सं० [देशज] १ घडाई करके पत्थर को साफ करना ।

२ देखो 'मठारणी मठारवी' (रु भे)

माठर-म० पु० [स०] १ वेद व्यास ।

२ सूर्य का एक गण जा इन्द्र द्वारा सूर्य की सेवार्थ नियुक्त किया गया था ।

३ अष्टादश विनायको में से एक ।

४ ब्राह्मण ।

५ कलास, कलवार, शोण्डक ।

माठल-सं० स्त्री०—एक प्रकार की अगुठी ।

माठमो माठवो-सं० पु०—घडाई करके साफ किया हुआ पत्थर ।

माठसेडी, माठसेढी—देखो मठसेही' (रु भे)

माठा-सं० स्त्री०—एक मधुर रागिनी विशेष ।

उ०—रामसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चद घरु ।—वेलि

माठाकर-वि०—कजूस मूम ।

माठादिन-सं० पु० यो०—दुदिन बुरे दिन, दुख का समय ।

उ०—माठादिन मिटिया हवे, सेवक थयां सनाथ । सफळी सेवा चाकरी, आज थई अम नाथ ।—ढो मा

माठामनी-वि० यो०—कृपण, कजूस ।

माठावरण-सं० पु० यो०—भाग्य के बुरे लेख ।

उ०—सरण साधार अवमाप गयद सम, सत्रां परताप रा करण सूर । माप रा ब्रह्म माठावरण मेठवा, भेटवा आपरा चरण भूरा ।

—दुरगादत्त वारहट

माठि—१ देखो 'माठ' (रू. भे.)

उ०—बायहिया रत पखिया, बोलइ मधुरी बाणि । काइ लवतव  
माठि करि, परदेसी प्रिठ घाणि ।—ढो मा

२ देखो 'माठी' (रू. भे.)

माठी—स० स्त्री०—१ पुरुषों के हाथ में पहनने का मोन या चांदी का  
कडा, पुराने समय का एक आभूषण ।

उ०—गवासजी तो घणा मोद गू आपरै सिग्गेच, भुगट, बानां मे  
गुरकिया, गुडदा, भवरियो, गळा मे कठो डोरो, जीनेऊ अर  
हड्डमानजी रा फून, सोना रा बटण, हाथा मे माठिया अर आंग  
लिया मे बीटिया घड़ाई ।—फुलवाडी

२ बवच, सप्ताह । ३ आवरण ।

४ देखो 'माठी' (स्त्री०) ।

रू० भे०—माठि ।

माठू, माठू—देखो 'माठी' (रू. भे.)

माठोडो—देखो 'माठी' (अल्पा०, रू. भे.)

उ०—माठोडो घर मांय, जे फोडां सपति जुई । मोज दंग मन  
माय, रती न आवै राजिया ।—किरपाराम

माठो—वि० [म० मठ] (स्त्री० माठी) १ मद गति से चलने वाला,  
धीमा, मद गति वाला, शिथिल ।

उ०—१ हर रथ माठो होय, सकत रथ होय मयाणी । मित रथ  
देवें पूठ, घटै उत्तराय पयाणी ।—चोख बीरू

उ०—२ भूत तो काठी वचना वधयो । माठो बलद बुचकारा रै  
हैवा । आज तो नांमी भरै पढ़ी ।—फुलवाडी

२ सुस्त, आलसी ।

उ०—१ एक जाट ऐदी अर माठो अत इज घणो हो ।—फुलवाडी

उ०—२ वो माठो अर जिही घणो हो ।—फुलवाडी

उ०—३ देव-लोक अर पयाळ-लोक मे कीं कमी कोनी, की दुख-  
सताप कोनीं अर कीं कलेस कोनीं । दण खातर दोनां रा वामिदा  
निबळा, भेदी, माठा अर निकांमा लैगा है ।—फुलवाडी

मुहा०—माठो बलद बुचकारा रै हैवा=आलसी आदमी (प्राणी)  
वहाने और आश्वामनो का सहारा लेता है ।

१ घोट, घृष्ट, बेधर्म ।

उ०—ज्यू माठा रै बागै चांमठी ताता रै लागै घाव । ईण भात  
एण रजपूत नू पोतारता नै तीख चांख री वचन उचारता ईण रै  
तीख री वचन जाण लागी ।—प्रतापमिध म्हेकममिध री बात  
४ सदाम, मद ।

उ०—मोर-मउद माठा थया, अति उच्चरता हम । ऊवा चडिया  
अगमि-गिनि, वनि वनि फूल्या कास ।—मा कां प्र.

५ बुरा, खोटा, अवध ।

उ०—१ तीय करमनामा तरुण, नर सुभ करम नसाय । तीय तु  
आळे त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ।—बा दा

उ०—२ कुमति घणी मुक्त मन वमइ, गुमति थकी नही नेह ।  
माठी करणी मा पड्यउ, हु प्रवगुण नउ नेह ।—वि कु.

उ०—३ थें बागै माठा करम किया तिला मूं कयाट रै फुल उपनो ।  
—मि द.

उ०—४ माठी विचारी मन माय, दण ने ममाण भोम जे जाय,  
गुकोमल माध । त्रवा उतारो देह नो ए ।—जयवांगी  
६ न्यून, निम्न, नीचा (अर्थ) ।

उ०—भारे करी आफेठ तने जाय निम जीव करम रूप भारे करी  
माठी गति मे जाय ।—मि द

७ अनुचित, नाजायज ।

उ०—पाप्यां रो तु पगज पानै । गो माठी करै बमार्ट रै ।

—जयवांगी

८ गिर्या, अमत्य, झूठा ।

९ गदा, अमत्य ।

उ०—१ जे कोरुं देवें न्याय री मोन्द, चलती देवें अणूठी भोग ।  
मुख थी वोले माठी गाल ।—जयवांगी

उ०—२ मूटा मांगू माठी वोले, न गिणै धारी ने म्हारो रै ।

—जयवांगी

१० कडम, मूम, कृपण ।

उ०—भूप का मोड माठां मठ भान है । इंद मधवान रै अरण  
आथां ।—लीछमणसिंह गिगोदिया री गीत

११ मजबूत, दृढ़ ।

उ०—उतरै बात करता थका पना नै तो हाथ धालीया, हात  
पकड़ आपके पाछे बैमाण लोनी । माठी दुपटा री आठो दीनी ।

—पना

१२ कठिन, कठोर ।

१३ जवरदस्त, भयकर ।

रू० भे०—मट्टी, मठा, मठी, मट्टी, माटु, माडू ।

अल्पा०—मठोडो, माठोडो ।

मह०—माठ ।

माडवीक—म० पु०—मडप का उपरि कार्य-कर्ता ।

उ०—अनेक गणनायक दंडनायक राजेस्वर तलवर माडवीक कोट-  
विक मत्रि महामत्रि ।—व म

वि०—मडप सबधी, मडप का ।

माड—म० पु०—१ गर्व, अभिमान ।

उ०—हठिथी सिर हिंदुवा, माड मेले सूमांणा । आदि घेर समरै,  
सरस दिल्ली सुरताणा ।—गु रू व

२ ऊमरकोट राज्य का उत्तरी भाग एवं जैसलमेर के दक्षिण का  
एक लम्बा प्रदेश ।

३ जैसलमेर राज्य का एक नाम ।

क्रि० वि०—१ हठात, बलात्, जवरदस्ती ।

उ०—सूरा जमदाढ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग ।

—मे म

रू० भे०—माड ।

२ देखो 'माड' (रू भे) (७-८)

माडघर, माडघरा—स० स्त्री०—जैसलमेर राज्य का नाम ।

उ०—कमधज 'छाहै' कीध कोपियै, माडघरा ऊपर मच्छर ।

'घूह' हरो घूण खग धारा, सत्र लूटै वळीयो समर ।

—राव छाढा री गीत

माडपच—म० पु०—१ मुखिया, अगुआ, नेता ।

२ अपने बल या प्रभाव से पचायती करने वाला ।

माडां, माडाणी—क्रि० वि०—१ जबरदस्ती, बलात्, दबाव डालकर ।

उ०—१ तरै साहिव तो रहती न थो, पण सासरिया माडा राखियो ।—नैणसी

उ०—२ सातु मिळ सहेलीया, माडा कर मनुहार । मद पायो म्या-राम नै, ऊगायो अणपार ।—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ तरा राणो मानी नही अरु याने माडाणी मेलिया नै ऐ ठाकुर अजमेर आया ।—द दा

उ०—इण समे रा कापुरसा (कायरा) ने बिरदाय माडाणी जोतिया पिण गाढो किये सू ही खचियो नही ।—बी स टी

२ मन मार कर, मन के उपरांत, न चाहते हुऐ भी ।

उ०—१ मन्त्री रा वेटा री काम वा माडाणी ई करणी चावती, पण मन मे कळेस वधती ई जावै ।—फुलवाडी

उ०—२ सेठाणो काई जोर करती । उणने माडा चुप व्हेणो पडियो ।—फुलवाडी

३ स्वत ही, अपने आप ।

उ०—पाखती रा खोडा सू रात दिन चिरालिया सुणू तो माडाणी ई म्हारा मूडा सू चिरालिया निकळै ।—फुलवाडी

रू० भे०—मड, माडहिय, माडा, माडाणी, माडी, मांडे, माडेई, मांडे, माडोणी, माडाणी, माडे, माडे, माडेई ।

माडू—स० पु०—१ एक प्रकार की प्राचीन ढाल जिसके दो तरफ मध्य मे हिरन के सींग लगे होते हैं, जिनमे तेज नुकीले भाले लगे होते हैं । इससे वार भी किया जा सकता है और रक्षा भी ।

२ देखो 'माडू' (रू भे)

उ०—जग धित भूठी जाणणी, मूठी भीड म रखल । माया मेवो माडूवां, चगा चाखव चवळ ।—बा दा.

रू० भे०—माडू ।

माडे—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

उ०—१ कोड वचन खातर किया, पातर न करै प्रीत । आथ देख अकुळीण न, माडे कर ले मीत ।—बां दा

उ०—२ लोग अरज करी—मुजरै नू पधारी । दिन घणा हुवा सो

माडे सू मुजरै नू लेय गया ।—अमरसिंह गजसीहोत री बात

माडेचा—स० स्त्री०—जैसलमेर प्रदेश के भाटी वंश की एक शाखा ।

माडेची—सं० स्त्री०—१ श्रावड़ देवी का एक नाम ।

२ जैसलमेर के राजवंश (भाटी राजपूत) की कन्या ।

वि० स्त्री०—जैसलमेर की, जैसलमेर सम्बन्धी ।

उ०—माडेची घरा 'अना' कुळ मडण, वड दातार अभनमा 'बीक' ।

मोड वध्या आयो तू मारग, मोड वधा सकै मडळीक ।—द दा

रू० भे०—माडेची, माडेची ।

माडेचो—स० पु० (स्त्री० माडेची) १ भाटी वंश की माडेचा शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ परि जिम घरणि घरै पोढती, पडि तिम रिण पोडै खग पाणि । माडेचो जीवती मरती माणिण, माणिण गयो बिन्है कळि-माण ।—सुरताण मानावत री गीत

उ०—२ माडेचा माहेव का, देस किवाड 'किसोर' । जोडै 'राम' मुकद' का, आया दुद सजोर ।—रा रू

२ जैसलमेर का निवासी ।

वि०—जैसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी ।

माडें, माडेंई—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे.)

उ०—१ घकै चाढि कमधजां, मुलक ले लीघो माडें । जिण गाढे सजि जोर ओर कुण काधो वाडें ।—मे म

उ०—२ बिणजारो कह्यो—म्हारै बस पूगता तो म्हें घणो ई ना देवू, पण कोई माने जद व्हे । माडें ई गळै घाल देवै, जिण री तो म्हें काई करू ।—फुलवाडी

उ०—३ पंल पोत गरीव हिरण री ई वारी आई । माडेंई उणने रुकणी पडियो ।—फुलवाडी

उ०—४ पातसाह खातर राखे तो पछै सगळा रजवाडा नै माडें खातर राखणी पडै ।—फुलवाडी

उ०—५ पण आज भी जबरो मिनख घकियो, म्हनें देखनें डगडग हसै । इण मे की न की चाळो जरूर है । चीतो माडेंई घीमो पड-यो ।—फुलवाडी

माड—स० पु०—१ हठ, वहस, हा नां ।

उ०—ताहरा हाथी मगाय नजर कियो । ताहरा कवरजी कह्यो—हाथी री मोल फुरमावो । नायक कह्यो—कोई लेवा नही । यू घणो माड हुवो ।—पलक दरियाव री बात

२ देखो 'माड' (रू भे)

उ०—उतारत नीर खळा अवगाढ । महावल नीर चढावत माड ।

—सू प्र

३ देखो 'माड' (रू भे) (७-८)

उ०—सलोकां घुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माड रै राग सोभाग गावै ।—मे म



माढराछात-स० पु०—जैसलमेर का राजा ।

२ भाटी वश का क्षत्रिय ।

माढव, माढवी—देखो 'माढू' (रू भे) ।

उ०—१ भारी अगै उगै रा भारत, हेकण जीम प्रेतीप हुवा । मन मिलियोडा तिका माढवा, जीम करै खिणमाह जुवा ।—वा दा

उ०—२ तू ऊषा खेचै तिकै, जग ऊचा होय जाय । मन छाँचै तू माढवा, निकै रसातल जाय ।—ऊ का ।

उ०—३ जणा ही नू जडियोह, मद गाढो करि माढवा । पारस खुन पडियोह, रोया मिलै न राजिया ।—किरपाराम

माढाणी—देखो 'माढा माढाणी' (रू, भे)

उ०—मूरख 'काहे' सकत न मानी, बीरोटणी वखाणी । व्हेमिह-रूप आछटी हायल, मार लियो माढाणी ।—इद्रकुमारी वाई

माढो-म० स्त्री०—पत्तो के अन्दर की नम ।

माढू-म० पु०—१ मानव, मनुष्य, आदमी ।

उ०—हिल मिल सब सू हालणी, गहणी आतम ग्यान । दुनिया मे दम दीहडा, माढू तू मिममान ।—वा दा

उ०—२ चगे माढू घर रह्या, ए तीन अवगुण होय । कपडा फाटे रिण ववै, नाम न जाणै कोय ।—जगदेव पवार री बात  
२ मित्र, दोस्त, यार, प्रेमी ।

उ०—१ आळस मरडड अगनइ, आवड बहू वगाई । माढू ऊपरि माहरू, मन मरडी-नड जाई ।—मा का प्र

रू० भे०—माढू, माढव, माढवी, माढू ।

माढेची—देखो 'माढेची' (रू भे)

उ०—माढेची सोवै महिप, पाढेची खल पथ । काढेची दुख कवि-जणा, दाढेची रिम दत ।—वालावल वारहठ

माणो मावी—क्रि० म० [स० मा] १ नमाना । (उ र)

उ०—कामी कलि में आय कै, आपै माहि न माय । अगिली वोज न उतरियो, श्रीरु गयो उठाय ।—सो हरिरामदासजी महाराज  
२ निभना, निर्वाह होना, नटना ।

१ महन होना, बर्दाश्त होना ।

उ०—जिकी दात प्राची रा अधीम दजा कुमार मुजासाह रा उर मे न माई ।—व भा

४ हजम होना, पचना ।

उ०—माहो माहि विद्या आपी उलटि अग न माय । बीलु तेडी मारयि रितुपरण रा धरि जाय ।—नळाख्यान

माणहार, हारो (हारी), माणियो—वि० ।

मायोडो—भू० वा० कृ० ।

माईजणी, माईजणी—भाव वा० ।

मावणी, मावणी—रू० भे० ।

मातग-स० पु० [स०] (स्त्री० मातगी) १ हाथी, गज ।

(अ मा, डि ना मा, ना डि को, ह ना मा)

उ०—१ छती तू सती भूपती दच्छ छोणी, गती मत मातग तू हस गोणी ।—मे म

उ०—२ आवीया अलजइ घणइ, आळम माहइ गग । रैलि आविउ रक-घरि, मद-मातउ मातग ।—मा का प्र

उ०—३ मधु मद स्रावति मद गति महपति । मदीनमत मारुत मातग ।—वेलि

२ इन्द्र के हाथी का नाम, ऐरावत । (ना मा)

१ पीपल, अश्वत्थ ।

४ सवर्त्तक, मेघ ।

५ एक नाग का नाम ।

६ चाडाल, श्वपच, हरिजन ।

७ किरात, शूद्र ।

८ एक राक्षस का नाम जो कश्यप एव खया का पुत्र था ।

९ वार, व नक्षत्रो सम्बन्धी २८ योगो मे से चौबीसवा योग ।

१० देखो 'मतग' (५) (रू भे)

रू० भे०—मातग ।

मातगधू-स० पु० [स० मातग+राज० धू = मस्तक] गणेश, गजानन । (डि को)

मातगपुर-स० पु० [स० मातग+पुर] हस्तिनापुर, दिल्ली ।

उ०—विच माचोर भीलपुर वासी, 'सीहा' हरे मनाई सक । मातगपुर कटका मरवाहै, धणिया ताप ढीलविया घक ।

—राव तोडा री गीत

मातगर-स० पु०—हाथी, गज ।

मातगी-स० स्त्री० [स०] १ कश्यप एव कोववशा की नौ कन्याओं मे से एक । इमने हाथियो को जन्म दिया ।

२ वसिष्ठ की पत्नी ।

१ पार्वती, गिरिजा । (अ मा)

उ०—मात रमा सुण वान, कर जोडे वदन करू । हो मातगी मात, हू छू सेवग रावळी ।—गज-उद्धार

४ दम महाविद्याओं मे से नवी महाविद्या । (तात्रिक)

५ चढाल जाति की स्त्री ।

६ विजिया, भग ।

स० पु०—७ हाथी ।

उ०—ओडे वीर घटा धोक मातगी ताजान बाळी, रोडे वीज विखमी वाजान बाळी रोठ ।—हुक्मीचद खिडियो

मात-स० स्त्री० [अ०] १ हार, पराजय ।

उ०—पण उठे ई उणने मात खादणी पडती ।—रातवासी

क्रि० प्र०—करणी, खावणी, होणी ।

२ हस्ती, सामर्थ्य ।

उ०—१ चतुर किहा तू चातर्घी, वकै जु अईसी वात । हम सू डरै जो सुर असुर, मानव केही मात ।—प च चौ

उ०—२ दीठी सिव पुरी किसु राजा दिख, मानुसां तणी तखत कइ मात । इद्रा पुरी हुता रथ आवेइ, जीवन तणी करेवा जात ।

—महादेव पारवती री वेलि

३ गेहू के आटे को भून कर उसमे गुड की चासनी मिलाकर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ ।

रू० भे०—मातर ।

वि०—१ नगण्य ।

उ०—अमृत ईख रस आखा, भरिया कूड तराइ तइ मात । उण माहै इसी मो आचरता, ब्रह्मण्ड तणी जाणिजइ वात ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'माता' (रू भे) (अ मा, ह ना, मा)

उ०—१ बदवीर बजरग कीसवर मगलकारी, ममर मात सरसती विमल कविता विसतारी ।—रू

उ०—२ मोनू सुगंध मोनू मिळ्या, बेलिहारी इण वात री । सारवत सकति 'इदर' सुगं, महिमा करनळ मात री ।—मे म

उ०—३ देवी मात जानेसुरी अन्न मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा ।—देवि

उ०—४ देव कळा वन मात देवकी । कूख नीपना नद कुमार ।

—ह ना मा

उ०—५ पसरथ घपति हो लाल, नदन गुण निलयी । मात सरसती हो लाल विजया कत जयी ।—वि कु

उ०—६ विना नीर जहा कबळ है, विन विरखा वरमाळ । विना मास जहां रत है, मात पिता विन बाळ ।

—सोहरिरामदामजी महाराज

५ देखो 'मात्र' (रू भे)

उ०—१ घणी तरां छळ ओपण घारां । अत तिल मात गिणा अरि मारां ।—रा रू.

उ०—२ जुघ सहम गुणा खळ मिळै जात । मन गिणै तिका नू त्रिणह मात ।—वि. स

उ०—३ एकण नै हुलरायो नही कन्हैया । गोद न खिलायो खण मात रे ।—जयवाणी

उ०—४ सत्रु ग्राह ग्रामी, गयो हव सारा । रती मात हाथी, रही सृष्ट वारा ।—भगतमाळ

६ देखो 'मात्रा' (रू भे)

उ०—१ मुण पाय दह मात दीपक सुखदात । जीहा अठ्ठजाम सभार श्रीराम ।—र ज प्र

उ०—२ गुणपचासं कारतिक, उतरते बरसात । आयो खेजडले असुर, मेछ परकण मात ।—रा रू.

देखो 'माती' (रू. भे.) (उ र)

उ०—१ जिणि कोकिल क्रीडा कीधी चूतवनि, तेह किम लागइ पलास मनि, जु मधुकर मातउ मालती परिमल पूरि, ' ।—व स.

उ०—२ ताम हस्ति मदि मातउ गाजइ । जाम केसरि निनाद न वाजइ ।—सालिसूरि

मातजायो—देखो 'माजायो' ।

उ०—दिल्ली से नूरदी नवाब चालि आयो । भाई श्रवदूखान को मातजायो ।—शि व

मातवर—वि० [अ० मो'तवर] जिसका विश्वास या ऐतवार किया जाय, विश्वनीय ।

उ०—१ हाडा रा मातवर माणस आया ।

—गोड गोपालदास री वारता

उ०—२ इतरै दोय मातवर माणस आइया जे सताव पधारी फेर खांस रुकौ लेय आदमी निराठ जेहत लाइयो ।

—मारवाड रा भमरावा री वारता

२ सम्पन्न घनाढ्य ।

उ०—खीवसर गाव मे ती काई पण पडोस रा गावा मे ई कोई मातवर करसो इसी नही ही के जो सेठां री देणदार नही व्हे ।

—रातवासी

३ प्रतिष्ठित, प्रभावशाली, सज्जन ।

उ०—तद वदुवा रा माणस मातवर सांम्हा आइया ।

—ठाकुर जेतसी री वारता

४ आन-वान वाला, प्रतिभाशाली, पौरुषशाली ।

उ०—गोपालदास कही जे पच्चीस ही लेवो ती माणस दोय मात-वर राखी ।—गोड गोपालदास री वारता

रू० भे०—मातवर ।

मातवरी—स० स्त्री० [अ० मो'तवरी] १ 'मातवर' होने की दशा या भाव । २ विश्वसनीयता ।

३ साहूकारी । ४ गभीरता ।

मातवो [स० महात्मा] वह जैन यति जो शादी कर लेता है ।

मातमोम—देखो 'मात्रिभूमि' (रू भे)

मातम—स० पु० [फा०] १ मृतक के पीछे किया जाने वाला शोक ।

२ दुःख, गम ।

३ देखो 'महात्म' (रू भे)

मातमपुरसी, मातमपोसी—स० स्त्री० [फा० मातमपुरसी] मृतक के पीछे शोकाकुल व्यक्तियों को दी जाने वाली सांत्वना । शोकाकुल व्यक्तियों के सामने प्रगट की जाने वाली महानुभूति ।

उ०—१ वखतसिंहजी समायां री मातमपुरसी कराई, पछे मिळिया वात कीधी ।—मारवाड रा भमरावा री वारता

उ०—२ पीछे करमचद ती समायो । तद महाराजा फेर मातम-पोसी नू उणां री हवेली पधारिया ।—द दा

मातमा—देखो 'महात्मा' (रु भे)

उ०—माधु मातमा उगुने चेली मूड लियो । मातमा जो रै भइ-  
खजी लाठी हो ।—फुनवाडी

मातमी—वि० [फा०] १ शोक सम्बन्धी, शोक सूचक ।

उ०—चोपदार के मारफत रुधनाथमिह मे मिलने का इरादा किया ।  
उमने माल भर पहले श्रोरत के मरने की मातमी का बहाना  
लिया ।—दुग्गादत्त वारहठ  
२ देखो 'मातमपोमी' ।

उ०—पीछै करमचद बडावत रै घरै मातमी नू गया ।—द दा

मातमुप—वि०—१ आलसी, मुस्त ।

२ मूर्ख, मूड जडमति । (डिं को)

मातर—१ देखो 'माय' (रु भे)

उ०—१ तिल मातर भीत न बीत तणी, थमि हालत अग्रकिया  
हथणी ।—मे. म

उ०—२ प्रभाकर प्राणिय मातर प्राण । विभाकर वाणिय ते  
निर्वाण ।—ऊ का

२ देखो 'मायका' (रु भे)

उ०—आदित्य रमोड तपइ, चद्रमा घडी घडी अम्रत भरइ, यम  
पाणी बहइ, मात गमुद्र माजणउ करावइ, मातर आरती ऊतारइ,  
विम्बकरम्मा स गार करावइ ।—व म

३ देखो 'माता' (रु भे)

उ०—आज मातर भीम री श्रोरणी खेंबोज रह्यो है, अर मू  
जाणतो थकी मूटी लुकाय नै बैठ तो म्हारी मीत तो व्हे चुकी ।

—रातवामो

४ देखो 'माया' (रु भे)

५ देखो 'मात' (स० म्थी० ३) (रु भे)

मातग—स० म्थी०—१ धन, दीनत, सम्पत्ति ।

उ०—आविद्या असक दळ लिया अवरत रा, जिका 'उदी' कबर  
उमांमी जान रा । मार उदियानयन लूट ली मातरा, पुळ गया  
राण जगमिदरा प्रात रा ।—स्यामजी वारहठ

२ देखो 'माया' (रु भे)

३ देखो 'माता' (रु भे)

मातरी—स० पु०—मूत्र, पेशाव । (जैन)

उ०—विस्टा ने बनी मातरी ए नाक तणी मल मेल । बाय पित्त  
मनेममाण, सुक लोही राव चेल ।—जयवाणी

मातळ मातलि—स० १० [स० मातलि] १ महावत ।

उ०—१ हीमना भला अण्णला हत, फगळा सळा आधळा कूत ।  
परयळां दहां मातळां पील । डर बळा डळा वरघळा डील ।

—गु रु व

उ०—२ कटक, नाट्य गवरव हय गज वस्त्रम रथ पदाति रूपक  
तणा स्वामी नीन जगा रिडजम हरि एरावण मातलि दामिद्री

हरिणोगमेखी सरवगि सन्नाह पेहिरि, द्रढ़ कमा वचि, धनुखि गुण  
चडावी रह्या, ।—व स.

२ इन्द्र का सारथी, रथवान ।

रु० भे०—मातुलि ।

मातलोक—स० पु० [स० मृत्यु-लोक] १ मृत्युलोक, मनुष्यलोक ।

२ मातृभूमि, जन्मभूमि ।

मातवट, मातवटि—देखो 'मयावटि' (रु भे)

मातवर—देखो 'मातवर' (रु भे)

उ०—तद हरदान राजा सू अरज कीवी श्रोर बोल्पो—आदमी  
दोय कोई मातवर दूजा मार्थ देवो ।—पलक दरियाव री बात

माता—स० स्त्री० [स० मातृ] १ जन्म देने वाली मां, जननी, अमा ।

(प्र. मा)

उ०—सो सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनै कपूत  
हुवै ते उधा अवला बोलै । माता ने गठकारा री गाल बोलै ।

—मि द.

२ माता के स्थान पर मानी जाने वाली स्त्री ।

उ०—ज्यू दया रा घणी तो भगवान ते तो मुक्ति गया । लारै साध  
स्रावक सपूत ते तो दया माता रा यत्न करै । अनै था जिसे कपूत  
प्रगटिया सो राड २ कहि ने बोलावो ।—मि द.

३ आदरणीय या वृद्धा स्त्री ।

४ पार्वति ।

५ दुर्गा, देवी, शक्ति ।

उ०—१ एक कानी बडो काच, दूज कानी राम लिछमण री न्डी  
तमबीर अर तीज-चीये पाखा मे माताजी भेरुजी आपरी मोवी मे  
खप्पर खोले बैठघा है ।—दसदोख

उ०—२ थिर बीनोचिसथान, थान, घबळा गिर थावै । पोहो  
माता दीप ह, ऊठै माता नित थावै ।—मे म

६ लक्ष्मी । ७ गी ।

८ पृथ्वी, भूमि ।

९ दीनत, धन ।

१० शीतला या चेचक नामक रोग ।

उ०—गाला मायै माकळा मळ, जबाडा वैठ्योटा । सूको अग ठाळी  
चै'रा माता रा वण चैठ्योटा ।—दसदोख ।

११ नव दुर्गाएँ ।

१२ इन्द्र वारुणी ।

१३ जटामासी ।

रु० भे०—मग्नि, मांद्, माई, माय, माइ, माई, माईय, माईया,  
माउ, माळ, मात, मातर, मातरा, मातु, मात्रेई, माय, माय,  
माया, माया ।

अल्पा०—मांयटी, मांयली, मांवडी, माइडी, माउडी, मायइ, मायडी,  
मायडी, मावडली, मावडी, मावडी ।

मह०—मवठ, मातो, मायो ।

मातामता—क्रि० वि०—घूमते-फिरते ।

उ०—इयं भात मातामता अठं सूयार रं आया ।—चोबोली

मातामह—स० पु० [स०] (स्त्री० मातामही) माता का पिता, नाना ।

उ०—तिण समय मढोवरेस प्रतिहार नाहरराज तोमरावतसरो प्रसाद लेण दिली आयो अर मातामह री सभा रं अंतर दोहित्र कुमार प्रबोराज नू देखि मोद पायो ।—व मा

मातोपोठ—स० स्त्री०—वह बड़ी दावत या गोष्ठी जिसमें सभी प्रकार के भोजन बने हो ।

उ०—करै गरक दुजो कोटडिया, पाव धिरत नै जणा पचास ।

भूप 'अनोप' तणी भुजाया, मातोपोठा वा'रै ई मास ।

—नीवज साहव अनोपसिंह री गीत

मातोमुरगी—स० स्त्री०—१ घनवान व्यक्ति, सम्पन्न व्यक्ति । (व्यंग्य)

मातु—देखो 'माता' (रू भे )

उ०—पुनै चेत आसोज रा स्वेत पाखा, लुळै मातु नू जातरी लोक लाखा ।—मे म

मातुल, मातुल—स० पु० [स० मातुल] १ माता का भाई, मामा ।

उ०—१ निरख छटै रिपु ग्रह ससिनदण । कुळ मातुल सुख अरी निकदण । राजभवन सुर-गुर सुभ राजै । विसव एक छत्र आण विराजै ।—रा रू

उ०—२ चवै त्रप जायळ व्याकुळ साज । रह्यो रण मैदर मातुल राज ।—पा. प्र

२ घतूरे का पोधा ।

३ एक सर्प विशेष ।

रू० भे०—मातुलि ।

मातुलि—१ देखो 'मातलि' (रू भे ) (अ मा, ना मा)

२ देखो 'मातुल' (रू भे )

माते—देखो 'माथे' (रू भे )

मातेत—स० पु० [अ० मातहत] १ अधीनस्थ कर्मचारी ।

२ हाथ के नीचे कार्य करने वाला व्यक्ति, सहायक ।

वि०—१ आज्ञाधीन रहने वाला ।

२ पराधीन ।

मातेती—स० स्त्री० [अ० मातहती] १ 'मातहत' होने की दशा, अवस्था, या भाव ।

२ अधीनता ।

माते—देखो 'माथे' (रू भे )

मातो—वि० [स० मत्त] (स्त्री० माती) १ मोटा-ताजा, स्थूल काय ।

उ०—अधिक करइ आवाज रे, राता माता रे हस्ती घूमता रे ।

—वि कु

२ हट्ट पुष्ट, तदुस्त ।

उ०—घबला मे माता घणा, उले छोटी सिंगडियां जाण रे लाल ।

दोनू बराबर दीसता, तू एहवा रिखम आण रे ।—जयवाणी

३ मस्त, उन्मत्त, मतवाला ।

उ०—१ निसि पति नारी मोहन गारी, रोहणि रग राती । प्रभु करणी परणी तजि तरुणी, अद्भुत गुण करि मातो ।—वि कु.

उ०—२ तुरा तोखै मेळवा लोह तातो । मरेवा तणी होडरी कोड मातो । वरस्सोह वध्वावळे आक आडो, लखै थाट जानी हुम्मी 'भीम' लाडो ।—गु रू. व

उ०—३ ताईया सेनि वाडो विचै 'ऊद तरण, मघप रगि रमै मैमत मातो ।—तेजसिंह सेखावत री गीत

४ मद-मस्त नशे मे घुत्त, गकं, लीन ।

उ०—१ हरि रस पीया जाणियै, सो मतवाळा होय । मद रस का माता फिरै, 'हरीया' चित्त न कोय ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ पीवै पिलावै राम रस, माता है हुसियार । दादू रस पीवै घणा, ओरों को उपकार ।—दादूवाणी

५ घायल ।

६ अभिमानी, अहंकारी, गर्वीला ।

उ०—उच्च जाति मद एक महाकुल मद सू मातो । लाभ तरणै मद लोल, तेम तप मद सु तातो ।—घ व अ

७ प्रसन्न, खुश ।

८ बहुत दिनों तक पड़े रहने के कारण सहाय देने वाला, वदवू-दार । (घृत, तेल आदि)

९ बलवान, शक्तिशाली ।

१० भयंकर, भयानक ।

उ०—१ घोम पिड वरद्वियो वेध मातो घरा । खार खुद राम रिण हाथ लागा खरा । पाण सज मेलिया मांण ह्वय पाघरा । मिळै दहवाट ग्या थाट मढोवरा ।—द दा

उ०—२ घिखि सोर धूवर घूवा-धार । आत्रत मिळै तव अघकार । रांमायण भारथ रूप सुद्ध । जोधपुरे मातो खुरम जुद्ध ।

—गु. रू वं

११ जवरदस्त, जोरदार ।

उ०—आतुर दहू आगरै आया, दहू दिस काळ भडां दरसाया । पर 'मुहकम' जिम लख पहातो, महाप्रळै असुरां घर मातो ।

—रा रू

उ०—२ बसू मास कादम मचै असत परवत वणै, रुधिर मिळ सरतपत हुम्मी रातो । अजोव्यानाथ दसमाथ रावण अहग, महा वे ओर भाराथ मातो ।—र रू

१२ सघन, घना, गहरा ।

उ०—१ कमळ धीय ससि-कळा, कळा वडती जग वदै, कळाहीण खळ हुवै, जेम निस पूनिम वदै । भुज विसाळ लकाळ, वरण भाळाहळ सुदर । भरि माते भाद्रवै जाणि जगो भासकर ।

—गु रू वं

१५ सगीत मे गीत और वाद्य मे समय का निरूपण ।

१६ कान की वाली ।

१७ एक आभूषण, रत्न ।

रु० भे०—मत, मत्त, मात, मातर, मातरा ।

मात्रि-वि० स्त्री० [स० मातृ] माता की, माता सम्बन्धी ।

मात्रिक-वि० [स०] १ मात्रा सम्बन्धी, मात्रा का ।

सं० पु०—२ मात्राओं से बनने वाला छन्द ।

३ देखो 'मात्रक' (रु भे०)

मात्रिका—देखो 'मात्रक' (रु भे०)

मात्रिभासा, मात्रिभासा—स० स्त्री० [स० मातृभाषा] १ माता द्वारा बोली जाने वाली भाषा, जिसे बालक माता की गोद में सीखता है ।  
२ वह भाषा जो अपने देश या मातृभूमि में बोली जाती है, राष्ट्रीय भाषा ।

मात्रिभूमि—स० स्त्री० [स० मातृ-भूमि] वह स्थान जहाँ जन्म हुआ हो, स्वदेश ।

रु० भे०—मातृभूमि, मातृभूमि ।

मात्रिस्ति—स० पु० [स० मातृ-रिष्ट] अशुभ लग्न में सत्तान जन्म ने के कारण माता-पिता पर आने वाला सकट का एक दोष ।

(फलित ज्योतिष)

मात्रोमुख—स० पु० [स० मातृ-मुख] मूढ़ या मूर्खजन । (भ्रम भा०)

माथ—१ देखो 'माथी' (मह, रु भे०)

उ०—कुछ अनेक करे निज सुघारै काथ नै । नामतो माथ दसमाथ रघुनाथ नै ।—र ज प्र.

२ देखो 'माथै' (रु भे०)

माथइ—देखो 'माथै' (रु भे०)

उ०—१ माडिया उत्तवग जियइ द्रू माथइ, नाम जपता एक निमख ।  
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ आया परधान आगळै ईस्वर । गिर माथइ वडठ गिर-मेर ।—महादेव पारवती री वेलि

माथइयो—देखो 'माथी' (अल्पा, रु भे०)

उ०—नायो मूमल माथईयो रे मेट सु हांजी रे कडीये रे । रालया मूमलडी केसडा, म्हारी जग मीठी मूमल ।—लो गो

माथउ—देखो 'माथी' । (उ र)

उ०—एकतर ताप सीयउ दाहू, उखघ धिरण जायइ थइ माहू ।  
दूखइ नही माथउ पग गोडउ, नित नाम जपउ लीनाकउडउ ।

—स. कु.

माथडी—देखो 'माथी' (अल्पा, रु भे०)

माथणी—देखो 'माथणी' (रु भे०)

माथलियो—देखो 'माथी' (अल्पा, रु भे०)

उ०—न्हायो मूमल माथलियो रे मेट सु हांजी रे, कडियां तो

रालया मूमल केसडा म्हारी जगमीठी मूमल, हालै नी भे घालीजै रे देस ।—

माथसरी, माथासरी—देखो 'माथासरी' (रु भे०)

माथाकर—क्रि० वि०—ऊपर होकर, ऊपर से ।

उ०—लुगायां, टावर अर वूढा-ठाडा सुणियो जका री ई माथी अर डील सुन्न व्हैगी, जाणें वारें माथाकर वा'ण वेंगी व्है ज्यू ।

—फुलवाडी

माथाघोवण, माथानावण—स० पु० [स० मस्तक + घावन, मस्तक + स्नान] १ प्रसव के कुछ दिन बाद किसी शुभ दिन को किया जाने वाला प्रसूता का स्नान ।

२ घी और छाछ मिला हुआ सिर घोने का पानी ।

माथापच, माथापची, माथाफोड, माथाफोडी—स० स्त्री०—१ किसी कार्य के लिये किया जाने वाला दिमागी श्रम, मगज-पच्ची, सिरपच्ची ।

उ०—दरवाजा सूमा तणा, मूढ़ा तणा हियाह । खुलिया माथापच किया, सो नह सामझियाह ।—बां दा

२ प्रपच, भ्रष्ट ।

उ०—पण तडकै ऊठतां पाण थाने सगळो जोखम सूप देवूला ।

म्हारा सू आ माथाफोडी नी व्है ।—फुलवाडी

३ परिश्रम, मेहनत ।

उ०—१ चिडीमार कह्यो—म्हें नी मारू तो काई, आनै कोई न कोई तो मारैला ई । पछे म्हें ई क्यू चूकू । आज तो घणोई माथा-फोडी करी, तो ई ओ एक तीतर हाथ आयो ।—फुलवाडी

उ०—२ भाणू रे जावण री बात सुणतां ई भूत री तो काळजी बैठग्यो । उणरें जाता ई फेर वा माथाफोडी करणी पडैला ।

—फुलवाडी

४ बहस, हुज्जत ।

उ०—१ मोद मचै कर चडिया माया, माथापच नह मोद मचै । रच थारा घरका रा रूपग, रूपग म्हारा काय रचै ।—बां दा ख्या

उ०—२ बीसू भगडा भट्यां सू पूरी माथापच अर छाती-पची करता-करता मोसर रे दूहे नै मसा पार घाल्यो ।—दसदोख

माथायली—वि० (स्त्री० माथायली) ऊपर वाला, ऊपर का ।

उ०—१ चोर चोर रा हाका रे सागें मूढा माथायली घडचो आगो फेंक ताचकी तो साम्ही दीवाणजी ऊभा । नगर सेठ, राज व्यास अर कविराजा ऊभा ।—फुलवाडी

उ०—२ खांधा माथायली घोटडी विद्यायनै वं चरू खाली करियो ।

—फुलवाडी

माथारखी—स० स्त्री० [स० मस्तक + रक्षिका] छिपने का स्थान, सुरक्षा की जगह ।

उ०—काळींकर री पहाड वडी गांव सू कोस पछम दिमा  
लागो कोस ५। माह पाणी घणो, भाड घणा नास भाज नू वडी  
माथारणी ।—नैणसी

मायावटी—देखो 'मायावटी' (ॐ भे)

मायासरो, मायासिरी—म० पु०—१ वीचोवीच का ऊपर का स्थान,  
शिखर ।

२ उदगम स्थान ।

उ०—१ पवार री पंतीम माय, त्या माहे एक माय भायला री,  
भायला री मायासरी गाव रोहिमी मगरा नीचे वळी छे तठे नै  
विभागची नू ।—नैणसी

उ०—२ एक छतीस वम री थापना हुई नै मायासिरी कहिनै  
वतायो । वळे रिखभदेवजी मु दोय राह चाल्या ।—रा व वि  
३ किमी मकान, टीवा, पर्वत आदि का मयमे ऊपर का शिरा, चोटी ।  
४ अन्तिम मजिन ।

५ किमी वण का आदि पुरुष ।

६ अत, छोर, हृद, मोमा ।

उ०—मोजत थी कोम ७ व्यापारी मिरियारी मलमियावावडी ।  
डगू रं मायासरी मेग रा गाव ।—सोजत ७ मडळ री वात  
७ पूर्वजो की जन्मभूमि, पूर्वजो का उदगम स्थान ।

ॐ भे०—मयामरी, मायमरी, मायामरी, मायाहरी ।

८ देखा 'मयारी' (ॐ भे)

मायासून—स० पु० [म० मस्तक+यून्य] एक प्रकार का घोडा जिसके  
मस्तक मे भवरी (चक्र) न हो । (अशुभ)

मायासूल—स० पु० [म० मस्तक+शूल] शिर दर्द, शिर मे होने  
वाली पीडा ।

उ०—हरे लोग वन टाडिया, सूत ही सादूळ । जे सूता ही जागता,  
सबळा मायासूल ।—वा दा

मायाहरी—देखो 'मायामरी' (ॐ भे)

मायोवी—म० पु०—गाडी के जूए के नीचे बाधा जाने वाला भैस के  
वच्चे का चमटा ।

माथुर—म० पु०—१ कायस्थों की वारह शाखाओं मे से एक ।

२ मथुरा मे रहने वाले चतुर्वेदी ब्राह्मणों की एक जाति ।

माये, मायै—क्रि० वि०—१ ऊपर, पर ।

उ०—१ अग नावे गाहण अमह, रिण माये रजपूत । आवघ  
नाने प्राचमू, दासी केरा पूत ।—वां दा

उ०—२ अग प्रमाग रा तैर मायै अग चाहमागा री चक्र अरबु-  
टाचळ री मग्णी रं समुख पाघरी ही घकाव छे ।—व मा

उ०—३ फागण री महीनी अर चांदणी घट्ट रात । नीलकंठ गाव  
मायै डोड वोतन री नमी चढथोडी ।—रातवागो

उ०—४ औरगसाह छत्रीसं आयी, उर राव राण लागी अस-  
हायो । सस्या विण लीधा दळ साथै, मारग पडे पहाडा मायै ।

—रा. रु

उ०—५ ताहरा सरप विल माहै सू नीमर नं 'चूडं' मायै छय कर  
वैठो ।—नैणसी

क्रि० प्र०—आणी, करणी, दूटणी, दैणी, घरणी, बाधणी,  
माडणी, लैणी, होणी ।

मुहा०—१ मायै आणी=किमी की जिम्मेदारी पर पडना, हमले  
के लिये चढकर आना । २ मायै करणी=सामान लेकर पैसा  
वाकी रखना, ऋण लेना । ३ मायै जीव दैवणी=विशेष प्रेम  
करना, निछावर होना । ४ मायै दूटणी=विशेष कृपा करना,  
तुष्टमान होना । ५ मायै तूटणी=देखो 'मायै दूटणी' । ६ मायै  
तूट पडणी=हमला करना, वार करना । ७ मायै बाघ जैडी=  
चतुर, होशियार, किसी के धरु मे न आने वाला । ८ मायै  
मडाणी=कर्ज अपने नाम लिखवाना । ९ मायै राखणी=अपनी  
ओर कुछ बाकी रखना, किसी का प्रभाव मानना । १० मायै  
लैणी=किसी कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना । ११ मायै  
हाथ फेरणी=प्राप्तिवाद देना । १२ मायै हाथ होणी=मरक्षण  
मिलना । १३ राम नै मायै राखणी=ईमानदारी से कार्य  
करना । १४ सिर आख्या मायै=विशेष मान्य । १५ हाक  
मायै हाक मचणी=चारों ओर से हल्ला होना । १६ हाथ मायै  
हाथ घर वैठणी=निकम्मा या वेरोजगार होने की स्थिति, प्रयत्न-  
शील न होने की अवस्था ।

२ मस्तक पर, सिर पर ।

उ०—१ ज्या जस छय तणावियो, मायै जगत मभार । जिकै छय  
घर जाणणा, सुदतारां सिणगार ।—वा दा

उ०—२ डोकरी कह्यो—म्हारै मायै भार छै, ये उतरनै ल्यो ।

—नैणसी

उ०—३ एकर बी बळदा री जोडी खरीदण सारू मेळै जावतो ही ।  
मायै बाजरी री पोट उखणियोडी ही ।—फुलवाडी

उ०—४ धूप मीत वरखा मायै सहै ।—देवजी बगडावता री वात  
३ आसरे, सहारे, निर्भर ।

उ०—आविये जेण ससार री व्हे उदो, मूदो मव बात री मेह  
मायै ।—घ व म

क्रि० प्र०—वैठणी, रैणी, होणी ।

४ मरोमे, विद्वाम पर ।

उ०—पूछ्यो—के आ कित्ता अन्याव री बात के प्राण बचाया  
जिएगा ई वो प्राण नेवण री बात करं । धू ई बत्ता, ओ न्याव  
थारं मायै ई छूट्यो ।—फुलवाडी

५ निक्ट, पास, नजदीक ।



उ०—वा तो सोनल रं हूकारी भरिया पछै अणुजेज नाडी माथे पुगी ।—फुलवाडी

६ अक्सर पर, मोके पर ।

उ०—मोटै पागडाळो लोभी पिहल ई परिवार में वेटी रं जलम माथे सदाही सीतुड़ी, गोरली, पारती, रुकडी, रामली, हाळा नावटा राखतो ।—दसदोख

रु० भे०—मत्थ, मत्थे, मत्थै, मथ मयै मथ्य, मथ्यई, मथ्यै, माते, मातै, माथ, माथइ, माथउ ।

माथी-स० पु० [स० मस्तक] १ मस्तक, शिर । (अ मा )

उ०—१ भुज दुहुवा बल वीस भुज, कल दस माथा काट । तँ दोघो दसरथ तणा, दससिरघर दहवाट ।—वा. दा

उ०—२ किया जाग जोडा खडै पंज कावै । अडा-भीड आकाम माथी अडावै ।—गु रू व

मुहा०—१ माथी उतरणी=शिर की पीडा कम होनी । २ माथी ऊँची करणी=विद्रोह करना, गर्व करना, आवाज उठाना । ३ माथी ऊँची नी करण देणी=दबाकर रखना, काम से लाद रखना । ४ माथी कलम करणी=शिरच्छेद करना, गर्दन काटना । ५ माथी गिरणाटी खावणी=चक्कर घाना । ६ माथी चढ़णी=शिर दर्द होना, गर्व या अहंकार बढ़ना । ७ माथी नवावणी, माथी निवावणी=प्रणाम करना, नमस्कार करना, हार मानना । ८ माथी भवणी=चक्कर घाना । ९ माथी मुहाणी=साधु होना, अधिक या फालतू खर्चा करना, केश कटवाना । १० माथा मे कबोही हालणी=जोर का शिर दर्द होना, अनुचित कार्य करने की प्रेरणा होना । ११ माथा मे खावणी=नुकसान उठाना । १२ (पगा मे) माथी रगडणी=क्षमा याचना करना । १३ माथी लुकावणी=छुप कर बैठना, शर्म करना, घर मे रहना । १४ माथी हलकी पहणी=शिर दर्द कम होना, चिंताओं से मुक्ति पाना । १५ माथी हिलावणी=इन्कार करना ।

पर्या०—उतमग, उरघमूळ, क, कमळ, धू, अकुटक, ममतक, मुड, मूड, मूरघा, मोळी, रुड, वरग, सिर, सीस ।

२ मस्तिष्क की विचार शक्ति, बुद्धि, चित्त ।

उ०—१ अकल रा बैरी इत्ती तो माथी लडावणी ही के डिगली विखरता ई थारो डील उघड जावैला ।—फुलवाडी

उ०—२ दग्गी जाण्यो परभात री वगत राजा करण री वेळा कुण माथी लगावै ।—फुलवाडी

मुहा०—१ माथी ठणकणी=सदेह पैदा होना । २ माथी घूणणी=भोच या चिंता करना, पछताना । ३ माथी पचावणी=व्यर्थ प्रलाप करना, शांति भंग करना । ४ माथी भवणी=चित्त का सतुलन बिगडना, चक्कर घाना । ५ माथी फिरणी=विवेक खोना, अनुचित कार्य, हरकत या बात करना ।

६ माथी भिडावणी=बहस करना, हुजमत करना । ७ माथी लडावणी=बहस करना, झगडा करना । ८ माथी हलकी होणी=निश्चित होना ।

३ मन स्थिति, विचार ।

४ मस्तक का ऊपरी भाग, खोपड़ी ।

उ०—के इत्ता में वो अणुछक उछळियो । छात सू माथी टकरायी ।—फुलवाडी

मुहा०—माथा री मालपूवी होणी=अत्यधिक मार पडनी, वजन या चोट के कारण मस्तक की हालत बिगडनी ।

५ मस्तक के ऊपर की केश-राशि ।

उ०—१ सुधराई सू लोका काढ नै हलदी मिन्नी री माथी गूथियो ।—फुलवाडी

उ०—२ पछै इमेसा वा उण मू माथी सुलभावती ।—फुलवाडी

मुहा०—१ माथी गूथणी=केशों को सुव्यवस्थित कर बांधना । २ माथी गूथणी=केशों को व्यवस्थित बघवाना । ३ माथी मुहाणी=मस्तक के सभी केश कटवा कर रुड-मूड होना । ४ माथी सुलभावणी=केशों के द्वारा केशों को सुलभाना ।

६ मुख या शिर की आकृति या चित्र ।

७ किसी वस्तु का ऊपरी या अग्र भाग ।

८ एक प्रकार की सवारी ।

रु० भे०—मत्थ, मत्थै, मत्थो, मय, मयो, मथ्य, मथ्यइ, माथइ, माथउ । अल्पा०—माथइयो, माथडो, माथलियो ।

मह०—माथ ।

८ देखो 'मातो' (रू मे )

माद-म० पु० [स० माद] १ नशा, मद ।

२ हर्ष, आनन्द ।

३ अभिमान, अहंकार ।

म० स्त्री०—४ खलिहान में भूसे भहित अनाज का सवा डेर जो अनाज की वालों को कुचल कर एकत्र किया गया हो ।

उ०—मिट्टिया री गाईटी गाहियो ती ई टोळा री तो खुड बिहियो नीं कोई खुडको । नायण आपरै हाथा सू सगळी माद उफणी पण ओठाववा गे तो बुड बिहियो नीं कोई बुडको ।—फुलवाडी

५ देखो 'मादा' (रू मे )

मादक-वि० [स०] १ नशा देने वाला, नशीला ।

२ मस्ती व आनन्द देने वाला ।

स० पु०—१ मादक पदार्थ, शराब आदि ।

उ०—परजा पालण पुत्रों सम, केहण प्राण कपूत रा । मादक भलीण मेले न मुख, प्रिय लक्षण रजपूत रा ।—ऊ. का.

मादकता-स० स्त्री० [स०] १ मादक होने की दशा या भाव ।

२ नशा । ३ मस्ती ।

४ आनन्द । ५ नशीलापन ।

मादडेचा-स० पु०—चहुवाण वश की एक शाखा ।

रु० भे०—मादरेचा ।

मादर-स० स्त्री० [म० मातृ, फा० मादर] माता, मां, जननी ।

(डि को.)

उ०—विदर पिदर जाणुं नही, मादर विदरा मूळ । राखै भ्रगणत रग रा, दिल री कुसी दुकूल ।—वां दा

मादरचोद-वि०—१ माता के साथ कुकर्म करने वाला, मां के साथ व्यभिचार करने वाला ।

२ नीच, निकृष्ट ।

स० स्त्री०—एक प्रकार की गाली ।

मादरजात, मादरजाद-वि० [फा० मादरजाद] १ जैसा माता के उदर से बाहर आया वंश ।

२ जन्म का, पैदाइशी ।

३ वस्त्रहीन, नंगा ।

४ मगा, सहोदर ।

५ मूर्ख ।

मादरेचा—देखो 'मादडेचा' (रु० भे०)

मादळ, मादल-स० पु० [म० मर्दल] १ पखावज या मृदग से मिलता-जुलता एक वाद्य । (उ र)

उ०—१ अद मादळ वाजै अदग अउव भति उपग । निरुपै गीत नादग, जस न जिमै ।—गु रु व

उ०—२ माती ऊहाडां दरसे मादळ सी । देई वीलोई वरसे बादळ सी ।—ऊ का

उ०—३ मेघाडवर छत्र तणउ आडवर, सीकरी तणउ झमाल, झलवा तणी उमाल, भेरि तणे भाकारि, झल्लरी तणे भात्कारि, सख तणे भोकारइ, तिधिल तणे दोकारि, मादल तणे धोकारि, डोल तणे डमडिमाट, —।—व. स

उ०—४ सिव मग सन्मुख थाज्यो, घप मप धो दों । भर हर भों भौ मादल वजाज्यो ।—घ व ग्र

२ डोल ।

उ०—१ आरवी वव मादळ उभै, धुवै नाद वादळ घजर । मो नू वताय वेढीमणा, नाह कठी टेढी नजर ।—मे म

उ०—२ तलिआ तोरण ऊभीआं घरि घरि बांधीआं ए वनर बालि । मुहरइ मादळ रणकीआ तिहि नाचइ ए नवरणि बाल ।

—हीराणद सूरि

१ मृदग ।

उ०—नाचती गोपी अहा क्रिष्ण गाता, मादळ वश महुयरी वाता । हरिनी रमति ते हीइ आधि, अह्यनड वनवयरी रो आधि ।

—चतुरभुज

४ न उप्पण न शीतल, शीतोण्ण । (खाद्य पदार्थ व भोपध)

रु० भे०—मंदळ, मट्ठ ।

मादळियो, मादलीयो-स० पु०—१ चांदी या सोने का एक आभूषण जिममे कोई मयित वस्तु रखी जाती है । यह गले में लटकाया

जाता है या भुजा पर बांधा जाता है ।

उ०—१ गळा मे तीमणियो, आड, पटियो, हांस, हायलो, कठी, दुस्सी, काठली, मादळिया अर कठपूतळिया रो हार' ।

—फुलवाढी

उ०—२ कानिइ उगनिउ झलहलइ, कोटिइ नवसर हार । माद-लीआ डोढी भजइ, गरसली कालीउ सार ।—नळदवदती रास

उ०—३ पितरां रा फूल घडीजै सो पितरां रा फूला में मढाई हो जो तथा मरने भूत होवे तरै प्रेत रो जय मादळिया में तथा चौकी में मढाईज जो ।—वी स टी.

२ ताबीज, गढा ।

उ०—भूतणी काढै, जमी मे वूरै, जिद जरू करै, खेजडै में कीलै है । भोपरी छाया झोळावै, चिमठियां बाधै, धुयकी नाखै, माद-लिया मढावै ।—दसदोख

१ ऊट के भ्रगले पावो मे बांधी जाने वाली 'नाल' का एक भवयव ।

४ रहट पर कूए की ओर लगाया जाने वाला एक लकड़ी का डडा ।

५ मुखिया ।

६ मित्र या दोस्त ।

रु० भे०—मादळियो ।

मह०—मट्ठ ।

७ देखो 'मादळ' (अल्पा, रु० भे०)

उ०—म्हे तो आंगण गार गिलोवस्या, म्हारी विरधी रा कोडां, चोखो रे मादळ धुल रह्या । रग राती रे मादळियो थारो रे सबद सुहावणो ।—लो गो.

मादलीओ—देखो 'मादळियो' (रु० भे०) (व. स.)

मादिक-स० पु०—मादक पदार्थ, मद्य ।

उ०—अद फूल सुगध, बर्ध सारत्रि पान मादिक । रत्त चक्क सहास, आमास पासि रमणियो ।—रा रु

मादा, मादिन-स० स्त्री० [फा० माद] १ नर का विपर्याय, स्त्री जाति का प्राणी, जीव ।

२ स्त्री, औरत, नारी ।

उ०—१ सुरत्त तु हीज तु हीज सबद । मरदां मादां वीच मरद । —ह र.

उ०—२ धुवी चराका हा दिन घीलै, मादिन सोर मचायो । नाद सुवाद्यन पत्ति निमादिन, सादिन नही सुहायो ।—ऊ का.

वि० [स० मद] १ सुस्त, झालसी ।

२ रोगी । ३ कम, थोडा ।

उ०—चचल चपला सी चितवन चिरताली, निरखै निगमागम नागम निरताली । मादा मरजादा जादा मदमस्ती, वेली झलवेली छेली छदमस्ती ।—ऊ का

रु० भे०—मादी । मह०—माद ।

मादियो-स० पु० [स० मध्यस्थ] गहरा एवं लंबा छेद करने का एक कीला विशेष ।

वि०—१ मस्त ।

२ लुच्चा, लफगा, उद्द ।

रू० भे०—माधियो ।

मादिलर—स० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

मादी—देखो 'मादा' (रू भे )

उ०—मेले पग महा भ्रष्ट अखड़ा, रहा प्रिय राचदा है । पद दुरस  
प्रमादी मुरसद मादी, महन्त पुरस माचदा है ।—ऊ का

मादीकड़कम—स० स्त्री०—पुरुषों के कानो मे पहनने का एक गोल  
आभूषण ।

मा'दीप—देखो 'महादीप' (रू भे )

मादू—१ देखो 'माहू' (रू भे )

२ देखो 'माहू' (रू भे )

उ०—दुरधर डका दे वका द्रढ धाया, उठिया उद्योगी उद्दिम उम-  
गाया । कित है ववोई उडिया कलकत्तो, मादू मुरधरिया करियो  
मिल मतो ।—ऊ का

मा'देव—देखो 'महादेव' (रू भे )

उ०—ठाकुरजी स्त्रीगगाम्यामजी रो मिंदर पाखी उखेलाय नवो  
करायो, सिखर वदी पोळ नै सूरजजी रो मिंदर नै मा'देव रो मिंदर  
करायो नै दोळो पेडकोटो पको करायो ।—मारवाड री ह्यात

मादो, मादो—स० पु० ] प्र० माह ] १ वह गुण या तत्व जिससे मनुष्य  
कुत्र करने या ममभूते मे समर्थ होता है योग्यता, सूक्ष्म-बूझ  
लायकी, तमीज, विवेक ।

२ मृष्टि की उत्पत्ति का मूल तत्व, प्रकृति ।

३ वह मूल पदार्थ जिससे कोई दूसरा पदार्थ बना हो ।

४ व्याकरण मे शब्द की व्युत्पत्ति ।

माद्री—स० स्त्री० [स०] मद्र राजा की पुत्री, कुरु राज पाण्डु की द्वितीय  
पत्नी तथा नकुल व महदेव की माता ।

रू० भे०—मुद्री ।

मा'द्रुम—देखो 'महाद्रुम' (रू भे )

माद्रेचा—स० स्त्री०—चोहान वग की एक शाखा ।

माद्रेय—स० पु०—माद्री के पुत्र नकुल व महदेव का नामांतर ।

माधव—स० पु० [स०] १ ईश्वर, परमेश्वर, नारायण, विष्णु ।

(नां मा, ह ना मा )

उ०—१ माधव दम दम हेक भ्रिड, ऐ बारह श्रादीत । एक एक  
तो जिम भवर, 'जेहा' कुण जग जीत ।—वा दा

उ०—२ निरमोही निरलज्ज सुण, काहे हुओ निकाज । माधव  
धिरियां माहरी, कहां गमाई लाज ।—गजउद्धार  
[स० मा—धव] २ श्री कृष्ण । (प्र मा )

उ०—निसदिन जनमाठम आठम गमनाही, माधव जनम्यो कै मरियो  
जगमांही । कूडा पूजारी कूडी कथ कीनी, देवण बांन मे पंजीरी  
दीनीं —ऊ का

३ इन्द्र ।

४ कामदेव का सखा, वसत ऋतु ।

५ वैशाख मास ।

६ परशुराम ।

७ मालिक, स्वामी ।

८ एक राग विशेष ।

९ ऋग्वेद के भाष्य कर्ता, संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान जो मायण के  
पुत्र मा सायण के भाई थे ।

१० उत्तम मन्वन्तर के मनु का पुत्र ।

११ भृगु कुल का एक गोत्रकार ।

१२ भौत्य मनु का एक पुत्र ।

१३ तालध्वज नगर के राजा विक्रम का पुत्र एक राजा ।

१४ यदु राजा का पुत्र एक यादव राजा ।

१५ एक धार्मिक ब्राह्मण ।

१६ मधु राक्षस के वंशज ।

१७ देखो 'माधवाचारी' (रू भे )

उ०—माधव सावन भरठ मढायो, खारो मुख लै धणी खिढायो ।  
छाक पियो जिण पेट छुढायो, भारी पाणी जन्म भढायो ।—ऊ का

रू० भे०—माधो, माधव, माहव ।

अल्पा०—माधवी, माहवी ।

माधवमास—स० पु०—वैशाख मास ।

उ०—वरस अठारह सत्तावीस मे रे, माधवमास मभार । ऊभल-  
द्वादसी दिवसे थापीया रे, विव अनेक उदार ।—वृ स्त

माधवरित, माधवरितु—स० स्त्री० [स० माधव + ऋतु] वसत ऋतु ।

उ०—माधवरित वैशाख में स्त्री 'अजमाल' भ्रमग । राणी भाली  
पगणियो, धणी खुमाली भग ।—रा रू

माधवाचारी, माधवाचार्य—स० पु० [स० माधव + आचार्य] १ ऋग्वेद  
के भाष्यकर्ता एक प्रसिद्ध विद्वान ।

२ एक वैष्णव धर्माचार्य ।

रू० भे०—माधव ।

माधवी—स० स्त्री० [स०] १ चमेली की जाति की एक प्रसिद्ध लता  
जिसमे सुगन्धित फूल लगते हैं ।

उ०—फूलत बेल विरछ मानती माधवी । लहलहे कुज कुज  
विकसैं ।—रसीलेराज री गीत

२ तुलसी

३ मिश्री ।

४ मधु से बनाई जाने वाली एक शराव विशेष ।

५ दुर्गा ।

६ दूनी, कुटनी ।

७ श्रोत्र जाति की एक रागिनी । (सगीत)

८ सर्वथा छंद का एक भेद ।

- ६ नहुष कुनोत्पन्न राजा ययाति की कन्या ।  
 १० रथवज राजा के पुत्र धर्मवज की पत्नी ।  
 ११ पुरुषुत्र जनमेजय प्रथम की पत्नी ।  
 १२ स्कन्ध की अनुचरी एक मातृका ।  
 १३ भे०—माध्वी, माध्वी ।

माधवीलता—स० स्त्री०—चमेनी जाति की एक लता जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं ।

माधवी—देखो 'माधव' (रू. भे.)

माध्वी—देखो 'माध्वी' (रू. भे.)

माधुर—स० पु० [स०] १ चमेनी मल्लिका ।

२ देखो 'मधुर' (रू. भे.)

उ०—मधुरकादि मरस रस माधुर । ममकार परखे देवासुर ।

—रा. रू.

माधुरई—देखो 'माधुर्य' (रू. भे.)

माधुरता—देखो 'मधुरता' (रू. भे.)

माधुरी—स० स्त्री० [स०] १ मधुर होने की दशा अवस्था या भाव ।

२ मिठास, मीठापन ।

३ गराव ।

४ एक लता ।

उ०—लता माधुरी मालती फूल लेखे । दमा आप भूलें तपी रूप देखे ।—रा. रू.

वि० स्त्री०—१ मोहित करने वाली, मनोहर ।

उ०—माधुरी मूरति वह प्यारी, वसी रहै निमिदिन हिरदै विच, टरै नहीं टांगे ।—मीरा

२ सुन्दर ।

उ०—मन भावनी माधुरी मोहनि, चद वदन चित चगी । अतकाल में अरथ न भावत, कामनि नेन कुग्गी ।—ऊ. का

३ मीठी ।

माधुर्य, माधुर्य—स० पु० [स० माधुर्य] १ मधुर होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ मिठास, मीठापन, मधुरता ।

उ०—माधुर्य मेह आमार एह, मद्गुरु ममान जीवन जहान ।

—ऊ. का

३ मोदय, लावण्य ।

४ मोहकता ।

५ काव्य का एक गुण जिसमें सरसता, शिष्टता, एवं सुमस्कृतता होती है ।

६ कर्नाटकी पद्धति का एक राग ।

७ सात्विक नायक का एक गुण ।

१० भे०—माधुर्य ।

माधुर्यप्रधान—वि०—माधुर्य की अधिकता वाला ।

स० पु०—माधुर्य का अधिक ध्यान रखकर गाया जाने वाला गीत, गाना ।

माधोसिंहोत—स० पु०—मेढरिया राठीडों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

माधो—देखो 'माधव' (रू. भे.)

उ०—मैं माहग इद्रिया दुख माधा । बळि-उद्धरण विखै ता बाधा ।

—ह. र.

माध्यदिन—स० पु० [स०] मध्याह्न, दुपहर ।

माध्यदिनी, माध्यदिन—स० स्त्री० [स० माध्यदिन] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा ।

माध्यम—स० पु० [स०] १ कार्य मिट्ट करने का साधन, उपाय ।

२ वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय ।

३ प्रस्तुतिकरण का साधन ।

वि०—मध्यस्थ, बीच का ।

माध्याकरसण—स० पु० [स० माध्याकर्षण] पृथ्वी के मध्य भाग का आकर्षण जो सब वस्तुओं को अपनी ओर खींचता रहता है ।

माध्वी—देखो 'माधवी' (रू. भे.) (१) (अ. मा.)

माध्व—स० पु० [स०] १ माध्वाचार्य द्वारा चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय ।

२ उक्त सम्प्रदाय के अनुयायी ।

वि०—१ मधुर, मीठा ।

२ देखो 'माधव' (रू. भे.)

माध्वी—स० स्त्री० [स०] १ मदिरा, शराब ।

२ देखो 'माधवी' (रू. भे.)

माप—स० पु० [स० मापन] १ मापने या तोलने की क्रिया या भाव ।

उ०—ओछी न कू नकू तिल अघको, मुणता सुकव करा ने माप । तू ताहरा राण टोडरमल, परिवां सारिखी 'परताप' ।

—महाराणा प्रताप री गीत

२ मापने या तोलने पर ज्ञात होने वाला परिमाण, मान, मात्रा ।

उ०—माप का बिहाई सा प्रताप का निदान । मार्तण्ड आगे जिमी जोतमी जिहान ।—रा. रू.

३ किसी वस्तु या पदार्थ की मापने का मापन, मान, तोल ।

४ वह पात्र जिसमें भरकर कोई चीज मापी जाय ।

५ सीमा, हद ।

उ०—आद इता मड आठ सी, गह आपा गहवत । माप न की माटीपरणै, उर ज्या ताप न अत ।—रा. रू.

६ देखो 'मापा' (रू. भे.)

मापक—स० पु०—१ वह वस्तु जिससे कोई चीज मापी जा सके, किसी चीज का परिमाण, मान ज्ञात करने का साधन ।

२ लम्बाई-चौड़ाई ज्ञात करने का उपकरण ।

३ मापने का कार्य करने वाला व्यक्ति ।

४ तराजू ।

वि०—१ मापने या तोलने वाला ।

रू० भे०— मापक मापीक ।

२ देखो 'माफक' (रू भे)

मा'पल—देखो 'महापक्ष' (रू भे)

मापल—१ देखो 'माफक' (रू भे)

२ देखो 'मापक' (रू भे.)

मापणि—स० स्त्री०—१ मापने का कार्य ।

२ रस्सी डोरी ।

उ०—घोड़ा समउ ग्रास ते लहड़, मापणि बांधी माथड़ रहड़ ।

पीयड दूध मनगमता ग्रास, वेगड ते हारवड ब्रहास ।—ढो मा

३ अनाज आदि मापने का एक पात्र ।

मापणी, मापवो—कि० म० [स० मापन] १ किसी पदार्थ या वस्तु का किसी निर्धारित मान के आधार पर वजन, तोल या भार निका-  
लना, तोलना ।

२ किसी क्षेत्र या वस्तु का विस्तार, चौड़ाई-लम्बाई या वगैरह  
ज्ञात करना ।

उ०—१ पादू मे एक भाये कह्यो—हेमजी स्वामी री पछैवडी मोटी  
दीसै । जद स्वामीजी लवपणै चौडपणै माप दिखाई —भि द्र.

उ०—२ जद स्वामीजी कह्यो—थे दोनू जणा डोरी ले जायने  
जायगा माप आवो ।—भि द्र

३ छूना, स्पर्श करना ।

उ०—महल अतीव ऊच्च नम मापत । पती प्रमन्न मपती प्रापत ।  
—मे म

४ किसी पैमाने मे भर कर द्रव पदार्थ या अन्नदि को नापना ।

उ०—तोल दिए परखाय दे, गरौ दिए दे माप । वाण न छोडै  
वाणियो, वधव गरौ न वाप ।—बां दा

५ तुलना करना ।

उ०—सस्य बांध हरि सुमर, देह घर प्रीत अदावै । समै तैण  
साहस, जेण मापियो न जावै ।—रा रू

६ थाह लेना ।

उ०—अखैराज प्रोहित को हित मापै कूण । दळपत' का द्रोण गुर  
जैसे जोर दूण ।—रा रू

मापणहार हारो (हारी) माणियो—वि० ।

मापियोडो, मापियोडो, माप्योडो—भू० का० कृ० ।

मापीजणो, मापीजवो—कर्म वा० ।

मा'पदम—देखो 'महापदम, महापद्म' (रू भे)

मापलो—स० पु०—माप करने का पात्र ।

उ०—कूडा तोला मापला ए ताकडी अतर काण के । इण घन रे  
कारणे ए, भांजे राजा री डाण के ।—जयवाणी

मा'पातक, मा'पातकी—१ देखो 'महापातकी' (रू भे)

२ देखो 'महापातक' (रू भे)

मा'पास—देखो 'महापास' (रू भे)

मापियोडो—भू० का० कृ०—१ निर्धारित मान के आधार पर वजन,  
तोल या भार निकाला हुआ, तोला हुआ २ विस्तार, चौड़ाई-  
लम्बाई या वगैरह ज्ञात किया हुआ ३ छूना हुआ, स्पर्श किया  
हुआ ४ पैमाने मे भर कर द्रव पदार्थ या अन्नदि को नापा हुआ  
५ तुलना किया हुआ ६ थाह लिया हुआ.  
(स्त्री० मापियोडो)

मापीक—देखो 'मापक' (रू भे)

मा'पुरस, मा'पुस्त—देखो 'महापुरस' (रू भे)

मापेट—स० पु०—सहोदर ।

मापो—स० पु०—१ आयात या निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर  
लिया जाने वाला एक प्रकार का कर, चुगो, टैक्स । (मा प वि)  
२ पर्दा नशीन औरतो के बठने की गाडी पर लगाया जाने वाला  
पर्दा । ३ उक्त प्रकार का पर्दा लगी गाडी, सवारी ।

४ मापने की क्रिया या भाव ।

५ मापने का उपकरण, तोला या बर्तन ।

उ०—जी हो तोला मापा वधारिया लाला, दम दिन महोच्छव  
थाय ।—जयवाणी

६ सीमा, हद ।

उ०—ठाकर फेर डोढ़ मे बोल्या—इण अकल री तो काई मापो  
आ तो मौका मौका माथं आवती ई रै'वै ।—फुलवाडी

रू० भे०—मफी, माफी ।

मा'प्रभु—देखो 'महाप्रभु' (रू भे)

मा'प्रळ—देखो 'महाप्रळय' (रू भे)

मा'प्रस्थान—देखो 'महाप्रस्थान' (रू भे)

मा'प्रसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू भे)

मा'प्रस्थान—देखो 'महाप्रस्थान' (रू भे)

मा'प्राण—देखो 'महाप्राण' (रू भे)

माफ—स० पु० [अ० मुआफ] क्षमा, माफी ।

उ०—१ सैधा मुहडा भाईपं री राड छै सो तोप खानो माफ कीजै ।  
—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ वो बोली बोली चुपचाप सगळी वार्ता सुगती रह्यो ।  
पछै हाथ जोडती बोल्यो—अवकी भळै माफ कर । कोई नवो उपाव  
वता ।—फुलवाडी

वि०—जिसे क्षमा किया गया हो या माफी दी गई हो, क्षमा प्राप्त,  
क्षमित ।

उ०—वो निरविकार भाव सू पूछ्यो—वाई, थ कणु है ? म्हेने  
साच बता थने सो ई गुना माफ है, म्हारा सू डरण री थने कोई  
जरुरत नी ।—फुलवाडी

रू० भे०—माप, माफी मुआफ ।

माफक-वि० [अ० मुद्राफिक] १ अनुमात्र, मुताविक ।

उ०—१ करि सलाम मजोहिर कर डम, बोलिया स वजीर । हुकम माफक होवसी, वरियाम हित चित वीर ।—सू प्र

उ०—२ अरु ठाकरा खडगमेराजी नू सरस म बुलाया वा सला हुई तथा हुकम माफक ममचार कया अरु रुका दीना ।—द दा

उ०—३ ऐ माया उपलब्ध, कहिया मत माफक 'किसन' । नहचै सुण रघुनद, निज मेवगां निवाजमी ।—७ ज प्र

२ अनुकूल ।

३ ठीक, उचित ।

उ०—तिवारै खेतमी जी स्वामी कह्यो—हेमत्री, आज बिना चाख्या धोवण भेली कीयो है । माफक निकलियो तो स्वामीजी इमा निवे-  
धता दिसै है बाकी कारण राखै ज्यू कोइ नही ।—भि द्र

४ थोडा, मामूली, माधारण, ठीक ठीक ।

उ०—तदै कवर कह्यो—म्हारी तपस्या माहे खोट छै महाराज रै घरै जनम पायो, पिण महाराज रै माल देस माहे सीर थोडो घलायो, तिण सू माजी न गांव १ आप दीघो छै तिण री हामल माफक होज आवै छै ।—जगदेव पवार री बात

उ०—२—लोग उहां रे कन्हा सावठी छै । आपा वन्है लोग माफक छै ।—भाटी सुंदरदास वीरपुरी री वारता

उ०—सूरेजी नू कहियो—थे काढो, साथ माफक छै हू इहां न विलमायस्यु ।—सूरे खीरै काधलोत री बात

५ समान ।

उ०—गेलो कह वतलावियां, बिड उठै चडाळ । जग में सोधी नह जुडी, गोला माफक गाळ ।—वा दा

रू० भे०—मापक, मापव, माफक, माफिक माफिग ।

माफकत-स० स्त्री० [अ० मुद्राफकत] १ समानता ।

२ अनुकूलता ।

३ मैत्री, दोस्ती ।

४ इत्तिफाक, सयोग ।

रू० भे०—माफकत, माफिकत, माफिगत ।

माफक—देखो 'माफक' (रू भे )

माफकत—देखो 'माफकत' (रू भे )

उ०—घाईज बात कुदरत मोळै आना माफकत है ।

माफकद—मुपन मे ।

उ०—लोग ठाटा ढोवै, माठा चालै, मोकली मजुरी माफकद घालै है ।—दमदोव

माफिक—देखो 'माफक' (रू भे )

उ०—१ ये मताव आवज्यो, यहिगी सलाह माफिक वाम होमी ।

—गोड गोपाळदास री वारता

उ०—२ सो ई माफिक वारी-वारी माणम आवै, जिका राक्षसराज

भक्षण करै ।—मिहामण वत्तीमी

माफिकत, माफिगत—देखो 'माफकत' (रू भे )

माफिजखानी, माफिजदपतर-सं० पु० [फा०] कचहरी का वह स्थान जिममे सब प्रकार की मिमलें रहती है ।

माफी-स० स्त्री० [अ० मुद्राफी] १ क्षमा या माफ करने की क्रिया या भाव ।

उ०—मन्त्री आखता पडनै कै'वण लागा—म्हारी गुस्ताखी नै ई राज माफी बगमावै ।—फुलवाडी

२ क्षमा ।

उ०—१ ठग सगळा काणिया काचर रै पगा पडिया । माफी मागी ।—फुलवाडी

उ०—२ मागही घणो ई रोयो रीवयो के म्हारी घुड खाणी व्हेयो, माफी बावू । पण थलियो तो एक ई मुणो नी ।—फुलवाडी

३ वखशिया ।

४ वह भूमि या खेत जिम पर सरकारी कर माफ हो, कर मुक्त भूमि । ५ देखो 'माफ' (रू भे )

उ०—सुकू कूवत ने डोल रे जोर री निगवळ कमजोर सरणागता नू अपराध बकमणो माफी करणो ।—तो प्र

माफीखानी—देखो 'माफिजखानी' ।

माफीदार-स० पु० [अ०] वह व्यक्ति जिमकी भूमि की मालगुजारी माफ हो, कर मुक्त भूमि का उप-भोक्ता ।

माफी-स० पु०—१ हरिण की नाभि मे होने वाली कस्तूरी की पोटली या थैली ।

उ०—हरख री हीडो, उदेगर री भेट, जीव री जतन, इद्र री भेट । किस्तूरी री माफी, केसर री क्यारी, रूप री रूखडी ।

—मयागम दरजी री बात

२ देखो 'मापो' (रू भे )

उ०—घोड वहल रथ घणा, घमळ घुर के असि घारी । सुजि खासा सुवपाळ, इका माफा भमवारी ।—सू प्र

मा-वाप-स० पु० यो०—माता-पिता ।

उ०—दोम रोग भेटण देहा री, जेहागी जपणो जम जाप । 'केहा' री रक्षा तै कीनी, 'मेहा' री मोटी मा-वाप —अज्ञात

माबूद-वि० [अ० मा'बूद] १ जिसको पूजा जाय, पूजनीय ।

२ परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म ।

उ०—१ मौजूद खबर माबूद खबर, अरवाह खबर वजूद । मकाम पे चीज हस्त, दादनी मौजूद ।—दादूबाणो

उ०—२ चहार मजिल वयान कुफतम, दस्त करद वूद । पीरा मुगीदा खबर करद जा राहै माबूद ।—दादूबाणो

उ०—३ दादू नूरी दिल भरवाह का, तहा वसै माबूद । तह बंदे की बदगी, जहा रहे मौजूद ।—दादूबाणो

मा'भामण—देखो 'महाभामण' (रू भे )

मा'भद्रा—देखो 'महाभद्रा' (रू. भे )

मा'भारत—देखो 'महाभारत' (रू भे )

मा'मास्य—देखो 'महामास्य' (रू भे )

मा'मारी—देखो 'महामारी' (रू भे )

माय, माय—देखो 'माता' (रू भे.)

उ०—१ मैं उणहिज माय रो रूप हिरदा मफ राख्यो । 'जैत' भूप जैत नू दिई जिण रो दस दाख्यो ।—मे म

उ०—२ रेसम हृदा पोतडा पालणिये पोढाय । तो 'जेहा' वेटा तिके, भळे भुलाया माय ।—वा दा

उ०—३ ज्या थारे तट जाय, उदर भरे पीघो उदक । मिनख जिके फिर माय माया नह जननी उदर ।—वा दा

उ०—४ अह देवह वमि तेवि पच ए पडव वणि चलिय । हथि-गउरि जाएवि मुक्लावड, निय माय पिय ।—सालिभद्र सूरि

उ०—५ महल पधार्या पदमिणी, तेहवै बादल माय रावत । मगली बात मुगी करी, पासै ऊभी आय रावत ।—प च चौ

उ०—६ नहीं तो माय नही तो बाप, आपेज आपे ज उपनो आप । मनछ्छा बीज चलावै मूळ । थयो चर वेचर सुखम पूळ ।—ह र

उ०—७ साची बात है—मत मरज्यो टावर गी माय, ना मरज्यो वूढैरी नार ।—दसदोख

उ०—८ रुखमणि अविना पूजिवा जाहिरे, साथ लीघी घर कांमणि । देवी हइ सोहइ सयल सिणगार, माय मायां तणी मांडणी । माय मायां तणी मांडणी सज्या मयल सिणगार, अहि भोपमां मिरि वेणी दलकड, चिहुर चपक भार ।—रुकमणी मगळ २ देखो 'माया' (रू भे )

उ०—अइ मायं पाण भोयण ।—जै स प्र

३ देखो 'माय' (रू भे )

उ०—मिलै सिंह वन माय किण मिरगा म्रगपत कियो । जोरावर प्रति जाय, रहै उरधगत राजिया ।—किरपाराम

मायई—देखो 'माता' (भल्पा, रू भे ) (उ र )

मायड, मायड़ी—देखो 'माता' (मह, रू भे )

उ०—१ डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय । मायड खाय दिखाय थण, घण पण वलय बताय ।—वी स

उ०—२ पीढे तो बंटी मायड मन कग्घो, मन कर मेल्यो लोढी घोर ।—लो गी

उ०—३ जनम दियो म्हारी मायडो । होजी वं ने रूप दियो कर-तार ।—लो गी

उ०—४ रे जाया मायड़ी सामी रे नाळ ।—जयवाणी

मायत—देखो 'माईत' (रू भे )

उ०—१ तद वेरसी सलाम कर कही—जे इसी ही होणहार थी सो हई । थे म्हारै मायत छो ।—सूरे खीवे काघळोत री बात

उ०—२ गीतम जीत करै मायतां तणी, वीघ प्रणामे जोय ही ।

—जयवाणी

मायतपणी—देखो 'माईतपणी' (रू भे )

मायताय—स० पु० [स० मातृ+तात्] माता-पिता ।

उ०—मायताय मनि पूगी हाम, सान्हकुमर तसु दीघउ नाम । अत-वच्छा माता भय होइ, डोलउ नाम कहइ सह कोइ ।—ढो मा

मायदे—स० स्त्री०—परमार चाहइ देव की पुत्री जो शक्ति भवतार मानी गई है ।

मायनै—देखो 'माय' (रू भे )

मायरावार—स० पु०—माहेरा लेकर आने वाला, मामा या उसका सम्बन्धी । रू० भे०—माहेरेदार ।

मायरी—स० पु० [म० मातृ+भरह] विवाह के समय वर या वधू के मामा द्वारा दिया जाने वाला धन या वस्त्रादि ।

उ०—थोड़ी देर अठानै-वठानै री वाता हुणै रै बाद गोपाळ मीठास सू पूछियो—थारै माय कितोक करजो है ? "प्रदाजन कोई तीन मी-साडी तीन सो री ।" काई मायरी मोसेरी अथवा नुकतो काढियो हो ? —वरसगाठ

रू० भे०—मामेरी, मायेरी, माहिरी, माहेरी ।

माया—स० स्त्री० (व व) [स० मातृ] १ वैवाहिक भवसरो पर किसी दीवार या पाटे पर घी की सात धाराए लगाकर उस पर कुकूम की बावन विदियां देकर पूजनार्थ की जाने वाली मातृकाओं की स्थापना । वर-वधू को सर्वप्रथम इन्हीं को प्रणाम करवाया जाता है ।

उ०—१ रुखमणि अविना पूजिवा जाहिरे, साथ लीघी घर कांमणि । देवी हइ सोहइ सयल सिणगार, माय मायां तणी मांडणी ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ बइठा मायां आगळी वेऊ, छेहहा बाघा घणी छत ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'मायका' (रू भे )

३ देखो 'माता' (रू भे )

उ०—छ तो इम छांना वच्या कन्हैया, एक रह्यो तू पास रे । तोख मायां रा राखतो कन्हैया, तू आवे छट्टे मास रे ।—जयवाणी

४ देखो 'माया' (रू भे )

५ देखो 'मावलियां' ।

६ देखो 'मांया' (रू भे )

माया—म० स्त्री० [स०] १ घन की अघिष्ठात्री, लक्ष्मी-देवी ।

उ०—ईडरिया प्राचार री, वीर चढे तो वेळ । हसत चढे चारण हुवै, माया सरसत मेळ ।—वां दा

२ द्रव्य, धन, सम्पत्ति, वैभव । (अ मा, ना मा, ह ना मा )

उ०—१ देखी जे सूमां द्रुमां, एकी प्रकत अभग । जड माया घर मे जिते, इते प्रफूलत अभग ।—वां दा



उ०—२ मती वळीं जूझै सुमट करै ग्रथ कविराज । दाता माया ऊधर्म, नाम उवारण काज ।—बां दा

उ०—३ इसी माया के काम री जो खरचै न ग्वावै, ना वात मायै लगावै । अर इसी माया ही के कार री जके प्रीत गिरौ न नीत, आपी गिरौ न मुलायदी कोरी परसगी री जो दुखावै । का वात नै अर का मुवाद नै । माया री रग ताना तैया मे नहीं, नाम अर काम मे होणी चाहीजै ।—दमदोख

उ०—४ एक वेटा रै जीवता उगरी री मां नै श्री विखी काढणी पडथी, बिरकार है उगरी रा जीवणा नै । लागत है उगरी माया मपत नै ।—फुनवाही

उ०—५ माया का मुख पच दिन, गरब्यो कहा गवार । स्वप्ने पायी राजघन, जात न लागै वार ।—दादूवाणी

उ०—६ दादू माया का बल देखकर, आया अति अहंकार । अथ मया सूझे नहीं, का कर है मिरजन हार ।—दादूवाणी

उ०—७ 'हरीया' माया जोडि करि, गाडी गोडै हेट । माया इत की इत रही, आप गये करि वेठ ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज ३ ईश्वर की एक काल्पनिक अलौकिक शक्ति, जिसके द्वारा बाह्य जगत की रचना एवं भौतिक पदार्थों का निर्माण हुआ है । अपने प्रभाव के कारण यह जीव को ब्रह्म मे दूर रखती है । (वेदान्त)

उ०—१ दादू माया सब गहले किये, चौरासी लख जीव । ताका चेरी क्या करै, जे रग रातें पीव ।—दादूवाणी

उ०—२ बाजीगर की पूतली, ज्यों मरकट मोह्या । दादू माया राम की सब जगत विगोया ।—दादूवाणी

उ०—३ माया मैनी गुण मई, घर घर उज्ज्वल नाम । दादू मोहै सयन की, सुर नर मय ही ठाम ।—दादूवाणी

उ०—४ 'हरीया' माया राम की, महा अपर बल होय । मेरी मेगी करि गया, साथि न चाली मोय ।

—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

उ०—५ 'हरीया' माया मोहनी, मोह्या सुर नर नाग । एक न मोह्या राम जन, उर उपज्या बेराग ।

—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

वि० वि०—वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म की अलौकिक शक्ति में ही हम यह दृश्य जगत दिखाई देता है । पुराणों में इसी शक्ति (माया) में चेतन धर्म का आरोप करके इसे स्त्री रूप में ब्रह्म की सद्बर्माणी माना है । इसी कारण प्राणियों की अस्तित्व में वस्तु, अस्वाभाविक म स्वाभाविक व मिथ्या में मय का आभास होता है । एक अन्य मत के अनुसार इसे अधर्म की पुत्री माना है और इसकी माना या नाम मृगा कहा है । ब्रह्म को इसका भाई बताया है जिसके समर्थ से इसे लोभ एवं विकृति नामक दो पुत्रों की उत्पत्ति हुई । मृष्टि निर्माण के समय ब्रह्मा ने इसकी सहायता ली जिससे निम्नलिखित मात वस्तुओं या शक्तियों का निर्माण किया

गया—(१) गायत्री—जिससे समस्त वेदों का निर्माण हुआ, तदन्तर वेदों के द्वारा ससार का निर्माण हुआ । (२) सत्यवती—जिससे जीव पोषक वनस्पतियों एवं समस्त औषधियों का निर्माण हुआ । (३) ज्ञानविद्या—इससे सारे शास्त्रों का निर्माण हुआ । (४) लक्ष्मी—इससे वस्त्र एवं आभूषण उत्पन्न हुए । (५) उमा—इसने शिव की सहायता में समस्त शास्त्रों का भूलोक में प्रसार किया । (६) वर्गिका—इसने समस्त मृष्टि का भार अपने ऊपर लिया । (७) धर्म द्रवा—यह एक नदी थी जो प्रागे चलकर गंगा के नाम से प्रसिद्ध हुई । वस्तुतः माया एक मूर्तिमान भ्रम है जो प्राणियों को भुलावा देकर ईश्वर से विमुख रखती है । जितने कार्य, बातें या पदार्थ वास्तव में कुछ और होते हैं और दिखने में कुछ और होते हैं इसका अंतर ही माया है ।

४ मृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण ।

उ०—१ प्रथम जल जलाकार हुतो । तिहा निरजन निराकार बढपात माहि पोडिया हुता । तदा मन माहि इच्छा अपनी जु सृष्टि उपाजिसु । तदा मनसा देवी माया तै अपनी । माया थकी थोक दुष्ट ऊपगा, आत्मा एक । द्वितीयो परमात्मा । ताहरा माया सेती जु मिल्यो ते जीवात्मा (अर) माया थकी जु भिन्न रह्यो ते परमात्मा ।—द वि

उ०—२ मन मनसा माया रती, पच तत्व परकाम । चौदह तीनों लोक सब, दादू होइ उदास ।—दादूवाणी

५ शैव मतानुसार मन को बाध रखने वाले चार पासों में से एक ।

उ०—माया फांसी हाय लै, बंठी गोप छिपाइ । जे कोई धीजै प्राणियां, ताहि के गल बाहि ।—दादूवाणी

६ मन के २४ दुष्ट विकारों में से एक विकार । (बौद्ध)

उ०—१ दादू माया सों मन वीगहा, ज्यों काजी कर बुद्ध । हे कोई ससार में, मन कर दबै सुद्ध ।—दादूवाणी

उ०—२ माया पापनि पेम करि, कीया बल्लेजै घाव । 'हरीया' वीह बलिबनु कु रक न पुहचै राव ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज ७ छल, कपट, धोखा, प्रवचना ।

८ दादू का खेल बाजीगरी, ऐन्द्रजाल ।

९ अविद्या, अज्ञान, भ्रम, मोह ।

उ०—माया विसरी बेलडी, 'हरीया' पसरी दूर । केताई फल कारण, रह्या विसूरि विसूरि ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज १० भ्रम या मोह वश होने वाला अनुराग, आसक्ति, ममत्व ।

उ०—१ मावीतां तणी इसी ताइ माया, ध्यान रहइ घर प्राण प्राधार । बाधइ सायर बल्ले ज्यु ही विप्र, वासुर बरस तणइ विस्तार ।—महादेव पारवती री वेल

उ०—२ जीवो माही जिस रहै, ऐसा माया मोह । साईं सूधा सब गया, दादू नहि अदोह ।—दादूवाणी

उ०—३ ऊतरता एता भला, माया मोह विकार । राम न मना उत्तारियो, जन हरीया छिन वार ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज  
११ राजनैतिक घोखा-घडी ।

१२ मिथ्या या अवास्तविक धारणा ।

उ०—‘हरीया’ माया कीच में, केताई कळीयाह । जे कोई निकसै बापडो, सतगुरु सै मिलियाह—स्त्री हरिरामदास जी महाराज  
१३ कोई गूढ़ या विलक्षण बात जो आसानी से नहीं जानी जा सके ।

उ०—भीणी माया लीण हूय, रही प्राण सु रचि । सिध सिन्यासी जोगना, गए मुनि जन पचि ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज  
१४ लालच लोभ ।

उ०—१ माया करि करि मानवी, मन में मोटी आस । ‘हरीया’ पांणी ओस का, पीया मिटै न प्यास ।

—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

१५ मन की वृत्ति, वामना ।

उ०—१ मन हस्ती माया हस्तिनी, सघन वन ससार । ता में निर-भय हो रह्या, दाहू मुख गवार ।—दाहूवाणी

उ०—२ दाहू माया मगन जु हो रहे, हम से जीव अपार । माया माही ले रही, हूवै काली धार ।—दाहूवाणी

१६ भोग विलास की सामग्री ।

उ०—१ माया सौं मन रत भया, विसय रस माता । दाहू साचा छाह कर, झूठे रग राता ।—दाहूवाणी

उ०—२ यो माया का सुख मन करे, सय्या सुदरि पास । अत काल आया गया, दाहू होउ उदास ।—दाहूवाणी

१७ झूठ, झूठेला, प्रपच ।

उ०—१ बात सुणता ईं माळण री तो डचरज सू आख्यां फाटी री फाटी रैंगी । हे राम ! ओ काईं खिलको व्हियो अबै कीकर इण माया सू फद कटैला ।—फुलवाडी

उ०—२ माया विसरी बेलडो, अघा रह्या झळूमि । जन ‘हारया’ से जानि कै, चाल्या देख सळूमि ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज  
१८ सांघिक चमत्कार ।

उ०—१ आ तो उण सपना वाळा वाग मे हीडती अपछरा है । राम जाणै आ काईं माया है । काईं चाळी है ।—फुलवाडी

उ०—२ उण रं वास मे निसक आय नै मूडकी नै घड सू चेपणी अर यू म्हारै मामी मुळकती जोवणी, अवस आ कोईं देता उपरली माया है ।—फुलवाडी

१९ रचना, लीला, खेल ।

उ०—१ माया सोह सामट वाळ-मुकुद । सूती बड पांन समाधि समद ।—ह र

उ०—२ तू हीज भाजै तू वडै, पोसै त्रिपुराया । दुनिया मे दीसै सिका, सह थारी माया ।—गजउद्धार

उ०—३ आ सगळी माया अर ओ सगळी परताप इण जीव री ई है ।—फुलवाडी

२० दैविक चमत्कार ।

उ०—१ अमर एकु पयडठ हूउ बोलइ साभलिणाह । ए माया सवि मइ करी कृत्या राखे वाह ।—मालिभद्र सूरि

उ०—२ कवण अखैवड विगर, प्रळै सागर सिर सोभै । कवण विना सुखदेव, देव माया नह लोभै ।—रा रू.

२१ सृष्टि, ससार, जगत ।

उ०—१ अनळ पखि आकास को, माया मेर उलष । दाहू उलटे पथ चढ, जाइ विलवै अग ।—दाहूवाणी

उ०—२ यहू सब माया मिरग जळ, झूठा झिलझिल होइ । दाहू चिलका देखकर, सत कर जाणा सोइ ।—दाहूवाणी

उ०—३ दाहू नैनहु भर नही देखिये, सब माया का रूप । तह ले नैना राखियै, जह है तत्त्व अनूप ।—दाहूवाणी

२२ ठाट बाट ।

उ०—माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ विकास । दाहू यह गति जीव की, अत न पूगै आस ।—दाहूवाणी

२३ सांसारिक बन्धन ।

उ०—१ दाहू झूठी काया झूठ घर, झूठा यहू परिवार । झूठी माया देखकर, फूल्यो कहा गवार ।—दाहूवाणी

उ०—२ माया वधक वाण ज्यू, मारै अग लगाय । जन ‘हरीया’ तिह लोक में, भाजि किती लग जाय ।

—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

उ०—३ वेटी रं जोग वर सारु म्है इण माया मे झिलियी रह्यो । अबै म्है अत लोक री वाम करणो चावू ।—फुलवाडी

२४ प्रधान या प्रकृति ।

२५ दुष्टता, मन की कुटिलता । (जैन)

२६ प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान ।

२७ शक्ति, दुर्गा, देवी ।

उ०—मच्चिदानंद व्यापक सरव, डच्छा तिण मे ऊपजै । जगदव सकति त्रिसकति जिगा, ब्रह्म प्रकृति माया वजै ।—मे म

२८ वैष्णवों के अनुसार विष्णु की नौ शक्तियों में से एक ।

२९ नारी का एक रूप ।

३० गौतम बुद्ध की माता ।

३१ सप्त पुरियों में से एक पुरी का नाम । (अ मा)

उ०—प्रथम अजोघ्यापुरी, बहुरि मथुरा अर माया । कामी कांती प्रमिद्ध, मुक्त पाई जे आया ।—गजउद्धार

३२ एक वैश्विक छन्द जिममे, प्रथम पाच गुरु, फिर एक सगण, भगण अत मे दो गुरु होते हैं ।

३० भे०—माईया ।

मह०—मायो ।

३२ देखो 'माया' (रू भे)

उ०—१ घाय वडठा माया तरुह आगलि, भरिया थाल रतन वहु भाति ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ दिव राजा आगलि दावियउ, राज परोछउ काह रुव ।  
अचरिज सह रहियउ अतेउरि, माया जरह वोलिया मुख ।

—महादेव पारवती री वेलि

३३ देखो 'माया' (रू भे)

उ०—जिए मुणि रुदन दया मनि जाणी । आस्रम रिख माया जित आणी ।—सू प्र

३४ देखो 'माता' (रू भे)

३५ देखो 'मावल्या' ।

३६ देखो 'माया' (रू भे)

३७ देखो 'माया' ।

मायाशाल—देखो 'मायाशाल' (रू भे) (जैन)

मायाकार—स० पु० [स०] जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक ।

मायागोलक—स० पु०—साबुन के पानी का बुलबुला, जो कि वच्चे कागज की नलिका में फूक मार कर बनाते हैं ।

उ०—जिमिउ स्वप्नराज्य, जिसिउ गधरव नगर, जिमिउ नदी पुलिनातरालि लिखित प्रासाद, जिमिउ अलातचक्र, जिसी अग-त्रिणिणका, जिसा मायागोलक, जिसिउ इ द्र जालवन तिसिउ माया मय ससार ।—व स

मायाजाल—स० पु० [स० माया+जाल] १ सासारिक वधन, ऋमट, प्रपच ।

उ०—घर के मारे वन के मारे, मारे स्वरग पयाळ । सूक्ष्म मोटा गूथ कर, मांड्या मायाजाल ।—दादूवाणी

२ मोहजाल, समत्व का वधन ।

उ०—सूरदाम कीं अटकती अटकती जवाव देवती—वा दिना म्हैं ई थोडी-घणी मायाजाल में फसियोडी हो ।—फुलवाडी

३ चमत्कार ।

उ०—भूय अर तिरस मिटिया पछैं राजकवर अर मगळा जानिया इण मायाजाल माथे विचार करियो तो वाने अगूती इचरज व्हियो ।—फुलवाडी

४ ऐन्द्रजाल, जादू ।

५ घोवा, ठगी, प्रवचना ।

रू० भे०—मायाशाल ।

मायातत्र—स० पु० [स०] एक प्रकार का तत्र ।

मायाति—स० स्त्री० [स०] दुर्गा को प्रसन्न करने के लिये अष्टमी या नवमी को दी जाने वाली नर बलि । (तांत्रिक)

मायादोष, मायादोष—स० पु० [स० मायादोष] दगावाजी करके आहार लेने पर लगने वाला दोष । (जैन)

मायापत, मायापति—स० पु० [स० मायापति] १ परमात्मा, ईश्वर

२ धनवान ।

उ०—१ मायापत पिडतजो री वामणी नै थें आज मगती बतावो । कोई खायो है तो आज दिन ताई म्हारी ई खायो है । म्हैं तो मागने पाणी ई नौं पीयो ।—फुलवाडी

उ०—२ अवे किए री भरोसी । निराम मायापतिया री मन भगवान माथे हुलसियो । ठोड ठोड मिदरा री नीवा दिरीजणु लागी । जूना मिदरा में अस्टपीर पूजा होवण लागी ।—फुलवाडी

मायापास, मायापासु—स० पु० [स० माया + पाश] माया का वधन, मोहजाल ।

उ०—पसुवधन जिम छोडिय मोडिय मायापासु । असिव निवारण वारण वलिउ तहिय उदासु ।—जयमेखर सूरि

वि० वि०—देखो 'माया' (५) ।

मायावी—देखो 'मायावी' (रू भे)

मायामोसी—स० पु०—कपट पूर्वक धोला जाने वाला भूठ । (जैन)

मायामोह—स० पु० [स०] १ विष्णु के शरीर से निकला हुआ एक कल्पित पुरुष जिसने असुरों का दमन किया था । (पौराणिक)

२ विष्णु का एक अवतार ।

३ माया के प्रति होने वाला मोह ।

मायावत, मायावत—स० पु० [स० मायावत्] १ धनवान, धनाढ्य ।

उ०—स्याम सुभायक मेघ, मेघ नह मायावतह । मायावतह साह, साह नही खर अतह ।—र. ज. प्र.

२ कस का एक नाम ।

३ राक्षस ।

वि०—१ छली, कपटी, धोखे-बाज ।

२ मायावी, बाजीगर, जादूगर ।

उ०—पावा लाग्यो पदमयो जिम्हा वैंटे रुकमणी जादुराय । मायावत हो स्त्री कसण्णी पीतावर पहराय ।—रुकमणि मगळ

३ भ्रमात्मक अमत्य ।

मायावती—स० स्त्री० [स०] १ कामदेव की स्त्री रति का एक नामान्तर जो उसने शवरासुर के यहाँ रहते समय धारण किया था ।

२ प्रद्युम्न की स्त्री का नाम ।

मायावाद—स० पु० [स०] ब्रह्म सत्य और जगत मिथ्या का सिद्धान्त । इसमें समस्त सृष्टि को मिथ्या व अमत्य माना जाता है ।

मायावादी—वि० [स० मायावादिन्] 'मायावाद' के सिद्धान्त को मानने वाला ।

मायावियो—देखो 'मायावी' (भ्रम्या, रू भे)

उ०—केई वेराणी आलोवसी, आलोवे नही लपटी रे । आठ बोल ठाणायग कहा, मायावियो होय कपटी रे ।—जयवाणी

मायावी—स० पु० [स० मायाविन्] १ ईश्वर का एक नाम ।

२ ऐन्द्रजालिक, बाजीगर, जादूगर ।

३ कपटी, धोखेबाज, छलिया ।

४ मय दानव के पुत्र का नाम जियकी मा का नाम हेमा था । यह बालि द्वारा मारा गया ।

५ मातृफल ।

६ बिडाल, बिल्ला ।

७ घनवान ।

वि०—१ विचित्र एव रहस्यमय कार्य करने वाला, तरह तरह की मायाएँ रचकर प्रभावित करने वाला, बाजीगरी में निपुण ।

उ०—१ कहें क्या व्यावेधी, कहन नहि भावै कुल कुल । मदांघी मायावी तुम रु हम भावी सम तुलै ।—ऊ का.

उ०—२ अर जे इण मायावी ऊठ नै छेड़ू तो परतख इण जम रे हाथा मोत है ।—फुलवाडी

२ माया सम्बन्धी ।

३ माया के रूप में होने वाला ।

४ जादू आदि से सम्बन्ध रखने वाला ।

रू० भे०—मायावी ।

अल्पा०—मायावियी ।

मायावीज—स० पु०—ह्वी नामक तांत्रिक मन्त्र ।

मायासपत—स० स्त्री० यो० [स० माया+सपति] घन-दोलत ।

उ०—माईतां रो हुकम अर वारी पग बूळ माया मार्य, टावरा री मायासपत आ हज है ।—फुलवाडी

मायासीता—स० स्त्री० यो० [स०] सीता हरण से पूर्व अग्नि द्वारा वास्तविक सीता को हटाकर रखी गई एक कल्पित सीता ।

(पौराणिक)

मायास्त्र—स० पु० [स० माया+अस्त्र] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र ।

मायो—स० पु० [स० मायिन्] १ माया का अविष्ठाता, ईश्वर ।

२ कपटी, गुडा, छलिया ।

३ बाजीगर, जादूगर ।

४ मायावी ।

स० स्त्री० [स० मातृ] ५ मोसी ।

६ माता, माँ ।

रू० भे०—माइल्ल ।

मायूस—वि० [अ०] १ निराशा, हताश ।

२ उदास ।

मायूसी—स० स्त्री० [अ०] १ मायूस होने की अवस्था या भाव ।

२ निराशा, उदासी ।

मायेरी—देखो 'मायेरी' (रू भे)

मायै—देखो 'मायै' (रू भे)

मायोझो—भू० का० कृ०—१ समाया हुआ २ निमा हुआ, खटा हुआ ३ सहन या बर्दाश्त हुआ हुआ ४ हजम हुआ हुआ, पचा हुआ (स्त्री० मायोझी)

मायो—१ देखो 'माता' (मह, रू. भे)

उ०—१ देस यसा जगि चिरजयो, रागा देवी मायो जी । सरव भूति नामे पिता, ससिहर चिन्ह सुहायो जी ।—म कु

उ०—२ मोने तो रोवाणी तमे, अब तो क्रिया करायो रे । लीजी पदवी सिवपुर तणो, काई ठूजी म रोवाये मायो रे ।—जयवाणी

२ देखो 'माया' (मह, रू भे)

३ देखो 'मईयो' (रू भे)

मार—स० पु० [स०] १ कामदेव, मदन । (अनेका, अ मा, ह ना. मा)

उ०—नायक तीजी नार रो, मो दुख दायक मार । घरणी घर खावद धके, परणी करै पुकार ।—वा. दा

२ श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का एक नामान्तर ।

उ०—ए प्रदिमन का नाम जु कामदेव की अवतार । दरपक । काम कुसमायुध । सवरारि । रतिपति । तनसार । समर । मनोज । अनग । पचसर । मनमथ । मदन । मकरधज । मार । ए प्रदिमन का नाम ।

—वेलि टी

३ आघात, प्रहार, चोट ।

उ०—१ मच धाम धूम सर सेल मार । पढ आस आस आठू पुकार ।—रा रू

उ०—२ राजा 'गाजी' सारिखा, से बड़ा सिरदार । दखणी मार मनाविया, मार कहीजै सार । मार सार मारकां इळा हूवै आपाणी, मुहि खगां है-खुरा, जेह रक्खी ते माणी ।—गु रू व

उ०—३ चंद्र चपक कुशलआ, होडीले सहिकार । तरु अर बहु पल्लव घरइ, 'मारि' करइ बहु मार ।—मा का प्र

४ युद्ध, भगडा, लड़ाई ।

उ०—महाबल वीर बहादुर मार, करै बहुवै बल पार कटार । धलै बहुवै बल खजर घात, दहू बल पजर पार दिखात ।—मे. म

५ घायल, घावों से पूर्ण ।

उ०—अठै कवर बडो पराक्रम कियो, आदमी च्यार मार कवर खेत पडियो, वा सत्रसालजी आदमी सात मार खेत पडिया । घावा सू मार हुवा घूमै है ।—द दा.

६ विष, जहर । (अनेका, ह नां मा)

[फा०] ७ नाग, सर्प ।

[स०] ८ अमृत । (अनेका ह नां मा)

९ निशाना, लक्ष्य जिस पर वार किया जाय ।

१० गोली आदि के वार की सहारक शक्ति की सीमा ।

११ सहारक, नाशक ।

उ०—नमी मकराख्य इद्रजीत मार । नमी खव राकस-वस-सहार ।

—ह र.

१२ मारक या नाशक तत्व ।

१३ घतूरा ।

१४ कार्य या उत्तरदायित्वो का पढ़ने वाला अत्यधिक दबाव, बोझ ।

१५ विघ्न, अड़चन, बाधा ।

१६ प्रेम, अनुराग, ।

१७ हनन, नाश ।

१८ चमड़ा भिगो कर रगने का पानी । (चमड़ा)

१९ श्वेत, मर्कट । \* (डि. को)

सं० स्त्री०—२० मारने की क्रिया या भाव ।

२१ मार-पीट, पिटाई ।

उ०—नही भाव जाव, पड़े जम भाव । दीवी मार दूता, गुरज घोट  
छूया ।—स्त्री मूळदामजी

२२ जिम वस्तु पर मार पड़े ।

२३ भूमि, पृथ्वी । (अ मा)

२४ पराजय, हार ।

२५ मृत्यु घोर मोत ।

२६ हानि, नुकसान ।

[अव्य०] १ घुरी तरह से ।

उ०—१ राणी आपरी आख्या देख्यो के एक चिडकली रोमनदान  
रा काच साथै मार टूचा मारै है ।—कुलवाडी

उ०—२ म्हारा मोती म्हारा मोती बेलती वो मोत्या रा ढिगला  
मे मार भठो उठो लुटण लागो ।—कुलवाडी

रू० भे०—मार ।

अल्पा०—मारो ।

मारकड, मारफडे, मारफडेय, मारफडेय—सं० पु० [सं० मार्कंड, मार्क-  
डेय] १ भृगु कुलोत्पन्न एक ऋषि जो चिरजीवियों में माना जाता  
है । इसके पिता का नाम मृकड था ।

उ०—देवी मारफडे महा पाठ वाच्यो । देवी लगी तब पाय नो  
पार लाघो ।—देवि.

२ अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

३ एक ऋषि जो अयोध्या के राजा दशरथ के उप-ऋषिजी में से  
एक था ।

४ एक आचार्य, जो वायु पुराण के अनुसार व्यास की ऋक् शिष्य  
परंपरा में से इन्द्रप्रमत्ति ऋषि का शिष्य था ।

मारफ-वि० [सं०] १ मारने वाला, घात करने वाला ।

२ प्रहार या अघात करने वाला ।

३ प्रतिघात करने वाला ।

४ किसी के प्रभाव को नष्ट करने वाला ।

सं० पु० [सं०] १ प्लेग आदि सक्रामक रोग ।

२ कामदेव ।

३ हत्यारा, घातक ।

४ बाज पक्षी ।

५ वार, मार ।

६ निशान, लक्ष्य ।

उ०—तीरां गोळीआ रे मारक पडत जनावर पाख ममारण न  
पावै छै ।—रा सा स.

रू० भे०—मारक, मारिक ।

मारकट—सं० पु०—१ शृंगार में एक आमन ।

२ देखो 'मरकट' (रू भे)

मारकण, मारकणो—वि० (स्त्री० मारकणी) १ मारने वाला, प्रहार करने  
वाला, सहार करने वाला । २ देखो 'मारणी' ।

मारकाट—सं० स्त्री० यो० १ लड़ाई, झगडा ।

२ किसी को मारने या काटने की क्रिया या भाव ।

मारकीन—सं० पु०—एक प्रकार का मोटा कोरा कपडा ।

मारकुओ—सं० पु०—वार खेलने वाला, प्रहार का जवाब देने वाला ।

उ०—अळगी ही नैडी की रखवते, देठाळी हुओ दळा दुह । वाणा  
ढेरविया वाहुए, मारकुए फेरिया मूह ।—वेलि

मारकेट—सं० पु० [अ० मार्केट] बाजार ।

मारकेस—सं० पु० [सं० मारकेश] जन्म कुडली में पड़ने वाले कुछ  
विशिष्ट ग्रहों का योग जो भ्रमगलकारी होता है । यह अष्टम, द्वितीय  
घोर मत्तम स्थान की दशा बतलाता है ।

मारकी—सं० पु० [अ० मारिक] १ युद्ध, लड़ाई, सग्राम ।

२ उपद्रव, हंगामा ।

३ महत्वपूर्ण घटना ।

४ महत्वपूर्ण कार्य ।

५ प्रहार ।

उ०—१ फोज रो मारकी रेडा ऊपर पड़े छै । रेडो उण रे तूड रो  
देवै छै सो घोडो नै सवार गुड भेळा हुवै छै ।—डाढाळा सूर रो बात

उ०—२ भाजतां रे पूठे लोग लागियो पाखतो रा असवारा  
भेळियो सो मारकी पडियो तीसू लोग सारो बाढ उतारियो ।

—कुवरसी साखल रो वारता

उ०—३ आतम आगवा हवायां रो मारकी पडि नै रहियो छै ।

—रा सा स

६ योद्धा, महाभट्ट, वीर, बहादुर ।

उ०—१ विदुण किलियाण रा मारकी वड वडी । खेत कनवज  
मिरी, राम आयो खडी ।—द दा.

उ०—२ 'मान' सुत अनै 'किमनेस' सुत मारका, सार का कोट  
अरगेज सारा । थापिया एक छत्र एक कथापिया, थापिया सनमधी  
फूल-धारां ।—राममिह हाडा नै राजमिह राठोड रो गीत

उ०—३ उपाडे किता मारका खैग आगा । लडेवा जिफां सीस  
गैगाग लागा ।—सू प्र

उ०—४ एका एक अभग भड, थिया थिडवै थट्ट । मारु मांभी  
मारकां, कुण कुण वडा सुभट्ट ।—गु रू व

उ०—५ भाज दिन परस्थो छै मारकी, लडाई रो मूस मरदां रो  
छै जिण चोटा सोना विगैर नही रहे । मैळ बाळो घट जाय ।

—नी प्र

७ किसी का प्रतीक ।

८ चिन्ह, निशान ।

९ व्यापारिक चिन्ह, छाप । (ट्रेड मार्क)

१०—शिर से प्रहार कर मारने वाला या आक्रमण करने वाला पशु ।

वि०—१ मारने वाला, मार करने वाला ।

उ०—१ सुणी भडा 'भजमाल' रा, आयी राव चलाय । भडा सकाजा मारकां, वणी गरज्जा आय ।—रा रू

उ०—२ सौक पडे सायकां, सेल घमरोळ सतावा । मिळै लोह मारकां, नरिंद हरवळा नवावां ।—सू प्र.

२ प्रवल, शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—१ मडळीक कळोघर मारकां, ऊससि लग्गी अबहर । आइयो तांम भमि ऊलके रांम भीची जिम राजघर ।—गु. रू व

उ०—२ खुरम कटक्कं अगळो, साह दळे भसमान । मूळ न मावं मारका दोय खडा इक म्यान ।—गु रू व

३ भयकर, भयावह ।

४ जबरदस्त ।

उ०—मारु परघर मारका ठहरे समहर ठोड । ऊखाणी उजवाळियो, चढ़ जयमल चीतोड ।—बा दा

५ भान-वान वाला ।

उ०—निरभयगढ निवाई गाम छे, देगतेग वर दायेक बगसीराम नाव छे । देस परदेस में मारका कहावे छे ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

रू० भे०—मारका ।

मारक—देखो 'मारक' (रू भे)

मारका—देखो 'मारका' (रू भे)

उ०—असख फीण ओपति बहुत चीघा वैरका । मारकाड मरजाद भडा अनडा मारका ।—गु रू व

मारकाई, मारकाही—स० स्त्री०—चोरी के माल का पता लगाने वाले को दिया जाने वाला धन ।

वि०—उक्त कार्य करने वाला ।

मारग—स० पु० [स० मार्ग] १ रास्ता, पथ, सड़क । (हिं को)

उ०—१ जिण रो सगति रे प्रभाव स्वर्गलोक रो मारग मुद्रित कराय कृभीपाक रो निवास भाळियो ।—व भा

उ०—२ कवण वध मारग करे, दिम च्चारु निस दीह । सीहा स साके सको, साके किण स मीह ।—वा दा

उ०—३ सख्या विण लीघा दळ साथे । मारग पडे पहाडां माथे ।—रा रू

उ०—४ राजा सोच्यो इण मिचळाद रा डर मू रैयत चुपचाप आपरो मारग लेय लेवला ।—फुलवाडी

पर्या०—अयनक, इकपदी, गैली, पथ, पथ, पदवी, पद्धति, पविभाग, घाट, मग, सरणी ।

मुहा०—२ मारग चालणी=रास्ते पर चलना, मृत्यु हो जाना ।

२ मारग पकडणी=घबे लगना, सही आचरण करना । ३ मारग मारणी=लूट-पाट करना । ४ मारग लागणी=राह लेना, रवाना होना । ५ मारग लैणी=देखो 'मारग लागणी' ।

२ पगडढी, वीथि ।

३ जगह स्थान ।

४ चिन्ह, निशान ।

५ सम्प्रदाय, पथ ।

उ०—सुणि वात है साच मिद्धत सु ग्यान की बोहत गुणी करणी वलिहारी । प्रथवी के तारक पच मे आरमे भीखण स्वामी का मारग भारी ।—भि द्र

६ अनुसंधान, खोज ।

७ कार्य सिद्धि का माध्यम, माधन, उपाय ।

८ ढग, तीर, तरीका ।

९ अभिनय, नृत्य और संगीत की एक उच्च श्रेणी की शैली ।

१० अग्रहन या मागशीर्ष मास ।

११ मृगशिरा नक्षत्र ।

१२ ग्रह का रास्ता ।

१३ विष्णु । १४ नहर ।

१५ नाली । १६ कस्तूरी ।

१७ मलद्वार, गुदा । १८ धर्म, कर्तव्य ।

उ०—१ गुरा नें कहै मोनै त्रिसा घणी लागी गुरा कछो—साधू रो मारग है सेंठाइ राखी ।—भि द्र

उ०—२ तीडे पाट सलख कुळ तारग । महि मरजाद खत्रि धम मारग ।—रा रू

उ०—३ राखे कही, 'वाई रे तो घर रो खावद थो, भुळावे चुकावे । ते रो मारग होज छे ।—कुवरसी माखले री वारतां

१६ मृत्यु, मौत ।

उ०—राजकवर भर राजा नें छोड नें सेषट रांगी तो आपरे मारग चाली ।—फुलवाडी

मुहा०—१ मारग चालणी=मर जाना, ससार को छोड़कर चले जाना । २ मारग लागणी=देखो मारग चालणी' ।

२० तरीका ढग ।

उ०—सम ना आवे जीव को, अगकीया सब होइ । दाह मारग महर का, विरला वूर्फे कोइ ।—दाहवाणी

रू० भे०—मग, मग मगि, मघ माग, मागि मागु, मारगि, मारग, मारिग ।

अल्पा०—मगड, मगडो, मागडो, मागडो, मारगियो ।

मारगण, मारगन—स० पु० [स० मार्गण]—१ भिक्षुक, याचक, मांगने वाला, (अ मा, ह ना, मा)

२ तीर, बाण, मायक, सर । (अ मा, हि ना मा, ह. ना. मा) सं० स्त्री०—३ मांगने की क्रिया या भाव, याचना ।

४ खोज, अनुसंधान तलाश ।

५ पाँच की संख्या ५ (डि को)

मारगमास-स० पु० [म मृग-माम] मार्गशीर्ष का महिना ।

उ०—माठी थाइ मालती, कमल तणा कुल-नास । विरहणीयां  
दुख दाखविइ, मरि नू मारगमास ।—मा का प्र

मारगसिर, मारगसिरि-स० पु० [म० मार्गशीर्ष] १ मार्गशीर्ष मास ।

उ०—मारगमिरि ऊभी रही, मारगसिर सुणि मास । चवि  
चुट्टी चित्राम जिम, मुन्नई माधव-भास ।

पर्य०—आगण, मगमर, सवत आद, सह ।—मा का. प्र

[म० मार्गशीरी मार्गशीर्ष] २—पूस मास की पूर्णिमा ।

[स० मृगमिरम] ३—मृगशिरस नक्षत्र ।

उ०—मारगसिरि ऊभी रही मारगमिर सुणि मास । चवि चुट्टी  
चित्राम जिम, मुन्नई माधव-भास ।—मा कां. प्र

मारगि—देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—जुदा हुए जिद जीव, भ्रिग खग भ्रामूँ मरे । मारगि वहतै  
माँडिओ, दाणव प्रलै दईव ।—वचनिका

मारगियो—देखो 'मारग' (प्रल्पा, रू भे)

उ०—पारो मारगियो लीलाणी, धरे पधारो ओ राज! म्हाँरा  
साथीढा रे ।—लो गी

मारगी, मारगु, मारगू—वि० [स० मार्गिन्, मार्गी] १ मारग का, मार्ग  
सम्बन्धी ।

२ किसी पथ या सम्प्रदाय का मानने वाला, अनुयायी ।

उ०—श्रीधर महता कथा राखवा समदां कडे, श्री हथा रामज्यु  
सई मारीच सुवाह । मारगी कदीम रूक चलाक भारथा मुडे,  
'दयाल' मारगी तथा भाइडे दुवाह ।—दादूपथी साधां रो गीत

स० पु०—१ राहगीर, पथिक ।

उ०—लावा पैँडा सू थाकयोडो कोई मारगू भोजन रै उपरांत  
पावणा रूपी भवतरे तो उगु री सरबरा घर भाव-भादर करणा  
सू सुरग री लाभ व्हे ।—कुलवाडी

२ संगीत में एक सूच्छंता ।

मारग—देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—भरै माँग मिदूर मारग माळै, वहे सामलो वज्ज सेरी  
विचाळै ।—ना द

मारस-स० पु० [म० माच] १ गमन प्रस्थान, वृक्ष ।

२ ईश्वरी सन् का तीसरा माम ।

मारजण-स० पु० [स० मार्जन] १ नहाने या सफाई करने की क्रिया  
या भाव ।

२ मफाई, स्वच्छता ।

उ०—मार्ग जाइ मालि केलि गृह भन्तरि, करि भ्रगण मारजण  
करेण । सेज यियाज खीर सागर मजि, फूल वियाज सजै तसु फेण ।

—बेलि

३ नहाने की क्रिया, स्नान ।

४ उबटन, मानिश ।

५ माजन क्रिया ।

६ प्रतिलेपन ।

उ०—इतै क्रम पख तेरस भाई, सरस वणी गढ़ तणो मभाई ।  
भजिर मारजण गुण ओपाया, महले नवरग चित्र मढाया ।

—रा रू

७ सुधार, परिमाजन ।

८ भ्रम्यास, रियाज ।

रू० भे०—माजण,

मारजणी-स० स्त्री० [स० मार्जनी] १ झाड़ू, बुढ़ारी

२ संगीत के मध्यम स्वर की चार श्रुतियों में से अंतिम श्रुति ।

मारजर, मारजार मारजारी-स० स्त्री० [स० मार्जर, मार्जरी] १ बिल्ली,  
विलार ।

२ ऊद विलाव ।

३ मुदक, कस्तूरी ।

रू० भे०—मजार,

भल्पा०—मजारही, मजारी, मभारही, मजारही मजारी,

मारजारी टोडी-स० स्त्री० [स० मार्जरी-टोडी] सम्पूर्ण जाति की  
एक रागनी ।

मारण-स० पु० [म०] १ मारने या हत्या करने की क्रिया या भाव ।

उ०—दुष्टी वाता तो कंठी मीठी-मीठी करे, पण मांय रा मांय  
धाप नै मारण ग करतव रचै ।—कुलवाडी

२ विप, जहर । (म. मा, ह ना मा.)

३ एक मंत्र विशेष ।

उ०—कामण, मोहन, मारण, थमन, जगम, थावर, जडी, बूटी,  
जत्र, मत्र ।—पचदही री वारता

४ मनुष्य को मारने के लिए किया जाने वाला एक तांत्रिक  
प्रयोग । तांत्रिक पट्कर्मों में से एक । (कल्पित)

वि०—१ मारने वाला, हनन करने वाला, नष्ट करने वाला ।

उ०—नमो प्रह्लाद उवारण प्रम्म, नमो भ्रग-कामव मारण भ्रम्म

—ह र

२ मिटाने व दूर करने वाला ।

उ०—राधव तण जोडि गुण रूपक । मारण दलिद्र वधारण माम ।

—ह नां मा

मारण, मरण-वि० यो०—मार कर मरने वाला ।

उ०—पड़ती वाय साथ पल्टतै, हाथ वखाणि वखाणि हियो ।

मारण मरण मारक मैण, कूढ ऊपनै साच कियो ।

—कन्याणदास जाडावत

मारणी-स० स्त्री० [स० म्ना-भ्रम्यासे=ल्युट्=म्नानी] १ पाठशाला में  
संध्या समय छात्रों द्वारा बोली जाने वाली गिनती ।



२ देखो 'मारणी' (स्त्री)

६० भे०—मुआरणी,

मारणी—वि० [स० मारण] (स्त्री० मारणी) १ मारणे वाला, सहार करने वाला ।

उ०—मार दइता घणा राकसा मारणी । भखै पळ घारणी रगत भेलो ।—खेतसी वारहठ ।

स० पु०—किमी के पास जाने पर शिर हिलाकर वार करने या आघात करने वाला पशु । इस प्रकार के स्वभाव वाला ।

उ०—बोल्थी—हिरणी हिरणी आगी होय, म्हारा बळद मारणा ।

—फुलवाडी

मारणी, मारवी—क्रि० स० [स० मारण] १ किसी के जीवन का अन्त करना, प्राण लेना, वध करना, हत्या करना ।

उ०—१ म्हारा सू आ वात देखणी नीं आवै इण विचै तो आप म्हनै आप रे हाथा मार न्हाको तो म्हनै सायत मिलै ।—फुलवाडी

उ०—२ मारे खान चढो रण मढो । खळ पकडो मारो बळ खढो ।

—रा रु

उ०—३ काधळजी वरस तो ७३ मे हा पिग पिडै आप वढो भगडो कियो । आदमी इकीस मारनै सारगखान नू तरशार वाही ।

—द दा

२ आघात या प्रहार करना, पीटना, चोट लगाना ।

उ०—१ छाती माथै गोडा देयनै जूता मार मारनै उण रै माथा रो माल पुवो कर दियो ।—फुलवाडी

उ०—२ मयदी वणै कान्हुरै थाप मारी । तरी साह तोफान रै माह तारी ।—मे म

१ मिटाना, नष्ट करना । (उ र)

४ सजा देना, दण्ड देना ।

५ लूट-मार करना, लूटना, छीनना ।

उ०—१ पीछे राजासर सू साथ करनै काधळजी चढ़िया, सू हमार रो काठो सरव मारियो ।—द दा

उ०—२ आदमी सवार पाळा आपरा साथ लिया सो जाय सरसे दोडिया वित मारियो गांव मारिया ।—ठाकुर जैतमी रो वारता

उ०—३ खाडाल रा गाव १० मारनै वित लीनो ।—नैणमी

६ कब्जे में करना ।

७ दुखी करना, परेशान करना, सताना, मानसिक कष्ट देना ।

८ इच्छा या किसी मनोविकार को बल पूर्वक दवाना ।

उ०—आसा तो एकी भली, दूजी भली न काय । दूजी आसा मारिसो 'हरिया' जुग मे आय ।—ली हरिरामदासजी महाराज

९ पछाड़ना, पटकना ।

१० अपने विपक्षी या प्रतिद्वन्दी को हराना, परास्त करना ।

११ प्रतियोगिता में किसी को पीछे रखना ।

१२ खेल में गोटी या पत्ते का हराना ।

१३ किसी वस्तु को किसी अन्य वस्तु से जोर से फेंक कर या पटक कर टकराना ।

१४ किसी योग्य न रहने देना, अयोग्य या निकम्मा बना देना, बल या प्रभाव समाप्त कर देना ।

१५ मरणासन्न स्थिति में करना ।

१६ गुण समाप्त कर देना ।

१७ स्त्री प्रसंग करना, मैथुन करना ।

उ०—पण दळकरण मानै नही इतरै फेर ही आय गळ वाखडी मारी और नसे मे कही थारी मा कू मारु ।

—भाटी सुंदरदास वीकूपुरी री वारता

१८ अनुचित ढंग से हथियाना, हड़पना ।

१९ धातु आदि की भस्म बनाना । (वैद्यक)

उ०—भरण एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै । तरक्क नीति सासत्राणि एक मुख उच्चरै । मारत एक सव्व घात केळवै रसायण, अगाध वंदराज राज ओवदी विचारण ।—गु रु वं

२० शिकार करना ।

२१ उद्विग्नता से प्रयास करना ।

उ०—दोनू हाथां सू आपळिया मारतो होद मे फुरती सू कीं हेरण लागी ।—फुलवाडी

२२ लगाना, देना, भिडाना ।

उ०—१ तळाव रो मुहरत पूछिनै ले जाइ-नै नीव मारी भलै मुहरत ।—जसमा ओडणी री वात

उ०—२ घोड़ा तुरकीया राहदार उपर नांख पाखर दोना ही पाखतीयां लगाय तरगस कूटा मारचा भडीया रो भोलावट हाथ माहे ले बरछी नै राणी दहड चढी, सकत रूप धार ।

—राजा नरसिंह री वात

२३ समिश्रण करना, मिलाना ।

उ०—ओभरा घोय-घोय माहे मसाला मारियो मास घात दवगर कीजै छै ।—रा सा स.

मारणहार, हारो (हारी), मारणियो—वि०

मारिओडो, मारियोडो, मारचोडो—भू० का० कू०

मारीजणो, मारीजवो—कर्म वा०

मारिणो, मारिवो—रू० भे०

मारतंड—स० पु० [स० मारतंड] १ सूर्य, रवि, भानु । (अ मा, ना मा)

उ०—१ भर रज धूम रा बितान में मारतंड रा मयूख अतरधान बिद्या रो अभ्यास घरण लागी ।—व भा

उ०—२ माप का विहाई सा प्रताप का निदान । मारतंड भागे जिसी जोतसी जिहान ।—रा रु

२ आक वृक्ष, मदार ।

३ शूकर, सूअर ।

४ वारह की सख्या । ४ (डि को.)

रू० भे०—मारतुंड,



दिल्ली ने मिठाई घूड माय ।—नवळजी लाळस

उ०—२ ऊपटी घापगा कै वक्के लोण धारवाडा, मारवाडा हुकी हुकी, वक्के मार मार । चौडही हवदा खासा वाग रा टलां सु चलै, हलै हमला मू माथा नाग रा हजार ।—हुकमीचद खिडियो

वि०—१ मारवाड का मारवाड सम्बन्धी ।

मारवी—स० स्त्री०—१ मरु प्रदेश की स्त्री ।

२ एक रागिनी विशेष ।

रू० भे०—मारवी,

मारवीराव, मारवैराव, मारवीराव—देखो 'मारुगज' (रू भे )

उ०—पमग अफाळि सुरज्ज पसाव । रोळा मभि मेलियो मारवैराव ।—सू प्र

मारसलला—स० पु० [अ० मर्शल-लॉ] १ किसी देश के शासन का सेना को सौंपे जाने का आदेश ।

२ प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में गड़बड़ी हो जाने पर उसमें सुधार लाने व व्यवस्थित करने के लिये, कुछ समय के लिये लागू किया जाने वाला सैनिक शासन, फौजी हुकूमत ।

मारहट्ट—१ देखो 'मरहट्टी' (मह, रू भे.)

२—देखो 'मरहट्ट' (रू भे )

मारहली—देखो 'मरहट्टी' (रू. भे )

उ०—जूझवां फुहार टक उहै धके आय जेता, अग चक्र वार हुभा वक्र के अथाण । केळपुरै अठी-उठी चक्र वेग फेर कीघी, मार टक मारहट्टी सेन री मथाण ।—वट्टीदास खिडियो

मारहट्टी—देखो 'मरहट्टी' (रू भे )

उ०—आसमान लागी घुघ भागी कीघु सेल आयी, जाडो मार झेल आयी लोहा जगा जीप । आडी मारहट्टा चो साकडी थाट ठेल आयी, 'माघवैस' वैल आयी वाकडो महीप ।

—हुकमीचद खिडियो

मारहट्ट—देखो 'मरहट्ट' (रू. भे )

२—देखो 'मरहट्टी' (मह रू भे )

मारहट्टी—देखो 'मरहट्टी' (रू भे )

मारहट्टी—देखो 'मरहट्टी' (रू भे )

उ०—तेगां पाण अग्रनद सतारा नाय स तोडे । मोडे मारहट्टा घडा मगोडे मतग ।—हुकमीचद खिडियो

मारहट्टी—देखो 'मरहट्टी' (रू भे )

मारहट्टी—देखो 'मरहट्टी' (रू भे )

उ०—मारहट्टी कहे में गाजिया लोक पाजा माहै, राजां माहै अगजी रजियो मारवाव ।—महाराजा बहादुरसिंह री गीत

मारहली, मारहली—वि०—मारने वाला, वार करने वाला ।

उ०—पळ खुटा पतिमाह कर आवाघ बाहे किलव । मारहली मरि मारियो रिण गोदो' रिमराह ।—वचनिका

मारकुस—स० पु० [स०] नाखून, नख ।

मारराज, मा'राज—देखो 'महाराज' (रू भे )

उ०—१ सुज भू वीर जुव हरख साज, सिर हुकम चाढ़ बोले सकाज । मा'राज तरुण तप कर परमाण, अण नीत गुडाभा आसुराण ।—शि रू

उ०—२ उण नै सामी एक गरीब वामण धकियो । राजकवर हाथ जोड नै कह्यो—पगा लागू मा'राज —फुलवाडी

उ०—३ बोल्यो—जोगेसर मा'राज घोडा ढवो, थांरी एकर आरती करू ।—फुलवाडी

उ०—४ दलाल ऊभै हो परै' र हाथ जोड्या । होड-होड किसनजी ही कैणै सू मोढा मोड्या । पगा लागू गुरु मा'राज । ऊंवा विराजो ।—दमदोख

उ०—५ राजाधिराज मा'राज रांम । ते ताज सीस आलम तमाम । —र ज प्र

मारराजा, मा'राजा—देखो 'महाराजा' (रू भे )

उ०—१ लक्खी बिलजारा री कुरव-कायदो किणी राजा मा'राजा सू कम नी हो ।—फुलवाडी

उ०—२ केई राजा, मारराजा, सेठ-साहूकार नी नी व्हे जंडा वण्णाव मे अडीजत ठमियोडा राजकवरी नै वरण सारू ऊभा हा ।

—फुलवाडी

उ०—३ तेल-फुतेल, अतर-सेटरा कटर अर मावण-सोढे रा गोडे-गोडे सूणा भिदूक राजा मा'राजा रा मा पड्या दीखै ।—दमदोख

मारार मार—स० स्त्री० [अनु०] मार-घाव, युद्ध ।

उ०—मारार मार हुई महिमडळ मेछा भग पडे महि मडळ । माडे धीर नको महिमडळ, मच्छ गळा-गळा दिली मडळ ।—गु रू व.

मारि—स० स्त्री० [स माग्] १ नाश, विध्वन हनन ।

उ०—राजग्मि, परमारहन घरमात्मा मारि निवारक सत व्यमन-निवारक प्रतिग्यानिरवाह दशारणभद्र न्यायव्रति विस्तारित जगद्भद्र प्रजापाल त्रिपुकुलप्रलयकाल । व न

२ मरी, प्लेग ।

मारिक—देखो 'मारक' (रू भे )

उ०—छूटि कोवड गुण वांण गाजं । फारका मारिका हाक वाजं ।

—गु रू व

मारिख—देखो 'मारिस' (रू भे )

मा'रिख—देखो 'महारिसी' (रू भे )

मारिग—देखो 'मारग' (रू भे )

उ०—राजा मानवाता दीठी जाईजे केथ ताहरा एक मारिग दीठी । तीर्य मारिग चालीयो आन जावै देखे तो तपसी च्यार वंठा छै ।

—चौबोली

मारिच—देखो 'मारिच' (रू भे )

उ०—आया रत खवनैइ तई, सत्र मारिच सुवह ।—गमरासी

मारिणी, मारिबी—देखो 'मारणी, मारवी' (रू भे ) (उ र )

उ०—१ काळो पहाड केल्हणहरी, देख साह दीयो हुकम । राठोड हुआ हठि मारिवा ग्राम वेव 'गोइद' जम ।—गु रू व

मारिणहार, हारी (हारी,) मारिणिघो—वि०

मारियोडो—भू० का० कृ०

मारिईजणो, मारिईजयो—कर्म वा० ।

मारित—वि०—१ जो भस्म कर दिया गया हो । (वेद्यक)

२ मृत, वधित ।

३ पीटा हुआ, आहत ।

मारियोडो—भू० का० कृ०—१ जीवनांत किया हुआ, प्राण लिया हुआ,

वध या संहार किया हुआ, मारा हुआ, हत्या किया हुआ ।

२ आघात या प्रहार किया हुआ, पीटा हुआ ।

३ मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

४ सजा या दण्ड दिया हुआ ।

५ लूट-मार किया हुआ, लूटा हुआ, चोरी किया हुआ ।

६ कटजे में किया हुआ ।

७ दुखी या परेशान किया हुआ, सताया हुआ, मानसिक वृष्ट दिया हुआ ।

८ इच्छा या विकार को बल पूर्वक दबाया हुआ ।

९ पछाड़ा या पटका हुआ ।

१० हराया हुआ, परास्त किया हुआ ।

११ प्रतियोगिता में पीछे रखा हुआ ।

१२ खेल में गोटी या पत्ते को हराया हुआ ।

१३ दो वस्तुओं को परस्पर टकगया हुआ ।

१४ अयोग्य या निकम्मा बनाया हुआ, बल या प्रभाव समाप्त किया हुआ ।

१५ मरणोन्मुख स्थिति में किया हुआ ।

१६ गुण समाप्त किया हुआ ।

१७ स्त्री प्रसंग या मैथुन किया हुआ ।

१८ अनुचित ढंग से हथियाया हुआ, हड़पा हुआ ।

१९ भस्म बनाया हुआ (घातु)

२० निकार किया हुआ ।

२१ उद्धिगता से प्रयाम किया हुआ ।

२२ लगाया, दिया या भिड़ाया हुआ ।

२३ भस्मिष्यण किया हुआ, मिलाया हुआ ।

—( स्त्री० मारियोडो )

मारिस—स० पु० [स० मारिष] १ नाटकों का सूत्रधार ।

२ प्रतिष्ठित या माननीय ।

रू० भे०—मारिष,

मारी—स० स्त्री०—देखो 'मरी' (रू भे)

मा'री—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—घासडीयाँ अणीयाली, विचि सोट्ट टीकी काली हो । हिरण घसँ चुरताली, मा'री घाव लीधी मटकाली ।—वि कु

मारीच, मारीछ—स० पु० [स० मारीच] १ रावण का आश्रित एक राक्षस जिमन नीता हरण के समय माया-मृग (स्वर्णमृग) बनकर

राम को धोखा दिया था ।

उ०—१ देवी वाँण रे रूप मारीच, मारी, देवी मार मारीच, लखण पुकारी ।—देवि

उ०—२ अग रूपी मारीच मारियो । भुजा मामणो राम भ्रमग ।

—ह ना मा.

२ कश्यपकुलोत्पन्न एक ऋषि ।

३ बादशाह या राजा की सवारी का बड़ा हाथी ।

उ०—समस्त ही मडप रा प्राधुण का प्रामारराज की तरफ सू वरात रँ सिविर जाय दुल्लाह नू मारीच चढाय अरबुद रा दुरग रँ तोरण पधरावियो ।—व भा

४ देखो 'मरीचि' (रू भे)

उ०—जिण ब्रह्म तणै मारीच जाणि, मारीच तणै कामिप प्रमाण ।—सू प्र

रू० भे०—मरीच, मारिच,

मारु—१ देखो 'मारु' (रू भे)

उ०—१ माभी मेर भ्रमग भड, मारु भ्रमली-माण । गिळण गढा भूखाळुमो, भोवासँ जमराण ।—गु रू व

उ०—२ हसतो तो कजली देसाँ रा ल्याज्याजी घुहला तो मारु देस रा ल्याज्याजी ।—लो गो.

२—देखो 'मारुनिमाणो'

उ०—इकळ सोडम द्वादस करं, म्होरे दुगुग मिलाय । मारु निसाणी तिहुंमुणै, सुकव 'मछ' मरसाय ।—रू

मारुअड, मारुअड—देखो 'मारु' (रू भे)

उ०—१ कळि कळि पगीकम एकरन्न, देखियइ दुवापुर दिख्या दन्न । कणइट्ट कन्हा धर लूणकनि, मारुअड राइली मोट मनि ।

—रा ज सी

उ०—२ हिंदुआ देखि हथियारि हार, भ्रमपत्ति तणा लूवइ अयार । फरि चडिई कीधउ भडै फेर, मारुअड राउ डोलइ न मेर ।

—रा ज सी

मारुअडि, मारुअड, मारुअड, मारुअडि—देखो 'मारुअड' (रू भे)

उ०—१ राठउड राउ जोवण रहाडि । मनि किय मूगुळे मारुअडि ।—रा ज सी

उ०—२ ब्राह्मण नि तां वरुण करता सिधु न प्यु मारुअडि । तु सू दान करघू मि मनसू, चिता पामि हाडि ।—नळाख्यान

मारुओ—देखो 'मारुओ' (रू भे)

उ०—फरि कोप दळा प्रारम कहर, वेधिगर आगै धरं । मांछिओ मुगल्लै मारुऐ रिण 'भोरण' 'जसरारज' रँ ।—वचनिका

मारुडी—देखो 'मारुडी' (रू भे)

उ०—मश्री जश्री सुकन जोतसी, याँ रँ हाथ न उपाय । ऊवो कोई सँण मिळावै मइयाँ, जो मारुडी दे मिळाय ।—लो गो.

(स्त्री० मारुडी)

मारुजी—देखो 'मारुजी' (रू भे)

उ०—सूवटा, पीव मिळाई रे, सूवटा, मारुजी मिळाई रे । तेरी जलम-जलम गुण गासू, सूवा, म्हारो भवर दिसाई रे ।

—लो गी

मारुणि, मारुणी—देखो 'मारुणी' (रू भे)

उ०—१ मारुणि नारी मिली सब गावत सुंदर रूप सोभागी रे आज सखि पुन्य दिसा मेरी जागी ।—समयमंदर गरि

उ०—२ सात संयाक भुमक कर लाल ढोली निरखण जाय, थाने चातर जद वदाजी थारी मारुणी ने ल्योरे पोछाण ।—लो गी

मारुत-स० पु० [स० मारुत] १ हवा, पवन । (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ सोळई थान अचळ इंद्रीसुर, अति सुख उदै कियो अतरिउर । विसन ब्रह्म सिव अरक वस्त्राणी, जळपति ससि दिस मारुत जाणी ।—रा रू

उ०—२ ओप सिंदूर तेल अपल्ल, गडडे बाज ढळके ढल्ल । वहता विडग दाखे वेग, मारुत पेरियो किरि मेग ।—गु रू व

२ वायु का अधिष्ठाता, पवन देव ।

३ स्वामा ।

४ शरीर के त्रिदोषो मे से एक ।

५ हाथी की सूड ।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

७ अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

८ नितान एष द्युतान नामक वैदिक सूक्त द्रष्टाओं का एक सामूहिक नाम ।

[स० मारुत] ९ स्वाति नक्षत्र ।

रू० भे०—मारुत मारुत,

१० देखो 'मारुति' (रू भे) (घ मा)

उ०—सीता सुंदरी अरघग ससोभत, सेवग 'मारुत' सारखा । वाळ जिंसा बळवड बिहडण पाण भुजाडड पारखा ।—र ज प्र

मारुतचक्र-स० पु० [स०] वातचक्र, वातूल, वायु का गुल्म ।

उ०—मिळिया किर मारुतचक्र मही ।—रा रू

मारुतसखा-स० पु० यो० [स० मारुत + सखा] अग्नि । (ना मा)

मारुतमुत-स० पु० यो० [स० मारुत + मुत] १ हनुमान ।

२ भीम ।

मारुति-स० पु० [स] १ हनुमान, वज्ररग । (ह ना मा)

उ०—मारुति जेण कियो अजरामर, केकध भूप सुकठ दियो कर ।

—र. ज प्र

२ भीम ।

रू० भे०—मारुत, मारुत, मारुत,

मारुधर—देखो 'मारुधर' (रू भे)

मारुनिसाणी-स० स्त्री०—डिगल का एक निमाणी छद जिसमे प्रथम

१६ मात्रा, फिर १२ तथा तुकान्त मे दो गुरु होते हैं ।

मारुवैगण-स० पु०—वृत्ताख की एक जाति ।

मारुवाड, मारुवाडि—१ देखो 'मारवाड' (रू भे)

उ०—घणी गालइ घाली वदि छोडावी, रेख रहावी, खाडइ जइअ अगावी नव कोटो मारुवाडि भली मारुहावी ।—रा सा स

२ देखो 'मारवाडी' (रू भे)

मारुवाय, मारुवाव—देखो 'मारुवाज' (रू भे)

मारुवो—देखो 'मारुवो' (रू भे)

उ०—राजि नाळेर ल्याया तिकी म्हाने सगा जाण्या पिए एक मारुवा ठाकुरा सू म्हाकी अरज छे, ज्यो हुकम हुवे तो अरज करा ।

—राव रिणमल री वात

मारुवणी—देखो 'मारवणी' (रू भे)

उ०—कूवरी पिंगळरायनी, मारुवणी तसु नाम । नरवरगढ ढोलइ भणी, परणी पुहकर ठाम ।—ढो मा

मारुवी—देखो 'मारवी' (रू भे)

उ०—इसइ आरखइ मारुवी, सूती सेज विछाइ । साल्हकुवर सुपनइ मिल्यउ जागि निसासउ खाइ ।—ढो मा

मारुवो—१ देखो 'मारुवो' (रू भे)

उ०—मारुवे रावता गाजतां मंगळा, वाधियो वाद सू इद्र री वादळा ।—गु रू व

२ देखो 'मारु' (अल्पा, रू भे)

उ०—बाबा मदडम मारुवा, सूचा एवाळाह । कधि कुहाडउ सिरि घडउ, वासउ मफि थळाह ।—ढो मा

मारु-स० पु०—१ मारवाड का राजा, अधिपति ।

उ०—ईहंगा घणी विरदावियो, मारु अमली माण नू । आपरो करे दीघो उतन, तेरे राव सुरताण नू ।—सू प्र  
२ राठोड ।

उ०—१ मारु पर घर मारका, ठहरै समहर ठोड । ऊवाणी रजवाळियो, चढ जयमल चीतोड ।—बा, दा

उ०—२ वात अकव्वर आगळी, अक्खी हाथ मिळाय । दून विदा करके लियो, मारु 'दुरग' बुलाय ।—रा रू

उ०—३ भइ बहतरि ऊमरा, खान सत्तरि थहरिया, तिण वेळा तुडि-त्ताण विडण मारु बळ भरिया ।—गु रू व

३ मरुप्रदेश का निवासी ।

४ मरुप्रदेश, मारवाड ।

उ०—१ दिम मारु खुरसाण तणा दळ, वाधे जाण प्रळे चा वडळ । अण तर यळां सिखर खुर तूटे, फीजा घमां परवत फुटे ।

—रा रू

उ०—२ बुद्धी एक दत वत वत सत गुरू मथ जैमे । मारु कन वाम 'जसवत' वाग राईके ।—ऊ का

५ मारवाड की भापा, डिगल, मारवाडी ।

उ०—भावा ब्रज मारु सुर भाखा भावा प्राकन जान भर । पायी रचण रूपगा पैडो, मेहाही थारो महर ।—बा दा

६ पति, प्रियतम ।

उ०—१ सुद अवे आप लीजो सजन, जे चावी छो जीवती । जिण भाति वतिक दाऊ विना, मारु इम भूली मती —पना

उ०—२ या प्रेम पत्रिका दीज्यो हो, म्हांग मारु ने जाय कीज्यो ।  
श्रामू टप टप श्रमिग्रा टपके, वदन गुनावी मीज्यो ।—लो गी  
७ रमिक ।

उ०—१ छलवलिया घोडा भला, छलवलिया श्रमवार । मद  
छकिया मारु भला, मरवण नखरादार । दाहडी दाखां रो ।

—लो गी

उ०—२ मणहण भवर मस्त फूलां सु, श्रोर उड रह्यो छै  
पराग । मारु श्रामी रसरज वसत मे किरणिक सुगणी रे भाग ।

—रसीलै राज रो गीत

८ एक राग विशेष । (मीरां)

९ एक लोकगीत का नाम ।

१० युद्ध मे गाया जाने वाला एक राग ।

११ युद्ध का बाजा ।

१२ कुम्हारों की एक शाखा ।

वि०—१ मारने वाला, समाप्त करने वाला ।

उ०—तोम पोम श्रोम मारु, काय श्रपमोम कोम । हाय दाह तेरे  
दोम, कहाली पुकारु मे ।—ऊ का

२—देवो 'मारुनिसाणी'

उ०—मत मोलह फिर वार मुण, दय मोहरे गुरु दोय । मारु  
दोम नीसाणी मुण, सुकव महा मत सोय ।—र. ज प्र

रु० भे०—मारव, मारु, मारुघई, मारुघउ

श्रलपा—मारुवो मारुटो,

मारुआड, मारुआडि—देवो 'मारवाड' (रु. भे )

उ०—नवकोटी नामि भणू मारुआडि घण देम । घण कण घरि  
सविकहि तणद उणण कणय मुवेस ।—का दे प्र

मारुश्रीराव—देवो 'मारराज' (रु. भे )

उ०—हिन्तो पहा श्रायां राण श्रत दिल्लीयो । तिलमू कहै चित्रगढ़  
तृक । 'जैमल' जोव काम तो जोटी, मारुश्रीराव म डोल म मूक ।

—जयमल मेडतिया रो गीत

मारुडो—देवो 'मारुटो' (श्रलपा, रु. भे )

उ०—वकगिया रोमावे कुकडा कटावे श्रर दाहडो मारुडो तो  
उहती ही रवे है ।—दमदोय

मारुडो—म० पु० [म्री० मारुडो] १ एक मारवाडी लोक गीत ।

रु० भे०—'मारुटो'

२ दवा 'मारु' (श्रलपा, रु. भे )

उ०—साक पहे दिन श्रायवे, रे जला, खातण लावे खाट । फाई  
ए कण थारी खाटने, म्हारे मारुडे विना किसी ठाट ।—लो गी  
श्रलपा—मारुडो

मारुजो—म० पु०—पति, प्रियतम ।

उ०—एक वर, श्रो मारुजो, करला जो पाछा मोड । राजीदा  
डोना, भोलू घणी श्रावे म्हारी माय री ।—लो गी

रु० भे०—मारुजो,

मारुणी—स० स्त्री०—१ मरुप्रदेश की स्त्री या श्रौरत ।

२—देखो 'मारवण' (रु. भे )

उ०—मातवो वधावो भवरजी री सेज मे, म्हारे बैठपा राज-  
दिषाण । डोलो तो मारुणी हस वतलावसी ।—लो गी.

रु० भे०—मारुणि, मारुणी

मारुत—१ देखो 'मारुत' (रु. भे )

२—देवो 'मारुति' (रु. भे.)

उ०—गिरा मे सुमेरु श्रोपे सुरताण राहा गणा । जत्या मे मारुत  
प्रजापति रिखा जाए ।—भगताराम हाडा रो गीत

मारुदेस, मारुधर, मारुधरा—स० पु० [म० मरु+देश, मरु+धर या धरा]  
मरु प्रदेश, मारवाड ।

उ०—१ ततवण मालवणी कहड, माभलि कत सुरग । मगळा  
देस सुहामणा, मारुदेस विरग ।—डो मा.

उ०—२ श्रौरग ऐम श्रविषयो, दूजे दिन राठीड । गया दरगह  
साह रे, मारुधर कुल मोड ।—रा रु

उ०—१ नमो देम मारुधरा कोट नोवा । नमो द्रग गेडा कलां  
खुरद दोवा ।—मे. म

रु० भे०—मारुधर

मारुमाखा, मारुमासा—१ देखो 'मारु' (५)

उ०—करमाणद श्राणद कवेस वहुण मारुमाखा वट । वगस जिको  
विरदत 'डकडाणी' श्रागा हट ।—पा प्र

मारुयाड, मारुयाडि, मारुयाड मारुयाडि—१ देखो 'मारवाड' (रु. भे )

उ०—१ जिम ए तीरथ जागता, तिम ए तीरथ सारो जी । मारुयाडि  
माहे बडउ सेश्रुज नउ श्रवतारो जी ।—स कु

२—देखो 'मारवाडो' (रु. भे )

मारुराण—म० पु० [स० मरु+राट] १ मारवाड का राजा ।

२ राठीड ।

मारुराई, मारुराज, मारुराजा, मारुराव, मारुवाराव—स० पु० [स०  
मरु+राजा] १ मारवाड का राजा, श्रधिपति ।

उ०—१ बावे सिखर वडे लावे श्रव । डलपुड नाम वधे श्रनमध ।  
दीन न को नहि कोई देमी, मारुराव जिता मदमव ।—द दा

उ०—२ ब्रल जड तौड मोड वैरिया, धरघारुजल दात धरे ।  
मारुराव श्रसो मद मंगल, कोट गडा सैलोड करे ।

—महाराजा जसवतसिंहजी रो गीत

उ०—३ राग हरख मगल रळी, चक्रवति श्राया चाव । पति नव  
कोट पधारिया, महिले मारुराव ।—रा रु

२ राठीड ।

रु० भे०—मारुवाराव, मारुवीराव, मारुवैराव, मारुवीराव,  
मारुराय, मारुराव, मारुश्रीराव ।

मारुवो—स० पु०—१ राठीड ।

२ मरु प्रदेश का निवासी ।

रु० भे०—मारुवो, मारुवो ।

मा'रे-सर्व०—मेरे ।

मारेल-वि०—१ दवा हुआ,

२ थका हुआ ।

३ घायल ।

उ०—जनहरिया मारेल मन, सारेला निज तत । न्यारेला दुनीयान

सु, यारेला भवगत ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

मारोट, मारोठ-स० स्त्री०—१ विवाह के समय दूल्हे या दुल्हन के मुख पर मुनहरी दाणो से की जाने वाली चित्रकारी ।

२ एक प्रान्त का नाम ।

रू० भे०—मरवट, मरोट, मरोठ,

मारोमार-क्रि० वि० [अनु०] १ निरन्तर, लगातार ।

उ०—सगो सास मम्हांता समरण तन मन खुष तपावै । लोह लुहार तणो गति लागै मारोमार मचावै ।—ऊ का

२ अत्यन्त शीघ्रता से, द्रुत गति से ।

३ क्रमशः एक के बाद एक ।

स० पु०—हुल्लड, भगदड ।

मारो—देखो 'मार' (अल्पा, रू भे )

उ०—नीलजु निधिणु मई अजाण काइ मारइ मारो । ईणि जनमि मुभ पडुकुमर विणु नही य भतारो ।—सालिभद्र सूरि

मा'रो देखो म्झारो' (रू भे )

उ०—प्रीतम मा'रा ममरला जी काइक कीजे सक । फुल्या दीसं फुठराजी, आफु आडै अक ।—वि कु

माळ माल-स० स्त्री० [स० माल, माल] १ किसी कस्बे या गांव की समस्त कृषि भूमि ।

यो०—आडै माळ=पूर्ण भूमि ।

२ खेत, भूमि ।

उ०—सोरठ गूजर खड सरीखा मुलका तणी न पाकी माळ । मुहगी अन पड्डै माळागिर, मुहगी अन भवहड मुदराळ ।

—देवनाथ री गीत

३ घन, जंगल ।

उ०—१ पथी मारग पांतरै, हिया फूट हिय हार । जबक हू हू रव करै सूनी माळ मझार ।—कविराजा वांकीदास

उ०—२ आसा खेती अमर घन, निरघन यू जीवत । गौरी पीडा नेचती, मिरगा माळ चरत ।—अज्ञात

४ ऊंची भूमि ।

उ०—मदाहर पाहै घोळा माळ, दुरवळ भाटी देस दुकाळ ।

—रंगरेली धोडू

५ ककरोली भूमि ।

६ स्थान, जगह ।

[स० माला] ७ कूप पर चलने वाले रहट पर घूमने वाली मिट्टी या घातु के बने जल-पात्रों की माला (टिड) ।

उ०—सहजिइ जीव निरमल भलकति, माठ पहर छई करम

वाघति । अरहुटि घटिका जिम कूइ माल, तिम जीव फिरइ अण-तउ काल ।—वस्तिग

८ चरखे की होरी जो वेलन व तकुवे को घुमाती है ।

उ०—ताकू तेरो सोवणी लाल गुलाबी माल । चरकू मरकू फिरे घेरणी, मघरी मघरी चाल ।—लो गी

९ किसी चक्र को घुमाने वाली माला के आकार की रस्सी ।

१० नदी ।

उ०—नदी जळ नील सुफील निसाण, उफेलत छीलर ढोलन आण । वगत्तर भीवर जळ वहत, आवै नह माळ रगत्तर भत ।

—मे म

[स० माल] ११ फमल की उपज । (मा प्र वि )

उ०—गुलजी कह्यो, स्वामीनाथ ! रुपिया दमेक रो माल पाछो आयो । इतरीक वाजरी, सरव रुपया दसेक रो माल पाछो आयो ।

—भि द्र

१२ मेघमाला, घनघटा ।

उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरइ भड अण पार ए । मिटि जळण घरणि विनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए ।

—रा रू

१३ अच्छो फसल पर लिया जाने वाला कर (टेक्म), राजस्व ।

यो०—माळ सेरणी ।

१४ बाल, केश ।

उ०—मसतग माळ मूडायकै, दाडी मूळ मूडाय । हरीया मन मूडया विना, निज पद कैसे पाय ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज १५ पक्ति, कतार, श्रेणी ।

उ०—तुरा खुरताळ वज तूर तासा भवट । माळ फरहर गजा घजा माळा ।—कविराजा वाकीदास

१६ भुण्ड, समूह ।

१७ देखो 'माळा' (रू भे )

उ०—१ राम नाम चगो, रतन सो मुनिराजा माळ । विल वाघो वांधं गळै, गळै म वाघो गाळ ।—बा दा

उ०—२ पत्र सुघारै जोगणी, माळ सुघारै रभ । धम चलेवो सोम रवि, देखै व्योम अचभ ।—रा रू

उ०—३ दीन अळाव फिरे गढ दोळा, हर सिर माळ बणाव हुवा । सात लाख भड खत्री सूरारा, मेछ अठारा लाख मुवा ।

—महाराणा गढ लक्ष्मणमिह री गीत

उ०—४ विण तरुवर जिम वेलडो, कठ विना जिम माल । पुरुम विहणी पयानी, किणि परि ठेलिसि काल ।—मा का प्र.

माल-स० पु० [स०] १ द्रव्य, घन । (ना मा, ह नां मा )

उ०—१ तीडा करसण सूपियो, वानरडा नू वाग । माल किराडा सूपियो, ज्या रा फूटा भाग ।—बा दा

उ०—२ जदी चोर कहै । स्त्री परमेसरजी खावा दीघी अर माल पण आछी आयो ।—पंचमार री वात



उ०—३ पछै सरव काम आय चुका अर सरव आग माहै पडिया । तद पातिमाह मध्यै वाकलियं नू सावामी दीवी । अर गढ माहै आयो तद उह्यो—अवै माल मतां बतायो, पछै बतायो ।

—पताई रावळ री बात

उ०—४ चारु वेदा रै जाणकार पिडतजी री निजर चरु मायै ही । वै मनाग्याना टिमाव करण लागा के चरु मे कित्तो काई माल व्है मकै ।—फुलवाडी

उ०—५ जद स्वामीजी बोल्या—कुवदी चोर हुवै ते चोरी करने लाय लगाय जावै । लोक तो लाय रे घने लाग जावै नै आप माल लेय नै चालतो रहे ।—भि द्र

मुहा०—१ माल उढाणो (उढावणो) = चोरी करना ।

२ माल हाथ नागणो = धन की प्राप्ति होना ।

३ सम्पत्ति, जायदाद ।

उ०—१ वृद्धि मू च्यारा ने पकड्या माल राख्यो । अनै एक साथै च्यारा मू भगडतो तो कद पूगतो ।—भि द्र

उ०—२ प्रभुना देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल । पुण्य विना किम पांमोयै, एल मुलक ए माल ।—वि कु

३ मामान, सामग्री ।

४ क्रय-विक्रय का सामान ।

उ०—रोळ विगाडै राज नू, मोल विगाडै माल । सने-मने मिरदार री, चुगल विगाडै बाल ।—वा दा

५ स्वादिष्ट या उत्तम भोजन, पकवान ।

उ०—१ गुमी खुमी मे ही लुटा दी लाल, मजा-मजा मे ही घुटा दिया माल ।—दम दाव

मुहा०—माल उढावणो, माल घुटावणो = इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना ।

६ किमी वस्तु का सार-तत्त्व ।

७ मुन्दर स्त्री ।

८ युवती । (बाजार)

९ हरतान ।

१० विष्णु का एक नामान्तर ।

११ छत्र, कपट, दगा ।

१२ दक्षिण—पश्चिम बंगाल के एक जिले का नाम ।

१३ मालवा देश ।

१४ एक प्राचीन अनायं जानि ।

१५ मामर्थ्य, हस्ती ।

उ०—बावर नू जीत्यो नहीँ, 'सांगो' साहा साल । उगरे घर रा ऊमरा, मो आगे की मान ।—वां दा

१६ घकुन चिडी जो दाहिनी ओर बैठ कर घुम घकुन देती है ।

उ०—लघिया चाविल पाछिना खाल । हावी देवी अनइ दाहिणी माल ।—वीमलदेवरास

१७ गणित मे वर्ग का पान, वर्ग अंक ।

१८ देखो मल्ल' (मह, रु भे)

उ०—१ गोविन्दइ मवि माल मरीखउ चारणूर ते चूरीउ । बीजइ वववि माल मोस्टिक, हण्डित तउ कम कोपिइ चडिउ ।

—वनदेव गणि

उ०—२ न मानाखाड भूकइ माल लोक तणइ मनि अतिहि माल । रवाडी न खीवन करइ, खेल वाडी न गुडी आ घरइ ।

—नळदवदती राम

मालक—देखो 'मालिक' (रु भे)

उ०—१ कोरो मालकाणो जचावै, की आवै न जावै ।

—दमदोव

उ०—२ आलमगीर नू गिरफदार करण अरु साह सूजै नू मालक करण सू म्हें हरीली मे हा भगडी वखत भगी घातमा ।—द दा

मालकत—देखो 'मालकियत' (रु भे)

उ०—तुरक हिदू रहै फिरण मालकत । कै कहै वीकाण रा कूक-करणा । भूप नव कोट रा अगार हासल भरी । चाकरी करो मिर घरी चरणा ।—वा दा

मालकपणो—स० पु० यो०—१ स्वामी या मालिक होने का भाव, स्वामित्व ।

२ बढप्पन, दयालुता ।

मालकाकणी, मालकांगणी—स० स्त्री०—१ हिमालय पर ४०० फुट तक पाई जाने वाली एक लता विशेष ।

२ उक्त लता क बीज जो ओषध मे काम आते हैं । इनमे स तेल भी निकलता है ।

३ एक प्रकार का कदन्न ।

मालकियत—स० स्त्री० [अ०] मालिक होने का भाव, स्वामित्व ।

रु० भे०—मानकत ।

मालकी—देखो 'मालकपणो'

उ०—तिग वगत मालकी फेर रायणतणी, लाग रख राखडी वांद लीदी ।—ऊमरदान लालम

मालकेत, मालकेतु—स० पु०—१ एक लोक देवता, जो लोहार्गल पहाड पर स्थापित है ।

उ०—मड मे भैरु बाबो जागिया पहाडा मे बदरीनाथजी जागिया परवत में मालकेत जागिया आ के पीठ बसै सकराय भालर वाजै राजा राम की ।—लो गी

२ लोहार्गल पहाड का एक नामान्तर ।

मालकोस—स० स्त्री० [स० मालकोश] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिमे कोनिक राग भी कहते हैं और यह प्रायः रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है । (सगीत)

उ०—सरी सरी मपोमय, सुताळ मालकोसय । मिठास आस मजरी, गरी गरी सगुजरी ।—रा. रु

रू० भे०—मालव कौसिक ।

मालक्ष्मी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

मालखम्—देखो 'मलखम्' (रू भे)

मालखानो—स० पु०—सामान रखने का कक्ष, कोठार, भंडार ।

मालगाडी—स० स्त्री०—माल, असवाव या व्यापारिक माल की पासलें  
आदि ढोने की रेलगाडी ।

मालगुजारी—स० पु०—१ लगान ।

२ जमींदार से सरकार द्वारा लिया जाने वाला एक कर ।

मालगुरजरी—स० स्त्री०—सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसके सभी  
स्वर शुद्ध होते हैं । (संगीत)

मालगोडी—स० स्त्री०—एक रागिनी विशेष । (संगीत)

उ०—दिये तरुणी मुख चुवन दान, सुख छवि अग किये मधु पान ।

चलो सकेत समझि जिय साक्ष । मालगोडी व्रपति उद्यान ।—रा रू

मालगोदाम—स० पु०—१ व्यापारिक माल जमा रखने का स्थान ।

२ माल-गाडी से भेजे जाने वाले सामान को संप्रहीत करने का  
स्थान ।

मालङ्गी—स० पु०—ऊट या घोड़े के चारजामें पर रक्खा जाने वाला  
चमड़े का एक उपकरण ।

मा'लक्ष्मी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

मालजादी—स० स्त्री०—१ दुश्चरित्र व कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी  
स्त्री, पतिता ।

उ०—तरी चावडी भूजती बोली, मालजादी रांदां धारे वापने जरै  
ही मारि गाठडी वाधि झरोखे रँ मारग नाख दीघी ।

—जगदेव पवार री बात

२ वेश्या पुत्री, वेश्या ।

उ०—१ राजा कह्यो—तोने सहर इसा कुकरम करण नै मोछायो  
छो ? इतरो कहि कोटवाळी सृ दूर कीघो नै मालजादी तितरी  
थांणै पकड मगाई, कान नाक काटि माथो मुझाय पाटडा पाडि  
गधं चाडि सहर मदर कीनी ।—जगदेव पवार री बात

उ०—२ लालकवर कह्यो—म्हारी जावोती बडी चाकरी कीघी ।  
चावडीजी, ऐ मालजादी छै । मैं यानं कह्यो थो, कुलवती रूपवत  
चतुर वाळक काई मिळावें तो खवास थापू । तिसा हीज थे छी ।

—जगदेव पवार री बात

मालजादी—स० पु०—१ दुश्चरित्र व व्यभिचारी व्यक्ति ।

(स्त्री० मालजादी)

उ०—१ मालजादी मन माहि राह सूझै दिनराती । मालजादि  
मन माहि यार सूझां भकुळाती ।—ऊ का

उ०—२ चाकर पच हथियार साथे लीघा । एक मालजादी खोसरी  
थो, तिकी खोजी वण्णइ घोडे चढ़ि लीघो ।

—जगदेव पवार री बात

२ वेश्या पुत्र ।

मालटी—स० पु० [अ० माल्टा] लाल रंग की एक नारंगी विशेष ।

मालण—स० पु० [देशज] १ चौहान वंश की एक शाखा ।

सं० स्त्री०—दुल्हा बारहठ की पुत्री, एक देवी ।

उ०—सोरमदे मालण तु सभैव, देवळ तु खोडी आद देव ।

—रामदास लाळस

३ देखो 'माळी' (स्त्री०)

उ०—मकोडी सूई लेय नै जावती के उण नै एक मालण बगीचा  
मे बँडी मिळी ।—फुलवाडी

मालणी—स० स्त्री०—१ दुर्गा सप्तशती के अनुसार ललाट प्रदेश की  
रक्षिका देवी, मालाधरी ।

उ०—देवी मालणी जोगणी मत्त मेघा, देवी वेधणी सूर असुरां  
उवेघा ।—देवि

२ योग के अनुसार आत्मा ।

उ०—मतवाळी मालणी नहि दूरी । हरि परम सनेही है हजुरी ।

—ह पु वा

३ देखो 'माळी' (स्त्री०)

४ देखो 'मालिनी' (रू. भे.)

मालणी, मालवी—देखो 'मालहणी, मालहवी' (रू भे)

उ०—१ जो तू चाहै मुकन, फळ, धूना मन धीरच्छ । सीख मान  
सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ ।—वां दा.

उ०—२ जलो म्हारी जोड रो उदियापुर मालं रे । मस्त महीनो  
भावियो रे जला ! अब तो खबर म्हारी लेह ।—लो गी

उ०—३ सो किण भाति रा वाकरा जिके कडकती सांघ रा,  
बडकती नळी रा, भाह रँ माद रा, मादलिए पेट रा, माडि वोर  
काचर रा बरडणहार, घणै कूभट नै वावळी री टीसीआ रा  
आडणहार, सिविरि रा मालणहार, फिरणीऐ रा वंसणहार

—रा सा स

मालणहार, हारो (हारी), मालणियो—वि० ।

मालिओडी, मालियोडी, माल्योडी—भू० का० कृ० ।

मालीजणी मालीजवी—कर्म वा० ।

मालति, मालती—स० स्त्री० [स० मालती] १ एक लता विशेष जिसके  
फूल स्वेत व बहुत ही सुगंधित होते हैं । (अ मा.)

उ०—१ लता माधुरी मालती फूल लेखें । दसा आप भूलें तपी रूप  
देखें ।—रा रू

उ०—२ मालती सेवती केतकी प्रफूलमान ! फूल की सोभा  
असमान के तारु का विधान ।—सू प्र

उ०—३ भमरि मालति जेम विरोलियड, तिम न केतकि केलि  
घबोलियड । ग्रिणह काजि न दूगर डोलियड, जडह कालु करी कुन  
बोलियड ।—मालिसूरि

पर्या०—अवष्टा, उत्तमगन्धा, प्रियवादनो, मधुमई, सुगधमल्यका,  
सुमना ।

२ उक्त लता के फूल । (अ मा) (उ र)

उ०—चुणै चपेनी चाय, मोगरी मालती, हरीलता में जाण, हेम लत हानती । वणी पना इम वागिक साधि सहेलियां, परिहा रग (भीनी) भानूप रूप रगरेलिया ।—पनां

१ कली ।

४ वषांगी युवती ।

५ जायफल का वृक्ष ।

६ रात्रि, रात ।

७ ज्योत्स्ना, चादनी ।

८ प्रत्येक चरण में दो जगण का एक छंद । (र. ज प्र.)

९ द्वादश वण का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण, दो जगण और एक रगण होता है ।—पि प्र

१० सर्वथा छंद के मतगयद नामक छंद का दूसरा नाम ।

११ १४ माया का एक मायिक छंद ।

१२ प्रत्येक चरण में ग्यारह दीर्घ वर्ण का एक छंद विशेष ।

१३ मद्र देश के अश्व पति राजा की पत्नी ।

१४ उद्धवाकु वंशीय शत्रुघातिन राजा की पत्नी ।

मालतीटोडी—म० स्त्री०—एक रागिनी विशेष जिसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं ।

मालतीढ—स० पु०—बड़ा हथौड़ा ।

मालदार—वि० [फा०] घनवान, भरी, भरपूर ।

मालदेवोत—स० पु०—१ राठोड़ वंश की एक उप शाखा व इस शाखा व्यक्ति ।

२ भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

—वा दा (न्यात)

मालदो—स० पु०—एक प्रकार का ग्राम ।

मालनेरी—म० पु०—एक प्रकार का मूल्यवान कपड़ा ।

उ०—चरणा पहरेजें छैं मू किए भांतरा चरणा छैं ? इलायचैरा मिसफरा गुलबदन रा मालनेरी रा वाकतां रा, चाळीस चाळीस हायां रा छैं ।—रा. सा स

मालपुत्री, मालपुत्री, मालपुत्री, मालपुत्री—स० पु० [स० पूथ] गेहू या सूजी के भाटेको मोठे पानी में धोल कर, धी में पूरी की तरह तल कर बनाया जाने वाला पकवान । (भ्रमरत)

उ०—१ नागजी मालपुर्व को दूक रे, वैरी, जीम्या भडियो नें ताळवैं ।—लो गी

उ०—२ एकर चोमामा रा दिना में वै गोठ करी । खीर भर मालपूया वणाया । गावा धी में भरभरता मालपूवा री सौरम सू म्याळ रा मन में फुटलाई चैती ।—फुलवाडी

र० भे०—मालपुटो, मालुपी,

मालपोमसमिरी—स० स्त्री०—१ एक रागिनी विशेष ।

मालवध—स० पु०—त्रैलगाड़ी के अग्रभाग में घरसूटे या ऊटके को बाधने

की रस्सी ।

मालप्रघण—स० स्त्री०—तलवार ।—ना हिं को )

मालम—वि० [अ मालूम] १ जिसकी जानकारी हो चुकी हो, जाना हुआ ज्ञात, विदित ।

उ०—१ भरजन री कतल करवाती विरिया भुगाने री भू नें इयें आखी दोरपां री जावक मालम नी हो, जकी आई ।—दमदोख

उ०—२ आग री बात दाई पूजी री कीनै ही कूत नहीं आवैं, मतां री मालम नीं पडै ।—दमदोख

२ प्रगट जाहिर ।

उ०—१ आलम सू मालम थई, विदिमां दिमा विगत्त । असवारी कज आगियो, आणी नाग उचित्त ।—रा रू

उ०—२ कवर चूहा सु मालम कीयो । मढोवर सु राठीछां नाळेर मेलीया छैं ।—राव रिएमल री बात

उ०—३ अतत मदेमा जीव का, लिख राख्या मन माय । मिळिया मालम कीजसी, कागद लिख्या न जाय ।—अज्ञात

३ स्पष्ट, साफ ।

४ सूचित ।

उ०—वासा थो साहजादाजी सु किएहीक मालम कीयो, 'काबो भवु' मेहते वरस २ रहो छैं उण री वाकप छैं ।—नैणमी

स० पु०—१ नाव चलाने वाला नाविक, केवट । (अ मा)

र० भे०—मालिम, मालुम, मालूम,

मालमता, मालमती, मालमत्ता—स० स्त्री० यो०—१ घन, दोलत, द्रव्य, सम्पत्ति ।

उ०—१ माल-मत्ता भर जगां सेठाई रैं पगा, सदा सुरगी रैती भाई ही ।—दमदोख

उ०—२ पछे मरय कांम आय चुका । मरव रजपूताण्या भाग मांहे पडी, न पालम्याह सडये वाकलिये नू सावाम दीवी । भर गढ मांहे भाप भायो तद कह्यो—'अवै माल-मत्ता बताय ? पछे बताई ।—नैणसी

उ०—३ पग ठग किएरा मानें । सगळा दोळा व्हिया जकी रोवता-रोवता उण री सगळी माल मती खोस लियो ।—फुलवाडी २ व्यापारिक सामान, सामग्री ।

उ०—गधो दिन रा माल मत्ती उखणतो । इण गाव सू उण गांव में मिणियारी-माल पुगावतो ।—फुलवाडी

माल-मलीदो—स० पु० [अ० माल + मलीद] बढ़िया भोजन, पकवान ।

मालमोटियार, मालमोटधार—स० पु०—पूर्ण-युवा, जवान ।

माळयो—देखो 'माळियो' (रू भे) (अ. मा)

माळव, मालव—स० पु० [स० मालव] १ मध्य भारत के एक प्रदेश का नाम । (व. स)

उ०—माळव नैद काबिल गुकराण, कासमीर हुरमुज खुरसाण ।

—डो. मा

२ पजाव प्रान्त स्थित एक प्राचीन भू भाग या प्रदेश ।  
 १ उक्त देश का निवासी ।  
 उ०—प्रजड मेवाड राय जीप मालव तणा । तुरक दळ रहचिया  
 रायमल तोर ।—महाराणा रायमल रो गीत  
 ४ भैरव राग का एक भेद विशेष । (संगीत)  
 मालवउ—देखो 'माळवी' (रू भे) (उ र)  
 मालवकौसिक—देखो 'मालकौस' (रू भे)  
 उ०—मालवकौसिक राग मधुर धुनि, सुर नर को मन रजणं ।  
 माळवगिरी—स० पु० [स] १ मालवा स्थित एक पर्वत । (२) मालवा  
 प्रदेश । (स कु)  
 रू० भे०—मालागर, मालागिर, मालियार  
 मालवगौड—स० पु०—वाडव जाति का एक सकर राग (संगीत)  
 माळवण—स० स्त्री०—१ मालवे की उत्पन्न तबाकू ।  
 उ०—सिंघ री तमाखू नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर  
 विकै ।—बा दा ह्यात  
 २ मालवा देश की स्त्री ।  
 ३ देवस्थान के चारो ओर का छोटा वन जिसकी लकड़ी नहीं  
 काटी जाती है ।  
 ४ चौहान वंश की एक शाखा ।  
 माळवणी, मालवणी—स० स्त्री०—१ मालव देश की स्त्री ।  
 उ०—सउदागर राजा सु कह, सुणउ हमारी कथ्य । मारवणी  
 छानी रही, से माळवणी तथ्य ।—ढो मा  
 २ एक प्रकार की लिपि । (प्राचीन)  
 रू० भे०—मालविणि,  
 मालवराउ, मालवराव—स० पु०—मालव देश का राजा ।  
 उ०—तपहू प्रभाविइ मेठिधर नदन हूउ मालवराउ । इम विमासी  
 पुण्हह ऊपरि घणउ करी मनि भाउ ।—हीराणुद सूरि  
 माळवळो—स० पु०—कच्चे मकान के छाजन के बीच में लगने वाली  
 लबीमोटी लकड़ी ।  
 मालवसिरी, मालवल्ली—स० स्त्री० [स० मालवश्री] एक रागिनी  
 विशेष जो प्राय सायकाल को गाई जाती है, श्रीराग । (संगीत)  
 रू० भे०—मालसी, माल सी,  
 मालवाखर—स० पु०—घोड़े पर डाला जाने वाला पाखर, कवच ।  
 उ०—तेहै घोड़े पचविध पाखर सांचरी, मीणवाखर, मालवाखर,  
 कातलीमाली पाखर, राजपुत्र तेहै घोड़े किस्मा चडया ?—व स  
 मालविउ—देखो 'मालवियो' (रू भे)  
 उ०—गाजणि गोजी, वांणुरसी काची, खेडावा हाचउल, मालविउ  
 माडउ, पाडवसिउ खाडउ, गुजरउ लोटउ ।—व स  
 मालविणी—देखो 'मालवणी' (रू भे)  
 उ०—मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसी य वोषव्वा । तह  
 य निमित्ती अ लिवी चाणुवकी मूलदेवी अ ।—व स

माळविया—स० पु०—लुहारो की एक शाखा । (मा. म)  
 मालवियो—स० पु०—१ मालव देश का निवासी ।  
 २ लुहारो की 'मालविया' शाखा का व्यक्ति ।  
 वि० १ मालव का, मालव सम्बन्धी ।  
 रू० भे०—मालविउ,  
 माळवी, मालवी—स० पु०—१ मालवा प्रान्त (प्रदेश) का घोडा ।  
 (शा हो)  
 उ०—मोवनरा ताजी च्यार माल, पच दोक दिना पोरस अपाल ।  
 धुर केक माळवी सरस घज्ज, भीमडाथ थळी वाळा भिडज्ज ।  
 —सू प्र  
 २ मालवे का निवासी ।  
 ३ श्रीराग के अन्तर्गत एक रागिनी । (संगीत)  
 ४ एक प्रकार का गुड ।  
 वि०—मालव का, मालव सम्बन्धी ।  
 माळवीक, माळवीख—स० स्त्री०—१ घोड़े की एक चाल विशेष ।  
 उ०—वीखा भर लवी माळवीख । तं धाम एविया चुच तीख ।  
 —सू प्र  
 २ ऊट की एक चाल विशेष ।  
 माळवीविद्या—स० स्त्री०—मालव प्रदेश की विद्या ।  
 माळवी, मालवी—देखो 'मालवउ'  
 उ०—१ म्हारी हळदी रो रग सुरग निपजै माळवै । हळदी मोल  
 पसारी री हाट वनडा रै सिर चढे ।—लो गो  
 उ०—२ कान्ह मेवाड मालवी ।—धरमपत्र  
 मालस—देखो 'मालिस' (रू भे)  
 मालसाहिब—स० पु० यी०—पूजी पति, धनवान । उ०—माल-साहिब  
 तिकै मौज मारुँ मही ।—घ व ग्र  
 मालसी—देखो 'मालवल्ली' (रू भे)  
 मालसेरणी—स० पु०—जहवेरी और समीवृक्ष (खेजड़ी) के पत्तों  
 (पाला व लूग) के ऊपर किमानों से लिया जाने वाला एक प्रकार  
 का कर विशेष ।  
 मालस्त्री—देखो 'मालवल्ली' (रू भे)  
 मालांणी—स० स्त्री०—मारवाड में बाडमेर के ग्राम पाम के प्रदेश का  
 नाम ।  
 उ०—कावल राजघाणी करी, सत्र घर हाणी सीह । मालांणी  
 घर मुरधरा, आणी 'पत्तै' अवीह ।—किसोरदांन वारहठ  
 रू० भे०—मलाणी,  
 माळा, माला—स० स्त्री० [स० माला] १ फूलों का हार, पुष्प हार,  
 गजरा ।  
 उ०—सूड में माळा लिया हाथी आखी भीड में घूमैला । वो  
 जिण किली रा गळा में माळा पैरावै, उण रै सागं ई राजकवरी  
 रो व्याव व्हैला ।—कुनवाडी

२ कण्ठहार, हार, जजीर, लड ।

उ०—१ पेलि रोम पतिसाह माळ मोतिपा ममप्ये । धगमी भेजि मताव, आणि माळा मुज अप्ये ।—सू प्र०

उ०—२ आ बात करती वगत उणरी निजर राजकवर रे गळा रा नवलखा हार मार्ये पडो । वी काळा उणिपारा रे वीच घोळा दात काढतो कल्लो—इण माळा रा वीम मिणिया देवी तो ओ तीतर आपरे मामी अठे इण वगत ई डोड दू ।—फुलवाडी

३ आभूषण (ध मा)

४ पक्ति, कतार, शृ खला, श्रेणी ।

उ०—१ माळा उड जोत लसी मुर माग । चमी रण आगण जोत चराग ।—मे म

उ०—२ ढाल ढळकड नेजा फरकई, चाली परवत माळा ।

—खमगी मगळ

५ ईश्वर भजन या जप करने के लिये हाथ में फेरी जाने वाली माला ।

उ०—१ वाकी सगळी दिन जप तप करती । माळा फेर्ती । घणार्ई व्रत-उपवास राखती ।—फुलवाडी

उ०—२ 'हरीया' माळा काठ की, पोयर फेरै हाथि । अदर काती कुवुधि की, मो तो मन कै साथि ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—३ नगजी ने स्वामी जी पूछ्यो त नदणमणीयारा नो वखाण मोख्यो हे सो ओ मणियो लकडा रो हे कै सोना रो हे कै रुद्राक्ष माला रो हे ।—भि द्र

६ मन में किसी का नाम जपने या ध्यान करने की क्रिया, रट ।

उ०—१ बया फेरै कर काठ वी, मन की माळा फेर । जनहरीया माळा फिर, विना विचरण मेर ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—२ पठे कागली निर्भे आपरा माळा मे ई डा दिया । मन मे स्याळ रे नांव रे माळा फेरती ई डा नै मेविया ।—फुलवाडी

उ०—३ किए रो गुरुजी मे तिलक वणाऊ, किएरी माळा फेर रे लोय । पच मुदरा रो चेला तिलक वणावो, निरगुण माळा फेरी रे लोय ।—स्त्री हरिरामजी महाराज

मुहा०—माळा जपणी, माळा फेरणी = ध्यान करना, जप करना, रट लगाना, किसी को निरन्तर याद करना, ईश्वर का नाम निरन्तर लेना ।

७ मुण्ड माला ।

उ०—१ वागा नेजाळा वजाक वीर वेताळा चाहाक वागा, माळा चाड वागा ढाक डमरू मह्ये ।—राजा वलतमिहजी री गीत

उ०—२ जगचवळ माळत कोतुक जुद्ध, माळा कज सकर ढाळत मुद्ध ।—मे म

उ०—३ मिलम्मिळ मुठ पुर्व मिध माळ । तिलतिल रुड हुवं रिणुताळ ।—मे म

८ किसी कार्य या बात का निरन्तर चलता रहने वाला क्रम,

शृ खला । (मिरीज)

ज्यू—पुस्तक माळा ।

६ रेखा ।

१० भुण्ड, समूह ।

११ एक मात्रिक छंद विशेष ।

उ०—१ दुजवर नव ता पछ रगण, करण ता पछे होय । अरघ फेर गाथा अघर, माळा कहजै सोय ।—र ज प्र

उ०—२ पुर दळ घाग नव वे भगण, रगण करण घर अत ।

अरघ गाह अर वीअ दळ, माळा छंद जपत—हरिणिगल प्रकाम

उ०—३ करि नव दुज रगण करण, इम पय गण इग्यार ।

अवर अरघ गाहा अरघ, गुण माळा सिणगार ।

—वि प्र

१२ निसाणी छंद का एक भेद ।

उ०—कीला, लीला, थिरा, कुवारी, वीणा, रगी, चगी, वारि ।

विद्या, माला, वाजा वाम, नीमाणी रा वारा नांम ।—वि प्र

१३ उपजाति छंद का एक भेद ।

१४ दूव ।

१५ आंवला ।

१६ एक प्राचीन नदी का नाम ।

१७ तलवार के नीजे का एक भाग जो कुछ मोटा होता है ।

१८ राठीडो की एक शाखा ।

उ०—१ जेतमाल माला जठे, वाला माहस वध । पण जेता जुध प्राधिया भार घरा घर कध ।—रा रु

उ०—२ मिळे जेत माला, मुदी वेल माला । वरापूर सूर घजा सणि वाला ।—रा रु

रु० भे०—मालि, माळी, माली, माल्य ।

१९ देखो 'माळ' (रु भे)

उ०—१ भय २ भमते पार न पायो, मोह रहट की माळा । पावु ग्यानी तो अव पूछु, कव यह मिटय कसाला ।—ध व अ

माळाकार—स० पु० [स० माला+कर माला+कार] १ माली ।

२ मालियों की एक जाति ।

३ पुराणानुसार एक जाति जो विश्वकर्मा और शुद्धा के सयोग से उत्पन्न हुई, वर्ण सकर जाति ।

मतान्तर से—पगशर पद्धति के अनुसार यह तेलिन और कर्मकार से उत्पन्न है ।

रु० भे०—मालीकार ।

मालाखाड—स० पु० [सं० मल्ल+अक्षवाट] व्यायामशाला, अखाडा ।

उ०—मारिउ कुवलय चापी रे, काडिय यादव सल साल । सवि कहइ जाता सहारघा रे, मालाखाड इ माल ।—चतुरभुज

माळागर—देखो 'माळवगिरी' (रु भे)

उ०—येद घर सवर ऊडा सर घानी, आरै माळागर मूढा रे

भाग १—ऊ. का

माळागळ-स० स्त्री०—मालवा की भूमि, मालव प्रदेश ।

माळागिर—देखो 'माळवगिरी' (रू भे)

उ०—चात्यों प्रोहित माळागिर देस, वस्त्र कसवर अरि भला वेस । हाथ कमंडळ भळभळई, ब्राह्मण वेद भणइ भूणकार ।

—ची दे

माळाजप-स० पु०—माला जपने की किया या भाव ।

माळादीपक-स० पु०—दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें पूर्वार्त्त वस्तुओं से उत्तरोत्तर वर्णित वस्तुओं का सम्बन्ध एक ही धर्म से स्थापित किया जाता है ।

वि० वि०—यह 'दीपक' एवं 'एकावली' अलंकार के मेल से बनता है ।

माळादेवि, माळादेवी-स० स्त्री०—विद्याचल पर्वत पर रहने वाली एक देवि ।

उ०—१ डवा पच वरस कन्यका आई, मालादेवि तिका महमाई ।

—सू प्र

उ०—२ चव इम सुणी दियै वर चाहै । मालादेवि विभ्र गिर माहै ।—सू प्र

माळाधर-स० पु०—१ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम चार लघु मात्रा, फिर जगण, फिर भगण फिर तगण व अंत में गुरु होता है ।

उ०—दुज ज भ त गुर पाय प्रत, सो माळाधर कृत्य ।

—र ज प्र

२ सतरह अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, जगण, फिर सगण, यगण और अंत में लघु गुरु होता है ।

माळाधरा-स० पु०—१७ वर्णों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में जगण, भगण, जगण भगण व रगण अंत में गुरु वर्ण होता है ।

माळाधार, माळाधारी-वि०—माला धारण करने वाला, पहनने वाला ।

स० पु०—१ सन्यासी ।

२ वंणुव ।

३ साधु ।

माळामणियो, माळा मणिघो-स० पु० यो०—ईश्वर आराधना में फेरी जाने वाली माला का मनिका ।

उ०—१ घर हाला भाई-वेटा मन्ने सदा कैवता रेंता—बदरीजी जावो, अहसठ तीरथ न्हावो । घरम-पुत्र करो, माळा मणिघो फेरो ।—दम दोख

उ०—२ जे कोई टीका-टमका करै, माळा-मणिघो फेरै, पोथी पानढी सघाडें वो आपरो मजरी घाकी घिका लेवै ।

—दम दोख

मालाळी-स० स्त्री०—प्रस्थान के समय बाईं तरफ बोल कर शकुन देने वाली चिहिया ।

उ०—१ बाहर नीसरती काल घणी सखरी मालाळी हुई ।

—कुवरमी माखला री वात

उ०—२ तिण ऊपरा रूपा मालाळी हुई ।

—जैतसी ऊदावत री वात

रू० भे०—मालहाळी ।

मालाळी-स० पु०—१ प्रस्थान करते समय बाईं तरफ बोलने वाला तीतर ।

२ बायी ओर से दाईं ओर आकर शकुन देने वाला हरिन (शुभ)

उ०—१ तिके आछा सावण माग्या । तरं पहिली हिरण मालाळा हुवा ।—जैतसी ऊदावत री वात

उ०—२ तरा पछें गोरहर मालाळी हुवा ।

—जैतसी ऊदावत री वात

वि० वि०—उपर्युक्त शकुन (मालाळा) घर से प्रस्थान करते समय शुभ माने जाते हैं और लौटते समय अशुभ माने जाते हैं ।

रू० भे०—मालहाळी ।

मालावली-म० स्त्री०—एक प्रकार की सकर रागिनी । (संगीत)

मालि-स० स्त्री—[स०] १ सुकेश राक्षस का पुत्र जो माल्यवान और सुमाली का भाई था ।

२ देखो 'माळा' (रू भे)

उ०—तदनन्तर ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, सुवर्णमय स्यालि, मोटइ भूमालि —व स

२ देखो 'माळा' (रू भे)

उ०—ते तु नील रतन तणुउ, ऊपरलइ मालि, मध्यान्ह कालि, केलिपन्नइ छाया, इस्या मडप नीपाया, तलइ माळ्या पाट ऊपर पाथरघा रेसमी घाट ।—व स

३ देखो 'माळा' (रू भे)

मालिओ—देखो 'मालियो' (रू भे)

उ०—मणि साणुक मोटा, मालिआ, सोना रूपां नो थालिया ।

—कविगुणविजय

मालिक-स० पु० [अ] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—कहियो सुणि दूदै 'कवर', इळा न लैणी और, ल हाली वुदी लगा, जाणू मालिक जोर ।—व भा

२ अधिपति, स्वामी ।

उ०—१ मालिक कावुल मुलकरी, कमरी भाजि कटक्क । जग करण थप जैत हू, आयो लाधि अटक्क ।—मे म.

उ०—२ अर थोडा दिना मे वडा विम्बाम रै साथ महानम नी मालिक होइ चारण री चाकरी मे चित लगाइ चातुराई री रीक चहो ।—व भा

३ सम्पत्ति या जायदाद का हकदार, वारिस ।

४ पति, खाविद ।

उ०—जठे बढण वाढण नू बुलावण रो वव वाजियो सुण भागळियाणी मालिक रा उमीसी हुवो आपरो वामेतर वाहु अवे-रियो ।—व. मा

५ पन्नाधिकारी, अधिकारी ।

६ अध्यक्ष, सरदार ।

७ नरक का अध्यक्ष एक देवता ।

स०—८ माली ।

उ०—चतुस्पथ राज मारग गधिका पण दोस्तिका पण सोवरण-कार कास्यकार मणिकार पूगीफल ता वूलिक मालिक सोधिक

—व म

९ रगरेज ।

१० चित्रकार, चित्तरा ।

रू० भे०—मालक ।

मालिकपणी—स० पु०—१ मानिक होने की अवस्था या भाव ।

२ स्वामित्व । ३ हकदारी ।

मालिका—स० स्त्री०—१ हार, माला ।

२ गजरा ।

३ चमेली ।

उ०—तान साल मालिका, वकुल कुवजक खरजूरी बोलसरी माधुरी, निगर भरहरी सनूरी ।—रा रू

४ शराव, मदिरा ।

५ पुत्री, बेटा ।

६ अलसी ।

७ लता-गुज ।

८ मुरा नामक गंध द्रव्य ।

मा'लिछमी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

माळिण, माळिणी, माळिन—स० स्त्री० [स० मालिनी] माली जाति की स्त्री ।

उ०—१ (डमी) जु मालिण छे सु वनि वनि रे विसै केसरि चुणै छे ।—बेलि टी

उ०—२ वणि वणि माळिणि केसरि चीणति, भूली नख प्रतिविब भ्रम ।—बेलि

मालिणी, मालिनी—स० स्त्री० [स० मालिनी] १ दुर्गा देवी एक नामान्तर ।

२ मात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा में दुर्गा की प्रतिनिधि मान कर पूजी जाती है ।

३ गोरी ।

४ स्वन्ध की सप्त मातृकाओं में से एक ।

५ आकाश गंगा ।

६ रोच्य मनु की माता का नाम ।

७ एक प्राचीन नदी जिसके तट पर शकुन्तला का जन्म होना माना जाता है ।

८ विभीषण की माता का नाम ।

९ गजातवास के समय द्रौपदी का एक नाम ।

१० पद्म वर्ण का एक छंद जिसके प्रथम चरण में दो नगण, फिर एक भगण अंत में दो यगण होते हैं ।

रू० भे०—मालणी ।

मालिम—देखो 'मालम' (रू भे)

उ०—जळमूक सजळ बीजळ जिंसी, धकी खाग खेटक घरी । कर जोड जुलम जालिम कथा, कमव मोड मालिम करी ।—मे म.

उ०—२ बळै हुई तिणवार, महीपति हू कय मालिम । जुय करि ग्रहियो जवन, खान अवदुल खूदालिम ।—सू प्र

उ०—३ पवननउ पूर, कूआथमउ डोलड, तिवारई मालिम छाई, अकस्मात् घुअरि पडिवा लागी ।—व स

मालियत—स० स्त्री० [अ०] १ धन, द्रव्य ।

२ सम्पत्ति, जायदाद ।

३ मूल्य, कीमत ।

मालियार—देखो 'मालव गिरी'

मालियोडी—देखो 'माल्हियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मालियोडी)

माळियो, मालियो—स० पु०—१ मकान के ऊपरी मजिल पर बना हवादार कमरा ।

उ०—१ सोने तो रूपै सायवा, श्रीट पडवायजी । जिण रा बिणाय दो महल'र माळिया जी ।—लो गो

उ०—२ रे मदर रे माळिया, हिव तुमक डग न भरेस । जिण कारण हम आवता सो चाल्या परदेस ।—अग्यात

उ०—३ राते माळीयें सूता । सोनगरां जाणीयो—परभाते माळीया सु उतरता मारसा ।—राव रिणमल री वात

२ ऊपरी मजिल पर बने महल । (अ मा)

उ०—१ अति विसाल दीरव अधिक, मोमत अधिक अनूप । मदर सुदर माळिया, नांनाविघ के रूप ।—गजउद्धार

उ०—२ सुदर मंदिर मालिया, मुलकती नेह विलुद्ध । पूरे हाये पूजियो, परमेस्वर मन-मुद्ध ।—जयवाणी

३ महल, अटारी ।

उ०—१ तठे राजा हयै रो रूप देख बहुत राजी हुवो । नायण ना पण इनाम दे नै फूनमती नु भीतर ले गयो तठे गान पड़ी जद राजा फूलमती कै माळीयें गयो ।—सुरा सतवादिनां री वात

उ०—२ गुरड जेम पाखिया नाग भ्रममाण भे, गोड गजवध घज बध गोडे । अवर पखिया जही ताळीयें न उडे, माळीयें सोहिपो प्रिसण मोई ।—अनिरुद्धसिंह गोड़ री गीत

४ घर, मकान ।

५ दालान ।

रू० भे०—माळयो, मालियो मालीइ

मालिस—स० स्त्री० [फा० मालिश] १ मचने की क्रिया या भाव ।



२ शरीर पर तेल आदि स्निग्ध पदार्थ मलने की क्रिया, उबटन, मर्दन ।

३ चमकीला बनाने के लिये की जाने वाली रगड़न ।

रू० भे०—मालस,

**माळी, माली—स० पु० [स० मालिन्] (स्त्री० मालण) १** प्रायः बागवानी या साग सब्जी का उत्पादन व कृषि कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ माळी ग्रीष्म माय, पोखि घणो द्रुम पाळियो । जिएरो जस किम जाय, अत घण वूठां ही भजा ।—अभ्यात

उ०—२ माळी रो वेटो हू, घूळ अर वूटी देखनै घरती रो ठा पटकू ।—फुलवाढी

उ०—३ वूज्यो चारण मालीछा रो पूत, वाग वसाओ राजाजी रो कुण सो जी म्हाराराज ।—लो गी

उ०—४ माली तबोली छीपा परीयट बघारा तूनारा सोनारा ठाठारा लोहार चमार ।—व स.

२ उक्त जातिका व्यक्ति ।

उ०—माळी पूछ्यो—थनै की जाच है के अपां कठं आगया ? मालण कह्यो—कोई दस बीस खेतछा भळगा, कोई हेमाळो तो लाधणा सू रह्या ।—फुलवाढी

१ बागवानी का कार्य करने वाला कोई व्यक्ति ।

४ मिट्टी के बने कोठे में छोटी २ वस्तुओं के रखने हेतु बनाया गया कगूर, प्राचीर ।

उ०—गुला ! दस रुपिया कोठा रो माळी मे पड़िया रहता तो इतरो पाप तो न लागतो ! इसी आरभ क्यू कीधो ।—मि द्र ५ राजीव गण नामक छंद विशेष ।

वि०—१ जो माला धारण किये हुए हो, माला-धारी ।

[अ] २ माल से सम्बन्धित, अधिक ।

१ देखो माळा' (रू भे )

उ०—देखठ तुम्हे असोक माली नव पुस्पनी पूजा लगई ।—व स

रू० भे०—मालि,

अल्पा०—माळीढो, मालीयडो,

**मालीह—देखो 'माळियो' (रू भे )**

उ०—कोए पण तो जाणि नही रे तेहना करमनी काहाणी जी ।

मालीह त्याहारि बिठो हूतो राजमाता ते रांणी जी ।—नलाह्यान

**मालीकार—देखो 'माळाकार' (रू भे )**

**माळीढो—देखो 'माळी' (अल्पा, रू भे )**

उ०—वूजी भवरजी माळीछा रो पूत ऐजी श्री मायला, म्हानै वाग बताओ अमल कलाळ रो जी म्हारा राज ।—लो. गी

**मालीत—स० स्त्री० [अ० मालियत] द्रव्य, सम्पत्ति, धन ।**

उ०—१ सिवलाल कै दली की उकीलायत, त (अ) ने बाधन कला रो काम, कोड रुपिया की घ (घ) रे नगद मालीत ।

—मयाराम दरजी रो बात

उ०—२ म्हे घण मालीत ले आप कनै हीज आयो छु । तर हरक

रै पूछ्यो—ठाकुरा मो बताइजै जो माहरो पण मन राजी होऐ । तर आप जाघ चीर रतन बताइआ ।—कल्याणसिंह वाढेल रो बात  
**माळीपनी, माळीपनो—स० पु०—**किसी धातु विशेष (सम्भवतः लोहा) से निर्मित अत्यन्त वारीक पत्र जो तेल सिन्दूर के साथ हनुमानजी, माताजी, भैरुजी आदि देवि देवताओं की मूर्तियों पर चिपकाये जाते हैं ।

उ०—पण तीढी मन मे आछी तरै जाणतो ही के जे देगची मे आज ओ जीव नी व्हेतो तो उणरी मोत ही । सगळा माळीपना उतरता जका ती उतरता ई पण आज मरणा मे घाटी नी ही ।

—फुलवाढी

**मुहा०—१** माळीपना उतरणा=वेइज्जती होनी ।

२ माळीपना चाढणा=देवि देवताओं की पूजा करना, आढम्बर करना ।

३ माळीपना लागणा=पूजा होनी, आदर सत्कार होना ।

**मालीवापची—स० स्त्री०—**एक प्रकार क्षुप जिसके धीज विशेष कर रक्त शोधक माने जाते हैं ।

रू० भे०—माळीवापची

**माळीवापची—देखो 'माळीवापची' (मह., रू भे )**

**मालीयडो—देखो 'माळी' (अल्पा, रू भे )**

उ०—माळीयडा तू मोकलि, अहानध कुसुम अनीठ । फेरी फेरी फूलई, पगर भरेसू पीठ ।—मा कां प्र

**मालु—स० स्त्री० [सं०] १** स्त्री, औरत ।

२ एक लता विशेष ।

**मालुधान—स० पु० [स० मालु + धान] १** आठ प्रमुख नागों में से एक । (पुराण)

२ एक सर्प विशेष ।

३ महापथ ।

**मालुपडो—देखो 'मालपूओ' (रू भे )**

उ०—पाचवो माम उलरियो ए जच्चा मालुपडै मन जाय । छटो मास उलरियो ए जच्चा वेवरिये मन जाय ए ।—लो गी

**मालुम—देखो 'मालम' (रू भे )**

उ०—तथा स्त्री चद फरजद परतू ठणो, पाय सकट घणो खुद पूगो । कमट सहियो जिको हाल मालुम कियो, हाल कहियो अत ब्हाल हूगो ।—मे म

**मालूपी—देखो 'मालपूओ' (रू भे )**

**मालूम—देखो—'मालम' (रू भे )**

उ०—१ मिळतो मगण नू कहै, मुदी करू मालूम । मारग लागो मत टिको, हाजर नाजर सूम ।—वां दा

उ०—२ दायजै रो डरावणी वातां अर कालेज रो ख्यातां मे रात-दिन रो अंतर है, मन-पोत ही मालूम हुयो है के—आजकाल रा व्याह-सावा, एक अयोग आफत रो मोरची है ।—दसदोख

मालूर-म० पु० [स] १ विले का वृक्ष । (प्र. मा)  
 ० केयें का पेड़ ।  
 मालेकम सलाम-स० पु० यो०—ईश्वर सम्बन्धी अभिवादन, दुआ-मलाम,  
 राम राम ।  
 उ०—सबकी है मालेकम-मलाम, अब जल्दी कीजें कतल ग्राम ।  
 —ऊ का  
 मालेरियो-स० पु०—रूट के अन्दर लगने वाला लकड़ी का एक डंढा,  
 जो माल को सुचारु रूप से चलाने का कार्य करता है ।  
 मालोच-स० पु०—१ भाव भगत, आदर-सत्कार ।  
 २ उपचार ।  
 मालोपमा-स० स्त्री०—उपमा अलंकार का सातवा भेद जिसमें एक ही  
 उपमेय के लिये अनेक उपमानों का गुम्फन होता है । एक ही  
 उपमेय को उपमानों की माला पहनाई जाती है ।  
 ८० भे०—मालोवम  
 मालोमाल-स० पु० [फा० मालामाल] धन से परिपूर्ण, सम्पन्न ।  
 मालोवम—देखो 'मालोपमा' (८० भे०)  
 उ०—तामु पट्टि जिणचद मूरि, गुणमणि रोहण सम । विहिय  
 जेण सवेग-ग-साला मालोवम ।—घरमकलम मुनि  
 मालोहड-स० पु०—जैन धर्मानुसार एक दोष जो, ऊपर, नीचे या  
 तिरछी रखी हुई वस्तु को पीढ़ा या सीढ़ी लगा कर उतार कर  
 साधु को देने से लगता है ।  
 माळो, मालो-स० पु० [अ० महल] १ पक्षियों का घोंसला नीड ।  
 उ०—१ पंचे देखि नैं कस्यो कुरदांतली रा ईडा ल्यावैं तीरी  
 बडाई । ताहरा एक पीपळ रो माळो हेरि नैं आया ।—चौबोली  
 उ०—२ कमरा कचरा मू भरधा पड्या हा अर ठोड-ठोड  
 काळतरा रा जाल अर पवेर्या रा माळा हा ।—रातवामी  
 उ०—३ वरस भीम कांडमग रह्युड, बेलडिण् वीटाणुड रे । पखी  
 माळा मांडिया, भीत तावड मोखाणुड रे ।—म कु  
 २ नेत की रखवाली करने या शिकार करने के लिये किसी पेड़  
 पर बनाया जाने वाला मचान, मच ।  
 उ०—मो ऊचो जायगा देखि आह्ण माळो घाल्यो । मो उवो  
 आह्ण जद माळा ऊपर चढे तद उदार मन होय अर उत्तरें तो  
 कपण गे कपण ।—मिहासन वत्तीसी  
 ३ तलवार में सवि या जोड़ जो मूठ के पास होता है ।  
 ४ देखो 'मल्ली' (८० भे०)  
 ८० भे०—माळो माहालइ, माहाली,  
 माल्य—देखो माळा' (८० भे०)  
 माल्यवत, माल्यवान-स० पु० [सं० माल्यवत] १ सुकेश नामक राक्षस  
 का जेष्ठ पुत्र एक राक्षस, जो रावण का मातामह एवं ममासद था ।  
 २ पुण्यदत्त नामक गधर्व का पुत्र ।  
 ३ इलावृत्त वर्ष एवं केतूमास के बीच का एक पर्वत । (पौराणिक)  
 वि०—जो माला पहने हुए हो ।

माल्हुण-म० स्त्री०—एक देवि का नाम जो दूल्हेराज बारहूट की  
 पुत्री थी ।  
 उ०—वजें माल्हुणा मात तू ही विराई, बलू तू प्रथीराज रं  
 राजवाई ।  
 माल्हुणी, माल्हुवी-स० स्त्री०—१ मस्ती में भूमना, भूमते हुए चलना ।  
 उ०—माल्हुतो घरि आगणें सखी सहेली ग्रामि । जो जाणू पिय  
 माल्हुणी जे मल्लै मग्रामि । ग्रामि सग्रामि भूभार माल्हु गहड,  
 अरि घडा खेसवै आप न विसै अनड । घाई भाजें घडा खाग घाई  
 घणी । मेर माझी जमो हेक रिण माल्हुणी ।—हा भा.  
 उ०—२ धूम्रणी चौघार घारी, वीजळता वारी । खंड दळ खंड  
 पती, माल्हुयी मयद गती ।—गु रू व  
 उ०—३ मुहड रजपूत तो इण सरदार रा मतवाळा हुवोडा धूम  
 वा माल्हु आगा पाछा फिरें छै ।—वी स टी.  
 उ०—४ हम गति जिम चालती, मयगल जिम माल्हुती, कामिनी  
 गरव भाजती ।—व स  
 २ आनन्द करना, मोज करना ।  
 उ०—१ तुम्ह्यो कुण मुक्कनइ वालू, हु तउ तुमहिज ऊपरि  
 माल्हु हो ।—वि० कु०  
 उ०—२ मद्य जिम पदि पदि स्कलतउ लीलां चालतउ, रमसि  
 माल्हुतउ क्रीडा खेलतु, सूत्कार मेल्लतउ ।—व. म.  
 ३ उप भोग करना, भोग करना ।  
 उ०—लीलइ कलि घणी, घणी प्रिय तणी येडइ लगी लाजती ।  
 दीमइ ते रति माल्हुती, मयण नी पूठिइ जिशी आवती ।  
 —प्राचीन फागु सग्रह  
 ४ मदगति से निर्भय चलना ।  
 उ०—१ कवि सुमडां करि कुरव, सक्कै आणंद समाजा । मगज  
 धार माल्हुयी, राजमिदर महाराजा ।—सू प्र.  
 उ०—२ मझी ममर वीर नारद अखर माल्हुया । माल्हुया  
 वयडचर ममर माहे ।—राव बुवसिंह हाडा रो गीत  
 ५ जन्म लेना, अवतार लेना ।  
 उ०—मामड रें माल्हुया, नाव आवड नैं आई । आई री अवतार,  
 हुआ कर्नळ मेहाई । मे म  
 ६ मस्ती में बोलना, भूमना, मस्त होना ।  
 उ०—पण पारवती रो अवतार आ सुगन चिडी तो परदेसा जावता  
 डावें माल्हु है । पछै कीकर आगे बवणी घावें ।—कुलवाडी  
 ७ मडराना ।  
 उ०—परिमल बहकती मालती, माल्हुती भमरनी खेणि । प्रीयडा  
 सरण निहालओ, बालओ रूपडु जेणि ।—प्राचीन फागु सग्रह  
 ८ व्यास होना, जाग्रत होना, उद्दीप्त होना ।  
 उ०—जिम जिम पमरइ साल ए माल्हुइ तिम तिम काम । निय  
 परिमळ गुण पाडल, लाड लहइ अभिराम ।—प्राचीन फागु सग्रह  
 ९ विध्वंस करना, नाश करना ।

१० अस्त व्यस्त करना ।

११ मलार राग गाना ।

माल्हाळी—देखो 'मालाळी' (रु भे)

उ०—बाहर पधारता नेकळ घणी सखरी मनमानी माल्हाळी हुई ।

ऊपरा तुरत लाभ री सांगूणी हुई ।—कपसी सावला री वारता

माल्हाणहार, हारी (हारी), माल्हाण्यो—वि०

माल्हाण्डो, माल्हायोडो, माल्हाडो—भू० का० क०

माल्हाजणो माल्हाजवो—कम वा०

मालणो, मालवो, माहालणो माहालवो—रु० भे०

माल्हाळी—देखो 'मालाळी' (रु भे)

उ०—खुदाई-खुदाई तोव तोव करतउ नाठउ, जातउ गणउ, घाठउ  
माल्हाळा हिरण तणी परित्राठउ ।—रा सा स

माल्हायोडो—भू का कृ—१ मस्ती मे भूमा हुआ, भूमते हुए चला  
हुआ ।

२ आनन्द किया हुआ, मोज किया हुआ ।

३ भोग किया हुआ, उपभोग किया हुआ ।

४ मद गति से निर्भय चला हुआ, धूमा हुआ ।

५ जन्म या अवतार लिया हुआ ।

६ मस्ती मे बोला हुआ, भूमा हुआ, मस्त हुवा हुआ ।

७ मढराया हुआ ।

८ व्याप्त, जागृत व उद्दीप्त हुवा हुआ ।

९ विध्वंस व नाश किया हुआ ।

१० अस्त व्यस्त किया हुआ ।

११ मलार राग गाया हुआ ।

(स्त्री० माल्हायोडी)

रु० भे०—मालियोडी

मावड—देखो 'माता' (मह, रु भे)

उ०—मावड वंठी थेपडे ने हियो हुलराय । दूध पिया ने दो दिन  
दुग्धया नीद कठा सू आय ।—चेत मांनखा

मावडली—देखो 'माता' (अल्पा, रु भे)

उ०—मावडली विना धीवडली निरधार । मावडली विना हो  
बापजी सूनो ससार ।—लो गो

मावडियां—देखो 'मावडिया' (रु भे)

मावडियो—वि० [स० मातरि पुत्र] १ जो केवल घर मे ही (अपनी  
माता आदि के सामने) वीरता की बातें करता हो, कायर, डरपोक ।

उ०—१ पायो किय घनवत पद, दांमै डावडियाह । कवियण  
किन पायो कुरव, मागं मावडियाह ।—वा दा

उ०—२ होस उडे फाटै हियो, पडे तमाळा आय । देखे जुव  
तसवीर द्रग मावडिया मुरभाय ।—वा दा

उ०—३ गरवे फोडे कुभगज, घणावळ घावडियाह । पापड फोड  
पोमावही, मन मे मावडियाह ।—वा दा

२ जिसका स्वभाव तथा हाव-भाव स्त्रियो जैसा हो ।

उ०—१ मावडियां अग मोलिया, नाजुक अग निराट । गुप्त रहे  
ऊमर गर्म, खाय न निजवळ खाट ।—वा दा

उ०—२ कर मुख दे लचकाय कट भनक चलै सुर भीण ।

मावडियो महिला तणी, मारै रोज मलीण ।—वा दा

३ सदा माता के पास रहने वाला ।

उ०—जाय नवोडा भासरे, आसू नाव उसास । मावडिया जावे  
मुहम, इण विघ हुवे उदास ।—वा दा

मावडो—देखो 'माता' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ भागळ भारथ भीड में, वाणी सह विसरत । मुख बापुडी  
मावडो, भाईडो भाखत ।—वा दा

उ०—२ मैं तो मरू के जीवू म्हारी मावडो । ऐ तो कमवजिये  
वोल्या हे रे बोल ।—लो गो

उ०—३ साम्हउ जो इकवार मन वालइ थारी मावडो जी हो ।  
नांण्यउ नेह लगार सालि भद्र साम्हउ जोयउ नही जी हो ।

—स कु

उ०—४ म्हारी वूढी बाप, म्हारी वूढी मावडो अर म्हारा सान्य  
भाई म्हारा- नाव नै रोय रोय मरग्या व्हेला ।—फुलवाडी

मावड्या—देखो 'मावडिया' (रु भे)

मावजाणो, मावजो—देखो 'मुआवजो' (रु भे)

मावट—देखो 'मावठ' (रु भे)

मावटी—स० स्त्री०—स्त्रियो का एक आभूषण ।

उ०—मागि भरइ सरि मावटी मस्त कि भरीया खुप । भमहडीए  
भमरा भमई चाद्र यसउ मुखरूप ।—मा का प्र

मावटी, मावठ, मावठो—म० पु० [म० माघ-प्रावृट्] हेमत ऋतु या  
माघ मास मे होने वाली साधारण वर्षा ।

उ०—मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूपळ काढे । नेसावरिया  
डगा, घणोरा घुरहे वाढे ।—दसदेव

रु० भे०—मावट, माहट, माहवठउ, माहुटि

अल्पा—माहावठी,

मावडो—देखो 'माता' (रु भे)

उ०—रातिल मोरी मावडो, हु छउ तोरु वाल । परिपरि पीडाती  
गणी, स्वामिनि करि सभालि ।—मा का प्र

मावणो, माववो—क्रि० अ० [अ० समाना] १ किसी घेरे या क्षेत्र मे  
आजाना, समाजाना ।

उ०—१ जिकण नू मीणा रा मारण रो निश्चय जणाइ उगु रो  
वडो पुत्र कुमराज १ तिया हू छोटी कन्हड २ या दो ही वधवा नू

वडी वरात रै साथ वरण नू बुलाई मीणा रै मावण जिसडो एक  
१ बाडो जुदो वणायो ।—व भा

उ०—२ सटा न मावै वाथ मे, फलग अटा गरकाव । पेख छटा  
मूकंपटा, सिधुर घटा सताव ।—वा दा

२ मीमा मे रहना ।

उ०—१ इद्र वनुख तणियो अजव चातुक धुन मन चाव । वीज न मावै वादलो, रसिया तीज रमाव ।—वा दा

उ०—२ पण मीणा भर ऊजळा गामां रें मोलें वूढापो कद मावें ।  
—दसदोख

३ खटना, रहना ।

उ०—वेटी किमी घर मे थोडी मावें दोरी-सोरी फेरी तो देणी ही पडणी ।—दसदोख

४ निभना ।

५ महन होना ।

६ हजम होना ।

मावणहार, हारी (हारी), मावणियो—वि० ।

माविओडो, मावियोडो, माव्योडो—मू० का० कृ० ।

मावीजणो, मावीजरी—भाव वा० ।

माणो, मावो—रू० भे० ।

मा'वत—१ देखो 'महावत' (रू भे)

उ०—१ मुजरी कर मा'वता आवन सवीया अवारी । यार वीन वी खुदाय, माहयली अला उचारे ।—वखतो खिडियो

उ०—२ नेम कहै मावत मणी रे ए जीव किए काजी । बलती बोले सारथी रे मामल जो महाराजी ।—जयवाणी ।

२—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—वण सगे वण मागवे, वण नातरिए नेह । वण मावत रे जीवोये, तु वण मरी ए मेह ।—जेठवो

मा'वतससतर—स० पु० [राज० महावत + स० शम्भ] हाथी को हाकने का शस्त्र, अकुश । (हि को)

मा'वय—देखो 'महावत' (रू भे)

उ०—विगर मा'वय हाथी लडै ।—जयवाणी

मावर, मा'वर—देखो 'महावर' (रू भे)

मावलिया—स० स्त्री० व व [स० मातृका] एक प्रकार की सप्त देवियों का समूह जो लोक देविया मानी जाती हैं । बालको के रोगों में इनके प्रकोप का कारण माना जाता है ।

वि० वि०—महाभारत (वन पर्व अध्याय १२८) में स्कंद मातृकाओं के रूप में इनका विस्तृत विवरण देते हुए सप्त शिशु मातृकाओं के नाम इस प्रकार स दिये हैं—काकी, हरिमा, मानिनी, वृहता, आर्षा, पमाला और वैमित्रा ।

अध्याय २३० में अन्य प्रकार से वर्णन करते हुए लिखा है कि सप्त ऋषियों ने जिन पत्नियों का त्याग कर दिया था, वे सब स्कंद के पाम पहुँची । उनकी प्रार्थना पर उन्हें मातृकाओं के रूप में स्वीकार किया । इन्होंने स्कंद से कहा कि "ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि लोक माताएँ जो पहले मे ही मानी जाती हैं वे अपना स्थान छोड़ दे और इनके स्थान पर हमारी पूजा हो । उन्होंने हम पर मिथ्या प्रपवाद लगाकर हमें सतानवाली नहीं होने दिया इसलिये इन माताओं की सतान हमें बाने के लिये सोंप दी जाय ।" स्कंद ने

इनकी प्रार्थना स्वीकार की परन्तु साथ ही उनसे उक्त संतानों की रक्षार्थ भी प्रार्थना की इन मातृकाओं ने स्कंद को संतानों की रक्षा का वचन दे दिया । तदनन्तर स्कंद ने इनके आवास के लिये स्कंदापम्यार नामक गृह समूह बनाया एवं यह तय किया कि वे बालको पर मोलवें वर्ष तक ही बाधा दे सकेंगी ।

ये शिव और अश्विन दो प्रकार की मानी जाती हैं । अत इनके पूतना, शीत पूतना, शकुनि, रेवती, मुख मण्डिका सरमा आदि नाम भी प्राप्त हैं ।

कुमार गुप्त प्रथम के एक शिला लेख में मातृकाओं एवं हाकिनी आदि का वर्णन मिलता है ।

बृहत्संहिता के टीकाकार उत्पल ने मातृकाओं में ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कोमारी, ऐन्द्री, यामिनी, वाक्णा आदि नाम गिनाए हैं । रूप मंडन के अनुसार पहले वीर भद्र की मूर्ति होनी चाहिये उसके बाद मातृकाओं तथा अत में विनायक की ।

इसी प्रकार अन्य पुराणों में भी मातृकाओं का उल्लेख है । ऐसा प्रतीत होता है कि मातृकाओं के दो स्वरूप थे । एक पौराणिक और दूसरा लौकिक । पौराणिक रूप में ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि की गणना की जा सकती है और लौकिक में अन्य देवियों की । ये दोनों रूप धारम्भ में एक दूसरे से मिस्र रहे होंगे, परन्तु कालान्तर में एक हो गये ।

पर्या०—ऊपर लिया, बायासा, बीजामणिया, मेलडियाँ, रेंवतियाँ, रू० भे०—मावडिया, मावड्या

मावळियाई माई—स० पु० यो०—सहोदर भ्राता ।

मावली—म० स्त्री—१ दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति ।

२—देखो मावलिया (व व) उ०—चावळा भरियो वाटकी भे वह, ये कित चाल्या जी राज । आज म्हारा मावली मड में विराजें—म्हें धोकण पूजण जाय विजासण हरख होलरियो जी राज । आज म्हारी मावली मड में विराजे ।—लो गो

१—देखो माता (अल्पा, रू भे.)

मावस—देखो 'अमावस' (रू भे)

उ०—ज्ञान सबद सति अरथ बिचारे, मावस मन का मेल उतारे ।

—ह पु वा

मावसी—देखो 'मासी' (रू भे)

उ०—नही म्हारी माय न मावसी हो राजा । कुण म्हारी प्राणी लई जाय ।—लो. गो

मावस्या—देखो 'अमावस' (रू भे)

मा'वारणी—देखो 'महावारणी' (रू भे.)

मावाळी—म० स्त्री—मिट्टी के वर्तन की वृद्धि के निमित्त उसके ऊपर लगाई जाने वाली मिट्टी ।

मावित, मावित्र, मावीत—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—१ छोड़ हूवे कई छोटा रे, पण मावित सदा होवे मोटा रे ।

—जयवाणी

उ०—२ वरजड ताइ सती ध्यान बइठी वळि, परम दयाळ किपी परवाह । मिस ईण मिळवा मावीता, चींत सती चड लागउ चाह ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ ता उपरि राजा भोज एक डकी दीयो । ताहरां चौबोली रा मावीत सहर लोक सरव खुसी हुवा ।—चौबोली

उ०—४ मावीत्र भ्रजाद मेटि बोलें मुखि, सुवर न को सिसुपाळ सरि । अति अबु कोपि कूबर ऊफणियो, वरसाळू वाहाळा वरि ।

—वेलि

मावीतपण, मावीतपणो—देखो 'माईतपणो' (रू भे )

मावीती—स० स्त्री०—१ वात्सल्य, प्रेम ।

२ अपने से छोटे के प्रति दया या रक्षा का भाव, संरक्षण अभिभावकत्व ।

उ०—पाचो आठो दम पनरो खूपडिया, मतरें बीस हय खतरें मे पडिया । कालप चावीकर भावी भुज भेटी, मोटा मोटा री मावीती भेटी ।—ऊ का

मावीत्र—देखो 'माईत' (रू भे )

उ०—१ प्रार्थ छोरे न लहै मार, मावीत्रा नी किराही वार । पिण मावीत्र तर्पे दिन राति, पाणी बल विरहो न खमात ।—वि कु

उ०—२ उछाह करइ मावीत्र अनोपम, चढइ नही के बीजा चीत । भादिआ सकत तणी गति अमडो, ऊगो ग्रहा विचइ आदीत ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ मावीत्र पहिलउ बीवाह, वाळपणइ कीवउ उच्छाह । हू परण्यउ जाणु ही नही, तेह वात सह बीसरि गई ।—ढी मा.

मावी—स० पु० [स०मड] १ दूव को छोटा कर बनाया जाने वाला खोपा ।

उ०—१ पोढे तेण वखत अप पावै । महली दूव सवामण मावै ।

—सू प्र

उ०—२ पेम पीयाला पीजीयै, मावा करि भरिपूर । जन हरीया पीयां पछै, बिखै शिलामा दूर ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ किसी वस्तु का सार-भाव, तत्त्व ।

३ किसी प्रकार का मसाला, सामग्री ।

४ औषधि विशेष ।

उ०—दीपक लोय आच मम दीजै । दिन तेरमें खोल देखीजै ।

औषम काच भळक अघिकावो, मिळ जल जडो वधें तिग मावो ।

—सू प्र

५ अफीम का नशा ।

उ०—मूछा गालडिया सेहें मे भरिया, उवासा लेवै मावा ऊतरिया ।

—ऊ का

६ एक वार में लो जाने वाली अफीम की मात्रा, खुराक ।

उ०—अमली ठाकरडा डेरा मे आवै, मोटी घमका घड मावा मटकावै ।—ऊ का

७ कद्र, इज्जत ।

उ०—जवान रो मावी क्यू घटावे ।

८ प्रकृति ।

९ रस, प्रेम ।

मास—स० पु० [स०] १ वर्ष का बारहवा भाग या अंश, महीना ।

उ०—१ बारै मास लगै मदा, नील हरी जिहां दीसै रे । फल फूलै छाइ धणु हीयडो देखी हीसै रे ।—वि कु

उ०—२ दिन गुडता काई वगत लागै । आ तो ठैरण वाळी चीज कोनी । पल, घडी, दिन, मास अर वरस बीतता बीतता, सोळै वरस हा करता लोप व्हेगा ।—फुलवाडी

उ०—३ विना नीर जाह कवल है, विन विरखा वरसाळ । विना मास जाह रत है, मात पिता विन वाळ ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—४ आब्यो मास वसत रे रसीया रो राजा, सुख द्यो साजा, तरु होड ताजा ।—वि कु

२ अवधि, समय ।

उ०—दिन दिन डोहला पूरता, बोल्या पूरा मास । सुत जायो रलियामणो, सहनी पूगी आस ।—वि कु

३ ऋतु ।

४ बारह की संख्या । - \* (डि को )

५ देखो 'मास' (रू भे )

उ०—जा घट वेदन विरह की, लोहू चढै न मास । हरिया मिळयो पीव सु, वसिवो धीगा पास ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

रू० भे०—मासउ, मासि, मासे

अल्पा०—मसवाडो, मसवाडउ, मासडो,

मासउ—१ देखो 'मासो' (रू भे ) (उ र )

२—देखो 'मास' (रू भे )

मासक—स० पु० [स० मासक] १ महीना, मास ।

२—देखो 'मासूक' (रू भे )

३—देखो 'मासिक' (रू भे )

४—देखो 'मासो'

मा'सकति, मा'सक्ति—देखो 'महासक्ति' (रू भे )

मासकल्प—स० पु०—चातुर्मास के अलावा उन्नीस दिन की अवधि जिसमे साधु को एक ही स्थान पर रहना पडता है । (जैन)

उ०—पातसाह अकवर के मानै, जिहा स्त्री जिन मिह सूरि ।

मासकल्प राखै आग्रह करि, थानमिह साहि सनूनि —स कु मालक्षमण, मासखमण—स० पु० यो०—एक महीने तक किये जाने वाले व्रत । (जैन)

उ०—१ मूलदेव मुनिवर पहिलाभ्यउ, मासक्षमण अग्रगार जी ।

—स कु

उ०—२ जद स्वांमीजी साधा नै कह्यो—मासखमण इहा रहिवा रा भाव है ।—भि द्र

मा'सगती—देखो 'महासक्ति' (रू भे )

मासडो—१ देखो 'मास' (अल्पा, रु भे)

२—देखो 'मास' (अल्पा, रु भे)

मासती-स० पु०—अपने पुत्र को गोद में लेकर सती होने वाली माता, महामती । वीर पुत्र के साथ सती होने वाली माता ।

उ०—निज पती भगा तो अत्यु रं मर्म सत करने माथ खामद रो करू नहीं सूनू टाळ वेटा रो भरोमी है । म्हारी दूध पीयो है जुद्ध मे भरसी तद इण लारै सत्य कर मासती कहाव सू .. वो स टी  
रु० भे०—मामती

मासदिवस-स० पु० —१ एक मास की प्रवधि ।

२—तीस की संख्या । रु (डि को)

मासद्व-ग० पु० [स० अर्द्धमास] एक पक्ष, प्राचा मास ।

मासपदो-स० पु०—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—चूशमाति सकलात पोतु तास्तु नील नत्रा वामत्या, मिसर वास्त्या, कद दोकद चुपदा मासपदा तनुवध, सरवध, कमरवध मगवना कमलवना व स

मासपरणी-स० स्त्री० [स० माप+परणी] जगली उहद जो वैद्यक के अनुसार बलवर्धक व शीतल औषधि मानी जाती है ।

मासफळ-म० पु० [स० मास+फल] १ वह पत्र जिसमें मास भर का शुभाशुभ फल लिखा हो ।

२ मास का शुभाशुभ फल ।

मासवारो-म० पु०—प्रभूता द्वारा एक मास के उपरांत किसी शुभ दिन को किया जाने वाला स्नान ।

मासांत-स० पु० [स० मास+अंत] १ महिने का अन्तिम दिन ।

२ महिने का अंत ।

३ सफ्राति ।

४ अमावस्या ।

मासाश्रल्लाह-स० पु० (पद) [अ० माशाश्रल्लाह] व्यगात्मक रूप में की जाने वाली तारोफ वाह-वाह ।

मासाधिप-म० पु० [म० मास+अधिपति] वह ग्रह जो मास का स्वामी हो, मासेज ।

मासाव-स० स्त्री०—माता साहिवा, माता तुल्य स्त्री के लिये आदर नूचक सम्बोधन ।

उ०—वर माहम कुनविया पुणै गससू पिमारी । मत कळपी मामाव एम रचना विघना रो —पा प्र

मामम-म० पु० [म० मास+माय] घोटा अश्व ।

मासि—१ दगो 'माम' (रु भे)

उ०—फागुण मासि वर्मन रुत, प्रायउ जइ न सुणैमि । चाचन्किड मिम गेलती, होळी भूषा वेमि ।—हो मा,

२—देखो 'मामो' (रु भे)

मामिक-वि०—१ मास का, मास सम्बन्धी

२ मास में एक बार होने वाला ।

स० पु०—किसी कार्य का प्रति मास नियमित रूप से चलने वाला क्रम ।

रु० भे०—मामक,

मासिकघरम, मासिकघरम्म-स० पु०—प्रायः एक मास की अवधि पर्यन्त स्त्रियों के होने वाला रजो स्राव ।

मासियाइ, मासियात, मासियाळ, मासिहाई-स० पु० [स० मातृवस्त्रीय] मौसी की सतान । (भाई/वहन) (उ र)

उ०—ठाकुरमी ईमरदाम उदराज राणो मूरजमल मासियाळ भाई हुती ।—वा. दा ख्यात

वि०—मौसीका, मौसी सम्बन्धी ।

रु० भे०—मासीयाई, मासीयात, मास्याई, मास्याही

मासी-स० स्त्री० [स० मातृवसा, पा० मातृच्छा, प्रा० मउच्छा माउसिप्रा] १ मा की वहन, मौसी । (उ. र)

उ०—मासी घागलि माडीनि सधली कही ते वात । सुवाहु मोक करि घणु, घणू इ कहणू देई मान ।—नलाख्यान

२ मौसी के रूप में मानी जाने वाली ।

उ०—१ मकोडो कह्यो—मालण मासी, यू वासटा सू काई हार पोवै, म्हारी सूई ले लै ।—फुलवाही

उ०—२ ऊदरा मिनकी रो श्री खिलकी देखियो ती उण नै पूछ्यो मिम्री मासी श्री काई नवो तोतक रचायो ।—फुलवाही

३ वनाम नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर रियामत में पचेवर के पश्चिम १० मील वह कर ५० मील की दूरी पर बांढी नदी में जाकर मिलती है । (वीर विनोद)

रु० भे०—मावमी, मावमी, मासि,

मासीयाई मासीयात—देखो 'मासियाई' (रु भे)

मासीसासू-स० स्त्री०—सासू की वहन ।

मासीसूसरो-स० पु०—मासु का वहनोई ।

मासीसी-स० पु०—मृतक के पीछे प्रति मास मृत्यु तिथि को दिया जाने वाला ब्राह्मण-भोज । (कायस्थ)

मासुधाकर-स० पु० [म० महा सुवाकर] चद्रमा ।

मासुरी-स० स्त्री० [स०] १ दाढ़ी

२ मूछ

उ०—इण रीति प्रामारा रा महाय वाज सोभति रा खेत मे जय रा द्दुमो घुराय प्रथ्वीगज रा वीरगं म्हारै भेडं मासुरी लोम आविया ।—व भा

रु० भे०—मासूरी

मासूक-म० पु० [अ० मायूक] (स्त्री० मासूका) १ प्रियतम, प्रेमी ।

उ०—भळका नगा नेणू दा यार, मासूक दा आमका दे दिल नू ।

—रमोनेराज रो गीत

२ प्रेम पात्र

३ जिसके साथ प्रेम किया जाय ।

रु० भे०—मागक, मासूक



मासूकी—सं० स्त्री० [अ० मा'शूकियत] १ 'मासूक' होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रेम पात्रता । नाजोमदाज, हाव भाव ।

मासूम—वि० [अ० मा'सूम] १ जो निर्दोष हो, दोषरहित ।

२ जिसने कोई पाप नहीं किया हो, निष्पाप ।

मासूरी—देखो 'मासुरी' (रू भे)

मासूल—देखो 'महसूल' (रू भे)

उ०—१ पीछे ऐ 'पूली' वगैरे साराई नरसिंहसू मिलिया, अरु कयो,  
'महारी वदलो घेरावो थानू वा'रे महीना मे इतरो मासूल भरस्या' ।

—द. दा.

उ०—२ तठे वेढ हई । तिणु में जोइया भागा वा वहलोल पकडयो  
गयो । दरवार री फते हई । अरु नदी सतलज ताई मासूल साझी ।

—द. द

मासोत्तम, मासोत्तम—सं० पु० [सं० मास + उत्तम] १ उत्तम मास, श्रेष्ठ मास ।

उ०—१ वारी सबत पेश, निसचै वरख निनांणुओं । पावू जनम  
सपेख, मासोत्तम फागुण मुकर ।—पा. प्र.

उ०—२ मासोत्तम वंसाख मे, गढ जाळघर हूत । राणी पधरावी  
सहर, साथै कुषर मपूत ।—रा. रू.

२ अधिक मास ।

३ मल मास ।

मासी—सं० पु० [सं० माप] १ तोले का वारहवा अंश, एक मान, जो  
आठ या छ रती के बराबर होता है । इससे सोना, चादी आदि  
बहुमूल्य वस्तुएँ तोली जाती हैं ।

उ०—सज्जन, सपत विपत में, जे भूरै ते कूर । मासी घटै न तिल  
वर्ध, जे विघ लिख्या अकूर ।—अज्ञात

२ मौमी का पति, माता का वहनोई ।

रू० भे०—मासउ,

मास्याई, मास्याही—देखो 'मामियाई' (रू भे) (उ. र.)

उ०—'कोणिक' राय नो दोकरो, हुतो मास्याई भाय । 'कोणिक'  
चपा नो घणी, रहो समीपे जाय ।—जयवाणी

मास्यूक—देखो 'मासूक' (रू भे)

उ०—निजरादे मारे मर गये मास्यूका । हो मास्यूकां तुझ कू एता  
दरद नहीं आया ।—रसील राज रो गीत

माह—सं० पु० [सं० मास, प्रा माह] १ महीना, मास ।

उ०—तकै भादवी माह ऊगत—तिथी । पडै माय रै पाय प्रथीप  
प्रथी ।—मे. म

२—देखो 'माघ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—१ पडिया आसुर पाच सो, घायल हुवा हजार । माह उजाळी  
सपतमी, वेढ सनीसर वार ।—रा. रू

उ०—२ दुपहरा की वरीया पैसी नोजण होय गयो छै जु कोई  
मनुष्य फिर डोलै न छै, कैसी भांति जैसी माह की राति होय ।  
मेघ वरसतो होय ।—वेलि टी

उ०—३ तीरथ सघलां सोवता, उत्तम एक ज ठाह । प्रमदा ताहरि  
प्रेम-जलि, हु हवि नाहसि माह ।—मा. का. प्र.

उ०—४ महमूद माह सूरज प्रमाण । जेठ रो घरक 'अभमाल' जाण ।  
—वि. सं.

१—देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ गत पथ तारक गाह रे, सून सपत दिन जिग साह रे ।  
हरण खड कीध सुवाह रे, मारीच नख दव माह रे ।—र. ज. प्र.

उ०—२ मयदी वणै कान्ह रं थाप मारी । तरी साह तोफान रै  
माह तारी ।—मे. म.

उ०—३ देव दाणव भेळा करि स्रप को नेत्री करि । मदराचळ  
परबत को मथाण करि समुद्र माह थी काढ़ि लीधी ।—वेलि टी

४—देखो 'महा' (रू. भे)

माहअहि—देखो 'महाअहि' (रू. भे)

माहकत—देखो 'महाकत' (रू. भे.)

माहकवु—देखो 'महाकवु' (रू. भे)

माहकाय—देखो 'महाकाय' (रू. भे.)

माहकारतिकी—देखो 'महाकारतिकी' (रू. भे)

माहकाळ—देखो 'महाकाळ' (रू. भे)

माहकाळी—देखो 'महाकाळी' (रू. भे)

माहकाव्य—देखो 'महाकाव्य' (रू. भे.)

माहकुमार—देखो 'महाकुमार' (रू. भे)

माहकुस्ट—देखो 'महाकुस्ट' (रू. भे)

माहखरब—देखो 'महाखरब' (रू. भे)

माहखेतर—देखो 'महाक्षेत्र' (रू. भे)

माहगणपति—देखो 'महागणपति' (रू. भे)

माहगिर—देखो 'महागिर' (रू. भे)

माहगोरी—देखो 'महागोरी' (रू. भे)

माहग्यानी—देखो 'महाग्यानी' (रू. भे)

माहग्रीव—देखो 'महाग्रीव' (रू. भे.)

माहघरत—देखो 'महाघरत' (रू. भे)

माहघोष, माहघोस—देखो 'महाघोस' (रू. भे)

माहचड—देखो 'महाचड' (रू. भे)

माहचडी—देखो 'महाचडी' (रू. भे.)

माहचकरवरती—देखो 'महाचकरवरती' (रू. भे)

माहचकरी—देखो 'महाचकरी' (रू. भे)

माहचपळा—देखो 'महाचपळा' (रू. भे)

माहाचीण—देखो 'महाचीण' (रू. भे)

उ०—ऊच मलतान, हीदूम्यान, देवकू पाटण, चीण महाचीण, मोट  
माहामोट, सखोद्वार एतला मजिगत अहारा 'देस देमाउर'  
घरणवीता सोमइ ।—व. स

माहजन—देखो 'महाजन' (रू. भे)

माहजनी—देखो 'महाजनी' (रू. भे)



माहजी—देखो 'मांभी' । उ०—मुग देपाळ कहे खग साहे । माहजी  
'दनी' जोदया माहे ।—गो. रु.

माहजोगी—देखो 'महायोगी' (रु भे)

माहजवाळ, माहजवाळा—देखो 'महाजवाळा' (रु भे)

माहट—देखो 'मावठ' (रु भे)

उ०—माह में माहट मांडघी मेह ते माहट रुम । ती पिण माहट  
नाह न पूगी माहरी हूम ।—घ व घ.

माहण—म० पु० [म० मा+हन्] (स्त्री० माहणी) १ वह साधु या  
व्यक्ति जो मन, क्रम, वचन में प्राणीमात्र की हत्या का विरोधी हो ।

उ०—माहण लमण सावयादि के, माही मोटी माल । असनादिक  
निपजायने दान देऊ दग चाल ।—जयवाणी

२ ब्राह्मण, विप्र ।

३ उच्चन सम्प ।

उ०—निरखए भरह वेत्तमि तीयकरी, सघतरघउ घञ माहण  
कुळें जिणवरो ।—स. कु

माहणरूप—म० पु०—ब्राह्मणरूप, ब्राह्मणवेश ।

माहणसपाय—स० स्त्री०—१ ब्राह्मण संप्रदाय । (२) ब्राह्मणों की संपदा ।

माहणी—स० स्त्री०—१ साध्वी स्त्री ।

उ०—हूती सोमा माहणी, काम भोग तणी केला रे ।—जयवाणी

माहणी—देखो 'मै'णी' (रु भे)

माहतम—देखो 'महातम' (रु भे)

माहत्तमा—देखो 'महात्मा' (रु भे)

माहतळ—देखो 'महातळ' (रु भे)

माहतिरफळा—देखो 'महातिरफळा' (रु भे)

माहतेज—देखो 'महातेज' (रु भे)

माहतिफळा—देखो 'महातिफळा' (रु भे)

माहदड—देखो 'महादड' (रु भे)

माहदडपारी—देखो 'महादडपारी' (रु भे)

माहदान—देखो 'महादान' (रु भे)

माहदिव—देखो 'महादेव' (रु भे)

माहद्वीप—देखो 'महाद्वीप' (रु भे)

माहदेव—देखो 'महादेव' (रु भे)

उ०—घरि घरि सघलइ गोरही, रडइ सहृदयमंभारि । माघव—

विण जीवाडि मां, माहदेव हवइ मारि ।—मा. कां. प्र.

माहद्रुम—देखो 'महाद्रुम' (रु भे)

माहनद—देखो 'महानद' (रु भे)

माहनिमा—देखो 'महानिमा' (रु भे)

माहनील—देखो 'महानील' (रु भे)

माहनुमावता—देखो 'महानुमावता' (रु भे)

माहप्रप—देखो 'महाप्रप' (रु भे)

माहपल—देखो 'महापल' (रु भे)

माहपचमूळ—देखो 'महापचमूळ' (रु भे)

माहपचयिस—देखो 'महापचयिस' (रु भे)

माहप—स० पु०—पडिहार वधा की एक शाखा ।

माहपक्ष—देखो 'महापक्ष' (रु भे)

माहपय—देखो 'महापय' (रु भे)

माहपयिक—देखो 'महापयिक' (रु भे)

माहपदम—देखो 'महापद' (रु भे)

माहपरभु—देखो 'महाप्रभु' (रु भे)

माहपरसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रु भे)

माहपरांण—देखो 'महाप्राण' (रु भे)

माहपवितर—देखो 'महापवित्र' (रु भे)

माहपातक—देखो 'महापातक' (रु भे)

माहपातकी—देखो 'महापातकी' (रु भे)

माहपास—देखो 'महापाम' (रु भे)

माहपूजा—देखो 'महापूजा' (रु भे)

माहपुर—देखो 'महापुर' (रु भे)

माहपुरस—देखो 'महापुरस' (रु भे)

माहपुराण—देखो 'महापुराण' (रु भे)

माहप्रभु—देखो 'महाप्रभु' (रु भे)

माहप्रसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रु भे)

माहप्रस्थान—देखो 'महाप्रस्थान' (रु भे)

माहप्रांण—देखो 'महाप्राण' (रु भे)

माहवळी, माहवळीय—देखो 'महावळी' (रु भे)

उ०—चढें जुघ माहवळीय सुजास, चढें ब्रह्मास भुवेस सुजास ।

—शि रु.

माहवाह—देखो 'महाबाहु' (रु भे)

उ०—पत्रा विहगेस बाळी मंदार हेपक पव्वे, । घोम काळकूट मेघ  
घारां गगा घार । घूप दान क्रीत राम माहवाह मोटा घणी,  
तीनू बाता तूळ तणी मोख गी दतार ।—र रु.

माहभारत—देखो 'महाभारत' (रु भे)

माहभास्य—देखो 'महाभास्य' (रु भे)

माहभूत—देखो 'महाभूत' (रु भे)

माहभैरव—देखो 'महाभैरव' (रु भे)

माहभोग—देखो 'महाभोग' (रु भे)

माहमतरी—देखो 'महामत्री' (रु भे)

माहमत्र—देखो 'महामत्र' (रु भे)

माहमत्री—देखो 'महामत्री' (रु भे)

माहमद—देखो 'महामद' (रु भे)

माहमाई—देखो 'महामाया' (रु भे)

माहमात्य—देखो 'महामत्री'

माहमाया—देखो 'महामाया' (रु भे)

माहमारी—देखो 'महामारी' (रु भे)

माहमाह—देखो 'माहोमाहि' (रु भे)

उ०—पछे विदर पूजिया पडव कैरवा सदाई । माहमाह कट मुवा  
दिली जीवता न पाई । —अरजुणजी वारहठ

माहय—देखो 'माघ' (रू भे)

माहयोगी—देखो 'महायोगी' (रू भे)

माहरइ—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ मागीरथ कहइ अजोनी सभवि, वडावडा जग विरद  
वहठ । कुळ माहरइ सधारण कवळा, गगाजी आवती ग्रहउ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तु रंगि रमवा गयु, जिहा अवरनी आण । होली हीयडइ  
माहरइ, कीधी कत सुजाण । —मा कां प्र

माहरउ, माहरउ—देखो 'म्हारै' (रू भे.)

उ०—१ स्त्री वयराट सुणि कीचक चीनउ, माहरउ मन पराभवि  
भीनउ । काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ । सचकार यम नइ घरि  
घालिउ । —सालिसूरि

उ०—२ हाडा खीची हेक, सोळकी सूरिज-वमी, सुणिस्यइ अन्न  
माहरउ, सदा, अवरे राइ अनेक । —अ वचनिका

माहरम—१ मालूम ।

उ०—इयु करता थका आथुण री आइ समझि करि करि जाय  
समाचार पूछे । पूछता दिन ५ ५ ६ हूवा । तठे सारी माहरम पाई ।  
—चीवोली

२ देखो 'महरम' (रू भे)

३ देखो 'मलम'

४ देखो 'मुहरम' (रू भे)

माहराज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—घारत कर सायक घनुख, त्रेभोयण सिरताज । भजिया जन  
कारक अमै, जै राघव माहराज । —र. ज प्र

माहरि माहरी—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ देवर माहरि घरि नही, ऊठी गिउ आखेटि । प्रीऊडा—  
पजरि पामीइ, जलण ववागिउ जेठि —मा का. प्र

उ०—२ थाने माहरी दुआइती हे सो थारा ससतर भलाई वाहय ली  
अने ओ हू एकली थारै सामने आयने खडो हू । —वी स टी

उ०—३ नेमजी हो अरज सुणी रे वाल्हा माहरी हो राज ।  
राजुल कहइ घरि नेह, घरि रहउ नै राज । —वि कु

माहए, माहय, माहुरू—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ मुख माहए आछउ थयु, निरमल पणु निलाडि । वात  
त्यजीनइ वैद्य, नइ आई आज देखाडि । —मा का प्र

उ०—२ जाहुरू वात मन री सरव जाणगर, देख ब्रद माहुरू मदत  
देगी । सीह आरोहणी काज तव साहुरू, वाहुरू वरन री आव वेगी ।  
—वालावक्स वारहठ

माहुरे, माहुरे—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ तरे राजा कयो माहुरे तो आहीज दरकार छे । पछे रखे-  
सर राजा कने हरद्वारजी माहे जितरा रिखसर सरव बताया ।

—रा. घ. वि,

उ०—२ मन दुसह दुह विध माहुरे, असह वार लगै इसी ।  
मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी । —रा रु

माहुरी—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ माहुरा अक्रम भेटवा माहव, क्रम हू कथिस तुहारा केसव,  
नाम तुम्हीणो ही घणनामी, सास उसास सभारिम स्वामी ।

—ह र.

उ०—२ पिता ताहुरी माहुरी साच पायो । इसी पावसी त ज  
ओ जोग आयो । —सू प्र

माहली—वि०—अन्त पुर मे जाने आने वाला ।

स० पु०—१ खोजा दास-दासी, सेवक आदि ।

२ राज महल या अन्त पुर का तोकर ।

माहली—देखो 'मायली' (रू भे)

उ०—प्रोळ कोट री आडा भाठा जडीया था सु खोलाया । माहली  
साथ मारी रा जगमाळ रा चद्रसेन पोकरण आयो मीळीयो ।

—नैणसी

(स्त्री० माहली)

माहव—देखो 'माघव' (रू भे)

उ०—१ महदातार पयपे माहव, बोल किसी ऊचरां वियो । ग्रहियां  
पछे उग्रहणी गोविंद कीजी जिम सगराम कियो ।

—महाराणा सांगा री गीत

उ०—२ मणारम मथे काढियउ माहव, जहर इतउ कण बीजइ  
जरइ । ईसर त्ये सरणइ ऊवरजइ, तिण वेळा समरीयउ तरइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरकी साग । किसव  
लिया ए कुकविया, माहव हूता मांग । —वा दा

माहवठउ—देखो 'मावठी' (रू भे)

उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हू धूजी  
घरणोइ डळू, दिइ हरणाखी बाह । —मा का प्र.

माहवत—देखो 'महावत' (रू भे)

माहवार—पु०—प्रत्येक मास मे मिलने वाला वेतन, मासिक वेतन

वि०—प्रत्येक मास होने वाला, मासिक

अव्य प्रतिमास, हरमास

माहवारी—पु०—१ प्रति-मास या मासिक रूप से चलने वाला क्रम ।

२ प्रति-मास मिलने वाला वेतन ।

३ स्त्रियो का मासिक घर्म

वि०—प्रतिमास होने वाला, मासिक ।

क्रि० वि० [फा०] महिने के महिने, प्रतिमास ।

माहवारणी—देखो 'महावारणी' (रू. भे)

माहविदेह—देखो 'महाविदेह' (रू भे)

उ०—सील पाली सजम लियउ रे, पाचमइ गई देवलीकिरे ।

माहविदेह मई सीभस्यइ रे, सील थकी सह थोक रे । —स कु

माहविस—देखो 'महाविम' (रु भे)

माहवीर—देखो 'महावीर' (रु भे)

उ०—'विजपाळ' आर्वे हूँ माहवीर ये स्याम काज सारण सधीर ।

—शि रु

माहवेग—देखो 'महावेग' (रु भे)

माहवो—देखो 'मावव' (पल्गा, रु भे)

उ०—श्रीलवियो पगे तनां म्हे अविगत, गोवळ ग्राम तणी तु  
ग्याळ । माहवा नाम तुहारो मीठी, दीठी दीनदयाळ ।

—पीरदांन लाळम

माहव्याघ, माहव्याघी—देखो 'महाव्याघि' (रु भे)

माहवृत्ती—देखो 'महावृत्ती' (रु भे)

माहमख—देखो 'महासख' (रु भे)

माहसकती, माहसगती—देखो 'महासक्ति' (रु, भे)

माहसया—देखो 'महासया' (रु भे)

माहसरग—देखो 'महासरग' (रु भे)

माहसांतपन—देखो 'महासांतपन' (रु भे)

माहसास—देखो 'महास्वाम' (रु भे)

माहसिज—देखो 'महासिज' (रु भे)

माहसिध, माहसंध—देखो 'महासिंह' (रु भे)

माहसूर—देखो 'महासूर' (रु भे)

उ०—मज भ्रात पुत्र पीरम कहर, मज समग्र मिळिया माहसूर ।

—शि रु

माहसेत—देखो 'महासेत' (रु भे)

माहमेन—देखो 'महामेन' (रु भे)

माहा माहा—देखो 'माहीमाहि' (रु भे)

उ०—एक डसिह आविउ तिहा, ऊजेणी नु वभ । मिलया माहा—  
माहा विन्हे, समया काज मुलभ ।—मा का प्र

माहा—स० स्त्री० [स० माहेयी] १ गी, गाय । (ह ना मा)

० देखा 'माहा' (रु भे)

उ०—पुण्य स्लोक कथारम पीता अन्नत खाटू लागे । माहा कवि  
न गार वरणवी, पूरवे जे माहा भागे ।—नळास्थान

३ देखो 'माय' (रु भे)

उ०—मुन माहा तुन के ऊपर तेज पुज एक खान । केवळ चेतन  
देखमी, केवळ मंदिर अस्थान ।—चीहरिरोमजी महाराज

माहाकाळियो—म० पृ०—१ एक अमुर जो कर्मी देवी के हाथों मारा  
गया ।

उ०—जित माहाकाळियो देत जोर । घण जोम डील वळ  
खस्ट जोर ।—रामदांन लाळम

२ कानिया नाग ।

माहाग्यानी—देखो 'महाग्यानी'

माहाचीण—म० पु०—एक देश विशेष । (प्राचीन)

उ०—हीदूम्यान देयकपाटण, चीण चीण मोट ।—व म

माहाडोळ, माहाडोळ—देखो 'महाडोळ' (रु भे)

उ०—पीछे राव सूर्जेजी री माजी हाडी जममादेजी माहाडोळ में  
विराज स्त्रीवीकेंजी खने पधारिया ।—द दा

माहातम—देखो 'महातम' (रु भे)

उ०—जठे एक दिन वामग वथा वाचतो थो । जठे ईसो वनांगो  
सो एकादमी री ईमी माहातम है ।—गाम रा घणी री वात

माहातमा—देखो 'महात्मा' (रु भे)

माहातेज—देखो 'महातेज' (रु भे)

माहात्म्य—देखो 'महानम' (रु भे)

उ०—जहां रेणो वीम उतपति नहीं चद नहि तहां भान । जहां  
पावक पवन पाणी नहीं, तहां माहात्म्य (जन)हरिदास का स्थान ।

—ह पु वा

माहानाद—देखो 'महानाद' (रु भे)

माहावल—देखो 'महावल' (रु भे)

उ०—रस चादिनी रसवती जिवती जिनांना, माहावल ते सरदक  
राजमांना ।—व स

माहाभोट—स० पु०—एक देश विशेष (प्राचीन)

उ०—ऊच मलतान हींदूस्थान, देशकू पाटण, चीण माहाचीण  
भोट माहाभोट सखोद्वार एतला साजिगत ।—व स

माहामरातप, माहामरातव—देखो 'माहीमरातिव' (रु भे)

उ०—सोवरणमि छत्र, रगत रातां छत्र, पीत पीला छत्र, अनव  
नेजा, माहामरातप डोल, दमांमा नीसाण ।—व स

माहार—स० पु०—कुम्हारों की एक शाखा । (मा म)

माहारजत—देखो 'महारजत' (रु भे)

माहारस—देखो 'महारम' (रु भे)

माहाराज—देखो 'महाराज' (रु भे)

उ०—जद हेमजी स्वामी बोल्या—माहाराज भोगुण तो म्हारइ  
मूर्क ।—मि द्र

माहाराजा—देखो 'महाराजा' (रु भे)

माहारी—देखो 'म्हारी' (रु भे)

उ०—हमे मेडती थे किणी ही ओर नु देवी छी ती माहारी  
जमोयत मारी परी जावें छे ।—नंणमी

माहारी—देखो 'म्हारी' (रु भे)

माहालइ—देखो 'माळो' (रु भे)

माहालणी, माहालवी—देखो 'माहलणी, माहलवी' (रु भे)

उ०—हमगतइ चालती, गजगतइ माहालती, काम कामणी पालती,  
आखिनइ मटकारइ मदन नी वागुरा घालती—व म

उ०—२ मेना चालि मेम हालि, माहाल महीपति मलपता ।

—तला स्थान

माहालणहार, हारी (हारी, माहालणियो—वि०

माहालियोडो, माहालियोडो, माहालियोडो—सू० का० कु०

माहालीजणी, माहालीजवी—भाव वा०

माहालियोडो—देखो 'माहलियोडो' (रु भे)

उ०—पछे विदर पूजिया पडव करवा सदाई । माहमाह कट मुवा  
दिली जीवता न पाई । —अरजुणजी वारहठ

माह्य—देखो 'मागव'

माहयोगी—देखो 'महायोगी' (रू भे)

माहरइ—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ मागीरथ कहइ अजोनी सभवि, वडावडा जग विरद  
वहउ । कुळ माहरइ सधारण कवळा, गगाजी आवती ग्रहउ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तु रगि रमवा गयु, जिहा अवरनी आण । होली हीयडइ  
माहरइ, कीवी कत सुजाण । —मा का प्र

माहरउ, माहरउ—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—१ स्त्री वयराट सुणि कीचक चीनउ, माहरउ मन पराभवि  
भीनउ । काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ । सचकार यम नइ परि  
घालिउ । —सालिसूरि

उ०—२ हाडा खीची हैक, मोळकी सूरिज वसी, सुणिस्यइ नित  
माहरउ, सदा, भवरे राइ अनेक । —अ वचनिका

माहरम—१ मालूम ।

उ०—इयु करता थका आधुण री आइ समझि करि करि जाय  
समाचार पूछे । पूछता दिन ५ ५ ६ हूवा । तठे सारी माहरम पाई ।  
—चीवोली

२ देखो 'महरम' (रू भे)

३ देखो 'मलम'

४ देखो 'मुहरम' (रू भे)

माहराज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—धारत कर मायक धनुष, त्रेभोयण सिरताज । भजिया जन  
कारक अमै, जे राघव माहराज । —२. ज प्र

माहरि माहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—१ देवर माहरि घरि नही, ऊठी गिउ आखेटि । प्रीऊडा—  
पजरि पामीड, जलण वधागिउ जेठि —मा का प्र

उ०—२ थाने माहरी दुआइती है सो थारा ससतर भलाई चाह्य ली  
अने ओ हू एकली थारै सामने आयने खडो हू । —वी स टी

उ०—३ नेमजी हो घरज मृणी रे वाल्हा माहरी हो राज ।  
राजुल कहइ घरि नेह, घरि रहउ नै राज । —वि कु

माहव, माहव, माहव—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—१ मुख माहव आछउ थयु, निरमल पणु निलाडि । बात  
त्यजीनइ वैद्य नइ आई प्राज देखाडि । —मा का प्र

उ०—२ जाहरू बात मन री सरव जाणगर, देख ब्रद माहरू मदत  
देगो । सीह आरोहणी काज तव साहरू, वाहरू वरन री आव वेगो ।

—वालावक्स वारहठ

माहरे, माहरे—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ सरै राजा कयो माहरे तो आहीज दरकार छे । पछे रखे-  
सर राजा कने हरद्वारजी माहे जितरा रिखेसर सरव बताया ।

—रा व. वि,

उ०—२ मन दुसह दुह विव माहरे, अमह वार लगै डमी ।  
मुख लिपां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिमी । —रा रू

माहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—१ माहरा अक्रम भेटवा माहव, क्रम हू कथिम तुहारा केमव,  
नाम तुम्हीणो ही घणनामी, सास उसास सभारिम स्वामी ।

—ह र.

उ०—२ पिता ताहरी माहरी साच पायो । इसी पावसी त ज  
भी जोग आयो । —सू प्र

माहली—वि०—अन्त पुर मे जाने आने वाला ।

स० पु०—१ खोजा दाम-दामी, सेवक आदि ।

२ राज महल या अन्त पुर का नौकर ।

माहली—देखो 'मायली' (रू भे)

उ०—प्रोळ कोट री बाडा भाठा जडीया था सु खोलाया । माहली  
साय सारी रा जगमाळ रा चद्रमेन फोकरण आयो मीळीयो ।

—नैगामी

(स्त्री० माहली)

माहव—देखो 'माघव' (रू भे)

उ०—१ महदातार पयपे माहव, बोल किसी ऊचरा वियो । ग्रहिया  
पछे उग्रहणी गोविंद कीजो जिम सगरांम कियो ।

—महाराणा सांगा री गीत

उ०—२ मणारभ मयं काडियउ माहव, जहर इतउ किण बीजइ  
जरइ । ईसर त्ये सरणइ ऊवरजइ, तिण वेळा समरीयउ तरइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरकी साग । किसव  
लिया ए कुकविया माहव हूता मांग । —बा दा

माहवठउ—देखो 'माघठी' (रू भे)

उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हू धूजी  
घरणीइ डळू, दिइ हरणाखी वाह । —मा का प्र.

माहवत—देखो 'महावत' (रू भे)

माहवार—पु०—प्रत्येक मास मे मिलने वाला वेतन, मासिक वेतन

वि०—प्रत्येक मास होने वाला, मासिक

अव्य प्रतिमास, हरमास

माहवारी—पु०—१ प्रति-मास या मासिक रूप से चलने वाला क्रम ।

२ प्रति-मास मिलने वाला वेतन ।

३ स्त्रियो का मासिक धर्म

वि०—प्रतिमास होने वाला, मासिक ।

क्रि० वि० [फा०] महिने के महिने, प्रतिमास ।

माहवाचणी—देखो 'महावाचणी' (रू भे)

माहविदेह—देखो 'महाविदेह' (रू भे)

उ०—सील पाली सजम लियउ रे, पाचमइ गई देवलोकिरे ।

माहविदेह मई सीभस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे । —स कु

माहवित्त—देखो 'महावित्त' (रू भे)

माहवीर—देखो 'महावीर' (रू भे)

उ०—'विजयाळ' ग्रामे हम माहवीर ये स्याम काज मारण मधीर ।

—शि रू

माहवेग—देखो 'महावेग' (रू भे)

माहवो—देखो 'माघव' (प्रल्हा, रू भे)

उ०—श्रीलक्ष्मियो परी तनां म्हे अविगत, गोवळ ग्राम तणी तूं  
गवाळ । माहवा नाम तुहारी मीठी, दीठी दीनदयाळ ।

—वीरदान लाळम

माहव्याघ, माहव्याघी—देखो 'महाव्याघि' (रू भे)

माहव्रती—देखो 'महाव्रती' (रू भे)

माहमन्त्र—देखो 'महामन्त्र' (रू भे)

माहमकनी, माहसगती—देखो 'महामक्ति' (रू, भे)

माहमया—देखो 'महामया' (रू भे)

माहमरग—देखो 'महामरग' (रू भे)

माहसांतपन—देखो 'महामांतपन' (रू भे)

माहसास—देखो 'महाम्वास' (रू भे)

माहमिच—देखो 'महामिच' (रू भे)

माहमिघ, माहमौघ—देखो 'महामिह' (रू भे)

माहसूर—देखो 'महासूर' (रू भे)

उ०—मज भ्रात पुत्र पोरम कहर, मज ससत्र पिळिया माहसूर ।

—शि रू

माहमेत—देखो 'महासेत' (रू भे)

माहमेन—देखो 'महामेन' (रू भे)

माहा माहा—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

उ०—एक दमिड घाविउ तिहां, ऊजेणी नुवम । मिलया माहा—  
माहा विन्हें, ममया काज मुलम ।—मा का प्र

माहा—स० म्थी० [स० माहयो] १ गो, गाय । (ह ना मा)

० देया 'माहा' (रू भे)

उ०—पुण्य स्त्रोक कथारम पीता म्रत्रत खाटू लागे । माहा कवि  
म्र गार वरणवो पूरणे जे माहा भागे ।—नळास्थान

३ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—सुन माहा सुन केठपरे तेज पुज एक खान । केवळ चेतन  
देखमी, केवळ मंदिर अस्थान ।—स्त्रीहरिगंमजी महाराज

माहाकाळियो—स० पु०—१ एक प्रभु जो करनी देवी के हाथी मारा  
गया ।

उ०—जित माहाकाळियो देत जोर । घण जोस ढील वळ  
छस्ट जोर ।—रामदान लाळम

२ कालिया नाग ।

माहाग्यांनी—देखो 'महाग्यांनी'

माहाचीण—म० पु०—एक देश विशेष । (प्राचीन)

उ०—हीदूस्थान देयकपाटण, चीण चीण भोट ।—द म

माहाडोळ, माहाडोळ—देखो 'महाडोळ' (रू भे)

उ०—पीछें राव सूर्जजी री माजी हाडी जसमादेजी माहाडोळ में  
विराज स्त्रीवीकंजी खन पवारिया ।—द दा

माहातम—देखो 'महातम' (रू भे)

उ०—जठे एक दिन वामराय कथा वाचतो थो । जठे ईसो घनांणी  
सो एकादमी री ईमी माहातम हे ।—गाम रा घणी री वात

माहातमा—देखो 'महात्मा' (रू भे)

माहातेज—देखो 'महातेज' (रू भे)

माहात्म्य—देखो 'महातम' (रू भे)

उ०—जहा रेणी वॉम उतपति नही चद नहि तहां भान । जहां  
पावक पवन पांणी नही, तहां माहात्म्य(जन)हरिदाम का स्थान ।

—ह पु वा

माहानाद—देखो 'महानाद' (रू भे)

माहावळ—देखो 'महावळ' (रू भे)

उ०—रस चादिनी रमवती जिवती जिनांना, माहावळ ते मरदक  
राजमाना ।—व स

माहाभोट—स० पु०—एक देश विशेष (प्राचीन)

उ०—ऊन मलतान हीदूस्थान, देवकू पाटण, चीण माहाचीण  
भोट माहाभोट सखोद्वार एतला साजिगत ।—व स

माहामरातप, माहामुरातव—देखो 'माहीमरातिव' (रू भे)

उ०—सोवरणमि छत्र रगत राता छत्र, पीत पीला छत्र, अर्नव  
नेजा, माहामरातप ढोल, दमांमा नीमाण ।—व स

माहार—म० पु०—कुम्हारों की एक धावा । (मा म)

माहारजत—देखो 'महारजत' (रू भे)

माहारस—देखो 'महारम' (रू भे)

माहाराज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—जद हेमजी स्वामी बोल्या—माहाराज भोगुण तो म्हारद  
सूक्त ।—भि द

माहाराजा—देखो 'महागजा' (रू भे)

माहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—हमे मेडती थे किणी ही ओर नु दबो छी तो माहारी  
जमीयत मारी परी जावे छे ।—नंगुमी

माहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

माहालइ—देखो 'माळी' (रू भे)

माहालणी, माहालवी—देखो 'माहलणी, माहलवी' (रू भे)

उ०—हमगतइ चालती, गजगतइ माहालती, काम कामणी पालती,  
आखिनइ मटकारड मदन नी बागुरा घालती—व म

उ०—० सेना चालि सेम हालि, माहाने महीपति मनपता ।

—नला स्थान

माहालणहार, हारो (हारी, माहालणियो—वि०

माहालिओडी, माहालियाडी, माहाल्योडी—भू० का० क०

माहालीजणो माहालीजणो—भाव वा०

माहालियोडी—देखो 'माहलियोडी' (रू भे)

माहेस्वरी-स० स्त्री०-१ पार्वती, गिरिजा । (ह ना मा

२ दुर्गा ।

३ एक मातृका ।

स० पु०-४ वैश्यो की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

रू भे —माहेसरी, माहेसुरी,

माहे—देखो 'माय' (रू, भे )

उ०-१ आदू कतन धाम अजोध्या, जगन्नाथ वश अम हरि  
जोवा । पेखो त्या माहे घरपती, पूरण अम हुवो द्युपति ।

—रा रू

उ०-तरं अश्वलहुमेन अरज की —रूपीया २,०००००) माहे मेढती  
इण नु दीयो छे —नैरासी

माहोमाहि, माहोमाह, माहोमाहे माहोमा, माहोमाह, माहोमाहि,  
माहेमाहे—क्रि० वि०—आपस मे परस्पर, एक दूसरे के प्रति ।

उ०-१ अने हाथी निकल्या सगळा भेळा होयने भूसवा लाग  
जावे । त्या म्वान रे माहोमाहि कद एको थो ।—भि द्र

उ०-२ घनो जमाल माहोमाह री वेढ मे माराणा ।

—बा दा ख्या

उ०-३ तिण थो इणा ठाकरा रे माहोमाहे अमुख घणो वधियो ।

—नैरासी

उ०-४ माहोमा मनुआर हुई, हथवाह तणी हव । 'पाल' कह्यो  
तू वाह तुज्ज गुनहि घाडो तव ।—पा प्र

उ०-५ नर थोडा पिगळ नरनाथ, सबळ एह रिण घवळह माथ ।

माहोमाह भूभ माडिस्यइ, कुळि काळ क माहरइ लागिश्यइ ।

—दो मा

उ०-६ माळा गळि मालती तणी करि-वरि कणायर काव ।

माघव-सिंह माहोमाहि, वाली खेलइ बाव ।—मा का प्र

उ०-७ आया सिवपुरी हुयो कारिज सिध, परमगुरु चा ग्रहिया  
पगि । माहोमाहि वरइ वाता मिळि, जनम सुकियारय हुयो जगि ।

—महादेव पारवतो रीबेलि

उ०-८ तेथी पद्मालय नाम नगर । जेथी एक देहरी उहा राजा  
गयो । दरमण किया । दोय यात्री माहोमाहे वात करी सो सुणी ।

—विधासण बत्तीमी

रू० भे०—महमहइ, महामुह, महिमाह, माहमा, माहीमाही,  
माहेमाहे, माहोमा, माहोमाह, माहोमाहि, माहीमाही, माहोमाहे

माहमाह माहामाहा ।

मिगणी—देखो 'मिगणी' (रू भे )

मिगणी—देखो 'मिगणी' (रू भे )

मिगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे )

मिगी—देखो 'मिगी' (रू भे )

मिजासणी—देखो 'मजासणी' (रू भे )

मिट—देखो 'मिट' (रू भे )

उ०—उगणीसै वावन उरज, आठम कवि बंद ईम । चार वज्या  
जसवत चलयो, पूरा मिट पैतीस ।—ऊ का

मिटु—देखो 'मीठी' (रू भे )

उ०—भुठु मिठु लागो जनने कहुयां फळ छे तेह ।—कवियण

मिढ—देखो 'मीढी' (मह, रू भे )

२—देखो 'मीढ' (रू भे )

मिढणी, मिढवी—क्रि० अ०—१ बराबर होना समान होना

२—देखो 'मीढणी, मीढवी' (रू भे )

उ०—सरोतर अथ नयर मिढती सदाही, घाय, घड मोडवा आद  
घाणी ।—जयसिंह राठोड री गीत

मिढमुख—स० पु०—एक देश का नाम । (शाचीन)

उ०—खरमुख, तुरग मुख, मिढमुख हय करणा, गजकरणा,  
प्रभ्रति अनारघ देस ।—व स

मिढयोडो—भू० का० क०—१ समान हुवा हुआ, बराबर हुवा हुआ ।

२—देखो 'मीढियोडो' (रू भे )

मित—देखो 'मित्र' (रू भे )

उ०—१ वेच घवळ आ वत्तडी, काना लाग कहत । जिकी मित  
मत जाणजे, केवी जाणुं कन ।—बां दा

उ०—२ आपरे वासे आयोडा पान री वो घणी आव-आदार  
करी । दोनू गाढा मित वैया ।—कुलवाडी

मितर—१ देखो 'मित्र' (रू भे )

उ०—२ बोल्यो-मितर मोहल्ले परखिये, धीणी मद घास ।

—दसदोख

२ देखो 'मित्र' (रू भे )

उ०—पाच-सात विरिया, छुट्टी विसराम रे वखत, करणुं नै जमी  
पर सुवो सुवाण्यो, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायो ।

—दसदोख

मितरणी मितरवो—देखो 'मितरणी, मितरवो' (रू भे ) उ०—पाणी

मितरे पावे आकडे मे लोटो दुळावे ।—दसदोख

मितरणहार हारी (हारी) मितरणियों—वि० ।

मितरियोडो, मितरियोडो, मितरियोडो—भू० का० क० ।

मितरोजणी, मितरोजवो—कम वा० ।

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू भे )

उ०—एक ही कीडी नै एक ही सायड । दोनो मे ही अतूट  
मितरता । आठ पोर साये । रे' वे' साये खावे अर साये पीवे ।

—कुलवाडी

मितराई—देखो 'मित्राई' (रू भे )

मितरियोडो—देखो 'मितरियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मितरियोडो)

मितरी—१ देखो 'मत्री' (रू भे )

२—देखो 'मित्र' (रू भे )

मितरोळ—देखो 'मित्र' (रू भे )

उ०—मेठ म्यामजी जावक गुण-गाळ, मा'रजा रें लोही रा पीळ।  
मित्र नही मुनळ विरा निररोळ ।—दमदोख

मित्रोद्दिष्टो—देखो 'मित्र' (रू भे )

मित्रो—देखो 'मित्र' (रू भे )

उ०—मिमु वै मिती विती, उदमो पोगड मड मिगारी । ज्यो  
प्रदारक तय, प्रामे डाळ सगि पत्तेणम् ।—रा रु

मित्र—देखो 'मित्र' (रू भे ) (ह ना मा )

उ०—करै कवि मित्र सुग्रीव सुताज । रहचवे वाळि दियो कवि  
राज ।—ह र

मित्राई—म० स्त्री०—मित्र होने की दशा या भाव, मित्रता, दोस्ती

रू० भे०—मतराई मथ्राई, मितराई, मितराई, मिताई, मिथ्राई ।

मित्रो—देखो 'मथो' (रू भे )

उ०—मा'रजा, मेवा लाईंगे रा मित्रो सनातन धरम रा सम्रापति  
ग्राम नेवामध रा उपाध्यक्ष घर धारधममाज रा सदा सू सदस्य  
है ।—दमदोख

२—देखो 'मित्र' (रू भे )

मिदर—१ देखो 'मिदर' (रू भे ) (अ मा, ह ना मा )

उ०—१ उर अनर मे करुणा आई, सारे देम करण सुख दाई ।  
मिदर तीरय पोवा मडाई खर पावे गारी जळ खाई ।—ऊ का  
उ०—२ हरीया कर दीपग दीया, मिदर भया उजास । यु गुर  
दीपग नदीया, उर अघारा जाम ।—त्रोहरिरामदासजी महाराज  
२—देखो 'कठमिदर'

उ०—एम वरण उच्चरि, नयण त्रप वदन निहारे । तजि सुंदर  
घर नाम, चाह मिदर चीतारे । अमवारी दिस अगम, प्रगट नक्कीव  
पुकारे । पडे मरु पर लोक, हूए टांमक नगारे । हरिनाम प्रेम धारे  
हिये, सांमो लिये मणि सचरे । छत्रपती माय रांणी छद्म, आज  
त्रिहु कुळ उद्धरे ।—रा रु

मियाळ—म० पु०—कच्चे मकान की छाजन में लगी बल्ली के महारे  
वे लिये इनके नाचे लगने वाली प्राय धनुषाकार लकड़ी जिसके  
दोनों सिरे दोनों ओर की दीवारों पर टिके रहते हैं ।

मि-सुव०—१ में ।

उ०—विहिती मेरु माहागिरी नाप्पु पात्र तणि ता पाणि । तु सू  
दान करयू मि मही मांहा मनि मोटो ए काणि ।—नळाप्यांन  
२ मेरे ।

मिमान—देखो 'म्यान' (रू भे )

उ०—मु किण भातगी तयवार थेट मिरोही री, सातगी, दांणुदाव  
मिमान पातिया त्रिप्रागुळे वाडे मेरिमा—मिमान सू काहिन घास  
मे नाथी हूए तो पांणी रे ओळे जिनावर ठूक मारे ।

—रा सा स

मिमाद—देखो 'मयाद' (रू भे )

मिमादी—देखो 'मयादी' (रू भे )

मिमादीबुखार—देखो 'मयादीबुखार' (रू भे )

मिड—देखो 'अदु' (रू भे )

मिकदार—स० पु०—[अ मिकदार] १ मात्रा, परिमाण ।

२ तोल, वजन ।

३ अदाज अनुमान ।

मिक्सचर—स० पु०—[अ०] १ कई प्रकार की तरल औपधियों का  
मिश्रण । २ कई प्रकार के पदार्थों का सम्मिश्रण ।

मिग—देखो 'मिग' (रू भे )

उ०—हम-बाहूणि मिग-लोचनि नारि । सीस समारइ दिन  
गिणाइ । —बी. दे

मिगसर—स० पु० [स० मार्गशिर मार्गशीर्ष] १ कार्तिक मास के बाद  
घाने वाला मास अगहन मास ।

उ०—सवत सतरें वरस बीसै मास मिगसर जांण ए ।

—घ व प्र

(स० मृगशिर) ३ मृगसरा नक्षत्र ।

रू भे—मगसर, मगसिर, मगसर, मगमिर, मगमीर, मागसर,  
मागमृग, मागमिर मागसिर, मिगसर, मिगमरी, मिगस्मर,  
अल्पा—मिगमरियो,

मिगसरियो—देखो 'मिगसर' (अल्पा, रू भे )

उ०—मिगसरियो वर मू डोले, तुलछां रा फूल किसनजी तोले ।  
—लो गी

मिगसरी—म० स्त्री०—१ मार्गशीर्ष मास की तिथि ।

२—देखो 'मिगसर' (रू भे )

मिगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे )

उ०—माम मिगसर वार गुरु बीज उजाळी पाय । चढ घोडे मड  
चल्लिया, 'चाया' कोण चढाय ।—रा रु

मिडकल—देखो 'मडकल' (रू भे )

उ०—मिडागं न अमल उणोडी ही । वाने पाणी री हील खटो  
कोनीं । एक मिडकल मिरदार भालो हाथ मे लेयने ऊभी विठयो ।

—फुलवाडी

मिचकोडणी, मिचकोडणी—देखो 'मचकोडणी, मचकोडणी' (रू भे )

उ०—कोजी वूटा म पांमोजा पैरयो ही सीधो माळ मे आ घमक्यो  
ओर मे सुनी राजी री घणी नराजी सु नाड देख रे मूढो  
मिचकोडयो ।—दमदोख

मिचकोडियोडी—देखो 'मचकोडियोडी' (रू भे )

(म्यो० मिचकोडियोडी)

मिचणी, मिचवी—कि० अ०—वद होना । (अंल)

मिचळणी, मिचळवी—देखो 'मचळणी, मचळवी' (रू भे )

मिचळाण, मिचळाव, मिचळाट—देखो 'मचळाण' (रू भे )

उ०—म्हें तो राजा हू । देम री घणी हू । राज चलावणी धांरी  
काम हे के म्हागे । इण भीड न कुन्ती मूं आप आपरें ठिकाणें  
रवाना करो । आ अलेमूं जिनांवरा री कोजी मिचळाव सू म्हाारी



तो माथी चढयो ।—फुलवाडो

मिचळणी, मिचळवो—रि० अ०—१ उवकाई घाना, जो मतलाना ।

२—देखो मचळणी, मचळवो (रू भे)

मिचळयोडो—भू० का० कृ०—१ उवकाई आया हुमा, जो मतलाया हुमा ।

२—देखो 'मचळयोडो' (रू भे)

मिचळयोडो—देखो 'मचळयोडो' (रू भे)

(स्त्री० मिचळयोडो)

मिचलो—देखो 'मचलो' (रू भे)

मिचव—स० पु० [स० म्लेच्छ] मुसलमान ।

मिच्छ—स० स्त्री० [स०] बाधा, अडचन ।

मिच्छत, मिच्छत—प० पु०—असत्य को सत्य और सत्य को असत्य समझने की अवस्था । मिथ्यात्व । (जैन)

मिच्छदित्ति मिच्छदित्ति—स० स्त्री०—मिथ्या दृष्टि । (जैन)

मिच्छामिदुक्कड—स० पु०—मिथ्यादुष्कृत

उ०—जद स्वामीजी कह्यो थे मन्त्री के असन्नी ? ते बोल्यो हू मन्त्री । स्वामी पूछ्यो किण न्याय ? जद ते बोल्यो ना, मिच्छामिदुक्कड हू मन्त्री —भि द्र

मिच्छा—स० स्त्री०—मिथ्या ।

उ०—पण विधिनी खय कोजता हो, अविधि हुवइ जिकाय ।

मिच्छा दुक्कड दीजता हो, छुटक वारउ थाय ।—स कु

मिच्छादसण—स० पु०—मिथ्या दर्शन ।

मिच्छादित्ति—स० स्त्री०—मिथ्या दृष्टि ।

मिच्छादुक्कड—देखो 'मिच्छामिदुक्कड'

उ०—सामि घरभ ने सोल तणा गुण सांमठा रे, पूगं मन नी आस । ओछो अघिको जे कह्यो कवि चातुरी रे मिच्छादुक्कड ताम ।

—घ व य

मिछ—वि०—मृत ।

मिछन—स० स्त्री०—मिथ्यात्व, मिथ्यापन ।

उ०—तामु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिण प्रम सूरि भाणु । भविय कमल पडिओइणु, मिछत तिमिर हरणु ।—जिन प्रम सूरि रो गीत

मिछलाण—देखो मचलाण' (रू भे)

मिजनू—देखो मजनू' (रू भे)

उ०—मात सलामत पित मुभा, आवं नह आपाण । घामधूम मिजनू घटा, जे मावडिया जाण ।—वां दा.

मिजवानी—देखो मिजमानी' (रू भे)

मिजमाण, मिजमान—स० पु० [फा० मेहमान] अतिथि, मेहमान ।

उ०—१ इण कह्यो हे कै आपारा मिजमान उलटो अरथ आपारा सन्नु जीमावो, मारो, आगत—स्वागत करो ।—वी स टी

उ०—२ खाडेंत्या खोलिया, खिडक खामा रथ खाना । सिणगारधा सिदण मिछण सामा मिजमान ।—मे म

रू० भे०—मजमान, मझमान, मिझमान, मीजमान, मीझमान,

मिजमानिय, मिजमानी—स० स्त्री० [फा० मेजवानी] १ आथित्य-सत्कार, स्वागत ।

उ०—१ ओ ठहाव हुवो के अचुलजाफर दिलमीं नू कोट मे मिजमानी करे ।

उ०—२ खिज खाज न भोजन खोजन की, मिजमानिय मिच्छ न भोजन की । छिववत उदत दिगत छये । भल सत महत अनत भये ।—ऊ का

२ आथित्य-सत्कार में दिया जाने वाला भोज ।

उ०—१ पछे फेर फरमाई तद दूसरे दिन फेर मिजमानी हुई ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ मिछला ही मरद घोडा सू उतरिया अने घोडा आपो आप रा सेल, भाला रें बाधिया, मिजमानी गोठ मे मिछतां हरख होवें ज्यू जुघरी समे खोवा बाजिया रो खेल मचियो ।—वी स टी

उ०—३ नायक नै देतो दोनू साम्हा आया, पावा लाग । डेरै भीतर विराजिया । मिजमानी रो नायक जावतो करायो ।

—पलकदरियाव री बात

३ आथित्य सत्कार मे दी जानी वाली भेंट ।

उ०—पछे रुपया इक्कीस बडारण रें हाथ मिजमानी रा प्रोहितजी नू मेलिया ।—कुवरसी साखला री वारता

रू० भे०—मजमानी, मझमानी, मिजवानी, मिझमानी, मीजमानी, मुझमानी,

मिजराव—स० पु० [अ०] सितार आदि तार के बाद्य बजाने का एक छल्ला जो तारो का ही बना होता है ।

मिजलस—देखो 'मजलस' (रू भे)

उ०—वा'र बण'यर बैठतो, मिजलस मिजलस मोड । पडदे मे नही पैठतो, दूजा ज्यू घुम दोड —ऊ का

मिजळी—स० स्त्री०—न्यून, निरर्थक ।

मिजळी—वि० [स्त्री० मिजळी] निम्न एव ओछि प्रकृति का, जिमकी बात का विश्वास नही किया जा सकता हो, दिल का काला, मन का मेला, कृतघ्न— ।

उ०—सब भात कही हम सोगन की मिजळे पिटळे महि मोगन की । अन भाय न जोगन आड करे, पुन आय न कोय न खाड परे ।

—ऊ का

मिजनि—सं० पु० [अ० मीजान] १ तराजू तुला ।

उ०—खाक मे वहिया हाथ मे मिजान अर कान मे कलम खोस्या वो इण गाव सू उण गांव सेंण देंण करतो ई रंवतो ।—फुलवाडो २ तुला राखि ।

३ गणित मे कई अंको का योग, जोड ।

रू० भे०—मीजान, ।

मिजाज—स० पु० [अ०] १ किसी प्राणी की मुख्य प्रवृत्ति, स्वभाव आदत ।

उ०—१ मामी पिण्णक मिजाज, वेप्रदवी मानू विमन । लोभ  
घणी कम नाज, पैठा घर वाछे पिमण ।—वा दां

उ०—२ नै सूठ आकरा मिजाज री तेज तरराट, बोली री वाडी,  
अकडेन अर कामचोर हो ।—फुलवाडी

२ किमी पदार्थ का मूत्र-भूत गुण ।

३ स्वास्थ, तवीयत ।

उ०—तद नवार जाणियो मोत आयी । तारां हाय जोडने कयो  
“राजा सांव, आपकी मिजाज अच्छी है?” यू कहने तुरत भ्रमवारी  
नू टोराय गयो ।—द दा

४ गव, अभिमान, घमंड ।

उ०—१ वो आपरामन मे कंवतो—भावणकी री जात अर  
हाजगिया आगे मिजाज । गमदर मे रंवणी अर मगरमच्छ सू बैर  
देखू कितराक दिन अकडनी फिर ।—रातवामी

उ०—२ इतनू काई छे मिजाज म्हारे मिदर आ [ व ] ता । थाने  
इतनू काई छे मिजाज ।—मीरा

५ नाज, नमरा ।

उ०—आलीज री मेजा मे रीक गहूली,  
वहि रे मिजाज करू रसिया ।—लो भी

६ खुशी, माद ।

उ०—जद वा ऊदरी आपरे रुप री बवाण सुगुने मिजाज मे  
मटरका करती घरै आयगी ।—फुलवाडी

७ दिल, मन ।

रू० भे०—मजाज, मजेज,

मिजाजशाली-म० पु० [ अ ] कुशल मगळा पूछने के लिये प्रयुक्त होने  
वाला शब्द ।

मिजाजण-वि०—गर्व, अभिमान करने वाली ।

उ०—हे हा ए म्हागी मदा हे मानितण सुदर नार, मिजाजण गीरी  
सुखपाल मेला हे ।—लो भी

रू० भे०—मीजाजन,

मिजाजदार-वि० [ अ० मिजाज-दार ] गर्व व अभिमान करने वाला ।

मिजाजगुस्ती-म० स्त्री० [ अ० मिजाज-फा पुर्गी ] कुशल मगल पूछने की  
क्रिया या भाव ।

२ महानुभूति जतलाना ।

मिजाज शरीफ-म० पु०—[ अ० मिजाज शरीफ ] कुशल-मगल या  
स्वास्थ्य-लाभ पूछने के लिये प्रयुक्त शब्द ।

मिजाजी-वि०—[ अ० मिजाज-रा० प्र० ई० ] ( स्त्री० मीजाजण )

१ गविला, अभिमानी ।

उ०—ज्यानी बीच पडे ओ वाजार मिजाजी होना, बीच बजार,  
बजारा एकनही डरनू जी बजारा एकलडी डरपू जी ।

—लो भी

२ नाज-नगरे वाला ।

रू० भे०—मीजाजी,

अत्पा-मिजाजीडी

मिजाजीडी—देखो ‘मिजाजी’ (अत्पा, रू भे )

उ०—ऊभा गज मिजाजीडा अमलां मे

अमला रा छावया सेजलडी रे मारगा ।

छक मतवाली रा तुलाया थे ।—रसीले राज री गीत

मिजाजी—देखो ‘मिजाजी’ (रू भे )

मिभमान—देखो ‘मिभमान’ (रू भे )

उ० हिल मिळ सब मू हालणी, ग्रहणी आतमग्यान ।

दुनिया म दस दीहडा, माहू तू मिभमान ।—वां दा

मिभमानवारी, मिभमानी—देखो ‘मिभमानी’ (रू भे )

उ०—१ हे प्यारा कोई पाहुणा मिळिया है—(दुमण आया हैं)

ज्यां ने अवे मिभमानी (जीमावण री) वार जेऊ दीमे है—जीमाव-  
णो सस्त्रा सू प्रहार करणी—अठे लक्षण लक्षण ।

—वी स टी

उ०—२ कीधी निछरावळ निजर, मिभमानी मनुहार ।

दरसण कीवी सामरी, ‘दुरगो’ मोती वार —रा रू

मिभलस—देखो ‘मजलिस’ (रू भे )

उ०—राणेराव विलास रत, जगनिवास नित जाय ।

मिभलस जाणे माणवा, अद्र अखाडे प्राय ।

—महादान महदू

मिटणी, मिटवो—क्रि० अ०—१ समाप्त होना, खतम होना ।

उ०—१ मान मिट जातो मोटा हट हट जातो हेर,

दान दट जातो दुग देस को विदेस को ।—ऊ का

उ०—२ रसना मुख मयकार मिट, रटि महजा ररकार ।

हरीया इ अत छाडि करि, विखे न पीवण हार ।

—श्रीहरिरामशमजी महाराज

उ०—३ तोय करमानसा तरो, नर सुभ करम नसाय ।

तोय तुपाळें त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ।—वा दा

उ०—४ मामी कहघो—यने आछी नी लागें तो म्हने किसी लागें  
वेटी, पण आपरे दाय नी आवणा सू जकी साची बात है वा मिटें  
तो कोनी ।—फुलवाडी

२ बद होना, रुकना ।

उ०—१ जूझणी मिटग्यो वण दिन समझनी के जीवणी ही ई  
मिटग्यो । ये आज सू ई न्यारा-न्यारा फट जावी । न्यारा-

न्याग जूझो अर न्यारा न्यारा ई फळाप करो ।—फुलवाडी

उ०—२ राम नाम जपता रहैं, तजें न आला आन । जन हरीया

उन जीव की, मिटें ना खांचानान ।—श्रीहरिरामदामजी महाराज

३ दूर होना, अलग होना, हटना ।

उ०—१ मावडिया तन मंगण रा, मिटें कदे नह माद । मावडिया  
हूळा मरद, चूला हदा चाद ।—वां दा

मिणश्रोडो, मिणयोडो, मिणयोडो—भू० का० कृ० ।

मिणीजणो, मिणीजवो—कर्म वा० ।

मिण—स० स्त्री०—१ कुए के घेरे की दीवार, घेराव

उ०—महावीर गोतम मुख मोड़ी चीतीणो खिणियों मिण चौडी जेनी खाड चिहो पट जोडी, मोत हुवै कौ जाय मकोडो ।—ऊ का  
रू० भे०—मीण,

२ देखो 'मणि' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—१ सखी अमीणी साहिबो, निरभं काळो नाग । सिर राखे मिण स्यामध्रम, रीकै मिधु राग ।—बा दा

उ०—२ खुडिया ऊपरि जाणि खाभिया, मिणघर राजा तणी मिण ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ कापडमाल असख हेम मिण रयण विभूखण —गु रू व  
मिणजल—स० पु० [स० मिणजल] विद्युत, विजली, ह ना मा )

मिणघर, मिणघरण मिणघारी—देखो 'मणिघर' (रू भे)

उ०—१ मिणघर विख अणमाव, मोटा नह धारे मगज । वीछू पछू वणाव राखै सिंग पर राजिया ।—किरपाराम

उ०—२ चदण लपटे मिणघरण, रीकै साभळ राग । पिण मुख माभल जहरतै, निदवियो जग नाग ।—बा दा

उ०—३ मांगळियो 'सुदर' मिणवारी, घुर भगवान महाव्रत धारी ।  
—रा रू

मिणसणो मिणसवो—क्रि० म० [स० मनस्यन्] १ मन मे इच्छा विचार या सकल्प करना

२ मन मे हठ निश्चय या सकल्प करना

३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से, सम्मुख रखकर या हाथ मे लेकर विधिपूर्वक मंत्र पढ़कर सकल्प करना

मिणसियोडो—भू० का० कृ०—१ मन में इच्छा, विचार या सकल्प किया हुआ २ मन में हठ निश्चय या सकल्प किया हुआ ३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से सम्मुख रख-कर या हाथ में लेकर विधि पूर्वक मंत्र पढ़कर सकल्प किया हुआ

(स्त्री० मिणसियोडो)

मिणलीकर—स० पु० [स० शीकरमणि] चद्रमा, चांद, (ना मा)

मिण—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणघड—देखो 'मणिघड' (रू भे)

उ०—मिणघड नेपति भडा खगवाहां खय घोडा ।—गु रू व

मिणघर—देखो 'मणिघर' (रू भे)

मिणघड, मिणघर—देखो 'मणिघड' (रू भे)

उ०—सम दल वाला हरा सवाया, अखई पवै प्राग सम आया ।

मिणघड दल मेळे घर मगल, आयो जेतमाळ अतुलीवळ ।—रा रू

मिणियार—देखो 'मणियारा' (रू भे)

मिणियारी—देखो 'मणियारी' (रू भे)

मिणयोडो—भू० का० कृ०—१ नापा हुआ

२ देखो 'मुणियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मिणियोडो)

मिणियो—देखो 'मणियो' (रू भे)

मिणहार—देखो 'मणियार' (रू भे)

मिणहारो—देखो 'मणियारो' (रू भे)

उ०—कोयल ऐ आज म्हारें जामण जायो वहनड जोइजे । वहनड म्हारी मिणहारो री हाट, मूगा मोला री मोनो बहनड मोलवै ।

—लो गो

मिणी—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणीघर—देखो 'मणिघर' (रू भे)

मिणीघड, मिणीघर—देखो 'मणिघड' (रू भे)

उ०—१ नगधर मिणीघड नीपजं कोडीघज केकाण ।—वी मा

उ०—२ कूक गई महमद कने जग सारै जाणी । इळ मिणीघर कर ऊजळी तीजणिया आणी ।—वी मा

मितग, मितगम—स पु० [स०] हाथी, गज

मितपच—वि० [स०] १ निर्धन, दरिद्र ।

उ०—कै जुठवन व्यय व्याह पै नायक हरखाया । जाणी मितपच रक की नव ही निधि पाया ।—व भा

२ कृपण, कजूस (नित्य)

३ थोडा पकाने वाला ।

मित—वि० [स०] १ परिमित, थोडा ।

उ०—वय एकादस मित वरम ममर जीति हय सूर । प्रतिहारो आणी प्रथम पित्य' कवर गुण पूर ।—व भा

२ तुल्य, समान, तरह ।

उ०—१ मर्थ जवन दळ उदविखीर मित, 'मचळ' हुवो तिलतिल सुर अचित ।—व भा

उ०—२ वदै जसो' जिणवार, कवर अगळ जोडे कर । भीणा अघम गमार, घणै छक अनड रहे घर । बीरा सम्मुह वेग, पूछ पटके मडळ मित । एक खोचि आइ सधळ, कीधा खळ सकित । अमिधान 'गग' सगो सगर निम्नदेव अगळ निडर । असवार एक जडिया उठे ओखळिया भाला अरर ।—व भा

स० स्त्री०—१ सहपा पितृनी ।

उ०—१ गहर भै भीति वरणा नदी तरिव धदै, अनत आगे बह्या मित नाही । साध आकाम मे अटक उलटा चढ्या, प्राण मन सुरति आकास मांही ।—ह पु वा

उ०—२ नीडें दिल्ली नैर रै, लाख उभे मिन लोक । कत्ती हेठे करि कतल, अमल कियो सब ओक ।—व भा

२ पार, सीमा ।

उ०—दादू जैसा राम अपार है, तैसी भक्ति अगाध । इन दानो की मित नही, सकळ पुकारै साध ।—दादूवाणी

३ माप

उ०—दादू एक जीभ केता कहू, पूरण ब्रह्म अगाध । वेद कनेवा मित नही, थकित भयै मत्र माध ।—दादूवाणी

४ मृत्यु, मरण ।

उ०—जोगान्यामी कीजें कीजें मग्राम मांम छळ मरणो । पामीजें मित मोखो, निम्बच तत निरधार ।—गु रु व

५ देखो 'मित्र' (रु भे) (ना डि को)

मित्तो—देखो 'मित्र' (अन्पा, रु भे)

मित्तानी—वि० [स० मितभापिन्] (स्त्री० मितभामणी) समझ वृक्ष कर थोड़ा बोलने वाला, मितभापी ।

मितर—दमो 'मित्र' (रु भे)

उ०—मेठ म्यामजी जायक गुण गाल, मारजा रें लोही ग पीऊ !

मितर नहीं मुनळविया मितरोळ —दमदोव

मितरता—देखो 'मित्रता' (रु भे)

मितरार्ई—देखो 'मित्रार्ई' (रु भे)

उ०—दोमती-मितरार्ई मोटी चाल, कितो ही तुनावी चावें मन्ही ग माल ।—दमदोव

मितरो—देखो 'मित्र' (रु भे)

० देखो 'मत्री' (रु भे)

मितळणी, मितळणी—क्रि० अ०—कै आने को होना, मिचलाना ।

उ०—बांबलिया भी छाल रें उनमान मगमो अर खुरदरो डील । योगी तो फूलकवर रें लगे टगे । पण थिडरूप उणिगारें । देव्या जी मितळे । दांत एक दूजा माथें चडपोटा ।—फुलवाडी

मितळणहार, हारो (हारो), मितळणियो—वि०

मितळिओडो, मितळियोडो, मितळ्योडो—भू०का०कृ०

मितळीजणो, मितळीजवो—भाव वा०

मितळावणो, मितळावणो—देखो 'मितळणो मितळवो' (रु भे)

उ०—खायो पीयो अग लागे नी । अम्टीर जी मितळावणो । नौद म गोळीज्योडो वटे ज्यु रंवतो ।—फुलवाडी

मितळावणहार, हारो (हारो), मितळावणियो—वि०

मितळाविओडो, मितळाविओडो, मितळाव्योडो—भू०का०कृ०

मितळावोजणो, मितळावोजवो—भाव वा०

मितवो—देखो 'मित्र' (रु भे)

उ०—१ वरात चल्मी प्यारे, नई दुनही कैमी लावोगे । वेमक व्याही मितवा में राजी, मोहि मन मिलकें मिधावोगे ।

—रमोलें राज रा गीत

उ०—० अग आन मिलाई कासिदवा रें । मोरें मितवा मोहि नेजरिया ।—रमोलें राज रा गीत

मितव्यय—म० पु० [स०] थोड़े खर्च में काम चलाना, आवश्यकता में अधिक खर्च न करना, विफायन ।

वि०—कम खर्च करने वाला ।

मितव्ययता—स० स्त्री—मितव्यय होने की अवस्था या भाव । विफायत धारी ।

मितार्ई—देखो 'मित्रार्ई' (रु भे)

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई नरमाई और

मुलायमी किया वास्ते । जे इण गुणां सू रैयस दुआ आपरें बादसाह नू देवें —नी प्र

मिति, मितो—स० स्त्री [स० मिति] १ मान, परिमाण ।

२ मीमा, हृद ।

३ समय की अवधि, दिया हुआ वक्त ।

४ देशी महीनो की तिथि या तारीख ।

रु० भे०—मिती, मत्ति, मती, मत्ति, मत्ती ।

मितीकाटी—स० पु० यी०—१ किमी हूडी या विल की निश्चित तिथि से पूर्ण भुगतान करने पर मिलने वाली एक प्रकार की छूट, मुद्दत, रियायत ।

वि० वि०—यह एक प्रकार का व्याज है जो अवधि से पूर्व रुपया अदा करने के कारण भुगतान करने वाले को मिलता है ।

२ पारम्परिक लेन-देन में, भारतीय महाजनी प्रणाली के अनुसार अलग-अलग रकमों पर अलग-अलग तिथियों से जोड़ा जाने वाला व्याज ।

मितु—देखो 'मित्र' (रु भे)

मित्त, मित्तर—देखो 'मित्र' (रु भे)

उ०—१ तुम प्रीतम जे माहरो मित्त, तु हिवें कोइ न मेलै चित्त ।  
—व व अ

उ०—२ महपाळ सिधा कुळ मित्ता रो, पहपाळक सता पीसा रो । जग जाय जमारो जीतारो, मुज सभर सायव मोता रो ।

—र ज प्र

उ०—३ दादू विरही पीड मी, पडा पुकारें मित्त । राम विना जीवें नही, पीव मिळन की चित्त ।—दादू बाणी

मित्र—स० पु० [स० मित्र] १ सूर्य, भानु (अ मा, डि को, ना डि को, ना मा)

२ बारह आदित्यों में से एक ।

वि० वि०—भविष्य के अनुसार, मार्गशीर्ष माह में प्रकाशित होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है । किन्तु भागवत के अनुसार ज्येष्ठ माह में उदय होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है ।

३ एक वदिक देवता ।

४ वार और नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में १२ वा योग ।

५ पुराणों के अनुसार मरदण्ड में से पहले मरुन का नाम ।

६ ऊर्जों के गम से उत्पन्न वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम ।

[म० मित्रम्] ७ सदैव हिन चाहने वाला, सुख दुख में काम आने वाला व्यक्ति । सुहृद, हितैषी, शुभेच्छु ।

८ प्रेमी प्रियतम

९ सखा, दोस्त, यार ।

उ०—१ भ्रात मित्र जुग जुग मला, नीत प्रसिद्ध निराट । जुगल भुजा कर जागिया, अपणा जुगल कपाट ।—वां दा

पर्या०—नेहवाल नेही, प्राण, प्राणइष्ट, प्रीतम, प्रेमीगुण, मन-मेलन,

मिणिओडो, मिणियोडो, मिणयोडो—भू० का० कृ० ।

मिणीजणो, मिणीजवो—कर्म वा० ।

मिण-स० स्त्री०—१ कुए के घेरे की दीवार, घेराव

उ०—महावीर गीतम मुख मोडी चौतीणो खिणियो मिण चौडी जैनी ख'ड चिडी पट जोडी, मोत हुवै को जाय मकोडी ।—ऊ का  
रू० भे०—मीण,

२ देखो 'मणि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ सखी अमीणी साहिबो, निरभं काळो नाग । सिर राखे मिण स्यामधम, रीभं मिधु राग ।—बा दा

उ०—२ खुडिया ऊपरि जाणि खाभिया, मिणघर राजा तणी मिण ।—महादेव पागवती री वेलि

उ०—३ कापडमाल असख हेम मिण रयण विभूखण —गु रू व मिणजल-म० पु० [स० मिणजल] विद्युत, विजली (ह ना मा)

मिणघर, मिणघरण मिणघारी—देखो 'मणिघर' (रू भे)

उ०—१ मिणघर विख अणमाव, मोटा नह घारै मगज । बीछू पूछ वणाव, राखै सिर पर राजिया ।—किरपारांम

उ०—२ चदण लपटे मिणघरण, रीभं सामळ राग । पिण मुख मांमल जहरतै, निदविधौ जग नाग ।—बा दा

उ०—३ मागळियो 'सूदर' मिणघारी, घुर भगवान महाव्रत घारी ।

—रा रू

मिणसणो मिणसवो—क्रि० स० [सं० मनस्यन्] १ मन मे इच्छा विचार या सकल्प करना

२ मन मे दृढ निश्चय या सकल्प करना

३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से, सम्मुख रखकर या हाथ मे लेकर विधिपूर्वक मंत्र पढ़कर सकल्प करना

मिणसियोडो—भू० का० कृ०—१ मन मे इच्छा, विचार या सकल्प किया हुआ २ मन मे दृढ निश्चय या सकल्प किया हुआ ३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से सम्मुख रख-कर या हाथ में लेकर विधि पूर्वक मंत्र पढ़कर सकल्प किया हुआ

(स्त्री० मिणसियोडो)

मिणलीकर-स० पु० [स० शीकरमणि] चंद्रमा, चांद, (ना मा)

मिणि—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणिअड—देखो 'मणिअड' (रू भे)

उ०—मिणिअड नेपति भडा, खगवाहा खत्र घोडा ।—गु रू व

मिणिघर—देखो 'मणिघर' (रू भे)

मिणिअड, मिणियर—देखो 'मणिअड' (रू भे)

उ०—सम दल वाला हरा सवाया, अखई पवै प्राग सम आया ।

मिणिअड दल मेळे घर मगल, आयो जैतमाळ अतुलीदळ ।—रा रू

मिणियार—देखो 'मणियार' (रू भे)

मिणियारी—देखो 'मणियारी' (रू भे)

मिणियोडो—भू० का० कृ०—१ नापा हुआ

२ देखो 'मुणियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मिणियोडो)

मिणियो—देखो 'मणियो' (रू, भे)

मिणिहार—देखो 'मणिहार' (रू भे)

मिणिहारी—देखो 'मणिहारी' (रू, भे.)

उ०—कोयल ऐ आज म्हारे जामण जायी बहनड जोइजे । बहनड म्हारी मिणिहारा री हाट, मूगा मोलां री मोनी बहनड मोलवै ।

—लो गी

मिणी—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणीघर—देखो 'मणिघर' (रू भे)

मिणीअड, मिणीयर—देखो 'मणिअड' (रू भे)

उ०—१ नगधर मिणीअड नीपजै कोडीधज केकाण ।—वी मा

उ०—२ कूक गई महमद कने जग सारै जाणी । इळ मिणीयर कर ऊजळी तीजणियां आणी ।—वी मा

मितग, मितगम-स पु० [स०] हाथी, गज

मितपच-वि० [स०] १ निर्धन, दरिद्र ।

उ०—कै जुब्बन व्यय व्याह पै नायक हरखाया । जांणी मितपच रक कौ नव हो निवि पाया ।—व भा

२ कृपण, कजूस (नित्य)

३ थोडा पकाने वाला ।

मित-वि० [स०] १ परिमित, थोडा ।

उ०—वय एकादस मित वरम समर जीति हय सूर । प्रतिहारी आणी प्रथम पित्य' कवर गुण पूर ।—व भा

२ तुल्य, समान, तरह ।

उ०—१ मथै जवन दळ उदधिखीर मित, 'अचळ' हुबो तिलतिल सुर अचित ।—व भा

उ०—२ बदै जसो' जिणवार, कवर अगळ जोड कर । मीणा अघम गमार, घणै छक अनड रहे घर । धीरा सम्मुह वेग, पूछ पटके मडळ मित । एक खीच झाड सधळ, कीघा खळ सकित । अमिधान गग' सगो सगर निम्मदेव अगज निडर । असवार एक जडिया उठे श्रीखळिया माला अरर ।—व भा

स० स्त्री०—१ सख्या गिनती ।

उ०—१ गहर भै भोति त्रमणा नदी तरिव बहै, अनत आगे बह्या मित नाही । साध आकाम मे अटक उलटा चढ्या प्राण मन सुरति आकास माहि ।—ह पु वा

उ०—२ नोडें दिल्ली नैर रे, लाख उभे मिन लोक । कत्ती हैठे करि कतल, अमल कियो सब ओक ।—व भा

२ पार, सीमा ।

उ०—दादू जैसा राम अपार है, तैमो भक्ति अगाव । इन दानो धी मित नही, मकळ पुकारै साध ।—दादूवाणी

३ माप

उ०—दादू एक जीभ केता कहू पूरण ब्रह्म अगाव । वेद कनेया मित नही, थकित भयें मव माध ।—दादूवाणी

४ मृत्यु, मरण ।

उ०—जोगाभ्यामी कीजं कीजं सग्राम सांम छळ मरणो । पामीजं मित मोखो, निम्ब्य तत निरवाण ।—गु रू व

५ देखो 'मित्र' (रू भे) (ना डि को)

मितडो—देखो 'मित्र' (अल्पा, रू भे)

मितभासी—वि० [म० मितभापिन्] (स्त्री० मितभासणी) समझ वृद्ध कर थोड़ा मोलने वाला, मितभापी ।

मितर—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—मेठ स्यामजी जावक गुण-गाल, मारजा रें लोही रा पीऊ !

मितर नहीं मुनळविया मितरोळ —दमदोख

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू भे)

मिनराई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—दोमती-मितराई मोटी चाल, किती ही तुलावी चावै मन्ही मृ मान ।—दमदोख

मितरो—देखो 'मित्र' (रू भे)

२ देखो 'मित्र' (रू भे)

मितळणो, मितळरो—कि० अ०—कै आने को होना, मिचलाना ।

उ०—बावलिया रो छाल रें उनमान मगसो अर खुरदरो डील । डीगी तो फूलकवर रें लगे टगे । पण विहरूप रणियारें । देखयां जी मितळें । दात एक दूना माथें चहचोडा ।—फुलवाडी

मितळणहार, हारो (हारी), मितळणियो—वि०

मितळिओडो, मितळियोडो, मितळ्योडो—भू०का०कृ०

मितळोजणो, मितळीजयो—भाव वा०

मितळावणो, मितळावयो—देखो 'मितळणो, मितळयो' (रू भे)

उ०—घायो पीयो अग लागं नीं । अस्टपोर जो मितळावतो । नोद में गेलीज्योडो व्है ज्यू रेंवतो ।—फुलवाडी

मितळावणहार, हारो (हारी), मितळावणियो—वि०

मितळाविओडो, मितळावियोडो, मितळाव्योडो—भू०का०कृ०

मितळावोजणो, मितळावोजयो—भाव वा०

मितवो—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ वरात चल्गी प्यारे, नई दुलही कैमो लावोगे । वेमक व्याहो मितवा में राजी, मोहि मन मिलकें सिधावोगे ।

—रमोलें राज रा गीत

उ०—२ अथ आनं मिलाई कासिदवा रें । मोरें मितवा मोहि नेजरियां ।—रमोलें राज रा गीत

मितव्यय—स० पु० [स०] थोड़े खर्च में काम चलाना, आवश्यकता में अधिक खर्च न करना, किफायत ।

वि०—कम खर्च करने वाला ।

मितव्ययता—स० स्त्री—मितव्यय होने की अवस्था या भाव । किफायत धारी ।

मिताई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई नरमाई और

मुलायमी किए वास्ते । जे इण गुणां सू रेंयत दुमा आपरें वादमाह नू देवै —नी. प्र

मिति, मितो—स० स्त्री [स० मिति] १ मान, परिमाण ।

२ सीमा, हृद ।

३ समय की अवधि, दिया हुआ वक्त ।

४ देशी महीनो की तिथि या तारोख ।

रू० भे०—मिती, मत्ति, मती, मत्ति, मत्ती ।

मितीकाटी—स० पु० यो०—१ किमी हू डी या विल की निश्चित तिथि से पूर्ण भुगतान करने पर मिलने वाली एक प्रकार की छूट, मुद्दत, रियायत ।

वि० वि०—यह एक प्रकार का व्याज है जो अवधि से पूर्व रुपया अदा करने के कारण भुगतान करने वाले को मिलता है ।

२ पारस्परिक लेन-देन में, भारतीय-महाजनी प्रणाली के अनुसार अलग-अलग रकमों पर अलग अलग तिथियों से जोड़ा जाने वाला व्याज ।

मितु—देखो 'मित्र' (रू भे)

मित्त, मित्तर—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ तुम प्रीतम जे माहरो मित्त, तु हिवै कोइ न मेलै चित्त ।  
—घ व प्र

उ०—२ महपाळ मिवा कुळ मित्ता रो, पहपाळक सता पीमा रो । जग जाय जमारो जीतारो, सुज सभर सायव सीता रो ।

—र ज प्र

उ०—३ दादू बिरहो पीड़ मीं, पडा पुकारें मित्त । राम विना जीवै नहीं, पीव मिलन की चित्त ।—दादू वाणी

मित्र—स० पु० [स० मित्र] १ सूर्य, भानु (अ मा, डि को, ना डि को, ना मा)

२ बारह आदित्यों में से एक ।

वि० वि०—भविष्य के अनुसार, मार्गशीर्ष माह में प्रकाशित होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है । किन्तु भागवत के अनुसार ज्येष्ठ माह में उदय होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है ।

३ एक वैदिक देवता ।

४ बार और नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में १२ वा योग ।

५ पुराणों के अनुसार मरुदण्ड में से पहले मरुत का नाम ।

६ ऋजु के गभ से उत्पन्न वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम ।

[स० मित्रम्] ७ सदैव हिन चाहने वाला, सुख दुःख में काम आने वाला व्यक्ति । सुहृद, हितैषी, शुभेच्छु ।

८ प्रेमी प्रियतम

९ सखा, दोस्त, यार ।

उ०—१ आत मित्र जुग जुग मला नीत प्रसिद्ध निराट । जुगळ मुजा वर जाणिया, प्रपणा जुगळ कपाट ।—वा दा

पर्या०—नेहवाळ नेही, प्राण, प्राणइस्ट, प्रीतम, प्रेमीगुण, मन-मेळण,



मनहित, यष्ट, वलभ, वलमतन, सगतवळ सघोच, सखा, सज्जन,  
सनिगध, सवय, सहकारी, सहकतबास, सहचर, सहायक, सुखदा,  
सुवर्ण, सुहृद, सैण, सोहारद, हारद, हेतू ।

१० इवेत, सफेद, \* (डि को)

रू० भे०—मित, मितर, मित्र, मित्री, मित, मित्त, मित्री, मित्र, मित्रू,  
मीत, मीत्र, ।

भल्पा०—मत्तरोळियो, मत्तरोळियो, मितरोळियो, मितरु, मितरोळियो ।  
मीतो,

मह० मितरोळ ।

मित्रकवि—स० पु० यो० [स०] श्रीरामचंद्र भगवान (नां मा)

मित्रघात—स० स्त्री० यो० [स०] १ मित्रहत्यारा २ मित्र के साथ  
किया जाने वाला धोखा ।

मित्रघातक—वि० [स०] १ मित्रकी हत्या करने वाला । २ मित्रके साथ  
धोखा करने वाला ।

मित्रता, मित्रताई—स० स्त्री० [स० मित्रता] मित्र होने की अवस्था,  
धर्म या भाव ।

उ०—१ अर्थानं तं मित्रता विचित्रता विचित्र की । महान मित्र  
मित्रता पवित्र तं पवित्र की ।—ऊ. का

स०—२ ग्रहाराज साखी नदी बहाला गाई । तरै राम सुग्रीव री  
मित्रताई ।—सू प्र

रू० भे०—मितरता, मितरता

मित्रवाम—स० पु० [स०] १ कृष्ण के एक पुत्र का नाम

२ मनु के एक पुत्र का नाम

मित्रविदा—स० स्त्री०—श्री कृष्ण की एक पत्नी का नाम ।

मित्रसजोग—स० पु० [स० मित्रमयोग] सुख (डि को) \*

मित्रसप्तमी मित्रसातम—स० पु० [मित्रसप्तमी] मार्गशीर्ष व माघ शुक्ला सप्तमी

मित्रसेन—स० पु० [स०] १ बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम ।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

मित्रा—स० स्त्री० [स०] शत्रुघ्न की माता सुमित्रा का नाम

मित्राई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

स०—जेहूनी हो बादल केरी छाहड़ी जो, जेहूनी मित्राई भेख धारी  
नी ।—वि कु

मित्री—१ देखो 'मित्र'

२ देखो 'मत्री' (रू भे)

मित्र, मित्रू—देखो 'मित्र' (रू भे) (प्र मा)

मिथ—स० पु० [स० मिथ] १ सगम करना, सम्मिलित करना ।

२ घायल करना प्रहार करना ।

३ पहचानना, समझना ।

४ झगडा करना, लडाई करना ।

५ देखो 'मिथ्या' (रू भे) (ह ना. मा)

मिथन—देखो 'मिथुन' (रू भे) (प्र मा, ना मा)

मिथ्या—देखो 'मिथ्या' (रू भे)

मिथला—देखो 'मिथिला' (रू. भे)

उ०—मिथला महिपतीजी अन्ननी, कीध जिग धारभ । तेहे  
समगतीजी लिख, फुरमाण बाहु-प्रनम ।—रू

मिथलापतजा—स० स्त्री० [स० मिथिलापतिजा] मिथिला देश के राजा  
की राजकुमारी, सीता, जानकी ।—(डि को)

मिथलापुरी—देखो 'मिथिलापुरी' (रू भे)

मिथलेस, मिथलेस—स० पु० [मिथिला-ईश] मिथिला का स्वामी,  
राजा जनक ।

स०—१ मिथलेस कुचरी सीता सुतन, कवि एती ओपमा कहत ।

स०—२ मिथलेस रै ज्याग आए समीप । दुवा भूप आए मिले सात  
दीपम् ।—सू प्र

मिथलेसर—देखो 'मिथिलेसर' (रू भे)

मिथ्या—देखो 'मिथ्या' (रू भे) (ह ना. मा)

मिथि—स० पु० [स०] विदेह देश के एक राजा का नाम ।

वि० वि०—निमि राजा के मृत्यु देह का मथन करने पर इनका  
उत्पन्न होना माना जाता है ।

मिथिया—देखो 'मिथ्या' (रू भे)

मिथियाचार—देखो 'मिथ्याचार' (रू भे)

मिथिला—स० स्त्री [स० मिथिला] १ वर्तमान तिरहुत का प्राचीन  
नाम ।

२ उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी का नाम, जनकपुरी ।

मिथिलापुरी—स० स्त्री०—मिथिला ।

रू भे—मिथलापुरी ।

मिथिलेस, मिथिलेसर—स० पु० [मिथिलेश, मिथिलेश्वर] निमि के पुत्र  
राजा जनक ।

उ०—सहेल्यां हे आबो मोरियो, मोरयो मोरयो हे मिथिलेसर  
द्वार ।—गी रा

रू० भे०—मिथलेम, मिथलेसर

मिथुन—स० पु० [स०] १ बारह राशियों में तीसरी राशि का नाम ।

२ ज्योतिष में तीसरा लग्न ।

स०—कहि त्रदचक भांण बुध बुध प्रकास । तन लगन मिथुन सुभ  
धनतवास ।—सू प्र

१ एक साथ उत्पन्न दो बच्चे ।

४ जोडा, जुट युग्म ।

उ०—देखी नई पखी मिथुन, हियडई हारी जाय । बली बिलोकइ  
धनराई, हरण हसतां घाय ।—मा का प्र

५ समीप, मिथुन ।

उ०—मारगि खर मिथुन करइ, जिमणां जाइ हरण । सोहमी  
सघव मिलइ बहू, बाहु पहिरि आभरण ।—मा का प्र

६ सगम, समागम ।

मिथुनचर—स पु० [स०] चक्रवाक, पक्षी, चकवा

मिथ्या—वि० [स०] १ जो अस्तित्व में न हो परन्तु फिर भी जिसका  
प्रज्ञान वश बोध होता है ।



उ०—मिथ्या कहू तो कही न जावै, मत्य नहीं ठहराणी । ग्यान विचार जग्या उर अदर, जिण कुछ है जाणी ।

—श्री सुखरामजी महाराज

२ अमत्य, झूठ ।

उ०—मिथ्या कू मिथ्या बताया, मिथ्या साच मे साच मिळाय ।

—श्री सुखरामजी महाराज

१ कृत्रिम, बनावटी ।

४ निगधार ।

५ कपटपूर्ण ।

६ नीति या नियम के विरुद्ध ।

र० भे०—मिथ, मिथ्या, मिथ्या, मिथिया ।

मिथ्याचार—स० पु० [स०] १ ऐमा व्यवहार या आचरण जिसमें सत्यता न हो, कपटपूर्ण आचरण ।

२ उक्त प्रकार का आचरण या व्यवहार करने वाला ।

र० भे०—मिथियाचार

मिथ्याजोग—स० पु० [म० मिथ्यायोग] वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो ।

मिथ्यात—देखो मिथ्यात्व (रू भे)

उ०—१ मिथ्यात तउ मानइ नहीं मूल, बलि विकथान करइ बातूल ।—म कु

उ०—२ मिथ्यात नी मति दूर निवारी, माची सदरह मन घारी ।—स कु

उ०—३ दोठो सुपनो आठमो, आगियानो चमत्कारो रे । अल्प उद्योत जिन धरम, बहुत मिथ्यात अधारी रे ।—जयवांगी

मिथ्याति, मिथ्याती—वि०—देखो 'मिथ्यात्वी' (रू भे)

उ०—१ एक गाम में स्वामीजी उत्तरधा । अमरमिहजी रा दो साध ईसरदासजी, कोजीरामजी आया । ऊँच उत्तरधा । तिहा स्वामीजी जाय कमा प्रदन पूछ्यो । अणुअणु आणुन किणही भूखा मरता ने मूना दिया तिण में काइ हुवो ? जद उवें बोल्या इमो प्रमन मिथ्याती हुवें मो पूछें । जद स्वामीजी बोल्या पूछणवाला तो पूछ नीवो । पिण कहिण वाला कहा मिथ्याती हुवें तो मत कहो ।

—श्रुद्र

उ०—२ एम अनादि तणो, मिथ्याती जीव एकत । वनस्मपति माहि तिहो, रहियो काल अनत ।—घ व ग्र

मिथ्यातो—देखो 'मिथ्याती' (रू भे)

उ०—बुरी थी मूछू समकित जै घरइ, मानइ नहि य मिथ्याती जी । साहमी मू घरणइ बइमठ नहीं नहि राग द्वेम नी बातो जी ।

—स० कु०

मिथ्यात्व—स० पु० [म० मिथ्यात्व प्रा० मिच्छत्त] जो बात जीमी हो उगे बेगान माना या विपरीत मानना मिथ्यात्व कहलाना है । मतान्तर मे कुदेव, कुधर्म और कुशास्त्र पर श्रद्धा (विश्वास) करना भी मिथ्यात्व कहलाता है ।—जैन

उ०—१ हिव मिथ्यात्व बमीयउ, मन उपसमियो अति घणु । दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण घुणु ।—वि कु

उ०—२ भागला नै समझावा द्रस्टात करडादै, जब किणही स्वामीजी नै कहाँ आप द्रस्टात करडा देवो । जद स्वामीजी कहाँ रोग तो गम्भीर रो उठयो अनै कहै म्हारै खूजालो । पिण खूजातया साता न हुवो । हलवाणी रा डाम दिया साता हुवै । ज्यू रोग तो मिथ्यात्व रूप करडो । ते द्रस्टात सृ हटै ।—भिद्र  
वि० वि०—ये दस प्रकार के होते हैं । उनके नाम निम्नलिखित हैं ।

१ अधर्म को धर्म समझना ।

२ वास्तविक धर्म को अधर्म समझना ।

३. ससार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग समझना ।

४ मोक्ष के मार्ग को ससार का मार्ग समझना ।

५ अजीव को जीव समझना ।

६ जीव को अजीव समझना ।

७ कुसाधु को सुसाधु समझना ।

८ सुसाधु को कुसाधु समझना ।

९ जो व्यक्ति राग द्वेष रूप समार से मुक्त नहीं हुआ है उसे मुक्त समझना ।

१० जो महापुरुष संसार मे मुक्त हो चुका है, उसे समार से लिप्त समझना ।

रू भे—मिथ्यात

मिथ्यात्वी—वि० [म० मिथ्यात्विन्, प्रा० मिच्छत्ति] मत्य व धर्म पर विश्वास नहीं करने वाला, परमार्थ पर अश्रद्धालु ।

उ०—रुघनाथजी स्वामी नें पूछ्यो विजयसिंहजी पडहो फेरायो, तालाव कू वा पर गलना नखाया । दीवां पर ढाकणा दिराया, बूढा मा वाप री चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों मे राजाजी नें काई हुवो । जद स्वामी बोल्या राजाजी ममद्रस्टी है के मिथ्यात्वी ? इम पूछ्या जाव देवा अममर्थ थया ।—भिद्र

मिथ्यापुरस—स० पु० [म० मिथ्यापुरुष] छया पुरुष

मिथ्यामत्—स० पु०—भूठा मत, पावण्ड, नास्तिकमत ।

मिथ्यामति, मिथ्यामती—वि० [स० मिथ्यामति] १ दुष्ट बुद्धि, दुर्मति

उ०—१ मिथ्यामति टलिउ दिन मुक्त वालियउ है जइ घणई ।

—वि कु

उ०—२ परदेसी प्रतिबोधीमउ, मिथ्यामति अग्यानी जी ।—स कु

२ नास्तिक

स० पु०—बोखा, छल, कपट ।

मिथ्यावाद—स० पु० [स०] अमत्य बोलना, झूठ बोलना ।

मिथ्यावादी—वि० [स०] अमत्यवादी, झूठा

मिथिलोकेश—स० पु० यो० [म० मध्यपलोकेश] राजा, नृप (ह नां मा)

मिनक—१ देखो 'मनुष्य' (रू भे)

उ०—जटा कनफटा जोगटा खाफी पर घन खावणा, मरुघर में कोडा

मिनक, करसा एक कमावणा ।—ऊ का

२ देखो 'मिनख' (रु भे)

मिनकचारी—देखो 'मिनखचारी' (रु भे)

मिनकपण मिनकपण, मिनकपणो—देखो 'मिनखपण' (रु भे)

मिनकादाख—देखो 'मुनक्का' (रु भे)

मिनकियो—स० पु०—देखो 'मिनियो' (अल्पा, रु भे)

२ देखो 'मनुष्य' (अल्पा, रु भे)

मिनकी—देखो 'मिन्नी' (अल्पा, रु भे.)

उ०—झपटी नहीं आख भवकाई, लेगी नह लपकाईन । लख

लाएत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नै ।—ऊ का

मिनको—देखो 'मिन्नी' (अल्पा, रु भे)

उ०—जावो राखतां थका ई म्हाटो मिनकी तो नित जावणिया

चाट जाव ।—फुलवाडी (स्त्री० मिनकी)

मिनख—१ देखो 'मनुष्य' (रु भे)

उ०—आपो प हुता सो तू आप, विसभर भूत सरव्व बियाप ।

सबै कुछ जागां बेठी साह, मिनखां देवां नागा मांह ।—ह र.

२ देखो 'मिनख'

मिनख—स० स्त्री० [स० मनुष्य] १ स्त्री, औरत

२ परनी

१ जनता, प्रजा

स० पु०—४ पति, खाविद ।

५ देखो 'मनुष्य' (रु भे)

उ०—१ नाव सिरै नह नीर मे, निबळा नावडियाह । राजस

नह साबत रहे, मिनखां मावडियाह ।—बा दा

उ०—२ मिनख री भा गुलामी तो हवा और उजास मे ही विस

घोळ दे ।—फुलवाडी

रु० भे०—'मिनख'

मिनखजून सं० पु० [स० मनुष्य+योनि] मनुष्य योनि, मनुष्य जन्म ।

उ०—सब सू हस हस बोल, पर दुख मे साथवणो । मिनख जून

अनमोल, च्यार दिनां री चादणी—अज्ञात

रु० भे०—मिनखाजून ।

मिनखपण, मिनखपण, मिनखपणो—स० पु० [स० मनुष्यत्व] मनुष्यता

इन्सानियत ।

उ०—मानखो पैसा सू घणो मूँघो गिणोजतो । उण वखत तक

मिनखपणा री साफ काळ नी पडियो हो । इण वास्ते काम पळ्यां

मिनख मिनख री काम घावतो ।—रातवासो

रु० भे०—मिनकपण, मिनकपण, मिनकपणो, मिनखापण,

मिनखापण, मिनखापणो,

मिनखमार—वि० [स० मनुष्य+मृ] मनुष्य-हत्या करने वाला, मनुष्य

को मारने वाला ।

उ०—वो खाह जोखतो हो । उणनै जायर क्हाओ—मिनखमार

किराइ, थारो देवाळो निकळें, थारो घर भाग ।—फुलवाडी

मिनखामनमोहणी—स० स्त्री० [स० मनुष्य+मन+मोहिनी] पृथ्वी,

जमीन । (ह नां मा)

मिनखा—स० स्त्री० [स० मनिपा] बुद्धि, प्रबल । (अ मा.)

मिनखाचार—स० पु० [स० मनुष्य+आचार] मनुष्य के साथ व्यवहार

करने के गुण, मनुष्यत्व, मनुष्यपन, इन्सानियत ।

रु० भे०—मिनकचार, मिनकचारी, मिनखीचार, मिनखीचारी ।

मिनखाजून—देखो 'मिनखजून' (रु भे)

मिनखादाख—देखो 'मुनक्का' (रु भे)

मिनखापण, मिनखापण, मिनखापणो—देखो 'मिनखपण' (रु भे)

उ०—१ बोलो, काई इसी जून पूरी करण-रो नांव ई 'जीवण'

है ? इयेंनै मिनखापणो कंवू कन डाढापणो ?—वरसगांठ

मिनखी—देखो 'मिन्नी' (अल्पा रु भे)

उ०—मावडियो धन माझळी, सो नह जाय सिकार । बोळा मिनखी

सू डरें, मूसा ज्यूं मुरदार ।—बा दा

मिनखीचार, मिनखीचारी—देखो 'मिनखाचार' (रु भे.)

उ०—१ म्है कगत मिनख हू अर मिनखीचारी ई म्हारो घरम अर

भगवान है ।—फुलवाडी

उ०—२ तपसो क्हाओ पूरी पतियारी अर विस्वास व्हेतां थका ई

म्है थारी सावळ परख करणी चावतो हो । सोना में खोट धै सकें

पण थारा मिनखीचारा में कीं कसर कोनी ।—फुलवाडी

मिनखेडी—वि० [स्त्री० मिनखेडी] मनुष्यो के पास रहने का आदि ।

(पशु, पक्षी)

मिनडी—देखो 'मिन्नी' (अल्पा., रु भे)

उ०—१ सेठ ई मनाग्यांना सोच लियो के लारो छूटणो दोरो है ।

आ मिनडी तो जबरौ आटो साजियो ।—फुलवाडी

उ०—२ सिरिया दे घाया, करो सहाया । मिनडी जाया, मंभ

घाया ।—भगतमाल

मिनडी—१ देखो 'मिन्नी' (अल्पा रु भे.)

२ देखो 'मन' (अल्पा, रु भे)

मिनट—पु० [अ०] समय गणना में एक घंटे का साठवां भाग, साठ

सेकंड का समय ।

उ०—मूळी रो हियो फूटण लाग्यो, उभळग्यो, होळ उपडग्यो

अर चित्त भरम हुयग्यो । मन मिनट भर ही भर नहीं । जो घड़ी

पळ हीज जमें नहीं ।—दसदोख

रु० भे०—मिट, मिलट, मिल्ट ।

मिनमिन—स० पु० [अनु०] बकरी के बोलने जैसी आवाज, अस्पष्ट बर्दबी

हुई आवाज ।

उ०—बोकरी भिडकने क्हाओ—उमो बळ, पूछू जित्ती बात ई

बता, घणा मिनमिन नी करणा ।—फुलवाडी

मिनमिनाणी, मिनमिनाबी—क्रि० स० [अनु०] १ धीमे-धीमे दबे हुए स्वर

में कुछ कहना ।

२ बहुत धीरे-धीरे काम करना ।

मिनमिनो-वि० [अनु०] १ मिनमिन करने वाला, धीमे दवे हुए अस्फुट स्वर में कुछ कहने वाला ।

२ छोटी-छोटी बात पर चिढ़ने वाला ।

३ धीरे-धीरे काम करने वाला, सुस्त ।

मिनि—१ देखो 'मन' (अल्पा, रु भे.)

उ०—१ तो रचराया राणी सकति सप्राणी भगतां भांणी मिनि भाणी ।—पी प्र

उ०—२ मिनि ब्रह्मा मोरी फतै फरसरी रंण मुखी तुर रतरी ।

—पी प्र.

२ देखो 'मिनी' (रु भे)

मिनियो—विल्ली का बच्चा ।

उ०—मिनिया मजारीह, अगन प्रजाळी ऊवरथा । वरती मो वारीह, सुणे क बहरो सावरा ।—रामनाथ कवियो

मिनिस्टर-स० पु० [अ०] मंत्री, वजीर ।

मिनी—देखो 'मिनी' (रु भे)

मिनीघाडर—देखो 'मणिघाडर' (रु भे)

उ०—सो-सो रा मिनीघाडर गगावदरीजी रै पडा नै लगा दिया ।

—दमदोल

मिनी—१ देखो 'महीनो' (रु भे)

उ०—जद गोह कह्यो-चूनी म्हारी रायरगीली, छठै मिनि सिलगी ।

—फुलवाड़ी

२ देखो 'मिनी' (रु भे)

मिनि-स० स्त्री० [अ०] विनती, प्रार्थना, दुष्मा ।

रु भे—मीनति,

मिनी-स० स्त्री०—१ बिल्ली, मार्जार ।

उ०—बेटी रा बापां थोड़ी घणो तो विचार करी कै बापडा ऊदरा तो घान पर फपडा रो थोड़ी घणो विगाड करै, पण ये तो वाने मिनी रै हायां जिया मोत मराय न्हांको हो ।—फुलवाड़ी

२ घीया आदि के छोटे टुकड़े करने का उपकरण विशेष ।

रु० भे०—मिनि, मिनी, मीनी,

अल्पा०—मिनकी, मिनली, मिनडी

मिनी-स० पु०—बड़ा बिल्ला, बिलाव ।

महा०—मीनडी,

मिमत-वि०—देखो मर्मत

उ०—माफे सुपना पाइया, घण जोवण मिमंत । जाणू डोलै जागयो, केमर भोने कत ।—हो मा

मिमजर, मिमभर-सं० स्त्री०—वृत्त, नीम आदि वृक्षों पर फल लगने पूर्व भाने वाला वीर, मजरी ।

उ०—मेघ मरोहें डाल, पवन आंधी झुकझोले । दावी देवें दाग, वर गिरमी मिस घोले । अड उपकारी मरद, दटे ना दुमम्मा रें डर । सिर पर पीछो मुकुट, खाड कण मुक्ता मिमभर ।—दस-देव

रु० भे०—मीजर, मीमजर ।

मिमता—देखो 'ममता' (रु भे)

उ०—मिमता माया मोह मन, ससा सोग सरीर । हरिया बब संतो

इता, हरि सुख लहै न सीर ।—सीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ हरिया सुन वित बोह भया, मिमता भजू न प्रभाव ।

कीड़ा होसी करम का, चुडिख चुडिख तन खाय ।

—सीहरिरामदासजी महाराज

मिथ-वि०—१ मित, परिमित (जैन)

२ स्वल्प (जैन)

३ देखो 'मिग' (रु भे)

मिया-स० पु० [फा०] १ पति, खांविद ।

२ स्वामी, मालिक

३ प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति (मुसलमान)

४ मुसलमान, यवन ।

उ०—जगचख भाळत कोतुक जुद्ध, माळा कज संकर ठाळन मुद्द ।

विचे बहु दूर किया गळ बाह, मिया रजपूत हिचे रण माह ।

—मे. म.

५ उत्तर भारत के पहाड़ी राजपूतों की उपाधि

रु० भे०—मीयो, मीया, मीयो

मियाघोडी-स० स्त्री० यो०—छोटे बच्चों का एक खेल विशेष

वि० वि०—खेल में हारने वाले घोड़ी बनते हैं और जीतने वाले उनकी पीठ पर बैठते हैं ।

मियान-देखो 'म्यान' (रु. भे)

मियानी-देखो 'म्यानी' (रु भे)

मियानी-देखो 'म्यानी' (रु भे)

मियामिट्ठ-वि०—१ अगने गुह अपनी प्रशमा करने वाला

२ मधुर भाषी, मीठा बोलने वाला ।

मियू-देखो 'महीन' (रु. भे)

मिगुल-देखो 'मयूग' (रु भे)

मिये-देखो 'मांय' (रु भे)

मियो-देखो 'महीन' (रु भे)

मिरक' मिरख-सं० स्त्री०—काटे का सूक्ष्मतम भाग, या खड ।

मिरखावाद-१ देखो 'मिरसावाद' (रु भे)

उ०—हिमा कीधी रे जीवनी, बोल्या मिरखावाद । चोरी कीधी रे पर तणी, मैथुन मे परमाद ।—जयवाणी

मिरग-देखो 'मिग' (रु भे.)

उ०—१ राम बिना ब्रज ऐंडी सूनी लागै, डार सूनी ज्यां एक मिरग विन ।—लो गी

उ०—२ मिरग न बाज्यो बायरी अदरा न बूठी मेह । जीवन न जायो बंटडो, तीनू ही हारी देह ।—अज्ञात

उ०—२ नणद पूछयो के भांख रो डोळो बारै कीकर भायो । पैला वो मिरग नै ई लाजा मारै जैड़ी भाख्या ही।—फुलवाड़ी

मिरगचडो—स० पु०—वर्षा ऋतु मे पाया जानै वाला एक कीट विशेष ।  
 मिरगछाळा—देखो 'मिरगछाळा' (रु भे )  
 मिरगजळ—देखो 'मिरगजळ' (रु भे )  
 उ०—यह सब माया मिरगजळ, झूठा झिलमिल होइ । दादू  
 चिलका देखकर, सत कर जाणा सोइ ।—दादूवाणी  
 मिरगत्रसणा—देखो 'मिरगत्रसणा' (रु भे ),  
 मिरगघर—देखो 'मिरगघर' (रु भे. )  
 मिरगनाथ—देखो 'मिरगनाथ' (रु भे. )  
 मिरगनैणी—देखो 'मिरगनैणी' (रु.भे )  
 मिरगपति—देखो 'मिरगपति' (रु भे )  
 मिरगनाम—देखो 'मिरगनाम' (रु भे )  
 मिरगमदा—देखो 'मिरगमदा' (रु भे )  
 मिरगमद—देखो 'मिरगमद' (रु भे )  
 मिरगमित्र—देखो 'मिरगमित्र' (रु.भे )  
 मिरगया—देखो 'मिरगया' (रु भे )  
 मिरगराज—देखो 'मिरगराज' (रु भे )  
 मिरगलडो, मिरगलो—देखो 'मिरग' (अल्पा., रु भे )  
 उ०—१ काया कठिन कमान है, खाँचै बिरळा कोइ । मारै पचा  
 मिरगला, दादू सूर सोइ ।—दादूवाणी  
 उ०—२ बाबो धकै कैवण लागो—जद भगवान राम ई सोना रा  
 मिरगला रै छळावा में आय उणरी लारी करण री लालसा नी ठाम  
 सक्या, पछें उण मोटीवढ कुमार रो काई ठरको जको माया रा  
 छळावा मे नी फदै ।—फुलवाडी  
 उ०—३ सेल करण सायवो गयो हुय लीली असवार, कै जगळ  
 की मिरगल्या म्हारो लियो छै स्याम बिलमाय, दासी, कण  
 विलमायो ए, रावत नही आयो अब तक बाणो ।—लो गो  
 (स्त्री० मिरगलडी, मिरगली)  
 मिरगवीथी—देखो 'मिरगवीथी' (रु भे )  
 मिरगसिरा—देखो 'मिरगसिरा' (रु भे )  
 मिरगांक—देखो 'मिरगांक' (रु भे )  
 मिरगा—देखो 'मिरग' (रु भे )  
 उ०—मिरगा वाव न वाजिया, रोहण तपी न जेठ । कथा म बाधै  
 झूपडो, रहसा बडला हेठ ।—अज्ञात  
 मिरगानयन, मिरगानैणी, मिरगानेनी—देखो 'मिरगनैणी' (रु भे )  
 उ०—१ नारी मिरगानयन, रग रेखा रस राती । वदै सुकीमळ  
 वयण, महा भर जीवन माती ।—वि कु  
 उ०—२ थानैं तो प्यारी पिया चाकरी जी डोला म्हानैं तो लागी  
 प्यारा आप, म्हानैं तो लागी प्यारा आप । अब घर आयजा मिरगा-  
 नैणीरा बालमा हो कै रै ।—लो गो  
 उ०—३ डोलाजी रै' सासरै । कै रै' म्हारी मिरगानैणी के पी'र जी  
 डोला ।—रा लो गो

मिरगाळो—देखो 'मिरग' (अल्पा., रु भे )

(स्त्री मिरगाळी)

मिरगी—देखो 'मिरगी' (रु भे )

उ०—भीगी री गळाई उणरी राटों नाक रातो लाल व्हेगो मिरगी  
 रो रोगी थर थर धूजै भर तडाचा बाबै ज्यू वो धूजण लागी ।

—फुलवाडी

मिरगेंद्र—देखो 'मिरगेंद्र' (रु भे )

मिरगेस—देखो 'मिरगेस' (रु भे )

मिरगी—देखो 'मिरग' (अल्पा., रु भे )

उ०—१ कठेयन लाव्यो जुलमी मिरगलो । दूंच्या दूंच्या रांण  
 खमाणु मिररो विना मिरगी एकलडी । मिरगी छोड गयो वन खड  
 माय मिरगी नै एकलडी ।—लो.गी

उ०—२ ये तो धनु सर धारो मिरगी मारो रघुवर रसिया हिरण हेरो जो  
 —गी.रा

(स्त्री० मिरगी)

मिरघ—देखो 'मिरग' (रु.भे )

उ०—१ जन हरिया मन मिरघ ज्यू, वरज्यो केतो वार । काया  
 बाडी बीच में, करि करि जाय विगार ।

—स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ मिरघें मरम न जाणियो, मुक्ति कस्तुरी नाम । हरिया  
 सब घट रांम है, गुरु विन गयै अलाम ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ वद वाहा देतो 'मुकनावत' अँ वे वस्त्रा न खेनै आळ ।  
 चाभरियाळ डाव मुख चीना, मिरघण डाव न लाघै माळ ।

—रामसिंह भाटी रो गीत

(स्त्री० मिरघण, मिरघी)

मिरघमाळ—स० स्त्री०—१ एक प्रकार की भाग ।

उ०—इसँ मे भागेसुर मगाय जँ छै । सू किण भात छै ? केसररी  
 क्यारी दोलळी बासग-माथारी । थोहररा बिहारी, भाखररा,  
 खुडारी, भूरै मोररी, काळें पांनरी, आवूरा बिहडारी, भमरमार  
 मिरघमाळ लरियाळ चिडियाळ चोटडियाळ । एक पान अडगरिया  
 पान एक पान अहमदावाद पान-पानरी रस लीजै छै तिरण भाग  
 सारु मसाळा मगायजै छै ।—रा सा स  
 २ मृगो की पक्ति ।

मिरघली—देखो 'मिरग' (अल्पा., रु भे )

उ०—खडो पुकारें मिरघली, या वन माहि अनेक । और पारधी  
 चुण लिया । आय रह्या हम एक ।

—स्रीहरिरामदासजी महाराज

(स्त्री० मिरघली)

मिरघाणू—देखो 'मिरग' (मह., रु भे )

उ०—वीटै मिरघाणू अति विघनाणू, वळ तूटाणू वीहाणू । मिमरै  
 तिह टाणू भील डसाणू म्वान हटाणू छुडवाणू ।—भगतमाळ

मिरघानैणी—१ देखो 'मिरघानैणी' (रू भे)

उ०—जावा दो छिगगारी नार जावा दो ना जी थाने प्राय पुजावां गगगीर । म्हागे मिरघानैणी जावा दो ना ए । ह जा माळ यांही रेवो जी ।—लो गी

मिरघी—देखो 'मिरघी' (रू भे)

उ०—सूनी देव महज, देय दे फामी देखी । मिरघी लरुवे माहि, उभय अनर अवरेखी । जानू डंक जोय, विगत दुख भेद दतावी । आघामीसी आधि, जुवर कुण मूळ जतावी । ब्राह्मण रु गाय हित्या विखे नीच ऊच निरखी नमण । तिम अमल तमासू तोलि यो कुण घटती वटती कमण ।—ऊ का

२ देखो 'मिरग' (स्त्री)

मिरट—देखो 'मिरटो' (मह, रू भे)

मिरडिघी—देखो 'मिरडो' (मल्ला, रू भे)

उ०—मूल मोलता मिनख, मिरडिया घणा घुरावे । हल वावतडी वेर, फोगडा बीज तुपावे । मीठा हूवे मतीर, घूब खाटोडा फोगां । काचर काकडिया, टीहसा मार्गा जोगां ।—दसदेव

मिरडो—स० पु०—काटे हुए भाँडो और वृक्षों का ढर ।

उ०—निकलें मिरटां लाग, गठेली सूकी साकळ । घर कोटां रे ध्येय, पडी लद लकड्यां बाखळ । टेका कडिया बाघ, दोषता घर पर आखी । फोगां हरी फमल, गरीबा गायक लाखी ।—दसदेव

मिरच—स० स्त्री० [ स० मरीच, मरिच मरीच ] १ एक प्रमिद्ध पौध जिसके लंबी फली लगती है जो प्रारंभ में हरी और पकने पर लाल हो जाती है ।

उ०—वगक पुत्र कागद लिखै, कानामात न देत । हींग मिरच जीगे निखै, हग मर जर कर देत ।—अज्ञात

२ उक्त पौध की फली ।

वि० वि०—लालमिर्च का क्षुप मकोय के क्षुप के समान होता है । फूल इसके मफेद रंग के होते हैं । फल फलीनुमा अपक्व अवस्था में हरा और पकने पर लाल हो जाता है । यह मसालों के साथ शाक में विशेष रूप से डाली जाती है ।

मुद्रा०—१ मिरचां लागणी—किमी को अप्रिय और तीक्ष्ण बातें सुनने में बहुत दुःख लगना । २ मिरचा लागणी—किमी को अप्रिय और तीक्ष्ण बातें सुनाना । ३ एक प्रमिद्ध लता का गोल आकार का दाना विशेष जो स्वाद में तीखा होता है । इसे काली मिर्च भी कहते हैं । (अ मा)

उ०—उर पनमाह उचाट अत, वाट अटकी देखा । मिरच हुतामण होमियां, मत्र कनेव विसेखा ।—रा रु

वि० वि०—मिच लता दक्षिण प्रदेश के त्रिवाङ्गर, मलावार आदि की खादर उपजाऊ भूमि में अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है, वृद्ध के रहने वाले इस लता के छोटे छोटे टुकड़े कपड़े बड़े बड़े वृक्षों की जड़ों में दगा देने हैं । तीन वर्ष में लता पर फल आता

है । फल पक कर लाल हो जाते हैं परन्तु सूख जाने पर काला रंग हो जात है । शाक इत्यादि में काली मिरच मसाला हो गई है । पर्याय—उखणा, बौलका, कसनाफडा, तिखना, तीस, वेळज, सिधकाम, सुवकर ।

३ ताम के पत्तों में खेला जाने वाला एक खेल ।

रू० भे०—मरच, मरिच, मिरचि, मिरची, मिरच्च ।

मिरचाई—स० स्त्री०—मुनक्का दाख ।

मिरचि—देखो 'मिरच' (रू भे) (प्रमरत)

मिरचियाकद—स० पु०—एक प्रकार का कद जो सर्प काटे जाने वाले व्यक्ति को घिस कर पिचाया जाता है ।

मिरचियागघ—स० पु०—रूमा नामक घाम ।

मिरची—१ छोटे वृक्षों का एक प्रकार का खेल (शेखावाटी)

२ देखो 'मिरच' (रू भे)

मिरची—देखो 'मिरजी' (रू भे)

मिरच्च—देखो 'मिरच' (रू भे)

उ०—कोप मिरच्चां होम कर, घर फिर मेळ सलाह । दूद मिटावण अखियो, 'मोनग' हूता साह ।—रा रु

मिरजई—स० पु० [फा० मिराज] एक प्रकार की वस्त्राव कुरती ।

मिरजो—स० पु० [फा० मीरजा] १ मीर या अमीर का लहका ।

२ आह्वान ।

३ तैमूर वंश के शाहजादों और मुगलों की एक उपाधि ।

उ०—१ पाली सुगु मिरजें पुकारां, तुग कसे चढियो तोखारां ।—रा रु

उ०—२ आगे भड 'अजमाल' रा बाहर हेरे वाट । अतरै मिरजो आवियो, गह छावियो निराट ।—रा. रु.

वि० वि०—यहाँ मिरजा शब्द नूरमली मुगल के लिए प्रयोग हुआ है ।

उ०—३ मिरजो नूरमली वळ मंडे, आयो भाण सिरै उमडे ।

—रा रु.

उ०—४ मिरजें मुहकम मारियो, कर छळ मिळ प्रकास । वेढक डेरै वजियो, पडिया सुहृड पचास ।—रा रु

४ मुमलमान, यवन ।

उ०—जीण मेरी बाई ए खैरचा खैरचां वद म्या टारहा । तमबा की रुपगी गाढी मेव । जामण की ये जाई, भाठे भाठे पर मिरजा वैठिया ।—लो गी

वि०—कोमल, नाजुक ।

रू० भे०—मिरची

मिरणाळ—देखो 'अरणाळ' (रू भे)

मिरणाळी—देखो 'अरणाळी' (रू भे)

मिरत—देखो 'अत' (रू भे)

मिरतक—देखो 'अतक' (रू भे)

मिरतककरम—देखो 'अतककरम'

मिरतग—देखो 'अतक' (रू भे)

उ०—मन जाणु मिरतग भयो, पाच सती भई लार । हरिया  
अहरन ऊठि के, बोले माह मार ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज  
मिरतगकरम—देखो 'मिरतगकरम' (रू भे )

मिरतजीव—देखो 'मिरतजीव' (रू भे )

मिरतजीवनी—देखो 'मिरतजीवनी' (रू भे )

मिरतस्तान—देखो 'मिरतस्तान' (रू भे )

मिरतस्थान—देखो 'मिरतस्थान' (रू भे )

मिरति—देखो 'मिरति' (रू भे )

उ०—वाणी सुण चहुवाण, आण ऊभो राय अण । सखी हूत नव  
सपत, मागि सुख आदि समजण । आज मिरति मगळी, आज पति-  
वरत समाळी । ऊपत्री जग अस आज, सुज वस उजाळे ।

—रा रू

मिरतिका—देखो 'मिरतिका' (रू भे )

मिरतु—देखो 'मिरतु' (रू भे )

मिरतुलोक—देखो 'मिरतुलोक' (रू भे )

मिरतुजय—देखो 'मिरतुजय' (रू भे )

मिरतु—देखो 'मिरतु' (रू भे )

मिरतुलोक—देखो 'मिरतुलोक' (रू भे )

मिरथा—१ देखो 'मिरथा' (रू भे )

२ देखो 'मिरथा' (रू भे )

मिरदग—देखो 'मिरदग' (रू भे )

उ०—राम तणें रग राची, रांणा में तो सावळियां रग राची रे ।  
ताळ पखावज मिरदग बाजा, साधों आगे नांची रे ।—मीरा

मिरदगी—देखो 'मिरदगी' (रू भे )

मिरदु—देखो 'मिरदु' (रू भे )

मिरदुता—देखो 'मिरदुता' (रू भे )

मिरमरी—देखो 'मिरमरी' (रू भे )

मिरसावाद—स० पु० [स० मृषावाद] १ अमत्य भाषण, अमत्य, झूठ ।

उ०—हिमा कीधी जीव नी, बोल्या मिरसावाद । दोस अदत्तादान  
ना, मेथुन उनमाद ।—स कु

उ०—२ बोल्या मिरसावाद अदत्तादान त्यु । जघन्य एकासण  
जाणिये ए ।—घ व प्र

२ अर्थार्थ भाषण, चापलूसी ।

३ व्यग्य ।

रू० भे०—मिरखावाद, मिरखावाद

मिरा—स० स्त्री० [स०] मदिरा शराब ।

उ०—कीधी दुल्लह कवर, मिरा छकिये अनुमोदन । बहियो भावी  
विखम नरा रहियो रु विनोदन ।—घ भा

मिरिगाखी—देखो 'मिरिगाखी' (रू भे )

उ०—सुममित सुनमित निज वदन सुश्रीहित, पुढरीकाख थिया  
प्रसन । प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन ।

—वेलि

मिरिग—देखो 'मिरिग' (रू भे )

उ०—१ अघ जेम फाळ माडइ मिरिग । सुकुमार सार साहणा  
सिग ।—रा ज सी

उ०—२ मुज्जरळी द्रेठि पाछि मूठि । साम्भइ मिरिग गुण वाण  
सूठि ।—रा ज सी

मिरिच—देखो 'मिरिच' (रू भे )

मिरियो—स० पु०—घी, तेल, दूध आदि के तरल पदार्थ निकालने तथा  
नापने के लिये बना हुआ धातु का एक कटोरी नुमा वरतन जिसको  
पकड़ने के लिए एक लम्बी डंडी नुमा शलाख लगी रहती है तथा  
यह डंडी ऊपर से नुकीली व मुड़ी हुई होती है ।

उ०—औरा नैं तो मां मिरियो ए घीव । मनं मिरियो, मिरियो  
मा तेल को जे ।—लो गी

मिरिहठी—देखो 'मिरिहठी' (रू भे )

मिरी—मिचं

उ०—लामइ खाढ तेल नइ मिरी, करड सालणा लामइ सुरी ।  
अजमा जीरां लामइ बहू, वेसण विरहाळी लइ मूह ।—का दे प्र

मिरीवढ—स० पु०—छोटा खड ।

उ०—सू आगरा ही अमळ री चकी वक्यां छुरघा सू मिरीवढ  
कीजं छे ।—खीची गगेव नीबावत री दो-पहरी

मिलक—देखो 'मिलक' (रू भे )

उ०—न मिळती मिलक जवदळ निडर, पकडो वळ खग पाण री ।  
तौ करा वणें करता तिकी, सराजाम घमसाण री ।—सू प्र

मिळकणी—स० स्त्री०—मुह का फीकापन, स्वादहीनता ।

उ०—भरमल नु आसा रही । महीना च्यार री गरभ हुवो । तंसु  
डील सिथल पडण लागी । नेत्रा री तरें गहळीजण लागी । पगा  
री बीख छीदरी पडण लागी । रोमावळी डील री उभरवी निजर  
आवण लागी । अन भावें नहीं । मुहुडें मिळकणी रहे । खाली  
ओकारी रहे ।—कृवरसी साखला री वारता

मिळणी—स० स्त्री०—१ मिलने भेटने की क्रिया का भाव ।

२ मिलाप, भेंट ।

३ विवाह में कन्या पक्ष के लोगो का वर पक्ष के लोगो से स्वागत  
स्थान (मामेळी) पर वाहु पाश से आलिगन करते हुए मिलाप  
करना ।

४ उक्त अवसर कन्या पक्ष वालो की ओर से वर पक्ष वालों को  
दो जाने वाली भेंट ।

मिळणी, मिळवो—कि० स०—१ प्राणियो, व्यक्तियो आदि के सबध मे  
किसी प्रकार या रूप से, भेटना, साक्षात्कार होना, मिलाप होना ।

उ०—मिळवो मलो असाध की, हरिया भोळें भाय । हरि सु वेमुख  
वैसनी, तासु मिळें वलाय ।—जीहरिरामदासजी महाराज

२ किसी व्यक्ति, पदार्थ या प्राणी का आगे या सामने आना

३ किसी पदार्थ, बात या अवस्था का किसी रूप में प्राप्त होना,  
हस्तगत होना ।



उ०—१ सदा मिळें विल स्याळ रें, वच्छ पुच्छ खुर चाम । मिळें  
गया अगगाज वह, गजरद मोती ग्राम ।—वा दा

उ०—२ ममर तजण मू मोगुणी, दुरग तजण रो दोख । मरद  
दुरग जाता मरें, मिळें जिंका नू मोख ।—वा दा

४ अनुसधान, खोज या छान वीन करने पर किसी पदार्थ, तत्व या  
वान का ज्ञान या परिचय होना ।

५ व्यक्तियों का इस प्रकार से एक दूसरे के आमने सामने होना कि  
परस्पर बातचीत हो सके ।

६ किसी प्रकार का सुखद या अभीष्ट लाभ या मिद्धि प्राप्त होना ।

७ व्यक्तियों का किसी वृद्धेय की सफलता के लिए परस्पर  
समझौता करके किसी दन या गुट में सम्मिलित होना ।

८ अपना पक्ष या दल छोड़कर प्रत्यक्ष या गुप्त रूप से किसी  
दूसरे दल या पक्ष में होना ।

उ०—अरि जाळपर आवियो, मिळिया मळ अणदाद । पखि गुण  
हीन निगस पण, हितू 'अरज्जण' आद ।—रा रु

९ स्पर्श होना, टूटना, अडना ।

उ०—१ जिके मूर दीला जग्द, ऊवडही आरांण । मूछ अणी  
भूहां मिळें, मुहणी राखें माण ।—वा दा

उ०—२ माम वरम कुळ घरम सभारें, आच 'गजेंमी' खडग  
सभारें । ऊफणियो अममान अघारें, मिळिया मूछ अणी भूहारें ।

—गु रु व

उ०—३ मूछा भूहा मिळें, छिळें वीगरम छोळा, वाज अहिमकर  
वाज, डकर हिमकर अग होळां ।—मे म

१० दो या अधिक तत्वों या पदार्थों का अवस्था, गुण रूप आदि के  
विचार में परस्पर अनुसंधान, तुल्य या समान होना ।

उ०—हुई फौज हाजरी, थोका नाग न वरदामें । जाण गजव गाजती,  
मठी काटल चवमामें । वादळ ममत वयड, रमत मादळ घहरावें ।  
इन्द्रधनुस आकार, फील फडा फहरावें । मे' का प्रतच्छ सच्छग  
मिळें, नेरा हय हकळ कळल । विण-प्रभा रूप सावळ खिर्व, कस वम  
'कमरा' कमळ ।—मे म

११ किसी रेखा, बिंदु, सीमा आदि पर दो या कई चीजों का इस  
प्रकार आकर पहुंचना, स्थित होना कि वे एक दूसरे से परस्पर  
लग जाय ।

ज्यू-वीकानेर नें जोधपुर री सीमा नागौर जिला रें उत्तर में मिळें  
है । जयपुर अर जोधपुर री सीमा माभर रें पूरव में मिळें है ।

१२ परस्पर मटना, जुटना ।

उ०—युगली करता चुगन रा, जुग होटडा जुटत । मळ नांखण जाणें  
मिळें, दोय ठीकग दत ।—वा दा

१३ एकत्रित होना, डकट्टा होना ।

उ०—१ दळवळ मू घेरी दियो, प्रवळ हुमाळ पूत । गैलोता  
चोनोउगद, मिळ वीधी मजवून ।—वा दा

उ०—२ मोर भिम्बर ऊवा मिळें, नाचें दुधा निहाल । पिक ठहकें

भरणा पडें हरिण डूगर हाल ।—वा दा

उ०—३ अरकें कोट सहतपुर थाणा, भार सताडें पडें भगाणा ।  
'ऊदा' हरा मकळ मिळ आया, आद जगड' जुव वाद अछाया ।

—रा रु

उ०—४ मारू छळ 'अगजीत' ममेळा, । सोजत मिळिया कटक  
सचेळा ।—रा रु

१४ दो या अधिक तत्वों, पदार्थों आदि का इस प्रकार एक स्थान  
पर या स्थिति में आना, होना या पहुंचना कि उनका अलगाव या  
भेद भाव दूर हो जाय, लगजाना ।

ज्यू—१ सूगडी अर जोजरी दोन नदिया समदडी रें कनै लूणी में  
मिळें । २ विगेवी दळा रो आपस में मिळणी ।

१५ सम्मिलित होना, साथ होना ।

उ०—१ सर्ग केहर राम रें, मिळियो जगें 'भोम' । 'मवळांगी'  
सोवा तणी मार विघूम भीम ।—रा रु

उ०—२ दोन तरफा हत तियां दळ, मिळिया 'सामन' 'राम'  
महावल । आवें धकें सुथाणी ऊठें, पिसणा चमू चढें नह पुठें ।

—रा रु

उ०—३ रुळया खुळया रजपूत विरामण मिळया विटळा, वैम्य  
मिळ गया विळळ, मूद्र कुळ रळगा सिटळा । चोडवाडें चोर, ढग  
चिन डेढम डेढी, जिके नही किण जोग, मित्या घर घर रा मेढी ।  
चापज्यो मती वाग चरण, काप काप रो कीचडी, फावरी देर  
मुख फेर ज्यो, खाप खाप रो खीचडी ।—ऊ का

१६ टक्कर लेना, भिडना ।

उ०—१ वळिया जादम वीरवर, मिळिया सेल उपाड़ । मड  
वळिया साळें तणा, पुळिया पहली राड ।—रा रु

उ०—२ उग समय पाळा होय दो ही बीरा अजमेर मडोवर रा  
सुहागरी लाज रा लगर घसीटता अस्वमेघ अघवर रा अवभय रो  
तिरस्कार करता पेंड सांहीं ही लगाया । जठे दो ही तरफां रा  
किताक मूरवीर आपरें ऊभां मालिका रो मिळियो अनुचित जाणि  
वीच में आया ।—व भा

१७ पदार्थों का एक दूसरे में पड़कर इस प्रकार एकाकार हो जाना  
कि उनको सहज में ही एक दूसरे से पृथक् न किए जा सके,  
घुलना ।

ज्यू—साग में लूण मिळणी, दूध में पाणी मिळणी ।

१८ पदार्थों का परस्पर लाघारण रूप में एक दूसरे में इस प्रकार  
आकर सम्मिलित होना कि उनका स्वतंत्र अस्तित्व घना रहे ।

ज्यू—गेहूँ में चणा या जव मिळणा । वाजरी में मोठ मिळणा ।

१९ कुछ विदिष्ट प्रकार के वाद्यों के सवय में ऐसी स्थिति में आना  
या लाया जाना कि उनमें ठीक तरह से और एक मेल में स्वर  
निकल सकें और साथ के दूसरे वाद्यों के स्वरों के अनुरूप हो सकें ।

वि० वि०—वाजो का अत्रिक उतरा या चढा न रहना बल्कि सम-  
स्थिति में आना या होना ।



ज्यू—पखावज री मितार सू मिळणी तवला री सारणी सू मिळणी ।

२० व्यक्तियों के शरीरों का सम्बद्ध, सलग्न होना या एक दूसरे के सामने होना ।

२१ गाय के बछड़े के साथ स्तन पान करते समय स्तनों में दूध ऊतरना ।

२२ जखम का भर जाना व ठीक हो जाना ।

२३ स्त्री सभोग होना, मैथुन होना ।

२४ सगठित होना ।

मिळणहार, हारी (हारी), मिळणियो—वि० ।

मिळिओडो, मिळियोडो, मिल्योडो—भू०का०कृ० ।

मिळीजणो, मिळीजवो—भाव वा०

मोलणो, मोलवो—रू भे ।

मिळतारू—वि०—१ सब से मेल जोल रखने वाला ।

२ मिलनसार ।

मिळतियाण मिळतोयाण—स०पु०—वह वेल जिनके दूध के दात टूटने के बाद पूरे दात आ गये हो और जवान हो गया हो ।

मिळतो—वि०—१ मेल खाने योग्य ।

२ अवसर के अनुरूप ।

उ०—नाई मिळती मारती कह्यो—लिछमी रा लाडला सेठों माथे विसास नी व्हेला ।—फुलवाडी

क्रि प्र—मारणी

मिळतो—वि० [स्त्री० मिळती] समान, तुल्य, बराबर ।

मिलमची—स०स्त्री०—सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी ।

वि०वि०—यह नदी गुमाई स्थान पर्वत के पूर्व तरफ जिवजिबिया से निकलती है और पहाड़ियों व घाटियों में बहती हुई दोलत घाट मुकाम पर भोटेकाशी नदी से सगम करती है । तिव्वत में टिंगरी मैदान से निकली भोटेकाशी नदी इसमें मिल जाती है फिर इनका नाम सूनकोशी हो जाता है और यह सुनकोशी के नाम से बाराह क्षेत्र घाट पर अरुण और तमोर के सगम से मिल जाती है ।

(बीर विनोद)

मिळवाई—देखो 'मिळई' (रू भे)

मिळवाणो, मिळवावो—देखो मिळायो, मिळायो' (रू भे)

मिळान, मिलान—स०पु०—१ मिलाने की क्रिया या भाव ।

२ दो प्राणियों की परस्पर होने वाली भेट, साक्षात्कार ।

३ दो अथवा अधिक वस्तुओं का एक साथ रखकर तुलनात्मक दृष्टि से जांच करना, मिलाना, या देखना ।

ज्यू—कपडा री मिलाण करणी ।

४ किसी लिखित प्रति लिपि के जांच हेतु असल से मिलान करने की क्रिया ।

५ दो वस्तुओं, बातों या पक्षों के सम्बन्ध में जानकारी हेतु विशेष-

ताम्रो, विभेद एवं गुण दोष पर विचार अथवा विवेचन करना ।

६ राहगीरो या पथिकों के ठहरने का स्थान, पड़ाव या डेरा ।

उ०—१ मोती का आखा किया, क फू चदन पाका पान । अमली समली आरती जाई बघेर दीयो मिलाण ।—बी दे

उ०—२ मडलाप्र निमाहिमी, वीमल व्रप इक वधि । चालुकन उप्पर चढ्यो, सबळ मुच्छ कर सधि । मुररि रहे जे बहु मिळ, चढत भूप चहुवान । तम बीसलसागर तटहि, मडिय प्रथम मिलान ।

—व भा

मिळई—स०स्त्री०—१ तेल कीटा ।

उ०—चोटी मे हडमान जी री मिळई । लिलाड, नाक भर गला रै काजल री टोकियो ।—फुलवाडी

२ देखो 'मळई' (रू भे)

मिळडणो मिळडवो—देखो 'मिळायो, मिळायो' (रू भे)

मिळडणहार, हारी (हारी), मिळडणियो—वि०

मिळडिओडो, मिळडियोडो, मिळडयोडो—भू०का०कृ० ।

मिळडोजणो, मिळडोजवो—कर्म वा० ।

मिळडियोडो—देखो 'मिळायोडो' (रू भे)

। (स्त्री० मिळडियोडी)

मिळायो, मिळायो, मिलाणो, मिलावो—कि०स० [ 'मिलायो' क्रिया का प्रे० रूप ] १ दो या दो से अधिक प्राणियों व्यक्तियों की परस्पर भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाप कराना ।

उ०—गया तीन गढ़ चूरि, नित चौथे घर लाया । बम्हा अपूरव देस, जीव भर मोव मिळायो ।—छोहरिरामदामजी महाराज  
२ व्यक्तियों को इस प्रकार एक-दूसरे के सामने सामने लाना कि परस्पर बात-चीत कर सकें ।

उ०—इण कारण यो ही अवसर अनुमत्त में जाणि उणा न मिळई छळ कीवा एक भी अवसर जीवण न पाव ।—व भा

३ सामने लाना, आगे लाना, प्रकाश में लाना ।

४ किसी प्रकार का सुखद या अभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त कराना, हस्तगत कराना । वाछिन उपलब्ध कराना ।

५ ज्ञान कराना परिचय कराना ।

६ परस्पर ममभौता कराके किसी दल या गुट में सम्मिलित कराना, कराना । पक्ष में करना/कराना ।

७ अपना पक्ष छुड़ा कर प्रत्यक्ष रूप में विपक्ष की ओर करना/कराना ।

८ स्पर्श कराना, झूझाना, झड़ाना ।

९ किसी बिंदु सीमा रेखा आदि पर दो या कई चीजों का लाकर स्थित करना कि वे परस्पर लग जाय, फामला मिटाना ।

ज्यू—भीत छन सू मिळायो, पुळ सू सडक मिळायो ।

१० परस्पर जोड़ना, सटाना ।

११ एकजाई करना, एकत्र कराना, इकट्ठा कराना ।

१२ दो तत्वों, पदार्थों या अस्तित्वों को मिलाकर एक करना, एक

दूदरे मे विलीन करना, एकाकार करना ।

ज्यं—दो नदियाँ रो मिळाणो, दूध में पानी मिळाणो ।

१३ सगटित करना ।

उ०—मचिव भग्गो निज राज्य भलाव, चाल्यो चतुरंग सेन मिलाव ।—वि कु

१४ बिछुड़े हुए का साथ कराना, मिलाना ।

ज्यू—छोरा ने मां बाप सू मिळाव दियो ।

१५ टक्कर लिखाना, मिडाना ।

१६ रामायनिक क्रिया के अनुसार, एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ को डाल कर एकाकार करना, घुलाना ।

ज्यू—माग मे लूण मिळाणो, दूध में शक्कर मिळाणो ।

१७ दो या दो से अधिक पदार्थों का मिश्रण करना, सम्मिलित करना ।

१८ स्त्री समागम के लिये प्रेरित करना, स्त्री-पुरुष का संयोग कराना ।

उ०—इयां करतां-करता ही बकराईद नैहो आयागी जकै माथं हलाली वेगी फाजल कमर कसली अर करणे नै प्रेमिका सू मिळा देणे रो वा ही तारीख घडली ।—दसदोख

१९ वंमनम्य मिटा कर परस्पर समझौता कराना, स्नेह कराना, मेल कराना ।

२० गांठ लगाकर, सी कर या जोड़ कर एक करना ।

२१ गुण या महत्व देखने के लिए एक दूसरे की तुलना करना, गुणायना कराना ।

२२ लिखित अवतरण के शुद्धाशुद्ध की जाँच करना/कराना, मिलान करना/कराना ।

२३ एक दूसरे के साथ रखना, सटाना, मिडाना ।

२४ चिकित्सा द्वारा किसी जखम या घाव को ठीक करना/कराना ।

उ०—मरगा रो मार दुनियाँ मे सब सू तीखी और खारी लागे, पणु दिनां रो मलम यगत लाग्या उणु मार रो घाव ई मिळाव दे ।—फुलवाडी

२५ वेन्द्रित करना/कराना ।

उ०—‘हरीया’ तन मन यचन की, मागी सौंज मिळाव । चौथो गुर की ग्यान मिळ, भगति भरोसी पाय ।

—छो हरिरामदामजी महाराज

२६ वैवाहिक सूत्र में बांधना, मन्वन्व कराना ।

उ०—पूण्य रे चाद अर उगा गी लालीमी सुवावती आवै । गुणां रो मोळ अर फुटराप रो खजानी मो भळकै ! केळू रो काव, जकी घर्गणु गी जाम मृ जोडो मिळाव देवा । जकी जियो जितै चेतै राखी ।—दगदोख

२७ गायन व वाद्यों का स्वर-मान्य करना, स्वर मिलाना ।

उ०—नानजी स्वामी हेमजी स्वामी नैं वखो हेमजी! भीखणुजी स्वामी

म्हा सावां नैं तो हाट मे वेसाणता । कठ मिलाण वाला भाया आढा वेसता ।—मि द्र

२८ शारीरिक अंगों की क्रियाओं या भावनाओं द्वारा सम्पर्क स्थापित करना ।

ज्यू—आख मिळाणी ।

मिळाणहार, हारी (हारी), मिळाणियो—वि० ।

मिळायोडो—भू०का०कृ० ।

मिळाईजणी, मिळाईजवी—कर्म वा० ।

मिळाडणो, मिळाडवी, मिळाडणो, मिळाववो—रू०भे० ।

मिळाप, मिलाप—क्रि०अ०—१ मिलने की क्रिया या भाव ।

२ मिले हुए होने की अवस्था या भाव ।

३ भेंट, साक्षात्कार ।

उ०—इण रीति अमरविह नागोर जाय कैमास रा मिळाप मे, कपट रै निदान के ही कैद करण रा प्रपच किया —व.भा

४ दो या अधिक व्यक्तियों का परस्पर प्रेम पूर्वक मिलन ।

उ०—१ वा मोचण लागी—मा अर वेटा रो आज एडो मिलाप विहयो ।—फुलवाडी

उ०—२ जिको दो ही पिता पूर्वा रो मिळाप सुणि अतर मे एक जाणि तुरकां रो तोम प्रासियो ।—व.भा

५ स्नेह पूर्वक मिलन ।

उ०—१ अतम रा मिळाप सू सबदा रो काई तल्ली मल्ली । ज्वारां रो अतस एक मेख व्हैगो ।—फुलवाडी

उ०—२ अतस रा मून मिळाप पछै वाणी रो सुघ वुष वावडी ।

—फुलवाडी

६ वह अवस्था जिसमें लोग परस्पर मिलजुल कर प्रेम पूर्वक रहते हों ।

७ सामना ।

८ दो नदियों के मिलने की क्रिया ।

९ स्त्री-पुरुष द्वारा मैथुन करने की क्रिया या भाव ।

मिळायोडो, मिलायोडो—भू०का०कृ०—१ दो या दो से अधिक प्राणियों या व्यक्तियों की परस्पर भेंट कराया हुआ, साक्षात्कार कराया हुआ, मिलाप कराया हुआ ।

२ आमने-सामने लाया हुआ ।

३ सामने लाया हुआ, आगे लाया हुआ, प्रकाश में लाया हुआ ।

४ अमिष्ट लाभ या मिद्धि प्राप्त कराया हुआ, हस्तगत कराया हुआ, वाञ्छित उपलब्धि कराया हुआ ।

५ परिचय कराया हुआ, ज्ञान कराया हुआ ।

६ परस्पर समझौता कराके किसी दल या गुट में सम्मिलित किया हुआ या कराया हुआ, पक्ष में किया हुआ ।

७ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में विपक्ष को और किया हुआ या कराया हुआ ।

८ स्पर्श कराया हुआ, छूाया हुआ, अडाय हुआ ।

६ किसी बिन्दु या सीमा पर परस्पर लगने की स्थिति में लाया हुआ, फासला मिटाया हुआ ।

१० परस्पर जोड़ा हुआ, सटाया हुआ ।

११ एकजाई किया हुआ, एकत्र व इकट्ठा कराया हुआ ।

१२ मिलाकर एक किया हुआ, एक दूसरे में विलीन किया हुआ ।

१३ सगठित किया हुआ ।

१४ विछड़े हुए का साथ कराया हुआ ।

१५ टक्कर लिराया हुआ, भिड़ाया हुआ ।

१६ घुनाया हुआ, एकाकार किया हुआ ।

१७ मिश्रण किया हुआ, सम्मिलित किया हुआ ।

१८ स्त्री समागम के लिये प्रेरित किया हुआ, स्त्री-पुरुष का संयोग कराया हुआ ।

१९ परस्पर समझौता कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ, मेल कराया हुआ ।

२० गांठ लगाकर, जोड़कर या सी कर एक किया हुआ ।

२१ तुलना किया हुआ, मुकाबला कराया हुआ ।

२२ शुद्धा-शुद्ध की जांच किया या कराया हुआ, मोलान किया या कराया हुआ ।

२४ चिकित्सा द्वारा किसी जखम या घाव को ठीक किया हुआ/ कराया हुआ ।

२५ केन्द्रित किया हुआ/कराया हुआ ।

२६ वैवाहिक सूत्र में बाधा हुआ, सम्बन्ध कराया हुआ ।

२७ स्वर-साम्य किया हुआ, स्वर मिलाया हुआ ।

२८ शरीरांगों की क्रिया या भावनाओं में सम्पर्क स्थापित किया हुआ ।

(स्त्री० मिळायोडी, मिलायोडी)

मिळाव-स० पु०—१ मिलाने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'मिळावट' (रू भे)

३ देखो 'मिळाप' (रू भे)

मिळावट-स० स्त्री०—१ मिलाए जाने की क्रिया या भाव ।

२ किसी बहिया या श्रेष्ठ चीज में कोई घटिया चीज का किया जाने वाला मिश्रण ।

३ इस प्रकार मिलाया जाने वाला घटिया पदार्थ ।

४ अपने पक्ष में विरोधी पक्ष के व्यक्ति को मिलाए जाने की तरकीब, युक्ति ।

५ साजिश, साठ-गाठ गुप्त समझौता ।

उ०—भरू सूर्जे री तरफ जैसिधजी वा जसवतमिधजी धरम-करम कियो कं पातसाह साहसूर्जे नू करणा । पीछे जैसिधजी ती सूर्जे सामा गया । भर सूर्जे सूर्जे मिलावट थी जिण सूर्जे रं जाणै सूर्जे साहसूर्जे पाछो कूच कियो ।—द दा

६ सम्मिश्रण ।

उ०—भरपां रं इण कळजुग री सिरं धरम है—भूठ, मिळावट छळ, चोरी, जारी, लोभ, घोखी भर दिखावो । आपरा जुग-धरम री टेक राखै जकी मिनख साचो कहावं ।—फुलवाडी

मिळावणो, मिळावबो, मिलावणो, मिलावबो—देखो 'मिळाणो, मिळावो' (रू भे)

उ०—१ मोनी घूड मिळाविद्या, तें स दूळ तमाम । देतो सदा जणाय दिप, किळ भो होणो काम ।—वा दा

उ०—२ मूढो खावो मेल हाय खावडो हिलावं । सीस धरणि दिस सिथळ मुरढ खावडो मिळावं ।—ऊ का.

उ०—३ सोनजी रं हटवें मे कंई दिनासू धमचक वाजं ही । सेर सेर पक्की सोनी सागं ही एक एक साहूकार सूर्जे हो । गंणो घडाई हा मन मिळावं हा ।—दसदोख

उ०—४ विसम लहरि ऊठै भग भगा, ता तें होय सकळ जुग भगा । गरू गारहू कोय मिळावं, मेरे तन की तपति बुझावं ।

स्त्रीहरिदासजी महाराज

मिळावणहार हारो (हारी), मिळावणियो—वि० ।

मिळाविषोडी, मिळाविषोडी, मिळावोडी—भू० का० कृ० ।

मिळावोजणो मिळावोजवो—कर्म वा० ।

मिळाविषोडी—देखो 'मिळायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मिळाविषोडी)

मिलिंद-स० पु० [स० मिलिन्द] १ मध मक्षिका ।

२ भ्रमर, भौरा ।

उ०—प्रगट वडो सग्रामसिंह पट्ट । मतिधर सुकवि मिलिंद मट्ट ।

—ध भा

मिलित-वि० [स० मिलित] मिला हुआ, युक्त ।

मिळियोडी-भू० का० कृ०—१ प्रणियो, व्यक्तियों आदि से किसी प्रकार या रूप से भेंट किया हुआ, मिला हुआ २ कोई व्यक्ति या प्राणी आगे आया हुआ ३ कोई बात या पदार्थ प्राप्त हुआ हुआ ४ अनुसंधान या खोज द्वारा किसी पदार्थ, तत्व या बात का परिचय या ज्ञान हुआ हुआ ५ (बात चीत करते हुए) आमने सामने हुआ हुआ (व्यक्ति) ६ अभीष्ट या सुखद लाभ प्राप्त हुआ हुआ ७ उद्देश्य की सफलता हेतु किसी दल या गुट में सम्मिलित हुआ हुआ ८ अपने पक्ष को छोड़ कर विपक्षी या दूसरे दल या गुट में गया हुआ ९ स्पर्श हुआ हुआ, छुवा हुआ हुआ १० अवस्था, गुण, रूप आदि के विचार से अनुरूप या समान हुआ हुआ ११ रेखा, बिन्दु या सीमा पर पहुँच कर लगा हुआ हुआ १२ सटा हुआ हुआ, भिड़ा हुआ हुआ, जुड़ा हुआ हुआ १३ एकत्रित हुआ हुआ, इकट्ठा हुआ हुआ १४ एक स्थान या स्थिति में पहुँचा या आया हुआ हुआ १५ सम्मिलित हुआ हुआ, साथ हुआ हुआ १६ टक्कर लिया हुआ हुआ, भिड़ा हुआ हुआ १७ एकाकार हुआ हुआ, मिला हुआ हुआ (नमक व माग, दूध व पानी) १८ अपना अस्तित्व रखते हुए सम्मिलित हुआ हुआ (सनाज)

१६ एक मेल मे म्हर निकला हुआ (बाद्य) २० समोग किया हुआ, मंथन किया हुआ २१ स्तनों में दूध उतरा हुआ (गाय, भैम) २२ ठीक हुआ हुआ, भरा हुआ (घाव)।

मिळीमगत-म० स्त्री० यो०—आपम मे मिलजुल कर चली जाने वाली धूर्ततापूर्ण चाल जो बाहर से देखने मे बहुत कुछ निर्दोष या साधारण सी जान पड़ती है।

मिळीप्रानीळ, मिळीयानळ—देखो 'मळयानळ' (रू भे)

उ०—मिळीप्रानीळ घणू वायउ वाउ, रतिपति पढतु वसतराउ।  
चदनवन विहिक्क मिहिकार, सोह्द भ्रमर तणा भ्रमकार।

—भज्ञात

मित्थियत-म० स्त्री० [अ०] १ घन सपति, जायदाद।

२ जमींदारी।

३ जागीर।

४ वह पदार्थ या घन सपति जिम पर नियमानुसार होने वाला अपना स्वामित्व या अधिकार, सत्त्व।

६० भे०—मल्लिकयत

मिसजर-स० पु०—एक प्रकार का बहु मूल्य वस्त्र।

उ०—मिसजर के मिस मन भयो, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहंगी ये लीयो, मो माहुरे आबो दाय।—व म

मिसद—देखो 'मसनद' (रू. भे)

मिस-म० पु० [स० मिसम] १ ऐसी अवस्था, स्थिति या बात जिसके सामाजिक रूप में कुछ गूढ़ उद्देश्य निहित हो पर प्रगट रूप में कुछ और दिखाई देता हो।

ज्यु—उपदेश रे मिस दोम बताणा।

उ०—१ लुगाई रे प्रीत रे आप ई तो आ दुनिया लिक्खियोही है।

मिनय तो प्रीत रे मिस छळ करे।—फुलवाडी

उ०—२ छाळी नारियो देखता ई उग काचा जिग उरणिआ ने य वणु रे पक्की मतो कर लियो। पण की न की मिस बतायने खापणी चावतो, दोमण काढने उणने खतम करणो चावतो।

—फुलवाडी

२ अवलम, आवार, महारा, बहाना, मोका अवमर।

उ०—१ छना दिल्ली जावा ई हा, गोता खावणु जिमी कोई बात नो। इणु मिस पातमाह रा दरसणु ई व्हे जामी।

—फुलवाडी

उ०—२ मेठां ने ओळखो तो देवणी ई हो। ओ मिस ई हाय साग्यो।—फुलवाडी

उ०—३ पण नागण किणी भाव नी मानेला ! उणने तो ओ अणुचोत्पी मिस लाघग्यो।—फुलवाडी

उ०—४ जनकगोम वरज्यो जदपि, वरि मिस तदपि मिकार।  
वनर वयस्य रु कन्ह इक, ले नदयो मु द्रुत नार।—व भा

६ भाड।

उ०—१ कठियारा रे घन्घा री मिस यो नक्की भेय चारण

करिया फिर। ओ नवाव तो कोई विरळो ई नवाव है।

—फुलवाडी

उ०—२ खवामजी इणु भिकाल मे खाम बात तो भूल ई गया।  
दूध दही री तो मिस है। जे गूजरी री टोय नी लेग्यो तो राजाजी खीकैला।—फुलवाडी

४ छन, कपट, जाल, झूठी बात, बहाना। (अ मा, ह नां मा)

उ०—१ पण हीमत हारघा थारी म्हारी प्रीत नी निभे। म्हैने की न की जुगत विचारणी ई पढेला। कोइ मिस वणाय म्है ठाकरसा न चपा रा फूल तोडण सारु भेजू।—फुलवाडी

उ०—२ भुरजमाळ कण मडळी, सोर भाळ विस भाळ। जेण सेम वंठी जभी, मिस चोतोड कराळ।—वा दा

उ०—३ राजवेद सगळा दवायां दे थाका पण दरद व्हे तो मिटे।  
इत्ती किणीरी हीमत कोनी के कै मकै राणी मिस करे।

—फुलवाडी

उ०—४ मीस मानता देवाधिपी ममिहर एहं जाणी। विनयचद्र प्रभु चरणे लागी, लछन नउ मिस आणी।—वि कु.

५ ढोंग, पाखंड, बनावटी, दिखावटी।

उ०—कह्यो—भलाई गगाजी जाबो कै गयाजी, मगळें घन कमावण रा ई अफडा है कीं दूजी बात कोनी। घरम, भगवान, अर मुगति री तो फगत मिस है।—फुलवाडी

६ किसी कार्य, घटना या बात के लिये बनने वाला कारण।

उ०—राजा वाने लाहसू वुचकारने कह्यो—हा, अत्रे ये थारे ठायें ठिकाणे जावो। विरथा रोडिया। पण इणु मिस म्हारी ई आख्या उघडगो।—फुलवाडी

७ समान, अनुरूप।

उ०—१ जेहा जीगु जडाव, गजगांवां मिस कुअर गुर। रचि सपय हयराव, दीघा ते लाखा दुआ।—वां, दा,

उ०—२ राजगुरु अमोलक हसी रे मिस मुळकियो।—फुलवाडी

८ किसी रिश्ते-या सम्बन्ध की आड़ लेने की क्रिया या भाव।

स० स्त्री० [प०] ६ अविवाहिता स्त्री, युवती, कन्या।

अव्य०—१ रिश्ते या सम्बन्ध विचार से।

ज्यु—बाप मिस देणी, बेटी मिस लेणी।

२ रूप मे।

उ०—१ भगवान तो राजावा रे मिस ई आपरी लीला रचै, तद वारा कामा मे दुगो कुण खामी काढ सकै।—फुलवाडी

३ मानी (उत्प्रेक्षा)

४ देखो 'मसि' (रू. भे.)

उ०—पाटी पोयी पूछना, मिस लेखण हो किनमिल सु जगीम।

—व म्

६० भे०—मिमि, मिमी, मिसु, मिमे,

अल्पा०—मिसियो,

मिसक—देखो 'मसक' (रू. भे)

उ०—सो उवो घरकी मिसक भर सहर बगदाद नू ले हालियो ।

—नी प्र.

मिसकरी—देखो 'मसखरी' (रू भे )

उ०—हाथी खामी रे मिसकरी कीधी चावत वात । आरत रुद्रज ध्यान मे गमाया दिन रात ।—जयवाणी

मिसकरी—देखो मसखरी' (रू भे )

मिसकीन—देखो 'मसकीन' (रू. भे )

उ०—जोर करे मिसकीन सतावे दिल उमके मे दरद न आवै । साई सेती नाही नेह गरव करै अति अपनी देह ।—दादूबाणी

मिसखरी—देखो 'मसखरी' (रू भे )

उ०—सेठाणी नै तो हाल पूरी विस्वास नी बिहयो । वा जाण्यो के बाप वेठा मिलनै यू ई मिसखरिया करै ।

मिसखरी—देखो 'मसखरी' (रू भे )

मिसठाण, मिसठाण—देखो 'मिस्टाण (रू भे )

उ०—१ सतमेस सद, अज सैस अद । मिसठाण मद, अण अन्न हद । जिण रच कनेवो, कीध जद ।—रू

उ०—२ अदतारा घर ऊव रस, नह कारण मिसठाण । मन कारण मिसठाणरो, जठ भूख रस जाण ।—बा दा

मिसतगा—स० पु०—वच्चो का एक खेल विशेष । (शेखावाटी)

मिसतर—देखो 'मिस्तर' (रू भे )

मिसतरी—१ देखो 'मिस्तर' (रू भे )

उ०—छोट मारजा रे तीन वेटघा, जका मे सू बडोही री साख हुगरगठ रे एक पावर हाउस रे मिसतरी रे दसवी पास वेटे सू मडघो है ।—दसदोख

मिसन—स० पु० [अ०] १ विशिष्ट व्यक्तियों का वह दल जो किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से कही भेजा जाय ।

२ ईसाइयों की वह संस्था जो सध्मिलित रूप से धर्म प्रचार का कार्य करती है ।

३ उद्देश्य ।

मिसनरी—स० पु०—१ वह जो लोक सेवा के भाव से प्राय विदेश मे जा कर रहता है ।

२ वे ईसाई पादरी जो धर्म प्रचार के उद्देश्य से विदेशो मे जाकर धर्म प्रचार करते हैं ।

३ उक्त प्रकार का ईसाई पादरी ।

मिसर—स० पु०—१ खाद ।

उ०—बाड लियाई उचत पाच बिध, न्याय कनक कर मिसर नख । रोख राह समद पैली रुख, राम रवा कर राम रख ।

२ देखो 'मिख' (रू भे )

उ०—डेग दिवाद्यो ए, ए सईया मिसरा के घर मे । मिसर भला छै ए, ए सईयो मिसराणी है खोटी । (स्त्री० मिसराणी)

मिसरत मिसरित—स० पु० [स० मिश्रित] मिला हुआ घुला हुआ,

उ०—माया मे मिसरत मिल्या, चित्त नाम घराणी । स्वरूप भूल स्ना भयो, दोस विक्षेप दरसाणी ।—स्त्रीमुखरामजी महाराज

मिसरा—स० पु० [अ०] कविता, उर्दू, फारसी आदि की कविता का पद ।

मिसराई—स० पु०—मसूडा ।

उ०—मिसराया चूनी जड़ी, हो जी, बैरा दात दाहम केरा बीज, हे गवरल, रुडो है नजारी तीखोई नेणा रो ।—लो गी

मिसरी—स० स्त्री० [अ० मिस्त्री] १ दो बार साफ करके किसी थाल या मटके मे जमाई हुई मोटे मोटे रवेदार चीनी जो स्निग्ध, बलवर्धक व बहुत गुणकारी मानी जाती है ।

उ०—मूघी मांखण सू मिसरी सू मीठी । द्रग सू दो घडीया अन बिकतो दीठी ।—ऊ का

२ मिश्र देश की भाषा ।

स० पु०—३ मिश्र देश का निवासी ।

वि०—१ अत्यन्त मीठा ।

२ शीतल । (हि को )

३ मिश्र देश का, मिश्र देशसम्बन्धी ।

रू० भे०—मसरी, मिस्त्री, मिमरी

मिसर—स० पु०—एक प्रकार का कीमती रेशमी कपडा ।

उ०—१ मिसर गलीम गदरा मसद, सज्या कसत बिध बिध सुगध ।—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ चूडा भाति सकलात पोतु तास्तु नील नेत्रा वामत्या, मिसर वासत्या कद दोकद चुपदा मासपदा, तनुवध सरवध कमरवध मगवना कमल बना दरीयाखाना ।—व स

मिसल—स० स्त्री०—१ राज-दरबार का एक उच्च पद, पद समूह या स्थान, जो राज्य के प्रमुख-प्रमुख सरदारों या सामन्तों को दिया जाता था । ये राज्य के स्तम्भ माने जाते थे और प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में इनकी सहमति हीनी आवश्यक थी ।

उ०—१ आठ मिसल उमराव, सूर आविया सकाजा । दुज मत्री कवि दुभल, मिळे दरगह महाराजा ।—सू प्र

उ०—२ जयसिंहजी ऊपर बखतसिंह जी भूहर वल किया, मिसल सारी सामल कीवी ।—मारवाडरा अमरावा री वारता

उ०—३ तारासिंहजी भेलो करणे राखिया बीजा बीदावत तीनू मिसला केसवदासोत, जेतस्योत खगारोत मनोहर दासोत ।

—माडवाड रा अमरावा री वारता

उ०—४ तांम बुलाए साह तिण, आठू मिसल अमग । जोव रिणमल जोरावर, सोनग आद दुरग ।—रा रु

उ०—५ अठ्ठों दिकपालन सम असक, निरखिये अठ्ठ मिसलन निसक । ईसाग्यावत्ती अचल अगध, मारवा राव मुरवर महगध ।

—ऊ का

वि० वि०—यह अत्यन्त महत्व पूर्ण पद या स्थान था । प्रत्येक दरबार मे ऐसे कुछ स्थान निश्चित किये हुऐ थे, यथा-जोधपुर मे आठ, बीकानेर मे चार इत्यादि । ये स्थान राज्य के प्रमुख-प्रमुख सरदारों को दिये जाते थे, जो कि उम राज्य के विशिष्ट वंश, वर्ग

या ममूह के प्रतिनिधि होते थे। जैसे जोधपुर में आठ स्थानों में चार जोधाजी के वंशजों को दिये जाते थे और चार रिणमलजी के वंशजों को दिये जाते थे। जोधपुर में यह व्यवस्था महाराजा शूरमिह जी के राज्य काल में भाटी गोविन्ददास द्वारा की गई और राव रिणमलजी के वंशजों के लिए दाईं तरफ व जोधाजी के वंशजों के लिये बाईं तरफ का स्थान निश्चित किया गया। पहले मारवाड़ में गजाओं और जामीनदारों के बीच भाई-विरादरी का वर्तन चलता था परन्तु मिसलें बनने के बाद इनमें स्वामी-सेवकों का संबंध हो गया। जिस वंश को यह मिसल दी गई थी वह उसी वंश में चलती रही। एक वंश में हटा कर दूसरे को मिसल नहीं दी जाती थी। इसी प्रकार बीकानेर के चार स्थानों में से दो स्थान राज्य परिवार के लिये थे एक स्थान कान्चलजी के वंशजों के लिए व एक बीकानेरियों के लिए था। इत्यादि। दरबार में बैठने के लिए ये स्थान निश्चित होते थे, तदनुसार ये सरदार राजा के दायें बायें पक्ति बद्ध बैठ करते थे। मिसल बहुत शक्तिशाली होती थी, यहां तक कि पूरी मिसल एक मत होकर राजा को भी बदल सकती थी। मिसल का रूप एक प्रकार का मन्त्रि-मण्डल ही था। राज्य के महत्वपूर्ण कार्यों में इसकी महमति आवश्यक थी।

२ राज-मन्त्र या दरबार में बैठने का निश्चित स्थान।

उ०—मो नाहर राज देसकाळ विचारि दिल्ली आय इण रीति अनगपाळ नू प्रमन्न करण मन्त्र मे मिसल माफिक बैठो।

—व आ

३ पक्ति, कतार, श्रेणी।

उ०—मेछा हदा मुलक में, जो मावडियो जाय। महबूबा री मिसल में, किल मिरदार कहाय।—बा दा.

४ वर्ग, समूह।

उ०—नारली भोळावण भाई देवा न दीधी। सखरें सावणे चाल्या, तिके दर-मजले दिली पोहता। सखरी ठोठ आपरी मिसल मांहे डेरा कीवा।—जखलामुखडा भाटी री बात

५ मिसलों के विभिन्न नायकों की अवीनता में स्वतन्त्र होने वाले विभिन्न समूह।

६ सभा, मन्त्रिमंडल।

वि०—समान, तुल्य, सदृश।

क्रि० वि०—तरफ, ओर।

रु० भे०—मसल, ममलि, मसल्ल, मिसलत, मिसल, भीसल,

१ देखो 'मिसाल' (रु० भे०)

२ देखो 'मिमिल' (रु० भे०)

मिमलत—१ देखो 'मसलत' (रु० भे०)

उ०—१ घर बाज मिमलत घार, चक्रवर्तिय जतन विचार। दिस भरुप्यळ पति देम, अत अनख चख पंढवेस।—रा रु.

उ०—२ ताहणं इयी मिसलत कीधी—प्राज ह पाचमें दिहाडे दोहर री विरियां नरव काम करस्या। आ मिसलत करि ऊठिया।

नैणसी

२ देखो 'मिसल' (रु० भे०)

उ०—हयत हजारी चमरु की कपट करते हैं। दोऊ मिसलत खडे हैं। हिंदू मुसलमान जिस वखत मोर-तुजक के दस्त पर जवाहर का पान दान। जिस वखत हाजर कोण कोण।—सू प्र

मिसलणो, मिसलवो—देखो 'मसलणो, मसलवो' (रु० भे०)

उ०—मिसलिया लडाकां मोरजा सुणे किया वोळा सवण। अण काळ मरण अण आदरे, काळ चाळ भेन कवण।—रा. रु.

मिसलणहार, हारो (हारी), मिसलणियो—वि०।

मिसलियोडो, मिसलियोडो, मिसलघोडो—भू० का० कृ०।

मिसलोजणो, मिसलोजवो—कर्म० वा०।

मिसलसर—क्रि० वि०—अपनी मिसल के अनुसार।

उ०—आणद री लें र जोर सूं वह चाली। धूडरो तखत वणियो।

सारा मिरदार मिसलमर ऊमा हुवा।—वरसगाठ

मिसलत—देखो 'ममलत' (रु० भे०)

उ०—इम करै मिसलत आसुराण, मिळ करा सब वळ अपमाण।

मि सु रु.

मिसलन—वि० [स० ममि-वर्ण] १ दृष्टान्त वर्ण, काला।

२ अवकाशमय।

मिसा पुगल मिसा पुगल—सं० पु०—आत्म संयोगी।

मिसाल—स० स्त्री० [अ०] १ उदाहरण।

उ०—की करै जोर लाचार, कवि आदत वजै न आलसी। सोधी मिसाल लाधी सितम, खतम दुतरफ बिलालसी।—ऊ का

२ उपमा।

उ०—एक वाणियो मू जो इसी ही के नीं उण रें मू जीपण री कियो सूं मिसाल दी जा सकैं अर नीं उण रें मू जीपण री बयान कियो जा सकैं।—फुलवाडी

३ दृष्टान्त।

उ०—की काम नीं काज। बोलता-बोलता ई कायो व्है जाऊ म्होरै एदीपणा री मिसालां लागे।—फुलवाडी

४ कहावत लोकोक्ति।

५ नमूना।

६ आदर्श।

उ०—म्हें दुनिया में कसूमी रें वेजोड गुण री मिसाल थाप नै जावूला।—फुलवाडी

रु० भे०—मिसल,

मिसि—१ देखो 'मिस' (रु० भे०)

उ०—१ वमण मिसि वदे हेतु सु बीजी, बड़ी सवणि समळी कथ। निखमी आप नमै पड लागी। अचरिज को लाघे अरथ।—वेलि

उ०—२ आमा चित्र रचित तेणि रगी अनि अनि मणि दीपक करि सून मणि। माडि रहे चन्द्रमा तरण मिसि, फण सहसेई सहस फणि।

—वेलि



उ०—३ अग्नि पखि वर्ष चक्रवाक असघै, निसि सघै इमि अहो निमि । कामिणि कामि तणी कामागिनी, मन लाया दीपका मिसि ।

—वेलि

उ०—४ पच कलप तर अवतरथा रे, अगुलि मिसि तुम्ह बाहि हो ।—वि कु.

उ०—५ ए गघकारी मिसि रूप दासी, रही अछइ उत्तम नारि नाभी —सालिसूरि

२ देखो 'ममि' (रु भे)

मिसिज्जाए-स० पु०—मिश्रित दोष जो साधु और गृहस्थ दोनों को साथ-साथ बताया जाता है । (जैन)

मिसिमिस-स० पु०—अत्यन्त गुस्मा । (जैन)

मिसियी—देखो 'मिस' (अल्पा, रु भे)

उ०—करलै मिसिया, जाणे मरग्यो । लागे जणे पीड हुगे है । माजी । हुवै क्यूनी । मिसिया करणा र वखत गुमावणी ।

—वरसगाठ

मिसिर—देखो 'मिस्र' (रु भे)

मिसिल-स० स्त्री० [अ०] १ किसी मुकदमे. विवाद या विषय में एक साथ नयी किये हुए कागज, पत्रावली ।

२ जिल्दसाजी में किसी पुस्तक के सिलाई के लिये क्रमश रक्खे हुए फर्में ।

रु० भे०—मसल, मसलि, मसल्ल, मिसल, मिसल, मीसल ।

मिसिली-वि०—१ जिसके सम्बन्ध में न्यायालय में कोई मिसल बन चुकी हो ।

२ जिसको अदालत से कोई सजा मिल चुकी हो ।

मिसी-स० स्त्री० [स० मिश्र, मिश्रण] १ दो या दो से अधिक भ्रनाजो का मिश्रण जो रोटी बनाने के लिये किया गया हो ।

उ०—छेकड़ नारळी हाथ मागणी पढ्यो । रामजी घर देवाळ है । बाजरी मिसी भावती नहीं जका न भगर रा ही सासा पढ्यो ।

—दसदोख

२ देखो 'मिस्ती' (रु भे)

उ०—कवळ-पथी मुख मिसी मुहाई । छुटी जुलफ मुलजावणी ।

—रसीलैराज रा गीत

३ देखो 'मिस' (रु भे)

मिसु—देखो 'मिस' (रु भे.)

उ०—करी य कूह सिलेद्री भाठवी । मिसु करी मदिरा लेई पाठवी ।—सालिसूरि

मिसूर-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—मिसूर ये भल ल्यावो जीवना, म्हारा चावो ये भल ल्याय । स्पाळू सागानेर का जी वना, म्हारा अगिया के कोर जहाय ।

—लो गी

मिसे—देखो 'मिस' (रु भे)

उ०—सुख समधि पूछण ने मिसे रे, राजा ने गले टूपी दीघो जाय रे ।—जयवाणी

मिस्कीन—देखो 'मसकीन' (रु भे)

उ०—दादू सिदक सवूरी साच गह, सावित राख यकीन । साहिव सौं दिल लाइ रहू, मुरदा वहे मिस्कीन ।—दादूवाणी

मिस्कीनी-स० स्त्री०—१ मिस्कीन होने की अवस्था या भाव ।

२ दीनता, गरीबी ।

उ०—गरीब गरीबी गह रह्या, मिस्कीनी मिस्कीन । दादू आपा मेट कर, होइ रहे ली,लीन ।—दादूवाणी

३ सरलता ।

४ विरक्ति ।

मिस्ट-वि० [स० मिष्ट] १ मधुर मीठा ।

२ स्वादिष्ट ।

मिस्टान, मिस्टान्न, मिस्टान मिस्टान्न-सं० पु० [स० मिष्ट+अन्न]

१ मधुर एवं स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ ।

उ०—१ प्रति दिन अति विजन प्रवित, पाकादिक मिस्टान्न । वात कही में क्यो वरुं, जाणै वात जिहान ।—रा रु

उ०—२ घृत पूरित रस जेण घण, अन्न मिस्टान्न अपार । तरकारी सुथरी अतर, अति सुदर आचार ।—रा रु

२ प्राय, कदोईयो द्वारा वेची जाने वाली मिठाई । (उ० २०)

रु०—देसूरी वाला नाथूजी साघ नें जीभ री लोलपी जाणने घृत दध दही मिस्टान्न कडाइ विगं खावा री मरयादा साघा रं दावो. ,

—भि द्र

३ देवताओं की चढाया जाने वाला नेवेद्य ।

उ०—सेवक सुकवि करत नित सेवा । मधु मिस्टान्न चढत अति मेधा ।—मे म

रु० भे०—मिठाण, मिसटाण, मिमठाण, मीठाण,

मिस्तर-स० पु० [अ०] १ दफती के एक टुकड़े पर समानान्तर दूरी के होरे चिपका या सी कर बनाया हुआ एक उपकरण, जिम पर लिखने का कागज रख कर दबाव डाल कर सीधी रेखाओं के निशान बनाये जाते थे । (प्राचीन)

२ भवन-निर्माण में राच पीटने का एक काष्ठ का उपकरण ।

रु० भे०—मिसतर

मिस्तरी, मिस्त्री-स० पु०—१ चतुर-शिल्पकार, कारीगर ।

२ यन्त्रों की मरम्मत करने वाला व्यक्ति ।

रु० भे०—मिसतरी,

मिस्र-स० पु० [अ०] १ अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में स्थित एक प्रसिद्ध देश जो आज कल अरब गण राज्य के अन्तर्गत है ।

[स० मिश्र] २ अ हाणों के एक वर्ग की उपाधि ।

३ माहित्य में इतिवृत्त के मूल विचार से नाटको की कथावस्तु के तीन भेदों में से एक ।



४ व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से एक, जिसमें मुख्य उप-वाक्य तो एक ही होता है, परन्तु आश्रित उपवाक्य एक से अधिक होते हैं।

५ ज्योतिष में सात प्रकार के गणों में से सातवां या अंतिम गण जो कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के योग में होता है।

६ हाथियों की एक जाति।

७ सिंहों की एक जाति। (भ. मा.)

८ सन्निपात रोग।

९ म्लान, रक्त।

१० मूली।

११ मिश्रित पदार्थ।

१२ सचित्त व अचित्त पदार्थों का योग। (जैन)

स०—जद स्वामीजी कह्यो—मूला में तो पुण्य पाप दोनू है। पिरा मूला अणुकपा आण नें खुवाया केइ मिस्र कहै। जद कह्यो मिस्र कहै सो पापी।—भि. द्र.

वि०—१ जो कईयों के योग से बना हुआ हो, कईयों को मिलाकर एक किया हुआ, मिला हुआ, संयुक्त।

२ अनेक तत्वों, योगों, अंगों आदि के योग से नए व स्वतन्त्र रूप में आया हुआ।

३ बड़ा, मान्य, श्रेष्ठ।

रू० भे०—मिसर, मिस्र

मित्रकेली—स० स्त्री० [स० मिश्रकेली] मेनका की सखी एक अप्सरा। यह कश्यप एवं प्राचा की कन्या थी और पुरुराजा के पुत्र रोद्राक्ष के साथ इसका विवाह हुआ।

मित्रजाति—स० पु० [स० मिश्र-जाति] वर्णसंकर।

मित्रण—स० पु० [स० मिश्रण] १ मिलाने, सम्मिश्रण करने की क्रिया या भाव।

२ दो या दो से अधिक पदार्थों को एक साथ मिलाने की क्रिया, मिलावट।

३ उक्त क्रिया में तैयार होने वाला पदार्थ।

४ कई औपधियों के मेल से बनने वाली औपधि। (मिक्सचर)

५ गणित में जोड़ लगाने की क्रिया।

मित्रपानी—म० पु०—घोवन (जैन)

स०—मित्रपानी न बहराय, ग्रही के सरणें नहीं जाय।

—जयवांछी

मित्रवाली—

स०—ज्यं मित्रवालां माहि सू तो केइ समझाया अने पुन्यवालां री वागे। पछें पुन्य री सद्धा वाला नें निवेधवा लागे।

—भि. द

मिश्रित—स० स्त्री० [स मिश्रित] १ कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के समय होने वाली सात प्रकार की सक्रातियों में से एक सक्राति।

वि०—१ मिला हुआ, मिश्रित।

स०—खीर कद मिश्रित हित खती। भोजन अवर दियै बह भती।

—सू. प्र.

२ जिसमें मिलावट की गई हो।

मिल्ली—वि० [फा०] मिस्र का, मिस्र सम्बन्धी।

स० पु०—१ मिश्र देश का निवासी।

२ एक नाग जो बलराम के स्वर्गारोहण के समय उसके स्वागतार्थ प्रभास क्षेत्र में उपस्थित था।

३ देखो 'मिसरी' (रू. भे.)

स०—१ मेवा नस्य आभरण मिल्ली, वद जइ किता किता बाखाण।—महादेव पार्वती री बेलि

स०—२ जद स्वामीजी बोल्या—किण ही खाधी तो मिल्ली नें जाण्यो जहर तो ऊ मरै के न मरै? जद ऊ बोल्या न मरै।—भि. द्र.

मिस्त—१ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

स०—मिस्त अठ मत्ता वो मरोर को मरोर नाखी। तीर नाखी पोपजी की ख्याता ख्यो खत्ता मे।—जुगतीदान बारहठ

२ देखो 'मिमिल' (रू. भे.)

मिस्ती—स० स्त्री० [फा० मिमी] १ भाजूफल, लोहचून, तूतिया आदि के योग से तैयार किया जाने वाला एक मजन जिससे स्त्रिया दात व होठ रंगती है।

२ मुसलमान वेदया के पहले पहल किसी पुरुष से समागम करने पर किया जाने वाला उत्सव। इस समय उसके मिस्ती लगते हैं।

वि० वि०—इसे सिर ढकाई या नथ-उतराई की रश्म भी कहते हैं।

रू० भे०—ममि, ममी, मस्ती, मिसी।

मिहटणो, मिहटवो—फि० अ० [स० मिह्] जलते हुए का बुझना, ठंडा पड़ना।

स०—इम कहि नें घोडो बलती भाळ मांहे ठेलीयो, तिकी भाळ मांहा सो घोडो कोरीयां पावा नीसरीयो। भाळ मिहटि गयो।

—माडणुसी कू पावत री वात

फि० स०—२ नम करना, तर करना।

३ छिड़कना।

४ मूत्र करना।

मिहटणहार, हारो (हारो), मिहटणियो—वि०।

मिहटिप्रोडो, मिहटियोडो, मिहट्योडो—भू० का० कृ०।

मिहटोजणो, मिहटोजवो—भाव वा०/कर्म वा०।

मिहटियोडो—भू० का० कृ०—१ बुझा हुआ, ठंडा पड़ा हुआ।

२ नम व तर किया हुआ।

३ छिड़का हुआ।

४ मूत्र किया हुआ।

(स्त्री० मिहटियोडो)

मिहतर, मिहतर—देखो 'महतर' (रू. भे.)

मिहन्त—देखो 'मै' नत' (रू. भे.)

मिहर—स० पु० [फा० मल्ल] १ मुसलमानों में वधु पक्ष की ओर से वर पक्ष से तय करवाई जाने वाली धन राशि जो स्त्रीधन के रूप में रहती है और तलाक हो जाने की दशा में स्त्री के गुजारे में काम आती है (मा.म)

२ देखो 'मिहिर' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ भूटि भूषि मुक्त नारि विगोई । आथमिउ मिहर सू मुह जोई ।—सालिसूरि

उ०—२ मध्य दीरघ जगण रोग दत सुर मिहर । निरपमनु पिता सेना अरुण नेक ।—रू

३ देखो 'महर' (रू भे)

उ०—१ करहा सुणि सुदरि कहउ, मिहर करउ मो आज । साहिब म्हारउ ऊमहउ, दिव सगली तो लाज ।—ढो मा

उ०—२ तू तो मैडही ज्यान सिपाईडा रे । मिहर करे मैडो गलियां आवें । इतनी अरज मैडो मान ।—रसीलैराज रा गीत

मिहरवांणी—देखो 'मै'रवांणी' (रू भे)

उ०—ताहरा वार २-४ उमरावे कहियो पिण पातिसाहजी कहै हू न मोरु मिहरवांणी आवें ।—द वि

मिहरवी—देखो 'मैहराव' (अल्पा, रू भे)

उ०—आयो फाग उमह आली री, मची है मिहरवा के घूम ।

—रसीलैराज रा गीत

मिहरी—

उ०—अनुज भाई निसभ बोलियो—भावी पदारथ मिटै नहीं । विधाता लेख घातियो तठै इसो हीज लिखियो थी । रगतबीज सामत सारिखा री परब मिहरी रे हाथ हुसी । तिका तो आकावधी ।

होणहार सू जोर लागे नहीं ।—मा वचनिका

२ देखो 'मिहिर' (रू भे)

मिहल—१ देखो 'महिळा' (रू भे)

उ०—मिहल विद्योया जुगल मुख, नायक कान लगाह । मूषणगण मांणस भला, मिळही च्यार मगाह ।—बां दा

२ देखो 'महल' (रू भे)

मिहि—देखो 'महि' (रू भे)

उ०—असि वेग बहे, गिरो स्रग गहै । रवि रेणु मिले, मिहि मंन मिले ।—गु रू व

मिहिका—स० पु० [स] १ हिम, बर्फ ।

२ कोहरा ।

३ ओस ।

४ कपूर ।

मिहिर—स० पु० [स०] १ सूर्य, आनु, रवि ।

२ चन्द्रमा ।

३ बादल, मेघ ।

४ वायु, हवा, पवन ।

५ राजा ।

६ आक, मदार ।

७ ताँवा ।

८ वृद्धजन ।

९ विक्रमादित्य की सभा का एक पंडित ।

रू० भे०—महर, महिर, महीर, मिहर मिहरी, मोहर ।

मिहिरकुळ—स० पु० [फा० मल्लगुल] शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध हूण राजा तोरमाण का पुत्र । (ऐतिहासिक)

मिहिलो—देखो 'महिळा' (रू भे.)

मिहीं, मिहींन—देखो 'महीन' (रू भे)

उ०—दाहू मिहीं महल वारीक है, गांउ न ठांउ न नांउ । तासों मन लागे रहे, मैं बळिहारी जाउ ।—दादूबाणी

मीगणमाळा—स० स्त्री०—ऊट, चकरी या भेड के विष्टे की सूखी गोटी की माला ।

उ०—माटी केरी घूमाळी, लीद गोबर सूं ढोळथी है । कानां में दोष भड़भोल्या, गळा में मीगण-माळा है ।—फुलवाडी

मीगणी—स० स्त्री०—भेड चकरी या चूहे आदि के विष्टे की छोटी गोटी ।

रू० भे०—मिगणी

मीगणी—स० पु०—ऊट के विष्टे की गोटी जो बड़े बोर के आकार की होती है ।

उ०—१ भर बीजी खीवें री पलट माहे मीगणी मूकं भर ईं डोल ।  
—चोबोली

उ०—२ नाडी रा पाणी सू गारी करने बी माटी री एक लोठो घूमाळी वणायो । कानां में दोष भड़भोल्या घाल्या । गळा में मीगणां री माळा पं'री ।—फुलवाडी

रू० भे०—मिगणी,

मींगी—देखो 'मींजी' (रू भे.)

मीच—देखो 'मीच' (रू भे)

उ०—१ लसें प्रताप तावदे लदाव को लदावनी । सदैव वेरि मीच बीच मीच को सदावली ।—ऊ का

उ०—२ लख चोरासी बीच, खडी है मीच सिराणे । लघणा भीषट घाट, पड़ेगी दूरि पीयाणे ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ ताहरा लाखी देखी नूं कछो—मोनू मीच भली देई ।

—नैणसी

मीचणी, मीचवी—देखो 'मीचणी, मीचवी' (रू भे)

उ०—१ फीटो मूढो फांड, नाह कर लेबै नींची । छिली रहे जळ छाख, मिली आख्या अघ मींची, —ऊ का

उ०—२ अमल री डळी भर जैर, री गुट की हैजकी वेटी रे हर एक वाप नै आख मीच र कठा सू हेठी उत्तारणी ईज पडे ।

—दमदोल

उ०—३ दूजा मिनहारी रो बात मान जावै तो वो राजा ई काई ।  
जूमल खावता कैवण लागा—आख्या भींचलो, अबाहू अबाहो नै  
जावला ।—फुलवाड़ी

भींचणहार, हारी (हारी), भींचणियो—वि० ।  
भींचियोडो, भींचियोडो, भींचियोडो—भू० का० क० ।  
भींचोजणी, भींचोजबी—कर्म वा० ।

भींचा—देखो 'भीच' (रू भे)

भींचाणो, भींचावो—देखो भींचाणो, भींचावो (रू भे.)

उ०—ऊपर चादर उड़ाई तथा मितर पढायो । आख्या भींचा'र,  
आपरी प्रेमिका रो नांवो चित्तारण देगी कैयो अर पीरा नै पांच  
पीसां रो सीरणी चढवाई ।—दसदोख  
भींचाणहार हारी (हारी), भींचाणयो—वि० ।  
भींचायोडो—भू० का० क० ।  
भींचाईजणी, भींचाईजबी—कर्म वा० ।

भींचायोडो—देखो 'भींचायोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भींचायोडो)

भींचावणी, भींचावबी—देखो 'भींचावणी, भींचावो' (रू भे)

उ०—सीधो सुवाण परो र करणो रो आख्या भींचावै है अर  
जेवढो सूँ बरू वाध दैणो रो भळै क'वै है ।—दसदोख  
भींचावणहार, हारी (हारी), भींचावणियो—वि० ।  
भींचावियोडो, भींचावियोडो, भींचावियोडो—भू० का० क० ।  
भींचावोजणी, भींचावोजबी—कर्म वा० ।

भींचावियोडो—देखो 'भींचावियोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भींचावियोडो)

भींचि—देखो 'भीच' (रू भे)

उ०—ताहरां दिली टीकं सलेमसाह पातिसाह बँटो । बरस सात  
पातिसाहो करि अर भींचि भूयो ।—द. वि.

भींचियोडो—देखो 'भींचियोडो' (रू भे)  
(स्त्री० भींचियोडो)

भींचो—देखो 'भीच' (रू भे.)

भींचणी, भींचबी—क्रि० उ०—१ मसलना, मलना ।

उ०—१ कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रय कहं नई । रय  
बदाय गोपाळ लै गयो, हात भींचत रही ।—मीरा

२ बद करना, मूंदना ।  
भींचणहार, हारी (हारी), भींचणियो—वि० ।

भींचियोडो, भींचियोडो, भींचियोडो—भू० का० क० ।  
भींचोजणी, भींचोजबी—कर्म वा० ।

भींचर—देखो 'मिमजर' (रू भे)

भींचियोडो—भू० का० क०—१ मसला हुआ, मला हुआ ।

२ बद किया हुआ, मूदा हुआ ।

(स्त्री० भींचियोडो)

भींचो—उ० स्त्री० [उ० मज्जा] १ हृद्दी के भीतर का गूदा, आस का

गूदा । (उ र)

२ फल या बीज के भीतर का गूदा ।

३ चर्वो, वसा । ४ बीर्य, बीज

५ अन्त करण, हृदय, मर्म ।

उ०—मयणा चाली उबर संगे, हीयडे हरख घरी उछरगै । जैन  
बरम भींचो भेदाणी, किम पलटे तेह नी कहो वांणी ।

—श्रीपाळा रास

रू० भे०—भीगी

भींट—देखो 'भीट' (रू. भे)

उ०—१ मुनि सुव्रत मन माहुरी जी, लागो तुम लागि थेट । पिए  
तूं भींट न मेलवै जी, ए व्रत दुक्कर नेट ।—वि. कु

उ०—२ मार पालथी भींट लगावै, करै गजब का फेन ।

—दूगजी जवारजी रो छाबली

उ०—३ कपडा काळा कीट, नीठ उठ ऊठ निरोधें । भींट अमल  
रें मांय, सीठ कुचरें ज सोधें ।—ऊ. का

उ०—४ एहिज परि यई भीरि कजि आया धनंजय अनै सुयोधन ।  
मासै मगसिर भलठ जु मिलियो, जागिया भींट जनारजन ।

—वि. कु.

भीठी—देखो 'भीठी' (रू भे)

उ०—१ मूधी माखण सू मिसरी सू भीठी । दग सू दो घड़िया अन  
बिकतो दीठी ।—ऊ. का

उ०—२ पल पल दीठा बिन पांणी नह पीता । जारा भीठा मुख  
जोय'र जग जीता ।—ऊ. का

भींड—स० पु० [स० भीडम्] १ तार वाद्यों मे स्वर की अदृष्टता को  
कायम रख कर तथा मध्य अक्ष को मधुर बना कर एक स्वर से  
दूसरे स्वर पर जाने की क्रिया । (संगीत)

२ समानता तुल्यता, बराबरी ।

रू० भे०—भीड

भीडकी—देखो 'भीडकी' (मह, रू. भे)

उ०—दादू सखा सवद है, सुन हा ससा भारि । मन भीडक सु  
मारिये, सका सरप निवारि ।—दादूबाणो

भीडकी—सं० स्त्री०—१ मादा मेंढक ।

२ मेंढक का बच्चा ।

३ वह गाय और भैंस जिसके दोनों सींग नीचे की ओर मुड़े हुए  
होते हैं ।

उ०—राजाजी तो बोबाहो करनै होकरी रा पण भाल लिया ।  
रोवणकाळा होय कैवण लागा—पारी भीडकी गाय हू, आं पांडवां  
सूं पिठ छुटावो ।—फुलवाड़ी

पद—भीडकी-गाय=दीन-हीन, असहाय, असमर्थ ।

भीडकीपाव—स० पु०—एक नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध पुरुष ।

उ०—नेम कंवार निहक्रम, हालीपांव होतब, निहकप कवीर, भीडकी  
पाव परमोद, नाम देव नेठाव, भूषणोमल ध्यान, रहित रंदास,

श्रीधरनाथ श्रघट ।—ह पु वा  
 मीडकी—स० पु० [स० मण्डक] (स्त्री० मीडकी) मेडक, दादुर ।  
 उ०—१ मान कियोडी महल ज्य, चुगला ज्य कम बोल ।  
 मावडियो घर मीडकी, पुरुष पण री पोल ।—वा. दा  
 उ०—२ समद नीर माछनी विरोळ सुखिम सीरा पीव । पैली  
 कथा परम पद सुणता, मन मीडका न जीव ।—ह पु वां  
 पर्या०—ढेढरी प्लवग, बरसाभू, भेक हरि ।  
 रू० भे०—मीडकी, मेडकी मेडकी  
 मह०—मीडक, मीडक, मेडक, मेडक, मेडक ।  
 मीडणी, मीडवो—कि० स०—१ तुलना करना, मीलान करना ।  
 २ जाच करना ।  
 ३ अकित करना, लिखना ।  
 ४ निरखना, देखना ।  
 उ०—फँट पकर के फगुवा ल्योगी मुख मीडोंगी ब्रजगज । मीरा  
 के प्रभु गिरधर नागर, सदा रही सिरताज—मीरा  
 ५ बराबरी करना, मुकाबला करना ।  
 ६ समानता करना ।  
 मीडणहार हारी (हारी), मीडणियो—वि० ।  
 मीडिओडो, मीडियोडो, मीडचोडो—भू० का० कृ० ।  
 मीडोजणी, मीडोजवो—कर्म वा० ।  
 मीडणी मीडवो, मीडणी, मीडवो, मीडणी, मीडवो मीडवणी,  
 मीडववो (रू भे )  
 मीडल—१ देखो 'मीडी'  
 २ देखो 'मीडल' (रू भे )  
 मीडली—देखो 'मीडी' (पल्पा, रू भे )  
 उ०—फुकी नस मीडलिया रं बीच जाणे विरछे कवली डाल ।  
 —साभ  
 मीडाखडवड—स० स्त्री०—१ बकभक ।  
 २ कलह भगडा ।  
 मीडासींगो—१ देखो 'मेडासींगी' (रू भे )  
 २ देखो 'मीडासींगी' (रू भे )  
 मीडियोडो—भू० का० कृ०—१ तुलना किया हुआ, मीलान किया हुआ  
 २ जाच किया हुआ ३ अकित किया हुआ, लिखा हुआ  
 ४ निरखा हुआ, देखा हुआ. ५ मुकाबला या बराबरी किया हुआ.  
 ६ समानता किया हुआ ।  
 (स्त्री० मीडियोडी)  
 मीडो—स० स्त्री०—१ स्त्री के सिर मे गूथे हुए केशो की लट ।  
 उ०—मासी महाराणी री मीडिया गूथती बोली—वेटी, म्है जकी  
 विखी सगळी ऊमर भुगतियो उण रं कारण म्हैनी नो कोइ दूजी  
 बात निगेई नी आवै ।—फुलवादी

२ वह गाय या भैंस जिसके सींग नीचे की ओर मुड़े हुए होते  
 हो ।  
 ३ शून्य का अंक (०) ।  
 रू० भे०—मीडी,  
 अल्पा०—मीडली, मीडली,  
 मह०—मीडल, मीडल  
 मीडो—स० पु०—१ बेल, भैंसा आदि वह पशु, जिसके सींग नीचे की  
 ओर मुड़े होते हैं ।  
 २ शून्य का अंक जीरो (०) ।  
 उ०—जिको न पूरी जाणतो, ठठी मीडो ठोठ । वाचें अखिरल  
 वाणी सु पुस्तक भरिया पोठ ।—घ व ग  
 ३ देखो 'मीडी' (रू भे )  
 उ०—जमनाजी कै वायं-डावें रेवड चरतो जाय । निजर पडी  
 करण्ये मीणे की, जद यू बोल्हो आय । हुकम करो तो सिरदारा में  
 मीडो ल्याऊ उठाय ।—हूंगजी जवारजी री छावली  
 मीड—सं० स्त्री०—१ बराबरी, समता ।  
 उ०—कासी सेव करैह, दस फोडा सुरभी दियं । हेकण नाम हरैह,  
 मीड न आवै मोतिया ।—रायसिंह सादू  
 वि०—बराबर, समान, तुल्य ।  
 उ०—१ वरदायक सकति री, कत क्रीत री कहावै । उरड जोम  
 अगरी, अवर पड मीड न आवै ।—सू प्र  
 २ किम पूगे तो मीड 'कलावत' दो मझ रायासिंह दुफाळ । चादी  
 गिरवरी फग चीतवै, सायर ओट तक सह साळ ।—द० दा०  
 रू० भे०—मिड, मीड  
 मीडउ—देखो 'मीडी' (रू भे ) (उ र )  
 मीडक—देखो 'मीडकी' (मह, रू भे )  
 मीडणी, मीडवो—देखो 'मीडणी, मीडवो' (रू भे.) (उ र )  
 मीडणहार, हारी (हारी), मीडणियो—वि० ।  
 मीडिओडो, मीडियोडो, मीड्योडो—भू० का० कृ० ।  
 मीडोजणी, मीडोजवो—कर्म० वा० ।  
 मीडरी—वि०—१ उपमा देने योग्य ।  
 २ बराबर का ।  
 मीडल—स० पु०—१ वृक्ष विशेष ।  
 उ०—महूडा मिलयागिरी मिरी, मीडल नइ मदार । माई मजीठ  
 मरिहठी, मरडासींगे मार ।—मा० का० प्र०  
 २ देखो 'मीडी' (मह, रू भे )  
 रू० भे०—मीडल  
 मीडली—देखो 'मीडी' (पल्पा, रू भे )  
 मीडवणी, मीडववो—कि० स०—देखो 'मीडणी मीडवो' (रू भे )  
 उ०—बिखमी पुळ चांमड मीडवणी, तद वीर भयकर राव तणी ।  
 घुर छितीय वज्र कमाड घरा, असवार कना भड अतक रा ।  
 —पा प्र

मौडा—स० स्त्री०—एक नदी जो जयपुर जिले के जंतगढ की पहाडियों में निकल कर सामर भील में गिरती है।

मौडासौगी—म० स्त्री०—१ छोटे के कानों के नीचे और आखों के ऊपर होने वाली भवरी (चक्र)। (अशुभ) (शा हो)

२ देखो 'मेढासौगी' (रू. भे)

मौदी—देखो 'मौडी' (रू. भे) (उ. र)

मौडी—म० पु० [स० मेण्टक] मुड़े हुए मींगी वाला नर भेड़, मेप।

उ०—राव सूं महड़ा अरज की—रावजी सलामति ! म्हां मल लडता दीठा, हिरण लडता दीठा मौडा लडता दीठा, ऊठ, घोडा हाथी लडता दीठा पिए रजपूत लडता दीठा नहीं छै।

—नान्है बाघेल री बात

वि०—बिना सींग का, सींग रहित।

रू० भे०—मौडो, मौडी, मू डो, मूडो, मेडो, मेडो,

मह०—मिड

मौणा—देखो 'मीणा' (रू. भे)

उ०—मीलन कून भलावियो, नाहि मेरा मीणाह। तोनू राण भलावियो, सोहडां सुनळगियांन।—वा० दा०

मौत, मौत्र—देखो 'मित्र' (रू. भे)

उ०—१ तीस वरम कुमती कगी, पड गुड उयल-पयल्ल। तैं दीघो गोडा तळें, अडयो मौन अमल्ल।—ऊ का

उ०—२ मणिमय मंदिर-माहिथी, महिला वछइ मौत। पणि प्रीळ पेवी आवतुं अवल ऊनरिउ चीत।—मा का प्र

उ०—३ प्रीत किया सुय नहि मोरी सजनी जोगी मौत न कोई।

—मीरां

मौदर—देखो 'मदिर' (रू. भे)

उ०—औ मौदर नैं महप स० १६१४ रा भादवा वद ५ मो उडीयो तरा महप सिखर गयो।—मारवाड री रयात

मौन—देखो 'मीन' (रू. भे)

उ०—कठे आ गूजरी अर कठे ऐ निकांमो भोपमावां—मीस नाळेर। मिरग सा नैय, मौन जिंसा चपळ।—फुलवाडी

मौनमेख—देखो 'मीनमेख' (रू. भे)

उ०—१ ठाकरसा मूछ्या माथै हाथ केगने घाटी हिलायनै बोल्थो—हा, इण में काई मौनमेख।—फुलवाडी

उ०—२ वां री जीत में की मौनमेख बाकी नी ही के अणचींथो सगळो पाटियो ई उलटयो।—फुलवाडी

मौमचो—स० पु०—छोटी तलवार जो प्राय वच्चो को मिगाने के लिए काम में आती थी।

रू० भे०—मीमचो,

अन्या०—मीमचियो,

मौमासा—देखो 'मीमासा' (रू. भे)

मौचो—१ देखो 'मिचो' (रू. भे)

२ देखो 'महीन' (रू. भे)

मौह—देखो 'महीन' (रू. भे)

उ०—घणां मौह जामा अतर में तिलवाय कीवा तिका रा वव छातो उपरोम खोल दीवा छै।—प्रतापसिध म्होकमसिध री बात

मो—स० स्त्री०—१ रमा।

२ यति। (एका०)

मोआद—देखो 'मयाद' (रू. भे)

मिआदी—देखो 'मयादी' (रू. भे)

मोच—स० स्त्री० (स० मृत्यु प्रा० मिच्छु) १ मृत्यु मोत, काल।

उ०—१ पैड दिये अममेद रा, मरै खडग ची मोच। अछरा बांहडिया गळे, वसं विमाणा बीच।—वां दा.

उ०—२ तरं दीवीजी हाथ भालिया—कहै—तुं मती मरै, थारै हाथ तो लाखा री बीच नहीं नैं तैं अतरो हठ माडीयो म्हे तोनू लाखा मारण री उपाव बतावा छा।—नैणसी

उ०—३ दुरवासा डारण छाप दियो, लखजं अवरीख उबार लियो। विच पेट परीछत मोच वचाय' र थेट हरी जन थापियो।

—र ज प्र

२ आख का इशारा।

३ आख वद करने की क्रिया या भाव।

रू० भे०—मीच, मीचा, मौचि, मीची,

मोच आलो—स० पु० [स० मृत्यु आलय] यमलोक।

उ०—परलोक जाय आवै कवन, कवन मोचआलै गवन। कठीर कठ हिम कठ लौं, कर पमारि घल्लै कवन—ला रा

मोचणो, मोचवो—क्रि० स० [स० मोलति] १ वद करना, मूदना। (आख) (उ. र)

उ०—खोच रा डळा खावै खिमक, नीच तळा कुळ नाळ रा। नित मोच आंख वंटे निलज, मोच अमल भूपाळ रा।—ऊ का

२ जोडना, मिलाना।

मोचणहार, हारो (हारो), मोचणियो—वि०।

मोचिओटी, मोचियोडो, मोचयोडो—भू० का० कृ०।

मोचीजणो, मोचीजवो—कर्म वा०

मोचणी, मोचवो—रू० भे०

मोचाणो, मोचावो—क्रि० स० १ वद करवाना, मूदने के लिये प्रेरित करना। (आख)

२ जुडाना, मिलवाना।

मोचाणहार, हारो (हारो), मोचाणियो—वि०।

मोचायोडो—भू० का० कृ०।

मोचाईजणो, मोचाईजवो—कर्म वा०।

मोचाणो, मोचावो, मोचावणो, मोचाववो—रू० भे०।

मोचायोडो—भू० का० कृ०—१ वद करवाया हुआ, मूदने के लिये प्रेरित

किया हुआ । (भाख)

२ जुड़ाया हुआ, मिलावाया हुआ ।

(स्त्री० मीचायोडी)

मीचावणी, मीचाववो—देखो 'मीचाणी, मीचावो' (रू भे)

मीचावणहार, हारो (हारी), मीचावणियो—वि० ।

मीचाविओडी, मीचावियोडी, मीचाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मीचावीजणी, मीचावीजवो—कर्म वा० ।

मीचावियोडी—देखो 'मीचायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मीचावियोडी)

मीचियोडी—भू० का० कृ०—१ आंख बंद किया हुआ, आंख मूदा हुआ ।

२ जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ ।

(स्त्री० मीचियोडी)

मीजर—देखो 'मिमजर' (रू भे)

मीजान—देखो 'मिजान' (रू भे)

मीजाजण—देखो 'मिजाजण' (रू भे)

उ०—गोरी गज को घूषट काड मीजाजण गोरी गज को घूषट काड दीयक तुम ऐसे जोवोजी ।—लो गो

मीजासणी—देखो 'मजासणी' (रू भे)

मीट-स० स्त्री०—१ देखने की शक्ति, निगाह, दृष्टि ।

उ०—१ निरांत सू बावडी रो कमीद व्हे जंडो ठाढो पाणी पीयन वो पाछी जावण लागी के सूत ई उणरी मीट राजकवरी रे केसा मार्य पढी ।—फुलवाडी

उ०—२ सौ तुरग सारखा, भडा अणभग समेळा । मीट पढी भेलिया, घडी नह लग्गी वेळा ।—रा रू

२ ध्यान, याद ।

उ०—घडलिया री माळ रे उनमान वीत्योडा वरम एक-एक करन उणरी मगसी मीट साम्ही सुभट घूमण लागी ।—फुलवाडी

३ एकाग्र होकर बैठने की अवस्था या भाव ।

४ निद्रा, नीद, तद्रा ।

५ नयन, नैत्र । (ह ना मा)

६ किसी रोग के प्रभाव से होने वाली निद्रावस्था, बेहोशी ।

ज्यू—ताव री मीट ।

७ नशे में घुत होने की अवस्था ।

रू० भे०—मीट, मीटि, मीटी, मीठ,

मीटवायु—स० पु०—घोडे में होने वाला एक रोग विशेष । (शा हो)

मीटिंग—स० स्त्री० [अ०] १ बैठक, गोष्ठी ।

२ किसी सभा या समिति का अधिवेशन ।

मीटि, मीटी—देखो 'मीट' (रू भे)

उ०—मीटि आगलि देख रही रे, ऊतर नापु आज रे । किहि कुज माहि नासी रह्या रे, मुहि बाहु छु महाराज रे ।

—नळाख्यान

मीठ-स० स्त्री० [स० मिष्ट] १ मीठा होने की अवस्था या भाव ।

२ मीठास, मधुरता ।

वि०—१ मीठा, मधुर ।

उ०—१ खाधी सोही मीठ है । अग्र जनम किए दीठ । ऊखाणी भदता पढे पूरव पद दे पीठ ।—बा दा

उ०—२ सिमरी सांस उसास, ग्रह रस मीठ हो । आवागमन न होय, आनंद पद दीठ हो ।—स्त्री हरिरामजी महाराज

२ देखो 'मीट' (रू भे)

उ०—उण कानी गधा री मीठ ई को पढी नी ।—फुलवाडी

मीठउ—देखो 'मीठी' (रू भे) (उ र)

मीठडउ, मीठडी—देखो 'मीठी' (अल्पा, रू भे)

उ०—ए प्रवचन निग्रथ तणउ जुगतई वडउ हो लाल । साकर सेलही द्राख थकी पिए मीठडउ हो ताल ।—वि कु

मीठम—स० पु० [स० मिष्टम्] मीठास, मधुरता ।

उ०—१ ऊख गिरी घर ऊपरै, यल खाढामय आव । तूवा मीठम होय तो, सूवा होय सबाव ।—बा दा

उ०—२ बायक लवग मसाला वाटे, जीभ सकर मीठम जेम । सोहडा कज कौडा परसा सुत, आखर तणी राम रस एम ।

—वसराम रावल

मीठवाणीया—स० पु० व० व० [स० मिष्ट-पानीय] मीठे पानी के कूप की सिचाई से उत्पन्न गेहू ।

उ०—सोभत था कोस न भरेहर कूण माहे । लोक कोई नहीं, वसीया रहै । खेत मखरा ऊनाळी ढीवडा १० हुवे, खारधीया मीठवाणीया । जोड सखरी छे ।—नैणसी

मीठाण—देखो 'मिष्ठान्न' (रू भे)

उ०—तठा उपरायत मोदिया नै हकम हुवो छे । भूजाई सारू सारी ही वसत सीधो मीठाण वेसवार सरव लेय राती-नाही चालज्यो ।—रा सा स

मीठाणी मीठानी—स० स्त्री० [स० मिष्ट + पानीय] वह भूमि जिस पर निरन्तर मीठे पानी की सिचाई द्वारा फसल उत्पन्न की जाय ।

मीठा—स० स्त्री०—एक व्यवसायिक जाति । (सभा)

मीठाखाऊ—वि०—अपेक्षाकृत अधिक मीठा खाने वाला ।

मीठागेहू—स० पु०—मीठे पानी से उत्पन्न होने वाले गेहू ।

उ०—ढीवडा ४ मीठागेहू हुवे ।—नैणसी

मीठापणी—स० पु० [स० मिष्ट + रा० पणी] १ मीठा होने की अवस्था या भाव, मृदुता ।

उ०—गत साकर काकर ग्रही, किसमिस सकुच कुडैह । प्यारी मुख मीठापणी, जोडे कमण जुडैह ।—र हम्मीर

२ मीठास, मधुरता ।

मीठापोइया—स० पु०—घोडे की एक मध्यम चाल ।

मीठावरी—वि० [स्त्री० मीठावरी] मीठी वस्तुएं खाने का इच्छुक ।

रू० भे०—मीठावरी,



मीठाबोली-वि० [स्त्री० मीठाबोली] मधुर वचन बोलने वाला मृदुनापी, ।

उ०—ममाङ्गली मीठाबोली मरम तरुणा इसी समा घनई एतला देम तणुट धविपति ।—व म

मीठास—देखो 'मिठाम' (रू भे)

उ०—१ थोड़ी देर अठिनै-वठिनै-री वाता हुणी रँ बाद गोपाल मीठास मू पूटियो- चारै माथै कित्तो करजो है ।—वरमगाठ

उ०—२ आठमा अग ना पाठमइजी, एहवउ छइ रे मीठास । सरम अनुभव रम ऊपजइजी, सपजइ पुण्य नो रामि ।—वि कु

उ०—३ तरै मन मे कहो में पहला सुणी थी जे प्रभु रा वैकुंठ मे पाणी इसी छे जे उण री मीठास घटै न स्वाद बिगडै ।—नी प्र

मीठी—१ देखो 'मीठीमा' (रू भे)

२ देखो 'मीठी' (स्त्री)

उ०—पाचणा रँ दार लगावतो नाई भीणा सुर मे मीठी रागा करण लागी ।—फुलवाडी

मीठीईद-म० स्त्री०—मुमलमानों का एक त्योहार विशेष ।

मीठीकोली-म० स्त्री० [स० मिष्ट-कवल] देवताओं को चढ़ाया जाने वाला मीठा पदार्थ ।

वि०—चरकी कोली

मीठीछुरी-वि०—घोवावाज जो मुख मे मीठी-मीठी बात करे व मन में घातक भावना रखता हो, छलिया, कपटी ।

स० पु०—घोषा, कपट ।

क्रि० प्र०—मारणी, लगानी ।

मीठीजाल-म० स्त्री०—वह जाल का वृक्ष जिसके फल मीठे हो ।

मीठीभील-स० स्त्री०—मीठे पानी की भील ।

उ०—किणो एक मीठीभील रा काँठा माथै जामुन री एक लाँठी रख हो ।—फुलवाडी

मीठीवाणी-स० स्त्री०—ऐसा बोल या वचन जो सुनने में भला जान पड़े, मधुर वचन ।

मीठीबोरही-स० स्त्री०—बोर का वह वृक्ष जिसमें फल मीठे हों ।

उ०—दोनू बंता एक मीठीबोरही रा बोर खावण ठूकी ।

—फुलवाडी

मीठीमाँ-स० स्त्री०—बड़े बाप की स्त्री, बही माँ, ताई ।

रू० भे०—मीठी,

मीठीमार-स० स्त्री०—१ तीक्ष्ण व्यगात्मक हृत्प ।

२ ऐसी चोट जो ऊपर से मामूली जान पड़े परन्तु उसकी आन्तरिक पीडा बहुत होती है ।

मीठू—देखो 'मीठी' (रू भे)

उ०—मिधु यकी मर धविक प्रतिसि मि मन माथि दीठ । येह नू जल काई अरगि न आवि, आ तो अत मीठू ।—नळाख्यान

२—देखो 'मिट्ठू' (रू भे)

मीठीउत्तर-म० पु०—१ अत्यंत मीठी भाषा या बोले स्वर से किया जाने वाला इन्कार

२ मांगने वाले की इच्छा पूर्ति न कर सकने की दशा में उसे न्यूनाधिक कुछ देकर सन्तुष्ट करने की क्रिया ।

उ०—हरख मिलै आदर करै पोखै घाल मगाम । मीठीउत्तर मोकलै, मीठी सूव कहाय ।—वा दा

मीठीकबो-स० पु०—१ मीठे खाद्य पदार्थ का आस ।

उ०—मीठी बोलै हम मिलै पातां नह ठक पल्ल । कर आदर मीठा कवा, जोमाई जेहल्ल ।—वा दा

२ गुप्त वार्ता ।

क्रि० प्र०—लेंणा

मीठीडी—देखो 'मीठी' (अल्पा, रू भे)

मीठीठग-वि०—मला बनकर घोषा देने वाला, कपटी ।

उ०—पोई परियका सदा निसका सोखड-स सगषा है । घन लेवत धोठा वेत न दीठा मीठाठग मोहदा है ।—ऊ का

मीठीतेल-स० पु०—तिली का तेल ।

उ०—गिलविलियोडा माथा में मीठातेल री टीपरिया राळी तव आकडा री बळत मिटी ।—फुलवाडी

मीठीनोंत्र, मीठीनीमडों-स० पु०—नीम का वह वृक्ष जिसके पत्ते मीठे होते हैं ।

मीठीवच, मीठीवण, मीठीवचन, मीठीवयन, मीठीवैण—देखो 'मीठीवचन' (रू भे)

उ०—१ आठों पँर अगोठा ओपम, उर मीठावच आगुं ।

—ऊ. का

उ०—२ कोयन रा मीठावैण मुणनै पूछयो-कोयल वाई काले तो घारा बोल जारा आक ज्यू हा, पण आज मिमरी सू ई मीठा कीकर ? —फुलवाडी

उ०—३ बैरी रा मीठावचन, फल मीठा किपाक । वे खाषा वे मानिया, हुवा कतांत खुराक ।—वा दा

उ०—४ जतरी मुख आखी जवन, बात वणाय वणाय । सह भूठा मीठावयण, दीठा न आया दाय ।—रा रु

उ०—५ मीठावैण प्रकाम मुख, जग में लालच जीत । ऊधम हत्या अत्यडी, काना सुण निज क्रीत ।—वा दा

मीठीमार-म पु०—प्रियतम ।

उ०—लाबो तो लगवो हो हजा मारु लाबो दोय चार । हो काई म्हारी होड हो म्हारा मीठामारु ।—लो गी

मीठीमेराणी-स० पु०—सतलज नदी की एक शाखा जो पाकिस्तान के पूर्वी भाग में बहती है ।

मीठी-वि० [स० मिष्ट] (स्त्री० मीठी) १ शक्कर और दाहद की तरह जो स्वाद में मधुर हो, मीठा ।

उ०—१ बेरी रा मीठा वचन, फल मीठा किपाक । वे खाषा वे



मानियां, हुवा कसात खुराक ।—बा दा

उ०—२ कहै हे भीखण बाबा! हू भगता नै लापसी जीमाऊ सो काई हुवै ? स्वामीजी बोल्या लापसी में जैसो गुळ घालै जैसी मीठी हुवै ।—भि द्र.

उ०—३ नवा गांव मे पेठ जमावण सारू वो मिमरी सू ई मीठी बोलण लागी तो ई उण रँ अतस री विस लोगां सू छांनो नी रह्यो ।

—फुलवाडी

उ०—४ सगे-सगे री रळग्यो जी, मीठा हुया ज्यू सक्कर धो । सगी सगे री वाजे जड, वात वैठगी आछै घड ।—दसदोख

२ स्वादिष्ट, जायकेदार, सुस्वादु, रुचिकर ।

उ०—१ साच बोलियां टुकडा सूका, मिळ जावँ सोई मीठा । कूड बोल पक्वान करावँ, घूड वरावर घीठा ।—ऊ का

उ०—२ ऊताळी सिगळी सीव मे सेझी । पांणी हाते ७ तथा ८ घणी मीठी ।—नैणमी

१ प्रिय, प्यारा ।

उ०—१ नद इद्र कोपियां, नद नदण गुण दीठी । सेखै छलि गग नू माल बळ लग्यो मीठी ।—रा रू

उ० २ वाल्ही घण बालम मीठी मुख बोली । घडियां अम्रत री घुळती घण मोली ।—ऊ का

४ सुशील, सरल, विनम्र ।

उ०—१ आपरँ साळस अर मीठा सुभाव सू वा जणा-जणा री मन मोह लियो ।—फुलवाडी

५ सीधा-सादा ।

उ०—सगळां नै मीठो जवाव देतो । किणी माथे कदै ई छोटो नी देवतो ।—फुलवाडी

६ कोमल, मधुर ।

उ०—१ उठँ एक कोयल मीठा सुर मे कुहू कुहू करतो ।

—फुलवाडी

उ०—२ सुर बडो मीठो हो अर गावण वाली ही टेपरिया भांभी री लुगाई रभाडो ।—रातवासी

उ०—३ साचो कहै सदेस वैण मीठा करू । राज मुदै पट हथ्य रग महिला घरू ।—मा वचनिका

७ मन भावता, रुचिकर अनुकूल, ।

उ० १ पातर वाली प्रीत, मीठी लागे प्रथम मन । मद हुआ घन मीत, हुए विरस बडनी हुवँ ।—बां दा

उ०—२ राणांजी म्हाने या ही वदनामी मीठी ।—मीरा

८ ठीक, उचित, भला, अच्छा ।

९ घीमा, मद, हल्का, थोडा ।

ज्यू-मीठो दरद, मीठी पोड ।

उ०—उणरी मीठो माजनी ई पाडता । पण तो ई वो आपरो श्री ग्यान छोडियो कोनी —फुलवाडी

१० लाभ दायक ।

उ०—पण ऊदरी तो चटोकड़ी घणी बळती ही । आपरा घणी रा घीमा सुभाव नै जाणती ही । करडावण रा मीठा सवाद चाखियोडी ही ।—फुलवाडी

११ मोद भरा, प्रेम भरा ।

उ०—१ प्रेमिका सू मिळणे रा मीठा मनसूवा वांचे अर मतर सीधा होणे री अवधी नै आख्या फाड्या अडीकै है ।—दसदोख

उ०—२ सोनळ नै सिरावण करण सारू मीठा नेवरा करती ।

—फुलवाडी

१२ घूर्त, पाखण्डी ।

स० पु०—१ मीठा खाद्य पदार्थ ।

२ मिठाई, मिष्ठान्न ।

उ०—मीठा मेवा जीमते वोह भोजन वोह भाति । ता सु तन छैती पडै, जन हरीया करि खाति ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

३ नमक का एक नामान्तर ।

रू० भे०—मिठ, मिठ्ठी, मीठी, मीठउ, मीठू,

अल्पा०—मिठडो, मीठडउ, मीठडो मीठडो,

मह०—मिठु, मिठ,

मीठीवचन-स० पु०—१ मुह से बोला जाने वाला वह शब्द जो सुनने वाले को प्रिय लगे ।

२ सुरीली आवाज ।

रू० भे०—मीठोवच, मीठोवैण, मीठोवचन, मीठोवयन, मीठोवैण,

मीड—देखो 'मीड' (रू भे )

उ०—कोजँ कुण मीड न पूगे कोई, घरपत भूठी टसक घरँ ।

—भीमसिंह री गीत

मीडको—देखो 'मीडको' (रू भे )

उ०—तिण पणि त्रिकम जे परमेश्वर का जस को पार न पायो तो मो मीडका को किसी वस छै ।—वेलि टी

मीडाआवळ-सं० स्त्री०—प्राय एक फुट ऊंचा एक प्रकार का धूप जो सनाय से मिलता-जुलता होता है व उसी के गुणों का होता है ।

मीड—देखो 'मीड' (रू भे )

उ०—१ अकवर साहू निरबिलया, जेता चापावत्त । मीड सहस्तां मत्थणे, लकल गिणै त्रिणमत्त ।—रा रू

उ०—२ जग मझ राम न को तो जेहो, केहो भूपत मीड करा ।

—र. ज-प्र

उ०—३ मिळै न मीड मीड के अरीड रोडते अरी । करँ न ईड और की उहँ न ईड को करी ।—ऊ का

मीडणी, मीडवो—देखो 'मीडणी, मीडवो' (रू भे )

उ०—१ असल सू नकल मीडो असल, गुरगम हीणा गम नही । अमलियां हूत देखो अपत, हूका वाळा कम नही ।—ऊ का

उ०—२ कवी कहै इण मनवार ने मीडो जमी रँ सारू परम सगा पहला इण तरँ मिळिया नें पछै इण तरँ मनुहारां कर सस्त्र वाहै ।

—बी स टी

उ०—३ वादगी मोठ आहूर लग वगमर्त सुतन वम वम-वट तीम मोटो । सुतन वम वम सम मोडज, 'माल' सुत 'लखण' सुत समी मोटो ।—नेगुगी

मोडणहार, हारो (हारी), मोडणियो—वि० ।

मोडियोडी, मोडियोडी, मोडियोडी—भू०का०कृ० ।

मोडोजणी मोडोजणी—कर्म वा०

मोडियोडी—देखो 'मोडियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मोडियोडी)

मोटुस-स०पु० [स० मोटुप] शफ नामक आदित्य का एक पुत्र ।

मोटो—देखो 'मोटो' (रू भे) (उ र)

उ०—रायामन पूगा काम खांनी देखि अडिगा । मोटा की तरह सू एक टक्कर ले मुरडिगा ।—शि व

(स्त्री० मोटो)

मीण—१ देखो 'मिण' (रू भे)

उ०—जातु बाहिरी को अजे तू न जांणे, निसांणे फणे मीण पाखे न माणे ।—ना द

२ देखो 'मैण' (रू भे)

उ०—मीण मगीसउ मन्न करि, कठिन पणउ तू काटि । काम-कुतूहल-केरडा, वेच्छि ! म वेला वाटि ।—मा कां. प्र

३ देखो 'मिण' (रू भे)

४ देखो 'मीन' (रू भे)

मीणमेल—देखो 'मीनमेल' (रू भे)

उ०—घन अर प्राण दोनू गमावणा मे अवै कीं मीणमेल नी ।

—फुनवाडी

मीणवाखर-स०पु०—एक प्रकार का घोडे का पाखर ।

उ०—तेह घोडे पच विघ पाखर माचरी, मीणवाखर मालवाखर, कातली आली पाखर ... ।—व स

मीणा-स० स्त्री०—एक जाति ।

उ०—नीजामा नई नायता, माछी मित्या गुमार । मीणा मोची मोकळा, मृ की गया दूमार ।—मा कां प्र

रू०भे०—मीणा, मैणा ।

मीणिघो, मीणियो-स० पु०—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ ! गुडीआ सणीआं वन्तूरीआ, प्रतायीआ कुमभीआ मोत्रीआ माडवीआ मीणीआं वाटलीआ जलोदरीआं ।—व स

२ देखो 'मिणियो' (रू भे)

उ०—नगही चिगयग मोडयी मीणिघं सू परिया पटकी ।

—दसदोख

मीनी—१ देखो 'मिण' (रू भे)

उ०—बडरागउ हीरागरउ फुलयागरउ पूतलीउ बहूमूल धूगोलिय मीनीय काल ।—व०म०

मीणीघर—देखो 'मिणीघर' (रू. भे)

उ०—मैर पछी साम सुर द्रुमी सुक मीणीघर, जती हण मछरी पयोद पाथ जोड ।—ठा सावर्तसिह री गीत

मी'रोदार-वि०—मासिक वेतन लेने वाला ।

उ०—निकमाळे निकमा फिर ना, लगे कूटवा कारही । मी'रोदार मजूरी करे, विच-विच अरणी वारही ।—दसदोख

मीणी, मी'णी [स्त्री० मीणी] १ मीणा जाति का व्यक्ति ।

२ देखो 'महीनी' (रू भे)

उ०—१ दलाल री हिम्मत दगी-बोल्हो-सुगाई मरै छं मी'णी ही नी हुवो है । डांगरी थोडो ही हो ?—दसदोख

उ०—२ अत्यु चेत घग्म नर वरै, आता खडी उठावता । मगळिया मोमर भरावै, मी'णे घडी भरावता ।—दसदेव

रू०भे०—मैणी ।

मीत—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ महा दिय मान करी गुह मीत । तारे सह कीर कुटुब महीत ।—हर

उ०—२ वरस वासठो कातिक वोता । मोकम बलू किया निज मीतां —रा रु

उ०—३ पून्य प्रताप होय अग पूरन, पाप प्रताप अपंगी । प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत मीत कुसंगी —ऊ का

उ०—४ थपे दाम कर मथर, रघुवर किता अरोड । विरद पीत 'सागर' त्रिये, मीत तणे कुळ मोड ।—र ज प्र

मीतो—देखो 'मित्र' (अल्पा, रू भे)

उ०—है जग वागा दसमाय हता । माहेम बाछल्य सुकठ मीता ।

—र ज प्र

मीयो—एक वस्त्र विशेष ।

उ०—नव पला रो मीयो रहती । दम पला रो लवायची रहती । जाडी पीछियां ताई काछ रहती ।—वां दा ख्यात

मीन-स०स्त्री० [स] १ मछली । (प्र मा)

१ जळ अवाहन जीवर्णो, दूर हुआ प्रति दीन । तू गगा तो जळ तरणी, मो कद करसी मीन ।—वां दा

२ बारह राशियो मे से एक राशि जिसमें पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्र पद तथा रेवती नक्षत्र होते हैं । (अ मा, ना मा)

उ०—रचि मीन रामि सनि करक राह । अरु मकर रासि केतह अयाह ।—सू प्र

३ विष्णु के चौबीस अवतारों में से मत्स्यावतार । (नां मा.)

उ०—हम मीन क्रूरम हुवो, सीमरतार समथ । सरित हुवो द्रव होय सो, किस अछेरा कत्य ।—वां दा

४ मछली के आकार की हस्त रेखा ।

उ०—भुज प्रलव आजान कमळ आकृति पद कोमळ । जव भवुज  
ध्वज कळस मीन अकुस जवूफळ ।—रा रू

५ सशय, सदेह ।

६ देखो 'मीनमारग'

उ०—भक्त जोग परे हठ जोग है, सांख्य जोग ता आगी । मीन  
पपील विहग पुनि कहिये, तीहू राह चीन बडभागी ।

—स्त्रीहरिरामजी महाराज

वि०—मर्यादाच्युत, पतित, नीच ।

रू० भे०—मीन, मीण, मीना,

अल्पा०—मीनी,

मीनकेत, मीनकेतन, मीनकेतु—स० पु० [स० मीनकत, मीनकेतन मीनकेतु]

मदन, कामदेव । (प्र मा, ह० नां. मा)

उ०—ज्वाळा घाळें नेत मीनकेत ज्यू पचाता जयौ, रुकां हूर चाता दळी  
विखम्मी रोवाण । राहा दहू बीच एक अनम्मी धीजेंस राजा,  
जाणियो जिहांन जम्मी ठामतो जोधाण ।—हुकमीचद खिडियो

मीनख—१ देखो 'मनुष्य' (रू भे) २ देखो 'मिन्ख' (रू भे)

मीनखा—देखो 'मनीसा' (रू भे.)

मीनगघा—स० स्त्री० [स० मीनगन्वा] व्याम की माता सश्यश्रुती का  
एक नाम ।

मीनडो—देखो 'मिन्नी' (अल्पा, रू भे)

उ०—लीजोए मीनडो रुयडो ए ।—धरमपत्र

मीनति, मीनती—देखो 'मिन्नत' (रू भे)

उ०—१ सत्तर सहस गुज्जरधर घसी, तिणि प्रधान मूक्या अम्ह-  
भणी । कुमरि मगावी मीनति करी, दीन्ही ऊमादे कुमरी ।

—ढो मा

उ०—२ नेमजी हो सउ मीनति करता थका हो राजि, मत जावउ  
मुक्क मेलि ।—वि कु

उ०—३ फिरि फिरि मीनती वीनती जिनपति केती कराय ।  
गिरुमा साहिब आगलि लाग सही कहवाय ।—उदयविजय

मीननाथ—स० पु०—मत्स्येन्द्रनाथ का एक नामान्तर ।

मीननिवास—स० पु० [स०] १ जल, पानी ।

२ समुद्र, सरोवर ।

मीनमारग—स० पु० [स० मीनमार्ग] योग साधना के तीन मार्गों में से एक ।

वि० वि०—इसमें साधक अपने ब्रह्म की उपासना में लीन रहता है  
और जिस प्रकार मछली हर वक्त जल में रहती है और क्षणिक  
रूप से बाहर निकलती है उसी प्रकार से साधक क्षणिक रूप से,  
जिज्ञासु के प्रश्न का उत्तर देने तक ही, ससार की ओर देखता है ।  
ऐसे साधक को वरियान पद प्राप्त ब्रह्मनिष्ठ योगी कहा जाता है ।

मीनमेख० स० पु०—१ सशय, सदेह ।

उ०—१ सिकोतरी रै मूढां सामी जोया मन्त्री रा वेटा नै पूरग  
विस्वास व्हैगो के काम इक्कीस आना वण जावैला इण मे की

मीनमेख नी ।—फुलवाडी

उ०—२ पीडिया सू जुलम करणिया इणरी लाय मे भसम व्हैला ।  
पगथळियां चाटण वाळा इण राज री आंकी आयाग्यो । इण मे  
की मीनमेख नी ।—फुलवाडी

२ कमी, खामी, कसर ।

उ०—१ राजाजी वळें खराय खराय पूछघी—इण में तो थनै की  
मीनमेख निगे नीं आवैं ।—फुलवाडी

उ०—२ सब सू पै'ली राजव्यास जका नखतर बाच्या वा मे की  
मीनमेख नी ।—फुलवाडी

३ आगा-पीछा, सोच-विचार ।

रू० भे०—मीनमेख, मीणमेख,

मीनहा—स० स्त्री० मछली के शिकार करने का यन्त्र, वसी । (अ मा)

मीना—स० स्त्री०—१ उषा की कन्या व कश्यप की पत्नी ।

[फा०] २ सोने चांदी पर किया जाने वाला रग-विरगा काम जो  
चमकीला एव ठोस होता है ।

१ रग-विरगा शीशा ।

४ नीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न ।

५ शराब का पात्र, सुराहो ।

६ शराब की बोतल ।

७ गिनती, सख्या ?

उ०—एक घायल ही भीना, राति-दिवसि न मीना । रुधिर-का  
प्रवाह नदी माहिं मित्या । आवारत अनिवव होवण लागउ ।

—अ वचनिका

८ देखो 'मीन' (रू भे)

उ०—जगत नगीना हो लाल, आयौ हु तुक्क सरणइ । जिम जल  
मीना हो लाल, लीणउ तिम तुक्क चरणइ ।—वि कु

रू० भे०—मीणा,

मीनाफार—स० पु० [फा०] सोने चांदी पर रग-बिरगा काम करने वाला  
कारीगर ।

मीनाकारी—स० स्त्री० [फा०] सोने-चांदी पर किया जाने वाला रग-  
विरगा कार्य ।

उ०—मीनाकारी माळिया चितरे चित्र अनूप । ताकी सोभा को  
कहे, नानाविध के रूप ।—गजउद्धार

मीनावाजार—स० पु० [फा०] अकबर के राज्यकाल में लगने वाला एक  
विशेष प्रकार का बाजार जिसमें विशेष कर मीनाकारी की चीजें  
क्रय-विक्रय होती थी ।

मीनावाव—स० पु०—एक प्रकार का सरकारी लगान ।

मीनार—स० स्त्री० [अ० मनार०] ईंट पत्थरों से की हुई, स्तम्भ के  
आकार की गोलाकार व बहुत ही ऊंची, चुन्नाड या रचना, लाट ।

रू० भे०—मुनार

मीनारोग—स० पु०—मीन की सक्राति के दिन प्रतिवर्ष, सिरोही में  
लगने वाला मेला जाति का एक बड़ा मेला । (मा म)

मीनालय-म०पु० [स०मीन+भालय] समुद्र ।

मीनी—१ देखो 'मिनी' (रू भे)

उ०—दाढ़ जीव भजा विष काळ है, छेनी जाया सोई । जय कुछ वम नहि काळ का, तब मीनी का मुख होई ।

—दाढ़वाणी

२ देखो 'मीन' (भल्पा, रू भे)

उ०—दाढ़ ध्यान धरै का होत है, जे मन का मँल न जाई । वक मीनी का ध्यान धर पशू विचारे खाई ।—दाढ़वाणी

मीनोदर-स०पु० [स०मीन+उदर] मच्छी का पेट ।

उ०—हुंवारि वि माहै पछ्यो, मीनोदर रह्यो केम । गणिका धरि सुक किम थयो, भाव्यो जिम छै तेम ।—वि कु

मीनी-स०पु०—१ वह रगीन दीया जिमसे सोने-चादी पर नक्काशी होती है ।

उ०—१ सुनही गुलजार कस्मीर के काम । मवजी असम सघ मीने के विराम ।—सू प्र

उ०—२ रग केसर कीया मन कै सनेह सू । सोनें री सीसी और, मीनें कै पियालै भलवेली ।—रसीलैराज रा गीत

मीम-स०पु०—दुसाला ।

मीमचियो—देखो मीमचो' (भल्पा, रू भे)

मीमचो—देखो 'मीमचो' (रू भे)

उ०—मुगल री मीमचो विन्यायत री भाली । मिघ री गोटी प्रेम री प्याली ।—मयागम दरजी री बात

मीमजर—देखो 'मिमजर' (रू भे)

मीमलइ, मीमली-स०स्त्री०—धीर बहूटी ।

उ०—मांझिया सरोज भयग चइ मायइ, हरणाखी चित लावन हरि । अतिरगता विराजइ ऊपर, पगथळिया मीमलइ परि ।

—महादेव पारवती री बेलि

मीमांस—देखो 'मीमांसा' (रू भे)

मीमांसक-स०पु० [म० मीमांसक] १ मीमांसा करने वाला ।

२ मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता या पण्डित ।

मीमांसा-स०स्त्री० [म] १ किसी विषय, बात या तत्त्व पर किया जाने वाला विवेचन, विचार या निर्णय, समीक्षा ।

२ एक वैदिक दर्शन जिमका विषय वेदोक्त धर्म की व्याख्या है । यह पूर्व मीमांसा व उत्तर मीमांसा नामक दो भागों में विभक्त है ।

उ०—मांझ्य मास्त्र मे कपिल मम, अस्तिक्रम समझाय । मीमांसा मे जैमिनी, धरमकाइ करवाय ।—ऊ का

वि०वि०—मीमांसा, कर्म मीमांसा और ज्ञान मीमांसा, कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड दोनों के लिये प्रयुक्त होता है । इसीलिये प्रथम को 'पूर्व मीमांसा' और द्वितीय को उत्तर मीमांसा कहते हैं । पूर्व और उत्तर शब्दों से स्पष्ट है कि वस्तुतः ये दोनों शास्त्र एक ही दर्शन

के अंग हैं ।

पूर्व मीमांसा में मुख्यतः वैदिक कर्मकाण्ड का विवेचन है, इस लिए इसे कर्म मीमांसा भी कहते हैं । इसमें वेदों के यज्ञपरक सदिग्ध स्थलों का विचार करके उनका स्पष्टीकरण किया गया है । इसमें आत्मा, जगत्, ब्रह्म आदि का विवेचन नहीं है और वेदों तथा उसके मन्त्रों की ही नित्य तथा सर्वस्व माना है, इसीलिए इसकी गणना अनीश्वरवादी दर्शनों में होती है । उत्तर मीमांसा में ब्रह्म अथवा विद्वात्मा का विवेचन है, इसलिये यह वेदान्त दर्शन कहलाता है ।

गीतम बुद्ध ने वेदोक्त धर्म के कर्मकाण्ड-पक्ष पर प्रहार किया । इसके फलस्वरूप जैमिनी, शबर, कुमारिल भट्ट रामानुज, माधवाचार्य आदि वेदज्ञों ने अपने धर्म की सुव्यवस्थित रूप से रखने के लिये प्रयास किये । इनमें से जैमिनी का प्रयास सर्वोत्तम रहा और "कर्म मीमांसा सूत्र" मीमांसा का मौलिक ग्रन्थ हो गया । शबर ने इस पर अपना भाष्य लिखा और कुमारिल और प्रभाकर ने इस भाष्य की व्याख्या की और बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का खण्डन किया तथा उसका प्रभाव क्षीण किया ।

मीमांसा को लोग प्रायः प्राचीन कर्मकाण्ड समझते हैं इसी कारण इसकी कटु आलोचना करते हैं । परन्तु वस्तुतः मीमांसा कर्मकाण्ड न होकर कर्मवाद है । यह कर्म और उसके फल को बिना ईश्वर के, अपूर्व या नियोग की मदद में सम्बन्धित करती है और निष्काम कर्म करने पर जोर देती है । इस अर्थ में मीमांसा की शिक्षाएँ सदा ग्राह्य हैं ।

रू०भे०—मीमांसा, मीमांसा,

मीमण—१ देखो मेण' (रू भे)

उ०—दीपत दीया मीमण ना, मांझि अंग मद मेहेलि । अगोचरि उरइ-करइ, कत सरीसी केलि ।—मा का प्र

२ देखो मीमी' (स्त्री०)

मीमां—देखो 'मिया' (रू भे)

उ०—सवत १७६६ स्त्रीजी अंगमेर भाय लागा तरे सोत्रे खानजादो यो सो सेहर मीमा ने घेरीयो ।—रा व वि

(स्त्री० मीमांसी)

मीमाद—देखो 'मयाद' (रू भे)

मीमादी—देखो 'मयादी' (रू भे)

मीरबर-स०पु०—अमीर ।

उ०—पहँवाज गजराज, राउ राउत्र नरेसुर । पहे खान उमराउ, मुगल भूग मीरबर ।—वचनिका

मीर-स०पु० [म०] १ बादशाह ।

उ०—१ विहग बडाळा पायगा, रावत वाका धीर । माझी देणी मारणी सो मीग मिर मीर ।—कुबरमी माखला री वारता

उ०—२ अठि महमूदसाह नू जीति दिल्ली पै पदह १५ दिन पातमाही करि आरघावरत रा केही अवीमा नू दडि मीर तैमूर-

वेग रं पाछो गया केहै दिल्ली रा सूवादार जठी तठी आप आपरें  
मर्त्त रहण हूका ।—व भा

२ राजा, नवाब ।

उ०—पातसा स्त्री अकबर १ जंबूद्वीप माहद प्रवरत्तु छद्, अन्य  
पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहमद खान, खोजा सरखिल  
साहणा, ते सधला करइ सेवा ।—व. स

३ सरदार, सामंत ।

उ०—१ होदा मझि लोह करं करि हाक, महारिख देखि हूवै  
मुसताक । हिलौळि छडाळ ग्रहे चद्रहास, तछे घण मीर कलम्म  
तरास ।—सू प्र

उ०—२ दाढी कर घात मीर ऐसैं कुछ बोलै । प्राण के गुमान भर,  
आसमान तोलै ।—रा रु

उ०—३ घाइ घाण उतरैं, खान सुरताण निघट्टा । राव रांण हुइ  
रहच, मीर उमराव अहट्टा ।—गु रु व

४ प्रधान मुखिया, नायक ।

उ०—मीर अकबर साह सू, बोलैं ग्यान सजुत । काफर साहा  
अवगुणी, गो आणी करतुत ।—रा रु

५ किसी बड़े सरदार का पुत्र ।

६ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—दाहू जे तू मोटा मीर है, सब जीवो मे जीव । प्रापा देख न  
भूलिये, खरा दुहेला पीव ।—दादूबाणी

७ मुसलमान, यवन ।

उ०—ओरैं अमि 'ऊदल' जग अघाह । निजोदत मीर खगा नर  
नाह ।—सू प्र

८ सैन्य जाति की उपाधि ।

९ बहुत से व्यक्तियों में सबसे पहले काम करने वाला अनुवा ।

१० प्रतियोगिता में प्रथम रहने वाला ।

११ ताश आदि में बड़ा पत्ता जो दहले से अधिक महत्व का  
होता है ।

१२ धार्मिक आचार्य (इस्लाम)

१३ ईश्वर, मालिक ।

उ०—१ दाहू कारण कंत के, खरा दुखी बेहाल । मीरा मेरा  
महर कर, दे दरसन दर हाल ।—दादूबाणी

उ०—२ मीरां भेटण मेक तू, जम हदा दांणी ।

—केसोदास गाढण

१४ पति, स्वामी ।

उ०—दसदस पास खवासी दासी चपक वरण ओढिया चीर । सिस-  
वदनी नाखैं सिसकारा, मीरा कहा हमारा मीर ।—रघो मुहत्तो

[स० मीर] १५ समुद्र, सागर ।

१६ गर्वत, पहाड़ ।

१७ सीमा, हद ।

१८ जल, पानी ।

रु० मे०—मीरी

मीरज—स० पु० [फा०] गुसलमान ।

उ०—१ चढे मीरजा मीर मीयां किलक्क । चढे खान निव्वाव  
खाहा खाइक्क ।—गु रु व

उ०—२ पै गजा सीस दे रिक्कसाव, घण 'अमी' मीरजां करे घाव ।

आमरी बार दाखैं अमीर, वामीदघ भोका महत बीर ।—वि स

मीरजादू, मीरजादो—स० पु० [फा० मीरजाद] १ किसी उमराव,  
सरदार या सामन्त का लडका ।

उ०—जिस बखत सिर-विलदखां बहादुर ममरजुलमुलक  
पीरोजजंग मीरजादू खान जादू के बीच कैमा दरसावै ।

—सू प्र

२ शाहजादा ।

उ०—रायजादा रा भाला भळकि नै रहीया छै तवलवघा  
मीरजादा बांका बहादुरां नै तारा तवल बाजि नै रहीआ छै ।

—रा. सा स

मीरजो मीरज्यो—स० पु० [फा० मीरजा] १ किसी सरदार, अमीर या  
सामन्त का लडका ।

२ मुसलमान ।

उ०—१ हाथी तहवरखान गौ, गौ सौ घानख भज्ज । घको न  
साहे मीरजा, बाहे सार गरज्ज ।—रा रु

उ०—२ पहियो तकिये सू परा, आहो दियो प्रजक । मसलत  
आया मीरज्यां ऐ ऊठिया असक ।—रा रु

३ सैन्यद मुसलमानों की उपाधि ।

४ शाहजादा ।

मीरतुजक, मीरत्रुजक—स० पु० [अ० मीरतुजक] सेना का प्रबन्ध करने  
वाला, सेनानायक ।

उ०—१ मीरतुजक मारिया, धिखे जमदद कर धारैं । दुझळ खान  
दोरास, पटाभर जिम पूतारैं ।—सू प्र.

उ०—२ ऊमो लोपि अमीर, जवन वह हफतहजागी । मीरत्रुजक  
इतमाम, कियो तदि जहैं कटारी ।—सू प्र

मीरपति—स० पु०—बादशाह ।

उ०—सूर रो तपै नरनाह आखाडसिध, घजवडां पाण गेणाग  
धारैं । मीर भय थरहरैं दूसरा महीपत, मीरपति थरहरैं 'करण'  
मारैं ।—महाराजा करणसिंह रो गीत

मीरवक्सी, मीरवख्सी—स० पु० [अ० मीर + फा० वक्सी] मुस्लिम  
शासन-काल में सरकारी कर्मचारियों को वेतन बांटने वाला अधिकारी  
वि०वि०—सल्तनत-युग में दोबाने आरिज के बाद मीरवक्सी का  
ही सबसे बड़ा पद था । सरकार के समस्त अधिकारियों, मनसब-  
दारों और कर्मचारियों को वेतन मीरवक्सी के कार्यालय से ही  
दिया जाता था । सभी श्रेणियों के मनसबों के नियुक्ति पत्र भी इसी  
के कार्यालय से जारी किये जाते थे । मनसबों का समस्त विवरण  
मीरवक्सी के पाम ही रहता था । सैनिक विभाग की नीकरी के

लिये माने वाले उम्मीदवागे को यह वादशाह के पेश करता था। यह मेना का प्रधान नहीं होता था परन्तु कभी कभी इसे सैनिक अभियानों का नेतृत्व भी करना पड़ता था। इसी के हस्ताक्षरों ऐव सील मुहर के माध्यमनमंत्रों के प्रमाणनय जारी किये जाते थे। इसके अतिरिक्त इसका एक प्रमुख कार्य था वादशाह के महल की रगवली करने वाले रक्षकों की सूची बनाना। इन रक्षकों में बड़े बड़े मनमवदार होने थे और इनकी ड्यूटी प्रतिदिन बदली जाती थी। विभिन्न प्रान्तों में सवाद लेखकों की नियुक्तियां करना एवं उनसे प्राप्त सवादों को वादशाह तक पहुंचाना इसी का कार्य था।

इस प्रकार मीरवन्शी का काम बहुत ही महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी का था। इसका विभाग बहुत ही बड़ा था जिसमें इसके कई सहायक एवं कर्मचारी कार्य करते थे।

मीरवचा-सं० पु० [फा० मीर-वचा] किसी बड़े मीर, उमराव, सरदार या मामत का लडका।

मीर-उहर-सं० पु० [प० मीरवह] जल-मेनाध्यक्ष, जो वदरगाहों पर कर व चुगी वमूल करने का प्रबन्ध भी करता था।

मीर-दार-सं० पु० [फा० शाही-दरवार का एक अधिकारी जो वादशाह में बैठ करने वालों का पहले साक्षात्कार करता था तदनन्तर वादशाह से बैठ करने की अनुमति देता था।

मीरभुचड़ी-सं० पु०—एक कल्पित पीर जिसे हिजडे अपना आदि पुरुष मानते हैं।

मीरमजलस-सं० पु० [फा० मीर-मजलिस] किसी समा या अधिवेशन का नभापति।

उ०—पातिसाहजी सू मालूम करावो। हजूर आबण रो हुकम कीयो। तठें मीर-मजलस रे माथें होय पातिसाह रं निजर पेश कीयो।—जबड़ा मुखड़ा भाटी रो बात

मीरमुसी-सं० पु० [प्र० मीरमुनी] शाही दरवार के समस्त (कलकों) मुशियों का नायक।

मीरमुल्ला-सं० पु० [फा०] बड़ा मोलवी।

उ०—बड़े मीर मुल्ला कहा बात कीनी, खुदा मीरखां को नई भूमि दीनी।—ला रा।

मीरल—देखो 'मीर' (मह, रु मे)

उ०—समीर लय मीरल अचक घकदळा मम, घट खळां न मीरल जुघ कयापो। रजें पतसाह नर समद चतच मीरल। चत बलद ममीरन छजें चापी।—कथियो करनीदांन

मीरसांमा-सं० पु० [फा०] १ मुस्लिम शासन काल का एक अधिकारी।

२ रमोजडे का दारोगा।

३ मान-मामा

वि० वि०—प्रखर के शासनकाल में मीरसांमा दीवान या वजीर

के अधीन कार्य करता था। इसके प्रबन्ध में शाही राजमहल, हरम रसोई, कारखाने आदि थे इसलिए यह एक बड़ा पद माना जाता था। बाद में जहागीर के शासनकाल में मीरसांमा को भी मन्त्रियों के बराबरी के दर्जे में माना जाने लगा।

मीरसिकार, मीरसिकारु-सं० पु० [मीरे शिकार] वादशाहों की शिकार गार्हों का प्रबन्धक।

उ०—पखी जिनावरु की सिकार। कदीलू का विसतार। मीरसिकारु का हुन्नर नजर होत है।—सू प्र

मीरा-सं० स्त्री०—१ मेहता के शासक एवं राठौड़ों की मेहतिया शाखा के प्रवर्तक राव दूदाजी के पुत्र रत्नमिह की पुत्री जो मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज को व्याही गई थी। इसका वचपन का नाम पेमल था। यह ईश्वर की अनन्य भक्त एवं कवियित्री थी। वि० वि०—

जन्म—मीराबाई का जन्म मेहता रियामत के कुडकी गांव में सवत १५६१ के आषण मास में हुआ।

बाल्यकाल व विवाह—मीरा के दादा रावदूदाजी ईश्वर के परम भक्त थे। उन्होंने मेहता में चतुर्भुज जी का एक विशाल मन्दिर बनवाया जो अब भी विद्यमान है। इस प्रकार दूदाजी का समस्त परिवार भक्ति भावनाओं से ओत-प्रोत था। मीरा की माता के विषय में ऐसा माना जाता है कि उनका स्वर्गवास मीरा की अत्यन्त श्रद्धावस्था में हो गया था इसलिये मीरा को उसके दादा के पास कुडकी से मेहता लाकर रक्खा गया। भक्त एक तो भक्ति-भाव पूर्ण वातावरण में रहने तथा अपने पूर्व जन्म के प्रारब्धों के कारण उसमें ईश्वर भक्ति का प्रादुर्भाव बाल्यकाल से ही हो गया। इस सम्बन्ध में कुछ अन्य किंवदन्तियां भी प्रचलित हैं।

मीरा का विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से सवत १५७३ में हुआ। रामदानजी लालम कृत भीमप्रकाश में इस बात का उल्लेख है—

भोजराज जेठो अभग, कवर पदे मृत कीध।

मेहताणी मीरा महल प्रेमी भगत प्रसीध।

कर्नल जेम्स टॉड ने मीरा का पति राणा कुम्भा को माना है, परन्तु इतिहास में प्रमाणित होता है कि राणा कुम्भा व राव रणमल, जो मीरा के दादा के भी दादा थे, समकालीन थे। इसलिये राणा कुम्भा मीरा के पति नहीं हो सकते।

मीरा के पति भोजराज की राणा सांगा के जीवनकाल में ही मृत्यु हो गई। इस अमामयिक वैधव्य से मीरा को इस समार से ब लौकिक जीवन से और अधिक विरक्ति हो गई और श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति भावना अधिक प्रबल हो गई। पति का वियोग ईश्वर के प्रति विरह में परिणित हो गया।

मीरा व पेमल—मीरा का जन्म का नाम पेमल था। इसका प्रमाण ब्रह्मदास कृत भगतमाळ में मिलता है—



न हुवौ घट नास पियो विस 'पेमल' । जास घणी वळ तास जरै ।  
ग्रहियां ब्रिद लाज उवारण आयक, काज इसा महाराज करै ।

परन्तु इसका मीरा नाम कब, कैसे और क्यों पड़ा ? इस सम्बन्ध में कोई पुष्ट एव प्रामाणिक तथ्य नहीं मिलता । पुरोहित श्री हरिनारायणजी विद्या भूषण व कतिपय अन्य विद्वानों का मत है कि मीरा के जन्म से पूर्व उसकी मा ने अजमेर के मीरामा की मिश्रत की जिसके फलस्वरूप इसका जन्म हुआ और नाम भी मीरा रखा गया ।

अन्य मत से—मीरा शब्द का प्रयोग उच्चकुलीन एव सज्जन पुरुषों के लिये किया जाता है । अत उच्च राजकुल में जन्म लेने, ईश्वर के प्रति भक्ति भावना, सज्जनता तथा मानवता के अच्छे गुणों के कारण इसका मीरा नाम पड़ गया । कर्नल जेम्सटॉड ने अपनी पुस्तक 'पश्चिमी भारत की यात्रा' में ब्राह्म के पहाड़ों का वर्णन करते समय 'मीरा' नाम किसी पहाड़ी देवी का उल्लेख किया है । अत मीरा नामक यदि कोई पार्वती देवी रही हो तब तो मीरा का नामकरण उक्त देवी के नाम के आधार पर माना जाना संभव हो सकता है । अन्यथा इसके लिये अनुसंधान अपेक्षित है ।

तीर्थयात्रा—संवत् १५६५ में जोधपुर के राव मालदेव ने मेड़ता पर अपना अधिकार कर लिया तब मीरा अपने ताऊ वीरमदेवजी के साथ तीर्थयात्रा के लिये चली गई और वही (द्वारका में) उनका स० १६०३ में देहावसान हुआ ।

स० पु० [फा०] २ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—मीरां मुझ सौं महर कर, सिर पर दीया हाथ । दाढ़ कळियुग वया करै, साई मेरा साथ ।—दाढ़वाणी

३ स्वामी, मालिक ।

उ०—१ ज्यू राखें ज्यू रहै जहा निरमै तही जावैं । हुकम सो ही सिर हुवै, जिकी मीरां फुरमावै ।—हर

उ०—२ दाढ़ वदीवान है तू वदि छोड़ दीवान । अब जानि राखी वदि मे, मीरां महरवान ।—दाढ़वाणी

४ सज्जन, सुहृदय, भला, सत, उदार ।

उ०—मीरां कीया महर सौं, परदे थैं लापरद । राखि लिया दीवार मे, दाढ़ भूला दरद ।—दाढ़वाणी

५ अमीर, धनवान ।

६ कुलीन, उच्च ।

मीरांबर-स० पु०—मुसलमान ।

मीरांसा, मीरासाह-स० पु०—१ उदार, सज्जन, सुहृदय ।

२ अमीर ।

मीरात-स० पु०—मवेशी, पशु ।

उ०—काहें गाया कूटनैं, घोड़ा आगळ घात । चरण न देवें सीम मे, म्हांरी तो मीरात ।—पा प्र

मीरावमीर-स० पु०—१ बादशाह ।

२ राजा

१ सरदारों का प्रमुख ।

उ०—इसी भात आसुरण हिंदू भभग, जुडें दस कथ जु होता सुजग । बहै ताम कैं बाण मीरावमीर, सुजें होत खड निखडें सरीर ।—शि रु

मीरासी-स० पु० [अ०] मुसलमानों की एक जाति विशेष जो गाने-वजाने व मस्खरेपन का पेशा करती है ।

मीरी—देखो 'मीर' (रु. भे)

उ०—इसा मीरी आंख मुख मांकड जिंसा । करं घात वोले पारसी, बगतर तवा भिल्ले जांणे आरसी ।—अ० वचनिका

मीरूंवरा-स० पु० [फा० मीर+उमराव] अमीर-उमराव, सामंत, सरदार ।

उ०—किसा एक जे छइ राजाधिराज स्त्रीमहिमूद पातसाह ? खान खोजा मलिक मीरूंवरा मलाणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवायमान ।—व स

मीरू-स० पु०—गायो व बैलों के होने वाला एक रोग जिससे उनके शरीर में ग्रन्थियां पड़ जाती हैं एव उनमें कीड़े पड़ जाते हैं ।

मील-स० पु० [अ०] १ १७६० गज या आठ फरलाग की दूरी का एक माप जो प्राय आधा कोस के बराबर होता है ।

२ उक्त माप या दूरी-सूचक पत्थर ।

३ सुरमा या अज्जन लगाने की सलाई ।

स० स्त्री [अ० मिल] ४ बड़े पैमाने पर कपड़े, ऊन, या अन्य वस्तुओं का उत्पादन करने वाला कारखाना ।

ज्यूं—तेल री मील, कपड़े री मील, दाळ री मील ।

उ०—एक पिजारी कपड़ा री एक छोटी सी मील में काम करतो हो —फुलवाडी

५ उक्त कारखाने में चलने वाली बड़ी मशीन ।

मीलणो-स० पु०—देशी रियासतों में लिया जाने वाला एक कर या लगान विशेष ।

उ०—मीलणो ५०) —नैणसी

मीलत—देखो 'मीलित' (रु. भे)

मीलित-वि० [स०] १ मुदा हुआ, बंद ।

२ अधखुला, अधखिला ।

३ पलक झपकाये हुए ।

४ जो नष्ट हो चुका हो, लुप्त ।

स० पु०—एक झलकार, जिसमें दो पदार्थों की समानता के कारण भेद नहीं जान पड़ता है ।

रु० भे०—मीलत,

मीसजर—देखो 'मसजर' (रु. भे)

उ०—१ सालू जरकमी दुमेणा कचीयो तनसुख नीलक पटोली सुप चुनडी अटायण मीसजर तासतो चोरसो ।—व स

उ०—२ मुलताणी ताखी मछीपटण तासतो दुकडी दुमेणा बासतो मीसजर भेरु तनसुख चोरसो अटायण दुमाभी सालू जरकसी कचीयो



चुनही जामसाइ \* ।—व स

मीसरी—देखो 'मिसरी' (रु भे)

उ०—एकर एक कागला रं मान्गु मीसरी लग्योही एक रोटी हाथ आई ।—कुलवाही

मीसल—१ देखो 'मिसल' (रु भे)

उ०—कमधज पाट जीका रं 'केहर', मीणधर आट मीसल चा मोड ।  
—पहाडला आढो

२ देखो 'मिमिल' (रु भे)

मीहर—देखो 'मिहिर' (रु भे)

उ०—बळ यियो दित हरणाक्ष्य अप्रबळ । तेज मीहर धर रसातळ ताम ।—र ज प्र

मु—देखो 'मू' (रु भे)

मुअधारी—स० पु०—अरुणोदय से पूर्व का वह समय जब हल्का हल्का अंधेरा रहता है ।

रु० भे०—मुह अवारी, मूधारी,

मुइयो—वि०—अग्रणी, प्रधान, हराबळ ।

उ०—तद पातमाहजी यानू देख बडा राजी हुवा । नै भौवराजजी वीरमदेजी फौज रा मुइया ।—द दा

मुई—वि० स्त्री० [स० मृत] १ मरी हुई, मृत ।

उ०—मुई मिटीया मुरदार कहत है, हाये हक हलाला । काजी धणी र भौघ घलाली, सब स्वारथ का चाळा ।

—झीहरिरामदासजी महाराज

२ सोतेली,

रु० भे०—मुई,

मुओ—वि० [म० मृत] (स्त्री० मुई) मर गइया ।

उ०—आरण वारण करण नै, सगला मित्या सब कोय । मुओ सेठ अप्रतिथी, सुणीयो राणी सोय ।—घ व ग्रं.

मुकणी, मुकवो—देखो 'मूकणी, मूकवो' (रु भे.)

उ०—१ नगरी तणी छवि देखइ सोहामणी, प्रसन थयो मन माहि सोमागी जोवा लायक मगली जाइगा, जिण मुकी अवगाहि सो ।

—वि कु

उ०—२ ताहरां लाखीं पूछीयो, कह्यो, 'सीही माहे कोण छै?' कह्यो 'जो, चच आढो छै।' ताहग लाखीं पूछीयो, कह्यो, सीही धरती मुकी —लाखा फुलाणी री वात

मुकणहार, हारी (हारी), मुकणियो—वि० ।

मुक्कियोडो, मुक्कियोडो, मुक्कियोडो—भू० का० कु० ।

मुक्कीजणी, मुक्कीजवो—कर्म वा० ।

मुकाणी, मुकावो—देखो 'मुकाणी, मुकावो' (रु भे)

उ०—छोटी घरती मुकाई नै लाखींजी निजीक आडनै दुहो कह्यो ।

—लाखा फुलाणी री वात

मुकाणहार, हारी (हारी), मुकाणियो वि० ।

मुकायोडो—भू० का० कु० ।

मुकाईजणी, मुकाईजवो—कर्म वा० ।

मुकायोडो—देखो 'मुकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुकायोडी)

मुकावणी, मुकाववो—देखो 'मुकाणी, मुकावो' (रु भे)

उ०—हाथ मुकावण छं तिहा, मणि मांणिक हे भली रतन नीकोडि । छं आमीम सुहांमणी, मत लागी हो इण जोडि नै खोडि ।

—वि कु

मुकावणहार, हारी (हारी) मुकावणियो—वि० ।

मुकावियोडो मुकावियोडो, मुकावियोडो—भू० का० कु० ।

मुकावोजणी मुकावोजवो—कर्म वा० ।

मुकावियोडो—देखो 'मुकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुकावियोडी)

मुकियोडो—देखो 'मुक्कियोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुकियोडी)

मुक्की—देखो 'मुक्की' (रु भे)

मुगड—१ देखो 'गूगो'

उ०—खाटरी ती हीनाग, घणु वोलइ तो लवाड वाउली न वोलइ तो मुगड, घणु जमइ ती छारीड, ।—व स

२ देखो 'मूगो' (रु भे)

मुगती—देखो 'मगतो' (रु भे)

उ०—भूपति टोटा मे दीवाळा भिलिया मोटा मोटा रा कुळ मुगतां मिलिया ।—ऊ का

मुगदणी—स० पु० [स० मुग्धेन्दनम्] मांगलिक कार्यों मे जलाने के लिये मगाई जाने वाली लकड़ियों की गाडी ।

रु० भे०—मगदणी, मगवणी, मूगदणी, मूगवणी,

मुगम—स० स्त्री०—१ अतिथि सत्कार, स्वागत ।

२ प्रतिष्ठा, इज्जत ।

रु० भे०—मुघम,

मुगली—स० पु०—असुर ।

उ०—पछाडि कौडि पाखती घपाड घाड घामळी । मजाडि सक मुगला कहाडि क्रीत कमळी ।—मा० वचनिका

मुगवड़ी—देखो 'मूगोडी' (रु भे)

उ०—मुगवडी पेठावडी रे लाल, खारावडि मन खति । डक्कवडी दाघावडी रे लाल, व्यजन नाना भति ।—प च चौ

मुगियो—१ देखो 'मूगियो' (रु भे)

२ देखो 'मूगो' (अल्पा., रु भे)

उ०—हीरा वार वार मुजरी कर हरख धरं छै । मोती मोहोर मुगियां से निछरावळ करं छै ।—वगमीराम प्रोहित री बात

मुगीपटण—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—कचीयो चुनही जामसाइ मुगीपटण जामावाडि सुप लखारस खासी तपई पिरमी कमवी पटोनि मुलमुल ।—व. स

मुगो—देखो 'मूगो' (रु भे)

मु'गो—देखो 'मु'गो' (रू भे)

मु घम—देखो 'मु'गम' (रू भे)

मु चणो, मु चवो—रू भे [सं मुच] १ भरना, टपकना ।

उ०—दाडिमो बीज विसतारिया दीसैं, निउछावरि नाखिया नग ।

चरणो लुचित खग फळ चुवित, मधु मु चति सीचति मग ।—वेलि

२ छूटना, मुक्त होना, रिहा होना ।

मु चणहार, हारो (हारी), मु चणियो—वि० ।

मु चियोडो, मु चियोडो, मु चियोडो—भू० का० कृ० ।

मु चीजणो, मु चीजवो—भाव वा० ।

मूचणो, मूचवो—रू० भे० ।

मु चियोडो—भू० का० कृ०—१ भरा हुआ, टपका हुआ ।

२ मुक्त रिहा, छूटा हुआ ।

(स्त्री० मुचियोडी)

मु छ, मु छ—देखो 'मूछ' (रू भे)

उ०—उघा मउड पडइ, रेवत रडवडइ, पडिया पचायण नी परि  
हाकरइ, रोस लगी मु छ भूछ फरकावइ ।—व स

मु छणो, मु छवो—देखो 'मूछणो, मूछवो' (रू भे)

मु छणहार, हारो (हारी), मु छणियो—वि०

मु छियोडो, मु छियोडो, मु छियोडो—भू० का० कृ० ।

मु छीजणो, मु छीजवो—कर्म वा० ।

मु छाणो, मु छावो—देखो 'मूछाणो, मूछावो' (रू भे)

उ०—तिण समे दिली बंठे पवार अकल उठाई । लकडी एक प्रागे  
पाछे मु छाई घणो आछो रग दिरायो—राव रिणमल री वात

मु छायोडो—देखो 'मूछायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूछायोडी)

मु छार—देखो 'मूछार' (रू भे)

उ०—उगा मुख वारह दीत उदार । भिडै तिणवार मु छार भुहार ।

सू प्र

मु छाळो, मु छाळो—देखो 'मूछाळो' (रू भे)

उ०—१ सूर सुभट माटी मु छाळा, करि भलकइ करवाल कराळा ।

व्यापारी दीसई दुदाळा, घरि घरि सुत्रिख सुगाळा ।

—कवि गुणविजय

उ०—२ तिहां बंठा वत्रीस लखणा पुरुस दुदला, फुदला जाकज-  
माला मूछाला केई जमाई केई साला ।—व स

मु छियोडो—देखो 'मूछियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूछियोडी)

मुज—१ देखो 'मु' (रू भे)

उ०—बडा बडा जोगिद्र किया वसु चाचरि मुज खमइ कुण चोट ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'मूज' (रू भे)

मुजक—स० पु०—घोडो की आंख पर होने वाला एक रोग विशेष ।

(शा हो)

मुजकेतु—स० पु० [स०] युधिष्ठिर की सभा का एक राजा ।

मुजकेश—स० पु० [स०] १ एक आचार्य, जो सैधवायन ऋषि का  
शिष्य था ।

२ एक क्षत्रिय राजा, जो निचद्र नामक असुर के अश से उत्पन्न  
हुआ था ।

मुजमेखळा—स० स्त्री०—यज्ञोपवीत के समय धारण की जाने वाली  
मूज की मेखला ।

मुजमेखळो—स० पु०—१ महादेव, शिव ।

२ विष्णु ।

मुजरो—१ देखो 'मुजरो' (रू भे)

उ०—हीरां वार-वार मुंजरी कर हरख घरे छै, मोती मोहोर  
मुगिया सू निछगवळ करे छै ।—ब्रह्मसिराम प्रोहित री वात

मुजाल—स० पु०—मूज का पौधा ।

उ०—पाछो उणहीज मारग साता अमवार आवता था, सु उण  
कटक री साथ मिरदार असवार ३०० सु मुजाळा माहे छिप रह्यो  
थो ।—राव मालदेव री वात

मुजेवडी, मुजोवडी—स० स्त्री०—मूज की रस्ती ।

रू० भे०—मुजेवडी मुजोवडी,

मुभाणो, मुभावो—देखो 'मुरभाणो, मुरभावो' (रू भे)

उ०—रोवै भवला एकलीजी, खिण खिण मा मुभाय । सहजें  
प्रगति उछालतांजी लागि उठी क्षण माहि ।—वि कु.

मुभायोडो—देखो 'मुरभायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुभायोडी)

मुड—स० पु० [स०] १ मनुष्य के शरीर की गर्दन के ऊपर का अंग,  
मस्तक, सिर, माथा ।

उ०—१ घोरण रा पाणि रा प्रहारण हू घोरमदेव री मुड अछट  
उडि पडियो । तो भी राठोड री रूड अनेक म्तेच्छा रा मुड प्रेता रा  
भुड रें उपहार करि नीठिनीठि चेम्टा विहूण थियो ।—व भा

उ०—२ दयालु व्हे न सरवथा ब्या दया मया दटें । मिळै जु  
गुड मुच्छ मुड थुड ऊट कें थकें ।—ऊ का

उ०—३ तन प्रथक नरा गए तुरग तुड । मट जेम फुटें गज किता  
मुड ।—रा रू

२ कटा हुआ सिर ।

उ०—१ पड भाट खगे द्रढ घाट पगे, जुघ काट निवाट निराट  
जगे । वहू दड उठै मुख मुंड बकै, घड खड हुवै भड चड धकै ।

—रा रू.

उ०—२ मिलमिल मुड पुवै सिव माळ । तिलतिल रुड हुवै  
रणताळ ।—मे म

उ०—३ भांजै असुर भख दे भगवती सकर लिये मुड कर सीस ।  
असमर हस समावै 'अमरा' समर कीयो करतव सु-जगीस ।

—लूणकरण

३ मुड़ा हुआ या गजा सिर ।

४ उक्त प्रकार के मिर वाला मनुष्य ।

५ पेढ का केवल तना जिस पर ढाली आदि न हो, वृक्ष का टूट ।

६ राहु नामक ग्रह ।

७ भृगुकुलोत्पन्न एक गोप्रकार ।

८ एक उपनिषद का नाम ।

९ राजा बलि का सेनापति एक दैत्य ।

१० एक असुर जो धूम्र एव तिशुम का सेनापति था ।

उ०—बलिस्ट धूम्र अक्ष की तुही विपक्षनी, भई तुही महिस्त्र रक्त बीज भक्षनी । निमूम सुम चढ मुड तू निकदनी, नमामि मात इदरा 'समद' नदनी ।—मे म

११ कीरव दल का एक योद्धा ।

१२ नाई ।

१३ लोहा ।

१४ महर ।

वि०—१ मुटा हुआ, गजा

२ कटा हुआ ।

३ कमीना, नीच ।

रू० भे०—मड, मूड, मूडि, मूड, मूड,

अग्या०—मूडहो ।

मु डक—म० पु० [स०] १ मिर, मस्तक ।

२ एक उपनिषद ।

३ नाई, हजाम ।

वि०—मुण्डन करने वाला ।

मु डकी—स० स्त्री०—सिर, मस्तक, खोपड़ी ।

मु टकी—देखो 'मूडकी' (रू. भे.)

मु टण—म० पु० [स० मुण्डन] १ यज्ञोपवीत सस्कार के समय किया जाने वाला मस्तक का मुण्डन, उसे मुण्डन-सस्कार भी कहते हैं ।

२ बच्चे का पहले-पहल किया जाने वाला मुण्डन ।

उ०—मु टण न्हावण साढि मुख, साथे पूरव सूर । बल से घन कीजा बळ, दुजराजा दुख दूर ।—व. भा.

३ हजामत ।

मु डणी, मु टवी—क्रि० प्र० [स० मुड] १ मिर के बाल काटेजाना, मूडा जाना, मुण्डन होना ।

२ टगा जाना ।

३ पीसा जाना ।

मु टणहार, हारी (हारी), मु टणियो—वि० ।

मु टियोटी, मु टियोटी, मु टियोटी—भू० का० कृ० ।

मु टोजणी, मु टोजवी—भाव वा० ।

मु डणी, मु टवी—सक० रू० ।

मु टत—१ मुटा हुआ ।

यो०—मु टत हाथ

२ देखो 'मु डित' (रू. भे.)

मु डमाळ, मु डमाळा—स० स्त्री० [स० मुण्ड माला] कटे हुए सिर या मस्तक की माला, जो प्रायः शिव या दुर्गा (काली) के गले में रहती है ।

उ०—१ जैत भूप 'जैत' री हार 'कमरा' री होसी । त्रिड पोसी मु डमाळ, जगतचख कौतुक जोसी ।—मे म

उ०—२ वरगा राळ वरमाळ सूरारै, त्रिपत पखाळ दिल खुले ताळा । सवळ पड भार सिर तणावें अहेपुर, महेपुर वणावें मु डमाळा ।—र. रू

रू० भे०—मुडमाळी,

मु डमाळिनी—स० स्त्री० [स० मुण्ड + मालिनी] मुण्डों की माला धारण करने वाली महाकाली, दुर्गा ।

रू० भे०—मुण्डमाळी,

मु डमाळी—स० पु० [स० मुण्ड-मालिन्] १ शिव, महादेव ।

उ०—खिल महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हैना मु डमाळी पाई सचै हार हेत ।—प्रभुधान मोतीसर

२ देखो 'मुडमालिनी' (रू. भे.)

उ०—भवानी नमो मोहनी मु डमाळी, भवानी नमो काळ कव्यादि काळी ।—मे म

३ देखो 'मुडमाळा' (रू. भे.)

मु डरुई—स० पु० [स० मुण्डरुचि] ऐसे साधु जो वेप तो साधुओं का कर लिया पर मन-क्रम से साधुओं का आचरण नहीं करते अर्थात् ब्रतों में अस्थिर एवं तप नियमों के अनुष्ठान में पराङ्मुख हो । (जैन)

मु डहा—स० स्त्री० [स० मुड+हन्] १ मूड नामक राक्षस की मारने वाली दुर्गा ।

उ०—भवानी नमो नित्य सोमा नवीनी, भवानी नमो भीम तें प्रेम भीनी । भवानी नमो मु डहा मान मत्ती, भवानी नमो राधिका कान्ह रत्ती ।—मे म

२ देखो 'मूडो' (रू. भे.)

मु डाई—स० स्त्री०—१ मूडने या मूडाने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त कार्य के लिये लिया व दिया जाने वाला धन ।

मु डाणी, मु डावी—क्रि० स० [स० मुड] १ सिर के बाल कटवाना, सिर के बाल उतरवाना ।

उ०—कित छोटी वह मोहन मुरली, कित छोटी सब गोपी । मूड मु डाइ डोरो कटि बाधी, माये मोहन टोपी ।—मीरों

२ किसी मृतक के पीछे सिर मुडाना, सिर के बाल उतरवाना ।

उ०—माथो मूळ मु डाय मसदा, पोहो पतिसाह मिल्या ले पेस । कळक अकेक सबै कुळ लागो, निकळक 'अरजन' हरो नरेम ।

—राय भोज हाडा री गीत

३ ठगने के लिये प्रेरित करना, ठगवाना ।

मु डाणहार, हारी (हारी) मु डाणियो—वि० ।

मु डायोटी—भू० का० कृ० ।

मुंडाईजणो, मुंडाईजवो—कमं वा० ।  
 मुंडावणो मुंडाववो—रु० भे० ।  
 मुंडायोड़ी—भू० का० कृ०—१ सिर के बाल कटवाया हुआ, बाल  
 उत्तरवाया हुआ २ किसी मृतक के पीछे सिर मुंडाया हुआ ।  
 १ ठगवाया हुआ ।  
 (स्त्री० मुंडायोड़ी)  
 मुंडालियो, मुंडाली—सं० पु० [देशज] वह स्थान जहां से चढस का  
 पानी नाली में आगे बढ़ता है ।  
 मुंडावणो, मुंडाववो—देखो 'मुंडाणो, मुंडावो' (रु भे)  
 उ०—लोक लाज कुल रीत लोप के मस्तक मूछ मुंडावो । लागी  
 लगन नींद नहि लेवें, धोरे प्रात घुमावै ।—ऊ का.  
 मुंडावणहार, हारो (हारो), मुंडावणियो—वि० ।  
 मुंडाविओड़ी मुंडावियोड़ी, मुंडाव्योड़ी—भू० का० कृ० ।  
 मुंडावीजणो, मुंडावीजवो—कमं वा० ।  
 मुंडावियोड़ी—देखो 'मुंडायोड़ी' (रु भे)  
 (स्त्री० मुंडावियोड़ी)  
 मुंडासुर—सं० पु० [सं० मुण्ड-असुर] मुंड नामक असुर ।  
 उ०—सुभ निसुभ चढ मुंडासुर, दुमह सुरा दुखदाई । दानव  
 महिस रक्त बीजादिक, मार लिया महमाई ।—मे म  
 मुंडासो—देखो 'मुंडासो' (रु भे)  
 उ०—माई एहुवा पूत जण, जेहवो दुरगादास । मार 'मुंडासो'  
 थामियो, विण थमा आकास ।—अज्ञात  
 मुंडित—वि० [सं०] १ मुंडा हुआ, बाल उतरा हुआ गजा ।  
 उ०—न मरद न जोरु लख्या नही जावत, मस्तक मुंडित कफ फहा ।  
 अचरिज्ज भया मोहि देख नही एहु, कुण दुकाण देखउ रिखडा ।  
 —स कु  
 २ कटा हुआ ।  
 सं० पु०—लोहा ।  
 रु० भे०—मुंडत, मूडत,  
 मुंडिम—सं० पु०—एक प्राचीन आचार्य ।  
 मुंडियोड़ी—देखो 'मूडियोड़ी' (रु भे)  
 (स्त्री० मुंडियोड़ी)  
 मुंडी—सं० स्त्री०—१ विधवा, रांड ।  
 २ एक लिपि, जिसके न तो मात्रा लगती है और न ऊपर रेखा  
 दी जाती है ।  
 मुंडीयो—सं० पु०—किसी क्षेत्र की सीमा या सरहद पर रोपा जाने वाला  
 छोटा स्थम्भ ।  
 रु० भे०—मुंडियो,  
 मुंडेर—देखो 'मूडेर' (रु भे)  
 मुंडी—देखो 'मूडी' (रु भे)  
 मुंडी—देखो 'मूडी' रु भे)  
 मुतजिम—वि० [अ०] १ व्यवस्थापक, प्रबंधक ।

२ प्रकाशमान, प्रदीप्त, रोशन ।  
 मुतणो, मुतवो—देखो 'मूतणो, मूतवो' (रु भे.)  
 उ०—सेजां घण सूतेह, ऊवा मुतं अघपती । हूते अण हूतेह, मुनसी  
 चुये मुरधरा ।—ऊ का  
 मुतियोड़ी—देखो 'मूतियोड़ी' (रु भे)  
 (स्त्री० मुतियोड़ी)  
 मुथा—सं० स्त्री०—नव ग्रहो के अतिरिक्त १० वा ग्रह जो वर्षफल में  
 आवश्यक माना जाता है ।  
 मुदगर—देखो 'मुगदर' (रु भे)  
 उ०—वीरा रस घण धोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोण । सेल  
 साबळ कुत मुदगर, उछळई अति सोण ।—रुकमणी मगळ  
 मुदडउ—देखो 'मूदडी' (मह, रु भे)  
 उ०—देइस हाथ कउ मुदडउ, सोवन-सिंगी नई कपिला गाई ।  
 —वी दे  
 मुदडी—देखो 'मूदडी' (रु भे) (उ र)  
 उ०—१ माता हे आ मुदडी, प्रभु दीनी नेह-निसाणी हे ।  
 —गी रा  
 उ०—२ हू सोनी नी मुदडी सुपियारा हो । तू हिव हीरो होय,  
 नेम सुपियारा हो ।—स कु  
 मुदडी—देखो 'मूदडी' (रु भे)  
 मुदणो, मुदवो—क्रि० अ० [सं० मुद्रण] १ खुली हुई आखें वद होना,  
 मिचना ।  
 उ०—मुदघोड़ी आख्या । माटी री लोथ सस्ते लोथ ।—फुलवाही  
 २ अत होना, समाप्त होना ।  
 मुदणहार, हारो (हारो), मुदणियो—वि० ।  
 मुदियोड़ी, मुदियोड़ी, मुदयोड़ी—भू० का० कृ० ।  
 मुदीजणो, मुदीजवो—भाव वा० ।  
 मूदणो, मूदवो—सक० रु० ।  
 मुदरडी—देखो 'मूदडी' (अल्पा, रु भे)  
 उ०—सीता नइ सदेमउ रामजी मोवत्यउ रे । काइ मुदरडी दे  
 मूकयउ हनुमत वीर रे ।—स कु  
 मुदरी—देखो 'मूदडी' (रु भे.)  
 मुदरी—देखो 'मूदडी' (रु भे)  
 मुदियोड़ी—भू० का० कृ०—१ वद हुवा हुआ, मिचा हुआ । (नैत्र)  
 २ अत हुवा हुआ, समाप्त हुआ हुआ ।  
 (स्त्री० मुदियोड़ी)  
 मुदो—देखो 'मुदो' (रु भे)  
 मुद्र—सं० पु० [म० समुद्र] समुद्र, सागर ।  
 उ०—हीयां असककइ कायर लोक सत तणां मन करइ ससोक ।  
 जाणे बीज पडि [अ] अकालि, जावै मुद्र खुम्या कलिकालि ।  
 —सालिभद्र सूरि

मुद्रा—देखो 'मूद्रा' (रू भे)

उ०—१ पछड़ वनी मुकट तिलक कुंडल हार दोर धीर विलय  
अगद वहिरावा नवग्रहा मुद्रा कदोर ह्य सांकली ।—व म  
उ०—२ रत्नजडित जे मुद्रा, ते अगलीए भाठ । पीड-तण्ड जे  
पारवी, पढ़ी न जाणइ पाठ ।—मा. का प्र

मुद्रा, मुद्रा—देखो 'मूद्रा, मूद्रा' (रू भे)

उ०—अविधि देम त्याग कराविठ, मोहराज लेई भूलविठ, दुरगति  
द्वार मुद्रित, मुगति द्वाग ऊमूद्रित अनग्नि काल वेतन उचाटित  
मदन पिमाच निरघटित, जीणि जिन वचन पालित ।—व स

मुद्रियोडो—देखो 'मूद्रियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूद्रियोडो)

मुद्रो—देखो मूद्रो (रू भे)

मुघ, मुघि—स० स्त्री० [स० मुघा प्रा० मुद्रा] मुघा नायिका ।

उ०—१ दिसि चाहती मज्जणा, नेहाळरी मुघ । सा घण कृमि-  
वचाह ज्यउ लवी थई तु कघ ।—ढो मा

उ०—२ सहस फणालइ काल भूयग, जीमणा धी उत्तरउ वमिइ  
अग । रुपि चगा, विस आगला, दोय कर जोडें वीनमें मुघ ।  
—वी दे

उ०—३ घोडा-ऊपरि ह चढित, तुम चढावउ कघि । गांन  
सुणाविसी मुहणइ, तु मुम भावइ मुघि ।—मा का. प्र  
उ०—४ सुनि गोकलि जई सू करीसि, किम्पना ठाम जोतां मरीसि ।  
मन मठी मुघि मदिरि पुहती, नगरनी नारि पूरी पनोती ।  
—चतुरभुज

मुनिद्रेस—देखो 'मुनीद्र' (मह, रू भे)

उ०—मुनिद्रेस जोगेस कव्येस भेळा, भुजगेम देवेम सव्वेस भेळा ।  
—सू प्र

मुपति, मुपती—देखो 'मुहपति' (रू भे)

मुसरिम—स० पु० [अ०] १ प्रबन्धक, व्यवस्थापक ।

२ दीवानी अदालत में काम करने वाला एक कर्मचारी ।

मुसिफ—स० पु० [अ०] १ न्यायाधीश

२ छोटी अदालत का न्यायाधीश ।

मुसिफोरट—स० पु० [अ० मुसिफ+अ० कोर्ट] उक्त न्यायाधीश की  
अदालत ।

मुसिफी—स० स्त्री० [अ०] १ न्याय, इन्माफ ।

२ मुसिफ का पद ।

मुसी—स० पु० [अ० मुशी] १ लेखक ।

२ किसी कार्यालय का लिपिक, क्लर्क ।

३ वकील का मुहरिर ।

४ कचहरी में अजिया लिखने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—मुनमी

मुसीफानो—स० पु० [अ० मुशीवाना] मुशियों के बैठने का कक्ष

मुनीगिरी—स० स्त्री० [अ० मुशीगिरी] १ मुशी का काम ।

२ मुशी का पद ।

मुसी—देखो 'मुसी' (रू भे)

उ०—१ तिहां डांस मुसा मांकुण जू प्रमुख न उपजइ ।

—व स

उ०—२ मुसा दादरा हूत नागां मराई । खुरा कीडिया हूत हाथी  
खूदाई ।—सू प्र

मुह—देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ मुह न दियो पर मारियो, भागां न करे घाव । सादूळी  
साचा गुणां, वेह कियो वन-राव ।—वो दा.

उ०—२ नदी गण चढी आठ गण आगळ, लोपी अगड तणी ताइ  
लाज । उण वेळा दिख रड मुह आगळि, आई सती हुई आवाज ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ अवसर दान ज अप्पही, रिण भज्जे मुह मोड । राठोडां  
कुळ मेहणी, ते खत्री पण खोड ।—गुरु व

मुहअधारी—देखो 'मूअधारी' (रू भे)

मुहकम—देखो 'मुहकम' (रू भे)

उ०—सया राग'र दोख जीव, गुर गम सु । हरिहां दास कहे  
हरिराम, राज मुहकम सु ।—खी हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ हरीया नख-चख बीच में, घावे मुहकम पूर । सूर पडे  
गिण वेत में, कायर भागा दूर ।—खी हरिरामदासजी महाराज

मुहकाण—देखो 'मुकाण' (रू भे)

मुहगउ, मुहगो—देखो 'मूंगी' (रू भे)

उ०—सत्यासीयउ साहमी, ऊठि बलि मामउ थावइ । पळयउ न  
रहई पापीयउ, वान मुहगउ करि घावइ ।—स कु

उ०—२ इण वीर स्त्री रे वामतें वाळण न कढायो आतो मुहगो  
ही ले लेती हर्मे वेचू तो सुहगो ही इण विना कुण लेवें ।—वो मटी

उ०—३—जिके सूर होला जरद, ऊवडही आराण । मूख अणी  
भूहां मिळे, मुंहगो राखे माण ।—वा दा

उ०—४ प्रम अम सूर दाता प्रमाण । वित दियण लियण मुंहगा  
बखाण ।—सू प्र

उ०—५ करनी थारि कारणे, प्यारी थळवट पथ । मोत्या सू मुहगो  
मिळे, हीरा पाज हरत ।—चोप बीरू

(स्त्री० मुहगी)

मुहचोर—सं० पु०—दुमरो के सामने जाने से मुह छिपाने वाला, अपने  
काम में जी चुराने वाला ।

मुहजोर—वि०—१ अधिक बोलने वाला, वाचाल ।

२ बिना कारण बहस या हुज्जत करने वाला ।

३ उद्ण्ड ।

४ एक प्रकार का अशुभ घोडा ।

रू० भे०—मूजोर,

मुहजोरी—सं० स्त्री०—१ बकवास, प्रलाप ।

२ अशिष्टता, उद्ण्डता ।

उ०—'तो इत्ता बडा थारै उठै हुया हां कं' । 'साळा मुजोरी करै हे ? ठैर तो' ।—वरमगाठ

मुहंज—कि वि०—मुहं पर, अग्र भाग पर ।

उ०—आगे विभर रं मुहंज पातिसाह भीत छुणाइनै छोह दिराह लयो ।—सयणी री बात

मुहंज—देखो मू'हो' (रू भे)

उ०—लाजते भीख लीधी नही, मुहंज पग सूजी मूआ । समय-सु दर कहइ सत्याभीया, ते हवाल ताहग हूआ ।—स. कु

मुहंज, मुहंज—कि० वि०—१ आगे अगाही ।

उ०—१ सू पहाड इसडो पगवत सू पहाड कोरिनै माहे घर कियो सू घर रं मुहंज पहाड री बिटां कोरिनै राखी छै ।

—कूगरंवलौच री बात

उ०—२ सु हाथी पाखरिया कर लोह बाघ, गरक किया छै । सु हाथी फोज रं मुहंज छै ।—नैणसी

२ सम्मुख, आमने-सामने ।

उ०—१ तितरं रायसिध ही प्राय भेलौ हुओ । अणी मिली । अठे वेढ निपट सखरी हुई । रजपूत रजपूतां रं मुहंज आया ।

—नैणसी

उ०—२ एकोकी मुहंज जो आवत, प्रतरं कळहणि तणी परि । रहचति कटक सिगळ डोइ राखी' बात कहत कुण वरहरि ।

—नादण वारहठ

उ०—३ ताहरा अरजनजी नगं भारमशेत रं मुहंज आयो ।

—नैणसी

३ सीमा पर ।

उ०—राव जोधी मारवाड री घणी बडी राजा छै । गुजरात रं मुहंज दण री मुलक छै ' ' ।—राव जोध रं वेटा री बात ।

४ मुहं पर

५ मुहंसे,

६ मुहंमें,

७ प्रनुगत में, परिमाण में

८ चेहरे पर,

रू० भे०—मुहंज, मुहंज, मुहंज, मुहं, मुहं, ।

मुहंज—देखो 'मू'हो' (रू भे)

उ०—१ जसो पण आपरा साथ सू चढ आयो । गाव रा मुहंज आगे तळाव छै तिण रं पाछें मंदान छै ।—नैणसी

उ०—२ जितरी बोली तितरी करो तो कीगे मुहंज—छै जे जोधपुर लार आख उठाय देखै ।—राजसिंह री वारता

उ०—३ मुहंज आगला किणी काम मे गरज लोम मू बात नही करै ।—नो प्र

उ०—४ हू बांमण री वेटी अर मूरख । का विद्या दे का लोही बाठीम । ताहरा सारदा बोली—मुहं मांडि । ताहरा मुहंज मांदि राख भेली ।—चौबोली

उ०—५ हंगिया तोसु प्रीतही, आतम मेरे थार । जो हूजं सु तुम्हि विन, करू त मुहंज छार ।—सोहरिगमदामजी महाराज

उ०—६ दान घणी उत्तर दिये, हूते बित सत हार । मुहंज ले उण भिनक रो, भोभर भीतर भार ।—बां० दा०

मुहंज—स० पु०—देखो 'महंज' (रू भे.)

उ०—ताहरा मूरखी बोलियो—हू मूरख छू । मुहंज रो वेटी मुहंज राखीयो ।—चौबोली

मुहंज—वि०—मुहं के बल ।

उ०—दौढ पहर हिंदू तुगक, कहर लई रिण ढाण । मुडिया भइ पतमाह रा, के पडिया मुहंज ।—रू

मुहंज—स० स्त्री०—१ एक वैवाहिक प्रथा जिसमे वर द्वारा वधू को पहले पहल मुहंज दिखाने के लिये कुछ धन दिया जाता है ।

२ उक्त प्रथा में दिया जाने वाला धन ।

रू० भे०—मही दिखाई,

मुहंज—स० स्त्री०—१ घोड़े का एक रोग विशेष । (शा हो)

२ तलवार का वह ऊपरी भाग जो मूठ के नीचे रहता है ।

रू० भे०—मुहिनाळ, मूनाळ, मुहंज, मूनाळ,

मुहंज, मुहंज, मुहंज—स० स्त्री० [स० मुख + पट्टिका] श्वेत वस्त्र (प्राय) का एक टुकड़ा, जिसे स्थानकवासी व तेरी पथी जैन मुनि अपने मुख पर बांधते हैं । (जैन)

उ०—१ समिती तीन ज घरो तो इ साचा यति, पास राखी नही ओघो नै मुहंज ।—घ व प्र

उ०—२ ए बात सुण तिण नै निखेव नै बोल्यो—'म्हें ढोला पड गया हां तो ही माना एक दाणा में च्यार परचाय च्यार प्राण ते खुवाया पुण्य किम हुभी अनं थै मुहंज बाधनै कयू खोटी हुवा ?

—भि द्र

रू० भे०—मुंजति, मुपता, मुखपति, मुहंज, मुहंज, मुहंज, मुहंज, मुहंज, मुहंज, मुहंज ।

मुहंज—स० पु०—किसी मृतक के शोक में मुख ढककर राने की किया ।

मुहंज—वि०—बाचाल, वकवादी, बिना विचारे वकने वाला ।

रू० भे०—मुखपट्ट, मुफट ।

मुहंज—देखो मुहंज (रू भे)

उ०—पछें राजसिध खीवावत रं वनियो । स १६७७ बालापुर री मुहंज लात लागी तिण सू खोडावती ।—नैणसी

उ०—२ स० १६७८ तिमरणी री मुहंज काम आयो ।

—नैणसी

मुहंज, मुहंज—स० पु०—एक प्रकार का घोड़ा वि—मृदुभाषी ।

रू० भे०—मुखमिठ, मूमीठी, मूमीठी

मुहंज—देखो 'मुहंज' (रू भे)

उ०—चागहागी विन्है रजवाट रा खटाउ, थाट रा घणी मुंहमेज  
थाया ।—रामसिध हाढा व राजसिध राठोड रो गीत

मुहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रु.भे.)

मुहसाल—देखो 'मोसाळ' (रु.भे.)

उ०—भाद्रवडा घाविउ भलइ, मयण-तणा मुहसाल । काम  
जगावड तेहनइ, जेह-सिरि वूडा वाल ।—मा का प्र

मुहाणी, मुहाणी—देखो 'मुहाणी' (रु.भे.)

उ०—तोप मुहाणी म्हान चाडे, रहे कंद के मांय ।

—हूजजी जवारजी रो छावली

मुहासी-स०पु०—गुवावस्या में मुह पर निकलने वाली फुमो ।

मुहि—१ देखो 'मुख' (रु.भे.)

उ०—मुहि घागळि 'गज साह' पराक्रम भांमणा । परिहा ऐसा  
पूत सपूत क (नित) ववांमणा ।—गुरु व

२ देखो 'मै' (रु.भे.)

उ०—जन हरिदास निद्रा सू हेत, अंतकाळि मुहि पछसी रेत ।

—ह पु वा

मुहियड—देखो 'मुहियड' (रु.भे.)

उ०—पडो विहड ऊरि प्रवाडे सग्रहर अजस वहे सहि । मुहियड  
जिणि पाडियो मदाउत, मुहियो वोली न कोइ महि ।

मुहियो—देखो 'मुहियो' (रु.भे.)

—नादण वारहठ

उ०—मुहियड जिणि पाडियो मदाउत, मुहियो वोली न कोइ  
महि ।—नादण वारहठ

मुही—१ देखो 'मुही' (रु.भे.)

२ देखो 'मै' (रु.भे.)

३ देखो 'मुख' (रु.भे.)

मुहुगी—देखो 'मू'गी' (रु.भे.)

मुहुंडो—देखो 'मू'डो' (रु.भे.)

उ०—अर चाहाळ रे मुख मावित्री रे ममान केहरी रो विभाग  
फेरड रे मुहुंडे कदापि न खटावै ।—वं भा

मुहे-क्रि०वि०—मुख पर ।

मु-स०पु० [स०मु] १ शिवजी का एक नाम ।

२ वचन ।

३ कारागार, कैद ।

४ मोक्ष, मुक्ति ।

५ श्रृष्टि ।

६ मुष्टिका, मुठ्ठी ।

७ चित्ता ।

८ देखो 'मू' (रु.भे.)

रु०भे०—मू

मुग्रजन, मुग्रजिन-स०पु० [प्र. मुग्रजिन] मस्जिद में अज्ञान देने  
वाला ।

मुग्रतस-वि० [प्र०] १ जिसे किसी कार्य या पद से, कुछ समय के

लिये दोपस्वरूप अलग कर दिया हो, निलंबित ।

२ वेकार, खाली ।

३ जो काम नहीं कर रहा हो ।

मुग्रतली-स०पु० [प्र०] १ 'मुग्रतल' होने की अवस्था या भाव ।

२ निलवन ।

३ वेकारी ।

मुश्राफ—देखो 'माफ' (रु.भे.)

मुश्राणी—देखो 'मारणी' (रु.भे.)

मुआवजो-स०पु० [अ. मुआवज] १ वह रकम जो जमीन के मालिक  
को उस जमीन के बदले में कानूनन मिलती है ।

उ०—१ ठिकाणा रो पूरो काम ठकुराणी आपरा हाथ में ले  
लियो हो । मुआवजा भी रकम सू एक ट्रेक्टर खरीद लियो अर  
भाटो पीसण रो एक चक्की ई लगाय दी गई ।—रातवासी

उ०—२ मुआवजो नीं मिलियो जिकण रो परवा नी पण भाइया  
मे तो हु ई पाछ को राखू नीं ।—फुलवाडी

२ किसी प्रकार की क्षति-पूर्ति के लिये दिया जाने वाला धन ।

३ बदला ।

४ किसी वस्तु का मूल्य जो उस वस्तु के बदले में दिया जाय ।

रु०भे०—मावजानो, मावजो,

मुइय—देखो 'मुदित' (रु.भे.)

मुइयड—अगाडी, आगे ।

उ०—सग्राम काम 'राजो' स 'कूप' राठोड प्रमाण पच-रूप ।

'विसनावत' वीरति ववी घाड, मेहतियो मुइयड मड किमाड ।

—गुरु बं

मुइयमण—देखो 'मुदितमन' (रु.भे.)

मुई—देखो 'मुई' (रु.भे.)

उ०—१ सूवा, एक सदेसडउ, बार सरेसी सुइक । प्रीतम  
वांसइ जाइनई, मुई सुणावै मुइक ।—डो मा

मुओ-वि० [स०मृत] (स्त्री० मुई) मरा हुआ, मृत ।

उ०—जुडे नह मडोवरा कदे मो जीवतै, पलटसी मडोवर मुओ पठै ।

—जालमसिह मेहतिया रो गीत

मुकद—देखो 'मुकुद' (रु.भे.) (प्र. मा, ना मा)

उ०—पुरुषोत्तम पूरण प्रभू राघव गिरधर रूप । मुरलीधर मोहण  
मुकद, भजलै त्रिभुवन भूप ।—ह र

मुकदक—देखो 'मुकुदक' (रु.भे.)

मुकट—देखो 'मुकुट' (रु.भे.)

उ०—१ पछइ वली मुकट तिलक कुडल हार दोर वीर विलय  
अगद वडिरखा नवग्रहां मुद्रडी कदोर हथ सांकली पगनी सांकली  
प्रमुख पहिराया ।—व स



उ०—२ सिर आयी इक्यासियो, वरसे मुकुट विचार । असपति  
बोलायो 'अमो' दिल्ली राज दुवार ।—रा रू.

उ०—३ बाकी मुकुट काछनी सुदर, ऊपर जरद किनारी ।

—मीरा

मुकुटवध—देखो 'मुकुटवध' (रू भे)

उ०—कीध जिकी तै दीध कलावत, एही मौज लहर अनमघ । जस  
उर धकै आवता जातौ, वृह अनेरा मुकुटवध ।—द. दा

मुकुटमणि, मुकुटमिण—देखो 'मुकुटमणि' (रू भे)

उ०—१ इतरै देवी प्रकट होय कहौ —घन्य विष्म ! घन्य तू !  
सकळ राजा मांही मुकुट-मणि है ।—सिंघासण वत्तीसी

उ०—२ पुत्र दसमो चित सुबुवि प्रकासी । भूप मुकुटमिण खळा  
अमासी ।—सू०प्र०

मुकुटि—देखो 'मुकुट' (रू०भे०)

उ०—मणि वाहण मुकुटि, रीत सजव नव रूप । किया साज  
महाराज कजि, ऐसा वाज अनूप ।—रा०रू०

मुकुटो सं०पु०—१ एक प्रकार की रेशमी धोती जो प्राय भोजन के  
समय पहनी जाती है ।

२ देखो 'मुकुट' (अल्पा, रू भे)

मुकुणो मुकुबो—देखो 'मुकुणी, मुकुबो' (रू भे)

उ०—१ कठ रुकै कायरा जुवाणां लुकै सुकै कई । धुकै प्राण  
मुकुं के भमवकै खोण धार ।

उ०—२ दूब देख छळ बमणा, मुकुी दिइ मुफ मीत । कर जोडी  
निलवटि करइ, चतुर चोरतो चित्त ।—मा कां प्र

मुकुत—१ देखो 'मुक्त' (रू भे)

उ०—१ चमकै रतन पेच चीरा रा । हार मुकुत भूखण हीरां रा ।

—सू प्र

उ०—२ ओपै रूप धणी राय अगण, चीक मुकुत कण केमर  
वनण । तर मजर फळ माळा सोरण, सोहै द्वार मेळ भ्रत सज्जण ।

—रा रू

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—१ दसरथ रा नद मुकुत रा दाता असुर जुवां घाता असेस ।

र ज प्र

उ०—२ खुधा न भाजै पाणियां, ब्रखा न भाजै अन्न । मुकुत नही  
हर नांव दिन, मानव साचै मन्न ।—ह र.

मुकुतज—देखो 'मुक्तज' (रू भे)

मुकुतदा—वि०स्त्री० [सं०मुक्ति-दात्री] मुक्ति देने वाली । (अ मा)

मुकुतफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—फव्रं सवा मण मुकुतफळ, मेगळ कु भ मभार । पिण हाथळ  
वळ सू हुवो, सीह वनै सिरदार ।—वा दा

उ०—२ इळ छीलरे विमळ खग ओपै, भेद करै जळवरि भखै ।  
लामे सीप मुकुतफळ लामे, निज मराळ रसघाळ नखै ।

—उत्तमराम गोड़ री गीत

मुकुतमाळ, मुकुतमाळा—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—सुभ खिल्लत पव वसन सुरगी, असि खजर सरपेच कलगी ।  
मुकुतमाळ दुलही उर मढित, अती भार सव सत्र अखडित ।

—रा रू

मुकुतसामीप—देखो 'सामीप्यमुक्ति' (रू भे)

उ०—बोम छव कमळ प्रतमाल कर वाहती, गजवडा गाहती खळा  
गूडो । रण कटै गयो वंकुंठ ध्रम राहती, चाहती मुकुतसामीप  
चूडो ।—रावत गुलाबसिंह चुडावत री गीत

मुकुतहार—देखो 'मुक्ताहार' (रू भे)

मुक्ता—२ देखो 'मुक्ता' (रू भे.) (ह ना मा)

उ०—१ इण विध ग्रामरणाह मनू मुक्ता मिली । छक तरुणाई  
छोळ पयोनिध ज्यू छिळी ।—वां दा

उ०—२ पलकन डटै पयोरी विरध पात पर वूंद । पढै भोम पर  
पाधरा, मनु मुक्ता घर खूद ।—लो गी

मुक्तागळ—सं०पु०—मोतियो का फुण्ड, समूह ।

उ०—घडच्छत फील खगा सिरधार । रचै मुक्तागळ मागणिहार ।

—सू प्र

मुक्ताग्रह—सं०पु०—प्रहास या गरवत गीत का एक भेद, जिसके विषम  
पदों में २० मात्राएँ व सम पदों में १७ मात्राएँ होती हैं । प्रथम  
द्वाले के प्रथम पद की मात्राएँ २१ होती हैं ।

उ०—गरवत कीजै गीत अत, विसम तुक आद सम । सिध बिलोक  
सरीत, मुक्ताग्रह जिण न मुणे ।—र रू

वि०वि०—इसमें विषम तुक के अन्तिम शब्द को सम तुक के आदि  
में रखकर मिहावलोकन किया जाता है ।

मुक्ताग्रहजया—सं०स्त्री०—द्विगल साहित्य में गीत (छंद) रचना की एक  
प्रणाली या नियम । (क कु वो)

मुक्ताचर—देखो 'मुक्ताचार' (रू भे) (ह नां मा)

मुक्ताफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—१ आवदार ऊजळ वढवार मुक्ताफळ सोन्न लाल सजुति  
रूपवत खवण बीच राजै ।—सू प्र

उ०—२ मोर मुकुट मुक्ताफळ कुडळ, उर वंजशी माळ ।

—मीरा

मुक्तामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—सीमफूल मणिमाळ विदलियां मुक्तामाळ विसाल ।

—रसीलैराज रा गीत

मुक्ताळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—माग भरघा मुक्ताळ जाळ रुळता जवाहारां । अतर डमर  
ऊपरा भवर भवतां भवहारा ।—पना

२ देखो 'मुक्तावळी' (रू भे)

मुक्ताब्जि मुक्तावळ, मुक्तावळि, मुक्तावलि मुक्तावळी—देखो  
'मुक्तावळी' (रू भे)

उ०—१ छु मुक्तावळि लावा हड, सोहई रूप सोभांतारे । कुकु

भरी कचोळिय, भोळीय छाटणां छाटइरे ।—रुक्मणी मगळ  
उ०—२ कण्ठावलि तपु एकु वीजउ एकरइ रयणावली ए ।  
मुक्तावलि तपु सारू चउयळ ए सिंह निकोलि ऊए ।

—सालिभद्र सूरि

मुक्ताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रु भे)

उ०—कठमरी बहुकति मिळी मुक्ताहळां । हिंडुळ नोसरहार,  
जलूम जळाहळा ।—वां दा.

मुक्ताहार—देखो 'मुक्ताहार' (रु भे)

उ०—लबोदर फरमी घरण, मुखमे कर दांणा । मुक्ताहार  
विराजमान, मिदूर भूनाणा ।—द दा

मुक्ति, मुक्ती—देखो 'मुक्ति' (रु भे)

उ०—१ चाद वणाय रावळी चिरजां सनमुख गाय सुणाई ।  
धीजें भगति मुक्ति जगदवा, कीजें जेज न काई ।—मे म  
उ०—२ मोतल मोल छाया वीममठ भावना निरिहि मोचिउ  
घरठ फुल पय वार देव लोक जागि एह वस नउ फल मुक्ति  
निरवाणि ।—जयसेखर सूरि

० देखो 'मुक्ता' (रु भे)

उ०—अत्रिदु हरित वस मगाय, प्रति वेठ जुत रोपाय । रचि चोक  
चदण चार, कति मुक्ति रेख प्रकार ।—रा रु

मुक्तिसाजोति—स०स्त्री० [स० मुक्ति+स+ज्योति] पाच प्रकार की  
मुक्तियों में एक प्रकार की मुक्ति का नाम, जिसमें जीव ईश्वर  
ज्योति में विलीन हो जाता है ।

उ०—विचि तिमिर छोर गोळा वहे, जाजुळ मगळ जोति  
रा । अम्ह सग्हां जाणि लागा उडण, सिखर मुक्तिसाजोति रा ।

सू प्र

रु०भे०—मुगतिमजोत, मुगतिसाजोत

मुक्ता—देखो 'मुक्ता' (रु भे)

मुक्ति—देखो 'मुक्ति' (रु भे)

उ०—भगत्त अधीन मुक्ति महार । प्रागोचर वेद अहम् अपार ।

—हर

मुकदम—देखो 'मुकदम' रु (भे.)

उ०—सांभण जूना सोय, दत मुकदम भूपाळ दत्त । करं न खेचल  
कोय, जग पाळग 'जमराज' उत ।—सू प्र

मुकदमेवाज—स०पु० [अ०+फा०] जो प्राय मुकदमे लडा करता हो ।  
जिसी न किमी मुकदमे में लगा रहने वाला व्यक्ति ।

मुकदमेवाजो—स०स्त्री० [अ०+फा०] मुकदमें लडने की क्रिया या भाव ।

मुकदमो—स०पु० [अ० मुकदम] १ किन्हीं दो या दो से अधिक  
व्यक्तियों के बीच खडा होने वाला विवादाम्पद विषय या झगडा  
जिसे न्यायालय में निर्णयायें प्रस्तुत किया जाता है, अभियोग,  
दावा, नालिश ।

२ कोई विषय या मामला ।

४ एक प्रकार का कर ।

(प्राचीन)

रु०भे०—मुकदमो,

मुकदम—वि० [अ०] १ प्रधान, मुख्य ।

२ विशेष. खास, महत्वपूर्ण ।

३ आवश्यक, जरूरी ।

स०पु०—१ गांव का मुखिया ।

२ अग्रभाग ।

मुकदमो—देखो 'मुकदमो' (रु भे)

मुकदर—स०पु० [अ०] १ भाग्य, तकदीर, किस्मत

२ अदृष्ट ।

३ लुप्त शब्द ।

वि०—१ मलिन, मेला, गदा ।

२ अप्रसन्न, नाराज, नाखुश ।

३ दुखी, चिन्तित, परेशान ।

मुकन—स०पु०—शत्रु, दुश्मन ।

मुकनो—स०पु०—१ पदां नशीन स्त्रियों के मोहने का मफेद, चुर्का ।

उ०—दोई घोडा पिलाण करायो । घणा जडावरा हलका मोना  
मांहे जडिया लोधा । मुकनो चावडी नै पहिरायो ।

२ बिना दात का हाथी ।

उ०—अटलराज रो टीको कीनो । मुकनो मो हाथी धूजी ने चढया  
दीनो ।—लो गो

३ बिना मूछ वाला व्यक्ति ।

रु०भे०—मकनउ, मकनो, मकुनो, मुकुनो, मुक्कनो,

मुकनोदुरद मुकनोदुरत, मुकनोहाथो—स०पु०—वह हाथी जिसके दात  
न हो अथवा बहुत छोटे छोटे हो ।

उ०—माउवा री सूरजपोळ मुकनोहाथी धूमे ओ । लो गो

मुकम्मल—वि० [अ०] १ जो सब तरह से तैयार हो, जिसमें कोई कमी  
न हो ।

२ जो सर्वांग पूर्ण हो ।

३ पूर्ण, समाप्त, खतम ।

मुकरद—देखो 'मकरद' (रु भे)

मुकर—वि० [अ० मुकरं] १ जो तय हो चुका है, निश्चित नियत,  
तय ।

उ०—मुमळमान कहें—सीया रें मुकर दोलत होय, सुघी फतं नसीब  
होय ।—वां दा स्यात

२ निष्पत्ति, तैनात ।

उ०—जनाना मेल मांहे कराया १६६८ रा, तेंरो प्रबद पातसाई  
तोर वांदियो ने ८ सिरायत मुकर किया ।

३ यकीनी, विश्वस्त ।

उ०—गांवा सहारां गोलणा, रहे हुवा रजपूत । लखणा ह लखि  
लीजिये, मुकर घणा रा मूत ।—ऊ का

क्रि० वि०—१ दुबारा, फिर से, पुन ।

२ देखो 'मुकुर' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ मुकर ठगाई मारवा पाई रसिया पीव । हम तरसाइ  
आयतो, जी जी बाइ रा जीव ।—पना

उ०—२ सतगुरु मुकर दिखाया घटका नाचूगी देदे चुटकी ।

—मीरी

मुकरई—अव्य०—एक मुहत्त ।

उ०—स्त्रीसरकार मे 'मरै है । मुकरई रुपीया ठेरै है । नै  
गाव बिना पटै खावै है ।—नैएसी

रू० भे०—मुकरई

मुकरणी, मुकरबो—क्रि० स०—१ एक बार किये गये वादे या  
समझौते से बदल जाना, अपनी बात से फिर जाना ।

२ इनकार करना, मना करना, नट जाना ।

उ०—अठौने खाइ बठौने कूबो । रामले रा सासरै बाळा गै'णा  
देवणसू मुकर गया ।—वरसगाठ

३ छोड़ना, मुक्त करना ।

मुकरणहार, हारो (हारो), मुकरणियो—वि० ।

मुकरिओडो, मुकरियोडो, मुकरघोडो—भू० का० कृ० ।

मुकरीजणो, मुकरीजबो—कर्म वा० ।

मुकरर—वि० [अ० मुकरर] १ निश्चित

उ०—जन ना मैल महि कराया १६६८ रा तैरो प्रबद पातसाई  
तोर वादियो ने न सिरायत मुकरर कीया ।

२ नियुक्त तैनात ।

क्रि० वि०—दुबारा, दूसरी बार, पुन फिर से

रू० भे०—मुकरर

मुकराण—देखो 'मकराणो' (रू भे)

उ०—दोठो सगळउ दखण देस, चतुर नारि तनि चवळ वेस ।  
माळव नैद काबिल मुकराण, कासमीर, हुरभुज खुरसाण ।

—दो मा

मुकराणो—देखो 'मकराणो' (रू भे)

रू० भे०—मुकराणो,

मुकरियोडो—भू० का० कृ०—१ वादे या समझौते से बदला हुआ,  
अपनी बात से फिरा हुआ २ इनकार किया हुआ, मना किया  
हुआ, नटा हुआ ३ छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ ।

(स्त्री० मुकरियोडो)

मुकरिर—देखो 'मुकरर' (रू भे)

उ०—मूजा बदगी प्रभू री बिघ आग्या सहित त्याग भु डी बांता री  
मुकरिर छै ।—नो प्र

मुकड़ाई मुकळायत—स० स्त्री०—१ किसी प्रकार की सीमा से अधिक  
होने की दशा आधिक्य ।

उ०—पण इग बात री श्री संनाण है, जी इणा रै डेरै खरचो  
री मुकड़ाई देखी तो जाणय्यो मिळिया ।—द दा  
२ गु जाईश ।

उ०—पण थारै पाखती किता भवारा वणण री मुकड़ाई है,  
पैला इण बात री ग्यान तो सावळ करत्यो ।—फुलवाडी  
३ छूट ।

मुकळावणो, मुकळावबो—क्रि० स० [ प्रा० मोक्कलई ] १ विदा करना,

भेजना ।

उ०—१ कर जोडै नरपति कहई । राजांमती मुकळावउ राय ।

बी. दे

उ०—२ अह दैवह वसि तेवि पच ए पडव वणि चलिय ।  
हृथिणउरि जाएवि मुकळावइ निय माय पीय ।—सालिभद्र सूरि

२ दूर करना, अलग करना ।

३ छोड़ना, मुक्त करना ।

मुकळावियोडो—भू० का० कृ०—१ विदा किया हुआ, भेजा हुआ  
२ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ. ३ छोड़ा हुआ, मुक्त किया  
हुआ ।

(स्त्री० मुकळावियोडो)

मुकलावो—स० पु०—शादी के बाद दुल्हन को ससुराल लेजाने की रश्म,  
गोना, द्विभागमन ।

उ०—१ दीवागजी नै लखायो के मुकलावा री वास सुण उणनै  
थोडी लाज आई । कदास इण वास्ति ई तुरत जवांव नीं  
दिरीजियो । थोडी ताळ ढवनै सकती बोली—आज ई तो मुकलावो  
लेवण सारू आया । इण सारू ई तो अघराती बोलवां बोली ।

—फुलवाडी

उ०—२ भरमल नू आसा छै, कि हीं तरह मुकलावो कर इणनू  
विदा करो ।—कवरसी सांखला री वारता

उ०—३ पछै मुकलावो दायजो ले हाल स्यू, तहां राजा विक्रमा-  
दित्य नू सीख दी छै ।—पचदही री वारता

उ०—४ डूगर ऊपर डूगरी, डूगर ऊपर कैर । कर मुकलावो छोड  
ग्यो तेरो मेरो कद को बैर ।—लो गी

मुकाण—स० पु० [स० मुखकयानिका, मुखविकणन् प्रा० मुहकहाणिआ]  
मृतक के पीछे उनके घर वालो के पास सवेदना प्रगट करने के  
लिये जाने की क्रिया या भाव ।

रू० भे०—मुहकाण, मुखाण मुहकाण, मुहकाणि,

मुकान—१ देखो 'मकान' (रू भे)

२ देखो 'मुकाम' (रू भे)

मुकाम—स० पु० [अ० मुकाम] १ निवास स्थान, घर ।

उ०—१ कोड प्रकारां खून कर, मूकै नहीं मुकाम । घेरा सू पीरस  
घणो केहर केरा काम ।—बां दा

ठहरने का स्थान, डेरा, पड़ाव ।

उ०—१ हुई कटक सब हाजरी मथुरा नयर मुकाम । सब कुसुभ  
केमर बसण तुलै वराती ताम ।—व भा

उ०—२ ग्राम बडघा १ कुमारती २ रै बीच मुकाम हुवो । घर  
रात्रि रे आगम तिकां रै प्रमाद राखण री कुकाम हुवो ।

—व.भा

उ०—३ हुकम मिळतां ई केई सिकारी वडूका तांणियोडा निव  
री होकारां सामी दीडिया । सता रै मुकाम जायनै देख्यो तो सिघ  
तो नींवडा सू वंघियोडो ऊभो मार होकारा करै है ।—फुलवाडी

३ यात्रा के बीच लिया जाने वाला विश्राम, ठहराव, पड़ाव, टिकाव ।

उ०—१ दिल्ली गयी कूच मन दीघी । किणही ठोड मुकाम न कीघी ।—रा०

उ०—२ दुहु दळ हाळीहळ सवळ, दुहु दळ घुरें दमाम । दमगळ मातो दुहुदळा दुहु वै कोम मुकाम ।—गुरु० व

३ आवाग, विश्राम ।

उ०—१ राम राम रसना लीया, मास दोय विसराम । हरीया हिरदै कठ में, सागर वरस मुकाम ।

—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—२ तर्क लपक चोटा तरफ, जी नहि चहै जुखाम । जाण करे 'पातल' जिसा, मरणा घर्क मुकाम ।—जुगतीशान देयी ।

४ जगह, स्थान ।

उ० देही भीतरि देव हमारें, चेतन चीये घाम का । वाकै आमि पामि रहू लागा, महरम ताहि मुकाम का ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

५ कश्मिस्तान ।

६ अवसर, मौका ।

७ विद्वानों के गुरु जामेजी का मन्दिर स्थल, जहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है ।

८० भे०—मकाम, मुकान, मुकीम, मुकाम, मुकाम,

मुकामलो—देखो 'मुकावलो' (रु भे )

उ०—सूरिज पीले पान सरिखी निजर आवै छै मुरचा रा मुकामला मढाया छै । अणो मेळ हूओ छै ।—रा स. स.

मुकाणो, मुकावो—देखो 'मुकाणो, मुकावो' (रु. भे )

मुकातगीर—वि०—मुकाता की रकम भरने वाला ।

उ०—धैं हाथ मारो आपा किहीरा चाकर नहीं मुकातगीर छा ।

—गोड गोपालदास री वारता

मुकातर—स० पु०—मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—थू तो निपट सादगी सू रैवण वाळो जीवण वितावै । थन सुखी देखू तो म्हें मरिया मुकातर पावू ।—फुलवाही

मुकातो—स० स्त्री०—१ मुकाता नामक भूमि कर से प्राप्त होने वाली रकम ।—नैणमी

२ मुकाता पर भूमि लेकर जोतने वाला किसान आदि ।

उ०—निबळा पडिया, तरं घोघारी ठाकुराई माहे मुकातो थका रहेता ।—नैणमी

मुकातो—स० पु०—एक प्रकार का कर, जो जागीरदार खेत जोतने वाले किसान से एक निश्चित रकम के रूप में लेता है, भूमि-कर ।

उ०—१ तठा पछै राणा रा हुकम सू सीसोदियो जोध सकतावत मोरेवण, फरादियो, कुडळरी सादयो, जोहरण रा गाव कितराहक मुकाते लिया ।—नैणमी

उ०—२ स्याळ नेठाव सू लूकी नं समभावतो कैवण लागी—म्हें तो खुद ई लुका-छिपी सू काठो आती आयगी । खड खावा जीव तो सोरका मे रैवै । कायो होयनै एक खेत री मुकातो हज फराय लियो । रिपिया तो घणा भरणा पडिया, पण वात सगळी फायदा री व्हेगी ।—फुलवाही

उ०—३ सो एक जायगा म्हा कन्हा मुकात कराये लेवो उपरां कर साख स्याळ आई छै सो लोगां कन्हे वहावो ।

—गोड गोपालदास री वारता

मुकावलो—स० पु० [अ०] १ साक्षात्कार, आमना सामना, प्रत्यक्ष मिलन ।

२ समानता, बराबरी, तुल्यता ।

उ०—१ राजाजी एक दीवाण रै मूढा सांम्ही देखनै कैवण लागी—लोग समझैला के म्हें फगत प्रीत करणी ई जाणू, न्याव करणी जाणू ई कोनी । जाणू सब हू, पण वेळा कठै । कोई गजा न्याव करणा मे म्हागे मुकावलो कर सकै भलां ।—फुलवाही

उ०—२ पछै तीनू लोका मे म्हागे कुण मुकावलो कर सकैला अबै थनै ठा' पही के माया रा जोर सू काई वाता व्हे सकै ।

—फुलवाही

३ लड़ाई या कुश्ती मे होने वाली भिडत, टक्कर, मुठभेड सामना ।

उ०—१ म्हें फौज रा नाकुछ सिपाई उण कळजुगी अवतार सत तीडाराव री कीकर मुकावलो कर सकता ?

उ०—२ इतरें मे दिन ठगणे नू भायो सो मुकावलो हुवो, तीर गोळी चाली ।—सूरे खीवे काघळोत री वात

४ प्रतियोगिता मे भागे की क्रिया या भाव, कम्पीटीशन ।

५ तुलना, जोड ।

उ०—नाजाइज लगान अर कर वसूल करणा मे उण सू किणी री मुकावलो नी हो ।—फुलवाही

६ असल व नकल लेख का मीलान ।

७ विरोध ।

८० भे०—मुकामलो, मुकावलो, मुकालवो, मुकालवो,

मुकाविल—क्रि० वि०—१ सम्मुख, सामने ।

२ तुलना मे, जोड मे ।

३ विरोध मे ।

वि०—१ प्रतिद्वन्द्वी ।

२ शत्रु, विरोधी ।

मुकाविलो—देखो 'मुकावलो' (रु भे )

मुकायोडो—देखो 'मुकायोडो' (रु भे )

(स्त्री० मुकायोही)

मुकालवो, मुकालवो—देखो 'मुकावलो' (रु भे )

उ०—१ गठोडू पठाणू के जग आगू सँ लेखा जिमी बखत मुकालवा हुवा ।—सू प्र

उ०—२ तद मयसाळजी आघीक फौज लेय जावूराय री फौज

सू मुकालवी कियो सू मोरचा बैठा गोळिया री राह हुवण लागी ।

—द वा

उ०—१ लाखोजी चढ़िया । कटक मुकालवै आयी ।—नैणसी

मुकावणो, मुकाववो—देखो 'मुकाणो, मुकावो' (रू भे )

उ०—१ सगलां नै सला सूत देवणियो अवमण्यो सपूत, सोचै-समझै अर न्याव तपास, भगडा भाटा रा टटा मुकावो ।

—दसदोख

उ०—२ सुग्रीव तणो दुख भांग्यो सह । मुकावो वाली जरासघ मह ।—ह र

मुकावणहार, हारो (हारो), मुकावणियो—वि० ।

मुकाविओडो, मुकावियोडो, मुकाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मुकावीजणो, मुकावीजवो—कर्म दा० ।

मुकावियोडो—देखो 'मुकायोडो' (रू. भे )

(स्त्री० मुकावियोडो)

मुकियोडो—देखो 'मुकियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मुकियोडो)

मुकीम-वि० [अ०] जो थोडे समय के लिये कहीं ठहरा हुआ हो, अस्थायी निवासी ।

पु०—तरकारियों आदि का थोक व्यापारी ।

उ०—वाजा रे अधबीच गया व्योपारी नै मोदी खाने सराफे मुकीमां री दुकाना बन्दै गया ।—गौड गोपालदाम री वारता

मुकुद-म० पु० [म०] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान ।

उ०—मुकुद वसै मन ज्यारै माय । सदा सुख वासरै रैण विहाय ।

—ह र

२ विष्णु का नामान्तर ।

उ०—१ अर नीच क्रव्याद रा कुल नू दुहिता दैण री किण मूढ कही छै । जिण रीति मुकुद रा मंदिर नू विहाय खेचपाळ पूजण री सद्धा किसी कापुरुष चित धरै ।—व भा

उ०—२ नमो मछ सग-महाण मुकुद । नमो कळि रास दइत-निकद ।—ह र

३ श्री कृष्ण ।

४ नव निधियो मे से एक (पौराणिक)

५ एक प्रकार का रत्न ।

६ पारा, पारद ।

७ सफेद कनेर ।

८ डोल विशेष ।

९ मुक्ति देने वाला ।

१० एक राजा । (प्राचीन)

रू० भे०—मुकुद, मुकद, मुकुदि ।

मुकुदक-सं० पु० [सं०] १ व्याज ।

२ साठीघान ।

रू० भे०—मुकदक,

मुकुवि—देखो 'मुकुद' (रू भे )

उ०—राम लक्ष्मण मही दुखि पाड्या, पाच पाडव विदेमि ममाड्या । डूब नइ धरि जल वहिउ हरचदिइ, भालही मरण लाघ मुकुदि-ई ।—सालिसूरि

मुकुट-सं० पु० [सं०] १ प्राचीन समय मे प्राय राजाओ के शिर पर धारण किया जाने वाला तथा वर्तमान देवी-देवताओ की मूर्तियो पर बांधा जाने वाला एक शिरो-भूषण, ताज, किरीट ।

उ०—१ राजा सयमेव आस्थान सभा वइसइ, ऊपरि मेघाडवर छत्र, मस्तकि मुकुट, कानि कुडल, हृदय मोती तणव हार ।

—व स

उ०—२ मूछ नाक सिर री मुकुट, ससतर साम सनाह । साबत लायो समर सू, कै नह लायो नाह ।—वा दा

२ किलगी ।

३ शिखर, शृंग ।

४ एक क्षत्रिय वंश । (प्राचीन)

वि०—सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।

रू० भे०—मुकुट, मुकट, मुकटि मुकुटि, मुकुटी, मुकुट्ट, मुगट, मुगट्ट, अत्या०—मुकटो मुगटियो मुगटो,

मुकुटवध मुकुटवद्ध-सं० पु०—१ सर्व श्रेष्ठ राजा, राजाओ मे श्रेष्ठ ।

उ०—वीर सेन प्रमुख एक बीस सहस्र वीर, उग्रसेन प्रमुख सोल सहस्र मुकुटवद्ध राजा, महसेन प्रमुख छपन्न सहस्र बलवत ।—व स

२ सन्यासी ।

रू० भे०—मुकुटवध, मुगटवध,

मुकुटमण, मुकुटमणि-वि०—सर्वश्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—राम वरण जुग रूप भै, सह वरणा सिरताज । रहै मुकुट

मण राज, आखर अवरा ऊपर ।—र. रू

सं० स्त्री०—मुकुट मे लगने वाली मणि ।

रू० भे०—मुकुटमणि, मुकटमणि, मुगटमण,

मुकुटसप्तमी-सं० स्त्री०—जैनियो का व्रत विशेष ।

उ०—जिन शासन प्रभावना, चतुरथ सस्ट अष्टम दसम अरद्ध मास क्षण, यमांनपचमी, मुकुटसप्तमी, माणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमणतप वरद्धमानतप द्विजय ।—व म

मुकुटि, मुकुटी-वि०—१ जो मुकुट धारण किये हुए हो ।

२ देखो 'मुकुट' (रू भे )

मुकुटेस्वर-सं० पु० [सं० मुकुटेस्वर] १ एक शिव लिंग ।

२ एक तीर्थ विशेष ।

मुकुट्ट—देखो 'मुकुट' (रू भे )

उ०—नमो लख कद्रप कोटि लावन्न, नमो हृदि मारण रूप मदन्न । वदन्न उलासित नेत्र विसाळ, मुकुट्ट किरीट भलै गळ माल ।

—ह र

मुकुनी—देखो 'मुकनी' (रू भे )

मुकुर-सं० पु० [सं०] १ दर्पण, शीशा, आईना, काच ।

उ०—मन, मोती, चख, मेर, पाकी घट, मूगी, मुकुर । फूटा एता

फेर, मेळघा मिलें न, मोतिया ।—रायनिह सादू

२ अक्किमित फूल, कली ।

४ यकुल वृज, मोलसिगी ।

४ वेर ।

५ कुम्हार के चाक का डहा ।

रु० भे०—मकुर, मुकर,

मुकुळ-म० पु० [म० मुकून] १ शरीर, देह ।

२ जीवात्मा, आत्मा ।

३ पृथ्वी ।

४ कली ।

५ जमाल गोटा ।

६ गुग्गुल ।

मुकुळिन-वि० [म० मुकुलित] १ भय मूदा, भय मिला ।

२ कलियो से युक्त (वृक्ष)

३ खिला हुआ ।

४ धोमायमान, शोभित ।

उ०—सयोगिनी की वेम देख्यउ, तव उवेख्यउ कत । स्निगार मोमत सहन भगई, महल दीप दीपत । उनमत पीवर अति घन स्तन, मध्य मुकुलित माल, मखी मास काती दहत छाती, माल तो भई भाल ।—वि कु.

मुक्केस, मुक्केस-म० पु० [म० मुक्केस] १ मोने-चादी के चौड़े तार ।

२ उक्त तारों का बना कपड़ा, वादना ।

उ०—सजत के चिकन साज, सुदरां ससोभरा । करंत के मुक्केस याम, भार कार चोभरा ।—सू प्र

मुक्क—१ देखो 'मुक्त' (रु भे)

२ देखो 'मूक' (रु भे)

३ देखो 'मुख' (रु भे)

मुक्कणी, मुक्कणी—देखो 'मूकणी, मूकणी' (रु भे)

उ० १ दहल दिगज दिमा मेर मरजादा मुक्किय । अदळ-वदळ जळ उदघ, चडि मिघ आमन चुक्किय ।—र रु

उ०—२ दुल्लह राठ राठोड, दखण घग्गा काम मैमती । कारण पाण ग्रहणी, मांहे ले मुक्कणी वांण ।—गु रु वं

मुक्कणहार, हारी (हारी), मुक्कणियो—वि० ।

मुक्कियोडो, मुक्कियोडो, मुक्कियोडो—भू० का० कु० ।

मुक्कणीजणी, मुक्कणीजणी—प० वं वा० ।

मुक्कतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रु भे)

उ०—कोमुट खंवे फडि कसं तांण, मड पत्यक मोखम करण द्रोण । केसर तिलक भाळोमळेय, मुक्कतामाळ सोहं गळेय ।

—गु रु व

मुक्कनी—देखो 'मुक्कनी' (रु भे)

उ०—पुत्रपूत चडि दुरम तुरंगे । आग्रति वसन मुक्कना अगे ।

रा रु

मुक्कणी—देखो 'मकराणी' (रु भे)

उ०—केवी केवी मुक्कणी, खेत जाया खुरसाणी । सामद्री वेग में सर, पेनियं प्रवत्त पर ।—गु रु व

मुक्कळा—स० पु०—चोहान वश की एक शाखा ।

मुक्काम—देखो 'मुक्काम' (रु भे)

उ०—जदि नजीक जोघाण, सभं मुक्काम सकाजा । भग केसर वही अतर, महं डवर महाराजा ।—सू प्र

मुक्कियोडो—देखो 'मुक्कियोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुक्कियोडो)

मुक्की—स० स्त्री०—१ हाथ की चारो अंगुलियां व अंगुष्ठ को हथेली पर एकत्र करने की दशा, अवस्था या भाव, बाची हुई मुठ्ठी ।

२ उक्त प्रकार वधे हुए हाथ से किया जाने वाला प्रहार ।

रु० भे०—मूकी, मूकी, मूकि, मूकी, मूकी ।

मुक्केवाज—वि०—१ जो मुक्का मारने में दक्ष हो ।

२ जो मुक्का मारकर लड़ता हो ।

मुक्केवाजी—स० स्त्री०—१ मुक्को का आघात करने की क्रिया ।

२ खेल कूद में एक प्रतियोगिता जिसमें परस्पर मुक्के मार पराजित किया जाता है । (बॉक्सिंग)

मुक्की—स० पु०—हाथ की पांचो अंगुलियों को समेट कर बनाया हुआ रूप, घूमा ।

उ०—हाथ जिका होय सो तरवार मू तुस्त काम करे तरवार नही भी जे होय तरे मुक्का सेती मार भजावे ।—नी प्र

रु० भे०—मूकी, मूकी, मूकी ।

मुक्क—१ देखो 'मुख' (रु भे)

उ०—१ मुगार जिकाह वसं तू मुक्क । ममार समद तिरं ते सुक्क ।

—हर

उ०—२ अहि वेल पथ कपूर सुक्क । तवोल लान सोहन मुक्क ।

—गु रु व

२ देखो 'मुक्त' (रु भे)

मुक्कमल—देखो 'मक्कमल' (रु भे)

उ०—करे वाणिज्ज एक हट्ट रूप सक्कलत्त ए । साया चौतार मुक्कमल रेसमी वसत्त ए ।—गु रु व

मुक्कहलि—स० पु० [सं० मोक्ष-स्थल] वैकुण्ठ, मोक्षस्थल ।

उ०—सव्वट्ट मिद्धि तमु उप्परि, जिम तमु उप्परि मुक्कहलि । तिम सूरि जिणेमर जुगपवर, सूरहि उप्परि इत्थ कलि ।

—अमयतिक यति

मुक्क—१ देखो 'मुख' (रु भे)

वहै वाज लीण, भरं मुक्क फीण । मवं मग मोण, अमूक्त भोण ।

—गु रु व

२ देखो 'मुक्ति' (रु भे)

मुक्त—वि० [स०] १ जो वन से लूट गया हो, मयनत्र आजाद ।

२ जो सांसारिक बंधनो से अलग हो, जो सामाजिक बंधनो से अलग हो ।

उ०—१ मन दे मरजीवन के मग में, जनजीवन मुक्त फिरे जग में, फरियाद हिये घरले फिर ले । बस वे जन हैं सरले विरले ।

—ऊ का

उ०—२ जपे जगदीस सजीवन जुक्त, महा धन जे जनजीवन मुक्त ।

—ऊ का

३ जो मरण जीवन से छूट कर मोक्ष पा गया हो । छूटा हुआ ।

उ०—ताहरां लाखैजी राखाईत नू नजीक अणायो, माथा उपर हाथ दियो । जीव मुक्त हवो ।—नैणसी

४ जो पराधीन न हो ।

५ जो त्याग दिया गया हो, फैंक दिया हो ।

६ प्रदत्त ।

७ गिरा हुआ ।

स० पु०—१ एक ऋषि ।

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—गुरु आप अग्यानी जुगत न जाणी; चेला मुक्त चहदा है । करणी रा काचा साय न साचा, वाचा बहोत बकदा है ।

—ऊ का,

रू० भे०—मुक्त, मुक्क, मुक्ख, मुगत, मुगत्त,

मुक्तकठ—वि० [स०] १ जो निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता हो, स्पष्टवादी ।

२ जो बोलते समय सीमा को तोड़ देता हो ।

३ जोर से बोलने वाला ।

रू० भे०—मुगतकठ,

मुक्तक—स० पु० [स०] १ ऐसी कविता जो अपने आप में पूर्ण हो, अर्थात् एक छंद में पूरा विषय या बात आ गई हो । श्रवण काव्य का उल्टा जिसे उल्टू भी कहते हैं, फुटकर कविता ।

२ छोटे-छोटे वाक्यों का मरल एवं सीधा गद्य ।

३ छंद शास्त्र में कविता का एक भेद जिसमें गणों का बंधन नहीं रहता है ।

४ प्राचीन काल का एक शास्त्र, हथियार ।

रू० भे०—मुगतक,

मुक्तकर—वि० [स] उदार, दानी ।

मुक्तक्षेत्र—देखो 'मुक्तिक्षेत्र' (रू भे)

उ०—तीरथा नै रवाना होय गया था सो भागे केदारनाथ परम, विस्वधारपरस, भूठति माही कर नैपाळपरम, मुक्तक्षेत्रपरस वदनीनाथ परस अयोध्या कासी परस परागनी आय, मकर रो नाहण करि, फेर पाछा जाय कुवर रा पिंड भरायां पछे वैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकडेय कुंड तरपण किया ।—पलक दरियाव री बात

मुक्तज—स० पु०—मोती । (हि ना मा ना मा)

रू० भे०—मुक्तज, मुगतज,

मुक्तपुष्प मुक्तपुष्प—स० पु० [स०] १ वह व्यक्ति जिसकी आत्मा मोक्ष

को प्राप्त हो चुकी हो

२ वह व्यक्ति जो किसी बंधन या प्रपच में उलझा हुआ न हो ।

मुक्तमाळ, मुक्तमाळा—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—'अभमाळ' क्रोध देखे अताळ, महमदसाह दिये मुक्तमाळ ।

—वि स.

मुक्तवसन—वि० [स०] निर्वसन, नगा, दिगम्बर ।

स० पु०—जैन यतियों का एक भेद ।

रू० भे०—मुगतवसन,

मुक्तवेणी—स० स्त्री०—पृथ्वी, धरती । (हि ना मा)

मुक्तहस्त—देखो 'मुक्तकर'

मुक्ता—स० स्त्री० [स०] १ मोती । (ना मा)

२ वेश्या, रंडी ।

३ बहुत, पर्याप्त ।

रू० भे०—मुक्ता, मुकति, मुकती, मुक्ता, मुगता, मुत्ता, मूक्ता, मूगता ।

मुक्ताग्रहजया—स० पु०—डिगलगीत रचना की एक प्रणाली विशेष

रू० भे०—मुगताग्रहजया,

मुक्ताग्रहजगबधजया—स० पु०—डिगल में गीत या छन्द रचना की एक प्रणाली ।

मुक्ताचर—स० पु० [स०] हस । (ना मा)

रू० भे०—मुक्ताचर, मुगताचर,

मुक्ताचूडक—स० पु०—एक आभूषण विशेष ।

उ०—लघुचूडक मुक्ताचूडक सुशरण चूडक मोतीसरी करंगी ककरंगी पादवेष्टक पोलरकत्रिक चतुमरक नव सरक अस्तादससरक इति आभरणणि ।—व स.

मुक्ताप्रसू—स० पु० [स०] सीप ।

मुक्ताफल—स० पु० [स० मुक्ताफल] १ मोती । (व स)

उ०—प्रवळ परोजा नीलबी, मुक्ताफल ता मांदि । लसत हसत से लसणिया, सोमा कही न जाय ।—गजद्वार

२ कपूर ।

३ एक छोटी जाति का लिसोडा ।

४ लवनीफल, हरफा रेवरी ।

५ नगीना, रत्न ।

रू० भे०—मंकताहळ, मुक्ताफल, मुक्ताळ, मुक्ताहळ, मुक्ताहळ, मुगतफल, मुगताफल, मुगताहळ, मुताहळ, मुत्ताहळ, मुत्ताहळ, मूगताफल, मूगताहळ,

मुक्तामक्षि—स० पु० [स०] हस, मराल ।

रू० भे०—मुगतामक्षी,

मुक्तामाल—सं० स्त्री० [स० मुक्ता + माला] मोतियों की माला, मोतियों का हार ।

रू० भे०—मुक्तमाळ, मुक्तामाळ, मुक्कतामाळ, मुक्तमाळ मुक्तमाळा,



मुगतामाळ, मुगतामाळ ।

मुक्तामुक्त-स० पु०—एक शस्त्र विशेष ।

उ०—टुंगी पामु परमु पट्टिम मक्ति कर मुक्त यथमुक्त मुषतामुक्त टुम्फोट, तग्गारि अग्नि तेल लोहवद्ध लुडि एव विष आयुव विमैसी दाचा मरिया ।—व स

मुषतालकार-म० पु०—एक आभूषण विशेष ।

उ०—तीण महोत्सवि समय बालिका हार शूटते, वेणीदड छूटते नेवर फुटते, पटोला फाटते घटजुयल विणसते, अनेकि आभरणि विमते, मुषतालकार पडते, स्वेद विदु चडते, जोवा तण्डु कारणि चालिड ।—व स

मुक्तालर-म० स्त्री० [म० मुक्ता-लतिका] मोतियो की माला, हार ।

उ०—मीम फूल नय कठमरी श्रीर, तोलक होरन की मुक्तालर ।

—रमीनराज रा गीत

मुक्तावळ, मुक्तावळि, मुक्तावळी-म० स्त्री० [स० मुक्ता-आवलि]

१ मोतियो की माला, हार । (व स)

२ डिगल का एक गीत या छंद विशेष ।

३ तपस्या, साधना ।

४ प्रायश्चित्त ।

ह० भे०—मुक्तावळ, मुक्तावळि, मुक्तावळ, मुक्तावळि, मुक्तावळी, मुगतावळ मुगतावळि मुगतावळी,

मुक्ताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—दादू महज मरोवर आतमा, हमा करै कलोल । मुख सागर मूमर भग्ना, मुक्ताहळ मन मोल ।—दादूवाणी

मुक्ताहार-म० पु० [स०] मोतियो की माला, मोतियो का हार ।

ह० भे०—मुक्तहार, मुक्ताहार, मुक्तहार,

मुक्ति, मुक्ती-म० स्त्री० [म०] १ मुक्त करने की क्रिया, भाव या धर्मशास्त्र ।

२ किसी प्रकार के बन्धन से छुटकारा, आजादी, स्वतन्त्रता ।

३ जन्म मरण से छुटकारा, मोक्ष, निर्वाण, परमपद ।

उ०—१ कोटन श्रुषी सील के कारन, परम मुक्ति जिन पाई । ऊमगदान श्रव मीन आराधत, पर हर नाश पराई ।—ऊ का

उ०—२ श्रद्धि न मांगू मिद्धि न मांगू मुषिन न मांगू वडाइ । माघु मुगत मागत हू देवा, कृपा कर बगसाई ।—श्रीमुखरामजी महाराज

उ०—३ मुषिन ओ गहणो पहरस्या पाई पहरषो है हरि गुरु परताप ।—मीरा

उ०—४ तिवारे विचारषो साधापणो दोहरी घणों । बने विचारषो इमो दोहरो जद मुषित मिनै ।—मि द्र

उ०—५ स्वामा मजीवन सावके, स्वामी वेद रचीजे । नीति नेम साधाय के, मुषनी पद दीजे ।—श्रीमुखरामजी महाराज

वि० वि०—उत्तम ऐसा माना जाता है कि जीवात्मा विश्वात्मा से जाकर मिन जाता है । उसे साधन जन्म लेने की आवश्यकता नहीं रहती ।

४ देहिक या भौतिक कष्टों से छुटकारा, मृत्यु, मौत ।

५ किसी प्रकार के बोझ या उत्तरदायित्व से छुटकारा ।

६ त्याग ।

७ फँकने की क्रिया या भाव ।

ह० भे०—मुक्त, मुक्ति, मुक्ती, मुक्ती, मुक्ती, मुक्ती, मुक्ती, मुगति, मुगती, मुगति, मुगती, मुगति, मुगती, मुगति, मुगती, मुगति, मुगती,

मह०—मुगती,

मुक्तिक्षेत्र-स० पु० [स०] १ काशी या वाराणसी का एक नामान्तर ।

२ कावेरी के तट पर वकुलाग्रथ नामक तीर्थ ।

ह० भे०—मुक्तिक्षेत्र, मुक्तिक्षेत्र

मुक्तिपुरी-स० स्त्री० [म०] वकुण्ठ पुरी ।

उ०—जीवितव्य तर आज ए फलिउ, द्वार मुक्तिपुरी आज माकलिउ ।—सालिगुरि

उ०—२ श्री धर्ममी आतम अप दाता । देत सधाना मुक्तिपुरी ।

—ध व प्र

ह० भे०—मुक्तिपुरी, मुगतिपुरी,

मुक्तीपुरी—देखो 'मुक्तिपुरी' (रू भे)

मुक्तेस्वर-स० पु० [म० मुक्तेस्वर] एक शिव लिंग ।

ह० भे०—मुगतेस्वर,

मुखडि-स० पु०—एक शस्त्र विशेष ।

उ०—त्रिशूल सक्ति सर तोमर मुरवि श्रद्ध मुरवि परमु पास पट्टिम हूम लागूल मुषल मुखडि मृगदर लगुड गदा दड ।—व स

मुख-स० पु० [म०] १ प्राणियों के शरीर का वह प्रमुख अंग जो आँख व नाक के नीचे होता है तथा खाने-पीने बोलने, बात करने आदि का कार्य करता है । यह ओष्ठ, दाँत जीभ, तालु, श्वश्र-ग्रन्थ आदि कई अवयवों का संगठित रूप है । मुह, मुख ।

उ०—१ मुख ग्रही मोखी पूनना मारि । बडिमि बलाणे विन विसन ।—ह ना मा

उ०—२ साचा मुख मानव तणा, जा मुख निकसै राम । जन हरिया मुख राम विन, सोई मुख वेकाम ।

—श्री हरिरागदासजी महाराज

उ०—३ मुख न बोलै पट न खोलै माँक तै परमात । बोलने जुग बीतन लागी, काहे की कुसलात ।—मीरा

उ०—४ रग लक्षण रजपूत वात मुख झूठ न बोलै । रग लक्षण रजपूत बाछ परनार न खाली ।—ऊ का

उ०—५ अग छावडइ जिमा लोचन मुख । छोखा जिमा खुतगी तीर ।—महादेव पारवती री बेलि

उ०—६ राजकवर केर तपशी रै पना मे साधो निवाय नै कँवण लागी—आपरा छोमुख स आप ओ काई करमावो ।

—फुलवाडी

पर्या०—अखण, अस्ता, आनन, आम, घण, धनीतम, तुह, दत्तालय,

बोलण, मुह, मुहों, रसनाग्रह, लयन, वक्रक, वक्रतर, वक्र, वदन ।

२ शिर का अग्रभाग, चेहरा, आकृति, शक्ल, सूरत ।

उ०—१ मुख वानैत महीपती, करन अनै चद्रमाण । कियो सक्रोधा  
साम कज, या जोधां भाराण ।—रा रु

उ०—२ भगति करेसी राम की, साच वचन मन सूर । चोट सहै  
सत सबदी की, हरीया जा मुख नूर ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ दिलीवै सोच 'गजसाह' मुख देखिजै । दिलीवै हरख तोई  
'गजण' देखै ।—गुरु व

उ०—४ मुख देखन के अवधूत भती, जन पूजत जानत काछ जती ।  
—ऊ का

१ दरवाजा, दरवाजे के रूप में काम आने वाला विवर, द्वार,  
मुह ना ।

४ बोरी, थैली, बर्तन आदि का खुला भाग, मुह ।

५ ऊपर भाग, सिरा, छोर ।

६ नोक ।

७ अगला हिस्सा, अग्रभाग, सामना ।

उ०—मछराळ आफाळ चढे अणियां मुख, वीफर माडि म्हाळ  
वटी पडताळ धबुकक घडा बिच पाकडि, जोह वकै मारि-मारि  
जुटा ।—मा वचनिका

८ गर्दन के ऊपर का या अगला भाग ।

९ चेहरे का हाव-भाव, भावना, प्रकृति ।

उ०—सुण साता मुख सोय, चुण बाता चरचा चलै । धुण लकडी  
तन घोय, जिण री कुण 'जाणे' ।—ऊ का

१० पक्षी की चोंच ।

वि० [स० मुख्य] १ मुखिया प्रधान, मुख्य अंगुवा ।

उ०—१ मुख इतां वणी छळ मारवा, मुहर अणी वध भेलिया ।

जुघ करण जंत-नामी जरू भडा अर्माभा भेलिया ।—रा रु

उ०—२ मुडण न्हावण लाड मुख, साधे पूरव सूर । बखसे घन  
कीधा बळें दुजगजा दुख दूर ।—घ भा

उ०—१ पहली मुखे चमरवध पडिया, गोहै गज-वधा ओगाड ।  
जवन तणी दरगा जोधपुरी, जडिया सह हैरण जम-दाड ।

—गुरु व

क्रि० वि० [स० मुख] सामने, सम्मुख, आगे ।

उ०—मुख ऊपर मिठियास, घट माहि खोटा घडै । इमड़ा सू इकळास  
राखीजै नह राजिया ।—किरपाराम

रु० भे०—माह, मु, मुह, मुहि, मुही, मुक्क मुख, मुक्खि  
मुखा, मुखि, मुखिइ मुखी, मुख्ख, मुह, मुहि, मुही, मू, मूह,  
मूख, मूखी, मूह ।

अल्पा०—मुखडो,

मह०—मूहड,

मुखअग्र—स० पु० [मुखाग्र] १ अघर, ओष्ठ, होठ । (ह ना मा )

२ अगला भाग, सामने का हिस्सा ।

३ देखो 'मुखाग्र' (रु. भे )

मुखक—देखो 'मूसक' (रु. भे ) (अ मा )

मुखखुर—स० पु० [स० मुख + खुर] दांत ।

मुखगधक—स० पु० [स० मुखगधक] प्याज ।

मुखग—देखो 'मुखाग्र' (रु. भे )

मुखडो—देखो 'मुख' (अल्पा, रु. भे )

उ०—१ राम राय जिण वन वसै हो, सो वन धन धन जाण ।

इक मुखडो प्रभु-गुण घणा हो, किण विघ करू वखाण ।—गी रा

उ०—२ आख्या नहीं चौखे म्हारी जच्चा मुखडे नहीं बोलै जी ।

लो गी

उ०—३ बिडरी हिरणीसी फिरणी बिजकाती । मुखडो मुसकाती  
जोरो जतळाती ।—ऊ का

उ०—४ मुखडो कुम्हळायो भोजन विन भारी । पय पय करतोडी  
पोढी पिय प्यारी ।—ऊ का

मुखचग—स० पु०—एक प्रकार का वाद्य ।

मुखचपळ—वि० [स० मुखचपल] १ वाचाल, बकवादी ।

२ गाली बकने वाला, कटु-वक्ता ।

३ बढ़कर बोलने वाला, लवार ।

मुखचपळता—स० स्त्री०—१ मुखचपल होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ कटु भाषण ।

मुखचपेटिका—स० स्त्री० [स०] थप्पड़ ।

मुखचबु—स० पु०—चार मुख वाला, ब्रह्मा, चतुरानन ।

मुखचोरी—स० स्त्री० [स०] जिह्वा, जीभ ।

मुखछवा—स० स्त्री०—सुपारी ।

मुखज—स० पू० [स] ब्राह्मण ।

मुखजबानी—वि०—कठस्थ ।

मुखतार—वि० [अ० मुखतार] १ जिसको किसी विशेष अवसर पर कुछ  
अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाया गया हो प्रतिनिधि एजेण्ट ।

२ स्वतन्त्र, आजाद स्वच्छन्द ।

स० पु०—१ किसी जागीर का व्यवस्थापक ।

उ०—साहजी सय्यद पटेल रें मुखतार हो जिण री वेटी मोहमद  
मीरखां दिली फिरगी री सिरकार सू पाच सो रुपिया महीना रा  
महीनै पावै —वां दा ख्यात

२ हल्के दर्जे का वकील छोटी अदालतों का वकील ।

रु० भे०—मुखतियार, मुखत्याग, मुगतार, मुगत्यार,

मुखतारश्राम—स० पु० [अ० मुखतार-श्राम] ऐसा प्रतिनिधि जिसको सभी  
कार्य करने के अधिकार दिये गये हों ।

रु० भे०—मुगतारश्राम,

मुखतारकार-सं० पु० [अ] वह जिसे किसी काम की देख रैख के लिये नियुक्त किया गया हो।

रू. भे — मुखतारकार,

मुखतारकारी-सं० स्त्री० [अ] 'मुखतार' का काम या पद।

रू. भे — मुखतारकारी,

मुखतारखाम-सं० पु० [अ] विशेष प्रतिनिधि।

रू. भे — मुखतारखाम,

मुखतारनामी-सं० पु० [अ मुखतार-नाम] १ वंश रूप से मुखतार नियुक्त करने का पत्र।

२ ऐसा पत्र जिसके द्वारा किसी को प्रतिनिधि बनाते हुए कुछ अधिकार दिये गये हो।

रू. भे — मुखतार नामी,

मुखतारी-सं० स्त्री० [अ मुखतारी] १ मुखतार होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ मुखतार का पद या कार्य।

३ प्रतिनिधित्व।

४ एक प्रकार की कानूनी परीक्षा, जिसे छोटी अदालतों में मुकदमा लड़ने के अधिकार प्राप्त करने के लिये, पास करना पड़ता है।

रू. भे०—मुखत्यारी, मुगतारी, मुगत्यारी,

मुखतियार—देखो 'मुखतार' (रू. भे.)

मुखती—देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

मुखत्यार—देखो 'मुखतार' (रू. भे.)

मुखत्यारी—देखो 'मुखतारी' (रू. भे.)

उ०—तद इशां सुरताण भाण रे नू मालक कियो। अरू विजो हरराजोत परधान हुवो। मुखत्यारी विजो री राख सुरताण तो नाम मात्र रयो। —द दा

मुखदरस-सं० पु०—दरंग, शीशा, आरखी, काच। (अ मा)

मुखदीपण, मुखदीपन-सं० पु० दांत, दंत। (अ मा)

मुखदूषण-सं० पु० [सं मुख दूषण] प्याज।

मुखधोषण-वि०—१ कड़वा। (२) स्वादहीन।

३ अप्रिय, कटु।

मुखनम, मुखनस-सं० पु० [अ मुखनम] १ होंजडा, नगसक।

उ०—वा पातमाह आलमगीर हायी असवार कुरांन में मुरत लगाय रयो है। लारें खवासी में मुखनस वंठो मोरछड़ करै है। —द दा

२ फायर, टरपोक।

मुखपट-सं० पु० [सं] १ घूषट।

२ नकाब।

मुखपति—देखो 'मुहपति' (रू. भे.)

उ०—घोघा ने धलि मुखपति जीवा, मेरू जितरा लीव। किरियो समक्ति बाहिरी जीवा, एको बाज न सीध। —जयवाणी

मुखपाक-सं० पु०—मुख का रोग, जिससे मुह में छाले पड़ जाते हैं।

मुखपिड-सं० पु० [सं मुख पिड] १ मृत व्यक्ति के उद्देश्य में उसकी

अपेक्षित क्रिया से पहले किया जाने वाला पिड।

२ कोर।

मुखपूरण-सं० पु० [सं] कुल्ला, आचमन।

मुखप्रिय-सं० पु० [सं] सतरा, नारंगी।

मुखफट्ट—देखो 'मुहफट' (रू. भे.)

मुखवध-सं० पु० [सं] भूमिका, प्रस्तावना।

मुखवधन-सं० पु० [सं] १ ढक्कन।

२ भूमिका

मुखवर—देखो 'मुखविर' (रू. भे.)

मुखवास-सं० पु० [सं मुख + वास] १ भोजनोपगत, मुख शुद्धि के लिये खाया जाने वाला पदार्थ।

उ०—तिमे घडी दो माहै सगळो साथ जीमियो। चळू कीया पान, लूग, मुखवास दीधा। —जगमाल मालावत री बात

२ पान, ताम्बूल (अ. मा)

रू. भे०—मुखवाम,

मुखविर-सं० पु० [अ मुखविर] गुप्त रूप से समाचार देने वाला, गुप्तचर, जासूस

रू. भे — मुखवर

मुखविरी सं० स्त्री०—१ गुप्तचरी, जासूसी।

२ मुखविर का पद।

मुखविसय-सं० पु०—बड़ा चमगादड़।

मुखमा-सं० पु०—तोता, कीर। (अ मा)

मुखमडण, मुखमडन-सं० पु०—१ पान। (अ मा)

२ स्थियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व स)

मुखमल-सं० पु०—१ पुष्प, फूल। (अ मा)

२ देखो 'मलमल' (रू. भे.)

उ०—१ असलूफ रग उजाम, वित महे मुखमल खास। अतिलूव छिब उणवार, दुति जरी छापादार। —सू प्र

उ०—२ कसवी जरवाप मुखमल कथीपा इलाहचा नागीकुजर प्रमुख पचरगी वागा पहरिया। —व स

उ०—३ मेह विना घरती तरसे, मेहडो हुषण दे। मोचहिया घडाव मुखमल री मेहडो हुषण दे। —लो गी

उ०—४ सेठाणी पाळपोटी मारघा रथ मे वंठो ही। मुखमल री वेल रे माय तावडा री रेमो ई आवाण री ठोड नी ही। —फुलवाही

मुखमली—देखो 'मलमली' (रू. भे.)

उ०—१ नगर कठियागा रे नबाब इस्तरा री चरचा करता करता ई सगळा रईस मुखमली विद्यावणां माये सुयग्या। —फुलवाही

उ०—२ भीणा भुग्गा, चूनही री पाग, पल्लाळो घोती, मुखमली जूती, जहाय रा लूग, सोने रा जाळिया —दसदोख

मुखमलू—देखो 'मलमल' (रू. भे.)

मुखमल—देखो 'मखमल' (रू भे)

उ०—जगम्म पसम्म मुखमल्ल जेही । दिर्यं जाणिं आरीस सारीस देही ।—वचनिका

मुखमिट्ट—देखो 'मुहमीठी' (रू भे)

उ०—काछ द्रढा कर वरसणां, मन चगा मुख मिट्ट । रण सूर जग वल्लभा, सो हम चाहत दिट्ट ।—ऊ का

मुखमुली—देखो 'मखमली' (रू. भे)

उ०—बिणजारी घणी ई समझाइस करी, पण वामणी एक ई बात नीं मांनो । आपरी मुखमुली रखी सू वो वामण वास्तै निसैवार दवाई दे दी, पण इण सू वत्ती मदत सारू वो वामणी नै राजी नी कर सकयो ।—कुलवाडी

मुखम्मल—देखो 'मखमल' (रू भे)

उ०—कळवूत रजत सोन्न सकाज । सिकळात मुखम्मल फिरग साज ।—सू प्र

मुखर—स० पु० [स०] १ प्रधान पुरुष ।

२ शख ।

३ नेता ।

४ नूपुर ।

५ काक, कौआ ।

६ मुख, चेहरा ।

उ०—ऊठती अनै पढती भवन, तन विपती सू तावियो । मन दुमन धियो फीकै मुखर, यम सूरजमल आवियो ।—पा प्र ७ शब्द ।

वि०—१ वातूनी, वाचाल ।

२ रुमभुम शब्द करने वाला ।

३ छुतिमान करने वाला, द्योतक, प्रकाशक ।

४ कटुभाषी ।

५ उपहास करने वाला, मजाकिया ।

६ मुख, प्रधान ।

मुखरातळ—स० स्त्री०—१ दुर्गा देवी ।

२ मास-भक्षी पक्षी ।

३ रक्तवर्ण मुख ।

मुखरिका, मुखरो—स० स्त्री० [स०] लगाम, बागडोर ।

मुखरिन—वि० [स०] शब्दायमान । (ध्वनि)

मुखरूप—स० पु०—होठ, ओष्ठ । (अ मा)

मुखरोध—सं० पु०—मुख के अन्दर अर्थात् जीभ, दाँत, मसूढो आदि में होने वाला रोग । ये प्राय ६७ रोग माने गये हैं ।

मुखलांगळ—स० पु० [स० मुख लाङ्गल] सूअर, शूकर ।

मुखलेप—स० पु० [स० मुखलेप] १ शोभा व सुगंध के लिये मुख पर किया जाने वाला लेपन ।

२ एक मुख रोग विशेष ।

मुखवर्षड—देखो 'वयडमुख' (रू भे)

उ०—सिहड-ध्वज मुखवर्षड धजसड । प्रचंड संह मूढमाळ परचड ।—सू प्र

मुखवयळ—स० स्त्री०—मुख की शोभा, मुख की कान्ति ।

मुखवाद—स० पु०—बहस, विवाद ।

उ०—ठाकर अब रहिया चित मठिया, बुद सटोया करणा मुखवाव ।

पर उपगार न जाणै प्राणी, सुद बुद जाणण सरमवाद ।

—अज्ञात

मुखवास—देखो 'मुखवास' (रू भे)

उ०—१ तत मनसा भोजन दिव तिम तिम, जळ मुखवास अगं कहिया जिम ।—सू प्र

उ०—२ ऊपरा कपूर, पान, बीडा, सोपारी, केसरि, ताढा, लोंग, डोडा, काथा, चूना सजुगम मुखवास मुहछण दीजै छै ।—रा सा स.

उ०—३ ऊपर दीघा अति प्रवळ पांन लविग मुखवास । जस लीवो जीमाइने, सहू कहै सावास ।—स्त्रीपाल रास

उ०—४ हिवड मुखवास दीजै छै ते केहवा वांकडी चेल सोपारीनी फाल, नीली सोपारी ते पणि केसरकपूरवासिद, वली तणो तोखा ताजा लविग जावित्री नड जाइफल ।—व स

मुखवासिणी—स० पु० [स मुखवासिनी] सरस्वती, शारदा ।

मुखवीणा—स० स्त्री०—एक वाद्य विशेष ।

मुखसमब—स० पु०—ब्राह्मण, द्विज ।

मुखसिखसधि—स० स्त्री०—ललाट, भाल ।

मुखसोस—स० पु० [स मुखशोष] मुख के सूजन का रोग विशेष ।

(अमरत)

मुखस्त्राव—स० पु० [स०] धूक, खलार ।

मुखस्त्री—स० स्त्री० [स० मुख श्री] मुख की शोभा, मुखकी कान्ति ।

मुखाण—स० पु०—१ मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—चवता रांम मुखाण गयो चव, भव दुख काहुं कीध भव ।

लव लाग़ा फिर रांम रसण लव, रववसी इम वहे रव ।—र०रू०

२ देखो 'मुकाण' (रू भे)

मुखा—देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ हरीया कळि मै आय कै, कहा करै नर कूर । आसी वरीया अत की मुखा परैंगी धूर ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ हरीया माया नागनी, वैठी मुखा उबाय ।

तीन लोक में वस्य रही, जाह जाउ ताह खाय ।

—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

मुखाग्नि—स० पु० [स० मुख अग्नि] १ दावानल ।

२ यज्ञीय अग्नि ।

३ दाह किया की अग्नि ।

४ आगिया देताल ।

मुखाग्र—वि० [सं०] जो जवानी याद हो, कंठस्थ ।

क्रि० वि०—सम्मुख, सामने, आगे ।

रू० भे०—मुखग, मुखअग्र ।

मुखाघाय—स० पु०—मुख से बजने वाला वाद्य अलगोजा आदि ।

उ०—विराजै मुखाघाय तती वितती । वदै भारती राग बांणी

वसुनी ।—रा रु

मुखात-वि०—मीखिक, जवानी ।

उ०—ओठी एक मारी पगठ लिख मुत्तान समाचार कहि ताकीद  
घणी देय विदा कियो ।—कुवरमी माखला री वारता

मुखातर—देखो 'मुकातर' (रु भे)

उ०—एक वरदान फेर सेसनाग रा वेटा सू माग लेतो तो मरिया  
मुखातर पावती—म्हने हजार जलम आ इज बीनणी मिले ।

—कुलवाडी

मुखानिल-स०पु० [स०मुख-अनिल] दशम, मास ।

मुखामुल, मुखामुलि-क्रि०वि०—१ प्रत्यक्ष, प्रगट ।

उ०—१ तिणी ही न आही देखू तुज्ज, मुखामुल सेव करावी  
मुज्ज ।—ह र

उ०—२ मुखामुलि म्यलि लु एह, रूप तगु भांगि नलास्यान सदेह ।

२ मुह के सामने, चोढे मे ।

३ एक दूसरे के देखादेखी ।

उ०—चव मेछ मुखामुल जोस चढे । पढवेस सभा निज मत्र पढे ।

—रा रु

मुखारवद, मुखारविद-सं०पु० [स०मुख-अरविद] कमल के सदृश मुख,  
मुख-कमल ।

उ०—१ पदा कज उग कार नुपरां हीर री प्रभा, पोमाखा चोर  
री दुतो ऊती प्रकास । कीट चद्र कीर री मुखारवद बाळी क्रस,  
हामी सुधा भीर री रसमां मद हाम ।—चैनजी सादु

उ०—२ संता खुद आपरे मुखारविद सू फरमायो के ओ सगळी  
भगती री इज परताप हे —कुलवाडी

मुखालपत—देखो 'मुखालिफत' (रु भे)

मुखालिफ-वि० [प्र०] १ विरोधी, शत्रु ।

२ प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्षी ।

मुखालिफत-स०पु०—१ विरोध, शत्रुता ।

२ प्रतिस्पर्धा

रु० भे०—मुखालपत,

मुलि—१ देखो 'मुख' (रु भे)

उ०—१ है हरि अनल सबळ विम व्यापी, नेरा वमी हक दूरि,  
जन हरिदास निजरूप न जान्यो, ता पमुवा मुलि धूरि ।

—ह पु वा

उ०—२ अमपति राय इसू मुलि चोलइ, आ गढ लीजइ धुरि । पाही  
भेलि मेलहीइ पांगु, तउ जईइ जालहुरि ।—कां. दे प्र.

२ देखो 'मुख' (रु भे)

उ०—माहेपोत हगी मन भाणी, मेढपती साये खूमाणी । मुलि  
हरनाथ खोचियां माहे, साये सांमि घरम छळ साहे ।—रा रु

मुलियो-वि० [स०मुख्य] १ प्रधान, मुख्य, खास ।

उ०—मुलिया मन मोहण दोहण घर मेढी । गोढे डेरी व्हे खूणी  
मे मेढी ।—ऊ का

२ किसी समाज, ग्राम, जाति या वर्ग का नेता ।

उ०—एक दिन वो हो, डोकरी री घणी रुधनाथजी गांव मे मुखियो  
वाजती अर करती ज्यू हूतो ।—दमदोल

३ अगुआ, अग्रगण्य ।

उ०—करतो ऊवी बात, रहता लोही खरड्या हाथ । पर मुखिये  
दुवियो ए, अन्यायी मे मुलियो ए ।—जयवाणी

रु० भे०—मुलीयो, मुख्यो,

मुली-वि०—१ मुख से युक्त, मुखवाला ।

२ किसी विशिष्ट दिशा मे मुख रखने वाला ।

३ देखो 'मुख' (रु भे)

उ०—खवास कामदार मुली होवै तिणां नु दुमाला धोरमा,  
मीमर दीजै ।—नैणसी

४ देखो 'मुख' (रु भे)

मुलीयो—१ देखो 'मुख' (अत्पा, रु भे)

उ०—परथम कम चढ़े मुलीयो गणपत, पचानन रं ब्रखव पलाण ।

—पूरजी भादो

२ देखो 'मुखियो' (रु भे)

मुल्ला, मुल्लि—१ देखो 'मुख' (रु भे)

उ०—मयक मुल्ल मजळी करार नेत कजळी । गरव धारि मेहणी,  
सुरत धत सोहिणी ।—मा वचनिका

२ देखो 'मुख' (रु भे)

मुस्तसर-वि० [प्र] १ सक्षित ।

२ सार रूप ।

३ न्यून, थोडा ।

मुख-वि० [स०] १ जो सब से ऊपर हो, उच्चतम, श्रेष्ठ ।

२ प्रधान, खास, प्रमुख ।

३ महत्वपूर्ण, आवश्यक ।

४ अपने वर्ग या समुदाय मे सब से बडा हो, अगुआ, नेता ।

रु० भे०—मुखि, मुखी, मूख, मुखि,

मुख्यता-सं० म्त्री० [स०] १ मुख्य होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रधानता, श्रेष्ठता, ।

३ विशेषता, खासियत ।

मुखपति-स०पु० [स० मूखपति-महाचोर] चूडा, मूपा ।

(ना मा)

मुख्यो—देखो 'मुखियो' (रु भे)

मुगध—१ देखो 'मुग्ध' (रु भे)

२ देखो 'मुग्धा' (रु भे)

मुग-स०पु०—१ देखो 'मूग' (उ र)

२ देखो 'मग' (रु भे)

मुगड—देखो 'मूक' (रु भे) (उ र.)

मुगट—देखो 'मुकुट' (रु भे)

उ०—१ भूप जहावं मुगट मझ, रोहण गिर उतपत्त । निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा म्पूरव भत्त ।—बा दा.

उ०—२ नाई बोल्यो—अदाता, आपरं धारण करणा सूं तो मुगट धर नीलखा हार रो छिव ई निखरगो ।—फुलवाढी

उ०—३ भिलिया ह्द इतरा दखिणमुख, घासइ मुगट तिया धमसांण ।—महादेव पारवती री वेल

मुगटजया—स० स्त्री—डिगल-गीत-रचना का एक भेद, जिसमें वर्णनीय का वर्णन प्रमाण सहित होता है ।

मुगटधर—स० पु० [स० मुकुट + धाञ्] १ मृकुट धारन करने वाला, राजा, २ देवता ।

उ०—घकं क्रोध हर साह जैह वार जुघ बटाधर, दुरद मद पटाधर जेम दोवं, धार खग भटा अधटा पडे छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवं ।—हुकमीचन्द खिडियो

मुगटवध—देखो 'मुकुटवध' (रु, भे)

उ०—सपेख तेज जम रवि उदै, मुगटवंध वांदै समद' । 'गजवध' महीपति जोधपुर, जिम अजोधिया रामचंद ।—गु रु व.

मुगटमण, मुगटमणि—देखो 'मुकुटमणि' (रु भे)

उ०—होमाया उण हीज हुतासण माहै, महि एक कभा मुगटमण । —महादेव पारवती री वेलि

मुगटियो—देखो 'मुकुट' (भल्पा, रु भे)

उ०—डोकरी विचाळ ई जवाब दियो—थारा इण मुगटियो बिचं म्हारै पांडुवां री मान घणो वत्तो हे ।—फुलवाढी

मुगटो—स० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—मुलमुल नरमा दोरीभा, स्त्रीसाप सीसाप बास्ता अघोतरी महिमुदी दुदांभी भयरव टसरीया मुगटा सिणोया कसवी जरबाप । —य स

२ देखो 'मुकुट' (भल्पा, रु भे)

मुगट्ट—देखो 'मुकुट' (रु भे)

उ०—कवि तद बोलै 'केहरी' सकवी सूर सुभट्ट । बोध समप्पण धूहडां, कुळ रोहडां मुगट्ट ।—रा रु

मुगत—स० स्त्री०—१ पृथ्वी । (ना डि को)

स० पु०—२ मोती ।

३ आभूषण, भलकार, भूषण । (अ मा)

४ देखो 'मुक्त' (रु भे)

उ०—१ इण पाप रा भार सू जित्तो वेगी मुगत करो तो म्हारी ओ बिगडियोही जमारी थोही घणो सुवरं ।—फुलवाढी

उ०—२ जे कोई माई री लाल वांमणी री सुध लेखण ने आय जावै, उण री मोल भर सोळी वरसा री खरचो चुकायने इण नै आपरं साथे लेय जावै तो बा इण पाप करम सू मुगत व्हे जावै ।

—फुलवाढी

उ०—३ सकल सुरासुर वदित पदकज, पुण्यलता घन पाय ।

समयसुंदर कहइ तेरी कृपा तें, होत मुगत सुख हाय ।—स कु

उ०—४ काळिंदर दूध रें वनमान धवल हसी हसतो बोल्यो—पा बात अगं ई सोच करे जैही नी है । इणसू म्हे सराप मुगत व्हे जाउला ।—फुलवाढी

५ देखो 'मुक्ति' (रु भे)

उ०—१ सुणनें कथा मुगत हरि दीनी, चाल्या विकळ भगाऊ जी, —गी रां

उ०—२ भंरव देव अदेव भलाई, निरखो फिर फिर नंना । मुगत तणी साता री मालिक, हरि विन दाता है ना ।—र रु

उ०—३ छटा अलोकिक छाया, ऊची लहरा ऊपडे । मुगत निसेणी माय, सुखदेणी अमुरा सुरां ।—बा दा

उ०—४ ऐसी कही हेतु जुगत ए, तिण मू वेगी मिले मुगत ए ।

—अयवाणी

मुगतकठ—देखो 'मुक्तकठ' (रु भे)

मुगतक—देखो 'मुक्तक' (रु भे)

मुगतज—देखो 'मुक्तज' (रु भे.)

मुगतपुरी—देखो 'मुक्तिपुरी' (रु भे.)

उ०—दीनदयाल भविक कु मेलें, मुगतपुरी को साथ ।—स कु

मुगतफळ—देखो 'मुक्ताफल' (रु भे) (अ मा.)

उ०—नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा बसण हीरा जोति ।—हकमणि मगळ

मुगतवसन—देखो 'मुक्तवसन' (रु भे)

मुगतमाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रु भे)

उ०—१ दे गजराज तुरग द्रव, तोरा सपत वसत । मुगतमाळ सरपेच नग, रकर्मा सात रतत ।—रा रु

मुगता—देखो 'मुक्ता' (रु भे)

उ०—१ आणी रिख स ग कहे विप्र एह । मुगता हो दूध राजिय मेह ।—रामरासो

उ०—२ रिस्ट रतन सगवीसे मुनिपदे, सतसठि एकावध । सितर ने पचास उलास सु मुगता सेम सुमन ।—स्त्रीपाळ रास

उ०—३ कचण खम मंडति कीन वरणण छविकरा । मळहळ कृतपूर भळूस मुगता भालरा ।—बा दा

मुगताग्रहजया—देखो 'मुक्ताग्रहजया' (रु भे)

मुगताचर—देखो 'मुक्ताचर' (रु भे.)

मुगताचाळ—स० पु०—हस । (अ मा)

मुगताफळ—देखो 'मुक्ताफल' (रु भे.)

उ०—खीची यम वायक कहे, जे न सहे भालाळ । तिण कारण पिढ तूटसी, मुगताफळ री माळ ।—पा प्र.

मुगतामखी—देखो 'मुक्तामखि' (रु भे)

मुगतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रु भे)

उ०—मघनायक 'मांडण' हरो, 'राजो' भीम भुजाळ । सयळ



छमा पगति सुहृद, जागक मुगतामाळ ।—गुरु व

मुगतार—देखो 'मुगतार' (रु भे)

मुगतारग्राम—देखो 'मुखतारग्राम' (रु भे)

मुगतारकार—देखो 'मुखतारकार' (रु भे)

मुगतारकारी—देखो 'मुखतारकारी' (रु भे)

मुगतारसास—देखो 'मुखतारसास' (रु भे)

मुगतारनामी—देखो 'मुखतारनामी' (रु भे)

मुगतारी—देखो 'मुखतारी' (रु भे)

मुगताहळ, मुगतावळि, मुगतावळी—देखो 'मुक्तावळी' (रु भे)

उ०—अष्टपात्र सब चंग, काइ तरुणि काइ बाळा । पिक हम्ह  
आलाप, कठ मोहिन मुगताहळ ।—गुरु व

मुगताहळ—देखो 'मुक्ताहळ' (रु भे)

उ०—१ माहुव नोवत सुद्व, वसन जरकस जवाहर । रतन  
जहत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुदर ।—रा रु

उ०—२ हम मुगताहळ निसदिन ठुंग करक काग ते न्यारा । काग  
कुमुदि म् नेह न बाधे, ऐसी गहै बिचारा ।—ह पु वा

मुगति—देखो 'मुक्ति' (रु भे)

उ०—१ एक गया भगवाट, सामिछळ मेल्लै कुळ छळ । हेक मुगति  
माजोत, गया भेदै रवि मळळ ।—गुरु व

उ०—२ जीवता रह्या तो थारो मूहो निरखाला भर जुद्ध मे खेत  
रह्या तो मुगति व्हेला ।—फुलवाडी

उ०—३ माया मोह भरम की भीता, मोख मुगति कै आडी ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—४ घरम नरम मन जे घरै, भरम करम ना भाजै रे । चरम  
जिणद कहै ते चढै परम मुगति गढ पाजै रे ।—ध व प्र

२ देखो 'मोती' (रु भे)

उ०—सुदूर पाध मोड पिर सोहै मुगति पति सख जगत विमोहै ।

धचन मद्रास हुलाम बिहारै, नयण हरख जुत मिरत निहारै ।

—रा रु

मुगतिखेत—देखो 'मुक्तिक्षेत्र' (रु भे.)

उ०—कोटि गउ दिज दान देत, मरत कायी मुगतिखेत ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मुगतिसजोत, मुगतिसाजोत—देखो 'मुक्तिसाजोति' (रु भे)

मुगतिसिला—स०पु० [स मुक्ति शिला] सर्वाय सिद्ध स्वर्ग से दारह  
योजना ठपर का मुक्त जीवों का एक स्थान । (जैन)

उ०—अहे बार देवलोकर वारा भर्ना नगर छद् नव ग्रीवेक ।

मुगतिसिला पाटण भलु तिहा छड विनु रे विवेक ।

—प्राचीन फागु संग्रह

मुगती—देखो 'मुक्ति' (रु भे)

उ०—१ नटणी ज्य मुगती नची मदा वास सुर स्थाम ।—प्र मा.

उ०—२ तन तारहिगी जुगती तिळहें, मन मारहिगी मुगती मिळहें ।

—ऊ का

उ०—३ काई राजा मन विलखीयो सूना पाटण देस खघार । कर  
जोडें [इ] न राई वीनई, देहि बिग मो मुगती दातार ।—वी दे

उ०—४ म्हारी मुगती तो भव मोत री सगत सू ई व्हेला । म्हें तो  
आज मरिया पैली ई मरणी —फुलवाडी

उ०—५ दुनिया रै जगाला सू मुगती पावण साक वारै वरस तप  
करिया, पण हण उपरात आ दुनियां तो सामो घणी मन मोयो ।

—फुलवाडी

२ देखो 'मोती' (रु भे)

मुगतीक—देखो 'मोती' (रु भे)

मुगते,—कि०वि०—मुक्ति को, मोक्ष को ।

उ०—केई देवता थया ए, केडक मुगते गया ए । सुख सासता  
लहया ए —जयवाणी

मुगतेसर—देखो 'मुक्तेस्वर' (रु भे.)

मुगती—देखो 'मगती' (रु भे)

मुगत्त—१ देखो 'मुक्त' (रु भे)

२ देखो 'मुक्ति' (रु भे)

उ०—छोसै सुद भादधै एकादसी वरत्त । राजोघर एता लिया,  
गौ हरि घाम मुगत्त ।—(रा रु.)

मुगत्तार—देखो 'मुखतार' (रु भे)

मुगत्तारी—देखो 'मुखतारी' (रु भे)

मुगदर—म०पु० [स० मुदर] १ एक कुहलाकार बडा पत्थर जिसे हाथ  
से उठा कर व्यायाम किया जाता है ।

२ व्यायाम के लिये बनाई गई भारी एव मोटी लकड़ी, मोगरी ।

इसकी बनावट बम्ब की तरह होती है ।

३ गदा ।

रु०भे०—मुदगर । मुदगर,

मुगदल्ल—स०पु०—क्षम्य विशेष ।

उ०—गडा गडो गिर तणा गडा गिर गिर पडे, चडाचडि उच्छलै  
मुगदल्ल रहोला ।—प च वो

मुगध—स०पु०—श्रीकृष्ण के बडे भाई बलराम, बल भद्र । (ना मा)

२ गुप्त, छुपा हुआ । (प्र मा)

३ देखो 'मुग्ध' (प्र. मा, ह ना मा)

४ देखो 'मुग्धा' (रु भे)

मुगधता—देखो 'मुग्धता' (रु भे)

मुगधप्रिय—स०पु० [स मुग्ध-प्रिय] मदिरा, शराब । (प्र मा)

मुगधबुद्धि, मुगधबुद्धी—देखो 'मुग्धबुद्धि' (रु भे)

उ०—मुगलाण मुगधबुद्धी कि गुर सबद साधु उपदेसी । दिख मेक  
उदधि रहणी, नह भूषित मगधाय ।—गुरु वं

मुगधा—देखो 'मुग्धा' (रु भे) (प्र मा)

उ०—१ के बाळा राइ कुमरि, केय मुगधा कुळवती । के मध्या  
मांणणी, जिसे सूरज कायती ।—गु. रु. व

उ०—२ मुगधा वेस प्रमाणै, लखि भक्ति रूप उरबसी लज्यत । पय



धूधर वध पाणै, सक्कियो नमसकार सारदा ।—सू प्र.

उ०—३ मुग्धा मव्या नै मोडा मिलजावे । पढ-मढ प्रारथना प्रोढा पिलजावै ।—ऊ का

उ०—४ कुच ऊर्पज काची कळी, हिवडै लागी हाथ । मुग्धा जाण्यो रोग मन, विसर गई सब बात ।—वगसीराम प्रोहितरी बात

उ०—५ निद्रा आमा वेल द्रोह, मन होय मुग्धा —केसोदास गाढण

मुग्धापण, मुग्धापन—देखो 'मुग्धापन' (रू भे)

मुग्धपटण-स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—मुग्धपटण मन भावतो, कता केसरी पाग । जिणै कँइसो पिक छइ, ता सुंदर को भाग —व स

मुग्धरव-स०स्त्री०—देखो 'मगरेव' (रू भे)

उ०—उठी विलद दळ असुर, वधि मुग्धरवां जनेवा । पेसकवज खजरां जकड वणिया रणजेवा ।—सू प्र.

देखो 'मगरिव' (रू भे)

मुग्धराटी-स०स्त्री०—एक प्रकार का वस्त्र ।

मुग्धल, मुगल-स०पु०—१ मुसलमान । यवन ।

(स्त्री०मुगलण, मुगलाणी)

उ०—१ जुगल पाण जोडिया, मुगल सुलताण न मानी । चढियो कर चक्र रो, कूच विक्रमपुर कानी ।—मे म

उ०—२ मुगलाण मुग्ध बुद्धि, कि गुर सब साधु उपदेसी । दिन्न मेक उदधि रहणो, नह मूचित मगधाण ।—गुरू ब

उ०—३ डूम न जाणे देवजस, सूम न जाणे मौज । मुगल न जाणं गो दया, चुगल न जाणे चोज ।—वा दा

२ मुसलमानो के चोर वर्गो मे से एक ।

३ तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क ।

४ तुर्कों की एक शाखा ।

५ मंगोल देश का एक निवासी ।

६ पवन, हवा । (ना डि को)

७ देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—घुव्वै मुगल अकळ कांठळां सरळ घर । अरळ साबळ भरळ क ल ऊगो ।—महाराज जसवतसिंह रो गीत

रू०भे०—मुगली, मुगल्ल, मुगुल्ल, मुगळ, मुगुळ, मूळगळ, मूगळ, मूगल,

मुगलाणी-वि०—१ मुगलो का, मुगल सम्बन्धी ।

२ मुगल जाति या वर्ग का ।

मुगलाराव—मुसलमान बादशाह ।

उ०—मुगलाराव तणे जवाव मरोडै, घर घांतिया निवावा घाव । चालियो काळ जहाळ चुअनी, रुपा तणे कटहडै राव ।

—जोगीदास कवारियो

मुगली-वि०—१ मुगलो की, मुगलो सम्बन्धी ।

उ०—जाजली फोज मुगली सजोर । कर दिली सिली दस्तूर कोर । —वि स.

२ देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—विकराळ काळ मुगली अजाग । खटपटी आण रण बीच खाग । खराय उरी हय पदन खेह मंडियो अहमदपुर आन मेह । वि स

मुगल्लेस-स०पु० [उ मुगल + स०ईश] मुगल बादशाह ।

उ०—जिकै वज्रपात जिसडा वचन सुणताही पातसाह रा मन में भी पातसाही करण रो आधी आस रही । जठै दारा नू उपालभ देर पछतावा रै प्रमाण सोक रा समुद्र में मग्न मुगल्लेस इण रीति कही ।

—व भा

मुगल्ल—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—१ मुगल्लां न गो दिल्लीस याणा मिलण । हीदवांणा तणो छात हालै ।—गोविंद वारहट

उ०—माफी मीर बलकली मल्ल, मीर सैद पट्टाण मुगल्ल । खारी और सजोर बुखारी, घर काबली विलाति खधारी ।—रा रू

मुगवण, मुगधन-स०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र

उ०—हीरपट्ट साउला विलिविलिया नरम्म खमो उभयखरम्म वामखरम्म वाम सकुमा मुगधनां मागलिया वयरागरा हीरागरा ।

—व स

२ मूग के पीवे के समान एक पीवा । वनमूग ।

३ मोठ ।

मुगातर-स०पु०—देखो 'मुकातर' (रू भे)

उ०—यें दूजा सगळा कळाप छोड फगत एक कोल करी तो मरधा ई मुगातर पाऊ ।—फुलवाडी

मुगाळतो-स०पु० [अ०मुगालत] १ घोखा, छल, प्रपच ।

२ भ्रम, सदेह, गलत फहमी ।

३ झुटि, भूल ।

मुगिति, मुगीती, मुगुत—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—मुगुत चिहुर सिरि मडि वछि कठ तुळसी वासी । 'भोजाउत' भुज-वळहि करहि करिमर काळासी ।—अ वचनिका

मुगुलराइ—मुगल बादशाह ।

उ०—जउणिपुरी अजोव्या खडिय जाइ । रइयति लोक किय मुगुलराइ ।—रा ज सी

मुगुल्ल—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—पूरद्व घरा हइ खूदि पाई । वळियउ मुगुल्ल नीसाण वाइ ।

—रा ज स.

मुग्धर—देखो 'मुद्गर' (रू भे)

मुगळ मुगुल—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—१ मिल मग्न माकणि डाकणि मोत,हलीसक नाच भली विवि होत । घटै दळ मुगळ सैयद घांण, पटैत कटै कई सेख पठाण ।

—मे म

उ०—२ पडै गज मुगळ बाज अपार । वखांणत सूर हथा तिण वार ।—सू प्र

मुग्ध-वि० [स०] १ नया, नवीन ।

२ मोठ मे पहा हुआ, मोहित आमत्त, लुब्ध ।

३ अनजान, भोला, नादान ।

४ सरल, सीधा सादा ।

उ०—काळा मुह कर करद का, दिल थै दूर निवार । सब मूरत मुखान की, मुल्ला मुग्ध । न मार ।—दादूवाणी

५ स्तव्य-भौवका ।

६ मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी ।

उ०—भूला, भोड़ फेर मन, मूरख मुग्ध गवार । सुमिर सनेही आपना, आत्मा का आवार ।—दादूवाणी

७ मस्त, मतवाला ।

८ मदमस्त ।

९ मनोहर, सुन्दर ।

१०—निरीह ।

११ पागल ।

स०पु०—१ प्रथम गुरु रागण का नाम (२ ज. प्र)

रू०भे०—मुग्ध, मुग्ध, मुद्ध, मुग्घ, मूघ, मूघ,

मुग्धता-स०स्त्री० [स०] १ मुग्ध होने की अवस्था या भाव

२ मूढ़ता मूर्खता, पागलपन ।

३ नादानी ।

४ सुन्दरता, मनोहरता ।

५ मरलता, सादगी ।

रू०भे०—मुग्धता,

मुग्धबुद्धि-स०स्त्री० [स०मुग्ध-बुद्धि] १ बुद्धि रहित, मूख, मूढ़ ।

२ सीधा-सादा, भोला ।

३ पागल ।

रू०भे०—मुग्धबुद्धि, मुग्धबुद्धी ।

मुग्धा-स०स्त्री० [स०] १ साहित्य में वह नवयौवना नायिका जिसमें काम चेष्टाएं जागृत न हुई हो ।

वि०वि०—साहित्य में नायिकाओं के विभिन्न भेद किये हैं जिसमें मुग्धा नायिका भी है । साहित्य दर्पण में मुग्धा के पांच भेद किये हैं—१ प्रथमावतीर्ण यौवना—इसमें नवीन यौवन की छटा प्रथम विकसित हुई है अर्थात् यौवनाकुर फूटने शुरू हुए हो । २ प्रथमावतीर्ण मदन विकारा—जिसमें कामनाओं के विलास पहले पहल आविर्भूत हुए हों, ३ रतिवामा—जो रति में सकोच करे । ४ मानमूढ़—जिसका मान चिरस्थायी न हो और ५ समधिक सज्जावती—जो अत्यन्त लज्जाशील हो । इन पांचों अवस्थाओं को देखने से मानूम पड़ता है कि मुग्धा नायिका यौवन में प्रवेश करती हुई काम चेष्टाओं से परिचय प्राप्त करती है । इसी प्रकार विद्वानों ने इसके १ अज्ञात यौवना, २ ज्ञात यौवना और पुन १ नवोटा तथा २ विशिष्ट नवोटा आदि और भेद किये हैं ।

२ मुकुमारी, तरुणी । नवयौवना,

३ स्त्री, महिला ।

रू०भे०—मुग्ध, मुग्ध, मुग्धा, मुग्घ ।

मुग्धापण, मुग्धापन-स०पु० [स०मुग्ध-प] मुग्धावस्था होने की अवस्था या भाव ।

रू०भे०—मुग्धापण, मुग्धापन,

मुड-स०स्त्री० [म०मुच्] हाथ पाव आदि के मवि स्थलो पर आने वाली मोच ।

उ०—किणी रा पग में मुड पडगी तो किणी रा डील माथै रगड आई —फुलवाडी

वि०वि०—शरीर अंगों में झटका लगने या अंगों के मुडने के कारण सवि स्थलो की नसें अंगना स्थान छोड़ देता है, जिसमें वहां पर सोजन आ जाती है तथा बहुत दर्द रहता है ।

क्रि०प्र०—काडणी, पडणी ।

रू०भे०—मुडक, मुद्ध, मुग्द,

मुडक-स०स्त्री०—१ मुडने की क्रिया या भाव ।

२ लचीलापन ।

३ नरमी ।

४ देखो 'मुड' (रू भे)

रू०भे०—मुडक, मुडक,

मुडकणी, मुडकवी—देखो 'मुडणी, मुडवी' (रू भे)

मुडकणहार हारी (हारी), मुडकणियों—वि० ।

मुडकिमोडी, मुडकियोडी, मुडकयोडी—भू०का०कृ० ।

मुडकीजणी, मुडकीजवी—भाव वा० । कर्म वा० ।

मुडकियोडी—देखो 'मुडियोडी' (रू भे)

मुडक—देखो 'मुडक' (रू भे)

उ०—मुडक मुडक अमध मुडै । जुघ 'पाल' अनै 'जिदराव' जुडै ।

—पा प्र

मुडकणी, मुडकवी—देखो 'मुडणी, मुडवी' (रू भे)

उ०—१ मुडै सालळै सालळै पै मुडककै । भड्डा ओभडा सांड ज्यो माड भुककै ।—रा रू

उ०—२ मुडककै कायरा मूर वकै मार मार ।

—बुद्धिबिह मिढायच

मुडकियोडी—देखो 'मुडियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मुडकियोडी)

मुडणी, मुडवी—क्रि०प्र० [स० मुरण] १ किसी सीधी वस्तु का बल खा जाना, सीधे खड़े का झुक जाना, दूसरी ओर घूम जाना, मुड जाना ।

उ०—१ मुडै तार कच्चे किना वार मच्छी । अटै कार जे पच ही धार अच्छी ।—व भा

उ०—२ जग छय दळा विधू मै चद' जूडि । महि पुडि मार गया अहि फुण मुडि—सू प्र

२ धारदार या नोकदार वस्तु की नोक या धार सीधी न रहना, ऊपर से कुछ मुड जाना ।

३ चलते-चलते किसी दूसरी ओर उन्मुख होना, दिशा परिवर्तन होना ।

उ०—१ मित्र दोनू जण नै खासी भाय ताई पुगावण नै

आयो । ठेठ मारण लग आयनं वो आपरी थै सामी मुडियो ।

—फुलवाडी

उ०—२ मुडै 'उग्रसेण' तणो फतमाल' । लुहा खलकट करे गज 'लाल' ।—सू प्र

४ लौटना, वापस आना, पलट जाना ।

उ०—१ चोर फोटो पडनं पाछो मुडियो । आछी तरै'जाण लियो के आ तिला तेल कोनी ।—फुलवाडी

उ०—२ पण जवाई तो मिलाण ही हेठो नी उतारै, सागी पगा ही पाछो मुडणो चावै है ।—दसदोख

५ पराड्मुख होना, विमुख होना, पृष्ठ फेरना ।

उ०—गूगी नै लाज आयगी । वा अपूठी मुडनं ऊभगी ।

—फुलवाडी

६ शरीराग या मुख पीछे या इधर-उधर फिरना, घूमना ।

उ०—१ राजकवरी पाणो मे पग धरिया पै'ली एकर मुडनं लारै जोयो ।—फुलवाडी

उ०—२ लारै मुडनं ई नी जोयो के उणरा माईत, उणरी ग्वाडी अर उणरै कुटम कबीलो कितो आतरै छूट ग्यो ।—फुलवाडी

७ लकीर की तरह सीधा न होना । घुमावदार स्थिति मे होना । टेढा होना ।

८ घुमाव लेना ।

उ०—अच्छी तरह उडाण, बेबि परमाण बरच्छो । बाग ताग वाहुहै, मुडै जाणै जळ मच्छी ।—मे म.

९ विरुद्ध होना, विमुख होना ।

उ०—बुदी आइ सन्हाळि बळ, सावधान करि सरव । 'दूदी' मुडि रहियो दुमह, पावण जस रण परव ।—व भा.

१०—छिन्न-भिन्न होना । अस्त व्यस्त होना ।

उ०—तरै सोजत जेतारण राणा री खोम लीवी । तो ही सींचल जेतारण माहै था, भागा मुडोया रहता ।—नैणसी

११ पीछे हटना, खिसकना, पीठ दिखाना ।

उ०—१ कमध स्याम कामय जुटे अरद्ध जामय । मुडै घहा मळेछणी, विचार धार भज्जणी ।—रा रु

उ०—२ मिरजी नूरमली जुध मुडियो । जोधा जंत प्रवाही जुडियो ।

—रा रु

१२ गिरना, पडना ।

उ०—भोज भुजा बळ थभणा, मुडता गयण समाथ । साम जगवत सीम बळ, जोहै भीम कि पाथ ।—रा रु

१३ कागज या वस्त्रादि मे सलवट पडना ।

मुडणहार, हारी (हारी), मुडणियो—वि० ।

मुडिओडी, मुडियोडी, मुडघोडी—भू० का० कृ० ।

मुडोजणी, मुडोजबी—भाव वा० ।

मोडणी, मोडवी—सक रु० ।

मुडफणी, मुडकबी मुडफणी, मुडवफवी मुडणी, मुडवी,—रु० भे० ।

मुडदासख, मुडदासिगी, मुडदासिघी—देखो 'मुरदासिघी' (रु भे )

मुडदियो—वि०—१ क्षीण काय, अत्यन्त कमजोर, मरियल ।

उ०—लाली रा इण सराव मायै फगत एक बांमण नै ई जीमावणो, आ सेठा री मसा ही । वामण ई ऐढी मुडदियो व्हे जेढी सोधणो दो कवा ई नोठ खावै ।—फुलवाडी

मुडदियो बुखार—स० पु० यो०—जीणं-ज्वर ।

मुडदो—देखो 'मुरदो' (रु भे )

उ०—१ आ सात चरवा री आंच सू ती मुडदा ई मूहं बोलण लाग जावै ।—फुलवाडी

उ०—२ सेवट कायो होय मुडदा री गळाई पाछी माचा मायै खूटी ताण नै सूयग्यो ।—फुलवाडी

उ०—३ मुडदा मडहट मे पडिया नह मावै, सडिया बासै सव बिकरद बभकावै ।—ऊ का

उ०—४ गो बळग्यो निज गाव थाट धर मगळ घाया, मुडदो देख मसाण चिलमिया चाढण चाह्या ।—ऊ का

उ०—५ गांव सू एक कोस आतरे एक वावडी ही । उठै च्याह मुडदा नै धरकावण री मत्तौ करियो ।—फुलवाडी

उ०—६ राजाजी च्याह मिरदारा रै कानी हाथ करनं घाकल करता बोल्या—यू मुडदा चालै ज्यू काई चाली । वेगा क्यू नी आवो ।—फुलवाडी

मुडणी, मुडावी—क्रि० स० [ 'मुडणी' क्रिया का प्रेर० ] १ किसी वस्तु को बल देना, सीधे खडे को झुका देना, दूमरी ओर घुमा देना, मोड़ देना ।

२ धारदार या नोकदार वस्तु की धार या नोक सीधी न रहन देना, मोड़ देना ।

३ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर उन्मुख करना, दिशा परिवर्तन कराना ।

४ वापस चले जाने या आने के लिये प्रेरित करना, लौटाना

५ पराड्मुख होने या पृष्ठ फेरने के लिये कहना, विमुख करना ।

६ शरीराग या मुख को पीछे या इधर-उधर घुमाने के लिये कहना ।

७ लकीर की तरह सीधा न रहने देना, घुमावदार स्थिति मे कराना । टेढा कराना ।

८ घुमाव लेने के लिये प्रेरित करना ।

९ विरुद्ध एव विमुख होने के लिये प्रेरणा देना ।

१० छिन्न-भिन्न करवाना । अस्त-व्यस्त कराना ।

११ पीछे हटने के लिये कहना, खिसकाना ।

१२ गिराना, पटकाना ।

१३ कागज या वस्त्रादि में सलवट डलवाना ।

मुडणहार, हारी (हारी), मुडाणियो—वि० ।

मुडायोडी—भू० का० कृ० ।

मुडाईजणी, मुडाईजवी—कर्म वा० ।

मुडावणो, मुडाववो—रू० भे० ।

मुडायोडो—भू० का० कृ०—१ बल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ, मोड़ा हुआ ।

२ नोक या धार मोड़ा हुआ ।

३ दूसरी ओर उन्मुख किया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ ।

४ वापस आने या जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, लौटाया हुआ ।

५ पराङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिराया हुआ, विमुख किया हुआ ।

६ पीछे या इधर-उधर मुड़ाया हुआ, घुमाया हुआ । (मुख) ।

७ घुमावदार स्थिति में कराया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ ।

८ घुमाव लेने के लिये प्रेरित किया हुआ ।

९ विरुद्ध या विमुख कराया हुआ ।

१० छिन्न भिन्न या अस्त व्यस्त कराया हुआ ।

११ पीछे हटाया हुआ, विमकाया हुआ ।

१२ गिराया हुआ, पटकाया हुआ ।

१३ सलवट डलाया हुआ ।

(स्त्री० मुडायोडो)

मुडावणो, मुडाववो—देखो 'मुडाणो, मुडावो' (रू भे)

उ०—घुवाघोर आतसा झला रो रुडावणो घूस । सेना मुडावणो खळा डळा रो साइत । छपघारी बना हू डळा रो कोट छोडावणो, तुडावणो भूवा बाघ गळा रो ताडत ।—महादान महह

मुडावणहार, हारो (हारी), मुडावणियो—वि ।

मुडाविओडो, मुडावियोडो मुडाव्योडो—भू का कृ ।

मुडावीजणो, मुडावीजवो—कर्म वा ।

मुडावियोडो—देखो 'मुडावोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुडावियोडो)

मुडासो—स०पु०—शिर पर बावने का वस्त्र, साफा ।

रू०भे०—मुडासो,

मुडियोडो—भू० का० कृ०—१ बल खाया हुआ झुका हुआ, दूसरी ओर घूमा हुआ, मुड़ा हुआ ।

२ नोक या धार मुड़ा हुआ ।

३ दूसरी ओर उन्मुख हुआ हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ ।

४ लौटा हुआ, पलटा हुआ ।

५ पृष्ठ फेरा हुआ, पराङ्मुख, विमुख ।

६ पीछे या इधर-उधर घूमा हुआ, फिगा हुआ । (मुख)

७ टेढ़ा हुआ हुआ, घुमावदार स्थिति में हुआ हुआ ।

८ घुमाव लिया हुआ ।

९ विरुद्ध या विमुख ।

१० छिन्न-भिन्न, अस्त-व्यस्त ।

११ पीछे हटा हुआ, विमका हुआ ।

१२ गिरा हुआ, पटा हुआ ।

१३ सलवट पटा हुआ ।

(स्त्री० मुडियोडो)

मुडीयण-स०पु०—मुडने वाला भागने वाला ?

उ०—मुडीयण भूय थारा महेवेचा, सत्र सुख सुअै न थाणा साय । चवळ रहे लगामा चडिया, महपत गळै सनाहा माय ।

—माघोमिग महेचा री गीत

मुडो—१ देखो 'मुटो' (रू भे)

२ देखो 'मुडो' (रू भे.)

मुचकद, मुचकध, मुचकुद, मुचकुध—देखो 'मुचुकद' (रू भे)

उ०—१ उभळ कोप उणवार, दुभळ 'अभमल' दरसायो । काळजवन कथ कहै, जाण मुचकद जगायो —सू प्र

उ०—२ काळ दार कुडली पूछ दावत पलटायो । किना काळ वस काळ-जवन, मुचकध जगायो ।—मे म.

उ०—३ कहै एम मुचकुद सुणो खित्री घरपत्ती । दुरमिह्ये अन दान जेठ पो दीयै उकत्ती ।—रा वंशावली

मुचकोडणो, मुचकोडवो—देखो 'मचकोडणो, मचकोडवो' (रू भे)

उ०—वडि क [- -] पीडिइ छइ डोकर नी कोइ न करइ मार । आवउ वहुही भणिए करउ माइ, मुह मुचकोडो पाछी थाइ ।

—वस्तिग

मुचकोडियोडो—देखो 'मचकोडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुचकोडियोडो)

मुचणो, मुचवो—क्रि०अ०[स मुच्] १ किसी घातु के वने पात्र या वस्तु में प्रहार या गिरने के कारण मोव आना ।

२ झुटना ।

३ छूटना, अलग होना ।

उ०—महत लघु जैत कहि एव मिल, सकळ प्रकासत आप सम । रचिर अन रचिर कविता रचन, मुचत न जात स्वभाव मम ।

—जैतदान बारहठ

४ त्यागना ।

उ०—विन कारन दुख करै, रविस कवहू नहि मुच्यै —अज्ञात मुचणहार, हारो (हारी), मुचणियो—वि० ।

मुचियोडो, मुचियोडो, मुच्योडो—भू०का०कृ० ।

मुचीजणो, मुचीजवो—भाव वा० ।

मुचचणो, मुचचवो—रू०भे० ।

मुचत—स०स्त्री०—छोडने की क्रिया या भाव ।

मुचळको—स०पु० [तु०मुचल्का] अभियुक्त या अपराधी से लिखवाया जाने वाला एक प्रतिज्ञा पत्र जिसमें अभियुक्त यह प्रतीज्ञा करता है कि भविष्य में वह यदि अपराध करेगा तो अमुक दण्ड का भागी होगा ।

मुचियोडो—भू०का०कृ०—१ मोच पडा हुआ । (पात्र)

२ झुका हुआ ।

३ छूटा हुआ, अलग हुआ हुआ ।

४ त्यागा हुआ ।

(स्त्री०मुचियोडो)

मुचिर-स०पु० [स०] १ देवता ।

२ पवन, हवा ।

३ गुण ।

४ भलाई ।

मुचुकुद, मुचुकुद-स०पु० [स०] १ एक सुविख्यात इक्ष्वाकुवंशीय राजा, जो राजा मानवाता का तृतीय पुत्र था । राम दाशरथि के पूर्वजों में से यह इक्ष्वाकुवंशीय पुरुष था ।

२ एक वृक्ष विशेष जिसकी छाल एवं फूल औषधि में काम आते हैं । इसे सुगंध वृक्ष कहते हैं ।

उ०—चपक राज चपक विचकिल स्वरण जूयिका । केतकी पुष्पाग मालती जाय कुमुद कुद मुचुकुद ।—सभा

रु०भे०—मचकद, मचकध, मचकुंद, मचकुध, मुचकद मुचकध, मुचकुद, मुचकुध,

मुचवणी, मुचवणी—देखो 'मुचणी, मुचवणी' (रु भे.)

उ०—हस जिहा गय तिहा गय, मही-मडणा हवति । छेहू ताह सरोवरा, जे हमे (हिं) मुचवति ।—मा का प्र

मुचिचयोडो—देखो 'मुचिचयोडो' (रु भे.)

(स्त्री० मुचिचयोडो)

मुच्छ—देखो 'मूछ' (रु भे.)

उ०—१ जरै अपेय अचल जल जाणे, तोडै अरर मुच्छ कर तांणे ।

—व भा

उ०—२ नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐचते त्रमें । अरीन मुच्छ

मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते त्रमें ।—ऊ का

२ देखो 'मूछो' (रु भे.)

३ देखो 'मूरछा' (रु भे.)

मुच्छमुड, मुच्छमुडो—देखो 'मूछमुडो' (रु भे.)

उ०—दयाळू व्है न सरवथा त्रया दया मया दटें । मिलै जु गुड मुच्छमुड थुड ऊट कें थकें ।—ऊ का

मुच्छित, मुच्छित—देखो 'मूरछित' (रु भे.)

मुछवर—देखो 'मूछवर' (रु भे.)

मुछ—देखो 'मूछ' (रु भे.)

मुछार—देखो 'मूछ' (मह, रु भे.)

मुछाळ—१ देखो 'मूछाळ' (रु भे.)

२ देखो 'मूछ' (रु भे.)

उ०—चढ भाळ त्रयोमळ नेत्र चोळ, अगुटी मुछाळ मिल करत खोळ ।—वे रु.

मुछाळी—देखो 'मूछाळ' (मल्पा, रु. भे.)

उ०—नारी होय तो घोरे-घोरे वाय । मरद मुछाळी तो ओ भट्ट दें जीम चळू करं ।—लो गी

मुछि—देखो 'मूछ' (रु भे.)

उ०—आळम छही उठीउ, मुछि मरही वेह । चउद लोक कीवा जिणइ, चिता करस्यड तेह ।—मा कां प्र

मुछियळ—देखो 'मूछाळ' (रु भे.)

मुज—देखो 'मुक्क' (रु भे.)

उ०—ज्या करा लीखाणा अक, ऐ जोस रा, प्रगट कै वार ज्या बीरद पायो । जाणीयो मुज दिल जगत हव जाणसी, आवीया पत्र जोधारण आयो ।—महाराजा मानमिह

मुजनस—स०पु०—घोडा, अश्व ।

उ०—मुजनसा पगे वाजिया माळ, रवि भाळ समी ऊडी रिवाळ । घमघमइ घट पाखर घिसत, मल्हपता आवइ मदोमत्त ।

—रा.ज भी

मुजव—क्रि०वि०—१ अनुसार, मुताविक माफिक ।

उ०—१ दूजा री बात तो भळगी, कमाई रै मापै जनम देवण वाळा माईत ई उण मुजव ममता करै । कमाई मुजव ई लुगाई नै धणी आछी लागे ।—फुलवाडी

उ०—२ म्हानै घापनै मिठाइयां खावण दें, अर थू थारी मसा मुजव रिपिया ले लेजे ।—फुलवाडी

२ तरह से, प्रकार से ।

उ०—१ मा'राज श्रीगजनिधजी रै राज में कमठा इण मुजव ।

—नैणसी

उ०—२ खाम वा फिर मींदर वलम कुळ ग इण मुजव तळेटी रै मै'लां हेट वालकिशनजी री मिंदर करायो ।—नैणसी

उ०—इण मुजव धणी वार काम पढ्यो जद स्वांमीजी बुद्धी सू कह्यो ।—भिद्र

३ अनुरूप, तुल्य ।

उ०—म्हारी हैसियत तो उण मुजव कोनीं, पण आपनै पाछी की न कीं निजराणी लै जावणो पढसी ।—फुलवाडी

रु०भे०—मजव, मुजव, मुजाव, मूजव, मूजिव

मुजव—देखो 'मुजव' (रु भे.)

मुजरउ—देखो 'मुजरी' (रु भे.)

उ०—दस दस दिगपाल दीसइ दस, मिलिया ग्यान पखइ कळमूळ । दीवाणी मुजरउ देखण नू, छिलता छहीहया घण भूळ ।

—महादेव पारवती री वेलि

मुजराई, मुजरायत—वि०—१ किसी राजा या रईस को मुजरा करने वाला, अभिवादक ।

उ०—१ नेक वखत एक बिरहमण नै स्याम को अरज गुजराई, है तो मिलण के लायक एक चारण मुजराई ।—दुरगादत्त वारहठ

उ०—२ जदै पयादा उतावळा मुजरायतां खोनणी मांडी । जठें तीजो बट खोली तिठें लोटा लागी दोठी ।

—जगदेव पवार री बात

स०पु०—३ वह व्यक्ति जो केवल मुजरा करने का कार्य करता हो और वेतन पाता हो ।

मुजरिम—स०पु० [अ०] १ जिस पर कोई कानूनी जुर्म हो, अभियुक्त । २ जिस पर जुर्म या अपराध का आरोप हुआ या लगाया गया हो ।

मुजरी-स०पु० [प्र०मुज्या] १ राजा या किमी वडे आदमी के सामने  
मुकवर किया जाने वाला अभिवादन, नमस्कार, प्रणाम ।

उ०—१ पीछे कुमलविधजी मा'राज स मुजरी कियो । तद मा'राज  
कयो तू ठाकरा, सचा छोरु तो वडै मा'राज रा ये हुवा, अर म्हे  
छोरु कहण रा छां ।—द दा

उ०—२ सज्या समै रावजी महिला पघारीया तरै अपछरा मुजरी  
कर नै मीख मागी ।—वीरमदे मोनगरा री वात

उ०—३ हववाहोळ चानणो लुळलुळ मुजरा लेवतो ही ।

—फुलवाडी

उ०—४ हमडो वाता मुणि भीमराजजी उठ मुजरी कर कही ।

—ठाकुर जैतमी री वारता

२ सामान्यतया किया जाने वाला अभिवादन, नमस्कार ।

उ०—१ दिन खासो चढग्यो तो ई वै गरव-गुमान मे पोहरी देवता  
रह्या । लोगां सू जवारहा करता रह्या, मुजरा फेनता रह्या ।

—फुलवाडी

उ०—२ घडी लिया चावडी बनै आई । मुजरी कीयो ।

—जगदेव पवार री वात

३ वेश्या द्वारा बिना नाचे, बैठकर गाया जाने वाला गाना ।

४ दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

५ किसी राजा या बौद्धाह के दरबार में नोकरी हेतु उपस्थित  
होने की क्रिया या भाव ।

उ०—अजमेर रा घणो री चाकर हुवो । मुजरै पोहतो, गांव १  
दीयो ।—नैणसी

रू०भे०—मुजरी, मुजरउ,

मुजली—देखो 'मिजली' (रू भे)

उ०—पाहण गळ बाघे पडो, वेरा बावडियाह । पिण मगण मत  
पारशी, मुजळां मावडियाह ।—बां दा.

मुजवर—देखो 'मुजावर' (रू भे)

मुजाव—देखो 'मुजव' (रू भे)

मुजायद—देखो 'मुजाहिद' (रू भे)

उ०—१ दशाज-वगम हठिखान मुजायद नायक । बळखान अजमति  
हततुलना अजरायक ।—सू प्र

मुजावर-स०पु० [प्र०मुजाविर्] १ किसी पीर की दरगाह आदि पर  
रहकर सेवा कार्य करने वाला मुमलमान ।

उ०—१ जड त्रिण त्रय द्वाहै जग जाहर । मारै वळे हैक मुजावर ।

—गो रू.

उ०—२ सु उठै पीरा रा दरसन तो वेर नू हुवै जो मरद रा  
छेदहा बाघे, नहींत्र मुजावर दरसन करावै नहीं ।—नैणसी

२ पढीमी ।

रू०भे०—मुजवर

मुजेपरी, मुजोपरी—देखो 'मुजिपरी' (रू भे)

मुज्ज—देखो 'मुक्' (रू भे)

उ०—स्त्री सरसत गणपत नमस्कार, दीजिये मुज्ज वर बुध उदार ।

—वि सं

मुज्भ—देखो 'मुक्' (रू भे)

उ०—१ अहज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज, माया सब तूक् न भूलव

मुज्भ ।—हर

उ०—२ रटै मुज्भ हु वाणि जं उदरेता । तरेसी ज तू रांम घोतार  
तेता ।—सू प्र

मुज्भिम—देखो 'मध्यम' (रू भे.)

मुज्भो—देखो 'मुक्' (रू भे)

उ०—ढटण रिबि पूछघु भगवत नइ, अमिग्रह पूगउ मुज्भो जी ।

—स कु

मुक्क-मंत्र० [म० मह्यम्, प्रा० मज्ज] १ एक आत्मवाची सर्वनाम तथा  
मैं का रूप जो कर्ता और सबव कारक की विभक्तियों के अतिरिक्त  
अन्य कारको की विभक्तिया लगने पर प्राप्त होता है ।

ज्यू—मुक्की, मुक्से, मुक्मे इत्यादि ।

उ०—१ मूरिख तें मुक्क नें गण्यो, वचन कह्यो अविचार । जो  
पदमणि हार्य जीमय्य, तो आव तुक्क वार ।—प च चौ.

उ०—२ अतरीख हूता कतर अनड, आठो परवत आदरु । कहै  
कविण मुक्क हूतो सबळ, घणी तिकी मार्य घरु ।—मा वचनिका

उ०—३ वूव देऊ छळ वमणा मुकी दिह मुक्क मीत । कर जोडी  
निलवटि करइ चतुर चोरती चित्त ।—मा का प्र

२ मेरा, मेगी, मेरे ।

उ०—१ माघव? करि माहूर कहिउ, जु मुक्क वछइ खेम । माम  
लगइ सेवा करिमि, सीत दमयती जेम ।—मा का प्र

उ०—२ छटु तणो पारणो घाके, मुक्क घर कीजै आज रे ।

—जयवांगी

उ०—३ भगवति आवो भाई, मुक्क मदत सीमहामाई । नित पडे  
प्रहस मे नाम त्या रोरि भजि विराम ।—मा वचनिका

उ०४ प्रोहित कहै जाण्यो छै, एणो मुक्क विकार । तो आयो इण  
वेला कीजै कवण विचार ।—व व प्र

३ स्वयं, खुद ।

क्रि०वि०—४ मेरे लिये ।

उ०—जिगि कगी रा रजीड, व्यापारि जीवन्त । माघव ! ते मुक्क  
मोकळे, जिम वमि राखूं मत्र ।—मा का प्र

स०पु०—५ अपनत्व ।

रू०भे०—मज्ज, मक्क, मुज, मुज, मुज्ज, मुज्ज, मुक्कि, मुह्कि,  
मूज, मूक्क, मूक्क ।

मुक्कमानी—देखो 'मिजमानी' (रू भे)

उ०—अठै सखावत रायमल मिळियो । नै मुक्कमानी घोडा दिवाया  
सूरखाया नही ।—द० दा०

मुक्काणो, मुक्काणी—देखो 'मुक्काणो, मुक्काणी' (रू भे)



मुम्भारि-क्रि०वि० [स० मध्यागारे, प्रा० मज्झागारे] बीच में, मध्य में ।

उ०—पचाली केति [ग्रहीनि] ताणी, आणी सभा मुम्भारि । ते दुख हई थी (नवि) जाइ, करता कीडि प्रकार ।—नळाख्यान  
मुम्भि—१ देखो 'मुम्भ' (रू भे)

उ०—१ पुरवें जनम की होती गोपक्या, चूक पड़ी मुम्भि मांही ।

—मीरा

उ०—२ दिह सौ वार न तिथ पुरव, लोक लाज कुळ नाहि ।  
हरीया साई मुम्भि में, मुम्भि साई कै मांहि ।

—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—१ डाळ पुकारें मूळ कु, वागी घाई तुम्भि । जन हरीया अब चेतलै, जुग में मरणो मुम्भि ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—४ हरीया कथणी जब कथी, मरम न पाया मुम्भि । अब लिब लागी तुम्भि सु, कहन सुनन नही कुम्भि ।

—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मुम्भे' (रू भे)

उ०—१ मैं अमली हरिनांव की मुम्भि वाइह आवैं ।—मीरा

उ०—२ हरिया होदै बीच में, मुम्भि मित्या रहमांन । पूरा लिख दीया पटा, खरच न खूटै खान ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—१ हरीयँ ओगुन बोह कीया, सक न आनी कांय । भावैं तो मुम्भि बगसीयै, भावैं कूद भराय ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

मुम्भे, मुम्भे, मुम्भे—मर्व० [प्रा० मज्झम] कर्म और सम्प्रदान में होने वाला 'मैं' का रूप, मुम्भको, मुम्भसे ।

उ०—१ तथा अतीव नम्रता करी सु नम्र मे तुम्भैं । महा प्रयोग योग को महा उद्योग दे मुम्भैं ।—ऊ का

उ०—२ मुम्भि मिळबो तुम्भि हाथि है, तुम्भि मुम्भि कै नही हाथि ।  
हरीयैसा तेरे किता, तेरी मुम्भैं अनाथि ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

रू०भे०—मू

मुटकारो—वि० [स० मटकन्] बड़ा ।

उ०—हळफळ तूट्या हार मुटकणा मोती झडिया । परभाता यू रात रमण रा भेद उघडिया ।—मेघ

मुटकाचर—देखो 'मुठकाचर' (रू भे)

मुटकारणो, मुटकारवो—क्रि०स० [स० मुट्] १ बोलना, कहना, बात करना ।

उ०—१ कोई बात नहीं । कैवता थका मा'रजा मुटकारें ही नहीं है । मांडणिया ने इवारत बोलै, बांचणियां रै दूहा रा अरथाव खोलै है । विलम्बा बेट्या है ।—दसदोख

उ०—२ रीस मे घाटो टुरड अर करवो ठूठ हुय रै'यो है मुटकारें ही नी, भावैं घर रा मिनव एक पग रै ताण ऊम रैया है ।

—दसदोख

२ भत्सना करना, फटकारना ।

३ कुचलना, पीसना ।

मुटकारणहार, हारो (हारी), मुटकारणियो—वि०

मुटकारिओडी, मुटकारियोडी, मुटकारचोडी—भू०का०कृ० ।

मुटकागीजणो, मुटकारीजवो—कर्म वा० ।

मुटकारियोडी—भू०का०कृ०—१ बोला हुआ, बात किया हुआ, कहा हुआ २ भत्सना किया हुआ, फटकारा हुआ ३ कुचला हुआ, पीसा हुआ ।

(स्त्री०मुटकारियोडी)

मुटबोलो—वि०—१ बढ बढ कर बातें करने वाला ।

उ०—एक भाई धुनो, दूजो मुटबोलो अर मु'फट —दसदोख

२ झूठी शान दिखाने वाला ।

मुटाव—स०पु०—१ तनाव, खिचाव ।

२ दूर या दूरस्थ होने की अवस्था ।

मुट्टी—सं०स्त्री० [स०मुष्टिका] १ हाथ की वह स्थिति व मुद्रा जो पांचो अंगुलियों को हथेली पर समेटने पर बनती है, मुष्टिका ।

उ०—नावरी नियत हम जियत नाहि, आकास न आवहि मुट्टी माहि ।—ऊ का.

मुहा०—१ मुट्टी गरम करणी=रिश्त देना ।

२ मुट्टी में आणो=वश में आना, काबू में आना ।

३ मुट्टी में करणी=वश में करना, काबू में करना, कब्जे में करना ।

४ मुट्टी में होणो=वश में होना, इशारे पर नाचना ।

२ उक्त मुद्रा या स्थित में समाने वाली वस्तु या वस्तु का परिणाम, मात्रा ।

ज्यू—मुट्टी बान सारू ई तडपा तोडैं ।

३ थकान मिटाने के लिए शरीर क किसी अंग को हाथ से दबाने की क्रिया ।

मुहा०—मुट्टी मारणी=थकान मिटाने के लिए शरीर पर मुष्टिका का प्रहार करना, हस्त-मंथन करना ।

क्रि०प्र०—देणी, भरणी, मारणी,

रू०भे०—मुठी, मुट्टी, मूठि, मूठी, मूटी मूठि, मूठी

अल्पा०—मूठडी, वेठडी,

मुठकाचर—स०पु०—मुट्टी में समाने लायक छोटी कबड्डी या इसी आकार का काचर ।

रू०भे०—मटकाचर, मुटकाचर

मुठडी—१ देखो 'मुट्टी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ रूप नैं सीसी ओ थारी घण ऊजळी ओ राज । राज ढोला राखोनी थारी मुठडी रै मांय ।—लो गी

उ०—२ भीलणो का वेर सुवांमा का तदुळ भर मुठडी बुकद ।

—मीरा

२ देखो 'मूठडी' (रू भे)

मुठभेड-सं०स्त्री०—१ सामना, साक्षात्कार, भेंट ।

२ दो पक्षों में होने वाली लड़ाई ।

३ प्रतिस्पर्धा में होने वाली टक्कर ।

मुठांगो—स०पु०—तरकस, तुंगीर ।

उ०—तद बादसाह मुठांगा रा तोर काढ होदे मे दिगली किय ।

—पदमसिंह री बात



मुठोणी-स०स्त्री०—तलवार (हि०को०)

मुठानी, मुठावी—क्रि०स०—तलवार पकड़ना ।

उ०—घोर तोपा जमीन वुठावी ओला जेम गोळा, धुल्ला मचावी जोम अमाव धेवीग । कना हड्डमान री कठावी द्रोण प्रलंकाळ,

मीस केण तेग री मुठावी तेजमीग ।—जवानजी आढी

रू०भे०—मुठावणी, मुठाववी, मूठाणी, मूठावी, मूठावणी, मूठाववी ।

मुठावणी, मुठाववी—देखो मुठाणी, मुठावी (रू भे )

मुठियो—देखो 'मूठियो' (रू भे )

मुठी—देखो 'मुट्टी' (रू भे.)

मुठीक—देखो 'मूठीक' (रू भे )

मुठीयो—देखो 'मूठियो' (रू भे )

उ०—नैरी दातण री मुठीयो एक वणाथो ले घायो ।

—दिमनी रै वे खरच री वात

मुट्टी—देखो 'मुट्टी' (रू भे )

उ०—१ सूदामा के दारिद खोयै, वारे की पहिचान । दो मुट्टी तडुल की चावी दीन्हो द्रव्य महान ।—मीरा

उ०—२ सीयाळे री रात, मूळी निवार रै मार्चें माथें पोढी पढी है । पेमजी पग-हाथ दावै, मुट्टी देवै है ।—दमदोख

उ०—३ फूटरी नुवावै । सगळा गामा घोवै अर सोरी मुट्टी देय'र मुवाणे । आखी रात छाती माथें हाथ फेरै अर मन रली वात वणावै ।—दसदोख

मुट्ट—१ देखो 'मुरह' (रू भे )

२ देखो 'मूट' (रू भे )

मुट्ट—देखो 'मूट' (रू भे ) (उ र )

मुडक—देखो 'मुडक' (रू भे )

उ०—रावा तेरी बोली माही मुडक घणी ।—मीरा

मुटणी, मुटवी—देखो 'मुटणी, मुटवी' (रू भे )

उ०—१ तरे महाराजा अजीतसघजी ने राजा सवाई जेसध, दुरगदामजी माये गाव वरडीया रा डेरा सु पाछा मुडीया सो उदेपूर आया ।—रा व वि.

उ०—२ मारग 'वीरम' हर कुल मडण, मुडिया तो सू घमै मण । मुडिया तणी हमे जल माझल, परिया वट जाणै प्रमण ।

—गु रू व

उ०—३ मुडिया पिह मैगल अम्मी उडटल, रावत विम्मल लडि पडिय ।—गु रू व

मुडियाण-स०पु० [दशज] हरिणो की एक जाति व डम जाति का हरिण ।

उ०—पाछै रजक मुडियाण फाळे गोरे अग खरगोम जाणै न पावै ।

—सू० प्र०

मुटियाळ-म०पु० [दशज] डिगल या एक गीत या छंद जिमके प्रथम तीन चरण मे १४ मात्राए तथा चतुर्थ चरण मे ३ सगण होने हैं और तुकांत लघु होता है ।

मुडियोडी—देखो 'मुडियोडी' (रू भे.)

(स्त्री० मुडियोडी)

मुडियो—देखो 'मुडियो' (रू भे )

मुडुघ—देखो 'मुकुटवद्ध' (रू भे )

उ०—एकदा समाइ बइठउ भूग, इद्र मरीखु अद्भूत रूप । स्त्रीगरणा बइगरणा घणा, महलीक मुडुघा नही मणा ।—नळदवदती राम

मुडो—सं०पु०—१ कुर्मी ।

२ सरकडो की बनी कुर्मी जिसकी बैठक मूज की बनी होती है ।

३ छोटा स्तम्भ जो किसी सीमा या स्थान विशेष पर गाढा जाता है ।

उ०—नदी रै ढावै पीळा भाटा री मुडो रुपियोडी ही ।

—फुलवाही

४ मूज की बनी पायदार चौकी, पीढा ।

रू०भे०—मुडो, मुडो, मुडो, मुडो,

अल्पा०—मुडलो

मुडो—देखो 'मुडो' (रू भे )

उ०—१ हुलकी मीठी, मवरी बोली मे पेमजी मुरली दलाल नै कियो अर आप मुडो माथे बैठयो —दसदोख

उ०—२ वारली बैठक मे माचा-ढोलिया, खुरसी अर मुडो ढाल राह्या हा ।—दसदोख

मुड—देखो 'मूड' (रू भे.)

उ०—राजन के राजा मुड महाराजा, ताजा घर ताकदा है ।

—ऊ का

मुडलो—देखो 'मुडो' (अल्पा, रू भे )

उ०—वण मुडलै पीव पिलगा, दोय जणा वात करै मती ए उपावै ।—लो गी

मुडेस—देखो 'मूडेस' (रू भे )

उ०—वडो घन वेम, म खोय मुडेस चवा चित चेत, पुर्गो मत प्रेत ।—र ज प्र.

मुडो—देखो 'मूडो' (रू भे )

उ०—मुडा आगे साल नई कराई । और हवद करायो ने ऊपर दिवाणखानी करायो ।—नैणसी

२ देखो 'मूडो' (रू भे )

मुड—देखो 'मूड' (रू भे )

उ०—चाह न थी इस सब्द री मद मती सुण मुड । प्रोड देख धारण पती, मो मन हुती सु गुड ।—पा प्र

मुण—१ देखो 'मुनि' (रू भे )

२ देखो 'मून' (रू भे )

मुणजी, मुणयो—क्रि० स० [म० मुण] १ कह कर मुनाना, कहना, बोलना ।

उ०—१ मुण कित दीन्नी मळ, इण फरमाण अचीन । पच मास अतर पडै, वेळा अधिक वचीन ।—व भा

उ०—२ ओछी तिल नकू नकू तिल अघकी, मुणता सुकव करो ले माप । तू ताहरा राणा टोडरमल, परिचा सारिखी परताप ।

—महाराणा प्रताप रो गीत

उ०—३ खँग अलग हूता निस खडिया, ऊगं दीह कमव हू अडिया । छत्र करि गोळ चहूदिस छागां, मुणियो वर पिता ची मांगा ।

—सू प्र.

उ०—४ विचं आवता वचना वाहू वाळें, रटै राम वाण जती छेदि राळें । मुणै रामचद्रेस अद्वीत माया, कही कोण आटे हुई दैत काया ।

सू प्र

२ वर्णन करना ।

उ०—बाल अजोघ्याकाह विध, मुणिया सूक्षम माड । कहै मछ जिमिही कहू, केकिघा द्वि कांड ।—२ रू

३ सुमिरन करना ध्यान करना ।

उ०—गदा ले खडो लागडो अग्र गामी, भलं मात हिगोळ हिगोळ भामी । मुणीं में जिका आदि अन्नादि माई, अवतार ले मामडा घाम आई । मे म

४ मनन करना ।

५ प्रतिज्ञा करना ।

६ पुकारना, पुकार करना ।

७ रचना, रचना करना ।

८ गुनगुनाना, गुनन करना ।

उ०—दस मास समापित गरभ दीघ रित, मन व्याकुल मधुकर मुणणति । कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजलि, वनसपति प्रसवती वसति ।—वेलि

९ जानना ।

उ०—तिणि कुलि मुणीइ सतरु रागो । भुयवलि भजइ रिठभडिवावो ।—सालिभद्र सूरि

मुणणहार, हारो (हारी), मुणणियो—वि० ।

मुणिओडो, मुणियोडो, मुण्योडो—भू०का०कृ० ।

मुणीजणो, मुणीजवो—कर्म वा० ।

मणणो, मणवो, मिणणो, मिणवो—रू०भे० ।

मुणस—देखो 'माणस' (रू भे)

उ०—टागर लियै लियै न टोळा, आरण वार अकारो । करसा हूत पुकारै करसी, मुणसां मारण हारो ।

—देवसिंध कछवाहा रो गीत

मुणाळ—स०पु० [स०मृगाल] १ कमल ।

उ०—रुपाळ विसाळ सिंघाळ किसल, बडाळ भुजाळ उजाळ विसल । मुणाळ भुग्राळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।

—हर

२ कमल की नाल ।

३ कमल की जड ।

४ हस ।

उ०—१ कवि तो राता घमळ कळोघर, भावठि भजण लील भुवाळ । लहुवं सरै वसता लाजै, माण सरोवर तरणा मुणाळ ।

—ईसरदास वारहूठ

उ०—२ जाणता तूम्ह न जाण्यो-जाय । काया तो पाखै दाखै काय । मकोडी कीट पतंग मुणाळ, भिखंग तुं हीज तु हीज भुआळ ।

—हर

उ०—३ खजन नेत्र मुणाळ गति, नासा दीपक लोय । ढोली रुळीयायत हुयो जव घन दीठो जोय ।—ढो मा.

रू०भे०—मणाळ,

मुणिद—देखो 'मुनीद' (रू भे)

उ०—१ मुणिद चाहे तो वेस्या मेल्हि ।—रामरासो

उ०—२ इण प्रस्तावै समोसरचा, केवलघार मुणिद । चित्त मा अति उच्छक थई, वादण चाल्यो नरिद ।—वि कु

मुणि—देखो 'मुनि' (रू भे)

मुणिपवर—देखो 'मुनिपवर' (रू भे)

मुणिवर—देखो 'मुनिवर' (रू भे)

उ०—अवि पहिलेरइ वभणि हूती, कडुउ तूवु मुणिवर दिती । नरग सहीवलि साहृणि हुई, पांचह पुरिस नियाणु घरेई ।

—सालिभद्र सूरि

मुणिस—स०पु०—युद्ध ।

मुणिसगुर—स०पु०—योद्धा, सुभट, वीर ।

मुणिसाळ—स०पु०—मानव श्रेष्ठ ।

उ०—परळ जळ गरळ दळ जळै पाडेसवो, नरा अत कळै कळै वळै नीडो । केहरी वियो मुणिसाळ रळतो कळै, ताइया जाणियो काळ तीडो ।—रावभीमसिंध हाडा रो गीत

मुणिसुव्वय—देखो 'मुनिसुव्वत' (रू भे.) (जैन)

मुणि, मुणिइ—देखो 'मुनि' (रू भे) (जैन)

मुणीसर—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे)

उ०—सकलचद मुणीसर सील उन्नतिकार, समय सुदर सदा सुख अपार ।—स कु

मुतअल्लिक—क्रि०वि० [अ०] विषय भे, सम्बन्ध भे ।

स०पु०—नौकर, मुलाजिम ।

वि०—सम्बन्धित ।

रू०भे०—मुतलक, मुतलिक,

मुतफरकात—स० स्त्री० व० व० [अ० मुतफरिकात] १ भिन्न-भिन्न विविध ।

२ फुटकर खर्च की मदें ।

३ किमी एक ही गाम के अतगत जमीन के अलग अलग टुकडे ।

मुतवळ देखो 'मलळब' (रू भे)

मुतरज्जिम—स० पु० [अ० मुतज्जिम] अनुवाद करने वाला, तर्जुमा करने वाला । अनुवादक,

मूलक—देखो 'मूलक' (रू भे)

उ०—उमराव मूलक उण मूल में बात न काटी हल चल उण में जाहिर नहीं हुई ।—नी प्र

मूलक, मूलक—देखो 'मूलक' (रू भे)

उ०—१ अह प्रभु चौधरिया कुल कवण उवारे अत्त मत्तू मे गत्तू दं मारै । आखी ऊमर आ रो कस आयो, छल बल मूलक कर बमकर छिटकायो —ऊ का

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या ए आपरै मूलक लाइ दरावें छै । जाणे म्हाणें ई बहिरावसी ।—मि द

मूलकवियो—देखो 'मूलकवियो' (अल्पा, रू भे)

उ०—मेठ स्यामजी जावक गुण-गाळ, मारजा रै लोही रा पीळ । मितर नहीं मूलकवियो मितरोळ । —दसदोख

मूलकवियो—देखो 'मूलकवियो' (रू भे)

मूलक—देखो 'मूलक' (रू भे)

मूलकवियो—देखो 'मूलकवियो' (रू भे)

उ०—१ मूलकवियो—देखो 'मूलकवियो' (रू भे) १ प्रवन्धक व्यवस्थापक । २ राजस्थान के वे शोसवाल जो देशी रजवाडो की राज सत्ता मे महत्व पूर्ण पदो पर कार्य करते थे ३ उक्त पदाधिकारियों के वधजों का लकव ।

उ०—१ मूल सागर कने बाग ८४ मिरदारा, खवाम पामवान मूलकवियो सारा आप आपरा न्यारा कराया ।—नैणसी

उ०—२ और महाराज री अमवारी वणे वाळसमद विराजता तिण सु मुदत पद्यो मूलकवियो खवाम पासवाना रा डेरा जुदा-जुदा सु हुबोडा है ।—नैणसी

३ मूली, पेशकार, लिपिक ।

उ०—फिरगण बोधी मूलकवियो अगरेज नू अगीकार न करै, जंगी अगरेज नू अगीकार करै ।

४ हिमाचल-किताब रखने वाला गुमास्ता ।

मूलाणी, मूलाबी—देखो 'मूलाणी, मूलाबी' (रू भे)

मूलावक, मूलाविक—क्रि० वि० [अ० मूलाविक] अनुसार, बमोजिव ।

वि०—१ सहृदय, तुल्य ।

उ०—रिपियो कांकरे दाई करणो पडसी । मकान ठाकन नै आपरै माण-ताण मूलावक वणावणी होमी ।—दसदोख २ नमान, बराबर ।

मूलायोडो—देखो 'मूलायोडो, (रू भे) (स्त्री० मूलायोडो)

मूलाळर—वि० [अ०] १ जो तलब करने योग्य हो, मांगने योग्य ।

२ बकाया, बाकी, लेने योग्य ।

उ०—समत १७२१ रा आमोज वद ७ उकील मनोहरदास वागळ आयो तिण माहें लिखीयो छै—मूलाळर स्त्री माहाराजाजी रै रूपीया ८०००००० इण भात छै किमत भाळी नै रूपीया २००००००) बोया छै ।—नैणसी

स० पु० १ माग, तलाज ।

२ बकाया रकम ।

३ प्रार्थना ।

रू० भे०—मूलाविक,

मूलाविक—देखो 'मूलाविक' (रू भे)

उ०—सूकी जोइ सगेज नू, अटक उडै परभाड । मधुकर मिन मूलाविक बसकर देह विगाड ।—७ हमीर

मूलाविक—स० पु० [अ० मूलाविक] १ वह रकम जो किसी के महा बकाया हो ।

२ प्राप्त होने योग्य धन ।

रू० भे०—मूलाविक,

मूलाविक—देखो 'मूलाविक' (रू भे)

मूलाविक, मूलाविक—देखो 'मूलाविक, मूलाविक' (रू भे)

मूलाविकवियो—देखो 'मूलाविकवियो' (रू भे)

(स्त्री० मूलाविकवियो)

मूलाहळ—देखो 'मूलाहळ' (रू भे)

उ०—वधे गज चाचर सावळ वाहि । मूलाहळ गज किया जुध माहि ।—सू प्र

मुक्ति—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—स्वति मुक्ति अज्जब मद्द, लावव पाचमों जाण ।

—जयवाणी

मुक्तिक—वि० [अ०] जो किसी विषय या गाय मे सहमत हो, एक मत हो ।

मुक्ता—देखो 'मुक्ता' (रू भे)

मुक्ताहळ, मुक्ताहळि—देखो 'मुक्ताहळ' (रू भे)

उ०—१ चूडी सवि चटकी गई, रलिउ मुक्ताहळ हार । आभरणां ऊतरि पडइ, खाट खमइ नहीं मार ।—मा का प्र

उ०—२ तस्करि लूटी तारुणी, आपा प्रांग-प्रमाणि । मुक्ताहळ अवरइ अडिउ, ते गुजाहळ जाणि ।—मा का प्र

उ०—३ कानि कुडळ मिरि मुगट, मुक्ताहळि गळि माळ । दिव्य वस्त्र दीसइ भला वीर जिके वडताळ ।—मा का प्र

मुक्ति—१ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

२ देखो 'मोती' (रू भे)

३ देखो 'मूती' (रू भे)

मुक्तिमाग—स० पु० [स० मुक्ति-मार्ग] मुक्ति या मोक्ष का मार्ग अर्थात् तपस्या, त्याग ।

मुक्तियदाम—देखो 'मुक्तियदाम' (रू भे)

उ०—दिपे गुण निम्मल मुक्तियदाम, सेवु मन सुद्ध तिकी हिज स्वांम ।—व व प्र

मुक्ती—१ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—कयशरण्य मागव नरिद किन्नर पय भत्ती । पुरिसादाणिम पासनाह रेहड तुह मुक्ती ।—म कु

२ देखो 'मोती' (रू भे)

३ देखो 'मूती' (रू भे)

मुक्तवदो, मुक्तवदो—देखो 'मुक्तवदो' (रू भे) (मा म)

उ०—१ देस रो काम सारो मु सविया नू देय आप जनाने माहीं एस करै ।—हाडाळा सूर री बात

उ०—२ अं पण हजूर था और सगळा लोग अमराव मुत्सद्दी था तिए में कुसलसिंह राजा नू कही ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ प्रभात सवेरे दिन उगतां ही मुत्सद्दी प्रधान दीवान बकसी रे डेरे गया ।—ठा राजसिंह रो वारता

उ०—४ पाखती गोपालदास रा मुत्सद्दियां नू हाडा रा मुत्सद्दी कही जे राणी सू जुहार कर चढ्यो ।

—गोड गोपालदास री वारता

मुथकदा—स० पु०—फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक ।

मुथरा—देखो 'मथुरा' (रू भे.)

उ०—मुथरा माहि वरतिया मगळ । घण कितूहळ घोषरि ।

—हनां मा

मुद—स० पु० [स०] १ आनन्द, हर्ष मोद । (हनां मा)

२ उत्साह ।

मुदई—देखो 'मुद्ई' (रू भे) (भा म)

मुदक—स० पु०—एक आभूषण विशेष । (ध स)

मुदकारी—वि० [स० मुद कारिन्] प्रसन्न करने वाला ।

उ०—ता त्रप कै सारगदेव सुत, प्रतिहारी औरस प्रकट्यो नुत ।  
 तोक सुहोत मरो जननी तस, बीसलदेव भयो चिता वस । घात्री  
 बनिक वधू इक घारी, कुमर ताहि सौंष्यो मुदकारी । लख्यो दुग्ध  
 तांको सुभलच्छन वेधक मतसन खोजि बिचच्छन ।—व.भा

मुदग—स० पु० [स० मद्ग] १ मृग ।

२ ढक्कन ।

३ आच्छादन, गिलाफ ।

मुदगर—१ देखो 'मुगदर' (रू भे)

उ०—हड सहत करि दुरत, रवद काचा पळ रोळें । मण वारह  
 मुदगरां, अणा जेही ऊतोळें ।—सू प्र

उ०—२ अलंगो नही मूकां रे, जलती मे फूका रे । वखतावर सगारे,  
 जांणे आण विलगारे । घणी रे मनुहरा मूसल मुदगरां रे ।

—जयवाणी

२ देखो 'मुदगर' (रू भे)

मुदत—१ देखो 'मुद्त' (रू भे)

उ०—१ टकसाळ व्याज में हैंमो ४, मुदत उप्रत हुवा, हैंसो ८ तिए  
 रा रु २०००) री ठोड । —नणसी

उ०—२ और महाराज री असवारी घरो . . बाळसमद  
 विराजता तिए सु मुदत पळा मुत्सदी खवास पासवांना रा डेरा जुदा  
 जुदा सु हुवोडा है ।—नणसी

२ देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—दार बखाने नायो मुवत अरक अत आयो खरै । दो पहर  
 जुद्ध दखणाव सु, कीयो जुडै जोधपुरै । —गु रु व

३ देखो 'मुद्त' (रू भे)

मुदति—१ देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—प्रियम पाट उद्धरें त्याग उधारि खट ग्रन्ना । आच खडग ऊधरै,  
 मुदति सुरताणां खाना । —गु. रु. व.

२ देखो 'मुद्ति' (रू भे)

३ देखो 'मदद' (रू भे)

मुदमगळ—स० पु० यौ० [स०] आनन्द, खुशहाली,

मुवर—देखो 'मुदिर' (रू भे) (अ मा., ह ना मा.)

मुदरा—देखो 'मुद्रा' (रू भे)

उ०—१ कहजें दिगपाळ जटाळ कणा । मुदरा लाय जोगिय आप  
 मणा । —पा प्र

उ०—२ मगळा मुदरा मेखला रे बाला, खप्पर लुंगी हाथ । जोगिण  
 होइ जुग ढखू रे, म्हांरा रावळियारी साथ । —मीरा

मुदरामारग—देखो 'मुद्रामारग' (रू भे)

मुवराळ—देखो 'मुद्राळ' (रू भे)

उ०—१ लगोटवध बाला सह लाल चिळ्यो मुदराळ वणि ।  
 औमिकी वीर सह जागिया, भगवती नीपाइ भणि —मा वचनिका

मुवल—देखो 'मुद्दल' (रू भे)

मुदांस—स० पु०—आनन्द का स्थान,

उ०—टीडीरो मुदांस जतन चिडकोत्या चोळो । लटां सूट रैवास,  
 घाम-फूसा रो झालो ।—दसदेव

मुदाइत—स० पु० [अ० मुद्ई] १ उत्तराधिकारी, वारिस, दावेदार,  
 हकदार ।

उ०—तठा पछेली सीहा रें पटराणी और हुती । तिए रें पेट रा  
 वेटा ४ हुता, तिए माहें वडो वेटी टीकायत साहबी रो घणी  
 मुदाइत छै ।—नणसी

२ मुखिया, प्रधान ।

३ खास, मुख्य,

उ०—कूमं कल्यो-घोड़ा राज, घोडा हीज मुदाइत, तिए रें घोडा  
 रो अधिकार हुसी तिए रो राज ।—रावरिणमल री बात ।

४ जिम्मेदार, उत्तरदायी ।

रू० भे०—मुदाई, मुदायत, मुदेत,

मुदाई—१ देखो 'मुद्ई' (रू भे)

२ देखो 'मुदाइत' (रू भे)

उ०—मान वळें कायत्य मुदाई । सादू भड घोरियो सवाई ।

—रा रु

मुदादसिल—स० पु०—एक विशेष प्रकार के पत्थर का टुकड़ा जिसमे हर  
 समय मोर का आकार मालूम होता है ।

उ०—दुनि दिल दरपण भई, सरब रूप सम भाय । मो मन भया  
 मुदादसिल मित्र मोर दरसाय । —रज्जव

मुदायत—देखो 'मुदाइत' (रू भे)

उ०—१ बुद्धि बल सेती काम, लसकर रो मुदायत सेनापति किसानू

ठहरावणी ।—नी प्र

उ०—२ आया मिलणु भमीरळ एता । जवना दळे मुदायत जेता ।

—रा रु

उ०—३ तरं रावळ केहर रो वडो वेटी केल्हण थो, जिणनू परो काढियो, नै लम्बण नू मुदायत कियो ।—नैणमी

उ०—४ अटं टिण माहै जेमल मुदायत वडो कोहर छै ।—नैणसी

उ०—५ राव चद्रमेन नीमरीयो । देवडो बीजो हरराजोत पिण नीमरीयो । उहट जेमल मुदायत होय मडीयो —रावचद्रमेन रो वात

उ०—६ बिस्व के तुम नायक और सबके मुदायत । सो जग की हील में वरम जंसी सायत । —रा रु

उ०—७ बिस्व के तुम नायक और सबके मुदायत । सो जग की हील में वरम जंसी सायत । —रा रु

मुदायले, मुदायली—दबो 'मुदायले' (रु भे) (मा म)

मुदार—स० पु० [अ० मदार] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार ।

उ०—१ इयाँ रे परवान जंतमल रे ऊपर मुदार ।—नैणसी

उ०—२ सरव काम नाम-लेखे रो मुदार वेटे ऊपर और देवीदास रे टाकुंग रे दरमण रो प्रतीक्षा मो सहर सू बाहिर भवकोम देहरी तटे श्री लिखमिनायजी विगजं सो देवीदास नित दरमण करवाने जावे ।—पलक दरियाव रो वात

उ०—३ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

—राव मालदे रो वात

उ०—४ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—५ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—६ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—७ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—८ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—९ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१० पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—११ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१२ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१३ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१४ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१५ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१६ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१७ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१८ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—१९ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२० पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२१ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२२ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२३ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२४ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२५ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२६ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२७ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२८ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—२९ पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

उ०—३० पछे कितरेह दिने तेजमी दरवार आया । पछे एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रे काम रो मुदार अमा माथे थो ।

मुदिता—स० स्त्री० [स०] १ साहित्य में वह परकीया नायिका जो पर-  
पुरुष सम्बन्धी प्रेम की अभिलाषा पूर्ण होते देखकर प्रसन्न होती है ।  
२ प्रमत्ता ।

मुदिर—स० पु० [स०] १ बाण्ड मेघ । (डि को, ना डि को.)

उ०—कसिकार मुदिर निस्कळ कढत, माता जिम सुत लखि मुवो ।

—व भा

२ प्रेमी । ३ लपट या कामुक व्यक्ति ।

४ मेढक ।

रु० भे०—मुदर,

मुदी—१ देखो 'मुद्दी' (रु भे)

उ०—१ माहै राजा सू मालम करियो, करसा ऊमा छै, हुक्म करो तो भावे । तरं हुक्म हुवो । तरं माहै, पोहता । त्यां माहै ऊगो मुदी वोल्हो, राज्याजी, राम राम, राज्याजी समाव्या छो ।

—सरवहिया कहुवाट रो वात

उ०—२ उठे इये राजा रे किरायत कर देखाळीयो । तद इये नू सरव जगात हासल रो मुदी कीयो ।—ठाकुरेमाह रो वात

उ०—३ सेखावत रावत वट माज, मुतन 'वहादर' समर सगाह । फोजां तणो मुदी नह फिरियो, गिरियो बीच करे गजगाह ।

—राजा केसरीमिह सेखावत रो गीत

उ०—४ तद जगमालजी भूतां माहै मुदी थो उमराव, तिणनै कवर कह्यो, कोम ५० घोडो खडियो, तिको प्राळम करे छै, तिण सू नगर महेवे पोहचायो जोई जं ।—जगमाल मालावत रो वात

मुदीत—देखो 'मुदित' (रु भे)

मुदु—देखो 'अदु' (रु भे)

उ०—मुदु वायक वोध दियै महिला प्रिति लागन काल किये पहिला । महि पुन प्रतापहि माघ मिळे हहरे जमराज निकेत हिले ।

—ऊ का

मुदेत—देखो 'मुदाहत' (रु भे)

उ०—थे मुदेत थाट रा फडाया भुजा ग्राम थाभे । लाट रा लिखाया मैदपाट रा लिखत ।—राघोदास सांदू

मुदे—देखो 'मुद्दी' (रु भे)

उ०—१ इण फोज में मुदे मागोजी समारचदोत हा ।—द. दा.

उ०—२ मेहनिया महाराज दळ किया मुदे करतार । दुद अमदी साळ्ळें, त्या हदी तरवार ।—रा रु

उ०—३ लुद्रवे रावळ भोज (राज) करे । जेसलदे रे भाटी, जो मुदे जेसल माये ।—वरमे तिलोकसी भाटी रो वात

मुदीत—स० पु०—सीसोदियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति

मुदी—स० पु० [अ० मुद्दी] १ अभिप्राय, तात्पर्य, आशय ।

उ०—१ गुमाई ने कहै नमो नारायण । जद ते बोल्या—नारायण । इण रो मुदी ओ म्हा में करांमात कोई नहीं है । नमस्कार नारायण कू वरो ।—भि द्र.

उ०—२ उवे कहै दया पाली । दया पाल्या निहाल हुसी पिण

मुदाळी—देखो 'मुदाळ' (अल्पा, रु भे)

उ०—मुदाळा प्रताप कोट सावूत राखियो मारु, मादूळा पटंत याळा खगाळा सारीख —महादान मडडू

मुदित—वि० [म०] आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न, खुश ।

उ०—१ नमो स्रष्टा त्वष्टा अगम उत्तमष्टा प्रह नमो । नमो अस्ती जेस्ती मुदित परमेस्ती मह नमो ।—ऊ का.

उ०—२ भोळा भोळा बाळ, करे रोळा रुडकावे । भोळा भर घर लाय मुदिन मोयावा पावे ।—दसदेव

स० पु०—१ रति क्रिया मे एक प्रकार का आलिंगन ।

२ देखो 'मद' (रु भे)

रु० भे०—मुदय, मुदत, मुदति, मुदीत, मुदति, मुदती ।

मुदितमन—वि०—प्रसन्न चित्त ।

रु० भे०—मुदयमन,

म्हाने वांछा कोई तिरौ नही । इण रो मुदो यो है ।—भिद्र  
उ०—३ पातसाहजी मुनसव तागीर कियो पछे सावत हुवो जिण  
मुद रो ।—व दा

२ उद्देश्य, लक्ष्य ।

उ० जेसो एम बोल्यो छे मना मे घीर राखी, रोटी जीमि पाछे ई  
मुदा की बात भाखी ।—शि व

३ अर्थ, मतलब, भाव ।

उ०—हीण दोख मो हुवै, जात पित मुदो न जाहर । निनग जेणने  
निरख, विकळ वरणण धिन ठाहर ।—र.रु.

४ असलियत, वास्तविकता ।

उ०—मिळतो मण नू कहे, मुवो करू मालूम । मारग लागी मत  
टिकी हाजर नाजर सूम ।—घा दा.

५ स्वार्थ, गरज ।

६ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार ।

उ०—१ हमें ही जेतारण सारीखो सहर वसे छे । मुदो वस्ती रो  
बाणिया ऊपर छे ।—नैणसी

उ०२ फूल रें और बेटी कोई न थो । साखा ऊपर हीज मुदो हुवो ।  
—नैणसी

७ प्रवच ।

उ०—वरस दोय तो सीहे नू राख हूदं हासल मेहतं रो आघो-आघ  
लीयो । मुदो सारो दुद रें हाथ छे ।—नैणसी

८ भवसर, मौका ।

९ विषय, प्रमग, सम्बन्ध ।

१०—खुलासा, स्पष्टीकरण ।

११ निर्भरता ।

उ०—तळाव १ आसळ कन्है छे । पाणी रो मुदो भरणा माथे छे ।  
—नैणसी

रु० भे०—मुद्दी, मुदी

मुद्दगर-स० पु० [स०] १ वार व नक्षत्र सम्बन्धी वनने वाले २८ योगों में  
से एक ।

२ तक्षक कुलोत्पन्न नाग ।

रु० भे०—मुद्गर, मुद्गर,

मुद्दी-स० पु० [अ०] १ दावा करने वाला, दावेदार, वादी ।

२ उत्तराधिकारी, वारिस, हकदार ।

३ प्रधान, मुखिया, अगुवा ।

४ प्रमुख, खास, मुख्य ।

५ शत्रु, बेरी ।

६ निर्भर, आश्रित ।

रु० भे०—मुदई, मुदाई, मुदी, मुद, मुदी, मुदी, मुदे, मुदई ।

मुद्दा—देखो 'मुद्रिका' (रु भे)

उ०—जिहा माहि जोवा पणू मान जेहा । दई मुद्दा जेणनू मेघ  
देहा ।—सू प्र

मुद्दत-स० स्त्री० [अ०] १ किसी कार्य या लेन-देन के प्रति निर्धारित  
की गई अवधि, मयाद ।

उ०—कही मैं वायदो कियो थो सो किए भांति जावें थो । जे  
मुद्दता नही आवती तो हो हू बंठी रहितो, अठा सू ऊठतो ही नहीं ।

—नी.प्र.

२ समय, काल, वक्त ।

३ बहुत लम्बा समय, दीर्घकाल ।

४ देर, विलंब ।

रु० भे०—मुदत,

५ देखो 'मदद' (रु भे)

उ०—कहै साह जिहगीर, खुरम सुरताण (सुरे रहत) । तम सूर  
हम खुदाई, पीर पक्कबर मुद्दत ।—गुरु वं

मुद्दति, मुद्दती-वि० [अ० मुद्दत+रा० प्र० इ०] १ जिसमें कोई अवधि  
निश्चित की गई हो ।

२ जो किसी निश्चित अवधि तक के लिये मान्य हो ।

स० पु०—१ एक प्रकार का बुखार ।

रु० भे०—मुदति, मुदति, मुदनी,

मुद्दल-स० पु० [स० मर्दल] १ श्रृण पर दिया जाने वाला मूलधन ।

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—भभा मउग मुद्दल कडव भल्लरि हुहुक कसाला । काहुल  
तिलिमा वसो सखी, पणवी य वारसमो ।—व-स

रु० भे०—मुदल,

मुद्दलेह-स० पु० [अ० मुद्दआअल्लेह] जिस पर कोई दावा या मुकदमा  
किया गया हो, प्रतिवादी ।

रु० भे०—मुदायले, मुदायलो,

मुद्दी, मुदे, मुदे—देखो 'मुदई' (रु भे)

उ०—१ जो राजा म्हानू देस माहीं काढे, रिणमलां माही तो  
आप मुद्दी छौ ।—मारवाड रा अमरावा रो वारता

उ०—२ इतरो विचार कर दरवार रा आदमी सागे देय काजी  
ने मुद्दे कर, हाथी घोडा कपडो मेवो रोकड वेवडा नारेळ टीके  
मेलिया ।—जलालवूवना रो बात

उ०—३ सगळा गोड एक मत होय उठिया, मुद्दे तो गोपाळदास  
बीजा भाई सारा हुकम सिर ऊपर भालिया ।

—गोड गोपाळदास रो वारता

उ०—४ पण रायवण, कुवर पदे रावळ रें आगे मुद्दे, रावळ रें  
जीव प्राण । बीजा वेटा हता पण रायवण सू बडो प्यार ।

—रायवण रो बात

मुद्दी—देखो 'मुदी' (रु भे)

उ०—१ दीयाण सुदरदास ऊपरि कांम रो मुद्दी छे । माह  
सुदरदास रो वेटी माह वेणीदास, तिकी कुवर रें हजर रहै ।

—पलक दरियाव रो बात

उ०—२ परायो सुख अर आपरो दुख घणो लखाया करै । इण मुद्दा



गै मृतामो करण मारु आ एक छोटी सी बात है ।—कुलवाडी  
उ०—३ राव जंतमी विहारीदामोत वीरमपुर मे राज करे ।  
बडो भलो सरदार, ब्रिद्ध मयी, तीय रे बेटो सुंदरदाम दी पर मुद्दो  
गो उवा मुदरदाम भलो माचो सरदार ।

—भाटी सुंदरदाम वीरमपुरी रो वारता

उ०—४ दाता रे धुरि देवि, दान रे लाघो दहो । सुव ननो सग्रहे,  
माह रे टण सु मुद्दो ।—ध व ग्र.

मुद्र-स० पु० [म० मूवंत] १ मस्तक, मिर ।

उ०—नवो जन्म ले कुड कडीर न्हावे, महामुद्र वहे मुद्र मां नू  
नमावे ।—मे म

२ मुड, फटा हुआ मिर ।

उ०—जगन्वत्स भाळन कोतुक जुद्ध, माला कज सकर ठालन मुद्र ।  
—मे म

३ देखो 'मुग्र' (रू भे)

मुद्ररो—देखो 'मधुर' (अल्पा, रू भे)

उ०—जिण मर्म गहगे मुद्ररो मुद्ररो गाजे है, पवन सीतल मद  
वाजे है ।—र हमीर

मुद्र-म० पु०—१ पुरुषो की बहतर कलाओ में से एक ।

२ देखो 'मद्र' (रू भे)

३ देखो 'मुद्रिका' (मह, रू भे)

उ०—लहे मुद्र चूडामणी दीव लीची ।—सू प्र

मुद्रक-स० पु० [म०] १ मुद्रणालय या छापाखाना का वह अधिकारी  
जिसके नियन्त्रण में छपाई का कार्य होता है ।

२ मुद्रण कार्य या मुद्रण कला का जानकार ।

३ एक आभूषण विशेष । (व म)

वि०—मुद्रण करने वाला ।

मुद्रका—देखो 'मुद्रिका' (रू भे)

उ०—१ हिरन में पत्र हीरे जडित, माकळा करगो सुमीभित ।  
मुद्रका गु पर-माखा मुभग, मिण जाण दिवे फुण सेम नग ।

—गुरु व

उ०—२ दई दीव मो मुद्रका सीत दीघी । लहे मुद्र चूडामणी  
दीव लीची ।—सू प्र

मुद्रही, मुद्रही—देखो 'मृदही' (रू भे.)

उ०—माणिक-वडो मुद्रही करि नव-ग्रहु अनत । कठि जनोई  
तगतगट, श्रिय त्रिणि यय तत ।—मा कां प्र

मुद्रण-म० पु० [सं०] १ मुद्रणालय या छापाखाने में होने वाला छपाई  
का कार्य ।

२ वस्त्रादि पर की जाने वाली छपाई या अंकन ।

३ किसी ठप्पे आदि की गहायता से अंकित किया जाने वाला  
चिन्ह ।

मुद्रणयंत्र-म० पु० [सं०] छपाई करने वाली कन, प्रेम की मशीन ।

रू० भे०—मुद्राजत्र, मुद्रायत्र

मुद्राणालय-म० पु० [म० मुद्रण+आलय] जहां पुस्तकें, पत्र, दैनिक-  
पत्र आदि की छपाई का कार्य होता हो छापाखाना, प्रेस ।

२ वह स्थान जहां किसी प्रकार की छपाई का काम होता हो ।

मुद्राक-म० पु० [म० मुद्रा+अक] १ सरकारी मुद्राअंकित वह पत्र  
जिस पर कोई पक्की लिखा पढ़ी का कार्य किया जाता है, तथा  
जिम पर अर्जों दावा लिखकर अदालत में पेश किया जाता है ।

(स्टाम्प)

२ उक्त कागज पर अंकित मुद्रा, चिन्ह, मोहर ।

३ टाक-टिकट ।

४ छाप, मोहर (स्टैम्प)

५ छाप या मोहर का अंकित किया हुआ चिन्ह ।

मुद्रांकित-वि० [म० मुद्रा+अंकित] १ जिस पर किसी मुद्रा या मोहर  
का अंकन किया गया हो ।

२ शरीर पर विष्णु के आयुध के चिन्ह लगवाया हुआ, (वैष्णव-  
व्यक्ति)

३ मुद्रा या मोहर अंकित कर अविष्कृत किया हुआ, (पत्र) ।

मुद्रा-स० स्त्री० [म०] १ किसी के नाम की या किसी निर्धारित  
चिन्ह की छाप, मोहर, (मील)

उ०—छोडिउ पडु कुमारी पासि तसु मुद्रा लाघी ।

—सालिभद्र सूरि

२ अगूठी मुद्रिका, छल्ला ।

३ ऐसी अगूठी जिस पर किसी का नाम अंकित हो ।

४ प्राचीन समय में मुद्रा या चिन्ह से अंकित अधिकार पत्र जो  
यात्रा का परवाना माना जाता था ।

५ सरकार द्वारा प्रचलित धातु के सिक्के जो वस्तुओं के क्रय  
विक्रय में काम आते हैं, मुहर, रुपया, पैसा आदि ।

उ०—पच लाख ५००००० मुद्रा, पटा ले जयतिघ दलेल ।

—व भा

६ अर्थ शास्त्र में—किसी सरकारी बैंक द्वारा अविष्कृत किया हुआ  
कागज का नोट, चेक, ट्राफ्ट आदि कागजी मुद्रा जो लेन-देन एवं  
भुगतान में निविरोध काम आते हैं ।

७ कोई निष्का ।

८ पदक, तमगा ।

९ चपराम पर लगाने का बिल्ला ।

१० आधुनिक प्रेमों में छपाई के लिये बने हुए धातु के अक्षर ।

११ योगियों के कान में पहनने का आभूषण (नाथ एवं सिद्ध)

उ०—१ तरै चले १ बह्यो-हाथों रा पाळिया काय बाढो ? कानें  
मुद्रा छै, घावा रो वरण फेरो । तरै आ बात गरीबनाथ रे दाय  
आई ।—नैणमी

उ०—२ मुद्रा माळा भेव लू रे, खप्पड लेऊ हाय । जोगिन होय  
जग दूदूमू रे, रावळिया के साथ ।—मीरां



- १२ भक्त जनों के शरीर पर अंकित विष्णु के आयुधों के चिन्ह ।  
 उ०—१ नभ कठ पवित्र करिस हू नरहर, धारै मुद्रा तूभ सखवर ।  
 उदर पवित्र करिस भवरपर, चरणाभ्रत तो धरै चक्रधर ।—हू र  
 उ०—२ गावै मुख हरजस गोपाळ, मुद्रा छाप तिलक गळ माळ ।  
 मागै भीक फिरं दळ माह, राति पडै नै लागै राह ।—रा हू  
 १३ मुद्राकृति जो हृदयगत भावों के अनुसार बदलती रहती है ।  
 १४ हाथ, पाँव, आँख, मुँह, गर्दन आदि की कोई स्थिति ।  
 १५ देव पूजन में हाथ और अंगुलियों को विशेष प्रकार से समेटने  
 मोड़ने आदि का ढंग ।  
 १६ हठ योग में साधना के लिये शरीर को विशेष प्रकार से समेट  
 कर बैठने का ढंग, अंग विन्यास ।  
 १७ तान्त्रिकों की एक साधना ।  
 १८ तान्त्रिक गुह्य साधनाओं में वह रमणी जो तान्त्रिक अनुष्ठानों  
 में सहमाधिक रहती है ।  
 १९ रहस्य, भेद ।  
 २० साहित्य में वह अलंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ प्रतिपादक शब्दों  
 से किसी अन्य अर्थ का भी बोध होता हो ।  
 रू० भे०—मुद्रा, मूद्रा,

मुद्राजत्र—देखो 'मुद्रणयत्र' (रू भे.)

मुद्रानवक—स० पु० यौ०—एक आभूषण विशेष । (व स)

मुद्रामारग—स० पु० [स० मुद्रा-मार्ग] मस्तक के भीतर का वह रन्ध्र जहाँ  
 से योगियों का प्राण वायु बाहिर निकलता है, अहारध्र ।

रू० भे०—मुद्रामारग

मुद्रायत्र—देखो 'मुद्रणयत्र' (रू भे.)

मुद्राळ-वि० [स० मुद्रा + आलुच्] जिसने कान में मुद्रा धारण कर रखी  
 हो, मुद्रा धारण करने वाला ।

उ०—जुगाँवाळी देहारी वेहारी अनुज्जा जयो । मेहा री तन्नुज्जा  
 जयो घटाळी मुद्राळ ।—हुकमीचद खिडियो

स० पु०—नाथ सम्प्रदाय का योगी ।

रू० भे०—मुद्राळ,

अल्पा०—मुद्राळी

मुद्राळी—स० स्त्री० [स० मुद्रा + आलुच् + रा० ई] १ दुर्गा, महाकाली ।

उ०—भगै भाळ मिदूर ज्यो ज्वाळ भाळा । मुद्राळी गळे हिडुळे मुड  
 माळा । भुजा भामणा ककणा सज्ज कीवा, लसै सूळ डैरू खडखड  
 लीवा ।—मे म

२ हठयोग में विशेष अंग विन्यास की पांच मुद्राएँ—लेचरी, भूचरी,  
 पाचरी, गोचरी और उन्मनी ।

३ महादेव, शिव ।

४ नाथ सम्प्रदाय का योगी ।

५ महात्मा ।

वि० जिसने कान में मुद्रा धारण करली हो ।

मुद्रिका—स० स्त्री० [स०] १ अगूठी, छल्ला । (व स)

२ तर्पण आदि पितृ-कार्य करते समय पहनी जाने वाली कुश की  
 अंगूठी

३ योगियों की कर्ण-मुद्रा ।

४ सिक्का, मुद्रा ।

५ मोहर छाप वाली अंगूठी ।

रू० भे०—मुद्रका, मुद्रका, मुद्री,

मह०—मुद्र,

मुद्रित—वि० [स०] १ मुद्रण किया हुआ, छपा या छापा हुआ ।

२ चिन्हांकित, चिह्नित ।

३ मोहर किया हुआ ।

४ रुका हुआ, बंद ।

उ०—जिण री सगति रै प्रभाव सू स्वरग-लोक री मारग मुद्रित  
 कराय कुभीपाक री निवास भाळियो ।—व भा

५ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ ।

६ अनखिला, अविकसित ।

मुद्री—१ देखो 'माद्री' (रू भे.)

उ०—सन्चवई पिय माय भवा अवाली अखिका । कुती मुद्री जाइ  
 वरु पावेवा नदणह ।—सालिभद्रसूरि

२ देखो 'मुद्रिका' (रू भे.)

मुषप—देखो 'मधुप' (रू भे.)

उ०—केतकी मीर पुसळें तुरी केवही, रग वहै घरा सर रुधर रातौ ।  
 ताईया सेन बाही वचै 'ऊव'तण मुषप रग रमै मंमत माती ।

—तेजसिंह सेखावतरी गीत

मुषर, मुषरू, मुषरी—देखो 'मधुरी', (रू भे.)

२ देखो 'मधुर' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ अनी ऊन्हालइ म विलसीइ, नदर योवन गलि लाइइ ।  
 मुषर वाठ राति चाद्रिणी, फरइ विलास करइ प्रिय तणी ।

—प्राचीन-फागु सग्रह

उ०—२ नाच गाय कर निलजता, रच वप भूसण रास । भार  
 निजारा मोहियो, हजी मुषरे हास ।—वा दा

उ०—३ भीणा ओरणा मे बाळा पोया मोती मुषरा-मुषरा  
 चिमकता हा ।—फुलवाडी

उ०—४ सेठा री हस हाल मिटी नीं ही । मुषरा-मुषरा मुळकता  
 बोत्या ।—फुलवाडी

उ०—५ सूरज निर्ग नी आवै ती ई मुषरा-मुषरा ठाहा उजास मे  
 कुदरत साव सुमट दीस ।—फुलवाडी

उ०—६ आनम अणभै ब्रह्म रगान, मुषरा भमीयाह ।

—कैसीदास गाढण

उ०—७ उजळी पाखा हम, लीली पाखा सूवटा, कोयल मुषरी  
 वरणी धर छत्तर घारी मीर —फुलवाडी

उ०—८ चिडिया री मीठी चकचक री मिठाम छुलियोडी हवा  
मुधरी मुधरी वानती हो ।—फुलवादी  
(स्त्री० मुधरी)

मुधा—प्रव्य० [स०] १ व्ययं, निरर्थक ।

२ भूल मे ।

वि०—१ मृपा, झूठ, अनृत्य ।

२ व्ययं

स० स्त्री०—१ अमृत्यता, झूठ ।

२ व्ययता ।

मुधि—देखो 'मुग्धा'

उ०—निलवटि कम्तूरी तिलक म करिसि मुधि अयाण । सहिजि  
समिहर लेखवो, करमि राहु-निवाण ।—मा कां प्र

मुध्व—१ देखो 'मुग्ध' (रू भे)

२ देखो 'मुग्धा' (रू भे)

उ०—१ थाह निहाळइ दिन गिण्ड, मारु आमा-लुध्व । परदेसं  
धावळ चणा, विलठ न जाणइ मुध्व ।—ढो मा

उ०—२ पावम माम, विदेम प्रिय, धरि तण्णी कुळमुध्व । सारग  
मिधर निगह करि, मरड स फोमळ मुध्व ।—ढो मा.

मुनद, मुनद्र—देखो 'मुनीद्र' (रू भे) (अमा)

उ०—१ हर कृत हार मुनद कृत हासं । पडिया जुव कमवज  
पनगनं ।—सू प्र

उ०—२ ईव लका दोषा प्रेता जुगेता सगाम, अमी, उधरेत केता  
धू प्रनेता उनद्र । रुद्र छाक लेता वीर देता राह जेता फरे, मळ  
हाम हेता वेता प्रनेता मुनद्र ।—बट्टीदाम विडियो

मुन—१ देखो 'मुनि' (रू भे)

उ०—१ मिद कपिल मुन, नारखा, महिमा जाहर कीव । जननी  
हृदो चरण जळ, पात्रा मिर धर पोव ।—वां दा

उ०—२ गुर श्री नहमा मुन जन गावें, मूरख अवा मरम न पावें ।

—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मुन' (रू भे)

मुनकल, मुनकलिव—वि० [अ० मुनकलिव] १ पलटा हुआ, फिरा हुआ ।

उ०—१ लम्कर ऊपर मान मन राखें क्यो जे सिपाई री हाल  
मुनकलिव छे नालची छे ।—नी प्र.

२ घोषा, उल्टा ।

३ अमृत-व्यय, उलल पुथल ।

मुनकिर—स० पु० [अ० मुनकिर] मुनलमानों के दो फरिश्तो मे से एक जो  
मुर्दों मे कब्र मे पूछ ताछ करने हैं । (काल्पनिक)

उ०—मुनलमान पढतूर देवता-जनाजो दफणाया पछे मुनकिर अर  
नवीर नाव रा फरिस्ता आर्व ।—फुलवादी

मुनवता—स० स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बड़ी दाव, जिसमे चीज होते  
हैं और यह ओपधि मे काम आती है, मुनकादाव ।

रू० भे०—मनकादाव, मनसादाव मिनकादाव, मिनगादाव ।

मुनजन—देखो 'मुनिजन' (रू भे)

उ०—बडे बडे मुनजन छले, वै रहते एकत ।

—स्त्रीहरिरामदामजी महाराज

मुनवतकारी—स० स्त्री० [अ० फा०] किमी लकड़ी पर की हुई बेल बूटो  
आदि की चित्रकारी ।

मुनमय—देखो 'मनमय' (रू भे)

उ०—गुल नारंग महदी गुल रेममी गुल सोहै । मुनमय का इद  
का मुनेस्वरु का मन मोहै ।—सू प्र

मुनमाळ—स० स्त्री० [स० मुनि+माला] मुनियो की पक्ति 'मुनि-समाज,  
मुनि-वृ द ।

उ०—जगत दिखायो जनम दे, पोख करी प्रतिपाळ । ईस्वर नू  
उपमा दिए, मात तणी मुनमाळ ।—वा. दा.

मुनराज—देखो 'मुनिराज' (रू भे.)

मुनवर—देखो 'मुनिवर' (रू. भे.)

उ०—सीस कोडि तिन कोड देव तल, सुर भावो भावीया सहि ।  
वास तणी परिकाम दिखावइ, मुनवर रुवा दइत महि ।

—महादेव पारवती री वेलि

मुनसप—देखो 'मनसप' (रू. भे)

उ०—१ सवत १६७६ रा मंगसर माहे पातसाहजी री हजूर सुं  
टीकी आयो, मुनसप आयो । पहली टीकें बैसता तीन हजारो जात  
दोय हजार अमवार मनसप हुआ, तिए माहे जागीर पाई ।

—नंगुसी

उ०—२ 'गजमाह' देखि जहगीर गह, करि हित कमळ प्रकासियो ।  
पूजियो माह मुनसप पटा, 'सूरमाह' मावासियो ।—सू प्र

मुनसपदार—देखो 'मनसपदार' (रू भे)

उ०—इण मुनसपदार स्त्रीमहाराजाजी साथै विदा हाजर था सु  
कीया, ठूजां नू फरमान हुवा ।—नैणमी

मुनसफ—देखो 'मुनसव' (रू भे)

उ०—१ मिळवा पान 'प्रजल्ल' सू, प्रात हुवो अमवार । रजवाइत  
मुनसफ तणी, मिळ दीनी तिए वार ।—रा रु

उ०—२ तिम वखत राव न छळ द्रोह किया । जोवाण अपणें  
मुनसफ मे लिया ।—सू प्र

मुनसव—देखो 'मनसव' (रू भे.)

उ०—१ जरै जवनेस सुरजन रै कहियां भीमारत १६१२ हाहा  
मिषदेव नू महारत्नाप १ महर रै साथ अढाई हजारी २५०० री  
मुनसव देर बुदी रै ऊपर विदा कीवो ।—व भा

उ०—२ मिवानू साहजादी कह्यो—तू म्हारी भाई छै । तू म्हा  
माथै मांडव आर्व तो तोनू पातमाहजी सू अरज करनं मुनसव दिराळ ।

—नैणमी

मुनसवत—देखो 'मनसव' (रू भे)

उ०—भो नयाव चढ गयो । केसरीमिह बंठ रहियो । मुनसवत  
तागीर हुवो ।—अमरमिहजी राठीड री वात

मुनसबदार—देखो 'मनसबदार' (रु भे)

उ०—१ वाकी तीन ही भाई मुनसबदार हुवा। कोई किही भाई रो चाकर आसकारियो नही हुवौ।—महाराजा पदमनिह री बात

उ०—२ मुनसबदार थो सु अपवार २०० तथा ४०० सु वासे चढ़ीयो, सु मेहते जाता आपड़ीयो।—नैणसी

मुनसम—देखो 'मुनसब' (रु भे)

उ० सुणि रीकि अकवरसाह, दसकत लिख दिया। पटभरा असि सिरपाव, मुनसम भेलिया।—सू प्र

मुनसी—देखो 'मूशी' (रु भे)

उ०—१ वस चित चित विसेख, तरें मुनमी तेढाया। तन विहवळ दुख तलफ, कळप उपजे निज काया।—रा रु

उ०—२ बोली रा बाढाह, रीत बिगाडा राज रा धोळें दिन घाढाह, मुनसी पाडे मुरधरा।—ऊ का

मुनहार देखो 'मनवार' (रु भे)

उ०—मुनहारा हुवें छे देसीत आरोगे छे। अमला चाक हुयजें छे।

—रा सा स

मुनादि, मुनादी—वि० [अ० मुनादी] घोषणा करने वाला

स० स्त्री० [अ०] १ घोषणा, ऐलान।

२ हुगो या ढोल पीटकर कर ग्राम जनता को मुनाई जगने वाली बात, ढींढोरा।

३ श्रोकान्त, हैसियत।

उ०—ब्रह्मा विसन सेस सिव नारद, नर सुरपति ले आदि। गिरही रिखव देव श्रीतारा, श्रीर की कौन मुनादि।—स्त्री हरिरामदासजी

महाराज

मुनाफी—स० पु०—क्रय-विक्रय या व्यापार मे होने वाला नफा, लाभ, फायदा।

मुनार, मुनारी—देखो 'मीनार' (रु भे)

उ०—१ तिण ऊपर तुरक मेहमेद परदार राजा सूरसिधजी री वार मे मुनारा द्योय कराया।—नैणसी

उ०—२ हेकर चढे निहार गग मुनारें उपरें।—देपाळ घघ री बात

मुनाळ—स० स्त्री०—१ एक प्रकार का सुंदर पहाडी पक्षी।

२ देखो 'मुहनाळ' (रु भे)

मुनासब, मुनासिब—वि० [अ० मुनासिब] १ उचित ठीक, वाजिब।

२ यथेष्ट, काफी, पर्याप्त।

३ योग्य, काबिल।

मुनितर—देखो 'मन्वतर'

उ०—तू बळि तूहिज व्यास, पितृ हरि हंस मुनितर। जग राख्यो हय ग्रीव, ध्रुव तू आप घनतर।—गजउद्धार

मुनिद, मुनिद्र—देखो 'मुनीद्र' (रु भे)

उ०—१ इण दोखण अप नह आदरसी। भावी साखि मुनिद तद भरसी।—सू प्र

उ०—२ देव देस सहकी दिव्य, सूर नू स्यावास। ज्यारी कीतक

देख जुव, हुवें मुनिद्रा हास।—बा दा

मुनि-स० पु० [स०] १ जो ब्रह्म ज्ञान एव सूक्ष्मज्ञान की प्राप्ति के लिये मौनव्रत धारण करते हुए अव्ययन, मनन एव यज्ञादि साधनाएं करता हो, महात्मा, तपस्वी, ऋषि।

उ०—१ मुनि घालें तप जोग बळ, सरग कपाटा हत्य। वेही ऋपण

कपाट नू, उघाडण असमत्य।—बा दा

उ०—२ बडा तत तूभ लहै न बिचार, पुरदर तूभ न जाणें पार।

भला मुनि आदि न जाणें भेद, विरविय तूभ न जाणें वेद।

—ह र.

२ त्यगी, वैरागी।

३ जो मौनव्रत रखता हो।

उ०—स्वामीजी बोल्था—जिमी उण मुनि री मून जिसी सावध दान मे यारें मून है।—भि द्र

४ नारद।

५ अगस्त्य।

६ वेदव्यास।

७ वृद्धदेव।

८ अहन् नामक वभु का एक पुत्र।

९ कुरु राजा के पांच पुत्रों मे से एक।

१० रैवत एव वैवस्वत मन्वन्तर के सप्त ऋषियों मे एक।

११ दस विश्व देवों मे से एक।

१२ प्रसूत देवों मे से एक।

१३ अमिताभ देवों में से एक।

१४ विदेह देश का एक राजा।

१५ एक राजा जो द्युतिमन् राजा के सात पुत्रों मे से एक था।

१६ ग्राम का पेड़।

१७ छप्पय छद का ७१ वा भेद जिसमे १४८ या १५२ लघु होते हैं।

स० स्त्री०—१८ कश्यप ऋषि की पत्नी, जो प्राचेतस दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

१८ सात की सख्या। ५ (हि० को०)

रु० भे०—मुण, मुणि, मुणी, मुणीइ, मुन, मूनी, मूनि, मूनी।

१९ देखो 'मणि' (रु भे)

उ०—द्रोण पुत्र मुनि अरजन लीघउ, चरम नू कवच करणि मु दीघउ। चीतविउ सहू आलि जाइ, दैव मिउ कुणि किपि न थाइ।

—सालसूरि

मुनिचीन्—स० पु० [स०] बल्कल।

मुनिजण, मुनिजन—स० पु०, व० व० [स० मुनि-जन] ऋषि-ममाज मुनिगण, मुनिवृद्ध।

रु० भे० मुनजण, मूनीजन।

मुनिपट—स० पु० [स०] बल्कल।

मुनिपुण्य-म० पु० [म०] मुनिश्रेष्ठ, ऋषिराज ।

मुनिप्रवर-प० पु० [स०] मुनिश्रेष्ठ, ऋषिराज ।

रू० भे०—मुनिप्रवर,

मुनियद, मुनियद्र—देखो 'मुनीद्र' (रू भे)

उ०—एह छमा श्रमुगंण इद भुनियद्र प्रहारे । ईखे मन हगिषो  
अगद घर उल्ल घुताई । —सू प्र

मुनियपय-म० पु० [म० मुनियद] मुनि-पद, मुनि की उपाधि ।

उ०—त मु अगोन मुनियपय जोगि, जागिय सयहदिय दीखि करै ।  
तयगु जिए सासण पभाव पयहतउ पहुतउ पारहणपुर नयरे ।  
—साह रयण

मुनिराज, मुनिराव-स० पु० [स० मुनि+राजन्] ऋषि मुनियों में  
अग्रणी, प्रधान ऋषि ।

उ०—१ खूबी न रही काय, खतगा एजना । नेही व्हे मुनिराज,  
विमारि निरजना । —वा दा

उ०—२ मिव मुनिराव सेव डम सावै । डम गितराज समे आरावै ।  
—सू प्र

मुनिवर-म० पु० [मुनि-वर्यं] ऋषि श्रेष्ठ ।

उ०—महिये सोमा लोक में, तप करि कसता तप । परतखि वीर  
प्रमनियो, धनो मुनिवर धन —व व प्र

रू० भे०—मुनिवर, मुनवर, मुनीवर,

मुनिव्रत-स० पु० [स०] १ ऋषियो मुनियों द्वारा रक्खे जाने वाले व्रत ।  
२ तपस्या ।

मुनिसर मुनिसरु—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे)

उ०—मनतकुमार मुनिसरु, नाण्यठ नेह लगार । काज समारथउ  
रे घापण्यठ, ममयसुदर कहइ सार । —स कु

मुनिसुव्रत, मुनिसुव्रतजिन-स० पु०—जैनियों के धीमवें तीर्थंकर का  
नाम ।

उ०—१ वीमम मुनिसुव्रत जमु साधु तीस हजार । सहम पचाये  
साधवी, गगुघर जाम अहार । —व व प्र

उ०—२ नखि गूदर रे पूजा सतर प्रकार । सोमुनिसुव्रत सामी  
केरत रे, रूप वण्यो जगिमार । —स कु

रू० भे०—मुनिमुव्वय,

मुनीद्र-स० पु० [म० मुनि+इन्द्र] १ जो मुनियों में श्रेष्ठ हो,  
मुनिश्रेष्ठ । २ नारदमुनि ।

रू० भे०—मुनिद्र, मुनंद, मुनद मुनिद, मुनिद्र, मुनेंद्र,

मह०—मुनिद्रम, मुनियद, मुनियद्र

मुनी—१ देखो 'मुनि' (रू भे) (घ० मा०)

उ०—१ अनग न अग उमग डलोळ, हरी पद सगम गग हिलोळ ।  
निराळिय नीति उदगळ नाय, मुनी किय मगळ जगळ माय ।

—ऊ का

उ०—२ मिळै मुनी महापद, मिळै, चट्टीणण अच्यर । मिळै पख  
आमन, मिळै रंगी पनि अम्मर । —मा वचनिका

उ०—३ ढूढार में स्वामी भीखणजी पासै छावगी चरचा करवा  
आया । बोल्या —मुनी ने तार माथ वस्त्र राखणी नहीं । —भिद्र  
उ०—४ केइ कहै मावद्यदान मे पुन्य पाप मिख न कहिणी तिए  
मू मावद्यदान मे म्है मून राखा । जद स्वामीजी मुनी रो द्रस्तांत  
दियो । —भिद्र

मुनीउन—देखो 'उनमुनी' (रू भे)

उ०—मुनीउन आ गोचरी मुण । निवड मुद्रा तपण भाहि, मोढ रेफ  
मकार । —र ज प्र

मुनीजन—देखो 'मुनिजन' (रू भे)

उ०—हरीया माया पापनी लीया मुनीजन मोहि । टुकीयेक जीवै  
निजरि भरि, सब जुग लेवै टोहि । —सो हरिरामदासजी महाराज

मुनीव, मुनीम-स० पु० [म० मुनीव] १ किसी व्यापारी के यहाँ लेखा  
जोखा व वही-खाते का काम करने वाला कर्मचारी, गुमास्ता ।

उ०—१ सेठ अर मुनीम दोनू आख्यां फाटोडा एक दूजा रै मूडा  
माम्ही टग-टग भाळता रह्या । —फुलवाडी

उ०—२ तीन सो रिपिया लीना हा जकारा पाचमी लिटयोडा  
मिल्या व्याज न्यारो । आ भूल कीरें वगी ? कुडी कलम कैया चाली ?

मुनीम दोनू हरामी, इत्याव रा काम करै । —दमदोख

उ०—३ घरमराज आपरा मुनीम विद्यगुप्त माथे विहता थका केवण  
लागा—हाल पतो को पडियो नी । छत्ती ताळ व्हेगी, म्है कणाकली

खोटी व्ह । आ सेठा नै काई जवाव देवू । —फुलवाडी

२ खजांची ।

३ प्रतिनिधि ।

४ अभिकर्ता ।

रू० भे०—मुनीव

मुनीमी-म० म्त्री०—१ मुनीम का काम ।

२ मुनीम का पद,

३ मुनीम की मिलने वाला वेतन ।

मुनीव—देखो 'मुनीम' (रू भे-)

मुनीवर—देखो 'मुनिवर' (रू भे)

मुनीव-स० पु० [स० मुनि+ईश] १ मुनियों में श्रेष्ठ प्रधान ।

२ नारदमुनि ।

उ०—भद्र काळी पीवै सोण उमग खप्परा भरै बाजै यू मुनीस  
वाळी भेरी नाद वग । —सूरजमल मीसण

३ विष्णु ।

४ नारद ।

५ गीतम बुद्ध का एक नाम ।

रू० भे०—मुनेम, मूनेम

मुनीसर, मुनीसरु—देखो 'मुनीस्वर' (रू० भे०)

उ०—१ भला मुनिसर म्हारा माग, आप दयाकर दग्गण जे दिया ।

कहो मुनीसर किरपा रा कद, किणविघ सू सेवक सेवा अनुसरे ।

—गी. रां

उ०—२ पुजराज मुनिवर वदी, मन भाव मुनीसर सोहै रे । उग्र करइ सप आरु, भविष्य जन मन मोहइ रे ।—स० कु०

उ०—३ कोई चार्प साध री रे हां, कोई सघटे अणगार, मेघ मुनीसर ।—जयवांणी

मुनीसी—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे)

उ०—पाय उवराणइ रे वेलु परि जलइ तन मुकुमाल मुनीपी जी ।

—स० कु०

मुनीस्वर—स० पु० [स० मुनी + ईश्वर] १ मुनियो मे श्रेष्ठ एव प्रधान ।

२ वृहस्पति ।

३ शुक्राचार्य ।

४ नारद ।

५ विष्णु ।

६ शिव, महादेव ।

रू० भे०—मुणीसर, मुनिसर, मुनिसर, मुनीसर, सूनीसर, मुनेसर, मुनेस्वर,

मुनेद्र—देखो 'मुनीद्र' (रू भे)

उ०—पलासी गजेंद्रा गूद नरेंद्रा नचाया पूर । अमरा मुनेद्रा नाच नचाया अनूप ।—हुकमीचद खिडियो

मुनेस—देखो 'मुनीस' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ जपै नर नार उमै कर जोड, करै सुर सेव तेतीसू कोड । नागेस नरेस सुरेस मुनेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह र

उ०—२ संगीत घत सोहती मुनेस हस मोहती । अनग रग आतुरी प्रिया नचत पातुरी ।—सू प्र

मुनेसर, मुनेस्वर—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ मुनेसर ध्यानि घरत महत, अखै जुग हेकौ ही नाम अनत ।

—ह र

उ०—२ मगरूर घतावत भक्त मदा, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदा ।

—मे मा

मुफत—देखो 'मुफ्त' (रू भे)

उ०—२ मारवाड रो माल मुफत मे खावै मोडा, सेवक जोसी सेंग गरीवां दे नित गोडा ।—ऊ का

उ०—२ विणज म्हारी घघो है । चीज नै खरीद करु अर वेचू ।

मुफत में कोई चीज देदू पण मुफत मे कोई चीज लू कोनी, लवखी बिणजारा रो नाव लाजै ।—फुलवाडी

मुफतखोर—देखो 'मुफतखोर' (रू भे)

मुफतखोरी—देखो 'मुफतखोरी' (रू भे)

मुफती—देखो 'मुफती' (रू भे)

मुफर—देखो 'मुफरेह' (रू भे)

उ०—अवर गुलाबी अतर, बटै विघ विघ जिणवारां । मडै अधिक मनुहार, अमल बटि मुफर अपारा ।—सू प्र

२ देखो 'मुफिर' (रू भे)

मुफरद—स० पु० [अ० मुफद] १ एक । (२) अकेला ।

मुफरह—देखो 'मुफरेह' (रू भे)

मुफरि—१ देखो 'मुफिर' (रू भे)

२ देखो 'मुफरेह' (रू भे)

मुफरेह—स० पु० [अ० मुफरह] एक प्रकार की औपवि, जिसके सेवन करने से हृदय मे उमग एव आनन्द का संचार होता है ।

वि०—मन मे उल्लास एवं उमग पैदा करने वाला ।

रू० भे०—मुफर, मुफरह, मुफरि, मुफरी,

मुफरी—देखो 'मुफरेह' (रू भे)

उ०—इयै भात रहवै । रहिता नायण फूलमती नु कही एक ह ऊखव जागा छा तैसु तेनु वोहोत सुख होसी । तद फूलमती कही तो वणाय तद नायण उठै मुफरी बणायो अर खवायो कुवर नुं अर फूलमती नु दोना ही नु । तैसु ए बहुत राजी हुवा ऐ मुफरी खावै ।—चौबोली

मुफलिस—वि० [अ० मुफलिस] निर्धन, गरीब, दरिद्र, कगाल ।

मुफलिसी—स० श्र० [अ० मुफलिसी १ 'मुफलिस' होने की अवस्था या भाव ।

२ गरीबी, निर्धनता । ३ दरिद्रता, कगाली ।

मुफसिल—वि० [अ० मुफस्सिल] १ विस्तारपूर्वक, विस्तृत, धीरेवार ।

२ स्पष्ट, सरल ।

रू० भे०—मुफस्सिल

मुफस्सिर—स० पु० [अ०] टीकाकार, भाष्यकार ।

मुफस्सिल—देखो 'मुफसिल' (रू भे)

मुफिर—वि० [अ०] भागने वाला, पलायन करने वाला ।

रू० भे०—मुफर मुफरि ।

मुफीद—वि० [अ०] १ लाभदायक, उपयोगी ।

२ यथा योग्य, योग्य, लायक, उपयुक्त ।

उ०—पालडी में ऐझा कांदा निपजै । वै राज रसोडा वास्ते ई मुफीद है । छतं राजा एडा कांदा नै कुण भोग सकै ।—फुलवाडी

३ अनुकूल ।

उ०—कादा री नेपे वास्ते पालडी री जमी अणूती मुफीद ही ।

—फुलवाडी

मुफ्त—वि० [अ०] १ जिसका कोई मूल्य या दाम न हो, वेदाम । जो बिना कुछ भुगतान किये प्राप्त किया जासकता हो ।

२ जो बिना किसी मेहनत, परिश्रम या प्रयास से प्राप्त हो गया हो ।

३ जो व्यर्थ हो, बेकार हो, निरर्थक हो, निष्प्रयोज्य ।

४ अकारण, बेसबब ।

रू० भे०—मुफत ।

मुफतखोर—वि० [अ०] १ जो दूसरो की कमाई या धन मुफ्त मे खाता हो । जो हराम का माल खाने का आदी हो ।

२ जो दमरो के मिर पर वोझा बनकर रहता हो ।

रू० भे०—मुफ्तखोर,

मुफ्तखोरी—म० स्त्री० [ग्र०] १ 'मुपतखोर' हीने की अवस्था या भाव ।

२ दमरो का माल या धन मुफ्त में उठाने की आदत ।

मुफ्ती—स० स्त्री० [ग्र०] मुसलमानों का धर्म शास्त्रवेत्ता 'धर्माचार्य', मौलवी ।

रू० भे०—मुफ्ती

मुवारक—वि० [ग्र०] १ मंगलदायक, कल्याणकारी, शुभ ।

२ खुश किस्मत, धन्य ।

३ जिसके कारण लाभ व वरकत हुई हो ।

म० स्त्री०—१ वधाई ।

रू० भे०—मुवारकी, मुवारिक,

मुवारकवाद, मुवारकवाद—स० पु० [ग्र०] १ वधाई ।

२ धन्यवाद ।

३ शुभ सूचना व खुश खबरी ।

रू० भे०—मुवारकवादी,

मुवारकवादी—वि०—१ मुवारकवाद देने वाला ।

२ देखो 'मुवारकवाद' (रू० भे०)

उ०—वादमाहजी गल्ले लगाय मिलिया घणी मया कीवी मारा

मुवारकवादी दीवी, समार चैन हुआ री वधाई वाटी ।—नी प्र

मुवारकी—देखो 'मुवारक' (रू० भे०)

मुवारिक—देखो 'मुवारक' (रू० भे०)

उ०—सारी फोज वादमाह नू मुवारिक मेलही ।—ठा जे

मुवालिग—स० स्त्री० [ग्र० मुवालिग] १ किसी बात को बड़ा चटा कर

कहने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त प्रकार से कही जाने वाली बात ।

३ अतिशयोक्ति, अतिरजना ।

मुमई—देखो 'ममाई' (रू० भे०)

मुमकिन—वि० [ग्र० मुमकिन] १ जिसका होना संभव हो, संभव ।

२ शक्य ।

मुमानियत—स० स्त्री० [ग्र० मुमानियत] मनाहि, निर्पेध रोक ।

मुमारखी—देखो 'ममारखी' (रू० भे०)

उ०—इतरै रोसनी हुई । दामी सहेलिया आ मुमारखी दीवी ।

—जलाल खूबना री बात

मुमुक्षा—स० स्त्री० [ग्र०] मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा, कामना ।

रू० भे०—मुमुक्षुता, मुमुक्षुता, मुमुक्षा,

मुमुक्षु—स० पु० [ग्र०] वह जिसे मुमुक्षा हो, मोक्ष की कामना करने वाला

उ०—महा अर्ग्यान नोद मे सूता, मव ही जीव अभागी । जाग्या

कोई मुमुक्षु चेतन, सो सब से बड़भागी ।—स्त्री सुखरामजी महाराज

रू० भे०—मुमुक्षु मुमुक्षु,

मुमुक्षुता—देखो 'मुमुक्षा' (रू० भे०)

मुमुक्षु—देखो 'मुमुक्षु' (रू० भे०)

उ०—जीवन मुक्ति की देह मुमुक्षु जुगती ग्यान मुमुक्षु पाई ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

मुमुक्षुता, मुमुक्षा—देखो 'मुमुक्षा' (रू० भे०)

मुमुक्षु—देखो 'मुमुक्षु' (रू० भे०)

मुम्मुर—देखो 'मुरमुर' (रू० भे०)

मुरगी—वि० स्त्री०—मृदुअगी, कोमलागी ।

उ०—ए जिम मइगलीयउ वण बीझ विनोदी, जिम धन दरसण मोरा रे रविदसणियइ कोक मुरगी दरसण चद चकोरा रे ।

—साधु कोरति

मुर—स० पु० [स०] १ एक दैत्य, जो ब्रह्मा के अश से उत्पन्न तालजंघ

नामक दैत्य का पुत्र था । इसकी राजधानी चद्रवती नगरी में थी ।

इसके वध के लिये विष्णु ने योग माया देवी का निर्माण किया ।

२ एक पंचमुखी राक्षस, जो नरकासुर का सेनापति था । इसका वध श्रीकृष्ण ने किया ।

उ०—नर नाग मुरासुर जोह नथी, कथ वेद पुगण दुजारा कथी ।

मुर कीटमधु हण मिध मथी, रट रे मन राघव दामरथी—रज प्र

३ एक यवन राजा जो जरासंध का माहलिक था । इसकी कन्या

का नाम मोर्वी था जो घटोत्कच को विवाह दी ।

४ एक राक्षस जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था । इसने

शिव की तपस्या करके वर प्राप्त किया था । यह कृष्ण द्वारा मारा

गया ।

५ तीन की संख्या ।

उ०—१ इद्रहू सरस राजस अमास । प्रिय जुथ सात सें मुर पचास ।

—सू प्र.

उ०—२ कल दह पंच जाण जंकरी, दुज मुर प्रिय अतें गुरु धरी ।

भज भज सीता राघव भई, दसतिर जेता अघ हर दई ।—रज प्र

६ तीन ।

उ०—१ सरव लघु नगण आयुस द्रवण सुर मुरक, तात विध

सावित्री कनक रंग तेंण । भगु मुनि चढण गज नऊ रस मे अभग, अघ

मगध देस कुळ विप्र मुर नेंण ।—र. रू

उ०—छळ महेम मुर देम, मुम्री डीघोड महारिण । परण अकबर

घडा, चढे गज दांता तोरण ।—गु रू. व

७ वेष्टन, घेरा ।

८ मृदग ।

उ०—मतौ हालियो आगरं चक्र सज्जं, वजं वव भेरी मुरै अब बज्जे ।

छळें मेह ज्यो वेह आकास छाई, दिपं चचळा सेल धारा दिखाई ।

—व भा

अध्य०—दुवारा फिर ।

रू० भे०—मर, मुर, मूर,

मुरकी, मुरकीय—स० स्त्री० [प्रा० मुरकी] १ पुरुषों के कान में पहनने

की सोने या चादी की छोटी वाली ।

उ०—१ थोरा रे मुरकी कान धो चाईसा थोरां रे, मुरकी कान ।

ऊजळे तो मोती राणी काछथी ।—लो गी.



उ०—२ छोटा काना मे चादी री मुरकियां, कुइती तारतार  
धियोडो .. । —फुलवाडी

उ०—३ भी टियो हसती थकी ई वोल्की—मामाजी, वै तो साळिया  
थारा कान वीवती ही । सौ तोळां री साकळियां धर वीस तोळां री  
मुरकिया पैरावती ही । —फुलवाडी

२ स्थियों के नाक का एक आभूषण । (व० म०)

३ सफेद, जलेबी (मिष्ठान्न) ।

उ०—१ पछइ प्रीमी मुरकी, खाइवा जीम फुरकी, सेव भीणी,  
फगफगती फीणी, ध्रत नी धारी, स्वादम्यु आहारी, साकरस्यु रली  
—व स

उ०—२ मूक्या नव नव परि सालणा, मूक्या सरहा धी प्रति घणा ।

मूकी माडी मुरकी सेव, मूकी खोर खाड ध्रत हेव —हीराण द नूरी

उ०—३ पहिलउ नीली मूकिय मूकिय फलहलि तोह । देखीय  
मोदक मुरकीय फुरकीय जीमता जीह । —जयमेखर सूर

४ नुकती, वृदी । (मिष्ठान्न) ।

५ संगीत मे एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की एक प्रक्रिया विशेष ।

६ तीन अथवा चार स्वरों को क्षीघ्रता से गाने की क्रिया, इसका  
प्रयोग ठुमरी ठप्पा आदि मे होता है । (संगीत)

७ तलवार की मूठ के कलस मे लगने वाली कडी ।

रु० भे०—मरकी, मुरक्की,

मुरकी—स० पु०—बड़े डोल-डोल वाला हाथी जिसके दात बड़े बड़े एवं  
सुन्दर होते हैं ।

मुरक्की—देखो 'मुरकी' (रु भे)

मुरखड—स० पु०—तीन लोक ।

उ०—हारिया असुर हम हिंदुवै जम हवौ वाणीये डमो कर दाख  
धारी । थापियो मालदे तीन तेजा यिरा, थयो खड मुरखडे नाम  
धारी । —साह तेजा री गीत

मुरख—देखो 'मूरख' (रु भे)

उ०—मीरा के प्रभु गिरधरनागर, को तजि मुरख अनतहि भटकै ।  
—मीरा

मुरखाई—देखो 'मूरखाई' (रु भे)

उ०—तद रांनी धीनती कीधी "माहागज, ग्रा वात मुरखाई छै ।  
पु बिना समघा हूमा रं कहै खासो चाकर मारो पण पछतामी ।"  
—ठाकुरै साह री वात

मुरग—देखो 'मुरगी' (मह, रु भे) (मा म)

मुरगखानी—स० पु० [फा० मुर्ग+खाना] वह स्थान या कक्ष जहा मुर्ग  
रक्खे जाते हैं, पाले जाते हैं ।

मुरगवाज—स० पु० [फा० मुर्ग+वाज] मुर्गे लडा कर खेल करने वाला ।

मुरगवाजी—स० स्त्री० [फा० मुर्ग+वाजी] (१) मुर्गे लडाने की क्रिया ।  
(२) मुर्गे लडाने का खेल ।

मुरगावी, मुरगावू—म० स्त्री० [फा०] १ मुर्गे की जाति का एक पक्षी जो  
जल मे तैरता है और मछलियों का शिकार करता है, जल-मुर्गा

उ०—१ डेहरा डहकनै रहया छै । टीटोडी टहकनै रही छै । अळ  
का कुटकनै रहया छै । मुरगावी तिरनै रही छै । —रा सा. सं.

उ०—२ फळ बहु मेल मछां दुति फावी । मझि जळ मीळ तिरै  
मुरगावी । —सू प्र

२ एक प्रकार की तलवार ।

उ०—वहूँ बैर लेणै यहै सायत आई जिम सेतो जनेवू मुरगावू की  
भाट खामू झडू के बीच खेलैगे । —सू प्र.

३ हूती ।

उ०—ग्रा वात कहिनै गढनू चालिया, पातसाह री हजूर अमराव  
ममूसाह, भीर गामरु, सु हरम री खुटक नै मुरगाव्यां पगा उवाणा  
सो तोज भाई नू आपडियो धो सु आ घणी वात छै । —नैणभी

मुरगी—स० स्त्री० [फा० मुर्ग] मुर्गे का मादा, मादा-मुर्ग । यह अण्डे देती  
है ।

उ०—रोजा तीम दिनु का राखै, सारै पच निवाजा । मन अपना कु  
मारै नाही, मारै मुरगी ताजा । —स्त्री हरिश्चमदासजी महाराज

मुरगी—स० पु० [फा० मुर्ग] (स्त्री० मुर्गी) १ सिर पर लाल किलगी  
वाला एक प्रमिद्ध नर-पक्षी जो प्रभात के समय कुकड कू की  
आवाज बोलता है । कुकड पक्षी ।

पर्या०—कूकडो, फकवाक, चरणायुधक, ताम्रचूड ।

२ एक चिडिया ।

मह०—मुरग ।

मुरङ्—सं० पु०—१ एक प्रकार की ककरीली मिट्टी जो सडक जमाने व  
दीवार की चुनाई में गारे के काम आती है ।

उ०—१ कथ मुरङ् री काकरी, रतना तिका रतन । बिघना री  
रचना बडी, जिण री नको जतन । —र. हमीर

उ०—२ पख चोकणी चुट्ट, पढे हागळिया पक्का, सुद्ध पावरी  
पडी, जकी सगळी विन टक्का । मुरङ् मजै री मिळै, गांवडा निकट  
घणोरी, ल्याय मोगरी मार, छाण छोडा घर डेरी । —दसदेव ।

२ आत्म गौरव, स्वाभिमान ।

उ०—विडती जसो विसकन्या वाखाणियो । परणती कथ चो मुरङ्  
पहचाणियो । —हा. भा

३ गर्व, आभिमान, घमंड ।

४ ऐठन, झकड

उ०—घकायो राण हू मळण वण करड घज, भडां हडवड उरड  
धाव भाळी । मिट गई किमनगड नाथ वाळी मुरङ्, उरड लव  
साहिपुर नाथ आळी । —अमरसिंह सिसोदिया री गीत ।

५ झोव ।

रु० भे०—मुड, मुरड,

६ देखो 'मूड' (रु भे)

७ देखो मुड' (रु भे)

मुरङक, मुरडक—स० स्त्री०—१ मरोडने या मोडने की क्रिया या



भाव ।

उ०—मुरडवक मुडवक असघ मुडै । —पा प्र

र०भे०—मरडक,

मुरडणी, मुरडवी—क्रि०प्र० [स०] १ मुडना, वलखाना, ऐठना, घूमना ।

उ०—मटल रं प्रधानजी रो बखाना गुण'र बीन री मुरडीजती मूछां तणगी । —दमदोख

२ कुपित होना, क्रोधित होना, नाराज होना ।

उ०—१ उरड मेथ्र भाविया, मुरडि जगल घर माथै । भगि तोडा दव भडै, खडै घोडा जव खार्थै —मे म

उ०—२ माहज्यहां तिण समै जुगत त्रिय वसि चित जादा । मिळि अवरग' 'मुगदि', दविण मुरडे साहिजादा । —सू प्र

उ०—३ मूर मुरडि इम साह सू, लूटै हय जय लाह । हणि रच्छक 'द्दा' हडि, आयो वरत उद्याह । —व भा

३ विरुद्ध होना विपरीत होना ।

उ०—१ जिण राठीड कवर दूदा नू अकवर ह मुरडि आयो जाणि जिकोही आपनू अश्लव री देणहार विचारियो । —व भा

उ०—२ कवर विरडियो मुरड अमराव फिरियो सकी, एरसी वार विपमो वणी धाण । पाट चीतोड री हुवो ऊषळपयल, 'दुरग' नू सिमरियो तई दीवाण । —दुरगादास राठीड री गीत

४ पलटना, लोटना, घूमना ।

उ०—१ सीस चडतां ही पडिहार हमिया अर महाराज मुरडि चालियो तिकण रं लार । —व भा

उ०—२ अत जीतो वीतो समर, जादम पडिया जोड । लड जुड खगां वोहलै, मुरड चलै राठीड । —रा रु

५ भागना, पीछे हटना ।

उ०—वागे वरदेत कमघ बल दाखै, लोह छतीस भुजा डड लेव । राणा राबळ राव मुरडता, दोयण हटवया वीरमदेव ।

—राव वीरमदेव राठीड री गीत

६ अलग हटना, दूर होना, विलग होना ।

क्रि० म०—७ मोडना, मरोडना, वलदेना घुमाना

८ गर्व करना, घमंड करना, अभिमान करना ।

९ छीनना, भपटना ।

१० उखाडना ।

११ नष्ट करना ।

मुरडणहार, हारी (हारी), मुरडणियो — वि० ।

मुरडिप्रोडो, मुरडियोडो, मुरडघोडो — भू० का० कृ० ।

मुरडीजणी, मुरडीजयो — भाव वा० / वमं वा० ।

मुरडणी, मुरडयो — रु भे ।

मुरडियोडो—भू० का० कृ०—१ मुडा हुआ वन ग्याया हुआ, ऐंठा हुआ

२ कुपित या क्रोधित हुआ हुआ नाराज हुआ हुआ ३ विरुद्ध या

विपरीत हुआ हुआ ४ पलटा हुआ, लोटा हुआ, घूमा हुआ ५ भागा हुआ, पीछे हटा हुआ । ६ अलग हटा हुआ, दूर हुआ हुआ, विलग हुआ हुआ ७ मोडा हुआ, मरोडा हुआ, बल दिया हुआ, घुमाया हुआ ८ गर्व किया हुआ, घमंड किया हुआ, अभिमान किया हुआ ९ छीना हुआ, भपटा हुआ १० उखाडा हुआ. ११ नष्ट किया हुआ.

स्थी० ( मुरडियोडी )

मुरच—देखो 'मुरचो' (मह, रु भे)

उ०—पछै वी भागळियां रा पंरवा माथं अगूठा सू गिणतो नीची घूण करियां खोडां गिणावतो ई जावतो—खुरफाडी फाटै, एक खुरी आगे बघ जावें, एही मे मस, मुरचा कमजोर, ' ' ' —फुलवाडी

मुरचो—स०पु०—१ चरणप्रथी व पंर के मध्य का भाग ।

उ०—हाडाळो एक हाथी रं मुरचं री सांध मे खग री खलकाई जकी मुरचं री खालडी भर मास चीरने हाड जाय रडकियो ।

—फुलवाडी

२ टखना, गुल्फ ।

३ मनुष्य के हाथ और कलाई का संधि स्थल ।

४ देखो 'मोरचो' (रु भे)

उ०—गयणा गरज डबर छाथो छै, सूरिज पीछै पान सरिखो निजर आवे छै । मुरचां रा मुकामला मढाया छै । अणी मेळ हुवो छै ।

—रा सा स

मुरच्छा—देखो 'मुरच्छा' (रु भे)

मुरच्यो—देखो 'मुरचो' (रु भे)

मुरछ—देखो 'मुरछा' (रु भे)

उ०—भळाभळ भूळणा भांड भडवां विगत, पिढ रगत देखियां मुरछ पाया । जो मरदपणी छै जिसो जाणे जगत, ऐ किसे वगत में काम आया । —उदैभाण वारहट

मुरछगत, मुरछगति देखो 'मुरछागत' (रु भे)

मुग्छणी, मुरछयो—देखो 'मुग्छाणी, मुग्छावी' (रु भे)

मुरछत—देखो 'मुरछित' (रु भे)

मुरछन, मुरछना—देखो 'मुरछना' (रु भे)

उ०—गान सत मुर ग्राम मुर, अरु मुरछन यकबीस । तान कोटि गुणचामते, मुरतितव मईम । —सू प्र

मुरछल—स०पु०—१ मुच्छित, वेहोश ।

उ०—ऐमे कह गिर गिर पडै, देही मुरछल होय । वार वार किललात है, प्रभू सवारी मोय । —गजउद्धार

२ देखो 'मोरछल' (रु भे)

मुरछा—स०स्थी० [स० मूच्छा] १ किसी प्राणी के शरीर की वह अवस्था जब कुछ समय के लिये वह चेतन्य—हीन हो जाता हो, वेहोशी, मूच्छा, सज्जाहीनता ।

उ०—१ आपरो काळजी वारे नीकाळियोडी हो सो काटनें आखिया

मार्य न्हांक दीधी कारण काळजी कवळी होवै सो चील काळजी खावसी जितरै मुरछा खुलजासी ने नेत्र रह जासी इएने साम घरमी सूरवीर कहजै । —वी स टी.

उ०—१ छन मुरछा, छन चेतना सीतावरजी । कोई छन छन छीजै देह प्यारा रघुवरजी । —गी रा

उ०—३ जोवण धारी गजब छै, लोयण बाण लगाय । चो निजरथा तो सू चहै पडैम मुरछा लाय । —पना

उ०—४ सुंदरि दीठ सिंगार सोळ सभि, मुरछा आय पडै उपवन मभि । —सू प्र

२ शिथिलता, कमजोरी ।

३ प्रमाद, आलस्य ।

उ०—हुई सुभद्रा साववी, बाल मुरछा सेवी रे । गुरणी वचन नहि मानियो, हुई बहुपुतिया' देवी रे —जयवाणी

रू० भे०—मरछा, मुच्छ मुरच्छा, मुरछ, मूरच्छा, मूरछ ।

मुरछागत मुरछागति—स० स्त्री०—अचेतनावस्था, बेहोशी, मूर्छाविस्था ।

उ०—१ तठै देपाळ कही, म्हे तो मुरछागत हुईनै पचीसे ही लुटीया । —देपाळ घघ रो वात

उ०—२ वचन अनिस्ट श्रमनावणी, ओहरी लागी माय । थई अचेतन तिला समै, पही मुरछागत लाय —जयवाणी

उ०—३ एह अमगळ वत्त सुणै, मुरछागत पडियो । उदियाचळ जिम सभ निसभ, अमताचळ निडियो । —मा वचनिका

रू० भे०—मरछागत, मुरछगत, मुरछगति, मुरभागत, मूरछागत, मूरछागति ।

मुरछाणो, मुरछाबो—क्रि० अ० [स० मूर्च्छनम्] १ किसी प्राणी की सज्ञा या चेतना का किसी विशेष कारण से अस्थायी तौर पर लोप होना बेहोश होना, मूर्च्छित होना ।

२ तांत्रिक क्रिया से समाविष्ट होना ।

३ ऐन्द्र जालिक प्रभाव में आना ।

मुरछाण हार, हारो (हारी), मुरछाणियो, —वि० ।

मुरछायोडो —भू का कृ० ।

मुरछाईजणो, मुरछाईजबो —भाव वा ।

मुरछणो, मुरछबो, मूरछाणो, मूरछाबो —रू भे० ।

मुरछायोडो—भू० का० कृ०—१ चेतना या सज्ञा लोप हुवा हुमा, मूर्च्छित, बेहोश २ समाविष्ट हुवा हुमा ३ ऐन्द्रजालिक प्रभाव में आया हुमा ।

(स्त्री० मुरछायोडी)

मुरछावत—वि०—मूर्च्छित, बेहोश, अचेत ।

मुरछिन—वि० [स० मूर्च्छिन] सज्ञा हीन, चेतना हीन, बेहोश, मूर्च्छित ।

उ०—१ वन री वाता माता सब सुणी, कोई बीज लही ज्यू वेन ।

मुरछिन माता जी, सचेती सुन करी । —गी रां-

उ०—२ मुरछिन हो घरणी पडयो, बलि मूके हे मोटा निसांस की सु । —प च ची

रू० भे०—मूर्च्छित मूर्च्छित, मुरछत, मूर्च्छीयई, मूरछत, मूरछित । मुरछियोडो—देखो 'मुरछायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुरछियोडी)

मुरज, मुरजा—स० पु० [स० मुरजा] १ मृदग, पखावज ।

उ०—स्त्रीमहलबीणा, मुरज, घस्था सरस रस भीन । मधुरे सुर वाजै नहीं, परस्या विना प्रवीण । —प्रवीणसागर

२ कुवेर की पत्नी का नाम ।

मुरजाद, मुरजादा—देखो 'मरजादा' (रू भे)

उ०—१ नीचै घरती ऊगरि अवर विचिविचि मुलक बसाया । असी मुरजाद आप हरि बाधी, हुकमा काम चलाया । —रुकमणी मगळ

उ०—२ सर धनु धार समाप, मायदस भज समर मह । मह राखण मुरजाद, जादपत पव्वै तार जह । —र ज प्र

मुरजादी, मुरजादीक—वि०—मर्यादा से रहने वाला ।

मुरजित—देखो 'मुरजीत' (रू भे)

मुरजी—देखो 'मरजी' (रू भे)

मुरजीत—स० पु०—मुर नामक राक्षस पर विजय प्राप्त करने वाले, श्रीकृष्ण ।

रू० भे०—मुरजित,

मुरभणो, मुरभबो—देखो 'मुरभाणो, मुरभावो' (रू भे)

उ०—१ वैसी 'जसवत' बळी उरमयी असाध्या व्याधी, मुरभयो मुखारविद मागन मलिद को । —ऊ का

उ०—२ सूखा ने हरिया किया, मुरभया विकसाया हो । प्रेमानद पियूखरा बादळ बरसाया हो सैया । —गी रां

मुरभणहार, हारो (हारी), मुरभणियो—वि० ।

मुरभियोडो, मुरभियोडो, मुरभयोडो—भू० का० कृ० ।

मुरभोजणो, मुरभोजबो—भाव वा० ।

मुरभागत—देखो 'मुरछागत' (रू भे)

मुरभाणो, मुरभावो—क्रि० अ० [स० मूर्च्छन्] १ पेठ-पीवे या वनस्पती का कुम्हला जाना, सूखने लगना ।

उ०—१ सारी ओर मवापण्या सोदागर रा सेल । कीवा ईद्र वाई कया, बप मुरभाई बेल । —मे म

उ०—२ सत सगत सुर बाग सुकायो, मिळै कह बळियो मुरभायो । ठडो जळ नहि ठरै ठरायो, भूलै ग्यान सुणयो मन भायो ।

—ऊ. का.

२ उदास होना, म्लान होना ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैदी देवण री वेळा मुरभाई —ऊ का.

उ०—२ बाजी निमवळ किताई पुळाणा । मेळाउवां वदन मुरभाणा । —रा रू

३ श्री हीन होना, कान्ही हीन होना ।

उ०—खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणां रहै मुरभाई । —मीरां

४ निम्न होना ।

उ०—४२ दिल काठी दियो न दाटो, मन माठी मुरझाई नै । उरसू काठी आगे पटियो, आँ माठी जद आई नै ।—ऊ का

५ कुटित होना ।

उ०—फेदट फेदट श्री नम में निजगई, माखण चाखण री मनसा मुरझाई—ऊ का

६ विक्ल होना ।

उ०—तुम वीछडियां दुख पाँक जी मेरा मन माही मुरझाऊ जी ।  
—मीरां

७ उत्साह हीन होना, निराश होना ।

उ०—जद बाप ही आख्या फेखी तो पछे फूलकय किए आगं मुरझायोटी त्रिबटा री सताप प्रगट करे ।—फुलवाडी

८ निविल होना, श्रमक्त होना, क्षण प्राय होना ।

९ मुस्त होना, आलसी होना ।

उ०—ओव उरझायो मुरझायो ताकू मार मार । नाहीं मुरझायो मोज सुदर मचायो तें ।—ऊ का

१०—मूर्च्छित होना बेहोश होना ।

उ०—१ होम उडे फाटै दिथो, पडे तमाळा आय । देखै जुव तमवीर द्रग, मावडिया मुरझाय ।—वा दा

मुरझाणहार, हारो (हारी), मुरझाणियो—वि० ।

मुरझायोटी—भू० का० कृ० ।

मुरझाईजणो, मुरझाईजयो—भाव वा० ।

मुरझाणो, मुरझावो, मुरझाणो, मुरझावो, मुरझाणो, मुरझावो, मुरझाणो, मुरझावो, मुरझाणो, मुरझावो—म० म० ।

मुरझायोटी—भू० का० कृ०—१ कुम्हलाया हुआ ( पेठ पोत्रे वनस्पती )

२ उदाम या भ्रान्त हुआ हुआ ३ श्रीहीन या कान्ती हीन हुआ हुआ

हुआ ४ विन्न हुआ हुआ ५ कुटित हुआ हुआ ६ विक्ल हुआ हुआ

हुआ हुआ ७ निराश या उत्साह हीन हुआ हुआ ८ निविल, श्रमक्त या क्षण प्राय हुआ हुआ ९ मुस्त आलसी १० मूर्च्छित, बेहोश ।

(स्थी० मुरझायोटी)

मुरझावणो, मुरझावो—देखो 'मुरझाणो, मुरझावो' (रू भे)

उ०—जावक हिरण तियाया जावे, पुन नीर सुपनें नहि पावे ।

घर जियामु दिस दिम घावे, अग त्रिमणा मुर लख मुरझावे ।

—ऊ का

मुरझावणहार, हारो (हारी), मुरझावणियो—वि० ।

मुरझावियोटी, मुरझावियोटी, मुरझावियोटी—भू० का० कृ० ।

मुरझावोजणो, मुरझावोजयो—भाव वा० ।

मुरझावियोटी—देखो 'मुरझावोटी' (रू भे)

(स्थी० मुरझावियोटी)

मुरट—न० पु० [दिगज] १ एक प्रकार का घास जो कच्चे कोपडे की छान

वनाने के काम आता है ।

उ०—१ खीपा पीपा फोग, मुरट बूई वरणावे । भुगट लांपडो लुलें । गजब वेला गरणावे ।—दमदव

उ०—उठे मिगणें इयारे एक नाग आय, एक मुरट रो बूटो हुतो, तियरे ओळो दोळो हूई, अर पछ हुतो मु मूह मे झाली अर इयें भात वंठी छें ।—नैगामी

२ देखो 'मुरट' (रू भे)

मुरड—१ देखो 'मुरड' (रू भे)

२ देखो 'मुरड' (रू भे)

मुरडणो, मुरडवो—देखो 'मुरडणो, मुरडवो' (रू भे)

उ०—१ मरगडा जूह मुरडत माड, चूनी हुडत चौसट्टि हाड ।

—गु रू व

उ०—२ छूरा खग उपाडि, सीह करि साकळ छूटा, मुरडि खम मदमोव, जाण सूडाहळ जूटा ।—गु रू व

उ०—३ कवळ मद बोहोती री कामां, मुरड अति विलखाय ।

ऊरड आई देखण झली, मुरड चली मुरझाय ।—पनां

उ०—४ ज्यो मदि वहतो हाथो ब्रीख (पैड) दोय चलें । अर वळें ।

मुरड नै ऊमो रहे ।—वेनि टी

मुरडणहार, हारो (हारी), मुरडणियो—वि० ।

मुरडियोटी, मुरडियोटी, मुरडियोटी—भू० का० कृ० ।

मुरडोजणो, मुरडोजयो—भाव वा० / कर्म वा० ।

मुरडियोटी—देखो 'मुरडियोटी' (रू भे)

(स्थी० मुरडियोटी)

मुरतव—१ देखो 'मुरतव' (रू भे)

उ०—१ तिण सू वादमाहा गे मुरतव पैगवरा सू मिळतो जुळतो छें ।—नी प्र

उ०—२ जे कोई डण सू दान मान तरवार माच साल मे ऊवो नही पडवे, मुरतव रा कारण सारां मू वाध होय —नी प्र

उ०—३ मो जुलफहारखा वडे मुरतव सू गुलाहिजे रें साय महाराज नै कहे राखिया ।—पदममिह री वात

२ देखो 'मुरतव' (रू भे)

उ०—१ मुरतवां तीग नेजां मदीं, वज बहरक फरहर वजा ।

दळ हिलें एक मुरघर दिमी, समद ऊभळी जळमजा ।—सू प्र

उ०—२ मगळा हाली आगरे, होकर अभी तैयार । मुरतव संग माग रहे, करिये नाहि अवार ।—ठा राजमिध री वारता

मुरतवो—१ देखो 'मुरतव' (अल्पा रू भे)

उ०—मुरतवो हजारो हफत महि, पान ग्रहता पात्रियो । इम विदा होय मुदफअली, अजणू भूय दिम आवियो ।—गू प्र

२ देखो 'मुरतव' (अल्पा, रू भे)

मुरति, मुरतो—देखो 'मुरति' (रू भे)

उ०—जिन आ जळ तें देह घरि करि नख चप मुरति । हरिया वानुं निजरोटी, अघर एक मुरति ।—स्थी हरिरामदासजी महागज

मुरसव-वि० [अ०] १ क्रमवद्ध, सिलसिलेवार ।

२ शृंखलावद्ध, श्रेणीवद्ध, कतारवद्ध ।

३ सग्रहीत ।

४ सम्पादित ।

५ तरी युक्त, तर ।

रू० भे०—मुरसव, मुरातव, ।

अल्पा०—मुरसवौ, मुरातवौ,

मुरसि—देखो 'मुरति' (रू भे )

उ०—कडा लवग मुद्रिका मुरसि कुद नी ।—मे म

मुरद-स० पु०—१ शब्द ।

२ देखो 'मुरदौ' (मह, रू भे )

मुरदनी-वि०—म्लानता ।

उ०—वे महर गुमराह गाफिन, गोस्त खुरदनी । वेदिल वदकार आलम, हयाद मुरदनी । —दाहवाणी

मुरदाणव-स० पु०—मुर नामक दानव ।

उ०—कृमन्न इद्रजोत सारिखा हिरणाखस हिरण कासिव सारिखा, मुरदाणव महावली सारिखा । —मा वचनिका ।

मुरदार-वि० [फा० मुर्दार] १ मृतक, निष्प्राण, मृत ।

उ०—चुगली विसतारत चुगल, साप्रत होय सचेत । सो मुरदार सरीर री, लट मुख माफ़ल लेत । —बा दा

२ अपनी मौत से मरा हुआ ।

उ०—मुई मटीया मुरदार कहत है, मारी हक निवाला ।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

१ कमजोर, अशक्त, वेदम, वेजान ।

उ०—छलदार होय छानी छडे़ अमलदार मुरदार री । —ऊ का

४ डरपोक, कायर ।

उ०—मावडियो वन भाकली सो नह जाय सिकार । डोळा मिनखी सू डरे, मूमा ज्यू मुरदार । —बा दा

५ अपवित्र, नापाक ।

स० पु०—१ फोड़ा या फनी से निकलने वाली मवाद, पीव ।

मुरदासख, मुरदासिगी, मुरदासिघी, मुरदासिही—स० स्त्री०—सोसे और सिद्धर को फूक कर बनाया हुआ एक औपध ।

रू० भे०—मुहदासख मुहदासिगी, मुहदासिघी,

मुरदौ-स० पु० [फा० मुर्द ] १ प्रेत, भूत ।

उ०—मुरदे मनावै मूढ, जसोदा जणावै जापो, पिता को जनावै प्रेत खुमी खेल खोधा की । —ऊ का

२ शव, लाश ।

वि०—१ जिसके प्राण पखेळ उड़ चुके हो निष्प्राण निर्जीव मृत ।

२ मरे हुए के समान, अवमरा ।

उ०—क्यू नह लालच बम करी, वहू हाका विरदाह । व्है नह ऊची हत्यहो, मावडिया मुरदाह । —बा दा

१ अशक्त, कमजोर, दुर्बल ।

उ०—हिळता हिळता हाय, मिळी मत दुख सु भाई । मिळ मुरदा मनवार, करो मत बुरी कमाई —ऊ का

४ कुम्हलाया हुआ, मुरभाया हुआ ।

रू० भे०—मुहदौ, मुहो,

अल्पा—मुहदियौ,

मह०—मुहद ।

मुरद्धर—देखो 'मरुधर' (रू भे )

उ०—१ विदा किया तिए वार, धूत दल असुरमुरद्धर । 'अवरग' भड प्राविया, भूत गिहकव भयकर । —सू प्र

उ०—२ घरपत सीहै लयी मुरद्धर । आसपान तिल पाट उजागर । —रा रू

मुरद्धरा—देखो 'मरुधरा' (रू भे )

उ०—तद वार अस पुरसा तणी आय वणी जग ऊपरा । महाराज तणै छल मारवा, धारी लाज मुरद्धरा । —रा रू

मुरधर-स० स्त्री० [रा० मरुधर] देखो 'मुरधर भाखा'

उ०—ब्रज भाखा मुरधर विमल, प्रादि करे उच्चार । देम देम भाखा डवर, वरणू करि विमतार । —सू प्र

मुरधरभाखा मुरधरभासा-स० स्त्री० [स० मरुधर + भापा] मारवाह की भापा, मारवाही राजस्थानी ।

२ देखो 'मरुधर' (रू भे )

उ०—१ ईसाया वरती अचल अगव, मारवा राव मुरधर महगव । —ऊ का

उ०—२ पय लगी मुरधर पाय, तज दिली छल ते ताय । सुण वात कमव सुग्यान, वल मूछ घर बलवान । —रा रू

मुरधरमडण-वि०—मारवाह की शोभा बढ़ाने वाला ।

उ०—खाधा चोर तणी खेडेचा, मार्य रहत घणा दिन मोस । मुरधर मडण तुम्ह तणै अत, देतो दुरग स टळियो दोस ।

—दुरमी आहो

स० पु०—एक जेवग विशेष ।

मुरधरा—देखो 'मरुधरा' (रू भे )

उ०—१ वकसी मात राव बीका नै, धग थलवट रजवाणी । गिडमल तणी मुरधरा राखी, है साखी हिदवाणी । —मे म

उ०—२ द्रढ दत दव्वि देखत दुमार, आवत न पार दुख सिधु पार । आपकी इजाजति चहत अग, मुरधरा जान को देहु मग ।

—ऊ का

मुरधरियो—देखो 'मरुधरियो' (रू भे )

उ०—१ मन थारी मुणजै, मुरधरिया, खुम रीक्षा देवण दव खीर । —द दा

उ०—२ माणस मुरधरिया माणक सम मूगा । कोडी कोडी रा करिया स्रम सूगा । —ऊ का

मुरघा-स० स्त्री० [स० मूर्घन] १ मिर ।

२ देखो 'मरुवरा' (रू भे)

मुरनयन, मुरनयन-म० पु० [रा० मुर=१+स० नयन] तीन नयन वाले, महादेव, शिव । (ना० टि० को०)

उ०—चक्र के भी मछा मिधा दन चारणा, तरण घण महण मुरनयन छानाळ ।—उत्तरमिह हाडा रो गीत

मुरपुत्र-म० पु० [रा० मुर=३+म० पुत्र] तीन लोक ।

मुरपुत्रपत्नी, मुरपुत्रपति, मुरपुत्रपह-स० पु० [रा० मरु+स० धनिक+स० पति, +स० प्रभु] त्रिभुवन पति, तीन लोक के स्वामी, विष्णु । (ह ना मा)

मुरव्वत-स० स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ भल मनमात, इन्मानियत ।

उ०—१ कवी सो इणनु जाणे ही नही थो मो कही हे मोटा माणस आ मुरव्वत नही जो म सगळे आयोडा नू काळ किणी नू देळ अर तू मार खाव ।—नी प्र

२ लिहाज, रिश्रायत, परोपकार ।

उ०—यमन रो वादशाह घणो दान ग्रहसान मुरव्वत मे ऊठियो धो ।—नी प्र

१ शील, सकोच । ४ कृपा, अनुग्रह ।

रू० भे०—मुरीवत, मुगीवत,

मुरव्वी, मुरव्वी-वि० [अ०] १ आश्रय दाता, सरक्षक ।

२ पालन पोषण करने वाला ।

१ सहायक, मददगार ।

उ०—कायमखा कपतान से करि वातें चव्वी, सेख इनायत खान के भुज पलटण दव्वी । टेरि कुतवीखान से खुद कहा मुरव्वी, हल्ले पूठ ना फिरै कल उमकी फव्वी ।—ला रा.

४ वदण्णन रखने वाला, गोरवशाली ।

५ प्रधान, मुखिया, अग्रणी ।

उ०—१ पहु सुत दसम प्रवाळ देम वगमर घर दव्वी । वगमरिया जिण वस मरण सव प्रथम मुरव्वी ।—व भा

उ०—२ के तुम किल्ले तोरियो के मरियो मव्वी, देखो नव्वी क्या परे पर नाम तसव्वी । उस विरयो वजोर दील कू कहै कुतव्वी, जानिक सुग्गे नेन को हिरनाय मुरव्वी ।—ला रा

६ कृपा या दया करने वाला ।

रू० भे०—मुरव्वी,

मुरव्वी-म० पु० [अ० मुरव्वी] १ अच्छे फल, सेव, आश्रय, बेल आदि में चीनी की चासनी मिला कर बनाया जाने वाला पाक ।

२ दृषि भूमि का एक माप । ३ उक्त माप का घेत ।

४ वर्गानार, चौगुटा, समचौरस ।

मुरमवण-स० पु० [रा० मुर+म० भुवन] तीन-लोक, त्रिलोकी ।

उ०—१ गहवगां जण जण अण गण मुरमवण कण लगण मण संकाळ घुजिय लक ।—र. रू

उ०—२ टाकी दूमर टाण, गुग्गु खिख उग्ग मालिया । आता वे मुरनयन मे, राज करे अमुराण —मा वचनिका

मुरमवणपति-स० पु०—त्रिलोकी के स्वामी, विष्णु ।

उ०—सुज असुरा सग्राम, किया नह पोंहवां कंद । काई न राखी ठकुगं, मुरमवण-पति माम ।—मा वचनिका

मुरभूम—देखो 'मरुधरा'

उ०—मुरभूम पाठ पिगळ मता, साहित वीदग सारने । कहं मछ भला रूपक कगी, ए दस दोख निवारने ।—र. रू

मुरभूमभाखा, मुरभूमभासा—देखो 'मुरधरभासा'

उ०—कह मछ लोरघुनाथ रूपक पढ़े जो नर प्रीत सू ।

मुरभूमभाखा तणो मारग रमें आछी रीत सू ।—र. रू

मुरमडळ, मुरमडळ-म० पु०—मागवाड ।

उ०—देमि मुरमडळे नयर विक्रम पुरे, जमो वरदनु जगि जाखोठ ए ।—कवि भत्तउ

मुरमरदन-स० पु० [स० मुर+मर्दन] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले, श्रीकृष्ण ।

२ विष्णु ।

मुरमुर-स० पु० [स०] १ कामदेव, मदन ।

२ सूर्य के रथ के घोड़े ।

३ अग्निकण, चिनगारी ।

रू० भे०—मुमुर,

मुरमुरया, मुरमुगिया-स० स्त्री०—वेमन की नमकीन वूदी ।

उ०—सात रुपिया रा पकवान मुरमुरिया आदि हुता तिण में १६ जणा चूकाया गया ।—भि. द्र

मुरराघवेम-स० पु०—१ श्रीकृष्ण, मुरारि ।

२ विष्णु ।

मुररिप, मुररिपु-स० पु० [स० मुर+रिपु] १ श्री कृष्ण ।

२ विष्णु ।

मुरळिका, मुरळिया—देखो 'मुरळी' (प्रत्या, रू भे)

उ०—१ पोख हित वेल गावो चरित पेमरा, मुरळिका सुगावो घोख मांही ।—वा. दा

उ०—२ नेम घरम कोन कोनो मुरळिया कोन तिहारें पासु री ।—मीरां

मुरळी, मुरळी-स० पु० [म०] वाम या किमी धातु की तनिका पर छेद कर के बनाया हुआ बाजा जिसे मुह मे फूक मार कर बजाया जाता है, वामुरी, वशी ।

उ०—१ सख चक्र गदा पद्म विराजें, माधुरी मुरळी किसोर । मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, कुडळ की छवि मोर —मीरां

उ०—२ पयिक जाय मधुरा कहे जादवा पती नू आपरा मिळण कू वात उरली । आय गोकळ मही लेर सुर अनोखा, मया कर सुणावो फेर मुरळी ।—वा. दा

मुरळीधर-स० पु०—१ श्री कृष्ण ।

उ०—१ पुनमोत्तम पूरण प्रभू गवध गिरधर रूप । मुरळीधर मोहण मुकंद, मजले त्रिभुवण भूप ।—ह. र

उ०—२ गाव रो पक्की जो'डो, मुरळीधर रो मिदर, जकारो

कारी-कुटकी ही नो हूँ, इया रै दादेसा रा जस थम है।

—दसदोख

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह नां मां)

रु० भे०—घरमुगळी,

मुरलीमनोहर-स० पु०—श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (रु भे०)

उ०—सेहर खास में ठाकुरजी श्रीमुरलीमनोहरजी रौ मिंदर करायो। —नैएसी

मुरलीवाळी-स० पु०—श्रीकृष्ण।

मुरलोक-स० पु० [राज० मुर=तीन + स० लोक] त्रिभुवन, त्रिलोकी, तीनो लोक

उ०—१ भेटे मुरलोक पंठो जळ माह। तठे इक अह निपायो ताह। —ह र

उ०—२ सुत गज-वव आदि तो सुजडी मोहियो-वसु सवै मुरलोक। अमपत इण अजमति इचरजियो, एक देह अरि पाहै अनेक।

—गुरु रु व

रु० भे०—मुरलोक, मुरलोक,

मुरलोकगत-स० स्त्री०—एक देव जाति। (अ मा)

मुरलोकनरेस-स० पु०—त्रिभुवन पति, विष्णु।

मुरलोचन, मुरलोयण-स० पु० [राज० मुर=तीन + स० लोचन] महादेव, शिव।

मुरलोयो-स० पु०—तीन लोक।

उ०—हगि चाहै सुज हूऐ, लेख साहै मुरलोयो। भूमदळ भोगवै, करम प्राचीन मकोयी। —रा रु

मुरली—देखो 'मोर' (अल्पा, रु भे०)

उ०—प्यारा लागे पपीहरा, मुरला करै मलहार। कुहकै रहि रहि कोयली, भूल भवर भकार। —अज्ञात

मुरबा-स० स्त्री० [स० मोर्वी] एक प्रकार की घास, जिसकी धनुष की प्रत्यचा बनती थी।

मुरवि, मुरवो-स० पु० [स० मोर्वी] धनुष की डोरी, प्रत्यङ्गवा।

२ एक शस्त्र विशेष, आयुध।

उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्धमुरवि परसु पास प्रमुख ३६ सटत्रिसट्टाधुवानि। —व स

३ मुरवा घास।

मुरवरी-स० पु० मुर नामक दैत्य के शत्रु श्रीकृष्ण, विष्णु।

मुरवो—देखो 'मोर' (अल्पा, रु भे०)

उ०—१ कैंसी लगै सुवावणो घरवा घरवां कत जल भुरवा, मुरवा करै, मुरवा गण महमंत। —अज्ञात

उ०—२ कोयल बोल बोलती हैं मधुरे। मुरवा की नाई चलत वारी बैन। —रसील राज रा गीत

२ देखो 'मरवी' (रु भे०)

मुरव्वी—देखो 'मुरव्वी' (रु भे०)

मुरसडी—देखो 'मुस्टड' (रु भे०)

उ०—दाता दे वित दांन मोज मांणै मुरसडा —ऊ. का

मुरसथळ—१ देखो 'मरस्थल' (रु भे०)

२ देखो 'मुरस्थल' (रु भे०)

मुरसद—देखो 'मुरसिद' (रु भे०)

उ०—१ पढ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महंत पुरस माचदा है। —ऊ. का.

उ०—२ पीर मुरसव एक आसण, अरस परसै दोय। जन हरीदास पीव सू ख्याल परगट, सहज सिजदा होय। —ह पु वा

मुरसल—देखो 'मुरसिल' (रु भे०) (मा म)

उ०—सहनाय मुरसला रग सवाद। नववती घोर मगळीक नाद। —सू. प्र

मुरसिद-स० पु० [अ० मुशिद] १ गुरु, आचार्य।

२ भुसलमानो का धर्म गुरु, पीर।

३ आध्यात्म वाद का उपदेश देने वाला।

४ पथ प्रदर्शक, मार्ग दर्शक।

५ उस्ताद।

६ घुर्त, चालाक। (व्यग)

रु० भे०—मुरमद,

मुरसिल-स० पु० [अ० मुसिल] १ घोड़े पर नगारा रख कर बजाने वाला व्यक्ति।

२ एक वाद्य विशेष।

३ भेजने वाला, प्रेषण करने, वाला, प्रेषक।

रु० भे०—मुरसल

मुरस्थळ, मुरस्थळी-स० पु० [स० मरु+स्थल] १ मारवाड प्रदेश।

उ०—मांगिक्यदंडर हस्ती, खूरसांणित घोडर, मुरस्थली नउ उट दहाहिनठ बलद। —व स.

२ देखो 'मरस्थळ' (रु भे०)

रु० भे०—मुरसथळ,

मुरहरी, मुरहारी-स० पु० [स० मुर+हारिन्] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले श्री कृष्ण, विष्णु।

२ एक प्रकार का घोडा।

उ०—जिलहरी आवनूसी जमद। मुरहरी हरी सेलीसमद।

—सू. प्र

मुरहेल—हेल मच्छी का तेल।

उ०—लूण कपूर समान थिक, अन सोवन सम भाग। तेल ययो मुरहेल सम, हय सुहवा थयु भाग। —गुरु रु व

मुराई-स० स्त्री०—मसूहा।

उ०—पण वोखें मू डें मोतियां री स्वाद दोरी ई लिरिजैला।

मुरायां सू चिबळ आखा रा आखा गिटूला। —कुलवाडी

रु० भे०—मोराई, माराई, मुहराई,

अल्पा०—मुरायली, मुराली,

मुराडी-स० स्त्री०—१ भूतो द्वारा प्रज्वलित अग्नि, श्मशान की अग्नि, भाग।



उ०—१ दून रा उमाडा कर दात । भून रा मुराडा तणइ भात ।  
हुव जेठ नावडा दुमह होम, वावडा भगारां चिनख घोम ।

—वि सं

उ०—२ वरिया वराडा पाठ वावांगुजै, जाणुजै मुराडा भूत जेहो ।  
—महाराणा भीमसिंह रं भाला री गीत

२ अग्नि, भाग ।

उ०—१ तोपां ताट मुराडा ताउघ आवध वरिखा परं उरै । तणि  
वळिराव आज रा तो खिरि, घाव वहा नीमाण घुरै ।

—सुमराज गौड री गीत

उ०—२ उयापे दळो ऊमेद थापे यळा, सवाडा पवाडा भाग साथै ।  
प्राणि बूदो घरा नियता ऊपडो, मुराडा भडै आमेर माथै ।

—दुरजणमाळ हाडा री गीत

१ अग्नि की ज्वाला ।

४ जलती हुई लकड़ी ।

५ सूरत, शकल ।

मुरादो—स० पु०—१ अग्नि की ज्वाला ।

उ०—दुरजणमाळ नाम ही ज्यां दुरजन कू मल्लै । भाटी वीर  
आवाडे में मुराडे से मल्लै । —रा रु

२ दाह क्रिया में चिता जलाने के लिये जलाया जाने वाला घास  
का पूवाल ।

३ घास आदि का पूवाल ।

उ०—जिका वात जगमाल रं किरणक घाती कान । आग वळती  
ऊपरा, कियो मुरादो तान । वी मा

४ सूखे काटों का ढेर या समूह जो जलाने के काम आता है ।

वि०—१ श्लोघ युक्त, कुपित ।

२ भणनक, डरावना ।

३ प्रचट ।

४ सूख, सूख ।

मुरातव—१ देखो 'मरातव' (रु भे)

उ०—१ वजीर खानमामां बगभी अपने अपने मुरातव के पाये  
पर छक पूर छाजे । —सू प्र

उ०—२ अपछरा म्हारी बरोबर मुरातव वयो कर लहै छै ।

—प्रतापसिंह म्हाकर्मविघ री वात

२ देखो 'मुरातव' (रु भे)

मुरातवो—१ देखो 'मरातव' (प्रत्ता, रु भे)

उ०—तद जलान वोनियो—चाकरी सूव करावो पण वादसाहा ने  
अमन-दम्तर दुस्त वरियो चाहो तो म्हारे मुरातव माफक  
मनमव देयो । —जलाल बूबना री वात

२ देखो 'मुरातव' (अत्पा, रु भे)

मुरातव्य—वि०—नुमजित, गजा हुआ, गृ गारा हुआ ।

उ०—घोषी रूप में अशुद्ध, तूनी वीयो मुरातव्य । सामी आगळी  
सिगार, आंगीयो लूण कतारै । —गु रु वं

मुराद—स० स्त्री० [प्र०] १ वह प्रवल इच्छा जिमको पूरी करने के  
लिये मन हर वक्त लालायित रहता है, तमन्ना, लालसा ।

उ०—१ माग, थारी इच्छा व्ही सो माग । आज री इण खुमी  
वास्ते म्हे थारी मनजागी मुराद पूरी कर सकू । —फुलवाडी

उ०—२ वडो ईद री पैली रात, दोनवां राखियां सू काढी, आप  
आप री मुराद वाढी । —दमदोख

२ इच्छा कामना, वांछा, आकांक्षा ।

उ०—हरीया भोजन जीमीयं ऐसा आवं स्वाद । इन तन का सारा  
नही, मनमा इसी मुराद । —लीहरिरामदासजी महाराज

३ उमग ।

४ अभिप्राय आशय मतलब, प्रयोजन ।

उ०—मीठा स्वभाव नं मिलता स्वभावा सू मुराद, तत भला  
स्वभाव खलक सू । —नी प्र

रु० भे०—मुराद, मुरादि, मुरादी,

मुरादा—१ देखो 'मरजाद' (रु भे)

उ०—आप मुरादा आप री, असमर जीते आण । थाणां मुरभवणा  
थपे, छत्र एक मेछाण । —मा. वचनिका

२ देखो 'मुराद' (रु भे)

मुरादि, मुरादी—वि० [प्र०] १ जिसके कोई मुराद हो, इच्छा या  
तमन्ना रखने वाला ।

२ आशययुक्त मतलबी ।

३ देखो 'मुराद' (रु भे)

मुराफो—स० पु० [अ० मुगफऊ] शरील ।

मुरायली, मुरायली—स० स्त्री०—१ एक प्रकार की कटीली झाड़ी,  
जिसकी टहनियां नमक बनाने के खड्डों में डाली जाती है ।

रु० भे०—मुराळी,

२ देखो 'मुराई' (अत्पा, रु भे)

मुरार—देखो 'मुरारि' (रु भे) (अ मा)

उ०—१ बूठा दूया वादळा, तूठा देव मुरार । जेहल आज  
जुहारिया, काछ नरेस कुवार । —बा दा

उ०—२ नमी ध्रम-देह विसमर धार, नमी धर व्यापिय सोय  
मुरार । —ह र

मुरारमाळी—स० पु०—मालियो की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

मुरारि, मुरारी—म० पु० [स० मुग्ग+अरि] १ मुर नाम क दैत्य को मारने  
वाले, श्रीकृष्ण ।

उ०—गिणता गिणता घम गइ रेखा, आगरिया की सारी, अजहू  
नहिं आये मुरारी । —मीरां

२ विष्णु ।

उ०—सत पैहळाद तणी सुणी साहुळि, कर फुरळै हिरणाखस  
काहुळि । आहि कन्हि ली बारण गिरवारी, माखं दोहू तै हींज  
मुरारी । —मा वचनिका

३ परमेश्वर, ईश्वर । (अ. मा., ह नां मा)



रु० भे०—मुरार,  
 मुराळ-स० स्त्री०—१ दुम, पूछ ।  
 २ देखो 'मुराळ' (रु. भे ) (हि को )  
 उ०—तिरगुण अनात्म माया त्यागी, चेतन सत मुराळ । तुरीये  
 भातम सत सदाई निज स्वरूप अकाळ ।—स्त्रीमुखरामजी महाराज  
 मुराळी—१ देखो 'मुराळ' (स्त्री )  
 उ०—भद्र जाती चुण सीस मोती स्त्रोण पका भळें । खात मोती  
 मुराळी नसका चुण खूद ।—वद्रीदास विडियो  
 २ देखो 'मुराई' (अल्पा , रु भे )  
 ३ देखो 'मुरायली' (रु भे )  
 मुरिखी—देखो 'मुरख' (अल्पा रु भे )  
 मुरिति, मुरिती—देखो 'मुरति' (रु भे )  
 मुरी—देखो 'मोरी' (रु भे )  
 मुरीद-स० पु० [अ०] १ चेला, शिष्य ।  
 २ अनुयायी, अनुगामी ।  
 उ०—सुरतांन तारकीन कुतुब साहिव दोनू मुरीद खाजा मुईनउद्दीन  
 रा ।—वां दा ख्यात  
 मुर—देखो 'मुर' (रु भे )  
 मुरलोक, मुरलोक—देखो 'मुरलोक' (रु भे )  
 मुरेठी—देखो 'मुलेठी' (रु भे )  
 मुरेठी-स० पु०—१ साफा ।  
 २ पगडी ।  
 मुरलो—देखो 'मोर' (अल्पा , रु भे )  
 उ०—आई आई सावण तीज, मुरला बोल्या नें'रा हूगरां जी ।  
 —रसीलराज रा गीत  
 मुरंही—देखो 'मुलेठी' (रु, भे )  
 मुरोवत, मुरोवत—देखो 'मुरवत' (रु भे )  
 मुळ-अव्य०—१ विलकुल ।  
 २ एकदम ।  
 उ०—वीरमदे दूदावत नें राव मालदे मुळ हीज नाही विरोध हूवौ ।  
 —राव मालदेव री वात  
 १ कतई ।  
 ४ तनिक भी, थोडा भी, रचमात्र ।  
 उ०—जळ माहे वळ आह री वारें मुळ लग नाहि । वारें वळ  
 गजराज री, मुळ नाही जळ माहि ।—गज रद्धार  
 ५ अगरे, मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन ।  
 ६ अन्तत ।  
 ७ मूलत  
 मुळक-स० स्त्री० [स० पुलक] मुस्कराने की क्रिया या भाव, मदहास्य,  
 पुलक ।  
 उ०—१ लवखू बोली म्हारी देह रा इण रुप अर होठा री इण  
 मुळक रें विणसिया म्हें इण नांव री काई करुला ।—फुलवाडी

उ०—२ जळ जळी आख्या अर होठा मायें मुळक रें सागें वें एक  
 दूजा सू विछडघा ।—फुलवाडी  
 रु० भे०—मुळकी, मुळकी, मुळिक, मुळक,  
 मुलक-स० पु० [अ० मुलक] १ कोई बडा देश, राष्ट्र ।  
 ( अ मा , ह. नां मा. )  
 उ०—१ मालिक कावुल मुलक रो, कमरौ साजि कटक्क । जग  
 करण बप जेत हू, आयौ लाधि अटक्क ।—मे म  
 उ०—२ प्रभुता देवी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल । पुण्य विना  
 किम पामीयें, एल मुलक ए माल ।—वि. कु  
 उ०—३ नाग रा भाग पोवै निलज भांक आग चख मे भडें ।  
 अगरेज मुलक दावण अडें, ए जूवा सू आथडें ।—ऊ का  
 उ०—४ म्हें मगळा मुलकां री घरती विना देख्या ई ओळखू हू ।  
 माळी रौ वेटी हू, धूळ अर वूटी देखने घरती री ठा पटकू ।  
 —फुलवाडी  
 २ रियासत, प्रान्त, सूबा प्रदेश ।  
 उ०—१ दक्खण में साह रें तथा इण रा तीजा कुपुत्र रें  
 साथ केही जुद्ध जीति केही पुर दुरग दावि पचहत्तर लाख  
 ७५००००० री मुलक दावि दिल्ली हेठें पटकियो —व भा  
 उ०—२ धारे मुलक मे भक्ति नही छै, लोग वसै सब कूढी ।  
 —मीरा  
 उ०—३ आगला सूराचदां नै परा काढीया सू आगे तो पारकर  
 मुलक में गया था नै हमार थळ रा गावा मे गगासर नै गगासर रा  
 गावां में बैठा है ।—नैणसी  
 उ०—४ कांघळजी हिसार री मुलक मारियो ती पर सारगखान  
 पठान आयौ ।—नापै साखले री वारता  
 मुहा०—मुलक मारणी—किसी प्रदेश या क्षेत्र अथवा रियासत पर  
 कब्जा करना, कोई देश विजय करना, लूटना ।  
 १ ससार, दुनिया, विश्व ।  
 उ०—१ चोई कर चाळोह, लूटै भाळी लोक नें । कद हुसी काळोह,  
 मुनस्या वाळी मुलक सु ।—ऊ का  
 उ०—२ मुलकां चावी गवाडी ही । माया अर भिनख दोना रा  
 थाट हा ।—फुलवाडी  
 मुह०—मुलका चावी=विश्व विश्वात, जग प्रसिद्ध, लब्ध-प्रति  
 ष्ठित ।  
 ४ कोई भू-भाग, क्षेत्र ।  
 उ०—काळ पहियोडा मुलक में वरसात व्हेणा सू लोग जितरा  
 राजी व्हे, हळदी वाई नें देखनै उता ई राजी व्हिया ।—फुलवाडी  
 ५ जन्म भूमि, वतन ।  
 ६ जनता, समाज ।  
 ७ विदेश, परदेश ।  
 उ०—ऐडो रुपाळी मोटयार छोडनै म्हें कठे मुलकां में रोवता फिरा  
 —फुलवाडी

८० भे०—मुलक, मुलिक, मुलुक, मुलक,

मुलकगिरी, मुलकगोरी—स० स्त्री० [अ० मुत्क + फा० गीरी] देशों को जीतना, देश विजय ।

उ०—उठा सू कुवर मुलकगिरी नै असवार हुवा । मुलक घूमिया, सारा रम किया । मुलक दोय तीन दजा नया बसाया ।

—पलक दरियाव रो वात

२ तूट-पाट, टकेनी ।

उ०—जे रामनिह मेडते जाय दाविल हुवो तद फेर मुलक माही मुलकगोरी कीधी ।—मारवाड रा भ्रमरावा रो वारता

३ देशाटन, भ्रमण, यात्रा ।

८० भे०—मुलकगोरी ।

मुलकण-स० स्त्री०—१ मुस्कराने या हमने की क्रिया या भाव ।

२ मद हास्य, हसी ।

उ०—छकी हीरा मदन छकि, वण वुय सदन बीमेख । चद वदन मुलकण दमक, रदन तडत की रेख । —वगमीराम प्रीहित रो वात

मुलकणी मुलकवो—क्रि० अ० [स० पुलकनम] १ मद मद हमना, मुस्कराना ।

उ०—१ मन्नि वरलावो फिरि गई, प्री मिलियत एकत । मुलकत दोलउ चमकियत बीजल विवी क दत । —ढो मा

उ०—२ दमण निपाप करिस दामोदर, आणद तूभ हमै गिरवर-घर । अहर निपाप करिम अघ वारण । मुलक तूभ प्रेम मधु मारण ।

—हर

२ हसना ।

उ०—१ चरचोर्य चडी खळा खडी मुदत मडी मुलकती । भजिय भवानो जगत जानी प्री राज राणी भगवत्ती ।—मा वचनिका

उ०—२ चोजा चटकाळा गुरु गटकाळा, मटकाळा मुलकवा है । माया हद मसल्ले अं कद अमल्ले घमल्ले जद धूजदा है ।—ऊ का

३ मुदित होना, हलमना, चाव आना ।

उ०—मेंदी देऊ मुलक मेल सू करदै मोली । दोवाली रे दिवम दिया में ऊठे होली ।—ऊ का

४ प्रमत्त होना, सुय होना, पुलकित होना ।

उ०—एकनो वंठी फूसी कलप-कुट्टे । वठे मारजा हरिजण वालवा में रोऊ मुलक ।—दमदेव

मुलकणहार, हागे (हारी), मुलकणियो—वि०

मुलकियोडी, मुलकियोडी, मुलकयोडी—भू० का० कृ० ।

मुलकीजणी, मुलकीजवो—भाव वा० ।

मुलकणी, मुलकवो—८० भे० ।

मुलकाणी, मुलकावो—क्रि० स० [ 'मुलकणी' क्रि० का० प्रे० ८० ]

१ हमने या मुस्कराने के लिय प्रेरित करना ।

२ प्रमत्त करना खुश करना ।

३ हमना, मनोरजन करना ।

मुलकाणहार, हागे (हारी), मुलकाणियो—वि० ।

मुलकायोडी—भू का कृ० ।

मुलकाईजणी, मुलकाईजवो—कर्म वा० ।

मुलकायोडी—भू का कृ०—१ हमने या मुस्कराने के लिये प्रेरित किया हुआ २ प्रसन्न व खुश किया हुआ ३ हमारा हुआ ।

(स्त्री मुलकायोडी)

मुलकियोडी—भू का कृ०—१ मद मद हसा हुआ, मुस्काया हुआ २ हसा हुआ ३ मुदित हुआ हुआ, हलसा हुआ ४ प्रसन्न, खुश व पुलकित हुआ हुआ ।

(स्त्री मुलकियोडी)

मुलकी—देखो 'मुलक' (रू भे)

मुलकी—देखो 'मुलकी' (रू भे)

मुलकी—देखो 'मुलक'

उ०—म्हारी हुती ने म्हे ई लाई, वैन हुती ने मौक कहाई । सामी वंठी सुरमो सारै, माखो नड आ मुलकी मारै ।—अज्ञात

मुलक—देखो 'मुलक' (रू भे)

मुलक—देखो 'मुलक' (रू भे)

उ०—वाजप्रे सुर जैत रौ, डावो चील किलक । आभ पडता थभ पर, थई मलाह मुलक ।—रा रू

मुलकणी, मुलकवो—देखो 'मुलकणी, मुलकवो' (रू भे)

उ०—सुदर सोल सिंगार सजि, गई मरोवर-पाळ । चद मुलकण्यज जळ हस्यत, जळहर कपी पाळ ।—ढो मा

मुलकणहार, हागे (हारी), मुलकणियो—वि० ।

मुलकियोडी, मुलकियोडी मुलकयोडी—भू का कृ० ।

मुलकीजणी, मुलकीजवो,—भाव वा० ।

मुलकियोडी—देखो 'मुलकियोडी' (रू भे)

(स्त्री मुलकियोडी)

मुलकया—देखो 'मुलक' (रू भे.)

उ०—निलजी कैरव नार, कै ऊभी मुलकया करै । आसी कुटुव उधार, देणा सो लेणा दुरस ।—रामनाथ कवियो

मुलगुळ—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—साथे हिंदू मुसलमाण, हिंदुमथान खिडे खुरसाण । मुलगुळ ऊज्वकि खुरसाणी, वोले जेम विहगम धाणी ।—गु रू व

मुलगी—वि० [म मूल] (स्त्री मुलगी) १ पूर्णतया ।

उ०—१ पण श्री डकरेल चोर तो वाडी रो सोभा रौ जाणै मुलगी मठ ई मार दियो ।—फुलवाडी

उ०—२ भारा उखणता-उखणता सगळी माथी जिए दिन मुलगी ई विण जावैला उण दिन इण रो अकल ठाणै आवैला ।

—फुलवाडी

उ०—३ एक वटेनी कह्यो—जायने चौवरी ने पाल, नीतर श्री तो अठा सू अपारो मुलगी पावो ई काट न्हाकैला । फुलवाडी २ वित्कुल ।

उ०—१ सेठ वाद करता बोल्या—ये राजी व्ही भलाई बेराजी व्ही । म्है तो मुळगो ई पांतरग्यो के फेरा कीकर खाया हा ।

—फुलवाढी

उ०—२ आ कालाई तो वरसा ताई जूना मारिया ई ठाणै नी आवै, इण वास्तै म्है तो मुळगी ई माठ झाल ली ।—फुलवाढी

३ तनिक भी, किंचित मात्र भी ।

उ०—१ म्हनै तो नी खुदा माथै भरोसी है अर नी भगवान् माथै मुळगो ई विस्वास है ।—फुलवाढी

उ०—२ आ हीरा-मोत्या रो म्हनै मुळगो ई चाव नी है ।

—फुलवाढी

४ मुख्य, मूल, व असल ।

रु०भे०—मुळकौ, मुळी, मूळकौ, मूलकौ, मूलगड, मूलगड, मूलगु, मूलगू, मूळगो, मूलगो, मूलागो

मुलजिम-वि० [प्र० मुलजम] १ जिस पर कोई इल्जाम या अभियोग लगाया गया हो, अभियोगी, अभियुक्त ।

मुळगो, मुळवो—क्रि०प्र०—१ नटना, इत्कार करना ।

उ०—जो न भाण ऊगमै, जो नवि वासग घर झलै, राम वांण न ग्रहै, करण पारथ्यो जु मुळै । ब्रह्मा छोडै वेद, पवन जा रहै पुळतौ, चंद सूर ना वहै, रहै किम अमी भरती । पमार नाकारो ना करै, मेर-समी जाको हियो, ककांळी कीरति करै, सीस दान जगदे दियो ।

—जगदेव पवार री वात

२ मुकरना, पलटना ।

मुळणहार, हारो (हारो) मुळणियो—वि० ।

मुळिप्रोडो, मुळियोडो, मुळयोडो—भू०का०कृ० ।

मुळीजणो, मुळीजवो—भाव वा० ।

मुळतवी, मुलतवो—देखो 'मुलतवी' (रु भे)

मुळताण, मुलताण—स०पु०—पश्चिमी पंजाब या वर्तमान पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर ।

रु०भे०—मुलतान, मुलताणी, मुलतान मुलतानी, मूलथाण

मुळतांणी, मुलताणी—वि०—मुलताल का, मुलतान सम्बन्धी ।

उ०—मुळतांणी घर मन वसी, सुहगा नइ सेलार । हिरणाखी हसि नइ कहइ, आणउ हेडि तुवार ।—ढो मा

स०पु०—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—१ सुणि सुदरि साहिव कहें, याछे रेणइ सिवाय । कचु मुलतांणी तणी पेहरयो सोहत खुसि ।—व स

उ०—२ मुलतांणी ताखी मछोपटण तासतो ।—व स

स०स्त्री०—२ हल्के-पीले रंग की एक अत्यन्त कोमल एवं चिकनी मिट्टी जिसे श्रीरतें सिर घौने के काम में लेती हैं ।

३ मूलतान का निवासी ।

४ एक रागिनी विशेष । (सगीत)

रु०भे०—मुलतानी,

देखो 'मुळताण' (रु भे)

उ०—जालधर कसमीर सिव सोरठ खुरसाणी, ओडीसा कनवज नगर घट्टा मुळताणी । कुकुण न केदार दीप सिधळ मालेरी, द्रावड मावड देस, आण तिलगाणह फेरी ।—नैणसी

मुलतान—देखो 'मुळताण' (रु भे)

मुलतानी—१ देखो 'मुळताणी' (रु भे)

उ०—१ कोस ४ रीत हर कूण उत्तर रं मावै । जाट वाणीया मुलतानी वसै । वधी गाव में छै ।—नैणसी

उ०—२ खासी दुकडो जाममाइ मुलतानी तपाइ सालु मुगीपटण ताखी सीसाप तासतो चुनडी चोरसी लाखारस दुदामी जामावाड कचीयो ।—व स

उ०—१ जलाजी मारु, छींटा मांयली छोट भली मुलतानी हो मिरगानैणी रा जलाल ।—लो गी

२ देखो 'मुळताण' (रु भे)

मुलतानी लुहार—स०पु०—लुहारो की एक शाखा ।

मुळमुळच—देखो 'मलमुलच' (रु भे) (ह ना मा)

मुलमुल—देखो 'मलमल' (रु भे)

उ०—मुलमुल मुहुगा मोल की, ताकी वागो कीन । सुंदर आवी सामहि पीउ कोंडि कर लीण ।—व स

मुळमुळायो, मुळमुळायो—क्रि०स०—१ फेरना ।

उ०—वो जीभ मुळमुळायनै आपरो लोई चाखियो ।—फुलवाढी

२ हिलाना ।  
उ०—भाणजी बीच मे बोलण सारु होठ मुळमुळायो ई हा के मासी उणनै ढावती कैवण लागी—थू धोरप सू म्हारी सगळी वाता सुग वेटी ।—फुलवाढी

३ मुह मे डाल, कर हिलाना—फिराना ।

मुळमुळणहार, हारो (हारो), मुळमुळणियो—वि ।

मुळमुळायोडो—भू का कृ ।

मुळमुळईजणो, मुळमुळईजवो—कर्म वा ।

मळमळायो, मळमळायो, मुळमुळायणी, मुळमुळायवो—रु भे ।

मुळमुळायोडो—भू०का०कृ०—१ फेरा हुआ २ हिलाया हुआ ३ मुह में डालकर हिलाया व फिराया हुआ ।

(स्त्री मुळमुळायोडी)

मुळमुळायणी, मुळमुळायवो—देखो 'मुळमुळायो मुळमुळायो' (रु भे)

उ०—१ हाचळ मुळमुळायतो वाळक केई वेळा आख्या री जोत रं मारग पाखी जच्चा रं हिवडा मे समाय जातो ।—फुलवाढी

उ०—२ हाचळ मुळमुळायतो ई वाळक रं होठां अर मूहा सु ऐडी ठा पडतो के उणनै मासी विचं मा रो दूव तो अवस सखरी लागे ।

—फुलवाढी

मुळमुळायियोडो—देखो 'मुळमुळायोडो' (रु भे)

(स्त्री मुळमुळायियोडी)

मुलम्मा—स०पु० [प्र० मुलम्मा] सोने या चांदी आदि की कलाई, भौल निकल ।

मुलवारी—एक प्रकार-का घोड़ा ।

उ०—रमहरी हुमेना बाद राति, जिण अरव माहि वळि नोव जाति । खवागे उतन खवार खेत, लख लख मुलवारी मोल लेन ।

—सू प्र

मुला—देखो 'मुला' (रू भे)

उ०—१ मौनवी फराई अरज काजी मला, पाडजै देवहर दळा कर पेन । मेच्छ पांचे जिकी हिंद डळ्ळीम मज्ज, खडौ राजा जितें वर्ण नह लेन ।—नरहरदाम वारहठ

मुलाकात—म० म्थी० [अ०] १ दो या दो मे अविक व्यक्तियों का होने वाला परस्पर मिलन भेंट, मातात्कार ।

उ०—१ जीव निरजीव गी मुलाकात ! मौत मंगी री घात । फराग री टोळी रा दवण अर वाखड-वाडेत चेत्या, चमक्या तथा चट दणुं मोके जा पूया ।—दमदोव

उ०—२ मारग मे काचा आदमिया री वातां नही सुगी, पिता री आया प्रनू री आज्ञा ज्यू जांग कूच दर कूच आय वादमाह मनामत सू मुलाकात कीवी ।—नी प्र.

२ जान-पहचान, परिचय ।

उ०—आपर पेता मामै टकरांगी री प्रीत री मगळी खाती उघाड नै मुणाय दिपो के वीकर चाकरी चढता ठाकर सू मुलाकात वही ।

—फुलवाडी

३ प्रेम-व्यवहार, मैत्री ।

४ महशान, रतिखोडा, भेयुन ।

रू० भे०—मुलाकात,

मुलाकाती—वि०—१ मुलाकात करने वाला, जिसमे जान-पहचान हो ।

२ परिचित ।

३ प्रेमी, मित्र ।

रू० भे०—मुलाकाती

मुलापात—देखो 'मुलाकात' (रू भे)

उ०—तद उदैराम कयी, गाम आवा ह वही मै उतार देसू । सू उतार होना ओर कयी, थे मा'राज सू मुलापात मती करज्यो, जो कहाँ तो उतर देख्यो के हमार नही पछे हुगी ।—द दा

मुलापाती—देखो 'मुलाकाती' (रू भे)

मुलाजम—देखो 'मुलाजिम' (रू भे)

२ दखो 'मुलाजमत' (रू भे)

उ०—मयत १७७५ माघण वद ११ दिली दाखल हुवा । पातमाह फरवना री मुलाजम कीवी ।—रा व वि

मुलाजमत, मुलाजमती—स० म्थी० [अ० मुलाजमत] १ सेवा सुश्रुषा ।

२ नीचरी चाकरी ।

उ०—१ जाहागीर पातमाहि अजमेर नू आबतो 'री, माहागजा खी गजमिहजी चाटसु वन्है जाय पातमाह जाहागीर मु मिळिया । मुलाजमत कीवी । पातमाह अजमेर आया ।—नैणसी

उ०—२ मिगमर वद ६ नोम महाराज माहजादा सू मुलाजमत

करायी तरै पांच हजारिया मे सभानू ऊमो राखियो, मिरपाव दियो पाचहजारी री मनम्व दियो ।—वां दा स्यात

उ०—३ पछे जाय मुलाजमती की वोहत दिलासा कीवी । घोडो मिरपाव हाथी दे, डेरा नू विदा कीया ।—नैणसी

रू० भे०—मुलाजमत मुलाजम, मुलाजिमत,

मुलाजिम—स० पु० [अ०] १ नोकर, चाकर, सेवक ।

२ दाम, गुलाम ।

रू० भे०—मुलाजम,

मुलाजिमन—देखो 'मुलाजमत' (रू भे)

मुलाजो—देखो 'मुलाहिजो' (रू भे)

उ०—तुकारी काढे तुरक, मुह मुलाजो मेट । कुल उत्तम जन्म्या किम्, नीच कहीजै नेट ।—व व प्र

मुलाटो—स० पु०—कपडे को गोलाकार लपेट कर बनाई हुई एक प्रकार की गेंदुरी (इडुरी) जो शिर पर बोझा उठाने मे काम आती है ।

मुलाणी, मुलावी—देखो 'मोलाणी मोलावी' (रू भे)

मुलायम—देखो 'मुलायम' (रू भे)

मुलायजी—देखो 'मुलाहिजी' (रू भे)

उ०—१ सिवराज जेसंघ रै दीवाळी होळी दमरोहे वार परव पोसाक मिरपाव गहणी मरव नेग पुमार जंत पावै, कारण ईजत बडो मुलायजी ।—जंतमाल पुमार री वात

उ०—२ मेमद मुगद अबु भेळा हुआ आगे मेमद मुराद पवार सादल रा नरमिघदास री कायदी मुलायजी कोई न करतो, अलघा वंसाणता ।—नैणसी

उ०—३ मालुम मुलायजे करहु माफ, आलिम हैं आलमगीर आप ।

—ऊ का

उ०—४ सू इणा रै चारण १ गंपो मिढायच हो इण री पण मुलायजी छो । मारा नू तुकारी देयन वतळावतो ।—द दा

मुलायम—वि० [अ०] १ कोमल, नरम ।

२ नाजुक, सुकुमार ।

३ जिसमे कठोरता या तीव्रता न हो, शान्त, मरल ।

रू० भे०—मुलायम,

मुलायमत, मुलायमी—स० म्थी० [अ० मुलायमत] १ मुलायम होने की अवस्था या भाव ।

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई, नरमाई और मुलायमी किण वास्ते जे इग गुणा सू रयत दुआ आपरै वादसाह नू देवै ।—नी प्र

२ कोमल, नरमी ।

उ०—मुदार मुलायमत ऐ स्वभाव भला छै ।—नी प्र

३ नाजुकता, सुकुमारता ।

मुलायोडी—देखो 'मोलायोडी' (रू भे)

(म्थी० मुलायोडी)

मुलावणी, मुलावधी—देखो 'मोलाणी, मोलावी' (रू भे)

उ०—गूधे गोभी तन गुडकावे, ऊधे नीद न आवे । सूँधे सुजस  
इतर तव साजन, मूँधे मोल मुलावे ।—ऊ का  
मुलावणहार, हारी (हारी), मुलावणियो—वि० ।  
मुलावियोडो, मुलावियोडो, मुलावियोडो—भू० का० कृ० ।  
मुलावीजणो, मुलावीजवो—भाव वा० ।

मुलावियोडो—देखो 'मोलायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुलावियोडो)

मुलाहजो—स० पु० [अ० मुलाहज] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आदर ।

उ०—१ नापो पूछो क्यो ना गया । उण कही कासू जावा ।  
म्हारी कारण मुलाहजो थो सो सगळो महने सवा महना मू  
मेटियो ।—नापे साखले री वारता

उ०—२ उम्मीदवार काम आया त्यानू पट्टी जागीर दीवी । खास  
चोकी माही राखिया । वडो महरबानी, कायदो-कुरब मुलाहजो  
दियो ।—डाढाळा सूर री वात

२ लिहाज, सकोब ।

उ०—१ सो हम महाराज का बहुत मुलाहजा राखे हैं । भव  
हमसे मुलाहजा नहीं रहेगा ।—जयसिंह आमेर रा घणी री वारता

उ०—२ ताहारा मा पण आ हीज कही-हालण रे वासते सारी  
लोक आतुर छे । महाराज निपट काहल करे छे । थारी मुलाहजो  
करि दवाय नै कहे न छे ।—पलक दरियाव री वात

३ प्रभाव, रीब, शान-शोक्त ।

उ०—यह आमेर जयसिंह जी रे परिणयो थो सो उवां री भारी  
मुलाहजो सो अमरसिंहजी नू वादशाह नीकी तरह राखे ।

—रा रा सि री वारता

४ निरीक्षण, गौर ।

रू० भे०—मुलाजो, मुलापजो,

मुलिक—देखो 'मुलक' (रू भे)

मुळियोडो—भू० का० कृ०—१ नटा हुआ, इस्कार किया हुआ २ मुकरा  
हुआ, पलटा हुआ ।

(स्त्री० मुळियोडो)

मुळुक, मुलुक—देखो 'मुळक' (रू भे)

मुळेट, मुळेट—स० पु०—कुम्भकार द्वारा चाक पर से उतारे हुए कच्ची  
मिट्टी के वर्तन का प्रारम्भिक रूप ।

उ०—वै इणी भात चाक फेरणी मू चाक घुमावे माथे पीछी वरे ।  
गागे इणी भाती चूळ खाचै । पछे मुळेट उतारे ।—फुलवाडी

मुळेठी मुलेठी—स० स्त्री० [स० मधुपट्टि, प्रा० मूलपट्टी] १ उष्ण प्रदेशो  
मे काली मिट्टी मे होने वाली एक लता ।

२ उक्त लता की जड़, जो स्वाद में मीठी व तृष्णा, ग्लानि व  
क्षयनाशक एव वन वर्धक औषधि मानी जाती है ।

रू० भे०—मरेठी, मह्लोटी, मिर्हिठी, मुनेठी, मुर्ही ।

मुळो—देखो 'मुळणी' (रू भे)

उ०—स्याळिया तो इण फरमाण आगे बोलणी मुळी माठ कर  
दियो ।—फुलवाडी

मुलक—देखो 'मुलक' (रू भे)

मुलकगोरी—देखो 'मुलकगोरी' (रू भे)

मुल्की—वि० [अ०] १ देशका, देश सम्बन्धी,

२ अपने देश का बना हुआ, देशी ।

रू० भे०—मुलकी ।

मुलतवी—वि० [अ०] १ जिसका विचार छोड़ दिया गया हो, स्थगित ।

२ रुकने वाला, रुका हुआ ।

रू० भे०—मुलतवी, मुलतवी,

मुल्लो—स० पु० [अ० मुल्ला] १ मस्जिद में अजान देने वाला मौलवी,  
इस्लाम धर्माचार्य ।

उ०—१ मुल्ला काजी मगदूमयाद, फतवा लीजे मेटन फसाद ।

—ऊ का

उ०—२ काई करैला म्हारी दुरजन पुरजन, काई करैला झूठा  
पाजी जी । काई करैला म्हारी राजा राणी, काई करैला मुल्ला  
काजी जी ।—मीरा

उ०—१ दादू काया मसीत कर पंच जमाती, मन ही मुल्ला इमाम ।

घाप अलेख इलाही आगे, तहं सिजदा करे सलाम ।—दादूबाणी

२ मुसलमानो का विद्या गुरु, शिक्षक ।

रू० भे०—मुला ।

मुवकिल—स० पु० [अ०] १ मुसलमानो का एक कल्पित देवता,  
फरिश्ता ।

२ वह रूह व आत्मा जो आमिल द्वारा वश मे की गई हो ।

३ वकील का आसामी, जो अपना मुकद्दमा वकील को सौंपता है ।

मुवारणी—देखो 'मारणी' (रू भे)

मुवारो—देखो 'मुहावरो' (रू भे)

मुवाळ—स० स्त्री०—मुखाकृति ।

मुवोडो, मुवो—वि० [स० मृत] मरा हुआ, मृत ।

उ०—१ विद्या री जाप अतजय री जाप छे जु जपे सु तीन  
बरसो मु-री जीवे ।—चौवोली

उ०—२ मुवा बालक सुलसा जणैजी, ते मेलै तुम पास । ताहारा  
मेलै जीवता जी सुलसा री पूरे आस —जयवाणी

मुम—वि० [स० मृषा] झूठा ।

मुसद—देखो 'मसद' (रू भे)

मुसक—१ देखो 'मसक' (रू भे)

उ०—चाहें पर घन चोर, जोर कुविसन ए जाणो । मुसक वधि  
मारिजै, घणी वेदन करि धाणो ।—घ व ग्र

२ देखो 'मुस्क' (रू भे)

मुसकरा'ट—देखो 'मुस्कराहट' (रू भे)

मुसकराणो, मुसकराओ—क्रि० प्र०—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू भे)  
मुसकराणहार, हारी (हारी), मुसकराणियो—वि ।

मुसकरायोडी—भू का कृ ।

मुसकराईजणो, मुसकराईजणो—भाव वा ।

मुसकरायोडी—देखो 'मुसकायोडी' (रू भे )

(स्त्री मुसकरायोडी)

मुसकराहट—देखो 'मुसकराहट' (रू भे )

मुसकन, मुसकलि, मुसकल्ल—देखो 'मुस्किल' (रू भे )

उ०—१ तद रावजी बोल्या—जु आ वात ती खरी पण वर ही  
वरणां ग्रामाण छे वर छूटणा मुसकल छे ।—नैणसी

उ०—२ ज्यागी रिच्छा देवता, सेवा पीर प्रवान । त्यां ग्रण  
चोती सपजे, मुसकल मे ग्रामान ।—रा रू

उ०—३ नातच रम रे लाग, माखी लपटाणी मयू । उडणी  
बळिणी ग्रग, जिण रे मुसकल जीवणी ।—वा दा

उ०—४ माता पितु वेटी वेटा भल मरिया । प्यारा प्याग न  
मुसकल परहरिया ।—ऊ का

उ०—५ जन हरिय की धीनती, साई करीय कानि । वदे कू  
मुसकल घनी, तेरे सब ग्रामानि ।—छीहरीरामदासजी महाराज

उ०—६ ऊभा सीहा केस डक, कर लेणी मुसकल्ल । पाण छत  
कयूर पडे, ऊभा भीहा खल्ल ।—वा दा

मुसकाण, मुसकान, मुसकानी—देखो 'मुस्कान' (रू भे )

उ०—हाट वाट माहि गोकत टोकत, या रमिया की में मारी न  
जानी । सुंदर वदन कमळ दळ लोचन, वांकी चितवन रु मद  
मुसकानी ।—मोरा

मुसकाणो, मुसकायो—क्रि० अ० [स० मुदू] १ मद-मद हसना, मुस्काना ।

उ०—१ विडरी हिरणी मी फिरणी विजकाती, मुखडे मुसकाती  
जोरो जतळाती —ऊ का.

उ०—२ गटे द्रुम—डार कदम की ठावो, 'मूदू मुसकाया' म्हारी श्रीर  
हस्यो । पीतांबर कटि काछनी काछे, रतन जटित तिर मूकुट कस्यो ।

—मोरा

उ०—३ मुख मुसकाती उमग सू, महदी हाथ भग मंग । मळक  
छनीसू ग्रामरण, अंतर लगया ग्रंग ।—पना

२ हपित होना, खुग होना, पुलकित होना ।

उ०—१ मिलिया मन मेळू माती मुसकाती । दुसका भरनोडी  
आती दुगसाती ।—ऊ का

उ०—२ मन मुसकाय तैत के माही बोल्या मोटी वानी । चगी  
चाह चाह वर चुम्बी, गढ़ नह मय्यी गुमानो ।—ऊ. का

मुसकाणहार, हारो(हारी) मुसकाणियो—वि० ।

मुसकायोडी—भू का कृ ।

मुसकाईजणो, मुसकाईजणो—भाव वा ।

मुसकराणो मुसकरावो मुसकिराणो, मुसकिरावो मुसकुराणो,

मुसकुरावो मुसकाणो मुसकावो, मुसकावो, मुसकावणी

मुसकावो—रू भे

मुसकायोडी—भू का कृ —१ मद मद हमा हुआ, मुसकाया हुआ २

हपित हुवा हुआ, खुग हुवा हुआ, पुलकित हुवा हुआ ।

(स्त्री मुसकायोडी)

मुसकिराणो, मुसकिरावो—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू भे.)

मुसकिरायोडी—देखो 'मुसकायोडी' (रू भे )

(स्त्री मुसकिरायोडी)

मुसकिराहट—देखो 'मुसकराहट' रू भे )

मुसकिल—देखो 'मुस्किल' (रू भे )

उ०—१ मुसकिल कूच्या माहि, तिका निठि कीधा ताव । भडता  
विर आकाम, फेण भडता मुख फाव ।—मे म

उ०—२ भूधर कही—गाव माही तो हू कोई आऊ नहीं । म्हारे  
भाडे री मुसकिल, बीजी तळाव पर पाणी रो निवास छे, कोई नीम  
उतार दे, कोई हळद तेल आण देव, पाळ रे नीच हू भाडे फिर  
आऊ ।—सूरे खीवे कावळोतरी वात

मुसकी—देखो 'मुस्की' (रू भे )

उ०—१ के लीला के कागडा, कगडा हरडा केक । मुसकी नुकरा  
मेडिया, इसडा तुरग अनेक ।—पे रू

उ०—२ वह अवसर मुसकी अर सजाव । बीरता केहरी पेस  
वाव ।—सू प्र

मुसकुराणो, मुसकुरावो—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू भे )

मुसकुराणहार, हारो(हारी), मुसकुराणियो—वि० ।

मुसकुरायोडी—भू० का० कृ० ।

मुसकुराईजणो, मुसकुराईजणो—भाव वा० ।

मुसकुरायोडी—देखो 'मुसकायोडी' (रू भे.)

(स्त्री० मुसकुरायोडी)

मुसकुराहट—देखो 'मुसकराहट' (रू भे )

मुसटड—देखो 'मुस्टड' (रू भे )

मुसट—स० स्त्री०—१ चुप्पी, मौन ।

उ०—लाज भला कहवो कवे, लाज न आवे काज । कही भली  
कहणी कही, मुसट भली छे राज ।—पच दडी री वारता  
२ देखो मुस्टी' (रू भे )

उ०—दिस्ट न आवे मुसट मे, नही रूप न रेखा । हरिरामा परि  
सुनि मे, मुक्ति मोल्या अलेखा ।—छी हरिरामदास जी महाराज

मुसटक, मुसटि—देखो 'मुस्टी' (रू भे )

उ०—छत्रपति इता मिळि जुटत छत्र । तिल मुसटि पडत नह  
मोमि तत्र ।—सू प्र

मुसणो, मुसवो—देखो 'मूणो, मूवो' (रू भे ) (उ र )

मुसता—म० स्त्री०—नागर मोया ।

मुसताक, मुसताकि—वि० [ अ० मुदताक ] १ उमगित, उत्साहित,  
उत्तेजित ।

उ०—१ हीदां भक्ति नोह करे करि हाक । महारिख देखि हुवे  
मुसताक ।—सू प्र

उ०—२ सकति पूजि 'अममन' सुपह, पहिरि ऊव पौसाक । करि



दधवध आवध कसै, मलपै छक मुसताक ।—सू प्र  
२ बहुत अधिक कामना रखने वाला, अभिनापी, इच्छुक, उत्सुक ।  
३ उत्कठिन, लालायित ।  
४ मस्त, मतवाला ।

उ०—१ घर करि अमल पदम छत्र धारै, सुदरि नवलापुरी  
सिगारै । रग महलि दपति दुति राजै, छक मुस्ताकि काम रति  
छाजै ।—सू प्र

उ०—२ अछी हू कवर हुवो मुस्ताक छकियो धणो छवीलो प्रेम  
रस री छाक ।—र हमीर

रू० भे०—मुस्ताक, मुस्ताक,

मुसवी, मुसदी—देखो 'मुसवी' (रू भे)

उ०—१ मोटा छाटा मुसदिया बुलवातो दरवार । 'जसवत' खातर  
जीव का, सारा लेतो सार ।—ऊ का

उ०—२ यो मन मुसदी सकल का, आपा अतर जाणी । हरीया  
पाच पचीस कु, उलटि एकठा आणि ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ मूहता मारवाड रा मुसदी हा तौ सेठ लिछमी रा  
लाडला —रातवासी

उ०—४ पावती गोपाळदास रा मुसदिया नू हाडां रा मुसदी  
कही—जे राणी जी सू जुझार कर चढज्यो ।

—गौड गोपाळदास री वारता

मुसन्ना—स० स्त्री० [अ०] १ अमल कागज की वह नकल जो मीलान  
आदि करने के लिये रखी जाती हो ।

२ रसीद का अर्द्धांश जो पीछे रखवा जाता है ।

मुसव्वर—स० पु० [अ०] १ औपघ के रूप में काम लेने के लिये कुछ  
विशिष्ट क्रियाओं से जमाया हुआ घो-कुवार-रस । (वेद्यक)

२ एलुवा ।

मुसमल्ला, मुसमुल्ला—देखो 'मुसलमान'

उ०—मिळिया नर मंदान मै, माझी अपमल्ला, सामा वीरम  
सारका, झालें कुण भल्ला । अछरां हूरा आवसी, वर सूर्रा भल्ला,  
होमी मरणा हिदवा, मरसी मुसमल्ला —वी मा

मुसमूरण—वि० [पा० मुसमूर] नाश कारक, नष्ट करने वाला विनाश  
करने वाला ।

उ०—मोह अरि मुसमूरण पूरण परम पसाय । सखेसर परमेसर  
केसर चरांचत काय ।—उदयशिवजी

मुसरफ, मुसरिफ—स० पु० [अ० मुसरफ] एक उच्चाधिकारी व इस  
अधिकारी का पद । (नैणसी)

वि० १ प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

[अ० मुस्लिफ] २ व्यय करने वाला, खर्च करने वाला ।

३ अव्ययी, बहु खर्चाला ।

मुसळ, मुसल—देखो 'मूसळ' (रू भे)

उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्ध मुरवि परसु पाम

पट्टिस दूम लागूल मुसल मुसळि मुदूर लगुड गदा ।—व स  
मुसलमान—स० पु० [अ० मुसलमान] महम्मद साहब द्वारा चलाये हुए  
धर्म एवम् सम्प्रदाय का अनुयायी, इस्लाम धर्म को मानने वाला ।

उ०—१ जन हरीया उन देसडै, अभिनासी की आन । और किसी  
का डर नहीं, हिंदू न मुसलमान ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

उ०—२ असल मुसलमान हुवै जको मजब रै कायदै सु निवाज  
पडै रोजा राखै अर वरस में दो-चार बार हलाली कर परो र  
मालक नै मूढी दिखाळै ।—दसदोख

रू० भे०—मुसलमीन मुसल्मान, मूसळमाण, मुसळी मुमली, मुमल्ली ।

मुसलमानो—स० स्त्री०—१ मुसलमानो में वच्चो आदि के की जाने वाली  
सुन्नत, खतना (रश्म)

२ मुसलमान का कर्त्तव्य, धर्म ।

वि०—मुसलमान का, मुसलमान सम्बन्धी ।

रू० भे०—मूसलमाण, मूसलमान

मुसलमीन—देखो 'मुसलमान' (रू भे)

उ०—मालिक नहिं खालिक मुसलमीन । अल्ला हैं रबबुलआलमीन ।

—ऊ का

मुसला—स० पु०—मुसलमान जाति या वर्ग ।

उ०—लूवा मगलागी धरणीतल घायो । मुसला मिटिगा ज्यू  
अगरेजा अया । ऊ का

रू० भे०—मुसल्ला ।

मुसलायुद्ध, मुसलायुध—देखो 'मूसळायुध, मूसलायुद्ध (रू भे)

उ०—हलायुध हलायुधइ मुसलायुध मुसलायुधइ सूलायुध सूलायुधइ  
।—व स

मुसळि मुसलि—१ देखो 'मूसळ' (रू भे) (अ मा)

२ देखो 'मूसळी' (रू भे)

मुसळी—स० स्त्री०—१ छिपकली, विसूदरा ।

२ देखो 'मूसळी' (रू भे)

मुसळी, मुसली—१ देखो 'मुसलमान'

उ०—फटकार हलाहल तें फिरगो, घन आनद अत्रत घा घिरगो ।

मुसला पर डार सिला महती गुरु कारज आरज बस गती ।—ऊ का

२ देखो मूसळ, (मल्ला, रू भे)

मुसल्मान—देखो 'मुसलमान' (रू भे)

उ०—कल्मा नहिं भरिहैं पान कान । मारेहु न व्हे हैं मुसल्मान ।

—ऊ का

मुसल्ला—देखो 'मुसला' (रू भे)

उ०—गल्ला सुमगाथा को पवित्रता को पल्ला थो बो । अल्ला थो  
मुसल्लावो को मल्ला धन माता को । अत्र थो प्रसिद्ध आतपत्र  
मात्र आरटयन को, छत्र छत्र धारिन नछत्र सुख साता को । ऊ का

मुसल्लो—स० पु० [अ० मुसल्ला] १ नमाज पढ़ने की दरी, चटाई ।

२ देखो 'मुसलमान'

उ०—हिंदू लोग ग्यारा सैं असीला कामि आया । सोळा सैं



मिगेह्या सँ मुमन्ता घोर पाया ।—शि. व

३ देखो 'मुसल' (मल्ला, रु. भे)

मुसवर—म० पु०—वस्त्र विशेष

उ०—रदा फरदा मुसवरी, चौपमीदा ललचाव । कदा केळसी  
कामणी, वेहद हदा यणाव ।—पना

मुसविर—म० पु० [अ०] चित्रकार, चित्तेग, चित्र—शिली ।

मुसविर—म० म० [अ०] १ चित्रकारी ।

२ मुसविर का पेसा ।

मुसाण—देखो 'ममाण' (रु. भे)

उ०—१ बुता बागला छूटे, मज्जुग रा माया फूटे है । घर मुसाण  
नामका मा हो गया है ।—दसदोख

उ०—२ धूम मुसाणा मे निस वामुर घावै । अतेस्टी आसर टांणा  
नव आवै —ऊ का

मुसाग्रणा—स० पु०—यवन या मुसलमान जाति ।

मुसाणी, मुसावी—क्रि० म० [स० मुप्—मूसणी] क्रिया का प्रेर० रु० ]

१ चोरी करवाना ।

२ लुटवाना ।

३ हरण करवाना, अहरण करवाना ।

४ पकड़वाना ।

५ ढकवाना, निपटवाना, घिरवाना, छिन्नवाना ।

६ छिनवाना, फाटवाना ।

७ ग्रमवाना ।

८ लुप्त करना ।

९ समोचना ।

१० ठगवाना ।

उ०—हरीया ग्याली खलक में के तो गया वमाय । के आया  
ज्युटे गया, वुमत मुसाय, मुसाय ।—श्री हरिरामजी महाराज

मुसाणहार, हारी (हारी, मुसाणियो—वि० ।

मुसायोडो—भू० वा० कृ० ।

मुसाईगो, मुसाईगो—कर्म वा० ।

मुसाप—१ देखो 'मुसाहव' (रु. भे)

उ०—भक्ती जोग मुसाप है, हट जोग अमराय । नाथ मलासू कांम  
करीजै, न्याय मतोय चुकाव ।—श्री हरिरामजी महाराज

२ देखो 'मुसाफ' (रु. भे)

मुसाफ—म० पु० [अ० मुसाफ] १ मगर, युद्ध ।

२ लड़ाई का मैदान, युद्ध स्थल, रण क्षेत्र ।

३ शत्रु के चारों ओर टाला जाने वाला घेरा ।

[म० मुसहफ] ४ कुरान ।

उ०—१ हम तम बिउड मुदाई हट लेह मुसाफ आह वरउ ।  
नितोड देनि वंगड किउड, वाचा देह यणउ वरउ ।—प च चौ

उ०—२ कगी के मूम जेत है वोन वध मवि गाव । हम मुसाफ  
उगारि है बिनवा नही वाव ।—प च चौ

५ लेखो आदि का संग्रह ।

रु. भे०—मुसाप,

मुसाफर—देखो 'मुसाफिर' (रु. भे.)

उ०—मेहते रै मारग में नानडो गाव सु परली तरफ १ वावडो  
कगई । मारग बेतो मो मुसाफरां नै जळ री मडचन रैतो ने नाव  
सोडो मर री वावडो दोधो ।—नैणसी

मुसाफरखानी—देखो 'मुसाफिरखानी' (रु. भे)

उ०—मूँता रै घर री गिरँतो मुसाफरखाने रै डोळ मे घिरगी । घर मे  
जाय' र देखें तो पाच सेर आटे री मरजाम नहीं है ।—दसदोख

मुसाफरी—देखो 'मुसाफिरी' (रु. भे)

उ०—एक जगा रैणें मु मै एक कहूँ रा अग सा वण जावै है ।  
अठै ना तो कोई रेलगाटी री मुसाफरी है, अर न कोई घग्मसाळ  
तथा तीजा री मेजो है ।—दसदोख

मुसाफिर—स० पु० [अ०] यात्री, राहगीर, पथिक, वटोही ।

रु. भे मुसाफर, मुसाफीर

मुसाफिरखानी—स० पु० [अ० मुसाफिर+फा० खाना] १ रेलवे स्टेशन  
पर बना यात्रियों, मुसाफिरी के ठहरने का कक्ष, कमरा या हाल ।

उ०—वो थोडी देर तो मुसाफिरखाना मे ऊभी रहघी अर पछे  
मरदारपुरा वाळी मडक पकडी ।—रातवायो

२ घमशाला, सराय ।

रु. भे०—मुसाफरखानी

मुसाफिरी—म० म० [अ०] १ मुसाफिर होने की अवस्था या भाव ।

२ यात्रा, प्रवास ।

रु. भे०—मुसाफरी,

मुसाफीर—देखो 'मुसाफिर' (रु. भे)

उ०—वाता-वाता मे मसाफीर री साग-मज्जी मे नीवू निचोय देतो  
—फुलवाटो

मुसाय—देखो 'मुसाहव' (रु. भे)

मुसायव—म० पु० [अ० मुसायव] धर्म के ज्ञाता, धर्माचार्य ।

उ०—दादू मेख मुसायव श्रीनिया, पैगवर मव पीर । दस्तन सों  
परमन नही, अजहू वेली तीर ।—दादूवाणी

मुसायव—देखो 'मुसाहव' (रु. भे) (नैणसी)

मुसाययो मुसाययो—देखो 'मुसाहवी' (रु. भे)

उ०—पीछे खानखाना क् पातमाहजी तमाम मुलक वी मुसाययो  
अनायत करी ।—द दा-

मुसायोडो—भू० वा० कृ०—१ चांगी करवाया हुआ २ लुटवाया हुआ

३ हरण या अहरण करवाया हुआ ४ पकड़वाया हुआ

५ ढकवाया हुआ, निपटवाया हुआ, घिरवाया हुआ, छिनवाया

हुआ ६ छीनवाया हुआ, फाटवाया हुआ ७ ग्रमवाया हुआ ।

८ लुप्त किया हुआ ९ समोसा हुआ १० ठगवाया हुआ ।

(श्री० मुसायोडो)

मुसाल—१ देखो 'मुसाल' (रु. भे.)

उ०—१ प्रथम पुवाडई पूतना सोखी मर दळीयो मुसाल। ए हरि नई भागई दावानळ, दांगव नई कुळि काळ।—रुमणी मगळ  
२ देखो 'मसाल' (रु भे)

उ०—१ रवि चै उदय रात मिट जावै, खूटै तेल मुसाल बुझावै।  
यो नीयति द्रत वेद वतावै, तप तीखै घप राज गमावै।—रा रु  
उ०—२ मदवी की मद्याली, हाथ की हाल। तीजणीया रो तुररी  
रूप की मुसाल।—मयाराम दरजी री वात

मुसालची—देखो 'मसालची' (रु भे)

मुसाली—देखो 'मसाली' (रु भे)

उ०—१ कोई जाणै के आ पारियां में केर, सांगरियां के मुसाला  
वहेला।—फुलवाडी

उ०—२ ऐ तीन तळाव मढाया। तिणा करण नू पैहला तो  
आपरी कामदार मुसाली मेलियो।—नैणसी

मुसावाई—वि० [स० सुवा वादिन्] भूठ बोलने वाला, भूठा (जैन)।

मुसावाद, मुसाबाय—स० पु० [स सुवावाद] भूठ, असत्य।

मुसाहब—स० पु० [अ० मुसाहब] १ राज्य दरबार का एक पद।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ सामंत, पार्षद।

उ०—फीफरड फूट गोळा गजा फरहई, जगी होदा गजा खडहई  
जोम। घडहई घोम वे मुसाहब सई घर, विहु साहब हसै हडहई  
बोम।—हुकमीचद खिडियो

४ किसी राजा या रईस के पास मन बहलाने के लिये रहने वाला,  
पार्षदवर्ती सहवासी।

रु० भे०—मुसाप, मुसाब, मुसायव, मुसाहिव, मूसायव,

मुसाहवी—स० स्त्री०—१ 'मुसाहब' का काम।

२ मुसाहब का पद।

रु० भे०—मुसायवी, मुसायवी,

मुसाहिव—देखो 'मुसाहब' (रु भे)

उ०—जकै वासत आखा ठाकुर—उमराव अर मुसाहिव दै की  
खावै।—दसदोख

मुसिकल—देखो 'मुस्कल' (रु भे)

उ०—ताहरां सिरचद मुहर्तै नू मुसिकल हई जु राजाजी राणी जी  
नू कारी री खबरि होइमी ताहरां जीव बुरी करिसी।—द वि-

मुसियारी—स० पु०—१ चोर।

उ०—मुसियारा मुख मूद, कपटी ब्यू बोलै नही। तू सारा सिर  
खूब, बुरा भला सह रावळा।—गज उद्धार

२ ठग, वचक, कपटी।

३ दगा-बाज।

मुसियोडो—देखो 'मूसियोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुसियोडी)

मुसिलो—देखो 'मुसलमान'

मुसीबत—स० स्त्री० [अ०] १ तकलीफ, कष्ट।

२ विपत्ति, सकट, दुख।

मुसुकाणी, मुसुकावी—देखो 'मुसकाणी, मुसकावी' (रु भे)

उ०—होठ मुसुकाय रिझवाय पातक हरा। हाथ दीधा जिकी जोड़  
आगळ हरी।—र ज प्र

मुसुकाणहार, हारी(हारी), मुसुकाणियो—वि०।

मुसुकायोडो—भू० का० कृ०।

मुसुकाईजणो, मुसुकाईजबो—भाव वा०।

मुसुकायोडो—देखो 'मुसकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुसुकायोडी)

मुसैद—स० पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—देखता ताव मुज नस्सवाज, वह डसिय दत तन गुरज बाज।

खित तुरकी आलातीन खेत, बाला मुसैव रोसनी देत।—सू प्र

३ देखो 'मुस्तैद' (रु भे)

मुसोर—देखो 'मसोड' (रु भे)

उ०—गल मसुरिया गीढवा जी धीर माकी जी मुसोर रांजी  
सोरठी।—लो गी

मुस्क—स० पु० [फा० मुस्क] १ कस्तूरी, मृगमद।

२ गंध, बू।

रु० भे०—मुस्क।

मुस्कदांणी—स० पु०—एक लता विशेष का बीज जो इलायची के दाने  
के समान होता है और कस्तूरी के समान सुगंधी देता है।

मुस्कनाफो—स० पु० [फा० मुस्कनाफः] कस्तूरी की थैली, जिसमें  
कस्तूरी रहती है, मृगनाभि।

मुस्कनाभ—स० पु०—वह मृग जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है।

मुस्कविलाई—स० पु०—एक जंगली विलाव जिसके अठ कौशो से बड़ा  
सुगंधित पसीना निकलता है।

मुस्करा'ट, मुस्कराहट—स० स्त्री०—१ मुस्कराने की क्रिया या भाव।

२ मद-हास्य, मुस्कान।

रु० भे०—मुसकरा'ट, मुसकराहट, मुसकिराहट, मुसकुराहट,

मुस्कल—देखो 'मुस्कल' (रु भे)

उ०—१ पण काल तो उठा सू प्राण लेणनै वसीठ दूत भेज देवै  
परत उण भड रा निरभे पणा सू रीम नै म्हारो नाह पती नीठ  
मुस्कल सू उबारै है।—धी स. टी

उ०—२ एक दिन वो आपरी छाग लेयनै पाछो आवती के एक  
गाय रा खुर में बावळिया री सूळ खुबगी। भागै चालणी मुस्कल  
व्हेगी।—फुलवाडी

मुस्कवत—स० पु० [स० मुस्कवत्] इन्द्र नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का  
विशेषण।

मुस्काण, मुस्कान—स० स्त्री०—मद हास्य, वीमी हसी।

रु० भे०—मुसकाण, मुसकान,

मुस्काणी, मुस्कावी—देखो 'मुसकाणी, मुसकावी' (रु भे)

मुस्कायोडो—देखो 'मुसकायोडो' (रु भे)

(स्त्री० मुस्कायोडी)

मुस्कावणी, मुस्कावणी—देखो 'मुमकाणी, मुमकावी' (रू भे)

उ०—पावण ने चांदी रा दुकड़ा, वा लागी नाचण-गावण नै ।  
वा नागी प्रीत लुभावण नै, वा हमी बिना मुस्कावण नै ।

—चेत मानला

मुस्कावियोडी—देखो 'मुमकायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मुस्कावियोडी)

मुस्किल-वि० [प्र० मुस्किल] १ कठिन, दुष्कर दुश्वार, असाध्य, श्रमभर ।

उ०—म्हारी इमी हालत वैगी ही के बाधिया नै हाकी करणी तो  
आधी रह्यो, म्हारी खुद रो उठा स हिलणी मुस्किल व्हंग्यो ही ।

—रात वासो

२ पेचीदा, जटिल ।

३ गूढ, सार-गर्भित ।

४ सूक्ष्म, वारीक ।

स० स्त्री०—१ कठिनाई, दिक्कत ।

२ विगति, सकट, बाधा, दुख ।

३ पेचीदगी, उलझन, जटिलता ।

४ सूक्ष्मा, गहराई ।

५ सूक्ष्मता, वारीकी ।

रू० भे०—मुसकल, मुमकलि, मुमकल्ल, मुमकिल, मुसिकल, मुस्कल

मुस्की-वि० [फा० मुस्की] १ कस्तूरी के रंग के समान काला ।

२ कस्तूरी के समान सुगंधित ।

स० पु०—बहु घोटा जिगका क्षीर कस्तूरी जैसा काला हो ।

रू० भे०—मुमकी,

मुस्फोरणी मुस्फोरवी—देखो 'मस्फोरणी, मस्फोरवी' (रू भे)

उ०—दीवाणजी लप पण वारै काढ दियो । तद वा टावर री  
गलाई मूढी मुस्फोर रिमाणी करती व्है ज्य बोली । —फुलवाडी

मुस्फोरियोडी—देखो 'मस्फोरियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मुस्फोरियोडी)

मुस्टड, मुस्टडी-वि०—हूण्ट पुण्ट, बलवान ।

२ मोटा ताजा ।

३ गुंठा, तुच्चा, बदमाश ।

रू० भे०—मुसटो, मुसटड, मुस्तड

मुन्ट-स० पु० [म० मुण्ट] १ चोरी का माल ।

२ चुप, मोन, पामोश ।

उ०—रह्यो ममाणी मुन्ट करि, कह्यो कांव म मारि । कोउ बटाऊ  
पयमिर, दासा तणें उणहारि । —ढो मा

३ देखो 'मुन्टी' (रू भे)

उ०—नस चम रव न नामिका, दिगट मुन्ट मे नाहि । हरिरामा  
हरि पारिया, मुगति निरति के माहि । —स्त्री हरिरामदामजी महाराज

मुस्टि—देखो 'मुन्टी' (रू भे) (व स)

उ०—१ कीजै रे दिल दोसत ऐसा, दिस्ट मुस्टि में नही आवै तैसा ।

—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—२ तूर तेज ज्यो ज्योति है, प्राण पिड यों होइ । द्रिस्टि  
मुस्टि आवै नही, साहिव के बस सोइ । —दादू वाणी

मुस्टिक-स० पु० [स० मुष्टिक] १ कम का एक पहलवान जो बलराम  
के हाथों मारा गया ।

२ सुनार ।

३ मुक्का, घूमा ।

मुस्टिका-स० पु० [स० मुष्टिका] १ मुट्ठी,

२ मुक्का, घूमा ।

मुस्टिभेद-स० पु० [स० मुष्टि-भेद] पुरुषों की ७२ कल ओ में से एक ।

(व स)

मुन्टी-स० स्त्री० [स० मुण्टि] १ हाथ की पांचो अंगुलियों को हथेली  
में समेटने पर बनने वाली मुद्रा या स्थिति, मुट्ठी, मुष्टिका ।

२ उक्त मुद्रा द्वारा चोट करने या मारने की क्रिया ।

३ उक्त मुद्रा में समाने वाली वस्तु की मात्रा ।

४ घूमा ।

५ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

रू० भे०—मुसट, मुसटक, मुसटी, मुस्ट, मुस्टि,

मुन्टी-स० पु०—कड़ाई के अन्दर दूध का मावा घोटने का एक लकड़ी  
का उपकरण, जिसके आगे मुट्ठी के आकार की एक लकड़ी आड़ी  
लगी रहती है ।

मुस्तड—देखो 'मुस्टड' (रू भे)

उ०—रात रा कुल्ले कुल्ले काकडियां रो ठोरी दे आवै । गधी तो  
थोडा दिनां मे मुस्तड व्हैगो । —फुलवाडी

मुस्त-स० स्त्री० [फा० मुस्त] १ मुट्ठी ।

२ मुक्की, घूमा ।

३ किसी चीज की मुट्ठी भर मात्रा ।

मुस्तकिल-वि० [प्र०] १ अटल, अडिग, दृढ़, मजबूत ।

२ निश्चित, स्थिर ।

३ स्थायी ।

४ पाबंद ।

५ निरन्तर, लगातार ।

मुस्तगोस-स० पु० [अ०] प्रदालत में अपना कोई दावा या अभियोग  
पेश करने वाला, दावेदार, वादी, फरियादी ।

मुस्तनद-वि० [अ०] १ विश्राम करने योग्य, विश्रवस्त ।

२ प्रामाणिक, मान्य ।

मुस्तफी, मुस्तफो-वि० [अ० मुस्तफा] १ पवित्र, पुनीत ।

२ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल ।

३ जिसमें श्रवण न हो, गुणवान ।

स० पु०—१ हजरत महम्मद साहिव का खिताब ।

२ पीर-पैगबर ।

मुस्तरका-वि० [अ० मुस्तरक] जिसमे कई लोग मिले हुए हो, सामे का, सामुहिक ।

मुस्तसना-वि० [अ० मुस्तसना] १ जो किसी प्रकार की पावदी, शर्त या कानून के दायरे मे न हो, मुक्त, स्वतंत्र ।

२ प्रतिष्ठित ।

३ चुना हुआ ।

४ अपवाद स्वरूप ।

मुस्तहक-वि० [अ०] १ स्वत्व या हक रखने वाला, हकदार ।

२ योग्य, लाइक, सुपात्र ।

३ जरूरत मंद ।

मुस्ताक-देखो 'मुस्ताक' (रू भे)

उ०—परिया विरह दी मुस्ताक, न करदी दिल न्यारे ।

रसोलीराज री गीत

मुस्ती खांड-स० पु०—एक प्रकार की शक्कर जो कम सफेद व घाटे की तरह वारीक होती है तथा इसमे कुछ ढेले भी बंधे रहते हैं । इसकी प्रकृति शीतल मानी गई है । गुडिया-शक्कर ।

उ०—दोहती-दोहती वो उण सेठ रै घरं पूगी । वो बोरी सू मुस्तीखांड जोखती हो ।—फुलवाही

मुस्तद-वि० [अ० मुस्तद] १ सन्नद्ध, कटिवद्ध, तैयार, तत्पर ।

२ चुस्त फुर्तिला निरालस्य ।

३ सावधान, सचेत, होशियार ।

४ चालाक ।

रू० भे०—मुसंद

मुस्तदी-स० स्त्री० [अ० मुस्तदी] १ 'मुस्तद' होने की अवस्था या भाव ।

२ तत्परता, तैयारी, उम्साह, सन्नद्धता ।

३ फुर्ती, चुस्ती ।

४ सावधानी सतर्कता, होशियारी ।

५ चालाकी ।

मुस्लमाण, मुस्लमान, मुस्सलमाण, मुस्सलमान—देखो 'मुमलमान' (रू भे)

उ०—१ नह सख्या कजरा नका सख्या केकाणा । नह सख्या हिदुवा सख नह मुस्सलमाणा ।

उ०—२ 'अजन' इद्र अवतार, कियो दरवार हरखे । हिदू मुस्सलमाण रहे अचरिज्ज निरखे ।—रा रू

उ०—३ 'अभो' उजागर अरक ज्यों, जस इम करे जिहां । डरी सकी 'अगजीत' स, हिदू मुस्सलमान ।—रा रू

मुहगो—देखो 'मू'गो' (रू भे)

उ०—ईडर की घर अउलगाण, हू तउ जाणण देसि । घरि वडठाही आभरण, मोल मुहगा लेसि ।—ढो मा

मुहडो—देखो 'मू'डो' (रू भे)

मुहम—देखो 'मुहिम' (रू भे)

उ०—दखण देस मुहम, नयर मुक्काम महीकर । भुगति घाउ

भूपाळ, वरस गुणचासा भीतर ।—गु रू व

मुह—देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ आयो 'गजसाह' उमारि असंमर, जोध तयारा जोधपुरी ।

मुह आगळि तात तणी कळि माती, मारण केवी 'माल' हरी ।

—गु रू व

मुहकणो, मुहकवो—देखो 'मूकणो, मूकवो' (रू भे)

उ०—दखणी दखण पसरिया दळ, किरम कडा करस्सण मेहळ ।

दखणी कटक चहू दिस दौडै, महिकर नह मुहकयो राठोडै ।

—गु रू व

मुहकणहार, हारी (हारी), मुहकणियो—वि० ।

मुहकियोडो, मुहकियोडो, मुहकयोडो—भू० का० कृ० ।

मुहकीजणी, मुहकीजवो—भाव वा० ।

मुहकम—वि० [अ० मुहकम] १ दृढ, मजबूत, पक्का ।

उ०—भर गाव माहै खेजडी हुती तिण सेती च्यारे बाघा मुहकम ।

तिण ऊपर ढाहर वधाडिया ।—द वि

२ टिकाऊ ।

३ अटल, अडिग ।

४ चिरस्थायी ।

५ फसा हुआ, जकड़ा हुआ ।

उ०—वात मुक्ते गात वध, मुहकम माया माहि । सफरी सुवा जाळ पिजरे, सिर निकळें घड निकसै नाहि ।—रज्जव

रू० भे०—मुहकम, मुंहकम ।

मुहकमो—देखो 'महकमो' (रू भे)

मुहकाण, मुहकाणि—देखो 'मुकाण' (रू भे)

उ०—१ भरजन आख मताण, पापण भय वीहै प्रयो । दे भेळा

मुहकाण, भली मनावी भीमवतु ।—भरजन हमोर भीमोत री वात

उ०—२ मइ मूरखि अजाणि अविणउ कीघउ तुम्हा रहई । मूं

मोटी मुहकाणि तुम्ह, खमउ अवरारु गुह ।—सालिभद्र सूरि

मुहकियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुहकियोडो)

मुहगो, मुहघो—देखो 'मू'गो' (रू भे)

उ०—१ ताखो आवो लावयो कामण प्यारा कत । मोल मुहगो मनि समो, सोक्यु रहे निरखत ।—व स.

उ०—२ सीत कालि दिवसिइ गोधूम अद्धि थाई, वेटी आपणे सासुरे जायइ, पास रग मुहघा थाई कवलि जोइ ।—व स.

मुहछाळ—देखो 'मूछाळ' (रू भे)

उ०—मुडे नह कोय थुडे मुहछाळ । फडे चढ पेम फडे किरमाळ ।

—पे रू

मुहन्नि—देखो 'मून्' (रू भे)

मुहजउ, मुहजु—देखो 'मू'जो' (रू भे) (उ र)

उ०—इणि मारीमइ मुहजु भिडतु बीजउ कोई घाउ तुरतु । इस सुणी नई घायउ पत्थु, झूझइ भीम मिलउ भडसत्थु ।

—सालिभद्र सूरि

मुहरे, मुहरे—देखो 'मुहरे' (रू भे)

उ०—१ जुटिया विहै आवरत जुहरी, घाए रीठ घडइ घमचाळ ।  
उठ मद्या आवधा मुहरे, पाद्या दियण परत री वार ।

—महादेव पारवतो री वेलि

उ०—२ यु मयाराम नै माल तोरण रं मुहरे लाई । सात वीस  
महेनीया निगवणन आई ।—मयाराम दरजी री वात

उ०—३ 'पाळ' कळोवर पक्कर पूरै, खंगा घाहण खागां मूरै ।  
धाटा मुहरे घाणा मूरै आराणा माथे दळ करै ।—यु रू व

मुहरी—देखो 'मुहरी' (रू भे)

उ०—१ त्रिजडा मुहरे तर तूटै, वसु पडियो प्राण विछूटै ।

—रू

उ०—२ अतरग जे माया घरइ, मुहडा नी मलि मलि नवि करइ ।  
सुख दुख घणउ जाणइ जेह, प्रीतू मांणम कहीइ तेह ।

—नलदबदनीराम

उ०—३ दिन घडो ४ वासली थो तरै आ ठाकुरा सहर ऊपर  
दोढाया । सेहर भेळ नै कोट रं मुहरे री छै तठै जाय मोरची  
मांहीयो ।—नैणसी

उ०—४ हे कथ आपरै मुहरे घोळा खत ग केम देखतां आपरै  
विमेषतो जीवण री आम नही चोथी पछेवही प्रायोडा हो ।

—वी स टी

मुहरे—देखो 'मुहरे' (मह, रू भे)

उ०—उज्जयणी पुहचाविज्यो जी, वित्तसु अमृद्यत वोल । मुहत  
मांयउ वचन ते जी, रग रली चित गोलि ।—वनकसोम वाचक

मुहरे—देखो 'मुहरे' (रू भे)

उ०—१ मुहरे आव जणानड, मगल वाहिर आवइ । जोरि न  
काव्यउ ए जावइ, राजा नै मनि भावइ —वनकसोम वाचक

उ०—२ महीम कहित मुहरे तिहां आवी । मुहरे हरिखिई वोलइ  
भावि ।—होराणद मूरि

मुहरे—देखो 'मुहरे' (रू भे)

मुहताज—वि० [अ०] १ गरीब, निर्धन, धनहीन ।

२ दरिद्र, कगल ।

३ जो धनहीन आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिये दूसरों का मुह  
ताकता हो, जो दूसरों पर आश्रित हो, जो परवश हो ।

४ जिने किसी की सहायता की जरूरत हो, जरूरत-मद ।

५ जिनकी कामना या इच्छा की गई हो, इच्छित, वांछित ।

उ०—सु दैत्य दमनी नै नेहो बुनाय पहराई छै, दैत्य दमनी खुसी  
हुई, मुहताज पाई ।—पच दही री वारता

रू भे०—मोहताज,

मुहताजो—स० स्त्री० [अ०] १ 'मुहताज' होने की अवस्था या भाव ।

२ गरीबी, निर्धनता ।

३ दरिद्रता, कगली ।

४ परवशता, विवशता ।

मुहती—स० पु०—देखो 'मुहती' (रू भे)

उ०—१ भलड भलड सुधरिनी वृद्धि, देखत मुहता तणी कुबुद्धि ।  
विना दोख पुत्री दूहवी, मिथ्यउ कलक रिबि पामी नवी ।

—कनकसोम वाचक

उ०—२ तीन भहारी नीवडें, मुहती पडें सुजाण । फोजदार  
वरियाम भड, रामो पड रिण-ढाण ।—रा रू.

मुहपति, मुहपती, मुहपत्ती, मुहपोती—देखो 'मुहपति' (रू भे) (उ र)

उ०—१ केई अजाण कहैं म्हे तो ओघा मुहपति नैं वांदां । म्हारै  
करणी सू काई काम ।—भि द्र

उ०—२ विण घोयै विण लूहण पात्रै, एकासण तिम पुरिमड  
मात्रै । गई मुहपोती आविता सारी, तिम ओघै अट्टिम भवधारो ।

—घ. व य.

मुहवत—स० स्त्री० [फा०] १ एक दूसरे के प्रति होने वाला प्रेम, प्रीति ।

२ स्त्री-पुरुष या युवक-युवती में परस्पर होने वाला प्यार, इश्क,  
लगाव ।

रू भे०—महोवत,

मुहम—देखो 'मुहिम' (रू भे)

उ०—१ एक बादसाह नू मुहम पण करही वणी, तरै प्रभू सू कील  
कियो ।—नी प्र.

उ०—२ परदेसां की मुहम बतावो, फेर कोई किसीय वहानैं ।  
राज बहुत विष सू समझायो, यो मनडो नहीं मानैं ।—लो गो

उ०—३ पछै महाराजाजी नू जेसवजी नू नानग गुहरी मुहम दोनी  
तरे सहरोरे पवारिया सवत १७६८ ।—रा व वि

उ०—४ जाय नवोडा सासरे, आसू नाख उसास । मावडिया जावे  
मुहम, इण विष हुवें उदाम ।—वा दा

उ०—५ मुहम प्रकोप उदेपुर माथे, मातैंइ महण थया किर साथे ।  
लाघा जळ वेमामो लीजें, छोजे जतु प्रजा पुर छोजे ।—रा रू

उ०—६ यों नव व मुख आशियो, मुहम किरें मो ताम । 'अजन'  
मिळें पतसाह सू टळें दमगळ जाम ।—रा रू

उ०—७ मुहम सिरही मुलक, सरद करि लेहु पेमकम । लेहु  
सलामी लहें, विखम मेवाइ करें वस ।—सू प्र

मुहमह—देखो 'मुहिम' (रू भे)

मुहमांगी—वि०—इच्छित, वांछित ।

मुहमेज, मुहमेजो—स० पु०—१ युद्ध, समर ।

२ मुठ भेड, झड़प ।

क्रि० वि०—ग्रामने-सामने, सम्मुख ।

उ०—१ मूर तन तैज भरळाट पोरम सरस, वित सु छळ जैज  
नह घरै घडीवव । नंज व दोहु ओछाड कोटा नवां, थया मुहमेज  
घरती तणा थय ।—पहाटगां आढी

उ०—२ वेपुरीदो लोग मो रहै नहीं, वरछी हाथ सेवें तोलै कहै-  
हेकर मे मुहमेजा हुवें तो ही पैले री छाती मां देवां ।

—मारवाइ रा अमरावां री वारता

वि०—वीर गति प्राप्त ।

रू० भे०—मुहमेज, मुहमेक मुहमेज,

मुहमेक—देखो 'मुहमेज' (रू भे)

उ०—पीछे दूजे फौजां रा मुहमेक हुआ नै तठै साराई सैण करी ।

—द दा.

मुहमेक, मुहमेक—वि०—१ मिलनसार, व्यावहारिक ।

२ एक प्रकार की तुक बदी ।

उ०—ती चवदह दस गुरु लघुवत, यण मुहमेक चवदमी अत ।

—र ज प्र

३ देखो 'मुहमेज'

उ०—१ इम दुरोस भइसियं आयी दळ दुरवेस ऊठ दरसायी ।

कथो मुहमेक कियो नवकोटां, असुर गया भज घाटी ओटा ।

—रा रू

उ०—२ कथो मुहमेक प्रथम दिन कीधो, लुड धुड गयो कोट निठ लीधो ।—रा रू

उ०—३ काज भडा वकडा, 'अजन' महाराज उचारै । मीर थयां मुहमेक, वीर किम जेक विचारै ।—रा. रू

रू० भे०—मुहमेक, मुहमेक

मुहमेक—देखो 'मुहिम' (रू भे.)

उ०—चित साह चितवै, भीम इक राह निभम्मा । खुरासाण घमसाण, राण घेरियो मुहम्मा ।—रा रू

मुहम्मद—स० पु० [अ०] इस्लाम या मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक, अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जो ईस्वी सन् ५७० से ६३२ के बीच में हुए थे । मुसलमान सम्प्रदाय इन्हीं से चला । ये पैगवर माने जाते हैं ।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय । मगरिब मक्के मन्नत मनाय । चच्चे मामूकी धो चकार, बिस्मल्ला करै न बार बार ।—ऊ का

वि०—प्रसन्नित, प्रसन्नानीय, सराहनीय ।

रू० भे०—महमद, महमद, महमुद, महमुद, महम्मद, महिमुद महिमुद, ममद ।

मुहम्मदी—वि० [अ० मुहम्मी] मुहम्मद का, मुहम्मद सम्बन्धी ।

स० पु०—१ मुहम्मद साहब का अनुयायी, मुसलमान ।

२ एक प्रकार का सिक्का ।

३ एक प्रकार का बढिया वस्त्र, मलमल ।

रू० भे०—महमदी, महमुदी, महमुदी, महमूदी, महमूदी, महिमुदी महिमुदी ।

मुहर—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ कुवरसी वेहई में पाच मुहर घाली ।

—कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ भीतर नू जुहार कहायो सो मुहर दस और नारियळ तो गोपाळदास नू और दोय दोय मुहर नारियळ वेटा नू ।

—गोड गोपाळदास री वारता

उ०—३ ब्रह्मादिक मुहर विसन वर समवड, घणइ उमग नाइ घमड घणइ । सवण जस आवड सामळता, तोरण प्रभु हेमगिरि तरणइ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ गयद 'मान' रै मुहर ऊमो हुतो दुरद गत, सिलहपोसा तरण जूथ साथै । तद वही रूक अणचूक 'पातल' तरणी, मुगळ बहलोलखां तरणै माथै ।—गोरघन वोगसी

उ०—५ गुडै मयमत सेना मुहर गैमरा, प्रकटिया मारका घाट जोवापुरा । घूमियो हैय पुरा पाय अरवद, पसरियै सिध परवत थया पाधरा — द दा

उ०—६ वधाऊ मुहर मेलिह विध सू, तांह भांहचइ दीध बधाई आय । भाई जान घणइ आडबर, घोराडिया जांगी घण घाय ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—७ मार लियो कहतै मुहर, उर खीजियो छडाळ । किर गजराज सघारियो, सिध करतै आळ ।—रा रू

उ०—८ कूपावत पहिलै अणी, वावर खग करग । भीमाजळ सारां मुहर, पडियो धारा लग ।—रा रू

उ०—९ 'भीम' राणा खूमाण, वियो विकमाइत वभण । त्रियो 'खान दाराव' मुहर मडै कळि मत्यण ।—गु रू. व.

उ०—१० भेळा जूल भळवकै भालै, मुहर कियो जोधै रिएमालै ।

साहण—समद दिलीचै सामी, दीनी 'गाजीसाह' दर्मांमी ।—गु रू व

उ०—११ वइरसी तुरी वीरति वाइ, घण भूकइ भेलिय मुहर घाइ । घोकारव घुण ही वाजि धार, आंमाल फिरी पाखी अयार ।

—रा ज सी.

उ०—१२ मेलिय प्रधान कहियउ मुगुलि । घर साजि मुहर हू म करि छिल्लि ।—रा ज सी

मुहरखो—सन्देश वाहक ।

उ०—१ मूगळी घड़ा आवइ मजूस, जासूम फिरइ पसत जापूम । मुहरखे भावि कहियउ मुहाह, अमपति सेन आवइ अयाह ।

—रा ज सी

उ०—२ जु जाय गोडां ठाकुरा नू कहौ वळ छै तो काठा माटी हुया, नही तो परा नासज्यो । फोज पठाणा री आकरी आवै छै ।

साहरा तो घोडा थाकौ हुवो । थे जाय नै भाखरसी नू कहिजो । राजा नू काढजो । काम आवजो । इम सुण नै मुहरखा पाछा चलाया ।—राजा नरसिध री बात

मुहरत—देखो 'महरत' (रू भे)

उ०—१ भादवै री देव भूलणी एकादसी रं दिन मुकळावा री मुहरत हो, उण भे फगत च्यार दिन आडा रंग्या हा ।—रातवासी

उ०—२ इतर कुवर विचित्र नू बुलायो सो कुवर पोसाख भली भाति सू करि, आपरा हजूरिया नै साथै ले आयो । दरवार सारां ही ऊठ ऊमो हुवो । पुरोहित सू कुवर मिलियो । कुवर राजा रं मुहंटे आगे वंठो छै । मुहरत ठीक छै ।—पलक दरियाद री बात

उ०—३ मिलिया दळ जोवाण मकि, देखै भूप दुवाह । डेरा दिल्ली



दिम दिया, मुभ मुहरत 'अमसाह' ।—सू प्र.

मुहरम-सं० पु० [अ० मुहरम] इस्लामी या अरबी वर्ष का पहला महिना ।  
वि०—वर्जित निषिद्ध ।

ॐ भे०—माहरम ,

देखो मुहरम' (रू भे)

मुहरमुह-क्रि० वि० [स० मुहम, मुहम] बार-बार, रह-रह कर, पुन पुन ।

उ०—बोलति मुहरमूह विरह गये वे तिथी सुकल निसि सरद तणी ।

हमगी ते न पास देखे हम हम, हम न देखे हमणी ।—वेलि

ॐ भे०—मुहुरमुह,

मुहराद-स० स्त्री०—१ मुख कान्ति ।

उ०—गज वधी डम आखियो, करि धूणें कर माळ । 'गोइद' मायें आचमी, त्यां निरि आयी काळ । 'केहरि' वेंडी (वै) घण , मज्जीठी मुहराद , 'करत' 'कमी' ककें मते वे ऊभा पडगाहि ।—गु रू व क्रि० वि०—२ आगे ।

उ०—पौह घणा भागळा गई मुहराद पडि । चाव गुर 'जसी' जिण वार वर मोह चडि ।—हा भा

१ देखो 'मुराई' (रू भे)

मुहरि—१ देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ जुगति वात हू कहू तूक जिम । तू अप मुहिर वात कहिजे तिम ।—सू प्र

उ०—२ छोराम मुहिर लंका समरि, कियो 'अजै' कपि जिम करू । भागटू सेर-विलद हू, अमरपूर जाऊ अर रभ वरू ।—सू प्र

उ०—३ समूह मेन असल मफां, अगिग मुजर्कें मफळी । मल्हपति कोजां मुहरि मंगळ, मूड डोहै सिधळी ।—गु रू, व

उ०—४ खान वरावा खडकियो, ले मर्त्य भर भार । 'गजगु' कटवकां हूई मुहरि कळि मथयण जोघार ।—गु रू व

उ०—५ अघपति चढे देव मे अस, रजपूत चढे छतीस वस । महोवर राजा मुहरि मड, डावै ली जोगणि भुजाडह ।

—गु रू व

उ०—६ ग्रहाति भगी सपेखै ग्रहतां, जिताई असुर सुर वरा सतां । 'भगवत' तणी दोठ हिक भिटती, सुपह अयारां मुहरि सग्राम । जुग चहु लगे वडा जुव जोया, भडां पगारम पयपें भाण । माभी भीचा मुहरि मूर जिम, जुइतो नह को दोठ जुवाण ।

—लकवी वारहठ

उ०—७ दिल्ली जंत गुधोन सहसदस, राजा मुहरि मरण रिम-राह । सुभ दानार जुभाण सुवातां, दान च्याणि वकासिया दुवाह ।

—गुभराज गौड री गीत

२ देखो 'मोरी' (रू भे)

मुहरिर-सं० पु० [अ० मुहरिर] १ वकील का मुन्शी ।

२ लेखक ।

३ निषिक्त, क्लृप्त ।

मुहरिरी-सं० स्त्री० [अ० मुहरिरी] १ 'मुहरिर' का पेशा ।

२ मुन्शीगिरी ।

मुहरी—देखो 'मो'गी' (रू भे)

उ०—१ वहै साज वीटिया, विहद मुखमला बनाता । रसम तग मुहरियां, तखी दुरखी दरसाता ।—सू प्र.

उ०—२ ऊपर साह उतारियउ, मन खोटइ मनुहारि । पगसू ही कूटियठ, मुहरी भाली नारि ।—ढो मा

२ देखो 'मोहर' (रू भे)

मुहरे—देखो 'मोहरे' (रू भे)

उ०—वाळियो वर-वैरा तणे वाहू, अमर मुहरे हुये सर रग आयो ।

—अमरसिंद राठोड री बात

मुहरो-सं० पु० [स० मधुर] १ विप, गरल, माहुर ।

उ०—गिर सू पडिये घाय, जाय समदा हूविये । मरिये मुहरो खाय, मूरख मित्र न कीजिये ।—अज्ञात

२ देखो 'मो'री' (रू भे)

उ०—आडि पेच करि अडिग, पाघ पर घर हम्मा पर । लाज विरज साईत, जत्र मुहरा सिर ऊपर ।—सू प्र

३ देखो 'मोहरी' (रू भे)

मुहल—देखो 'महल' (रू भे)

उ०—पातिमाह मनि वात विमासी नाहर मलिक बोलाव्यउ । साधि यिकउ भोजलु खांडाघर, मुहल आगिलइ आव्यउ ।—का दे प्र

मुहलत—देखो 'मोहलत' (रू भे)

मुहलाअत मुहलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—ऊभी आय अचानकै, कहै सोक तुम कोय । मुहलाअत ऐह माग को, मलियो महरम मोय ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाडेल री बात

मुहलो, मुहल्ली—१ देखो 'महलो' (रू भे)

२ देखो 'महल' (अरपा, रू. भे.)

उ०—आप कह्यो जु म्हे तो मास ७ रहिस्या, सीख नही कहा । इतरो कहिनै अचळजो मुहल पवारिया ।

—लाली मेवाडी री बात

मुहवड, मुहवडि-सं० स्त्री०—१ युद्ध के समय हाथी की सूड पर धारण करने वाला कवच ।

उ०—निस्कटक राज्य प्रतिपालतां सग्राम विसय कदाचित् उपजइ, विपत्ता अहत्पुण्या माचरिया क्षेत्र मूडाविउ, बिहू गमी मन्नद्वद नीपना सभटे जरदि जीण साल लीवी, मयगल गुडिया, सुडादडि मुहवडि घातिया ।—व स

२ आगे का भाग ।

उ०—डम काम समरि वे समरथ समवडि, मुहवडि चडी गुरराय रे

—आगम माण्डव्य

मुहाणी, मुहाणी-सं० पु०—१ प्रवेश द्वार ।

२ अग्र भाग ।



३ नदी का मुख ।

क्रि०वि०—सम्मुख सामने । आगे ।

रू०भे०—मुहाणी, मुहाणी,

मुहामहि—क्रि०वि०—सामने, सम्मुख ।

मुहा—सं०स्त्री० [सं०मुघा] १ झूठ, असत्य, मिथ्या ।

उ०—भक्ष्य भोज्य सवि भीमि निहालि, खाय खाखसि करी मुखि वाली । चहि माहि मुहा मलिउ प्रीमि, खीच कीचक कर भद्र भीमि ।—सालिसुरि

२ व्यर्थ, निरर्थक ।

मुहाजीवी—सं०पु०—भिक्षा वृत्ति से जीवन निर्वाह करने वाला ।

उ०—मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निरदूखण आहारी रे । निरजरा हते करे तपस्या, फिर फिर न करे हारी रे ।—जयवाणी

मुहाडि—विचार विमर्श ।

उ०—खीव ऊरिया, खाण भोजव्या, भूजाई नीपनी मयणी मुहाडि हुई, सेलहयनइ सीखामण हुई ।—व स

मुहाळ, मुहाल—सं०पु०—१ मधु मक्खियों का छाता ।

२ पशुओं के मुह में होने वाला एक रोग जिससे पशु के मुह में छाले हो जाते हैं ।—(शेखावटी)

३—प्रसन्न चित्त, खुश ।

उ०—सो कोट जाय कवजे मांही करियो लोग सगळी ताजी थो हीज, हमे विसस ताजी मुहाळ हुवो ।—सुदरदास भाटी, बीकू पुरी री बात

४ देखो 'मुहाळी' (रू भे)

मुहाळी—सं०पु०—१ हाथी के दांत पर, शोभा के लिये लगाई जाने वाली पीतल की चूड़ी या वद ।

२ दरवाजे के आगे का ऊपर का भाग ।

मुहावरेदार—वि०—जिसमें मुहावरो का सम्यक प्रयोग हुवा हो, मुहावरो से युक्त । (कथन या भाषा)

रू०भे०—मुहावरेदार,

मुहावरो—सं०पु० [अ०मुहावर] १ वह शब्द, वाक्य या वाक्यांश जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो ।

२ श्रम्यास, आदत ।

रू०भे०—मुहावरो, मुवारो,

मुहासिर—सं०पु० [अ०मुहासर] किसी किले या सेना के पडाव के चोरी भोर किया जाने वाला घेराव, युद्ध का घेरा ।

मुह ह—मुख पर ।

उ०—मूगळी घडा आवइ मजूस, जासूम फिरड पसत जापूम । मुहरले आवि कहियइ मुहाह, असपत्ति सेन आवइ अयाह ।—रा ज सी

मुहि—१ देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ माइ राइ मुहि मूछ मोडि, केल्हण कटक तांणिया कोडि ।

काळइ कलुळि जागळू काजि, रउद्रां दळ ताणिय देवराजि ।

—रा ज सी.

उ०—२ कीघो विसेख करतं कळह, तरसि तूंग चादै' तणै । वणियोक चद सकर वदन, सुजड घाइ मुहि सामणै ।—गु रू व

उ०—३ वपि विहड पळ खड, तेग तिमछा मुहि तुटो । धारा मुहि घडछियो कुम किरि काली फूटो ।—गु रू व

उ०—४ गजदता मुहि चडै, जिकै गजदत विभाडै । गाडि सीम गज भीम, गयण गज रूप भमाडै ।—गु रू व

२ देखो 'मुहिम' (रू भे)

उ०—१ अमर अनइ पीयल्ल अचागळ, वरविय राइ मल्ल अतुळीवळ । जोडाळां मुहि दियण जवोडां, राम सिहाइ हु अउ राठोडा ।—रा ज सी

उ०—२ अभिनमा चोंडरज मुजा वळ एरसी, छात्रपति ग्रहे ग्रहे हूत छौडै । असपत्ति तणा दळ पूठि तो उवरै, मुहि चडै असपत्ति तूहिज मोडै ।—गु रू व

उ०—३ हुऐ मीर संघार, सोक सर पूर विछूटै प्रळं काळ आव्रत, फोज फोजा मुहि जुट्टै ।—गु रू व

उ०—४ मार की वार मभि मारका ओलै लख दळ उवरै । सत्र सेन तुम सागणहरा, मुहि मावै सोई मरै ।—अ०वचनिका

१ देखो 'महि' (रू भे)

मुहिअड, मुहिअड, मुहिड—वि०—१ मुख्य, प्रधान ।

उ०—मुहिअड मोनिगरै फतमल्लो, दुजडाहणो जोड तिए 'दल्लो' । 'कमा' सदा आगळ नवकोटा, चडियां पति आरति चड चीटां ।

—रा रू.

२ थोडा, भट, वीर ।

३ सामने, समुख ।

४ आगे ।

उ०—वासं तेग ज फोज बिराजो, मुहिअड भीम हरीळां माभी ।

—गु रू व

रू०भे०—मुहियड मुहियड,

मुहिनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रू भे)

उ०—वाहै लग चूहड—खान विफ्राळ, नाराजक वाजतणो मुहिनाळ । आ वाहि पठाण सकै न उभारि । तितं भड 'सेर' वाही तरवारि ।

—सू प्र

मुहिम, मुहिम्म—सं०पु० [अ०मुहिम] १ युद्ध समर, सग्राम ।

उ०—१ 'अवगी' रतना रौ, तिमरणी रा, मुहिम मे चोरी की तद राजा गर्जसिध गरदन मरायो ।—नंगसी

उ०—२ घुघ हुऐ सारी घरा, सहर दिनी पडि सोर । मुहिम हुता त्या मडि भौ, ज्यां सहजादां जोर ।—वचनिका

उ०—३ जिण रे उर लालच जच्यो, बाजं किए विव बीर । मय मतीर वे भड मुहिम, फीणा साटं कीर ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—४ भटनेर भजि सरसउ सघार, हिसार कोट मन्नावि हार । नरहड मुहिम्म माडियउ नास, वडसी नह हासी करइ वास ।

—रा ज सी

२ मुद्द-यात्रा, सेना का प्रयाण, चढ़ाई ।

उ०—ग्रामोजी दमराहो पूजि अर मुहिम कीवी । ताहरा बडी फोज  
कर मालदेजी घाया होज ।—नैगसी

३ किमी बडे या महत्वपूर्ण काय के लिये किया जाने वाला प्रयाण,  
प्रस्थान, यात्रा ।

उ०—बूवना मुणी तद नेथा खवाम नू कही—जलाल साहिब करडी  
मुहिम नू जावें छैं ।—जलाल बूवना री बात

४ सेना, फौज ।

५ फौज का अगला भाग, हरावल ।

६ कोई महत्व पूर्ण या बडा कार्य ।

७ महिमा, प्रशंसा ।

८ तपस्या ।

क्रि०वि०—१ सम्मुख, सामने ।

२ ग्रामने—सामने ।

३ आगे, अगली ।

वि०—४ अम में डालने वाला, आमक ।

रू०भे०—महम, महिम, मुहम, मुहम, मुहम, मुहमह, मुहम्म, मुहि,  
मुही, मुहीम ।

मुहियड—देखो 'मुहियड' (रू भे )

मुहियो—वि०—१ प्रधान, प्रमुख, नेता ।

उ०—सू भागचदजी दरबार रा सामवरमी छा, फौज रा मुहिया  
ते छैं ।—द दा

२ व्ययं, निरर्थक । (उ र)

३ बाटने का भाव ।

रू०भे०—मुहियो, मुहीमो, मुहीयो,

मुहिर—स०पु० [स०] कामदेव, मदन ।

वि०—मूर्ख, मूढ़ ।

क्रि०वि०—आगे अगली ।

उ०—धीरति असिमर याहि, दूदाउत भाजैं दुइण । रतनो छलि  
राजा रतन, मुहिर रहे रिण माहि ।—वचनिका

मुहिली—१ देखो 'महल' (रू भे )

२ देखो 'महिला' (रू भे )

मुहियटो—स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—नीलवटा, चकवटा घोटवटा, मुहियटो, नाटी दोटी घटीकठपीठ  
पापही विही रेट चूनही ।—व स

मुहो—वि० [प्र०] १ जिन्दा करने वाला, जीवन दान देने वाला, प्राण  
दाता ।

२ पक्का, दृढ़, मजबूत ।

उ०—छटा मार सबद का गोळा, मुही मोरचा भागा । ग्यान ध्यान  
का हाथि अटग लें, मन मू लडिवा लाग ।—स्त्रीहरिरामदास जी  
महाराज

रू०भे०—मुही,

३ देखो 'मुहिम' (रू भे),

उ०—जुमो हजार अगई लोग मिपाही रहे । तरै खुसी आवैं सो  
चाकगी करावो । करडी मुही में भेजो ।—जलाल बूवना री बात  
४ देखो 'मे' (रू भे )

मुहीमो—देखो 'मुहियो' (रू भे ) (उ र)

मुहीम—देखो 'मुहिम' (रू भे )

उ०—१ अरु पातसाह जी गुना माफ कर फेर मुनसब दियो । तथा  
मुहीम का हुकम दिया सू सरजाम हुवो नहीं ।—द दा

उ०—२ इव करता वरम दोय—तीन नू वादमाह री कूच लाहोर  
नू हुवो । सो लाहोर आयी, कावल ऊपर मुहीम करी ।

—अमरसिंह राठोड री बात

उ०—३ नवाव मुहीम मर कर पदमपुरे सू पाव कोसेक गांव थो  
उण मे आ उतरियो थो ।—पदमसिंह री बात

मुहीयो—देखो 'मुहियो' (रू भे ) (उ र)

मुहगो—देखो 'मूगो' (रू भे )

उ०—मुलमुल मुहगा मोल की, ताकी यागी कीन । सुदर आवी  
सामहि पीउ कौडि कर लीण ।—व स

मुहगु—देखो 'मुहगो' (रू भे )

मुहुर—१ देखो 'मधुर' (रू भे )

उ०—वाणी बोलइ मुहुर, विमल किरि गगा बाणी । राणी  
चउसठि सहस, जास रुवहि इद्राणी ।—प्राचीन फागु सग्रह  
२ देखो 'मोहर' (रू भे )

मुहुरवाई—वि०—परोक्षवादी निदक । (उ र)

मुहुरणी, मुहुरवी—देखो 'मोहरणी, मोहरवी' (रू भे )

उ०—वनि वनि केसू मुहरिया, तनि तनि त्रिगुणउ काम । हे ।  
हे ! दंव ! हणि किमि, हईडा भीतरि हाम ।—मा कां प्र

मुहुरत—देखो 'महुरत' (रू भे )

उ०—करणीगर रूडा करै, करनं विलव न काय । मार उपावै  
मेदिनी, मुहुरत हेकण माय ।—ह र

मुहुरमुह—देखो 'मुहुरमुह' (रू भे )

मुहुरियो—देखो 'मोहुर' (प्रत्पा, रू भे),

मुहुल—देखो 'महल' (रू भे),

उ०—१ अलखान आयसि पूतारइ, ततखिए गयवर गुहीया । बालि  
तणा तेजी पखराव्या, मलिक मुहुल माहि तेडघा ।—का दे प्र

उ०—२ मल्ल भाट सुरताण पय, आयउ मगण कज्जि । मुहुल  
तलइ जइ द्वा करइ, जिहां खडै असपति सज्जि ।—प च चौ.

मुहुसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू भे )

उ०—सूरिण तणइ बसि हु आज । बडा पुरुमनी नाणूं लाज ।  
गोल्हण तू मनि कविसि आळ । हिब लाजइ माहरू मुहुसाळ ।

—का दे प्र.

मुहुई—देखो 'मुहुई' (रू भे )

उ०—भागोज मूढी लेय पाघड साहि मुहुरै मूक । गोरिल बोलै फिट्ट  
सुभ नै, जाती थारी में थूक ।—प च. चौ.

मुहूरत—देखो 'मुहूरत' (रू भे)

उ०—१ परवाने परधान पूछिया, लगन मुहूरत वारि लेहि । आवै  
कियै दिहाई ईमर, कंहो राव सो बात कंहो ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तिण भय करि अर राजि आगळि ओ जवाव कियो ।  
राजि उठा हुतो भलै मुहूरत खडिया छै ।—द वि

मुहुरी—देखो 'मू'गी' (रू भे)

उ०—मिसजर के मिस मन भयो, पीउ जो लाय बुलाय । मोल  
मुहुरी थै लीयो, सो माहरे आवी दाय ।—व स.

मुहुरी—सं० पु०—सामना, आगा ।

उ०—१ इतरें में बगळाळ खडा था उहा भेलिया उहा री मुहुरी  
भालियो ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ राव ई वेळा मुहुरी स आहिज कहै छै—जे बडा सरदारां  
सुप्ररंड री जाबतौ राखजो, मुहुरी भालिया रहो, लोग समीडो देख  
फेर आण पडसी ।—डाढाळा सूर री बात

मू—सर्व [सं० अस्मद्] १ मूँ, मैं ।

उ०—१ साग्रह नह छोडूह तोडूहैं जड ताहरी । मू खजर  
मोडूह, काळज फीफर छेकर ।—पा प्र

उ०—२ तू वामण वाणय री, कं विणजारें री घोय । ना मू  
वामण वाणय री, ना विणजारें री घोय ।—लो गी  
२ मुके, मूकको ।

उ०—रमता जगदीसर तणो रहसि रस, मिथ्या वयण न तामु  
महै । सरसै रूखमणि तणो सहचरी, कहिया मू मैं तेम कहै ।

—वेलि

३ मेरा, मेरी ।

उ०—१ चकडोळ लगे इणि भांति सु चाली, मति तै वखाणएन  
मू । सखी समूह माहि इम स्यामा, सील आवरित लाज सू ।

—वेलि

उ०—२ पिडि नख पिख लगि ग्रहणे पहिरिए, महि मू वांणी  
वेलि मई । जग गळि लागी रहै असं जिमि, सहै न दूखण जेम सई ।

—वेलि

रू० भे०—मु, मू

मू देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—पीपळ खेजडी री व्याह माख्यो अर जागण-जीमण री  
परवव करघो । मू सै बाता पूरी हुई जके दिन सोनजी नै मांणी  
मू माग्यो फळ मिळग्यो ।—दस दोख

मूओडी—भू०का०कृ०—मरा हुआ, मृत्य ।

(स्त्री० मूओडी)

मूकगिर, मूकगिरी—देखो 'रिसीमूक' ।

मूकणी, मूकवी—देखो 'मूकणी, मूकवी' (रू भे)

उ०—१ घग घगती सगडी भरी, आणउ अति अगार । माहि  
मूकउ मानिनी, सटक देई सिणगार ।—मा का प्र

उ०—२ मान कहै दळपत्त री, लाभ निदान सुणाय । धाम न  
मूक साम का, तिण मुख सरम सवाय ।—रा रू

उ०—३ एकदा प्रस्ताव । दिली रें पातसाह सारी घरती माहै  
ढढ घातियो । गढ किरोडी मूकिया । ताहरा महेवे ही किरोडी  
आयो । ताहरा कानढवे सरव रजपूत तेडिया ।—नैणसी

उ०—४ तिवारें पतिसाहजो सरसो पाटण वास गांव दियो ।  
बयाणी, हेंसार, मेवात, रेवाडी समेत पडगना मूकिया । वहुत  
दिलासा मूकी ।—द वि

उ०—५ ससार सुपट्ट करता ग्रह सग्रह, गिणि तिणि हीज पचमी  
गळि । मदिरा रीस हिमा निदा मति, च्यारें करि मूकिया चढाळि ।

—वेलि

उ०—६ गिरवर मोर गहकिया, तरवर मूक्या पात । घणिया  
घण सालण लगा, वूठै तो वरसात ।—ढो मा

उ०—७ ढोला, ढोली हर किया, मूक्या मनह विसारि । सदेसउ  
नह पाठवइ, जीवा किसइ अघारि ।—ढो मा

उ०—८ मुख नीसासा मूकती, नयणें नीर प्रवाह । सूळी सिरखी  
सेफडी, तो विण जाणे नाह ।—ढो मा

उ०—९ मुरछित हो घरणी पडघो, वलि मूक है मोटा नीसास  
कि ।—प च चौ

उ०—१० मुगल मडाभड साहबी, मूक दोग दोग वाणी रे ।  
'लालचद' पतिसाह स्यु, पूज केही किम पाणी रे ।—प च चौ

उ०—११ ताहरा लाखंजी पूछीयो, "सीडी माहै कोण छै ?"  
कह्यो "जी, चच आढी छै ।" ताहरा लाखंजी पूछीयो, कह्यो,  
"सीडी घरती मूकी ।—लाखं फूलाणी री बात

मूकणहार, हारो (हारी), मूकणियो—वि० ।

मूकियोडी, मूकियोडी, मूकियोडी—भू०का०कृ० ।

मूकीजणी, मूकीजवी—कर्म वा० ।

मूकाणी, मूकावी—देखो 'मूकाणी, मूकावी' (रू भे)

उ०—१ ताहरा राव साथै आदमी दे दीव मूकायी । उठी बाहण  
वंसि दीव हालियो । इमो हीज समझ्यो हुवो । चोर न लागो, कोई  
जीवजंत न लागो । सयणी री वारता

उ०—२ ताहरा लाखंजी पूछीयो, कह्यो, 'सीडी घरती मूकी ।'  
सीडी घरती मूकाई नै लाखंजी निजीक आइ नै दूही कह्यो ।

—लाखं फूलाणी री बात

मूकाणहार, हारो (हारी), मूकाणियो—वि० ।

मूकायोडी—भू०का०कृ० ।

मूकाईजणी, मूकाईजवी—कर्म वा० ।

मूकायोडी—देखो 'मूकायोडी' (रू भे)  
(स्त्री० मूकायोडी)

मृकावली, मृकावली—देखो 'मृकावली, मृकावली' (रु भे)

मृकावलीहार, हारी (हारी), मृकावलीयो—वि० ।

मृकाविप्रोटी, मृकावियोटी, मृकावियोटी—मृ०का०कृ० ।

मृकावीजणी, मृकावीजवी—कर्म था० ।

मृकावियोटी—देखो 'मृकावियोटी' (रु भे)

(मृ०मृकावियोटी)

मृकियोटी—देखो 'मृकियोटी' (रु भे)

(मृ०मृकियोटी)

मृकी, मृकी—देखो 'मृकी' (रु भे)

उ०—१ उत्तम धृक् विलोचहि मध्यम मृकी थाप । वणिक अचम चिहना करे, पनसंगी सृ पाप ।—वा दा.

उ०—२ धक्का मृकी धूप दीप लातां रो देवै, नाक भाग नैवेद माघ पद इण विध सेवै —ऊ का

मृकी—देखो 'मृकी' (मह, रु भे)

मृग-म० पु० [स०मुद्रग] १ हर रग का एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न जिसकी दाल बनती है ।

उ०—१ छोड़त हृत्त ठामिज्यत्त, वधियत्त भूख मरूह । जाउ डोला रद्द मासरइ मफळी मृग चरूह ।—डो मा

उ०—२ मृग नाम लेणी मुनी, मृग पकावण वेर । अन दिन उण री प्रायजू, ठाटी भाठी देर ।—वां दा

मुद्रा०—(छाती पर) मृग दळणा=किसी को दिखाते हुए ऐसा काम करना जिसमें उसके हृदय में ईर्ष्या, दाह, जलन या कष्ट हो ।

२ उक्त द्विदल का पोषा ।

रु०भे०—मउग, मग, मुगु, मध,

मायाळ-म०पु० यो० [म० मुद्रग + स्याल] वेमन आदि की जमाइ हुई चक्की (भेगात) ।

मृगदणी, मृगधणी—देखो 'मृगदणी' (रु भे)

मृगपल्ली मृगफनी-म० स्त्री० १ जमीन पर फँसने वाला एक प्रकार का पीपल जिसमें खेती उसका फलों के लिए भारत [के प्रायः सभी भागों में] की जाती है । इसके फलों में तेल भी निकाला जाता है ।

२ उक्त पीपे की फली व उसके दाने ।

३ मृग नामक पौधे की फली ।

उ०—मुजादट गोवन घड्या रें कामन कलस मुनालि रे रग ।

मृगफनी चपावली रें, आगदिया मुविमान रें रग ।—प च चौ

मृगप-म० पु०—१ आदर, मत्कार ।

० मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

रु०भे०—मृगप,

मृगळ मृगल—देखो 'मृगळ मृगल' (रु भे)

उ०—१ उळ नाम उआरण मृगळ मारण, वंमि वधारण दान ।

मनमोट नगिद नमद जिमी महिइद जिमी अनमान ।—न पि

उ०—२ किम गोदृष्ट माई दिवराई, अगि एतली आहि । मागी म्नेद्य

माकडा मृगल, पछइ पड्या रिण माहि ।—का दे प्र

मृगाई-म० स्त्री०—१ बाजार में वस्तुओं की कीमतों या मूल्यों का उचित से अधिक होने की अवस्था या स्थिति । मूल्यों के बढ़ने की स्थिति, महंगाई । (डीअरनेस)

२ उक्त स्थिति से बचाव के लिए कर्मचारियों को वेतन के अतिरिक्त दी जाने वाली राशि, महंगाई भत्ता ।

३ आदर, मत्कार ।

४ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

रु०भे०—महंगाई, महंगाई, मृगाई, मृगाई, मेगाई, मैगाई, मैगाई ।

मृगियाडो-स० पु०—१ महंगा होने की अवस्था या भाव, महंगाई ।

२ बाजार में वस्तुओं की कीमतें ऊँची होने की अवस्था ।

रु०भे०—मृगीवाडो, मेगीवाडो,

मृगियो-वि०—१ लाल रंग का ।

२ मृग के समान हरे रंग का ।

स० पु०—१ एक वस्त्र विशेष ।

रु०भे०—मृगियो मृगीयो मृगीयो मृगीयो,

१ देखो मृगी' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ सोना री पूतळिया मरदा । माय मृगिया भार । घुरसा-मलजी अणतमलजी, वा सेठा री माल ।

—डूगजी जवारजी री छावली

उ०—२ तिण मर्म 'रसना' रा रंवास में एक मकराणा री महल है, जिण में इण री चणी मारी सैल है । सू इणरी पगथळियां रा प्रतिव्यवहू करम तो मृगियां री छिन्न पावै है न अग

री ओपमा सू भीतां जिंके सुवरण री निजरि आवै है ।—र हमीर

उ०—३ भल मला करइ राव भेटणा, चदन चौवा अवीरी जी ।

माणिक मोती मृगिया, चोली चरणा चौरी जी ।—स कु

मृगीयो—१ देखो मृगी' (अल्पा, रु भे)

उ०—सतगुर माह भवै सोदागर, विणजें वसत अपारा । काही विणीया लीया मृगीया कांही हीर हजारा ।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मृगियो' (रु भे)

मृगीवाडो—देखो 'मृगियाडो' (रु भे)

मृगु—१ देखो 'मृग' (रु भे)

उ०—सोहती मन मोहती पृथ्वी मदल सुरग । मृगुली मृगु नी फळी, समस्त तीक्षा नख सुरग ।—रुमणी मगळ

२ देखो मृगी' (रु भे)

मृगेडो—१ देखो 'मगेडो' (रु भे)

२ देखो 'मृगियाडो' (रु भे)

मृगीडी-म० स्त्री०—मृग की बडी ।

उ०—म्हारें पापट ची नाई म्हारें मृगीडी ची नाई, ययां से करा नीगीड्यो व्याय, -पानाडी ये लूर छैला प्यागी ये लुरही ।

—लो गी

रू०भे०—मुंगवडी, मूगेडी, मूगोडी

मूगो-सं०पु०—समुद्र मे कृमियों के समूह पिंड की लाल ठठरी का एक रत्न, प्रवाल । (अ मा)

उ०—हीरा मारणक मूगो तजीने, कथीर सगाते मलि तोल मा रे ।  
—मीरा

२ रत्न, नगीना ।

३ सात प्रकार की उप धातुओं में से एक । (अ मा)

वि०—लाल हरा, ।

उ० जल खूट सीकाळ, रंग मूगो पड ज्यावं । ज्यू घोड्योडी भांग, दूरसू वरण दिखावं ।—दसदेव

रू०भे०—मुगी, मूगु ।

अल्पा०—मुगियो, मूगियो, मूगीयो,

मूगी-वि० [स०मह+अर्व] १ जिसका मूल्य या कीमत उचित से ज्यादा हो, जरूरत से ज्यादा कीमत का ।

उ०—“एक-इ बात कै इ ? भल्ले मोल-तोल तो को करो नीक ?  
'हां एक-ई ।' 'तो लो, ऐ साढी तीन दे दो ।' 'नाख-नाख, है तो मूगी ई ।—वरसगांठ

२ जो साधारण से अधिक कीमत का हो, बहुमूल्य । स्वभावतः कीमती ।

३ जिसे प्राप्त करने में अधिक कष्ट या व्यय करना पड़ा हो, दुर्लभ ।

४ सम्मान, इज्जत व मान-प्रतिष्ठा वाला ।

५ अधिक प्यारा, विशेष प्रिय ।

रू०भे०—महगी, महगी, महगी, मुगठ, मुहगठ, मुहगी, मुहगी, मुहगी, मुहगी मुहगी, मुहगी, मुहगी, मुहगी, मू'घी, मू'घी, मूहगी, मू'घी, मूहू'घी, मंगी, मैहघी ।

मूघ—देखो 'मूंग' (रू भे)

मूघम—देखो 'मुगम' (रू भे)

मूघी मू'घी—देखो 'मूगी' (रू भे)

उ०—१ गुराजीडी बडाई रो भूखी, नैं एक मूघै मोल रो जेवी तिरपाल भेंट करथी ।—दसदोख

उ०—२ सुण सुण जसवारो आनद मन आणयो जग मे जीवावण जंगुर पति जाण्यो । मू'घी माखण सूनू मिमरी सूनू मोठी द्रग सूनू दो घडिया अन विकली दीठी —ऊ का

उ०—३ अक्कीमाण अडप आवाणी, कवळ वाराह सग्राम करे ।

सूगा साई अनै सेरडो मू'घा दीघा भल्ले मरे ।—दूवो आसियो

उ०—४ मुळकनं ठाकर रैं मांस्ही इण भात मदछकी निजर मू देख्यो के बांनै पीया बिना ई हजार वोतल रो नसो चढग्यो । पैली वार वारै समझ मे आई के राजाजी री चाकरी किस्ती आहजी भर किस्ती मू'घी ।—फुलवाडी

(स्त्री० मू'घी)

मूचणो, मूचवो—देखो 'मूचणी, मूचवी' (रू भे)

मूचणहार, हारी(हारी), मूचणियो—वि० ।

मूचिओडी मूचियोडी, मूच्योडी—मू० का० कृ० ।

मूचीजणो, मूचीजवो—भाव वा० ।

मूचियोडी—देखो 'मचियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मूचियोडी)

मूछवर—वि०—बडी-बड़ी मूछोवाला ।

रू०भे०—मुछदर,

मूछ-सं०स्त्री० [स०श्मश्रु प्रा०-मस्सु, मच्छ] पुरुषों के नाक के नीचे एव होठ के ऊपरी भाग में उगने वाले केशों का समूह, मूछ ।

उ०—१ मूछ नाक सिर रो मुकुट, ससतर साम सनाह । साबत लायी समर सूनू, कै नह लायी नाह —वा दा

उ०—२ चख चोळ मूछ भूहा चडी, तांस ऊठि तमो गणी । मेहरी गाज जाणै मरद, सारदूळ काना सुणी ।—मे म

मुहा०—१ मूछ उम्हाडणी=१ कठिन दण्ड देना, अपमान करना ।

२ मूछ नीची होणी=अपमान होना, गर्व नष्ट होना, लज्जित होना ।

३ मूछ पर ताव देणी=गर्व एव अहंकार करना ।

४, मूछ मरोडणी=गर्व करना, गर्व के मारे मूछों पर ऐंठन या बल देना ।

५ मूछ माथं हाथ फेरणी=अपना पौरुष दिखलाना, विजय का गर्व करना ।

६ मूछरो वाळ-घनिष्ठ व्यक्ति, विशेष विश्वास वाला । ज्यादा नजदीक रहने वाला ।

२. कुछ विशिष्ट जानवरों या जीव-जन्तुओं के मुख पर भी यह बाल समूह होता है ।

रू०भे०—मुच्छ, मुछ, मुच्छ, मुछ, मुछि ।

अल्पा०—मूछडली मूछडी, मूछ, मूछडी ।

मह०—मुछार, मुछार, मूछाळ

मूछडली—देखो 'मूछ' अल्पा, रू भे )

उ०—कोई मूछडली मुळवावै सूरत सावळी ।—लो गो

मूछडी—१ देखो 'मूछ' (अल्पा, रू भे )

उ०—खोळी खीला री डेढा दिग डीली, पोली सेढा री लीला विण पीळी । खडली सूवाडी बाडी विन खटकै, मरती मूछडिया पूछडिया पटकै ।—ऊ का

२ देखो 'मूछ' (अल्पा, रू भे )

मूछण—देखो 'मूछण' (रू भे )

उ०—चलू करी मूछण दिया रैं लाल, लूग सुवारी पान ।

—प च.ची

मूछणियो, मूछणो—देखो 'मूछण' (अल्पा रू भे )

उ०—घण रे तो आगण विडला बघावो डोला, मूछणियै रैं मिस आवो रे । हाजी २ माजे ववतै बादल ने केण विलमावो रे ।

—लो गो.

मूछणो, मूछवो—१ देखो 'मूछणो, मूछवो' (रू भे )

मूछणहार, हागो(हानी), मूछणियो—वि० ।

मूछियोडो, मूछियोडो, मूछियोडो—मू० का० कृ० ।

मूछीजणी, मूछीजवी—भाव वा० ।

मूछरेल—रगो 'मूछाळ' (रू भे)

मूछार—देखो 'मूछ' (मह, रू भे.)

मूछाळ, मूछाल—वि० [म०दमयु+आलुव] १ जिसके मूछे हो, मूछो बाना ।

उ०—पण अत्रे गेडा ई मूछाळा मरद हो तो म्हारें मान्ही आगळी उठापनं तो जोयो—फुनवाडी

२ वन पोदप एव गौरव वाला ।

उ०—मछाळा मूछाल, वेद हद वेदीगारा । मुच अगा लख वार, प्रधी डक लाय मारा ।—मा वचनिका

३ युवा जवान ।

रू० भे०—मुछळ मुछियाळ, मुछ्याळ, मूछरेल, मूछरेळ मूछरेंल मूछाळ ।

अन्पा०—मुछाळो, मूछाळो

४ देखो 'मूछ' (मह, रू भे)

उ०—सुगडम वचन मधीर, वीर रणधीर ववकै, मतवाळा मदमत त्रोम भाळा घक घकै । अडे मुज्ज असमान भिडे मूछाळ अगूट, चढे रोम चव चोळ, खाग म तोलउ रूटें ।—पे रू

मूछाळो—स०श्री०—१ तलवार ।

२ वह श्री जिसके मूछे हो ।

३ देखो दुर्गा ।

रू० भे०—मूछालो,

मूछाळी—देखो 'मूछाळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ आगे मयणीजो मूछाळे मालदेन रे ऊनरिया ।

—सयणी री बात

उ०—२ वामण पूत न वीमरें, ज्यू विमहर कळे । आल्हणमीह न वीगरें, मेहराज मूछाळ ।—नैणसी

मूछियोडो—देखो 'मूछियोडो' (रू भे)

(श्री० मूछियोडो)

मूछियो—स०पु०—काटना क्रिया या भाव ।

मूछियो—देखो 'मुरछित' (रू भे)

उ०—अग्रिम मरवणि पाणी पीइ, पाचइ पुहवी तलि मूछियोइ । मरवर पानि इपदि मिली, एक पुनिदड आंणी वनी ।

—सालिभद्र सूरि

मूज—म०श्री० [म०मुअ] १ सरकडो की ऊपरी छाल जिसको भिंगो तब व फूट कर चार पाई धुने के लिए रस्ती बनाई जाती है ।

२ उस छाल की बुनी हुई रस्ती ।

उ०—रगो नै वचवचा' २ वकट तियो, वूकिया मल निया अर मज रा वष दे परा' २ थाणें मे मय धीनो —द दोप

३ रागा नगरी का परमार राजा मूज ।

उ०—स्त्रीदमरथ दमरथ सुतन, पीथल मूज पवार कण कण डहकाणा नही, वम चुगला वापार ।—वां दा

रू० भे०—मउज, मऊज, मुज, मूक, मूज, मूक,

४ देखो 'मुक' (रू भे)

मूजणी—म०पु०—देखो 'मुगदणी' (रू भे)

उ०—जेई ले जगळ सू लावै, फोगां सू सुभ मूजणी । चिरच माथ सकर धी पावै, भूले व्यावा मूजणी ।—दसदेव

मूजणी मूजवी—देखो 'अमूकणी, अमूकवी' (रू भे)

मूजि, मूजी—स०पु०—कृण, सूम, कजूस ।

रू० भे०—मूजीडो

मूजियोडो—देखो 'अमूकियोडो' (रू भे)

मूजीडो—देखो मूजी (अल्पा, रू भे)

मूजीपणी—स०पु०—१ कजूम होने की अवस्था या भाव ।

२ कजुमी ।

उ०—मेठा गं मूजीपणी चौबळा मे किणी सू अछानो नीं हो ।

—फुनवाडी

रू० भे०—मूजीपणी,

मूजोर—देखो 'मुहजोर' (रू भे)

मूजी—स०पु०—मूज का बना एक प्रकार का ढक्कन जो बड़े-बड़े जल पात्रों पर ढका जाता है ।

वि०वि०—यह ढक्कन प्रायः उस समय काम आता है जब बड़े-बड़े जल पात्रों को गाढी पर रख कर दूर दूर में पानी लाया जाता है ।

मूक—१ देखो 'मुक' (रू भे)

उ०—१ ठहिया तो पिण राज ठिकाणें, जगत मूक दिल उजळ न जाणें । मनि हव वचन लोपमी मोन, तन प्रतवाय लागसी तोनू ।

—सू प्र.

उ०—२ रांणें दाखै 'राजसी' राठीडा उपकार । या कळ कल्लो आवगी, पल्लो मूक अवार ।—रा रू

२ देखो 'मूज' (रू भे)

मूकणी, मूकवी—देखो 'अमूकणी, अमूकवी' (रू भे)

उ०—१ दळ देख डरें, मिध मूक मरें । मिळि मोमि तणी, पुडि वोम पणी ।—गुरुव

उ०—२ बार पहर तउ चडीउ रोसि गुर नदणु मूकइ । रणि पाडिउ भगदत्तु राउ कउव दल मूकइ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ विकल थाती, क्षणि जोइ क्षणि रोइ क्षणि हुसइ क्षणि आकदउ क्षणि निदइ, क्षणि मूकइ, क्षणि मूकइ, क्षणि वूकइ, एव विधि विरहानल नीपजइ ।—व.म

मूकणहार, हारी (हारी), मूकणियो—वि० ।

मूकियोडो मूकियोडो, मूकियोडो—मू०का०कृ० ।

मूकियोडो, मूकियोडो—भाव वा०

मूकियोडो—देखो 'अमूकियोडो' (रू भे)

(श्री० मूकियोडो)



मूँभी—देखो 'मूँजी' (रू. भे)

उ०—पण मूँभी व्हेता थकाई वी नेकनामी ही। छोटी कमाई नी करती।—फुलवाडी

मूँभीपणी—देखो 'मूँजीपणी' (रू. भे)

उ०—वो आपरी माया वास्तै ई चोखळा में चावो ही अर आपरा मूँभीपणा वास्तै ई उण री अणू ती नामवरी ही।

—फुलवाडी

मूँठ—देखो 'मूँठ' (रू. भे)

उ०—१ अणियाळा नयण आजिया अजण, कागज रेख सुरेख कर। इद्र तणइ दिन मूँठ अणूठी, मळका नाखइ वामवर।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ले भडा रटाकां पूर अरिदा ताडव्वा लागा, महावीर खीज में पाडव्वा लागा मूँठ। बीर वेसताबा जहां दूवारा भाडव्वा सागा, रोजगारा खाती ज्यू फाडव्वा लागा रूठ।

—सुखदान कवियों

उ०—३ आडा इ गर वन घणा, तांह मिलीजइ केम। उलाळीजइ मूँठ भरि, मन सीचाणउ जेम।—डो मा

मूँठडी—देखो 'मूँठी' (अल्पा, रू. भे)

उ०—मुठ मुठ पडतोडी आश्वडिया मींचै, भूखा मरतोडी मूँठडियां मींचै। सीधी सैणी सी सैणी सुण माल्हे, वंसक पुर वसणी हसणी तजि हालै।—ऊ का

मूँठि—१ देखो 'मूँठ' (रू. भे)

२ देखो 'मूँठी' (रू. भे)

मूँठियो—देखो 'मूँठियो' (रू. भे)

मूँठो—१ देखो 'मूँठी' (रू. भे)

उ०—१ मूँठी भरि सति रेणु जळ सांम्ही, आपणपउ दाखइ अधिकार। कुभ हुवइ तसकाळ कहता, सो पाणी ल्यावै पणहार।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ म्हेला सांकडीसी आण मैली थांभि दीनी। मूँठी एक बालू की पला कै वाघ लीनी।—शिव

२ देखो 'मूँठ' (रू. भे)

मूँड—१ देखो 'मूँड' (रू. भे)

उ०—बाभ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जानत मूँड भमायी। पूत कपूतन को चटसाल कि, ज्यू कुलटा सुमराल सुनायी।

—ऊ का

रू०भे०—मूँड, मूँड, मूँड,

२ देखो 'मूँड' (रू. भे)

उ०—१ तकादी मोत बताडै, दांत से तुड़ावेगी तू। माजनां स रेज्ये देज्ये फुडावेगी मूँड।—ऊ का

उ०—२ कित छोडी वह मोहन मुरली, कित छोडी सब गोपी। मूँड मुडाइ डोरि कटि बाधी, माथे मोहन टोपी।—मीरा

उ०—३ भडीयड भाजि मरगड मूँड। रडवड रण करडक रूंड।

—गुरु व

उ०—४ साग मूँड सहसी सकौ, समजस जहर सवाद। भड पीयल जीतो भलां, वैण तुरक सू वाद।—महाराणा प्रतापसिंह

१ देखो 'मूँड' (रू. भे)

मूँडकटाई, मूँडकडी—स०स्त्री०—१ युद्ध मे वीरता पूर्वक लड़ते समय शिर कटने की क्रिया या भाव।

२ वह भूमि या जागीर जो पूर्वजो के युद्ध में वलिदान होने पर पीछे वंशजो को मिलती है।

३ मस्तक मुण्डाने की क्रिया।

मूँडकी—स०स्त्री० [स० मुण्ड] कटा हुआ शिर।

उ०—अडसी सू अडिया जिकै पडिया करै पुकार। म्हापुरसां री मूँडक्यां, गिलगी गाव गगार।

—महाराणा प्रतापसिंह तीसरे का दोहा

रू०भे०—मूँडि।

मूँडकी—स०पु० [स० मुँडक] १ मस्तक, शिर।

२ व्यक्ति, आदमी।

उ०—तरै एकै रजपूत कह्यो, घोडी मूँडका माफक बांटी। तरै ऊ वचन सांभळ पिउसघो कह्यो, कुट्टण मूँडका क्या, आघो हमारी है आघो तुमारी है।—जखडा मुखडा भाटी री बात

३ सीमान्त पर गड़ा रहने वाला पत्थर, छोटा स्थम्भ।

रू०भे०—मूँडकी,

मूँडकी—देखो 'मूँड' (अल्पा, रू. भे)

उ०—कहाई वीरद वका भीड़ियां छकडा कड़ा, बघै रोळें भड़ा आगा वाघें वमवान। बिछोडै गयदां घडा दूजडां ओम्फडां बाह, मुगल्ला मूँडडां दडा मेळें दूजो 'मान'।

—रायत सारंगदेव री गीत

मुण्डण—स० पु० [स० मुण्डन] १ शिर के बाल काटने की क्रिया या भाव।

२ बालको के प्रथम बार शिर के केश काटने का एक संस्कार।

मूँडणी, मूँडवी—क्रि०स० [स०मुण्डनम्] १ उम्तरे, पत्ती आदि से शिर के बाल या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुए केशो को, रगड़ कर काटना, साफ करना, मुण्डन करना, केश काटना।

उ०—१ सिर हाडी मूँडी करी, भगवड लीघउ वेस। पग अणूहाण पकज जिसे, पथि पलिउ परदेसि।—मा कां प्र

उ०—२ दाडी मसतग मूँछ का, घुरिड मूँडीया केस। हरीया मन पलिटघा नहीं, पलिटघा तन का वेस।

—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

२ भेड के शरीर की ऊन काटना।

३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह देकर चेला बनाना, अनुयायी बनाना, वशीभूत करना, प्रभाव में लाना।

उ०—जीयो बांमण थोडा दिन फेर करडो रह्यो। नवा मूँडियोडा



दो तीन चेला-चाँडियां नै कीं तकलीफ नौं करण देवती ।

—फुलवाडी

४ घोखे ने माल ऐँठाना, ठगना

५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी-मूछ कटवाना, भद्र करना ।

उ०—मुई वेगम समे संहस जग मू टिया, दूर की मू छ पतिमाह दूवै । राखिया भोज यम ठाकुरै राखज्यो, हिंदुवां ध्रम अहकार हूवै ।—गव भोज हाहा रौ गीत

मू डणहार, हारौ (हारी), मू डणियो—वि० ।

मू टिओड़ी, मू टियोड़ी, मू टघोड़ी—भू० का० कृ० ।

मू टोजणी, मू टोजवौ—कर्म वा० ।

मुटणी, मुडवौ,—ग्रक रु० ।

मूडणी, मूडवौ—रु० भे० ।

मू टत—देवो मुडित' (रु० भे०)

उ०—नमर दिलोकर गाम नू लग आवै लवडाक । मू छ थका मू टत जिक्कै, नाक थका विन नाक ।—वा दा

मू टतहाय—स० पु० यो०—१ कोहनी से हाथ की अगुलियों के मोड़ तक बनने वाला लम्बाई का एक माप । मतान्तर से कुहनी से अगुलियों के पेरवो से वापिस मोड़कर अगुलियों की जड़ तक का माप ।

२ उक्त माप की लम्बाई की वस्तु ।

रु० भे०—मू टहाय ।

मू टवाळ—स० पु०—नाई, केशकार, नापित । (डि को)

रु० भे०—मू टवाळ, मू टाळ,

मू टहाय—देवो 'मू टतहाय' (रु० भे०)

उ०—कुनां रा डोर चूटै छै । लाहोरी ताजी लूच बाँण गिलजा पहाडी, जिकांगी मू टहाय मोहनाळ हाथ भर नम ।—रा मा स

मू टामू ड, मू टामू डी—कि० वि०—मुह के सामने मम्मुख, मुह को मुह पर, स्वप्न ।

उ०—घर री कळै मू नाकी—नाक आय' र, भूवाजी, रामलै—री मा नै मू टामू ड कण लागी—घर कं काम को चार नौ, चार पाच दिनां मे म्हा रौ उयळो कर दी ।—वरमगाठ

रु० भे०—मू टेमू ड, मू डेमू ड ।

मू टाणी, मू टाथो—रु० म० [ मू टाणी ] क्रिया का प्रे० रु० ] १ उम्तरे, पत्ती घाटी स शिर या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुए केवो तो कटवाना, मुण्डन करवाना, बाल कटवाना ।

उ०—ममनग माल मू टाय कं, दाडी मू छ मू टाय । हरीया मन मू टाय विना, निज पद कर्म पाय —स्री हरिगोम दासजी महाराज २ भेट के शरीर की ठन कटवाना ।

३ किसी प्रकार की निंदा दीक्षा या मनाहट द्वारा चेला बनवाना, अनुयायी बनवाना, बशीभूत कराना, प्रभाव में कराना ।

४ घोखे से माल ऐँठवाना, ठगवाना ।

५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी मू छ कटवाना, भद्र करवाना ।

मू टाण हार हारौ (हारी), मू टाणियो—वि० ।

मू टायोड़ी—भू० का० कृ० ।

मू टाईजणी, मू टाईजवौ—कर्म वा० ।

मू टाणी, मू टावौ, मू टावणी, मू टाववौ—रु० भे० ।

मू टापाती—स० स्त्री०—१ एक प्रकार का पोधा जिसकी गाँठो पर मफेद फूल लगते हैं, गुमा द्रोण पुष्पी ।

मू टायोड़ी—भू० का० कृ०—१ उम्तरे, पत्ती आदि से शिर या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुए केशो को कटवाया हुआ, मुण्डन करवाया हुआ, बाल कटवाया हुआ २ शरीर की ठन कटवाया हुआ (भेट) ३ चेला बनवाया हुआ, अनुयायी बनवाया हुआ, बशीभूत या प्रभाव में कराया हुआ ५ घोखे से माल ऐँठवाया हुआ ठगाया हुआ ५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी मू छ कटवाया हुआ, भद्र करवाया हुआ ।

(स्त्री० मू टा. योड़ी)

मू टाळ—देखो 'मू टवाळ' (रु० भे०) (डि को)

मू डी—१ देखो 'मू ड' (रु० भे०)

२ देखो 'मुह' (रु० भे०)

३ देखो 'मू डकी' (रु० भे०)

४ देखो 'मू टवाळ' ।

मू डे मू ड, मू डै मू ड—देखो 'मू टामू ड' (रु० भे०)

उ०—ठाला भूला बता तो खरी थू इत्ता वन रौ काँई करघो । खजाने जमा क्यू नी करायो । थारी इत्ती हीमत के मू डेमू ड नटे ।

—फुलवाडी

मू डो दिखाई—देखो 'मुहदिखाई' (रु० भे०)

मू डो—स० पु० [ स० मुड ] १ मनुष्य या प्राणियों के शरीर का वह अंग जिसमें खाने-पीने एवं बोलन आदि की क्रियाएँ होती हैं, मुख ।

उ०—१ गलियोडा सब गाय गजब काधो गलियोडी । अमल खाँण ने अजे बळै मू डो बलियोडी ।—ऊ का

उ०—२ भवळ खायन छपाक देतो रौ वो पाणी रै मांय पडायो । पडता ई वो तो मू डो फाडन गळळ गळळ पाणी खावण दूको ।

—फुलवाडी

मुहा०—१ मू टा जित्ती याता=जितने मुह उतनीं बातें होती हैं । मनुष्य हरेक बात अपने हगसे कहता है । अफवाह उडने पर ऐसा कहा जाता है ।

२ मू टा मू आवै ज्यू धोखणी=प्रसम्पता से बोलना, बोलते समय सुध न रहना ।

३-मू टा मे अन्-पाणी घालणी=खाना-पीना, मुदिकल से भोजन प्राप्त होने पर ऐसा कहा जाता है ।

४ मू टा मे गुळ देणी=गुन-खबरी सुनाने या इच्छित बात करने पर मुह मोठा करना । चुप करना ।

५ (थारा) मूडा मे धी शक्कर=वाछिन कार्य करने वाले के लिये अच्छे भोजन कराने का भाव ।

६ मूडा मे पाणी आणी=स्वादिल्ल खाद्य पदार्थ को देखने पर मूह में पानी आना, लालायित होना

७ मूडा में मुळक नीं मावणी=खुशी के कारण मुह से हसी फूट पड़ने का भाव होना ।

८ (धूक थारा) मूडा मू - अमागलिक बात करने पर ।

९ मूडा में मूडो घालणी = घुट-घुट कर बातें करना ।

१० मूडा में लाय लागणी = अधिक चर्ची चीज खाने से मुह मे जलन होना, मुह जलना ।

११ मूडा रें खाम लागणी = निरुत्तर होना, मुह से बोल न निकलने की दशा होना ।

१२ मूडा री स्वाद = क्षणिक तृप्ति, जिससे कोई स्थाई लाभ न होता हो । जो खाने से अच्छा लगता हो पर वस्तुतः नुकसान दायक हो ।

१३ मूडा सू धूक उछाळणी = अस्पृश्यता से बोलना, व्यर्थ बहना ।

१४ मूडा सू फूल झडणी - अच्छी बात कहना हमना ।

१५ मूडै आणी = तृप्ति होनी, किसी चीज को खाने से मन भर जाना ।

१६ मूडै मीठी = जो सामने सो मीठी-मीठी बातें करे और पीठ पीछे बुराई करे ।

१७ (छोटे) मूडै मोटी बात - अपनी हेमियत से ज्यादा की बात करना ।

१८ मूडै लगाणी = किसी को बोलने, बात करने या पचायती करने की छूट देना शिष्टता की सीमा से बाहर तक बात करने की छूट देना ।

१९ मूडै लागणी = निस्सकोच होकर किसी से बात करना, खुल कर बात करने की दशा मे होना, अशिष्टता का व्यवहार करना ।

२० मूडो ऐंठणी, मूडो ऐंठी करणी - बहुत कम खाना । किसी के यहाँ खाने का दस्तूर करना, मुह झूठा करना ।

२१ मूडो काळो करणी = चले जाना पलायन कर जाना दृष्टि से दूर हो जाना । बदनामी के रूप में कहा जाता है ।

२२ मूडो खोलणी = निरुत्तर कर देना कच्चावट पकड़ लेना ।

२३ मूडो खोलणी : कुछ कहना, कहने के लिये मुह खोलना । बहुत कम बोलने वाले के लिये कहा जाता है ।

२४ मूडो घालणी - खाने या पीने के लिये मुह आगे करना । जानवरों पक्षियों आदि के लिये ।

२५ मूडो चालती रेंवणी = हर वक्त कुछ न कुछ खाते रहना ।

२६ मूडो फाडणी - खाने के लिये मुह खोलना, अधिक पाने की आशा करना, लोभ करना ।

२७ मूडो बंद कर देणी = देवो 'मूडो खोलणी' ।

२८ मूडो बलणी = मुह जलना, तेज मसालेदार चीज खाने से मुह

मे जलन होना ।

किसी चीज के लिये लालयित होना, उत्कठा दिखाना ।

२९ मूडो मारणी - व्यर्थ फिरना, बंद चलन होना ।

३० मूडो मीठी करणी - मीठी चीज खिलाना, खुश खबरी सुनाने, या अच्छा कार्य करने पर ऐसा होता है ।

३१ मूडो रातो करणी = पान खाना, क्रोध करना ।

२ चेहरा, आश्रित, शक्न ।

उ०—१ मूडो सूजार्थ रेंती आयोडा पर भुजती बलती अर कीन ई गुड री किरची-मिरकी सी ही आपरै हाथ सूनही देती ।

—दसदोख

उ०—२ बी मिनवां रा उणिपारा देखती आगं बधती जावती । उणरै आगं बधणा रें सागं लोणा रा मूडा उतरता जावता ।

—फुलवाडो

उ०—३ पछे खवास काली मासी रें मूडा सामही देखने कैवण लागी-माजी । काई काई वाता बतावू । कहा सुण्या पाप लागं जडा बखाण है ।—फुलवाडो

मुह/०—१ मूडा माथें धूकणी धिक्कारना फटकारना ।

२ मूडा माथें फें का उडणी = मुह पर धप्पडें पड़णी, जूते पछने पिटाई होना । ३ मूडा री प्रीत = अस्थाई या दिखावटी प्रेम, मुह देखने पर प्रगट किया जाने वाला प्रेम । ४ मूडा रें ठोकर मारणी = अमान करना, मुह पर पांव की ठोकर मारना । ५ मूडा सामी देखणी = अवाक रह जाना, परमुखापेक्षी होना । ६ मूडो ई नी बतावणी = जाने के बाद वापस न आना, जो काम सोंपा गया है, न तो वह करना, न वापस आकर मिलना । जी चुराना ।

७ मूडो उतरणी = उदाम होना, चेहरे पर उदासी छाना, खिन्न होना । ८ मूडो ऊचो करणी = गर्दन उठाना, स्वतन्त्र होना, आजाद होना, मुकाबले में आना, विद्रोह करना । गर्व करना ।।

९ मूडो करणी - रुख करना, उन्मुख होना । १० मूडो चडावणी = मुह फुलाना, रूठना, गुस्मा करना । ११ मूडो जोवणी

- देखना मात्र कुछ करने की दशा में न होना । १२ मूडो डेरणी = व्यर्थ खडे होना असावधान होना । १३ मूडो थाप खावणी = सहसा उदास होना किसी बात मे पोचा पड़ जाना । १४ मूडो घोणी, मूडो घोवणी = प्राप्ति की आश लगाना, वाछित वस्तु प्राप्त करने को तैयार होना । १५ मूडो निरखणी = किसी के मुह की ओर एक टक हो कर देखना बार बार देखना, देख कर खुश होना ।

१६ मूडो नी देखणी = घृणा करना, नफरत करना । १७ मूडो नीचो करणी = शर्मना शर्म से झुक जाना हार मान लेना ।

१८ मूडो फेरणी = मुह मोड़ लेना, देख हो जाना, सम्बन्ध विच्छेद कर लेना । १९ मूडो फेर देणी = वापस घुमा देना, हरा देना, ऐसा मारना की गर्दन सीधी न हो सकें । २० मूडो मद्दूर = हेसियत या श्रुत की हर्षित से । २१ मूडो मस्कोडणी, मूडो मस्कोरणी = मुह बिगाडना । नखरे दिखाना । २२ मूडो मोडणी



रू० भे०—मुदडी, मुदरी, मुद्रडी, मुद्रडी, मुद्रडी, मूदरी, मूदली,  
मूद्रडी, मूदडी, मूदरी ।

अल्पा०—मुदरडी, मूदरडी,

मह०—मुदडउ

मूदडी—देखो 'मूदडी' (मह, रू भे)

उ०—१ मौज कडा मूदडी गजा गामां तोलारा । पच ठाम अवर  
जरी जामा जर तारा ।—रा रू

उ०—२ मोतीया मूदडा कडा जनेऊ जडा व माला । ओपं बीद  
राजा यमी पोसाका अनेक ।—मयाराम दरजी री वात

मूदणी, मूदवी—क्रि० स० [स० मुद्रण] १ वद करना, मोचना । (आखें)

उ०—१ आकूळत व्याकुळत चलत नह आवणें । पीव किए भात  
आराम पामें । सुकरदे सकरचा नैण मूद सची । नागणी नाग सिर  
घडा नामें ।—महाराणा राजसिंह री गीत

उ०—२ जिणनू सुपनं देखती प्रगट भए प्रिव भाइ । डरती भाख  
न मूदही, मत सुपनउ हुय जाइ ।—ढो मा

उ०—३ सत काई जवाब देवता । आख्यां मूदनं माळा फेरण  
लागा । बिचाळें ई दांत पीसता बोल्या—ठाकुरजी रें सामी-ऊमो थू  
ठाकुरजी नें ई भाई, यनं सराप लागला ।—फुलवाडी

२ किसी छेद या विवर को वद करना, सुराख वद करना ।

उ०—मेरी गई पुकार सब ज्यू समद मे वूद । सुणी न एकी  
सावळा, कान रहे हो मूद ।—गजउद्धार

३ ढकना, आच्छादित करना, आवेष्ठित करना ।

४ अत करना, समाप्त करना ।

मूदणहार, हारो (हारी), मूदणियो—वि० ।

मूदियोडो, मूदियोडो मूदोडो—भू० का० कृ० ।

मूदोजणो, मूदोजवो—कर्म वा० ।

मुदणी, मुदवी—अक० रू० ।

मुद्रणी, मुद्रवी, मूदणी, मूदवी—रू० भे०

मूदरडी मूदरी—देखो 'मूदडी' (रू भे)

उ०—१ पदक प्रियु तउ हू मोतिन माला । हीरउ तउ हू मूदरडी  
रे बहिनी ।—स कु

उ०—२ द्रुम तळें वाग असोक दरसै प्रगट परसै पाव । तो  
कपरावजी कपराव करदे मूदरी कपराव ।—र रू

मूदली—देखो 'मूदडी' (रू भे)

मूदियोडो—भू० का० कृ०—१ वद किया हुआ मोचा हुआ (नैत्र)  
२ छेद, सुराख या विवर वद किया हुआ ३ आच्छादित या  
आवेष्ठित किया हुआ, ढका हुआ ४ अत किया हुआ समाप्त किया  
हुआ ।

(स्त्री० मूदियोडी)

मूद्रडी—देखो 'मूदडी' (रू, भे) (व स)

मूद—देखो 'मुग्ध' (रू भे)

उ०—१ चौडे चह मंडा चवी, सभ आगळि सकाज । मोहण वेली

अध नयण, मूध अजब महाराज ।—मा वचनिका

उ०—२ स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी । रू० ५५  
पतिव्रता, मूध सोहइ सुपियारी ।—प च चौ.

उ०—३ जउ तू साहिब नावियउ, सावण पहिली तीज । बीजळ  
तणइ भक्तूकडइ, मूध मरेसी खीज ।—ढो. मा

मूदणी, मूदवी—देखो 'मूदणी, मूदवी' (रू भे.)

मूदणहार, हारो (हारी), मूदणियो—वि० ।

मूदियोडो, मूदियोडो, मूदियोडो—भू० का० कृ० ।

मूदोजणो, मूदोजवो—कर्म वा० ।

मूदारी—देखो 'मुदारी' (रू भे)

मुधोकाटो—स० पु०—ऊघा कांटा नामक पोवा ।

मून—देखो 'मून' (रू भे)

उ०—१ जद रुधनाथ जी वोल्या-म्हें तो साध हां । म्हारें कटें  
कहणी हे रे ? म्हारें तो मून है ।—मि द्र

उ०—२ पण घणी ताळ ताई मून राखणी ई उणरें बसरी वात  
नी ही । हिवडा मे ओठ्योडो मन री अलूट दरद आखरा री रूप  
घार माडांणी रळक पडथी ।—फुलवाडी

मूनाळ—१ देखो 'मुहनाळ' (रू भे)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू भे)

मूनी—देखो 'मुनि' (रू भे)

उ०—मोहणी कमळा मूख मूनी । नमो घोम धूतारणी सभ धूनी ।

—मा वचनिका

मूफाड, मूफाडो—स० स्त्री० यो०—दोनों होठों के बीच का मुख आयतन ।  
मुख के विवर का बाहरी भाग ।

उ०—१ आ कयनं वो पूरी मूफाड फाड नै हसियो ।—फुलवाडी

उ०—२ भीरु धारातुर मूफाडा भाजें । वैंता फुरणां रा फूफाडा  
वाजें ।—ऊ का

रू० भे०—मूफाड,

मू'वत्तो, मू'वत्ती—१ देखो 'मुहपत्ती' (रू भे)

२ देखो 'मोमवत्ती' (रू भे)

मूम—देखो 'मोम' (रू भे)

उ०—धूहरि पडय अथाह ते विरहानल नो धूम । वैंगा जावो  
कोई पिघलावो, प्रिय मन मूम ।—घ व अ

मूमाणी—देखो 'मामाणी' (रू भे)

मूमारकी—देखो 'ममारखी' (रू भे)

मूमारखी—देखो 'ममारखी' (रू भे)

उ०—१ बीकानेर रावजी नू मेलिह्या, कोट फतेह कियां री  
मूमारखी सो मेलही ।—ठा. जे

उ०—२ सारें लोग मूमारखी दीवी —गौड गोपाळदास री वारता

उ०—३ सारा ठाकुरगढ ऊपर जाय महाराज नू खबर मूमारखी  
मेलही ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

मूमोठी मू'मीठी—देखो 'मुहमीठी' (रू भे)

उ०—कोडा मे सपूत री कोड, करवला में ज्यू जेमलमेरी टोह  
जिया जगत जम में बाजीदा है, विषां ही गरब गांव में मूमीठ  
ताई घडी लड वेगराज जी मूत रो नाव निवरण सिरै अर नांम  
जादीक हो रयी है ।—दमदोख

मूया-स० पु०—राठीड वग की एक उप शाखा ।

मूरी—देखो 'मोरी' (रू भे)

मूळ—देखो 'मूळ' (रू भे)

मूळी—देखो 'मूळी' (रू भे)

मूवी-वि०—१ मूव, मरा हुआ ।

उ०—१ परवार गयो पिस्तावणों करु न मूवां कथ रो । म्हारी  
महा दुख भेट दं, भली हुवे भगवत रो ।—ऊ. का  
२ देखो 'मूडी' (रू भे)

उ०—मडाणे रो मूवी, मर लूणामर ग्राम रो मवाल, मारजा रो  
हाल हुकम बागिया भूवाल ।—दमदोख

मूमणी, मूमवी—देखो 'मूमणी, मूसवी, (रू भे)

उ०—१ उत्तम मूमे एक भट, मध्यम दूहा मूम । अघम गीन मूसे  
अठर, त्रिविध कुकि विण तुम ।—वा दा

मूसणहार, हारो (हारी), मूसणियो—वि० ।

मूसिओडी, मूसियोडी, मूस्योडी—भू० का० कृ० ।

मूसीजणो मूसीजवी—कर्म वा० ।

मूसल—देखो 'मूसन' (रू भे)

उ०—नोकां कुळ लोपी जगत न जोपी, गोपी मे गवावदा है ।  
जरवावण जोगा मूसल मोगा, गोगा गुफ गावदा है ।—ऊ का

मूसली, मूसली—देखो 'मूसली' (रू भे)

उ०—मरडा मोगरि मूसली तापस तेली कद । पाजण क्षीर  
गपूरीया चद चमारी चद ।—मा का प्र

मूसारी-स० पु०—चोर ।

उ०—कोई मूसारी मूसी गयो । कचु कसण ते लक की वेढ ।

—वी दे

मूसाल—देखो 'मोषाल' (रू भे)

मूसी-स० पु० [म० मूसा] १ यहूदियों के एक पैगंबर, हजरत मूसा ।  
२ चूहा ।

उ०—चीटी के मुख मेर ममाना मूस गिली मजारी । दहुर मरग  
ममद मे डारया, लोकी परि असवारी ।—ह पु वा

मूर, मूरई—देखो 'मूव' (रू भे) (उ र)

उ०—मूछा टाही मूर फूकंदे बाने फीटा । धुक धुकदे नित बुवा  
बाळजा करदे कीटा ।—ऊ का

मूरणी—देखो 'मूगी' (रू भे)

उ०—बाई मे जोळ म्हाग वीराजी रो बाट ए माहेरो मूहगा  
मोय रो ।—लो गी

मूहड—देखो 'मूही' (रू भे)

उ०—मांगुम मांि माम ने मूरड, गिविदना नड पागि रे । लोही

सु मूहड वलि लेपड, गावी निज गावासि रे ।—स कु  
मूहडी—देखो 'मूडी' (रू भे)

उ०—जद स्वामीजी कह्यो-म्है तो यू न कहां-मूहडी दीठा स्वरग  
नरक जाय पिण थांगी कहिणी रे लेखे थारी मूहडी तो म्है दीठी सो  
मोक्ष ने देवलोक तो म्है जास्या । अने म्हारो मूहडी थे दीठी सो  
थारी काहिणी रे लेखे थारे पाने नरक ईज पडी ।—भि ब्र

मूहनाळ—१ देखो 'मूहनाळ' (रू भे)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू भे)

मूही—देखो 'मूख' (रू भे)

उ०—पत मेडता समर पत साहां, अणिया मूहे दीव उमेल ।  
वीरमदेव आवता वासे, अन रावां पायी ऊवेल ।

—राव वीरमदेव मेडतिया राठीड रो गीत

मू—१ देखो 'मू' (रू भे)

उ०—१ वसि तू सूर वसि मू वीक नेजे सबूह घातउ निभीक । वरन-  
विय राइ हाकलि ब्रह्मस, नेठिय तुगी नित्रेडि नास ।—रा ज सी

उ०—२ म मरि कीचक कूड निकालिजा, मरी य मू करि मूड म  
जालिजा ।—सालिसूरि

२ देखो 'मु' (रू भे)

मूयणी, मूयवी—क्रि० अ० [स०-मृत] प्राणान्न होना देहावसान होना,  
मरना ।

उ०—१ मा मूई जव एहनी, तव ए लघुतर वाल रा० । पय पाई  
मोटो कियो, एम यहै भूपाल रा० ।—वि कु

उ०—२ उत्तम कुमार किहा अछै, प्रागलि कहि प्रतात । जीब छै  
किवा मूथो, भाजि भांजि मन भ्रांत ।—वि कु

उ०—३ नलनि नरति नथी जणाती, जीवि छि के मूथी । बलतु  
समाचार नथी रे, यहि निमा ध्यु जूथी ।—नलाख्यान

मूथणहार, हारो (हारी), मूथणियो—वि० ।

मूथोडी—भू० का० कृ० ।

मूईजणो, मूईजथो—भाव वा० ।

मूथली—देखो 'मूमली' (रू भे)

मूईमाटी-म० स्त्री०—१ लाश, शव, मृत शरीर ।

२ मरे हुए प्राणी का मांस ।

मूउ—देखो 'मूवी' (रू भे)

उ०—आकुलउ अति मुयोधन हूउ । कउण जीवइ किहां कुण मूउ ।

—सालिसूरि

मूथोथो-भू० का० कृ०—मरा हुआ, मृत ।

(स्त्री० मूथोटी)

मूथो—देखो 'मूथी' (रू भे)

मूक-वि० [स०] १ जो बाणी मे रहित हो, बोलने मे अममर्थ हो,  
बाणीहीन, मूक ।

२ जो कुछ बोलना नहीं चाहता हो, मौन हो चुप हो, शान्त ।

उ०—हुड मो बायर रण हुवे, मह चीटा सह मूक । बाहे रावत ही

वधा, रग रग कटता रुक ।—रेवतसिंह भाटी

१ आवाक् स्तमित ।

४ विवश, लाचार ।

५ दीन, अभागा ।

६ पागल, मूर्ख । (ह ना मा)

७ मोनी ।

स०पु० [स०मूक] १ दानव, दैत्य राक्षस ।

२ गु गा या मूक व्यक्ति ।

३ हिरण्य कशिपु के वश का एक राक्षस, जो सुद एव ताटका का पुत्र था ।

४ सक्षक वश का एक नाग, जो जनमेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ था ।

५ एक चाण्डाल, जो अत्यन्त मातृ एव पितृ भक्त था ।

६ एक दानव जो इन्द्रकील पवत पर रहता था ।

७ मधुली ।

र०भे०—मुक्क, मुगउ,

मूकणी, मूकवो—क्रि०स० [स०मुक्त प्रा०मुक्कणी स०मोक्तव्य, मोच्य]

१ परित्याग करना, त्यागना, तज देना, छोड़ देना ।

उ०—१ कोइ प्रकारा खून कर मूक नही मुकाम । घेरा सू पौरस घणी, केहर केरा काम ।—वां दा

उ०—२ भूपाळ भिदै भीमेण छलिअछर मोह मूकयो सबळ अतरह जोति अविणास यह, गयो भेद सूरज-मडळ ।—गु रू. व

उ०—३ रग भोम उतग सुढळै रोदां मारुत मूकें मांण । मदमूक महावळ प्रम परधळ वारामास वसाण ।—मा वचनिका

उ०—४ आसै पासै लोक मिल्या तेह निसुणी कूक । कूडै चित्त सती पग रोवै प्रीय गयो मुक्क मूक ।—घ व प्र

उ०—५ मन वसियो वड्ढग हो राजेस्वरजी, मूकी हो माया ममता मोहनीजी ।—स.कु

२ फेंकना, चलाना, छोडना ।

उ०—मूकें सर हैक ताडका मारी चड सुवाह हणै कर चाव । जिग कियो धनुख भग जालम, रग भुजा थारा रघुराव ।—र रू

१ घटाना, मिटाना, लोपना, छोडना ।

उ०—१ उरडै दळ समहर उदमादा । मूकी किर सामदा अजादा ।

—सु प्र

उ०—२ कलियाणौत भाजतै कटकै, अरि अत देखि वचत जो अग । मेरु चलत सजा दधि मूकत पळटत तरण पकत घर पग ।

—महेम बल्याणौत साखला रौ गीत

उ०—३ ऊवौ मुख दस माम गरभ मे, असुचि तणी पिड वाघी रे ।

नीसरियो जब दुख विसरियो मूक दीनी मरजाधौ रे ।—जयवाणी

४ बधन मुक्त करना, आजाद करना, छोडना, मुक्त करना ।

५ दूर करना, अलग करना, हटाना ।

उ०—अहिही अमनि नवि भारि अपूरव अमनि जाणी । राजा तुहि मूकि नहीं ते सुणतां अमनत वाणी । हसि हरिनु समरण कीधू तू छि दीनानाथ, कठिण थयु रा नयी मूक तु प्रही रह छि हाथ ।

—नलास्यांन

६ तय करना, निश्चित करना, निपटाना सलटाना ।

७ भोजना, पठाना ।

उ०—१ ताम साह (ह) जिहगीर, लिखे मूकयो परमाणो पळ सूटो खुरसाण, सबळा अजु खूमाणो ।—गु रू व

उ०—२ मूक्या लिखी दाराव उतामळ । खांना सामुहा कागळ ।

—गु रू व

उ०—३ कहीयो जी म्हारा घर सु उठीया, म्हारी वाहर थानु मूकीया तं म्हारी वडाई —चोबोली

उ०—४ ताहरा ऊदो कहै-सिखरेजी री बंटी थाह-रै बंटे नू दीनी छै । देव उठिया पछें वाभण मूका छा पवारिज्यो ज्यूं परणावा ।

—ऊदै उगमणावत री वात

उ०—५ मया करीन मूकजो कुमळ वेमना लेख । लीला पति लख जो वळी स्माचार सु विसेख ।—ढो मा

८ प्रदान करना, देना ।

६ भोकना, डालना, पटकना, छोडना ।

उ०—त्रिण मूकत आळ उठै तरसै । रिण माजिभ पतग पडै हरसै ।

—मा वचनिका

१० तोडना ।

११ रखना, घरना, टिकाना ।

१२ (उच्छवास) निकालना, छोडना ।

उ०—खरो हो अयाणउ उकिरई, आठमो ठांव रवि वारमो राह । ग्रह गणतो अतिहि वीरा, सिर घुणी मूका छड वाह ।—बी. दे

१३ अकुरित करना, निकालना (पत्ते) ।

मूकण हार, हारो (हारी) मूकणियो—वि० ।

मूकियोडो, मूकियोडो, मूकियोडो—भू० का० कृ० ।

मूकीजणो, मूकीजवो—कर्म वा० ।

पमूकणो, पमूकवो, पमूकणो, पमूकवो, पमूकणो, पमूकवो,

पिमूकणो, पिमूकवो, प्रमूकणो, प्रमूकवो, प्रमूकणो, प्रमूकवो,

प्रमूकणो, प्रमूकवो, मुकणो, मुकवो, मुकणो, मुकवो, मुहकणो,

मुहकवो मूकणो, मूकवो, मोकणो, मोकवो,—र०भे० ।

मूकता—स०स्त्री०—१ मूक होने की दशा, अवस्था या भाव ।

२ गुणापन ।

मूकपाहाड—स०पु०—देखो 'रिमीमूक' ।

उ०—दनां दाखियो मूकपाहाड देखो 'प्रभू पच जोधा महासूर पेखो ।

—सू०प्र०

मूकरडै—देखो 'मुकरडै' (रू भे )

मूकाणो, मूकावो—क्रि०न० [मूकणी] क्रिया का प्रे०रू०] १ परित्याग करवाना, त्याग करवाना, छोडवाना ।



२ फेंकवाना, चलवाना, छुडवाना ।  
 ३ घटवाना, मिटवाना, लोपाना, छुडवाना ।  
 ४ वचन—मुक्त कराना, आजाद कराना, छुडाना, मुक्त कराना ।  
 ५ दूर करवाना अलग करवाना हटवाना ।  
 ६ तय कराना, निश्चित कराना, निपटवाना, सलटवाना ।  
 ७ मिजवाना, पठवाना ।  
 ८ प्रदान करवाना, दिरवाना ।  
 ९ भोराना डलवाना, पटक वाना छुडवाना ।  
 १० तुडवाना ।  
 ११ रखवाना, घरवाना, टिकवाना ।  
 १२ अकुरित कराना निकलवाना (पत्ते)  
 मूकाण हार, हारो(हारो), मूकाणियो - रि० ।  
 मूकयोडी—मू० का० कृ० ।  
 मूकाईजणो, मूकाईजवो—रुमं वा० ।  
 मुकाणो, मुकावो, मुकावणो, मुकाववो, मुकाणो, मुकावो, मुकावणो,  
 मुकाववो, मूकाणो, मूकावो, मूकावणो मूकाववो—रु० भे० ।  
 मूकयोडी—मू० का० कृ०—१ परित्याग करवाया हुआ, त्याग करवाया  
 हुआ, छुडवाया हुआ २ फेंकवाया हुआ, चलवाया हुआ, छुडवाया हुआ  
 ३ घटाया हुआ मिटवाया हुआ, लोपाया हुआ, छुडवाया हुआ  
 ४ वचन—मुक्त कराया हुआ, आजाद कराया हुआ, छुडाया हुआ,  
 मुक्त कराया हुआ ५ दूर करवाया हुआ अलग करवाया हुआ,  
 हटवाया हुआ ६ तय कराया हुआ निश्चित कराया हुआ,  
 निपटवाया हुआ, मलटवाया हुआ ७ मिजवाया हुआ, पठवाया हुआ  
 ८ प्रदान करवाया हुआ, दिरवाया हुआ ९ भोकराया हुआ,  
 टनवाया हुआ, पटकाया हुआ, छुडवाया हुआ. १० तुडवाया हुआ  
 ११ रखवाया हुआ, घरवाया हुआ, टिकवाया हुआ १२ अकुरित  
 कराया हुआ, निकलवाया हुआ ।  
 (स्त्री० मूकयोडी)  
 मूकावणो, मूकाववो—देखो मूकाणो, मूकावो' (रु भे) (उ ७)  
 उ०—एक बार आगइ देख्यु रामइ रुद्र मूकाव्यउ वोजी वार  
 वळी वरोचनि, भगति विमेल जगाव्यउ ।—कां द प्र  
 मूकावणहार, हारो (हारो), मूकावणियो—वि० ।  
 मूकाविमोडी, मूकाविमोडी, मूकाव्योडी—मू० का० कृ०  
 मूकावोजणो मूकावोजवो—रुमं वा० ।  
 मूकावियोडी—देखो 'मूकायोडी' (रु भे)  
 (स्त्री० मूकावियोडी)  
 मूकी—देखो 'मुक्की' (रु भे)  
 मूकियोडी—मू० का० कृ०—१ परित्याग किया हुआ, त्यक्त, छोडा  
 हुआ २ फेंका हुआ छोडा हुआ, चलाया हुआ ३ घटाया हुआ,  
 मिटाया हुआ, लोप हुआ ४ वचन मुक्त किया हुआ आजाद किया  
 हुआ, छोडा हुआ ५ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हटाया  
 हुआ ६ निश्चित व तय किया हुआ निपटवाया व मलटवाया हुआ

७ भेजा हुआ, पठाया हुआ ८ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ  
 ९ भोका हुआ, डाला हुआ, पटका हुआ, छोडा हुआ १० तोडा  
 हुआ ११ रखा हुआ, घरा हुआ, टिकाया हुआ १२ (उच्छवास)  
 निकाला हुआ, छोडा हुआ १३ अकुरित किया हुआ, निकाला  
 हुआ । (पत्ते)  
 (स्त्री० मूकियोडी)  
 मूकीं मूकी—देखो 'मुक्की' (रु भे)  
 उ०—१ जोर प्रवळ तन सघजो, सबळ पकडले सीह । दुसमण  
 खोची भाजदं महिय एक मूकींह । पा प्र.  
 उ०—२ हे कथ ये भागळ वण जुद्ध स जीगता आय काही कीधी ।  
 इयू कह हाय हाय कर वळती थकी छाती मे दोनू हाथ हागिया  
 छ ती मे मूकीयां वाही ।—वी स टी  
 मूकी—देखो 'मुक्की' (रु भे)  
 मूक्की—देखो 'मुक्की' (रु भे)  
 मूक्की—देखो 'मुक्की' (रु भे)  
 मूक्ता—देखो 'मुक्ता' (रु भे)  
 मूख—देखो 'मुख' (रु भे)  
 उ०—नमो मोहणी कमळा मूख मूनी । नमो घोम धूतारणी सभ  
 धूनी ।—मा वचनिका  
 मूखक—देखो 'मूखक' (रु भे) (अ मा)  
 उ०—मन दुसह दुहु विव माहरं असह वार लगै इसी । मुख  
 लियां कण्ठ न गेंद मनु, जग सदीव मूखक जिसे ।—रा रु  
 मूखमल, मूखमलू—देखो 'मूखमल' (रु भे)  
 उ०—वरणू वरणू के विलास सेतु मे कायम आरसी से मजुल  
 मूखमलू से मुलायम वरवाणू के साचे पखराउ री घाव ।  
 —र रु  
 मूखी—देखो 'मुख' (रु भे)  
 उ०—देखि जठाणी लागी छड जेठ । मूखी कुमलाणी अरि सूकड  
 छड होठ ।—वी दे  
 मूगता—देखो 'मुक्ता' (रु भे)  
 मूगताफळ मूगताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रु भे)  
 मूगनउ—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।  
 उ०—वीणउमीउ चीणउमीउ मलउमीउ आउचीयउ मूगनउ मयउ  
 मगलिक मेदियउ ।—व स  
 मूगळ—देखो 'मुगळ' (रु भे)  
 उ०—१ मुखे चख चोळ नरप मजीठ । वबोडत सावळ मूगळ  
 वीठ ।—नू प्र  
 उ०—२ मया दळ मूगळ मयद मेव । वरुण ग्रह बाज कवूत मेव ।  
 —मे म  
 मूगळी—देखो 'मुगळी' (रु भे)  
 उ०—मूगळी घटा आवड मजूम । जामूस फिरइ पसत जापूम ।  
 —रा ज सी



मूगीश्री, मूगीयी—देखो 'मूगीयी' (रू भे)

उ०—अमरीश्री सूहवीश्री मूगीश्री चलवलीश्री चारुलीश्री ।

—य स

मूगीडी, मूगीडी—देखो 'मूगीडी' (रू भे)

मूगी—देखो 'मूगी' (रू भे)

उ०—आठ सिध थापणी घाळ आसाऊवा, आपणी माळ नवनिध  
अनूवा । रिधव रुक दे मूवा न व्हे रायहर, सकत सूवा तणी राय  
सूवा —दळपत वारंठ

मूची—देखो 'मूची' (रू भे)

उ०—चालू वात रे भव मूची देय पोली—पूख खाया न केई जुग  
वीत्या —फुनवाडी

मूछ—देखो 'मूछ' (रू भे)

मूछडी—१ देखो 'मूछ' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'मोछडी' (रू भे)

मूछण—स०स्त्री०—१ छीलने या काटने की क्रिया या भाव ।

२ भोजनोपरान्त मुह साफ करने की क्रिया या भाव ।

३ भोजनोपरान्त मुह साफ करने निमित्त खाया जाने वाला पान  
सुपारी, इलायची आदि पदार्थ ।

उ०—पछे गगजला सु इलायची, कपूर वामता जल सु मनुहारें  
मनुहार चळु किया । उपरा पान कपूर, फाल, कसतूरी, लूग सु  
मूछण करगया ।—राव रिणमलरी बात

४ शराव पीते समय व अफीम लेने के बाद मुह का स्वाद बनाने  
के लिये खाया जाने वाला पदार्थ, चुर्वन ।

रू० भे० मूछण, मोछण,

अल्पा,—मूछणियो, मूछणो

मूछणी, मूछवी—क्रि० स०—१ लकड़ी आदि के छोर या सिरे को  
कारीगरी से काट कर बराबर करना छीलना ।

२ काटना ।

उ०—भरावा घड्ड भालें नगा 'फता वत मेघ भीना अतर समर  
विच मूछता । पमर घर डमर दुनिया पतोळा, वगर खागा पढें  
'अगर' बीजा ।—अज्ञात

मूछणहार, हारो (हारी) मूछणियो—वि० ।

मूछियोडी मूछियोडी मूछियोडी—भू० का० कृ० ।

मूछीजणी, मूछीजयो—कर्म वा० ।

मूछणी मूछवी मूछणी, मूछवी—रू० भे० ।

मूछरेल, मूछरैल—देखो 'मूछाळ' (रू भे)

उ०—तैही लक सागा सो जोजना गिरां तूछरेळ । मूछरेल अढांगा  
अयारां मेन मोच ।—र ज प्र

मूछाणी मूछावी—क्रि० स० [ मूछणी' क्रिया का प्रे० रू० ] १ लकड़ी  
आदि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवाकर बराबर कर-  
वाना, छीलवाना ।

२ कटवाना ।

मूछाणहार, हारो (हारी), मूछाणियो—वि० ।

मूछायोडी—भू० का० कृ० ।

मूछाईजणी, मूछाईजवी—कर्म वा० ।

मुछाणी, मुछावी, मूछाणी, मूछावी—रू० भे० ।

मूछायोडी—भू० का० कृ०—१ लकड़ी आदि के छोर या सिरे को  
कारीगरी से कटवा कर बराबर करवाया हुआ २ कटवाया हुआ ।  
(स्त्री० मूछायोडी)

मूछाळ—देखो 'मूछाळ' (रू भे)

उ०—तो काळा सरप रा वर में विल मे ऊदरा ही वडै है । उठे  
इज चेजो करै सो मूसा ही कहदे ही कै म्हेई मूछाळ मूछा वाळा  
हा ।—वी स टी

मूछाळी—देखो 'मूछाळी' (रू भे) (ना हि को)

मूछाळी—देखो 'मूछाळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—आव्या सुणी म्हेछ मूछाळा, रणि राउतवट कीधी । वतड  
भगइ पहिला घाउ लेमू, भन्न प्रतन्या लीवी ।—का दे प्र  
मूछियोडी—भू० का० कृ०—१ लकड़ी आदि के छोर या सिरे को  
कारीगरी से काट कर बराबर किया हुआ, छीला हुआ २ काटा  
हुआ ।

(स्त्री० मूछियोडी)

मूछियो, मूछी—स० पु०—१ लकड़ी के शिरे की कारीगरी से को जाने  
वाली कटाई ।

२ तरास, कटाई ।

३ काटने की क्रिया ।

रू० भे०—मुछळ, मूचो,

मूज—देखो 'मूज' (रू भे)

मूजणी, मूजवी—देखो 'अमूझणी अमूझवी' (रू भे)

मूजाणी, मूजावी—देखो 'अमूझाणी, अमूझावी' (रू भे)

मूजाण हार, हारो (हारी), मूजाणियो—वि० ।

मूजायोडी—भू० का० कृ० ।

मूजाईजणी, मूजाईजवी—कर्म वा० ।

मूझाणी, मूझावी—रू० भे० ।

मूजायोडी—देखो 'अमूझायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मूजायोडी)

मूजिव—देखो 'मुजव' (रू भे)

मूजियोडी—देखो 'अमूझियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मूजियोडी)

मूजी—वि०—कृपण, कजूस, सूम ।

मूभ—देखो 'मुभ' (रू भे)

उ०—१ म ठेल म ठेल पगा सु मूभ । त्रिविक्रम राय दीनानाथ  
तूभ । जटाघर वछे दैत जळाय । विमोहै रूप असाध्य वणाय ।

—ह र

उ०—२ मागू सुज दीज चवि लीमुख । सरव राज सम तूळ मूभ  
सुख ।—सू प्र

उ०—३ कायर पाकी दौडकर, ससि सू करे पुकार । अग ज्यू मूक  
वमावर्ज, मडल तरुं मकार ।—वा दा  
मूभणी, मूभवी—देखो 'ममूभणी, ममूभवी' (रू. भे) (उ र)  
उ०—१ मागन लार्ध भाण रय, रज डवर घेरी । महि अग मूभे  
मरे, नह लन्म सेरी ।—द दा.  
मूभणहार, हारो(हारी), मूभणियो—वि० ।  
मूभियोडी, मूभियोडी, मूभियोडी—भू० का० कृ० ।  
मूभीजणी, मूभीजवी—भाव वा० ।  
मूभाणी, मूभायी—१ देखा 'ममूभाणी, ममूभावी' (रू. भे)  
उ०—पूरण ग्यान दमा मन आणी, वेधक आणी वखाणीजी ।  
विवुव भणी भवबोध ममाणी, मूरय मति मूभाणी जी ।—वि कु  
मूभाणहार हारो(हारी), मूभाणियो—वि० ।  
मूभायोडी—भू० का० कृ० ।  
मूभाईजणी, मूभाईजवी—मम वा० ।  
मूभायोडी—देखो 'ममूभायोडी' (रू. भे)  
(मू० मूभायोडी)  
मूभियोडी—देखो 'ममूभियोडी' (रू. भे)  
(मू० मूभियोडी)  
मूभे मूभे—देखो 'मुभे' (रू. भे)  
मूठी—देखो 'मुठी' (रू. भे)  
उ०—मूठ्या सू ममलता पिमलता डाढा पीस । पोसत छाण र  
पिये दमत रा दोमत दीस ।—ऊ का  
मूठ—स० स्त्री० [स० मुष्टि] १ किसी उपकरण, औजार या शस्त्र का  
वह भाग जो हाथ में पकड़ा जाता है । दस्ता, बँट ।  
उ०—१ आण सिध न डोने भगा । खग रख दोदो धनुय निखगा ।  
हेक बाण गज प्राण प्रहार, मूठ अपूठी 'केहर' मार ।—रा रु  
उ०—२ पाधरी मूठ माथे हाथ गियो । मपाक करती पाढाळी बार  
काडी ।—कुनवाडी  
२ मुठी ।  
उ०—१ जन हरीया मन मूठ गहि, मउद भळाका माधि । पाळ  
बुधिधि कुमारिय, तन तरगम कु माधि ।  
—श्री हरिरामदासजी महाराज  
उ०—२ चन्म केमर छिगकत मोहन, अपने हात बिहारी, भरि,  
भरि मूठ गुमान लाव चहु देन मचन पे टारी ।—मोरा  
उ०—३ नाथ रे हाथ माहोरी कवाण री छ । बडी मपगीया रा  
तीर च्यार ती मूठ में छे श्रीर तरगम दोय होदा मे छे ।  
—दाढाळा मूर री बात  
३ मुठी म आने नायक किमी पदार्थ की मात्रा ।  
४ जार टोना या नाश्रिय पट कर्मा में से एक जिनके द्वारा किसी  
प्राणी को मारा जाता है, मारण ।  
उ०—१ पूने कर कर पीर, घर घर पूने गांम मे । वळे जगाव  
धीर, मूठ चलावे मोत्तियां —रायमिर् पांडू

उ०—२ पूगी नाळ गाजियो परवत, पदरे सहस गारडी पूठ ।  
फणधर डमण ऊठियो फीजां, मत्र जही लागे न मूठ ।  
—ऊकाजी वोगसी  
फि० प्र० आणी, चलाणी, मारणी,  
१ चोरी का माल । (उ र.)  
रू० भे०—मुठ, मूठ, मूठि, मूठी, मूठि,  
मूठडी—स० स्त्री० [स० मुष्टि] १ मुठ्ठी के आकार की बाटी, जिसे सेक  
कर चूरमा बनाया जाता है ।  
२ मुठ्ठी की धीमी चोट ।  
३ देखो 'मुठ्ठी' (अल्पा, रू. भे)  
उ०—माह चलते परठिया, आगण वीखडियाह । सोमी हिये  
लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह ।—अग्यात  
रू० भे०—मूठडी,  
मूठदार—स० पु०—१ पगडो को शिर पर बांधने का एक ढग ।  
२ कोई उपकरण या शस्त्र जिसके मूठ लगी हो ।  
मूठरवी—स० पु०—वडई का एक उपकरण, जिसे हाथ में पकड़ कर  
लकड़ी साफ की जाती है ।  
मूठाणी, मूठावी—देखो 'मुठाणी, मुठावी' (रू. भे)  
मूठावणी, मूठाववी—देखो 'मुठाणी, मुठावी' (रू. भे)  
उ०—मूठावे खग मूठ, चाल भारत सांम्ह हौ । सुवेज खाधी सूठ,  
मात मलाई मोतिया ।—रायसिंह सादू  
मूठाली—स० पु०—तलवार । (हि की)  
मूठि—१ देखो 'मूठ' (रू. भे) (उ र)  
उ०—१ जर कथा फाट जोयेमां, साचा पांव माडिया मेस । सार  
मूठि बावं गाजी सुत, अमर नाथ हाडा आदेम ।  
—अमरसिंह हाडा री गीत  
उ०—२ रुखमडयां का बाण काटिवा की ताई । सिम्ति बाधी ।  
अणी मूठि द्विदि एक सिम्ति की ।—वेलिटी  
२ देखो 'मुठ्ठी' (रू. भे.)  
मूठियो—स० पु०—१ काच, लाव, हाथीदात आदि की बनी चूड़ियों का  
समूह जिसे शरीर में हाथ की कलाई पर धारण करती हैं ।  
२ घाम या चारे की मुठ्ठी में ममाने लायक मात्रा ।  
३ पशु की टांग का नीचे का भाग ।  
उ०—किसा हेक घाहा छे ? वेपख भला, ऊचा धलना फटोरा  
नखा, आरसी मारीखा, तिअगळ गाळा मूठिया बील फळा ।  
—रा सा स  
रू० भे०—मुठियो, मुठियो, मूठियो ।  
मूठी—देखो 'मुठ्ठी' (रू. भे)  
उ०—१ जग यित झूठी जालाणी, मूठी भीड म रख । माया  
मेयी माडुवां चगा चांगव चरुत ।—वा दा  
उ०—२ सवरी के वीर सुशामा के तडुल, भर भर मूठ्यां हूकी ।  
—मोरा

उ०—३ गुलाबी नख बढ्योही मूठ्यां मे जाणें आखी दुनिया ई भीच्योडी ।—फुलवाडी

मूठी'क—अवयव—मुठ्ठी के बराबर, मुठ्ठी के अनुपात मे । मुठ्ठीभर ।

रू० भे०—मुठीक,

मूठ—१ देखो 'मूठ' (रू भे )

२ देखो 'मुंठ' (रू भे )

मूठणो, मूठवो—देखो 'मूठणो, मूठवो' (रू भे )

उ०—माया सब जग मूडीया, विना पाछ्ण मूठ । जन हरीया विन मूडीयां, रह्या राम का रुठ ।—स्त्री हरिरामदास जी महाराज मूठणहार, हारो (हारी), मूठणियो—वि० ।

मूडियोडो, मूडियोडी, मूड्योडो—भू० का० कृ० ।

मूडीजणो, मूडीजवो—कर्म वा० ।

मूठवर—स० पु०—रावण । (अ मा )

मूडाणो, मूडावो—देखो 'मूडाणो, मूडावो' (रू भे )

मूडायोडो—देखो 'मूडायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० मूडायोडी)

मूडावणो, मूडाववो—देखो 'मूडाणो, मूडावो' (रू भे )

उ०—निस्कटक राज्य प्रतिपालता सग्राम विसय कदाचित् उपजइ, विपत्ता ब्रह्मरुखा सांचरिया, क्षेय मूडाविउ, विद्व गभी सघटबट नोपना ।—व स

मूडावियोडो—देखो 'मूडायोडो' (रू भे )

(स्त्री० मूडावियोडी)

मूडियोडो—देखो 'मूडियोडो' (रू भे )

(स्त्री० मूडियोडी)

मूडीकट—१ घोडे की एक किस्म विशेष । (१)

२ उक्त किस्म का एक घोडा ।

उ०—लिखियो हतो, असल मूडीकट छै दोग पन्न सुघ छै । ऐराको छै ।—हाहुल हमीर री बात

मूडो—स० पु०—देखो 'मुठ्ठी' (रू भे.)

२ देखो 'मूडो' (रू भे )

उ०—सेठा नै पाछो खरायनै पूछयो आज तो किणो भला आदमी री मूडो जोयो, म्हनै पूरो राजी कर दिराबोला ? —फुलवाडी

३ देखो 'मोडो' (रू भे )

उ०—घावणो द्रोहरा, मूडा अत्रिय ज्यो कूदता, नज ज्यो नाचता, कुळचता । —रा सा स

मूड—वि० [म०] जड बुद्धि, मति मंद, मूर्ख बुद्धि हीन, अनपढ ।

( ह ना मां )

उ०—१ राम नाम मत वीसरै आतम मूड अयाण । काळ सकळ जग काटवा, कम ऊभो केषाण ।—ह र

उ०—२ पढिया विना मूड पग फावै, पढिया विचै पुमाई नै । उण रै ढिग कोई रहै आदमी, तो बयोहिक कसर कुमाई नै ।—ऊ का

उ०—३ दरवाजा सूमां तणा, मूडा तणा हियाह । खुलिया ।

माथा पच किया, सो नह साभळियाह ।—वां दा

२ दुष्ट, दुर्वृद्धि, कुबुद्धि ।

उ०—१ समझ सठ आतम ज्ञान अग्यानी माया वादी मूठ मसकरा मूठ महा अभिमानी ।—ऊ का

उ०—२ मूठ जिकै गुरु मत्र ज्यू, चुगली लवण सुनत । राग तान रीमळ नही, ढोलो सीस धुनत —बा, दा

संस्त्री०—१ योग में, चित्त की एक वृत्ति

रू० भे०—मुठ, मूठइ, मुठ, मुठ्ठ मुरड, मूठ,

२ देखो 'मुठ' (रू भे ) (ह ना मा )

३ देखो 'मूठ' (रू भे )

मूठ गरम—स० पु०—१ वह गर्भ जो विकृत हो गया हो, ।

मूठता—संस्त्री० [स०] १ मूठ होने की दशा अवस्था या भाव ।

२ मतिमन्दता, मूर्खता, बुद्धिहीनता ।

उ०—१ भवाव्विनाय भावना, विभू नही विकारसी । मदीय मे न मूठता त्वदीय है न तारसी ।—ऊ का

उ०—२ राजा नै जितो राणी री समझ अर उण रै गुणां माथै भरासो हो, राणी नै उत्तो ई राजा री नासमझी अर उण री मूठता माथै भरोसो हो ।—फुलवाडी

३ नासमझी, बेवकूफी ।

उ०—तोडो राव विकट मूठता री बात केरी ही अर वा ई उण री पार गो परी,—फुलवाडी

४ असम्यता ।

५ अज्ञानता ।

उ०—सुख री बातें माथै हरख मनावणो अर दुख री बातें माथै रोवणो—रीकणो आ तो निपट मूठता है ।—फुलवाडी

६ गवारूपन ।

उ०—पढै गुणें नही पेखवै, चार ही वरख निचित । मारवाड री मूठता, मिटसी दोरी मित ।—ऊ का

मूडो—देखो 'मूडो' (रू भे )

उ०—१ सूरज उगाली धुनार सामी मिलै, लोग मूडो फोरै, सामें सिर सळ घालै ।—दसदोख

उ०—२ ग्यान पथरणों धरियो गूढां । भेली विद्या रजाई मूडा ।

—ऊ का

मूण—देखो 'मूण' (रू भे )

मूणपट्टो—स० पु०—मूण के आकर से मिलता जुलता ।

उ०—घरां मोकळी खेती वाडी हुवै, वीणें री घमरोळ राखै । मोठा मोठा मूण-पट्टा मतीरा राजाजी ताई पुगावै अर मोथाव पावै ।

—दसदोख

मूणियड—देखो 'मूणियड' (रू भे )

मूत—स० पु० [स० मूत्रम्] १ पेगाब, मूत्र ।

उ०—१ पाद तणी परधान, गादरो साप्रत गोटी । अनुभ चले को अनुग, मूत री भाई मोटी ।—ऊ का

उ०—२ बोली-ओ होक तो घण्णा ! घणो खमा ! अठं तो मूत देवता रो मिदर माडू ह ।—दसदोष  
 मुहा०—१ मूत उत्तरणी = अत्यधिक डर या भय के कारण पेशाब कपड़ों में ही मारा जाता ।  
 २ मूत काढणी = इतना मारना या डराना कि पेशाब मारा जाये ।  
 ३ मूत निकलणी = देखो 'मूत उरणी'  
 ४ मूत निकालणी = देखो 'मूत काढणी'  
 ५ मूत बढ होणी = एक विमारी है जिसके कारण पेशाब मारना बढ होजाता है ।  
 ६ मूत रो चार मार्थ गवणी = तुच्छ व हेय समझना ।  
 २ पेदाईश, वशज ।  
 उ०—गावा सहरा गोलगां, रहै हुमा रजपूत । लखणां सूलख लीजिए, मुकर घणा रा मूत ।—बा दा  
 रु०भे०—मूत, मूथ, मूत्रि ।  
 मूतणियो—देखो 'मूतणी' (अन्ग०, रु भे )  
 मूतणी-स स्त्री—मूत्रेन्द्रिय ।  
 मूतणी—स०पु०—मूत्रेन्द्रिय ।  
 उ०—रग रो मफे कूडळी सीगाटी, ओछी अर पतळी पूछ, छोटी मूतणी ।—कुलवाटी  
 रु०भे०—मूतणी मूतरणी  
 अल्पा०—मूतणियो, मूतरियो  
 मूतणी, मूतबी—क्रि०म०—पेशाब करना, मूतना, लघुशका करना ।  
 उ०—१ भल्ले यादी देर हुई कं एक जणी मूतण दुऱियो । डोररी आगिया फाड फाड जोयो अर वाली-फरीदिया । ओ वारं कुण गयो है ? मजूर मूतण गयो है ।—वरसगाठ  
 उ०—२ मे वावु लोग बदेई किणी रा ढिह्या, बाढी आगळी मार्थ ई को मूत नी ।—कुलवाटी  
 मूतणहार, हारी(हारी), मूतणियो—वि० ।  
 मूतियोडी, मूतियोडी मूतियो—मू० का० कृ० ।  
 मूतीजणी, मूतीजयो—वर्म वा० ।  
 मूतणी, मूतबी, मूतणी मूतबी—रु०भे० ।  
 मूतानी, मूताबी—क्रि०म०[ 'मूतणी' क्रिया का प्रे०रु० ] १ पेशाब करने के लिय प्रेरित करना पेशाब करना, मूताना ।  
 २ बच्चे या किसी अन्नमय प्राणी का पेशाब करने में मदद करना ।  
 मूतानहार, हारी(हारी), मूतानियो—वि० ।  
 मूतायोडी—मू० का० कृ० ।  
 मूताईजयो, मूताईजयो—वर्म वा० ।  
 मुताणी मुताबी मुताणियो, मुताबी—रु०भे० ।  
 मूतायोडी—मू० का० कृ०—१ पेशाब व ने के लिय प्रेरित किया हुआ, पेशाब कराया हुआ, मूताया हुआ ।  
 २ पेशाब करने में मदद किया हुआ ।  
 (म्पों—मूतावाटी)

मूतायो—वि० [स्त्री०मूताई] जिसे पेशाब की हाजत या शका हो, लघु शका ग्रस्त ।  
 उ०—१ ना भाई! इयं कान सुण चाहे बियै, मनं तो इयां की पोसावें नी । तो माजी? तिसाया मूताया तो रयोजै ई कोनी ।  
 —वरसगाठ  
 उ०—२ नाडा छोड करणी रो जी मे आई, जद मारग रं विचाले ही बैठगी मूताई ।—दसदोष  
 मूतियोडी—मू० का० कृ०—पेशाब किया हुआ, मूता हुआ ।  
 (स्त्री०मूतियोडी)  
 मूती—स०स्त्री० [स०मूत्र] पेशाब मूती ।  
 क्रि०प्र०—म्राणी, करणी, लागणी, होणी,  
 रु०भे०—मुत्ति, मुत्ती,  
 मूत्र—स०पु० [स०मूत्रम्] वह पानी जो शरीर के विपले पदार्थों को लेकर उपस्थ मागं से निकलता है, पेशाब, मूत । (उ र )  
 पर्या०—वस्तिमल, मूत, मेह, स्रव ।  
 मूत्रकच्छ, मूत्रकच्छ—स पु० [स०मूत्र कृच्छ] पेशाब का एक रोग, जिसमें पेशाब थोडा, थोडा, रुक-रुक कर तथा कण्ट के साथ आता है ।  
 उ०—१ जिण समय दिल्लीम साह जिहान मूत्रकच्छ नामक महातक रो प्रकोप थियो ।—व भा  
 उ०—२ महीदर जलोदर कठोदर भगदर प्रतिमार मूत्रकच्छ उदग्गूल हृदयसूल\*\*\* व स  
 मूत्रग्रह—स०पु० [स०] घोडे का एक रोग जिसमें घोडे के पेशाब थोडा थोडा व म्हाग लिये हुऐ आता है ।  
 मूत्रदत्तक—स०पु०—दश प्राणियों के मूत्र का मिश्रण ।  
 वि०वि०—ये प्राणी इस प्रकार हैं—मनुष्य, स्त्री, गधा, बैसा, घोडा, बकरा, गाय, ऊट, मेढा, हाथी ।  
 मूत्रविग्यान—स०पु० पु [स०मूत्र विज्ञान] आयुर्वेदीय मूत्रपरीक्षण विद्या ।  
 मूत्राघात—स०पु० [स०] पेशाब सम्बन्धी एक बीमारी ।  
 मूत्रासय—स० पु० [स० मूत्राशय] शरीर में नाभि के नीचे का वह स्थान जहा मूत्र संचित होकर बाहर निकलता है ।  
 मू'या—देखो 'मूहता' (रु भे )  
 मूव—स० पु०—कुल्हाडी, फस्सी, मुदाली, फावडा इत्यादि का पृष्ठ । भाग ।  
 रु०भे०—मूड  
 मूदडी—देखो 'मूदडी' (रु भे )  
 उ०—मरद पवमाथ भूमण कडा मूदडी, कठ डोरी मुरति लवग काना ।—मे म.  
 मूदडी—देखो मूदडी (रु भे )  
 उ०—मोनी का कडा मूदडा गाळा, पेसा गाम पटाला । वेगागळ दवाळ बटाळा, माज वाज सिखराला ।—अग्यात  
 मूदणी, मूदवी—देखो 'मूदणी, मूदवी' (रु भे )  
 उ०—छित फूळ द्रम छाईं गुरु गम गाईं, माईं चख मूदवा है ।

चामर कर चोळा भामर भोळा, पामर पद पूजदा है ।—ऊ. का  
मूदति, मूवती—१ देखो 'मुदित' (रु भे)

२ देखो 'मदद' (रु भे)

३ देखो 'मुदति' (रु भे)

मूदरा—देखो 'मुद्रा' (रु भे)

उ०—फान न मूदरा मेवळा, भसम न अग घसे ।

—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

मूदो—देखो 'मुदो' (रु भे)

उ०—आविये जेण समार रौ वहे उदो मूदो सब बात रौ मेह  
माये ।—घ व. प्र

मून-स० स्त्री० [स० मौन] १ चुप या शान्त रहने की क्रिया या  
भाव ।

२ चुप्पी, खामोशी, शान्ति, मौन ।

उ०—देख सरप वहे दादुरा, सब कला कर सून । पुरख असेंदो  
पेख वहे, मावहियां मुख मून ।—वा दा

३ चुप रहने, न बोलने का सकल या प्रण, मौनव्रत ।

उ०—१ बातां विमतरै बरौ मठ आगै सरवज । मून ग्रहे छांडे  
मछर, तीखी मिलिया तज —वा दा

उ०—२ केड कहे मावद्य दान मे पुन्य पाप मित्र न कहियो तिए  
सू सावद्य दान मे म्हे मून राखा ।—भि द्र

वि०—जो मौन रखता हो, जो बोलता न हो ।

उ०—ऐसे मैं आरम कियो, पग चढे गिर कून । वाद करेवा सरसती,  
कैसे पोहचै मून ।—गज उद्धार

रु० भे०—मुण, मुन मून, मौन

मूनव्रत—देखो 'मौनव्रत' (रु भे)

उ०—पूरउ तप हूउ पतन्या पूगी, ईसर ताई मूनव्रत लीयइ । वारा  
जुगा ह्वी वहुनामी, ताळी छोडी दीह तीयइ ।

—महादेव पारबती री वेलि

मूनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रु भे)

मूनि मूनी—देखो 'मुनि' (रु भे)

उ०—१ ऐ बक मूनी ऊजळा, मोठा बोला मोर । पूछो सफरी  
पनग नू फत ऊघडे कठोर ।—वा दा

उ०—२ खुनी खळ खचळ ऊनी अचळ, मूनी मिळ मुळकदा है ।

—ऊ का

२ देखो 'मौनी' (रु भे)

मूनेस—देखो 'मुनीस' (रु भे)

उ०—करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्ज । दखे जै जया बोल आनेक  
दुज्ज ।—र ज प्र

मूफट—देखो 'मुहफट' (रु भे)

मूफतियो—देखो 'मुफतियो' (रु भे)

मूफाड—देखो 'मूफाड' (रु भे)

मूम—देखो 'मोम' (रु भे)

मूमल-स० पु०—एक राजस्थानी लोक गीत ।

मूमारखी—देखो 'ममारखी' (रु भे)

उ०—पाछे थटै भखर वादगाह नू मूमारखी फतै पाई री मेल्ही ।

—जलाल वूवना री बात

मूमावडी-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—नेत्रपट्ट घोटपट्ट राजपट्ट गजवडि हसवडि बोरि आवडी  
ऊमावडि मूमावडि पूमावडि ।—व स

मूर—१ देखो 'मूळ' (रु भे)

उ०—१ दीनानाथ दयाल सबनि का मूर है । हरि हां जन हरिदास  
तेज पूज परकास अखडित तूर है ।—ह पु वा.

२ देखो 'मुर' (रु भे)

मूरख-वि० [स० मूर्ख] १ जिसमे बुद्धि का अभाव होने के कारण ठीक  
ढग से सोचने, विचारने एवं काम करने की योग्यता न हो, बुद्धि  
हीन मूढ, बेवकूफ । (अ मा)

उ०—जद समजू जाण पोते तो देवै नही अनै दूजा नें पुण्य वतावै ।  
पिए ए बात तो मूरख हुवै ते मानै, पुण्य हुवै तो पहिला पोते  
कर दिखावै जद दूजा पिए मानै ।—भि द्र

२ समझने पर भी जिसको कोई बात समझ मे न आती हो,  
मद बुद्धि ।

उ०—१ अग घण आलगियो, अवर घणारी ऐंठ । नर मूरख  
जाणै नही, पातरियां री पैठ ।—वा दा

उ०—२ एता सुख ससार का एता सुख न जानि जन हरीया  
सो सुख है, मूरख ताहि न मानि ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—३ मूरख कथन न मानियो, लमियो मूख लजाइ । तानू  
रव न दियो तखत दोनू रवत दिखाइ ।—व भा

पर्या०—अगलज, अमूक अग्र्यान अजाण अवुध, अवूम, अमेध,  
असन इतिवार, कद कदवद कूठ खळ, गिवार, जठ जथाजात, जालम,

डोंडो, निखेद, निलज नैड, वाळ, वळम वैधग्रण मद, मदमति,  
महाविकळ, मात्रोमुख, मुगध मूक, मूढ, रहिति, विकळ, विणवाट

विधरण, विमुखगुण, वेवेअ, वैतवार, सठ, सीमितमुख, स्थानि-  
निमठ, स्थानमड हीण,

स० पु०—मूर्ख व्यक्ति ।

उ०—मुक नाचता भरह रसाल, ए स्यु जाणइ मूरख ताल ।  
राखि मुक होयडइ एह जि चित राति दिवस ए मूरख कत ।

—हीराणुद सूरि

२ वन मूग, उदं ।

रु० भे०—मूरख, मूरिख, मूरूख,

अल्पा०—मुग्खी, मूरखी,

मूरखता, मूरखताई-स० पु० [म० मूर्खता] १ मूर्ख होने की अवस्था  
या भाव ।

२ मूढता, अज्ञानता, नादानि ।

उ०—मूर्त तो केई केई वरसा सू आ मोटा मिनखां री अकल माथे  
पूरी पूरी अमरोमो ई हो, पण मूर्खता री इण बांनगी री तो  
मै मपना मे ई आस नी करो ही ।—कुलवाडी

उ०—२ कर्ण री मूर्खता माथे चरचा चाले, गोमद रो काळजी  
सूक ग्यावण वेगी हाले हे ।—देवदोख

३ गवारूपन ।

रू० भे०—मूर्खता,

मूर्खाई—स० म्यो०—मूर्खता पूर्ण कार्य, मूर्खतापूर्ण वात ।

रू० भे०—मूर्खाई,

मूर्खी—देखो 'मूर्ख' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ ताहरा राजा री कुवरी सनीत हुई । जो पाछा जाईजे तो  
टोट नही । हिबे मूर्ख गति । ताहरा मूर्खी बोलीयो—जो देवी  
मारदा मोनू वर दीयो हिबे ह मूर्ख नही ।—चीवोली

मूर्च्छना—देखो 'मूर्च्छना' (रू भे)

मूर्च्छा—देखो 'मूर्च्छा' (रू भे)

उ०—जिमहे ही राममिषजी कुवरी री कागी दीठी विपरीती  
तिमट्टे ही मूर्च्छा आइ पडिया —द वि

मूर्च्छन—देखो 'मूर्च्छन' (रू भे)

उ०—पडव राज प्रधान मूर्च्छन राज अहमड । जीति राज तन  
जिता, चक्र मिव राज खट चड —मू प्र

मूर्च्छन, मूर्च्छना—स० पु० [म० मूर्च्छना] १ मूर्च्छन करने की क्रिया या  
भाव ।

२ उक्त कार्य के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला मन्त्र विशेष ।

३ पारे का तीसरा सन्धार जिसमें श्रुद्धा, प्रिकन'दि में मात दिन  
तन भावना दी जाती है ।

४ सर्गात में एक ग्राम में दूसरे ग्राम तन जाने में साती स्वरों का  
आरोह—अवरोह ।

५ काम देव का एक वाण ।

रू० भे०—मूर्च्छना, मूर्च्छना मूर्च्छना, मूर्च्छा,

मूर्च्छा—१ देखो 'मूर्च्छना' (रू भे)

उ०—मैरुथीम मूर्च्छा त्रिण(ह) ग्राम निमवति सुर । लहण भेउ  
पटराण काठ, अर्चय मोवतर —गु रू व

२ दमो 'मूर्च्छा' (रू भे)

उ०—१ हगै ताटिका बाण हुना मुगहां उचै मूर्च्छा होष मारीच  
वाहा ।—मू प्र

उ०—२ अर उठो उण नेजटी रें वाम मूर्च्छा तूट्यां भूत री  
माय्या गुयी ।—कुलवाडी

मूर्च्छागत, मूर्च्छागति—देखो 'मूर्च्छागत' (रू भे)

उ०—१ मा दमो रूप देण लायी मूर्च्छागत हुई —पचट्टी री वारता

उ०—२ भूत रा मन में गेहो अलूभाट तो बदेई नी गूथीजयो ।  
वेहन प्रदीठ वेटा उं की नी मूर्च्छागत वंगी ।—कुलवाडी

उ०—३ मूर्च्छागति घरणी पदचार्या, चनन पामो जाप । वीर

कसण दयांमणोजी, नेम भणी मिर नाम ।—जयवाणी

उ०—४ मूर्च्छागति दूरी हुई, हर उठोयी सावचेत हुयो । होतां  
ही कवर का राखवा को जूवा बसाल कियो ।—पना

मूर्च्छाणी, मूर्च्छावो—देखो 'मूर्च्छाणी, मूर्च्छावो' (रू भे)

मूर्च्छाण हार, हारी (हारी), मूर्च्छाणियो—वि० ।

मूर्च्छायोडो—मू० का० कु० ।

मूर्च्छाईजणी, मूर्च्छाईजवो—भाव वा० ।

मूर्च्छायोडो—देखो 'मूर्च्छायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूर्च्छायोडो)

मूर्च्छित—देखो 'मूर्च्छित' (रू भे)

उ०—रुक्मणीजी के देखता ही सगळी सेना जि हुती तितरा मन  
पग हुआ । सहु सेना मूर्च्छित हुई ।—वेलिटी

मूर्च्छो—देखो 'मूर्च्छा' (रू भे)

उ०—मारवणीजी री रूप देख दोना न मूर्च्छी आई, मोने तो मसळ  
कुमळ उठायो ।—डो. मा

मूर्च्छ—देखो 'मूर्च्छ' (रू भे)

मूर्त्त—१ देखो 'मूर्त्ति' (रू भे) (श्र मा)

उ०—१ सखी अमीणी साहिबी मदन मनोहर गात । महाकाळ  
मूर्त्त वणै, करण गयदा घात —वा दा

उ०—२ सोई खुडद आज दिन सांप्रत, स्त्री दुरगा सकळाई । मूर्त्त  
अदुल भेख मरदानू, सूरत हृदय समाई ।—मे म

उ०—३ पडया मुख मूर्त्त मूर्त्त पाक, पडया चक मूर्त्त कंध  
पिनाक । उभै गजगाह पडया दहु ओड, पडया खुरताळ जडया चहु  
पोड —मे म

उ०—४ मूढा पर काळो नकाव नाक्या अर हाथ में छुरी लिया  
एक मूर्त्त उभी ही ।—रातवासी

उ०—५ दया री मूर्त्त मोटोड़ी राणी तो सुरग सिधाई ।

—कुलवाडी

उ०—६ छव फुट लावी डोल, डिवाळ मूर्त्त, तणियोडा मूर्च्छा,  
किलागोडा दाही रें सागै मभाव में तेज अरतों दीसै —दमदोख

२ देखो 'मूर्त्त' (रू भे)

मूर्त्तवत, मूर्त्तवत—वि० [स० मूर्त्तिवत] १ शरीर धारी मूर्त्तिमान,  
मजरीर दहधारी ।

उ०—कसणजी का जुदाजुग रूप देखण लागा कामिनो कहइ  
काम भायो । सप्रु कहण लागा काळ आयो और जिकेइ विरोधी  
न था त्याह स्त्री नागयण को स्वरूप जाण्यो वेद का अरथो था ।  
त्याह कही मूर्त्तवत वेद आयो । योगीस्वरा जाण्यो जोगतत  
योही ।—वेलिटी

२ जिसका कोई आकार—प्रकार या रूप ही, साकार, मणुण ।

३ जो किना प्रतिमा की तरह अवल हा, निश्चेष्ट, स्थिर ।

उ०—गणेश नीवावत भोतर पवारें छे । समा समा हुय रही छे ।  
आणु डोनिपे विराजमान हुवा छे । मुहई आगे पातरां पोमान कर



साज बाज लिया खडी छै । हुकम हुवी छै । राग रग हुवै छै । छह राग, तीस रागणी । मूर्तवत खडा हुवा छै । —रा सा स ४ साक्षात्, प्रत्यक्ष ।

रू० भे०—मूर्तिवत, मूर्तिवतउ,

अल्पा०—मूर्तिवती,

मूर्ति-स० स्त्री० [स० मूर्ति] १ कोई देव-प्रतिमा, मूर्ति ।

उ०—१ मूर्ति सालिगराम की, जल सू घोवै आनि । कर सू भेलै उखणै, आतम राम न जानि ।—स्त्री हरीरामदासजी महाराज

उ०—२ देवळा मूरता हुत जो कियो दिन, खुरम रो डोकरी कुवष खेलै ।—नरहरदास वारहठ

२ कलात्मक ढग से बनाई हुई कोई पत्थर, चातु आदि की प्रतिमा, पुतली ।

उ०—१ घात पथर मूर्ति पधरावै, ठाकुर सेवा नांव धरावै । कर सु खोलि करै चरणामत, यु तो जानि नहीं परमागत ।

—स्त्री हरीराम दासजी महाराज

१ चित्र, तम्बीर ।

४ शकल, आकृति, सूरत ।

उ०—१ बाहि पर तन मन हैं वारी । वह मूर्ति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी ।—मीरा

उ०—२ तीणइ सुंदर मूर्ति देखी साथिई लीउ उछाहि । जयमागर केते दीहाडै पहुतउ स्त्रीपुर माहि ।—हीराणंद सूरि

५ स्वरूप, रूप ।

उ०—१ सुमील सम्य साच्छर, स्रुति प्रमान सोहनें । अमग पुत्ति ओज के मनोज मूर्ति मोहनें ।—ऊ का

उ०—२ मोहिनि मूर्ति सावरि सूरति, नैना वनै विसाल ।—मीरा ६ शरीर, देह ।

उ०—वाळ मुकद नद धरि वाळक, मात लडायो जसोमती । भगतवच्छळ गोकळ मन भावन, पावन मूर्ति जगतपति ।

—ह नां मा

७ प्रतीक ।

उ०—महा अजमति परम मूर्ति, पैज रघुपति तेज पूरति । प्रभुति सुण अति धूज घरपति, सुणै छत्रपति साह ।—रा रू

८ साधुओं के लिए एक सम्बोधन ।

उ०—वै महतजी नै सिकायत करी तो महतजी उण नै बुलायनै समझायो—भाया, सगळी मूर्तिया थारी घरणी सिकायता करै । थू बिना काम मारग चालतो ई धारी जमायोडी चीजा नै ठोड क्यू छुडावै ? राम दुवारा री सगळी मूर्तियां थारी इण हेरा—फेरी सु नाराज है ।—फुलवाडी

९ प्राचेतस दक्ष की सोलह कन्याओं में से एक जो धर्मश्रद्धा की पत्नी एवं नर-नारायण की माता थी ।

१० स्वारीचिप मन्वन्तर का एक प्रजापति, जो वसिष्ठ ऋषि के पुत्रों में से एक था ।

११ ब्रह्मसावणि मन्वन्तर के सप्तपियों में से एक ।

१२ देव विशेष की आकृति का गले में धारण करने का सोने या चादी का एक आभूषण ।

रू० भे०—मूर्ति, मूर्ती, मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति, मूर्त, मूर्ती, मूर्त्त, मूर्त्ति ।

मूर्तिकार-स० पु० [स० मूर्तिकार] १ मूर्तियों, प्रतिमाएँ बनाने वाला, शिल्पी ।

२ चित्रकार, चित्तेरा ।

मूर्तिपूजक-स० पु० [म० मूर्तिपूजक] १ किसी मूर्ति या प्रतिमा की नियमित पूजा करने वाला ।

२ सगुण भक्ति धारा का अनुगामी ।

मूर्तिपूजा-स० स्त्री०—किसी मूर्ति या प्रतिमा का पूजन कार्य ।

मूर्तिमत-स० पु०—मूर्तरय राजा का एक नामान्तर ।

मूर्तिमान-वि० [स० मूर्तिमान्] १ शरीर धारी, देह धारी, साकार ।

२ प्रत्यक्ष, साक्षात् ।

मूर्तिवत, मूर्तिवतउ—देखो 'मूर्तवत' (रू भे )

उ०—१ ऐसी भाति अनेक उछव सै गावते हैं । तारीफ की तान आसमान से लावते हैं । ऐसा मूर्तिवत राग का थाट रचि जरकस जवहरू के इनाम पाए ।—सू प्र

उ०—२ श्रीजउ मूर्तिवतउ सागर सागर जिम गभीर । चउथउ वधव सुणि घन सागर, समरय साहस धीर ।—हीराणंद सूरि

उ०—३ ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि वैठा छै जिसा साक्षात् मूर्तिवत वेद —बेलि टी

मूर्तिवती—देखो 'मूर्तवत' (अल्पा, रू भे )

उ०—मूर्तिवती नाद छै ।—बेलि टी.

मूर्तिविद्या, मूर्तिविध्या—स० स्त्री० [ स० मूर्तिविद्या ] १ प्रतिमा बनाने की विद्या, शिल्पी कार्य ।

२ चित्रकारी का कार्य ।

मूर्ती—देखो 'मूर्ति' (रू भे )

उ०—१ कारीगर आया, नीव भरी अर च्यार महीणा मे मकान गिगनां चाढ दीनो । किवाड चाढे, घटा लागै तथा देवारी मूर्ती पधरावण बेगी वात चीत हुवै है ।—दमदोख

उ०—२ थिरू मूर्ती सूर रै नूर थाई । तिका स्वप्न रै माहि पिडां वताई ।—मे म

उ०—३ तुही पच्छ तारच्छ मे शीघ्रताई । रती मूर्ती मे तुही सुदराई ।—मे म

मूर्त्त—देखो 'मुहरत' (रू भे )

२ देखो 'मूर्ति' (रू भे )

मूर्त्ति—देखो 'मूर्ति' (रू भे )

उ०—वृकं कुण नाथ तुहाळा वग, मकत्ति न रुद्र मूर्त्ति न लिंग ।



मूरद-सं० पु० [सं० मूर्दन्] शिर, मस्तक ।

मूरदज-वि० [सं० मूर्दज] शिर से उत्पन्न होने वाला ।

सं० पु० [सं० मूर्दज] केस, धाल ।

मूरदज्योती-सं० स्त्री० [सं० मूर्दज्योतिस्] योग में ब्रह्म रश्मि ।

मूरदन्य-वि० [सं० मूर्दन्य] १ मूर्दा से सम्बन्ध रखने वाला ।

२ सिर या मस्तक में स्थित ।

मूरदन्यवरण-सं० पु० [सं० मूर्दन्य वर्ण] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्दा से होता है ।

मूरदा-सं० स्त्री० [सं० मूर्दा] १ मस्तक, शिर

२ व्याकरण में, मुह के अन्दर का तालु और अलि जिह्वा के बीच का भाग जिसे जीभ का अग्रभाग ट ठ ड ढ र प का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है ।

रू भे —मूरघा,

मूरदामितेक-सं० पु० —शिर पर किया जाने वाला अभिषेक या जल सिंचन ।

मूरधन-सं० पु० [सं० मूर्धन, मूर्धन] १ शिर, मस्तक । (ह नां मा)

२ श्रृङ्ग, मीं ।

३ शिखर, दृग, चोटी ।

४ प्रधान, मुख्य ।

५ नेता, नायक, अग्रणी ।

६ अगला, अग्र ।

७ एक देव, जो भृगु एवं पोलोमी के पुत्रों में से एक था ।

मूरघा—देखो 'मूरदा' (रू भे) (ह नां मा)

मूरया—देखो 'मूरवा' (रू भे)

मूरिख—देखो 'मूरख' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ तरं बादशाह पण फरमाई कोई इरासू अधिको मूरिख छै ।

—नी प्र

उ०—२ मूरिख तें मुक्त नैं गणों वचन कहघो अविचार । जो पदमणि हाये भीमस्यु तो भाव तुम्ह बार ।—प. च चौ

मूरियो—देखो 'मोरियो' (रू भे)

मूरी—देखो 'मोरी' (रू भे)

उ०—वोनं भा वात छाछो तरं मू मालम ही के इण अडियल भादमो रं ऊठा री मूरियां इण री माथी पढया रं पछे ईज हाय में आबेला ।—रातवासी

मूरल—देखो 'मूरख' (रू भे)

मूरो—देखो 'मोरो' (रू भे)

मूल, मूल-सं० पु० [सं० मूल] १ वृक्ष, पौधों, लताओं आदि की जड़ ।

उ०—१ गाज इनं ठ्येड गज, माभळ वन तर मूल । जागं नह यह में जिनं, सक हायळ सादूळ ।—वां दा

उ०—२ तेस-विहंगउ दीयड, मूल-विहणी वेलि । पांछी विहणी ददुरी, तिम होई नि महेलि ।—मा का प्र

उ०—१ नही तू मूल नहीं तू डाळ । नही तू पत्र नही जु पराळ ।

—ह र

२ पेड का तना ।

उ०—१ घड कुम निवांणु कि भौण दुई, उर पाट कपाट सु प्रीळ अहं । जुग जघ तरीवर मूल जिसा, अण भग उत्तगई सिला इसा ।

—मा वचनिका

३ बीज ।

उ०—१ राम नाम निज मूल है और सकळ विसतार । जन हरीया फळ मुगतिकु, लीजै सार समार ।—श्री हरिरामदास जी महाराज

उ०—२ ग्रह जग मिटावण विघन तन तापरा । खपावण पाप रा मूल खोटा । अनेकां प्रवाहा गिरां कुण आपरा, मात घणियाप रा विहद मोटा ।—खेतसी वारहठ

४ जमीन कद मूल ।

उ०—फळ मूल खाकं हरी मिलें तो, बादर बादरा होई ।—मीरा

५ किसी वस्तु का नीचे का भाग ।

६ पिप्पली मूल, पीपरा मूल ।

७ प्रारम्भ शुरुआत, आदि ।

उ०—नहीं तो माय नहीं तो बाप, आपेज आपे ज उपश्री आप । मनच्छा बीज चलावै मूल थयो चर वे चर सुखम घूळ ।—ह र.

८ उत्पत्ति, उत्पत्ति ।

उ०—विदर विदर जाणुं नही, मादर विदरां मूल । राखें अगणत रग रा, दिलरी कुमी दुकूल ।—वा दा

९ कारण प्रयोजन ।

१० नीव, बुनियाद, आधार ।

उ०—१ एका मूल ऊर्ध्विया हेकां किया निहाल । असपत्ती नह ऊधपै, जै थपै 'अजमाल' ।—रा रू

उ०—२ बावळी विकट सादूळ बाहण वर्ण हांथियो सीस समतूल डालै । अरोहै मूल दुस्ता तणा उखाडण, भाडव्या रुखाळण मूल झालै ।—मे म

११ आदिमंत्र, बीजमंत्र ।

उ०—देवी मंत्र मूल देवी बीज बाळा, देवी बापणी स्रव लीला विसाला —देवि

१२ सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र (भ्र मा)

उ०—तू गहलो तू मानियो तू भोळो भवराळ । मूल मघा मे तू हुभी तातं मरस लवाळ ।—गजउद्धार

१३ असल पूजा, मूल धन ।

उ०—१ नैनह दिन सूरु नही भूला कत ह जाइ । दादू धन पावें नही, भाया मूल गवाई ।—दादूवाणी

उ०—२ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर ती माग्या पडे । साहूकार ती व्याज सहित देव अने दिवाल्या मूल ही मे तोटी घालै ।—भि द्र

उ०—१ या जुग माहि करन कु मोदा, आयें लोक लुगाई । एक

ले चालै लाभ चौगणों, एकां मूळ ठगाई ।—

—स्त्री हरिरामदास जी महाराज

१४ मुद्राविशेष ।

१५ दलाल ।

१६ तल ।

१७ छोर, शिरा ।

१८ वर्ग मूल ।

१९ चदन । (अ मा )

२०—परम्परानुगत सेवक ।

२१ पढोस, सामीप्य ।

२२ मूल कृति या लेख जो पहले पहल किसी ने अपनी बुद्धि से तैयार किया हो ।

२३ प्राय रात के समय, किसी जलाशय के किनारे खड़ा खोदकर या रास्ते के पास किसी पेड़ पर मचान बाध कर, शिकार की ताक में शिकारी के बैठने की क्रिया या भाव ।

उ०—दिन १ आढी घाल नै कह्यो—आपे सिकार सूअरा री मूळों री खेलसा । तरै सूरजमल कह्यो—“भली बात ।”—नैणसी

२४ शिकार के लिये उक्त प्रकार से बैठने का स्थान ।

उ०—पण एक दिन ईसहो दईव संजोग हुवो सौ म्होकमसिध तो हिरण री सिकार मूळ बैठो थो ।—प्रतापसिध म्होकमसिध री बात  
२५ पूर्व दिशा ।

उ०—कोस ४ मूळ माहें । सीरवी वाणीया वसैं ।—नैणसी

वि०—१ मुख्य, खास प्रधान ।

उ०—मऊ सू कोस ७ गाव धूळकोट छैं तठै नोसरैं छैं पाणी मूळ गूहवाण री आवैं छैं ।—नैणसी

२ असल

उ०—रुडे तोरथराज रैं नित जळ कीजें न्हान । तो पिण न हुए पाक तन, मूल पुरीख मकान ।—वा दा

३ खुद का, अपना, मौलिक, निजी ।

४ पहला, प्रथम ।

५ किंचित, तनिक, थोडा ।

उ०—नारायण रा नाम सू, प्राणी वाणी पोय । जम ढाणी लागै नहीं, हाणी मूळ न होय ।—ह र

उ०—२ पुत्र त्रिया ने सज्जन घर थकी रैं, मूल न आण्यो मन मे मोहरे ।—जयवाणी

६ दृढ़ मजबूत ।

उ०—वय बीरा सह बोळिया, केसर कूड दुकूळ । वळें तरुण भइ वरजिया, मढें साहस मूळ ।—व भा

क्रि० वि०—१ कतई, विल्कुल ।

उ०—१ भैंसां मूळ न पावसैं, सूकें पाडी साथ । हार दुहारा उट्टिया,

ठाली वरतण हाथ ।—लू

उ०—२ खुरम कटककै अगळी साह दळें अममान । मूळ न मावें मारका, दोय खडा इक म्यान ।—गु रू व

२ जहामूल से, जहमे

उ०—हूओ हाहाकार, प्रिथी दमगळ पेखीजें । जवना जावण मूळ एह आगम जाणीजें ।—गु रू व

रू० भे०—मूल, मूर, मूळी, मूळू,

मूल—देखो ‘मूल्य’ (रू भे )

उ०—१ महा उचूल मूल के दुकूल देह मे नही । कहा सुगव कव बीचि, गव मेह मे नही ।—ऊ का

उ०—२ तहां करन फ्रीडा मुखइ, बीडा चावती त्रिय जात । केसरी सारी मूल भारी, पहिरि कै हरख न मात ।—वि कु

मूलकरम—स० पु० [स० मूल कर्मन्] १ ओषधियों की जडों द्वारा किया जाने वाला त्रासन, उच्चाटन, स्तम्भन, वशीकरण आदि का प्रयोग ।

२ जादू टोना, मूठ । (मारण)

३ प्रधान कर्म ।

मूलकवळ—स० पु० [स० मूल—कमल] हठयोग के अनुसार नाभि के आस-पाम का अवयव जिसको कमल के रूप में माना जाता है । नाभि—कमल ।

उ०—सोई निरभै निजनाथ सदा सगि (मेरे), जुरा मरण भैं भागा । अनहद सवद गगन में गरजे, मूळ-कवळ मन लागा ।

—ह पु वा.

मूलकूण—स० पु०—पूर्व दिशा ।

उ०—सोभत था कोस ३ मूलकूण माहै । कूभार बाभण बसैं ।

—नैणसी

मूलकौ, मूलकौ—म० पु०—१ जड महित उखाडा हुआ छोटा वृक्ष ।

२ देखो ‘मुळगौ’ (रू भे )

उ०—जद ब्राह्मण बोल्या—एहत्तो पठाण रा पेट रा मूलका इ असुद्ध छैं सो सिद्ध किम हुवैं ।—मि द्र

मूलगड, मूलगड मूलगु मूलगू मूळगौ, मूलगौ—देखो ‘मुळगौ’ (रू भे )

उ०—१ सार किसिउ जीवो तणू प्रिय सगमि सिउ थाइ । फूल माहि सिउ मूलगड स्त्री परणी किहा जाइ ।—हीराणद सूरि

उ०—२ कुणइ नेमि राहाविउ कूडीय सषलडी जाँन । छप्पन कोडि माहि मूलगड कूडउ वल भद्र कान्ह ।—समर

उ०—३ कूबर दुस्टमा मूलगु सेवइ व्यसन सात रे । अन्या मारणि ते हीडइ नवि जाणइ पुण्य वात रे ।—नळ दवदती रास

उ०—४ नान्हपणा नु नेहडउ, काइ वीसारिउ नाह रे । कठिन कठोर माहि मूलगू ताहू प्रीछउ माह रे ।—नळदवदती रास

उ०—५ गिणइ नही सास्त्र वलि मूलगा देवगुरू । लाज विण लोक इण कुमति लागैं ।—घ व प्र

उ०—६ जद स्वामीजी बोल्या ए पिण मूलगा मित्यात्वी है ।

—भि द्र

उ०—७ मिरचा री घूई सू भूत पूरी निबळी व्हेगी। उरणे मूमणी मूळगी ई वद व्हेगी।—कुनवाडो

उ०—८ जाइ भुग्लोक में अमल कीवी जसु, अमुर महु नासि अननोक आया। कमर सहु आपणी मूलगी काढिवा, लागते जोर जत्राळ लाया।—व व. प्र

(म्यो०मूलगी)

मूळचक्र—स०पु०—एक प्रकार का हाथी।

उ०—अय हस्ती—अदहगलित त्रिपाट प्रमरित भद्रजानि दक्षिणदंड उ माणिक दंड उ मूलचक्र वन चक्र तिसोता —व स,

मूळछेद—स०पु० [म०मूल-छेद] १ किसी चीज को ऐसा काटना या नष्ट करना कि वापस न पनप सके।

२ मूल नाश, जडामूल से नाश।

मूळजग—स०पु०—संसार का मूल कारण—विष्णु, शिव, ब्रह्मा, शक्ति—।

मूळजडी—म०स्त्री० [स०मूल-जडी] जीवन का मुख्य आधार।

उ०—कय की ठाडी पय निहारु अपने भवन खडी। कैसे प्राण पिया बिन राखू जीवन मूळजडी।—मीरा

मूळजाग्रत—स०पु०—एक प्राचीन देश। (व म)

मूळजात—स०पु०—आदि या आरम्भ की जाति, वंश, मूल जाति

मूळजाणि—देखो 'मुनतान' (रु भे)

उ०—मूलमरि अवर सेख, मेख अहिंदर नीसाउरि पुष्फदीन मूळताणि मेख जक्खा नट्टाउरि।—व म

मूळत्रिकोण—म०पु० [स०मूल-त्रिकोण] सूर्य आदि ग्रहों की कुछ विशेष राजियों में स्थिति।

मूळयाण—देखो 'मुनतान' (रु भे)

उ०—वगाल त्रिहण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्यान पुगमन मूलयाण मद्र अद्र अतरवेच विराट' —व स

मूळद्वार—देखो 'मूळद्वार' (रु भे)

मूळदेवी मूलदेवी—स०स्त्री०—एक निषि विशेष।

उ०—मानविणी नडि नागरी लाडलिबी पारसी य बोधव्वा। तहय निमित्तो अ लिबी चाणवधी मूलदेवी अ।—व म,

मूलद्रव्य—म०पु० [म०मूल-द्रव्य] मूल घन, अमल पूजी।

मूळद्वार—स०पु० [म० मूल द्वार] १ मदर या मुख्य दरवाजा, सिंहद्वार।

२ शरीर का वह छिद्र जहां से मन त्यागन होता है, गुप्ता द्वार।

३ योनी, भग।

म०भे०—मूळद्वार

मूळघन—स०पु० [म०मूल-घन] अमल पूजी, पूजी।

मूळगुरु, मूळपुस्त—स०पु० [म०मूल-पुस्त] १ वह आदि मानव जिनमें समस्त मानव जाति का विस्तार हुआ।

२ किसी वंश या परिवार का प्रथम पुरुष।

मूळप्रति—स०स्त्री० [म०मूल-प्रति] वह आदिम या मूल सत्ता जिसका परिणाम नश्वर है, आदि शक्ति।

मूळधर्म—म०पु० [म०मूलधर्म] १ हठ योग में ध्यामन या सिद्धासन

द्वारा की जाने वाली एक योग क्रिया, जिसमें शिश्न और गुदाद्वार के मध्यवाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढ़ाते हैं।

२ एक प्रकार का अंगुलि-न्यास।

मूळमंत्र—देखो 'बीजमंत्र'

उ०—हरिदास जन यू कहै, रर कार मूळ निज नाम। मूलमंत्र सतगुरु दिया, दुख सुख दोय दूर सराप।—ह पु वां

मूळय—देखो 'मूल्य' (रु भे.)

मूलवटणी—स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पटउलउ सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुउहु सवाडी चपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाची मूलवटणी सारी —व स.

मूळस्यान—स०पु० [स०मूलस्यान] १ ईश्वर।

२ किसी प्राणी, वस्तु या विषय आदि का उद्भव स्थल, आदिस्थान।

३ पूर्वजों का स्थान।

४ प्रधान स्थान।

मूळा—स० स्त्री० [स० मला] १ मूल नक्षत्र।

२ पृथ्वी, धरती। (डि नां मा)

३ सतावर।

४ पूना के पास बहने वाली एक नदी।

उ०—मूळा १, मोठा २—ऐ दोय नदी पूना हेट व्हे हे।

—वा दा स्यात

५ राठोड वंश की एक शाखा।

६ भाटी वंश की एक शाखा।

रु० भे०—मूळ।

मूलागी—देखो 'मुळगी' (रु भे.)

उ०—मीखनजी स्वामी कही-कोई साध नें दोख लागा प्रायश्चित लेइ सुद्ध हवै। पिए एतो मूलागा मिथ्यात्वी सद्धा ऊधी गाजीखां मुल्लाभा रा साथी।—मि द्र

मूलाधार—स० पु० [स० मूलाधार] शिश्न व गुदा के बीच का स्थान, जो हठयोग के अनुसार मानव शरीर के भीतर के छ चक्रों में से एक है। इसका रंग लाल व देवता गणेश माना गया है।

मूलासी—वि० [स० मूल+आश्रित] कद, मूल, फल खाकर जीवित रहने वाला।

मूळिका, मूलिका—देखो 'मूळी' (रु भे)

उ०—ललित उवग जस प्रथर पुष्क चूलिका, मूलिका पाग आतक केरी।—वि कु

मूलिकाप्रयोग—स० पु०—बहतर कलाओं में से एक। (व स)

मूलिम—क्रि० वि०—विलकुल, कतई।

मूळी, मूली—म० स्त्री [स०मूलक, उन्मूलिका, प्रा० उन्मूलिका] १ बड़े-बड़े पत्ते एवं लम्बी-मोटी, जड़ वाला एक प्रमिद पौधा, जिसकी जड़ कच्ची भी खाई जाती है वा जड़ व पत्तों की सब्जी बनती है। इसका रवाद घरपरा रुचिकर होता है। यह हृदयरोग, यकृत

व वायु रोगो मे लाभ दायक मानी गई है । मूली, मूरी ।

उ०—आखा राज में वारा सेंतीर तिरै । मोटा मोटा घाडतिया  
रा थरणा काँप, पछै औ कुचमादी किण खेत री मूली ।

—फुलवाडी

मुहा०—१ गाजर मूली=अत्यन्त तुच्छ ।

२ किण खेत री मूली है=क्या हस्ती है, क्या ताकत है ।

३ किमी वाग री मूली=देखो 'किण खेत री मूली'

४ मूली पाना सू आछी लागै=परिवार के कारण ही शोभायमान  
होता है ।

२ जडो बूटी ।

उ०—हांकीया सू पादरी न हालै, वाकम नीर घाहण ब्रवळ । मत्र  
जत्र ओखद नह मूली, खादा जिण दाटोक खळ ।

—ठाकर जगरामसिंध नीमाज री गीत

३ खाने योग्य जड़, कंद-मूल-फल ।

४ चौतीस प्रकार के स्थावर विषो में से एक ।

[स० मूली] १ छिपकली ।

रू० भे०—मूली मूळिका, मूलिका ।

मह०—मूली ।

७ देखो 'मूळ' (रू भे०)

उ०—तरुणी री पोसाक त्रण, जीवन मूली जाण । कळह ससे राखै  
कनै, मावडियो विण माण ।—वा दा

मूळ—१ देखो 'मूळा' (रू भे०) (वा दा ख्यात)

२ देखो 'मूळ' (रू भे०)

मूली, मूली—देखो 'मूली' (मह०, रू भे०)

उ०—१ दूजोडो भरपूर वार निछरावळ करण वाळा पर हुओ सो  
बरोबर बैठ्यो होती तो माथो मूळा री कापी रँ ज्यू आघो आय  
पढतो ।—रातवासी

उ०—२ मास भळै अर मद पीयै, भागि घतूरा हेत । हरीया  
ऊवडि जावसै, ज्यु मूळै का खेत ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मूल्य-स० पु० [स० मूल्यम्] १ मुद्रा या द्रव्य के रूप में किसी वस्तु को  
खरीदने या प्राप्त करने के लिये दी जाने वाली धन राशि, किसी  
वस्तु की कीमत, दाम, दर ।

२ वह गुण, जो किसी व्यक्ति या वस्तु को महत्व या मान  
दिलवाता है, विशेषता, महत्व ।

रू० भे०—मूल, मूल्य ।

मूल्यशान्त-वि० [स० मूल्य-वान] १ जिनका मूल्य, कीमत या दर  
अत्यधिक हो, कीमती ।

२ महत्व पूर्ण ।

मूवी-वि० [स० मूट] मरा हुआ, मृत ।

उ०—१ कहता है करता नहीं, ऐसा आदम खोर । मूवा चाहे  
मुगति कू, जीवत हरि का चोर ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मूस-स० स्त्री० [म० मूसिका] सुनार की सोना आदि गलाने की

घरिया अर्थात् एक पात्र विशेष ।

मूसउ—देखो 'मूसक' (रू भे०) (उ र)

मूसक-स० पु० [स० मूपक] १ चूहा । (ह ना. मा)

उ०—१ नाचै मोर निहारै अहिकण ऊपरे, मूसक सीम न धारै  
घात मजारिया ।—रू

उ०—२ अत पुरि उत्तम-तण्ड, सभलि नीति-विचार । नर-नामद  
आवड नही मूसक अय मजार ।—मा कां प्र

२ ठग, चोर

उ०—सुनस हुकम पुर सोधि सड धिट चेट विदसक । पुर जुव तिन  
मग पिहित, लग लावन मनु मूसक ।—च मा

रू० भे०—मुखक, मूखक मूसउ, मूषी ।

अल्पा०—मुबियो ।

मूसककरणो-स० स्त्री० [स० मूपककर्णी] मूसकानी नामक एक लता ।

मूसकवाहण-स० पु० [स० मूपक+वाहनम्] गणेश, गजानन ।

मूसकौ, मूसखौ-स० पु०—स्वर्ण पात्र ।

उ०—वित्त रा च्यार हिस्सा कीया । एक हिस्सा ले तेजसी नु दोयी  
तेजसी उरी लीयी, नै कठता थका एक सोना री मूसखौ नै एक  
पागो रूपा री ढोलीया री डक्की लेता ही कठीया ।

—रावमालदे री वात

मूसणो, मूसबो-कि० स० [स० मूपण] १ चोरी करना, चुराना ।

उ०—१ उत्तम मूसे एक ऋड मध्यम दूहा मूस । अघमगीत मूसे  
अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस ।—वा दा

२ लूटना, खमोटना ।

उ०—रोजायतो तरुं नव रोजं, जेय मुसांणा जणों जण । हीदू नाथ  
दिलीचे हाटे 'पत्तो' न खरचै खत्रीपण ।—प्रथ्वीराज

३ ठगना ।

४ अपहरण करना, हरण करना, उडा लेजाना ।

५ मोहित करना, लुब्ध करना ।

६ मसोसना, दबोचना ।

७ पकड़ना ।

८ छीनना, झपटना ।

९ ढकना, लपेटना, छिपाना ।

१० घसना ।

मूसण हार, हारो(हारी), मूसणियो—वि० ।

मूसिओडो मूसियोडो, मूस्योडो—भू० का० क्र० ।

मूसीजणो, मूसीजयो—कर्म वा० ।

मूसणो मूसबो, मूसणो, मूसबो—रू भे० ।

मूसळ मूसल-स० पु० [स० मुसल] १ ऊवली में अनाज आदि कूटने का  
मोटी लकड़ी का प्रसिद्ध उपकरण । इसके बीचमे हाथ में पकड़ने  
का खड्डा होता है

उ०—नीचो आयनै गवा नै सावळ जतरावण सारु की जोवण  
लागो के सामी ऊखळ कनै मूसळ पड्यो निगै आयो ।—फुलवाडी

२ श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ में रहने वाला एक पशु ।

३ गदा का एक भेद ।

४ लकड़ी का मोटा गोल टुकड़ा जिसमें स्वरुंकार आभूषणों की मोच निकालने का काम होता है ।

५ बार व नवग्रहो सम्बन्धी २८ योगों में से बाईसवा योग ।

वि०—१ मूमल के समान, मूमल के अनुरूप ।

उ०—१ डढ़ कोप घन वरखी मूसल जलधारा । वृद्ध व्रज की राखेज मोरे प्राण धारा ।—मीरा

उ०—२ डोयी खिजूर नै दातळी हाथी । कंता ई मूसल ज्य हाथी रा दात वारि निकळया ।—फुलवाडी

२ मूमल, मूढ देवकूफ ।

रु० भे०—मूसल मुमल, मुमलि, मुमलि, ममल, मूमल, मूमल, मूमल ।

अन्व०—मुमलियो, मुमली, मुमली, मुमली, मूमलियो, मूमली, मूमलियो ।

मूमलवती—वि०—मूमल के समान मोटे दातों वाला ।

उ०—येह यल्लया वाप री, घडी भयकर घाट । मूसलवती मैगळा, नित डर रहै निराट ।—बा दा-

मूसलधार, मूसलधारा—स० स्त्री०—पानी या वरमात की मूमल के समान सीधे व वेगने चलने वाली धारा ।

उ०—१ आज विरज पर इंदर कोप्यो, वरसै मूसलधारा । वांवां नस पर गिरवर घाघी, हूवत विरज ठवारा ।—मीरा

उ०—२ चौठी ले पाणी माहि गाळी नै ऊपर आठण तुरत मडियो । मूसलधार वरसण लागी । तरै इणां घरां नू चलाया ।

— नैणसी

उ०—३ फिर फिर फिर फिर एक चनणा मेह पडेजी कोई, वरसै मूसलधार धारी तो आवण एक, चनणा वयो हुयोजी ।—लो गी

रु० भे०—मूसलधार,

मूसलमाण, मूसलमान—देखो 'मुसलमान' (रु भे)

उ०—कीरत 'मजन' कमध री पमगी प्रथी प्रमाण । दहल खमै रहिया दिली, हिंदू मूसलमाण ।—रा, रु

मूसलधार—देखो 'मूसलधार' (रु भे)

उ०—एक एक चीन कानां रै मांय यडनै काळजा मे मडती गियो । जाणं विना चीज वादळा रै मूसलधार पांणी ओमरै भर वरमा री मूमली तिरसी घरती निरपत रहे ।—फुलवाडी

मूसलवायुध, मूसलवायुध, मूसलवायुध, मूसलवायुध—न० पु०—मूसल नामक प्रायुध, एक शस्त्र ।

रु० भे०—मुसलानुय, मुसलानुय,

मूसलियो—१ यह घोड़ा जिसका केवल दाहिना पैर मपेट हो छेप तीनों पांय काने हो (अशुभ, शा० हो०)

२ देखो 'मूमल' (रु भे), र भे०)

मूसली, मूमली—न० स्त्री० [म० मुगली] १ हन्दी की जातिका एक

पौधा जिसकी जड़ प्रायः शीपव में काम आती है । यह पुष्टिकारक मानी जाती है और सफेद व काली दो प्रकार की होती है ।

स० पु०—२ बलदेव, बलराम ।

३ घोड़ों का एक रोग विशेष । इसके कारण घोड़े के पांयों में सूजन आजाती है ।

वि०—मूमल नामक शस्त्र को धारण करने वाला ।

रु० भे०—मुसलि, मुमलि, मुसली, मूसली, मूमली, मूमली ।

मूसली, मूमली—१ एक प्रकार का घोड़ा ।

२ देखो 'मूमल, (अल्पा, रु भे)

३ देखो 'मूमलियो' (रु भे)

मूसलवाय—देखो 'मुसलवाय' (रु भे)

मूसलदे—स० स्त्री०—मादा चूहा, चुहिया ।

उ०—धामणिया कण मागणिया पग दे पूळी वाघणिया । मूसलदे नै जाय' र कंज चिडकल वेटा जाया है ।—फुलवाडी

मूसल—देखो 'मोसल' (रु भे)

उ०—१ भणवा कारण भरत नं, मेले छप मूसल । मोह धार सत्रधण महा, लार गयो सकाळ ।—र रु

उ०—२ मडें दीठ नो ही ग्रहा वदि माहे । सकी तार नीलाख मूसल साहे ।—सू प्र.

मूसलवाहण—देखो 'मूसलवाहन' (रु भे)

मूसिक—देखो 'मूमक' (रु भे.)

मूसिकाफ—स० पु० [स० मूपिकां] गजानन का एक नामान्तर, गणेश ।

मूसिल्ल—देखो 'मूमल' (रु भे)

मूसिल्लमाण, मूसिल्लमान—देखो 'मुसलमान' (रु भे)

उ०—मूसिल्लमाण सुरिमाण मणि । लाहुर राठ सुरिताण लणि । कळियउ खुरासाणी कवार, मज कीजइ रेखत सिलह सार ।

—रा ज सी

मूसी—देखो 'मूमक' (रु भे)

उ०—१ मूडा—डड प्रचंडी मूसी आळू मेक मय दती । ईस्वर उमया पुनी तस्मं गुणेशाय नमी ।—गु रु, व

उ०—२ मावडियो वन माळळी, नो नह जाय सिकार । डोळा मिनयी मू डरें मूसी ज्यू मरदार ।—बा दा.

पर्या०—आमू, ऊदर, धणक, भवमजार, मुरुप, मूखक, मूमक, यतिदेवर, वज्रदत्त, मुचीमुय ।

२ चोर ।

३ ठग ।

४ मित्र का पेट ।

५ अन्त करण, मन । (योग)

६ एक देश का नाम ।

७ मुनार के यहाँ काम करने वाली खड़ी या चूने की बनी एक कटोरी, जिनमें मोना, चादी आदि गलाया जाता है

उ०—८ यहूदियों के धार्मिक व सामाजिक नेता, पेगम्बर, जिन्होंने

मिन्न के इसराइलियों को दासता से मुक्त कराया था ।

६ देखो 'मोसो' (रू. भे)

उ०—वीरा ऊभी ओरिया रै बार, देवरजी मूसा बोलिया । भावज करती वीरा री गुमेज, वीरो बत्तीसी ले गयो —लो. गो

रू० भे०—मुंसी, मूसी, मूसड ।

मूह—देखो 'मुख' (रू. भे)

उ०—मूहां सैदा तगणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैदा—मुहा भांण मिलियो ।—गु रू व

मूहड—देखो 'मुख' (मह. रू. भे)

मूहडो—देखो 'मू'डो' (रू. भे)

उ०—इण बाळक री मूहडो वारै वरमताई देखणी जुगत नही छै ।  
—रीसाळु री बात

मूहमेज—देखो 'मुहमेज' (रू. भे)

मूहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रू. भे)

उ०—चवद मत तुक दोय चवत, रटेजै मूहमेळ रगणत ।

—र ज प्र

मूहरत—देखो 'महरत' (रू. भे)

उ०—साहरा राजा ब्राह्मण बोलाया, मूहरत पूछाडीयो ।

—जेतमाल पुमार री बात

मूहळ—१ देखो 'मूसळ' (रू. भे)

२ देखो 'महळ' (रू. भे)

मूहपू—देखो 'मू'गो' (रू. भे)

उ०—जेणि आवड मूहपू थाइ, लोक लांया नाम । ए विहूना सर लावये, माघव माहरि कामि ।—मा का प्र

मूहरत, मूहरत—देखो 'महरत' (रू. भे)

उ०—एक मूहरत नी सामायक कीयो ।—भि द्र

मे-अव्य० [सं० मध्य, प्रा० मज्झ] १ अन्दर, भीतर ।

उ०—स्वामीजी कछो-महारो नाम भोखण । तब उवे बोल्या थाने देखवा री मन मे थो ।—भि द्र

२ ऊपर, पर ।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो । किणहि डावरा रै माषा मे दीयो । जद तो लोक उणनें ओलमी देवे ।

—भि द्र

३ किसी समय या अवधि के दरम्यान ।

उ०—वैसाखा मे विलखा वामी, हुयगा सवळा जेन बिरामी ।

—ऊ का

४ किसी क्षेत्र या परिधि के भीतर ।

५ किसी के साथ, किसी मे सलग्न ।

६ कईयों में से ।

७ मध्य या बीच ।

८ का, के, की ।

उ०—लागी जितरी तो आ गयो, खेती बापरी मे तो चूक नहीं ।

—भि. द्र

६ से ।

१०—देखो 'मै' (रू. भे)

उ०—जे परमेस्वर सुगुणा की निधि छै । जाकै गुण को पार कोई न पावै । मे निगुण थकी ते को गुण कहिवा को आरम कीयो ।

—वेलि टी

रू० भे०—मइ, मइ, मद, महि, मही, मइ, मह, महीं, मुहि, मूही, मुही, मेइ ।

मेइ—१ देखो 'मे' (रू. भे)

उ०—पिण चंलै भ्रमा मरतं काची पाणी पीची । मोटो प्रायस्चित्त आयो । नहि तर तो थोडा मेइ गुदरता ।—भि द्र

२ देखो 'मै' (रू. भे)

मेगणी—देखो 'मीगणी' (रू. भे)

मेंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे)

उ०—दळ भकवर तोपा दगं, सूकै वीर निवाण । गोळा लागं चीतगढ़, मेंगळ माछर जाण ।—वा दा

मेगाई—देखो 'मूगाई' (रू. भे)

मेंगीवाडो—देखो 'मूगियाडो' (रू. भे)

मेढक—देखो 'मीढकौ' (मह, रू. भे)

उ०—पखी पाखा सजै, मेढका मीठा बोलै ।—दसदेव

मेढकौ—देखो 'मीढकौ' (रू. भे)

मेढल—उ० पु०—मैनफल का वृक्ष । (अमरत)

रू० भे०—मैढळ,

मेढो—देखो 'मीढो' (रू. भे)

मेणा—देखो 'मीणा' (रू. भे)

उ०—घन कारण लागै चोरटा, मेणा मेतर ने थोरी रे ।

—जयवांगी

मेणावती—उ० स्त्री०—राजा गोपीचंद गौड की माता का नाम ।

रू० भे०—मैणावती, मैनावती ।

मेहतर—देखो 'महतर' (रू. भे.)

मेदान - देखो 'मैदान' (रू. भे)

मेदी—देखो 'मैदी' (रू. भे)

उ०—मेदी देऊ मुळक मैन सू करदे मोळी । दीवाळी रै दिवस हिया मे ऊठै होळी ।—ऊ का

२ एक लोक गीत ।

मेबर—देखो 'मैबर' (रू. भे)

मेमत—देखो 'मैमत' (रू. भे)

उ०—दोखियां तणी घणी घर दावै, फावै जुय जुध करण फतै । साह तूज कन सहै गज वध सुत, मेमत चालै आप मतै ।

—नाथी साहू

मेमद—देखो 'मैमद' (रू. भे)



उ०—मायँ ने मेमद लाव भवर, म्हारं मायँ ने मेमद लाव ।

—लो गो

मेमाय - देखो 'मेमाया' (रू भे)

मेवानियो—देखो 'मेवासी' (अल्पा, रू भे)

उ०—ताम्बडा उलट मेवासियां लटायत, छटायत नाहरा महां छोगं ।—रायत हम्मीर चुण्डावत री गीत

मेहदी—देखो 'मेदी' (रू भे)

उ०—१ एक उगीनी नगद कह्यो-बाकी भोजाडया रं हाथा मेहदी राचणोडी, आगणो नीपणा सू रग मगसो पड जावँ ।

—फुलवाडी

उ०—२ राजाजी रा छाला पड्या हाथा रं मेहदी लगाय नाई फूला देवण लागो सो देवतो ई गियो । मेहदी अर फूला सू थोडी पणो वल्ल मिटी तो राजाजी रं जीव मे जीव आयो ।—फुलवाडी

मेहमद—देखो 'मेमद' (रू भे.)

उ०—ए मां भाभीजी ने कहकं म्हारं मेहमद मडवादं में खेलण जास्यू नूरडी ।—लो गो

मे, मे—देखो 'मेह' (रू भे)

उ०—दायमल डागं रं पैन-पोन गी वेटी जांमी जद घर हाळां नं, गनलां पाटोम्या वात वताई कं भावी लारं मे' टीडी लारं वावळा अर वेटी लारं वेटी आया करे है ।—दसदोख

मेम्राई—देखो 'मेह्राई' (रू भे)

मेइण, मेइणी—देखो 'मेदिनी' (रू भे)

उ०—मोहद गान खडं सर हडह, मेइण घुघळियो ब्रह्महडह ।

—गु रू व

मेउदो, मेऊरो—देखो 'मेह' (अल्पा, रू भे)

उ०—आज वोगळ घरमी घूघळी, बाळी काटण मेह घो । आज ने घरमे घरमी मेऊडा भोजे तवू री डोर ओ ।—लो गो.

मेक-वि० [स० एक] अकेला, एक माय ।

उ०—१ आदि अत आदेम, मेक आदेम नरेमर । अलख तूभ आदेम अगह आदेम अनतर ।—ह र

उ०—२ उहव यया नां कोई वह आवे, मुरियण मारग अन्य सह ।

मेक उहै घरमीह ममोन्नम, प्रियो विलगो तूक पह ।—ह र

स० पु०—एक की सस्या, एक ।

उ०—१ सूटा-ट्ट प्रचटो, मूना आरुद मेक मय दतो । ईस्वर उमया पुत्रो तम्मे गुणैसाय नमो ।—गु रू व

उ०—२ मत्रिया लिखो पुत्राण मेक । घसुराण तरफ करि मत्रि एन ।—मू प्र

[म० मेक] ० बकरा ।

१ देखो 'मेम' (रू भे)

२० मे०—मेदि, मेजी

मेकडसण-स० पु० [रा मेक+स० दशन] गणेश, गजानन ।

उ०—गवरी पुत्र गणेश, मेकडसण आखु जसु वाहण । गज मुख सुर अग्रेस, सिध बुध-पतिये नम ।—मा वचनिका

मेकदत-स० पु० [रा० मेक+स० दन्त] गणेश, गजानन ।

उ०—गजा अरोपती जेहि तेज मुरांमुख गिणा, गणां मेकदत राजे आपणा मे सिध ।—भगताराम हाहा री गीत

मेकमी—देखो 'महकमी' (रू भे)

मेकळ-स० पु०—रीवां राज्यान्तर्गत विध्य पर्वत का एक नामान्तर ।

मेकळकन्यका, मेकळमुता, मेकळान्रिजा, -प० स्त्री०—नर्वदा नदी का एक नामान्तर ।

मेकवीस-स० स्त्री० [रा० मेक+स० विंशति] एक और बीस, इक्कीस ।

उ०—अष्ट पाय सब चग, काइ तरण काइ वाळा । पिक हसद आलाप, कठ मोहित मुगतळा । मेकवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्राम निसपति सुर, लहण भेउ खटराग काठ, भ्रक्खै मोखंतर ।

—गु. रू व.

मेकि, मेकी—देखो 'मेक' (रू भे)

उ०—१ मेकि वांण मारी मरम पढे घसती प्राणि ।—रामराजो

उ०—२ मेकी हाथि मोकली, जोपं जोरावर, उठे न कोड उपाव सू निम रह्या सकी नर ।—ठा० भूभारसिंह मेइतिया

मेख-स० स्त्री० [फा० मेख] काठ व वातु की कील ।

उ०—१ जेय मळंतर मेवचा, गढं मळंतर मेख । जळं मळंतर ईंधणा, दळ चाळक री देख ।—वा दा

उ०—२ तद राजाजी सिधासण मायँ विराजता स्त्री मुख सू फरमायो—पछे ये लोग विरथा क्यू डरो । परवाना री बात रं तो अठे ई मेख लागी । फुलवाडी

उ०—३ सो चाकर आय इणरी भोपडी कन्है होकारो कियो । च्यारू पग इमा रोपिया जाण जे मेखां गाडी ।

—सूरे खीवे काघळोत री बात

मुहा०—मेख लागणी—किसी चालु क्रम का रुकना, महमा रुकना, स्थिर होना ।

२ मवेशी को बाधने या सामियाता तानने आदि के लिये जमीन मे रोपी जाने वाली लकड़ी या लोहे की मोटी कील, खूथी, खूटा ।

उ०—१ तरे समरथसघ मने कीयो अठे डेरी मतो करो, ऊठ वधे छे । तरे भाटी गाळ दीनी तिए ऊपर समरथसघ उठ ने गयो । तरे आगे भाटी मेख रोपे छे समरथसघ गटकारी दीनी सो माथो तुट पड्यो ।—रा व वि

उ०—२ जयजरी सिमाना खंम जडाव । तं रूप मेख रेसमतणाव ।

—सू प्र.

३ किसी पुरुष या स्त्री के मुह मे सामने वाले दातो मे जडी जाने वाली सोने की कील, चूप ।

उ०—दाता अन्नत मेख दया को बोलणो । उवटन गुरु को ग्यान ध्यान को घोषणो ।—मीरां



४ पलक भूपने व खुलने की क्रिया या भाव, निमेष ।

उ०—कपोले मिले रूप ओपे अलक्का, प्रभू पेखता मेख भूलै पलक्का ।—रा रू

५ असमजस, सदेह ।

उ०—महारो महारो करि घन मेलकु, लोभ वसै लयलीन । नरक तरा घर छू छू नव नवा इण मे मेख न मीन ।—घ व प्र मुहा० मेख न मीन=जिसमे कोई सदेह न हो, निस्सदेह ।

६ देखो 'मेघ' (रू भे)

उ०—गरदन कहन केक मुगल्ल । छटै खग देखक मेख छगल्ल ।  
—मे म.

मेखची—स० पु०—१ हथौडा ।

उ०—१ जेत मळंतर मेखचा, गडै मळंतर मेख । जळं मळंतर हँवणा, दळ चालक रो देख ।—वा दा

उ०—२ मेखा निहाव पडि मेखचा ताळी तजै तपेमरा । घर धूजि घमक विषहर घुके, सहम घुके फण सेस रा ।—सू प्र

उ०—३ कुतक विदर घव काठ रा विदर पचावण वेस । तो पिए हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस ।—वा दा

मेखमो—स० स्त्री०—स्वर्णकारो के काम आने वाला एक उपकरण, जो आभूषणो पर खुदाई करने के काम आता है ।

मेखळ—स० पु०—१ हवन कुंड ।

२ देखो 'मेखळा' (रू भे)

उ०—१ पाच माळ अहिरी गळ पहरी । अघिसवि दहू जनेळ अहिरी । कट मेखळ अहि घरे सकाजै, रिघू पाव साकळ अहि राजै ।  
—सू प्र

उ०—२ कणै कान घाटक, वेण नासा मोतीहळ । हार उर चदन विलेप, रची काकण कटि मेखळ ।—गु रू व.

मेखलगन—देखो 'मेपलगन' (रू भे)

उ०—सवत १७२३ रा माहावद ३ गुरुवार दिन घडी १३ चडीयां नै पल १ मेखलगन मे जनम हुवो ।—नैणसी

मेखळा—स० स्त्री० [स० मेखला] १ करघनी नामक आभूषण जो कटि प्रदेश के चारो ओर लपेट कर पहना जाता है, तागडी, किकणी, घटिका ।—(व स) (अ मा)

२ कमर मे धावी जाने वाली सूत की डोरी, कटि सूत ।

३ कमरवद, कमरपेटी, इजारवद ।

४ वह वस्तु, जो किसी अन्य वस्तु के मध्य मे चारो ओर लिपटी रहती है ।

५ मडलाकार घेरा ।

उ०—१ कमठ भार कसमस्स, दाढ बाराह खडकै । मडळ मेर मेखळा घमस, धूली रिघ ठकै ।—गु रू व

उ०—२ अर तोपां री गाज हू सेस रा सीसां समेत मकराकर मेखळा मही रै मचोळा लगाया ।—व भा.

६ पहाड की उत्तराई, ढलान ।

७ हवन कुण्ड के चारो ओर बनी पाज, घेरा ।

८ पर्वत का मध्य भाग ।

९ कमर, कूल्हा ।

१० तलवार का परतला ।

११ तलवार की मूठ मे वधी डोरी की गांठ ।

१२ घोडे का जेरवध ।

१३ घोडे की तोद पर होने वाली भवरी ।

१४ नर्मदा नदी का नाम ।

१५ देखो 'मेखळी' (रू भे)

उ०—१ माळा मुद्रा मेखळा रे वाला, खपरा लागी हाथ । जोगण हुइ जुग दूठसू, म्हाारा रावलिया री साथ ।—मीरा

उ०—२ सेली सीगी मेखला, कांनि मुदरका घालि । हरीया जोगी जुगति विन, पच न सवै पालि ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज  
रू० भे०—मेखळ, मेहल ।

मेखलिक—स० पु०—एक वर्ग विशेष ।

उ०—मात्रिक तत्रिक गाडरिक मेखलिक लेखक कथक कविकर तालवर कविराज\*\* ।—व स

मेखळियो—स० पु०—पहनने का कुरता ।

रू० भे०—मेखळी, मेखल्यो

मेखळी—स० स्त्री०—१ योगियो व ब्रह्मचारियो का एक पहनावा, जिसमे पीठ व पेट ढके रहते हैं तथा दोनो हाथ खुले रहते हैं ।

उ०—तरै जोगी देवराज नू कह्यो-थारा वळ री विरद वधो । नै मेखळि, नाद दियो, पात्र दियो, नै कह्यो-ओ ये पाट वंसो तद दीवाळी दसरावै धारिया करो ।—नैणसी

२ भोला, बड़ा थैला ।

उ०—१ तद सिद्ध मेखळी मांहे हाथ घातनं गोटी १ बभूत रो, सोपारी ४ काठ दीधी ।—नैणसी

उ०—२ वानी अग पलेट मेखळी भुजपर मेली । ले माछुदर नाम साहतन कथा सेली ।—पा प्र.

रू० भे०—मेखळा, मँखळी,

मेखळी, मेखल्यो—देखो 'मेखळियो' (रू भे)

मेखसक्रायत' मेखसक्राति—स० स्त्री० [स० मेप-सक्राति] मेप राशि मे पडने वाली सक्राति । (ज्योतिष)

उ०—जनमे मेखसक्राति जाम ।—रामरासी

रू० भे०—मेससक्राति, मेससकरात

मेग—देखो 'मेघ' (रू भे)

उ०—ओप सिद्धर तेल अपल्ल, गडडे वाज ढळकं ढल्ल । वहता विडग दाखै वेग, माहत पेरियो फिरि मेग ।—गु रू. व

मेगजीन—स० स्त्री० [अ०] १ राइफल मे लगी वह छोटी पेटी जिसमे कारतूस भरे रहते हैं ।

२ वह स्थान या कक्ष जहा सेना का गोला-बारूद रहता है ।

बारूदखाना ।

३ वह पत्रिका जो किसी निर्धारित समय पर प्रकाशित होती

रहती है। सामयिक पत्र।

मेगळ, मेगल—देखो 'मदकळ' (रु. भे.)

उ०—मिडइ सहइ रडवडइ सीस घड नड जिम नचवइ। ह्मइ

धुमइ ऊममइ वीर मेगळ जिम मचवइ।—सालिभद्र सूरि

मेगवाळ-म० पु० [स्त्री० मेगवाळण, मेगवाळी] एक अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति।

रु० भे०—मेघवाळ।

मेघ-स० पु० [स० मेघ] १ बादल, घन। (अ मा, ना डि को ना मा, डि को)

उ०—१ उठै घण सायक मेघ 'विलद'। अयो किर गोवळ ऊपरि दद।—सू. प्र

उ०—२ मेघ जु वरमण लागा। ताह का पाणी परवता का कदरा ये अर नाळा ये पाणी चाल्यो छै—वेलि टी

पर्या०—अन्न, आकामी कामुक, गजणरोर, घणाघण, जगजीवण, जलद, जलघरण, जलमहल, जलमुक, जलवहण, जलहर, जीमूत तदितवान, तनयतू, तोईद, धाराघर, धूमज, ध्रवण, नभधुज, नमराट, निवांगभर, नीरद, परजन्य, प्रथवीपाळ, बळाहक, भरणनिवाण, महीरजण, मुदिग, वरसण, वसु, सघण, मुजळ, म्यामघटा।

२ वर्षा, वरमात, वारिस,।

उ०—मेघ घणो वूठो। घरतो अजं नीली नही हुई छै। निणि अकुर नही हुआ छै।—वेलि टी

३ रावण का पुत्र मेघनाद, इन्द्रजीत।

उ०—१ जळावोळ लोधा दळा रांण जायो। अखी मारियो मांमळं मेघ आयो। उठे रांमरा जोव कूई अमायो, सक्के हाप पच्छे अयो मेघ आयो।—सू. प्र

उ०—२ रावण कूम मेघ मर रहूँ, कथ सो वेद पुराण वही। घगमी भूपा भूप वभीषण, मरणागत हित लरु सही।

—र. ज. प्र

४ मेघवर्ण, श्वेत-ऋण्य। ८ (डि को)

५ मेघ के समान।

उ०—उण वेळा ऋण्य घगळा, दळ राठोड दुवाह। मेघ थया सीमोदिया, लगी लाय अण थाह।—रा. ८

६ छत्रप छद का ४६ वां भेद, जिसमें २२ गुरु, १०८ सधु मे १३० वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र. ज. प्र)

७ तारकासुर के पक्ष का एक अमुर।

८ स्वायम्भु मनु के पुत्रों में से एक।

९ एक राज वंश, जो कोमल नामक नगरी में राज्य करता था।

वि०—मन्त, मन्त।

उ०—उतरे वीन हिग्गांगी टाग प्राय नीमरं छै तिकै निण नात रा हिग्गां छै ? गाळा वडा वेगड छै, मुह्लां नै टार मे मेघ न्य रहपा छै।—ग. मां. ग

रु० भे०—मेग, मेघु मेह,

अल्पा०—मेघली,

मह०—मेघाण,

मेघपरि-स० पु० [स०] पवन, हवा। (डि को)

मेघईस-सं० पु० [स० मेघ+ईश्वर] इन्द्र।

उ०—रखी सेख वैनतीयै वक्रतुड तुडराज, मेघईस घांम सुर वेद भीम जाग। जती पायसाह माणी मेर दाणी नेक 'जमी', अठारा विभेक तसौ एक रूप आय।—दुकमीचद विडियो

मेघकरण-स० स्त्री० [स० मेघकरण] स्कंद की अनुचरी, एक मातृका।

मेघकाळ-स० पु० [स० मेघ+काल] वर्षा ऋतु।

मेघजळ-स० पु० [मेघजलम्] वर्षा का पानी।

मेघजाति-स० पु० [स०] एक राजा (प्राचीन)

मेघडवर, मेघडमर—देखो 'मेघाडवर' (रु. भे.)

उ०—१ रजि मेघाडवर रूप सिर क्लित चमर सरूप। वपि ओप वसन वणाव, रवि तेज मुरवर राव।—रा. रु

उ०—२ सिधुग मेघडवर सकाज। सक्ति पाखर हीदा जग साज।

—सू. प्र

मेघदुधुभी-स० पु० [म०] एक गक्षस।

मेघदेहा-स० पु० [मेघ+देहिन्] बादल के समान जिसकी देह का रंग हो, राम या कृष्ण।

उ०—जिहा माहि जोधा हणूमान जेहा। दर्ई मुदकां जेग नू मेघेहा।—सू. प्र.

मेघनाथ-स० पु० [स० मेघनाथ] १ इन्द्र।

२ वरुण।

रु० भे०—मेघनाथ,

मेघनाद, मेघनाद-स० पु० [स० मेघनाद] १ मेघों की गर्जना, घन-गर्जना।

उ०—१ सीगळी गज्ज गरजत साद। नन जाण दवादस मेघनाद।

—गु. रु. व

उ०—२ मेदनी हैमरां वुरां वूजावें चलायमान, कछ्छजावें लोयणा भळायमान आग। मेघनाद गजावें यू सजावें वडूकां मार, वाघला मयदां हाडी खिजावें ब्रजाग।—रामसिध हाडा री गीत

२ वरुण।

३ रावण का ज्येष्ठ पुत्र, इन्द्रजीत।

उ०—१ नर पहर अठ जुव मारियो, मेघनाद लछमण मारियो। सक्ति अमल दळवळ सयळ दससिर आवियो अवताइ।—सू. प्र

उ०—२ आहवी रांम री बहु मेस री ओतार श्रीवं, कळानिवो कोपं मेघनाथ पं कळर। राकमां विणाम करे ब्रजादा मही री राखी, जको सामी सूचव विती री जळर।—बादरदांन घघवाडियो

४ घटोत्कच के पुत्र मेघवर्ण का नामान्तर।

५ स्कन्द का एक सैनिक।

६ पलाम।

रु० भे०—मेघनादि,  
 मेघनादानल, मेघनादानुल-स० पु० [स० मेघनादानुल] मयूर, मोर ।  
 (ना मा )  
 मेघनादि—देखो 'मेघनाद' (रु भे )  
 मेघनाय-स० पु०—१ नागर मोथा । मुमसा ।  
 २ देखो 'मेघनाथ' (रु भे )  
 मेघपथ—देखो 'मेघपथ' (रु भे ) (अ मा )  
 मेघपति-स० पु० [स०] इन्द्र ।  
 मेघपथ-स० पु० [स०] आकाश, व्योम । (अ मा )  
 रु० भे०—मेघपथ,  
 मेघपुसप, मेघपुष्प, मेघपुष्प-स० पु० [स० मेघपुष्प] १ इन्द्र का घोडा ।  
 २ श्रीकृष्ण के रथ के चार घोडो मे से एक ।  
 ३ जल, पानी । (अ मा ह ना मा )  
 ४ वर्षा में गिरने वाले आले, हिमकण ।  
 ५ नदी का जल ।  
 ६ बकरे का सींग ।  
 ७ मोथा ।  
 ८ कुसुम, फूल ।  
 मेघमडाण-स० पु०—आकाश मे बादलो के छा जाने की अवस्था, दशा या भाव  
 उ०—गडगडि नीसांण मेघमडाण अवर भाण रज छाया । हीसा रव घोई दखणी दोई, वागा जोई दल छाया ।—गु रु व.  
 मेघमलार, मेघमल्लार, मेघमल्लार-स० पु०—वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग, इसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं । (सगीत)  
 उ०—१ चौरासी का सांसा भेट्या, कर दीना पेल पार । दसू दिमा रा आवे जातरी, करता मेघमलार ।—स्त्री हरिरामजी महाराज  
 उ०—२ गान सुसर गणिका भाण, मुखि मुखि मेघमल्लार । सभू सक्ति नित पूजोई, आणी आक कल्लार ।—मा कां प्र  
 उ०—३ कुलवधू तरण पाणि नूपर खलकइ, तडिइ कीरत्तिस्तभ दीसइ लोक हियां विहमइ, मेघमल्लार राग गाइय, धीणावस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजोइ ।—व स  
 २ एक प्रकार का बहुत बडा पक्षी ।  
 मेघमाळ-स० पु० [स० मेघमाल] १ रभा के गर्भ से उत्पन्न कल्कि के एक पुत्र का नाम ।  
 २ प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत ।  
 ३ देखो 'मेघमाळा' (रु भे ) (डि को )  
 उ०—१ गज घाट धू सगडस गज दळ, कमे कोअण कठळ । परवत माळ कि हेम हल्लै मेघमाळ कि वडळ ।—गु रु व  
 उ०—२ मयाळ मडपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं । हिलव से प्रलव यम विव सोहनी नही ।—ऊ का

मेघमाळा-सं० स्त्री० [स० मेघमाला] १ बादलो की घटा, बादलो की पक्ति या श्रेणी, घनघटा ।  
 उ०—१ बंबी बीण सेंतार सैनाय वाजे । त्रमाळा घुरै मेघमाळा तराजै ।—मे म  
 उ०—२ कमाळा लदै स्रव्व त्या द्रव्व कोडी, मकट्टा लठां भार ज्यो टास जोडी । विभारभ आचम राठोड वाळा, मही छेलिवा ऊमदै मेघमाळा ।—रा रु  
 २ स्कंद की अनुचरी एक मातृका ।  
 उ०—नमो मन्त्रणी तत्रणी मेघमाळा, नमो सकरी सुदरी प्रेम साळा ।  
 —मा. वचनिका

रु० भे०—मेघमाळ,  
 मेघमाळी-स० पु० [स० मेघमालिन्] १ खर राक्षस का एक आमात्य ।  
 २ स्कंद का एक पाषंद ।  
 मेघराज-स० पु०—इन्द्र ।  
 मेघली—देखो 'मेघ' (अल्पा, रु भे.)  
 उ०—बीजळ-मीट उभोळ पळकतौ जुगनु जाणै । इतरो खीण रजास मेघला मो घर आणै ।—मेघ  
 मेघवत-सं० पु० [स० मेघवत्] एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रो में से एक था ।  
 मेघवनी—देखो 'मेघवरणी' (रु. भे )  
 उ०—१ तेहनी उपम कहीइ किसी, जाणै स्वरग तरणी अरवसी । मेघवनी पहिरइ काचली, निरखइ नारि ते पाछो बली ।—  
 —प्राचीन फागु-सग्रह  
 उ०—२ कडिउ खगावि मेघवनी जि पटुली । लई कपूर करि पान तरां जिकुली ।—प्राचीन फागु-सग्रह  
 मेघवरण, मेघवरणी-सं० पु० [स० मेघवरणं प्रा० मेघवरण] १ वरुण । (अ मा )  
 २ घटोत्कच के पुत्र मेघनाद का नामान्तर ।  
 ३ एक यक्ष ।  
 ४ बादल के रग वाला वस्त्र ।  
 वि०—बादल के रग का ।  
 रु० भे०—मेघवनी, मेघवन्न,  
 मेघवाळ—देखो 'मेघवाळ' (रु भे )  
 (स्त्री० मेघवाळण, मेघवाळी)  
 मेघवाह, मेघवाहण, मेघवाहन-स० पु० [स० मेघवाहन] १ इन्द्र ।  
 (ना डि को )  
 २ वरुण । (ह ना मा )  
 ३ जंगीषव्य नामक शिवावतार का एक शिष्य ।  
 ४ जरासघ का अनुयायी एक नृप ।  
 ५ एक दैत्य, जो विष्णु के पद प्रहार से मरा था ।  
 मेघविश्वरणी-स० पु० [स० मेघविस्फूर्जिता] प्रथम एक यगण, तत्पश्चात् मगण नगण सगण दो रगण और अत गुरु सहित १६

वर्ग का वर्गगत विशेष जिनमे ६, ६ और ७ पर यति होती है ।  
मेघवेग-स० पु० [स०] कौश्व पद का एक चीर ।

मेघवर्ण-देखो 'मेघवरण' (रू भे)

उ०—किता बोह हथ्य किता बोह कन्न । किता बडरूप किता  
मेघवर्ण ।—मा वचनिका

मेघमधि-स० पु० [म०] जरामध का पौत्र एव महदेव का पुत्र ।

मेघमाद-स० पु० [स० मेघ + शब्द] घन-गर्जना ।

उ०—नीमके भुज्ज नव सहम नाद । सादळ सुणै किरी मेघ-साद ।  
—गु रू. व

मेघसार-स० पु० [स०] घन सागर, चीनिया कपूर ।

उ०—सुगव गवसार एण सार मेघमार ए । सवाम अवरै लुवान  
हवरै निसार ए ।—रा रू

मेघस्थना-स० म्यो० [स०] स्कन्द की प्रनुचरी एक मातृका ।

मेघस्वाति-स० पु० [म०] एक आध्रवशीय राजा ।

मेघहन्त्री-स० पु० [म० मेघहन्तृ] सुमेवस् देवों में से एक ।

मेघहास-स० पु० [म०] राहु का एक पुत्र ।

मेघाण-देखो 'मेघ' (मह, रू भे)

उ०—सुगताण दळ मेघाण वहुळ, सपत ममद्र पाणिय मयळ ।  
—गु रू व

मेघा-म० पु०—मघा नक्षत्र ।

उ०—या 'मवकर' हर वज्जिया, आद विखै अणुरेह । ज्या उलटे  
मेघा रवी, सिद्ध पलट्टे देह ।—रा रू

मेघाजळ-स० पु०—बरसात का पानी, वर्षा का पानी ।

मेघाढव, मेघाडवर, मेघाडवरि, मेघाडमर-स० पु० [स० मेघ + आढम्वर]

१ मेघ गर्जना, घन-गर्जना ।

२ बादलों का विस्तार बादलों का समूह ।

उ०—मेघाडवर मटि मूर मज्जे सन्ताहनि, फीलो फरकि निर्मान,  
गरक ताजी गज गाहनि ।—ला रा.

३ फोर्ट बडा सामियाना, तबू, चदोवा ।

४ हानी पर रक्सा जाने वाला हीरा, श्रवाही ।

उ०—१ भग भूला श्रोछडि, दिया कसि मेघाडवर । पावा लगर  
पटथा, उवटथा झडा अवर ।—मे म

उ०—२ भाया बाहिर एम, वैमि गजा मेघाडवर । चगया वे दुळते  
चमर, हीर जडित छद हेम ।—वचनिका

उ०—३ जय कुजर हाथीया तणुड कुमस्यलि चडिउ, पाखती  
अगरदाक तणी श्रोलि, मदलिक तणुड परिवारि, पताका फुरकती,  
मेघाडवर तणुड आडवरि ।—न म

उ०—४ बहुमटै गजा मेघाडवर बटटे आरावा मकळ । तन  
ममम तने चटिया तुरी, दुगम मूर विमरीर दळ ।—मू प्र.

८ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—१ जाड मेघाडवर नेत्रपट्ट ओनट्ट राजपट्ट गजबडि...

—व म

उ०—२ सानुवाफ, जरवाफ लीवाफ सुफ कमखा खरमु नरमु  
मेघाडवर मजीर दाडिमसार... ।—व स.

रू० भे०—मेघाडवर, मेघाडमर,

मेघावलि-स० स्त्री०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—बडमूल धुणोलिय मीणीय काल फूटउत रातउ फूटउत ।  
सुपउति मेघावलि मेघाडवर पदपावलि पक्षोत्तर इत्यादि वस्त्राणि ।  
—व स

२ मेघमाला मेघपक्ति ।

मेघासुर-स० पु० [स०] १ ४६ क्षेत्र पालों में से ४१ वा क्षेत्रपाल ।

मेघास्त्र-म० पु० [स० मेघ + अस्त्र] एक प्रकार का अस्त्र ।

उ०—आग्नेयास्त्र वायुणास्त्र दानवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र  
दिमकरास्त्र नारायणास्त्र अश्वघोषास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति  
अस्त्राणि ।—व म

मेघु—देखो 'मेघ' (रू भे) (उ र)

मेढ-स० स्त्री०—१ किसी खेत की सीमा ।

२ सीमा, मर्यादा ।

स० पु०—३ स्वर्णकारों की एक शाखा । (मा म)

रू० भे०—मेढ,

मेढतिया-स० स्त्री०—राठीड वंश की एक शाखा । राव दूदा के वंशज ।

उ०—१ मिळ जोवा ऊदा कमव, मेढतिया ससमाथ । करनीता  
चापा कनै, भल कृपा भाराथ ।—रा रू

मेढतियो-म० पु०—१ राठीड वंश की मेढतिया शाखा का व्यक्ति ।

उ०—इम वोलै मेढतिया अडुर । घुर जोधार पुछै पाठोघर ।  
—सू प्र

२ मेढता नगर का निवासी ।

वि०—मेढता सवधी, मेढता का ।

रू० भे०—मैढतियो, मैढतयो,

मेढत्या—देखो 'मेढतिया' (रू भे)

मेढी—देखो 'मेढी' (रू. भे.)

उ०—१ चढ चढ दासी मेढियां, भांक भरोखां माय । जे तने दीसै  
आवतो भ्जारो मदछक्रियो स्याम ।—लो गी

उ०—२ साची दात है—मत मज्ज्यो टावर री माय, ना मरज्यो  
दुढे री नार पेमजी री मेढी री दीयो बुझायी । लेवडा झडग्या,  
देवळ जमगी अर सूनी डमढेर वणुग्यो ।—दमदोख

मेच-स० पु०—१ मोका, अत्रमर ।

उ०—पढे वक्र वीची किता नाग पेचा । मिळै आथ सू भी समै साथ  
मेचा ।—व भा

२ देखो मेछ' (रू भे)

रू० भे०—मेचु,

मेचक-स० पु० [न. मेचक] १ कृष्ण पक्ष ।

उ०—मेचक २ फागुण १२ पंचमी ५, चढे अडर चहुवाण । आयो  
पट्टगा आगरे, परदळ दट्टण पांगु ।—व भा

२ व्यामलता कालापन ।

३ अंधकार, अंधेरा ।

४ धूमा, धूम्र

५ बादल ।

६ काला नमक ।

७ सुरमा ।

८ स्तन के ऊपर की घुंठी ।

९ एक रत्न विशेष ।

१० स्त्रियो द्वारा शू गारायँ चिबुक पर लगाई जाने वाली विदी ।

(अ मा.)

वि०—कृष्ण, श्याम, काला । (अ मा, ना मा)

रू०भे०—मेछक ।

मेचकता, मेचकताई—स०स्त्री०—कालापन, श्यामलता ।

मेचसिगार—स०पु०—पीतल ।

उ०—मेचसिगार हेम कम मीठा, तोलँ ऊढ उडीयद तसा ।

सीसोदीया तुहाळी समवढ, कीजँ जे भूपाळ कसा ।—ओपो आढी

मेचु—स०पु० [स०मिथ्या] १ असत्य, झूठ ।

उ०—वयराट उत्तर पखइ कुहराउ घायउ । अक्षोहणी दल तणी

रज सूर छायाउ । नीसाण ने सहसि अवर घोर गाजइ, ए पाच

पांढव तणउ किरि मेचु भांजइ ।—सालिसूरि

मेच्छ—देखो 'मेछ' (रू भे)

उ०—मौलवी कराई अरज काजी मुला, पाढजँ देवहर दळा कर

पेल । मेच्छ घाचँ जिकी हिंद इकळीम मज्झ, खडो राजा जितँ वणँ

नह खेल ।—महाराजा जसवन्तसिंह रौ गीत

मेछद—देखो 'मेछ' (मह, रू भे)

उ०—ते लरका मुख विख सुनँ, वायक सायक सार । स्तुति सभर

मेछद के पजर करत प्रहार ।—ला. रा

मेछ—स पु० [स०म्लेच्छ] १ असुर, दंत्य, दानव । राक्षस ।

(ह ना मा)

उ०—१ जे जँ भूपा भूप, सदा सतां साधारँ, दीना दाता देव, मेछ

भानिका मारँ । सीता स्वामी सूर, बीर वागां वांणासां, लका जँहा

ले'र, दान देणौ तू दासां ।—र ज प्र.

उ०—२ इद्र पूछीया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयइ रह हाथ मरइ ।

देव अनई महात दूहवद, तिण कहर सुरांपति खेद करइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ यवन, मुसलमान । म्लेच्छ ।

उ०—१ मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जाण समद । बळ छुट्टा भद

कायरां, देख प्रगट्टा दुद ।—रा रू

उ०—२/मेछा आगळ माथ, निवँ नहिं नरनाथ रौ । सो करतव

समराथ, पाळै राण प्रतापसी ।—दुरसी आढी

उ०—३ निजोडत मेछ घरँ खत्रनेम । खगा 'सगतेम' समोभ्रम

'खेम' ।—सू प्र

उ०—४ पाढवा जही किता पळ खडिया, विहरँ हाड विजू—जळ

वाह । सहभा सिर महुआ सूरजमल, मेल्यो मेछ तणँ दळ माह ।

—गु रू व

३ नीच, दुष्ट, विधर्मी ।

उ०—भाण ऊदीत रँ समै पळ भोगणी, थोगणी मोत रँ समद  
थागँ । असुर उर खोतरँ मेछ भारोगणी, जोगणी जोत रँ रूप जागँ ।

—खेतसी बारहठ

४ तांबा ।

५ देखो 'मेच' (रू भे)

रू०भे०—मेचु मेछद, मेच्छ,

अल्पा—मेछो,

मह०—मेछाग, मेछाण, मेछान, मेछाड, मेछायण, मेछाळ, मेछायण

मेछायण ।

मेछक—देखो 'मेचक' (रू भे) (ह ना मा)

मेछमुख—स०पु० [स०म्लेच्छमुख] ताबा । (डि. की)

मेछांइण, मेछांण—देखो 'मेछ' (मह, रू भे)

उ०—१ हिंदू घरम निवाह सरम गजँ मेछांणां । चक्रवती चालियो

प्रगट वैकूठ पयाणा ।—रा रू

उ०—२ पाढ पतसाह घड़ सिंवाडां पीढियो, देव मढळ सरी नकी

दूजो । मार मेछांण घड जोत 'सूजो' मिळँ, पथर पाढो तथा कोइ

पूजो ।—सुजांणसिंह सेखावत रौ गीत

उ०—३ मलिकहेम डरँ मेछांइण, देखँ विसमा कमध दळ ।

—विक्रमादीत राठोड रौ गीत

(स्त्री०मेछाणी)

मेछान, मेछांड—देखो 'मेछ' (मह, रू भे)

उ०—१ चढि चालिय मेछान भान गरदावनि मिलिय । हल

चलिय हिंदवान, खखड जुगानि खिल विलिय ।—ला. रा

उ०—२ दळ गहवर ऊलटा, खान तहवर सारीखा । महा सोच

मेवाड, ईख मेछांड भणीखा ।—रा रू

मेछाधिपति—स०पु० [स०म्लेच्छ—अधिपति] १ असुराधिपति, दानव

राज, दंत्यराज ।

उ०—मेछाधिपति सम वोलियो—गुमान रा भार सू भाजँ । जाणँ

सघण वादळां माहँ, गैहरी मेह गाजँ ।—मा वचनिका

२ मुसलमान बाहशाह, यवनाधिपति ।

मेछायण—देखो 'मेछ' (मह, रू भे.)

मेछाळ—देखो 'मेछ' (मह, रू भे)

उ०—मेछाळा सिर मार, देतो पह आगँ दळा । कैलपुरी भारधि

किसन, जाडगी जिणिआर ।—वचनिका

मेछो—देखो 'मेछ' (अल्पा, रू भे)

मेज—स०पु० [फा०] १ लकडी की वह बड़ी व ऊंची चौकी या पाट

जिस पर प्राय पढने—लिखने या खाना खाने का कार्य किया जाता

है । टेबिल ।

२ दावत का सामान, भोजन—सामग्री ।

मेजपोस—स०पु० [फा०मेजपोस] मेज पर बिछाया जाने वाला वस्त्र,

चादर ।

मेजर-म०पु० [प्र०] सेना का एक अधिकारी ।

वि०—मुत्त, वडा ।

मेजरनामो-म०पु० [अ०महजर नामा] १ कई व्यक्तियों द्वारा सामूहिक रूप में दिया जाने वाला आवेदन-पत्र ।

२ वह पत्र जिसमें कई आदमियों की गवाही हो ।

३ प्रमाण-पत्र, साक्षी पत्र ।

४ लोगों के हाजिर होने का एक स्यान ।

५ हत्या या हत्यारे के सम्बन्ध में साक्षीपत्र ।

म०मे०—महजरनामो

मेड-स०स्त्री०—मुत्तानी मिट्टी ।

उ०—१ मुरह मेड लान अर पीछी, खण्डि खदेटी खलक रो ।

पलक पलक रो पूज जोगी, मानी मुरवर मुलक रो ।—दमदेव

उ०—२ नायण मुळकती चकी बोली—म्हां गरीबां रं अऊक पडै

जद मेड, कोयला चिपी, मुरह सु हर पालला ।—फुलवाडी

स०पु० [अ०] २ मजदूरो के ऊपर कार्य करने वाला अधिकारी, जमादार ।

३ जहाज पर कार्य करने वाला एक कर्मचारी ।

४ मेटने की क्रिया या भाव ।

म०मे०—मेडि ।

मेड, मेटर-वि०—मिटाने वाला ।

उ०—१ सगट गद मेटर हरि सक ।—ह नां मा,

उ०—२ नमो नागयण जोग—निवास, नमो दुख मेड उधारण-वास ।

—ह र

मेटरछपा-स०पु०—रात्रि को मिटाने वाला सूर्य । (डि को)

मेटरतम-स०पु०—१ अघकार को मिटाने वाला, दीपक । (ना मा,) २ सूर्य, रवि ।

मेटनी, मेटघो-क्रि०सं० [स०मृष्ट] १ समाप्त करना, नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—१ आतम ऊचा देखीयै, नीच न देखो कोय । ऊचो नीचो मेड करि, हरीया हरि का होय ।—श्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—२ त्रिलोक लोक लोक को प्रलोक लोक की वद । त्रिलोक मोक मेड देत पेट दे जद तद ।—ऊ का

उ०—३ मेटे मुरमोक पैंठो जळ माह तडै डक अंड निपायो ताह ।

—ह र

२ दूर करना, हरण करना, अलग करना, हटाना ।

उ०—१ अयोग मेटर हाग, अमोनघ अमोनद इणम । गूद घणी गुणवार, अयय मक्ति है जिण पे ।—दमदेव

उ०—२ महादेवजी रं मामो देवनं कंवण लागा—चैं मळं मोळा-मकर बाजी, दीन-कुनिया रा दुख मेटर रो गुमान करी । यारें वंटा घा रचना छै तो साय मूटगी ।—फुलवाडा

उ०—३ त्रिष तु जद उगार करि, मेडि महुनी पीड । स्यु भावै रं मो मणी. मोजि दुहेली भीड ।—वि कु

उ०—४ अघम-उधारन याद करि, तन मन राखि नचित । जन हरीया कण मेटसी, साईं विना मवित ।—

—श्रीहरिरामदासजी महाराज

३ निवारण करना, समाधान करना, मिटाना, हल करना ।

उ०—१ आ थारे सका है तो चरचा कराला । इम कहि उण वेला डज तावडें मे विहार कीधी । उणमूण में मूय उत्तराव्येन थी सका मेड दोधी ।—भि द्र.

४ छोड़ना, त्यागना ।

उ०—मानापमान सुख दुख समान । मद मोह मेड भगवत मेड ।

५ बद करना, रोकना ।

उ०—सगळी वात चुपचाप सुणिया पछैं अक्की चककी मूडें बोली-डण देंत न मारनं श्री अन्याव मेडिया विना म्हैं तो टूच मे चुणो-पाणी ई नी केतू ।—फुलवाडी

६ टालना ।

उ०—चिड़ा रं वाचा देता ई चिडी तो प्राण मुगत व्हेगी । चिडी घणी ई रोधी-रीकीधी पण होणी न कुण मेड सकै ।—फुलवाडी

७ शान्त करना ।

८ कम करना, घटाना, क्षीण करना ।

९ मारना समाप्त करना, विनाश करना ।

उ०—किरमर वीर पुहप कछवाही, मान'गयी महपतिया मेड । अरि हम रहवा पेट आपाणें, परहम रहे अरघा चैं पेट ।

१० लोपना, उलघन करना ।

उ०—१ मुख राम राम करज्यो मती, म्हारो कछी न मेटज्यो । चारणां वरण साधां चरण, भूल कदै मत भेटज्यो ।—ऊ का

उ०—२ मेड सकइ न को मरजादा, हालइ सकी मरजादा माहि ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ आग्या ह मेडि अठड ताइ आई वात इयड रउ अउहिज विचार ।—महादेव पारवती री वेलि

११ कोई लिखावट या चिन्ह मिटाना, साफ करना ।

मेटरहार, हागे (हारो), मेटरिणी—वि० ।

मेटिओड़ी, मेटियोडी, मेट्योडी—भू० का० कृ० ।

मेटीजणी, मेटीजघो—कर्म वा० ।

मिटनी, मिटघो—अक० रु० ।

मेटली-उ० स्त्री०—रहट द्वारा कुए से पानी निकालने का एक मिट्टी का उपकरण ।

मेडि—देखो 'मेड' (रु भे)

उ०—मायउ घोइ मेडि, उभू मूरिज सामुही । तउ ऊपशी पेटि, मोहण बोली मारई ।—ढो मा

मेडियो-स०पु०—मेड के रंग का घोडा ।

उ०—के सीला के कागडा करडा हरडा केक । मुमकी तुकरा मेडिया डमडा तुरग अनेक ।—पे ह

वि०—मेड के रंग का ।



मेटियोडी-सू०का०क०—१ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ २ दूर किया हुआ अलग किया हुआ, हरण किया हुआ, हटाया हुआ ३ निवारण किया हुआ, समाधान किया हुआ हल किया हुआ ४ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ५ बद किया हुआ, रोका हुआ ६ टाला हुआ ७ शान्त किया हुआ ८ कम किया हुआ, घटाया हुआ, क्षीण किया हुआ ९ मारा हुआ, समाप्त किया हुआ, विनाश किया हुआ १० लोपा हुआ, उलघन किया हुआ ११ साफ किया हुआ मिटाया हुआ ।

(स्त्री०मेटियोडी)

मेड-स०पु०—तीर, बाण । (डि ना मा)

रू०भे०—मेड मँड,

मेडक—देखो 'मीडकी' (मह, रू भे)

मेडल-स०पु० [अ०] पदक, तमगा ।

मेडसुनार-स०पु०—स्वर्णकारो की एक शाखा ।

मेडिकल-वि० [म०] १ चिकित्सा सम्बन्धी ।

२ औषधियो सम्बन्धी, भौषेजिक ।

मेडिसन-स०पु० [अ०] औषधि, दवा ।

मेडी—देखो 'मेडी' (रू भे)

मेडी—देखो 'मँडी' (मह, रू भे)

उ०—मिलिया सुरवए कोडि तेन्नीस, गयण दुहुहि द्रह द्रहीय । मेडे वडल राय कूयार भावए कूयारि दूपदीय ।—सालिभद्र सूरि

मेड—१ पशुओ के बांधने के लिए जमीन में गाड़ा जाने वाला खूटा ।

२ देखो 'मीड' (रू भे)

उ०—महा उमराव राणा तणे मेड रा । वेड रा छाव वप चडेवानी साख रा भडा मिहज्जा चढे सावता, मरह मेवासियां हार मानो ।

—दल्लो मोतीसर

वि०—२ दृढ, अटल ।

उ०—सायर तरण मरस साई दळ, मरवा छळां माडियो मेड । मांभी मेर न गो मेरवडे, पिढवा रहियो काटा वेड ।—दो आसियो

३ देखो 'मेड' (रू भे)

४ देखो 'मेड' (रू भे)

५ देखो 'मीड' (रू भे)

६ देखो 'मेडी' (रू भे)

मेडक—देखो 'मीडकी' (रू भे)

मेडकी—देखो 'मीडकी' (रू भे)

मेडासींगी-स०स्त्री० [स०मेड घृ गी] १ प्राय मध्य प्रदेश व दक्षिण के जंगलो में पाई जाने वाली एक झाड़ीदार लता जो औषधि के रूप में काम आती है व इससे सर्प का विष दूर होता है ।

२ देखो 'मीडासींगी' (रू भे)

रू०भे०—मीडासींगी ।

मेडि, मेडी-स०पु० [स०मेधी] १ रहट या खलिहान में अनाज के बीघो को कुचलने के लिये जोते जाने वाले बँलो में से अन्नर की ओर

चलने वाला बँल ।

उ०—रिण गाहटतै राम खळा रिण, थिर निज चरण से मेडि थिया । फिरि चडिये सघार फेरता, केकाणां पाई सुगह किया ।

—वेलि

(स० स्त्री०) २ खलिहान के बीचो बीच रोपा जाने वाला लकड़ी का स्तम्भ, खूटा जिसके चारो ओर बँल घूमते हैं । (उ. र)

३ स्तम्भ, ।

४ घोड़े के सिर पर होने वाली एक भवरी ।

५ स्त्रीयो के सिर की कनपटी के ऊपर की गूथी हुई लट जो चोटी के साथ गूथी जाती है ।

वि०—मुखिया प्रधान, पंच ।

उ०—१ चोडै घाडै चोर ढग विन देहम देडी । जिकै नही किरण जोग, मिल्या घर घर रा मेडी ।—ऊ. का

उ०—२ खत्या खसलिया भाखलिया खाघं, वेभड दांमोदर चामोदर बाघं । मुखिया मन मोहण दोहस घर मेडी, गोडै डेरी न्है खूणी मे मेडी ।—ऊ. का

उ०—३ हसम मिएगार मुजरौ कर हालियो, तेज अजरौ करै नजर तेडी । कूपहर अडर सुघड भवर अणी रौ, मिसल मुरघर समर अमर मेडी ।—ठाकुर महेसदास कूपावत रो गीत

रू० भे०—मँडी, मँडी

मेडीमणी—वि०—१ वीर वहादुर ।

उ०—१ चालमी जुव गयण घोम चेडीमणी, मुगळां गाळसी जोम मेडीमणी । तरह लकाळ सी घाट तेडीमणी, जाळसी क्यां कसर दाट वेडेमणी ।—बद्रीदास खिडियो

उ०—२ आरवी बव मादळ उभै, धुवै नाद वादळ घजर । मोनू वताय वेडीमणी, नाह कठी टेडी नजर ।—मे. म

मेडो—देखो 'मीडी' (रू भे.)

मेण-स० पु०—देखो 'मैण' (रू भे)

उ०—१ दिक्षा छे पुत्र दोहिली तो ने कहु छु जताय । मेण दांत लोहना चणा, कुण सकेला चबाय ।—जयवाणी

उ०—२ जको सत जीवत सिघ नै कोप करै तो भसम करदै, उण रै सामो मेण रौ सिघ बापडौ किस्तीक देर टिक सकै ।—फुलवाडी

मेणका—देखो 'मेनका' (रू भे)

मेणवती, मेणवत्ती-म० स्त्री० [फा० मोम+वत्ती] मोमवत्ती, क्षमा ।

मेणमाखी-स० स्त्री०—मधु मक्खी ।

उ०—एक मेणमाखी नै तिरस लागी तो वा पांणी पीवण नै गी ।

—फुलवाडी

मेणा—१ देखो 'मैणा' (रू भे)

२ देखो 'मेना' (रू भे)

३ देखो 'मैना' (रू भे)

मेणियो-स० पु०—जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हुआ हो ।

मेणी, मैणी—१ देखो 'मैणी, मैणी' (रू भे)



० मेणा जाती की स्त्री ।

३ गुण्डी ।

मेणी, मेणी—देखो 'मेणी' (रू. भे.)

मेतर—देखो 'महतर' (रू. भे.)

मेतलगी मेतलबी—कि० ग०—भूतना, तनना ।

उ०—कुमाहरै लई खल कीवा, मेतलबी नह ताम मुणै । पवन भगवै मव रम परमे, मया मगहम नाम मुणै ।

—महागज प्रथीगज गी गीत

मेती—स० स्त्री०—मीन फूल (आनूपग) का वह भाग जिसमें वागा विरोधा जाता है ।

२ देखो 'मिथी' (रू. भे.)

मेथी-म० स्त्री०—१ भारत में प्रायः सर्वत्र होने वाला पौधा, जिसकी मेती की जाती है । (उ. र.)

२ उक्त पौधे का बीज ।

वि० वि०—इस पौधे की पत्तियों की मन्त्री बनती है । इसकी फली के दाने शीपवि में काम आते हैं और कई प्रकार में लाभ दायक होते हैं ।

उ०—उमटना नाटू धूयना लाहू, दहीयगना लाहू, रवाना लाहू करकगे लाहू, आसविना लाहू, मेथी ना लाहू ' ' ।—व. म.

मेथी-स० पु०—वन मेथी । (वैद्यक)

मेद-म० स्त्री० [स० मेद] १ चर्वी, वसा ।

२ शरीर के किसी भाग में चरबी की बड़ी हुई गाठ, एक गोग । (डि. को.)

उ०—उपरला होठ र पमवाडै मृदुघा रा मामूली सेनांग । गल्ला रें मामी माम लाठी मेद ।—कुलवाही

३ एक वर्ण मकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदिक पुरुष तथा निपाद जाति की स्त्री से होना माना जाता है ।

४ एक नाग का नाम ।

५ एक शीपवि विशेष जो अष्ट गण वर्ग में से एक है तथा दाय गोग की दवा है । (अमृत)

६ वस्तु ।

७ देखो 'मेदनी' (रू. भे.)

८ देखो 'मेघ' (रू. भे.)

मेदक-म० पु० [म० मेदक] शरीर खींचने के काम आने वाला द्रव्य ।

मेदकर-म० पु० [म० मेदकर] मांस । (डि. को.)

मेदज-म० पु० [म० मेदज] १ हड्डी, अस्थि ।

२ एक प्रकार का मूल ।

मेदेचा-स० स्त्री०—चोहान वन की एक शाखा ।

उ०—बाँहू मेदेचा चहुयांग नैघणु अमरावत री दोहिनी ।

—बाँ दा म्यात

मेदेची-स० पु०—चोहान वन की मेदेचा शाखा का व्यक्ति ।

मेदनी—देखो 'मेदनी' (रू. भे.)

उ०—महल घू सधिर, अहराव सिर मेदणी, राव गागी कहै, त्यां गीत रहसी ।—राव गागी

मेदघरा-स० पु० [स०] शरीर की वह भिल्ली जिसमें चरबी रहती है ।

मेदनी-स० स्त्री० [स० मेदनी] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । (अ. मा., ना. मा., ह. ना. मा.)

उ०—मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जाण समद । बल छुट्टा भद कायगा, देख प्रगट्टा दुंद ।—रा. रू.

२ जगह स्थान, स्थल ।

३ संस्कृत का एक कोश ।

रू० भे०—मेद, मेदणी, मेदणी, मेदिन, मेदिनी,

मेदनीतल-स० पु० [स० मेदनीतल] भूमितल, पृथ्वीतल ।

रू० भे०—मेदणीतल ।

मेदपाट-स० पु०—मेवाड का एक नामान्तर ।

उ०—१ अकवर कीना आद, हींदू धप हाजर हुआ । मेदपाट मरजाद पग लागो न प्रतापसी ।—दुरसो आही

उ०—२ मेदपाट न लाट बलि भोट अनै करणाट । पोतै वसि करि चालीबी, ले निज सेना घाट ।—वि. कु.

मेदा-स० स्त्री०—१ अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक शीपवि ।

२ देखो 'मेघा' (रू. भे.)

मेदालफडी—देखो 'मंदालफडी' (रू. भे.)

मेदिन, मेदिनी—देखो 'मेदनी' (रू. भे.)

उ०—करणीगर रूढा करै, करतै विलव न काय । मार सपावै मेदिनी, मुहुरत हेकण माय ।—ह. र.

मेदिय, मेदियो-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—वीणउसीउ मलन्सीउ भूगनउ मयउ मगलिक मेदियउ सीलउर इत्यादि वस्त्राणि ।—व. म.

मेदी-स० पु० [अ० मेद] १ पक्वादाय, कोठा ।

२ पेट ।

३ देखो 'मेदी' (रू. भे.)

मेघ-स० पु० [स० मेघ] १ यज्ञ हवन, मख ।

२ हवि, बलि ।

३ बलि दिया जान वाला पशु या पदार्थ ।

४ सीमा, हद ।

रू० भे०—मेद ।

मेघज-स० पु० [स० मेघज] विष्णु का एक नामान्तर ।

मेघा-स० स्त्री० [स०] १ वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा सोचने-विचारने व औचित्य समझने का कार्य होता है । बुद्धि, प्रज्ञा, मति ।

उ०—देवी मालिनी जोगणी मत्त मेघा । देवी देवणी सूर असुरां उत्रेवा ।—देशी०

२ बुद्धि, प्रज्ञा, मति । (अ. मा., ना. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ बालकांड दाम्यो विमल मेघा मुक्त परमाणु । अश्वकाट वरण अत्रै, सुगुजै धिरत मुजाणु ।—र. रू.

उ०—२ मेघा महत् दीपत दिगत, आदान ओघ भक्षय भ्रमोघ ।  
—ऊ का.

१ स्मरण शक्ति, याददाश्त ।

उ०—वह जगद विसतारै, निधि मेघा तुम्हो नम ।—रामरासो

४ मान्यता, धारणा ।

५ सरस्वती का एक रूप विशेष ।

६ सोलह मातृकाओं में से एक ।

७ दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

८ सीमा, हृद ।

उ०—काम तो वही नहीं, पण भोली जनता माथे रोव मेघा  
वायरी खाटे ।—दसदोख

९ चोर । (अ. मा.)

१०—यज्ञ ।

११ छप्पय छद का एक भेद ।

रू० भे०—मेहा, मंघा ।

मेघादध, मेघादधि—स० पु० [स० मेघा+उदधि] १ बुद्धि का सागर ।  
२ कवि । (अ. मा.)

मेघामान—देखो 'मेघावान' (रू. भे.)

मेघावर, मेघावान, मेघावाळ—वि० [स० मेघा+वत्, मेघा+वर] जिसकी बुद्धि तीव्र हो, बुद्धिमान, मेघावी ।

उ०—कनिया ग्रहे हालिया किकर । वदै अरज प्रोहित मेघावर ।

—सू. प्र.

मेघावी—वि० [स० मेघाविन्] १ जिसकी बुद्धि विलक्षण हो, तीव्र हो, तेज तीव्र बुद्धि वाला ।

२ चतुर, बुद्धिमान ।

३ पंडित, ज्ञानी, विद्वान ।

रू० भे०—मेघावी

मेघि, मेघी—स० पु०—कवि । (अ. मा.)

वि०—बुद्धिमान, चतुर ।

मेन—स० पु०—१ अधकार ।

२ कामदेव ।

वि०—१ श्यामल, काला ।

२ देखो 'मेण' (रू. भे.)

मेनक—१ देखो 'मेनका' (रू. भे.) (डि. नां. मा.)

२ देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

मेनका—स० स्त्री० [स०]—१ पुराणानुसार स्वर्ग की एक अप्सरा, जिसने विश्वामित्र ऋषि के साथ संयोग करके शकुन्तला को जन्म दिया था ।

२ हिमालय की पत्नी व पार्वती की माता का नाम ।

रू० भे०—मेणका, मेनक, मेणका, मेणका, मेनका, मैना ।

मेनकात्मजा—स० स्त्री० [स०] १ शकुन्तला ।

२ पार्वती, उमा ।

मेना—स० स्त्री० [स०] १ हिमालय की स्त्री व पार्वती की माता का नाम ।

२ देखो 'मैना' (रू. भे.)

रू० भे०—मयणा, मयना, मेणा ।

मेनाक—देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

उ०—गिरि मेनाक यू. वीनवै रे स्वामी, थोड़ी तो मेटीनी थकाण ।

—गी. रा.

मेनाद—स० पु० [स० मेनाद] १ मयूर, मोर ।

२ वकरा ।

मेनाधध—स० पु०—हिमालय ।

मेनिक—स० पु० मछूवा, मल्लाह ।

उ०—तसु करमे जाल निवास जो, तू तो वसीयो रे मछू ना पेट मा रे लो । रहीयो वलि मेनिक आवास जो, आन पड्यो रे दुखनी फेट मा रे लो ।—वि. कु.

मेमत—देखो 'मैमत' (रू. भे.)

मेमटा—देखो 'मैमट' (रू. भे.)

मेमती, मेमत्तिय—देखो 'मैमत' (रू. भे.)

उ०—सरगं सुरा न वकरा, ना वाजती वीण । ना कामणि

मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण ।—रा. सा. स

(स्त्री० मेमती, मेमत्ती)

मेमल—स० पु०—एक प्रकार का वरसाती कीड़ा ।

मेमार—स० पु० [अ०] इमारत बनाने वाला कारीगर, शिल्पी, राजगीर ।

मेमूदी—देखो 'महमूदी' (रू. भे.)

मेमोरियल—स० पु० [अ०] वह वस्तु, भवन, चिन्ह या प्रतीक जो किसी की यादगार हो, स्मारक ।

मेमोरेण्डम—स० पु० [अ०] १ स्मरण—पत्र

२ वक्तव्य ।

मेय—स० स्त्री० [स०] नापने-तोलने या परिमाण निकालने की क्रिया ।

वि०—नापने-तोलने या परिमाण निकालने योग्य ।

अव्य०—समान, तुल्य ।

उ०—दिपे मेय राधेय सरवस्थ दानी । महाकस्ट भीमागवै भूप मानी ।—व. भा.

सर्व०—मुझे, मुझको ।

मेर—स० पु० [स० मेर] १ अस्ताचल ।

उ०—सो दिन मेर पेमत जोडया री जमीं छोड खरळा री सीव बडिया ।—कुवरसी साखसा री वारता

२ सीमा सरहद ।

उ०—इत ठणियारी टूक उत, मेर मिळत दहु राज । तदपि असुर को चित वड्यो, फिर घर दबन काज ।—ला. रा.

३ राजस्थान की एक पहाड़ी जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

उ०—१ मैणी पेण मेर वावग विलळा वैंता । माळी थोरी भीळ रात रा मांगे रैंता —ऊ. का.

उ०—३ भोल न कू भलाविथी, नही मेरां मीणाह । तोनू राण  
भलाविथी, मोहडा सुकलीणाह ।—वां दा

४ डिगन के वेलिया माणोर छद का एक भेद विशेष, जिसके  
प्रथम ढाले में ८ लघु २८ गुरु कुल ६४ मात्राएँ तथा इसी  
क्रम में शेष ढालों में ८ लघु, २७ गुरु कुल ६२ मात्राएँ होती हैं ।

५ देगो मेर' (रू भे)

उ०—१ छवीली घणों खाम धावाम छार्ज, लखें घाट स्वाराट री  
पाट लाजें । निराळी फवै कूटगी भूठ नहो, मनो मेर री कूट बैकूट  
माही ।—मे म

उ०—२ कामी नर कं काम की हरीया रतीयेक सुख । यातें  
अधिकी ऊर्ज, मेर प्रवाणें दुख ।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—३ दादू माया फोडें नैन दो, रांम न सुम्मे काल । साधु पुकारें  
मेर चढ, देव अग्नि की भाल ।—दादूवाणी

उ०—४ क्या फेर कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरीया  
माळा फिरें, बिना विचेरण मेर ।—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—५ सबल सिध 'प्राग' का मो मेर जन घारी । आसकरन  
भाई जग काच की भी झारी ।—रा रू

मेरठ—देखो मेरी' (रू भे)

उ०—चंद्र बाहु चरण कमल, मधुकर मन मेरठ हा । अवर देव  
तिके वणराइ, नावइ कदि नेरठ हो ।—स कु

मेरगरद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरवर, मेरगिरि, मेरगिर, मेरगिरि—  
देगो 'मेरगिरि' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ बिमाड गयद मयद विध महि सामद इधकें मच्छरि ।  
'नूरउत' प्रगट नवनद निर, गन्धति मेरगिरद गिरि ।—गु रू व

उ०—२ 'माला' हरी मनमोद मोटें पाट मेरगिर । भाटिया  
भवाडें भला भौवजी भोवाळ ।—नैणमी

उ०—३ आसण अचल मेरगिर ऊपरि मन हमति गई प्राधा ।  
उलटा चल्याम घोडि पहुना, पंडे पार न लाधा ।—ह. पु वा

उ०—४ प्रभ्रिति द्र प्रतप, पाक पिठ तेजा प्रमाकर । क्रोध जम्म  
वंभव कुमेर, दिठ मेरगिरवर ।—गु रू व

उ०—५ गज रूपा सीम फावि फरहरियां, उण उणिहार इववए ।  
आगहि करि अठर मेरगिरि सिगी विजय सिगक पेख ए ।

—गु रू व

उ०—६ नरनाइ नटें पनटें नदी, मेरगिरि मजवूत सा । करि जोम  
योम अधम करे, योम नयण अमयूत सा ।—सू प्र

मेरठ—देगो 'मेरठ' (रू भे)

उ०—१ पछिम दिमा की पाई बाटी, वरुनाळि की सुटही घाटी ।  
मेरठ में बभीया दामा, धागें अतर उपजी घामा ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ मेरठ भवि होंगे लहे, प्रहृ भगनि काया बन दहे ।

—ह पु बां

मेरणी—देखो 'वारणी' (रू भे.)

मेरपर्व, मेरपरवत, मेरपरवत, मेरपहाड—देखो 'मेरपरवत' (रू भे)

उ०—द्वीपमाहि जवूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप, परवतमाहि  
मेरपरवत, भूचर जीवने हेतु जलवर । । व. म

उ०—२ अममान यम उडू इसी, पकड़ें मेरपहाड नू । सुरताण  
खुरम जुव सूत्रियो, पातमाह अल्लाह नू ।—गु रू व

उ०—३ पढें दीठ आसेर ज्यो मेरपर्व । दुनी देखिया स्वरग री  
दुरग दवै ।—मे म

मेरम—१ देखो 'मेरम' (रू भे)

उ०—सत सव्द री ऐमी लगी, उतरे नही खुमार । ज्यांरा मेरम  
साधो सोई लखें, पावें दसवें द्वार ।—हरिरामजी महाराज

२ देखो 'मेरम' (रू भे.)

मेरवाडी—स०पु०—अजमेर तथा उसके आस पास के प्रदेश का पुराना  
नाम ।

मेरी—सर्व०—मैं (खुद) से सम्बन्धित एक सार्वनामिक विशेषण रूप ।

उ०—कसर न काई हरखाई बुद्धि मेरी हेरि । उक्त उपाई मनभाई  
जैसी मानी मे ।—ऊ. का

स०स्त्री०—१ अहभाव, अहकार ।

२ मेर जाति की कोई स्त्री ।

मेरु—स०पु०[स०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो स्वर्ण का माना गया है ।

उ०—१ अत्र माहि जिम द्र अडिग, सेसनाग पाताल । अत्युन्नोक्त  
मां मेरु जिम तिम ए वरण विसाल ।—वि कु

उ०—२ हेला तउ महेश्वर तणी, स्रष्टि ब्रह्मातणी, प्रज्ञा ब्रह्मसृष्टि  
तणी, प्रतिज्ञा फरसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान बलि  
तणउ अवस्टम मेरु तणउ ।—व. म

२ जप करने वाली माला के बीच का बड़ा मणिया ।

उ०—सैकडा सूरानू माथी करि महा रुद्र री माळा में आारा मुठ री  
मेरु चडाइ रुठ थकी भी धारा में तिलतिल पलचरा री पांती  
पुदगलन राखि इस्टलोक पूगियौ ।—व भा

३ बीणा का एक अंग ।

४ छन्द शास्त्र में एक गणना—पद्धति जिसके अनुगार किसी छन्द के  
लघु-गुरु ज्ञात किये जाते हैं ।

५ छप्पय छन्द का ४० वां भेद, जिसमें ३१ गुरु तथा ९० लघु के  
अनुसार १२१ वर्ण व १५२ मात्राएँ होती हैं ।

६ हुक्के का एक भाग ।

७ पर्वत, पहाड ।

८ पर्वत—शिखर

वि०—१ अटल, अडिग, दृढ

२ देखो 'मेरुदड'

३ देखो 'मेर' (रू भे.)

रू. भे—मेरु, मेरी,

मेरगिर, मेरगिरि, मेरगिरी—स० पु० [स० मेर-गिरि] सुमेरु पर्वत ।

उ०—समुद्र रहड लवण मूठि भेट, रोहणा चलनइ रत्न भेट, गगा रहड कनकफल भेट, मलयाचलनइ चदन भेट, मेरगिरि नइ सुवरण, भेट कलाव्रक्ष नइ कांइ फल भेट ? —व स  
रू० भे०—मेरगरद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरवर, मेरगिरि, मेरगिर, मेरगिरि ।

मेरुदंड, मेरुदेड—स० पु० [स० मेरु दण्ड] १ शरीर की पीठ में, गर्दन में लेकर कमर तक की हड्डी, रीढ़ की हड्डी ।

२ दो ध्रुवों के मध्य की एक कल्पित रेखा ।

३ किसी वड़े तम्बू के बीच लगा बड़ा स्तम्भ ।

रू० भे०—मेरुदंड,

मेरुदेवी—स० स्त्री० [स०] ऋषभदेव की माता ।

मेरुघाया—स० पु० [स० मेरु घामन्] महादेव शिव ।

मेरुपरवत, मेरुपरवत्त—स० पु० [स० मेरु+पर्वत]—सुमेरु पर्वत ।

रू० भे०—परवतमेर, परवत्तमेर, मेरुपरवत्त, मेरुपरवत, मेरुपर्वत, मेरुपहाड ।

मेरुम-वि० [स० मरहूम] स्वीर्गीय, मृत, मराहुआ । (मा म)

मेरुसिखर—स० पु० [स०] १ मेरु पर्वत की चोटी ।

२ हठयोग के अनुसार, मस्तक के छ चक्रों में से सब से ऊपर का चक्र ।

मेरु—देखो 'मेरु' (रू भे)

उ०—फिरिया नहिं फेरु मारग मेरु, तेरु पार तिरदा है ।

—ऊ. का

मेरुवन—स० पु०—मेरु पहाड के आस-पास का जंगल ।

उ०—नदीसर विदिसैं सोलस कुळगिरि तीस । मेरुवन अस्सी दस कुरु गजदते बीस । मानसोत्तर परवत च्यार च्यार इखु कार ।

—वृ. स्त

मेरे, मेरें—सर्व०—१ 'मेरी' का बहुवचन एक सर्वनाम ।

उ०—तेरे सुनौ जसवंत नरेस्वर, तेरे बिना हम मेरे न तेरे ।

—ऊ. का

२ देखो 'म्हारें' (रू. भे)

उ०—जद बौ माली बोल्यो—मेरें ती भूत मुकी री दे नांखी ।

—दमदोख

मेरेअ—स० स्त्री० [स० मेरेय] एक प्रकार की शराब, मदिरा ।

मेरी—सर्व०—'मैं' का सम्बन्ध कारक एक सार्वनामिक रूप 'मेरा' ।

उ०—१ तू सुत रायासिध रा रामा मेरी प्राण । जो हू चाहू सो करै, ती आपू जोघाण । —रा. रू

उ०—२ मन मेरा सेवग भया लगा मवद गुर कांन । रोम रोम मे भिद गया, हरीया किधू न जान । —छोहरिरामदासजी महाराज

स० पु०—१ मेर जाति का व्यक्ति ।

२ देखो 'मेरु' (रू. भे)

उ०—१ वारा घरस्य धारासरया, भूतले रेणुकण गणना, समुद्रे नीर विंदु सख्या, रोहणै रत्न सख्या, दिवि तारासख्या, मेरी सुवरण संख्या,—व. स

उ०—२ जोघपुर तुल मेरी, तेरह साखा कोडि तेतीसौ । तथा 'गजसाह' इद्रौ, वित चित विसेखायु । —गु. रू. व

मेळ, मेल—स० पु० [स० मेल] १ दो या दो में अधिक प्राणियों का मिलाप, भेट, समागम, संयोग ।

उ०—१ ईडरिया आचार री, वीर चढे ती वेळ । हसत चढे चारण हुवै, माया सरसत मेळ —बां. दा

उ०—२ तिकण अचती पुरी रै परै पच कोस रै प्रमाण पूणि वीरा री वामठि हजार मेना रै साथ मेळ पायी ।

—व. भा

२ मिलने या मिले हुए होने की अवस्था या भाव ।

३ परस्पर प्रेम, एकता, सगठन ।

उ०—१ हाडोती हिळ मिळ हुई, मेळ कियो मेवाड । घर जसवत रै घुमड नै, ठूकी घर ठूढाड । —ऊ. का

उ०—२ वरस तयाळो दुद घर दीढे कमध दुम्हाळ । जोस अछायो मेळ कज, आयो दुरजणसाळ । —रा. रू

४ स्नेह, प्रेम मित्रता, दोस्ती । (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ हद घरम १ सीम २ गणिया रहण वणिया मेळ सुवेळ वधि । खणिया १ न होड नाडां खटे, ऊफणिया हाडा उदधि । —व. भा

उ०—२ भारथ मत कर भामणी, मी भारथ नह मेळ । वापी कूप वताव विस, कै कर म्हासू कळ । —बां. दा

उ०—३ साहूकार दोइ एकै सहर माहै रहै । दोऊ द्रव्यवत मोटा भादमी, बडा सु सगाया । साहूकारे आपस में बडी मेळ छै ।

—सत री बांधी लिखमी री बात

५ सुलह समझौता, सधि ।

उ०—बीजै दिन आजमखान नवीनगर लूटियो । पछै जाम बात कर मेळ कियो । —नैणमी

६ ममता, वरावरी, जोड ।

७ ताल-मेल मामजस्य ।

उ०—मिनख गी मरजादा मू लुगाई री मरजादा मेळ नी छावै ।

—फुलवाडी

८ अनुकूलता, उपयुक्तता ।

उ०—तिण समै चावो मेरो आप रै साथ लै साजवाज सु चढीया । रांणाजी दिसा उनाळी ऊमी माहै चालीया । तरै रांणै मोकळजी देख कछो—आज खातण बाळा विपरीत दीस मेळ मे तो नही ।

—रावरिडमल री बात

९ मिश्रण, मिलावट ।

१०—सम्बन्ध लगाव ।

उ०—१ रांणी राजा नै होळै सू मूडो मस्कोर न कछो—भारि पगा

सांभी दन्तन आप आरं मन री वात नी जाण मकी ? कवरा रें  
बोल अर मयिया रें पगा में कित्ती मेळ है ।—फुलवाडी  
उ०—२ दुनिया में कोई अमरता री परवानी लिखायने नीं लायो ।  
जीवा नें मारतां एक दिन खुद नें ई मरजाणी है । मरिया पछे  
किणी नें नी मारणी । जीवण अर मरण री तो आपन में मेळ है ।

—फुलवाडी

११ यात्रा या किमी कार्य में होने वाली महगमन की अवस्था या  
भाव, महचार्य, साय ।

१२ एकाकार होने की अवस्था, विलय ।

उ०—सही मुमजोत हि जोत समाय, रही नहि अतर मे अतराय ।  
करे निज हस दुष्ट निज केल, मिल्यो परमात्म आत्म मेळ ।

—ऊ का

१३ काल-चक्र या घटनाक्रम मे किमी घटना विशेष का बनने  
वाना कारण, योग, सयोग ।

उ०—दुख, बळेम अर सताप विना सुख अर आनंद री मार्चलो  
साथ ई नीं आवें । दोनू वार्ता रें मेळ सून सगळी वाता मातरी लागें ।

—फुलवाडी

१४ इतजाम, व्यवस्था, सराजाम ।

उ०—पण जानिया रें जोमण वास्ते चांदी रा धरतन कम पढेला ।  
पचवाम धाळ वाटनियां री मेळ तो अपारें घराघरु है ।

—फुलवाडी

१५ वृद्धि ।

उ०—भाकरकें घडी रात घकां वा ई घू घट घू घट ! करता  
करतां पाच मात दिना पछे पींजारी कळदार रिपियो नोळी मे  
मेळ दियो । पूरा तो रिपिया री मेळ । दोनू लोग लुगाया रें  
हण्ड री पार नी ।—फुलवाडी

१६ टकराव ।

उ०—मंगळ एथी आव मत, वाघा केरी वाट । मांप अगूठा मेळ  
ज्यू, कदिवक हुमी कुघाट ।—वा दा

१७ समूह ।

उ०—एक वरदत्त पुत्र अक्षोम नी, दोय मे पाच यादव मेळ रे ।  
खीनेम मार्य मेजम लियो, श्री सहज पुन्स री मेळ रे ।

—जयवाणी

१८ फौज, नेता ।

१९ मोपा, अवसर ।

२० वरात के स्वागतार्थ वन्या-पक्ष व वर पक्ष के लोगों का  
मिलन ।

२१ विवाह के पहले दिन वन्या के पिता द्वारा अपने पक्ष को  
दिया जाने वाला भोज ।

२२ मृतक का स्मारक दिन ।

२३ दशसे के दिन घाए हुए व्यक्तियों का समूह ।

उ०—सारा मुण्ड उदास हुआ । पाणी दियो । बारबे दिन मारो

मेळ मेळो हवो । खरचकर पाघ वचाई ।

—मूरे खीवें कावळोत री वात

२४ गाय के स्थानों में दूध आने की स्थिति ।

२५ आय-व्यय का प्रतिदिन किया जाने वाला लेखा-जोखा ।

२६ प्रकार, वर्ग, जाति ।

ज्यू०—अठे सब मेळ की चीजा मिळ मकें ।

२७ वह गाड़ी, जिसमें डाक जाती-आती हो ।

२८ डाक से भेजी जाने वाली चिट्ठी, पार्सल आदि ।

२९ छद का तुकान्त चरण ।

३० योग, जोड़ ।

उ०—चवदे चाळ वुढाहड कहीजें तिण री मेळ गाव १४४० ।

—नेणसी

वि०—१ समान, तुल्य ।

उ०—लडग लाख तुग तुग सग जुग हल्लये । चढे कि वेळ आकुळें  
ममुद मेळ चल्लये ।—रा रु

रू० भे०—मेलड

मे'ल—देखो 'महल' (रू भे.)

मेलड—देखो मेळ' (रू भे.)

उ०—हू जाणू जइ नड मिलू रे ली । साहिब नड डकवार रे मनेही ।

सयणा रइ मेलड करी रे ली, सफळ हुवड अवतार रे सनेही ।

—वि कु

मेळकी-स०स्त्री०—एक घास विशेष जिसमें से दाने निकाल कर खाने  
के काम में लिए जाते हैं ।

मेळग-स०पु०—१ समग्र ।

२ देखो 'मेळू' (रू भे.) (अ मा.)

उ०—जग मुगति भुगति दाता जगा, दान मान वद्धत दिवें । पारथं  
किसू मेळग कुपह, प्रभूनाथ पारत्थिये ।—जगो छिड़ियो

मेळगर-वि०—१ मिलाप या मेल करने वाला ।

२ एकत्र करने वाला, इकट्ठा करने वाला ।

उ०—मरमी माया सणा मेळगर, कदे न पर उपगार करे । 'माघी' अमर  
हुमी यळ माहे, 'माघी' कमवज नाज मरे ।—श्रीवो आदी

स०पु०—१ दशकगण ।

उ०—आगळि रितुराय मडियो अवसर, मडप वन नीभरण अदग ।  
पच बाण नायक गायक पिक, वसुह रग मेळगर विहग ।—वेलि

२ एक वर्ग विशेष ।

उ०—खरड लाठा माठा रगाचारय उचित बोला साहम बोला, मोठ  
बोला मेलगर मामगर कउतिगीया कुहटीया नट वट गांछा छीपा  
परियटा ।—व स

मेलडियां—देखो 'मावलियां' (रू भे.)

मेलडो—देखो 'महल' (अल्पा, रू भे.)

उ०—हाट हवेली मेलडा रे, कीना होडा होड । जमा पाप तू  
सचने रे प्राणी, जाय पन्नक में छोटे ।—जयदांणी

मेळघी-स० पु०—मित्र, दोस्त ।

मेळजोल-स० पु०—१ मंत्री, दोस्ती, प्रेम ।

२ परिचय, मुलाकात ।

३ सम्बन्ध ।

४ सुलह, सधि ।

मेळट्रेन-स० स्त्री० [म०] वह रेलगाडी जिसमे डाक रहती है और जो बड़े बड़े स्टेशनो पर ही रुकती है ।

मेळण, मेळण-स० पु०—१ दूध को जमाने के लिये उसमे ढाला जाने वाला दही, छाछ आदि कोई खट्टा पदार्थ । (जावण) ।

२ रोटी के लिये, आटे को गूदने से पूर्व उसमे मिलाया जाने वाला घी । (मोवण)

३ गोबर में, ऊपले वनाते समय, मिलाया जाने वाला, घास-फूस, चारे आदि का चूरा । (घासण) ।

४ कतिपय खाद्य पदार्थ में पड़ने वाले मसाले ।

उ०—जदि भीसण लें सस जिकी, आप गोळ द्रुत भाइ । वणवायी जिण पळ विविध, मेळण उचित मिळाइ ।—व भा.

५ मिश्रण, मिलावट ।

६ सम्बन्ध ।

उ०—केइ उपाय करी मेळण करू, परिग्रह विविध प्रकार । विरति करू पिय मन न रहै वाले, ती किम हुवै भव पार निस्तार ।

—घ. व प्र.

वि०—७ मेळ करने वाला ।

रू० भे०—मळावण, मळेवण, मेळवणी, मेळवणी, मँळण

मेळणो, मेळवो—क्रि० स० [स० मेळन] १ भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाना ।

उ०—कह्यो-राजा सू काहरा मेळिस्यो ? कह्यो जी ! वेणी ही मेळिस्या, ये ऊतरी, जिकू चाहीजै सू सरव था नू दिराधीस, थाह-रा घणा वाना करीस, अर ये मागिंयो सू राजा देसी ।

—सयणी री वात

२ सम्मिलित करना एकत्र करना इकट्ठा करना ।

उ०—१ पारवती पिता तणइ थळ पृहती, आयउ ईसर आपरें आवास । परणीजण नू वळे नवी परि, दळ मेळवा पठावै दास ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ अनत कोट ब्रह्म उ तणा इद्र, तन खोहण अतलोक तणा । सात पायाळ तण इद्र मावड घणू सु थक मेळिषा घणा ।

—महादेव पारवती री वेलि

३ जोडना, भिडाना, मिलाना ।

उ०—पण बापजी, चुगलखोरा री काई सेढी । पांवडे पावडे चुगलखोर भरथा । एक री इक्कीस मेळ राजाजी नै भिडावैला ।

—फुलवाडी

४ प्रेम करना, स्नेह करना ।

ज्यू०—मन मेळणी ।

उ०—कर दोहां दिस कमधजा, गी मेहते सिताव । मोहकम री मन मेळवा मिळ पुछियो जबाव ।—रा रु

५ किसी को अपनी ओर करना, मिलाना ।

उ०—त्रय भीडू दक्खिण तणा, वदिया पहलं बाद । धुर चोपी पच्छिम घणी, मेळे अनुज मुराद ।—व भा

६ जोडना, भिडाना, सटाना, सलग्न करना ।

उ०—परम सिध म प्राणी डार उनमनि लागा प्रेम वधार । आत्म परमात्म सू मेळो, परमहस सू दिलि मिळि खेळो ।—ह पु वां

७ घाव या जखम की चिकित्सा करना ।

८ मिश्रण करना, मिलाना ।

उ०—छव कठीर सुहाळ, निळिया प्राक्रम मेळिजै । वयु इधकी भग आदि सै, पोह असुरेस प्रौचाळ ।—मा. वचनिका

९ आख बंद करना, नींद लेना ।

उ०—राति सखी इण ताळ मड, काइज कुरळी पखि । उवै सरि, हूँ धरि आपणड, बिहू न मेळो अखि ।—ढो मा

१०—धारण करना ग्रहण करना, अपने में रमाना ।

उ०—यू कमधज्ज घर्ण धू अबर, ज्यू गंगा मेळे जोगेसर । आदर जोध विरोध असका, बट रतन्ने ज्यां सुर वका ।—रा रु

११ गाय भैस आदि को उनका बच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति में करना ।

उ०—मावां टावर मेळवै, लूयां भग वचाय । छाती मिळनां छटपटें बिलख बिलख रह जाय ।—लू

मेळणहार, हारी (हारी), मेळणियो—वि० ।

मेळिघोडो, मेळियोडो, मेळ्योडो—भू० का० कृ० ।

मेळीजणो, मेळीजवो—कर्म वा० ।

मिळणो, मिळवो—प्रक० रू० ।

मेळणो, मेळवो—वि० स० [स० मेळन] १ जाने के लिये प्रेरित करना, प्रस्थान कराना, भेजना, पठाना ।

उ०—१ आप भजंगल आवियो, माप जकै भममान । वेग सिहाय विहारिया मेले मुकरबखान ।—रा रु

उ०—२ उदैपुरिया बाजार में एक मँही जाची । आप बैठा ने साधा नै मेळ उपगरणा मगाय लिया ।—भि द्र

उ०—३ साळा वत्तळावै अर साळी मनुवार करै तथा सँग लोग हायाजोडी कर रेंपा है । पण हा कोई नी करा सकै । छेकठ घाप' र घर हाळा पारा नै मेळण री हकारो भरै, जद जुवाई आपरो जँक्योडी ऊट तयार करै है ।—दसदाख

उ०—४ हाली घांम दिवाडिहा, भयवा इण नू ओर । पण अब मेलां साह पग, जाणै जय नय जोर ।—व भा

२ किसी वस्तु, सदेश, समाचार आदि को किसी के द्वारा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना ।

उ०—१ फोग केर काचर फळी, पापड़ गेघर पात । बडिया मेले



वागुया, मागुया मोगात ।—वा दा

उ०—२ जयमल 'पन' जवाव जद, हजरत तणी हसुर । मत्र करं  
लिख मेलिवा, सामळ हसुर ।—वा दा

उ०—३ जद चतुरोजी आवक बोली-वें ती घोडा कोम हाली  
अने ह कापीद मेलनें ठाम ठाम खबर कराय देनू सो धाने मन  
करनें पिए सोट वर्ये नही ।—मि द्र

उ०—४ अर मेलें आया नगर, दोड ववाईदार । कही विगत विध  
विध करं, आनद भरें अपार ।—र रु.

उ०—५ राजा कागळ मेलिदी, लिक्काट चड चोट । जिम जाणें  
तिम मागनें, कुवर वरुंगिर कोट ।—गु रु व

३ बाट वन्तु किमी ग्यान पर रचना, वरना, टिकाना ।

उ०—१ अर महीप भी आप री माळा नू मच पर ही मेलि एक  
दिमा री मारण गहियो ।—व भा

उ०—२ केद वहे पोथी आगणें मेलणी नही । पृठ देगी नही ।  
पोथी पानां तो ग्यान हें । तिण री आमातना करणी नही ।

—मि द्र.

उ०—३ आपरें पगा मे पोथी मेनू म्हनें वहे जकी वात वतावी ।

—फुलवाडी

उ०—४ पमजी वेटी च्योटे राज री रकम रा आयोडा हाई हजार  
रिपियां नी यनी भरियोही मेल दी, दलाव-देवता रें आगें वगा  
नाथी अर कैवी-वीं वता ते जावी सा ।—दमदोख

४ किमी को किमी के पाम रहने के लिये छोड़ना ।

उ०—१ पछे वामण चाली सो वेटा न ठाकुर तीरे मेले गयो ।

—गामरा वणी री वात

उ०—२ मुवा बालक मुनमा जणेजी, ते मेले तुम पाम ।

—जयवाणी

५ त्यागना छोड़ना ।

उ०—१ नैमजी हो मठ मीनति नरना धका हो राजि, मत जावट  
मुक्त मेलि ।—वि बु

उ०—२ वननाय न मेलें वामना, टिकियो मेग्ज टल टळे । मेवगा  
तगा मेशमदू माद न करनी सभळे ।—चोप बीट

६ धारण करना मानना ।

उ०—हरीया हरि या अनत गुण, निव लिख हिन्द मेन । नीर  
न पीयु हरपती, मत श्री देन उगेन ।—छी हरिराम दासजी महाराज  
७ देवो 'मेळणी, मेळनी' (रु भे)

मेळणहार, हारी(हारी), मेळणियो—वि० ।

मेळियोटी, मेळियोटी, मेळियोटी—रु० ना छ० ।

मेळोजी, मेळोजी—रु० ना ।

मेळणी, मेळणी, मेळणी, मेळणी, मेळणी, मेळणी, मेळणी, मेळणी,

मेळणी मेळणी मेळणी—रु० भे० ।

मेळप-स०स्त्री०—१ मिश्रता, दोस्ती ।

२ स्नेह व प्रेम होने की अवस्था या भाव ।

मेळवण, मेळवणी—देखो 'मेळण' (रु भे)

उ०—माहे कपूर कसतूरी घातजें छे । केसर री रग दीजें छे ।

सूर्य चमेली री मेलवणी दीजें छे —रा सा स

मेळसरुज, मेळसरोज-स०पु०—मखन, नवनीत । (अ मा)

मेलाण-स०पु०—१ यात्रा के बीच किया जाने वाला विश्राम, पहाव ।

उ०—साख अनत साख भड मायें । मग मेलाण दियो सुण मायें ।

—रा रु.

२ स्थान, मुकाम ।

३ रहट की माल का एक अतिरिक्त भाग जो पानी के नीचा ऊंचा  
हो जाने पर माल को घटाने बढ़ाने के लिये जोटा जाता है ।

४ महल, प्रामाद आदि ।

रु०भे०—मेलोण, मेल्हाण, मेहलाण, मैलाण, मैल्हाण, मेहलाण ।

मेळाऊ-स०पु०—१ एकत्रित जन समूह, भीड ।

उ०—सगळे अगुरे भार सभाया मवपत सुहृद ठिकाणें आया ।

वाजी निसवळ किताइ पुळाणा, मेळाउवां वदन मुरभाणा ।

—रा रु

२ शत्रु-पक्ष ।

उ०—सुणियो 'अजन' महावळी, छळ नाठी पुर छोड । मेळाऊ साथे  
हुवा, चाटी हाये खोड ।—रा. रु

वि०—गद्दार, बोखे बाज, शत्रु पक्ष मे मिलने वाला ।

उ०—'नामसिध' जोगीदासोत नै भाटी 'रामसिध' मुकनदासोत  
फोजववी कीवी नै नवाव री मेळाऊ मारियो सो विगत कही ।

—रा रु

२ मिले हुए, एक साथ, इकट्ठे एकत्र, मिश्रित ।

उ०—इकह्यो भाटी 'रेणावर' माभी तीन साथ दळ मोगर । वारा  
मह मेळाऊ आया, चचळ थळवट दिसा चलाया ।—रा रु.

मेळणो, मेळावी—क्रि०स० [मेळणी क्रि० का प्रे०रु.] १ भेंट करवाना,  
साक्षात्कार, करवाना मिलवाना ।

२ सम्मिलित करवाना एकत्र करवाना, इकट्ठा कराना ।

३ जुडवाना, मिटवाना, मिलवाना ।

४ प्रेम कराना, स्नेह कराना ।

५ किमी को अपनी ओर करवाना, मितवाना ।

६ अडवाना, मटवाना, जुटवाना ।

७ घाव या जखम की चिकित्सा करवाना ।

८ मिश्रण कराना, मिलवाना ।

९ आग्रह बढ़ कराना, नींद लेने के लिये प्रेरित करना ।

१० वारण कराना, ग्रहण कराना, अपने मे रमवाना ।

११ गाय भैंस आदि को उनका वच्चा मिलवाना, दूध देने की  
अवस्था मे करवाना ।

मेळाण हार, हारी(हारी), मेळाणियो—वि० ।



मेलायोडी—भू० का० कृ० ।

मेलाईजणी, मेलाईजबो—कर्म वा० ।

मेलावणी, मेलावबो—रू० भे० ।

मेलानी, मेलानी—क्रि०स [मेलणी क्रि० का प्रे०रू०] १ प्रस्थान

करवाना, भिजवाना, पठवाना ।

२ किसी वस्तु, सदेश, समाचार आदि को किसी द्वारा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचवाना ।

३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखवाना, धरवाना, टिकवाना ।

४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छुड़वाना ।

५ त्याग करवाना, छुड़वाना ।

६ धारण करवाना, मनवाना ।

मेलान हार, हरी(हरी), मेलानियी—वि० ।

मेलायोडी—भू० का० कृ० ।

मेलआईजणी, मेलाईजबो—कर्म वा० ।

मेलीवणी, मेलीवबो, मेलीहणी, मेलीहबो, मेलीहवणी, मेलीहवबो, मेलीहणी मेलीहबो मेलीहवणी मेलीहवबो मेलीहणी, मेलीहबो—रू० भे०

मेलाप, मेलाप—देखो 'मिळाप, मिलाप' (रू भे)

उ०—१ कब गिरनार गढ़इ चढ़ जपतउ अहनिंसि जाप, प्रापति बिण किम पामिइ, मन मान्या मेलाप ।—स कु

उ०—२ उमहती जीवन काठळ आज, रूप रं रिमझौला री घात । मनां रो दो दिन री मेलाप, वणसी दो दिन बीती बात ।—साक

मेलापी, मेलपी—देखो 'मिळाप' (अल्पा, रू भे)

उ०—पसुय पुकार सुणी रथ फेरघउ, राजुल करत विलापा हो । सरज्या बिन सखी क्यु कर पाइयउ, मन मान्या मेलपा हो ।

—स कु.

मेलावड़ी—देखो 'मेलावो' (रू भे)

उ०—कर जोह 'नरपति' कहै, धार थी आवज्यो भोज नरेस ।

मात पिता मेलावडो, सांभरथा रास होई पुण्य प्रदेस ।—बी दे.

मेलामतर—स० पु०—ग्राम मार्गियों का मत्र, छोटा मत्र । (तांत्रिक)

मेलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—१ साथ्या की मेलायत देख, नाटक त्रिया सुख विसैल ।

—जयवाणी

मेलायोडी—भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार करवाया हुआ, मिलवाया हुआ २ सम्मिलित करवाया हुआ, एकत्र करवाया हुआ, इकट्ठा करवाया हुआ ३ जुड़वाया हुआ, मिड़वाया हुआ, मिलवाया हुआ ४ प्रेम कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ ५ अपनी ओर करवाया हुआ, मिलवाया हुआ ६ अडवाया हुआ, सटवाया हुआ जुड़वाया हुआ ७ चिकित्सा करवा कर मिलवाया हुआ, (घाव जहम) ८ मिश्रण करवाया हुआ, मिलवाया हुआ ९ नींद लेने के लिये प्रेरित किया हुआ, आस्र मिचवाया हुआ

१० धारण करवाया हुआ, ग्रहण कराया हुआ, अपने मे रमवाया हुआ ११ वच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति करवाया हुआ, (गाय भैंस आदि)

(स्त्री० मेलायोडी)

मेलायोडी—भू० का० कृ०—१ प्रस्थान करवाया हुआ, भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचवाया हुआ (सदेश) ३ रखवाया हुआ, धरवाया हुआ टिकवाया हुआ ४ रहने के लिये छुड़वाया हुआ ५ त्याग करवाया हुआ, छुड़वाया हुआ ६ धारण करवाया हुआ, मनवाया हुआ ।

(स्त्री० मेलायोडी)

मेलावउ, मेलावउ—देखो 'मेलावो' (रू भे)

उ०—१ घर बघइ पडिउ सह कोइ, कुटुव मेलावउ खावा होइ । खत्र अखत्र कीषां सवि वार, दोकर नी कोइ न करइ सार ।

—वस्तिग

उ०—२ पनहर वरस विछोहउ हूँओ, वणइ कस्टि मेलावउ थयउ । वळं विछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुक्त एहज नारि ।

—ढो मा

मेलावड़ी—देखो 'मेलावो' (अल्पा, रू भे)

उ०—मन वल्लभ मेलावडो रे पुण्य लहीये एह ।—स्त्रीपानरास

मेलावण—देखो 'मेलावो' (रू भे)

उ०—भूरें मुखई पर स्वेदण कण भारी, पट्टी पोळछ मे प्रीतम री प्यारी । नाचै खेलावण मेलावण नाही, जोवण जोगी वा वेला जग माही ।—ऊ का

मेलावणी, मेलावबो—देखो 'मेलाणी, मेलाबो' (रू भे)

मेलावणहार, हारी (हारी), मेलावणियी—वि० ।

मेलाविओडी मेलावियोडी, मेलाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मेलावीजणी, मेलावीजबो—कर्म वा० ।

मेलावणी, मेलावबो—देखो 'मेलाणी, मेलाबो' (रू भे)

मेलावणहार हारी (हारी), मेलावणियी—वि० ।

मेलाविओडी, मेलावियोडी, मेलाव्योडी—भू० का० कृ० ।

मेलावीजणी, मेलावीजबो—कर्म वा० ।

मेलावियोडी—देखो 'मेलायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मेलावियोडी)

मेलावियोडी—देखो 'मेलायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मेलावियोडी)

मेलावो—स० पु० [स० मेलापक] १ मिलने की क्रिया या भाव, साक्षात्कार, भेंट, मिलाप ।

२ कई व्यक्तियों का एक साथ होने वाला मिलाप, भेंट, सम्मेलन ।

३ वरात के स्वागतार्थ होने वाला वर पक्ष व कन्या पक्ष का मिलन ।

४ एकत्रितएव सम्मिलित होने की क्रिया ।

उ०—पडसां रत वाहै रवदा पर, आबैं आर करीजो ऊपर । मिळिपी

जायल मिर मेळायो चडिया लै घूहड रौ छावी ।—पा प्र  
८० भे०—मेळावड, मेलावड, मेळावण,  
अन्वा०—मेळावडी ।

मेळियोटी—मू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार कराया  
हुआ, मिलाया हुआ, २ सम्मिलित किया हुआ, एकत्र किया हुआ,  
इकट्ठा किया हुआ ३ जोड़ा हुआ मिटाया हुआ, मिलाया हुआ  
४ प्रेम किया हुआ, स्नेह किया हुआ ५ अपनी और किया हुआ  
मिलाया हुआ ६ जोड़ा हुआ, घड़ाया हुआ, मटाया हुआ  
७ चिकित्सा किया हुआ ८ मिश्रण किया हुआ, मिलाया हुआ  
९ आश्रय दद किया हुआ, निद्रित १० धारण किया हुआ, ग्रहण  
किया हुआ, अपने मे रमाया हुआ ११ वच्चा मिलाकर दूध देने  
की स्थिति में किया हुआ ।

म्री० (मेळियोटी)

मेळियोटी—मू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, प्रस्थान  
कराया हुआ, भेजा हुआ, पटाया हुआ २ किसी के द्वारा एक  
स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया हुआ ३ रक्वा हुआ, बग हुआ,  
टिकाया हुआ ४ किसी के पाम रहने के लिये छोड़ा हुआ  
५ त्याग हुआ छोड़ा हुआ ६ धारण किया हुआ, माना हुआ ।  
७ देखो मेळियोटी' (८ भे )

(म्री० मेळियोटी)

मेळ, मेळू—वि०—१ परस्पर मिलाने वाला, मिलान कराने वाला ।

२ भेन करने वाला, प्रेमी, मित्र, स्नेही, हितैषी ।

उ०—१ भुज भरिवे भेळाह, मिळसू जे दिन मेळूवा । वातही मोह

पळाह, जनम तकळ गिरामू 'जमा' ।—जसराज

उ०—२ मेळू विण विळियाह, मनडो क्यू मानै नहीं । गहिला ज्यू

गळियाह, फिर फिर कयी 'जमा' ।—जसराज

३ मिलने वाला, परिचित ।

४ पत्र का, पक्षवाला ।

उ०—१ हण विघ मार्गे आगियी, गुणता मगळें माय । हुमिआग

मेळू मळां, मो मारी भाराय ।—रा ८

उ०—२ ताहरां नरै रा मेळू हजूर हा, तिता नरै नू कहोयो,

नरा पागे पटी जंत तातूत राखोयो ।—जंतमाल पुमार री वात

५ मित्रा हुआ, मिश्रित ।

८ भे०—मेळण, मेळि, मेनि, मेळी मेनी, मेळह, मेळू ।

६ देखो 'मेळूओ' (८ भे )

मेळूओ—म०पु०—अहिंय की नाभि पर मजदूरी के त्रिये लागाया हुआ लोहे  
का कृ० ।

८ भे०—मेळ ।

मेळोन—देखो 'मेलाण' (८ भे )

मेळी—म०पु० [म०भवा] १ मिलने की क्रिया या भाव ।

उ०—जोयत मेळो मजना, मूया न रीजी दोम । जनगरीया निग्या

निना, तै किमी तग घोप ।—श्री हरीराम दामजी महाराज

२ किसी विशेष अवसर पर या पर्व के दिन, किसी स्थान विशेष  
पर बहुत से लोगो का होने वाला जमाव, मिलन ।

उ०—१ चित लालच वेळा चढें, चेळां जिनम चढाहि । हेलां पर  
घर हाण दें, मेळां खेळां माहि ।—वा दा

उ०—२ जठें सायण्या कह्यो । इतरी फिर क्यू कं छें । थारी  
कीमोक अवार, तो मोफळी फिर छें । तू तो वाई जनम की ही लजाळू,  
ऐ तो मेळा खेळा छें ।—पना

उ०—३ एक जगा रेंगूं मू सें एक वडूवं रा अग सा बण जावं  
है । अठें ना तो कोई रेलगाडी री मुसाफरी है, घर न कोई  
बरमसाल तथा तीजा री मेळी है ।—दमदोल

उ०—४ नाई भोळी वगनै पृच्छी-ची वाप जी एकगु मार्गै इत्ता  
सस्तर क्यू मजाया मेळा म वेवण पवारो काई ? —फुलवाडी

वि० वि०—ऐसा जमाव या मिलन, किसी देव-दर्शन, तीर्थ स्थान,  
मनोरजन आदि के लक्ष्य से होता है । इस अवसर पर खिलौने,  
मनिहारी, मिठाई, चाट आदि की अथवाई दुकानें लगती हैं । फूले  
लगाये जाते हैं जिन से मनोरजन किया जाता है, इत्यादि ।

१ बैल या चौपाए पशुओ को, विक्रयार्थ किसी स्थान विशेष पर  
एकत्र करने की क्रिया, अवस्था या भाव, पशु-मेला ।

उ०—मेळा में ऊंचे दांमां आपरी जोडिया वेचन दो सीरवी पाछा  
आपरें गांव बळता हा के एकाएक बारा मन मे जोवाणी देखण री  
जची ।—फुलवाडी

४ मिलाप, भेंट, साक्षात्कार, समागम ।

उ०—१ द्यु परकमा देवरै, हरखर जोह हाय । जो मेळी हुवं  
मजणा, पूजु पारसनाय ।—पना

उ०—२ जो माता कळद्यो तो पाच दिन टिकस्यू, नही तो दरसण  
कर मेळी दे रमतो रहिस्यू ।—जखडामुखडा भाटी री वात

उ०—३ घर आज परतव मेडी मे निजरां थो मेळी ब्हियो । इती  
वंगी मन जाणी व्है जावळा, इण रो तो सपना में ई बे'री नीं हो ।

—फुलवाडी

उ०—४ म्हारा अभाग के आज डण ठोड मा सू मेळी ब्हियो, बी ई  
इण रूप में ।—फुलवाडी

५ एकत्रित जन समूह भीड ।

उ०—१ नठें ही गुगाया, कठें ही मोटियार, कठें ही वांगिया,  
कठें ही गिवार, मेळी सो लाग रेंयो है । मगतां री पांत घर  
कमीणी जात त्यायो, ल्याओ कर रेंयो ह ।—दसदोल

उ०—२ मेळी री मेळी घकें वहीर कियो । वादळ रा मन मे नी  
कों सकी हो घर नीं टर ।—फुलवाडी

उ०—३ तीडो सावळ मूडो माफ करने कोट पे पूगी तो काई  
देख के उठें भिनवा री मेळी मत्रियोटी हो ।—फुलवाडी

६ खेल, तमाशा ।

उ०—१ पवाम वरमा पै ला रा उण मेळा नै थोटी पाछी याद तो  
करो । हान तो उण तमाशा नै याद दिरावण वाली म्हे जीवती

बैठी हू — फुलवाडी

उ०—२ राजाजी सेठा नै सावचेत करता बोलया-काला भवै कदेई ऐडो मेळी मत करज्यो — फुलवाडी

७ हुल्लड ।

८ सयोग, योग ।

उ०—बादळ री ओ विछोव ई तो अनाथ, अम्यागत, अर निवळां नै सुख गे मेळो करावैला । राज री सै लुगाया रै जीव री वळण मिटै तद भटियाणी री कूख सारथक व्है — फुलवाडी

९ सभा, सम्मेलन ।

१० देशी गियामतो में फमल पर लिया जाने वाला एक कर, लगान ।

रू० मे०—मेली ।

मेली—१ देखो 'मेलो' (रू. भे.)

उ०—१ मेला लूगडा राखवा, करवी नही सिनान । वाबीस परीमा जीतगा, रहणी, रुढै ध्यान ।—जयवांणी

उ०—२ इण जनम और पर जनम प्रद, सब कळक सब साथ में । मविलोक वसै मेला मिनख, जारै हुक्काहि रैला हाथ मे ।—ऊ का.

उ०—३ इतरै सामीदामजी रा दोय साध, मेला वस्त्र खाधे पोथ्यां रा जोडा, विहार करता-भीखणजी कठै, भीखणजी कठै, इम करता आया ।—भि द्र

(स्त्री० मेली)

२ देखो 'मेळी' (रू. भे.)

उ०—वस्त्राभरण जिणै हरया, ते छूटई मेली जी । आदिनाथ नी पूजा करइ प्रहृष्टी विद्व वेली जी ।—स कु

मेल्हणो, मेल्हवो—देखो 'मेलणी, मेलवो' (रू. भे.)

उ०—१ मात सात रै मेल्हिया ईसर गरुड प्रधान जिकै भउगाड । मागण कृवर लगन पिण मागण चचळ रथे आपणे चाड ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सरव रसायण मे रसी, हर रस समी न काय । टुक तन अतर मेल्हियां, सब तन कचन थाय ।—ह र

उ० ३ अभग अथाह अप्रेह अरूप, छछोह बदन्न मदन्न सरूप । मुखा नह मेल्है सेस महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह र

उ०—४ आखता नाम टळै दुख ओघ, उपज्जे आणुद सुख अमोघ । न मेल्हू तूक तणी हरिनाम, विमन्न भगता-तणा-विसराम ।—ह र

उ०—५ ह्दा मे लावो आतमगम कठो जो देव करु स काम । लावो मुक्त नेडो मोरो नाथ, सामी री हिव नहि मेल्हू साथ ।

—ह र

६ अर के ही दिन उठै ही रहि चदाणी कुमराणी नू आघान सहित पिउह्ग ही मेल्हि आयो, पछै जिण प्रसव रै समय हम्मीर-नाम कुमार जणियो — व भा

उ०—७ लाखी मोटी हुवो, वारह वरसा री हुवो । ताहरा कागळ दे अर फूलजी आगं मेल्हियो ।—लाखा फूलाणी री वात

उ०—८ तेह तेह पदि ते अर मेल्हइ भावती लछि पाय कुण ठेलइ । एतलइ गइअ रूपि सुलिद्री, ते सुद्रसण तडि पारथ पुरद्री ।

—सालिसूरि

उ०—९ मेल्हि वान परही सवि वाई, स्त्री तणउ सवि हउ जाणू माई । नारि नोरस न साणि न राचइ, पुण्यहीन पति पश्चनि वचइ —सालि सूरि

मेल्हणहार, हारो (हारी), मेल्हणियो—वि० ।

मेल्हयोडो, मेल्हयोडो मेल्हयोडो—भू० का० कु० ।

मेल्हीजणी मेल्हीजवो—कर्म वा० ।

मेल्हवणो मेल्हववो—देखो 'मेलणी, मेलवो' (रू. भे.)

उ०—१ इण भात सात निस दिन अभग, जुडि जीतो जैचद भूप जग । सुरताण घाठ इक दिवम साहि, मेल्हविया काराग्रेह माहि ।

—सू प्र.

मेल्हाण—देखो 'मेलण' (रू. भे.)

उ०—१ हाडा वुदी का घणी, नय उजेणी जाई दियो मेल्हाण । चउरास्या सहु तिहा मिल्या, उडिय छे खेह न सूझै भाण ।

—बी दे.

उ०—२ कटक्क कांधार, समूह सेलार । पयाण करत, मेल्हाण दियत —गु रू व.

उ०—३ गिरकदर पाहाड, गाहि पाए केकाण । किया मट्ट मंवास, प्रज्ज पाळी मेल्हाण ।—गु रू व

मेल्हाणो, मेल्हावो—देखो 'मेलणी, मेलवो' (रू. भे.)

उ०—तद ठाकुरसी सारा साथ सू ऊपर चडियो भीतर गयो । लडाई हुई । पीरोज काम आयो । कोट लियो । राव स्त्री कल्याणमलजी री आण फेरी । कूची गढरी राव कल्याणमलजी

नू मेल्हाई —नैणसी

मेल्हाण हार, हारो (हारी), मेल्हाणियो—वि० ।

मेल्हायोडो—भू० का० कु० ।

मेल्हाईजणी, मेल्हाईजवो—कर्म वा० ।

मेल्हायोडो—देखो 'मेलणी, मेलवो' (रू. भे.)

(स्त्री० मेल्हायोडो)

मेल्हावणी, मेल्हाववो—देखो 'मेलणी, मेलवो' (रू. भे.)

उ०—१ धायनु अरजुनु धणुहुधर अवर न घाया केइ । मेल्हावउ गुरचलणु तसु गुर किम नवि तूसिइ ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ चौथलई फेरइ डाईचो, पत्यग सावद सोडि । कुअरी कर मेल्हावणई दीया भाव भूवरण कोडि ।—रुक्मणि मगळ

मेल्हावणहार, हारो (हारी), मेल्हावणियो—वि० ।

मेल्हावयोडो, मेल्हावयोडो मेल्हावयोडो—भू० का० कु० ।

मेल्हावोडो मेल्हावोडो—कर्म वा० ।

मेल्हावयोडो—देखो 'मेलणी, मेलवो' (रू. भे.)

(म्यो०मेल्लियोटी)

मेल्लियोटी—देखो 'मेनियोटी' (रू भे)

(म्यो०मेल्लियोटी)

मेळह—देखो मेळू' (रू भे)

उ०—तद इयै रें तोन्ह जणा मेळह एक ब्राह्मण एक लोहार एक मुथार । इहां मू कुवर रें वढी प्यार —चोवोली

मेय-स०पु० [देशज] १ राजस्थान की एक जाति ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

मेवडली—१ देखो 'मेह' (अल्पा, रू भे)

२ देखो मेवो' (अल्पा, रू भे)

मेवडी-स०पु०—१ दूत, चर, हुनकाग ।

उ०—बहु लोप प्रगमड जासु पयतनि, जगप्रगुहड ओ बडा तप साहि भकवर सुगव तेहण, वेगि मुकड मेवडा ।—ऐ जे का स २ देखो 'मेवो' (अल्पा, रू भे)

उ०—तुळी तुगाया भेळा करे, आपे साल वनेवडी । वाळक वीजा साथ लोडी, खै मुधर री मेवडी ।—दसदेव

१ देखो 'मेह' (अल्पा, रू भे)

मेवती-स०पु०—एक प्रकार की अफीम ।

उ०—१ गोठ री तयारी बीवी । अमला री रह-छह मडी छै । भूरी, मेवती, काळी, किमनागर, आगराई, मरोडी मुहरतोळी ।

—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ कोटडी म भात भात रें अमला री गळणिया भरती ही काळी, मेवती, भूरी, मरोडी आगराई न किमनागर अर मेडी ऊमा बाईमा रें हीय भात भात रें विचारा रा गोठ ऊठवा हा ।

—फुनवाडी

मेवती—देखो मेह' (अल्पा, रू भे)

उ०—नान्ही मी'क एक वादळी ओमरगी । रेवड वाळें री अळगोओ गुज उठयो । रिम-किम-रिममिम मेवती वरनं ।—रा सा स

मेवमियो—देखो मेवासो' (अल्पा, रू भे)

उ०—ऐतो मेणा योरी ने भीली रे चोर मेर उघाई डोली । वावरी जोनी भगी मेवसिया रे, आहटी माम रा रमिया —जयवाणी

मेवागोद-स०म्यो०—विवाह मे पूर्व दूरठे को उनके ईष्ट मित्रो आदि की ओर मे दिया जाने वाला रुपया भेट आदि । (ओमवाल)

मेवाड-स०पु० [स०मेवाड] १ राजस्थान मे चित्तौड, उदयपुर तथा उमरमे आम पाम रा प्रदेश ।

उ०—१ हाडोती दिळ मिळ हुई, मेळ विषो मेवाड । घर जमवत रें घुमड नै, दूकी घर दूकार ।—ऊ का

रू०भे०—मेवाड

अल्पा०—मेवागी मेवाटी ।

मेवाडा कुमार-स०पु०—कुम्हारो की पत्र धारण ।

मेवाशी-वि०—मेवाड का, मेवाड सम्बन्धी ।

स०पु०—१ मेवाड का निवासी ।

२ मेवाड के राजपूत, सिसोदिया ।

उ०—लिख रे पत्र मीरां भेजियो, दीज्यो मेवाडघा रे हात । साहू री सग राणा ना छुटै, काई कराला थागे राज ।—मीरां

म०म्यो०—३ मेवाड की भाषा ।

मह०—मेवाडी मेवाडी

मेवाडी—१ देखो मेवाड' (अल्पा, रू भे)

२ देखो मेव डी' (मह, रू भे)

उ०—मानसि पिन धिन मेवाडा, अत्त प्रव भीम तणी अवसाण । —दुसरी आडी

मेवाड—देखो मेवाड' (रू भे)

उ०—१ मोलका सारे मछर मर, ढहाळ पहाड, बाळीया वोए फीजा डोए, मळवट्ट मेवाड ।—गु. रू व

उ०—२ कान्ह मेवाड माळवी ।—घरम पत्र

मेवाडी—१ देखो 'मेवाड' (अल्पा, रू भे)

२ देखो मेवाडी' (मह, रू भे)

उ०—१ राणी भीम न रमिलयी, दत्त विन दीहाडोह । हय गयंद देती हया, मुवो न मेवाडोह ।—महाराणा भीममिहजी री दूही

मेवात-स०पु०—राजस्थान मे, अलवर के आस पास का भू-भाग, जहां मेव-मुलमान बहुतायत से आबाद हैं । (सभा)

उ०—१ दूसरा मान छळि लाडखा दूमर, सार रें जोर दोह घरा माधी । बाहांतरि लेय आवेरि गळ-ववाणी, बाहांतरि गळें मेवात वाधी ।—रावराजा फर्तसिध नरुका री गीत

मेवाती-वि०—मेवात का, मेवात सम्बन्धी ।

स० पु०—१ मेवात का निवासी ।

२ एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति, इसे मेव भी कहते हैं । (मा म)

मेवावी-स० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार ।

मेवाफरोस-स० पु० [ फा० मेवाफरोस ] मेवा व फल बेचने वाला व्यापारी ।

मेवास-स० पु० [ स० मेवा + वास, मेवृ-मगमे, मेव-वास ] १ लुटेरो या डाकुओ के रहने या छुपने का सुरक्षित स्थान ।

उ०—१ नेम पडि ग्राम मेवास वका नगर, डारणा न लाग पाव पाछा डगर । आज री आकडी घाट दोस अगर, बाकडी बाहुई नहीं वाया विगर ।—महादान महतू

उ०—२ बाय घनै असमान ने मड वोन भुजाळा । यवण उठाव पालरा मेवास वडाळा ।—पा प्र

२ सुट्ट किला, कोट, गढ़ ।

३ स्थान मुकाम डेरा, निवास ।

उ०—अमर भुव ग्रशियां 'प्रयो' मांकलसर मेवास । सोवा आया तीन निर माह उहै माय ।—रा. रू

४ चोर, तुटेरा, टाकू ।

उ०—१ घके निमोद मेवास चडिया घटा। गोळियां गाज बड राग गवता। हांमळा घरा छळ कीया माहव हचें, राण रें मांमला जीत रखता।—दल्लो मोतीसर

उ०—२ जाळघर डेरा थका, बीतो भाद्रव मास। फुरमाया टळिया नही, मिळिया सही मेवास।—रा रु

५ पूव और आग्नेय कोण के मध्य की दिशा।

वि० वि०—इसे सूर्योदय के बाद ही मेवास कहते हैं, इसमे पहले इसे उढीक या परियाण दिशा कहते हैं।

रु० भे०—मेवास, मेवासी, मंवास,

अल्पा०—मेवसियो मेवासियो मेवासी।

मेवासियो—देखो मेवासी' (अल्पा, रु भे)

उ०—१ जाके नख चख (कर मुख) सिर नही, चरण, नामिका नाही। ऐसा मन मेवासिया, काया नगरी माही —ह पु वा

उ०—२ महा उमराव राणा तणें मेढ रा, वेढ रा डाव वप घडेवांनी। साखरा भड़ा भिडज्जां चढें सावता, मरह मेवासियां हार मानी।—दल्लो मोतीसर

उ०—३ मझ आथण मेवासियो, पचादी परभात। बाट निहारें वेगडो, जपण उढकियो जात।—पा प्र

मेवासी—स० पु०—१ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ उज करतूति कमाण करि, सुबुधि चिलाले चारि।

ग्यान ध्यान का वाण करि, मन मेवासी मारी।—ह पु वा

उ०—२ हेम वास छोडियो। हेमो जाय घूघरोट रें पहाडा पंठी।

हिव हेमो मेवासी हुवो। मेहवेरी घरतो उजाडे।—नैणसी

उ०—३ माणस जळ का बुदबुदा, पांणी का पोटा। दाहू काया

कोट मे, मेवासी मोटा।—दाहूवांणी

२ उहण्ड, बदमाश, नटखट।

उ०—हरीया यो मन हटकीयो, रहै नही छिन एक। मन मेवासी

वस्य नही, इनका चिरत अनेक।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

३ रमिक।

उ०—पीछो उतर कर रही छै कलालण, यो तो मेवासी वागा री

वहाए छें। साहब इन रच्यो तो बराबर, तू औरा न किण सारु

दे।—रसीले राज रा गीत

४ मेवास (पूर्व व आग्नेय के बीच) की दिशा मे बोलने वाला तीतर।

५ देखो मेवास' (रु भे)

रु० भे०—मंवासी,

अल्पा०—मेवसियो, मेवासियो, मंवासियो

मेवासी—स० पु० [स० मेवा—वास] १ सुदृढ किला, कोट, गढ।

उ०—लगी चोट सत सबद का, खूह्वा ग्रह कपाट। मेवासा सब

जीत कैं, वस्या नगर वराट।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

२ लुटेरो का डेरा, रहने का स्थान, छुपने का स्थान।

उ०—प्रहै भोम गिरदा अडै जगा ललकारै गोरा। मेवासा कैं तोडै

कपू, हकारें सुमन्न। रुका छडा मोडै छत्रो, भूमि ले डकारें रुठा, चोडे हहकारें जूटी, वकारें चिमन्न।

—चिमनसिंह चांपावत री गीत

रु० भे०—मंवासी मेवासी,

३ देखो मेवास' (अल्पा, रु भे)

मेवो—स० पु० [अ० मेव] १ सूखा फल, बादाम, पिस्ता, काजू, किशमिश आदि।

उ०—१ फळ कदळी स्त्रीय स्वादे अफरा, छये स्त्रीय बादाम पिस्ता छुडारा। सुवा माव नारगियां रग सोहे महादेव देवेस मेवै विमोहे।

—रा रु

उ०—२ मेवा वस्त्र आभरण मिस्त्री, बदजड किंसा किंसा वाछाण। वरी घणइ (जाइ) उछाह ल्याया। जानी ईसर तणा सुजाण।

—महादेव पारवति री वेलि

उ०—३ मीठी और न कोई मिठाइ, मीठा और न मेवा। आतम राम कली ज्यो उलसै, देखत दिनपति देवा।—घ व अं.

उ०—४ मेट री हर आवें जद पिस्ता-बिदाम कांकरां री ई गरज नी सरै। मुरड अर चेपी मेवा सूई इदक मीठी लागो।

—फुलवाडी

२ हलुवा, खीर आदि उत्तम भोजन मिष्ठान्न, मिठाई।

उ० १ मीठा मेवा जीमत्त, बाहै भोजन बाहै भाति। ता सु तन

छैती पडै, जनहरीया करि खाति।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ भाई तुम्हे बताऊ मेमा, साचे तन मन करियो सेवा।

मोज करोगे मिलहुं मेवा। दोसत देखि बोलना देवा।—ऊ का

उ०—३ दुरघोषन का मेवा त्याग, साग विदुर घर लूखो। करगा

के घर खीच आरोग्यो, लूखो गण्यो नही सूखो।—मीरा

अल्पा०—मेवडलो, मेवडो,

मेस—स० पु० [स० मेप] १ नर भेड, मेप।

२ ज्योतिष की बारह राशियो मे से एक।

रु० भे०—मेख,

४ देखो 'महेस' (रु भे)

उ०—सेस फुणघर सरकती, मेस करत रुडमाळ। यण पुळजो

होवत अठ, भाई मौ मालाळ।—पा प्र

मेसलगन—पु० [म० मेसलगन] ज्योतिष मे एक लगन

वि० वि०—देखो लगन

मेसर—देखो 'महेस्वर' (रु भे)

उ०—रुडमाळ छळू गळ मेसर ए। किम आपत आपत केसर ए।

—पा प्र

मेसरी—देखो 'महेस्वरी' (रु भे.)

(स्त्री० मेसरणी)

मेससक्रांति, मेस सकरांत—देखो मेख—सक्रांति' (रु भे)

मेसी—स० स्त्री० [स० मेपी] मादा भेड।

मेसूरण—स० पु० [स०] फलित ज्योतिष में दशम लगन।

मेम्मराइजर-म०पु० [प्र० मेम्मराइजर] मेम्मेरिजम करने वाला,  
मम्मीइक।

मेन्नी—देखो 'माहेन्नी' (रू मे)

२०—रिण ही मेन्नी नीं हाटे माधु उतरया। रात्रे चोर आया।  
हाट मोली।—मि द्र

मेहदी—देखो 'मंदी' (रू मे)

उ०—१ तडा उपरायन माळा फूटा गी टाया आण हजार कीज  
छे। सू फूत बुणु भात रा छे? हजार, नीरग, तुररी मेहदी  
जिलगो।—रा सा २

उ०—२ वनी वनीं मेहनी हाथ मिळायो विख्यात।

—वादरदान दववाडियो

मेह-म०पु० [म० मेघ प्रा० मेह] १ गदन, घन, मेघ।

उ०—१ मेह मयारे वरसियो, नदी किगाडां मार। घोडा हींसन  
भलिया, सीस किराडा मार।—वा दा.

उ०—२ एतलइ सुपरमा दलि दौन वाजइ। जाणुं असाहू किरि  
मेह गाजइ।—साविमूरि

२ वर्षा, बारिश।

उ०—१ कं वासर थी आया अर देवराज मर विवाळें तेय एक  
वागळो मेह रो आयो।—द वि

उ०—२ घर जगळ ऊपर फौज धिनी, जमराण जमात समाण  
जिनी। अममाणक मेह घटा उनई, दवि जाणुक छोड सत्राद दई।  
—मे म

उ०—३ वापूह विस अछेह मे, आगह चित अछेह। 'गज्जण'  
भाणुं माहिनी, ज्यू महि माणुं मेह।—गु रू व

[स० मेह] ३ सूय, पेगाव।

४ एक रोग विशेष। (प्रमेह)

रू० मे०—मे मे', मेह,

अन्ना०—मेठडी, मेळडी, मेवडली, मेवडी, मेवली, मेहडली, मेहडी,  
मेदु, मेहली, मेहू मेही, मेहडी।

मेहडणी, मेहडवी—प्रि० ग०—मोगना, उप मोग करना, आनन्द वृटना।

उ०—मात रिना री चोरी मोवत, मोजा मेहडली। मात जात मोडा  
गू मापी, नाइक नेहडणी।—ऊ का

मेहडली—देखो 'मेह' (अन्ना, रू मे)

उ०—मेहडली उठी हो म्हारा गाडा मारू हीरा मोनीया ने।

—लो गी

मेहरी—देखो 'मेह' (अन्ना, रू मे)

उ०—१ श्री आणुद घण आशिया दस्तणु जिनी 'अजीन'। दूने  
रटा मेहटा हरि वृठी घरि धीन।—रा रू

उ०—२ तूटा हवाम जिगद वूडा हे अन्नत मेहदा हे ली।

—वि कु

मेहजाळ—देखो 'मेहजाळ' (रू मे)

मेहजुज-वि०—उत्तम।

उ०—अर कतराक दन जाता, कतरीएक घरती चुरती थकी बानंत  
अणी री भमर, एका वहादर, आपरा पोरस मे मेहजुज हुआ थकी  
आम लागी थकी, उजाड वन महा भयाणुक जायना आय नीमरिघो।

—कल्याणमिह नगराजोत वाढेल री वात

मेहजाळ—स० श्री० [स० मेघ-भार] वर्षा के लिये किया जाने वाला  
यज्ञ या किसी देवता का पूजन।

रू मे—मेहजाळ,

मेहनत—देखो 'मैनत' (रू मे)

उ०—कर मेहनत काटां वळ काढे, अय पच पतळा किया यसा।  
सादत छांट पिछटया सयू जाणुं जथी तार जिमा।

—लालमिह राठोड री गीत

मेहणी—देखो 'मैणी' (रू मे)

उ०—फूलां ती अबोली रंवन सारू पैला ई माठ फाल राखी ही।  
पण अवं ऐ मोसा अर ऐ मेहणियां सुणणा मे ई की सार नीं ही।

—फुलवाडी

मेहणू, मेहणी—देखो 'मैणी, मैणी' (रू मे)

उ०—१ राजा यानु मेहणो सांची दियो सत्य छे।

—पच दही री वारता

उ०—२ अवसर दान ज अप्पही, रिण भज्जं मुह मीड। राठोडा  
कुळ मेहणी, ते खत्री पण खोड।—गु रू व

उ०—३ ताहरा ऐ आपस मे बोल उठी। ताहरा बाधेली सोना नू  
मेहणी दियो। कह्यो—धारी भाई थोरिया सू मेळी जीमं।

—नंगुसी

उ०—४ ताहरां आ ती मेहणे आई, मावाम थानं भली कीबी।  
कासू कहा, थाने आ चाहीजे नहीं। अर वळे जो आया ती जाय  
ने माळी रं घरे ऊतरिया।—वूडी ठग राजा री बात

मेहतर—देखो 'महतर' (रू मे)

उ०—गाव वाळा ती आखरी बगत ताई काली मासी रं गपोडां  
मायं विस्वास नीं करियो। पण जद वा घडी दिन चढ्यां आपरी  
भूरी भोटी मेहतरां रं घरे समळाय, उण री वणी घणी भुळावण  
देव, आपरं छवू चीतरा ने सार्य लेय, साचांगी महाराणी जी रं  
घर माह्नी बहीर व्ही ती लोणा रं डवरज री पार नी रहयो।

—फुलवाडी

उ०—२ वेटी जीवतो रह्यो ती सगळी वातां मावळ व्हेला, वा ती  
भली सोची नी कोई भूडी। आपरा वेटा ने मेहतराणी रं हवालं  
कर दियो।—फुलवाटी

(स्त्री० मेहतराणी)

मेहदेहजा—स० स्त्री०—मेहा की पुत्री, श्री करणीदेवो का एक नामान्तर।

उ०—उन मे मेह देहजा आई, किनियाणी जगदवि कहाई। निज  
निकरन करन उन्नतो, सी करनी जय जयति मक्ती।—मे म

मेहनत—देखो 'मैनत' (रू मे)



मेहनाम-सं० पु० [म० मेहनाम] अन्नक ।

मेहपाठ-सं० पु०—मेहता का पुराना नाम ।

उ०—पछे राजा जवनमत री देह छूटी तरै राजा मानघाता टीकै वेठो, मेहपाठ नगर बसायो सो मेहतो कहोजै छै ।—रा व वि मेहपुर-सं० पु०—मारवाड के पश्चिम भू भाग, मालानी रियासत की राजधानी ।

मेहमत—देखो 'मै'मत' (रू भे)

मेहमाण, मेहमान—देखो 'मै'मान' (रू भे)

उ०—१ पीढिया लग उणा रै घरै आयोडो मेहमाण भूखी को गथीनी । जिसी भी जव-जवार री घर मे ऊकळी, मेहमाण रै प्राण हाजर कीवी ।—रातवाभो

मेहमाणी मेहमानी—देखो 'मै'मानी' (रू भे)

उ०—तठै जाय राजा सो करणीजी रै पावै लागी । रूपीया १०००) मेहमाणी गुदराया ।—नैणसी

मेहमा—देखो 'महिमा' (रू भे)

उ०—उठे देवी सागवीया री वडो धान छै । वडो मेहमा छै । —नैणसी

मेहर—देखो 'महर' (रू भे)

उ०—एक द्रष्टि कर आतम देखे, ब्रह्मा घरसीया ताई । आवागमन आवै नही कवहू, जिन मेहर गुरां री पाई ।

—सो हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ राज इत्ता दिनां सू पधारथा, जे म्हुने देख्या राज रै मन में आणद रा फूल खिल्या व्हे तो डोल्या माथै ई चपा रै फूला री मेहर करावो ।—फुलवाड़ी

२ देखो मेर' (रू भे)

उ०—भोई मेहर अनइ ठाठीया, चालइ काहर कमाणी । च्यारि सहस सायइ साचरिया, वहइ पखाळी पाणी ।—का दे प्र

मेहरवान—देखो 'मै'रवान' (रू भे)

मेहरवानगी मेहरवानी मेहरवानगी, मेहरवानी—देखो 'मै'रवानगी, 'मै'रवानी' (रू भे)

उ०—१ लोग सारी सबळी रहै अर बादसाह री घणी मेहरवानगी । —अमरसिंह राठोड री बात

उ०—२ राजा कहूँ-सुंदर दास, ऐ विचारा गहला होय गया छै । उवे री मेहरवानगी रा चाकर था ।—पलकदरियाव री बात

उ०—१ डयै-मे काई फरक है । साचई आषारी मेहरवानगी सू वापडै-री कमर टूट जावैला ।—वरसगाँठ

मेहरात-सं० पु०—एक वर्ग विशेष ।

उ०—जैतारण था कोस ८ पूरव माँहै मेर मेहरात वसै । घरती हळवा १० वाजरी मोठ, खेत कषळा ।—नैणसी

मेहराव-सं० पु० [अ० मिहराव] किसी द्वार के ऊपर, अर्द्ध मंडलाकार बना हुआ भाग ।

रू० भे०—महराव, महराव, मेराव, मैराव ।

अल्पा०—मिहरवी ।

मेहरावदार-वि०—जिममे मेहराव लगा हुआ या बना हुआ हो, गोलाकार, अर्द्ध मंडलाकार ।

रू० भे०—महरावदार, मैरावदार ।

मेहरित, मेहरितु-सं० स्त्री० [स० मेघ + ऋतु] वर्षा रितु ।

उ०—माडव प्रागम मेहरित महला मज्ज रहाम । फुरमायो 'गजमाह' नू तुम आवो हम पास ।—गु र व

मेहरू-सं० पु०—महतर । (उ र)

मेहरोमाग-सं० पु० [स० मेघ + मार्ग] आकाश, गगन ।

उ०—डकी नीव काकौदरा लोक ठूँक फतै चिन्ह आकाश लागी फरूकै । मिणं मेहरोमाग पाताळ मानू मकौ देहरी सेहरी रत्न सानू । —मे. म

मेहळ, मेहल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ मुहकम री मुहमद अनी, सुण मत असत सराह । तुरत घणे हित तेडियो, मिरजो मेहला माह ।—रा रू.

उ०—२ अण समै बकटापुर माहै अचूकी घडी सू ठीक करै तो मेहल मे नहीं ।—कल्याणसिंह नगराजोत बाढेल री बात

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

उ०—खाटी अपणी खाय, आठ पहर समरै अनत जिण री कदं न जाय, मेहळ उधारै मोतिया ।—रायमिह सादू

३ देखो मेखळा'

उ०—फडि मणि मेहल नूपर रूप रहावइ पाय । पहरणि सेत्र पण्डलीय, क्लीप मान न माइ ।—जय सेखर सूरि

मेहलणी, मेहलबी—देखो 'मेलणी, मेलबी' (रू भे)

उ०—तेल भरीनइ तावडउ, ठेठलि मेहलि हुतास । तली तली तुम्हनइ दीउ तन्न सुवामय मांस । सतिहर रहि रे सासतु जल घट्टु भीतरि लेय । सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसि डारउ देय ।

मा का प्र

मेहलाण मेहलाण—देखो 'मेलणी' (रू भे)

उ०—कोई नगरी कामावती, कामसेन राजा न । नीति निपुण गुण समळी, तिहां सिधु मेहलाण ।—मा का प्र

उ०—२ इणि परि सीख समप्य करि, राइ आयस दीव । सिर नामी सेवक पलिउ मार'ग मेहलाण ह कीव ।—मा का, प्र

मेहलाणी, मेहलाबी—देखो 'मेलणी, मेलबी' (रू भे)

मेहलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—१ पछै कानडदेजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखण नू सीमाळ नू मेलियो नै सूरमाळण नू साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यू वैंत मे खोड काढी ।—नैणसी

उ०—२ आय देखै तो ठग बीरमदे री मेलायत पोळ तीरे आयो । —कल्याणमिह नगराजोत बाढेल री बात

मेहलायोड़ी—देखो 'मेलायोड़ी' (रू भे)

(स्त्री० मेहलायोड़ी)



मेहनावणी, मेहनावणी—देखो 'मेलाणी, मेलावो' (रु भे)

उ०—गीगा यदि भूत मि तेरा, करी सजाई आवे । माटी हुइ तउ  
घाटु बाधे सामनाय मेहलावे —का दे प्र

मेहनाविघोडा—देखो 'मेलायोडो' (रु भे)

(स्त्री० मेहनाविघोडी)

मेहनि, मेहली—१ देखो 'महल' (रु भे)

२ देखो 'महिला' (रु भे)

मेहनिघोडी—देखो 'मिनिघोडी' (रु भे)

(स्त्री० मेहनिघोडी)

मेहनु, मेहनू, मेहनी—देखो 'मेह' (अन्ता, रु भे)

उ०—मेघ मनोहर देवता ए बीजु प्रधान, पुष्करावरतक मेहनु  
जीवित दीइ दान ।—नळदवदती राम

मेहनपुर-स०पु०—राजस्थान मे बाढमेर व उसके ग्राम पास के क्षेत्रका  
दुर्गना नाम ।

मेहमहली—देखो 'मेह'

उ०—भिरमिर-भिरमिर मेहमहली (जी) वरमै, मैहिया मे  
चवण लागो ।—ली, गी

मेहाणद—श्री करणी देवी के पिता का नाम ।

मेहाण—देखो 'महारणव' (रु भे)

मेहा—१ वर्षा ।

उ०—जेहा मेहा जगत सू, मत विरचो सुख मूल । जीवाट मारी  
जगत, श्री अचिरच अनुकूल ।—वा दा

२ देखो 'मेहाई' (रु भे)

मेहाई-म०स्त्री०—श्री करणी देवी ।

उ०—१ उह मरूप जगल घर आई । महा मरुति दुर्गा मेहाई ।  
—मे म

रु० भे०—मेहाई मेहा, मेहाही,

मेहागम-म०पु० [म० मेघ+आगमन] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षा  
ऋतु की शुरूआत ।

उ०—ममरे निमिपति जेम चकोर, मेहागम जिम चाटे मोर ।

—श्रीपाळगम

मेहावी—देखो 'मेधावी' (रु भे)

मेहासदु, मेहासदू मेहामधु मेहामधू, मेहासिधू, म० स्त्री०—मेहा की  
पुत्री श्री करणी देवी का एक नामान्तर ।

उ०—१ वरनी तू वेदार, तरनी तू बटो कमल । हे देवी हरिदास,  
मयुरा न मेहासदू ।—अज त

उ०—२ बांका मेहामधू म चीमरे, मरुट हरे गामळे माद गढवाहा  
गड पोने गजरे, मड रे सोने गडो अनाद —वा दा

उ०—३ दरबारे दीवाग निमा-तिन, पाय पाय पुगर रम पात  
धान अमात टाळणी गड घट, मेहासधू मेयण मात ।

—अधिराज बाकीदास

रु० भे०—महियामधू महियामधू,

मेहाही—देखो 'मेहाई' (रु भे)

उ०—पायो रचण रूपगा पंडो, मेहाही थारी महर ।—वा दा  
मेहिली—देखो 'महिला' (रु भे)

मेहुण—देखो 'मैथुन' (रु भे) (जैन)

मेहू—देखो 'मै' (रु भे)

उ०—मेहू ती छा ओगण का भगिया, थेई हो न सहो ।—मीरां  
२ देखो 'मेह' (अल्पा, रु भे)

मेहूडो—देखो 'मेह' (अल्पा, रु भे)

उ०—भिरमिर भिरमिर मेहूडो वरमै, बादळियो घररावे ए ।  
—लो गी

मेहेरवान—देखो 'मै' 'रवान' (रु भे)

उ०—बीजी साहिव मेहेरवान कोई भुगत बतावे ।—कैसीदास गाढण

मेहेराण—देखो 'महारणव' (रु भे)

मै-सर्व०—सर्वनाम के उत्तम पुरुष का कर्त्ता-रूप, स्वयं खुद ।

उ०—१ नभै सोती जागी लगन धुन लागी जक नही । स्वयभू  
ध्याळ मै परमपद पाऊ सक नही ।—ऊ का

उ०—२ मेहाई-महिमा मुणी, मै भूरख मति मद । जिण अंदर  
चूकी जिकी, कीजे माफ कविद ।—मे म

स०पु०—१ वकरी के बोलने का शब्द ।

सं०स्त्री०—२ अहमाव, अहमन्यता ।

रु०भे०—मइ मह, मय, मे, मेड,

३ देखो 'मै' (रु भे)

उ०—ज्यांरी रिच्छया देवता, मेवा पीर प्रधान । त्या अणचीती  
सपजे, मुमकळ मै आसान ।—रा रु

मैगळ—देखो 'मदकळ' (रु भे)

उ०—१ मन मैगळ मैमत भयो, आकस सहै न काय । जन हरीया  
कुछी एक सहै, जो ग्यांन गरीवी होय ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ जिण तोटा मे ही पोत (तेवटा रो चीड़ा) तो गज मोतीयो  
री ने चूडी ही उण होज मैगळ (मदगळ) मदोनमत हाथी रा दात  
रो हे ।—वी स टो.

मैगाई—देखा 'मूगाई' (रु भे)

मैगो—देखो 'मू' 'गी' (रु भे)

(स्त्री० मैगी)

मैडा—मेरा, मेरे ।

उ०—इपी मुण पिडसघो बोली, मैडा बोल सच्चा जाणै, तुस्मांडी  
पुथी ह तो घोटी ल्याऊ ।—जखडा मुखडा भाटी रो बात

मैटोवर—देखो 'मडोर' (रु भे)

मैण-स०पु०—मोम ।

रु०भे०—मयण, मोयाण, मैन, मैण, मैण, मोण,

मैणका—देखो 'मैनका' (रु भे)

उ०—तिलोममा मैणका गची, उरवमी सरोतरि ।—रा रु

मैणा—देखो 'मैणा' (रु भे)

उ०—कुन दादू बखना बाजिदा, मैणा घाटम मैन । गिनका भील

भीलणी विरीया, फकर फरीद हुसेन । — स्त्री हरीरामदासजी महाराज (स्त्री० मैणी)

मैणावती—देखी 'मैणावती' (रू भे)

उ०—हस्ती घोडा गाव गढ, सुत वनिता परिवार । कहै माता मैणावती, तजि गोपीचंद यहू खार ।—ह पु वा.

मैनी—देखो 'मैनी' (रू भे)

उ०—मैनी पेंगु मेर बावरी, विलळा बैता । भाळी थोरी भील, रात रा मार्ग रेंता ।—ऊ का

मैत—देखो 'महत' (रू, भे)

मैतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

उ०—ठगी माथे कमर बावी, सोखीनाई नै घोखा—वढी सू साधी । सैसी अर मैतर ताई मार्ग विना नही छोड्या ।—दसदोख

मैदान—देखो 'मैदान' (रू भे)

उ०—तीन पीलि तकिया परै, मडे बीच मैदान । जन हरीया घर सुन्य मै, सहज घुरै नोसान ।—स्त्री हरीरामदासजी महाराज

मैदालकडी—देखो 'मैदालकडी' (रू भे)

मैदी—स० स्त्री० [स० मेवी, मेविका] (अ मा)

१ प्राय समस्त भारत मे होने वाली एक भाडी ।

२ उक्त भाइ की सूखी पत्तियां व उनका पीसा हुआ चूर्ण ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैदी देवण री वेळा मुरभाई ।—ऊ का

उ०—२ हाथा रै राच्योडी मैदी हींगळू री टीकी, गज गज लावा वांसवाळी सू सरगल बाळ । भालर रै डकै ही पायल री भीणी भणकार बाजती ।—दसदोख

३ एक राजस्थानी लोक गीत ।

वि० वि०—इसकी पत्तिया छोटी छोटी और फूल सफेद होते हैं जिन से भीनी भीनी सुगंध आती है । इसकी पत्तियों के पिसे हुए चूर्ण को स्त्रिया भिगी कर हाथो व पैंरो पर लगाती हैं और विभिन्न प्रकार की चित्रकारी भी करती हैं ।

रू० भे०—महदी, महदी, माहदी, मैदी, मेहदी, मेहदी,

मै'नत—देखो 'मै'नत' (रू, भे)

उ०—मै'नत मजदूरी मासक घण मोला, विलखा विगताळू आसक अणवोला ।—ऊ का

मैपणो—स० पु०—अभिमान, गर्व, अह भाव, ।

मैवर—स० पु० [म०] सदस्य ।

रू० भे०—मयवर, मेवर,

मैहघो—देखो 'मू' गौ' (रू भे)

उ०—मैहघा भील दिये 'मिघाउत', लिये अपार नफी जस लाह ।

आहावळे मोतिया अमडी, मोदी करै वळापति साह ।

—महाराज छत्तरसिंह री गीत

मैमद—स० पु०—स्त्रियों के शिर पर धारण करने का एक आभूषण ।

रू० भे०—महमद, महमद, महिमद, मैमद, मेहमद, मैमद, मैमद, मैमद, मैमद, मैमद,

मैमतक, मैमत, मैमत—देखो 'मैमत' (रू भे)

उ०—१ खळ थोघण खोण अरोगण खप्पर छै रति सोगण जोस छळै । मद भोगण मास अरोगण मैमत धावत भोगण दैत घलै ।

—मा वचनिका

उ०—२ मन गगा—जळ—अमळ, वदन फिरि पूनम ससिहर । सुवप व्रन्न सोव्रन्न, गात मैमतक गंमर ।—गु. रू. व

मैमद—देखो 'मैमद' (रू भे)

उ०—माथा ने मैमद, अघक वराजै । तो रखडी छव न्यारी जी । —लो गी

मै—देखो 'मय' (रू भे)

उ०—विप्र मूरति वेद रतन मै वेदे, वस आद्र अरजुन मै वेह । —वेलि

मै'क—देखो 'महक' (रू भे.)

मै'कणी, मै'कवी—देखो 'महकणी, महकवी' (रू भे)

मै'कमी—देखो 'महकमी' (रू भे)

मै'कार—स० स्त्री०—महक, सुगंध ।

उ०—भर हाडी म्है छूकण दोन्ही सीज्यो म्हारो साग । जद हाडी भर तीचें उतारधी, मीठी आय मै'कार ।—लो गी

मै'कियोडी—देखो 'महकियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मै' कियोडी)

मैख—देखो 'महिम' (रू भे)

उ०—देवी मैख रै रूप देवा डरावै । देवी देवता रूप तू मैख खावै । —देवि

मैखास—देखो 'महिसासुर' (रू भे)

उ०—देवी सहस्र लख कोटिक साथै, देवी मडणी जुद्ध मैखास साथै । —देवि.

मैगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे) (ना डि को)

उ०—वळी मैगळां फोज दूजी वखाणें । जटाजूट गौरभ गज-खभ जाणें —गु रू व

मैडी—स० स्त्री०—१ मकान का सब से ऊपरी कमरा अटारी । (अ. मा)

उ०—१ बावेली ए मैडिया माहि दिवली उजाव । चारा नै दिसा मे छेला चानणी ।—लो गी

उ०—२ सौ हू तो डोही ऊपर खेटक (ढाल) नै रुक (तरवार) लेने ऊभी हू ने आप आयोडा पामणा (सत्रू) आ री सनमान करी अरथात जुद्ध करौ मैडी मै जाय वदूक भालो ।—वी स टी.

२ महल ।

३ देखो 'मेडी' (रू भे)

उ०—कवियण मैडी वल ज्यू, बांधे मूह मरत । जे 'जोगो' न जनमती, कीर त किरुरी करत ।—अजात

रू० भे०—मयडी, मेडी ।

मैछाण, मैछायण—देखो 'मैछ' (मह, रू भे)

उ०—१ मन खीजीयो साह होय हळा मैछाण री, भीम ग्रद उडे

न लहै विगन भाण री । देवरा पडै ध्रम घटै दुनीयांण री, 'अमरीया'  
राख मरजाद हिहुवाण री ।—ठा. अमरमिहजी नीवाज री गीत  
उ०—० साजे सोमईयाह, अमुग आभजीयो नही । पडोये कर  
पडीयाह, माय मंछायण तणा ।—अरजन हमीर भामोत री बात

मंजर—स० पु०—दबाव ।

उ०—जद फतूजी न माय दोम री मंजर पडयो । जद पहली तो  
आ चट्टी यू कहीती थी मूरघ मे मेह हवें तो म्हारी गुरुणी मे मेह  
हवें ।—भि द्र

मंजळ—देखो 'मजिल' (रू भे)

मंजिफ—स० स्त्री० [अ०] जादू का खेल, जादू ।

मंजिकलालटेन—स० पु० [अ०] किसी परदे पर दर्शको को चित्र दिखाने  
की एक प्रकार की लालटेन ।

मंट—देखो 'मेढ' (रू भे)

उ०—तद वखतमिहजी हाथी रा होदा माही चाढ़ लिया मो लोहा  
रो मंट घाव जणां तो वेचेत हूइ जावें ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

मंडल—स० पु० [स० मदनफल] मंनफल, । (अमृत)

मेढी—१ देखो 'मेढी' (रू भे)

२ देखो 'मेढी' (रू भे)

उ०—मह मेढी चित्तर—साळा, गढ ढाहै गोख भटाळा ।—गु रू व.

मेढळ—देखो 'मेढल' (रू भे)

मेढी—देखो 'मेढी' (रू भे)

मेणगना—स० स्त्री० [स० मदनागना] कामदेव की स्त्री, रति ।

उ०—छहे तीस हो आत्रणा घारी साजे । लखें रूप मेणगना रूप  
नाजे ।—सू प्र

मेण—१ चूडामणि, गिर का आभूषण ।

उ०—दुवें पाव वदे हणु मेण दोघी । कपीमा हणू पाव तारीक  
फोघी ।—सू प्र

२ देखो 'मेण' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ भावटिया तन मेण रा, मिटै कदे नह माद । भावटिया  
हूना मरद, चूना हदा चांद ।—बा दा

उ०—२ मेण लगटे पालटां, ताला माहि वसूर । डर तज राखें  
टांडियां, पारद हूना पूर ।—बा दा

३ देखो 'मदन' (रू भे)

उ०—वणु चाह आभाम वदनागविद, उरें ऊपजें वेख रेखा  
अणुद । मदा देत सता इमा नेत सोहे, महा मेण रूपी तिका नेण  
भोहे ।—रा रू

मेणवा—देखो 'मेनवा' (रू भे)

मेणत—देखो 'मेनत' (रू भे)

मेणघार—देखो 'मेणघर' (रू भे)

उ०—जिन जटाव बाजुय नम गार मोहिया । म्त्रोवह माखि

जाणि सप मेणघार मोहिया ।—सू प्र

मेणघुज—स पु—एक वाद्य विशेष, बाजा ।

मेणफल—स पु—मदन फल ।

मेणल—म पु—हाथी ।

उ०—माखे रावता गाजता मेणली । बाधियो वाद सू इन्दरी  
वादळा ।—गु रू व

मेणसिल—देखो 'मंसिल' (रू भे)

मेणा—स स्त्री १—एक जाति विशेष ।

२ देखो 'मेना' (रू भे) (डि को)

रू भे—मेण, मेणा, मेणा ।

मेणादे—देखो 'मेणावतो'

मेणी, मे'णी—स स्त्री. १ कटुवचन, ताना मोसा, व्यग ।

उ०—सीधी सैणें सी मेणी सुण माहै, वैसक पुरवसणी हसणी  
तजि हालें ।—ऊ का

२ मेणा जाती की स्त्री ।

३ गुडी, बदमाश ।

रू भे—महण, महणी, मेणी, मेहणी, मेहणी ।

मह०—मेणी, मे'णी ।

मेणीयात—वि०—कलकित, बदनाम ।

उ०—प्रोसियळा अम, टोडाफल टळिया नहीं । मेणीयात राख्या  
मे, जामोकाभी जेठवा ।—जेठवा

मेणी, मे'णी—स पु [स्त्री० मेणी] १ मेणा जाति का व्यक्ति ।

२ देखो 'मेणी' (मह, रू भे)

उ०—तद वा रजपूता कयी, कानाजी म्हानू इण बात री मेणी  
दो ती, दोरा ती थानू ई नही राखिया था । थेई इण सिरकार  
में हूता ।—द दा.

रू भे—महणी, मेहणु, मेहणी, मेणी ।

मंतर—देखो 'महतर' (रू भे)

मे'ता—देखो 'महता' (रू भे)

मेताव—देखो 'महताव' (रू भे)

मेतावी—देखो 'महतावी' (रू भे)

मेतारी—देखो 'महतारी' (रू भे)

उ०—अनोकी मंतारी घरि तन पधारी मरुघरा ।—मे म

मंत्रकार—स० पु०—एक वर्ग विशेष ।

उ०—गीतकार वातकार अस्थकार पाडकार तुडिकार आरामकार  
मास्थकार मंत्रकार सुदकार उद्दीकार ध्रुतिकार रूपकार ।—व स

मंत्रो—स० स्त्री० [स०] १ दो या दो से अधिक व्यक्तियों मे परस्पर  
होने वाला प्रेम भाव, मित्रता, दोस्ती ।

२ मेल-जोल ।

३ समानता,

४ अनुराधा नक्षत्र ।

मंयली, मंयली—देखो 'मंयिली' (रू भे) (अ मा, ना. मा)

उ०—१ जुई आय सवासण्या रायजादी, दरस्स कई सेवका माय दादी । हमल्लै धनी उदरी सेन हदै, मनो मैयली बदरी सेन वदै ।

—मे म

उ०—२ भवानी नमों ब्रह्मानी ब्रह्मवांमा । भवानो नमो मैथली राम रामा ।—मे म

मंथिल-वि०—मिथिला का, मिथिला सम्बन्धी ।

स०पु०—१ मिथिला देश का निवासी । (२) ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग ।

रू०भे०—मइयल, मइयल ।

मंथिली, मंथिली-स०स्त्री० [स० मंथिली] मिथिला देश के राजा जनक की पुत्री, सीता, जो राम की पत्नी थी ।

रू०भे०—मइयली महयली, महयली, महयली, मंथली मंथली

मंथुन-स०पु० [स०] १ किसी स्त्री के साथ किसी पुरुष का होने वाला समागम, सभोग, रति-श्रीडा ।

उ०—इम हिंसा झूठ चोरी मंथुन परिग्रह सेव्या सेवाया अन्नत सीची तो उए रै लखै व्रत पिए वधतो कहिणी ।—मि. द्र

२ काम-वासना की दृष्टि से, किसी स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार ।

उ०—१ हाथ ता ४ प्रकारे, धूजै—एक तो कणवाय सू । के क्रोध रै वस हाथ धूजै । अथवा चरचा मे हारचा हाथ धूजै । के मंथुन रै वसीभूत ।—मि. द्र

रू०भे०—मईथुन, मेहुण,

मंथुनी-वि०—१ मंथुन करने वाला ।

२ मंथुन का, मंथुन सम्बन्धी ।

मंथुनीप्रजा-स०स्त्री० [स०] मंथुन द्वारा उत्पन्न होने वाली सन्तान ।

रू०भे०—मइथुनीप्रजा, मयथुनीप्रजा ।

मंदडो-स०पु०—पटेला । (मेवात)

मंदान-स०पु० [फा०] १ वास्तु रचना से रहित, समतल एवं विस्तृत भूखण्ड, क्षेत्र ।

२ खेल-कूद के लिये तैयार किया हुआ समतल भू भाग ।

३ रण क्षेत्र, युद्ध भूमि ।

उ०—१ सूर मडै मंदान में, वाय खळा सिर खाग । पडै भगाणा भोमिया, सूर सघगै लाग ।—सोहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ दूजै दिन प्रीथीराज चहुवाण नै नाहडराव मंदान बुहार सडोया ।—नैणसी

४ किसी पदार्थ का बिस्तार ।

५ रत्नों की लम्बाई-चौड़ाई ।

६ मल, टट्टी ।

उ०—भाकरकै भाह लागी सू मांचै माहे-ही-ज मंदाना वैठी साखी फाड राखियो ।—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

७ जंगल या मेदान में टट्टी जाने की क्रिया ।

८ वह प्रान्त या प्रदेश जिसकी भूमि समतल हो अर्थात् उसमें

पहाड आदि न हो ।

९ स्थियों के श्रोतने के वस्त्र का मध्य का भाग ।

रू० भे०—मेदान, मेदान, मेदान ।

मंदानो-वि. [फा०] १ मेदान सम्बन्धी, मेदान का ।

२ मेदान वाला (क्षेत्र, इलाका)

मंदालकड़ी-स स्त्री—एक प्रकार की काष्ठ-श्रीषधि, जो सफेद एवं मुलायम होती है, इसका चोट पर लेपन किया जाता है ।

उ०—कायफळ, मंदालकड़ी अर अमल मया वाटनै कपडछाण करघा घी मे रळाय लेपन करघौ ।—फुलवाही

रू० भे०—मेदालकड़ी, मेदालकड़ी ।

मंदौ-स पु [फा०मेद] १ अत्यन्त महीन पीसा हुआ आटा, जिसके हलवा, मिष्ठान्न आदि पकवान बनाये जाते हैं ।

उ०—ताहरा खाकरै नीचे वासदेव जगायो, खांड-रा कापा माहै घात पाणी घातियो । दूध चरु-मे थो सू घात खाड निखारी, गळणी-मे घाती नीचे चरु राख दियो कुपौ खोल घी कढावें में घातियो, ऊपरा मंदौ घातियो, खुरपे-सू सैतळ हलावण लागौ ।

—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

२ पक्काशय, पेट, कोठा ।

रू० भे०—मइदौ मेदौ ।

मंघ—देखो 'मेघ' (रू भे )

मंघा—देखो 'मेघा' (रू भे )

मंन—देखो 'मदन' (रू भे )

मंनका—देखो 'मनका' (रू भे ) (अ. मा, ना. मा)

मं'नत-स. स्त्री [म०महनत] १ किसी कार्य को पूरा करने के लिये किया जाने वाला शारीरिक या मानसिक श्रम, परिश्रम ।

२ प्रयास, कोशिश ।

उ०—मालक, हु आपने बुलावण सारु पचहारी, मं'नत करने थाक गई-हूलसी, वरणसारु वरमाळ ले केई वार हुलस चुकी पण आप झगडो करता डबो नही ।—वी स टी.

रू० भे०—महनत, महन्नत, मिहनत, मेहणत, मेहनत, मं'नत ।

मं'नताई—देखो 'महताई' (रू भे०)

मं'नती-वि १ मेहनत करने वाला, परिश्रमी ।

२ जो आलसी न हो, प्रयत्नशील ।

मंनफळ-स पु [स मदनफल] एक आठदार-कटीला वृक्ष विशेष व उसका फल ।

मंनमूरत-स. पु [स० मदन मूर्ति] कामदेव का स्वरूप ।

उ०—होय वदसूरत कहे है मंनमूरत सो, कहत पाप पूर ते डरै नही ।—रू

मंनसिल-स स्त्री [स मन शिला] पीली मिट्टी की तरह का एक धातु जो नेपाल के पहाडों में बहुतायत से पाया जाता है ।

वि०—पीला, पीत । ४

रू० भे०—मणसिल, मणसिल ।

मंन-स स्त्री [स. मदना] १ पीली चोंच वाला काले रंग का एक

प्रमिद पक्षी, नारिका । (हि को)

८० भे० मयणा, मयना, मेणा, मेना, मँणा ।

२ देखो 'मिनका' (रु भे)

उ०—नृसेही उरवसी, छितेची मैना रभा । इद्रलोह अपछरा,  
हमी उगिहार अमभा ।—गु रु व

३ देखो 'मँणा' (रु भे.)

मँनाफ—म पु [स] १ हिमालय के धीरे से श्रीर मेना के गर्म से उत्पन्न  
एक पौगणिक पर्वत ।

२ हिमालय की एक चोटी ।

८० भे०—मयनक, मयनक, मेनक मैनाक ।

मँनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रु भे)

मँनायती—देखो 'मँणावती' (रु भे)

मँनायली—स० स्त्री०—प्रत्येक चरण में चार तगण का एक वर्ण  
वृत्त जिसमें १२ वर्ण व २० मात्राएँ होती हैं ।

मँनी—देखो 'म्यानी' (रु भे)

मँनेजर—प० पु० [अ०] किसी कार्यालय, कारखाने या संस्था का प्रबन्ध-  
अधिकारी, प्रबन्धक, व्यवस्थापक ।

मँपाळ—देखो 'महीपाळ' (रु भे)

मँफल मँफल—म० स्त्री० [अ० महफल] १ किसी शुभ अवसर पर की  
जाने वाली गोष्ठी, उत्सव, जलसा, मजलिस ।

उ०—१ दरवाज थारं नोवत बाजे उडदी को बाजो न्यारी जी ।

मँफल में थारं राम रच्यो है सोभा मारी जी ।—लो गी

उ०—२ चानणी ताण्योडी में विद्यायत विद्य रंयी है । दमामण्यां  
मँफल में दोडो वै, बाजा वजावणिया नावडया नाकी ल्ये ।

—दसदोस

२ विचार गोष्ठी, सभा, बैठक ।

३ मम्मेलन, ममारोह ।

४ उपामना या साधना का स्थान । (इस्लाम)

५ मगार, जगत । (गूफी)

मँधव—देखा 'महधव' (रु भे)

मँमत—वि० [म० मदमत] १ मदोन्मत्त उन्मत्त, मस्त ।

उ०—१ बागडि हजार फौजा रा भाजणहार । छवट खुरमाण रा  
विषूमणहार, मँमत हाषिआ रा मारणहार ।—वचनिका

उ०—२ सो छवि बाळ बकेळ, मह छळ मोहिम । परहा चद वदनी  
मँमत महानर मोहिम ।—कल्याणमिह नगराजोत वाहेल री वात  
मं० पु०—१ हाथी, गज ।

उ०—गुज पृथि नेजा फरत सही गिर मोम तरोवर ऊगि गही ।  
मिळ द्वारम माय मँमत मदी, नित जाणि पहाड मळक नदा ।

—मा वचनिका

२ मस्त हाथी, मदमस्त हाथी ।

८० भे०—मदमत, मदमत, मनमत, मयमत, मयमत, मयमत  
मदमत, महमत, महमत, मिमट, मेमत, मेमती, मेमलिय,

मेहमत, मैमट, मैमतक, मैमत, मैमद, मैमट, मैमत, मैमत, मैमद,  
मँहमत ।

अल्पा०—मयमती, महमतो, महमतो, महमतो, मैमतो, मैमतो ।

मँमद—१ देखो 'मुहम्मद' (रु भे)

उ०—सच्चा मैमद मुमतकी, अलाह दा प्यारा ।—कैमोदास गाढण

२ देखो 'मैमद' (रु भे)

३ देखो 'मैमत' (रु भे)

मम—स० स्त्री० [अ० मँडम] १ योनिपिन या अमेरिकन स्त्री ।

उ०—रीक्षा देवण जुध करण, मैम सुणै जग मांय । 'ज्वार' 'हूण'  
दोनू जिंसा, नर जनम फिर नांय ।—हूणजी ज्वार जी री छाबली  
२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री का चित्र होता है ।

३ देखो 'महिमा' (रु भे)

मैमट—स० पु०—१ बादल मेव ।

उ०—गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर । ताळी खुलि ऊठिया तपेपुर ।  
जाणै निमा अमावस जळपर भाद्रव मैमट घटा भयकर ।—सू प्र

२ देखो 'मैमत' (रु भे)

मैमत—देखो 'मैमत' (रु भे)

उ०—मन मैगळ मैमत भयो, आकस सहै न कोय । जनहरीया  
कुछीकए सहै, जो ध्यान गरीबी होय ।—श्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—२ दोखियां तणो घणो घर दावे, फावे जुध जुध करै फते ।  
माह तूम सक वहै 'गजन' सुत, मैमत चित वहै आप मतै ।

—नाथी साद्व

मैमतो—देखो 'मैमत' (प्रत्पा, रु भे)

मैमत—देखो 'मैमत' (रु भे)

उ०—हुवे घत लोहित मैमत हाला, नसा रा किसान पार सूळा  
निगळा । मधू—मास ग्रामोज में रास मडे, तिहू लोक री डोकरी  
तेथि तरे ।—मे म

मैमती—देखो 'मैमत' (रु भे)

उ०—विकराल काळ वदन, दागण दुजीह गरळ मैमती । विपरीत  
कुलह बनी, इजगूर या डिमळ गिळए ।—गु रु व

मैमद—१ देखो 'मैमद' (रु भे)

२ देखो 'मैमत' (रु भे)

मैमदा—देखो 'मैमदा' (रु भे)

मैमान—म० पु० [फा० मेहमान] १ अतिथि, मेहमान ।

उ०—बडो आदमी धायं रचां दरवाजा मेहमान रा । डोरें वो पांन  
पैरावा, गावा गुण मैमान रा —दसदेव

२ दामाद, जवाई । ३ मगा, मम्मन्धी ।

८० भे०—महमाण, महमान, मेहमाण, मेहमान ।

मैमानदारी—न० स्त्री० [फा० मेहमानदारी] अतिथि सत्कार, स्वागत ।

मैमानी—म० स्त्री० [फा० मेहमानी] १ मेहमान बनने की अवस्था या  
भाव ।

२ अतिथि सत्कार, स्वागत ।

रू० भे०—महमानी, महिमांनी, मिहमांनी, मेहमाणी, मेहमांनी, मेहमांनी ।

संभा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—अधिक वधावत आपत्ते, जन संभा रघुवीर । सिवरी पद रज परसता, सुघ भो सलिता नीर ।—भगतमाळ

संभावांन—देखो महिमावांन' (रू. भे.)

संयण—देखो 'मदन' (रू. भे.)

संया—स० स्त्री० १ राठीडवश की एक उपशाखा । (वां दा. ह्यात)

२ देखो 'माता' (रू. भे.)

संयो—देखो 'मयी, (रू. भे.)

संर—स० पु०—१ हाथी, गज । (ना डि को)

२ देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—१ वदण स्त्री गुरुदेव कू, जिण काटे जजाळ । मूक सुणाया संर कर, गुण थारा गोपाळ ।—भगतमाळ

संरवांन—देखो 'संरवांन' (रू. भे.)

संरवानी—देखो 'संरवानी' (रू. भे.)

संरवांन—वि० [अ० मेहवान] १ जो दया, कृपा, अनुग्रह करता हो, कृपालु, दयालु ।

उ०—नहर सुधार व नीर री, दाटी संर दुमार । संरवांन मुरघर महिप, हेर गया म्है हार ।—ऊ का

२ दातार ।

३ मित्र, दोस्त ।

रू० भे०—महरवान, महरवान, महिरवांन, महिरवांन, मेहरवांन संरवांन, मेहरवांन, मेहरवांन,

संरवांनगी, संरवांनी—स० स्त्री० [फा० मेहवानी] १ कृपा, दया, अनुग्रह ।

२ तरस ।

उ०—थानं कुवरजी वणावणा चावं है । संरवानी करावो । पेमजी री जाड चिपगी । दाती जुहगी । उथली नी आयो ।—दसदोख

३ कष्ट ।

४ ममता, प्रेम ।

रू० भे०—महरवांनगी, महरवानी, महिरवांनगी, महिरवानी, महिरवांनी, मेहरवांनी, मेहरवानगी, मेहरवांनी, मेहरवानगी, संरवांनी, मेहरवानी ।

संराब—देखो 'मेहराब' (रू. भे.)

संराबवार—देखो 'मेहराबवार' (रू. भे.)

संरियाळ, संरी—स० पु०—रहट में जोते जाने वाले बेलो मे से अन्दर की ओर चलने वाला बेल । (मि० मेढी)

संरुम—देखो 'महुरुम' (रू. भे.)

संरी—स० पु०—ऊची घोर पथरीली भूमि, मगरा ।

संल—स० पु० [स० मलिन प्रा०—महल] १ शरीर या वस्त्र आदि पर लगने वाला वह गदा तत्व जिसके चिपकने से शरीर की स्वच्छता

व वस्त्रादि की चमक धुधली पड जाती है, कीट, मैल, गंदगी । (डि. को)

उ०—१ मूजी सू मूजी री कांम ले लेणी सोनजी रं नख सू मैल काढणी हो ।—दसदोख

उ०—२ नख बघियोडा निपट, सीत बघियोडी साथै । दुख बघियोडी डैल, मैल बघियोडी साथै ।—ऊ का

उ०—३ ऊट री खाल री जामो । ठोड ठोड फाटोडो । गघा री खाल रा फाटोडा लिस्तरा । डील साथै मैल री पडपडिया जमियोडी । अमर वकरा री गळाई उण री डील मूडै डाळै वासतो ।

—फुलवाड़ी

२ विकार, दोष दूषण ।

उ०—नाव परताप डर डाकणी ना लगै । नाव परताप मन मैल घोया ।—स्त्रीहरिंमदासजी महाराज

रू० भे०—मलि, मळी, मेल ।

संल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ मोटा—मोटा संल दिखाळ्या अर भोळा ने भळै चकमो दीनी । ठगी साथै कमर बाघी, सोखीनाई नं घोखा घडी सू सांघी ।—दसदोख

उ०—२ राजा ने सराप देयनं अवं सायड पाछी वळी । गांव सामी सोय करनं खोडावती, डचू डचू करती जावती, जावतां जावता मारग में राजा री संल आयो ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'महिला' (रू. भे.)

उ०—तद माळवणी बोली में यू साभळियो छी, क्यू हेक कवरजी नु ग्रह भोळा था तद राजाजी नु पडिता कह्यो—हीज एक नीच रं घरे परणावो जिम भार टळै तद एकण नीच रं घरे परणाया छा, सु ऊ संल होय ती जाणा ।—ढो मा

मंलखोरो—वि०—जिस पर जमा दुष्टा संल दिखाई न देता हो, मैल को आत्मसात करने वाला । (रग)

स० पु०—एक वस्त्र को मैल से बचाने के लिए उसके नीचे धारस किया जाने वाला दूसरा वस्त्र । ज्यू शरीर पर कुरते के नीचे बनियान, साफे के नीचे टोपी, पजामा या घोती के नीचे कच्छा इत्यादि ।

मंलकली—स पु०—१ घोडे की पीठ पर डाला जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—साहणी विरदाय सवार सली । जिण पीठ प्रसीनेय मंलकली । पा. प्र

२ देखो 'मंलखोरो' ।

मंलणी, मंलवी—देखो 'मेलणी, मेलवी' (रू. भे.)

उ०—१ दुरघर वेळा कठण दुहेळी, उर घर म्है अकुळावा । मुरघर घणी मसाण मंलनं, पुरघर जाण न पावां ।—ऊ का

उ०—२ म्हारं एक विस्वास री हावड़ी है । उणनं मरदानी भेख कराय नं कवरां रं सागै मंलदा । साथै कटोरवांन में विस रं



सादुर्वा री सभाळ घालदा ।—फुलवाडो

उ०—३ श्रेकला बंठा ई ५४मड कडमड करण लागा । आ कोई  
धीनणी है के वजराक है । घर न हेमाळें मंल देवेला ।—फुलवाडो  
उ०—४ तारै रावळजी बोलीया-म्हे तो नाळेर पाछो मंल देसां ।

—वीरमदे सोनगरा री वात

मंलणहार, हारी (हारी), मंलणयो—वि० ।

मंलियोडो, मंलियोडो, मंलियोडो—नू० का० कृ० ।

मंलोजणो, मंलीजवो—कर्म वा० ।

मंलमाळिया—स० पु० [व. व] दीपावली पर वनने वाने शक्कर के  
खिलीने, जो महल की वनावट के होते हैं ।

मंलरखो—देखो 'मंलमनो' ।

उ०—पूरी सज माडियां विना चढण री खोडू ही । लारै दुमचो ।  
मोरा मंलरखो । पछें पडचो । डळी माथें खोगीर अर पछें काठी ।

—फुलवाडो

मंलाण—देखो 'मंलाण' (रु. भे)

उ०—रुपां मालाळी हुई न वळ कोड कियो । आगें नाहर उवेडो  
हुवो । जरै मन विवणी हुवो । सारा सिरदारा सावण वाद आघा  
चलाया । तिको कोम दम रें माथें मंलाण कोयो ।

—जंतसी ऊदावत री वात

मंलाकरम—स० पु० यो०—१ वह जो ममाजिक व मानवता की दृष्टि  
मे उचित न हो, अनुचित कार्य, कुकृत्य, कुकर्म ।

२ वाम मागियो के कार्य ।

३ दुर्भाग्य ।

मंलाणो, मंलावो—देखो 'मंलाणो, मंलावो' (रु. भे)

उ०—हमे काई करू ? सीधो भानू का पाछो लौटावू ? चट, चेळकें  
हुयगो । सुरत बुद्धि सुरकडाळी कैवत सारू समळगो । हाजरियें अर  
गिलपिनी सू सीघाळा पाळ सांमली साळ मे मंला लिया ।

—दसदोख

मंलाणहार, हारी (हारी), मंलाणयो वि० ।

मंलायोडो—भू० वा० कृ० ।

मंलाईजणो, मंलाईजवो —कर्म वा० ।

मंलात, मंलापत—देखो 'मंलायत' (रु. भे)

उ०—१८३२ री साल मयलोवाग न भालरो करायो न वाग  
रो कमठो मंलापत ववळ-चोकी वगलो आदरे सारा पामवांनजी  
रें हाथ हुवो, तिण रा रू० ५०००००) पाच लाख अदाज लागा ।

—मारवाट री ख्यात

मंलापण, मंलापणो—स० पु०—मलिनता, गदगी, विकार ।

मंलापतर—सं० पु०—तांत्रिक क्रिया ।

मंलायोडो—देखो 'मंलायोडो' (रु. भे)

(स्त्री० मंलायोडो)

मंलियोडो—देखो 'मंलियोडो' (रु. भे)

(स्त्री० मंलियोडो)

मंलू—स० पु०—गाडी के चक्र की नाभि के चारो ओर लगाया जाने  
वाला गोलाकार लोहे का टुकड़ा ।

मंलो—वि० [स० मलिन, प्रा०—मईल] १ (स्त्री० मंलो) जिस पर मंल  
या गदगी लगी हो, अस्वच्छ, गदा, मलिन ।

उ०—१ आपरो वेटी दो टावरां री बाप होय गाव री मंलो  
उखरडो माथें लुटै तो थारा घर री कुरब नी घटै ।—फुलवाडो

उ०—२ हळदी मूट घोमाई सू बोली—ले भाई, थू कद कद कैसी,  
कादी माफ करतां म्हारा किंसा हाथ मंला व्हे ।—फुलवाडो

२ वदवूदार, गदा ।

३ विकारयुक्त, दूषित ।

उ०—१ मंलो अत अदतार मन, रुच जस तणी रहै न । तन काळी  
विसहर तणो, कचुक सेत सहे न ।—वा दा

उ०—२ काटळ आवध मूक कर, मन मदाइण व्रन । आवध राखै  
ऊजळा, मंला ज्यारा मन ।—वा दा

उ०—३ मन मंला चख माजरा, भालें जे चख भाज । गोला  
अवगुण नू ग्रहे, गुण भलपण रा गाज ।—वा दा.

४ पतित, हीन, नीच, ।

उ०—१ मंला मिनख वचन रें माथें, बात वणाय करै विस्तार ।  
बंठ सभा विच महा वारै, वचन काढणो, वहुत विचार ।—वा दा

उ०—२ ऊपर सू जिता ऊजळा रेंवें, दुनिया माय न बिता ही मंला  
माहा कैवें ।—दसदोख

स० पु०—१ मल, विष्ठा ।

उ०—१ मंले ऊपरें मांखियां, गणणाटा लें गेल । टैकड कठीनें  
हालिया, डधी खलींगण डेल ।—ऊ का

उ०—२ पण कुण परवा करै । हाल नखां री मंलो ई को धुपियो  
नीं । आ काळिंदर रा विचियां न किता दौरा पाळ पोस न मोटा  
करिया, वानें दण वात री काई चेती ।—फुलवाडो

२ बूहा, कचरा ।

३ रंवारी जाति के ढाढियो का वह व्यक्ति, जो भील, मरगरा बाभी  
आदि निषिद्ध जातियो के यहा भोजन कर चुका हो ।

रू० भे०—मइत्री, मयलू, मलि, मेलो, मंलण ।

मंलोमाथो—स० पु०—स्त्रियो की ऋतुमति (रजस्वला) होने की अवस्था,  
दशा ।

उ०—सु वा वंर मंलोमाथो हुती तिणरी छाय पडो ।—नंणसी

मंलहणो, मंलहवो—देखो 'मंलहणो, मंलहवो' (रु. भे)

उ०—सूरो भायें साकडे, मना न मंलहे मांण । हरिया मरणी आदरें,  
पेम न छाने प्राण ।—सीहरिरामदासजी महाराज

मंलहांण—देखो 'मंलाण' (रु. भे)

मंलहयोडो—देखो 'मंलियोडो' (रु. भे)

(स्त्री० मंलहयोडो)



संघट, संघट्ट-वि० - महान, बड़ा । (ल पि)

उ०—१ अग अग अचल फट मिल घाए संघट, धार धजवट घोम धिखै । आहुडिया अविअट बध्वै रिणवट, वळिवत वाथट वल्ल बखै —गु रू व

उ०—२ है पलाण न ऊतरै, रहै दळ चाकै चडिया । मिलै कोट संघट्ट, घण घट घाए घडिया ।—गु रू व

उ०—३ गड़ लियग कोट संघट्ट मे, कमघज दिखण मथण कळी । महि तँहिज मार मनावि इम, खेडेवा राठ खगबळी ।—गु रू व  
रू० भे०—मेवट, मँवट्ट, मँमट्ट ।

मँवास—देखो 'मेवास' (रू भे)

उ०—१ गिरकदर पाहाड, गाहि पाए केकाण । किया मट्ट मँवास प्रजज पाळी मेल्लाण ।—गु रू व

उ०—२ है पाई गिरि गाहिजँ मारीजँ मँवास । निस वासर नागाद्रहा, हियँ न पूजँ साम ।—गु रू व

मँवासी—देखो 'मेवासी' (रू भे)

मँवासी—देखो 'मेवासी' (रू भे)

उ०—नर है मोरठ तणा नर नवँ, रुका मुह मँवासा राय । आया पाय तिके ऊबरिया, प्रळँ किया सेनाया पाय ।—द दा

मँसूल—देखो 'महसूल' (रू भे)

मँसूस—देखो 'महसूस' (रू भे)

मँहण—देखो 'महारणव' (रू भे)

उ०—मँहण तजँ मरजाद, अरक पिछम दिस ऊगमै । साभळ सावळ साद, पावू नट बैसे परौ ।—पा प्र

मँहणी—देखो 'मै'णी' (रू भे)

उ०—मा चापाठत मेलिया, सांम्हा निज भइ सेर । 'उरजण' रा मत जाणजौ, मँहणी जैसलमेर ।—बी स टी

मँहणी—देखो 'मै'णी, मँ'णी' (रू भे)

मँहमत, मँहमत—देखो 'मँमत' (रू भे)

मँहमद—देखो 'मँमद' (रू भे)

उ०—मायँ रो रम मँहमद लीयो तौ मँहमद रो रस राजिद लियो कहि रे गुमान करु रसिया ।—लो गी

मँहमानी—देखो 'मँ'मानी' (रू भे)

उ०—उठाथी सल्लबर आथी, तरँ सीसोदियाँ रँ रावत खगार रतन-सीयोत मँहमानी करी ।—नैणसी

मँहर—देखो 'महर' (रू भे)

उ०—तिण रँ पगँ लागा । कल्लो—म्हानू गरीब नाथ छाप दियो, राज गयो हमँ राज रो मँहर हुवँ तौ म्हे अठँ टिकाँ —नैणसी

मँहरवान—देखो 'मँ'रवान' (रू भे)

मँहरवानी—देखो 'मँ'रवानी' (रू भे)

मँहरवान—देखो 'मँ'रवान' (रू भे)

उ०—१ अर राजा पण मँहरवान हुवौ ।

—गाम रा वणी रो बात

उ०—२ तद पातसाहजी वोहत मँहरवान हुवा । अनूपसिधजी नू महाराज रो खिताब वगसियो ।—द दा

मँहरवानी—देखो 'मँ'रवानी' (रू भे)

उ०—लालँजी नै कँयो—पिताजी थे मेरँ माथँ मोटी मँहरवानी कर'र दायजो दिखालण हाळी जिदनँ छोडदथो ।—दसदोख

मँहराण—देखो 'महारणव' (रू भे) (ह ना. मा.)

उ०—दान के प्रमाण दूहु राजा नू के पांण । मेघ के मढाण कहा सातू मँहराण ।—रा रू

मँहरात—एक जाति ।

उ०—जँतारण था कोस पूरन माहँ । मँहरात वसँ । घरती हळवा १० खेत कवळा । ऊताळी कोसेवटा हुवँ ।—नैणसी

मँहरू—देखो 'महर' (रू भे.)

मँहल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—अठँ हरख वघाई हुई । पावूनी सोढी जाय मँहल माहँ पोडिया छँ ।—नैणसी

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मँहलाण—देखो 'मैलाण' (रू भे)

मँहलाईत, मँहलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—अबँ गाम रा वणी रो असतरी सोळँ—सिणगार सजँनँ कोटडी माहँ मँहलाईत है जणी माहँ आय बैठी है ।

—राजा रा गुर रा वेटा रो बात

मँहली—एक भोज्य-पदार्थ ।

उ०—कुमाच मँहली महरि ए मढोवर के मूग सुखदा सराय । भोग लजहा के भात जाय के फूला की सोभा दरसात ।—सू प्र.

मों—देखो 'मो' (रू भे)

मोंडो—देखो 'मोडो' (रू भे)

मोंव—देखो 'मोव' (रू भे)

मोंवकरोत—स पु—लकडी की लम्बाव की ओर से चीरने का एक प्रकार का बड़ा करोत ।

मोंची—स० स्त्री०—१ कूए से पानी निकालने के काम आने वाला, लकडी का एक उपकरण, जिसके चढस बाधा जाता है ।

२ काष्ठ का एक उपकरण जिससे मिट्टी डाली जाती है ।

३ देखो 'मोची' (रू भे)

मोडको—स० पु०—कूए के अंदर की ओर, ईंट या पत्थरो का बना हुआ वह भाग जिस पर वह गोल लट्ठा (लाट) रखा जाता है जिसके सहारे पानी के पात्रो को ऊपर लाने वाला घेरा (डाबडी) घूमता है ।

मोण—१ देखो 'मैण' (रू भे) २ देखो 'मोण' (रू भे)

मोंसर—देखो 'मोसर' (रू भे)

मोंसी—देखो 'मासी' (रू भे)

मोंसीहाई—देखो 'मासियाई' (रू भे)

मोंहडी—देखो 'मू'डो' (रू भे)

उ०—१ कृवरसी ऊठ भीतर मा कन्है गइयो । मा छाती सू लगाय मिळी, मोंहडे ऊपर हाथ फेर राई लूण वारिया ।

—कृवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुकुम कियो इस ही जायगा मोंहटा आगे इलाज करो ।

—दलची जोइये री वारता

मो-मवं०[म० मम] १ मुक्त, में ।

उ०—१ करु न दग्ग अतर दण काया । मो ती चरण सेव गढ माया ।—मू प्र.

उ०—२ तिरु पणि श्रीकम जे परमेश्वर का जम को पार न पायो तो मो भीटका को किमी वम छै ।—वेलि टी

उ०—३ हरीया मारग अगम की, मो मेती गम नाहि । कहि कैसी बिध पाईयै, चित गयी ता माहि ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—४ कय पावू कैहवा कनियाणी । करो हुकम मो पर अनियाणी ।—पा प्र

२ मुक्के, मुम्को ।

उ०—१ त्रिभुवण माहि न तोमू तोन । सरण राख मो ईसर योने । श्री समार अमार अनामी, साहिब सरण राखी समी ।

—ह र

उ०—२ तू मत भाग मायवा, तो भागा मो खोड । माईनी हांसी करे, दे ताळो मुख मोड ।—अज्ञात

३ मुम्पर, मुम्मे ।

उ०—छत्रपत 'गजवध' गांजणी छत्रपत, बिया 'मालदे' चमर-वबाल । मो चीप्रिया न जावै मारु, तू तेबडा करे रणताळ ।

—गु रु व

४ मेरा, मेरी, मेरे ।

उ०—१ मो तेरा वदे दिहु तुरक, जेती उगै प्रायमें । 'गजसाह' कहे पतिसाह दळ, मो उमै कुण आगम ।—गु, रु वं

उ०—२ म्हारा मननी आमा पूरी, राजि म्हारा कठिन करम दल चुरत । पारा गुण सु मो मन लागी, राजि हियइ राखु रे वांभण जिम तागत ।—वि. कु

उ०—३ हरि जम रम माहम करे हालिया । मो पडिता योनती मोग । अम्हीणा तम्हीणै आया, अवरण तोरये वयण सदोख ।

—वेलि

उ०—४ यळवट अलग घईह, कुळवट अद भूली किना । वरनी पटे गईह, मो विरिया मेहामद ।—हिगळाजदान कत्रियो

उ०—५ घामगी साव माने न श्री याक करी मम खाल री । कुण सुणै माल मोटी कथा, हाथ व्यथा मो हाल री ।—ऊ का

उ०—६ देतांगी दीनी घटे, मो कय तणी सनाह । बिबस पोइण पृथ डिम परधळ दोठा नाह ।—हा भ्म

००भे०—मो, मोड, मो ।

मो—दलो 'मोह' (रु भे)

उ०—मानुसा जनम पाय कहा कीया, स्वरूप आपणा नही जाणा ।

मन सूता मो' माया माही, इनकू वेग जगाय लैणा ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

मोइ—१ देखो 'मो' (रु भे)

उ०—कै तो जोगी जग में नाहीं कै'र बिसारी मोइ । काई कित जाऊरी सजनी, नैण गुमाया रोइ ।—मीरा

२ देखो 'मोई' (रु भे)

मोइल-स० पु०—देखो 'मोयल' (रु भे)

मोई-स० स्त्री०—१ प्राय सारे राजस्थान में होने वाली एक झाड़ी विशेष ।

२ बच्चो को खिलाने के लिये, मूग के आटे को सेंक कर बनाया हुआ पोष्टिक खाद्य पदार्थ ।

३ मसाले मिलाई हुई सूखी भांग ।

४ देखो 'मो' (रु भे)

उ०—१ प्रीत किया सुख नहि मोरी मजनी जोगी मीत न कोई । रात दिवस कळ नाहि परत है, तुम मिळिया बिन मोई ।—मीरा

मो'इडको-स० पु०—बच्चो का एक खेल ।

मोउ, मोऊ—देखो 'मऊ' (रु भे)

उ०—जाडा घन वाळा सिधू तट जुडिया, गाडा तन पाळा गुज्जर घर गुडिया । घर घर छपने में घर घर री घाली, मोऊ मुरघर री सनमुख सुखमाली ।—ऊ का

मोकडी—देखो 'माकडी' (अल्प, रु भे)

मोकणी, मोकवी—देखो 'मूकणी, मूकवी' (रु भे.)

उ०—थेह छोड ववा थोक, मह अघ दीघ हांसल मोक । सात ईतरी नह सोक, लगर सुखी सगळा लोक ।—र रु

मोकणहार, हारो (हारी), मोकणियो—वि० ।

मोकियोडो, मोकियोडो, मोकियोडो—मू० का० कृ० ।

मोकीजणी, मोकीजवी—कर्म वा० ।

मोकदमी—देखो 'मुकदमी' (रु भे)

मोकळ-स० स्त्री०—१ इजाजत, आज्ञा

२ छुट्टी, अवकाश ।

स० पु०—३ विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ खम्बोस का मास, जो बहुत ही स्वादिष्ट होता है ।

४ देखो 'मुकळायत' (रु भे)

उ०—जाता गैले जिम जुळ जुळ हसि जोता । रोटी मागणू सूं पंलावम रोता । छिन छिन ग्याती बिच छहती नित छाती । मोकळ चाकळ में मोकळ नह माती ।—ऊ का

५ देखो 'मोकळी' (मह, रु. भे)

उ०—१ चढती कटलि बीज चमककै, भड माचतै सुकवि अणवकै । ऊनइ हरा इद्र ऊवककै, गुणियण मोकळ सिहइ गहककै ।

—आसी वारहट

उ०—२ ऐरापति जमतिलक अठी दळ, मतवाळी छावी मद मोकळ । दळ झिगार गज घट वहादर, मद मेदनी विकट गज-

भम्मर ।—रा रु

मोकळउ, मोकळउ—देखो 'मोकळी' (रु भे) (उ. र)

उ०—समलि, पुत्र ! तू सीखडी, ए सी ताहरी पहरि, मन नवि कीजइ मोकळउ, चारित्र विधि रे सुधी तू करि कि ।

—नळदवदतीरास

मोकळणी, मोकळवी, मोकळणी, मोकळवी—क्रि० स० [स० मोक्षणम्]

१ जाने के लिए प्रेरित करना, भेजना, पठाना ।

उ०—१ ग्रहि पान एम कहियो भगज, भट खग वोह वाहू भलू ।

मोकळू पकडि मदकर मिलक, मुदफर री सिर मोकळू ।—सू प्र

उ०—२ तुम्हारी आगमन क्या हुआ । कह कहता कहि । किल कहता निश्चय । कस्मात् कहता कुण थळ थे आयी । किमरथ कहता कुण कारथ कंन कहता कुण मोकळ्यो ।—वेलि टी

उ०—३ राणा साड्या मोकळ्या जी, पाछा त्यावी मोड । कुळ की माडण इस्तरी जी, मुण्ड चली राठोड ।—मीरा

उ०—४ जे जे मालिक राइ भालीया, ते कुमरी नइ पाछा आलीया । आगवाण दाखवइ वाट, साथि मोकळ्यउ बीजड भाट —का दे प्र

२ मुक्त करना, आजाद करना ।

उ०—वाइ मोकळि न मू मदि मातउ, कूड कीचक पर खी रातु । भूविसि किमइ मूरख मूरहइ, उरतउ हुसि स्वांमिनि तूरहइ ।

—सालिसूरि

३ छोड़ना, त्यागना ।

उ०—कूड कपट कलि विकलां केलवी, कीजइ छे केइ काम । अखावाद पगोपग मोकळी, सी गति थासी स्वांम ।—घ व. प्र ४ देना ।

उ०—हरख मिळै आदर करै, पोखै थाळ मगाय । मोठी उत्तर मोकळै, मोठी सुव कहाय ।—वां दा

५ फैलना, बिखरना ।

उ०—मारु ऊभी गोख तळ, सर मोकळाणा केस । जाणुक राजा छत्रपति, मारण चडियो देस ।—ढो मा

मोकळणहार, हारी (हारी), मोकळणियो—वि० ।

मोकळिओडी, मोकळिओडी, मोकळ्योडी—भू० का० कृ० ।

मोकळीजणो मोकळीजवी—कर्म वा० ।

मोकळणो मोकळवी—रु० भे० ।

मोकळमुव, मोकळमुह, मोकळमूडी, मोकळमूवी—वि०—वाचाल, मुहफट लवार ।

उ०—कळदार कळस अर चादी सोना री छतर चढावै है मोकळमूवां मू 'आया धोलै अर भवडा चालै है ।—दसदोख

मोकळण—देखो 'मुकळायत' ।

मोकळणी, मोकळवी—क्रि० स० [ 'मोकळणी' क्रि० का० प्रे० रु० ]

१ जाने के लिये प्रेरित करवाना, भिजवाना, पठवाना ।

२ मुक्त कराना, आजाद कराना ।

३ छोड़वाना, त्याग कराना ।

४ दिलाना ।

५ फैलाना, बिखरना ।

६ तानना, फैलाना ।

उ०—अर बीजी सकळात ऊपरा मोकळी करि अर ऊभो रहियो । —द. वि.

मोकळणहार, हारी (हारी), मोकळणियो—वि० ।

मोकळायोडी—भू० का० कृ० ।

मोकळीजणो, मोकळीजवी—कर्म वा० ।

मोकळवणी, मोकळववी, मोकळवणी, मोकळववी—रु० भे० ।

मोकळायत—देखो 'मुकळायत' (रु भे)

मोकळायोडी—भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित करवाया हुआ, भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ २ मुक्त व आजाद कराया हुआ ३ छोड़वाया हुआ, त्याग कराया हुआ ४ दिलवाया हुआ ५ फैलाया हुआ, बिखरा हुआ ६ ताना हुआ ।

(स्त्री० मोकळायोडी)

मोकळवणी, मोकळववी, मोकळवणी, मोकळववी—देखो 'मोकळणी, मोकळवी' (रु भे) (उ र)

उ०—१ खाइ हाथ घालइ, तेहै सूरै सुभटे सग्रामि साचरते सहोदर पुत्र मित्र कलत्र मोकळावी, ससांग लक्ष्मी तणा भोग छाड्यो ।—व स

उ०—२ मोकळावी छइ भोज कुवार । दीधी दासी सहस दुई चारि ।—वी दे

उ०—३ पिता प्रणाम करु किस्सू-मोकळावउ किहा मात । करसिइ ते कलपांत कलि, स्रवणि सुणाता वात ।—मा का प्र मोकळावणहार, हारी (हारी), मोकळावणियो—वि० ।

मोकळविओडी, मोकळवियोडी, मोकळवयोडी—भू० का० कृ० । मोकळावीजणो, मोकळावीजवी—कर्म वा० ।

मोकळवियोडी—देखो 'मोकळायोडी' (रु भे)

(स्त्री० मोकळवियोडी)

मोकळियोडी—भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ २ मुक्त व आजाद किया हुआ ३ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ४ दिया हुआ ५ फैला हुआ, बिखरा हुआ ।

(स्त्री० मोकळियोडी)

मोकळू, मोकळी, मोकळी—वि० [ स्त्री० मोकळी ] १ बहुत, अधिक, ज्यादा, खूब ।

उ०—१ मोटा-मोटा मैल दिखाळै तथा कूड कपट करता थका दोनों कांती सू मोकळा हो रिपिया भँठै, ठगै अर ठोक लेवै ।

—दसदोख

उ०—२ मुलक मे मोकळा हो फिरिया, लडिया तिए सू एक वार तो ईव जोधपुर हाली ।—मारवाड रा भमरावा री वारता उ०—१ आप वसइ तिहां थी छ दिसइ, करइ कोस जाऊ निज मन मान्या राखइ मोकळा, ए छट्टा व्रत नी भरगला ।—स क

उ०—८ पछे कोई आड़ी-ग्रबळी के खागी-वाकी बात नी करी ।  
बरो जकी ई मोकळी । पण वेटा रँ हीयँ दिछोव रँ दाम  
मिटावणी बारँ मारँ री बात नी हो ।—फुलवाडी

उ०—५ माया मोरी मोकळी, वूदी कमी न जाय । जन हरिया सो  
वूदिसी, भगति भरोसी पाय ।—स्रीहरिरामदाम जी महाराज  
२ जो गणना, सफा या मात्रा की दृष्टि से अधिक हो, बहुत हो ।  
पई, अनेक ।

उ०—१ राणीजी मोकळी बार सगळा नँ मावळ घर मे समझायी-  
बुझायी, तो ई बारो भूत नीँ उतरियो ।—फुलवाडी

उ०—२ या हो छेँ, मोठी, राजाजी री सीव, तालर थोडा, ओ  
मोठी, सरवर मोकळा —लो गो

१ पर्याप्त, प्रचुर, काफी ।

उ०—१ राणी नँ चूपाई, हीरणी रा जतन करने आछी जगा  
रागो । खान-पाण री जतन मोकळी कीयो हीवँ दिन अस्त हवो ।  
—रीमालू री बात

उ०—२ रात रा आपरी नांणी भाज, आटी, घी सकर घाण  
चूरमी कर खावँ अर वाकी री परभात रँ पगाँ ऊचो मेलहू राखँ ।  
तवाणू मोकळी हावी भरी रहै । चाकर घोडा नू पाणी पाय,  
न्हाराय घाय वँठा-वँठा तवाचूडा पीवँ, गल्हाँ करवी करै, अमल-  
तवाणू घाणो नू मोकळी आण देवँ सो महिना अढाई उठै डण तरै  
रहियो ।—सूरे खवि कांयनोत री बात

उ०—३ यूँ तो म्हारी इछा छै तो एक छदाँम ई मोकळी अर यूँ  
म्हँ नीँ मानूँ तो दुनिया री आखी घन ई माव थोडी ।—फुलवाडी  
४ चोडा, विस्तृत, फैला हुआ ।

उ०—१ तठा उपरायत हिरण मुलँ छै सू जारँ घोषी रँ घर  
भपदा मोकळा किया छै ।—रा सा स

उ०—२ तठा उपरायत चरणों रा गिरदाँना मोकळा कर जाजमाँ  
गिनमा ऊपर बँसजँ छै ।—रा मा स'  
५ तीव्र, तेज ।

६ प्रभाव वाली, प्रभाव पूर्ण ।

रू० भे०—मोक्षलउ, मोक्षलउ, मोकळी,

मह०—मोक्षल, मोक्षल ।

मोक्षल्यो—वि०—मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद ।

उ०—जन हरीया मन मोक्षल्यो, तीन लोक फिर ग्याय । जं कोई  
पणः सूरयो, सत का वाणु सभाय ।—स्री हरीरामदामजी महाराज

मोक्ष—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

मोक्षी—देखो 'मोक्षी' (रू. भे.)

मोक्षु—देखो 'मोक्षु' (रू. भे.)

उ०—चित्र सेवा री हमार है जठँ जनानी दोड़ी कराई, ने पछै उवा  
दोड़ी माराज बमतनिघजी मोक्षु कर बाटी रा महलाँ कने कराई ।

—मारवाड री रयात

मोक्षु—देखो 'मोक्षु' (रू. भे.) (मा म.)

मोक्षवारदात—देखो 'मोक्षवारदात' (रू. भे.)

मोक्षी—स० पु०—१ देखो 'मोक्षी' (रू. भे.)

२ देखो 'मोक्षी' (रू. भे.)

उ०—१ खल तिरु री खोटी करँ, पापी अनजळ पाय । मोक्षी  
लागा मोडिया, चेली सू चिप जाय ।—ऊ का

उ०—२ बोदा वतळावँ खोदा खावँ, सोदा पण सूजदा है । जइ मोक्षी  
जोवँ सेजा सोवँ, अरध निसा उचकदा है ।—ऊ का.

मोक्ष—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.) (जंन)

मोक्षमार्ग—देखो 'मोक्षमार्ग' (रू. भे.) (जेन)

मोक्षमणि—स० पु०—एक रत्न विशेष ।

मोक्ष, माक्ष—स० स्त्री० [स० मोक्ष] १ किसी प्रकार के बधन से  
मुक्ति, छुटकारा, आजादी, स्वतन्त्रता ।

उ०—वध नइ मोक्ष ना वेउ कारण अछई । दुक्त नइ सुक्त जो  
अठ विचारी ।—वि कु

२ आध्यात्मिक क्षेत्र में किसी जीव का, जन्म-मरण के आवागमन  
से छुटकारा, मुक्ति, निर्वाण, कल्याण ।

उ०—१ वक तेज कारण धरौँ, निहचळ तप निरदोस । ग्यान  
मोक्ष कारण गिरौँ, सुख कारण सतोस ।—बाँ दा

उ०—२ कढे हस 'बाळेस' नू मोक्ष कीघो । दई राजके कध सुग्रीव  
दीघो ।—सू प्र

उ०—३ जुग-जुग मीर हरी भक्तन की, दीनी मोक्ष समाज ।  
मीरा सरण गद्दी चरनन की, पैज रखी महाराज ।—मीरा

उ०—४ जोर सू वोली—जँड़ी थारी इछा माँ ! म्हे थारँ लारँ  
जिग करुला । देस रा सगळा वामणा नँ जीमाऊला । थारी मोक्ष  
व्हे मा । वेटा री डडोत कवूल कर मा, ओ छेलो डडोत है ।

—फुलवाडी

३ स्वर्ग वेकुण्ठ ।

उ०—१ जद स्वामीजी कहघो मोक्ष देवलोक री जाँणहार तो तू  
ठहरघो । थारे लेखे नरक जावण हार थारा गुरु ठहरघा ।

—भि. द्र.

उ०—२ जद स्वामीजी कहघो म्हेँ तो यूँ न कहाँ—मूहडो दीठा  
स्वरग नरक जाय पण थारी कहिणी रँ लेखे थारो मूहडो तो म्हेँ  
दीठी सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हेँ जास्या । अने म्हाँरो मूहडो घेँ  
दीठी सो थारी कहिणी रँ लेखे थारे पाने नरक ईज पडी ।

—भि. द्र.

४ मृत्यु मोत ।

५ शास्त्रानुसार, कल्याण के चार पदार्थों (धर्म, धर्म, काम व  
मोक्ष) में से एक । (नाँ मा.)

६ उच्छ्रय होने की क्रिया या भाव ।

७ बचाव ।

८ छूट, छील ।

९ बहाव । पात ।

१० ग्रहण (सूर्य व चन्द्रमा) के छूटने की क्रिया ।

रू०भे०—मोक्ष, मोख, मोख, मोखि, मौख ।

भ्रत्पा०—मोखी ।

मोक्षक-वि० [स०] १ मोक्ष देने वाला, मोक्षदाता ।

२ छोड़ने वाला, छुटकारा दिलाने वाला ।

मोक्षण-स०पु० [स०] १ मोक्ष देने की क्रिया या भाव ।

२ मुक्त होने की क्रिया या भाव ।

रू०भे०—मोखण ।

मोक्षद-वि० [स०] १ मोक्षदाता, मुक्तिदाता ।

२ छोड़ने वाला, मुक्त करने वाला ।

रू०भे०—मोखत्त, मोखद,

मोक्षदा-स० पु० [स०] सिक्ख धर्म के अनुसार पांच तत्त्व, कथा, कथा, कच्छी, कटार व केश, का समूह । (मा म)

रू०भे०—मोखदा ।

मोक्षदाएकादशी-स०स्त्री० [स० मोक्ष+दा+एकादशी] मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की तिथि ।

मोक्षदाता-वि०—मोक्ष या मुक्ति देने वाला ।

उ०—देवी मथुरा माईया मोक्षदाता, देवी अवती अजोष्या अघ्व हाता ।—देवि

मोक्षपद-स०पु० [स० मोक्ष+पद] जीव का वैकुण्ठ या स्वर्ग में निवास पाने की अवस्था ।

रू०भे०—मोक्षपद ।

मोक्षपति-स०पु० [स०] सगीत का एक भेद विशेष (सगीत)

मोक्षमार्ग-स०पु०यो० [स०मोक्ष+मार्ग] ऐसा कार्य या आचरण जिससे मोक्ष प्राप्ति का योग बनता हो ।

रू०भे०—मोखमग,

मोक्षविद्या-स० स्त्री० [स०] १ आध्यात्मिक-विद्या ।

२ वेदात-शास्त्र ।

रू०भे०—मोखविद्या ।

मोखत, मोखतर—देखो 'मोक्ष' ।

उ०—१ मेरवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्राम निसपति सुर । लहण भेउ छटराग काठ भ्रक्ख मोखतर ।—गु रू वं

उ०—२ इतरै हूगरसीजी बोल्या, काकाजी, रजपूता री साथ घणौ अबखौ छँ, पाणी री तिस आगँ, तिरा सूर राज अब मोखतर पवारीस कोई साथ अनपाणी भेलौ हुवँ —जंतसी ऊदावत री वात

मोख-स० पु० [स० मयूख] १ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय, प्राय वर्षा ऋतु में, बादल की ओट से, आकाश में दिखने वाला सूर्य की किरणों का समूह ।

रू०भे०—मोघ, मौख ।

२ एक प्रकार का वृक्ष ।

उ०—एरड अरणी अगधीठ, अखोड ताड असोख । खजूरि खारिक कुडी सालर, सिवन सइवल मोख ।—रुक्रमणी मगळ

३ देखो 'मोक्ष' (रू भे)

उ०—१ अवसाण आए छत्री पीरस सरसावँ । यह लोक जीप परलोक मोख पावँ । रा रू

उ०—२ माता कर मकल लहै चक्र मोख । तिलसिल भग न जग सतोख ।—मे म.

उ०—३ समर तजण सू सौगुणी, दुरग तजण री दोख । मरद दुरग जाता मरँ, मिलै जिका नू मोख ।—वा दा

उ०—४ जोडी तो जुगती मिली, कुशली ने तिलोक । ऊ थापँ ऊ ऊपँ, किए विच जासी मोख ।—भि द्र

४ देखो 'मोखी' (मह., रू भे)

उ०—जद स्वामीजी कह्यो—कठँ घोवसी ? जद तिरा मोख री जागा वताइ—प्रठँ घोवसू । जद स्वामीजी कह्यो—ओ पाणी कठँ पडसी ? जद तिरा कह्यो । हेठँ पडसी ।—भि द्र,

५ देखो 'मोस' (रू भे)

मोखण—देखो 'मोक्षण' (रू भे.)

उ०—१ खल रा दळण दुरद रा मोखण, पत रा रखण सुमत रा पेस । कळमे दरस आप रा करता, प्रगट पाप रा गया प्रवेस ।

—र रू.

उ०—२ गिरद गाहटण भ्रभै—मण सजँ रिण विसम गत । दोयण घण दावटण 'जंत' दूजो । जपँ अन सहू जन सिघ तण विजँ जस, साह मोखण—ग्रहण भूप 'सुजो' ।—द दा

उ०—३ सांगा ग्रह मोखण सुरताणा, कूमाहरा जोड करतार । किय हरिदास राण केहरियो, ब्रविया छत्र चमर वड वार ।

—हरिदास चारण 'केसरिया'

उ०—४ दिल्ली दावा—मुदी, तू हिज आगळ है रांणा । ती दादो 'सग्राम', ग्रहण मोखण सुरताणा ।—गु रू. व

मोखणो, मोखवो—क्रि० स० [स० मोक्षणम्] १ मुक्त करना, मुक्ति देना ।

२ वधन से छुटकारा करना, छोड़ना, खोलना ।

३ रिहा करना, आजाद करना ।

४ फेंकना ।

मोखणहार, हारी (हारी), मोखणियो—वि० ।

मोखिओडी, मोखियोडी, मोख्योडी—भू० का० कु० ।

मोखीजणो, मोखीजवो—कर्म वा० ।

मोखत्त—१ देखो 'मोक्षद' (रू भे)

मोखद—देखो 'मोक्षद' (रू भे)

मोखदा—देखो 'मोक्षदा' (रू भे)

मोखन—देखो 'मोक्षण' (रू भे)

उ०—सुरतान ग्रहन मोखन सुजान, हिंदवान भान की करन हान ।

गळ फेर छुरी जँचद गोत, प्रप्प नू पोत करियँ उदोत ।—ऊ. का

मोखपद—देखो 'मोक्षपद' (रू भे)

उ०—बो खग तोलँ बोलियो, अचळ तणी कुळ भम । जूटँ खेता मोखपद, माळ पलटा रम ।—गु रू. व.

मोगम—अनिष्टिचत श्रवम्बा ।

उ०—पेमजी री जाह चिपगी, दाती जुहगी । उयली नी आयो ।  
हां पर ना, दोनू मोगम में राख र उकारे मू हकारो भग्घो अर  
मुट्टे मू उठे रावळे बानी मूठी मोडघो ।—दस दोख

मोगमल—देखो 'मोगमल' (रू भे)

उ०—मोगमन मोटा मोनरा, पच रग पटकूल । जरी कधीपा  
जुगति मु, सग विद्यावै मूल ।—प च चो

मोगविद्या—देखो 'मोगविद्या' (रू भे)

मोगाण—देखो 'मुकाण' (रू भे)

मोगांतर—देखो 'मुकांतर' (रू भे)

मोगाणी, मोगाचो—क्रि० सं० [“मोगणी” क्रि० का० प्रे० ८०] १

मुक्त कराना, मुक्ति दिलाना ।

२ वधन मे छुटकारा कराना, छुडवाना, खुलवाना ।

३ रिहा कराना आजाद कराना ।

४ फिक्कवाना ।

मोगाणहार, हारी (हारी), मोगाणियो—वि० ।

मोगाघोडी—भू० का० कृ० ।

मोगाईजणी, मोगाईजघो—कर्म वा० ।

मोगावणी, मोगावघो—८० भे० ।

मोगाघोडी—भू० का० कृ०—१ मुक्त कराया हुआ, मुक्ति दिलाया हुआ  
२ वधन मे छुटकारा कराया हुआ छुडवाया हुआ, खुलवाया हुआ  
३ रिहा कराया हुआ, आजाद कराया हुआ ४ फिक्कवाया हुआ ।  
(स्त्री० मोगाघोडी)

मोगावणी, मोगावघो—देखो 'मोगाणी, मोगावो' (रू भे)

उ०—मेपउ राउ ग्रहियउ मोहराउ, ताइयो कन्हा मोखावि ताइ ।  
राउउड वोक' गुण कइ रीम, छेहडा छप माडइ छथीस ।

—रा ज सी

मोगावणहार, हारी (हारी), मोगावणियो—वि० ।

मोगाविघोटी, मोगाविघोडी, मोगावघोडी—भू० का० कृ० ।

मोगावीजणी, मोगावीजघो—कर्म वा० ।

मोगाविघोटी—देखो 'मोगाघोटी' (रू भे)

(स्त्री० मोगाविघोटी)

मोगि—१ देखो 'मोक्ष' (रू भे)

उ०—पुणै स्याप मो ताम वांणी प्रकागी । प्रभू राम मोतारि, तू  
मोगि पागी ।—नृ प्र

२ देखो 'मोगी' (रू भे)

मोगिघोटी—भू० का० कृ०—१ मुक्त किया हुआ, मुक्ति दिया हुआ  
२ वधन मे छुटकारा किया हुआ, छोटा हुआ, मोटा हुआ  
३ रिहा या आजाद किया हुआ ४ फेंका हुआ ।  
(स्त्री० मोगिघोटी)

मोगी—न० स्त्री०—१ मरान या मरान के किमी वध मे गदे पानी के  
निकास के बिने बनी हुई छोटी नानी, मोगी ।

२ गुप्ता, मूलद्रव्य ।

उ०—पुटियो कैवण लागी—लोग आ वात जाणण वास्तै भेळा  
ह्विया के दुनिया मे मूडा घणा है के मोलिया घणी हैं ।

—फुलवाडी

३ वारी, बिडकी ।

उ०—२ मूठ्या माथै परण रा गाभा बाळ मे डोळा, तेजाव मे  
पड्या—घाट खोळा हा, आला मे राख अर मोखी—फरोखा मे भात  
भात रा न्हांना मोटा सचा मेल्या पड्या है ।—दसदोख

रू० भे०—मोकी, मोखि ।

मह०—मोख ।

मोखी—स० पु० [स० मुख] १ गदे पानी के निकाम के लिये बना हुआ  
बडा नाला, मोरा ।

उ०—वासै अति विकराळ महा मुख तारत मोखी । है कूडी इक  
हाथ हाथ हेकण मे होकी ।—ऊ का ।

२ रोशन दान ।

उ०—च्यारु मेर आम नै नावडती मोटी—मोटी भीत, जकारे  
विचाले न खूटी ना मोखी, जाळी, जे अर ना फरोखी ।—दसदोख

३ दीवार के अन्दर बना हुआ छेद, विवर, ताख ।

रू० भे०—मोकी ।

४ देखो 'मोक्ष' (मह, रू, भे.)

उ०—१ भक्ति ग्यान वराग योग योग्य, सील स्ववरम सतोखा ।  
ये सबही मत्व गुण का पायक, जहां मत्व गुण तहा मोखा ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ जोगाभ्यामी कीजै कीजै सग्राम सांम छळ मरणो ।  
पामीजै मित मोखी, निश्चय तत निरवाण ।—गु रू व

उ०—३ सूस वरत पचवाण मे, लागी जावै कोई दोखी रे ।  
सुगुह पासै आलीय नै, सुद्ध हुवा मिलै मोखी रे ।—जयवाणी

उ०—४ सुध मन सपारी करी, करम खपाय गया मोखी रे ।  
राय केसी हुवोई आतमा, जामा लगाया दोखी रे ।—जयवाणी

५ देखो 'मोकी' (रू भे)

मोग—१ देखो 'मोख' (रू भे)

उ०—ऊगते री माछळी, आशमते री मोग । ठक कहै सुण भड्डळी,  
नदियां चढमी गोग ।—आश्यात

२ देखो 'मोगी' (रू भे)

उ०—मव भात कही हम सोगन की, मिजलै मिटळै महि मोगन  
की । अनभायन जोयन आड करै, पुन आश न कोय न खाड परै ।

—ऊ का

मोगम—देखो 'मोखम' (रू भे)

मोगर—स० पु० [स० मुद्गर, प्रा० मोगर] १ एक प्रकार का शस्त्र जो  
गदा के आकार का होता है मुद्गर । (अ मा) (उ र)

उ०—१ केहर देखे कुजगं वन घेर विहडै, 'महू' 'मोकी काळमी,  
कर मोगर जट्ट' ।—वी मा

उ०—२ मोगर हाथे सहिया रे, अन्याई करै चकचूर । सेवक स्त्री  
जिनराय ना प्रगथ्यो जाणै अकूर ।—स्त्रीपाल राम



उ०—३ सर सीगणि छुरि कृप सांग गेडीहल मोगर । गोळी गोफण मख गुरज मूसळ घण तोमर ।—रा. सा. स  
२ सेना, फौज । (ह नां मा, अ मा )

उ०—१ हरिणागळ आगळ हरिण हल्लि, वेणी रयज्ज वरुयात वल्लि । सॅलहथ मेघ चडियउ सिहाइ, मोगर मुगुल्ल भेळिसी माहि ।—रा ज सि

उ०—२ तठा उपराति राजान सिलामति पातिसाह रा दळ वादळ मोगर थाट ऊपडिआ छै ।—रा सा स

उ०—१ रुकहथी भाटी रंणायर, मांझी तीन साथ दळ मोगर ।  
—रा रु

३ झुण्ड, मसूह ।

४ मूग या मोठ की, छिलका उतारी हुई दाल ।

उ०—१ इणी भांति रा सीघळी गजराज वेमासनै आणी छै, ताह नू मलीदा वेसवार मोगर दे दे नै पाटि आणि सभाया छै ।  
—रा सा स०

उ०—२ कमोद तुळछी स्यामजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरव कपूर पोहप प्रसग हरेवी सोरभ कुसुमवां किय जगनाथ भोग ऐमी चौरासी भाति जिन्हू के गज दरसार्व—सू प्र

५ उक्त दाल की वनी हुई सवजी ।

६ मुसलमान ।

७ देखो 'मोगरी' (रु भे )

उ०—सिंह आगनि न रहइ गज घटा, अन्नत आगलि न रहइ विस छटा । सीचाणा आगलि न रहइ चिडउ, मोगर आगलि न रहइ घडु । —नलदवदसी रास

८ देखो 'मोगरी' (मह, रु. भे )

रु०भे०—मोगळ मोगर ।

मोगरवेलि—स०स्त्री०—मोगरे की लता ।

उ०—मानि कहिउ ते मानिनी तू मद मोगरवेलि । झलगी हुती अहि डसइ, क्षीर ब्रक्ष सउ खेलि ।—मा का प्र

मोगरि, मोगरी—स०स्त्री०—१ मूले की जाति के एक पौधे पर लगने वाली फली, जिसकी सवजी बनती है ।

२ एक कद विशेष ।

उ०—मरछा मोगरि मूसली, तापसतेली कद । पाजणक्षीर कपूरीभा, चद चमारी चद ।—मा का प्र

३ काष्ठ का बना हथौड़ा जो स्वर्णकारों के काम आता है ।

४ स्वर्णकारों के काम आने वाला मोटे काष्ठ का उपकरण, जो करीब १ ३/४ फुट का गोल मोटा डंडा होता है तथा जिसका एक शिरा उत्तरोत्तर पतला होता है ।

५ उक्त प्रकार का उपकरण जो छत कूटने के काम आता है । इसी प्रकार धोवियों के कपड़े धोने का उपकरण, इत्यादि ।

उ०—१ मुरड मजरी मिळै, गावडा निकट घणैरी । त्याय मोगरी मार छांण छोडा घर ठेरी ।—दसदेव

उ०—२ आ कैय वा बीजळी री गळाई सळावा भरती भव उठा सु ताचकी सौ मोगरी हाथ में आवतां ई आवेम पूरा जोर सु आगळ रै दोनू कानी भचीड मैल दिया ।—फुलवाडी

६ छोटे मोगरे का फूल ।

७ दुरमुस, दुरमच ।

रु०भे०—मोगर,

मोगरेल—स०पु० [स० मुद्गर+तैल] मोगरे का तेल ।

उ०—घूपेल चापेल मोगरेल करणेल जइतेल एव विघ तेलिइ चोला भोजाइ ।—व स

मोगरी—स०पु० [स० मुद्गर] १ बढिया जाति के वेल का पौधा ।

उ०—१ फत्रै मोगरी सेवती जाय फूली । अ गी पति सेवती झूली अभूली । लता मावुगी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै ।—रा रु

उ०—२ चपौ, केवडी, केतकी, मोगरी जुई, कंवळ, गुलाब, रातराणी, कणेर, गुलमीर, मरवी तुळमी, केसर, नागकेसर अर चमेली, सरव इत्याद सुरगी वनस्पति रा अनोखा थाट हा ।  
—फुलवाडी

२ उक्त पौधे का फूल । (अ मा )

उ०—१ सोन जुह रियावेल चवेल चवेली के फुलवाद । मोगर की महक गुलाब फूल की सुगव जवाद ।—सू प्र.

उ०—२ फूली हद फुलवाद चली अलवेलिया । वेहद क्यारघा बीचक राजगहेलीया । चुणै चपेली चाय, मोगरी मालती, हरी लता में जाण, हेम लत झलती । वणी पना इम वाणि क साथि सहेलिया, परिहां रग भीनी आनूप रूप रगरेलीया ।—पना

३ तलवार की मूठ का सब से ऊपरी गुम्बजदार भाग ।

४ आभूषणों पर लगने वाली गुम्बजदार घुडी, मणिका ।

५ देखो 'मुगदर'

६ देखो 'मोगर' (अल्पा., रु भे )

मोगळ—१ देखो 'मोगर' (रु भे )

२ देखो 'मुगळ' (रु भे )

मोगिया—स०स्त्री०—१ एक अनुसूचित जाति, जो पहले जुरायमपेशा कौमी मे गिनी जाती थी । (मेवाड)

मोगी—वि० [स्त्री०मोगी] १ अशक्त कमजोर, निर्बल ।

उ०—सुरभी कासारी लागै सुख लेगी, देई बीलोई दोई दुख देगी । 'गोगो'मोगी हुय'गोरघा' गिरियो,'तेजो'मोळी पडि नेजो लें तिरियो ।  
—ऊ का

२ मंद बुद्धि ।

उ०—पिड रै आण लागी पछै, पडै सीस पेजार री । भेट रे भेट मोगा मरद, वुरी फेट विमचार री ।—ऊ का

३ मूढ, मूर्ख, अयोग्य ।

उ०—लोका कुळ लोपी जगत न जोपी, खोपी मे खावदा है । जरकावण जोगा मूसळ मोगा, गोगा गुर गावदा है ।—ऊ का



४ चिट चिटे स्वभाव वाला ।

५ मिचाह की नहर में से बेटों में लगने वाले पानी के खाने की मोरी । (गंगा नगर)

रु० भे०—मोघी, मौगी ।

मोघ-वि० [म०] १ अमोघ का विपर्याय, व्यर्थ देकार, निष्फल ।

उ०—चंद्रहमा रा चौठा वाढ चखावण र काज प्रध्वीराज रा वीरा र सोन लगाय नडियो जिकण री सीम महेम री मनोरघ मोघ करि अनेक घाराघरा री घारा माही लागी लीन थियो ।

—व भा

२ निरर्थक ।

३ निरुद्देश्य ।

४ त्याग द्रुमा, त्यक्त ।

५ मुक्त ।

स० पु०—१ घेरा, गहाता ।

२ मेड़

३ देखो 'मोख' (रु भे)

मोघो—देखो 'मोगी' (रु भे)

मोड़-स० पु०—१ मुड़ने की क्रिया या भाव ।

२ मार्ग, रास्ता, सड़क या पगडंडी में आने वाला घुमाव व घुमाव या स्थान ।

३ किसी वस्तु में पड़ने वाला बल ।

४ गर्व, घमिमान ।

५ बनावट ।

६ किरण । (सूर्य)

रु० भे०—मउड, मवड, मावोड, मोडि ।

७ देखो मोड़' (रु भे)

उ०—१ जगामग मोड दह बळ जोत, हरा गठजोड दह बळ होत । दह बळ वीर विदीरण दम, हने परलोक दह बळ हम ।

—मे म.

उ०—२ पण लोघो 'जैमन' 'पने' मग्मा वार्ध मोड । मिर सार्जे मूपा नही चरता नू चोतोड ।—वा दा

उ०—३ वग्मो दुनही दिववधू मन जिण आणि मरोड । वर नरुण वर वधियो, मार्जे धरियो मोड ।—व भा

उ०—४ घोन-घोनगो री मार्जे गोने री मोड वग्मो । बाळक-मान्या गठजोगे जोडघो ।—दमदोव

मोड़ार-वि०—पगजित करने वाला ।

उ०—१ पतमाहा मोड़ार कई चतुरंग विरोडी । मो वांग्गाम नीण मै बर्दे पेळा भवबोडी ।—अग्जुनजी वारुड

मोड़न-वि०—१ मोड़ने वाला, घुमाने वाला ।

२ घुमाने वाला, नमाने वाला ।

३ घुटाने वाला ।

उ०—महराण मेछाण वका मद मोड़ण छोड़ण देवा छग ।

—मा वचनिका

मोड़णी, मोड़वो—क्रि० स० [स० मुरणम्] १ किसी सीधी वस्तु में बल देना, सीधे खड़े को झुकाना, हमरी ओर घुमाना ।

२ धारदार वस्तु की धार टेढ़ी करना ।

३ ँठन देना, मरोडना ।

४ चलते हुए को किसी हमरी ओर जाने के लिये प्रेरित करना, दिशा परिवर्तन करना ।

उ०—१ के डत्ता मे वारै काना रिमभोळा री मोठा रणकारा री भणक पडी । कठे ई कोई भरम तो नी व्हैगी । पण रणकारा तर तर नैडा सुणीजण लागी—ठम्मक—ठम्मक । दीवाणजी उठीने ई घोडो मोडघो ।—कुलवाडी

उ०—२ ऐकरियो ओ मारुजी, करला पाछाजी मोड । राजीदा डोला, मोळू घणी आर्वे म्हारै वीर री ।—लो गी

५ लौटकर आने या जाने के लिये कहना, पलटाना ।

६ वापस करना, लौटाना ।

उ०—१ पूत घणों में पालियो, जूझण तू मति जाइ । हू मोडे जाऊ हम, सुत दोही समुझाइ ।—व भा

उ०—२ साह कहियो म्हारा अनामय री उद्देम करि आर्वे तिका नू सांम्हें जाइ हूही समुझाय पाछा मोडि आऊ ।—व भा

उ०—३ घडनी दियो हो जका री पांछी घेग्यो नही मडणो लियो जकारो मोठी मोडघो नही । ई हाय लियो, वी हाथ डकारघो ।

—दसदोव

७ पराट्मुख करना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख करना ।

८ शरीराग घुमाना ।

उ०—१ दे पटपोरा दोय नाक मे दावै नीका । मूडी खाघो मोड छडाछड खावै छोका ।—ऊ का

उ०—२ वन लोडै तोडै घरम, विघ विघ तोडै वात । जड सनेह खोडै जटण, गिनका, मोडै गात ।—वा दा

६ लौट जाने के लिये मजबूर करना, पीछे हटाना, खिसकाना, भगाना ।

उ०—किसनावत रण कुम करारो, 'राम' सुजाव 'गुजाण' प्रकारो । मज्जर तणी मेघ खळ मोडै जुडतां भोज कुवर पित जोडै ।

—रा रु

१० नष्ट करना, मिटाना, तोटना ।

उ०—१ अजवमिध ऊदाहरो, जोडै सूरजमाल । पडियो घोटै भीरजा आ मोडै गजदाल ।—रा रु

उ०—२ केहरि छोटो बहुत गुण, मोडै गयदा मांण । लोहड वडाई की करै, नरा नषत परमाण ।—हा भा

उ०—३ रण त्रामागळ रोडि, जोडि अछरा गठजाडा मेल घमोडा मार, मार मुगळा दळ मोडो ।—मे म

११ छिन्न, भिन्न करना, अस्त-व्यस्त करना ।

१२ लकीर की तरह सीधा न रखना, टेढ़ा करना, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में करना ।

१३ विमुख करना, विरुद्ध करना ।

१४ गिराना, पटकाना ।

१५ कागज, वस्त्रादि में सलवट डालना, समेटना ।

उ०—ग्रथा में जठे कठे ही रुढ़ी-रिवाजों की बात आये पानी मोड़ देवे और आपर लेखा में हवाली देवे ।—दसदोख

१६ काटना ।

मोड़णहार, हारी (हारी), मोड़णियो—वि० ।

मोड़ियोड़ी, मोड़ियोड़ी, मोड़ियोड़ी—भू० का० कृ० ।

मोड़ोजणो, मोड़ोजवो—कर्म वा० ।

मुड़णो, मुड़वो—अक० रु० ।

मोड़णो, मोड़वो, मोरणो, मोरवो, मोड़णो, मोड़वो—रु० भे० ।

मोड़तोड़-स० पु०—धुमाव-फिराव, चक्कर, ।

मोड़वध, मोड़वधो—देखो 'मोड़वध' (रु भे)

मोड़णो, मोड़वो—क्रि० स० [ 'मोड़णो' क्रिया का प्रे० रु० ] १ किसी सीधी वस्तु में बल दिराना, सीधे खड़े को झुकवाना, दूसरी ओर घुमवाना ।

२ धारदार वस्तु की धार टेढ़ी कराना ।

३ ऐंठन दिराना, मरोड़ाना ।

४ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर मुड़ने के लिये प्रेरित करना/ कराना, दिशा परिवर्तन करना/ कराना ।

५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलाना, पलटवाना ।

६ वापस करना, लौटवाना ।

७ पराङ्मुख कराना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख कराना ।

८ शरीरांग घुमवाना ।

९ लौट-जाने के लिये मजबूर कराना, पीछे हटवाना, खिसकवाना, भगवाना ।

१० नष्ट कराना, मिटवाना, तुड़ाना ।

११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराना ।

१२ लकीर की तरह सीधा न रखवाना, टेढ़ा कराना, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में कराना ।

१३ विमुख कराना, विरुद्ध कराना ।

१४ गिरवाना, पटकवाना ।

१५ कागज, वस्त्रादि में सलवट डलवाना, समेटवाना ।

१६ कटवाना ।

मोड़णहार, हारी (हारी), मोड़णियो—वि० ।

मोड़ियोड़ी—भू० का० कृ० ।

मोड़ोईजणो, मोड़ोईजवो—कर्म वा० ।

मोड़ियोड़ी—भू० का० कृ०—१ बल दिराया हुआ, सीधे खड़े को झुक-  
वाया हुआ, दूसरी ओर घुमवाया हुआ. २ धार टेढ़ी कराया हुआ.

३ ऐंठन दिराया हुआ ४ दूसरी ओर मुड़ने के लिये प्रेरित कराया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलवाया हुआ, पलटवाया हुआ ६ वापस कराया हुआ, लौटाया हुआ ७ पराङ्मुख कराया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख कराया हुआ ८ शरीरांग घुमवाया हुआ ९ लौट-जाने के लिये मजबूर कराया हुआ, पीछे हटवाया हुआ, खिसकवाया हुआ, भग-  
वाया हुआ, १० नष्ट कराया हुआ, मिटवाया हुआ, तुड़वाया हुआ ११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराया हुआ १२ लकीर की तरह सीधा न रखवाया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में कराया हुआ १३ विमुख कराया हुआ, विरुद्ध कराया हुआ. १४ गिरवाया हुआ, पटकवाया हुआ १५ सलवट डलवाया हुआ, समेटाया हुआ १६ कटाया हुआ ।

(स्त्री० मोड़योड़ी)

मोड़ि—देखो 'मोड़' (रु भे.)

मोड़ियोड़ी—भू० का० कृ०—१ बल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ २ धार टेढ़ी किया हुआ ३ ऐंठन दिया हुआ, मरोड़ा हुआ ४ दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहा हुआ, पलटाया हुआ ६ वापस किया हुआ, लौटाया हुआ. ७ पराङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख किया हुआ ८ शरीरांग घुमाया हुआ ९ लौट जाने के लिये मजबूर किया हुआ, पीछे हटाया हुआ, खिसकाया हुआ, भगाया हुआ. १० नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, तोड़ा हुआ ११ छिन्न-भिन्न किया हुआ, अस्त-व्यस्त किया हुआ. १२ सीधा न रक्खा हुआ, टेढ़ा किया हुआ, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में किया हुआ. १३ विमुख किया हुआ, विरुद्ध किया हुआ १४ गिराया हुआ, पटकाया हुआ १५ सलवट डाला हुआ, समेटा हुआ. १६ काटा हुआ ।

(स्त्री० मोड़ियोड़ी)

मोड़ो—स० पु०—खलिहान में अनाज की वाली को कुचलने के लिये गोल गोल घूमने वाले बेलों में से अन्दर की ओर चलने वाला बेल ।

मोड़ोरी—कि० वि०—देरसे, विलंब से ।

उ०—और राणी पाछो गढ़ दाखिल हुवो जणा एक दिन नापो दरवार सू मोड़ोरी आयो ।—नाप साखलें री वारता

मोड़ो—स० पु०—१ दरवाजा, द्वार ।

उ०—के इत्ता में मोड़ा रें वारें घोड़ा री हीस सुणीजी । कमसल बात करता ईं आयग्यो । सेठाणी आढी खोल बोली-बीरा, थारी ऊमर तो लाठी ।—फुलवाड़ी

( स्त्री० मोड़ी )

२ विलंब, देरी ।

उ०—१ वेटी काठी उतारता उतारता ईं बोली-भाज तो साम्ही वेगी आयो, यू मोड़ी बतावें ।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी पाछा वेगा भावण सारु दीवाणजी नै भण्णती ताकीद करी । दीवाणजी षोढी ताळ उपरात पाछा रा पछा भाया, पण राजाजी नै खासो मोढो लखायो ।—फुलवाढी

वि०—१ विलव से, देर से ।

उ०—१ काळा में कोढाय चाहि खायो कर चाळा मोढा उघड़्या मित चिरत घारा चिरताळा ।—ऊ का

उ०—२ भांत-भांत रा छाप फाढे के विरवा सात दिना में होसी, विरवा मोढी होमी, विरवा जरूर कर होसी ।—वरमगाठ

उ०—३ भ्रम कहिषो-मत भाव । पण सबळाई साथ आई । राजा रै रमोडे गया । मोढा गया तकण सू मुभारा ओळोभी दिमी ।

—कल्याणसिध नगराजोत बाढेल री वात

२ बहुत प्रतीक्षा करने के बाद ।

उ०—१ माढो सूरज होळें होळें घणौ चढे । नीठ टुळकती टुळकती मयारें चढषी । मयारें भाय कठै ई रूप तो नीं गियो । निरकै ई नीं । किती मोढी सिध्या व्ही ।—फुलवाढी

रू०भे०—मउढी, मवढी, मोढी, मोड़उ, मोढी ।

मोचग—देखो 'मुखचग' (रू भे)

उ०—ग्यांन को ढोल बन्धी अति भारी, मगन होय गुण गाऊ ए माय । तन रुह ताल मन कर्ह मोचग, सोती सुरत जगाऊ ए माय ।

—मीरा

मोच-म०स्थी० [म० मुच्] १ झटका लगने से शरीर के सघी-स्थल की नम का स्थान छोड़ देना ।

२ घातु के वतन आदि में, दबाव पडने या चोट लगने से, पडने वाला झट्टा ।

३ हटने की क्रिया या भाव ।

उ०—तू माता निश्चित रह, मन मह मत कर मोच । राव निश्चिती ना कर्ह, कदे न खाऊ मोच ।—ठाढाळा सूर री वात  
४ नष्ट ।

उ०—१ सोच महमदमाह नू मोच थयो मन मद् । प्रात ससोकिता ज्यू दिपह, राति अनद रवद् ।

उ०—२ हुवी सोच आमुरां हुवी मद मोच दिलेसर । हुआ देस भैचपक हुवा भवनेस भयकर ।—रा रु.

५ दाका, सदेह ।

६ निवारण, त्याग ।

७ गद्दी लकड़ी को चीरने के लिये, करोत के चारो ओर लगने वाली लकड़ी की चौखट ।

[म० मोच] ८ केले का फल ।

[म० मोच] ९ केले का वृक्ष ।

१० दोनाजन वृक्ष ।

११ देमो 'मोछ' (रू भे.)

रू०भे०—माच, मोच, मोच ।

मोचर-सं०पु० [स०] १ साधु, भक्त ।

२ मोक्ष, मुक्ति ।

३ केले का पेड़ ।

वि०—छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला ।

मोचडि, मोचडो-स०स्थी०—१ परे की जूती ।

उ०—१ जरकम जरी रेममी जामी, रतनां साज सजावें । मणियां जडी मोचडो चरणां, जाया हो वण भावें रे रामंयो ।—गी रां

उ०—२ मेह विना घरती तरस, मेहड़ी हुडण दे । मोचडियां वणावू मुखमल री मेहड़ी हुवणदे ।—लो. गी

२ देखो 'मोछ' (अल्पा, रु. भे)

रू०भे०—मोजडो, मोजडी ।

मोचडो-स०पु०—१ जूता, बूट । (अ मा)

उ०—घुडला सत्रियां दीस य न ठाण, ना रे पगारो मवरजी रा मोचडा ।—लो गी.

२ घोंडे की आख का एक रोग ।

रू०भे०—मोजडोयो

मोचण-स०पु० [स० मोचन] १ छोड़ने की क्रिया या भाव ।

२ रिहाई, छुटकारा, मुक्ति ।

३ दूर करने, हटाने या मिटाने की क्रिया ।

४ उन्मूलन होने की क्रिया या भाव ।

५ बहने या झरने की क्रिया ।

उ०—मोई मुख मोई हीतळ हतवाळी, पीतळ परण नै सीतल सत वाळी । लुच्चा ललचाव लालच धन लायें । लोचण जळ मोचण सोचण विगलार्ग ।—ऊ का.

६ खीचा-तानी, छीना झपटी ।

स०स्थी०—७ मोची जाति की स्त्री ।

उ०—हाथ ज लेख्या मोचडी ए अमा मोरी । मोचण होय होय जाखां ।—लो गी

रू०भे०—मोचन ।

मोचणअघ—देखो 'मोचन अघ' (रू भे)

मोचणी, मोचयो-क्रि०स० [स० मोचनम्] १ रिहाकरना, मुक्तकरना, छोड़ना ।

२ त्यागना छोड़ना ।

उ०—१ माह सुगं विघ सोचियी, गह मोचियी मगाह । मन ठहराई मेळ री, माह 'अजीत' मलाह ।—रा रु

३ मिटाना, समाप्त करना ।

उ०—माह सुगं अत सोचियी, मन मोचियो गरभ । ईख प्रताप 'अजीत' री, रीत विचागी स्रव ।—रा रु

४ बहाना, प्रवाहित करना ।

उ०—सुणि पदमणी सोच रे नयण जल मोचरे, परवाने पोवे मन मे खलमणी रे ।—प च चो.

मोचणहार, हारी (हारी), मोचणियो—वि० ।

मोचिमोढी, मोचियोढी, मोच्योडी—भू० का० कु० ।

मोचीजणो, मोचीजवो—कर्म वा० ।

मोचणो, मोचवो,—रु० भे० ।

मोचन—देखो 'मोचण' (रु० भे०)

मोचनग्रन्थ—स०पु० [स० अथ+मोचन] पापो का नाश करने वाला, ईश्वर । (नां मा.)

रु०भे०—मोचणग्रन्थ ।

मोचरस—स०पु० [स०] १ सेमल वृक्ष का गोद ।

२ सेवरी का फूल । (अमृत)

३ मोर पाख, मयूर पिच ।

४ घोड़े के पिछले पैर के घुटनो से ऊपर होने वाला एक रोग, जो अन्दर व बाहर बोर जैसा होता है । (शा हो)

मोची—स०स्त्री० [स्त्री० मोचण] १ चमड़े के जूते बनाने का कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ मोची डेढ़ चमार जान में डोली जाँचै । चढ़े चिलमिया चाह नाच नीचा घर नाचै ।—ऊ का

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

उ०—हालता हालता मारग मे मोची री हाट आई ।—फुलवाही

रु०भे०—मोची ।

मोचो—स० पु०—१ मुकाब ।

उ०—साथलिया घणई कळ भळ करिया पण कवर तो करडावण रें पाण मोचो ई नी खायो ।—फुलवाही

२ जूता ।

मोच्छ—देखो 'मोक्ष' (रु० भे०)

उ०—जुग जुग भीर हरा भगता री, दीस्या मोच्छ नेवाज ।

मीरां सरण गहा चरणां री, लाज रखां महाराज ।—मीरां

मोच्छव—देखो 'महोत्सव' (रु० भे०)

मोछण—देखो 'मूछण' (रु० भे०)

उ०—१ अतर रें फोवा री लपट, सैंट रें छिडका री सौरम, लूग-एळची रा मोछण, बध्या पानारा बीडा, सिगरेटा रा छल्योडा दिन्वा, काजू-किसमिस्या रा गेढ, गाजें रा गोठ अर थेढ लाग रैया है ।—दसदोख

उ०—२ मोछण नू सूला अरवल तरह रा डाबा मे सू काढ काढ देवे छैं ।—कूबरसी साखला री वारता

मोछव—देखो 'महोत्सव' (रु० भे०)

उ०—चउसठि मधवा मिलो कीउ, निरव्वांग मोछव सार । आसाढ सुदि चौदसि दिने, पछइ यात्र करी निज ठारि ।—कल्याण

मोज—१ देखो 'मोज' (रु० भे०)

उ०—१ प्रहृत सत डोर 'जगा' छत्रिया गुर, बोह मोजां विघ अतुल वळ । ऊही जग ऊपर आहाडा, कीरत गूडी तणी कळ ।

—महाराणा जगतसिंहजी री गीत

उ०—२ दडकाळ करगा तरेस सी गयेमदत, सूर प्रळेरसम्मा मयेम मुधासार । चही सूळ पारजात मराळा पकता चगी, किरमाळां

मोज पगी कोसल्या कंवार ।—र. रु.

उ०—३ डूम न जाणै देवजस, सूम न जाणै मोज । मुगळ न जाणै गो दया, चुगल न जाणै चोज ।—वा. दा.

उ०—४ वीरत कीरत वस वित, मत मोजां गुण मान । सप सुलच्छण घरम सुख, व्हेया भघ सू हांण ।—वां दा

२ देखो 'मोजी' (मह, रु० भे०)

उ०—पहरै नरामा पचठामा, अग जामा ओप ए । सोहै सकाजा सीस ताजा, सार मोजा जोप ए ।—गु रु व

मोजडी—देखो 'मोचडी' (रु० भे०)

उ०—१ तरे मोचीया न वुलाय वा सारी मोजडीयां कराय खीन-खाप मे मडाय सीवाय न देवलीयाळी रा डेरा मेली । केयी-वीन-णीयां तो है नही न मोजडीयां हाजर है ।—नैणसी

उ०—२ पाय लाखीणी घरमी रे मोजडी, हलते राता छे पाव थो ।—लो गी

२ देखो 'मोजी' (अल्पा, रु० भे०)

उ०—जरद भीड ज्यारका, सकौ सारोटकरारी, पगा भीड मोजडी भिलम मसत्तक भधारी —अरजुण जी वारहट

मोजडो—देखो 'मोजी' (अल्पा, रु० भे०)

उ०—मेघवना फाढा बाधिया, पाए मोजडा पोगर नवा । खाडा पटा तणा गजवेलि, भलवि आगिला हीड्ड गोलि ।—का दे प्र

मोजाण—देखो 'मोज' (रु० भे०)

उ०—उर करवत बहि आपरें, साठ भडा सप्रमाण । वीकम सिव मारग बहै, ले दीना मोजाण ।—नैणसी

मोजी—देखो 'मोजी' (रु० भे०)

उ०—हुरै भरै कर नेता हलकारा, लांवा सीगाळा देता लल-कारा । मुळक वेली चख पोळछ लख मोजी, चेली दीठा ज्यू साधु चित चोजी ।—ऊ का.

मोजूव—देखो 'मोजूद' (रु० भे०)

उ०—तिण साळा आगळी ऊखेलाय चौसाळी री तरें सु प्रतापसिंध जो सा कराई १६३७ में न माहे कुवो १ करायो तिको मोजूद है, पाणी भळभळो है ।—मारवाड री ख्यात

मोजूदा—देखो 'मोजूदा' (रु० भे०)

मोजी—स०पु० [फा०मोज] १ पैर मे पहनने का, एक बुना हुआ वस्त्र, जुराब, पायतावा ।

२ जूता ।

उ०—ताहरां मांडणसी मोजा खोल नें तळाव मांहे वडीयो, धोवो सो पाणी नांखें छैं ।—मांडणसी कृपावतरी वात

३ युद्ध समय पावों में पहना जाने वाला कवच ।

उ०—१ बळवत जडे हाथाळां वेय । पैहरिया सार मोजा पयेय ।

—गु रु वं

उ०—२ ताहरा केळावें ठाकुर नू मूळवाणी भीतर बोलायो, सू वीरें सिलह दगलो पैहरिया थका भीतर आयो छैं । सरसूथण पगां मोजा

हथियार सरब बांगा छै । मार्य घूघी टोप छै ।

—सातल जोधावत री वात

४ कुटती का एक पेच, दाव ।

५ देखो 'मोजी' (रू भे)

उ०—मु गांव भुणीयागे जाळीवाडै वासै मोजा चरा घणा ही हरा खाई छै ।—नैणमी

मोट—म०स्त्री०—१ बहूपन, बडाई ।

उ०—१ बोला में श्रोछा विदर, मोला में नह मोट । पोळा में 'परताप' रै, गोलां वाळी मोट ।—ऊ का

उ०—२ नान्हो कल्या न नानही, मोटी कल्या न मोट । हरिया हरि जाणै जिमो, वाकी गहीर्य मोट ।

—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

२ गवै, घमड, अभिमान ।

उ०—रैत रिछ्याळ और दीनन दयाल देख्यो । मोट महिपाळ—पन मन मे मान्यो नहीं ।—ऊ का

६ राठोड़ो की एक उपशाखा । (बा दा. ह्यात)

४ बूए से पानी निकालने का चटस ।

रू०भे०—मोटड, मोठ ।

५ देखो 'मोटी' (मह, रू भे)

उ०—तीन लोक ता बीच में, अकल काळ की चोट । जनहरीया जोय मरिसी, छोटा गिनै न मोट ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मोटड—देखो 'मोटी' (रू. भे)

उ०—१ अकल मकळ श्रवगति श्रपरपर, रामेसर मोटड राजान । किसनउ कहड कृपा हिव कीजड, बड दातार बघारण वांन ।

—महादेवपारवती री वेलि

उ०—२ देस जिएइ ए देहरठ रे लाल, मोटड देम मेवाड मन मोहयउ रे ।—स कु

मोटकौ—देखो 'मोटी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ छोहाय दियो मत मोटकौ ए, ममभायो राजा मोटकौ ए ।—जयवांणी

उ०—२ मांगलियाणी मोटकौ, पायो जोया पी'र, दुमळ 'मदू' 'देपाळदे' मातू बीर सवीर —बी मा

मोटडो—१ देखो 'मोटडो' (रू भे)

२ देखो 'मोटी' (अल्पा, रू भे)

मोटनक—म०पु० [म०] एक वणें वृत्त, जिनके प्रत्येक चरण मे एक तगण, दो जगण, अत में एक लघु एव एक गुरु मे ११ वणें होते हैं ।

मोटम—सं०स्त्री०—१ बडाई, बहूपन ।

उ०—मोटम माम घरम्म री, करै होड सह कोय । 'पातम' ज्यू लग पछटना, हेन दुहेनी होय ।—किमोरदान बारहूट

२ महृत्य, विधेयता ।

३ गव, अभिमान ।

रू०भे०—मोटिम, मोटिम, मोटिम,

४ देखो 'मोटी' (रू भे)

मोटमति' मोटमती—वि०—बुद्धिमान, अकलमद ।

उ०—'मेघ' हरी तेग खरी, राज गति मोटमती । पाटपती देसपती, राड तणै लखपती ।—ल पि.

मोटमन—वि०—१ दाता, दानी ।

उ०—क्रीत खाटणा नमी 'कला' सुत कळीवर सवाया प्रवाड़ा दीह माजा । 'माल' सुत ताक आयो ज्यूई मोटमन, रेण मुरघर तणै कीघ राजा —द दा

२ उदार चित्त, सहृदय ।

उ०—रिमकोट हण जन श्रोड रजखण, मोटमन महाराज । तो महाराज रे महाराज, माहव मोटमन महाराज ।—र. ज. प्र

३ महत्वाकांक्षी ।

रू०भे०—मोटमन ।

मोटमरजाड, मोटमजाड—स०स्त्री०—१ स्वाभिमान ।

२ गवै, अभिमान ।

३ मर्यादा, प्रतिष्ठा ।

मोटवार—देखो 'मोटियार' (रू भे)

मोटर—स०स्त्री० [अ०] १ पेट्रोल, डीजल या कोयले से चलने वाली एक आधुनिक यान्त्रिक गाडी ।

उ०—कोयलडी री गीत सर हूयो । बाग रं दरुज मोटर री होरन वाज्यो ।—दमदोख

२ वैद्युतिक यन्त्र जिससे मशीनें चलाई जाती हैं ।

अल्पा०, मोटरडी,

मोटरडी—देखो 'मोटर' (अल्पा, रू भे.)

उ०—समदडी मोटी गाव हो अर उण दिना रेल मोटरडियां ही कोयनी । इण वास्तं भाडा भत्ता री कमी नही ही ।—रातवासी

मोटसी—स०पु०—पवार वंश की एक शाखा व इम शाखा का व्यक्ति ।

(बा दा ह्यात)

मोटाई—स०पु०—१ मोटा होने की अवस्था या भाव ।

२ किसी वस्तु की लबाई—चीड़ाई, नाप ।

३ स्थूलता ।

४ बहूपन, बडाई ।

५ उदारता ।

मोटापण, मोटापणी—देखो 'मोटाई'

उ०—दळथम हरी थयो दूससण, गहण भरिदा सारगह । मोटापण वाळो महाराजा, मोटी साकी कियो मह ।

—केसरीसिध सेखावत री गीत

मोटापी—देखो 'मोटाई'

मोटापत—स०पु० [स० मोट्टापिते] साहित्य मे एक हाव जिसमे नायिका अनुपम्वित प्रेमी के प्रति अपने आन्तरिक प्रेम को उच्छ्वा न रहते हुए भी प्रकट कर देती है ।

मोटिम—देखो 'मोटम' (रू भे)

उ०—१ हा सुदर सुख सागर, हा ! मोटिम भटार उ रे । हा रोहड़ कुल सेहर उ, हा ! गिरवा गण धार उ रे ।—कवि समय प्रमोद

उ०—२ माघ-प्रयोगि मानीह, भड भवदुख भाजति । मोटिम बारह मास महि, महा-पदवी छाजति ।—मां. का प्र

मोटिमल, मोटिमल-वि०—१ गर्व एव गौरव वाला, महान ।

उ०—इह उदयउ अविनपाल, अतुलबळ विसाल, मोटिमल मूखाल महिम धरो । कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्त्री अहिमद, दलइ दजणमद सुहृदवरो ।—व स

२ बीर, बहादुर, योद्धा ।

मोटिम-देखो 'मोटिम' (रु भे),

उ०—१ मोटिम मेरु मलिकह मुकुट स्त्री अहिमद उद्दम दमइ । अरिमुह दढा उछालतउ, असि गेडी रामसि रमइ ।—व स

उ०—२ अगां मांत मोटिम, सुपन सुचित सुत सुदर । आठ वरस अविहार कला अम्यास कुलोवर ।—कविधरम कीरति

मोटियार-स०पु०—१ पुरुष, आदमी ।

उ०—कठं ही लुगाया, कठं ही मोटियार कठं ही धाणिया, कठं ही गिवार, मेळी सो लाग रेंयो है । मगता री पांत भर कमीणी ज्ञात ल्यावो, ल्यावो कर रेंयो है ।—दसदोख

२ युवा, जवान, तरुण व्यक्ति ।

उ०—१ दोय जणा अक कईक ढळती मोस्था री अर एक मोटियार जिंके रें हाथ में लालटेण, वारणी खोल' र हृदबडावता खाथाखाता टुर पड्या ।—वरसगांठ

उ०—२ तूठं गोणेजी बूढा ठाढा डोकरा, तूठं भल मोटियारां मो । गाय गवाडे सीखें सांभळें, जिण री गोणेजी पूरें छैं आस ओ ।

—लो गो

उ०—३ तिण सू आ कहै म्हारी पती म्हारा बूढा पणा पहला मारीजसी इमो सूरमापणी दीसैं छैं ओर हू लारें सत कर सुरग मे पाछा तरुण मोटियार होय रहसा ।—वी स टी

उ०—४ सु आसथानजी री डेरी एके बाभण रें धरें । तिणगी वेटी मोटियार । तेंनू आसथानजी देख भर कहण लागा—जु आ विधवा छैं ? तद ब्राह्मण बोलियो 'राज' आ कूवारी छैं ।

—नैणसी

५ पति, खाविद ।

उ०—बखत री बात, मां मरें बीगी मोसी ही मरें । मोटियार मरघो अर बियरे लारें लारें वेटी भी आगीनं गैयो । बापही सूघो ओळी विधवा दोरो सोरो आपरो गरीब गुजराण करती गयी ।

—दसदोख

४ पुत्र, लडका ।

५ युवको के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सबोधन सूचक शब्द ।

उ०—१ फेर इण कुधर ने हीज पूछ्यो, आप ठीक पडसी । ताहरा कोटवाळ पूछियो—क्योकर मोटियार, कासू कहै छैं ?

उ०—२ तितरें साह कस्यो—रें कपूत, कासू कहै छैं, कैंरो वेटी छैं ?

ताहरां फेर कस्यो—थाहरो वेटी छू । ताहरां कोटवाळ कस्यो रे मोटियार, यू विचळियो क्यू बोलैं छैं ।—पलक दरियाध री बात

वि०—१ बीर, बहादुर ।

उ०—१ जैसिहजी बालक मोटियार फीज आछी सो जाफरखा उज्जीण सू कूच करनें नरबदा कन्है जाय पहुचो ।

—गौड गोपालदास री वारता

उ०—२ केसवदास आदमी बडो सचियार थो जलाल थो मरद मोटियार थो ।—मारवाड रा भमरावा री वारता

२ युवक, युवा, जवान ।

उ०—१ इसा मे आप नु खरळ री बोल याद आयो, जो म्हा कनां सावण री तीजा री कवल लीयो थो । तद कुवर मोटियारां नु पूछियो, जो तीज कद छैं ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ एक रजपूत रावतजी की हजूर रहै । जको आदमी तो पाधरी सो । पण मोटियार पगछटो सो ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

रु०भे०—मोटियार, मोटीयार, मोठ्यार, मोठियार ।

मोटियारपण, मोटियारपणी—स०पु०—१ पुरुषत्व, मर्दानगी ।

२ युवावस्था, जवानी, तरुणार्थ ।

३ इन्सानियत, आदमियत, मनुष्यता ।

रु०भे०—मोट्यारपणी ।

मोटोनींद-स०स्त्री०—महानिद्रा, मृत्यु, मोत ।

उ०—जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह । ब्रजपत रोटी वांटेणा, मोटोनींद म देह ।—बां दा

मोटियार—देखो 'मोटियार' (रु भे.)

उ०—१ म्हाको ती परणीजणी भव मार्य पड़ीयो नें मोटीयारां नें घणा ही नाळेर आसी, मोटी-मोटी ठोहां परणसी ।

—राध रिणमल री बात

उ०—२ रावळजी ती पूखता छैं नें निवो मोटीयार छैं ।

—वीरमदे सोनगरा री बात

मोटियारगाळी—स०पु०—युवावस्था, जवानी ।

मोटेरु, मोटेरी—वि० (स्त्री० मोटेरी) १ वृद्ध ।

२ जवान, बडा ।

उ०—बाभण-उपरि बापही ! एवढी मली न प्रीति । मोटेरु को मेलविषु, सुभ्र मनि मानिउ मीत ।—मा कां प्र.

मोटोडो—वि०—बडे वाला ।

(स्त्री० मोटोडी)

उ०—१ परस्या परस्या ए मा, मोटोडा थाळ । परस्या नणदा रा वाटका —लो गो

उ०—२ ए तो जीमैं मारा कोडिला साळाजी रा मोटोडा थाळ मे ।

—लो गो

उ०—३ राजी हुया काम मे रगडै, नाराजिया करै नुफसांन । छोट-कियां मोटोडा छोडो, मिळी सरीखा चाहो माण ।—चंडी दानसाहू



उ०—४ कठे वज्र बढवोर, कठे झाडी मोटोडी । कठे वोरटी नांव,  
वणी देवारी छोडी ।—दमदेव (स्त्री० मोटी)  
मोटी—वि० [म० महन् प्रा० मुह] १ बड़ा ।

उ०—१ घर गगाजळ धार, आणी तपकर ऊजळी । ओ मोटी  
उपगार, भागीरथ कीधी भुयण ।—वां दा

उ०—२ मोरी एक वहे मन मारण, फिर रहियो चोखां रं थाण ।  
मो घसवार लिया नित साथे, मोटां त्राम न राखे साथे ।—रा रु

उ०—३ घर चाडि मामी मिळे थाट मोट घडे, पिडवां सतवी  
तुर्ग पावर पटे ।—जालमसिध मेरतिपा रो गीत  
२ विद्याल ।

उ०—१ एक मोटा बढला साथे दोनां रो वासी हो । बढला रो  
साखां नाडी रा पांणी साथे लूमती ।—फुलवाडी

उ०—२ घोड़ी मोटी मन राख ! यू आपो काई खोवे । म्हें तो  
हाथी सू ई मवायो गाढ जाणती ।—फुलवाडी

उ०—३ म्हारी जाण में ऐ मोटा मोटा मास्तर थारें जेही काली  
मामियां ई रचिया दीस ।—फुलवाडी

उ०—४ चेजो करणियां चेजो करे, पांणी भरणियां पांणी भरें ।  
भण्यां-गुण्यां नै कळा-कारीगरी रो किमत सूर । मोटा ताजा नै  
टील सारू पसाई रो खोरसी भोजावे ।—दसदोख

१ जो मान, परिमाण आदि की दृष्टि से अधिक बड़ा हो ।

उ०—३० करी माळ रे मांय जाय कामी रो मोटी वाटकी लाई ।  
गुजरी चरी खांगी करन वाटकी दुळदुळती भर दियो ।—फुलवाडी  
४ जो अपेक्षावत बड़ा हो ।

उ०—१ मोटा पांणी, मोटी गाल, लाल-राती आख्या अर  
लियाट पर मळ ।—दमदोख

उ०—२ दोलटे टील रो रंगीली जुवान, चौडी छाती अर मुळकती  
मोटी मूढी ।—दमदोख

५ जो भावनाओं और गुणों में बड़ा हो । विशेष प्रकार के  
व्यक्तित्व वाला, उच्च, श्रेष्ठ, महान ।

उ०—१ मोटी दाता मगियो, तोटी भाजे तेण । कीजें नायर मेप  
पिल, तुई जवाहर जेण ।—वां दा

उ०—२ मनं समझ मोटी मिनम, जाचण आवें जीव । वो डउ  
जायें दिवम, वो दीजें मती दीव ।—ऊ का

उ०—३ ग्यामीत्री बोल्या-ये वही छी माधू ने लाहू खाणा नहीं  
तो देवपी रा पुत्रां लाहू बहिरया इम सूत्रां मे कही छे । जब ते  
बोल्या-ऊवें तो मोटा पुरम छा । जब स्वामीजी बोल्या-मोटा  
पुरम छे मा वलो साथे एज है ।—नि द्र०

७ जिनकी सम्बन्ध-चोटाई अधिक विस्तृत हो, जो क्षेत्र-विस्तार  
आदि दृष्टि में बड़ा हो ।

उ०—१ मोट पटगन रो धणी, नांव मुणता ही ठाकरा रो  
बाजरो गरगाट कर उठ्यो ।—दसदोख

उ०—२ पादू में एक भाये कही-हेमजी स्वामी रो पछेवही  
मोटी दीस । जद स्वामीजी लवपण चोडपण माप दिवाई ।

—मि द्र

८ जो पद या धन के कारण बड़ा कहा जाता हो ।

उ०—१ मोटा मोटा धनवंती बोलवा बोलण लागा के भाज  
दीवाणजी रं हाथा दुस्ती रो खातमी व्हे जावें तो मिरदर मिरदर  
सोना रा निगोट डंडा चाहेला ।—फुलवाडी

उ० २ सगाई रो हामल भरी है, जद व्याह नै भळें क्यू लारें  
छोडी हो । भळें कोई धाव में घोवी तथा साख मे घोवी मार  
नाखसी । मोटा मिरदार है, म्हासू ही कोई मोटी घर दबासी ।

—दसदोख

उ०—३ मोटां छोटा मुसदियां, वुलवाती दरबार । जसवत खातर  
जीव की, सारां लेती सार ।—ऊ का.

६ गौरवशाली, प्रतिष्ठित ।

उ०—कुळ मोटें बहुवा कुळ धुवा, मान महात्म निरवहे । कण  
सूप जिहीं धौगण तर्ज, गुण मोताहळ जिम ग्रहे ।—गु रु व

१० जो आयु की दृष्टिसे बड़ा हो, वयस्क ।

उ०—१ ओ करता मता रं वेटी नरवद मोटी हुवी छे । सु नरवद  
काळ पूछीयो, उपायो । सु नरवद दिन दिन जोर चढती गयो ।

—नैणसी

उ०—२ 'खगार' पण मोटी हुवी । वरम २० तथा २२ मांहे हुवी ।  
साहसी समाही ।—नैणसी

उ०—३ सु माह रो वेटी तो सारा ही धीठी । नानें सू मोटी हुवी ।

—पलक दरियाव रो बात

उ०—४ सोचो के जका माईत म्हनें धीस वरमां तक आपरी गोदी  
में पाळ पोम नै मोटी करी, वेटी गिणो चाहे वेटी गिणो वारें  
वास्तें तो सेंग म्हें डब हू ।—फुलवाडी

११ लम्बा, दीर्घ ।

उ०—१ एक मिणियारा रो हाट सू रुदराछ रा मिणियां रो  
मोटी माळा लाई ।—फुलवाडी

उ०—२ हरजीमल मेठ रागी थयो जद रुघनाथजी से उरजोजी  
साधु मोटी ओळियो नेइ वांचवा लागी ।—मि. द्र.

१२ जिनका धनत्व बड़ा हो ।

१३ जिनकी गोलाई बड़ी हो ।

१४ जो महीन पीसा हुआ न हो, बुरबुरा, दरदरा ।

१५ महत्वपूर्ण, विशेष ।

उ०—१ ज्यांरा मोटा भाग जग, मोटा किरतब मन्न । वां हदी  
आसा परें, खोरोती खटग्रन्न । वां दा

उ०—२ कही के भाई रा ऐ समचार सुणियां कीकर ठबणी  
भावे । चीनिजरियां एक दूजा रो ठणियारी देख ले तो मोटी बात ।

—फुलवाडी

१६ अहकारी, घमडी ।



४०—अपणै आपन मोटो मिनख मानतो थको सासरै री पाणी नी पीयै ।

१७ गभीर, गहरा ।

१८ असाधारण, कठिन, भारी ।

४०—१ नरनाथ जाण राखै निजर, बाण वखाणा विसतरै ।  
ब्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै ।—रा. रु

४०—२ खोटै टोटै नग कणिया वीखरगी । माहव मोटै दुख जाटणिया मरगी ।—ऊ का

१९ अखरने वाला, खटकने वाला ।

४०—१ सासरियां पेट माथै लात मारन कहाँ—राड, हाल भग-  
वान री नाव जीभ माथै लेवती डरै कोनी । मोटो पाप करता तो  
हरी ई कोनी, भवै कुल री लाज बचावण वास्तै इण नाकुछ काम  
सू डरै ।—फुलवाडी

२० खास, असल,

४०—घर रा माईत जिएनै आप री बेटी जाणै, उण हूबोहूव  
छणियारा वाला मोट्यार नै आपरो घणी मानणा मे काई सकौ ।  
छणियारी अर रग-रूप ई तो सगळा नाता री मोटी पिछाण ।

—फुलवाडी

२१ अत्यधिक, बहुत ।

२२ प्रसंशनीय ।

४०—राजभगीरथ राम, जुजठल जस जण जण जपै । कीचा मोटा  
काम, नाम रहै जेहल नरा ।—बा दा

२३ तुलनात्मक दृष्टि से जो किसी से बढकर हो ।

४०—१ नसा मे झूमती राजकवर रग-मैल में आयी । वामणी  
वीरप रै सागै सात मुद्रा मे ऊभी ही । मनांग्याना विचार  
करियो के आप सू मोटो जम विरोवर । लाज वेचणा बिचै मरणो  
वाजिव है ।—फुलवाडी

४०—२ थानै हजार बार समझाया के रिपिया सू मोटो तो राम  
ई नी है तो ई हाल थारै समझ मे नी आई ।—फुलवाडी

२४ ज्येष्ठ । (ह ना मा)

४०—पाद तणो परधान, गादरी साप्रत मोटो । अमुभ चले को  
अनुग, मूत री माई मोटो ।—ऊ. का.

२५ खतरनाक ।

४०—आज अपारी इण दुनिया मे लुगाई री मोटो दुस्मी मिनख रै  
सिवाय कोई दूजो कोनी, आ वात सूरज सू ई वत्ती साची है, पण  
तो ई आ दूजो वात ई इण सू कम साची नी है के मिनख बिना  
लुगाई री जमारो साव अकारथ अर विरथा है ।—फुलवाडी

२६ अधिक दिनो का, पुराना ।

७५०—मोटो घी ।

२७—भारी, गरिष्ठ ।

४०—तळाव पाणी पीवै । खूटै साहरा कोहर १ बावीयो छै तठै  
पीवै । पाणी मोटो । जाट बाणीया वसै ।—नैणसी

२८ जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली ।

४०—फौजा लगस नेजिया फरहर, घरहर दवागळ दल घेर ।  
कोटा मोटा कळह केविया, 'जोधा' हरी करै जुघ जैर ।

—सादूळजी खिडियो

रू० भे०—मोटइ, मोटउ, मोठउ, ।

अल्पा०—मोटको, मोटडी ।

मह०—मोट ।

मोटो—ताजो—सं० पु० यो०—दृष्ट-पृष्ट ।

४०—झोटियो—बोह्यो—नानाण जावण दै, दूध मळाई पीवण दै,  
घी अर वटिया खावण दै, मोटो—ताजो होवण दै, पछै खाजै ।

—फुलवाडी

मोटोघणी—सं० पु०—ईश्वर ।

४०—सारै काज सदीव, धारै ज्यू मोटाघणी । जितो विचारै जीव,  
पार उतारै तू 'पता' ।—जैतदान बारहट

मोटोघप—सं० पु०—राजाश्रो मे बडा राजा, सम्राट ।

मोटोमालक—देखो मोटोघणी'

मोट्यार—देखो 'मोटियार' (रू भे)

४०—१ जाती तो आवै थारै दूर का सावळिया मोट्यार । वावा  
बजरगजी री वगली हृद वण्यो ।—लो गी

४०—२ मोट्यार चग ले र गाव रै वारै गोरमे जाय पूग्या अर  
लुगाया चांवटो माथै ले लियो ।—रातवासी

४०—३ वा आपरै मोट्यार री राज मे पग मानती, गाव भर री  
टग जाणती । पण वं सै वाता सफा कूडी नीकळी ।—दसदोख

४०—४ काटण नै किरसाण, वखत-बळ भाखा लागै । वाया  
नाखै वाळ मिलै मोट्यारां सागै ।—दसदेव

मोट्यारपणी—देखो 'मोटियारपणी' (रू. भे)

४०—वीद मिनखा जैडी मिनख हो । नी घणी रूपाळो अर नी साव  
कोझी । भर मोट्यारपण ई व्याव विहयो पण व्याव री अणूतो कोड  
नी हो ।—फुलवाडी

मोठ—सं० पु० [सं० मकुण्ड, प्रा० माठठ] १ मूग की जाति का एक  
द्विदल अन्न ।

४०—१ जाट वाणिया रजपूत बांभण वसै । घरती हळवा २०० ।  
बाजरी मोठ हूवै । खेत कवळा ।—नैणसी

४०—२ पळकती घबळ दूधिया वत्तीसी, जाणै ममोलिया रै  
विचाळै मोती परळाट करै । थोडी रै माय मोठ मावै जितो ऊडो  
खाडो ।—फुलवाडी

२ उक्त अनाज का पीवा ।

४०—१ म्है अर थारा महाराणीजी खेत री माठ मावै सूवर अर  
भाचरिया नै मोठ चरावता हा ।—फुलवाडी

४०—२ देखतां देखतां खेत ती मोठा री हरियाळी मू लीलाणी ।

—फुलवाडी

३ देखो 'मोट' (रू भे)

(iii)  $\lim_{n \rightarrow \infty} \frac{1}{n} \log \left( \frac{\lambda_n}{\mu_n} \right) = 0$ .

मो'णी, मो'बी—देखो 'मोहणी, मोहबी' (रू भे)

मोत—देखो 'मोत' (रू भे)

उ०—१ हाता ठाली हालणी, जांभी सपत जोड़। मोत सरीखी मनख रै, खलक महीं नह खोड।—बा दा

उ०—२ कळ चाळो कळ अगळो, 'रूपी' रांमचदोत। अमी सवारण आपणां, मेछा कारण मोत।—रा रू

मोतविल—वि० [अ० मुअतदिल] जो न बहुत गरम और न बहुत ठंडा हो।

मोतवर, मोतविर—देखो 'मातवर' (रू भे)

उ०—१ खीवसर गांव री मोतवर अर इज्जतदार चौधरी इण तरं सू बुरी हालत मे पढ्यो हौ के उणरें गाव री पूनमी नाई जो काले ईज सहर आयो हौ उठोनं सू गुजरयो, उणं चौधरी न ओठख लियो।—रातवासो

उ०—२ नायक देस में मोतविर सबळा मेलं जका भला आदमी मली चाल मे होय अर साचो सीलवत निरलोभी होय।—नी प्र

मो'ताज—देखो 'मुहताज' (रू भे)

उ०—सोनजी री कडूवी गांव में आखें आयो हुयग्यो। मरतक भहग्यो। दाणें-दाणें रा मो ताज हुय रेंया है।—दसदोख

मो'ताजखानो—स० पु०—गरीबो या याचको को दान देने का स्थान।

मोताद—स० स्त्री [अ० मुअताद] १ निश्चित मात्रा।

उ०—सवा सेर धिरत, दोय सेर चीणी खांड, च्यार सेर गेहू री आटो परभात रा, आयण री दससेर चावला री खीचडी, एक सेर धिरत इतरी मोताद नित री करदी।—सूरे खीवकांघलोत री बात रू० भे०—मोताद, मोहताद।

मोताहल—स० पु०—१ तारा।

उ०—मोताहल स तळ हुवा, रेंण गळती दीठ, प्रात विछोही सजना, उठी विरह भगीठ।—पना

२ एक प्रकार का हाथी।

रू० भे०—मोताहल।

३ देखो 'मुक्ताफल' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ दुय गिरि चदण अठार, वरें जळवव मोताहल। सेर एक सोअत्र पच रूपक भाळाहल।—नैणसो

उ०—२ मोताहल उत्तारि माळ तुळछी गळ धारें। करें तिलक अत्यका, तिलक कूकम वीमारें।—रा रू

उ०—३ कमळ पत्र कर चरण कठ मोताहल माळा। प्रवित अग-मन चग, गग जाणें जळघाग।—गु रू व

उ०—४ हस सुखाळो मानसर, चुगि मोताहल खाय। हरीया दूजा ना भखें, लाघणियो रहि जाय।—छी हरिरामदासजी महाराज

मोतिहो—देखो 'मोती' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ घोडो तो भीजें घरमी हांसलो, मोतीहें जडी लगाम ओ। जांमी विराजें घरमी रें केसरिया, पांच मोहर गज पाग ओ।

—लो गी

उ०—२ आउवा ने आसोप घणिया मोतीहां री माळा रे। वारें'

न्हाकी कूचिया तुडावी ताळा रे भगडो आदरियो।—लो गी

मोतिणहार—स० पु०—मोतियो का हार, माला।

उ०—अदभुत रचि सोल स गार उरि, मनोहर मोतिणहार। गीत गान कठि मधुर, आलापति चरणि लागइ।—स कु

मोतियदाम—स० पु० [स० मौक्तिकदाम प्रा०—मोत्ति अदाम] एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार जगण होते हैं। (रा रू)

रू० भे०—मुत्तियदाम, मोतीदाम, मौक्तिकदाम।

मोतियमाळ—स० स्त्री० [स० मुक्ता—माल] मोतियो की माला। हार।

उ०—अणें पग सिद्ध सातूं मुनि भाळ, मेल्ले पग मांणक मोतिय-माळ।—ह र

मोतिया—वि०—१ मोती सम्बन्धी।

२ मोती जैसे रंग का।

३ मोती के आकार का

स० पु०—१ मोती के समान रंग वाला वस्त्र।

२ हल्का गुलाबी रंग, जिसमे हल्की गुलाबी भाई के साथ कुछ पीली भाई दिखाई देती है।

३ एक प्रकार का दानेदार सलमा।

स० स्त्री०—४ एक लता विशेष जिसकी कली का रंग मोती जैसा होता है। इसका इत्र बनता है।

मोतियावध—देखो 'मोतियाबिंद' (रू भे)

उ०—सो रूप गुणा कर निपट अवल पण आख्या सजम मोतिया-वध सो क्वारी वेटी घर मांहे।—कुवरी सांखला री वारता

मोतियाबिंद—स० पु०—नैत्र का एक प्रसिद्ध रोग।

वि० वि०—इसमे नैत्र के पर्दे पर मांसादि तत्वों की एक झिल्ली बन जाती है और रोशनी पर छा जाती है। इससे आख से देखना बंद हो जाता है। इस झिल्ली को शल्य चिकित्सा द्वारा हटाया जाता है।

रू० भे०—मोतियावध।

मोतियो—१ देखो 'मोती' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'मोथियो' (अल्पा, रू भे)

मोतीड, मोतीडो—स० पु० [स० मुक्ता+अड] गाय व भैंस के प्रसव के समय वच्चे से पूर्व निकलने वाला एक पानी का गोला। इसकी झिल्ली बहुत पतली होती है और यह बाहर आते ही फूट जाता है।

मोती—स० पु० [स० मौक्तिक प्रा० मोत्तिअ] १ छिछले समुद्र या रेतीले तटों के सीपों से निकलने वाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न।

(अ मा, नां मा, ह ना मा)

उ०—१ मणिया रयण अमोल, रोप अणियां मोती रुख। मोहत वणिया सीप, मिळें असिवर फणियां मुख।—व भा

उ०—२ नीर निरासा सीप मुख निजकण मोती होय। पेम उदै भई भातमा, हरिया हरि सुख होय।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

पर्या०—आधिकृभ, उदकज, गुलका, जळज, दघिज, धीरठमख,

प्रवत, मुक्तज, मुक्ता मुक्ताफळ, रखत, रंम, रमउद्भव, मसगोत,  
मारग, मीपमुत मुक्त, मुक्तज स्वात, हम-भव ।

२ एक प्रकार का आभूषण । (अ मा)

३ घोड़े का रंग विशेष या इस रंग का घोड़ा ।

उ०—मोती सुरग कमेत, लखी भवलख फुलवारी । रंग जडाव हम  
रंग, हरी मुनहरी हजारी ।—सू प्र

४ रहस्य सम्प्रदाय के अनुसार मन ।

५ वमेरा का एक उपकरण ।

६ जागीरदारों अथवा श्रमार्थों के लड़कों को सम्मान पूर्वक सम्बो-  
धन करने का एक शब्द ।

७ मधेद, द्रवत । (डि को)

८० भे०—मुगति, मुगती, मुगतीक, मुक्ति, मुत्ती, मोती ।

श्रुत्पा०—मोतिहो, मोतियो, मोतीहो मोतायहो ।

मोतीप्राणाङ्क-स० पु०—बूढ़ा के लड़क, एक मिष्टान्न ।

उ०—महोज्वला ईमा मेवईमा लाहू, मोतीआलाहू दल लाहू, बीवा  
लाहू, भगर लाहू ।—व० स०

मोतीपडी-स० पु०—१ हाथों में पहनने का स्वर्ण कगन जिसमें मोती  
लगे हों ।

२ मोतियों का हार ।

मोतीडो—देखो 'मोती' (श्रुत्पा., रु भे)

उ०—१ जीही-दीघा मेगल मोतीडा, लाला, दीघा हयवर हार,  
जीही-दीघा सोनो सावहू लाला, दीघा शरथ भडार ।—जयवाणी

उ०—२ सोन सुरगी चूनही चमक, मोतीडां री माळा दावणी ।  
—रसीलराज रा गीत

मोतीचूर, मोतीचूर मोतीचूरि-स० पु०—१ मोती के आकार की बूंदियों  
का वधा हुआ मट्ठा ।

उ०—१ नवमडिया बाजोट मायें सोना रा पाळ पें मोतीचूर रा  
लाहू परसिया ।—कुलवाही

उ०—२ दोनू ईं श्रेकण मार्ग हचटा देय आप रा हाथ छुटाया ।  
मोतीचूर रा लाहू चिगळतीं जबाव दिया—मुख म्हें के थे ।

—कुलवाही

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—जरजरी मलवारी लाहूरी घघोतरी भमरी गगाफारी मोती-  
चूर टमर नमर रल कवल छाटल मक्कल भगल माउला उर-  
नामा ।—व म

मोतीचोखड़ी, मोतीचोखड़ी-स० पु०—कान का एक आभूषण विशेष ।

मोतीज्वर-स० पु०—एक प्रकार का ज्वर, मधुरज्वर ।

८० भे०—मोमीभरी, मोतीभरी ।

मोतीभरी, मोतीभरी-स० पु०—१ देखो 'मोती ज्वर' (रु भे)

मोतीशम-देखो 'मोतियशम' (रु भे)

उ०—२ सहस्र विनव सौ रूप सुभ वलि छावीस बताइ । दीस  
मोतीशम रं प्रघट जगण चत्र पाय ।—ल. पि

मोतीनोलो-स० पु०—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा । (शा हो)

मोतीपाक-स० पु०—एक प्रकार का पकवान जो बूढ़ी और दूध के मावे  
से बनता है ।

उ०—मिसरी मोतीपाक भुरटरी इतरी खोडी । रस गुलिया रं रूप  
मधुर है होडा होडी ।—दसदेव

मोतीपुड, मोतीपुडी-स० पु०—शूक्ति या सीप के अन्दर का वह स्थान  
जहाँ पर लाल, पीली व हरी भाई पड़ती हो ।

उ०—तठा उपरायत पुराण अगरी री चिकायो सूघो मगायजें छे ।

सीसी खुलें छे । मोतीपुड री सीप रा प्याला मे घात हाजर कीजें  
छे सूघो बगला लगायजें छे ।—रा सा स०

मोतीवेल-स० स्त्री०—वेल का एक भेद, मोतिया वेल ।

मोतीभात-स० पु०—एक विशेष प्रकार का भात ।

मोतीमाळ, मोतीमाळा, मोतीयमाळा-स० स्त्री०—१ मोतियों की माला,  
हार ।

उ०—वागा वेस सोहामणा, भूखण मोतीमाळ । कनक कचोळा  
जडाव रा, सुदर सोवन थाळ ।—ढो मा

२ बत्तीस मात्रा व २४ वर्णों का एक छन्द विशेष, जिसमें आठ  
जगण होते हैं ।

उ०—करि अठ जगण वत्रीस कळ, वरण बीस चत्र विद्धि । गति  
इणि मोतीमाळ गुण, पणि लखपत्ति प्रसिद्धि ।—ल. पि.

मोतीयडो—देखो 'मोती' (श्रुत्पा., रु भे)

उ०—थाट करु करि कनक मड, सखी मोतीयडें पुरु चूक कि ।  
—का दे. प्र

मोतीयो—देखो 'मोती' (श्रुत्पा., रु भे)

उ०—१ गुळदारक मेतीयो, हस हरीगत मोतीयें तीतर मार वसं ।  
भवलख कवूतर लखीयो, ऊजळ वोद वीलाधीयें वोर वसं ।

—किसनजी दघवाडियो

उ०—२ हरि जळ वूठी मोतीया, हरीया सिर सिख राह । सुगणा  
मोती चुणि लिया, हाथि नही निगुणाह ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

३ देखो 'मोतियो' (श्रुत्पा. रु भे)

मोतीसर-स० पु०—एक जाति या वर्ग जो चारणों के याचक होते हैं ।  
(मा म)

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

मोतीसरी, मोतीसरी, मोतीहरि-स० स्त्री०—मोतियों की माला ।

उ०—१ ललाटि तिलक, कने भलक, बाहें बलय, मंगुलि मंगुलि-  
यक, कठि कठिका, गलड हार, माथि मोतीसरी, हृदय सोवरण  
वत्तिरि, हाथें ककणरय भलत्कार ।—व म.

उ०—२ जठ सूकी तुहइ बुलसिरी, जठ बीघी तुहइ मोतीसरी ।  
जठ दुहलू तुहइ गगाजल जाणि, जठ थोडी तुहइ सपुसि वाणि ।

—नळदवदती रास

उ०—३ पिक्क कठ मोमति चीठ परठे, सघण वण मोतीसरी । पर-  
वध हीरा जडित पाखळ कुमम माळा सकरी ।—मा वचनिका  
मोतीहार—सं० पु०—मोतियो का हार ।

उ०—कुंडल कानि सोमइ, मोतीहार कठ कदलि विवेक हीइ अनइ  
घरम हनइ सयोगि ।—व स

मोती—स० स्त्री०—१ मृत्यु ।

उ०—घर त्याग करण परघर विघन, आठू पहर ऊघारिया । जीवनें  
देत मोता जिंके, पोतादार पघारिया ।—ऊ का

२ देखो 'मोथी' (रु भे)

मोद—स० स्त्री० [म० मुस्ता] १ एक प्रकार की घाम विशेष । (उ र)  
२ देखो 'मोथी' (मह रु भे.)

मोथाव—स० पु०—१ इनाम, पुरस्कार ।

उ०—मीठा—मीठा मूण—पठ्ठा मतीरा राजाजी ताई पुगार्वं अर  
मोथाव पावें ।—दमदोख

२ धन्यवाद, वाहवाही । शावामी ।

उ०—१ गांव में पूरी भेद भाव पाळें है । ऐरा मेरा नयू खैरा लोग  
वारणें बैठ्या चुगली करे चौंचका मारें है । सरपच सू मोथाव  
पावें, नाभून कमावें है ।—दसदोख

उ०—२ भोळा भोळा वाल करे रोळा रुडकावें । भोळा भर घर  
लाय, मुदिन मोथावा पावें ।—दमदेव

मोथामाळ—प० स्त्री०—१ जैमलमेर राज्य का एक नामान्तर (व्यग्य) ।  
२ मूर्ख—मण्डली ।

मोथियो—स० पु०—१ एक प्रकार का वारीक घास, जिमकी जड मोती  
के समान व मफेद होती है । खाने में बड़ी मीठी होती है ।

उ०—गूदा, गूदिया, आमलियां, गेगणियां, डाणिया, धोतोला,  
मोथिया, केडुला, खोधा, मामालूणी, काचरा, काकडिया खरवूजा,  
अर मतीरा वास्तं तडफा तोडती —फुलवाडी

रु० भे०—मोतियो, मोतीयो ।

२ देखो 'मोथी' (अल्पा, रु भे)

मोथू—देखो 'मोथी' (रु भे)

मोथी—वि०—१ मूर्ख, नासमझ अनपढ़, गवार ।

उ०—१ लोग मागडो न कह्यो—मोथा कना सू नाभी कावळ ढायो ।

कीं तो म्हानें ई बट दे । म्हे थारी मिळती मारी ही ।—फुलवाडी

उ०—२ तो मोथा रामचदरिये—री हाटरी लच्छामात क्यों लायो  
नी ? —वरसगाठ

२ डीला, सुस्त ।

स० पु० [स० मुस्तक] १ नागर मोथा नामक घास व इस घास  
की जड ।

२ सूघर, बराह ।

उ०—गिड गरुवी घांगमण न आर्वं, सब हमारें माह सग्राम ।

मोथी माल चरें नर मोटा, गंड मूळें मूळें वह गाम ।

—रावमलीनाथजी की गीत

रु० भे०—मोती, मोथू ।

अल्प०—मोथियो ।

मह०—मोथ ।

मोद—स० पु० [स०] १ आनन्द, प्रमदता, खुशी, हर्ष ।

( अ मा, ह ना. मा. )

उ०—१ अदे सोध अवरोध अचाणक, वोव मोद विमराए । प्राण  
नाथ हा नाथ जोधपुर, गोव सोव गणणाए ।—ऊ का

उ०—२ अर मातामह री सभा रें अदर दोहित्र कुमार प्रथीराज  
नू देखि मोद पायो ।—व. मा.

उ०—३ वरस चतुरदस है वन मे विचरण, म्हानें पिता वचन—  
परवाण । आग्या आगे हे माता म्हानी मोद सू ।—गी रा  
२ उत्साह, जोश ।

उ०—१ वीरा काज वणावियो, 'वाकै' वीर विनोद । बघसी  
सुगिया वाचिया, मन मै वीरा मोद —ऊ का

उ०—२ इक कहत मोइ अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह । जळ  
गहर सागर जोर, तिण वीच थाह न तोर ।—रा रु

उ०—३ जे नरक मे ही उठ जावें सो देखे—देवता अर होरा—डाहा  
नै नीं भूलें । डम कांमा मे घणें मोद सू मालें ।—दसदोख  
३ गर्व अभिमान ।

उ०—१ ठकराणी वेचेतें होय गुडगी । ठाकर'नै मोद विह्यो के  
ठकराणी कित्ती पतिव्रता अर मुलखणी । घणी रें जोखा री वात  
सुणता ई सुव बुध पातरणी ।—फुलवाडी

उ०—२ धनरी मोद आयग्यो, मनडो उघाड खायग्यो । जाट,  
पूरतो आदमी, लपोढी'र जिद चेते आयग्यो । वम विना वस नीं  
कटे । आ सोच बैठ्यो ।—दसदोख

४ मान प्रतिष्ठा, गौरव ।

५ सुगंध, महक ।

[सं० मद] ६ शराव मदिरा ।

उ०—सो किए माति रो दारू । डलटें री पलटें पलटें री ऐराक,  
अंराक री वंराक, वंराक री सदळी, सदळी री कदळी, कदळी री कहर  
कहर री जहर, जहर री कटाव, कटाव री नेस, नेस री जेस, जेस  
री मोद, मोद री कमोद, कमोद री हूळ ।—रा. सा स

[सं० मधु] ७ शहद मधु ।

८ एक वर्ण—वृत्त जिसमे पांच भगण एक भगण एक भगण और  
एक गुरु होता है ।

९ हिरण्याण पक्ष का एक अमुर, जिमका देवासुर सग्राम के समय  
वायु ने बध किया ।

१० ऐरावत कुलोत्पन्न एक मर्ष जो जन्मेजय के सर्फ सत्र मे दण्ड  
हुआ ।

(स० स्त्री०) अनाज की भरी गाडी ।

मोदक—सं० पु० [स०] १ लड्डू नामक मिष्ठान्न ।

उ०—१ मधुकर भ्रमत सुवास मद, माल सुवाकर भास । मोदक

कर मन मोमय, नित जय ग्यान निवास ।—वा दा  
१०—२ मोदक दान भरी करी जी, मंदिर माहे धी नाय ।  
देवीरीमिह जटा जिमा जी, वेहराया उलटे जी भाव ।—जयवांणी  
३०—३ मोदकादि बहु चक्र मझारा । पाक अनै श्रवलेह अगारा ।  
—सू प्र.

२ किमी श्रीपवि का लट्ठ ।  
३ एक वर्ण—वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार भरण होते हैं ।  
४ एक वर्ण मकर जाति विशेष ।  
वि०—१ आनन्द-दायक, प्रमत्ता देने वाला ।  
२ उत्साह धर्क ।  
३०भे०—मोदिक, मोयग ।

मोदकर-स०पु० [स०] एक प्राचीन मुनि ।

वि०—आनन्द-दायक ।

मोदण-स०पु०—१ ईश्वर । (नां मा)

२ अनाज होने समय गाड़ी पर लगाया जाने वाला बड़ा कपडा ।

मोदणी, मोदवी—क्रि०अ०—१ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

२ उत्साहित होना, उत्तेजित होना ।

३ गर्वित होना अभिमान करना ।

४ महकना, गुगध देना ।

मोदणहार, हारी(हारी), मोदणियो—वि० ।

मोदिश्रोटी, मोदियोटी, मोद्योटी—भू० का० कृ० ।

मोदीजणी, मोदीजवी—भाव वा० ।

मोदिक—देखो 'मोदक' (रू भे)

३०—१ न लहड़ ममवाउ न लहड़ आस । महिया मोदिक तीह  
ना दाम ।—वस्तिग

३०—२ तेथीम कोडि देवता तणु प्रतिहार, सींदूरइमार, सेवथाभार,  
मोदिक आहार एहवा स्त्री गणेश वरणवीता मोमड ।—व स

मोदियवत्तभ—स०पु०—गणेश, गजानन

३०—प्रथम रग भरी गणनायक, प्रथम लांछण फलदायक,  
मङ्गलमोदिक, मोदिकवत्तभ जयति विजयति गणनाटक ।—व स

मोदियउ—स०पु०—एक वस्त्र विशेष ।

३०—वीणउसीउ धीणउसीउ मलरमीउ आउचीयउ मूगनउ मयउ  
मगलिक मेदियउ सीलउर ।—व म

मोदिघोटी—भू०का०कृ०—१ प्रसन्न या हर्षित हुना हुमा २ उत्साहित  
या उत्तेजित हुवा हुमा ३ गर्वित हुवा हुमा ४ महका हुमा ।  
(श्री० मोदियोटी)

मोदियो—स०पु०—१ गाड़ी पर लगाई जाने वाली घास फूस की वह  
पट्टी जिसके बीच में अनाज आदि कोई वस्तु भरी जाती है ।

२ उक्त गाड़ी में भरी हुई वस्तु ।

मोदी-म०पु० [म० महप्र] दान, चावल आटा आदि खाद्य सामग्री एवं  
दिगणे का सामान बेचने वाला न्यायारी

३०—१ एक हुमागी उण सारू न्यागी ई पाणी भर देसी । मोदी

रै अठा सू न्यागी सामान लाय देती । वामणी नीपचोप नै सुयगाई  
मू चौकी लगाय नै आपगी रमोई वणाय लेती ।—फुलवाडी  
३०—२ तठा उपरायत मोदियां नै हुकम हुवी छै । भूजाई सारू  
सारी बमत मोची मीठाण वेमवार मरव लेय राती—नाडी चालजयी ।  
—रा मा स

मोदीखानी—स०पु०—१ भोजन या खाद्य-सामग्री रखने का स्थान,  
रमोडा । भण्डार ।

३०—घोडा रो रातव दाणी, महीनदारां रो महीनी, मोदीखाने रो  
जिनम और ही साग लोगा रो सरजाम सरतत कर घोडा नू खुद रै  
नेत मोळाय, हाथिया नू गुठवाड रो वाड भोळाय आय गैरपहसा  
रहियो ।—ढाढाळासूर रो वात

२ मोदी की दुकान ।

३०—१ बाजार रे अपवीच गया । व्योपारी नै मोदीखाने सगाई  
मुकीमां रो दुकानां कन्है गया ।—गोड़ गोपालदासरी वारता

३०—२ बाजार रो लोग मोदीखानो पेसखानो कारखानो सारा  
लेय बहिर हुमा ।—कूवरमी साखला रो वारता

मोदीपणा—स०पु०—एक प्रकार का बैल (अशुभ)

मोदीलो—वि०—१ गर्विला, अभिमानी ।

२ प्रसन्न, खुश, हर्षित ।

मोदीख—स०पु० [म० मोदीप] एक आचार्य जो विष्णु के अनुसार  
वेददर्श नामक आचार्य का शिष्य था ।

मोनि, मोनी—देखो 'मून' (रू भे)

३०—मैं लख चौरामी धारि जोनि । का बोलत का गहत मोनि ।  
—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मोनी' (रू भे)

मोपा—स०पु०—राठीडों की एक उप शाखा ।

मोफत—देखो 'मुफ्त' (रू भे)

३०—की पर राज करै और कीरै घरा मोफत रो माल चरै ।

—दसदोख

मोफतियो—देखो 'मुफ्तखोर' ।

३०—मोफतिया डमा मोका मोज—मजा ही किया करै है ।

—दसदोख

मोव—स०पु०—प्रथम प्रभव ।

३०—मोव रो इण वेटी पछै दो भाया वळै ग्हिया । वै उठै ई दादी  
रै पायती रैगा ।—फुलवाडी

३०भे —मोम ।

मोवण—म०स्त्री०—१ प्रथम प्रभव की पुत्री, बड़ी लहकी ।

२ विवाह में लग्न के दिन कन्या के पिता के घर में रोपा जाने वाला  
गाहट का छोटा स्तम्भ, जिसके ऊपर मिट्टी का कुतहड़ रखकर पूजा  
की जाती है ।

३०भे०—मोमण ।



मोवत—देखो 'मुहब्बत' (रू भे)

उ०—१ मात पिता की छोड़ी मोवत, मोजा मेहडली । सात जात मोहा सू साधी, नाहक नेहडली ।—ऊ का

उ०—२ खेता अर पसुवा रा भगडा-भटा निवेडती, गाव मोवत रा न्याव-तपास निमटावती तथा आपरै सोलसतोख सू सगळा री सोरी-मोरी वणी रँती ही ।—दमदोव

मोबद, मोबिद-स०पु० [अ० मुअविद] १ पारसियों का धर्मोपदेशक, धर्मज्ञ ।

२ पुजारी, सेवा-पूजा या भजन करने वाला ।

मोबियो-स०पु०—एक प्रकार की मोटी मजदूर और अविश्व चोड़ी त्वपरल जो छाजन मे वडेरे पर मगरा' बांधने मे काम आती है ।

मोबिलग्रायल-स०पु० यो [अ] मशीन से चलने वाली मोटर, गाड़ी आदि वाहनों के काम आने वाला तेल मशीन का तेल ।

उ०—बनाजी थारी मोटर ने मोबिलग्रायल, जान्या ने सरवत प्याली, बनाजी थे आप पीवी भागडली चाबोना लूग सुपारी ।

—लो गो

मोवी, मोमी-स०पु०—१ प्रथम प्रसव का पुत्र, बड़ा लडका ज्येष्ठ पुत्र ।

उ०—१ हरसा मेरा वाला रँ, आवैली सावणिया री तीज । मेरा मोवी वेटा रँ, जग मे सिजारा रँ बाई का कुण करेला ।

—लो गो

उ०—२ इत्ता मे सब सू मोवी राजकवर मून तोड नँ दोनू छोटा-किया राजकवरां सामी देखनँ कह्यो—थँ दोनू हाल नंना टावर ही ।

—फुलवाडी

२ बड़ा भाई ।

उ०—१ आणा लेवणनँ श्रेष्ठला आया दरसण देवण नँ मोमी मुळकाया ।—ऊ का

रू०भे०—मोहमी,

मोम-स०पु० [फा०] १ मिट्टी के तेल से रासायनिक क्रिया द्वारा निकाला जाने वाला चिकना एव गाढा पदार्थ, जिसकी वस्तियाँ बना कर उजाले के लिये जलाई जाती है ।

उ०—जिण सिर बाहे खग वळ, देव सराहे जोय । सिलह अटक्का मोम सम, हुवँ वटक्का दोय ।—रा रू

२ शहद की मक्खियो द्वारा छत्ता बनाने का चिकना व नरम पदार्थ ।

३ यश, कीर्ति ।

४ भूमि, पृथ्वी ।

५ युद्ध ।

६ दयालु ।

रू०भे०—माम, मूम, मूम ।

मोमजांमो-स०पु०—वह कपडा जिस पर मोम का रोगन चढा हुआ हो ।

मोमदसाहिमोळियो-स०पु०—विशेष रंगों का एक साफा ।

उ०—दूजा दूजै वँस, निरमळ बागै काछ्यो । मूछां बळ सब सेस,

मोमदसाहिमोळियो ।—अग्यात

मोमदिल-वि०—जिसका दिल बहुत कोमल हो, सहृदय, भावुक ।

मोमन-स०पु० [अ० मोमिन] १ धर्म निष्ठ मुसलमान ।

२ इस्लाम और खुदा पर ईमान लाने वाला ।

३ जुलाहा मुसलमान ।

रू०भे०—मोमिन ।

मोमना-स०पु०—घोडो की जाति ।

उ०—अन्ने कम की तेजह अयाहि । मोमना चेचि कहि तुरंग माहि ।—सू प्र

मोमनी-स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सू किण भात रा वागा छँ? सिरिसाप भँव चौतार कसवी महमूदी फूलगार अघ-रस सेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेव ।

—रा सा. स

मोमबत्ती-स०स्त्री०—मोम नामक पदार्थ की बत्ती जो उजाले के लिये जलाई जाती है ।

रू०भे०—मू'बत्ती, मूबत्ती ।

मोमाखी-स०स्त्री०—मधु मक्खी ।

उ०—काळी चूदडो री टिपकिया पळाक पळाक करती ही । चूदडी ई साव नवो दीस । आ सोचनँ वो चोर उण पोटली ने सँडी पक-ठनँ जोर सू हचीड दियो । हचीड देता ई अलेखू मोमाखिया उण रँ दोळी व्हेगी । इण भात छिडियोडी माखिया उणनँ ठोड ठोड सू डम न्याकियो ।—फुलवाडी

मोमाळ-स०पु०—मामा का घर, ननिहाल ।

मोमिन—देखो 'मोमन' (रू भे)

उ०—सो मोमिन मोम दिल होइ, साईं को पहचाने सोई । जार न करै हुराम न खाइ, सो मोमिन वहिस्त मे जाइ ।—दाद बांणी

मोयण—देखो 'मोदक' (रू भे)

मोयण—देखो 'मोण' (रू भे)

मोयरेवार—देखो 'मायरादार' (रू भे)

मोयल-स०पु०—१ चौहान वंश की एक उप शाखा ।

मोयला-स०पु०—१ कुम्हारो की एक उपशाखा । (मा. म)

२ मिट्टी के बर्तन बनाने व वेचने का व्यवसाय करने वाली एक मुसलमान जाति ।

मोयली-स०पु०—(स्त्री० मोयली) १ 'मोयला' जाति का मुसलमान ।

२ मोयला जाति का कुम्हार ।

३ देखो 'महोली' (रू भे)

मोरचवोस-स०पु०—दातार के गुण गाकर आहार लेने पर होने वाला एक दोष । (जँन)

मोर-स०पु० [स०मयूर, पा०मोर] (स्त्री० मोरनी) १ प्रायः चार फुट लंबा एक अत्यन्त सुन्दर पक्षी जिसकी गर्दन लम्बी तथा छाती का रंग बहुत गहरा व चमकीला होता है । सिर पर किलगी बनी होती है, पक्षों पर चढ़ोवा बना हुआ होता है । (अ मा., न मा., ह ना मा.)



उ०—सुंदर सहस्र फणें करि नामली, दीपें मूरति दोइ । मेघ  
घटा न देखी मोर ज्यू हरवित मुक्त मन होइ ।—घ. व अ  
पर्या०—अहिंस, कळापी, कळाघतमडो, कुम, केकी, खग,  
घणुनादानुळ, घणमड, नीरदनादानुळ, नीळकठ, पनगसघार,  
भन्यपनग, बिखकर, प्रखत, प्रसणपनग, वरही, रथकुमार, ।  
वरहण, विरही, व्याळपळ, मारग, सिक्की, मिखडी, मिहंड,  
निम्बावळी, मुकळापग, मेनानीरघ ।

रू०भे०—मवर, मोरु, मोर, म्होर ।

अल्पा०—मुरली, मुरेली, मोरडी, मोरलियो, मोरली, मोरियो,  
मोरुली, मोरियो, मोरीयो, मोरघी ।

२ मुखमानों की एक जाति ।

३ रंग विभेप का घोडा ।

उ०—अध्वना चढ़वा मोर कूदणा भया किमोर । ऐगकी ऊन्हा  
अनल, नाडजी धारवी भलन ।—गु रू व

४ देखो 'मोर' (रू भे )

उ०—१ राजा रे मोरां रो घाव साजो हुवो ने बाळक मोटो हुवो ।  
—रा व वि.

उ०—२ पृचकारती वोन्यो—ही, माई ही । वळदा रा मोर थापल  
नै नीचें ठतरियो, ।—फुलवाढी

उ०—३ जोवा जोव जूटता अढार दीह भागा जोर, वूदी धान  
वागा जगी जंत रा विधान । जमी मोर लागा नीमा पय लागा ग्रह  
जेठी, जोरावर चौथो जेठी जांगियो जिहान ।

—ऊमेदमिघ हाढा री गीत

उ०—४ निजारी फूल रह्यो छे । गूदगरी, रांगरी, गुळवाढ री  
वाढा लाग रही छे । पग-पग नाळा—नीमरणा ग्रह रह्या छे ।  
पणा ही आवा-महुवां रा मोर नुन रह्या छे ।

—ढाढाळा मूर री वात

५ देखो 'मोहर' (रू भे )

६ देखो 'मोरा' (रू भे )

उ०—घद बघोर तणी परि, मान्यउ तू मन मोर रे ।—म कु

मो'र—देखो 'मोहर' (रू भे )

उ०—रुपियो—रुपियो दियो वामणा, मो'रां चारण भाट । अमी  
मो'र दो नानगमाही, मागो दियो जुहाय ।

—हूगजी जवारजी री छावली

मोरउ—देखो 'मोग' (रू भे )

उ०—१ घद मूरिज साच बहू, मोरउ जीवन जाणउ रे । जाणउ  
नइ आणउ वर वेगिइ करी ए ।—नळ दवदती रास

उ०—२ चतुर अग्रत रम मोरउ तड पायउ, बीधी कोटि मिलास ।

—स कु

मोरग—मं०स्त्री०—१ हन के नीचले भाग मे लगने वाला लोठे का एक  
वपकरण जिम्ना आका 'घी' (V) की तरह होता है ।

२ देखो 'मूरख' (रू भे )

रू०भे०—मोरक, मोरख ।

अल्पा०—मोरखा ।

मोरखो—देखो 'मूरख' (अल्पा, रू भे )

मोरडी—मं०स्त्री०—१ कच्चे मकान के छाजन के नीचे लगने वाली एक  
लकड़ी ।

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)(अल्पा, रू भे )

उ०—पण म्हारी आज दिन पलटघोडी हे । सोने नै हाथ घाल्या  
लो हुव । मोरडी हार गिट, म्हारी साता खोटी है । जद सोने री  
आस वयू रानू ! —दमदोख

३ देखो 'मोरी' (अल्पा, रू भे )

४ देखो 'मेरी', (अल्पा, रू भे )

उ०—मोगा साहिव हो स्त्री सीतननाथ कि, वीनति सुणि एक  
मोरडी ।—स कु

मोरडी—१ गेहू की वालों का गुच्छा जो भूनने के लिये बनाया जाता है ।

रू०भे०—मोरली ।

२ देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे )

उ०—तुम दरसण हो मुक्त मन उछरग कि मेह आगम जिम  
मोरडा ।—स कु

३ देखो 'मोरा' (अल्पा, रू भे )

उ०—तुम नामइ हो सुख सपति थाय कि, मन वधित फलइ  
मोरडा ।—स कु

मोरचदरका, मोरचद्रिका—मं०स्त्री० [मयूर चन्द्रिका] मोर की पंख पर  
होने वाली चद्राकार वृत्ती ।

मोरचांव—मं०स्त्री०—हल चला कर पूरा भेत जोत लेने पर उसके सिरो  
पर हल मोड़ने से रही हुई वाली भूमि पर विपरीत अर्थात् आड़ी  
खींची हुई रेखा (सीता) ।

वि०वि०—प्रान्त भेद से इसे जोतग, जोता व सेवरा भी कहते हैं ।

मोरचावदी—मं०स्त्री०—युद्ध मे शत्रु पर आक्रमण करने या शत्रु के  
आक्रमण को रोकने के लिये, जमीन मे खाई खोद कर या आड  
लेकर, सुरक्षा के लिये की जाने वाली व्यवस्था ।

उ०—च्यारू पामा मोरचावदी कर रह्या छे । इतरें जलाल जामूम  
मेल खबर मगाई ।—जलालवूवना री वात

मोरची—मं०पु० [फा० मोरचाल] १ वह खाई, आड या स्थान जो  
युद्ध करने वाले सैनिकों की सुरक्षा के लिये बनाया जाता है ।

उ०—१ विदा किया जिए वार, जोवकरि वीर जगाया । किलां  
मिरै बमवजां लडण मोरचा लगाया ।—सू प्र

उ०—२ तरें मुहणोत नैणमी बळरामजी कनै गया । तरां बळराम  
जी फिर नै मोरची दिखायो । नै कहण लागी आ जायगा छोडीयां  
वहाँ नहीं ।—नैणमी

उ०—३ सहम उर्म खुनिया खग मायें, मुड़िया मेछ दुरग चै मायें ।  
अनड तजै घरती घर आया, मिरजै फिर मोरचा मंढाया ।

—रा रू

२ किले या गढ के चारो ओर खोदी जाने वाली खाई, जिसमे लडने के लिये सैनिक छिपे रहते हैं।

उ०—१ कहायो—भाखरसी ये मोरचं दरवाजें एक पळीतें रहीया तुरक आवें ताहरा समचं—एकण पळीतें लगाया।

—राजा नरसिंघ री बात

उ०—२ दुरवंसैं मोरचो दबायो, इतरें 'अखो' मघावत आयो। बळ घरतो घोरपतो वेली, हुई जवन दळ घडी दुहेली।—रा रु

३ वह गढ़ा जिसमे बैठकर शत्रु पर गोली चलाते हैं।

४ ऐसा स्थान जहा अपनी स्थिति को ठीक बनाये रखते हुए निर्भय होकर रहा जाता हो।

उ०—भागवत कथा भूतावळी, हिरण दरस हीडोरचा। परवीण होय जाणूं पुरस, मालजादां रा मोरचा।—ऊ का

५ मुकाबिला, सामना।

उ०—आज कालें रा व्याह-सावा, एक अथोग घाफत री मोरचो है।  
—दसदोख

६ मुकाबले में खड़े होने का भाव।

७ लोहे का जग, जो नमी के कारण रासायनिक विकार से उत्पन्न होता है।

८ दर्पण का मेल।

रु० भे०—मुरचो, मोरछो मोरचो।

मोरछड़, मोरछल-स० पु०—वह लवा चवर जो मोर पख बाध कर बनाया जाता है। चवर।

उ०—१ लारें खवासी में मुखनस वंठी मोरछड़ करै है।—द. दा

उ०—२ तद खटीली उडी जठें राज दरबार कियो वंठी छै। अर नायण री माटी मोरछड़ करै छै।—चौबोली

रु० भे०—मुरछळ, मोरसल।

मोरछो—देखो 'मोरचो' (रु भे)

उ०—१ तिए पछें गोळ री लोक भी मोरछा मांढि तुपक तीरां री वेम्नो वणाइ पहर दोइ सूघो लडियो।—व भा

उ०—२ पढें केई किवाडा केई नीसरी बाहर पढें, सूर जमहर करै पढें साथ। पढें रिए वेहरी मुकद वाला सपोह, मोरछा, मोरछां पढें साथ।—उदेंभाण हरभाण गौड री गीत

मोरट-स० स्त्री० [स०] १ गन्ने की जड़।

२ एक प्रकार की घास।

मोरण-स० पु०—बाजरी के फच्चे या आग में सेके हुए सिट्टे को मसल कर चबाने के लिए निकाले हुए दाने। (वीकानेर)

मोरणा-स० स्त्री०—सारंगी में लगने वाली वे लम्बी खूटिया जो दो दांयी ओर तथा दो बांयी ओर लगी रहती हैं।

मोरणी-स० स्त्री०—१ सारंगी में लगने वाली खूटी।

वि० वि०—सारंगी की नली की दाहिनी ओर १६ मोरणियां होती हैं, माथे पर दाहिनी ओर दो तथा बाईं ओर केवल एक मोरणी होती है।

२ बाजरी के सेके हुए सिट्टे पर से दाने उतारने के लिए सिट्टे के ढांडे की बनाई हुई सूतनी जिससे दबा कर उक्त दाने निकाले जाते हैं।

रु० भे०—मोरनी,

३ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरणो-स० पु०—एक प्रकार सरकारी कर।

रु० भे०—मोरांणी,

मोरणी, मोरबो—१ देखो 'मोरणी, मोरबो' (रु भे)

उ०—घणां जु आंव मोरचा छै। सु एही तोरण। कमळ की जु कळी नोकळी छै। सोई कळस हुआ।—वेलि टी

२ देखो 'मोढणी, मोढबो' (रु भे.)

उ०—विनीत नीत वोन जे अनित बाघते नही। महा समूह मूह देखि मूह मोरते नही।—ऊ का

मोरणहार, हारो (हारी), मोरणियो—वि०।

मोरिओडो, मोरियोडो, मोरचोडो—भू० का० कृ०।

मोरीजणो, मोरीजबो—भाव वा०।

मोरत—देखो 'महुरत' (रु. भे)

उ०—१ कर कपाण मोरत किसू, आखें सूर अबोह। रण मर स्वरग सिधावणो, सु तो सुरगो दीह।—वा दा

मोरघज, मोरघुज, मोरघूज, मोरघूजी, मोरघ्वज-स० पु० [स० मयूर-घ्वज] १ रत्न नगर का एक पौराणिक राजा, जिसने ब्राह्मण वेप में अपने द्वार पर आए श्री कृष्ण व अर्जुन को अपना, मतान्तर से अपने पुत्र का शरीर आरे से चिरवा कर दान किया।

उ०—१ धू कवार अप मोरघुज, अबरीक हरिचद। पद सेवा परि पढवा, की नव कोट नरिद।—रा रु

उ०—२ जिण भूखी आत्मा हित आपरे वेटा नू चीर सिंह नू खुवायो सो मोरघ्वज अक्षय पुण्य यश पायो।

—साह रामदत्त री वारता

उ०—३ मोरघूजी महाराज था जन सचा हरका, करवत हत्या वहर के दिय सीस कवरका।—दुरगादत्त वारहठ

२ जोधपुर के किले का नाम।

मोरनदेवी-स० स्त्री०—नमक बनाने वाली खागवाल जाति की इष्ट देवी। (मा म)

मोरनाच-स० पु०—नृत्य का एक भेद विशेष।

मोरनी—१ देखो 'मोरणी' (रु भे)

उ०—हरीया जत्री जत्र विन, वाजें तार अखड। विन तूबा विना मोरनी, घोर पढें ब्रह्मड।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरपखी-स० स्त्री०—१ मोर के पख की तरह बनी हुई व रंगी हुई नाव।

२ मलखम की एक कसरत।

वि०—१ मोर के पख का बना हुआ।

२ मोर के पख के समान।

मोरमीठली, मोरमीठो, मोरमीठी—१ स्त्रियों के मिर का एक श्रावण ।

उ०—घर उड़ाउ मुग्गिया-रत्ता वाली मोरमीठया —वरसगाठ  
२ स्त्रिया के मिर के वाला की गुथी हुई लटिका ।

मोरमुकट मोरमुकुट मोरमुगट—स० पु० [स० मयूर+मुकुट] मोर की पत्थो का बना मुकुट, ताज ।

उ०—१ मोरमुकट वन माल माल तुलसी नव मजर । रुचि कुहल  
पल रतन, तिलक मजुल पीतावर ।—रा रु

उ०—२ मोरमुकट पीतावर माहे ओढे लाल दुमाला रे । मोरों के  
प्रभु गिरघर नागर, नगतन के प्रति पाला रे ।—मीरां

उ०—३ मोरमुकुट पीतावर मोढे गले वंजती माळा । मीरा के  
प्रभु गिरघर नागर ठाकुर वमीवाळा —मीरा

उ०—४ सप चक्र गदा पदम धारि । वंजयती माळ मोरमुगट  
कुहल विमाल मदन मोहन कमल लोचन म्याम सुंदर ठाकुर विराज  
मान हुआ छै ।—वचनिका

उ०—५ मोरमुगट राजै कर मुग्गी । तरह भामरौ तास तण्णि ।  
—ह नां मा

मोररय—स० पु० [म० मयूर रय] स्वामी कार्तिकेय ।

(ह नां मा , ना मा )

मोरलियो—देखो 'मोर' (अल्पा, रु भे )

उ०—हां रै रुम रुम रुम नूपुर वाजै, हा रै मारी मन मोहयो  
मोरलियो रे ।—मीरां

मोरली—देखो 'मुरली' (रु भे )

मोरली-वि०—१ देखो 'मोर' (अल्पा, रु भे )

उ०—मोरला गोरी घण वरज्या ते न जाय वारी घण वारी श्री  
हृजा । भा रत बोलै ऐ मोरला मुहावणा जो राज ।—लो गो

५ देखो 'मोहो' (रु भे )

मोरमल—देखो 'मोरछट' (रु भे )

मोरसिया, मोरसिया-सं० स्त्री० [म० मयूर+सिया] १ मोर की  
चोटी । (उ र )

२ एक जड़ी विशेष, जिसकी पत्तिया मोर की किलगी के आकार  
की होती हैं । (उ र )

मोरमिरी—देखो 'मोनमरी' (रु भे )

मोरा-मवं०—मेरा ।

उ०—आलम मोरा घोणुणां, साहिब तूफ गुणाह ।—ह र

रु० भे०—मार, मोरव, मोरहो ।

मोराह, मोराह—देखो 'मुराह' (रु भे )

मोराबीन-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—मोराबीन रो लैषो, गुलाबी चोर घर ममूल चोली रो सोणी  
नरान ।—दमदीन

मोरादे, मोरादेयो—देखो 'मरदेवी' (रु भे )

उ०—१ मोरादे भारया पुत्र रिखमदेव । रिखम देव भारया—२  
सुनदा १ सुमगळा २ ।—रा० वसावली

उ०—२ एहवी स्त्री अखभ तणी माता । मोरादेवी सुखे सुखे  
मिवपुर पहुती ।—जयवाणी

मोराद, मोरादी—देखो 'मुरादी' (रु भे )

उ०—१ पाहव दूत मोराद —घरम पत्र

उ०—२ गाया गवाळी कानी काली वमी वाली वे हारी । भाभां  
भाभी प्रिथी प्रांभा मोटी भांभा मोरारी ।—पि प्र

मोरियो—१ देखो 'मोरघ' (रु भे )

२ देखो 'मोरी' (रु भे )

मोरियो-स० पु०—गाय या भैम के वच्चे के मृन शरीर का खोल, जिसमे  
मसाला भर कर रखा जाता है ।

२ एक मारगडी लोक गीत जो पृथी की विदाई के समय गाया  
जाता है ।

रु० भे०—मूरियो, मोरघो ।

३ देखो 'मोर' (अल्पा, रु भे )

उ०—१ मोरिया यागा-वागां जायनै, काची कुळिया लायी नै, घन  
मोरिया —लो गो

उ०—२ मोनल रो हेली सुगताई नाडी रा सगळा मोरिया  
कुरळावण लागा ।—फुलवाडी

मोरीनी-स० पु०—दीवार में लगा हुआ या जमीन में रूपा हुआ वह  
छेददार पत्थर जिसमें कपटे मुखाने की रस्सी या पशुओं को बांधा  
जाता है ।

मोरी-सं० स्त्री०—१ गढ़े पानी के निकास की छोटी नाली ।

२ तालाब या बांध के पानी के निकास का तग द्वार, नहर, छोटा  
नाला ।

उ०—१ सहर माहै पाखती पाणी घणी, बडी ताळाव सूरसागर  
जिण रो मोरी छूटे छै, जिण सू वाग बाडी घणा पीवं ।—नैणसी

उ०—२ मिनखां नू खेती इमारत नू खपावं कारज चलावं ने हर  
कारण में ताळाव बांध मोरी राखणे कुवा करणे में इतरी मदत  
घोरा वधावण मे करै ।—नी प्र

१ छोटा द्वार, पिडकी ।

४ बहूक का मुख ।

५ एक राजपूत वंश जिसे मोयें भी कहते हैं ।

उ०—१ कोट विणायो मोरियां, साह हमाल नद । तोड करै नहिं  
दूटही, बीर मदत जग बंद ।—बा दा

उ०—२ राजकुली ३६, सूरधवम सोमवस यादववस कदव परमार  
इधकाक चाहमान चालुवय मोरा सेलार संधव विदक ।—व स  
वि०—पाली, रिक्त ।

मवं०—मेरी ।

उ०—१ जोगी कहइ सूरि मोरी माई । दिन सीसरई आवड घरी  
राय ।—बी दे

उ०—२ पडव कहड अम्है पापिया, किम छूटा मोरी माथोजी ।  
कहड कुती सेत्रुज तगी जात्रा किया पाप जायो जी । - स कु  
मो'री-स०स्त्री०—ऊट की नकेल के बांधी जाने वाली रस्सी ।

उ०—१ वियँ री सुसगी घरसू नीकल्यो, ऊटरी मोरी भाली भर  
कँयो—अवार ही काई जायो ? त्योहार रँ दिन घर छोडणो आछो  
कोनी । -दसदोख

उ०—२ राम नाव रो गेढो करियो गेढो मोटो भारी । मोरी सार  
समझ री धीवी, यू कर चल बवारी । -फुलवाडी

रू०भे०—महुरी, मुरी, मुहरि, मुहरी, मूरी, मोरिय, मोरी, मोहुरि,  
मोहरी, मोहुरि, मोहरी, म्होरी, म्होरी ।

अल्पा०—मोरडी ।

मोरीर—देखो 'मुहरिर' (रू भे )

मोरीसाली-स०पु० [अ० मूरिसे आ'ला] गोद लेने का एक नियम,  
जिसके अन्तर्गत कोई जागीरदार, जागीर पाने वाले के वंशज को  
ही गोद ले सकता था, अन्यथा जागीर जवन हो जाती थी ।

(भूत पूर्व जोधपुर राज्य)

मोरु, मोरु—देखो मोरी' (रू भे )

उ०—१ बीछडिया मन माहरु रे, दुख घरइ दिन दिन । के तू  
जाणइ केवली रे के वलि मोरु मन्न । -स कु

उ०—२ तरु तरु ब्रूठइ पन्नडा, गिरि गिरि ब्रूठइ बाहु । फागुण  
फागुण ताहरु, नीगमिउ मोरु नाह । -मा का प्र  
२ देखो 'मोरी' (रू भे )

मोरुडो-स०पु०—एक लोक गीत जो लहकियो द्वारा गाया जाता है ।

मोरुलो—देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे )

उ०—आ रितु वोले ऐ मोरुला सुहावणा जी राज । -लो गी

मोरु —१ देखो 'मोर' (रू भे )

उ०—मुनमथ का इदका मुनेस्वरु का मन मोहै । फनफूल के भार  
भरी अढार भार । ठाम ठाम के ऊपर मोरु का तडव भौरु का  
गुजार । -सू प्र

२ देखो 'मोरी' (रू भे )

उ०—मोरु मन अस्तापद सुं मोहधु, फटित रतन अभिराम मेरे  
लाल । -स कु

मोरुसो-वि०—वशानुगत, परम्परागत, बाप-दादो से प्राप्त । पंतुक

मोरेचा-स०पु०—चौहानवंश की एक शाखा, साचोरा चौहानो की  
शाखा ।

मोरेल-स०स्त्री०—वनास नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर क्षेत्र  
में बहती है ।

मोरेवी-स० पु०—गेहुधो की फसल के साथ होने वाला एक घास  
विशेष ।

मो'री-स०पु० [स० मुकराकृति] १ ऊट, बैल, घोडे आदि के मुह पर,  
सुदरता के लिये लगायी जाने वाला एक जाली विशेष ।

उ०—राजा एक नामी लडाका काछी ऊट माथै सजाई कराई—

पीतलियो पिलाण, लूवाळी गोरवद, रसम री मो'री, सोना रा  
गिरवाण, रूपे रा पागडा । -फुलवाडी

२ हाथी के मुह पर लगाया जाने वाला एक उपकरण ।

३ बैल के मुह पर शोभा बढ़ाने के लिए लगाया जाने वाला एक  
सूत, जट या चमडे का उपकरण ।

४ आकृति या चेहरा ।

५ घास-फूस या पतली लकड़ियों का एक पुवाल जिसको जलाकर  
किसी दमरी चीज के आग लगाई जाती है ।

क्रि०प्र०—देणो, मेलणो, लगाणो ।

६ अग्नि को शीघ्र प्रज्वलित करने के लिए उस पर डाली जाने  
वाली महीन कटीली वस्तुएँ ।

७ आग, अग्नि ।

उ०—चुगल सुरदर चाव री टहल नारी घर घूटी । मोरी माथो  
मेल फेर हिरदे री फूटी । -ऊ का

८ पशुधो की क्रोधावस्था ।

उ०—राजा मानसिधजी रा उमराव रँ हाथी सूड सू पकड घोडा  
सू उतार मोरी कर दाता में पोयोडी कटारी बाही । हाथी रँ कुभा  
थल लागी, जोगणीदास मुवो । -बां दा क्यात

[फा० मुह] ९ एक प्रकार का पत्थर विशेष, जिससे साप का  
विष उतारा जाता है ।

१० एक प्रकार का मणिया, जिसको 'खोळ' (पानी में डूबो) कर  
पिलाने से बच्चो के गृह दोष मिटते हैं ।

११ शतरज की मोटी ।

१२ सेना की अगली पक्ति ।

मवं०—मेरा ।

उ०—१ मन हू पवित्र करिस हरि मोरी । टीकम नांम घरे उर  
तोरी । -ह र

उ०—२ मोरी मन मगन थयउ । हा रे देखि देखि भाव ।

—वि कु

रू०भे०—मुहरी, मू'री, मूरी मोरु, मोरु, मोरु, मोहरी, मोरी,  
मोहुरु, मोहरी, म्होरी, म्होरी ।

मोरघो—१ देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे )

उ०—सगळा जणा थोडी ताळ ताई उण नाचता मोरघा सांम्ही  
एकटक देखता रह्या । -फुलवाडी

२ देखी 'मोरियो' (रू भे )

मोळ—देखो मोळ' (रू भे.)

उ०—१ पुटिया टोळ पचोळ, चोळ चर्ग चित वाळा । कामर  
मोळ तमोळ, मोळ मन मकडी जाळां । -दसदेव

उ०—२ ऊपर सू हेजी—मोगर अर प्याज पापड़ा रा साग ल्हसण  
रँ लाल मोल मे फलका री मोळ मेटण जीमँ हैं । -दसदोख

मोल-स०पु० [स० मूल्य, प्रा० मुल्ल] १ कीमत, मूल्य ।

उ०—१ चद वदन गुनखान चतुर चित्त । पर हर अपनी प्यारी ।

देम्या नग मोल विन वालम, विक्रमी बही विकारी ।—ऊ. का.

उ०—२ वरचि दीप देवदा कली केवदा कनोती । लकी धजर  
अनोल, धजरमणि मोल विचोती ।—मे म.

उ०—३ तातो घायो नावयो कामण प्यारा कत । मोल मुहणी  
मनि ममो, मोव्यु रहै निरखत ।—व म

उ०—४ चाट्टे मिनवां चूतियां नह निरवाहै मोल । गुजा सू घटती  
धणी मावटिया रो मोल ।—बा दा

उ०—५ लवधू विचाळै ई बोली-गिगन रा सूरज अर उणरा  
उजाम रो कोई मोल व्हे तो म्हारी देह रो मोल व्हे ।—फुलवाडी  
२ भाव, दर,

उ०—१ खहणी जाकं भार खित, वापूकारं बोल । नहीं उचित  
करणी नरां, धवळा हूँ मोल ।—बा दा

उ०—२ पिटत कह्यो-सेठां, किणो चीज रो मोल तो देवणिया  
री मरघा परवाण । म्हारै कूड नी बोलण री आखडी । रावळी  
इछा व्हे सो दे दिरावो ।—फुलवाडी

उ०—३ या रस को नही तोल न मोल, पीयगा उर अतर खोल ।  
—श्री हरिरामदामजी महाराज

३ क्रयण, खरीद ।

उ०—१ गवरदार नर जवर नू, वमत मगाडे मोल । विगडै उण  
दिन वाणियो, तोलण हुता तोल ।—बां दा

उ०—२ अर जे पछै ई थन पतो नीं पडियो तो म्हने किमी मोल  
लावणो है । म्है थन जाणू जकी वात वसाय देवूला ।—फुलवाडी  
४ खरीद के बदले दी जाने वाली रकम, दाम, रुपये ।

उ०—पती जुद्ध मे दुसमणां री फीजा रा हाथी मार नें तो मोतियां  
रा टिगला दिया है जिण रा श्रोत वा पोत चीडा ने हाथिया रं  
दाता रा चूहा मोल भांगण रो काम नही ।—वी. स. टी  
५ महत्व, विशेषता, कद्र ।

उ०—१ हरीया मिले अयारखु, ताहि घटायो मोल । हरि हीरा  
को क्या घट्यो, घट्यो स वाको बोल ।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ धन वधियां म्हारी जाण मे मिनख रो मोल घटै ।

—फुलवाडी

उ०—३ ठोकरी सूवा मुर मे बोली-पण म्हारी वेटी राजाजी सू  
धीत नीं करणो चारै, पछै थारै मदाता रो मरजो रो कोई मोल ।

—फुलवाडी

मोनगत—देगो 'मोहमत' (रू भे)

उ०—इण रग महल मे प्रायां म्हारा मन में एव नवी ई ग्यांन  
सांचरघो । फगत तीन दिन रो मोलगत चावू थें बोला-बोला  
देगता रेजो ।—फुलवाडी

मोळणी, मोळयो-क्रि०स०—१ काटना, कतरना ।

उ०—१ नूळ मोळता मिनग, मिरडिया घणां घुरावै । हळ वाव-  
ठरो घेर, फंगणो चीज सुपावै ।—दमदेव

उ०—२ दायण सावळ सुयराई सू आवळ कानी नाळो सूत्यो ।  
पाचणा सू नाळो मोळ होरा सू बाघ दियो ।—फुलवाडी

२ उतारना, हटाना ।

मोळणहार, हारो (हारी), मोळणियो—वि० ।

मोळिओडो मोळियोडो, मोळयोडो भू० का० कृ० ।

मोळीजणो, मोळीजवी—कर्म वा० ।

मोळणो, मोळवो—रू० भे० ।

मोलणी मोलवो—देखो 'मोलाणी मोलावो'

मोलणहार, हारो (हारी), मोलणियो—वि० ।

मोलिओडो, मोलियोडो, मोल्योडो—भू० का० कृ० ।

मोलीजणो, मोलीजवो—कर्म वा० ।

मोलत - देखो 'मोहलत' (रू भे)

मोलवी मोलवो—देखो 'मोलवी' (रू भे)

मोलसरी मोलसिरी मोलसी—देखो 'बोलमिरी' (रू भे)

मोळाई—देखो 'मोळ'

मोलाई-स०स्त्री०—किमी वस्तु का मूल्य पूछने की क्रिया या भाव ।

मोलाकुमार-स०पु०—मिट्टी के बर्तनों का कार्य करने वाले वे मुसलमान  
कुम्हार जिनके, पूर्वज हिन्द थे ।

मोळाटो-स०पु०—१ चोर व डाकुओ द्वारा अपना मुह छुपाने के लिये  
मुह पर लगाया जाने वाला चञ्च ।

२ सिर पर बोझा उठाते समय सिर पर रखी जाने वाली किसी  
वस्त्र की गोल गद्दी ।

रू०भे०—मोळावटी,

मोळाणो, मोळायो-क्रि०स० [ 'मोलणो' क्रि० का प्रे० रू० ] १ कट-  
वाना, कतरवाना ।

२ 'मोळ' आना या होना ।

मोळाणहार हारो (हारी), मोळाणियो—वि० ।

मोळायोडो—भू० का० कृ० ।

मोळाईजणो, मोळाईजवो—कर्म वा० ।

मोलाणी, मोलावो-क्रि०म०—१ खरीदने योग्य वस्तु या पशु-धन का  
भाव, मूल्य या दर पूछना ।

२ खरीदना, मोल लेना । क्रय करना ।

उ०—१ बारठजी उणने फटकारता कैवण लागा भंस तो मोलाई  
कोनीं, उण पैलाई थारी कैवू जकी रो मार मार नें पोखाळो कर  
दियो ।—फुलवाडी

उ०—२ पारकी वेटी नें जिनावर री जुग जाणु'र लालच रं  
बजार मे मोलाई करणी है ।—दसदोख

मोलाणहार, हारो (हारी), मोलाणियो—वि० ।

मोलायोडो—भू० का० कृ० ।

मोलाईजणो, मोलाईजवो—कर्म वा० ।

मुलाणो, मुलावो, मोलणो, मोलवो, मोलावणी, मोलाववो—रू भे ।

मोळायोडो-भू०का०कृ०—१ कटवाया हुआ, कतरवाया हुआ ।

२ 'मोळ' आया हुआ, मोळ' हुआ हुआ ।

(स्त्री० मोलायोडी)

मोलायोडी—मू०का०कृ०—१ भाव—ताव पूछा हुआ ।

२ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।

(स्त्री० मोलायोडी)

मोलावटी—देखो 'मोलाटी' (रू भे)

उ०—घर राणी आदमी १०, ००० दस हजार लिया खडग दुधारी पकड़ीयो लोका नू दिलासा करे छै । आप घरमा दो मोलावटी मारीयो छै ।—राजा नरसिंघ री बात

मोलावणी, मोलाववी—देखो 'मोलाणी, मोलावी' (रू भे)

उ०—गाड़ी मोलावती वगत बल्लद जुतिथोडा हा के नी । माथा में घोळा आया है, थोड़ी रांम नें माथे राखन साची बात केजें ।

—फुलवाडी

उ०—२ भैया मोलावण री बात सुणी जद भाणजी मासी नें डाब धिवाळें बोली—वाजण नें तो म्है महाराणी बाजू पण म्हारें गोडें राती छुशाम ई कोनीं ।—फुलवाडी

उ०—३ तठा उपराति करि नें सराफ वजाज जोंहरी दलाल भाति भाति रा वाव भाति भाति रा पदारथ भाति भाति री अमोलक वसतां सू मोलावीजे छै ।—रा सा स

मोलावण हार, हारी(हारी), मोलावणियो—वि० ।

मोलाविणोडी, मोलावियोडी, मोलाव्योडी—मू० का० कृ० ।

मोलावीजणी, मोलावीजवी—कर्म वा० ।

मोलि—देखो 'मोल' (रू भे)

उ०—कौडी बदळें लाल कू, देत न देख्या मोलि । हरीया पेलें भाग सू, खालिक छै दिल खोलि ।—छो हरिरामदासजी महाराज

मोळिया मगळ—देखो 'मोळिया मगळ' (रू भे)

मोळियोडी—मू०का०कृ०—१ काटा हुआ, कतरा हुआ. २ मोळ आया हुआ ।

(स्त्री० मोळियोडी)

मोलियोडी—देखो 'मोलायोडी' (रू भे)

(स्त्री० मोलियोडी)

मोळियो—स०पु०—देखो 'मोळियो' (रू भे)

उ०—हवेली सूं कडाजूह होयन आया ई हा । कडप दियोडी सतरगी मोळियो । लांबो छिणगी । माथे किलगी ज्यू छोगी । एकोएक सस्तर पाती ।—फुलवाडी

मोलियो—१ पुरुषार्थ हीन ऐसा व्यक्ति जिसमें औरतो के लक्षण आगए हो । जनखा ।

उ०—मावाडिया अग मोलिया, नाजुक अग निराट । गुपत रहे ऊमर गर्म, खाय न निजबल खाट ।—बां दा )

२ अशक्त, कमजोर, दुर्बल ।

३ वह भागीदार व्यक्ति जो अपने भाग के कार्य में अपने बल व हल लाकर खेती करता है ।

४ किराये किया हुआ हल ।

५ काले मूह का बदर ।

६ जोरू का गुलाम ।

रू०भे०—मोलीघो, मोलीयो, मोल्यो मोल्हयो, मोल्होयो ।

७ देखो 'मोळियो' (रू भे)

उ०—उत्तरा कूरर ववव बोलइ, बीर कोइ तुम्ह आज न तोलइ ।

आणिजे सुहड मोलि मोलिया, पउतीयां जिम हुइ पटउलीयां ।

—सालिसूरि

मोळी—१ देखो 'मोली' (रू भे)

उ०—१ मिठाई मगदर माटा काठा दाटा दे दे' र वूसी मोळी सू बाध्या ।—दसदोख

उ०—२ माथा पर तो मोळी और म्हन तवू मे आवण दो ।

—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'मोळी, (स्त्री)

मोली—वि०स्त्री०—१ दुर्बल, अशक्त ।

२ जिसकी कीमत हो, मूल्य वाला ।

३ मूल्यवान, कीमती ।

उ०—घण मोला घोडाह, घण मोली केइ घोडियां । धुयकारिय थोडाह, जगमें तो जोडा जसा ।—ऊ. का

स०स्त्री० [स०मोलि] १ मादा ऊंट ।

२ सिर की चोटी । बालो का जूहा ।

३ जटाजूट ।

४ मस्तक ।

५ मुकुट ।

६ पगडी ।

७ प्रधान व्यक्ति ।

रू०भे०—मोलि, मोली ।

मोळिओ—स०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र ।

उ० हवइ राजा परिवार प्रतिवस्त्र आपइ, गुडीआ सणीआ कस्तूरीआ प्रतापीआ कुसभीआ मोलीआ मांडवीआ मीणीआ वाटलीआ जलोदरीआ ।—व स

२ देखो 'मोळियो' (रू भे)

३ देखो 'मोलियो' (रू भे)

मोलीमोयो—स०पु०—लकड़ी की बनी वस्तुओ की धार या किनारो को सुन्दर बनाने का एक औजार ।

रू०भे०—मोळियो

मोळियो—१ देखो 'मोळियो' (रू भे)

२ देखो 'मोलीमोयो' (रू भे)

मोलीयो—देखो 'मोलियो' (रू भे)

मोळू—देखो 'मेळूजी'

मोळी—देखो 'मोळी' (रू भे)

उ०—१ गोगी मोगी हुय गोरघा गिरियो, तेजी मोळी पडि नंजी सें तिरियो ।—ऊ. का.



उ०—२ टगो मात इण नगर गुजरी रै आयां पैली सगळी जूनी धोपमावां पळापळ चिमकती, पण गुजरी रै परगट व्हेना ई सगळी धोपमावा मोळी पड्गो।—फुलवाडी

उ०—२ मेदी देऊ मुळक मेल सू करदे मोळी। दीवाळी रै दिवम हिया में ठठे होळी।—ऊ का

उ०—४ रोजीना ळगता मूरज रो गुलाबी रंग, उणरी मोळी मोट मे चीदणी रै गोगा ठणियारा रो भरम पैदा करतो।—फुलवाडी

उ०—५ कवरणी रै मून रैणा स कवर रो करडावण की मोळी पड्गो।—फुलवाडी

उ०—६ सेठ मोळा पडया। धीं जवाव नीं दियो। जाणता के राजाजी रो मूछ्यां रो बाळ धो नाईहो कदे भिमरग्यो तो भूछी वितार्वला।—फुलवाडी

उ०—७ ठावरना मोळा पडनें कस्यो—प्रवै तो भावै ई मन मे रंगी। तू मोमा देवं जित्ता ई थनै छाजै।—फुलवाडी  
(म्यो० मोळी)

मोली—वि०—१ कीमती, मूल्यवान।

उ०—घणा घणा मोला घोटा, पाइगहा पाटी होडा। आगला घट घलव, अजूली पिये ज अब।—गु रु व

२ जिमकी कोई कीमत या मूल्य हो।

न०—तेरे फाँन मन जग त्याग्यो, अब मोहै वर मो लो रे। मोरा के प्रभु गिरधर नागर, चेरो भई विन मोली रे।—मोरा

१ देखो 'मोलियो' (रु. भे)

उ०—भूमर भार न झलही, गोधां गावहियांह। इम जस भार न काटे, मोला मावहियांह।—वां दा

मोल्पो—देखो 'मोलियो' (रु. भे)

उ०—१ नय रे मोल्या उझावडा बूजवाळी कुण छे रे तू। माकी गुमो होगी जेडे जावागा हमेस।—ऊ का

उ०—२ तडकी देव मोल्या रे, चुपकी रहे मोल्या रे। नर-भव ते पायो रे, विण भाले गमायो रे।—जयवांणी

उ०—३ राई घर धी मागता सरम को धावै नी। घर में कमावू तो पारै जेहो मोल्पो भगतार है।—फुलवाडी

उ०—४ धा एकनी भवानी सगळां ने भू पाय दियो घर थें सगळा ई डाढी-मृछाळा मोल्थार उण मोल्या कवर रै पगां रगट रगट ने टागिया पाइमी।—फुलवाडी

मोल्थो, मोल्थो—देखो 'मोलियो' (रु. भे)

उ०—हिवे मोटीयागं में वेठां मोटीयार ममकरी करे, रेत बंद गमाई मोल्थोपा लानत रे तोनु।

—गांवळी जोईयो ने तीटी मरळ रो वात

मोवण—१ देखो 'मोण' (रु. भे)

उ०—१ दूध मे धोमणियोटी घर धी रै मोवण रो फरफरी वाटियो। माने मागण घर निघात लागोटी। बागला रो भाग आगियो।—टुमराडी

उ०—२ परात मे धी रो मोवण देयने आटी गूदियो।—फुलवाडी  
२ देखो 'मोहन' (रु. भे)

मोवणी—देखो 'मोहन' (रु. भे)

उ०—१ आज पेमजी रै मायें सू मुरळी दलाल रो मांडयोडी मूली हाळी मोवणी सीबी माफ हुवं, नोकळै है।—दसदोख

उ०—२ मधुर मोवणी राग, रोभवं आभो राजा। मीण्णी छाटा भिनै, सोलवं सालू गाजा।—दसदेव

मोवणो—वि०—मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभाने वाला, मुन्दर।

उ०—पण धो माठी साचेली भाठे-रें वदळें नरम, फूटरो और देखणें वालां-रो मन मोवणो हो। ओ भाठी भाठी नहीं, पण भाठें मांयली सुकुमार अहिल्या ही।—वरसगाठ

मोवणो, मोववी—देखो 'मोहणी, मोहवी' (रु. भे)

उ०—जोवना छाक में डोडी निजर जोवं छे। चद मुखी हीरां चकोर सखी मोवं छे। सुंदर अनवेली हीरा प्रति रूप छाजै छे।

—वगसीराम प्रोहित रो बात

मोवणहार, हारी 'हारी', मोत्रणियो—वि०।

मोविओडी, मोवियोडी, मोव्योडी—भू० का० कृ०।

मोवीजणी, मोवीजयो—कर्म वा०।

मोवन—देखो 'मोहन' (रु. भे)

उ०—१ म्हारी वैनडली रा चमक्या छे चीर। भतीजा रा मोवन मोलिया जी।—लो गो

उ०—२ राजा रो कवर नित-हमेस उण मारग ई सैर-सपाटा वास्तं घोडें चढियो निकळती। गुजरियां रो मोवन झूलरो उणरा मन मायें नित नवा चित्राम कोरतो।—फुलवाडी

मोवनकठी—म०स्त्री०—स्त्रियों के गले का हार विशेष।

मोवनी—देखो 'मोहनी' (रु. भे)

उ०—रूप रो असली देवता तो प्रगट नी व्हेगो। पैली निजर रें ममचें ई वादळ रो मोवनी मूरत उणरा हिवडा मे कुग्गी।

—फुलवाडी

मोवनीहण्यारस मोवनीएकादशी—म०स्त्री०—वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

मोवारणी—देखो 'मारणी' (रु. भे)

मोवियोटी—देखो 'मोहियोटी' (रु. भे)

(म्यो० मोवियोटी)

मोस—स० पु० [स० मोप] १ चोर, तरकर, उचक्का। (डि को)

२ चोरी का माल।

३ चोरी, लूट-खसोट।

४ बघ, हत्या।

५ झूठ मिथ्या।

उ०—१ सुद्ध क्रिया मारग अन्यायता, तजता माया रे मोस। रोस घरड नही केहस्यु, मृतीवरु सुदरु चित्तइ नही सोस—कवियण



उ०—१ आसव कमाय दुवधना, वलि कलह भ्रम्याह्यानीजी ।  
रति अरति पेसुन निदा, माया मोस मिथ्या ग्यानी जी ।—स कु.  
६ दड, सजा ।

७ ताना, व्यग ।

उ०—सात खेव वित्त बावर जी, छावर मोस न मरम । सीतल  
चद्रमा सारिखी जी, निज प्रजा ऊपरि नरम ।—वि कु.

मोसड—देखो 'मसोड' (रु. भे.)

उ०—घूड छिलकरी घडी घरा ला ताती देवी । मोसड माय  
विछाय, मुवाती सूता सेवी ।—दसदेव

मोसणो, मोसवो—क्रि० स०—१ झूठा दोषारोपण करना, कलक  
लगाना ।

उ०—चाडी खाधी चउतरड, कीघड थापण मोसउ । निदा कीघी  
पारकी, रति अरति निसक ।—स कु

२ व्यग करना, ताना मारना ।

३ चोरी करना, लूटना ।

उ०—थळ खोस घावे नहि थोडे, मोसे परजा वेगै मोडे ।—ऊ का

४ देखो 'मसोसणो, मसोसवो' (रु. भे.)

उ०—१ कतल कर देव, कठ मोस नाख, टापर विकाय देव,  
रांघ्योडी फुडाय देव, छुरी फेरता बुरी कर देव ।—दसदोख

उ०—२ छळ वळ कर छान मतळव मान मूरख गळ मोसदा है ।

—ऊ का

उ०—३ एक दानी आदमी कह्यो—भली आदमण ऐदा जगी  
गिडका न साव छुट्टा राखे किणी मिनख रा कठ मोस न्हाकिया तो  
काई भाव पडैला ।—फलवाडी

उ०—४ पारका मरम ने मोस दोखे नही करि रोस । जुना छिद्र  
सही ए ते कघाडे नही ए ।—जयवाणी

मोसणहार हारी(हारी), मोसणियो—वि० ।

मोसिओडी, मोसियोडी, मोस्योडी—भू० का० कृ० ।

मोसोजणो मोसोजवो—कर्म वा० ।

मोसर—स० पु०—१ शुभ अवसर, अवसर, मोका ।

उ०—१ पताहूत पाघर, अरज कीघी तिण ओसर । चित सदा  
चाहती, मिल्यो तिसडो हिज मोसर ।

—प्रतापमिध म्होकर्ममिध री वात

उ०—२ दरवेस भूखा री मसा पूरण किया न न्याव किया जिकी  
मन मे होय सोही मोसर छै ।—नी प्र

उ०—३ तर जमोघर सारा भाइयानू भेळा कर ने कयो पछेइ  
पुकारु जावो तो ओ तो सरवार छे न ओ मोसर छै ।—रा व वि

उ०—४ पढन पढावन मोसर पाथी, चूक गयो विभचारी ।

—ऊ का

२ समय, वक्त ।

उ०—रग लखियो अनुराग, मदन छकियो उण मोसर । मधुकर  
छकि मुसताक, चुरस पोहपा गळि चोमर ।—पना

३ सयोग ।

उ०—चार दफे मै आता री, चीजा तरह तरह की ल्याता, किसके  
हाया पकडाता मुफ्त लुटाता रोजीना, मिलणे का मोसर नही है  
चक्कर खाता रोजीना ।—लो गी.

४ मूछे ।

उ०—भालिया सार मोसर भलै, भूम भार भुज भालियो, भूपाळ  
जंत उणहीज भुज, हय कव थापलि हालियो—मे म.

५ देखो 'मोसर' (रु. भे.)

उ०—सांपड सनमुख सीत ऊट नह चुळै अनाडी । देखै मोसर हूम  
अटै नह पैड अगाडी ।—ऊ. का.

मोसार मोसाळ, मोसाल—स० पु०—१ ननिहाल, मामा का घर ।

उ०—१ लाज पीहर सासरी, माज मा मोसार । निसरा आवै  
बोलमा, थाने बुरी कहै ससार ।—मीरा

उ०—२ मामी मीरा ही लाज माई मोसाळ, लाज ही पीहर थारी  
सासरी ।—मीरा

२ पीहर, मैका, पिता का घर । (स्त्री)

३ मामा ।

रु० भे०—मुसाल, मुहसाल, मुहुसाल, मूसाल, मोसाली, मोसेल,  
मोसाळ ।

अल्पा०—मोमाली ।

मोसाळी—देखो 'मोमाळ' (रु. भे.)

उ०—तारपो पीहर सासरी तारयो माय मोसाळी तारी ।—मीरा  
मोसियोडी—भू० का० कृ०—१ झूठा दोषारोपण किया हुआ, कलक  
लगाया हुआ ।

२ व्यग किया हुआ, ताना मारा हुआ ।

३ चोरी किया हुआ, लूटा हुआ ।

४ देखो 'मसोसियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री० मोसियोडी)

मोसी—देखो 'मासी' ।

मोसीआई मोसीआई—देखो 'मासीआई' (रु. भे.)

मोसेल—देखो 'मोसाळ' (रु. भे.)

मोसी—स० पु०—१ व्यग, ताना ।

उ०—१ राजा थानू मेहणी साचो दियो सत्य छै । कुडो मोसी  
दियो न छै ।—पच दडी री वारता

उ०—२ उण म्हान चुडलाळी मोसी वोलियो, मोसी वोलियो,  
जी म्हारा राज ।—लो गी

उ०—३ डोकरी मुळक न मोसी मारती जवाव दियो—जे राजा रं  
आखे खजाने सू ई प्रीत री भुगतान व्हेतो व्हे तो खजानो तो थारं  
पावती है ई, पीछे प्रीत सारु भवता क्यू फिरो ।—फलवाडी

२ कटुवचन, आक्षेप ।

३ उपालम ।

उ०—१ इण गौर वधिया रे कारणे, म्हारी नणदल मोसी देव रे,

महारी गोरख वल्लो कर ।—तो गो

उ०—२ दूटा कयन रखे करी, मुम कूडो साख । थापण मोसी मत करे, रिद्धि पायनी राख ।—व. व. य

क्रि० प्र०—ईणो बीनणो, माण्णो, तगाणो,

४ देखो 'माषो' (रू. भे)

रू० भे०—मूसो, मौगो, मोहो ।

मोह-स० पु० [स०] १ आध्यात्मिक क्षेत्र में, समार व सामारिक पदार्थों को सत्य मानने तथा इन्द्रिय जनित मुक्तो को स्थायी मानने का भ्रम, अज्ञान ।

उ०—१ हरीया साचं सूरवं, मारया पहली मोह । पकड़या पाचु नोमिया, दोहा करता दोह ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ ग्यान विग्यानीय जानि सर्वे विध, रूप तणी मन मोह धृतारो । दाम कहे हरिराम बिना हरि, होय नहीं नर को निमतारो ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—३ इम करि बहु अचट, मोह परहर वप माया । दिव घरि घरि सुर देह, अछर वर स्रुगि घाया ।—मू. प्र.

उ०—४ काम क्रोध मद सोम मोह कू, चित्त से वहाय दीजै । भीरी के प्रभु गिरघर नागर, ताहि के रग मे भोजै ।—मौग

२ मासात्मिक तत्त्वों के प्रति होने वाली आसक्ति, लगाव, आकर्षण, कुत्साव । लोभ ।

उ०—१ राम नाम राती नही, मातो माया मोह हरिया का तीं चेट्सी, सातो करि करि लोह ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

उ०—२ म्पाळी बीजा रो मोह देजा बात कोनी, पण रूप री पटरी अनम रा दूजा गुणा न आपरे मांय दणयोडा राखें तो आ अनम देजा बात हे ।—फुलवाडी

३ ममता, वात्सल्य ।

उ०—१ भला आदमिया ये मोटा भगत बाजी अर थातै हण माटी जितो ई जायोडी वेटियां सू मोह कोनी ।—फुलवाडी

उ०—२ साठ, मोह घर प्रीत मे अयूक्त, नादान, छोटी टावर जितो ममभे, उत्तो स्याणो, ममभणो अर लांटी मोट्यार ई नीं ममभे ।—फुलवाडी

४ प्रेम, स्नेह, प्यार ।

उ०—१ मात पिता रो मोह कुटव छोटे जिए पारण । वरं पनीश्रत घरम, तेण ममभे भवतारण ।—ठ. का.

उ०—२ माईनी कमर रो मोह माईता रं गना सू दं घणो वत्ती टो ।—फुलवाडी

उ०—३ माया मोह न कोजिये, माया वन्नी हगम । जन हरिया निह लोक मे, देता नरे विगम ।—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

५ प्रसन्नता, मुग्धता, मोद ।

६ नरें, अस्मिमान, घमट ।

उ०—हरि होई टारें, राखत याई रीठ । माण्णो राजा मोह कु,

७ मोहित होने की अवस्था ।

उ०—टूड चढै प्रधीमल भाजै टोटी, लाला तणै सर धारै लोह । बायै वाय नळी जिम वाजै, अघ मण्णर जण आवै मोह ।

—महाराणा प्रधीराज रो गीत

८ उद्विग्नता, आतुरता ।

९ माहित्य में ३३ सचारी भावो मे से एक, जिसमे चित्त-वृत्ति अस्त-व्यस्त हो जाती है और उचित-अनुचित का कोई ध्यान नहीं रहता ।

१० एक प्रकार की तान्त्रिक क्रिया जिसे शत्रु के बल को कम करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है ।

११ दया, कृपा ।

उ०—कुळ वस वधारै, साय सुधारै, तीन पख तारै । महाराज, सत्तियां पर मोह कीजै, आपणी कर लीजै ।—अ. वचनिका

१२ ब्रह्मा का एक पुत्र ।

वि०—काला, श्याम । (हि. को)

रू० भे०—मो, मो', मोहि, मोह ।

अल्पा०—मोही ।

मोहक-वि० [स०] १ जिसके कारण मन में मोह उत्पन्न हो ।

२ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभावना ।

३ अत्यन्त सुन्दर ।

४ राजा सुरथ का पुत्र एक राजकुमार ।

मोहकम—देखो 'मुहकम' (रू. भे)

उ०—मैं थाहरें विचार रे विरुद्ध नहीं किया, था कही कंद करी सो मैं च ही मोहकम खरी कंद करू, सो सबली कंद अहसान री सो न दीठी ।—नी. प्र.

मोहकार-स० पु०—पीतल या तावे के घड़े का ऊपरी भाग, मुख ।

मोहटो, मोहडो—देखो 'मूढो' (रू. भे)

उ०—१ उठै जाय घड घडी साय तीर सारा नाबिया । केई मांही गरक था मो मोहटै मू काढ परा किया ।

—डाढाळा सुर री बात

उ०—२ मू टू तो रजपूत खांमीदार री मोहडो देखू नहीं । पण कासू करू, तू म्हारी पुराणो चाकर छै ।

—जैतमाल पुमार री बात

उ०—३ तरें राखजी बात आ राखी, वही-माहारी कोट आबसी तरें म्हे तोनु छोडमा । तरें डूगरसी कोट रें मोहटै जाइ जगह' देपारत नु कहीयो-गात्रास तें पाच मास गढ विग्रहीयो ।—नैणसी

मोहण—१ देखो 'मोहन' (रू. भे) (ना मा, ह ना मा)

उ०—१ जरें ओतानुग रें ही प्रभाव आकरमण, मोहण द्रावण, उन्मादण, वमीकरण पाचू ही मनोज रा सायका री बेम्मी होय तत्काल ही आपरा प्रवान टीला नू बुलाय प्रामारी रा पाणि प्रहण रें काज अरबुदाचल जाय सलग रा चित मे या बात स्वीकार करावण री पुणो ।—व. भा

उ०—२ मिय निय तेज सुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर ।—मा वचनिका

उ०—३ रगण तगण मयगण करण, चवदह वरण अचूक । सात ध्यारि पच रूप सुजि, मोहण छद मलूक ।—ल पि  
२ देखो 'मोहनी' (रु भे)

उ०—मोहण मूरत सावठी सूरत नेणा वण्या विसाळ अचर सुधारस मुरळी राजत, उर वंजती माळ ।—मीरा

मोहणगती-स०पु०—कानल, । (अ मा)

मोहणवेलि, मोहणवेली-स०स्त्री०—वह लता जो मन को आकृष्ट करती हो ।

उ०—१ अमृत तणउ प्रवाह, मोहणवेलि तणउ कदलउ, पुनिमनउ चद्र, चालती बितामणि ।—व स

उ०—२ तोरण बघाव्या मंदिर वारणुं ज़ी, चित्रत कीधौ घर मोहणवेलि हो ।—वि कु

उ०—३ पचाइण नइ पावरण, महणल नइ मद कीध । मोहणवेली मारुइ, कत पेम रस पीध ।—ढो मा

उ०—४ चौडं चड मछा चवी, सभ आगळि सकाज । मोहणवेली अघ नयण, मूध अश्रव महाराज ।—मा वचनिका

मोहणिज्ज-स०पु०—मोहनीय कर्म । (जैन)

मोहणिया-स०पु०—राठीडो की एक उप शाखा ।

मोहणियो-स०पु०—उक्त शाखा का व्याक्ति ।

वि०—मोहित करने वाला ।

मोहणी-स०स्त्री०—१ एक नदी का नाम । (वा. दा. स्यात)

२ देखो 'मोहनी' (रु भे)

उ०—नमी मोहणी कमळा मूख मूनी, नमी घोम धुतारणी सभ धूनी ।—मा वचनिका

मोहणीमत्र—देखो 'मोहनीमत्र' (रु. भे)

मोहणीय-स०पु०—मोहनीय कर्म, इसमें सम्यक्त्व और चरित्र को बिगाड़ दिया जाता है (जैन)

मोहणी, मोहनी-क्रि०स० [स० मोहनम्, प्रा० मोहइ] १ मोहित करना, लुब्ध करना, रीझाना, वश में करना ।

उ०—१ देवी रुक्मणी रूप तू कान सोहे, देवी कान रे रूप तू गोपि मोहे ।—देवि

उ०—२ सोमठ रग धुगध री, कैफ नरग सुरग । महल सुरगा मोहियो, राजेस्वर नवरग ।—रा रु

उ०—३ पखी धोल मोर की, मीठा जग मोहत । जन मीठा धोला जिऊँ, क्यूँ जग बस न करत ।—वां दा

२ आकपित करना, ललचाना ।

उ०—१ सत पाय उपाय डिगाय सती, पद गाय रिझाय छुहाय पती । प्रति लेखग राग चित्राम अटा । छिन्न मोहत है जिन देख छटा ।—ऊ का

उ०—२ विलास घर सुख रा चवळ रूप विचै सयम री आ अनुल

छिन्न उण नै धणी मोहणी ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सपत कोस कनवजहू सोहत । मदन विनोद वाग मन मोहत—सू प्र ।

३ प्रेमपाश में बाधना ।

उ०—१ नेम जी हो मुगति रमणि मोहया तुमे हो राजि । पिए तिए मां नहि स्वाद —वि कु

उ०—२ दुलम कियो सोकरु कुवज्या ने, ब्रजनद मोह लियो ।

—मीरा

४ भ्रमित करना, भ्रम में डालना, धोखे में डालना ।

उ०—विद्यायत समियान बणिया, तई जरकसि हीर तणिया निघ आमण छत्र सोहे, महा जगमग हम मोहे ।—सू. प्र

५ मूर्च्छित करना, बेहोश करना ।

६ परेशान करना, डग करना ।

७ सासारिक कार्यों में लगाना, माया में फमाना ।

मोहणहार, हारी(हारी), मोहणियो—वि० ।

मोहिश्रोत्री, मोहियोडी, मोहयोडी—भू०का०कृ० ।

मोहीजणी, मोहीजवी—कर्म वा० ।

मोहाणी मोहावी—सक० रु० ।

मांहणी मांहवी, मोणी, मोवी, मोवणी, मोववी,—रु०भे० ।

मोहता—देखो 'महत्ता' (रु भे.)

मोहताज, मोहताद-स०पु०—१ भोजन सामग्री ।

उ०—१ तठा उपरायत ओळगुवा वाजदारा नै इनाम दीजं छै । माळी नै मोहताद दीजं छै । मारा ही री आस—उमेद वर आणुजं छै ।—रा सा स

उ०—२ गावँ बहती गायणी महाराग मझारा । दाम हजार दीजीयँ, मोहताद मझारा ।—मयाराम दरजी री बात

२ मांस ।

३ देखो 'मुहताज' (रु भे)

मोहताजी-स०स्त्री —मोहताज होने की अवस्था या भाव ।

मोहन-स०पु० [स०] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर ।

उ०—माई म्हांनै मोहन मित्र मिळाय । रमियो है उर अनर बसियो या विनु कछु न मुहाय ।—मीरा

३ शिव, महादेव ।

४ माया, भ्रम ।

५ काम देव के पांच वाणों में से एक ।

६ किसी को बेहोश करने के लिये किया जाने वाला एक तान्त्रिक प्रयोग ।

उ०—कामण, मोहन, मारण यमन, जगम, थावर ।

—पच दंडी री वारता

७ उक्त प्रयोग में पड़ा जने वाला मंत्र ।

८ घनूरा ।

९ स्त्रीप्रसंग, मयुन, समोग ।

१० पणेशानी, व्याकुलता ।

११ भाव । (ना हि वो)

१२ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, तगण, भगण, यगण, और अत में दो दीर्घ वर्ण—कुन १४ वर्ण होते हैं ।

१३ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण और एक जगण होता है ।

१४ बारह मात्राओं की एक ताल । (सगीत)

१५ राठोठों की एक ढप शाखा ।

वि०—१ मन को मोहने वाला, मोहित करने वाला ।

२ मोह उत्पन्न करने वाला, आकर्षित करने वाला ।

३ पणेशान करने वाला, व्याकुल करने वाला ।

४ माया में डालने वाला, फसाने वाला ।

रू० भे०—मोवणु, मोवन, मोहण, मोहिण ।

मोहनकठी० स० स्त्री०—गने ( कठ ) में धारण करने का, स्थियों का, एक स्वरूपभूषण ।

मोहनगारठ, मोहनगारी—वि० [स्त्री० मोहनगारी] मोहित करने वाला, मोह उत्पन्न करने वाला ।

उ०—१ त्रिभुवन नउ मोहनगारठ, राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यागे ।—वि कु

उ०—२ द्रपा निधि विनती अवधारी । प्रभु मूरति मोहनगारी ।

निरम्बा हरने नर नारी, जाळ वारी हु वार हनारी ।—वृ स्त

उ०—३ कामण मोहन नशि करठ, सूवा दीमउ छी साधु रे ।

मोहनगारा गुण तुम्ह तगा, ए परमार्थ साध रे ।—म कु

मोहननोग—स० पु०—१ एक प्रकार की मिठाई ।

२ एक प्रकार का हलवा ।

३ एक प्रकार का आम ।

४ केला ।

मोहनमाटा—स० स्त्री० [म० मोहन + माता] मोने की श्रृंगिया या दानो की माला । गने का आभूषण ।

उ०—मोर मुवुट पीतांवर मोहै, भाळ तिळक गले, मोहनमाळा ।

—मीरा

मोहनाळ—स० पु०—१ पशुओं के नाक से मिर तक का ऊपरी भाग ।

उ०—ताहोरी ताजी तुन वाण गिलजा पहाड़ी । जिकारी मूहहय

मोहनाळ हाथ भर नम —रा सा स

—देवो 'मूहनाल' (रू भे)

मोहनाम्न—स० पु० [म० मोहन + अम्न] शत्रु को मूर्च्छित करने का एक प्राचीन अम्न ।

मोहनि, मोहनी—स० स्त्री० [ग० मोहिनी] १ विष्णु का एक अवतार, जो एक सुन्दर धम्मरा के रूप में हुआ । उससे दानवों को मोहजाल में डाल कर देवों को अन्न गीने का यन्त्र दत्त दिया ।

(पौराणिक)

२ एक वेद्या, जो मृत्यु के समय गगजल पीने के कारण अगले जन्म में द्रविड देश के वीर वर्मा राजा की पटरानी हुई ।

(पौराणिक)

३ वैशाख शुक्ला एकादशी की तिथि जो पर्व दिन मानी जाती है ।

४ सुंदर स्त्री, सुंदरी ।

उ०—मन भावनी माधुरी मोहनि, चंद वदन चित चगी । अतकाळ में प्ररथ न भावत, कामनि नेन कुरगी ।—ऊ का.

५ माया ।

६ एक देवी विशेष ।

७ प्रीति ।

८ वशीकरण मन्त्र ।

९ वेहोश या मूर्च्छित करने की क्रिया ।

१० भ्रम में डालने की क्रिया ।

११ एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं ।

१२ एक मायिक छंद जिसके सम चरणों में सात-सात मात्राएँ और विषम चरणों में बारह-बारह मात्राएँ तथा अत में सगण होता है ।

वि०—१ मोहित करने वाली, मुहावनी, लुभावनी ।

उ०—मयाळ महपाळ मेधमाळ मोहनी नहीं । हिलव से प्रलब धम, धिव सोहनी नहीं ।—ऊ का

२ भ्रमित करने वाली, भ्रम में डालने वाली ।

उ०—ओ ससार मोहनी माया, देख रीझ मति भाया रे । अगजळ नीर निगं कर नाई, परतक मिथ्या थाया रे ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

रू० भे०—मोवणी, मोवनी, मोहणी, मोहणी, मोहिणी, मोहीणी ।

मोहनीमन्त्र—स० पु०—वशीकरण मन्त्र ।

मोहनीय—वि०—१ मोहित करने योग्य, सुन्दर, आकर्षक ।

२ मोह उत्पन्न करने वाला ।

मोहनिरूप—स० पु०—समुद्र मथन के बाद अमृत बाँटने के लिये विष्णु द्वारा धारण किया सुन्दर स्त्री का रूप ।

मोहनी—वि०—मोहित करने वाला, लुभाने वाला, अन्यन्त सुन्दर ।

उ०—नुमील सम्प साच्छर, स्रुति प्रमान मोहनें । अमग पुत्ति भोज के मनोज मूरति मोहनें ।—ऊ का

मोहपुर—स० पु०—स्वर्ग देवलोक ।

मोहवत, मोहवत—देखो 'मुहवत' (रू. भे)

उ०—मव मोहवत कौन काम की, गिरधर बिनाहु नगोडी —मीरा

मोहनी—देखो 'मोवी' (रू. भे)

उ०—ताज म्हारा रे, हा, रे मोहमी म्हारा रे । मोनं तज जावं मती रे ।—गी रां.

रु० भे०—मोहणीमत्र।

मोहमदीय-वि०—मुहम्मद का।

उ०—सह बोलिया सकाज मतो करै विहुवै मिसल। मे न वछित महाराज ए मोहमदीय असपती।—सू प्र

मोहम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रु भे०)

मोहर-स० स्त्री० [फा० मुह] १ स्वरण मुद्रा, अशरफी।

उ०—१ तद आलम् 'दुरग' सू, बाधे सध विचार। घार दिलासा मोकली, मोहरां आठ हजार।—रा रु

उ०—२ आरती होवे। आरती री मोहर सवासणी नु दीजै। पछै सगळा भाणसां नु पगा लगावै।—नैणभी

उ०—३ मोहर ताळ री रोगान रग लागी छै। तरवार कटारी वरछी रा दाव ही न लाग छै।—रा सा स

२ कोई चिन्ह या अक्षर आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा, जो किसी धातु या रत्न का बना होता है।

३ उक्त ठप्पे द्वारा अंकित किया हुआ चिन्ह या अक्षर।

४ धातु की बनी मोल जो किसी चीज को बद करके मुह या जोड़ो पर चपड़ी लगा कर, ऊपर से लगाई जाती है।

५ सेना का अग्र भाग, हरावल।

६ सिंधी मुसलमानों की एक शाखा।

७ पद्य की द्वितीय और चतुर्थ पंक्ति का परस्पर मेल।

उ०—धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण। सोळ चवद लघु गुरू मोहर, जाण सोहणी जेण।—र ज प्र

वि०—१ प्रधान, मुखिया, अग्रणी।

२ प्रथम, पहिला।

क्रि० वि०—१ पूर्व, पहिले।

उ०—वीरा राईका नै कछ्यो। बोलाई साढ ताती छै। तिए चढने जालोर जा। सवा पोहर दिन चढिया मोहर जाए।

—वीरमदे सोनगरा री बात

४ आगे, अगाडी अग्र भाग पर।

उ०—परठि जीण पाखरा, तुरग सक्किया अतुलीवळ। भार आरावां भरै मोहर खडकिया अमगळ।—सू प्र.

५ सामने—सम्मुख।

उ०—भागळा हत 'रतन' सी भाव दाखै चलण न पीठ देऊ। थाटा तणी पीठ हू थोभू, थाट मुडै किम मोहर थऊ।

—रत्नसिंह सिसोदिया री गीत

रु० भे०—महर, महुर, महर, महुरउ, महर, महोर, महौर, महौरि, मुहर, मुहरि, मुहरी, मुहर, मोर, मोर, मोहरि, मोहरी, मोहेर, मोहर, मोर, मोहरि, मोहरी, मोहर, म्होर।

मोहरत, मोहरत—देखो 'महुरत' (रु भे०)

उ०—१ साह ज मोहरत सोधीयो, मुगत हरख मना। जनमपुत्र मे जोतसोया, दीनी नाम पना।—पना

उ०—२ पछै मलो मोहरत जोवाढ क्मे नू प्रोहित नाळेर दियो,

ताहरा कूर्म उठ, सलाम कर नाळेर लियो।—नैणसी

मोहरम-स० पु० [अ० मुहरम] १ इस्लामी वर्ष का पहला महीना।

२ इस महिने मे इमाम हुसेन का मनाया जाने वाला शोक।

रु० भे०—मोरम, मोहरम।

मोहरामेळ-स० स्त्री०—तुक वदी।

मोहरि—१ देखो 'मोरी' (रु भे०)

२ देखो 'मोहर' (रु भे०)

उ०—१ रुद्रसेण उण गज मोहरि ल्याऊ। वरियावर निज राज वणाऊ।—सू प्र

उ०—२ 'किसनेस' वधव कण्ठ अरि खग श्रीभूटै। रघु मोहरि लका रादि, लखमण किर लडै। पित मोहरि 'गजण' प्रचड जग चख जेहडौ। तपवत लडै सतेज 'अरजिण' एहडौ।—सू प्र

मोहराज-स० पु० [स०] आध्यात्मिक क्षेत्र मे, मनुष्य की पांच वृत्तियों मे से प्रमुख वृत्ति। मोह।

उ०—ससार देम माहि असुख अपार, राज वरद छइ तीह मोहराज।—वस्तिग

मोहरियाळ-वि०—अग्रगामी, अग्रणी।

रु० भे०—मोहरियाळ,

मोहरि-स० स्त्री०—१ किसी वरतन आदि का मुख या ऊपर का खुना भाग।

२ पाजामे या पेंट का वह भाग जिसमे टांगे रहनी है।

३ देखो 'मोहर' (रु भे०)

उ०—१ माळी रै घरै सखरी जाइया वागीचा माहे डेरी लीयो। माळिणा नू मोहरी दीधी। जीमण करायी। डेरै मरव जावतो कीधी।—चीवोली

उ०—२ मोहरी दळ रगतामुर माझी। मार भवर सैहम वळ साझी।—मा. वचनिका

४ देखो 'मोरी' (रु भे०)

उ०—इतरी मनुहार करि करहा री मोहरी भालि करहा नै भेकीयो।—ढो मा

मोहरे, मोहरें-क्रि० वि०—१ अगाडी, आगे।

उ०—वव मोहरें वाजिया 'कान्ह' जजमान सकज्जां। साम काज कुळ लाज राज लख आज गरज्या।—रा रु.

उ०—२ अत मुडता जुडता आवहे। मिरदारा मोहरे ममसेर। मरण दीह गजत्राह मडाणं, मुडियो न कहांणी गिर-मेर।

—गोकुळदास मत्तावत

२ सामने, सम्मुख।

उ०—काका तणा कठीर, सामळिया भत्रीजै सवद। सकजा भडा सधीर, हुय मोहरें हलकारिया।—गो. रु

रु० भे०—मुहरे,

मोहरी-म०पु०—१ देखो 'मोरी' (रू भे)

उ०—१ तिगपर विष्णु कूत् का घाव । सीह गोस् के दाव । ऊछट भगद नै मिलने हैं । मोहरा चढाव करते हैं ।—मृ प्र

उ०—२ विमय हल्लाहल लाइ कर, सब जग मर मर जाइ । दाढ़ मोहरा नांम ले, हृदय रावि तयो लाइ ।—दाढ़वाणी

उ०—३ लगा पावरा साज लूमा लडी सू, प्रहीना चले ज्यू नटी पट्टी म । मिले मोहरा चोहरा पति मोती, कळा करत्तगी जीत पावे कनोती ।—व भा

उ०—४ इसा ऊठ भेरजे छै । हाथ फरजे छै । पीतल रा गीरवाण रूप रा तडा छै । ता माहै मोहरा वोळचै मोहरा घातजै छै ।

—रा मा स

उ०—५ दै दै लगाम कसि तग द्रढ़ जेरवत्र मोहर्ग जडघा । ऐराक घाट काठी उतन, घाट वेह ठाली घडघा ।—मे म.

उ०—६ पिचरगा मूत री नायां भर पिचरगा भलेबडा रसमी फूदिया, मूत री राहडियां, मूडा रै मोहरा भर माय चांदी रा घूघरा वाला छड़ा ।—फुलवाड़ी

उ०—७ कळ छट करे वीपसा, फरणो, विच जिणगुग सवोधन वरणो । तुक चवदे कळ बलै जितावे मोहरा तिण रा मेळ मिळावे । उण पर दुक्षी अरटया वाळो, फिर तुक आदि तिका अत फाळो । धुरे तिका मोहरा सुघ घारी, चितविलास मो गीत उचारी ।

—र रु

रू०भे०—मोहरी,

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे)

उ०—१ देहरी १ उळे जैन री थो । फूल मोहल री ठीठ थो । तद भनो महर बसतो ।—नैणसी

उ०—२ राजा प्रापर मोहल मां आयो छै ।—पच दहो री धारता

उ०—३ तद अपछग री मोहल एकायत कीयो । उठे अपछग रहै । पांघळजी अपछग री वारी रै दिन आप जावे ।—पानूजी री वात

उ०—४ राजा रै मोहल माहे सुदराणी दहड तिका पदमणी ।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—५ अतलम अति सोमा दीड, पहरी पीया के अग । सुदर ऊजी मोहल म म्ये पणि पणी सुचग ।—य म

२ देखो 'महिळा' (रू. भे)

उ०—१ तद ए सोनू उठे आया, कहियो— मोहन काढो, गवजी न भांसरो राग देवी । ता कुवर रा गोमा मुयो मान पूरे पढ़ाया ।—अपरमिह गजमिहीनरी वत

उ०—२ मोहन निद्रावळ कीवी बंठा हमी खुशी री वता कीवी ।—नारि गांतने री वारता

मोहलत-ग० ग्री० [घ०] १ अयकान गृही ।

२ ममय, नर कुर्वत ।

३ मयाद, अयवि ।

४ डील, छूट, रियायत ।

५ विलव, देर ।

रू० भे०—मालत, मुहलत, मोळगत, मोळत, मोलत, मोलगत, मोलत ।

मोहलाइत, मोहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे)

उ०—१ ताहरा स्याम सुदर सू लोक कहे, 'स्याम सुदरजी, थांहर मोहलाइत हुई छै ।'—स्याम सुदर री वात

मोहली—१ देखो 'महोली' (रू. भे)

उ०—१ तिण वेळा सम नै निसभ रै कानं, आ अमगळ री वात कानं आई । वोहत सभेव सोच उर मे हुवी । दिवाण किया ।

वडा वडा उमरावा रा मोहला लिया ।—मा वचनिका

उ०—२ तठा समत १६७७ रा बैसाख माहै साहजादी खुरम दिखण रै सूवे आयो । पछै साहजादी नु स्त्री माहाराजा जी मोहली दियो ।—नैणसी

२ देखो 'महल्ली' (रू. भे)

उ०—१ जद ए कहाँ भोवण जी । ये बैरागी वाजी नै इण मोहला में नुखतो थयो तिणरा घर स् पकवान लाया ।—भि द्र.

उ०—२ व्यास ऊर्दचद री हवेली मूलनायकजी रा देवरा आग्रं वामण रा घर था सु पाद नै गूंदी रा मोहला री चौक करायो नै उणा नै जायगावा दूजी दीवी ।—मारवाड री ख्यात

३ देखो 'महल' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—ऐ ठाकुर घोडा दोढावण लाग । घोड़ा छोडि दीया छै । राजलोक मोहल चढीया ऊचा देखै छै ।—लाखा फूलांणी री वात

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे)

३ देखो 'मूल्य' (रू. भे)

उ०—कैवास सूर सारवि क्रियत जास मोहल न पांमता । चौतीस लाभ चतुरग दळ, हूय आय सह हालता ।—नैणसी

मोहली—१ देखो 'महल्ली' (रू. भे)

उ०—वोल्थो—मितर मोहल्लै परखियं, धीणी मद घाम ।

—दसदोख

मोहामांही—देखो 'माहोमांह' (रू. भे)

उ०—राजमिह जमवतोत नू भाद्राजण पटं थो, सु मोहामांही छीतर नै राजमिह जमवतोत उपाय हुवी, तठै रा राजसिंघ जमवतोत छीतरदास नू आवाजण रै कोट माहै मारियो ।

—नैणसी

मोहाणी, मोहावी—देखो 'मोहणी, मोहवी' (रू. भे)

उ०—१ हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय राम ।

—मीरा

उ०—२ समार मगन माया, कामी फोव लोम मोहाणी । स्वारय हिन करणी की, आता तात पुथाई ।—गु. रू. व



मोहा-संस्त्री०—भूमि, जमीन । (भ मा)

वि०—मोहित, भ्रमित ।

उ०—साहब मन मोहा दुख सू दोहा, लाहां लोह लडदा है ।

—ऊ का

मोहाग्नि-संस्त्री०—मोह रूपी अग्नि ।

उ०—जरियें ना मोहाग्नि घरियें भव धीरज को, मरियें नां रोय सब करियें सबरजू ।—ऊ का

मोहाजाळ-सं०पु०—१ सासारिक प्रपञ्च, जिनमे फसने के बाद मनुष्य छूट नहीं सकता ।

२ शरीर और सासारिक पदार्थों को अपना व सत्य समझने का भ्रम-जाळ ।

उ०—सत्गुरु वचन बाण सत् लागा । मोहाजाळ नीद माहु जागा ।  
—स्त्री सुखरामजी महाराज

मोहायण-सं०पु०—मोह का स्थान ।

मोहि, मोहि-मवं० [स० मह्य, मयह] १ मुक्के, मुक्को ।

उ०—१ दरसन विन मोहि जक न परत है, चित मेरी डांवाडोल ।  
—मीरा

उ०—२ लवोदर सारद हित लीजै । दास जाण मोहि वाणी दीजै ।  
—रा रू

२ मेरा, मेरी ।

उ०—हिल मिळि सब करत है वाती, पीउ विणु मोहि फाटव छाती । हो लाल ।—घ व प्र

१ मुक्के ।

उ०—अकथ कथा मोहि लखी न जावै । तीन लोक तेरा जस गावै ।  
—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

रू०भे०—मोही, मोही, मोहे, मोहै ।

४ देखो 'मोह' (रू भे)

उ०—दीये दिन चपा नयर बुलाइ । ले आइ रिख सु मोहि लगाइ ।  
—रामरासो

मोहिण-देखो 'मोहन' (रू भे)

मोहित-वि० [स०] १ मोह मे पडा हुआ, भ्रमित ।

२ लुब्ध, आसक्त, मुग्ध ।

३ मूर्च्छित वेदोश ।

मोहिनि, मोहिनी-देखो 'मोहनी' (रू भे)

उ०—बाही पर तन मन हैं वारी । वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक ताज डारी ।—मीरा

मोहिम-देखो 'मुहिम' (रू भे) (मा म)

मोहिल, मोहिल्ल-सं०पु० (स्त्री० मोहिलणी) चौहान वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ राव चूड़ी बूढा हुआ । मोहिला रें परणीया, पछे आय मोहिलणी रें बस हुआ ।—राव रियमल री बात

उ०—२ छापराउ कियउ छागां छयाह, बलिबडि राइ फिर फेरि बाह । चउड राउ चडिय मोहिल्ल चीति, राहाचरक देखालि रीति —रा ज. सी

मोहो, मोही-देखो 'मोहि' (रू भे)

उ०—बास जग में त्रास जम की, अल्प जीवनी मोही । जन हरि-दास कू विस्वास तेरा, मैं न छाडी तोहि ।—ह पु वा

मोहीलौ-वि०—१ स्नेही, प्रेम, प्यारा ।

२ देखो 'महल्लौ' (रू. भे)

३ देखो 'महोलौ' (रू. भे)

मोहरत-देखो 'महरत' (रू भे)

उ०—लगन लेई न जोइयी मोहरत रूढी न होयवै । अगम तिगम सासो लहो, राजा न कहै जोयवै ।—रीसालू री बात

मोहे-देखो 'मोहि' (रू भे)

उ०—निरखण री मोहे चाव घरोरी, कब मुख देखूं तेरा ।—मीरा

मोहेर-देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—तद बलू कही-व्यासजी सांची कहै छै । आपां इसा नीसरी सो सागी हाथी जावां । ताहरां सवार मोहेर हुवा, पाळा पूठे किया, त्यानू कही-थे पाधरा तोपखाने ऊपर पड्यो ।

—अमरसिंह गजहंसिह री बात

मोहोवत, मोहोवत-देखो 'मुहवत' (रू. भे)

उ०—१ मिळी निसान वजाय कसण सू ज्यो कछु कहो सो साची । जन मीरा गिरधर की प्यारी, मोहोवत हैं नहि काची ।—मीरा

उ०—२ मेरी ज्यान मोहोवत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सो ।—मीरा

मोहोर-देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ हीरां धार वार मुजरी कर हरख घरै छै मोती मोहोर मुगिया सू निछरावळ करै छै ।—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ भीमाजळ मोहोर केलिया मारत, घणै पेसि गज बोह घणै ।—चतरी मोतीसर

मोहोल-१ देखो 'महल' (रू भे)

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मोहोलौ-१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे)

उ०—लूवा भूमा हुइ थकी फीरै छै, मोहोला, मोहोला मासू नीसरी छै राग रग करै छै ।—पना

२ देखो 'महोलौ' (रू भे)

मोही-सं०पु०—१ कूए की जगत ।

२ कूए पर का वह स्थान जहा पर खडे होकर पानी सींचते हैं ।

३ देखो 'मोह' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ कूरम कहै अमर नह काया, पुळवा कारिण हुवा पोही । मोही बाधियां न जाये मरणि, सरम बाधिया मरे सोही ।

—मुर्जाणसिग जगन्नाथोत कछवाहा री गीत

उ०—२ मूरख जन मोही करवाने भालण कवै अभिमान ।

—नलास्थान



मोहोल—१ देखो 'महल' (रु भे)

२ देखो 'महिला' (रु भे)

मोहोली—१ देखो 'महल' (रु भे.)

उ०—सवारं दिन पोहर चडता आप रं घरे पाटण माहे मूलराज मोहाजी नु मारं माय सुवा मोहोलां में ले गया ।—नैणसी

उ०—२ पछे ग्रहमदावाद पमारीया । वासं दरगाई उकील मनो-हरदास मु डोल कीयो । वंसाव मुदि ४ पानमाही मोहोलां पधार टेरो कीयो ।—नैणसी

० देखो 'महोली' (रु भे)

मो—देखो 'मो' (रु. भे)

मोमटी—देखो 'मूढो' (रु भे)

मोज—स०पु० [स०] १ नृगुक्वोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२ देखो 'मोज' (रु भे)

मोजकेस—स०पु० [मोजकेस] अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मोजप्रस्टि—स०पु० [स० मोजवृष्टि] अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मोजा—देखो 'माजा' (रु भे)

मोजायन—स०पु०—युविष्ठिर की समा का एक ऋषि ।

मोजायनि—स०पु०—विदशमित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मोजिचघण, मोजिचघन—स०पु०—वज्रोपवीत सम्कार । जनेऊ ।

मोजी—देखो 'मोजी' (रु भे)

मोडोडो—स०स्त्री०—१ मोठ नामक द्विदल अन्न की फली ।

२ मोठो की बनी हुई वटी ।

मोटो—देखो 'मूढो' (रु भे)

उ०—नै बीदावत उदैकरण रो घरती में वडो अपजम हुवी । अरु

मोटो फालो कराय माय ऊमो ।—द दा

मोत—देखो 'मोत' (रु भे.)

मोनाळ—देखो 'मूढनाळ' (रु भे)

मोसर्रा—म०स्त्री० [स० दमशु] मूढें ।

मोहरी, मोहरी—देखो 'मूढो' (रु भे)

उ०—कोई जांग पायसी तो राजा नू कहि पकटायसी, काळो

मोहरी होमो ।—मिवासरु वत्तीकी

मो—देखो 'मो' (रु भे) (उ र)

उ०—१ गणपति गिरा निवामी मुरगण, मगळ करण अमगळ भेटण । बरो दया मो मीग दयाकर, आपो मार चार गुण अर बर ।—रा रु

उ०—२ जनक मुता मन रजगु गजग, असुर अगजण आहव । में मरणागत बरम मदामर, मो मजा रख माहव । दीनांमाय अमें वरणाता, प्राता मेवण तारण, ती निज पायनि मो दमरघ तण, पण पापा निवारण ।—र ज. प्र

उ०—३ बिम भय नीगमीम बामिनी । राति दिवम मो यारीय नित ।—की रे.

उ०—४ मुनी अनोप गिरराज नीग, राति गुमान मो जंग रीस ।

किए हेक पाण बोलं कहर, आतुर पलाद घावी अहर ।

—मा वचनिका

मोकणी, मोकवी—देखो 'मूकणी, मूकवी' (रु. भे.)

उ०—जटी आक ओकवी मवेम को मोकवी जगां, जती को मोकवी नगा लका सीम भाळ । कळेसा कोकवी काळ तोकवी तुरी को कनां,

छोळां नाथ सवरी को मोकवी छडाळ ।—हुकमीचद खिडियो

मोकणहार हारी (हारी), मोकणियो—वि० ।

मोकियोडी, मोकियोडी, मोकियोडी—भू०का०कु० ।

मोकीजणी, मोकीजवी—कर्म वा० ।

मोकळणी, मोकळवी—देखो 'मोकळणी, मोकळवी' (रु भे)

उ०—साह वळ वडो विहवळ हुवं त्रिधावत जळ मोकळें । कळि

मूळ आड पंढो 'कमो' मुद्द कठे भावर वळें ।—गु रु व

मोकळणहार, हारी (हारी), मोकळणियो—वि० ।

मोकळियोडी, मोकळियोडी, मोकळियोडी—भू०का०कु० ।

मोकळीजणी, मोकळीजवी—कर्म वा० ।

मोकळियोडी—देखो 'मोकळियोडी' (रु भे)

(स्त्री० मोकळियोडी)

मोकळो—देखो 'मोकळो' (रु भे)

मोकावारदात—स०स्त्री० [म० मोक + वार्दात] घटना स्थल ।

मोकियोडी—देखो 'मूकियोडी' (रु भे)

(स्त्री० मोकियोडी)

मोकूफ—वि० [अ०] १ रोका या स्थगित किया हुआ ।

२ नौकरी से निकाला हुआ, वरस्वास्त ।

३ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हटाया हुआ ।

४ मिटाया हुआ ।

रु०भे०—मोकूव, मोकून, मोकूफ, मोकूव ।

मोकूफी—स०स्त्री० [म०] १ "मोकूफ" होने की अवस्था या भाव ।

२ वरस्वास्तगी ।

रु०भे०—मोकूवी ।

मोकूव—देखो 'मोकूफ' (रु भे)

मोकूवी—देखो 'मोकूफी' (रु भे)

मोकी—स०पु० [फा०] १ इच्छित या किसी अच्छे कार्य के लिये सयोग में मिलने वाला शुभ अवसर ।

उ०—१ गरज हुवं जितं गधं नै ही वाप कंय'र वसळाणी पडें ।

मोकी है हाथ मू नी जायें । ओसर चुकी दमणी गावें भाळ-पताळ ।

—दसदोप

उ०—२ मोचण लागी के ऐडी काळ हायें आयां चुकग्यो तो वळें मोकी हाथ नीं आवेला ।—कुलवाडी

उ०—३ चिहो ती लियां दियां वेठो हो । सातरो मोकी देखनं वो फुरती तूं फटाफट कटोरदानां रा लाहू अदळ-वदळ कर दिया ।

—कुलवाडी

२ अपने विचार प्रगट करने, बात कहने या कोई कार्य करने के

लिये मिलने वाला अवसर । (चांस)

उ०—१ बीनणी नै तो बोलण रो मौकी ई नी मिळियो ।

—फुलवाडी

उ०—२ आप म्हारै माथै पयाळ-लोक चालो घर म्हानै आपरी सेवा-बदगी रो मौकी दो ।

३ किसी कार्य का उचित समय, उचित अवसर ।

उ०—१ म्है आ सरपणी रा बिचियां नै छाती सू चेप-चेप नै लाठा इण वास्ते करिया के मौकी लाग्या ऐ म्हनै ई हसै ।

—फुलवाडी

उ०—२ जकै मौकै माथै फूल रो जगा फाखडी तो करणी ही पडसो ।—दमदोख

४ ऐसा समय, जब कोई विशेष कार्य हो रहा हो ।

उ०—१ किसै क मौकै बटली करवाई । सेठा रो तो जद ठा' पडतो थारी बटली नी हुवण देंवता ।—दसदोख

उ०—२ हजार रो खातर पैठ गमाय दी तो सेठाणी मरियां ई पतियारी नी करेला । इण मौका माथै हजार रिपिया देवणा ठीक है ।—फुलवाडी

५ कठिन समय ।

उ०—१ साग रो कुडछी रो ही सीर कोनी । देहा रो सो साख है । मौकी पडयां करणी नै चेतै करी ही, नी तो करणी जावो वाड्योडा तिला मे ।—दसदोख

उ०—२ कैवण लागा-थू तो खुद समझदार है । वता मौका माथै म्है किती जोखम भोड़ी, पण नुगरी रैया गुण थोड़ी ई मानेला ।

—फुलवाडी

६ घटनास्थल, वारदात का समय ।

उ०—१ जीव-निरजीव रो मुलाकात । मोत-मैणै रो घात । फरारा रो टोली रा दबग अर घाखड-घाडेत चेत्या, चमक्या तथा चटदेणै मौकै जा पूग्या ।—दसदोख

उ०—२ राजा रो आख्या सामी अघारी आयगी । कानां रा पडता फूटण लागा । वेचेतै होयनै पडणवाळो हो के मौका माथै राणी चण नै भाल लियो ।—फूलवाडी

उ०—३ आखा राज मे खलवळी मचाय दी । मौका माथै खुदोखुद देखण नै नी जावता तो वळै वोखो व्है जातो ।—फुलवाडी

७ स्थान, जगह ।

उ०—पाणी रो असली कीमत तो रोही मे ई पिछाणीजै । उण चौरस्ते बीस गावां रो दूक है । प्याऊ रो ऐही मौकी सो सो कोसा ई नी लावै ।—फुलवाडी

८ अवधि, मोहलत, मयाद ।

९ अवकाश, फुरसत ।

मुह' —१ मौकी आणी=उपयुक्त या इच्छित अवसर आना, समय आना ।

२ मौकी देंगी=अवसर देना, वक्त देना ।

३ मौकी मिळणी=समय या अवसर प्राप्त होना ।

४ मौकी लागणी=समय या अवसर पाना ।

५ मौकी सजणी=समय पर उपयुक्त व्यवस्था होना ।

६ मौकी हाथ आणी = देखो 'मौकी मिळणी' ।

रु० भे०—मकी' मौकी, मौखी ।

अल्पा०—मकोडो, मकोडउ ।

मह०—मक्क ।

मौक्तिक-स० पु० [स०] मोती ।

उ०—कठ कदलि अलकार विस्रव्यसम्यक्त्व सस्कार, वक्ष स्थलि

मौक्तिक तणउ हार ।—व स

मौक्तिकदांम—देखो 'मोतियदाम' (रु. भे)

मौक्तिकभग-स० पु०—एक प्रकार का आभूषण (व स)

मौक्तिकमाळा-स० स्त्री०—१ मोतियो की माला ।

२ ग्यारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्त का नाम, इसमें पहला, चौथा पांचवा, दसवां और ग्यारहवा वर्ण गुरु होता है ।

मौक्तिकसर-स० पु०—एक आभूषण विशेष । (व स.)

मौक्तिकहार-स० पु०—मोतियो का हार ।

उ०—जिसिउ चद्र मडल, जिसिउ स्फटिकोपल, जिसिउ क्षीर समुद्र जल, जिसिउ हिमाचल, जिसिउ विकसित केतकीदल, जिसिउ सरद भ्रजल, जिसिउ मौक्तिकहार ।—व स

मोख—१ देखो 'मोक्ष' (रु. भे)

उ०—माया मोह भरम की भीतां मोख मुगती कं आही ।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मोक्ष' (रु. भे)

मोगर—देखो 'मोगर' (रु. भे)

मोगो—देखो 'मोगो' (रु. भे)

मौड-स० पु० [स० मुकुट प्रा मउड] १ विवाह मे वर के सिर पर बाधा जाने वाला सेहरा ।

२ सेना मे योद्धाओं के सिर पर बाधा जाने वाला सेहरा ।

उ०—१ सक्ति तुरा साज जकडै ससत्र, 'बळू' मौड सिर बाधियो ।

'अमर' रे वर असपति हू, कमवा जुध आरम कियो ।—सू प्र

उ०—२ सूर घसै घमसाण घण, कायर लहै न ठोड । हरीया सूरै मरण का, माथै विध्या मौड ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ तो श्री वडो अवमाण मिर मौड बाधो ।—मा वचनिका

३ मुकुट ।

उ०—थये सचेतन महरत, बकै भकै विरहाकुळ । हा भवतव्य

अनीठ, अमुर मिर मोट न्हें तुळ ।—मा वचनिका

४ अश्विन के मिर का एक आभूषण ।

वि०—१ श्रेष्ठ गिरोमणि ।

उ०—१ गजराज चढे कमघज गहर । सूरिमा मोट महाराज सूर

—सू. प्र

उ०—२ जटीतू वाणावति गघागे मुतन जोघ मणां जे कौतेय घरा कुत्रेर महार । फावे एता कमघा मोड़ बिया 'फता' सार नै आचार उमै मराई ममार ।—पदमो विडियो

२ प्रधान, मुनिया ।

उ०—एम ताम उच्चरै मुमत पूरण गण मायर । मोट 'वेम' मशियां जोड प्रोडत रैणायर ।—रा ह

३ मर्वे—मान्य ।

उ०—राठीठ मोट हिदुवाण मिरि, मडा द्रुग गढ जोघपुर । गज-विध कुवर प्रा मूर्तिन, सहवे वदे मुर अमुर ।—गु रु व  
रु० भे०—मउड, मउड, मउडि, मउर, मवड, मवोड, मोड, मोड, मोटव, मोट ।

मोटव—१ देगो 'मोडी' (रु भे)

उ०—वळनठ पृथइ वात विवेक, लगन विचडं घायइ दिन एक । पनइ यहुनां मांदउ पडघउ, निणि कारणि मोडव आपडघउ ।

—ढो मा

२ देगो 'मोड़' (रु भे)

मोड़णी, मोड़वो—देखो 'मोड़णी, मोड़वो' (रु भे)

उ०—१ तन मोड़ वांकी निजर त्रिपुरा सलज चढियां सौहली ।

गळ नाव चाढे विषट मोहै, अहर वेमर घळवळी ।—मा वचनिका

उ०—२ मोहं मुख मोहं हीतळ हतवाळी, पीतळ पेरण नै सीतळ सतवाळी ।—ऊ का

उ०—३ चण रं वारं जांवता घणी री आख्यां ई खुली । वो आळम मोड़ नै वंठो विह्यो —फुलवाही

मोड़णहार, हारी (हारी), मोड़णियो—वि० ।

मोड़िओडी, मोड़ियोडी, मोड़योडी—भू० का० कृ० ।

मोड़ोजणी मोड़ोजवो—कर्म वा० ।

मोटवघ, मोड़वघो—मं० पू०—१ वर, दल्हा ।

२ राजा ।

वि०—जिमके सेहा वया हो ।

रु० भे०—मोटवघ, मोड़वघो, मोड़वघ, मोड़वघो ।

मोटवघो—म० स्त्री०—१ वधू दुल्हन ।

२ मोट वांयने की क्रिया या भाव ।

३ यह स्त्री या लटकी जिमने मोड़ वघा हो ।

मोटियोडी—देगो 'मोटियोडी' (रु भे)

(स्त्री० मोड़ियोडी)

मोड़ी—देगो 'माजी' (रु भे)

उ०—१ गिलम विद्यापत गरन, पमम मोड़ा लबिया पर । तडै

विराजै ताम, सक्कै आणुद नरेसुर ।—सू प्र

उ०—२ जैसे प्रकृष्ट नायिका को वस्त्र भरतार आकरसे कहता खेचें सु मोड़ी छूटै, तैसे रात्रि आकास को मोड़ी छाई छै ।

—वेलिटो

मोच—देखो 'मोच' (रु भे)

मोचणी, मोचवो—देखो 'मोचणी, मोचवो' (रु भे)

उ०—तनक भणक हरिरस तणी, कडत प्राण सुण कांन । महापाप

सह मोचवै, आवै जनम न आन ।—ह र

मोचणहार, हारी (हारी), मोचणियो—वि० ।

मोचिओडी, मोचियोडी, मोचयोडी—भू० का० कृ० ।

मोचीजणी मोचीजवो—कर्म वा० ।

मोचियोडी—देखो 'मोचियोडी' (रु भे)

(स्त्री० मोचियोडी)

मोछ—स० स्त्री०—वछडे के मर जाने पर भी दूध देने वाली गाय ।

रु० भे०—मोच, मोछ ।

अल्पा०—मूछडी मोचडि, मोचडी ।

मोज—स० स्त्री [अ०] १ सुख, आनन्द, मस्ती ।

उ०—१ आछो खारं अर ओढे—परं, मोजा माणं है ।

—दसदोख

उ०—२ रामजी री किरपा सूं गिरस्ती रा सगळा ठाट इण राम-दुवारा में हा । चोर रं तो मोज वणी पण वणी । सैकडू चोरियां

करन ई वो इत्तो आराम नी पायो ।—फुलवाही

२ आराम, चैन, सतोप ।

उ०—अवे भाईजी बुढ़ापं क्यू कळमळ करे कमावणिया म्हें पांच पांडु हा । वानं तो चाहीजे के भगवान री बैठा माळा करे अर मोज मनावे ।—फुलवाही

३ लहर, तरंग ।

४ मन की उमंग, जोश, उरमाह ।

५ लगन, धुन ।

६ अवारागर्दी, निकम्मापन ।

उ०—मोफतिया इमां मीकां मोज मजा ही किया करे हें । काम कर'र वै कीनं ठारे ।—दसदोख

७ पुरस्कार, इनाम ।

उ०—१ सदा ही महिनै रा महिनै आवै छै, अटै मी कना ही मोज पावै छै ।—पचदंडी री वारता

उ०—२ राग अणमै तणी नित मोळण करे । एक एकी मिरै मोज पावै ।—छी हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ मोज कहा मोतिया कनक नग जडत कटारा, अणुपारां सिरपाव, पमग वगसिया अपारां ।—सू प्र

उ०—४ अदवां रं जाउस ज्यां अपजस, चक्रमत वरै न जाणै चोत्र । राजा अमर करे ते रुपग, मंगळ वेगागळ दे मोज ।

—किसनी आही

८ दान ।

उ०—१ तीजो लख तिण वार, 'अजा' भादा कर अप्पै । भण ताराचद भाट, मोज लख चवथ समप्पै । पात नाम भट 'गोप' करे जस प्रकट सकाजा । मोज लाख पाचमो, जेण बगसै महाराजा ।

—सू प्र

उ०—२ मोज जवाहर मोतियां, सासण तेण सवाय । खिडियो बखतौ खेडपति, महिपति लियो मनाय ।—रा. रु

उ०—३ रावा सांभळै तुरताणा राणां, सुजस हुवो जग सारै ।

किव पाता मौजां दै कूरम, रतनौ नाव ऊवारै ।—दीपचद सांदू

उ०—४ आप लका मोजा यू ही, तौ जेहो आखा दाता तू ही ।

थुरै जगा के देता थोका, भोका भोका जो राधौ भोका ।

—र ज प्र

उ०—५ आठौं पोर अगोठा ओपम, उर भीठा वच आणै । मौजा देतां नेण मजीठा जो दीठा सो जाणै ।—ऊ का

स० पु०—६ दातार ।

उ०—मौजां समद वीजाइ महोक्म, चावा धिन खग चौ चरिया । कालू करि कटक पीमण करि साठौ, खेद आबुव खग खरिया ।

—घासीराम हाडा री गीत

रु० भे०—मउज, माज, मोज, मौज ।

मोजडी देखो 'मोजडी' (रु भे)

मोजडीयो—देखो 'मोजडी' (रु भे)

उ०—तद राणी वीजी मोजडी पग सु चलाय पहाड की गुफां माहै राखी आप पाणी ले घरे आई अर मोजडीयो वीजी जोडी करायो ।—चौवोली

मोजवत—स० पु०—१ अक्ष नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का पंतुक नाम । २ मोजवत का नामान्तर ।

मोजी-वि०—१ अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला, स्वेच्छा से विचरण करने वाला ।

उ०—लिया वनौजी दल निज लारै, गुण फौजी बल गाजा । एकर सू आजे चित-चौजी, मन मोजी महाराजा ।—ऊ का

२ उन्मत्त, मद मस्त ।

उ०—रियामत रा पागी नू पूम्मे रोवै, अरजन मौजी रा खोज कुण जोवै ।—दसदोख

३ आनन्दित प्रसन्न चित्त खुश ।

४ दयालु, कृपालु दातार । (अ मां.)

उ०—मोजी राघव पलक में, जन सरणागत जोय ।—र ज प्र

५ अशक्त, कमजोर ।

६ कायर, डरपोक ।

रु० भे०—मोजी, मौजी ।

मोजीज-वि०—१ बुद्धिमान, समझदार ।

२ प्रतिष्ठित ।

३ दृढ़, दाना ।

मोजूद-वि० [अ०] १ उपस्थित, हाजर ।

२ तैयार, प्रस्तुत ।

३ विद्यमान, वर्तमान ।

उ०—ठाकुरजी स्त्री महाप्रभूजी री मंदिर जो जोसीजी री हवेली कर्न करायो सो मोजूद है ।—मारवाड री ख्यात

४ यथार्थ, वास्तविक ।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, करारें मकसूद । दीदार दरिया अर-वाहै, आमद मोजूदे मोजूद ।—दादूबाणी

रु० भे०—मवजूत, मोजूद ।

मोजूदगी-स० स्त्री० [अ०] १ मोजूद होने की दशा या भाव ।

२ उपस्थिति, हाजरी ।

३ तैयारी ।

४ विद्यमानता

५ यथार्थता, वास्तविकता ।

मोजूदा-कि० वि० [अ०] चर्त्तमान काल का ।

रु० भे०—मोजूदा

मोजी-स० पु० [अ० मोजा] १ ग्राम, गाव ।

२ जगह स्थान ।

३ देखो 'मोजी' (रु भे) (अ मा)

उ०—१ हेम में जड़ित हीर, जूझल मोजा जजोर । दूसरे 'गंगा' दवाड़, जडी कडी जमदाड ।—गु रु व

मोटमन-वि०—देखो 'मोटमन' (रु भे) (अ मा)

मोटवी-स० स्त्री०—देवी ।

उ०—विन ले जावै विष्टिया, पाण चकारा पाह । मारी ज्यानै मोटवी, सगत असूला चाह ।—पा प्र

वि० स्त्री०—बड़ी, मोटी ।

मोटिम—देखो 'मोटिम' (रु भे)

उ०—किलवां कजि कालिका पलव इक हाथ पसारै । खपार मोटिम करै, बिया अन घरणी धारै ।—मा वचनिका

मोठ—देखो 'मोठ' (रु भे)

मोड—देखो 'मोड' (रु भे)

उ०—दळानाय आगळ तिली वस री दीपयण, रूप-राई तणा राउ राठोड 'अमर' वणियो सघर धारियो आत-पन्न, "माल" री तिलक "रिणमाल" हर मोड ।—कैसीदास गाहण

मोडवघ मोडवघो—देखो 'मोडवघ' (रु भे)

उ०—आवत दंगल अन्न-मघ । मोडवघा ठाकर मुगट-वघ । जोधपुर घणी आगळ जोधार, दीवाण वड्डा करि जुहार ।

—गु रु. व

मोत-स० स्त्री० [स० मृत्यु] १ किसी प्राणी की आयु पूर्ण होने पर स्वाभाविक रूप से होने वाला मरण अन्तकाल, निधन ।

उ०—१ अमीखान गढ रोहा माहै मोत मूवी । अमीखान रा वेटा नू टोवी हुवो ।—नैणसी

उ०—२ 'वृत्ता' किमर भल्लिया, 'फत्तमल' विजपाळोत। हट्टे न जगं नामछट्ट, मिट्टे न मेछां मोत।—रा. रू.

उ०—३ पगां री आंगळिया रा कटका पाडतो पाडतो नाई वोल्की-वापनी, मोन नो घावें जित्तें जीवणी कुण नी चावें।—कुलवाडी

उ०—४ मिनव री मोत आर्वे है, जकी घडी ऊपर भर री आछी-माटी लारली गानी वाना काच दाई माफ होय जाया करे है।

—दमदोख

२ किमी दुर्घटना के कारण, अकस्मात् होने वाली मृत्यु।

उ०—७१ पावडो लारे सिरक ध्यान मू वार करघो के गूचली मारघा नाळिंदर रा चार दुगडा व्हेगा टावर रं मावें आघोडी मोत टळणी।—कुलवाडी

उ०—२ चवें म्हागे माग म्वावण री मरघा कोनीं घोयळ भूडो घणो जनरायो वेद नें बुलाय ओगद करावो। नीतर म्हाारी तो मोत है।—कुलवाडी

उ०—३ भली आदमण जवाव दियो—था मिनवा रा ऐछा भाग रट्टे जवो म्हाारा वेटा थोरो परम करे किमो री मोत रा आखर ई जे दण भात घाल्योडा व्हे जिण री तो म्हें ई काई करू।

—कुलवाडी

मुहा०—१ बिना मोत मरणी=दुर्घटना मे या किसी अन्य कारण से अममय मृत्यु को प्राप्त होना।

२ मोत अणी, मोत आवणी=अत्यन्त कष्ट होना, मरणात्तक कष्ट, मृत्यु की घडी आना।

३ मोत नें नंतणी, मोत बुलावणी=ऐसा काम करना जिसके कारण गहरे सकट में फसना पड़े।

४ मोन मरणी=मरनी मोत मे प्रायु पूर्ण करके मरना।

५ मोन रं मड=मृत्यु मे, ऐसी स्थिति मे, जहां जीवन का हर वक्त भय रहता हो।

६ मोत री नमो=मरने मारने पर ऊतार होने की दशा, किसी को मार डालने की दशा मे होना।

७ मोत मू नेलणी=ऐसा काम करना जिममें जान जाने की पूर्ण गभावना हो, जोखिम भरा कार्य।

न० पु०—१ यमराज, काल।

उ०—१ तूडो मां मोत नें अरदाग करे। मोत टाळी छं, परियां ही भेरा घावें। फोडा पट्टे, ओकरी दुप ही भुगनें।—दमदोख

उ०—२ म्हनें प्रमे जीवणी ई कितीक रे। म्हें री खुद मोत री ई दजो प्प ह, पण पेडी घनें तो हान केई बरवा लग जीवणी है।

—कुलवाडी

४ दहा।

५ गिरगु।

६ नामदय।

७ अत्यन्त कष्ट, तरसीक।

उ०—७२ चवो-भोख पुवारनां तो मोत घाई, अरें वंठण ने

मूडो वय घोवें।—कुलवाडी

रू० भे०—मात, मोत।

मोतविर—देखो 'मातवर' (रू भे)

उ०—परघं रा केई मोतविर राजाजी नें राजी करण सारु हमण री कोमिस करी पण हसीजियो कोनी।—कुलवाडी

मोतल—देखो 'मुश्तल' (रू भे)

मोताज—देखो 'मुहताज' (रू भे)

उ०—मोनजी री कडूबो गांय मे आखें आयो हुयग्यो। मरतक भडग्यो। दांणी-पाणी रा मोताज हुय रैया है।—दसदोख

उ०—२ मोताज अम्हा हरवळ मिळण, मो कुळ वार नवी सख। गोरघन' कियो 'गजवध अग्र, कळह आप अग्र में करू।—सू. प्र.

मोताद—देखो 'मोताद' (रू भे)

मोताहळ—१ देखो 'मुक्ताकळ' (रू भे)

उ०—१ चडि मोताहळ—चरिय, सेन वमन पुनि मिस वदनी। बीणा पुस्तक घरिय वागवावनी तस्में नम।—मा वचनिका

उ०—२ है कानें मोताहळ, कर पूचो कठमाळ पै सकळ। राघो नांम विहण, अनलाणी डोर आदम्मी —र ज प्र

२ देखो 'मोताहळ' (रू भे)

मोती—देखो 'मोती' (रू भे)

मोदिता—स० स्त्री०—१ देखी का एक नाम।

उ०—नमो विगळा मंगळा चक्रपांणी। नमो मोदिता, जीत अम्भा मडाणी।—मा वचनिका

२ देखो 'मुदिता' (रू भे)

मोद्ग—स० पु०—एक आचार्य जो व्यास की अथर्वतु शिष्य परंपरा मे से देवदश नामक आचार्य का शिष्य था।

मोद्गळ—स० पु०—एक आचार्य, जो वेदमिश्र नामक आचार्य का शिष्य था।

मोव्गलायन—स० पु०—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मोव्गल्य—स० पु०—१ एक पतृक नाम, जो नाक, शतबलाक्ष एवं लांगलायन आदि आचार्यों के लिये प्रयुक्त हुआ है।

२ एक ब्रह्मचारी पुरुष, जिमने ग्नाव मंत्रिय नामक आचार्य के साथ वाद-विवाद किया था।

३ एक ब्रह्मण, जो मुद्गल एवं भागीरथी का पुत्र था।

४ एक वृद्ध एवं कोटी ब्राह्मण जो द्रोपदी का पूर्व जन्म का पति था। उस जन्म मे द्रोपदी का नाम नालायनी इन्द्रसेना था।

५ अगिरा कुलोत्पन्न एक प्रवर।

६ राम की सभा का एक मन्त्री।

७ जनमेजय के गर्व मय का एक मदस्य।

८ एक आचार्य जो शतशुम्भ नामक राजा का गुरु था।

मोन—स० पु० [स०] १ अणीचिन् नामक आचार्य का पतृक नाम।

२ देखो 'मून' (रू भे)

उ०—हम घोसत तुम बोसत नाहीं, काहे को मोन घरिया।—मीरा

मौनव्रत-सं० पु०—न बोलने, चुप रहने के लिये संकल्प ले कर किया जाने वाला व्रत ।

रू० भे०—मूनव्रत ।

मौनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रू. भे.)

मोनि, मोनी—सं० पु० [सं० मुनि] १ वह साधु जिसके मौनव्रत हो ।

(मा म)

२ मुनि, महात्मा ।

वि०—१ जिसके मौन हो, मौनव्रत धारी ।

२ जो वाणी से रहित हो, कुछ बोल या कहने में असमर्थ हो, मूक ।

उ०—भूख प्यास सकट सहै, सह विडाणा भार । जन हरिदास मोनी बलद, कासू करै पुकार ।—ह पु वा.

३ देखो 'मून' (रू. भे.)

उ०—साध कुमारग परहरै, सुमति सुमारग लेह । मोनि गहै कुवचन सहै, हरीया कसनी एह ।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

रू० भे०—मूनि, मूनी, मोनि, मोनी ।

मोने, मोनै—देखो 'मोनै' (रू. भे.)

उ०—१ मोने आय अनाहक मारघो, साम खून विण लेसा ।

जादव वस देवकी जामण, वर अवतार धरेसा ।—र रु

उ०—२ जब तेह कहै—मोने ढाढो कह्यो । वैराजी थयो ।—भि द्र

मोफाड—देखो 'मूफाड' (रू. भे.)

मोवत—देखो 'मुहवत' (रू. भे.)

उ०—दलाल कैयी—हा जगती जाणसी कं साचेली मोवत अर हिरदै रो हेत इसो हुवै ।—दसदोख

मौर, मोर—सं० पु०—१ शरीर का पृष्ठ भाग, जो गर्दन से लेकर कमर तक होता है ।

उ०—१ तरै लाढक राव नू पाछा सू भटकी वाह्यो । राव रे मोरे लागो । घणो वृहो ।—नैणसी

उ०—२ पग साथळ मा सु भागो नै ढोलीया रा आठो ई साल भागा नै वरडायेनै छटीया । ढोलियो मोरां पाछै लीयां इज ऊठीया ।

—राव रिणमल री बात

उ०—३ म्हारा मोर थापळ नै आप म्हनै हरख सू जीमो तो म्हारा मरणा में ई सार है ।—फुलवाडी

मुहा०—१ मोर थापणो, मोर थापणो=पीठ थपथपाना, शाबासी या साधुवाद देना । जोश दिराना ।

२ मोर दावणो=पीठ को हाथों से धीरे धीरे दबाना, पीछा करना ।

३ मोर पाघरा करणो=सोना, आराम करना ।

४ मोर माडणो=पीठ पर बौझा उठाने के लिये तैयार करना, प्रस्तुत करना । चोट या आघात भेलने के लिये पीठ आगे करना ।

५ मोरां हाथ देणो=पीठ पर हाथ फैर कर स्नान करना, उत्साहित करना, आश्वासन देना ।

२ पृष्ठ भाग, पिछला हिस्सा ।

उ०—अकवर रा जतना रह्यो, 'सोनग' साह 'दुरग' । मोर न दव्वं साह दळ, और सभारी जग ।—रा रु.

३ वृक्षों पर आने वाली मजरी, बौर ।

रू० भे०—मंवर, मडर, मचड़, मवर, मडुर, मार, मोर, मोहर, मोरी, मोरु ।

४ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ सुण आवाज सूरमा, एम घजराज उठाया । मोर जीत सिरमौर, जाण पर जोर कि आया ।—रा रु

उ०—२ सामता मोर चौवार घर साजती, समर वाणी विन पातसाही ।—नाथी साहू

५ देखो 'मोर' (रू. भे.)

मोरक—देखो 'मोरख' (रू. भे.)

मोरख—१ देखो 'मोरख' (रू. भे.)

२ देखो 'मूरख' (रू. भे.)

मोरखी-सं० स्त्री०—बटुक की नाळ का मुख ।

मोरखी-सं० पु०—१ ऊट बेल, बच्छा आदि के मुख पर शोभा के लिये बांधी जाने वाली जाली ।

२ देखो 'मूरख' (अल्पा, रू. भे.)

३ देखो 'मोरख' (अल्पा, रू. भे.)

मोरची—देखो 'मोरची' (रू. भे.)

मोरणी, मोरवी—क्रि० अ०—१ वृक्षों पर मजरी आना, बौर आना ।

उ०—१ मलयाचळ परवत सोई तो रुखमणीजी को सरीर । ऊठे ज्यो मलयतरु मोरज छै । त्यों अठे मन मोरघो, मोरघा पाछे कली हुवै ।—वेलि टो

उ०—२ ढाढी हेक सदेमढी, लग ढोला पुहचाप । जोबन आबो मोरियो, रस वूसी नी आय ।—ढो. मा

उ०—३ हरीया बौह वन मोरीया, पानो फूल फलाह । हेक न मोरघो बापढी, सूको मेह घणाह ।—स्त्री हरिराम दासजी महाराज २ बाजरी के कच्चे या सेंके हुए सिट्टे को दाने निकालने के लिए मसलना या मोरणी द्वारा सूतना ।

मोरणहार, हारो हारी), मोरणिघो—वि० ।

मोरिओडी, मोरियोडी, मोरघोडी—भू० का० कृ० ।

मोरिजणी, मोरिजवी—भाव वा० ।

मडरणो, मडरवी, मवरणी, मवरवी, मोरणी मोरवी—रू० भे० ।

मोरत—देखो 'मडरत' (रू. भे.)

उ०—जे ओ मोरत नी साजता ती घकलें सात बरसा मे ऐडो नामी मोरत नी सजती ।—फुलवाडी

मोरम—देखो 'मोहरम' (रू. भे.)

उ०—ईद, बकराईद मनावै, ताजिया रा तिवार आवै जद धोकै ।

पण मोरम अर तिवार आवै जद कायर मोर ज्यू भूरै ।—दसदोख

मौरय—देखो 'मौरय' (रू. भे.)



मोरची—देखो 'मुरची' (रू भे)

मोरचीकामदका—स० स्त्री०—मुल नामक यवन राजा की कन्या जो नटोखच की पत्नी थी।

मोरसली—म० स्त्री०—एक प्रकार का पुष्प।

मोराटी—म० स्त्री०—पीठ।

मोरामेठ—म० पु०—प्रश्यानुग्राम, पक्ष के चरणों की तुल्य बंदी।

मोरित—वि०—जिसमें मजरी, मोर, शीर आगई हो, मगरि युक्त। (पेड़)

उ०—निगर भर तरुवर मण्य छाह निसि, पुहपित अति दीपगर पढाम। मोरित भव रोम रोमचिठ, हरमि विकाम कमल प्रत हास।—वेनि

मोरिया—म० पु०—जंगल में चरने के लिये जाने वाले पशुओं के कुण्ड में से सबसे आगे चलने वाला पशु।

वि०—अग्रगामी, अग्रणी।

मोरियोटी—मू० का० कृ०—१ मजरी या मोर आया हुआ। (वृक्ष)

२ बाजरी के मिट्टे को मसला या सूता हुआ।

(स्त्री० मोरियोटी)

मोरियो—देखो 'मोर' (प्रत्या, रू भे)

मोरी—म० स्त्री०—१ बेल के कुटुद स्थान से पिछने पंरो की पीठ तक होने वाली वालों की पक्ति।

२ तलवार के स्थान पर छोटी व पतली डोरी।

३ प्याले के ऊपर का भाग, प्याले का मुख।

उ०—मूर्त रूप के मोरिया नू जडाळ के प्याले फिरते हैं। जिस प्यानु के बीच ही अन्नार दाळ चीनी परतकाळी अगुरी गले कुलाव ऐमी भांति भांति वे फूल भरते हैं।—सू प्र

१ देखो 'मोरी' (रू भे)

४ देखो 'मोर' (रू भे)

मोर्—देखो 'मोर' (रू भे)

उ०—हवागा मोर पर फुवासा घेट, तुवे के घाटा मा माटा मा पेड, घोह के बांटा सा आटा मा पाव। आछा सा चलणो मे काछा मा भाव।—दुर्गादत्त बागहट

मोर्गो—वि०—ओ बाप-दादा के समय से चला आ रहा हो, पंचक।

मोरी—देखो 'मोरी' (रू भे)

मोर्प—म० पु० [स० मोयें] एग प्रसिद्ध राजवंश, जिसका वर्षों तक मगध पर शासन रहा।

रू० भे०—मोर्गिय, मोरय।

मोर्पो—देखो 'मोर' (प्रत्या, रू भे)

मोर्ज—म० स्त्री०—१ गस्तापन, मदी।

उ०—घेजर एक कूजड़ा रं घणूही मोळ रं कारण आमलिया भर गांदा घणू हा पोत रं'गा।—कुलवाडी

२ घमाय, कमी।

उ०—गीर मोर रुकडा तरवानिया नं रुत रुत न्यागे न्यागे कर

न्हाकदी हे, कांती कांती वीरा री मोळ पढ गई।—वी स. टी ३ उदामी, सुस्ती।

४ कान्तिहीनता, मदता।

५ किसी कार्य में यथेष्ट चहल-पहल या उत्साह न होने की अवस्था या भाव, शान्ति।

६ हल्कापन, न्यूनता।

७ फीकापन, रुखापन, स्वाद हीनता।

८ ज्यादा खट्टेपन का अभाव। (६) प्रभाव हीनता।

रू० भे०—माळ, मोळ।

मोल—देखो 'मोल' (रू भे)

उ०—१ सतगुर तो वीरा मया, सिख सोदागर होय। हरि सोदी चित्त चौहटी, तोल न मोल न कोय।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ मई पिलाण कोडिय केकाण मोल ऊचरा। करं सनाह कठळि घेसार सैन घूमरा।—मा वचनिका

उ०—३ मेंहवा मोल दिये मेघावत, लिये अपार नकी जम लाह। आडावळ मोतिया असही, सोदी करं वळापति साह।

—महाराजा छत्रसिंह री गीत

उ०—४ माया सू मिनप री मोल वत्ती व्हे। म्हें वडेरं री ठोकरा साई ह। दीखती माया रं सांमी ये आ ठोकरां री कीमत नी भांक सकी।—कुलवाडी

मोल—देखो 'महल' (रू भे)

उ०—गाठ बांव बाहर निमरिया। देहरी एक सूनी थो जठं जाय वूरियो ऊपर भाठो राख जगळें पंस राजा नं मोल पो'चाय कस्यो—हमें हूं घरा जाऊ छू।—राजा भोज भर खापरा चोर री बात

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मोलगत—देखो 'मोहलत' (रू भे)

उ०—सोळें वरस हांकरता लोप व्हेगा। एक छिण लागी। मोलगत री फगत छे'लो दिन बाकी हो।—कुलवाडी

मोळट—म० पु०—खूटे आदि गाढने का लकड़ी का हथोडा।

मोळणो, मोळबी—देखो 'मोळणो, मोळबी' (रू भे)

मोळणहार, हारी (हारी), मोळणयो—वि०।

मोळियोटी, मोळियोटी, मोळियोटी—मू० का० कृ०।

मोळोजणो, मोळोजबी—कर्म वा०।

मोलत—देखो 'मोहलत' (रू भे)

उ०—१ औय तिहारी ये बांवनी हो अन्न, भावणी व्हे नहि बात अघूरी। या विधि को विरमावनी हो चित्त, चावनी मोलत होति मजुरी।—ऊ. का.

उ०—२ लक्की कस्यो—सोळें वरसां री मोलत कोई कम मोलत

नीं व्हे ।—फुलवाडी

मौलवी-स०पु० [म] १ इस्लाम धर्म का आचार्य । मुसलमानों का धर्म गुरु ।

उ०—मौलवी कराई अरज काजी मुला । पाडजे देवहर दलों कर पेल । मेच्छ वांचे जिकी हिंद इक्लीम मज्ज । खडौ राजा जितै वगै नह खेल ।—गु रू व

२ अरबी भाषा का विद्वान ।

३ मुसलमानों के बच्चों को पढने वाला गुरु ।

रु०भे०—मौलवी, मौलवी ।

मौलसरी, मौलसिरी, मौलसी—देखो 'बोलसरी' (रु भे)

उ०—आसापाळी खिजूर गूदी लेसूडो केसूला खिरणी मौलसिरी फरवास ।—रा सा स

मौलायी-वि०—१ निरन्तर फीकापन होने के कारण स्वाद परिवर्तन के लिये हर प्रकार की वस्तु खाने का इच्छुक ।

२ कामेच्छा से व्याकुल ।

मौलि—देखो 'मौली' (रु भे)

मौलि-स०पु० [स०] १ अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२ एक आचार्य, जो वाभ्रव्य नामक आचार्य का पिता था ।

३ देखो 'मौली' (रु भे)

मौलिक-वि०—मूल्यवान, कीमती ।

उ०—वहु मौलिक बागा दिया ।

मौलियामगल-स०पु० [स०मौलि मगल] वह लडका जिसकी जन्म कुडली में पहले, चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें घर में मगल पडा हो ।

रु०भे०—मौलियामगल ।

मौलियो—विविध रंगों का साफा विशेष ।

रु०भे०—मौलियो ।

मौली-स०स्त्री०—१ विभिन्न रंगों में रंगा कच्चे सूत का घागा, जो देव-पूजन व मांगलिक अरसरो पर काम आता है । सूत्र-बघन ।

उ०—अलकार बाजणा कदमां कटि सघ आभा । जटी मौली वाम अगा पीमाका जरीम ।—मा वचनिका

२ ईधन की लकड़ियों का गट्टर ।

उ०—हरि जेम हलाडी जिम हालीज, काय घणिया सू जोर कृपाळा । मौली दिवो दिवो छत्र मार्य, देवो सो लेऊ स दयाळा ।

—प्रध्वीराज राठीड

३ मस्तक शिर । (ह नां मा)

रु०भे०—मउली, मौली, मौलि ।

४ देखो 'मौली' (स्त्री)

मौलू—देखो 'मैलूजी' ।

मौली-वि० [स० मलिन स्त्री० मौली] १ मद गति से काम करने वाला, सुस्त, घालसी ।

२ जो तीव्र न हो, तेज न हो, मद, घीमा ।

उ०—१ मोट इत्ती मौली व्हेगी काई के खुद रै पगां री मोचडिया

ई नी दीखै ।—फुलवाडी

उ०—२ डोकरी कह्यो—आप गिराई जकी सगळी चीजा म्हनै साफ दीसै है, जाळी वाळी की कोनी । म्हारी अकल की मौली है, म्हनै आ समझ मे नी आवै के जे आ गाभा अर आ अमोलक चीजा सू ई काई राजा वणतो व्हे तो काई एक वादरी ऐ सगळी चीजां पेरलै तो वो राजा व्हे जावैला ।—फुलवाडी

२ निष्पेज, कान्तिहीन, प्रभाहीन, मलिन, घुघळा । फीका ।

३ उदास, खिन्न ।

४ शान्त, नर्म, घीमा ।

उ०—वो की मौली पढनै बोल्थो—माजी, म्हारा सू गौरी उणनै पीळिया री रोग ।—फुलवाडी

५ उत्साह रहित, ठडा ।

६ निर्वल, कमजोर ।

उ०—मेवाड दूदाड जीऊ ही हाडीली माळवो मौली । दोळा काल चक्र सो किणी न आवै दाय ।—सूरजमल मौसण

७ प्रभावहीन, निष्फल ।

८ शमिदा ।

९ नामर्द ।

१० अपेक्षाकृत न्यून स्तर का, हल्का ।

११ साधारण, ठीक-ठीक ।

ज्यू—ऐस जमानो मौली है ।

१२ जो ज्यादा कीमती न हो, कम दामो का, सस्ता ।

१३ बहुत कम खटाई के कारण जो स्वादिष्ट हो, जो ज्यादा खट्टा न हो ।

ज्यू—मौली दही, मौली छाछ ।

रु०भे०—मउलू मउलु, मउलू, मउलू, मउलू, मउली, मौली ।

मौल्य—देखो 'मूल्य' (रु भे)

मौसम-स०पु० [अ० मौसिम] १ ऋतु ।

उ०—वै बोल सुण्यां पछै दीवागजी सारु तो जाणै मौसम ई वदळगे । पौह री ठौड चैत री महीनी आग्यो ।—फुलवाडी

२ जलवायु, आबोहवा वातावरण ।

उ०—उठै गीं रितुवा वदळती, नी हवा वदळती । एक सरीमा दिन, अर एक सरीमा मौसम । फुलवाडी

३ किसी काय या बात-चीत के लिये उपयुक्त समय, वक्त ।

मौसमी-वि०—१ मौसम का, मौसम सम्बन्धी ।

२ किसी ऋतु विशेष में होने वाला ।

३ जो समय के अनुकूल हो ।

स० स्त्री०—नारंगी की जाति का एक फल विशेष ।

मौसर-स पु०—१ मृत्तक के पीछे किया जाने वाला भोज । मृत्यु भोज ।

उ०—१ जाट आपरी मां रै लारै घणो ई खरची-खातो करियो । गगाजळी वरताय न सगळी न्यात निवती । नामी मौसर करियो ।

—फुलवाडी

उ०—२ मोसर उडाया, मोसर मिटाया । आत्ता खरचा-वरचा पडाया, अर कुशीना मे मुभीत रा थांम पांळाया ।—दमदोय  
२ किमी अवसर विशेष पर होने वाता वाविक, सामाजिक या गति रिराज मन्वन्त्री कार्य ।

३ देवो मोसर' (रु भे)

उ०—१ मानवियों चूको मती, आयो मोसर ण्ह देह । देह घन दीन ने, लाभ जनम रा नेह ।—रु का

उ०—२ भूप 'अज्ञोत' तल्ल छळ भाटी, पण परवीर गीत ची पाटी । दोन 'किमोर' 'मूर' अतुळी वळ, मोसर तणी सापनी मगळ ।

—रा रु

उ०—३ मन्त्र भूना निज घानख सरा, मन्त्र अर्ध भूहा मोसरा । रिण राम धर दगमाय रा, पित वेव लगा म्भरा ।—र ज, प्र

उ०—४ अग ऊत्राम रा, मीजिया साम रा । मुळकती मोसरा, आनिया आम रा ।—मा वचनिका

रु०भे०—मयमर, मयमर, मावमर, मागर, मोवर ।

मोसादी-म०पु०—पशुप्रा का एक रोग । डममे पशु के मुह पर फफोने पट जाने ह ।

मोसाळ—देवो 'मोसाळ' (रु भे)

मोसातो, मोसाती—देवो 'मोसाळ' (अत्पा, रु भे)

उ०—हेमजी म्यामी घर मे था जद एक वहिन थी तिए नें मामी आय मोसाल ने गयो ।—नि द्र

मोसिकोपुत्र-म०पु० [म० मोपिनीपुत्र] एक आचार्य, जो हारिकर्णी पुत्र नामक आचार्य का निष्य था ।

मोसी—देवो 'मामी' (रु भे)

उ०—वगत भी बात, मा मर वीर मोसी ही मर । मोटियार मग्घी घर बियरे लार्-लार् वेटी भी आगीने गयो ।—दमदोय

मोसीहार्द—देवो 'मामीहार्द' (रु भे)

उ०—पर गहवा मोपर दीमर रहै, मोही पण मोहिळा रो दोहितो । गयो ही मोसीहार्द भाई लाग ।

—सूरेखिनि कावलोत री वान

मोमी—देवो 'मोमी' (रु भे)

उ०—जद भेर वावो ठिरजीजता ठिरजीजता ई इण मोमा रो पत्तर नेवी वावो-पने हाम इण भेद रो ठा' को पढी नी । मागे कमर मर मे वेटी री मटरका नीया है, वाणिग्या नें टावर को दिया नी ।—कुनराडी

मोह—देवो 'मोह' (रु भे)

मोहकाण—देवो 'मुकाण' (रु भे)

मोहत—म० पु० [म० महत्त] महत्ता, बटाई ।

उ०—पर पर मगळवार, मोहत चव्थी महोवर । नाद वेद चरनिमा, मुकवि घोलं गुन आमर ।—गु रु व

मोहताद—देवो 'मोताद' (रु, भे)

उ०—वृत्त री मोहताद दरमी कवण । कवण मोटा तगु

मोज करसी ।—द दा

मोहती—देवो 'महता' (रु भे)

उ०—सरव मुखत्यारी करमचद री है । अरू हूजो ठाकुरभी वेद मोहती है । सू इण पर महाराज री वडी मरनी ।—द. दा

मोहवत, मोहवति—देवो 'मुहवत' (रु भे)

उ०—वांठ छूटे अन्न नी घारा पीपी सत मया मतवारा । श्रीरन को मगति नही मोवति, लागी एक अलख सु-मोहवति

—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

मोहमद—देवो 'मुहम्मद' (रु भे)

उ०—मोहमद पीर जिब गउ कीन्ही, वा फिर मारि जावाई ।

—स्त्री हरिरामदामजी महाराज

मोहम—देवो 'मुहिम' (रु भे)

उ०—एळवळ द्रव्य दान खग दावै, अनि भूपाळ जोड नह आवै ।

कूत साह नू हुतो मकाज, मोहम जिनी लीम महाराजा—सू प्र

मोहर—देवो 'मोहर' (रु भे)

उ०—दूर कराई वाडिया, मोहरा दे दे हाथ । माळा कठी मोनवी, समचै एकरा साथ ।—रा रु

उ०—२ तोय भूा पण तोयन तखिणा । दम दम मोहर ममार्य दखिणा ।—सू प्र

उ०—३ 'गाजीसाह' तणी गाढा गुर, साजे अणी बडो मग्दार । मारा मोहर बडा दत समचै, मारा मोहर वजावै सार ।

—तेजमी विडियो

उ०—४ मोहरि गोठि वीमाह, मोहर दग्धार मक्कारा । रहा मोहरि रावता, सदा जिम बहता सारा ।—सू प्र

उ०—५ रिम दोडियो दिवस तिए रतिया । मोहर खबर पूनि भेडतिया ।—रा रु.

उ०—६ 'पती' परिगह भागळो, मोहर गजां मरोड ।—रा रु

उ०—७ मोहर लुधू दीरघ जमल, पाय ए परि आण । मकी कविदा मांमळो, ससि छदा मिहनाण ।—रि प्र

मोहरत—देवो 'महुरत' (रु भे)

उ०—मटर उछाह आवाज मारती, चव्थी मोहरत विकट घणों ।

—दूदा नगराजोत री गीत

मोहरली—वि० [राज० मोहर=आगे+प्रत्य-नी] (स्त्री० मोहरली) आगे वाला अग्रणी, प्रथम ।

उ०—सुतन अद्रमीग केहर' अने मुमु'मुत, चवटा वीयां जम न कूच लीया । वांसलो अणी मु घणी करडी वणी, मोहरली अणी रा लोह मळीया —पहाडखा आढो

मोहरि,—१ देवो 'मोहर' (रु भे)

उ०—मोहरि गोठि वीमाह, मोहर दरवार मक्कारा । रहा मोहरि रावता, सदा जिम बहता सारा ।—सू प्र

२ देवो 'मोरी' (रु भे)

मोहरियाळ—देवो 'मोहरियाळ' (रु भे)

उ०—एळ छळि रायांगीग कलावत । मोहरियाळ 'सिवा' गाहावत ।

रा. रु.

मोहरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—१ मोहरी डोरी रेममी, नीली चदणी नकेल । रूपाळक फण नाग रग, बाळक जुग बकेल ।—सू प्र.

उ०—२ मोहरी चपा सेली समध, पचकल्याण पह्चाणिये । अनेक रग पसमा अलल, जेहा मुखमल जाणिये —सू प्र

उ०—३ परठि घसेणी पावं, उरस छिन्न प्रोध उभल्ल । वह बरसतां वडूक, भाल मोहरी कर भल्ल —सू प्र

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ पातो जोघ घणी छळ पायां । भगवानोत मोहरी भाया ।

—रा रू  
उ०—२ मानढो 'वंगु' फोजा तणा मोहरी । वाजि वंकुठ गया ठाण भरता —जगी सांदू

मोहरू—१ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—चोळ घजाबोळ मोहरू सँ ऐमी अनेक चल्ली । सीसा सोरडे रू अटालू के भार ।—सू प्र

२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मोहरे, मोहरं—क्रि० वि०—१ अग्र भाग पर, आगं, अगाडी ।

उ०—जे लाबा हेला करे, मोछी ब्रोख भरत । वचै सही वै वाघ सू मोहरं गया भरत ।—बा दा

२ सम्मुख, सामने ।

उ०—मोहरं चढिया मयद रँ, भँचक जाय भडाक । गँवर भूलँ गाळबो, चीसँ चढ चित चाक ।—बा दा

३ किनारे, तट पर ।

उ०—मोहरं महराण रँ दळा रा महावळ, भुजावळ वनपती कीघ भैरी ।—नगराज री गीत

मोहरी—देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—१ आसमानी मोहरा किये पल्लैसँ झिलते आए ।—सू प्र

उ०—२ काबियां रग मोहरा करे, रग वाँ भँसा रगति । जदि चाढ़ि मदा उवाळामुखी, सभै ताम तोपा सगति —सू प्र

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—जाई सहर के राजा की कुवरी पचकली नै मिल्यो, चपे री झळी सुं तुजती । तेरी नाम पचकली कहावती । तेरै मोहल जाइ वँठो ।—चौबोली

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—ताहरा आस्या राजलोक में गई । ताहरा राजा रा मोहल आस्या नू देखि नै अचिरज हुवा —स्याम सदर री बात

मोहलियो—देखो 'मोहलियो' (रू. भे.)

उ०—ढोला थारै बाघण पचरग मोहलियो । म्हारै (नै) मोहण नै बालाचूदही ।—लो गी

मोहली—१ देखो 'महोली' (रू. भे.)

२ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—मडिया महोक्ष सिघारथ मोहले, सुपन त्रिसला सुतण किया साषा ।—घ व ग्रं

मोहणी, मोहिणी, मोहीणी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—१ सरूप हेक सुंदरी, इला नका अगोचरी । प्रतरुव चरुव पोइणी, महा मदन मोहिणी ।—मा वचनिका

उ०—२ माळिणी मोहीणी माहेसरी, चकरी कूढळा वालिका । भखणी जमदूता भजा, नाम सता प्रति पाळिका ।—मा वचदिका

मोहरत—देखो 'महरत' (रू. भे.)

मोहरतिक—स० पु०—एक देव, जो धर्म ऋषि एव मूर्तार्ता के पुत्रों में से एक था ।

मोही—देखो 'मोसी' (रू. भे.)

उ०—यू करतां कतराक दन जाता वडां भाया री बहुआ अणी री बहु ने मोहा वोली, तकी केहण लागी—ये माटी वेर घरा रा सुख भुगतो पण रजपूता री कुमाई वरोळी छी ।

—कल्याणसिध नगराजोत धाडेल री बात

म्यत—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—मछराळ देवदयाळ ग्रीवसु म्यत रे ।—र ज प्र

म्याउ म्याऊ—स० पु०—बिल्ली की बोली, बिल्ली के मुह से निकलने वाली आवाज ।

उ०—इत्ता में एक मिनकी भवरा मे आय म्याऊ २ करण लागी ।

—फुलवाडी

रू० भे०—म्याव, म्याँ ।

म्यान्—स० स्त्री० [फा० मियान] १ तलवार, कटार आदि का कोप, खाना, कवर । (हि को)

उ०—खीया थू खुरसाण, घण तेगी तलवार री मुखमल हरी म्यान्, खवे बिलूबू 'खीवजी' ।—अग्यात

पर्या०—कोप घरतरवार, चद्रहासधर, तरवारपिधान, पगीवार, सप्तधर ।

रू० भे०—मयान, मिश्रान ।

२ अन्नमय कोश ।

३ शरीर ।

म्यान्माई—स० पु०—वे दो पुरुष जिनका एक ही स्त्री से मैथुन सम्बन्ध हो ।

म्यानी—स० स्त्री० [फा०] पाजामे मे दोनों पल्लो के रानो के बीच मे जोडा जाने वाला कपडे का टुकडा ।

रू० भे०—मियानी, मनी ।

म्यानी—स पु०—१ अभिप्राय तात्पर्य आशय, अर्थ ।

उ०—१ पूछ्यो—यू कुण है ? कीकर म्हारी चावना पूरला, पै'ला म्हनं इण री सावळ म्यानी दै, पछे म्हें हलाया लावती ढबूला ।

—फुलवाडी

उ०—२ वा तो आवै ज्यू, जका बोल उरळिया, वै ई बिना लाग-लपेट रँ पाघग खळकाय दिया वारी की अरथ के म्यानी नीं ही ।—फुलवाडी

२ कारण ।

उ०—गणू वूं मोत पाया पैली क्यू मरणी चावें, इण रो म्यानी वता ।—फुनवाडी

३ भेट, रहस्य ।

उ०—पूछ्यो—मैं नो धारा प्राण लेवती नैं थू हग हग हसियो कीकर ? म्हनै इण रो म्यानी वता ।—फुनवाडी

४ गुनामा ।

उ०—एक ई चीज सू विणी नैं सुख उपज सकं तो विणी नैं दुख । इण मरम रा म्याना वास्त ई आ वात है ।—फुनवाडी

५ एक प्रकार की होनी, पालकी या पालना, जो चारो ओर से-टका हुआ होता था । इसके दोनो ओर मुह होते थे । यह पर्दा न चीन स्त्रियों के आवागमन के काम आता था ।

उ०—म्यानिं विन मुगळानियां, जरा न जा पातीह । भैं खुमाण हुत भरम खो, छई उघडि छातीह ।—रेवतमिह माटी

रू०भे०—म्यानी ।

म्याव—देखो 'म्याऊ' (रू भे )

म्याई—१ देखो माई' (रू भे )

२ देखो 'वाई' (रू भे )

म्यावट—१ देखो 'मावट' (रू भे )

२ देखो 'म्यावट' (रू भे )

म्याळ-स०पु०—१ कच्चे मकान की छाजन के नीचे लगने वाला लकड़ी का लट्टा ।

२ कमरे में धागने-मामने की दीवार में लगने वाला वह पत्थर जिम पर सामान रखा जाता है । टाट ।

३ गूँ से पानी निकालने के चक्र के दोनो डटे के नीचे की पट्टी ।

४ कच्चे मकान की छाजन में लगे 'बलीड' की सीधा रखने के लिये उसके नीचे लगने वाली धनुषाकार लकड़ी ।

म्याळमिनो, म्याळमिनो-स०पु०—जंगली घिनाव ।

उ०—अर घटी नैं चौवरी म्याळमिनो नैं पकटण मारु उणी भात माउचेत होयनै ठमी हो ।—फुनवाडी

म्यागट-ग०स्त्री० [स० मात्री-वृत्ति] १ तुल्य व्याई हुई गाय, भैंस या बकरी के दूध को गर्म करने पर बनने वाला गाढ़ा स्वाद्य पदार्थ ।

रू०भे०—म्यावट ।

२ देखो 'मावट' (रू भे )

म्युनिमिपेल्टो-ग०स्त्री० [अ० म्युनिमिपेलिटो] नगर की सफाई आदि का दक्षिण प्रमुख रूपने वाला कच्चे या पहर में गठित एक निगम नगर पालिका ।

म्युनिम-स०पु० [अ०] अदभुत एवं विलक्षण वस्तुओं या पशु-पक्षियों का प्रदर्शनाय सप्रहृ बन का स्थान, घनायकघर ।

म्यो—देखो 'म्याऊ' (रू भे )

अकट्ट-स०पु० [स०] मार्गरेय अपि के पिता का नाम ।

अखा—देखो 'असा' (रू भे )

उ०—१ चित करणी अखा दिखी नह चाहे, आप विरद चा पखा उमाहै ।—र ज प्र.

उ०—२ अनट्ट जे अखा नवाच्य, सूरमर्म री नरा । पर सती अभेट पिह, दास गाय दीन रा ।—सू प्र

अखावाव—देखो 'असावाद' (रू भे )

उ०—तुच्छ घरम रग, गुरुजन प्रससा भंग, मुक्तकरण—प्रमाद, बहुल अखावाद, एवविध कलि ।—व स.

अगक—देखो 'अगांक' (रू भे )

अग—देखो 'अग' (रू भे ) (प्र मा )

उ०—१ मडल मांह वसाय अग, थयो कलकी चद । पायो सीह मयद पद, हण हायळ अग यद ।—वां. दा.

उ०—२ ठयो मद्र मदां अगां वम ठावा, छटा फैल हालें किना सैल छावा ।—व भा

उ०—३ अग जातं आयो मनै, आयो पोस अघन । पसरता उत्तर पवन, घर सीतळ रवि घन ।—रा रू

अगअक—देखो 'अगाक' (रू भे ) (ह ना मा )

अगअखी देखो अगाखी' (रू भे )

अगइव, अगइद—देखो 'अगेंद्र' (रू भे ) (ह ना मा.)

अगचरम-स०पु० [अ० मृग चर्म] हरित का चमड़ा जो बिछाने के काम आता है ।

अगछाळ, अगछाळा-स०स्त्री०—मृगचर्म ।

उ०—१ इसी रूप विक्रम कियो, कांधे घर अगछाळ । द्वादस तिलक सरीर के, हाथ लियो जयमाळ ।—पचदही री धारता

उ०—२ मकारां चुरसां धारा जाणियो जहान सारां । बाखालीयो छय घारां जोह रा विनेस । आहबरा महालां सांवरं साज मोछाहीयो,

अगांछाळा वागदरां पूजीया महेश ।—महकण मईयारीयो

रू०भे०—मरगछाळा, अगछाळा, अगछाळ, अगछाळा, अगछाळा ।

अगछावड—देखो 'अगमावक' (रू भे )

उ०—लइता जग लहरि तुरगे लागा, सूरतण जोवता मघीर । अगछावड जिमा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतगी तीर ।

—महादेव पारवती री वेनि

अगण्ड—देखो 'अगप्रसणा'

अगण्ड-स०पु०—हिमाल साहित्य का एक गीत छंद विशेष, जिसके प्रथम तीन चरण १४ मात्रा का, चौथा-चरण १० मात्रा का तथा बाद में तीन चरण फिर १४—१४ मात्राओं के होते हैं ।

अगण्डचण-स०पु०—मियार ।

अगण्डाणी-वि०—मृग के समान छर्पांग लगाने वाला ।

अगणाल-स०पु०, स० मागण] तीर, बाण । (हि ना मा )

अगतरसणा अगतिरसणा, अगतिरसणा, अगप्रसना, अगप्रसिका, अगप्रसिना, अगप्रसिना—देखो 'अगप्रसणा' (रू भे )

उ०—१ अग-तिसणा रै सारै भटकियो, पण पांणी री छाट ई  
हार्थ लागी नौं ।—फुलवाडी

उ०—२ जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन नीर सुपनै नहि पावै ।  
घर जिग्यासू दस दिस चावै, अगत्रिसणा गुरु लख मुरभावै ।

—ऊ का

उ०—३ जिसिउ स्वप्नराज्य जिसिउ गधरवनगर, जिसिउ नदी  
पुलिना तरालि लिखित प्रासाद, जिसिउ अलातचक्र, जिसी अग-  
त्रिणिका, जिसा मायागोलक, जिसिउ इद्र-जालवन तिसिउ मायामय  
ससार ।—व स

अगदस अगदसक-स०पु० [स० मृगदशक] कुत्ता, श्वान ।

(अ मा, ह ना मा)

अगधर-स०पु० [स० मृगधर] चन्द्रमा, चाद ।

रू०भे०—मरगधर ।

अगनयणी, अगनयनी—देखो 'अगनयणी'

उ०—१ कुवळ नयण कुळ सुच्छ, अगनयणी मनासभी । मुहई  
आगळ मुच्छ, जम वयू जासी जेठवा ।—जेठवी

उ०—२ अगनयणी अगपति-मुखी, अगमद तिलक निलाट ।  
अगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारु अइहइ घाट ।—ढो मा ।

अगनाथ—देखो 'अगनाथ' (रू भे)

अगनाम अगनामि, अगनामी—देखो 'अगनामि' (रू भे.)

उ०—१ अगनाम अतर सौधा प्रमळ, वटि अरगजा वळोवळां । जदि  
चढे अनुज अग्रज गजा, हूतां हाल किलोहळां ।—सू प्र

उ०—२ अगनामि इ महमह सीय पट्टीय गडखि कुमारि ।  
नयणि निरवू ते निरखिय हरिखिय, नेमि सा नारि ।—जय सेखरसूरि

उ०—३ सुखानंद राजा री पुत्र उग्रनामि ५४, री धरम-व्वज,  
५५, री मकरध्वज ५६, री अगनामि ५७ ।—रा वसावली

अगनिद्रा, अगनींद-स० स्त्री०—निद्रा की वह अवस्था जब नींद लेते  
समय आँखें खुली रहती हों ।

उ०—अगनिद्रा मांहेह, सोवै जायलपत सदा ।—पा प्र

अगनेणी—देखो 'अगनयणी' (रू भे)

उ०—१ तरुणी बरुणी मे नीकर ऊर ताकी, थिग थिग अगनेणी  
पिक-वैणी थाकी ।—ऊ का ।

उ०—२ झुरै रे अग-नेणी झूलर, मेह तणी परि मोरा । जोगण-  
पोठ दियां सायजादी, धूमरि ऊपरि घोरां ।—रूषी मुहती

अगपत, अगपति, अगपती—देखो 'अगपति' (रू भे)

(ना डि को, ह नां मा)

उ०—१ कुण दूजें चालें कहौ, अगपत वालें माग । जुध में काचा  
ताग जिम, तोड़ें ऊमर ताग ।—बां दा ।

उ०—२ स्त्रीवत्स रू खनी लुठाय फिरि, स्येन रू बच्च कुरग । छाग  
फिरि । नद्यावरत घट रू कच्छप गति, बीलोत्तल रू सख अहि  
अगपति ।—व भा

उ०—३ अगनयणी, अगपति-मुखी, अगमद तिलक निलाट

अगरिपु-कटी सुंदर वणी, मारु अइहइ घाट ।—ढो मा ।

अगपाळ-स०पु०—तीर । (डि ना मा)

अगमदा-स०स्त्री० [स० अगमदा] क्रोववशा नाम्नी से उत्पन्न कश्यप  
ऋषि की दस कन्याओं में से एक ।

अगमद, अगमदा—देखो 'अगमद' (रू रू)

उ०—१ विद्या गुण वारता भली, अगमद परिमळ माळ । तेळ  
विदु जळ माहि ज्यू, पसरै जगति साळ ।—पचदही री वारता

उ०—२ तव मुख पूरण चाद सौ, पूरण सदा प्रकास । अग अग मे  
खुल रही, अगमद के री वास ।—कूबरसी साखलारी वारता

उ०—३ पचवरण फूलां नो माल, प्रतिमा कठि ठकू सुविसाल ।  
अगमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।—स कु

उ०—४ तन प्रसित घ्राण अगमद असीग । हठ अरिन अमल व्हे  
जात हीग ।—ऊ का

उ०—५ जिन चद-सूरति सकलचदन, अगमदा केसर करी । प्रह  
समइ-सूंदर पारस्व पूजइ, तेहनी घन्यासिरी ।—स. कु

उ०—६ अगनयणी, अगपति-मुखी, अगमद तिलक निलाट ।

अगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारु अइहइ घाट ।—ढो मा ।

अगमरद, अगमारण-स०पु०—सिंह, शेर । (अ मा, ह नां मा)

अगमास-स०पु०—मार्गशीर्ष मास ।

उ०—नव उच्छव नर नार, नवल अगार वसन्ते । गीता में  
अगमास, कह्यो मम रूप किसने ।—रा रू ।

अगमित्र—देखो 'अगमित्र' (रू भे)

अगमिद्र—देखो 'अगमद' (रू भे)

अगयद—देखो 'अगेंद' (रू भे) (अ मा)

अगया—देखो 'अगया' (रू भे.)

उ०—अगया रमें भावता मारग, देखत ऊमी दोटै । आज कुलग  
अमण तिण ऊपर, लाग जिनावर लोटै ।—र रू

अगराज, अगराव—देखो 'अगराज' (रू भे) (ना डि. को)

उ०—१ सुख हित स्याळ समाज, हींद अकवर वस हुवा । रोसीली  
अगराज, पजै न रांग प्रतापपी ।—दुरमो आढी

उ०—२ जिसं जादूराय घोडें चढियो आयो अरु आदमिया कयोजी,  
ऐ राजा पदमसिध बैठा । सू देखें तो घायल हुवा अग्राज ज्यू धूम  
है —द दा

अगरिपु-स०पु० [स० मृग-रिपु] सिंह, शेर ।

उ०—अगनयणी, अगपति-मुखी, अगमद तिलक निलाट । अगरिपु  
कटि सुंदर वणी, मारु अइहइ घाट ।—ढो मा

अगलउ—देखो 'अग' (अल्पा, रू भे)

उ०—हू त्रियच किमू बहराव, रथकार नइ सहू थोक जी । अगलउ  
भावना मन भावतउ, गयो पचम देवलोक जी —स. कु

अगलोअणी अगलोचणी, अगलोचना, अगलोचनी, अगलोचण, अगलोचणी,  
—स०स्त्री० [स० मृगलोचना, प्रा० मिअलोअणा] वह सुंदर स्त्री  
जिसके नेत्र मृग के नेत्र के समान हों ।



उ०—१ नवजोवन नारी मिली, उरि सहकइ हे नवसर हार ।

हमगमण अगलोपनी, मुहि बोलइ हे मगलचार ।—हीराणंद सूरि

उ०—२ मसि-वदन अगलोचना रे, हरिलकीसु बिसाल । राजा

मानं प्रति पली रे, जीव सूं प्रधिक रमाल —जयवाणी

उ०—३ चढती वय उपमा चढती, अगलोचनी कळाइर मोर ।

गति प्राप्तति मति गयद तणी गति, जोवन तणउ दिखायउ जोर ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ हा चद्रवदनी हा अगलोचण, हा गोरी गजगेल ।—वि कु

उ०—५ चद्रवदण अगलोचणी, भीमुर समदळ माल । नासिका

दीप-मिखा जिसी, केळ गरम मुकमाल ।—ढो मा

अगली—देखो 'मिग' (अल्पा, रु भे)

अगवाह, अगवाहण, अगवाहन-स०पु० [स० मृग-वाहन] १ चद्रमा ।

(अ मा)

२ पवन, हवा । (अ मा)

अगधीधी—देखो 'मिगधीधी' (रु भे)

अगस—देखो 'मिग'

उ०—देवी अगस अगस हस्ती मयने, देवी पक्ष केकी गरुड घिरट पये ।—देवि

अगसर—देखो 'मिगसर' (रु भे.) (अ मा)

उ०—सुदि अगसर मत्तभी, वार मगळ वरदाई । अम परम 'अमसाह' विमळ ग्रहि वस बढाई ।—रा रु

अगसासा—देखो 'मिगसासा' (रु भे)

उ०—अगसासा अमि अगा, पवन उठाण हाण भापदा । पाळी हरि विलिपिगा दादुगिया नैव कुदाही ।—रामरामो

अगसायक-स०पु० [गं० मृग-सायक] हरिण का बच्चा ।

रु०भे०—अगछावड, अगछावक,

अगसिर—१ देखो 'मिगसर' (रु भे) (नां मा)

उ०—मळ भळ सावण नं अगसिर सळ सेधै । भावळ वरका नी नरकां सूं वेधै ।—ऊ का

२ देखो 'मिगसिरा' (रु भे)

उ०—अगसिर नखत्र पाउ वाज्यो सु अगा पों वदरी हुयो छै । दिता करि व्याकुळ हुयो छै ।—त्रेलि टी.

अगसायक—देखो 'अगसायक' (रु भे)

अगाव-स०पु० [म० मृगाव] १ चद्रमा । (नां हि को)

उ०—मानवी मेप अगाव मनोहर । मधुकर मोर चकोर त्रिमी री । —म कु

२ एत प्रकार की रम घोष ।

रु०भे०—अगरू, अगस ।

अगावलेपा-म०रु० [स० मृगाव लेपा] चद्र लेपा नामक महामती ।

उ०—१म अगावलेपा अगावली, सतानीक नी नारजी ।—म कु

अगान—देखो 'मिग' (मह, रु भे)

उ०—अग सैव अगान अगान नटी मनु । भांग पटी यधुनी प्रवर्ज ।

दपटी कळ जाणुक तोप थटी दग । डाळ पटी क पठाण वजै ।

—किसनजी दधवाडियो

अगाक्ष, अगाक्षी, अगाक्षी-स०स्त्री० [स० मृग-प्रक्षि] मृगनयनी,

मृग के समान सुन्दर नैत्रो वाली स्त्री ।

उ०—गवाक्ष तें अगाक्ष की कटाक्ष तें निर्ग नही । धिराम चद्रसाळ

चद्रसाळ पें धिगं नही —ऊ का

रु०भे०—अगप्रक्षी ।

अगाट-स०पु०—१ हरिन ।

उ०—थटं गयदा 'थाट' क फोजां थाहणा । बरुं तुरंगा वाळ अगाटां

वाहणा ।—वगमीराम प्रोहित री बात

२ देखो 'अगराट' (रु भे)

अगादन-स०पु० [स० मृग-अदन] चीता ।

अगाधिप, अगाधिपति, अगाधीस-स०पु० [स० मृग-प्रधिप, मृग-प्रधीश] सिंह, शेर ।

उ०—१ ऊभी ऊळजिया छरा, जेय अगाधिप जेण । कुण ठण वन खांडो करै, हेकी पान हटेण —वां दा

उ०—२ निज कुळ कमळ दिनेस, चवि सुर गण नखत जाण निण चद । मुनि वन रखण अगाधिप, रघुबर अवत (स) राजेस ।

—र. ज. प्र.

उ०—३ पडै गीठ दळां दोळां गोळा अज बांण पाष । कांगरान घात ओळां जजाळा कडक । घूता निसा अयुतां आवते मानं 'अगाधीस, घारी जदी तदी तीसां अयुतां घडक ।

—महाराजा मानसिंह री गीत

अगानयनी, अगानेणी अगानेणी—देखो 'अगनैणी' (रु भे.)

उ०—१ ढोला, म्हाने तो प्यारा लागी, प्यारा लागी आप होजी ढोला आप, अथ घर बाया, अगानेणी रा बालमा होजी ।

—लो गी

उ०—२ ऊभी ऊभी अगानेणी थानं, आली देवी घण लाज मरं छै —रसीलं राज री गीत

अगराज—देखो 'मिगराज' (रु भे)

उ०—कुळ हाडां कूरमा, किया विण भाडा कारण । ज्यां भागं अगाराज, घरं गजराज न धारण ।—रा रु

अगाळ—देखो 'मिग' (मह रु. भे.)

अगासन-स०पु० [स० मृग-आमन्] १ मृगचर्म जो बिछाने के काम आता है ।

उ०—बखत अगासन त्रिपत विण, देखत रह पिय दीठ । तिम ईद्रासण विण त्रिपत, पियकर परसत पीठ ।—वां, दा

[स० मृग-असनम्] २ सिंह, ३ चीता ।

अगि, अगी—देखो 'मिगी' (रु भे.)

उ०—१ सुणिये बसुधाधिप साधन की, विधवा अगि मारण व्याघन थी ।—ऊ का

अगोली—देखो 'मिगी' (अल्पा, रु)

उ०—ताहरां कल्यो-में पारी अगीली नही खाधी है । जुठो कळक मनु मता देई ।—सांवतसी री बात

अगीस—देखो 'अगीस' (रु. भे.)

उ०—यम सुनिय बत्त अगरेज कान, मानो कि तीर मुखयो कमान । मातग हेरि मानहु अगीस, मानहु पनग लखि खगाधीश ।

—ला. रा.

अगु—देखो 'अगु' (रु. भे.) (उ. र.)

अगेंद, अगेंद्र—स० पु० [स० मृगेन्द्र] १ सिंह, शेर ।

२ मध्य लघु धी पाच मात्रा का नाम ।

३ दो जगण का एक छन्द विशेष । (र. ज. प्र.)

रु० भे०—मिरगेंद्र' अगइद, अगइद्र, अगयद, अगेंद्र ।

अग्रेस—स० पु० [स० मृगेस] सिंह, शेर ।

उ०—तजि तजि हय सौ सुनि पकरि तेग, बित्योही जाय थह वह सवेग । सूकर मति पत्तं ढिग असेस । मयमत्त गज्जि निकस्यो अग्रेस ।—व भा

रु० भे०—मिरग्रेस, अगीस, अग्रेस ।

अगछाळा—देखो 'अगछाळा' (रु. भे.)

उ०—कपाळी चढ्यो बँल पं लैर लग्यो, चढी सिध काळी लखे बँल भग्यो । गिरि मादि के मेखळी रंडमाळा, गिरि अत ततावळी अगछाळा ।—ला रा

अघ—देखो 'अघ' (रु. भे.)

उ०—ठावी मूठा ठीक, मूकं बांण महावळी । अघ सांवर सूकर महिख, भेदता निरभीक ।—मा वचनिका

अघभक्षण—स० पु० [स० मृग + भक्षणम्] हवा, पवन । (ह. नां मा.)

अघवाहन—स० पु० [स० मृग वाहन] हवा, पवन ।

अघ—देखो 'अघ' (रु. भे.)

अडाणी, अडा—देखो 'अडा' (रु. भे.)

उ०—चुणं कर मुड अडा वर चाह, सपेख सपेख सराह सराह । —रा रु

अजा—देखो 'अजाद' (रु. भे.)

उ०—कलियाणोत भाजत कटक, अरि अत देखि वचत जो अग । मेरु चलत अजा दधि मुकत, पलटत तरण पक्त घरपग ।

—महेसकल्याणोत सांखला री गीत

अजाद, अजादा, अजादि—देखो 'अजाद' (रु. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ जाण पणउ कळा तियइ तन जोवण, विघ बिन्है ही लागा वाद । मय काळी जाणी महामह प्यारभ, माढी तिण रूप री अजाद ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सबदी लग कोड अजाद रायसिध । गहवत रैणायर वड-गात । ऊपर लहर सवाई अपतै, छिलतै छातरिया अन छात ।

—द दा

उ०—३ मोटा घरां अजादा मिटगी, वगळां रं सौ बारी रे ।

गोला जुगळी मांय गई जद, नसल बिगड गई न्यारी रे ।—ऊ. का.

उ०—४ आ मिटण न दू अनादि, मो यकां हिंदु अजादि ।

—सू प्र

अजादालगर—स० पु०—श्री राम की एक उपाधि । (ना मा.)

अजादी—वि० [स० मर्यादित] मर्यादा निमाने वाला ।

अज्जाद—देखो 'अज्जाद' (रु. भे.)

उ०—वढी लाज अज्जाद भूजें वणें, भळें पार ससार सारो भणें ।

महा जाण प्रमीण मोटो मती, करे कविव कोट गढे कीरती ।

—ल रि

अड—देखो 'अड' (रु. भे.) (अ. मा.)

उ०—जैत भूप 'जैतरी' हार कमरा' री होधी । अड पोसी मुंड-माळ, जगत चल कोतुक जोसी ।—मे म.

अडमाळ—देखो 'अडमाळ' (रु. भे.)

अडाणी, अडानी, अडा—स० पु० [स० मृदानी, मृडा] पावंती, दुर्गा ।

(अ. मा.)

उ०—१ तुही काम ही नाम देवी कहणी । महमांय द्वागय तूही अडाणी ।—मे म.

रु० भे०—अडाणी, अडा ।

अण—देखो 'अण' (रु. भे.)

उ०—तद ठाकर आपरें भायां रजपूतां स सला करी । अण कयो, जन्म-अण तो देहरी सम्बन्ध छै पण परब पर मरियां नाम रहै ।

—द दा

अणाळ, अणालिनि—स० स्त्री० [स० मृणाल मृणालिनी] १ कमल की नाल, कमल का दण्डन

२ कमल की झड ।

रु० भे०—मिरणाळ अणाळ, अणाळणि, अणाळणी, अणाळ ।

अणाळी—स० पु० [स० मृणालिनी] कमल ।

रु० भे०—अणाळी ।

अतजय—देखो 'अतियुजय' (रु. भे.)

उ०—तद ब्राह्मण कही अठै हू एक विद्या सीखू छू । विद्या री जाप अतजय री जाप छै ।—चौबोली

अत—वि० [स० मृत] १ मरा हुआ, निष्प्राण ।

उ०—ईखे हय अत आपरी, दूदा कुमर दुवाह । बाजी खास नवाव री, ले चढियो जयलाह ।—व भा.

२ व्यर्थ, निरर्थक ।

रु० भे०—अत अति ।

३ देखो 'अतियु' (रु. भे.)

उ०—१ उदोत-तपोनिप अंगुण ईस । अजीत-जरा-अत जोग अघीस ।—ह र

उ०—२ सूजा पाट सकाज, वाघ कमधज वरदाई । कर दन खगवह कवर, पिता पहिला अत पाई ।—सू प्र

उ०—३ मधुमास कसन पख द्वादसी, जुघ प्रकास जग जाणियो ।

मृत जीव गया हरि धान मम, मृत जिहान बाबाणियो ।—रा रु,  
उ०—४ मन मूक तर्ण बीमाह जिनी मृत, मार 'गोईद, प्राप  
मरे । प्राप्ती मड साथी जिनी मौ भावे, काळ निमित्त मरीर करे ।

—गु रु व

अतद—देखो 'मृत्यु' (रु. भे.)

अतद—देखो 'मृतक' (रु. भे.)

उ०—१ जवन मृतक तन फलण घन, अन कर कीधी प्राण ।  
घरती में ऊढी घर, जाण भली निज जाण ।—वा दा

उ०—२ दाखियो ऐम पढायात करे नेम मृतकां मरी । पण एह  
अम्हा पारस परि माय न छोडा साम रो ।—रा रु.

अतककरम—स० पु० [म० मृतक + कर] किमी प्राणी की मृत्यु के पीछे  
बिगने जाने जाने के संस्कार या कार्य जिससे मृतक की आत्मा को  
मद्गति मिले ।

० भे०—अतककरम ।

अतकर—स० पु० [म० मृत्यु + कर] यम । (अ मा, ना. मा.)

अतका—देखो 'मृतिका' (रु. भे.)

अतदि—देखो 'मृतक' (रु. भे.)

उ०—प्रति कथ सवचित याळ अण । मिव त्रिपुन प्रतिक धनु  
व्याळ सग ।—रा रु

अतग—देखो 'मृतक' (रु. भे.)

अतगाळ—स० पु० [म० मृत्यु + गाल] मृत्युबाल, मीत का समय, मृत्यु ।

उ०—गूहा यीनी फोट नाटिये, मरण विटण चो छाडि मती ।  
नवगड तर्ण नीर नीमरते, पाळ हुप्रो अतगाळ 'पती' ।

—प्रतापसिंह सुरनांणीत भाटी रो गीत

अतघात—स० पु० [म० मृत्यु + आघात] मीत का सदेश, मृत्यु का  
आधान ।

उ०—ब्रिस्तगरी वात मागी विमय, अणकारी वतपात सी । अजमेर  
धान अवरग नै, गुण लग्नी अतघात सी ।—रा रु

अतजीवनी—मं० ग्री० [म० अत-जीवनी] मुर्दे को जिलाने वाली धिया,  
मजीवन-विद्या ।

० भे०—अतजीवनी ।

अतदानियि—मं० ग्री०—[म० मृत + दा + तियि] रचित ज्योतिष के अनुसार  
तिथि व यार मण्डनी बनेने वाले पाप योगों में से तृतीय योग ।

अतघामर—स० पु० [म० मृत्यु + घामर] मृत्यु-दिन । मरने का दिन ।  
अतनयन, अतभूषण—स० पु० [मं० मृत्यु + भवन] मृत्यु लोक,

उ०—मोठ, पण जाणिया मोठी कमधत्र घिनी तुजारा अत ।  
'बोका' हरा बाण दिम्परियो, सनभवले माही इअत ।—द दा

अतलोफ—देखो 'मृत्युलोक' (रु. भे.)

उ०—१ देखो अतन रूप आर्चाम भम्मे, देखी मानवा रूप अतलोक  
भम्मे ।—देवि

उ०—२ भोळी कमेडी अपूठी फिरने चालती चालती ई होळी सु  
कह्यो-राजकंवर ने हठ करने म्है ई तो अठे लाई अर म्है ई आपने  
पाछा अतलोक मे पूगावूला ।—फुलवाडी

उ०—३ तद दरवारी भीतर जायने समुद्रजी नु गुदरावी-जु  
महाराज-श्री अतलोक सु एक मानवी आयो छै ।

—बूढी ठग राजा री बात

उ०—४ पाताळ अनइ (अ) अतलोक आदोपुर्गि, हेका हेक मनइ  
सह हार ।—महादेव पारवती री वेलि

अतलोफी—स० पु०—मृत्यु लोक मे रहने वाला, मनुष्य, पशुपक्षी आदि  
प्राणी । (अ मा.)

रु० भे०—अतिलोकी,

अतलोफ—देखो 'मृत्युलोक' (रु. भे.)

उ०—ताहरां परमेस्वरजी आगै पुकार हुई । जु अतलोफ माहा  
वघरावत वुरी चाल चाल । ईयां नु सक्ता दीजे ।

देवजी वगडावतां री बात

अतवानि—स० पु० [स० मरुत्व] इद्र । (अ मा ना मा.)

अति—देखो 'मृत्यु' (रु. भे.)

उ०—निपट बिन्है दल आया नैडा, नरां सुरां अति आया नैडा ।  
नोवति सोर घडडि धुवि नैडा, नाळि निहाउ गाजिआ नैडा ।

—वचनिका

अतिका—देखो 'मृतिका' (रु. भे.)

अतिलोकी—देखो 'अतलोफी' (रु. भे.) (ह ना मा.)

अतु—देखो 'मृत्यु' (रु. भे.) (ह ना मा.)

अतुत—स० पु० [स० अमर्त्या ९९ उत्तर] इन्द्र । (नां मा.)

अतू, अत्य—देखो 'मृत्यु' (रु. भे.)

उ०—रवि ससी पवन ते साक्षिया म जु काई अमत्य । फूई जु  
काई करू म तु मुक्त देज्यो अत्य ।—नळादयान

अयका—देखो 'मृतिका' (रु. भे.)

उ०—मोताहळ उत्तारि माळ तुळछी गळ धार । करे तिलक अत्यका  
तिलक कूकम बीमार ।—रा रु

अत्यलोक, अत्यलोफि—देखो 'मृत्युलोक' (रु. भे.)

उ०—कदण तू कवण तू धरि नारी स्वरगि लोकि कइ तू  
अवतारी । नारि कोइ नथी तुम सिरखी, अत्यलोफि कइ तू अनि-  
मेनी । मालि सूरि

अत्युजय—देखो 'मृत्युजग' (रु. भे.) (अ मा., नां मा.)

अत्यु—देखो 'मृत्यु' (रु. भे.)

उ०—म्य वस वो मुधारने विजाति को विगारने । मनें सु अत्य  
वारलो अने समान मारने ।—ऊ वा

अत्युलोफ—देखो 'मृत्युलोक' (रु. भे.)

उ०—पाव पयादे सब चळ आवे, मुन मुरळी का बाजा । अत्युलोफ  
मे टटियो छाई, जहा देवन का वामा ।—मोरां

अत्यु—देखो 'मृत्यु' (रु. भे.)

अदग, अदगी, अदगी-सं० पु० [सं० मृदग] ढोलक के आकार का कुछ लम्बा एक वाद्य ।

उ०—१ वज्र अदग चग रग उपग वारग । अनग छबि चग उमग भग भग ।—सू प्र

उ०—२ आगम वेदिनां, अदगी धन घातान सहते सुख स्रोत्रयो, युद्धते सेवका जय स्वांमिन ।—व स

रु० भे०—मरदग, मिरदग, मिरदगी, म्रिदग ।

अद-सं० स्त्री० [सं० मृद] १ मिट्टी, रज ।

२ मिट्टी का टीला ।

३ मिट्टी का ढेला ।

४ एक प्रकार की गंधदार मिट्टी ।

५ देखो 'मरद' (रु भे.)

६ देखो 'मृदु' (रु भे.)

अदु-वि० [सं० मृदु] १ प्रिय सुहावना ।

उ०—अदु रयण सुपन सपेख मगळ । विमळ उर सुख बिसतरै ।

—रा. रु.

२ सुकुमार, नाजुक ।

उ०—अदु रूप सिखर थळ दुम विमोह । स्र गार चमर किर पूछ सोह । निज तेज सरति चत्र जुवळ नाळि, भव कमळ जत्रि सूची कि भळि ।—रा रु

३ नरम, मुलायम, कोमल ।

४ मधुर, मीठा ।

५ मद, धीमा, हल्का ।

उ०—सुंदर भाल विलास, अलक सम माल अनोपम । हित प्रकास अदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम ।—रा. रु.

६ उग्र, प्रचंड, तीव्र आदि का विपर्याय ।

७ निर्बल, कमजोर ।

सं० स्त्री०—१ धृत-कुमारी ।

२ जूही का पौधा और फूल ।

३ कोयल ।

४ शनिग्रह ।

रु० भे०—मिउ, मुदु अद अद्रिदु ।

अद्रुका-सं० स्त्री० [सं० मृद्वीका] दाक्ष, दाक्ष । (प्र. मा.)

अद्रुगण-सं० पु० [सं० मृदुगण] चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा व रेवती इन चारों नक्षत्रों का समूह ।

अद्रुता-सं० स्त्री० [सं० मृदुता] १ कोमलता ।

२ मधुरता ।

रु० भे०—अद्रुता

अद्रुधुनि-सं० स्त्री० [सं० मृदुधुनि] कोयल । (प्र. मा.)

अद्रुळ-वि० [सं० मृदुल] १ कोमल, मुलायम, नरम ।

२ सुकुमार, नाजुक ।

उ०—सोई खुद भज दिन सांप्रत, स्त्री दुरगा सकळाई । मूरत

मृदुळ भेख मरदानू, सूरत हृदय समाई ।—मे म.

३ दयालु, कृपालु ।

४ नरम ।

सं० पु०—१ पानी, जल ।

२ अगर काष्ठ विशेष ।

३ अजीर ।

४ तकिया । (प्र मा)

५ नारेल । (प्र मा)

रु० भे०—अद्रुल ।

अद्रुणी अद्रुणी—देखो 'मरदणी मरदणी' (रु भे)

उ०—पारेवइ धावतइ अति पाइ, नीघसइ घरा पुढ तिणि निहाइ ।

पंचाइण चहियउ ऊभि पाण, मूगळी घड़ा अद्रिवा माण ।

—रा ज सी.

अघ-सं० पु०—[सं० मृघ] युद्ध समर

उ०—टड चढै प्रथीमल भाजै टोढी, 'लला' तराँ सर धारै लोह ।

वाये वाये नली खिम वाजै, अघ मणघर जण भावै मोह ।

—प्रथीराज उढणा री गीत

अम्म—देखो 'मरम' (रु भे)

उ०—नमो प्रह्लाद ऊवारण अम्म । नमो अग—कासब मारण

अम्म ।—ह. र

अपाव अयादा—देखो 'मरजाद' (रु. भे)

असा-सं० स्त्री० [सं० मृपा] असत्य, झूठ ।

उ०—मौ आगै कहाँ हँतौ, अयवते ऋषि-रायी रे तेतौ वात मिलती नही, स्यू रिख वाणी असा थायी रे ।—जयवाणी

रु० भे०—असा, असा, असा,

असावाद—देखो 'मिरसावाद' (रु भे.)

उ०—कूड कपट कलि विकला केलथी, कीजइ छे केइ काम ।

असावाद पगोपग मोकली, सी गति थासी स्वाम ।—ध व प्र

अहण—देखो 'मरहण' (रु भे)

अतलोक—देखो 'अत्युलोक,

उ०—विहांणै अतलोक थी लगलोक जाइस्यां—।—वचनिका

अगि—देखो 'अगि' (रु. भे)

उ०—वनिता मुख पूनिम चंद वणी, अगि अहू चलाँ अगिरूप भणी ।

—वचनिका

अखि—देखो 'असा' (रु भे)

उ०—पर त्रिय गमण अखि परकासी, ज-दिन एह खग ऊप्रमि जासी ।—सू. प्र

अखिवाद—देखो 'मिरसावाद' (रु भे)

अगि-सं० पु० [सं० मृग] (स्त्री० अगि) १ हरिन, मृग ।

उ०—१ काजळ की रेख जकी लकमी लगावै छै । तीखी चख रीज

विजाता कीनी छं जकी खजन मीन मिग छलिना छं ।—पनी  
उ०—ग्रहि मग मिग दम हव अळूकें । मुणें न सबद गात नह सूकें ।

—मू. प्र

उ०—१ कमतूरी कमल वमं, मिग दूढ वन वन । हरीया जुग  
जाणें नही, राम वसैं तन तन ।—स्त्री हरिरामदाम जी महाराज  
२ जीय, प्राणी ।

उ०—चत्र टिम जाद न मकैं चक्रनि, निजर काळ देखैं नयण । मिग  
जीय मरण मारीजती, राख राख राधारमण —जगी खिडियो  
३ जगनी पयु ।

४ हाथी की एक जाति ।

५ घोडो की एक जाति ।

६ मार्गशीर्ष मास ।

७ मृगशिरा नक्षत्र ।

८ टिगल मे 'विलिया सांमोर' (छोटा माणोर) छंद का एक भेद-  
जिमके प्रथम ढाले मे १४ लघु, २५ गुरु कुल ६४ मात्राएँ तथा डही  
क्रम में शेष ढालो मे १४ लघु २४ गुरु कुल ६२ मात्राएँ होती हैं ।  
(वि प्र)

ॐ भे०—मरग, मिग, मिगिष, अग, अगु अघ, अघघ, मिग,  
मिप

अल्पा०—मरगलियो, मरगलो मरघलियो, मरघामो, मिरघलो  
मिरगी मिरलही, मिरगलो, मिरछलो मरगलउ, मरगलो, मिगलो,  
मिपलो,

महा०—मरगाण, मरगाळ

मिगछाळ, मिगछाळा—देखो 'मरगछाळा' (ॐ भे.)

उ०—मैं जपती नाव मेरे मायब का, बाण मिळो नंदलाला रे । हाथ  
गुमगी कांस पूवड़ी, ओढ रही मिगछाळा रे ।—मोरा

मिगजळ—देखो 'मिगत्रिमणा'

मिगतरमणा, मिगतिरसणा, मिगतिसणा मिगतिस्णा, मिगत्रसणा,  
मिगत्रस्णा—म० स्त्री० [म० मृग-नृणा] १ रंगिस्तान या ऊपर  
भूमि में दिवने वाला धूल वणों का प्रतिबिम्ब जो पड़ी धूल व हवा  
के विभिन्न ताप क्रमों की तहों में से आघतित होकर सूर्य किरणों  
के गुजरने मे बनता है एवं जल की आन्ति पैदा करता है ।

२ अम, आति, घोसा ।

३ अवास्तविक पदार्थ ।

ॐ भे०—मिगत्रमणा, मरगतरमणा, मरगत्रिमणा, मरगतिस्णा,  
मरगत्रमणा, मरगत्रिमना,

मिगघर—म० पु०—पट्टमा ।

ॐ भे०—मरगघर

ॐ भे०—मिगतर मरगघर, मरगघर,

मिगमघणी—देखो 'मिगनेणी' (ॐ भे.)

उ०—बाघ-नख पिह-बाणि, हम-ममणी मिग-नयणी —गु रु व

मिगनाथ—म० पु० [म० मृगनाथ] १ मिह ।

ॐ भे०—मिगनाथ, मरगनाथ,

मिगनाम, मिगनाभि—स० स्त्री० [स० मृग+नाभि] १ कस्तूरी ।

उ०—काया केसरी किसनागरि, जवाधि मैं जळहरि । मिगनाम  
मळैतरि, मयाचल ।—गु रु व

२ मृग की नाभि ।

स० पु०—३ एक राठोड राजा । (प्राचीन)

उ०—मकरध्वज ५६ रो, मिगनाभि ।—रा वसावळी

ॐ भे०—मिगनाम मरगनाम, मरगनाभि, मरगनामी ।

मिगनेणी—स० स्त्री० [स० मृगनयना] मृग के समान सुंदर नेत्र वाली,  
मृगानी ।

ॐ भे०—मिगनयन मिगनेणी, मिगनेणी, मिगनेणी, मि-  
रानेणी, मरगनयणी, मरगनयनी, मरगानयणी, मरगानेणी मिगान-  
यणी, मिगानेणी ।

मिगपत, मिगपति—स० पु० [म० मृग-पति] १ मिह ।

२ चन्द्रमा ।

ॐ भे०—मरगपत, मरगपति, मरगपती ।

मिगमद, मिगमद्र, मिगमद—स० पु० [स० मृगमद] १ कस्तूरी ।

उ०—१ सोरम मिगमद गव, मार घण सार सनेवत । नित नव  
मार सकेत, अगरी नीसार उखेवत ।—रा रु

उ०—२ अति घण मोला घतर, तई मिगमद घण तन्नी । मोला  
सुगध समीर, पडैं मोला जोजन्ना ।—सू. प्र

२ एक आभूषण विशेष ।

वि०—काला, दयाम । (डि की)

ॐ भे०—मिगमद, मरमदा, मरगमद, मरगमदा, मरगमद्र ।

मिगमित्र—स० पु०—चन्द्रमा, शशि ।

ॐ भे०—मिगमित्र मरगमित्र ।

मिगया—स० स्त्री० [स० मृगया] शिकार, आवेट ।

उ०—विहरत वाग विलास, किं संमग्रह कयलास । दिन उदय  
मुख दरमाव, वित होत मिगया चाप ।—रा रु

ॐ भे०—मिगया मरगया ।

मिगराज, मिगराट—स० पु० [म० मृगराज] सिंह, शेर ।

उ०—मदा मिळें विल स्याळ रे, वच्छ पुच्छ खुर चांम । मिळें  
गया मरगराज यह, मजरद मोतो ग्राम ।—बां दा

ॐ भे०—मरगराज, मिरगराज, मरगराज, मरगराय, मरगगव  
मरगाट ।

मिगरिपु—स० पु० [म० मृगरिपु] सिंह ।

उ०—मिगरिपु नर कई मुणें, मुणें केक मरगराज । इण मज  
गजण सीह उर दुहू प्रकारां नाज ।—बां दा

मिगलोचणी, मिगलोचनी—देखो 'मिगलोचणी' (ॐ भे.)

मिगलो—देखो 'मिग' (अल्पा, ॐ भे.)

मिगवीथी—म० स्त्री०—शुक्र की नी वीथियों मे से एक ।

ॐ भे०—मिगवीथी, मरगवीथी ।

मिगसर—देखो 'मिगसर' (ॐ भे.)





प्रिति—१ देखो 'प्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—ऊजळा बाग्रह आदीत मुसकमळ ऊगा । मनोरथ पूगा ।

प्रिति लाज रा मोठ बाधा ।—वचनिका

२ देखो 'प्रत' (रू. भे.)

प्रितिका—स० स्त्री० [स० मृत्तिका] १ गोपीचदन ।

२ मिट्टी ।

रू० भे०—अतक, अतिका ।

प्रित्युजय—देखो 'प्रित्युजय' (रू. भे.)

प्रितु—देखो 'प्रित्यु' (रू. भे.)

प्रितो—देखो 'प्रित्यु' (मह, रू. भे.)

उ०—पनमेक प्राण कष्ट मूरा सहत रण मग्रामे । जामणी जरा  
प्रितो, मव भाजे भावित मोम ।—गु रू. व.

प्रित्युजय—स० पु० [स० मृत्युजय] १ शिव का एक नामान्तर ।

२ वह जिने मोत को जीत लिया हो, अमर ।

रू० भे०—मरतुजय, मिरतुजय, मिरत्युजय, अतुजय, अत्युजय,  
प्रितुजय ।

प्रित्यु—स० स्त्री० [स० मृत्यु] १ वह समय, अवस्था या स्थिति जब  
किमी प्राणधारी का प्राण शरीर से निकल जाता हो, जीवन का  
धन, मोत, मृत्यु ।

२ अतिम अवस्था, समाप्ति, धन ।

३ माया ।

४ काली ।

स० पु०—५ यमराज ।

६ काल ।

७ श्रद्धा ।

८ विष्णु ।

९ कामदेव ।

१० कसियुग ।

११ एक मास मय ।

१२ कलित ज्योतिष में जन्म-कुटनी का आठवाँ घर जिसमें मरण  
सम्बन्धी पञ्चाङ्ग का विचार होता है ।

१३ कलित ज्योतिष में २८ योगों में से एक ।

रू० भे०—मरत, मरतु, मिरतु, मिरत्यु, अत, अति, अतु, अत्,  
अगु, मत्तु, मिन, मिति, मितु ।

मह०—प्रितो ।

प्रित्युयोग—स० पु० [स०] एक प्रकार का घनुम योग जो, रवि और  
मङ्गलवार को नवतिथि, गुरु व चन्द्रवार को भद्रा तिथि, बुधवार  
को बया तिथि, शुक्रवार को गित्ता तिथि और शनिवार को पूर्णा  
तिथि होने पर बनता है । (ज्योतिष)

प्रित्युनोद—स० पु० [स० मृत्युनोद, मयं नोद] १ वह लोक जहाँ  
ममन प्राणियों का जन्म व मरण होता है, मनुष्यलोक, पृथ्वी  
लोक ।

२ यमलोक ।

रू० भे०—मरतलोक, मरत्यलोक, मिरतलोक, अतलोक, अतलोक,  
अत्यलोक, अत्यलोक, अत्युलोक, आतलोक, अितलोक ।

प्रितवग—देखो 'अदग' (रू. भे.)

सुंदरि सोभता सिएगार सभावे वीणा ठाळ प्रितवग बजावे । जिकें  
छत्रीस राग करि जाणें, वाग वार लस घोर बखारें ।—स पि

प्रितु—देखो 'अदु' (रू. भे.)

प्रितुता—देखो 'अदुता' (रू. भे.)

प्रितुळ—देखो 'अदुळ' (रू. भे.)

प्रिनाळ—देखो 'अणाळ' (रू. भे.)

प्रिसावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)

प्रिजाव, प्रिजादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—दमा ऊतराद पछमाण पुरव दखण, भोम येक घर रक्षण  
ऊमर भागें । अजादा प्रसोतम देखीयो जकण मग, लखण रघुवीर  
रा वरद लागें ।—गुलजी आदो

म्लान—वि० [स० म्लान] १ कुम्हनाया हुआ, मुरझाया हुआ ।

२ उदास, सिद्ध ।

३ थका हुआ, दुर्बल ।

४ मलिन, मैला ।

रू० भे०—मलाण,

म्लेच्छ, म्लेच्छ—स० पु० [स० म्लेच्छ] १ वह जाति या वर्ग जिसमें  
वर्णाश्रम धर्म न हो ।

२ जगती या अनार्य जाति जो संस्कृत न बोलते हो और धर्म  
शास्त्र को न मानते हो ।

३ विदेशी ।

४ मुलमान, यवन ।

उ०—१ पढ़े फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ में मिल जावें । अगरेजी  
गळ अवन, धोट्यां में हिल जावें ।—ऊ का.

उ०—२ म्लेच्छनतें मिट्यो नाह सूरनते सिट्यो नाह । खूटल  
पैसिट्यो त्याम गधली न गांधी तें ।—ऊ का

५ अनाथों की माया ।

६ तांबा ।

वि०—१ नीच, पापी, दुष्ट ।

२ जाति बहिष्कृत ।

रू० भे०—मलिन, मनिमेव,

म्लेछराय—स० पु० [स० म्लेच्छ+राजा] म्लेच्छ जाति या वर्ग का राजा,  
इमका नाम घग पाया जाता है । (व म)

मृत्-सर्व०—मेरा

उ०—घण रहे जीत समहर अपार, घजवंध स्याम बारज सधार ।

यां मुजां लाज जोघाण धान, म्ह घोर न को मर या समान ।

—सि रू

मृत्-सर्व०—मुझे, मुझको ।

उ०—म्हनें तो भिनस री विस्वास मोटी भर सिरें बात लागें ।

—फुलवाड़ी

महल—देखो 'महल' (रू भे.)

उ०—पायल बाळी पातळी जो इतनी गरव न बोल, तेरे महल चोरी करां तेरा पकड़ा पायल का पाव ।—लो गी

महा—सर्व० व० व०—१ हम ।

उ०—१ रावळा भासापुरा जाणें, थां थका क्यू न जाण्णा । रावळ टीकें बंढें, तरें म्हा नै रावळ बात ।—नैणसी

उ०—२ भाय राजूखा नू मालम कीवी । कही-म्हां भाज पहला इसो कजियो कियो न सुणियो । सारा एक मनगरा था ।

—सूरें खीवें कांघलोत री बात

२ हमारा ।

उ०—हव लइय कइक दिन हुय हरोळ, इळ पती फोज री बळ अतोळ । सक्कियो न साम सू म्हा सग्राम, गळ दियो छोट भरू छोट गाम —पे रू

३ मेरे हमारे ।

उ०—उलिंगणउ घरि राखण्यो जु म्हां प्रीय पाछो बाहुडइ । सोवन कचोळी तोही पावस्यु दूध ।—बी दे

उ०—ठाकर नंदा बंठ परा'र पुछें है-हे महाराज ! मांग-जाग'र लेवी । हुकम रा चाकर हां भवळा नै क्यू पीढो ? म्हां लायक हीढो ओढावो ।—दसदोख

उ०—३ स्वामीजी कह्यो म्हां में भवधि आदि ग्यान तो छै नही । पिण थोरी नूराणी देखने कह्यो ।—भि द्र

रू० भे०—मांह, माहां, मांहा, म्हा ।

म्हांकउ म्हांको-सर्व०—(स्त्री० म्हांकी) मेरा, हमारा ।

उ०—१ लाख मीलयां माहि लख लहई । पाड्या म्हांको प्रीव छइ इण तो सहिनाण ।—बी दे.

उ०—२ कोइल करइ टहूकडा म्हांकी सहियर, सूंदर फल फूल पान हे । राजा एक माजरी ग्रही म्हांकी सहियर, तिम मन्त्री परधान हे ।  
—स कु.

उ०—३ पूगळ हुता आविया, पूगळ म्हांकउ वास । पिगळ राजा तास घू भेल्ला थाकइ पास ।—ढो. मा

म्हांजळी, म्हांजी, म्हांभो-सर्व०—(स्त्री० म्हांजी) हमारा, मेरा ।

उ०—१ ढोला, खील्योरी कहइ सुणें कुदगा वैण । मारु म्हांजी गोठणी, सै मारुदा सैण ।—ढो मा

म्हांणी-सर्व०—१ मेरी, हमारी ।

उ०—बाकी तीनू जणा जाण्यो म्हांणी तो खंरियत हे । जाट फिलतो व्हे तो फिलण दो ।—फुलवाढी

रू० भे०—मांहणी,

म्हांणै-सर्व०—हमारे, मेरे ।

उ०—थे विण म्हांणै जग ना सुहावो, निरह्या सब ससार । मीरा रे प्रभु दासी रावळी, लीज्यो नेक निहार ।—मीरा

रू० भे०—मांहणै

म्हांणो-सर्व०—हमारा, मेरा ।

रू० भे०—मांहणी,

म्हांनु, म्हांनू, म्हांने, म्हांनै-सर्व०—हमें, हमको ।

उ०—१ ऐ जठा ताई जेसलमेर री घरती में छै तितरें म्हांनु घरती री आस काई नहीं ।—नैणसी

उ०—२ अजमेर थई म्हांनु दो, गळ कोट म्हांरें खटावण रा नहीं ।—नैणसी

उ०—३ एक दिन चरचा करता सवाई राम ने कछी-थे म्हांने दोखीला कही, पिण थारा गुरा नै पिण किवारिया री दोख लागें छै ।—भि द्र

उ०—४ जेठ के जिठाणी लाहली भवरजी रात्यू वरफी खाय । भवर थोडी म्हांने ई मगाद्यो जी ।—लो गी.

उ०—५ तद सूजें जी कयो-पूजनीक चीजा म्हांनै ई चाईजें है, देवा क्यू कर ।—द दा

रू० भे०—माहनै ।

म्हांरी-देखो 'म्हांरी' (रू भे )

उ०—पिता-वचन-पालण वन जावा, वचन पाळ आवा प्यारी । प्राण-प्रियाजी थे तो भवन विराजी हे ! आ ग्रान्या मानो म्हांरी ।

—गी रां.

म्हांरे, म्हांरें-देखो 'म्हांरें' (रू भे )

उ०—१ जद स्वामीजी कह्यो-थानें वावेचा पाच रुपइया देवें तो पिण म्हांरें ना कहिवा रा त्याग है ।—भि द्र.

उ०—२ म्हांरें तो वारो ही पुन-परताप है । बियां कर्ने हो पढ्या-लिह्या भर काम करणो सीख्या ।—दसदोख

म्हांरी-सर्व० [स्त्री० म्हांरी] हमारा, मेरा ।

उ०—१ चारण सूरज देव रा, कै म्हांरा जस काज । कहिया तें जादब कथन, हुवा अमर हरराज ।—वां दा.

उ०—२ जीवण मरण अजाण, नहिं गैला सैणा नही । भवम-रियां ऐनांण, जाणां म्हे म्हांरा जस ।—ऊ का

उ०—३ वीनती सुणो रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरुदेवा रांणी ना लाला ।—वि कु

उ०—४ सिकारां रम रह्यो म्हांरो राज । चगा बाज राजे अस-वारां । सग अलवेली साज ।—रसीलै राज री गीत

म्हासु, म्हासू, म्हांसों-सर्व०—हमसे, मुझसे ।

उ०—१ वेढो सगल्या ही मिळि नै आजैपाळ री बहन ने गोद

दीयो । मगल्या ही कसो तू टावर पाळि म्हे सत्यां हुस्या ये टावर पाळिज्यो । म्हांसु न पळं । ये पाळिज्यो । चौबोली  
उ०—२ लाणु देम्याजो नहि पांनं आनीजाजी । पें'नी विछोही  
उयो माफ म्हांसु नही नीमरं ।—रसीलं राज री गीत  
ह० भे०—म्हाम्, म्हांसु ।

म्हारी—देखो 'म्हारी' (रू भे )

उ०—यळ मारी यम ऊचरं, कमसल औघ कदीम । म्हा ऊमा इज  
म्हारी, मारग दावो मोम ।—पा प्र

म्हारे, म्हारं—देखो 'म्हारं' (रू भे )

उ०—क्यु ये म्हारे काम आबो ।—मतगीवाघी लिखमो री बात

म्हारीटो—देखो 'म्हारीटो' (रू भे )

उ०—मोग रा पिवजो घर वसं ऐ, लजा मोठीडा ऐ लो । म्हारीछा  
वसं परदेम, बाला जा ओ ।—लो गी

म्हारी—देखो 'म्हारी' (रू भे )

उ०—१ ताहरां राजा कहे म्हारी कसो मानि ईयं नु घरे ले  
जाह ।—दवजो बगडावत री बात

उ०—२ तद ठग र वेटं कही, ती ये म्हारा बहनेई हुवो ।

—बूढो ठग राजा री बात

म्हा—देखो 'म्हा' (रू भे.)

उ०—ए बात स्वांमोजी मुण कसो—म्हांने हाट छुडाई त्यां ऊपर  
छदमस्य रा स्वभाव थो सहर आबारी ठिबानी, पिण म्हा सू तो  
उपगार इज कीवो ।—मि द्र

म्हाइ—गवं०—मैं, हम ।

रू० भे०—म्हाई ।

म्हाइनु, म्हाइनु—गवं०—मुझे, हमे ।

उ०—म्हाइनु पाहरे मिळण री बाछा हुती । उवां कहीया म्हांनु  
ही मिळण री बाछ हुती आइने मिळोया —चौबोली

म्हाई—देखो 'म्हाई' (रू भे )

म्हाचोट—म० पु०—एक देश ।

उ०—तिग री पाव ईराण तूरान रूम म्याम फिरग, रूस चीन्ह  
म्हाचोट ईण देमा देमां रा पातमाह ईण रा हुकम रा  
आधीन माग डरे ।—प्रतापमिष म्होरूममिष री बात

म्हाजन, म्हाजन—देखो 'म्हाजन' (रू भे )

उ०—मपुग मे मुबज्या कर राखी, म्हाजन की सी हाट । केमर  
मदन नपन बीन्ही, मोहन तिसक निसाट ।—मीरा

म्हाटो—देखो 'म्हाटो' (रू भे )

उ०—मेठो री बान मुण नें बाबण गतागम मे पढमी । दग बात  
मायें बाईं विचार करे । मेठ तो म्हाटा जवरी आधी पजाई ।

—कुलवाडी

म्हार—१ रेमा 'मार' (रू भे )

२ रेमा 'हमार' (रू भे )

म्हारउ—देखो 'म्हारी' (रू भे )

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखम सुकुमाल रे । आज  
सहइ ते परिमहा, भूख त्रसा नित काल रे ।—स कु  
म्हारया—सर्व०—मेरी, हमारी ।

उ०—ताहरा मोर कसो म्हारयां परां माहे पैसि ज्यु ले जाळ ।

—चौबोली

२ देखो 'म्हांगी' (रू भे )

उ०—१ ताहरां बोली—हे बायां थें दोनू म्हारया सोबया छी । थे  
म्यामसुदर री खबरि करण आया छी ।—स्याम सुदर री बात

उ०—२ ताहरा तीढी बोली—आगं म्हारयां देवराण्यां जेठाण्यां  
छे ।—कावळो जोइयो नें तीढी खरळ री बात

म्हारलो—सर्व० (स्त्री० म्हारली) मेरेवाला, हमारे वाला ।

उ०—कागज जुवाई जी री आयो हे अर मोतरी है । का तो  
म्हारली छोरी कोनी भर का इया री छोरी कोनी ।—दसदोख

म्हारा—सर्व०—मेरा, हमारा ।

उ०—सुकवि कुकवि द्वेमी सुर्ण, हरखं कहिया जाव । करसो नह  
म्हारा कवित, खाल उतार सराव ।—बां, दा.

म्हाराज—देखो 'म्हाराज' (रू भे )

उ०—१ हाथी के सिर हाथ दें, मुळक मुळक म्हाराज । अणो  
विरद समार कै, कियो भगत की काज ।—गज उद्धार

उ०—२ विडद तमारो रामजी, ले वहीयो म्हाराज । हरीयै गुण  
ओगुण कीया, तीई तमा कु लाज ।—स्त्री हरीरामदासजी महाराज

म्हाराजा—देखो 'म्हाराजा' (रू भे )

उ०—राजा रांणी नू पूछोयो । ताहरां रांणी कसो महाराजा  
पाणी री प्यालो महाराजा मोल्हीयो हुती तिकी पाणी हुती ।

—चौबोली

म्हारालो—सर्व०—मेरे वाला ।

म्हारी—सर्व०—मेरी, हमारी ।

उ०—१ नही तर म्हारी सीव माहे नगारी देगवं जें हू वेढ न  
कळ ।—नंगमी

उ०—२ इसी जवाव करता समान तुरती वेग जाणियो जु म्हारी  
अदब पडें इमडें बापियो ।—द वि

रू० से०—महारी, मांहगी, मागी, मा'री, माहरि, माहरी, माहारी,  
म्हारया, म्हारी, म्हाहरी, म्होरी, म्होरी ।

म्हारडो, म्हारडो—देखो 'म्हारी' (मल्ला, रू भे )

उ०—दासी म्हारडो मारजी से कहना । मोय नींद न आवे नैना ।  
—मीरा

म्हारे, म्हारं—सर्व०—मेरे, हमारे ।

उ०—१ नगरी कुवारा परणमी, म्हारं नवल बने को व्याव,  
चोव्या सेयरडा गूथ त्याय ।—लो गी

उ०—२ एक बाई कसो स्वांमोजी म्हारं भैंस व्यावं जब पधारी  
तो लाहो लेवू ।—मि द्र

उ०—३ श्रेकर सामरे जावण दें । मुकलावो लेय पाछो बळती

वेळा । बतावें उणी ठायें हाजर व्हे जावूला । मरिया ई कौल नीं तोडू, म्हारें माथें विस्वास कर ।—फुलवाडी

उ०—४ राज भग्या म्हारें सिर राखिस । भूधर तूक तणा गुण भाखिस ।—ह. र

रु० भे०—माहरइ, मांहरे, माहरें, मांहारें, मांहारें, माहरइ, माहरे माहरें, म्हारे, म्हारें, म्हारे, म्हारें ।

म्हारई—सर्व०—मेरेही ।

उ०—जिसें रायमाल दूदावत कयी—जी इसडा भडीला डावडा म्हारई है ।—द दा

म्हारोडा, म्हारोडो—सर्व०—(स्त्री० म्हारोडी) मेरा, हमारा ।

उ०—वयानें वाळी, ए बाइ, म्हारोडो चांच, म्है थारी वीर लडा वियो ।—लो गो.

उ०—२ मरज्यो मरज्यो ऐ, भिनडी, थारोडा पूत । म्हारोडो बाटियो तू ले गयी । रातां री निरणी धीरां री बहनडी ।

—लो गो

रु० भे०—म्हारोडो ।

म्हारो—सर्व०—मेरा, हमारा ।

उ०—१ भागल कायर नें धीर स्त्री कहै छै, हे कथा भो ती थारी घड़ायोडो गहणो, आ थारी करायोडो पोसाख, अवे थे धारण करो म्हारो तो सुहाग गयो ।—वी स टी.

उ०—२ म्है तो थारया, ए बहूजी, थारा बोलने । लडायो म्हारो सो परवार । सहेल्या ए भांजी मोरियो ।—लो गो.

रु० भे०—म्हारो, माहरो, माहारो, मा'रो, माहरउ, माहरु, माहरु माहरो, माहारो, म्हारो, म्हारो, म्हारउ, म्होरो, म्होरो ।

म्हालण—स० पु०—चोहान वश की एक शाखा ।

म्हालणी, म्हालबो—देखो 'माल्हणी माल्हबो' (रु भे)

उ०—१ जलो म्हारी ओड री उदियापुर म्हाल रे ।

उ०—२ वस विसुद्ध वरीयाम सांम्हो विद्वण । घणा दिसि दोइणा म्हालियो विरद घण ।—हा भा

उ०—३ च्यार सप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हई ज्यु भांभी पाली । महिळा नीर भरण ने म्हाली, खारो जळ ऊढो तळ खाली ।

—ऊ का

म्हालणहार, हारो (हारी), म्हालणियो—वि० ।

म्हालिओडो, म्हालियोडो, म्हाल्योडो—भू० का० कृ० ।

म्हालीजणो, म्हालीजबो—कर्म वा० ।

म्हालियोडो—देखो 'माल्हियोडो' (रु भे.)

(स्त्री० म्हालियोडी)

म्हावत—देखो 'महावत' (रु भे)

उ०—रावत भाटक रजा, गजा म्हावत गरदाया । सपड़ाया जळ सोंव, बळ चितराम वणाया ।—मे म

म्हासती—देखो 'महासती' (रु भे)

उ०—सतियां म्हासतियां कहतां तन सीहै, मधुरी बांणी मुख प्राणी मन मोहै । रजपूताणी रुच सींचाणी सिरखी, नैणां जळ भरती सैणा थळ निरखी ।—ऊ का

म्हासू, म्हासू—देखो 'म्हासू' (रु भे)

म्हीणी—देखो 'महीनी' (रु भे)

म्हू, म्हू—देखो 'म्है' (रु भे)

म्हें, म्हें—देखो 'म्हें' (रु भे)

उ०—१ आबो घडी एक तो अमल पांणी करनं भेळा वेंसां । पछै थारें मारग जाजो ने म्हें म्हारें मारग जासां ।—ढो मा

उ०—२ थे कहो तो डावडिया परणावा । डूगर कह्यो—मनी वात छै । वेडिया परणावो । म्है होडा करस्यां । तद समरसी व्याह थापिया ।—नैणसी

उ०—३ झलाया कणरा नहिं झलां, फूलाया नहिं फूलां । झूलाया थारा म्है झूला, झूलाया नहिं झूलां ।—ऊ का

उ०—४ नरेस कहियो पहली मऊ री फरमाण आयो जरें हो म्है तो जाणि लीधी अब साह रें म्हारा माथा सू काम पड़ियो ।

—व मा.

म्हेमान—देखो 'मैमान' (रु. भे.)

उ०—बरसिष मेढते दिन राव बीका दुदा नुं राख म्हेमान करनं सीख दी ।—नैणसी

म्हेल—देखो 'महल' (रु भे)

उ०—१ आगरणी री म्हेल हमार दौलतखाना री चौक है तीं मे थो सो करायो १७०३ ।—नैणसी

उ०—२ आंभी सामो म्हेल देवरिया नित उठ पोढण आबोजी, इस पोढण के कारणे देवर प्यारा लागोजी ।—लो गो.

म्हेलणो, म्हेलबो—देखो 'मेलणी, मेलबो' (रु भे.)

उ०—१ रा वीरमदे रा हेरायत म्हेलीया था सु आया, खबर दी, कह्यो—सहै सो आप रा साथ सु रेयां माहै वंठो छै ।—नैणमी

उ०—२ पच सहेली मिळी वन साथ । पीरी म्हेली घन अपहरण हाथ ।—बी दे

म्हेलणहार, हारो (हारी), म्हेलणियो—वि० ।

म्हेलिओडो, म्हेलियोडो, म्हेल्योडो—भू० का० कृ० ।

म्हेलीजणो, म्हेलीजबो—कर्म वा० ।

म्हेलियोडो—देखो 'मेल्हियोडो' (रु भे)

(स्त्री० म्हेलियोडी)

म्हेसुरी—देखो 'माहेस्वरी' (रु भे)

उ०—जठे म्हेसुरी अगर्वाळा नहीं हैं, वठे रा बांमण की माथे धरम री घाक जमावै अर कीरें पड़ पवायती में जावै ।—दसदोख म्हें, म्हें—सर्व०—हम, मैं ।

उ०—१ साहरा अरजणजी डेरें आय नें कह्यो—जु म्हें म्होटी (बोन) बोलियो छै- रिणकताळ पळकेक मे भली छै जकण री भली ।—नैणसी

उ०—२ तब स्वामीजी पहिला ही बोल्या-म्हें तो यांनै आगं देह्याइ नही, नहीं अनै म्हारें यारें छदा आचार मिल जामी तो आहार पांणी भेळी कर लेवां वो घटकाव नही।—मि द्र

उ०—३ इण भीर स्त्री रें वामतें म्हें वाळण नें कढायो आ तो मुहणी ही लेलेती।—वी स टी

उ०—४ इळ दीह राह जीतो अभग, यह लिया साह म्हा कीध जग। संसार, बळा म्हराण खेत, जुद्ध करै भुजवळ म्हें अजेत।—मि रु.

रु० भे०—मेहू म्हा, म्हा, म्हा, म्हा, म्हा।

म्हंद, म्हंद-सर्व०—हम भी, मैं भी।

उ०—जब ते बोल्या-भूष लागा आहार करै। जद स्वांमीजी कहयो म्हेंद गो लागा वपडो ओठां।—मि द्र

म्हंमानी—देखो मैं मानी' (रु भे)

उ०—मूळगज मोहाजी नु मारें माघ मुघा मोहोना मे ले गया। यही म्हंमानी कीवो।—नैणमी

म्हंर—देखो 'म्हंर' (रु भे)

उ०—यारें म्हा रांणा कुळ नहि विगडे, अब हरि कीनी म्हेंर। मोरां के प्रभु गिरधरनागर, ठठ कर पी गई ज्हेर।—मोरां

म्हंरवान—देखो 'मैं रवान' (रु भे)

म्हंरवानी—देखो 'मैं रवानी' (रु भे)

उ०—मेजर माव बेलण म्हंरवानी मैं बुलाया। पालट साव भादुर छावणी मू फेरि आया।—मि य

म्हंस—१ देखो 'महल' (रु भे)

उ०—१ भावो भावो जो रगमीना म्हारें म्हेंल। प्याली तो लिया हाजर पटी।—मोग

उ०—२ फदे ये न मूता रळ मिल खेज मे जी ओ जी पियाजी अब घर भावो भावो प्यागी उडीके म्हेंल मे जी—लो गी

उ०—३ कवर धीरपदे मरजोदान गवास नै ले। पना के म्हेंल भावो।—पना

२ देखो 'महिळा' (रु भे)

उ०—म्हंलां वम वम मान रें मत्री वम मुरभाय। मगणु मिळिया रोपडे, घोडू मूव गहाय।—वा दा

म्हंनवी, म्हंनवी—देखो 'मिनवी, मेलवी' (रु भे)

उ०—पद्ये वममारा गे यही वासैं राखियो। मैं अमवार २० तथा २५ आगं म्हेंल नैं जेसळमेर महर गी मवण लिराई।—नैणमी

म्हंसनहार, हारी (हारी), म्हंतनियो—वि०।

म्हंतिघोडी, म्हंनियोडी, म्हंत्पोडी—भू० वा० क०।

म्हंमीमली, म्हंली—मैं मैं वा०।

म्हंगा—देखो 'महिळा' (रु भे)

म्हंनियोडी—देखो 'मिनियोडी' (रु भे)

(म्हो० म्हंनियोडी)

म्हंरी—देखो 'मुरी' (रु भे)

उ०—१ इण वेडी घाली कंद किया सौ इण री म्होंडी न देखू।

—गोड गोपाळदास री वारता

उ०—२ उठै सू भोळी मे घात, बाहर माणस था उहा रें म्होंडा आगं आण नाखियो।—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

म्होडी—स० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।

२ देखो 'मोडी' (रु भे)

म्होडी—देखो 'मोडी' (रु भे)

म्होटी—देखो 'मोटी' (रु भे)

उ०—१ पछें सुख कियो, तरें वेटी कान्हड देव जायो। म्होटी हुयो। कुवरपदी कान्हडदे जी नू दियो।—नैणसी

उ०—२ ताहरा अरजणजी डेरें आयनैं कहयो—जु म्हें म्होटी (बोल) बोलियो छैं।—नैणमी

उ०—३ श्री मल्लीनाथ जी ना छह मित्र, महावल प्रमुख मुनिराय। मरये मुक्ति सिधाव्या म्होटी पदवी पाय।—जयवांणी

(स्त्री० म्होटी)

म्होवत—देखो 'मुहवत' (रु भे)

उ०—अदविच मे मत तोड, कतवारी के तार ज्यू ज्यू। ज्यू हटे त्यू त्यू जोड एजी प्यारी जी म्होवत ओड लगानी चैंये मेरी ज्यान।

—लो, गी

म्होर—१ देखो 'मोहर' (रु भे)

उ०—१ कहणी प्रभु रीके न कछु, रहणीरीके रांम। सुपने री सौ म्होर सूं, कोडी सरे न काम।—ऊ का.

उ०—२ रोक रूप्यो भवरजी मैं बगूजी, हाजी ढोला वण ज्यांक पीळी पीळी म्होर।—लो गी

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रु भे)

२ देखो 'म्हारी' (रु भे)

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रु भे)

उ०—निज दळके किबाड जगू के जंतवार प्रगू के ओनाड आचू के उदार काछवाचू के ओडोळ मनीके म्होरे मेरगिर के तोलरिण

—र रु

२ देखो 'मोरी' (रु भे)

३ देखो 'म्हारी' (रु भे)

म्होडी—देखो 'मोडी' (रु भे)

(स्त्री० म्होडी)

म्होडी—देखो 'मोटी' (रु भे)

(स्त्री० म्होडी)

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रु भे)

२ देखो 'म्हारी' (रु भे)

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रु भे)

२ देखो 'म्हारी' (रु भे)

